सम्पादक :—

श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ... ६) रु०

छः माही चन्दा ... ५) रु०

तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०

एक प्रति का मूल्य ... ≋)

Annas Three Per Copy

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—

'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; २५ दिसम्बर, १९३० | संख्या १, पूर्ण संख्या १३

बम्बई में महिलाओं की विराट सभा

भारतीय देवियों के छलकते हुए देश-प्रेम का एक साधारण नमूना

बम्बई में 'गाँधी-दिवस' जिस उत्साह और समारोह से मनाया गया था, उसका समाचार पाठकों ने पत्रों में पढ़ा ही होगा। इन दिनों न जानें कितनी सभाएँ हुईं और कितनी बार हुई लाठियों की हृदयहीन वर्षा! यह चित्र महिलाओं की एक महती सभा का है, जिसमें हज़ारों महिलाओं ने भाग लिया था ऊपर के घेरे में पाठक श्रीमती हंसा मेहता, बी० ए० को व्याख्यान देते हुए देखेंगे, जो हाल ही में जेल से लौटी हैं।

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

भविष्य

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—२५ दिसम्बर, १९३० | संख्या १, पूर्ण संख्या १३

क्या शाह अमानुल्ला फिर अफ़ग़ानिस्तान के सम्राट होंगे ?

गवर्नमेण्ट का कहना है 'हिंसात्मक क्रान्ति प्रचण्ड रूप धारण कर रही है'

पंजाब-गवर्नर पर गोलियों की वर्षा :: पुलिस अफ़सर की मृत्यु !

प्रेस ऑर्डिनेन्स और भी भयंकर रूप में पास किया गया !!!

किसानों पर अत्याचारों का पहाड़ ढाया जा रहा है !

(२४ वीं दिसम्बर की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—बम्बई में विदेशी कपड़े पर वालण्टियर और देश-सेविकाएँ आज पिकेटिङ्ग कर रही हैं। मैमन मुहल्ले में तीन वालण्टियरों ने विदेशी कपड़े की लॉरी के सामने खड़े होकर उसे रोक लिया था, पर वे ८॥ बजे गिरफ़्तार कर हवालात में भेज दिए गए। मोटर ड्राइवर ने पहले तो वालण्टियरों की प्रार्थना पर ध्यान न दिया, परन्तु जब भीड़ एकत्र हो गई तब वह लॉरी छोड़ कर भाग गया। वालण्टियर लॉरी पर पहरा दे रहे हैं। बाद में पुलिस ने वहाँ पहुँच कर वालण्टियरों को गिरफ़्तार कर लिया और भीड़ को लाठियों से भगा दिया।

ऑर्डिनेन्सों के भूतों की पुनरावृत्ति

नई दिल्ली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि लॉर्ड इर्विन ने कुछ परिवर्तन करके प्रेस-ऑर्डिनेन्स और अनधिकृत पत्र ऑर्डिनेन्स फिर से पास कर दिए हैं। उन्होंने लगानबन्दी के सम्बन्ध में भी एक नया ऑर्डिनेन्स जारी किया है। प्रेस-ऑर्डिनेन्स में जो परिवर्तन किए गए हैं, उनमें से मुख्य निम्न प्रकार हैं:—

(१) १८वीं धारा में एक विधान जोड़ा गया है, जिसके अनुसार उन लोगों को दण्ड दिया जा सकेगा, जो अनधिकृत इश्तहारों और समाचार-पत्रों का प्रचार करते हैं।

(२) प्रेसों से ४थी धारा के अनुसार जो ज़मानत ली जायगी, उसका केवल कुछ ही अंश ज़ब्त करने के निर्णय का अधिकार प्रान्तीय गवर्नमेण्टों को दिया गया है।

(३) १६वीं धारा में जो परिवर्तन हुआ है, उसके अनुसार निश्चित श्रेणी के व्यक्तियों को विरोधपूर्ण ख़बरों का प्रचार रोकने और उन्हें छीनने का अधिकार दिया गया है।

—जलगाँव ताल्लुक़े की कॉङ्ग्रेस कमिटी के पाँचवें डिक्टेटर श्री वैद्य उस समय गिरफ़्तार कर लिए गए, जब वे एक सभा में चौथे डिक्टेटर को ६ माह की सज़ा होने पर बधाई दे रहे थे। श्री० वैद्य ने स्वयं अपने को पाँचवाँ डिक्टेटर घोषित किया और पुलिस से कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस की चाबी अपने सेक्रेटरी को देने की प्रार्थना की। चाबी न देने पर वे कॉङ्ग्रेस का ताला खोलने के लिए सेक्रेटरी के साथ आगे बढ़े और गिरफ़्तार कर लिए गए।

—अजमेर की जेल में राजनीतिक क़ैदी लक्ष्मीनारायण की हालत अत्यन्त चिन्ताजनक है। कहा जाता है कि उसने कालकोठरी में जहाँ वह पाँच दिन से क़ैद है, पाख़ाना-पेशाब तक बन्द कर लिया है। मालूम हुआ है कि एक दूसरे राजनैतिक क़ैदी जमालुद्दीन मन्सूर ने भी अनशन प्रारम्भ कर दिया है।

—बम्बई की खिलाफ़त कमीशन एजेण्ट्स एसोसिएशन ने शोलापुर के अभियुक्तों को, जिन्हें फाँसी की सज़ा दी गई है, क्षमा प्रदान करने की अपील की है।

अफ़ग़ानिस्तान के देशभक्त सम्राट (भूतपूर्व) अमानुल्ला ख़ाँ

—लन्दन के 'डेली हेरल्ड' का पेशावर-स्थित सम्वाददाता लिखता है, कि अमानुल्ला को फिर काबुल की गद्दी पर बिठाने की कोशिशें की जा रही हैं। सुलेमान खेल नामक स्थान के अफ़ग़ानी सम्राट नादिरशाह के विरुद्ध हो गए हैं, और वे नादिरशाह से मोरचा लेने की तैयारी कर रहे हैं। वहाँ के गवर्नर ने गर्देज़ में अफ़ग़ानों की जो जिर्गा की थी, उसमें लोगों ने साफ़ तौर से अमानुल्ला के प्रति सहानुभूति दिखाई थी। अफ़ग़ान लोगों का कहना है, कि अमानुल्ला के बाद उनके छोटे भाई इनायतुल्ला को गद्दी मिलनी चाहिए थी। नादिर ख़ाँ ज़बरदस्ती शासक बन बैठा है।

—उन ४७ व्यक्तियों का मामला, जो २९ सितम्बर को चिरनेर के गोलीकाण्ड के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, कल पानवेल स्पेशल मैजिस्ट्रेट मि० सोनलकर की अदालत में पेश हुआ। अभियुक्तों पर दण्ड-विधान की ३०२वीं धारा (हत्या) और १४७वीं-१४८वीं और ३९५वीं धाराओं (डकैती) का अभियोग लगाया गया है। मैजिस्ट्रेट ने दो अभियुक्तों को ज़मानत पर छोड़ने की प्रार्थना रद्द कर दी है। गवाहों में पहला सर्किल-इन्सपेक्टर था, जिसने घटनास्थल का नक़शा, बहुत से पञ्चनामे और ख़ाली कारतूस पेश हुए। फ़ॉरेस्ट रेञ्जर शिवराम की गवाही हो चुकने पर मामला दूसरी तारीख़ के लिए स्थगित कर दिया गया।

—मनीपुरी का समाचार है कि श्रीमती जीवलाल दुबे को एक साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई। श्रीमती जी 'सी' श्रेणी में रक्खी गई हैं, किन्तु उनके पति श्रीयुत जीवलाल दुबे 'ए' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—मनीपुरी के रईस श्रीयुत बोहरे किसोरीलाल, जो ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के ख़ज़ानची थे, गत १८ वीं दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए। शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई गई। जुलूस भी निकाला गया।

—कानपुर ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिक्टेटर' पण्डित रामलाल पाण्डे १७ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—लुधियाना का समाचार है कि गत १६वीं दिसम्बर को श्रीमती सरस्वती देवी को, जो एक सिविल इञ्जीनियर की पत्नी हैं, और श्रीमती शान्ति देवी को, पुलिस एक्ट की ३२वीं धारा के अनुसार २५), २५) रु० जुर्माना किया गया। जुर्माना न देने पर उन्हें एक-एक माह की क़ैद की सज़ा भोगनी पड़ेगी।

—१८ दिसम्बर को नई दिल्ली के ६ स्वयंसेवक तथा पुरानी दिल्ली की ८ महिलाएँ शराब की दूकान पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार की गईं।

बम्बई की श्रीमती विद्यागौरी पुरुषोत्तमदास फ़ाडिया, जो हाल ही में विलेपार्ले में गिरफ़्तार हुई हैं।

—केरल प्रान्त की 'युद्ध-समिति' के डिक्टेटर श्रीयुत माधवन तथा अन्य तीन नेताओं को, जो कि १३ दिसम्बर को कलेक्टर की आज्ञा के विरुद्ध जुलूस निकालने तथा सभा करने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, छः-छः महीने की कड़ी सज़ा दी गई है।

—पटना के एक उत्साही और प्रधान कार्यकर्ता श्रीकृष्ण सिंह को ग़ैर-क़ानूनी जुलूस निकालने का प्रोत्साहन देने के अपराध में, तारीख़ १८ दिसम्बर को १ साल की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है।

—बेलगाँव की ख़बर है कि १७ वीं दिसम्बर को वहाँ के ४२ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए। १८ तारीख़ को ४१ स्वयंसेवकों का एक जत्था प्रभात फेरी देने के अपराध में भी गिरफ़्तार किया गया है।

—तामलुक (बङ्गाल) से ख़बर आई है कि वहाँ के बहुत से स्वयंसेवक नमक बनाने के अपराध में १८ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए हैं।

—गत १६वीं दिसम्बर को, लखनऊ कॉङ्ग्रेस कमिटी के एक प्रधान कार्यकर्ता श्रीयुत कृष्णकुमार श्रीवास्तव दो अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ गिरफ़्तार कर लिए गए।

—ख़बर है कि लगानबन्दी के सम्बन्ध में इटावे में ५० गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। विदेशी वस्त्रों पर पिकेटिङ्ग करने के सम्बन्ध में भी वहाँ ३०० गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—अमृतसर में जो ५ महिलाएँ गिरफ़्तार की गई थीं, उनके सम्बन्ध में विशेष जाँच करने पर मालूम हुआ है कि वे बाज़ारों में जाकर लोगों से विदेशी वस्त्र परित्याग करने के लिए कह रही थीं। फल-स्वरूप कुछ लोगों ने अपने विदेशी कपड़े के साफ़े उन्हें दे डाले।

एक सप्ताह में यू० पी० में ४७५ गिरफ़्तारियाँ

तारीख़ १७वीं दिसम्बर को बनारस से ख़बर आई है कि इस सप्ताह वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में संयुक्त प्रान्त में ४७५ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, गिरफ़्तारियों की कुल संख्या ६,११२ तक पहुँच गई है।

श्री० रामदास गाँधी फिर गिरफ़्तार

सूरत का १६वीं दिसम्बर का समाचार है कि महात्मा गाँधी के पुत्र श्रीयुत रामदास गाँधी, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। मदवाद गाँव में एक भाषण देने और ग़ैर-क़ानूनी नमक बेचने के सम्बन्ध में आपकी गिरफ़्तारी हुई है।

पुलिस की गोलियों के शिकार

सारन ज़िले के मोर थाने में जो गोली चली थी, उसके सम्बन्ध में ख़बर है कि आहतों में से ३ दूसरा अस्पताल में मर गए। १० मनुष्यों की अवस्था नाज़ुक है!

एक सत्याग्रही का बलिदान

लाला लालूराम, पञ्जाब के मान्टगोमरी-जेल में ६ दिनों के अनशन के बाद स्वर्ग सिधार गए। उनकी मृत्यु के विषय में गवाही देते हुए, उसी जेल से छूटे हुए स्वामी पूर्णानन्द ने कहा है, कि लाला लालूराम ने जेल के कष्टों के कारण अनशन किया था। वे धार्मिक प्रवृत्ति के आदमी थे। वे रोज़ अपनी छोलदारी में ईश-प्रार्थना किया करते थे। नए जेलर के आने पर वह छोलदारी उतार ली गई। यही उनके अनशन का कारण था। अनशन करने पर उन्हें कालकोठरी में डाल दिया गया। वहाँ अनशन और कठोर शीत के कारण अकड़ कर उन्होंने प्राणान्त कर दिया।

बङ्गाल के मुस्लिम-कवि गिरफ़्तार

बङ्गाल के प्रतिष्ठित मुस्लिम कवि क़ाज़ी नज़रुल-इस्लाम को १६वीं दिसम्बर को ६ मास की कड़ी सज़ा दी गई है। आपने "प्रलय-शिखा" नामक एक पुस्तक लिखी है। मैजिस्ट्रेट ने कहा कि यह पुस्तक राज विद्रोहात्मक है और नवयुवकों को सरकार के विरुद्ध उभाड़ने की दृष्टि से लिखी गई है।

इन महिलाओं ने वहीं पर उनमें आग लगा दी। ख़बर पाकर पुलिस के एक सब-इन्स्पेक्टर वहाँ आ पहुँचे, और अपनी छड़ी से आग बुझाने का यत्न करने लगे। किन्तु संयोगवश स्वयं उनके साफ़े में आग की एक चिनगारी जा लगी। इन्स्पेक्टर साहब ने इन महिलाओं को तथा कुछ अन्य लोगों को पुलिस-एक्ट की ३४वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया।

—रोहतक का समाचार है कि पण्डित श्रीराम शर्मा को, जो कॉङ्ग्रेस के एक मुख्य नेता और अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य हैं—८ महीने के मामले के बाद, गत १५ दिसम्बर को दो अभियोगों पर डेढ़ साल की क़ैद और १००) जुर्माने की सज़ा दी गई है।

—हवड़ा का समाचार है कि कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्रीयुत कार्तिकचन्द्र दत्त गत २०वीं दिसम्बर को, एक पार्क में टहलते समय गिरफ़्तार कर लिए गए। आप हाल ही में ६ महीने की सज़ा भोग कर छूटे थे। आपके साथ दो स्वयंसेवक भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—लायलपुर का समाचार है कि बाल-भारत-सभा के अध्यक्ष मास्टर मङ्गललाल को ४ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। उन्हें ३ साल के लिए रिफ़ॉरमेटरी में भेजने की आज्ञा दी गई है।

—लायलपुर का एक समाचार है कि गोजरा के डिक्टेटर श्रीयुत चुन्नीलाल को गत १८वीं दिसम्बर को ३ माह की कड़ी क़ैद और ३० रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है।

बम्बई की श्रीमती लक्ष्मीबाई गिरधरलाल हेमदेव—जिन्हें विदेशी वस्त्रों की दूकान पर धरना देने के अपराध में ४ मास का दण्ड प्रदान किया गया है।

—मङ्ग का समाचार है कि वहाँ गत १७वीं दिसम्बर को, एक १४ वर्ष के लड़के को मैजिस्ट्रेट ने एक साल की क़ैद की सज़ा दी है।

—लुधियाना में पुलिस-एक्ट की ३२वीं धारा काम में लाई जा रही है। गत २० दिसम्बर को वहाँ ८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए जिनमें ४ महिलाएँ थीं। २१ दिसम्बर को फिर ४ महिलाएँ, विदेशी वस्त्र के बहिष्कार के सम्बन्ध में गिरफ़्तार की गईं। इनमें चौथी महिला वहाँ के प्रसिद्ध कवि श्री० अकबर की माता थीं।

—सूरत का २१वीं नवम्बर का समाचार है कि रण्डेर कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्रीयुत मङ्गलभाल कल्याणभाई, अपने हाल के दिए गए भाषण के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बुलन्दशहर का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ ४ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर लिए गए हैं गिरफ़्तार किए जाने वालों में, खुर्जा कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्रीयुत बालमुकुन्द गुप्त वकील, श्रीयुत आनन्द स्वरूप बिस्मिल के पिता और बहिन तथा वहाँ के म्युनिसिपल कमिश्नर पं० बालचन्द्र हैं।

—लुधियाना का २०वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीमती शान्तिसागर तथा कुछ अन्य लोग गिरफ़्तार कर एक मोटर लॉरी में कोर्ट पहुँचाए गए। पाँच बजे शाम को वे प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट मि० घोष के सामने पेश की गईं, जिन्होंने उन्हें ज़मानत पर छोड़ने की अनुमति दे दी। किन्तु उन्होंने ज़मानत देना अस्वीकार किया। अब वे ज़िला मैजिस्ट्रेट के सामने पेश की जायँगी।

मुज़फ़्फ़रनगर के वकील श्री० ब्रह्मप्रकाश शर्मा, एम० एस-सी०, एल्-एल्० बी०, जिन्हें ६ मास का कारावास और ५०) रु० जुर्माने की सज़ा हुई है।

भीड़ पर घोड़े दौड़ाए गए

गत १८वीं दिसम्बर को कलकत्ते में ८० स्वयंसेवकों और २९ महिलाओं ने धरना दिया। एक मुसलमान व्यापारी के शिकायत करने पर एक गोरे सर्जेण्ट ने उन स्वयंसेवकों पर डण्डे बरसाए। कई स्वयंसेवक घायल हुए और १९ गिरफ़्तार किए गए। इस पर वहाँ बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। कहा जाता है कि पुलिस ने भीड़ पर घोड़े दौड़ाए।
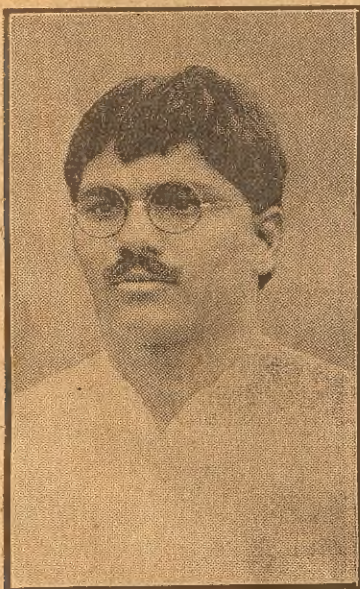
देहरादून के श्री० एम० त्यागी, जिन्हें बिजनौर के एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने १०८ वीं धारा के अनुसार एक वर्ष का कारावास दण्ड प्रदान किया है।

—कानपुर कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्री श्रीमती शान्तादेवी को इटावा के मैजिस्ट्रेट ने ३ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। आप इटावा जेल में रक्खी गई हैं।

शहर और ज़िला

इलाहाबाद में विद्यार्थी कॉन्फ़्रेन्स

इलाहाबाद में २१वीं दिसम्बर को 'विद्यार्थी-समिति' की अध्यक्षता में और श्री० पुरुषोत्तमदास जी टण्डन के सभापतित्व में विश्वम्भर पैलेस में एक सभा हुई थी।

कॉन्फ़्रेन्स ने एक प्रस्ताव द्वारा गवर्नमेण्ट के शिक्षा-संस्थाओं की सहायता बन्द करने के कार्य का विरोध किया। कॉन्फ़्रेन्स की सम्मति में गवर्नमेण्ट को संस्थाओं की सहायता बन्द करने का कोई अधिकार न था, क्योंकि विद्यार्थियों के माता-पिता टैक्स देते हैं और उन्हें अपनी संस्थाओं का ख़र्च माँगने का तथा अपने कार्य-स्वातन्त्र्य की रक्षा का पूर्ण अधिकार है। एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा कॉन्फ़्रेन्स ने यू० पी० की महिला शिक्षा-समिति के उस कार्य का विरोध किया, जिसमें श्रीमती उमा नेहरू से कॉलेज की सहायक मन्त्रिणी के पद से इस्तीफ़ा देने की प्रार्थना की गई है। एक तीसरे प्रस्ताव में शिक्षकों और विद्यार्थियों को यह चेतावनी दी गई है, कि यदि वे भविष्य में स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग न करेंगे, तो उन पर पिकेटिङ्ग किया जायगा। विद्यार्थियों ने यह भी निश्चय किया, कि बड़े दिनों की छुट्टियों के बाद ६ जनवरी को हर एक संस्था पर फिर से राष्ट्रीय झण्डा फहराया जाय।

अन्त में श्री० पुरुषोत्तम दास टण्डन ने एक जोशीली वक्तृता दी, जिसमें उन्होंने इस सिद्धान्त का घोर विरोध किया कि 'विद्यार्थियों को राजनीति में भाग न लेना चाहिए।' उन्होंने दूसरे देशों के इतिहास की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, कि किसी देश ने बिना युवकों और विद्यार्थियों की सहायता के उन्नति नहीं की। उन्होंने कहा कि किसी भी दृष्टि से देखा जाय शिक्षा राजनीति से अलग नहीं जा सकती। 'इलाहाबाद यूनीवर्सिटी मेगज़ीन, में प्रकाशित इस विचार की, कि 'यूनीवर्सिटी के अन्दर शान्ति और आराम होना चाहिए' विवेचना करते हुए आपने कहा कि यूनीवर्सिटी क़ब्र, सिविल हस्पताल या ऋषियों की कुटी नहीं है, जहाँ 'शान्ति और आराम' की आवश्यकता पड़ती है। यूनीवर्सिटी वह मैदान है, जहाँ युवकों को जीवन के आदर्श बनाने की शिक्षा दी जाती है। शिक्षा का उद्देश्य 'शान्ति और आराम' नहीं, बल्कि दृष्टिकोण को दूरदर्शी बनाना और आत्मा का उद्धार करना है। साधारण समय में विद्यार्थियों को अध्ययन और मनन में ही अपना समय व्यतीत करना चाहिए। परन्तु असाधारण समय में तो उन्हें अपना क्रम बदल कर कार्यक्षेत्र में कूद पड़ना चाहिए।

राष्ट्रपति की सास को ६ माह की क़ैद

नई दिल्ली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ दो पुरुष और ९ महिला स्वयंसेविकाओं को, जिनमें पं० जवाहरलाल की सास श्रीमती राजपति कौल भी सम्मिलित हैं—६-६ महीने की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्रीमती राजपति कौल 'ए' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

—लाहौर का समाचार है कि गत १८वीं दिसम्बर को 'वन्देमातरम्' के सम्पादक लाला ठाकुरदास गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तारी १० दिसम्बरके 'भगतसिंह' नामक एक अग्रलेख के सम्बन्ध में हुई है। उन पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया है।

—इलाहाबाद के एक १६ वर्षीय नवयुवक पण्डित कमलनारायण मालवीय १८ दिसम्बर को राज-विद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए।

* * *

—इस साल की मर्दुमशुमारी से पता चलता है कि इङ्गलैण्ड में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या १९ लाख अधिक है। सन्, १९२४ की मर्दुमशुमारी में स्त्रियों की संख्या पुरुषों की अपेक्षा १९ लाख अधिक थी।

—पेशावर का समाचार है कि काबुल के बादशाह नादिरशाह ने बच्चा-सक्का के ४१६ साथियों को छोड़ दिया है। इन लोगों ने बादशाह के विरुद्ध ग़दर करने का प्रयत्न किया था। इनके मुखिया को फाँसी दी जा चुकी है।

लङ्काशायर में हड़ताल की सम्भावना

आगामी ५ जनवरी से लङ्काशायर की मिलों में एक नई प्रणाली शुरू की जाने वाली है, जिसके अनुसार हर एक मज़दूर को अधिक करघों का निरीक्षण करना पड़ेगा। सुनते हैं कि वहाँ के मज़दूर इस प्रबन्ध से बहुत असन्तुष्ट हैं और यदि ठीक समझौता न किया गया, तो इससे विकट हड़ताल हो जाने की सम्भावना है। यह नया प्रबन्ध वर्तमान औद्योगिक शिथिलता के कारण किया गया है।

अमेरिका के बैङ्कों का दिवाला

वर्तमान औद्योगिक शिथिलता के कारण अमेरिका के कई बैङ्कों का दिवाला निकल गया है। हाल ही में ख़बर आई है कि १६वीं दिसम्बर को १९ बैङ्क और बन्द हो गए।

—पण्डित हृदयनाथ कुञ्ज़रू, जो कि दक्षिण आफ़्रिकावासी भारतीयों के अधिकारों का समर्थन करने के लिए विलायत गए हुए हैं, १६ दिसम्बर को लन्दन पहुँच गए।

इङ्गलैण्ड में फाँसी की सज़ा उठाने का प्रयत्न

लन्दन का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की उस कमिटी ने, जो फाँसी के दण्ड पर विचार कर रही थी, इस बात की सिफ़ारिश की है कि ५ वर्षों के लिए वहाँ से फाँसी की सज़ा एकदम रोक दी जाय। यदि पार्लामेण्ट पूर्णतया मृत्यु-दण्ड उठाना स्वीकार न करे, तो कम से कम २१ वर्ष से नीचे के व्यक्ति को फाँसी कदापि न दी जाय और स्त्री अपराधियों के प्रति विशेष दया दिखाई जाय। उसने सम्राट से भी इस बात की प्रार्थना करने का विचार किया है, कि वे ऐसे अपराधियों के प्रति विशेष दया दिखाया करें।

—'सण्डे डिस्पैच' को विश्वस्त-सूत्र से पता लगा है कि लॉर्ड विलिङ्गडन, अपनी वृद्धावस्था के कारण, अस्थायी रूप से वायसराय के पद पर आ रहे हैं। तो भी यह आशा की जाती है कि भारत की दशा सुधरने तक वे अवश्य यहाँ रहेंगे।

—लन्दन से २१वीं दिसम्बर को मौलाना मुहम्मद अली की सख़्त बीमारी के समाचार आए हैं। उनकी वर्तमान दशा चिन्ताजनक है। उनकी स्त्री और मौलाना शौकत अली उन्हीं के साथ हाईड पार्क होटल में ठहरे हुए हैं। बाद का समाचार है कि मौलाना साहब की तबीयत कुछ सुधरी है, किन्तु तो भी हालत ख़तरनाक है।

* * *

—"हिन्दुस्तान टाइम्स" ने अपनी ज़ब्त की हुई २०००) रुपयों की ज़मानत के विषय में जो अपील की थी वह १९ दिसम्बर को लाहौर हाईकोर्ट ने ख़ारिज कर दी।

—पश्चिम भारतीय लिबरल सङ्घ ने शोलापुर के अपराधियों को क्षमा प्रदान करने के विषय में १९ दिसम्बर को बम्बई में एक प्रस्ताव पास किया है। इस प्रस्ताव की नक़ल वाइसराय को भेज दी गई है।

बम्बई में "मोतीलाल-दिवस"

१९ दिसम्बर को बम्बई के निवासियों ने "मोतीलाल-दिवस" मनाया था। शहर में कई जुलूस निकाले गए जिनमें फूलों से सुसज्जित पण्डित जी की तस्वीर निकाली गई। हिन्दू तथा जैन मन्दिरों में पूजा-पाठ तथा प्रार्थनाएँ की गईं; और आज़ाद मैदान में पण्डित जी के आरोग्य के लिए प्रार्थना की गई। बम्बई की सारी जनता ने इस में भाग लिया।

श्रीयुत पटेल मेज़ से नीचे गिर पड़े

कोयम्बटूर की ख़बर है कि १९वीं दिसम्बर को, जब वहाँ के सिविल सर्जन श्रीयुत पटेल का निरीक्षण कर रहे थे तब अकस्मात श्रीयुत पटेल टेबल पर से नीचे गिर पड़े। कहा जाता है कि श्रीयुत पटेल एक मेज़ के ऊपर लिटाए गए थे जो कि ३॥ फ़ीट ऊँची थी। अकस्मात मेज़ के सिरहाने का टुकड़ा टूट गया और श्रीयुत पटेल नीचे गिर पड़े। आपको विशेष चोट नहीं आई, पर इससे आप को धक्का बहुत लगा।

सत्याग्रही किसानों को पठानों की धमकी

—अहमदाबाद की ख़बर है कि बोरसद ताल्लुक़े के उन किसानों पर, जोकि अपनी ज़मीन छोड़ कर अब बरोदा स्टेट के विश्रामपुरा गाँव में जा बसे हैं, कुछ पठानों ने धावा किया। इन किसानों की ज़ब्त की हुई ज़मीन को इन पठानों ने सरकार से ख़रीदा है। पर इन किसानों ने अपने खेतों का अन्न काट लिया था, इस पर उन्होंने उनको धमकाया और हवा में गोलियाँ भी चलाईं। इस पर बहुत सी भीड़ इकट्ठी हो गई और सब पठान वहाँ से भाग गए।

—१७ दिसम्बर को कानपुर की १६ महिलाएँ, जो पिकटिङ्ग के अपराध में गिरफ़्तार की गई थीं, सज़ा भुगत कर जेल से रिहा हो कर आईं। लोगों ने सन्ध्या को उन्हें जुलूस बना कर घुमाना निश्चय किया। जुलूस घूम कर जब माल रोड की ओर बढ़ा तो पुलिस ने उसे रोक दिया। कुछ समय बाद उन्होंने रिहा की हुई महिलाओं को जाने दिया। और सब लोग वहाँ से जबरन हटा दिए गए।

—विदेशी वस्त्र-बहिष्कार के सम्बन्ध में १६ दिसम्बर को लखनऊ की महिलाओं ने चूड़ी-दिवस मनाया। शहर के मुहल्लों में महिला स्वयं सेविकाओं ने चक्कर लगाया और घर-घर विदेशी वस्त्र बहिष्कार के प्रतिज्ञा-पत्रों पर हस्ताक्षर कराए। जो हस्ताक्षर करने से इनकार करता था उन्हें वे चूड़ियों का उपहार देती थीं!

—ख़बर है कि बाबूराव गेनू की मृत्यु के सम्बन्ध में, गत १६ दिसम्बर को बनारस में हड़ताल मनाई गई। एक जुलूस भी इस सम्बन्ध में निकाला गया था।

—सुना जाता है कि इस हफ़्ते के अन्त तक पण्डित मोतीलाल जी नेहरू इलाहाबाद वापस आ जावेंगे।

पण्डित मालवीय जेल से रिहा कर दिए गए

महामना पं० मदनमोहन जी मालवीय

२३वीं दिसम्बर की रात्रि को पण्डित मदनमोहन मालवीय को पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट ने इलाहाबाद यूरोपियन सिविल हस्पताल में गवर्नमेण्ट का निर्णय सुनाया, जिसके अनुसार उनकी लगभग दो मास की सज़ा रद्द कर दी गई थी और उन्हें बीमारी के कारण शीघ्र ही रिहा कर देने की आज्ञा दी गई थी।

कहा जाता है पण्डित मालवीय की सब शिकायतें दूर हो गई हैं और उन्हें उसी समय घर जाने की आज्ञा दे दी गई थी, परन्तु सर्दी अधिक पड़ने के कारण उनके पुत्र पण्डित रमाकान्त मालवीय ने उन्हें रात्रि में घर ले जाना उचित न समझा। इसलिए वे २४ तारीख़ को सवेरे मोटर पर घर गए।

—ख़बर है कि गत १८वीं दिसम्बर को, दैनिक 'तेज' के डाइरेक्टर श्रीयुत देशबन्धु गुप्त के मकान की और 'तेज' के प्रेस तथा ऑफ़िस की तलाशी ली गई। कोई सन्देहजनक वस्तु प्राप्त नहीं हुई।

—बम्बई का समाचार है कि वहाँ के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने उन लोगों के लिए, जिन्हें गत दङ्गे से हानि पहुँची थी, ७,५४,७१० ० की स्वीकृति दी है। ये रुपए 'बी' 'सी' और 'डी' वार्ड के केवल हिन्दुओं और मुसलमानों से वसूल किए जायँगे। सरकारी नौकर और वे लोग जिन्हें सरकार की ओर से उपाधियाँ मिली हैं, इस अतिरिक्त कर से बचा दिए गए हैं।

—दिल्ली का १८ वीं नवम्बर का समाचार है, कि श्रीयुत खड्गबहादुर सिंह नैपाली, सिटी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। उनके विरुद्ध अभियोग यह था, कि उनके पास सरकार द्वारा ज़ब्त पुस्तिकाएँ प्राप्त हुई थीं, जिन्हें वे बाँटना चाहते थे। इसके अतिरिक्त कॉङ्ग्रेस की सहायता के लिए उन्होंने गुर्खों का एक स्वयंसेवक दल भी तैयार किया था। ८ गवाह पेश किए गए थे।

पञ्जाब सरकार को एक करोड़ की हानि

पञ्जाब सरकार के सामने एक कठिन समस्या उपस्थित है। उसे १ करोड़ रुपयों का घाटा सहना पड़ा है। कहा जाता है कि १० फ़ी सदी कर की आमदनी बन्द हो जाने से ही यह घाटा हुआ है।

इसकी पूर्ति के लिए अतिरिक्त कर लगाना सम्भव नहीं है। अतएव इस घाटे की पूर्ति कुछ तो व्यय घटा कर की जायगी और कुछ प्रान्तीय लोन फ़ण्ड से ऋण लेकर की जायगी। गेहूँ और कपास की दर घट जाने से जो आर्थिक हानि हुई है, उसे भी पूरी करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

काश्मीर में अनिवार्य शिक्षा

काश्मीर दरबार ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसमें लिखा है, कि पार साल जो काश्मीर नरेश ने काश्मीर के सब शहरों में अनिवार्य तथा मुफ़्त शिक्षा देने की घोषणा की थी उसके अनुसार श्रीनगर, ऊधम पुर, मीरपुर तथा मीरपुर की म्युनिसिपैलिटियों ने मुफ़्त अनिवार्य शिक्षा देना आरम्भ कर दिया है। अब बारामुल्ला भी इसका कार्य शुरू करेगा।

डॉक्टर महमूद रिहा कर दिए गए

१८वीं दिसम्बर की शाम को भारतीय कॉङ्ग्रेस के सेक्रेटरी डॉक्टर महमूद नैनी जेल से छोड़ दिए गए। जेल में जाने से आप का वज़न २३½ पौण्ड घट गया है। आप ने देश के लिए यह सन्देश दिया है।—"आगे बढ़े चलो, संशय दूर करो। अब अन्तिम प्रयत्न का अवसर है। वीर ही विजय पाते हैं।"

कानपुर में अतिरिक्त पुलिस

ख़बर है कि युक्त प्रान्त के गवर्नर ने इस बात की घोषणा की है, कि कानपुर ज़िले के निम्नलिखित स्थानों में, सन् १८६१ की पुलिस एक्ट के अनुसार, पुलिस की संख्या तीन महीने के लिए बढ़ा दी जाय। (१) कानपुर सिटी (२) पुलिस सर्किल नरवाल (३) पुलिस सर्किल बिल्हौर के अन्तर्गत—बिल्हौर, डुण्डुआ और सैवासु तथा भोगनीपुर पुलिस सर्किल के अन्तर्गत, गौरी खारन। पुलिस की संख्या बढ़ाने का कारण वहाँ की जनता का सरकार के प्रति असन्तोषजनक व्यवहार कहा जाता है।

—सेठ मक्खनलाल जो धरसाना नमक-सत्याग्रह के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, जेल से छूट कर गत १७वीं दिसम्बर को अहमदाबाद पहुँच गए।

—मैमनसिंह के मैजिस्ट्रेट ने वहाँ के श्री० हेमेन्द्रचन्द्र घोष फ़क़ीरचन्द दास गुप्त, आदि ९ नेताओं के नाम एक आज्ञापत्र निकाला है, जिसमें उन्हें मैमनसिंह के म्युनिसिपल टाउन में, भाषण देने या वर्तमान आन्दोलन में किसी प्रकार भाग लेने की मनाही की गई है।

—इलाहाबाद के ऐरोड्रोम के लिए एक हिन्दुस्तानी अधिकारी श्रीयुत शिवसुब्रह्मण्यम नियुक्त हुए हैं। आप को भारत की सरकार ने वायुयान-शिक्षा के लिए लन्दन भेजा था। आप दो वर्ष की शिक्षा के बाद हाल ही में लौट कर आए हैं।

—बारीसाल के कॉङ्ग्रेस नेता श्री० रजनीकान्त चटर्जी गत १८वीं दिसम्बर को दमदम जेल से छोड़ दिए गए।

—गत १७ वीं दिसम्बर को अहमदाबाद की महिलाओं ने वहाँ की कुछ दूकानों पर फिर धरना दिया। कहा जाता है कि उन दूकानों के मालिकों ने, अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध फिर विदेशी कपड़ा बेचना आरम्भ कर दिया था। इन महिलाओं के दिन भर अनशन करने और धरना देने के बाद उन व्यापारियों ने क्षमा माँग ली। कुछ ने जुर्माने भी दिए। सबों ने फिर विदेशी वस्त्र न बेचने की प्रतिज्ञा की। एक व्यापारी ने, जिसने विदेशी कपड़े की नई दूकान खोली थी, उस दूकान को बन्द कर देने की प्रतिज्ञा की।

गोलमेज़ परिषद का भण्डाफोड़; वह केवल एक स्वाँग है

फ़्री प्रेस का विशेष सम्वाददाता लन्दन से लिखता है कि, हिन्दू-मुस्लिम समझौता अभी तक नहीं हो सका है। अब लोग समझ गए हैं कि कॉन्फ्रेन्स से कोई आशा करना व्यर्थ है। किन्तु प्रतिनिधि लोग चाहते हैं कि यह भण्डा फूटने न पाए। लोग यह न समझें, कि वे ख़ाली हाथ लौट आए; इसलिए वे कुछ न कुछ लेकर ही लौटना चाहते हैं। उनका कहना है कि यदि प्रधान-मन्त्री हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल न करेंगे, तो लोग यह समझेंगे कि, परिषद केवल एक स्वाँग थी और कुछ नहीं।

यदि कुछ सप्ताहों के अन्दर, भारत को पूर्ण स्वाधीनता नहीं मिली, तो इस धारणा पर पक्का रङ्ग चढ़ जायगा कि उसे उसका अंश भी नहीं मिला। मि० मैकडॉनल्ड ने एक योग्य सभापति की तरह, और सभी कुछ किया है, कमिटियाँ बनाई हैं, भाषण दिए हैं, दावतें दी हैं, किन्तु केवल एक बात उन्होंने नहीं की है। सरकार का रुख़ क्या है, यह वे शायद नहीं बताना चाहते। 'मैनचेस्टर गार्जियन' का कहना है कि जब तक मि० रेमज़े मैकडॉनल्ड प्रधान-मन्त्री की हैसियत से कोई निश्चित उत्तर न देंगे; तब तक गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में चख़-चख़ मचती ही रहेगी। बर्मा के विषय में जो बातें तय हो चुकी थीं, वह भी रद्द कर दी गई हैं। बात असल यह है कि बिना कुछ लिए, वे कुछ देना भी नहीं चाहते।

ज़मींदारों का अत्याचार

समाचार है कि मरवल येन्द्र के ज़मींदार किसानों के प्रति अत्यन्त निर्दयता का व्यवहार कर रहे हैं। वहाँ की सत्याग्रह समिति ने ज़मींदारों को व्यर्थ छेड़ना उचित नहीं समझा था। किन्तु ज़मींदार अब जामें से बाहर हुए जा रहे हैं। हाथे नामक गाँव के एक ज़मींदार ने एक किसान को इतना मारा है कि उसकी पसली टूट गई। उसकी अवस्था नाज़ुक है। रामपुर के एक ज़मींदार ने भी इसी निर्दयता से एक किसान को पीटा है। उसकी भी अवस्था चिन्ताजनक है। इस प्रकार की एक नहीं, कितनी ही घटनाएँ सुनने में आ रही हैं।

—एक राजनैतिक क़ैदी, जो हाल ही में बर्दपुर जेल से छूट कर आया है, का कहना है कि वहाँ के राजनैतिक क़ैदियों को बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें भोगनी पड़ रही हैं। ऐसे जाड़े के मौसम में भी केवल एक कम्बल बिछाने और एक ओढ़ने के लिए दिया जाता है। कलकत्ता कॉरपोरेशन के सदस्य श्रीयुत विपिन बिहारी गाँगुली जैसे व्यक्ति को भी इन तकलीफ़ों का सामना करना पड़ रहा है। इनके फलस्वरूप कितने ही सर्दी, खाँसी, इन्फ़्लुअंज़ा आदि अनेक बीमारियों से पीड़ित हो रहे हैं। जेल के अधिकारियों ने सभी तीसरी श्रेणी के क़ैदियों के साथ जेल की पोशाक पहनने के लिए सख़्ती की है।

—अजमेर का समाचार है कि गत १७ वीं दिसम्बर को सवेरे, पं० अर्जुनलाल सेठी के मकान की तलाशी क़रीब दो घण्टे तक ली गई। पण्डित जी इस समय अजमेर जेल में हैं।

—गत हिन्दू-मुस्लिम दङ्गे में ढाका के वकील बाबू प्रफुल्लकुमार बोस की हत्या करने तथा उनकी लाश छिपाने के अपराध में, सय्यदअली और मज़ीबुर्रहमान नामक दो मुसलमान अभियुक्त सेशन सुपुर्द किए गए हैं। ढाका सेशन जज के सामने जो ६ मुसलमान आग लगाने और दङ्गा करने के अपराध में पेश किए गए थे, उनमें दो को छोड़ कर, शेष को १॥ वर्ष से लेकर २ वर्ष तक की कड़ी क़ैद की सज़ाएँ दी गई हैं।

—दिल्ली २२ वीं दिसम्बर का समाचार है कि यहाँ के शराब की प्रसिद्ध दुकान मेसर्स मोलाराम एण्ड सन्स के सिवा इस दूकान में काम करने वाले कर्मचारियों के मकानों पर भी धरना दिया गया है। नौकर-चाकर या कोई भी उनके मकानों में नहीं जाने पाते। धरना देने का बीड़ा महिलाओं ने उठाया है। ख़बर है कि उस दूकान के एक मुलाज़िम ने इस्तीफ़ा दे दिया है। दूकान पर धरना देने के सम्बन्ध में कुछ गिरफ़्तारियाँ भी हुई हैं। दूकान पर पुलिस का पहरा रहता है।

बिहार के सर्वस्व—बाबू राजेन्द्रप्रसाद रिहा कर दिए गए

पटना का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि बाबू राजेन्द्रप्रसाद हज़ारीबाग़ जेल से, ६ महीने की सज़ा भोगने के बाद छोड़ दिए गए। आप उसी दिन सन्ध्या-समय पटना पहुँच गए।

किसानों ने लगान देने से इन्कार किया

—"ईवनिङ्ग न्यूज़" के पूना के सम्वाददाता की ख़बर से मालूम होता है, कि इचालकरन जी स्टेट के आजरे तालुका के किसानों ने कर देना बन्द कर दिया है। किसानों का कहना है कि जब तक उनकी शिकायतें दूर न की जायँगी, तब तक वे कर नहीं देंगे।

ख़बर है कि स्टेट के अधिकारियों ने किसानों का यह इरादा सुन कर, नोटिसें निकालीं, और उन्हें दबाने का यत्न किया। किन्तु इससे स्थिति और भी अधिक ख़राब हो गई है।

दिल्ली में पुलिस और जनता में मुठभेड़

—१६वीं दिसम्बर को दिल्ली की पुलिस ने कई स्वयंसेवकों को १४४ दफ़ा की अवज्ञा करने के अपराध में गिरफ़्तार किया। जब वे इन स्वयंसेवकों को हवालात की ओर ले जा रहे थे, वहाँ बहुत सी भीड़ इकट्ठी हो गई और जनता और पुलिस में मुठभेड़ हो गई। पुलिस ने जनता पर लाठियाँ चलाईं, जिससे क़रीब १२ मनुष्य घायल हुए हैं।

पुलिस पर गोली चली

सारन (बिहार) के कलेक्टर का कहना है कि मोर थाने में, जब पुलिस एक ग़ैरक़ानूनी सभा को हटा रही थी, उस पर गोली चलाई गई। पुलिस के पास भी बन्दूक़ें थीं और उन्होंने भी गोलियाँ चलाईं। कई पुलिस के सिपाही तथा भीड़ में के मनुष्य घायल हुए।

—ख़बर है कि राँची जेल से अनशन करने वालों को बलपूर्वक भोजन खिलाने की कोशिश की जा रही है। इस बलप्रयोग के कारण, महादेव सुनार और इकलाखी साहु बेहोश हो गए, और वे स्ट्रेचर पर अस्पताल पहुँचाए गए थे। कहा जाता है कि जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट ने अनशन करने वालों को पीटने की धमकी दी है।

—ख़बर है कि गुजरात के जेलों के अधिकारी, जेल के भिन्न-भिन्न वार्डों में ताले लगवा देना चाहते हैं, जिससे राजनैतिक क़ैदी, आपस में भेंट न कर सकें। इस प्रस्ताव की कड़ी आलोचना की जा रही है।

गवर्नमेण्ट पर कॉङ्ग्रेस का आतङ्क

कॉङ्ग्रेस की शक्ति बढ़ रही है, हिंसात्मक क्रान्ति ज़ोर पकड़ रही है।

हाल ही में भिन्न-भिन्न प्रान्तों की राजनैतिक अवस्था पर एक साप्ताहिक सरकारी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, जिसमें कहा गया है कि ऑर्डिनेन्सों की अवधि समाप्त हो जाने से परिस्थिति चिन्ताजनक हो रही है। युक्त प्रान्त में कॉङ्ग्रेस का बल बढ़ता जा रहा है। बिहार और उड़ीसा में पिकेटिङ्ग फिर चिन्ताजनक रूप धारण कर रही है। सी० पी० की अवस्था भी विशेष सन्तोषजनक नहीं है। पञ्जाब में कॉङ्ग्रेस वालों का बल कम है, तो भी सिक्खों का एक दल उत्पात करने पर तुला हुआ है। बङ्गाल की दशा भी असन्तोषप्रद है।

प्रेस-ऑर्डिनेन्स के समाप्त हो जाने से, देशी पत्र भी भयानक रूप धारण कर रहे हैं। प्रेस-ऑर्डिनेन्स के पहले जैसी स्वतन्त्रता से लिखा करते थे, फिर उसी प्रकार लिख रहे हैं।

कलकत्ते में किए गए हत्याओं से पता चलता है कि हिंसावादियों का भी एक दल है; जिसे बाज़ मौक़े पर सफलता मिल जाया करती है। पुलिस उनके अत्याचारों को मिटाने की भरसक कोशिश कर रही है।

दिल्ली जेल में २५० राजनैतिक क़ैदियों का अनशन

श्रीयुत और श्रीमती सेन गुप्ता भी अनशन कर रही हैं

दिल्ली का २२ दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के ज़िला जेल में ४८ महिलाएँ तथा 'ए' और 'बी' श्रेणी के स्त्री-पुरुष क़ैदी अनशन कर रहे हैं। मालूम हुआ है, वहाँ २४ महिलाएँ, साधारण क़ैदियों के साथ रक्खी गई हैं, इसी से अनशन किया गया है। अनशन करने वाली महिलाओं में, श्रीमती सेन गुप्त, पं० जवाहरलाल की सास श्रीमती राजपति कौल आदि प्रतिष्ठित महिलाएँ भी सम्मिलित हैं।

पुरुषों में श्रीयुत सेन गुप्त, के० डी० कोहिली, मौलाना शराफ़त अली, श्री० खड्गबहादुर सिंह आदि २५० के लगभग सज्जन हैं। श्रीमती पन्नाबाई और श्रीमती कौशिल्या देवी की हालत नाज़ुक है। अनेक महिलाओं को क़ै आना शुरू हो गया है। अधिकांश स्त्रियाँ बोल तक नहीं सकती हैं। नगर में इस समाचार से बड़ी सनसनी फैल गई है।

यरवदा जेल में ५०० राजनैतिक क़ैदियों का अनशन

पूना का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि यरवदा जेल के ५०० सत्याग्रही क़ैदियों ने अनशन शुरू कर दिया है। कहा जाता है कि जेल में भोजन बनाने और परोसने का तरीक़ा ठीक नहीं है। इसी का प्रतिवाद करने के लिए वहाँ के सत्याग्रही क़ैदियों ने २०वीं दिसम्बर को भोजन करना अस्वीकार कर दिया।

जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट के कहने-सुनने पर क़रीब आधे क़ैदियों ने रात में भोजन किया। २१वीं दिसम्बर को १०० सत्याग्रहियों ने अनशन तोड़ा है। पर शेष अभी अनशन कर ही रहे हैं। जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट फिर इस विषय की जाँच करेंगे।

—लाहौर का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि पञ्जाब के गवर्नर ने 'असहयोग का वृक्ष और महात्मा गाँधी' नामक चित्र असन्तोष फैलने की आशङ्का से ज़ब्त करने की आज्ञा दे दी है।

(शेष मैटर ७वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

'राष्ट्रीयता के प्रचण्ड वेग को रोकने का व्यर्थ प्रयत्न न करो'

तलवार के बल से भारत पर शासन असम्भव है

महाराजा बीकानेर का मि० चर्चिल को मुँहतोड़ उत्तर

लन्दन में मि० चर्चिल के भाषण के प्रत्युत्तर स्वरूप महाराजा बीकानेर ने १४वीं दिसम्बर को एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि सम्राट, साम्राज्य और भारत की सेवा के भाव से ही प्रेरित होकर रियासतों के और ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधि, देशवासियों के विरोध करने पर भी, बहुत कुछ हानि उठा कर लन्दन आए हैं। विज्ञप्ति का सार नीचे दिया जाता है :—

"हमारा विश्वास है कि इस अवसर पर हमारा सब से बड़ा कार्य यह है कि हम भारत में शान्ति और सन्तोष फैलाने और उसे वैभव सम्पन्न बनाने का भरसक प्रयत्न करें। क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति इस बात पर विश्वास कर सकता है कि भारत का अधिकांश विचारवान जन-समुदाय नौकरशाही के स्थायी आधिपत्य से सन्तोषित रह सकता है या उसे तलवार और पशुबल के सहारे क़ाबू में रक्खा जा सकता है? ऐसे स्वप्न देखना राजनीति और ब्रिटिश उदारता के सर्वथा विरुद्ध है। अत्यन्त गूढ़ विचार के अनन्तर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि हमारे महान उद्देश्य की सिद्धि संयुक्त शासन (Federal constitution) प्रणाली की स्थापना द्वारा ही हो सकती है, जिसमें ब्रिटिश भारत और देशी रियासतें मिल कर एक वृहत भारत का रूप धारण कर लेंगी और दोनों प्रजा मिल कर एक ही से विचारों और कार्यों के सूत्र में बँध जायँगी। इसी महत् उद्देश्य की सिद्धि के लिए रियासतें अपनी सार्वभौम शक्ति का कुछ अंश संयुक्त गवर्नमेण्ट को देने के लिए तैयार हो गई हैं। क्योंकि उन्हें यह विश्वास हो गया है कि इसी प्रकार से वे शासन को सुरक्षित और स्थायी बना सकते हैं और सम्राट, साम्राज्य और देश की सेवा भी कर सकते हैं। हमारे ब्रिटिश-भारत के सहयोगी भी केवल ब्रिटिश भारत के लिए आदर्श शासन-प्रणाली की रचना का विचार त्याग कर विराट भारत का भाग्य निर्माण करने के लिए तैयार हो गए हैं, परन्तु हमसे कहा जाता है कि यदि हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल हो जायँ, तो भारत पर कुछ जङ्गली लोग शासन करने लगेंगे, जो उसका क़र्ज़ अदा करने से इनकार कर देंगे, फ़ौजी हुकूमत द्वारा देश भर में आतङ्क फैला देंगे और इस प्रकार भारत में चीन-जैसे गृह-युद्ध का श्रीगणेश कर देंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि कॉन्फ़्रेन्स में उपस्थित विद्वान प्रतिनिधि कैसे कोई प्रणाली की रचना कर सकते हैं जिसके कारण साम्राज्य का ध्वंस हो जाय। सम्भव है ब्रिटिश व्यापार को आघात पहुँचे और उसका भारत के साथ सम्बन्ध क्षीण हो जाय। परन्तु हर एक देश का अस्तित्व और वैभव जितना आन्तरिक व्यापार पर निर्भर रहता है, उतना बाह्य व्यापार पर नहीं। यदि भारतीय क़र्ज़ अदा करने से इनकार कर दें, तो इसमें भी उन्हीं की क्षति होगी। उनके ऊपर अधिकांश में आन्तरिक क़र्ज़ और ब्रिटिश क़र्ज़ का बोझ है। और सचमुच में जिस समय हमारा सर्वस्व निछावर हो रहा होगा, उस समय हमारी बुद्धि और राजनैतिक योग्यता हमसे बिलकुल कूच न कर जायगी। क्या यह बात तर्कयुक्त है, कि हम अपनी आँखें खोले हुए अपने देश को भट्टी में झोंक दें?

"हमसे यह भी कहा गया है कि यदि भारत की आकांक्षाएँ पूरी करने का प्रयत्न सफल कर दिया जायगा तो ब्रिटेन अपने राज्य-मुकुट में से एक अमूल्य रत्न खो देगा। यदि भारत को खोने का कोई सुगम मार्ग है तो वह एक विदेशी गवर्नमेण्ट के शासन की कोठरी के अन्दर भारतीय राष्ट्र की उन विराट और प्रलयङ्करी शक्तियों को क़ैद करना है, जिनकी

महाराजा बीकानेर

उत्ताल तरङ्गें भयङ्कर लहरें मार रही हैं। कॉङ्ग्रेस को शक्तिशाली बनाने का इससे सरल उपाय नहीं है। यदि इन सङ्कीर्ण विचारों का प्रभाव बना रहा, तो केवल ब्रिटिश साम्राज्य ही अपनी आत्म-हत्या नहीं करेगा, बल्कि भारतीय रियासतों और ब्रिटिश भारत के राज्य-भक्तों को भी अपनी आत्म-हत्या करनी पड़ेगी।

"भारत को साम्राज्य के अन्तर्गत रखने का केवल एक ही मार्ग है, और वह यह है कि ब्रिटिश जनता, अपनी पार्लामेण्ट के सहारे अपने सब भय और सन्देह दूर कर दे और सभ्य और एक बड़े राष्ट्र की दूरदर्शी प्रजा की हैसियत से उसके उन सद्गुणों का अनुभव करे, जिनका बीज उसीने आरोपित किया है। और उसी भाव से प्रेरित होकर, जिससे साम्राज्य के स्तम्भ केनेडा और दक्षिण अफ्रिका को शासनाधिकार दिए थे—भारत में स्थायी रूप से राष्ट्रीय तथा संयुक्त शासन की स्थापना कर भारतीयों को भी सन्तोषित करे।"

* * *

प्रधान-मन्त्री की मलहम-पट्टी

"मि० चर्चिल का भाषण शुरू से अख़ीर तक शैतानी से भरा है:: हम उन्हें अकेला छोड़ देंगे"

लन्दन का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि प्रधान-मन्त्री ने शोडिच-टाउन-हॉल में भाषण देते हुए मि० चर्चिल के भाषण की धज्जियाँ उड़ाई हैं। उन्होंने कहा कि "मि० चर्चिल के कल के भाषण में बुद्धिमत्ता नहीं झलकती। 'हर एक व्यक्ति यह जानता है कि हमने भारतीयों को जो शिक्षा दी है, उन्हें जो राजनैतिक साहित्य—एडमण्ड बर्क के भाषण, मेकॉले के इतिहास, जॉन मॉर्ले के राजनैतिक प्रबन्ध आदि—दिया है, उससे भारतीयों में जातीय, धार्मिक और भाषा सम्बन्धी भेद-भाव होते हुए भी, राजनैतिक जागृति उत्पन्न हो गई है और वे यह जान गए हैं, कि वे उस आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए ही, जो हमारी शिक्षा के कारण उनमें उत्पन्न हो गया है, अधिक शासनाधिकार माँगने के लिए बाध्य हुए हैं। ऐसे समय में, जैसा कि सदैव होता है, ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो बहुत जल्दी आगे दौड़ लगाना चाहते हैं। मेरी सम्मति से बहिष्कार अनावश्यक है। अभी तक जो राजनैतिक विद्रोह और क़ानून की अवज्ञा का आन्दोलन फैला हुआ है, उसने हमारे स्वराज्य देने के मार्ग में रोड़े अटकाए हैं। परन्तु यह सब होते हुए भी एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ सदैव शान्तिपूर्वक अपनी समस्याएँ हल किया करता है।

वे (गोलमेज़ के प्रतिनिधि) हमारे साथ राजनैतिक उत्थान के लिए परामर्श करने आए हैं। और भारत के अद्वितीय वायसराय, राजनीतिज्ञ की हैसियत से नहीं, बल्कि एक बुद्धिमान व्यक्ति की हैसियत से इस आन्दोलन का समर्थन करता है। वायसराय, जिसके हाथ में आज भारत के शासन की बागडोर है, मज़दूर-दल का नहीं है, वे लिबरल-दल के भी नहीं हैं; वे अनुदार दल के हैं। और ऐसे अवसर पर, जबकि मुसलमान, सिक्ख, हिन्दू, अछूत, भारतीय ईसाई और ब्रिटिश व्यापारिक प्रतिनिधि गोलमेज़ के आस-पास बैठ कर अपनी माँगें पेश करने और विचार परिवर्तन करने में निमग्न थे, मि० चर्चिल ने एक ऐसा भाषण दिया है, जो शुरू से अन्त तक शैतानी से भरा हुआ है; जिसमें कोई योजना नहीं है और केवल अत्याचारी विजेताओं का विजितों पर वह अत्याचार चित्रित किया गया है जो वर्तमान राजनीति में कहीं ढूँढ़े नहीं मिलता।

कॉङ्ग्रेस को और उन लोगों को, जो गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स की असफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं और गत चार-पाँच सप्ताह से कॉन्फ़्रेन्स की सफलता के कारण जिनका विद्रोह कम हो चला था, मि० चर्चिल ने फिर से वह अवसर प्रदान किया है, जिससे वे ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध भारत में फिर ज़हर उगलने लगेंगे। हम चर्चिल को अकेला छोड़ देंगे। मेरा विश्वास है कि हमने भारतीयों का इतना विश्वास प्राप्त कर लिया है कि मि० चर्चिल के इस भाषण का कोई असर नहीं हो सकता; परन्तु यदि वे हमारा उपदेश ग्रहण करने के लिए तैयार हैं तो हम यही कहेंगे कि अब वे कभी ऐसे भाषण की पुनरावृत्ति न करें।"

* * *

हिन्सात्मक क्रान्ति की लहर

पञ्जाब गवर्नर पर गोलियों की वर्षा !

पुलिस अफ़सर की मृत्यु !! कई व्यक्ति घायल हुए !!!

लाहौर का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि जिस समय १ बज कर २० मिनिट पर पञ्जाब के गवर्नर और पञ्जाब यूनीवर्सिटी के वाइस चान्सलर सर ज्योफ़्रेडि मान्टमोरेन्सी यूनीवर्सिटी के उपाधि-वितरण उत्सव के उपरान्त सिनेट-हॉल से बाहर निकल रहे थे, उसी समय हॉल के अन्दर से अचानक छः गोलियाँ उनकी ओर दाग़ी गईं। पहले निमन्त्रित व्यक्तियों और विद्यार्थियों ने समझा कि गवर्नर के स्वागत-स्वरूप किसी ने पटाख़ों के धड़ाके किए हैं, परन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि गवर्नर की हत्या करने के लिए उनकी ओर गोलियाँ छोड़ी गई हैं। इस भीषण काण्ड के घटित होते ही अन्दर के व्यक्ति अन्दर ही रोक लिए गए। जिस ओर से गोलियाँ छोड़ी गई थीं, उस ओर केवल विद्यार्थी थे। पुलिस ने षड्यन्त्रकारी को उसी समय गिरफ़्तार कर लिया। उसके साथ ही पुलिस ने एक विद्यार्थी को भी गिरफ़्तार किया है। कहा जाता है षड्यन्त्रकारी के पास एक रिवॉल्वर और कुछ ख़ाली और भरे हुए कारतूस प्राप्त हुए हैं। गवर्नर को दो गोलियाँ लगी हैं एक पीठ में बाएँ पुट्ठे के ऊपर, और दूसरी बाएँ हाथ में। पहला घाव केवल त्वचा पर हुआ है और दूसरा हाथ के गोश्त पर, गोली हड्डी तक नहीं पहुँची। गवर्नर शीघ्र ही पास के एक कमरे में चले गए, जहाँ कर्नल हार्पर ने मरहम-पट्टी कर दी। उसके बाद मोटर में वे मेयो अस्पताल गए और घावों पर उचित रूप से दवा लग जाने के उपरान्त वे मुँह में सिगरेट दाब कर गवर्नमेण्ट हाउस चले गए। दो पुलिस ऑफ़िसर भी, जो उत्सव के समय सिनेट-हॉल में उपस्थित थे, गोलियों से आहत हुए। ख़ुफ़िया विभाग के इन्स्पेक्टर बुद्धसिंह वधवान के हाथ में गोली लगी, और वह हाथ को छेद कर दूसरी ओर निकल गई। सब-इन्स्पेक्टर चननसिंह के ऊपर और नीचे के दाँतों के बीच में से गोली पार हो गई और दाहिं ओर के जबड़े में रुक गई। दिल्ली के लेडी हार्डिञ्ज कॉलेज की लेडी डॉक्टर मैकडरमैट को भी एक गोली पुट्ठे की मांस-पेशियों में लगी जो ६ बजे संध्या तक बाहर नहीं निकाली जा सकी। श्रीमती भटनागर को भी गोली से एक हल्की चोट आई। श्रीमती भटनागर को छोड़ कर शेष उसी समय मेयो अस्पताल भेज दिए गए। लेडी डॉक्टर मैकडरमैट और सब-इन्स्पेक्टर चननसिंह को सख़्त चोटें आई हैं; उनमें से चननसिंह की ६½ बजे मेयो अस्पताल में मृत्यु हो गई।

गवर्नर को गोलियाँ ६ फ़ुट की दूरी से मारी गई थीं। जिस समय अभियुक्त गोलियाँ छोड़ रहा था उसी समय तिब्बी पुलिस स्टेशन का सब-इन्स्पेक्टर अपनी जान हथेली पर रख कर बीच में कूद पड़ा और उसने अपनी ओर छोड़ी हुई दो गोलियाँ बचा कर अभियुक्त की कलाई पकड़ ली और अन्य सिपाहियों की सहायता से वे उसे अनारकली पुलिस-थाने में ले गए। वहाँ अभियुक्त ने बयानों में कहा है कि उसका नाम हरिकृष्ण है और वह सीमा प्रान्त स्थित मर्दन गाँव का रहने वाला है। सिनेट-हॉल में घुसने का कोई पास उसके पास नहीं था और न उसे उत्सव के अवसर पर कोई उपाधि ही मिली है। वह निमन्त्रित अभ्यागतों की गैलरी में विदेशी कपड़े पहने बैठा था। उत्सव के अवसर पर पुलिस का कड़ा पहरा था और वे ही व्यक्ति अन्दर जा सकते थे, जिनके पास अन्दर आने का पास था; परन्तु इतना इन्तज़ाम होने पर भी यह भीषण काण्ड हो ही गया।

रिवॉल्वर और बम का मसाला

रङ्गून की ख़बर है कि वे चार बङ्गाली, जो आर्म्स एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, गत १६वीं दिसम्बर को ज़िला मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। इनमें मजूमदार-भ्राताओं के सम्बन्ध में पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा कि, गत २४ नवम्बर को उनके घर की तलाशी लेने पर एक पाँच नली रिवॉल्वर, बम के कई प्रकार के रासायनिक द्रव्य, और कुछ पुस्तकें पाई गईं। मामला फिर २ जनवरी से आरम्भ होगा।

भरी पिस्तौल और गोलियाँ मिलीं

दूसरे मामले में, जिसमें ए० एम० बरुआ और एम० एल० बरुआ अभियुक्त हैं, पुलिस इन्स्पेक्टर ने कहा कि गत २४ नवम्बर को एक मकान की तलाशी लेने पर एक भरी पिस्तौल, कुछ गोलियाँ और कुछ चिट्ठियाँ पाई गईं।

ज़मीन में गड़ा हुआ तमञ्चा मिला !

एक रूमी मेशिनगन की चोरी के सम्बन्ध में पता लगाते हुए, ख़ुफ़िया पुलिस को यह पता लगा है कि हुड्डा गाँव के समीप एक ६ नली पिस्तौल गाड़ी गई है। खोज करने पर वह मिल गई है।

स्यालकोट में बम

ख़बर है कि १८वीं दिसम्बर को स्यालकोट में, पुलिस को वाटर-वर्क्स के पास एक बम पड़ा मिला। पुलिस उसकी तहकीक़ात कर रही है। एक दूसरा समाचार है कि वहाँ के गवर्नमेण्ट हाई स्कूल के कुछ विद्यार्थियों को, मैदान में एक गोल चीज़ दिखाई दी। किसी ने उठा कर उसमें आग लगा दी। वह फट पड़ा और एक भारी धड़ाका हुआ।

अली मुहम्मद नामक एक लड़के को कुछ चोट आई है। हेडमास्टर ने तुरन्त पुलिस को इस बात की ख़बर दे दी। पुलिस ने आकर स्कूल की इमारत को घेर लिया। जाँच करने पर स्कूल की लाइब्रेरी के पास भी कुछ ऐसी विस्फोटक चीज़ें पाई गई हैं। अभी पुलिस जाँच कर रही है।

ज़मींदार पर गोली दाग़ी गई !

खुलना का १८वीं दिसम्बर का समाचार है कि सराय के एक ज़मींदार बाबू किरणचन्द्र दास, जब बाज़ार हाट क्लब से लौट कर आ रहे थे, उस समय खुलना रेलवे स्टेशन के पास किसी ने उन पर गोली चलाई। सौभाग्यवश गोली चूक गई और वे बच कर निकल गए। अपराधी का पता नहीं है।

दिल्ली जेल में बम

नई दिल्ली का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के जेल में झाड़ू देते समय एक मेहतर को एक लाल रूमाल मिली, जिसमें कुछ चीज़ें बँधी थीं। उसने उठा कर जेलर साहब की टेबुल पर उसे रख दिया। पीछे जाँच करने पर पता लगा कि उसमें बम बनाने की सामग्रियाँ थीं। पुलिस मामले की जाँच कर रही है।

—श्रीयुत कृष्णविनोद राय वकील, श्रीयुत अमरेन्द्रनाथ घोष, और गोविन्दचन्द्र कुन्डु के विषय में जो विस्फोटक पदार्थ एक्ट, और आर्म्स-एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं, पुलिस ने यह गवाही पेश की है कि वे कुछ और लोगों के साथ (जो छोड़ दिए गए हैं) स्मृति-मन्दिर के समीप बातें कर रहे थे। तलाशी लेने पर उस मकान में कुछ विस्फोटक पदार्थ भी मिले थे, जो जाँच के लिए भेज दिए गए हैं। मामले की सुनाई १० जनवरी से फिर आरम्भ होगी।

बटुकेश्वर दत्त किस जेल में हैं ?

श्री बटुकेश्वर दत्त, जिन्हें आजन्म कालेपानी की सज़ा दी गई है, मुलतान जेल में रक्खे गए थे। किन्तु पता लगा है कि वे इस समय उस जेल में नहीं हैं। वहाँ से हटा कर किसी दूसरे जेल में भेज दिए गए हैं। १० तारीख़ तक तो जेल के कर्मचारियों को भी यह पता न था, कि वे हटाए जायँगे। १६ तारीख़ को समाचार मिला है कि वे कलकत्ते भेज दिए गए हैं। फिर यह ख़बर मिली है कि वे मद्रास भेज दिए गए हैं। इसका अभी तक ठीक पता नहीं है कि वे किस जेल में रक्खे गए हैं।

सर्दार भगतसिंह की अपील

१८ जनवरी को प्रिवी-कौन्सिल में पेश होगी

लाहौर षड्यन्त्र-केस के अभियुक्त श्री० भगतसिंह, श्री० शिवराम राजगुरु और श्री० सुखदेव की ओर से जो अपील प्रिवी-कौन्सिल में की जाने वाली थी, वह १८ जनवरी को दायर की जा जायगी। सरकार ने कहा था कि यदि १२ दिसम्बर तक अपील न की जायगी तो, अभियुक्तों को फाँसी दे दी जायगी। किन्तु लन्दन के सॉलिसिटरों ने लिखा है कि, सरकार ने एक माह की मुहलत मञ्ज़ूर कर दी है। इस कारण अब एक मास बाद अपील की जायगी।

सक्खर में बम का धड़ाका

दो आदमी सख़्त घायल

हैदराबाद (सिन्ध) का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि २१ ता० की रात्रि को सक्खर में बम फटने के कारण दो राहगीर सख़्त घायल हुए हैं। लगभग १० बजे रात्रि को वे अस्पताल भेज दिए गए। आहतों में एक गन्ना बेचने वाला है जो बाज़ार में फेरी लगा रहा था, और दूसरा एक मुसलमान है जो उसके पास खड़ा था। बम के धड़ाके से ज़मीन में एक बड़ा भारी छेद हो गया है।

* * *

(५वें पृष्ठ का शेषांश)

—बम्बई का २०वीं दिसम्बर का समाचार है कि गत बृहस्पतिवार की रात को दो स्वयंसेवकों की मृत्यु हो जाने से, नगर में हड़ताल मनाई गई। मिल-मज़दूरों के भी हड़ताल कर देने से ४० मिलें बन्द रहीं।

—लाहौर का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि सर सुन्दरसिंह मजीठिया के सभापतित्व में एक सभा की गई थी जिसमें सभी दलों के सिक्ख सम्मिलित हुए थे। सभा में गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में सिक्ख सदस्यों में पूर्ण विश्वास होने का एक प्रस्ताव पास किया। सिक्खों ने अपनी माँगों की पूर्ति के लिए एक डेपुटेशन भेजने का विचार किया है। इसके लिए ११ सदस्यों की एक कमिटी बनाई गई है, जिसके अध्यक्ष सर सुन्दरसिंह मजीठिया और सेक्रेटरी श्रीयुत हरनामसिंह एडवोकेट हैं सभा ने यह भी विचार किया, कि यदि सिक्खों की माँगों की ओर ध्यान न दिया जाय तो गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के सिक्ख सदस्य विरोध-स्वरूप फ़ौरन वापस लौट आवें !

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

उस दिन "कॉङ्ग्रेस और गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स" शीर्षक एक उर्दू का 'सब्ज़ क़दम' अर्थात् हरे काग़ज़ पर छपा इश्तहार पढ़ कर हिज़ होलीनेस ऐसे फड़के कि मियाँ कलेजे को छट्टी का दूध याद आ गया! साथ ही सखी नौकरशाही के हाले-ज़ार पर भी, क़सम दीनो-ईमान की, बड़ा तर्स आया!

❀

बेचारी सती-साध्वी, बीस-बिस्वे की कुलीना और बूढ़े भारत पर हज़ार जान से निसार होने वाली नौकरशाही, आज मैतलब-बाज़ों के हाथों में पड़ कर जिस तरह बेहुरमत हो रही है, उस तरह बाबा शाहमदार किसी दुश्मन को भी बेहुरमत न करें!!! भई, अपने राम का तो रो देने को जी चाहता है, बेचारी की दयनीय दशा देख कर!

❀

इसके साथ ही वह इश्तिहार लिखने वाला, माशाअल्लाह, अक़्ल का जीता-जागता पुतला भी मालूम होता है और श्रीजगद्गुरु के आशीर्वाद से अब की पहली जनवरी के उपाधि-वर्षा के दिन रायसाहबी, रायबहादुरी—या ऐसा ही कुछ सीधे स्वर्ग पहुँचाने वाला सामान—लेकर ही रहेगा। मजाल नहीं जो सखी बहानेबाज़ी कर सकें।

❀

अपने 'सब्ज़ क़दम' पर्चे में, उसने सखी को चकमा देने के लिए, उनकी वदान्यता और सौजन्यता का पुल तो बाँधा ही है, साथ ही कॉङ्ग्रेस की निन्दा करके श्रीमती को नक्कू भी बनाया है। हाय रे दुराशा! इश्तहार पढ़ कर सखी ने समझा होगा, कि दिल के दीवानों का दल अब कॉङ्ग्रेस को तलाक़ दे देगा और श्रीमती की गलियों में आकर 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' का मधुर राग अलापने लग जाएगा।

❀

साबरमती के लँगोटी-बाबा को क्या कहा जाय, ऐसा जादू फेर दिया कि बेचारी सिर से पैर तक घबरा उठी है। न हित की पहचान है, न अनहित की! घबराहट के कारण किसी बहते हुए तिनके का सहारा पा जाती है, तो उसी को लेकर भवसागर पार कर जाने के व्यर्थ प्रयास में लग जाती है। उपर्युक्त सब्ज़-क़दम इश्तिहार उसी घबराहट का नतीजा है। "बेवक़ूफ़ की भैंस बियानी और लोग मटुकी लेकर दौड़े" के अनुसार यारों ने सोचा होगा, चलो, अच्छे चहले में फँसी है। एक हरे रङ्ग का शिगूफ़ा छोड़ दो। लग गया तो तीर, नहीं तो तुक्का ही सही। ख़ैरख़्वाहों की फ़िहरिस्त में नाम टँका रहेगा तो कभी न कभी काम ही देगा।

❀

मगर यारों का तो यह कहना है कि "चीन्हल बाटू ए जानी, तु चीन्हल बाटू ना, तोरे नाके पै बाटै गोदनवाँ ना।" कहिए, जब यहाँ तक लोगों को हुलिया मालूम है तो कौन अक़्ल का अन्धा ऐसे इश्तहारी चकमे में आएगा? कौन लाला नहीं जानता कि इस 'बुते काफ़िर' को न बोसा देना आता है, न दिल बहलाना आता है; आता है फ़क़त तरसाना और वादे करके मुकर जाना!

❀

ख़ैर, हज़रते-इश्तहारबाज़ की राय है, कि लोग विदेशी का बहिष्कार न करें और देशी का नाम न लें। यही राय ईजानिब की भी है। क्योंकि जब लालों के चारे-पानी और लँगोटी के इन्तज़ाम का भार सखी ने अपने कोमल कन्धों पर ले ही रक्खा है तो फिर चिन्ता किस बात की है? फलतः लोगों को चाहिए कि पिकेटिङ्ग-फिकेटिङ्ग के झगड़े छोड़ कर आनन्द से भाँग-बूटी छाना करें और सखी के दम को ख़ैर मनाया करें। जिसकी सरपरस्ती स्वयं श्रीमती नौकरशाही कर रही हैं, उसे क्या पड़ी है, व्यर्थ के झमेलों में फँसने की?

❀

मगर कॉङ्ग्रेस दईमारी को क्या कहा जाए! हमें तो मालूम होता है कि बुढ़ौती के कारण उसकी अक़्ल पर पत्थर पड़ गया है, अथवा किसी अनाड़ी के पाले पड़ कर गहरी छान गई है, वरना बैठे-बिठाए यह आफ़त क्यों मोल लेने जाती? कहाँ तो इस कड़ाके की सर्दी में अँगीठी तापा करती और स्वादिष्ट सोंठौरे से 'खर-मिटाव' करती, कहाँ पड़ी है, नाहक़ के झमेले में, न ख़ुद चैन लेती है और न सखी को आराम से चाय-पानी पीने देती है। इसलिए अगर मुनासिब समझा जाए, तो हकीम झिंगुरी ख़ाँ से उसके दिमाग़ की दवा क्यों न करा ली जाए? क्यों, क्या राय है आपकी?

❀

लोग आराम से ग़ुलामी के मज़े ले रहे थे, चान्द्रायण व्रत के भय-बन्धन से विमुक्त हो रहे थे, घर-घर दरिद्र-नारायण की सेवा का साधन मौजूद था; सखी नौकरशाही भी कभी शिमले की हवा खातीं, तो कभी नैनीताल और दार्जिलिङ्ग के पुरलुत्फ़ नज़ारे के मज़े लूटती थीं; बी बृतानियाँ बेकारी की विपत्ति से बरी थीं और मि० जॉनबुल पेग पर पेग चढ़ा रहे थे। इतने में यह बुढ़िया (कॉङ्ग्रेस न जाने कहाँ से लाठी टेकती आ गई और ऐसा बेताल-स्वर का अहिंसात्मक राग छेड़ा, कि सारा मज़ा ही किरकिरा हो गया। अब आप ही ईमान-धर्म से बताइए, बिना दिमाग़ ख़राब हुए कोई ऐसा काम कर सकता है?

❀

कहावत है कि 'त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम् दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः।' लेहाज़ा जिस रोज़ से सखी ने अपना बहुरूपियापन दिखाना आरम्भ किया है, उसी रोज़ से प्रातःस्मरणीय श्रीजगद्गुरु का भाग्य भी सातवें आसमान पर चढ़ बैठा है। अभी उपर्युक्त बहारदार इश्तिहार का मज़ा भूलने भी न पाया था, कि श्रीमान नशे के झोंक में मटकते हुए एक 'प्रेम-सभा' के किनारे जा पहुँचे और वहाँ जो नयन-तृप्तिकर दृश्य देखने को मिला, उसके सम्बन्ध में यही कहना यथेष्ट होगा, कि "सो सोभा किमि कहउँ बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी!"

❀

एक देहाती 'मदरसे' के सामने प्रेम-सभा का जलसा था, बारहचोबी शामियाने के नीचे कुछ छोटे-छोटे स्कूली लड़के और आधे दर्जन के क़रीब मुदर्रिस साहबान ऊपर को मुँह किए बैठे थे। इस प्रेम-सभा के उद्योक्ता थे सखी के परम प्रेमी एक भावी रायबहादुर, और प्रेज़ीडेण्ट थे सखी के पुराने नमकख़्वार एक भावी ऑफ़िशिएटिङ्ग कलक्टर बहादुर! देहात के अहीरों से ऐंठ कर काफ़ी दूध और दही लाने की आज्ञा पटवारियों को पहले से ही दे दी गई थी। फलतः 'प्रेम-प्रसादी' की भी यथेष्ट व्यवस्था थी। परन्तु एक बिगड़े दिल छोकरे के बहकावे में आकर लोगों ने अन्त में 'महात्मा गाँधी की जय' बोल कर सारा रङ्ग ही फीका कर दिया! घण्टों तक गला फाड़-फाड़ कर बेचारे प्रेमियों ने जो प्रेम-प्रचार किया था, वह एक ही जयघोष में काफ़ूर हो गया!

❀

ख़ैर, सब से पहले प्रेम-प्रचार के लिए उठे थे, प्रभु ईसा मसीह के एक पट्ट-शिष्य पादड़ी महोदय। भयभ्रान्त काले प्राणियों की दीन-दशा देख कर आपके दयार्द्र दिल में प्रेम का तूफ़ान चल पड़ा था। इसलिए उठने के साथ ही आपने प्रेम की गङ्गा बहा दी। आपने फ़रमाया—"खद्दर जला दो, रुई में आग लगा दो, चर्ख़ा तोड़ कर ताप डालो!!!" आपकी यह अलौकिक प्रेमवाणी सुन कर प्रेमी आनन्द-गद्गद हो गए! सारी सभा में मानो आनन्द का सागर उमड़ आया। सहृदय प्रेमियों ने आनन्दाश्रु विसर्जन करना आरम्भ कर दिया। आपकी अमूल्य आनन्दवाणी सुन कर श्रोतृ-मण्डल निहाल हो गया!

❀

और, हिज़ होलीनेस! न पूछो इस कमबख़्त की हालत। प्रेम की मस्ती में ऐसा आपाद-मस्तक डूबा, कि न सोंटे की सुध रही, न लँगोटी की! आँख खुलने पर मालूम हुआ कि शिष्यों ने किसी तरह घसीट कर झोपड़ी तक पहुँचा दिया है और जगद्गुरुआनी अर्थात् हर होलीनेस अपने आसन्न सङ्कटापन्न सौभाग्य-सिन्दूर के लिए बिलख-बिलख कर रो रही हैं!

❀

मगर ईजानिब को ऐसी तुच्छ बातों पर विचार करने की फ़ुरसत कहाँ थी! सारा मस्तिष्क प्रेम में डूब कर लतफ़त हो रहा था, और कानों में गूँज रही थी पादड़ी महोदय की प्रेमवाणी! हज़रत ने झट लँगोटी सम्हाली और उठ बैठे। श्रीमती बोलीं—"ठहरो, ठहरो!" जवाब दिया—"धत्! यह ठहरने का समय है!"

❀

इसके बाद चट थोड़ा सा पयाल उठाया और उसे दियासलाई से धधका कर झोपड़ी की ओर हाथ बढ़ाया। बीबी चीख़ उठीं—"हाँ-हाँ, यह क्या कर रहे हो? दिमाग़ ठीक है या नहीं?" राम-राम! कमबख़्त की 'हाँ-हाँ' ने सारा प्रेम-प्रवाह ही रोक दिया। फिर हाथ थाम कर बोलीं—"अभी उठो मत, तुम्हारी तबीयत अभी ठीक नहीं है। अभी-अभी यह क्या करने जा रहे थे?" ईजानिब ने क्रुद्ध होकर कहा—बड़ी गँवार हो। ऐसे शुभ काम में भी कोई बाधा देता है?

❀

"आख़िर इरादा क्या था?" हर होलीनेस ने ज़रा सहम कर सवाल किया। "कुछ नहीं, प्रभु ईसा-मसीह के एक सगे उत्तराधिकारी की आज्ञा का पालन करने जा रहा था। भारत, भारतीयों, ब्रिटिश साम्राज्य के कल्याण के लिए खद्दर, रूई, चर्ख़ा और घर-बार—सब में आग लगा देना बहुत ज़रूरी है, इसीसे इस शुभ काम में थोड़ा सा हाथ बँटा देना चाहता था। परन्तु तुमने बाधा देकर सारा गुड़ गोबर कर दिया।"

❀

श्रीमती हँसते-हँसते लोट-पोट हो गईं। घण्टों के सिर-तोड़ परिश्रम के बाद हँसी रोक कर गम्भीर भाव से बोलीं—"सचमुच वह ईसाई था?" हिज़ होलीनेस ने कहा—"क्या तुम्हें सन्देह है? ऐसा नायाब नुसख़ा क्या मजाल जो किसी दूसरे धर्मावलम्बी के दिमाग़ से निकल सके।" हर होलीनेस ने दीर्घ निश्वास लेकर कहा—"प्रभु क्षमा करें, इन ईसा की भेड़ों को। कमबख़्तों ने सारी ख़ुदाई का ही तबाह कर रक्खा है।"

* * *

स्वतंत्रता के अन्तिम-युद्ध का प्रारंभ

"वर्तमान सरकार की शक्ति का प्रतिबिम्ब अत्याचारी, नृशंस और घूसख़ोर पुलिस है"

मि० ब्रेल्सफ़र्ड ने गाँवों में क्या-क्या देखा ?

किसानों की भयङ्कर दुर्दशा :: ग़रीबी का मूल कारण लगान है

"किसान अब तक चुप रहे हैं और उसका प्रधान कारण यह था कि अभी तक उनकी समझ में नहीं आया था, कि शासन में किसी प्रकार के परिवर्तन से उनके भाग्याकाश का सूर्य चमक सकता है। वर्तमान सरकार की शक्ति का प्रतिबिम्ब अत्याचारी, नृशंस और घूसखोर देशी पुलिस है, जो सदैव किसानों से ज़मींदार का लगान और बनिए का व्याज वसूल कराने में सहायक रही है; परन्तु महात्मा गाँधी का सन्देश अब उनके कर्ण-कुहरों तक पहुँच गया है और उनमें नई स्फूर्ति आ गई है। मेरे यह पूछने पर, कि 'क्या स्वराज्य में उनकी दशा सुधर जावेगी ?' उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया कि 'हाँ, स्वराज्य हो जाने पर उन्हें लगान नाम-मात्र को देना पड़ेगा।' इस विकट युद्ध में कॉङ्ग्रेस ने भारतीय जीवन के सम्पूर्ण दुःखों और घावों को नग्न रूप में रख दिया है। गवर्नमेण्ट से उसके लिए बिना स्वराज्य मिले समझौता करना असम्भव है और लगानबन्दी के आन्दोलन द्वारा ही वह गवर्नमेण्ट की कमर तोड़ेगी।"

मि० एच० एन० ब्रेल्सफ़र्ड ने हाल ही में एक लेख अमेरिका के 'नेशन' पत्र में प्रकाशनार्थ भेजा है, जिसमें उन्होंने संयुक्त प्रान्त के कुछ गाँवों के भ्रमण के अनुभव दिए हैं। भारत के पत्रों में भी वह प्रकाशित हो चुका है। उसी लेख में से हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ कुछ ज्ञातव्य बातें यहाँ देते हैं।

जैसे ही लन्दन में भारतवर्ष की आवाज़ पहुँचती है, वह राजनीति का चोगा जामा पहिन लेती है, परन्तु यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके इस उथल-पुथल का एक मात्र कारण आर्थिक है। बम्बई के धनी व्यापारी बिगड़े हुए राजस्व और विनिमय की दर बढ़ाने तथा उसके पक्षपातपूर्ण व्यवहार के कारण भारतीय गवर्नमेण्ट पर आक्रमण करते हैं और कॉङ्ग्रेस के साथ का भी अधिकांश में यही कारण है। परन्तु यह आन्दोलन शहरों के धनिकों तक ही परिमित नहीं है, उसका प्रचार तो जन-साधारण और गाँवों तक में हो गया है और जैसे ही जैसे समय व्यतीत होता जाता है, वैसे ही वैसे यह आन्दोलन अपढ़ किसानों की ऐसी सहायता पाता जाता है, जो शहर वालों की सहायता से अधिक प्रबल और सामूहिक है। किसानों में विद्रोह की आग फैल रही है। वह सफ़ेद क्रान्तिकारी टोपी की उपासना क्यों करता है ? अपने बैल और ज़मीन तक ज़ब्त करवा लेने का साहस उनमें कहाँ से आया ? बारदोली में मैंने लगानबन्दी का आश्चर्यपूर्ण आन्दोलन देखा था। वहाँ के किसानों पर बहुत वर्षों से महात्मा गाँधी का प्रभाव रहा है। वे अपने खेतों के मालिक हैं, धन और शिक्षा की दृष्टि से वे अन्य प्रान्तों से आगे हैं। वे वीर हैं और उन्होंने अपने स्वत्वों पर विचार करना प्रारम्भ कर दिया है।

इन दीन गाँवों की दुर्दशा देखने का अवसर मुझे संयुक्त प्रान्त में आगरे के समीप के गाँवों में मिला, जो भारतीय ज़मींदारों के अधीन हैं। वहाँ अभी तक कॉङ्ग्रेस ने लगानबन्दी का आदेश नहीं दिया है। खेतों में घूमते हुए हम और हमारे साथी एक ज़मींदार से मिले और उसके साथ ज़मींदारी-प्रणाली पर बातचीत की। ज़मींदारी-प्रणाली का प्रारम्भ मुग़लों के राज्य में ऐसे समय में हुआ था, जब जागीरदारों को आवश्यकता पड़ने पर, शाही फ़ौज के लिए कुछ घोड़े और आदमी देने पड़ते थे। ब्रिटिश काल में, इस सम्बन्ध का केवल आर्थिक रूप ही रह गया है। ज़मींदार लगान वसूल करता है और उसमें से ४९ प्रतिशत प्रान्तीय सरकार को दे देता है। ज़मीन पर तनिक भी पूँजी नहीं लगाता। किसान को ही कुँआ बनाना पड़ता है, उसी को उसकी उर्वरा-शक्ति बढ़ानी पड़ती है और वही अपने रहने के लिए अस्वास्थ्यकर घरौंदे बनाता है। पुराने ज़माने के अभी भी कुछ चिन्ह शेष हैं, ज़मींदार अपने खेत जुतवाने के लिए किसानों को अभी भी मुफ़्त में बुला सकता है और किसानों से तीज-त्यौहार के समय मुफ़्त में दूध-दही वसूल करता है। चारा और भूसा भी लिया जा सकता है और बदले में वह उसे थोड़ी सी लकड़ी काटने की आज्ञा दे देता है ! मैंने ज़मींदार से स्पष्ट रूप से पूछा कि लगान वसूल करने के बदले में वह किसानों की कौन सी सामाजिक सेवा करता है। उसका उत्तर भी उतना ही स्पष्ट था—"हमने अपने अधिकार मोल लिए हैं और किसानों के प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं है। हम भी औरों की भाँति पेट भर रहे हैं।" वास्तव में अब पुराने प्रकार की जागीरदारी का अस्तित्व नहीं रहा। उनके स्थान में आने वाले नए लोग तो केवल लगान वसूल करने वाले हैं।

हम एक छोटे से गाँव में पहुँचे। घूरों और कूड़ों के ढेर और गन्दगी की राशि लगी थी और सूर्यास्त के अनन्तर दिन भर का कार्य समाप्त कर किसान एक नीम के पेड़ के नीचे चारों ओर बैठे थे। उनकी वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए तीन बातें ध्यान में रख लेना यथेष्ट है। प्रत्येक किसान ऋणी था, प्रत्येक अपढ़ था; उस गाँव का कोई भी लड़का पढ़ता न था और व्याज की दर ३७॥ प्रतिशत तक थी !! मैं गाँवों में घूमा, प्रत्येक स्थान के लोग ऋण के भार से लदे थे। पद-पद पर किसानों को ऋण लेना पड़ता है, ऋण का बोझ हलका करने के लिए उसका घी-दूध सब बनियों के यहाँ चला जाता है और उसके बच्चों के लिए केवल मट्ठा रह जाता है ! फ़सल का अधिकांश भाग भी बनिए के यहाँ चला जाता है और थोड़े दिनों बाद किसान वही अन्न अधिक मूल्य पर ले आता है। ऋण का मुख्य कारण है ज़मींदारी का लगान। सौभाग्य से ही किसान को कभी विवाह आदि उत्सवों के अवसर पर पूड़ी खाने को मिल जाती है। भारतवर्ष में युवावस्था तक विवाह न होना बड़ा भारी सामाजिक पाप समझा जाता है, परन्तु मेरे सामने तीन युवक अविवाहित खड़े हैं। इस गाँव का सब से अच्छा समाचार यह था कि उसकी जन-संख्या घट रही है। जैसे ही हम लोग गाँव से चलने के लिए तैयार हुए, एक आदमी हमारे सामने अपने कपड़े दिखाने के लिए आया। उसका वस्त्र एक मात्र गन्दा और फटा हुआ कुर्ता था, जो उसकी लँगोटी से सटा हुआ था। वह किसान नहीं था, पास ही के रेलवे-स्टेशन पर ६ आना प्रति दिन पर काम करता था। इन ६ आनों के लिए १२ घण्टे परिश्रम करना पड़ता है और उसी कमाई पर उसका, उसकी स्त्री और दो बच्चों का निर्वाह अवलम्बित है ! उसी में उसे अपने कुर्ते में चिथड़े लगवाने पड़ते हैं और उसी में ३७॥ प्रतिशत के हिसाब से बनिए का व्याज अदा करना पड़ता है ! तिस पर भी किसान उसे ईर्षा-भाव से देखते हैं, क्योंकि उन्हें उससे भी अधिक परिश्रम करने पर ३-४ आने से अधिक मज़दूरी नहीं मिलती। वहाँ बैठे हुए किसानों ने कहा कि उनसे मज़दूरों की दशा बहुत अच्छी है। मैंने पूछा—"फिर तुम खेती करते ही क्यों हो ?" इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि "कोई अन्य स्थायी काम ही नहीं मिलता। साथ ही खेती करने वाले को ऋण मिल सकता है।" जब हम लोग गाँव से चलने लगे, तब अँधेरा हो गया था, परन्तु गाँव भर में कहीं

(शेष मैटर ११वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

भारत की निर्धनता का करुण-चित्र!

प्रधान-मन्त्री के गुरु मरणासन्न-भारत की दशा देख कर रो पड़े !!

भारतीय किसानों का नारकीय जीवन

इङ्गलैण्ड की इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी के संस्थापक और प्रधान-मन्त्री रैमज़े मैकडॉनल्ड के राजनैतिक गुरु केयर हार्डी ने सन् , १९०७ में भारत में, यहाँ की सच्ची परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए कुछ माह व्यतीत किए थे और उन्होंने यहाँ रह कर, भारत की समस्याओं का अध्ययन कर बहुत सी बातें और संख्याएँ एकत्र की थीं। अपने इस अध्ययन के उपरान्त उन्होंने 'भारत' नाम की पुस्तक लिखी थी, जो इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी ने सन् , १९०९ में प्रकाशित की थी। नीचे उन्हीं की पुस्तक का एक अध्याय उद्धृत किया जाता है। यद्यपि इन पंक्तियों को लिखे २० वर्ष से ऊपर गुज़र चुके हैं, तिस पर भी वे इस समय भारत में अङ्गरेज़ी राज्य पर उसी प्रकार प्रहार करती हैं, जिस प्रकार २० वर्ष पहले करती थीं। भारत की दुर्दशा अब उस समय से और भी अधिक ख़राब हो गई है। इस अभागे देश के सम्बन्ध में केयर हार्डी की अपीलों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे अनन्त में लीन हो गई !

भारत के अतीत वैभव और समृद्धि की स्मृति लोगों के हृदय में अभी तक हरी-भरी बनी है। एक शताब्दी पहले, जब कि भारत के कुछ साधारण कुटुम्ब भी व्यापारिक उन्नति के कारण करोड़पति बन बैठे थे, तब हर एक मुँह पर भारत के ऐश्वर्य की ही चर्चा हुआ करती थी, परन्तु अब भारत के वैभव और उसके व्यापारिक ऐश्वर्य की चर्चा कम हुआ करती है। वास्तव में भारत के निवासियों पर जैसी आर्थिक आपत्ति इस समय पड़ी है, जिस प्रकार उसका रक्त इस समय चूसा गया है, उसका नमूना उसके इतिहास के समस्त पन्ने उलटने पर कहीं न मिलेगा।

दश-दशा

कुछ लहू तन में है बाक़ी, वह लिए जाते हैं ! जोंक बन-बन के मेरा ख़ून पिए जाते हैं !!

अनुमान किया जाता है, कि भारत की रेलों, नहरों और अन्य प्रजा-हितैषी उद्योग-धन्धों में ब्रिटेन की ५० करोड़ पौण्ड पूँजी लगी है। भारत को ५ प्रतिशत के हिसाब से उसका २॥ करोड़ पौण्ड प्रति साल ब्याज का देना पड़ता है। यह ब्याज विलायत के बॉण्ड के ख़रीदारों को दिया जाता है और इतनी बड़ी रक़म से भारत का कोई उपकार नहीं होता। इसके साथ ही फ़ौजी अफ़सरों और सरकारी कर्मचारियों की पेन्शन और दूसरे ख़र्च जोड़ दीजिए; इसे मिला कर ३ करोड़ पौण्ड हर साल इङ्गलैण्ड चले जाते हैं। भारत में ८० प्रतिशत टैक्स ज़मीन से वसूल किए जाते हैं ! गवर्नमेण्ट जो टैक्स किसानों से वसूल करती है, वह उसकी उपज का ५० से लेकर ६५ प्रतिशत तक होता है !! इसके अतिरिक्त किसानों को और भी बहुत से स्थानीय टैक्स देने पड़ते हैं। इस प्रकार बेचारे किसानों की ७५ प्रतिशत फ़सल केवल टैक्स अदा करने में चली जाती है !!

निर्धनता का साम्राज्य

इङ्गलैण्ड में आमदनी पर ५ प्रतिशत टैक्स लगाने से सारे देश में सनसनी फैल जाती है और जनता उसका विरोध करने पर तुल जाती है। ख़ूबी यह है, कि टैक्स ज़मीन की उपज पर नहीं, केवल मुनाफ़े पर लगाया जाता है। ऐसी दशा में उस देश की क्या स्थिति होगी, जहाँ मुनाफ़े पर ५ प्रतिशत टैक्स नहीं लगाया जाता, बल्कि उपज पर ७५ प्रतिशत लगाया जाता है !! समय-समय पर लगान का रेट बदलता रहता है और यह केवल इसलिए, कि गवर्नमेण्ट इन क़र्ज़ से लदे हुए किसानों से जितना अधिक ऐंठ सके ऐंठे ! लगान में ३० प्रतिशत की वृद्धि करना तो एक साधारण सी बात है; रजिस्टरों पर ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जहाँ यह लगान-वृद्धि ५०, ७० यहाँ तक कि १०० प्रति-शत तक की गई है। यह एक ऐसी बात है जिसके कारण भारत स्थायी रूप से ग़रीबी और दुर्भिक्ष का साम्राज्य हो गया है। प्रायः यह कहा जाता है, कि ब्रिटिश राज्य में किसानों को पुराने ज़माने के राजाओं से कम टैक्स देना पड़ता है। इस तर्क के कई प्रकार से उत्तर दिए जा सकते हैं, परन्तु नीचे ऐसी कुछ संख्याएँ दी जाती हैं, जिनसे यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जाती है।

जब बम्बई प्रान्त सन् , १८१७ में ब्रिटिश राज्य में सम्मिलित किया गया, तब उसके शासकों ने अपने किसानों से केवल ८० लाख रुपया लगान में वसूल किया था। उस समय लगान वसूल करने की यह पद्धति थी, कि फ़सल का—चाहे वह अच्छी हो या ख़राब—चौथाई भाग लिया जाता था। इस प्रकार जब फ़सल ख़ूब अच्छी होती थी, तब गवर्नमेण्ट और प्रजा दोनों ही भरे पूरे रहते थे, और दोनों को एक ही प्रकार के लाभ रहते थे; और जब फ़सल ख़राब होती थी, तब दोनों ही हानि सहते थे। परन्तु अब तो चाहे फ़सल अच्छी हो या ख़राब—या बिलकुल ही न हुई हो, प्रति वर्ष एक निश्चित रक़म वसूल की जाती है ! सन् १८१७ के बाद उपर्युक्त प्रकार से लगान ज़बरदस्ती वसूल करने की रीति चल पड़ी, जिसका परिणाम यह हुआ, कि सन् १८२३ में लगान की आमदनी ८० लाख से १ करोड़ ५० लाख बढ़ गई, और सन् १८७५ में वह बढ़ कर ४ करोड़ ८० लाख हो गई !!!

जब गत शताब्दी के प्रारम्भ में सर टॉमस मुनरो मद्रास के गवर्नर नियुक्त किए गए थे, तब भी लगान के सम्बन्ध में इसी प्रकार की सख़्तियाँ की गई थीं, और इसके परिणाम-स्वरूप समस्त प्रान्त से किसानों के भूखे मरने के समाचार आने लगे थे, और जाँच के उपरान्त गवर्नमेण्ट को २५ प्रतिशत लगान कम करना पड़ा था। उनके अधीन ऑफ़िसर पहले तो उनकी आज्ञा-पालन करने में आनाकानी करने लगे, परन्तु अन्त में उन्हें उनकी कड़ी आज्ञा के सामने नत-मस्तक होना पड़ा। इस लगातार लूट-खसोट का परिणाम यह हुआ है कि उस देश की प्रजा इतनी ग़रीब हो गई है, जितनी संसार के किसी अन्य देश की नहीं है। सचमुच में सौ वर्ष के 'सभ्य' कहलाने वाले शासन के उपरान्त तो ऐसा ग़रीब और भुखमरा देश तो संसार के कोने में कहीं ढूँढ़े न मिलेगा ! भारत की संख्या (Statistics) विभाग के डायरेक्टर-जनरल सर विलियम हण्टर ने, जो भारत और उसके निवासियों के सच्चे हितैषी थे, लिखा है कि "भारत के चार करोड़ मनुष्यों को भर-पेट रूखा-सूखा भी खाने को नहीं मिलता"; और पञ्जाब के अर्थ-विभाग के कमिश्नर ने कहा था कि "भारत के ७ करोड़ किसान इतनी भयङ्कर ग़रीबी में हैं, कि किसी प्रकार के सुधार

"उनका कोई उपकार नहीं कर सकते।" इसी प्रकार के सैकड़ों उदाहरण प्राप्त हो सकते हैं।

मैं अपनी दलील के समर्थन में तीन विशेषज्ञों की सम्मतियाँ यहाँ और दूँगा, जिनमें से किसी पर भी यह लाञ्छन नहीं लगाया जा सकता, कि वह भारतवासियों से अनुचित सहानुभूति रखता है। सन् , १८८२ में वर्तमान लॉर्ड क्रोमर ने यह घोषणा की थी, कि प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी २६ शिलिङ्ग है। सन् ,१८६४ में भारत के उस समय के सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट लॉर्ड जॉर्ज हेमिल्टन ने प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी दो पौण्ड बतलाई थी और उनके बाद में लॉर्ड कर्ज़न ने भारतीय किसान की औसत वार्षिक आमदनी १ पौण्ड १२ शिलिङ्ग ६ पेन्स बतलाई थी। दूसरे देशों से मिलान करने पर भारतवर्ष की ग़रीबी और स्पष्ट हो जाती है। ग्रेट-ब्रिटेन के प्रत्येक मनुष्य की औसत आमदनी ४२ पौण्ड वार्षिक और रूस के किसान की औसत आय ११ पौण्ड वार्षिक है।

भारत के सच्चे हितैषी अमेरिका-निवासी डॉ० सण्डरलेण्ड ने लिखा है कि "भारत में यूरोपियन और एङ्ग्लो-इण्डियन ऑफ़िसर प्रति वर्ष १,३६,३०,९९४पौण्ड वेतन पाते हैं, परन्तु वे १,३०,००० भारतीय राज-कर्मचारी साल भर में केवल ३२,८४,१६३ पौण्ड वेतन पाते हैं; इन ऑफ़िसरों में वे भारतीय भी सम्मिलित हैं, जो राज्य के बड़े-बड़े पदों पर हैं।" यदि यूरोपियनों की वेतन-वृद्धि के सम्बन्ध में यह दलील पेश की जाय कि यूरोपियन भारतीयों से अधिक योग्य होते हैं तो उत्तर में मैं केवल इतना ही कहूँगा, कि ये सब बातें थोथी हैं, उनमें सचाई का लेश भी नहीं है!

हम इस बात का अभिमान करते हैं कि हमने भारत में शिक्षा का प्रचार किया है; परन्तु इसमें भी अधिकांश मिथ्या-सत्य है। भारतीय-भारत और ब्रिटिश-भारत दोनों में मिला कर स्कूलों में जाने वाले बच्चों की संख्या केवल ८० लाख के लगभग है और भारतीय गवर्नमेण्ट शिक्षा में जो ख़र्च करती है, वह एक बच्चे के पीछे हर साल डेढ़ पेन्स (डेढ़ आने के लगभग) से अधिक नहीं पड़ता! परन्तु इसके विपरीत गवर्नमेण्ट फ़ौज की रक्षा में जो ख़र्च करती है, उसका औसत टैक्स प्रत्येक भारतवासी पर बारह आने के हिसाब से पड़ता है। सुप्रसिद्ध वेदज्ञ मैक्समूलर ने सरकारी रिपोर्ट और एक मिशनरी रिपोर्ट के आधार पर बङ्गाल की शिक्षा के सम्बन्ध में लिखा है कि "ब्रिटिश शासन के पहले बङ्गाल में ८० हज़ार स्कूल थे, अर्थात् वहाँ के ४०० निवासियों के लिए एक स्कूल था।" अपने ब्रिटिश भारत के इतिहास में लडलो ने लिखा है कि "मुझे इस बात का निश्चित रूप से पता लगा है कि हर एक हिन्दू गाँव में, जहाँ उसकी पुरानी पद्धतियाँ प्रचलित रह सकी हैं, बच्चे साधारणतः पढ़-लिख लेते हैं, परन्तु जहाँ ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ग्राम-पद्धति नष्ट करने में सफल हुई है, वहाँ उसके साथ ही गाँवों के स्कूल भी नष्ट हो गए हैं।" सर टॉमस मुनरो ने भी निम्न शब्दों में अङ्गरेज़ों के पहले के भारत का अच्छा चित्र खींचा है—"यदि खेती की सुचारु पद्धति, कला-कौशल की अद्वितीय योग्यता, ऐश-आराम से लेकर साधारण आवश्यकताओं की चीज़ें उत्पन्न करने की शक्ति, हर एक गाँव में गणित और लिखने-पढ़ने के लिए स्कूलों की स्थापना, आतिथ्य-सत्कार, परस्पर दान करने की बान, और महिला-मण्डल के साथ पूर्ण विश्वास, आदर और नम्रता का व्यवहार, ऐसे चिन्हों में से हैं, जिनसे मनुष्य के सभ्य होने का पता चलता है—तो हिन्दू यूरोप के किसी राष्ट्र से हीन नहीं हैं और यदि सभ्यता का मतलब भारत और इङ्गलैण्ड का केवल व्यापारिक सम्बन्ध है, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि इङ्गलैण्ड भारत से माल मँगा कर अधिक लाभ उठा सकेगा।"

नवयुवकों के प्रति—

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

ब्रह्मचर्य पालन करे पचीस वर्ष तक,
बाद उसके करे सुभावना भवन की।
धन का शुभार्जन करे तब, परन्तु रहे—
धुन उसको विलास-वाञ्छा के दमन की।
पावे यश, पर उसे चाह यश की न रहे,
चाह रहे देश के सुहित की लगन की।
आपही हो भारत की उन्नति, जो होवे योंही—
गति प्रति भारतीय युवक के मन की।

विदेशियों की आँख में भारत

"यदि मुझ से संसार भर में किसी ऐसे देश का पता लगाने के लिए कहा जावे, जो प्रकृति के अनन्त वैभव, सौन्दर्य और शक्ति से सम्पन्न हो—जो इस भौतिक संसार का स्वर्ग हो—तो मैं भारत की ओर इशारा करूँगा!

"यदि मुझसे यह पूछा जावे, कि किस देश के वायु-मण्डल में मानसिक विकास की ऐसी विभूतियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने जीवन के गूढ़तम रहस्यों पर विचार किया है और उन रहस्यों का पता लगाया है, जिनके अध्ययन की प्लेटो और केण्ट के पण्डितों को भी आवश्यकता है—तो मैं भारत की ओर इशारा करूँगा!!

"और यदि मैं स्वयं अपनी आत्मा से पूछूँ, कि ऐसा कौन सा साहित्य है, जिससे हम यूरोप में, जो केवल ग्रीकों और रोमनों की और यहूदी जाति की विचार-धारा में पले हैं, वे उपदेश ग्रहण कर सकते हैं, जो हमारे जीवन को नैतिक दृष्टि से पूर्ण और अधिक विस्तृत बना सकते हैं; वास्तव में जो उसे आदर्श मनुष्य बना सकते हैं, जो उसे केवल संसार के सच्चे सुख ही नहीं, बल्कि आत्मा के अनन्त आनन्द का रहस्य बता सकते हैं—तो मैं फिर भी भारत की ही ओर टकटकी लगाऊँगा!!!"

—मैक्समूलर

हम यह सर्वथा भूल जाते हैं कि आदर्श सभ्यता का जन्म भारत में हुआ था और भारत ही में वह पाली-पोसी गई है और यूरोप की सभ्यता केवल उसके अङ्कुर मात्र हैं। एक ऐसा राष्ट्र, जिसने भूत में धर्म, विज्ञान, कला और साहित्य आदि सभी बातों के ज्ञान का सञ्चार संसार के हर एक देश में किया है, अविकसित जङ्गलियों के से व्यवहार के योग्य नहीं है; और तिस पर भी भारत में हमारी गवर्नमेण्ट केवल इस विचार पर स्थित है कि या तो भारतीय स्वराज्य के योग्य नहीं हैं, और या विश्वासपूर्वक उन्हें उसके साधारण अधिकार भी नहीं सौंपे जा सकते। एक यही विचार सभ्य मनुष्यों के मस्तिष्क में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध क्रान्तिकारी विचार उत्पन्न करता है और उसके हृदय के टुकड़े-टुकड़े किए डालता है!!

* * *

(९वें पृष्ठ का शेषांश)

लालटेन न थी, जिसके प्रकाश की सहायता से हम खेतों में चल सकते।

गाँवों में कॉङ्ग्रेस आन्दोलन के प्रचार का कारण आर्थिक है। ज़मींदारों को राज्य-भक्त बनाए रखने के लिए गवर्नमेण्ट ने संसार की अत्यन्त घृणित और अन्याय-पूर्ण ज़मीन-प्रणाली को क़ायम रहने दिया है। साधारण काल में इस बन्दोबस्त का अर्थ है ग़रीबी, परन्तु मूल्य-भाव गिर जाने के कारण यह ज़मीन-प्रणाली नष्ट होती सी दिखाई पड़ती है। फ़सल उत्पन्न न होने पर सरकार लगान माफ़ नहीं, मुलतवी करती है। और यह महामारी सर्व-व्यापी है। बङ्गाल के जूट पैदा करने वालों और उत्तरी भारत के गेहूँ उत्पन्न करने वालों पर वह एक ही सा आघात करती है। सरकार आन्दोलन के प्रारम्भ से ही पुलिस पर जो अन्धाधुन्ध ख़र्च कर रही है, वह अपनी आमदनी के इसी द्वार के आधार पर ही तो कर रही है!

कॉङ्ग्रेस की नीति निश्चित है। अब लगानबन्दी का प्रचार संयुक्त प्रान्त तक हो गया है और वह इलाहाबाद के आस-पास लगानबन्दी का आन्दोलन सङ्गठित कर रही है। कॉङ्ग्रेस ने किसानों को ज़मींदारों को आधा लगान, इस शर्त पर देने का आदेश दिया है कि वे सरकार को उसमें से एक पाई न दें। ज़मींदारों में इतनी सामर्थ्य नहीं है, राष्ट्रीयता उनसे कोसों दूर है। इस वर्ष की समाप्ति के पहले ही युद्ध छिड़ जावेगा। पर क्या सरकार सब गाँवों को बेदख़ल कर सकती है? और यदि वह ऐसा करे, तो क्या वह इस रीति से लगान वसूल कर सकेगी? ऐसे आन्दोलन दावानल की भाँति शीघ्रता से फैलते हैं। जब किसानों में लगान देने की शक्ति ही नहीं, तो उन्हें लगान न देने के लिए भड़का देना कोई कठिन कार्य नहीं है। जेलें भर जावेंगी और सदैव की भाँति पुलिस की निष्ठुर लाठी के प्रहार होंगे। परन्तु लाठी चलाना भी आशङ्कापूर्ण है, क्योंकि किसानों में बहुत से राजपूत भी हैं, जो आत्माभिमान के कारण इस प्रकार की निष्ठुरता को पाप समझते हैं!

मैं यह कहने की धृष्टता नहीं करता, कि किसानों की भाषा से अनभिज्ञ होते हुए भी मैं किसानों के हृदय की थाह ले सका हूँ; परन्तु इसमें अत्युक्ति नहीं, मैं उनके साथ मिल कर बहुत कुछ अनुभव लाभ कर सका हूँ। वे अब तक चुप रहे हैं और उसका प्रधान कारण यह था कि अभी तक उनकी समझ में यह नहीं आया था कि शासन में किसी प्रकार के परिवर्तन से उनके भाग्याकाश का सूर्य चमक सकता है। वर्तमान सरकार की शक्ति का प्रतिबिम्ब अत्याचारी, नृशंस और घूसख़ोर देशी पुलिस है, जो सदैव किसानों से ज़मींदार का लगान और बनिए का ब्याज वसूल कराने में सहायक रही है! परन्तु अब महात्मा गाँधी का सन्देश उनके कर्ण-कुहरों तक पहुँच गया है और उनमें नई स्फूर्ति आ गई है। उनमें से बहुतों ने स्वयं महात्मा गाँधी के दर्शन किए हैं। मेरे यह पूछने पर कि क्या स्वराज्य में उनकी दशा सुधर जावेगी? उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया कि "हाँ, स्वराज्य हो जाने पर उन्हें लगान नाम मात्र को देना पड़ेगा।" इस विकट युद्ध में कॉङ्ग्रेस ने भारतीय जीवन के सम्पूर्ण दुःखों और घावों को नग्न रूप में रख दिया है। गवर्नमेण्ट से उसके लिए बिना स्वराज्य के, समझौता करना असम्भव है और लगानबन्दी के आन्दोलन द्वारा ही वह गवर्नमेण्ट की कमर तोड़ेगी! नमक-क़ानून-भङ्ग और शराब और वस्त्र बहिष्कार तो विराट आन्दोलन की केवल तैयारियाँ थीं। भारतीय स्वतन्त्रता का वास्तविक युद्ध तो अब छिड़ रहा है, जिसका अन्त किसानों के विप्लव में होगा!!

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं॥

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

२५ दिसम्बर, सन् १९३०

क्या कीजिएगा हाले-दिले-ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए अख़बार देख कर !!

भारत के नए वायसराय

लन्दन में १३वीं दिसम्बर को एक सरकारी विज्ञप्ति द्वारा घोषणा कर दी गई है, कि लॉर्ड वैलिङ्गडन, लॉर्ड इर्विन के स्थान पर भारत के नए वायसराय नियुक्त किए गए हैं।

लॉर्ड वैलिङ्गडन केनेडा उपनिवेश के वर्तमान गवर्नर-जनरल हैं और भारत के बम्बई और मद्रास प्रान्तों के गवर्नर रह चुके हैं। वे भारत में सन् १९१३ से १९२४ तक रहे। सन् १९१९ तक बम्बई के गवर्नर रहने के उपरान्त वे मद्रास के गवर्नर नियुक्त किए गए थे। लॉर्ड वैलिङ्गडन, यद्यपि माण्टेगू-चेम्सफ़र्ड के द्वैध शासन (Dyarchy) के विरुद्ध थे, परन्तु उसे सफल बनाने में उन्होंने कुछ उठा न रक्खा था।

पाठकों को स्मरण रखना चाहिए, कि लॉर्ड वैलिङ्गडन राजनैतिक क्रान्ति के सदैव विरुद्ध रहे हैं और वे वही व्यक्ति हैं, जिन्होंने असहयोग आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी को गिरफ़्तार करने की बड़े ज़ोरों से सिफ़ारिश की थी और यहाँ तक उन्होंने धमकी दी थी कि यदि मेरा यह प्रस्ताव स्वीकृत न हुआ, तो इसे मेरा इस्तीफ़ा समझा जाय।

राष्ट्रपति का अनशन

राजनैतिक क़ैदियों को कोड़े लगाने के विरोध में

मालूम हुआ है कि इलाहाबाद के नैनी सेण्ट्रल जेल में राष्ट्रपति जवाहरलाल नेहरू, डॉ० सैयद महमूद, सरदार नर्मदाप्रसाद सिंह, पण्डित मोतीलाल जी के दामाद श्री० आर० एस० पण्डित और श्री० गोविन्द मालवीय ने उन राजनैतिक क़ैदियों से सहानुभूति दिखाने के लिए, जिन्हें संयुक्त प्रान्त की जेलों में कोड़ों से पीटा गया है, १८वीं दिसम्बर से तीन दिन तक अनशन व्रत किया है। यह भी मालूम हुआ है, कि दिसम्बर के प्रारम्भ में पण्डित जवाहरलाल और उनके साथियों ने जेल के उच्च पदाधिकारियों के पास एक पत्र भेजा था, जिसमें उन्होंने यह लिखा था, कि उन्हें राजनैतिक क़ैदियों को कोड़ों की सज़ा और जेल के नियम भङ्ग करने पर उस सज़ा की धमकी देने के समाचारों से अत्यन्त दुःख हुआ है और उसके कारण उन्हें जेल के नियम पालन करने के सम्बन्ध में पुनः विचार करना पड़ा है। उसमें यह भी लिखा था, कि जब तक यह स्पष्ट न कर दिया जायगा, कि या तो उन्हें ग़लत सूचना मिली है और या गवर्नमेण्ट उपर्युक्त नीति के विरुद्ध है और उसकी पुनरावृत्ति न की जायगी, वे जेल के नियमों से सत्याग्रह करेंगे। कहा जाता है कि पण्डित मदनमोहन मालवीय ने भी इस सम्बन्ध में यू० पी० के गवर्नर सर जॉर्ज लेम्बर्ट को पत्र लिखा था; परन्तु न तो पत्र की पहुँच की रसीद ही आई और न उसका उत्तर ही। इसके बाद जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट को एक दूसरा पत्र भेजा गया, जिसमें उन्हें इस बात की इत्तला दी गई थी, कि वे उन क़ैदियों से सहानुभूति दिखाने के लिए १८वीं दिसम्बर से ७२ घण्टे का उपवास प्रारम्भ कर देंगे, और यदि थोड़े दिनों के अन्दर उनके पत्र का कोई उत्तर न दिया जायगा, तो वे जेल के नियमों के विरुद्ध सत्याग्रह भी प्रारम्भ कर देंगे।

* * *

बेड़ियों का संगीत

[सुप्रसिद्ध रूसी लेखक मोशिए एन लिपशको द्वारा लिखित—
अनुवादक श्री० दीनानाथ जी, एम० ए०]

बन्दी अलेग्ज़ी एगिकानोव को पुरानी बेड़ियाँ पहिनाई गई थीं। वे पहिले किसी दूसरे अपराधी के पैर में रह चुकी थीं और रगड़ से चिकनी तथा चमकदार हो गई थीं। बेड़ियों को बने कई वर्ष हो गए थे। यह सब पता अलेग्ज़ी को साइबेरिया के जेल में मिला। एक रोज़ बाहर जाते समय उसे एक बुड्ढे क़ैदी ने रोका। वह अलेग्ज़ी के पैरों की ओर झुका और बेड़ियों पर धीरे-धीरे अपना हाथ फेर कर हर्ष से चिल्ला उठा—अहा, कभी इन बेड़ियों को मैं पहिना करता था। मैं तो इन्हें इनकी आवाज़ ही से पहिचान गया था। इनकी आवाज़ मुझे कुछ परिचित-सी मालूम हुई। क़रीब पन्द्रह वर्ष पहिले कुबान में ये मेरे पैरों में थीं। उस वक़्त ये नई थीं, खुरदरी थीं। मेरे पहिले ये एक जिआर्जिया के बन्दी को पहिनाई गई थीं। वह जेल से निकल गया था और इन्हें जेल ही में छोड़ गया था। जब मुझे दण्ड दिया गया, तब ये मेरे पास आईं। मौक़ा पाकर एक रोज़ मैं अपने पैरों में साबुन लगा कर इनसे छुटकारा पाने का प्रयत्न करने लगा। बेड़ियों के खुरदरी होने के कारण मेरे पैरों से ख़ून निकलने लगा, पर मैंने उस पीड़ा पर ध्यान न दिया। किसी तरह इन्हें खींच निकाला और जेल से बाहर निकल भागा। केवल मैं ही नहीं—मेरे साथ तीन और अपराधी एक साथ निकल भागे थे। वे कैसे अच्छे दिन थे!

दिन डूब गया था। रजनी की कालिमा अपने विशाल अञ्चल से धीरे-धीरे पृथ्वी को ढाँक रही थी। कुछ-कुछ अँधेरा हो चला था। अपने पुराने जीवन का स्मरण करके वृद्ध बन्दी उन्मत्त-सा हो उठा। सन्ध्या के धुँधले प्रकाश में उसकी आँखें तारों की तरह चमक उठीं। कुछ देर बाद वह अलेग्ज़ी के कन्धे पर हाथ रख कर बोला—तुम अभी युवा ही हो, पर तुम्हें भाग्य से बेड़ियाँ अच्छी मिली हैं। तुम मेरा मतलब समझ गए न?

* * *

यह ख़बर धीरे-धीरे सब क़ैदियों तक पहुँच गई। सबका ध्यान उसकी ओर गया। जिसने इतिहास सब ने सुना, सब यही सोचने लगे, कि आख़िर इन बेड़ियों को कौन बनाता होगा? लोगों को बन्दी रखने का यह साधन किसने ढूँढ निकाला होगा? जेल के कारख़ानों में ज़ंजीर, बेड़ियाँ तथा कफ़न बनाने वालों को जेल के बन्दी योंही हरदम कोसा करते हैं। फिर हाल ही में इस ओर विशेष ध्यान आकर्षित होने के कारण वह क्रोधित और भी क्रोधित हो उठे। दूसरे लोगों के हृदय दुःख से भर आए, उनका हृदय काँप उठा। उनकी आँखें एकदम खुल गईं; उन्होंने सत्य को पा लिया—"हम लोग आपस में ही अपने बन्दी-गृहों की रचना करते हैं, आपस में ही अपनी बेड़ियाँ बनाते हैं, आपस में ही गोली मारते हैं और फाँसी लगाते हैं। यह सब कार्य हम लोग आपस में ही करते हैं। इसके लिए किसी बाहर वाले की आवश्यकता नहीं होती है। ये अधिकारी केवल हमारी मूर्खता से लाभ उठाते हैं।"

२

जेल के एक कमरे में एक मोमबत्ती टिमटिमा रही थी। सामने एक लकड़ी के मोढ़े पर एक नवयुवक गम्भीर भाव से कुछ लिख रहा था। उसके मुख की मुद्रा बार-बार बदल रही थी, मालूम होता था, उसके विशाल [illegible] रहे हैं! अलेग्ज़ी अपने वृद्ध पिता को पत्र लिख रहा था। उसने पत्र समाप्त किया और जेल के अधिकारियों से छिपा कर उसे अपने पिता के पास भेज दिया।

अलेग्ज़ी का पिता मैटवी एक कारख़ाने में काम करता था। वह स्वभाव से उदास तथा चुप रहने वाला व्यक्ति था। उसने पत्र को तीन बार पढ़ा। उसमें लिखी हुई बातें पढ़ कर उसका हृदय उत्तेजित हो उठा। जब वह कुछ शान्त हुआ, तब उसने अपने सब से ज्येष्ठ पुत्र वैसली से इसका उत्तर देने के लिए कहा। सामान्यतया मैटवी पत्रों की ओर ज़्यादा ध्यान न देता था। पर इस बार उसकी दशा विपरीत थी। वह वैसली से बोला—पत्र में मेरे लिए भी कुछ जगह छोड़ देना। और सब बातें तुम लिख दो, मैं कुछ विशेष सन्देशा भेजना चाहता हूँ।

पत्र में वैसली ने घर की कुशलता, कारख़ाने तथा मित्रों आदि के सम्बन्ध में लिख कर मैटवी की ओर घूम कर पूछा—अच्छा आपकी तरफ़ से क्या लिख दूँ?

मैटवी कुर्सी पर से उठा। उसका सारा शरीर काँप सा रहा था। ऐसा मालूम होता था, मानो उसके हृदय के टुकड़े-टुकड़े हुए जा रहे हों। उसने अपने सुगठित हाथों से मेज़ का सहारा लिया, फिर बहुत प्रयत्न करने के बाद भर्राई हुई आवाज़ में बोला :—

"पत्र में यह लिखो—तुम्हारे पिता की यह इच्छा है, कि तुम उन बेड़ियों को फेंकना मत,.........। बेटा अलेग्ज़ी, उसकी यह तीव्र इच्छा है, कि यदि तुम उन्हें किसी तरह यहाँ भेज सको तो भेज दो ......उन्हें भेजो, वे तुम्हारी यादगार होंगी...... ...।"

वैसली के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, वह अपने पिता की ओर कुछ देर तक एक देखता रह गया। मैटवी की स्त्री, उसकी पतोहू, लड़की, सब उसकी ओर ताकने लगीं। कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया! मानो सबके हृदय में एक धक्का-सा लगा।

अलेग्ज़ी की माता आँखों में आँसू भर कर बोली—हम लोगों का जीवन योंही अति दुखमय हो रहा है, योंही दिन बिताना कठिन हो रहा है; फिर उस पर तुम एक और दुख मोल ले रहे हो।

"आग का जवाब आग है, समझीं! आग का जवाब आग!" वृद्ध मैटवी की उत्तेजना का कुछ ठिकाना नहीं था। फिर वह वैसली की ओर घूम कर बोला—"तुम क्या देख रहे हो, जो मैं कहता हूँ, वह लिखा या नहीं?"

वैसली ने उसका सन्देशा लिख दिया।

३

जेल का जीवन बहुत ही कष्टमय था; परन्तु तब भी अलेग्ज़ी हिम्मत न हारा। पहिले ही जब उसे जेल-दण्ड की आज्ञा सुनाई गई, उसने अपने मन में सोचा—"अलेग्ज़ी साहस मत छोड़ो! दुखी मत हो।" वह अपने इस दृढ़-निश्चय पर स्थिर रहा। जेल के असह्य कष्टों के झेलने पर भी वह यह सोचता था, कि अभी तो मेरी आयु केवल बाइस वर्ष की है और अभी जीवन का बहुत सा भाग बाक़ी पड़ा है। उसमें मैं अपने आदर्शों को प्राप्त कर सकता हूँ, अपनी इच्छाएँ पूर्ण कर सकता हूँ। सोच क्यों करूँ? वह एक बात हर समय याद रखता था। वह बात; जो बहुमूल्य है, पर जिसे लोग प्रायः भूल जाते हैं। "रोने से किसी का जीवन बेहतर नहीं हो सकता—रोने से किसी के कष्ट हलके नहीं हो सकते। न रोकर कोई अपने साथियों को ही ज़्यादा सुखी कर सकता है। रोने का फल तो बिलकुल इसके विरुद्ध होता है। रोकर तुम दूसरों के जीवन को दुखमय बनाते हो और स्वतः अपने स्वास्थ्य का नाश करते हो।"

वह जेल में इस तरह रहता था, मानों अभी जीवन का आरम्भ ही नहीं हुआ है। मानो बन्दी-जीवन तथा हथकड़ी-बेड़ियाँ जीवन-संग्राम की एक तैयारी मात्र हैं। जेल के कुछ लोग समझते थे, कि वह हरदम अपने सुख-स्वप्नों में ही डूबा रहता है। वह जेल की कठिनाइयाँ तथा गन्दगी को अपनी असीम कल्पना के अगाध-समुद्र में डुबा देता है। वह इस तरह प्रसन्न रहता था, मानो उसके चारों तरफ़ न जेल की दीवारें थीं, न उसके पैरों में बेड़ियाँ थीं!

उसके शरीर को अधिकारियों ने बाँध रक्खा था परन्तु उसका मन स्वतन्त्र था। वह हरदम अपने आत्म-बल को तौलने का प्रयत्न करता था। "क्या मैं अपने कार्य को पूर्णरूप से कर सकूँगा? क्या मैं अपने उद्देश्य में सफलता पा सकूँगा? या मैं इन दुःखों के बोझ से दब कर अपने उच्च विचारों से गिर जाऊँगा? अपने आदर्शों तक न पहुँच सकूँगा?"

वह अपने साथियों के साथ अच्छा बर्ताव सदा करता था, पर जेल-अधिकारियों द्वारा किए गए अपमान को ज़रा भी सहन कर सकना उसकी शक्ति के बाहर था। बहुधा वह उत्तेजित हो उठता था और इसीलिए अँधेरी कोठरी में बन्द कर दिया जाता था। वह बहुत पीटा भी जाता था, पर उसकी शक्ति का अविचल स्रोत और उसके दृढ़-निश्चय का सवेगमय प्रवाह इन सब पीड़ाओं तथा कष्टों को तिनकों की तरह बहा ले जाता था—वह अपने निश्चय से तिल भर भी हटने को तैयार न था!

बन्दी-गृह की अवधि बीत जाने पर निर्वासित रहने का समय आया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, दुर्बलता के कारण देह की नसें तक दिखने लगी थीं, पर उसकी आँखों का तेज तनिक भी मन्द न पड़ा था।

जेल से मुक्त करते समय, जब उसकी अन्तिम तलाशी ली गई, तब जेलर ने उससे पूछा—अलेग्ज़ी, आख़िर तुमने अपनी अवधि काट ही ली?

"हाँ हाँ।"

"देखो दूसरी बार यह नहीं हो सकेगा, दूसरी बार तुम अवश्य निरुत्साह हो जाओगे।"

"मैं दूसरी बार फिर इसी तरह साहस दिखाऊँगा।"

जेलर ने उसे आश्चर्य-भरी दृष्टि से देखा। अलेग्ज़ी अपने हाथों में बेड़ियाँ लिए था। उसने ये बेड़ियाँ उससे माँग ली थीं।

कुछ चिढ़ कर जेलर बोला—अच्छा, मालूम होता है, अबकी बार तुम अपनी ही बेड़ियाँ पहन कर आओगे। शायद इसीलिए इन्हें ले जा रहे हो।

अलेग्ज़ी से न रहा गया, वह बोला—ये बेड़ियाँ तो मैं नमूने के लिए ले जा रहा हूँ। मैं अब जेल से निकल कर बेड़ियाँ बनाने का ही काम करूँगा। कौन कह सकता है, किसको इनकी ज़रूरत पड़े।

जेलर उसका मतलब समझ गया। उसकी आँखें अनादर एवं क्रूरता से चमक उठीं।

४

इतवार को वैसली पोस्ट ऑफ़िस से एक छोटा सा सन्दूक़ छुवा लाया। यह सन्दूक़ अलेग्ज़ी के पास से आया था।

घर के सब लोग मेज़ के चारों तरफ़ एकत्रित हो गए। वैसली ने ऊपर का ढक्कन अलग किया और बेड़ियों को बाहर निकाला। वे उसके हाथ से छूट गईं और मेज़ पर से ढुलक कर खनखनाती हुईं ज़मीन पर गिर पड़ीं। उसकी आवाज़ से सबके हृदय में ठेस-सी लगी—सबका हृदय काँप उठा।

उन्होंने बेड़ियों को उठाया। धीरे-धीरे हाथ फेरा और आँखें फाड़-फाड़ कर वे उसे देखने लगे। माँ सिसकने लगी!

वैसली का सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा। अपने भावों को छिपाने के लिए उसने बेड़ियों को उठाया और बोला—"अच्छा इनको मैं पहिन कर देखता हूँ।" उसने अपने पैर खोले और उनमें बेड़ियाँ पहन लीं। इन लोहे के टुकड़ों की शीतलता उसके गरम पैरों में होकर सारे बदन में फैल गई और उसका हृदय एकदम काँप-सा उठा। वह किसी तरह से चलने का प्रयत्न करने लगा—"अच्छा, तो अलेग्ज़ी इस तरह से चलता होगा।" वैसली को रुलाई-सी आने लगी। वह सोचने लगा, कि यदि वह ऐसी ज़ञ्जीरों में बाँध दिया जाता तो एक दिन भी शान्ति से नहीं बिता सकता था। पीड़ा से चिल्ला कर वह सारे जेल के अधिकारियों को आक्रान्त में डाल देता। पर अलेग्ज़ी ने इन ज़ञ्जीरों को इतने दिन पहिना, फिर भी माँ को पत्र में लिखा—"बेड़ियों से मुझे ज़रा भी कष्ट नहीं होता है। मैं बहुत आनन्द से हूँ।"

कमरे भर में सन्नाटा छाया था। सब अपने-अपने विचारों में मग्न थे। सब सोच रहे थे कि अलेग्ज़ी की क्या दशा होगी। पीछे से किवाड़ खुलने की आहट आई। मैटवी दरवाज़े पर आया। उसने वैसली की ओर घूर कर देखा व उत्तेजित होकर बोला—तुम समझ रहे हो कि यह खिलौना है। पहिले बेड़ियाँ पहिनने का काम तो कर दिखाओ, फिर इनको पहिन कर घूमना।

वैसली का सिर लज्जा से नीचे झुक गया। बेड़ियाँ निकाल कर उसने मेज़ पर रख दीं।

मैटवी धीरे-धीरे मेज़ की ओर बढ़ा, उसने बेड़ियाँ अपने हाथ में उठा लीं और उसके मुँह बार-बार खोलने और बन्द करने लगा। पर उसका चित्त इस कार्य में नहीं लगा था, वह अलेग्ज़ी के विषय में सोच रहा था। "अलेग्ज़ी ने अपने मज़दूर भाइयों की स्वतन्त्रता व भलाई के लिए एक धनाढ्य पूँजीपति तथा बलिष्ठ सरकार का सामना किया। अलेग्ज़ी, जो जेल जाने और मार खाने पर भी अपने सत्य-सिद्धान्तों पर अटल है; जो सत्य की रक्षा के लिए, अपने दीन-दुखी भाइयों के लिए, जेल के कष्ट भोग रहा है"—सोचते-सोचते मैटवी की आँखों में पानी आ गया। अलेग्ज़ी की क़ैद की सज़ा से मैटवी के बालों पर सफ़ेदी छा गई थी। उसकी चाँद गञ्जी हो चली थी। उसके हृदय में सदा एक ज्वाला-सी धधकती रहती थी। कभी-कभी रात को वह शोक से रोने लगता और फिर अपनी कायरता का स्मरण करके दाँत पीसने लगता था। "मैं क्यों रोता हूँ, मेरा पुत्र सत्य पर डटा है, वह वीर है।" वह हृदय की भीतरी अग्नि को दबाने का प्रयत्न करता था, पर प्रायः वह उसे दबाने में असफल होता था।

५

फ़ैक्टरी में अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ आने की ख़बर लग गई। सब लोग मैटवी से उन्हें फ़ैक्टरी में लाने के लिए अनुरोध करने लगे, पर वह हरदम उन्हें निराश करता रहा। हमेशा यही उत्तर देता रहा—"उन्हें देख कर क्या करोगे? उन्हें यहाँ लाने से क्या फ़ायदा?" इत्यादि। कुछ महीनों के बाद वह मान गया। उसने उन्हें फ़ैक्टरी की वार्षिक "धन्यवाद" (ईश्वर को धन्यवाद) वाली सभा में उन्हें लाने का वचन दिया।

६

हेमन्त ऋतु का आगमन हुआ। सारे पेड़ फलों से लदने लगे। फलों में रस का सञ्चार होने लगा। खेतों में सुनहलापन छा गया। पकी घास से एक विशेष सुगन्धि निकलने लगी। वायु भी मन्द हो गई। प्रकृति की हर एक वस्तु में मन्दता और अलसता की साँस थी, फ़ैक्टरी का सभा-गृह भरा हुआ था। सान्ध्य-सूर्य की अन्तिम किरणें अपनी लालिमा से कमरे की सारी वस्तुओं को लाल कर रही थीं। ऊपर दीवार पर "वरजिन मेरी" (महात्मा ईसा की माता) का चित्र बना हुआ था। चारों ओर पादरी प्रार्थना कर रहे थे, दूसरी ओर भजन हो रहे थे। सब मज़दूर उसमें भाग ले रहे थे; पर वह सङ्गीत तथा शोर मात्र था। आवाज़ से कमरे के सारे शीशे थर्रा रहे थे, चारों ओर से प्रतिध्वनियाँ आ रही थीं। इस उत्सव में फ़ैक्टरी के डाइरेक्टर भी उपस्थित थे। अपने कपड़ों से, शृङ्गार से बर्ताव तथा बातचीत से वे और लोगों से भिन्न मालूम होते थे। उनके सामने से जितने मज़दूर इत्यादि निकलते थे, सब बड़े आदर के साथ उनका अभिवादन करते थे। उत्तर में डाइरेक्टर भी कभी-कभी अपना सिर हिला देते थे। भजन ख़तम हुए। सभागृह में एकदम शान्ति छा गई। पर एकाएक खन से आवाज़ आई, सब उस स्थान की ओर बढ़े। भीड़ में मैटवी के दुर्बल हाथों से अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ छूट कर गिर पड़ी थीं। शीघ्र ही चारों ओर भीड़ लग गई। "मुझे दिखाओ" "मैं नहीं देख पाया" की आवाज़ें आने लगीं। अन्त में एक विशालकाय युवक उन बेड़ियों को हाथ में उठाए हुए एक टेबुल पर चढ़ गया। सबने अलेग्ज़ी की बेड़ियों को देखा। युवक अपना वक्तव्य देने लगा—"ये अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ हैं। वह हमारी मज़दूर-सभा का एक नेता था। ये बेड़ियाँ उसने हमारी रक्षा के लिए जेल में जाकर पहिनी हैं। अब वह निर्वासित अवस्था में साइबेरिया में है। शायद वह शीघ्र ही लौटेगा, समझे, वह फिर लौटेगा।" उसने फिर बेड़ियाँ खनखनाईं और भीड़ में कूद पड़ा। बेड़ियों की झनकार से सारी सभा में बिजली-सी दौड़ गई। डाइरेक्टर के हृदय में तो एक वाण-सा लग गया।

चारों तरफ़ से फ़ैक्टरी के अधिकारी टेबुल की ओर दौड़े। "हटो-हटो! ये कौन बोल रहा था? वह क्या दिखा रहा था? वह कहाँ भाग गया?" इत्यादि। उस युवक ने उन बेड़ियों को अपने बग़ल वाले के हाथ में देकर कहा—"आगे बढ़े चलो!" वे बेड़ियाँ झनझना कर हाथों-हाथ बाहर पहुँच गईं। वहाँ उन्हें एक युवक ने अपने कपड़ों में छिपा लिया। उनका सङ्गीत बन्द हुआ।

अधिकारी चारों तरफ़ जाँच करने लगे। उन्हें वह युवक मिल गया, जिसने बेड़ियाँ दिखाई थीं, पर उन्हें यह पता न चला कि बेड़ियाँ कहाँ गईं?

७

बेड़ियाँ दिखाने वाला नवयुवक मध्य रात्रि में गिरफ़्तार कर जेल में बन्द किया गया। रात भर सवारों ने मज़दूर-सभा के मुख्य सदस्यों के घर में घुस-घुस कर तलाशियाँ लीं। मैटवी के घर में भी कई सवार पहुँचे। सबको हाथ पकड़-पकड़ कर बिस्तरे के बाहर खींचा गया। ताले तोड़-तोड़ कर सब चीज़ें बाहर निकाल कर फेंक दी गईं। मेज़-कुर्सियाँ उलट दी गईं, हर चीज़ की तलाशी ली जाने लगी। मैटवी अधीर हो उठा, वह उत्तेजित होकर बोला—"बेड़ियाँ यहाँ नहीं हैं।" एक भीमकाय सवार उसकी ओर बढ़ा और बड़ी आशा से पूछने लगा—"हाँ तो जल्दी बताओ, वह व्यक्ति कहाँ है, जिसके पास बेड़ियाँ हैं?"

"यह मैं हरगिज़ नहीं बता सकता।"

सवार गरज कर बोला—तुम्हें बताना पड़ेगा।

मैटवी ने फिर उत्तर दिया—"मैं हरगिज़ नहीं बता सकता।" सवार क्रोध से लाल हो गया, उसने बूढ़े मैटवी को ज़मीन पर ढकेल दिया और कहा—"बदमाश, लोग तो वहाँ प्रार्थना के लिए इकट्ठे हुए थे और तू वहाँ बेड़ियाँ दिखाने पहुँचा।"

मैटवी ने अपने महान क्रोध को दबा कर रुकती हुई आवाज़ से दाँत पीस कर कहा—इन बेड़ियों का आविष्कार मैंने थोड़े ही किया है। यह तो औरों का कार्य है! वे दूसरों को बेड़ियों में बाँधते हैं और अपना ग़ुलाम बनाते हैं! मैं तो केवल उन्हें लाया था, फिर उन्हें क्यों छिपाता?

"फिर तू क्यों छिपाता है?"

मैटवी अब अपने को न सँभाल सका, वह चिल्ला उठा—मैं छिपाऊँगा, सत्तर तालों के पीछे छिपाऊँगा!

"छिपा के क्या करेगा? क्या बेड़ियाँ भी लाल या जवाहर हैं?"

"वे लाल-जवाहर से बढ़ कर हैं। ज़रा ठहरो, जब तुम्हारे लड़के को ज़ञ्जीरें पहिनाई जावेंगी, जब उसके पैरों में बेड़ियाँ डाली जावेंगी, तब तुम्हें पता चलेगा।"

सवार कुछ कह न सका, उसका सिर झुक गया।

८

दूसरे दिन, दिन भर मज़दूरों ने कारख़ाने में बेड़ियों के विषय में तथा गिरफ़्तारियों और तलाशियों के विषय में बातचीत की। मैटवी तो प्रश्नों के उत्तर देते-देते थक गया, छुट्टी होने के बाद मैटवी को एक नवयुवक मिला। उसने मैटवी से कहा—"अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ मेरे पास हैं। हमने अलेग्ज़ी की सहायता के लिए कुछ धन भी इकट्ठा किया है। उसे आप अलेग्ज़ी के पास भिजवा दीजिए।" मैटवी के हर्ष का ठिकाना न रहा। पहले तो वह यह आर्थिक सहायता लेने से इनकार करता रहा, पर आख़िर को मान गया। वह उस युवक मज़दूर से बोला—"उन बेड़ियों को ज़रा सँभाल कर रखना, नहीं तो तुम्हारे ऊपर भी कुछ आपत्ति आ पड़ेगी। मेरे बुढ़ापे पर रहम मत खाना। जब देखो कि तुम्हें बेड़ियाँ रखने से नुक़सान पहुँचेगा, उन्हें मुझे दे देना। मैं उनके लिए सब आपत्तियाँ झेल सकूँगा।"

नवयुवक ने बड़े साहस के साथ कहा—"आपको यह सब नहीं करना पड़ेगा। अभी हम सब मौजूद हैं।" यह कह कर वह बड़े वेग से चल दिया। मैटवी कुछ देर तक उसकी ओर देखता रहा। उसका हृदय प्रेम और हर्ष से भरा हुआ था। वह सोचने लगा—"आख़िर ये लोग अलेग्ज़ी को भूले नहीं हैं।"

९

नए वर्ष के उत्सव के दिन फिर एक बार बेड़ियों की झनकार सुनाई दी। नए साल के नाच की तैयारी थी। कमरे में चारों तरफ़ लोग जोड़ियाँ बना-बना कर खड़े थे। बाजों का बजना आरम्भ हुआ और सब कमरे के चारों ओर नृत्य करने लगीं। एकाएक सबकी दृष्टि एक जोड़ी पर पड़ी। उनके पैरों से बेड़ियों की झनकार निकल रही थी, पीठ पर 'अलेग्ज़ी' लिखा था। सब लोग उसी तरफ़ दौड़े। गड़बड़ी के कारण वाद्यादि बन्द कर दिए गए। सब लोगों को मालूम हो गया कि एक नव-

युवक अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ पहिने नाच रहा है। इसी हर्ष में एक बार फिर नाच हुआ, फ़ैक्टरी के मालिकों को पता चला। उन्होंने सरकारी अधिकारियों से तलाशी लेने के लिए प्रार्थना की। कारख़ाना घेर लिया गया, सवार अन्दर घुस पड़े। पर वह जोड़ी पहिले ही अन्तर्धान हो चुकी थी।

१०

अलेग्ज़ी को उसके पिता का पत्र मिला। जिसमें इन सारी बातों का वर्णन किया गया था। उसे अपने पिता के आन्तरिक परिवर्तन पर बहुत ही आश्चर्य हुआ। वही मनुष्य अलेग्ज़ी के स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचारों से घृणा करता था, उसकी पुस्तकें फेंक देता था और सदा घर से बाहर निकाल देने की धमकी दिया करता था। एकाएक उसमें इतना परिवर्तन हुआ, उसके सिद्धान्त तक बदल गए। अलेग्ज़ी अपने पिता से तलाशियों, गिरफ़्तारियों तथा बेड़ियों के मधुर सङ्गीत का समाचार सुन कर बहुत ही हर्षित हुआ, पर साथ ही साथ उसे क्षणिक दुख भी हुआ। वह एक बन्दी था, निर्वासित अवस्था में था, पर बेड़ियाँ घर पहुँच चुकी थीं और स्वतन्त्रता का आनन्द लूट रही थीं। वे अत्याचार, पीड़ा तथा स्वतन्त्रता का आशा-पूर्ण सङ्गीत सुना रही थीं, वे लोगों को जगा रही थीं। उनके गान में तिरस्कार भरा था—"उठो-उठो! तुमने बहुत समय खो दिया है। क्या अब सोते ही रहोगे?"

* * *

फ़ैक्टरी में जब वसन्तोत्सव के लिए तैयारियाँ हो रही थीं, मैटवी ने सुना कि अलेग्ज़ी निर्वासित अवस्था से निकल भागा है। उसे उसके विषय में बहुत चिन्ता रहने लगी। घर के सब लोग चिन्ता में डूब गए। हर एक को उसके एकाएक घर आने की प्रतीक्षा रहने लगी। कई रातें उन्होंने जाग कर बिताईं। मार्ग में ज़रा सा खटका होने पर वे सब के सब चौकन्ने हो जाते थे और प्रतीक्षा में दरवाज़ा खोलने के लिए तैयार होकर बैठ जाते थे, पर उनकी आशा पूर्ण न हुई। "शायद वह फिर से पकड़ लिया गया। तब तो वे उसे बहुत मारेंगे, उसे बहुत कष्ट देंगे।"—इस विचार से उनका हृदय काँप उठता था। मैटवी ने अलेग्ज़ी को छिपा रखने के लिए एक जगह ठीक कर ली थी। वह हरदम मज़दूरों से आगन्तुकों का पता लगाए रहता था, पर यह कुछ भी काम न आया। एक दिन सन्ध्या समय एक मनुष्य मैटवी के नाम एक पत्र लाया और चुपचाप कान में बोला—"यह पत्र आपके लड़के ने दिया है।"

वह कमरे में गया और बत्ती जला कर पत्र पढ़ने लगा। इतनी ही देर में हज़ारों कल्पनाएँ उसके मस्तिष्क से होकर निकल गईं। "शायद यह पत्र जेल से आया है या वह आ रहा है। नहीं, वह पकड़ लिया गया है।" इत्यादि। पर पत्र का समाचार बहुत ही आनन्दजनक था। अलेग्ज़ी स्वतन्त्रावस्था में था, वह एक फ़ैक्टरी में काम कर रहा था। आनन्द के मारे वृद्ध पिता की आँखें चमकने लगीं।

११

अन्त में रूस की सन् १९१७ की राज्य-क्रान्ति हुई। ज़ार के राज्य का अन्त हुआ। स्वतन्त्रता का समाचार सुन कर मैटवी की माता के आँखों में हर्ष के आँसू भर आए। "मैं कभी विश्वास नहीं कर सकती, कि मेरे दुखों का अन्त हो गया है। मैं तो समझती थी कि इस शुभ अवसर के आने तक मैं कभी जीवित न रह सकूँगी।"

मैटवी जुलूस के साथ शहर में गया। ऊपर एक झण्डा लगा था। सन्ध्या की मन्द-मन्द वायु में वह लहरा रहा था। आज उसकी विजय का दिवस था। अभी तक यह छिपा कर रक्खा जाता था। आज वह गौरव से हज़ारों मनुष्यों के सिरों पर लहरा रहा था।

मैटवी ने पुराने अधिकारियों को हटाने तथा नए राज्य की स्थापना करने में बहुत सहायता दी। परन्तु तब भी वह सैनिकों को तथा अन्य अधिकारियों को अविश्वास की दृष्टि से देखता था; पर धीरे-धीरे उसका भ्रम जाता रहा। उसने अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ निकाल कर उसकी तस्वीर पर टाँग दीं और उनसे बोला—"अब तुमने काफ़ी क़ैद भोग ली, अब तुम्हें स्वतन्त्रता मिली है।" उस दिन से हज़ारों लड़के तथा नवयुवक उसके यहाँ आया करते थे, वे बेड़ियों के पास आकर उनकी ओर आशापूर्ण दृष्टि से देखते थे, मानो वे इन बन्धन-रूपी बेड़ियों का रसास्वादन करना चाहते हों।

दिन में जब केवल स्त्रियाँ घर में रह जाती थीं, बहुधा बच्चे आकर दरवाज़ा खटखटाते थे और कहते थे—"माँ, हमें अन्दर आने दो। केवल एक बार देख लेने दो।" वे चित्र को देखते थे, डरते-डरते बेड़ियों को छूते थे और आपस में धीरे-धीरे कुछ कहते थे। बहुधा अलेग्ज़ी की माता इनसे तङ्ग आ जाती थी और कहती थी—"चलो, भागो अब, बहुत हो गया, इन मूर्खों को तो एक नया तमाशा मिल गया है।"

उनके पड़ोसी मैटवी से कहा करते थे—"मालूम होता है कि यहाँ तुमने एक नया गिरजा बना दिया है।"

"रहस्यमयी"

'भविष्य' के आगामी अङ्क से श्री० ऋषभचरण जैन लिखित 'रहस्यमयी' शीर्षक एक क्रान्तिकारी उपन्यास धारावाही रूप से प्रकाशित होगा। पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि असाधारण माँग के कारण इस समय "भविष्य" की एक भी प्रति कार्यालय में शेष नहीं बचती और न १५,००० कॉपियों से अधिक इस समय छापना ही सम्भव है। अतएव जो पाठक इस उपन्यास का रसास्वादन करना चाहें और जो फ़ाइल रखने के शौक़ीन हों, उन्हें अभी से ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

उत्तर में मैटवी कहता था—"ऊँह! देखने दो, अलेग्ज़ी घर लौटेगा तब वह आप ही इन सबकी चिन्ता करेगा।"

१२

स्वतन्त्रता की घोषणा होने के एक सप्ताह बाद अलेग्ज़ी घर लौटा। उसमें कितना परिवर्तन हो गया था। वह कितना बड़ा गया था। विशालकाय शरीर और चमकती हुई आँखें देख कर मैटवी का हृदय हर्ष से फूला नहीं समाता था। आख़िर ये बेड़ियाँ उसकी शारीरिक वृद्धि को नहीं रोक सकीं, उसकी जीवन-ज्योति को मन्द नहीं कर सकीं। इस मिलाप में आँसू भी बहे, छोटी से छोटी बातें भी कह डाली गईं। एकाएक अलेग्ज़ी की दृष्टि दीवार पर टँगी हुई बेड़ियों पर पड़ी। और वह बोला—"अच्छा, ये अभी तक हैं?" मैटवी ने उत्तर दिया—"हाँ, हैं। उन्होंने भी तुम्हारी तरह अपने कारावास की अवधि हाल ही में ख़तम की है।"

पिता-पुत्र दोनों एक साथ हँस पड़े। सारा कमरा उनके हर्षपूर्ण अट्टहास से गूँज उठा। मैटवी ने उनका सारा इतिहास कह सुनाया। बस इसके बाद तो अलेग्ज़ी समाज-सेवा में लग गया। सभा, जुलूस, व्याख्यान इत्यादि से उसे कभी छुट्टी ही नहीं मिलती थी। मैटवी के घर में सदा आनन्द था। उनका नाम सबकी ज़बान पर था। आज मैटवी का सिर ऊँचा हो रहा था। एक दिन वह अपनी स्त्री से बोला—"आज हम कितने सुखी हैं, कितने धन्य हैं! पर यदि यह सब कुछ पहिले हो सकता तो हमारी दशा कितनी भिन्न होती। शायद मेरी कमर इतनी न झुक जाती, तुम इतनी वृद्ध न देख पड़तीं, घर की लड़कियों की जीवन-ज्योति इतनी क्षीण न हो जाती!"

मार्च के अन्त में अलेग्ज़ी अपनी सभा का प्रतिनिधि बन कर राजधानी गया। गाड़ी छूटने के पहिले दौड़ कर वह अपने घर पहुँचा। जल्दी-जल्दी उसने सब से प्रेम-बिदा माँगी। मैटवी और वैसली उसे स्टेशन तक पहुँचाने गए। गाड़ी आई, वह जल्दी से एक डिब्बे में चढ़ गया। कुछ ही मिनट के बाद गाड़ी स्टेशन से बाहर चली गई। यह अलेग्ज़ी की अन्तिम झाँकी थी। मैटवी के गृहजन फिर उसे न देख सके। उन्हें समाचार मिला कि वह केन्द्रीय सरकार से अप्रसन्न होकर युद्ध में भरती होकर सीमा की ओर चला गया, वहाँ उसने अपने सैनिक भाइयों को युद्ध की ख़राबियाँ बताईं तथा उन्हें युद्ध छोड़ देने के लिए प्रोत्साहित किया। इस पर अधिकारियों ने उसे गोली मार दी!!

* * *

कुछ ही दिनों में मैटवी के बचे हुए काले बालों पर सफ़ेदी छा गई, उसकी आँखों की ज्योति मन्द पड़ गई। वह बहुत दुबला हो गया, और एकदम चुप रहने लगा। अक्टूबर में दूसरी राज्यक्रान्ति हुई। सारी सत्ता मज़दूरों तथा सैनिकों के हाथ में आ गई; इस पर भी मैटवी में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। वह कभी भी घर के बाहर नहीं जाता था, चारों ओर पागलों की तरह ताकता और सबको अविश्वास की दृष्टि से देखता था।

युद्ध के अन्त हो जाने के बाद उसका दुख और भी बढ़ गया; जहाँ देखो वहाँ युद्ध से लौटे हुए सैनिक दिखाई पड़ते थे। पर उनमें उसका अलेग्ज़ी न था!

१३

नवीन क्रान्ति की लहर सारे देश में फैल रही थी। धनी अपने मकानों से निकाले जा रहे थे। दूकानें, गोदाम, कारख़ाने, रेलगाड़ियाँ, पाठशालाएँ तथा अन्य संस्थाएँ मज़दूर सभाओं के अधिकार में आ रही थीं। अधिकारियों का रोब नष्ट होता जा रहा था। हर वस्तु में अधिक स्वतन्त्रता तथा सादगी मालूम होती थी। ऐसा प्रतीत होता था, कि यदि ज़रा और धैर्य से काम लिया गया तो शीघ्र ही देश अपने आदर्श तक पहुँच जावेगा। परन्तु लकड़ी, कोयला, रोटी, तेल आदि चीज़ों की कमी पड़ने लगी। साम्यवाद के सिद्धान्तों के डर से लोगों ने अपनी चीज़ें छिपाना आरम्भ कर दिया। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में नवीन राज्य-पद्धति की सफलता के विषय में शङ्का होने लगी। भविष्य में अन्धकार-सा प्रतीत होने लगा। चिन्ता तथा निराशा से मज़दूर अशान्त हो उठे। उन्होंने एक सभा की, जिसमें मज़दूर-सभा तथा साम्यवादी सरकार का घोर विरोध किया। उन्होंने कहा कि इन नेताओं ने हमें धोखा दिया है। इनकी कही हुई एक भी बात सच नहीं निकली है। हम लोग भूख से मर रहे हैं, आगे और क्या होगा? हम लोगों को चाहिए कि इन नेताओं का अन्त कर दें। उनका हृदय क्रोध से भरा था, उनकी आँखों से पीड़ा झलकती थी। मैटवी ने यह सब देखा, पर वह पहिले इस सब का मतलब ही न समझ सका। अभी थोड़े दिन पहिले ये अलेग्ज़ी के नाम पर मरने को तैयार थे। उसकी पूजा करते थे। अब उसी के अनुयायियों को गाली दे रहे हैं। इतना परिवर्त्तन क्यों? इससे वह एकदम उत्ते-

जित हो उठा ; उससे यह न देखा गया, वह दौड़ कर घर आया और उसने दीवार पर से बेड़ियाँ उतारीं और जल्दी-जल्दी सभा में पहुँच कर चिल्ला उठा—मैं कुछ कहना चाहता हूँ।

"तुम क्या कहना चाहते हो ? धक्का क्यों देते हो ?"—बग़ल वाले व्यक्ति ने चिल्ला कर कहा।

"मैं मैटवी, हूँ कुछ कहना चाहता हूँ।"

सब चिल्ला उठे—"अच्छा, मैटवी को जगह दो। उसे बोलने दो।"

कुछ देर में सभा में एक नया दृश्य दिखने लगा। मैटवी एक ऊँची जगह पर चढ़ गया और वह बेड़ियाँ निकाल कर खनखनाने लगा। जनता में एकदम शान्ति छा गई। मैटवी बोला—"आप लोगों ने ये बेड़ियाँ देखीं ?" किसी ने उत्तर नहीं दिया, मालूम होता था कि जनता पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा ! मैटवी निराश हो चला था, वह क्रोधित होकर फिर चिल्लाया—"आप सबने ये बेड़ियाँ देखीं ?" एक कोने से आवाज़ आई—"हाँ देख लीं।" फिर सब एक स्वर से बोल उठे—"देख लीं, देख लीं।" मैटवी बोला—"ज़रा अपनी ओर देखो, तुम आपस में कुत्तों की तरह लड़ रहे हो। क्या तुम इनमें बन्द होना चाहते हो ? यदि इसी तरह आपस में लड़ते रहे, तो अवश्य तुम इनके अधीन हो जाओगे। वे तुम्हें ज़ञ्जीरों में बाँध कर गुलाम अवश्य बना लेंगे। तुममें से प्रत्येक व्यक्ति को अपने वश में कर लेंगे।" वह बार-बार कहता रहा—"यह याद रक्खो, कि ये तुम्हारी स्वतन्त्रता छुड़ा कर तुम्हें ज़ञ्जीरों में कस देंगे।"

वह चुप हो गया, जनता की सारी अशान्ति मिट गई। उन्हें अपनी मूर्खता पर लज्जा-सी मालूम होने लगी। वे आपस में कहने लगे—"हम लोग अलेग्ज़ी का उपदेश भूल गए। अपने दुखों का नाश हमें स्वतः करना पड़ेगा, अपनी राष्ट्रीय समस्याओं को स्वयं हल करना पड़ेगा।" बेड़ियों के उस स्वर्गीय सङ्गीत ने उन्हें फिर से ठीक मार्ग बताया। वे अपने-अपने कार्य में लग गए।

१४

ज्योत्स्ना अपने निर्मल धवल-प्रकाश से पृथ्वी को प्रकाशित कर रही थी। मन्द-मन्द वायु में खेतों में लगी हुई ऊँची घास लहरा रही थी। पर इस सारी सुन्दरता की अवहेलना करके अभागे रूसी गृह-कलह द्वारा अपना नाश कर रहे थे ! रूस में गृह-युद्ध छिड़ा हुआ था। शत्रुओं ने मैटवी के शहर पर धावा किया था। कारख़ाने का भोंपू बज रहा था, जो अपनी पुकार द्वारा आगामी भयङ्कर भविष्य की सूचना दे रहा था। शहर भर के निवासी शस्त्र लेकर इधर-उधर दौड़ रहे थे। लोग अपनी-अपनी चीज़ें सँभाल रहे थे। शहर के युवक मज़दूर शत्रु का सामना करने गए थे।

मैटवी इन सब में नहीं था। वह अस्वस्थावस्था में घर में पड़ा था। कारख़ाने का भोंपू सुन कर वह वहाँ जाने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु वह उठ ही नहीं सकता था। उसने वैसली को बुलाया और उससे कहा—वैसली, तुम वहाँ जाओ। जल्दी जाओ, देर मत लगाना। बहुत जल्दी जाओ......देखो तुम देर कर रहे हो...... मुझे क्रोध मत दिलाओ। शायद हम लोग अब न मिल सकेंगे, पर जाओ।

रात भर गोलियाँ चलीं, रास्तों में लोग चिल्लाते रहे, दौड़ते हुए घोड़ों की टापों की आवाज़ें आती रहीं, पर मैटवी ने यह सब नहीं सुना, वह ज्वर से बेहोश पड़ा रहा। सवेरे वह कुछ अच्छा हुआ।

लड़की ने आकर कहा—उन्होंने शहर को अपने क़ब्ज़े में कर लिया है। सब सड़कें और कारख़ाने घेर लिए गए हैं। वे प्रत्येक घर की तलाशी ले रहे हैं और उनका सामना करने के लिए भरती किए गए लोगों को पकड़-पकड़ कर बाज़ार में ले जा रहे हैं। शायद वहाँ उन्हें फाँसी देंगे। वैसली अभी घर नहीं लौटा है।

माता लड़की से बोली—बस चुप रहो ! यह सब बातें इनसे न कहो, चलो हम लोग इन्हें छिपा दें।

मैटवी बोला—तुम मुझे छिपाने जा रही हो ? मैं कभी न छिपूँगा।

"प्रत्येक व्यक्ति छिप रहा है।"

"वे सब मूर्ख हैं।"

वैसली की स्त्री एकदम दौड़ती-दौड़ती कमरे में आई और उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। दौड़ने से उसकी साँस फूल रही थी, वह जल्दी-जल्दी बोली—वे यहाँ आ रहे हैं, किसी ने उनसे हम लोगों के विषय में कह दिया है। एक अधिकारी आ रहा है और उसके साथ तीन सैनिक भी हैं।

अलेग्ज़ी की माता अधीर हो उठी, वह दुःख से सिसकने लगी। "सब चुप होकर बैठ जाओ। हे ईश्वर ! तुम्हीं हम लोगों को इन दुष्टों के हाथ से बचाओ।" सब चुप बैठ गईं। मैटवी ने अपनी आँखें बन्द कर लीं, पर उसे बेड़ियों का ध्यान आया, वह एक बार ही चिल्ला उठा—"अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ ! उन्हें छिपा लो, नहीं तो वे ले जावेंगे।" लड़की उस तरफ़ दौड़ी, पर उसी समय बाहर सैनिकों के पैरों की आहट सुनाई दी। वह घबरा कर वहीं बैठ गई।

एक अधिकारी तथा तीन सैनिक कमरे के अन्दर आए—यह किसका घर है ? अच्छा तो मैटवी तुम्हीं हो। तुम्हीं सभा में बेड़ियों का सङ्गीत सुनाते हो, अच्छा तो इस घर की तलाशी लो।

सैनिक सारी चीज़ें उथल-पुथल करने लगे। इधर-उधर फेंकने लगे। उस अधिकारी ने बेड़ियाँ टँगी देखीं और उनकी ओर झपटा। बेड़ियों की झङ्कार सुन कर मैटवी चौंक पड़ा, उसमें न जाने कहाँ से शक्ति आ गई। वह बिस्तरे पर से उठ कर बैठ गया और क्रोधित होकर बोला—उन्हें वहीं रख दो ! ख़बरदार उन्हें मत छुओ !!

अधिकारी लाल हो गया—क्या कह रहा है ? क्या तू भी फाँसी पर चढ़ना चाहता है ?

"मुझे फाँसी दे दो, पर वे बेड़ियाँ न छुओ, वे इसलिए नहीं हैं।" पर उसने इस पर ध्यान न दिया, तलाशी ख़तम हुई। बेड़ियों के अतिरिक्त घर में और कुछ भी नहीं मिला। वे जाने लगे। मैटवी भी चिल्लाता हुआ उनके पीछे भागने लगा, पर उसकी लड़की तथा स्त्री ने उसे पकड़ लिया। दोपहर के क़रीब वह नज़र बचा कर भाग निकला और कई अधिकारियों से मिला। वह सब से यही पूछता था कि "वह अधिकारी कहाँ गया, जो मेरी बेड़ियाँ ले गया है। वे मेरी हैं, मेरे लड़के की हैं।"

१५

रात का समय था, एक सवार फेरी पर चला आ रहा था। किसी चीज़ पर उसका पैर पड़ा, वह तुरन्त घोड़े पर से उतरा। एक बुड्ढा बेहोश सड़क पर पड़ा था। उसकी कनपटी पर बन्दूक़ की चोट का निशान था। थोड़ी दूर पर कोई एक छोटी सी वस्तु पड़ी हुई थी। उस पर सुनहली धूल लग रही थी। सवार ने उसे उठाया, वे बेड़ियाँ थीं। "तो यह मैटवी है और ये अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ हैं ?" सवार कुछ सोचने लगा, फिर उसने एक बार बेड़ियों को खनखनाया। उसका सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा। रात का सन्नाटा छाया था, बेड़ियों की झङ्कार एक बार चारों ओर गूँज गई !

*   *   *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

(११ वीं संख्या से आगे)

ज्वालामुखी—

देखने में अपदार्थ, किन्तु अगाध तक उसका गर्भ-विस्तार था, ऊपर से प्रशान्त और सुहावना दीखता था, किन्तु भीतर तरलाग्नि की असह्य और दुर्धर्ष ज्वालाओं का समुद्र उमड़ रहा था। विश्व के दुखियों की वेदनामय हाय की निःश्वास—उसे लुहार की मरी हुई खाल की धौंकनी की तरह भड़का रही थी। सत्ता का भीषण उत्ताप उसे सह्य न था।

उसका गगनस्पर्शी, प्रशान्त, क्षुद्र मुख, एकटक अनन्त आकाश से कुछ कह रहा था।

आकाश में पूर्ण अवकाश था।

अपरिमित ज्वालामाही द्रव-सत्त्व संग्रह हो रहे थे।

जगत के पाप, दुख, वेदना, पीड़न और परितापों की ज्वाला नदियों का, भूगर्भ मार्ग से चुपचाप उस अग्नि-समुद्र में सङ्गम हो रहा था।

अकस्मात्—

*   *   *

अकस्मात्—

स्फोट हुआ।

प्रथम एक अकल्पित सूक्ष्म धूम-रेखा उठी, और सातों आकाश तक क्षण भर में पहुँच गई।

व्यवसाय-व्यस्त जनों ने देखा और अपने धन्धे में लगे।

अच्छी तरह देखने और समझने का किसी को भी अवसर न था। वह क्षीण धूम-रेखा धीरे-धीरे पुष्ट होकर एक भीमकाय स्तम्भ हो गई।

जिसका एक सिरा भूलोक में, और दूसरा स्वर्लोक में था, इसके बाद ही।

आरक्त पीत ज्वाला की लहरें दीख पड़ीं।

प्रतिक्षण वे वृद्धिङ्गत होती थीं।

दूर से देखने में मन-मोदक थीं।

सर्प-सौन्दर्य की तरह वे अतिशय मनोमोहक थीं।

एक श्वेत-दर्प ने देखा।

और हँस कर कहा—

क्या मनोरम कुदरत का खेल है !

उसने सत्ताओं के मूल अवयवों को एकत्र कर अपना अवशिष्ट कौशल समाप्त किया।

दुर्धर्ष क्षोभ हुआ।

*   *   *

दुर्धर्ष क्षोभ हुआ—

सहस्र उल्कापात की तरह, नेत्रों की ज्योति को निष्प्रभ करता हुआ, ज्वालामयी धारा का एक वेगवान् प्रवाह—एक बार अतर्क्य गति से आकाश के अधोपट तक उन्नत होकर—जगत पर बरस गया। जगत की जातियाँ स्तब्ध खड़ी होकर देखने लगीं।

लोहू और लोहे का घमासान पागल सा हो गया।

श्वेत-दर्प की आकाश तक चढ़ी हुई मूँछें अस्त-व्यस्त हो गईं !!

वह तरलाग्नि,

(क्रमशः)

*   *   *

मिश्र का स्वाधीनता-संग्राम

[मुन्शी नवजादिक लाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

गत १६२०-२१ में, जिस समय भारत में अहिंसात्मक असहयोग की दुन्दुभी बज उठी थी ; साधक-श्रेष्ठ महात्मा गाँधी स्वाधीनता-प्राप्ति के अभिनव उपाय की परीक्षा में लगे थे, ठीक उसी समय मिश्र-वासियों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन आरम्भ करके ग्रेट-ब्रिटेन के धुरन्धर राजनीतिज्ञों को स्तम्भित कर दिया था। समस्त जगत आश्चर्य-विमुग्ध नेत्रों से यह अभावनीय दृश्य देख रहा था। वीर मिश्रियों के अटल स्वाधीनता-प्रेम के सामने ग्रेट-ब्रिटेन के पशुबल को मत्था टेकने के लिए बाध्य हो जाना पड़ा। उस समय ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध समस्त संसार में असन्तोष फैला हुआ था। इङ्गलैण्ड में बेकारी की समस्या प्रबल हो उठी थी। रूस, इटली, फ़्रान्स, तुर्किस्तान, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, जापान, चीन और हिन्दोस्तान आदि कोई देश ऐसा न था, जहाँ ब्रिटेन के प्रति अनास्था का भाव न उत्पन्न हुआ हो। उसी समय तुर्किस्तान में कमालपाशा ने और चीन में कर्मवीर सनयातसेन ने ब्रिटेन की साम्राज्य-लिप्सा के विरुद्ध तुमुल आन्दोलन आरम्भ किया था। जापान, रूस, इटली आदि ब्रिटेन को सन्देह की नज़रों से देखने लगे थे। भारत में महात्मा गाँधी का असहयोग आंन्दोलन एक अपूर्व नवयुग की सूचना दे रहा था। ग़रज़ें कि उस समय ब्रिटेन पर वास्तव में विपत्ति की घनघटा घहरा रही थी।

परन्तु हम तो ब्रिटिश-धूर्तता के क़ायल हैं। शह-ज़ोरों से दबने और कमज़ोरों को पीसने में संसार की कोई जाति हज़रत जॉनबुल का मुक़ाबला नहीं कर सकती। जब ये देखते हैं, कि इनके न्याय और उदारता का पर्दा फ़ाश हो रहा है, यहाँ अब स्वार्थपरता को छोड़े बिना काम न चलेगा, तो वे झट शान्तिपूर्ण समझौते का आश्रय लेकर संसार की आँखों में धूल झोंक देते हैं। उस समय वे फ़ौरन 'कॉन्फ़्रेन्स' या 'कमीशन' का अमोघ फन्दा फेंकते हैं। इससे उनके स्वार्थों की भी सिद्धि होती है और संसार को धपले में डाल देने का भी मौक़ा मिल जाता है। मिश्र के सम्बन्ध में भी अङ्गरेज़ों ने अपने उसी चिर-अभ्यस्त उपाय का अवलम्बन किया। जब उन्होंने देखा कि शान्ति और शृङ्खला की रक्षा की दुहाई देकर आन्दोलनकारियों को पीसने से काम न चलेगा, तो झट श्रीमान मिलनर महोदय की अध्यक्षता में एक रॉयल कमीशन, मिश्र की राजनीतिक अवस्था की जाँच के लिए भेज दिया। परन्तु मिश्र वाले इस चालबाज़ी से वाक़िफ़ थे। फलतः भारतीय रॉयल कमीशन के सूत्रधार श्रीमान साइमन महोदय की तरह मिलनर साहब को भी मिश्र में 'स्याह स्वागत' ही नसीब हुआ। एक भी मिश्रवासी उस रॉयल कमीशन के सामने अपना दुःख निवेदन करने अथवा गवाही देने न गया! मिलनर साहब को अपना-सा मुँह लेकर अपने घर लौट जाना पड़ा। अपने प्यारे मिश्र को दायित्व-ज्ञान-हीन दुष्ट आन्दोलनकारियों के पञ्जों से निकालने के लिए अङ्गरेज़ों ने चेष्टा तो बहुत की, परन्तु मिश्र की बदक़िस्मती ने कुछ भी न होने दिया।

अस्तु, जब उन्होंने देखा कि कमबख़्त किसी तरह मानते ही नहीं, तो एक 'सीमाबद्ध स्वाधीनता' (?) देकर उन्हें फुसलाने की चेष्टा की गई। श्रीमान लॉयड जॉर्ज की उदार-हृदय सरकार ने इस अमूल्य दान के एवज़ में थोड़ी क्षमता अपने हाथों में रख लिया। अर्थात् केवल बाहरी शत्रुओं से मिश्र की रक्षा करने का भार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक प्रबन्ध अपने अधिकार में रख कर बाक़ी सब कुछ (?) उसे सौंप दिया गया! इसके साथ ही यह व्यवस्था भी कर ली गई कि अगर कहीं ब्रिटेन के आर्थिक व्यापार को ठेस लगने की सम्भावना दिखाई पड़ेगी, तो मिश्र की अभ्यन्तरीय नीति में वह दख़ल दे सकेगा। फलतः स्वाधीनता प्राप्त कर लेने पर भी मिश्र को राजनैतिक, अर्थनैतिक और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में ब्रिटेन के चरणों का ही आश्रय लेना पड़ा।

परन्तु मिश्रवासियों के हृदयों में स्वतन्त्रता की जो भीषण ज्वाला धधक रही थी; वह इन पानी के छींटों से बुझने वाली न थी। श्री० ज़ग़लुलपाशा और उनके अक्लान्त सहकर्मी-वृन्द स्वाधीनता के इस ओस-कण से सन्तुष्ट न हुए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दी कि हमें आंशिक स्वतन्त्रता नहीं चाहिए। हम तो जब तक जीवित रहेंगे, तब तक पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए लड़ते रहेंगे। फलतः उन्होंने पूर्ण उत्साह के साथ अपना आन्दोलन जारी रक्खा। देखते-देखते फिर वही दावाग्नि धधक उठी। चारों ओर एक अपूर्व उत्साह दृष्टि-गोचर होने लगा। स्वाधीनता लाभ करने की प्रबल आकांक्षा ने समस्त जाति के दिल में बिजली का सञ्चार कर दिया। अङ्गरेज़ों द्वारा अनुमोदित जातीय पार्लामेण्ट का निर्वाचन आरम्भ हुआ। पूर्ण स्वाधीनतावादी बहुत से मिश्री उसके सदस्य बने। पार्लामेण्ट पर राष्ट्रीय प्रभाव डाल कर देश को पूर्णरूप से स्वाधीन कर देने के लिए परम स्वाधीनतावादी ज़ग़लुलपाशा प्रथम प्रधान-मन्त्री बने। इसी समय ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल भी बदल गया। मि० मेकडॉनल्ड प्रथम बार ब्रिटेन के प्रधान-मन्त्री पद पर नियुक्त हुए। उनकी अर्थात् मज़दूरों की सरकार ने मिश्र के साथ एक समझौता कर लेने का विचार प्रकट किया। वार्तालाप आरम्भ हो गया, परन्तु ब्रिटेन के साम्राज्यवाद सम्बन्धी विचारों में कोई परिवर्तन परिलक्षित नहीं हुआ। इधर ज़ग़लुल ने भी अपना पूर्ण स्वाधीनता वाला दावा क़ायम रक्खा। परन्तु उनकी आकांक्षा की पूर्ति का पथ कण्टकाकीर्ण ही रह गया। वह चाहते थे, मिश्र को एक पूर्ण स्वाधीन राष्ट्र के रूप में परिणत करना और मि० मेकडॉनल्ड चाहते थे, उसे साम्राज्य के शिकञ्जे में कसे रखना। फलतः समझौते की बातचीत विफल होकर रही।

मेकडॉनल्ड की सरकार के पतन के बाद इङ्गलैण्ड का शासन-सूत्र पुनः कञ्ज़रवेटिव दल के हाथों में चला गया। मि० बाल्डवीन ने नवीन मन्त्री-सभा का सङ्गठन किया। इसके साथ ही इङ्गलैण्ड की राजनीतिक अवस्था में भी विशेष परिवर्तन हुआ। इस दल की चेष्टा से फ़्रान्सीसी और अङ्गरेज़ों ने अपनी पुरानी प्रतिद्वन्द्विता भूल कर उत्तरीय अफ़्रिका (मोरक्को और मिश्र) पर अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रखने का दृढ़ सङ्कल्प किया। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए इटली, फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड एकता-सूत्र में आबद्ध हुए। इङ्गलैण्ड ने मिश्र के राष्ट्रीय दल को सम्पूर्ण रूप से कुचल डालने की इच्छा से भयङ्कर दमन आरम्भ कर दिया। उस समय भी मिश्री पार्लामेण्ट का मन्त्रित्व ज़ग़लुलपाशा के अधिकार में था। उन्होंने विदेशियों के अत्याचार से मिश्र को बचाने के लिए एक नया क़ानून बनाने का विचार किया। अङ्गरेज़ों को इस बात की ख़बर मिली तो उन्होंने मिश्रवासियों को धमकाना आरम्भ किया। परन्तु दृढ़-हृदय पाशा महोदय ऐसी धमकियों से विचलित होने वाले न थे। अङ्गरेज़ों ने उन्हें लिखा कि अगर वे अपना सङ्कल्प परित्याग नहीं करेंगे, तो हम मिश्र पर गोले बरसा कर उसे भून डालेंगे। इस समय बम्बई के भूतपूर्व लाट लॉर्ड लॉयड मिश्र में ब्रिटेन की ओर से हाई कमिश्नर थे। उन्होंने ज़ग़लुलपाशा को लिखा कि आप मन्त्रित्व परित्याग कर दें, नहीं तो हम मिश्र के विरुद्ध युद्ध-घोषणा करेंगे। देश-भक्त ज़ग़लुलपाशा ने देखा कि प्रबल ब्रिटिश शक्ति के साथ प्रत्यक्ष रूप से लोहा लेने में देश का कल्याण नहीं है। स्वार्थ पर ब्रिटेन अगर मिश्र पर चढ़ाई कर देगा, तो वह बहुत दिनों के लिए पराधीनता की ज़ञ्जीर में बँध जायगा। इसलिए उन्होंने मन्त्रित्व से इस्तीफ़ा दे दिया। परन्तु मातृ-भूमि को इस सङ्कटावस्था में छोड़ कर निश्चिन्त रूप से बैठ जाना भी महामना पाशा के लिए कठिन था। मन्त्री-पद से अलग होते ही उन्होंने मिश्री पार्लामेण्ट के विपक्षियों का नेतृत्व ग्रहण किया।

महात्मा ज़ग़लुल स्वाधीनता-कामी मिश्र के दीक्षा-गुरु थे। सन् १६०६ से सन् १६२७ तक उन्होंने अपनी मातृ-भूमि को शृङ्खला-मुक्त करने के लिए जो घोर परिश्रम किया था, उसकी तुलना नहीं हो सकती। इस नर-केसरी की बदौलत मिश्र में नवजीवन का सञ्चार हुआ था। देश के लिए मिश्रियों ने जो अलौकिक त्याग स्वीकार किया था, उसका सारा श्रेय एकमात्र स्वर्गवासी ज़ग़लुलपाशा को है। बारम्बार अङ्गरेज़ों द्वारा लाञ्छित और अपमानित होकर भी पाशा कभी हतोत्साह नहीं हुए थे। मातृ-भूमि के चरणों पर उन्होंने अपना सारा जीवन उत्सर्ग कर दिया था। राज-शक्ति ने उन्हें गिराने में कोई दक़ीक़ा बाक़ी नहीं रक्खा था, परन्तु अपने असीम आत्मबल और त्याग द्वारा उन्होंने अपने देशवासियों के दिलों में घर कर लिया था। जीवन के अन्तिम काल में शासन-तन्त्र से संयुक्त रह कर भी वे सदा-सर्वदा अपने देश को विदेशियों के चङ्गुल से विमुक्त करने में ही लगे थे। सन् १६१६ ई० में अङ्गरेज़ी सरकार ने उन्हें तथा उनके कई साथियों को देश-निकाले की सज़ा देकर माल्टा भेज दिया था। परन्तु इस निर्वासन का नतीजा अङ्गरेज़ों के लिए अच्छा नहीं हुआ। पाशा के हटते ही सारे मिश्र में राजविद्रोह की भीषण आग धधक उठी। अपने देश-प्रिय नेता के निर्वासन का समाचार पाकर सारा मिश्र खलबला उठा। चारों ओर मार-काट और ख़ून-ख़राबी का बाज़ार गर्म हो उठा। इसलिए अन्त में झख मार कर अङ्गरेज़ों ने पाशा को मुक्त कर दिया। पाशा महोदय की अक्लान्त चेष्टा से ही मिलनर कमीशन का सफलतापूर्ण बहिष्कार हुआ था। इसी सिलसिले में वे कई बार इङ्गलैण्ड गए और

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री को बारम्बार समझाया कि मिश्र स्वाधीन होकर ही रहेगा, परन्तु इसका कोई फल नहीं हुआ। इसी समय मिश्र के मॉडरेट लीडर, हमारे देश के सर सप्रू और जयकर आदि की तरह केवल व्याख्यानबाज़ी के भरोसे देश का कल्याण-साधन करने वाले, आदिल पाशा आदि ने उन्हें कई बार मिश्र के प्रधान मन्त्रि-पद पर प्रतिष्ठित करने का इरादा किया, परन्तु ज़गलुल ने स्वीकार नहीं किया। वह किसी तरह भी अपने आदर्श को परित्याग करना नहीं चाहते थे। प्रथम निर्वासन से लौटने पर उन्होंने क्षण भर के लिए भी विश्राम न करके अपनी सम्पूर्ण शक्ति द्वारा स्वाधीनता-आन्दोलन चलाना आरम्भ कर दिया। ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ पाशा की शक्ति के क़ायल थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि यह महान पुरुष जो चाहे वही कर सकता है। अङ्गरेज़ों ने बारम्बार पाशा को निर्वासित करके, नज़रबन्द करके और जेल देकर उनकी शक्ति की पूरी जाँच की थी। सिसली और एडेन में नज़रबन्दी के दिन व्यतीत करने पर सन् १९२२ में पाशा महोदय निर्वासित करके जिबराल्टर भेजे गए। वहाँ जाने पर उनका स्वास्थ्य अत्यन्त ख़राब हो गया था। उस समय अङ्गरेज़ों ने उनकी धर्मपत्नी को उनके साथ रहने की अनुमति प्रदान की थी। परन्तु वह वीराङ्गना भी किसी तरह कम न थी। उस समय वह पति के अधूरे कार्यों की पूर्त्ति में लगी थी। इसलिए लोगों के कहने पर भी वह कार्य छोड़ कर जिबराल्टर जाने को प्रस्तुत न हुई। अन्त में स्वास्थ्य की ख़राबी के कारण, सन् १९२३ ई० में पाशा मुक्त होकर अपने देश लौट आए। उनके पदार्पण करते ही एक बार फिर मिश्र जाग उठा। इसी समय नवीन शासन-संस्कार की भी प्रतिष्ठा हुई, ज़गलुल ने मन्त्रि-पद ग्रहण किया। इसके बाद उनके इस्तीफ़ा देने की नौबत आई, जिसका ज़िक्र हम ऊपर कर चुके हैं।

महात्मा ज़गलुल के जीवन का लक्ष्य था मिश्र को स्वाधीन करना, इसलिए वे जब तक जीते रहे, तब तक बराबर इसके लिए संग्राम करते रहे। उनके जीवन का मूल-मन्त्र था—'कार्यम् वा साधयामि शरीरं वा पातयामि!' यद्यपि वे अपने जीवन-काल में ही मिश्र को पूर्ण स्वाधीन नहीं देख सके, परन्तु उन्होंने अपने देशवासियों को जो महान मन्त्र प्रदान किया है, उसकी शक्ति अमोघ है। उस महामन्त्र की बदौलत आज न सही, कल मिश्र अवश्य ही एक सम्पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में दिखाई देगा। ईश्वर की कृपा से महात्मा ज़गलुल को धर्मपत्नी भी वैसी ही मिल गई थी। इस पुण्यवती महिला के संसर्ग ने पाशा के जीवन को और भी उज्ज्वल बना दिया था। देश-सेवा के कार्यों में छाया की भाँति उन्होंने पति का साथ दिया था। उनके बन्दी या द्विपान्तरित होने पर कई बार उन्होंने उनके कार्यों को सँभाल कर अपनी कार्यदक्षता का परिचय दिया था। जिस समय जिबराल्टर में पाशा का स्वास्थ्य ख़राब हो गया था, उस समय लोगों ने बहुत कहा कि आप पाशा के पास चली जायँ, आपकी शुश्रूषा से उनका स्वास्थ्य ठीक हो जायगा; परन्तु पाशा ने तो उन्हें पहले से ही राष्ट्र-सेवा का महान कार्य सौंप रक्खा था। उन्होंने पत्नी को जिबराल्टर आने की आज्ञा नहीं दी।

महात्मा ज़गलुलपाशा के जीवन का इतिहास वास्तव में मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास है। पाशा का त्याग, आदर्श कर्मनिष्ठा और देश-प्रेम की तुलना नहीं हो सकती। बहुतों की धारणा है कि अगर सन् १९२७ में पाशा की मृत्यु न हो जाती और वे कम से कम दो वर्ष भी और जीवित रह जाते, तो मिश्र पूर्ण रूप से स्वाधीन हो जाता। परन्तु किसी ने सच कहा है कि—"मेरे मन कछु और है कर्ता के कछु और!"

अस्तु, महात्मा ज़गलुल के इस्तीफ़ा देकर अलग हो जाने पर श्री० सरवत पाशा मिश्र के प्रधान-मन्त्री नियुक्त हुए। अङ्गरेज़ों ने अपने स्वार्थों की रक्षा करते हुए, मिश्र के साथ फिर नए सिरे से समझौता करने का विचार किया। इस सम्बन्ध में सरवत पाशा से बातचीत करने का भार सर ऑस्टिन चेम्बरलेन ने ग्रहण किया। बहुत दिनों तक लिखा-पढ़ी हुई। शायद दोनों एक बार मिले भी, परन्तु कोई नतीजा नहीं निकल सका। अङ्गरेज़ अपने स्वार्थों को तिल भर छोड़ने को भी प्रस्तुत न हुए। फलतः सरवत पाशा भी अपने पूर्ण स्वाधीनता के सिद्धान्त पर डटे रहे। उस समय मिश्र की पार्लामेण्ट में राष्ट्रीय दल की ही प्रधानता थी। इसलिए ब्रिटिश हाई-कमिश्नर की सलाह से मिश्र के राजा फ़ाद ने पार्लामेण्ट को तोड़ दिया। फिर नवीन पार्लामेण्ट का सङ्गठन हुआ और महमूद नए मन्त्री चुने गए। अङ्गरेज़ों ने महमूद पाशा के साथ भी सन्धि की चर्चा आरम्भ की। इङ्गलैण्ड की वर्तमान मज़दूर-सरकार ने एक लम्बा-चौड़ा प्रस्ताव लिख भेजा, जिसका सार-मर्म नीचे दिया जाता है:—

(१) मिश्र से ब्रिटिश फ़ौज हटा ली जायगी, (२) दोनों देशों में परस्पर मित्रता का सम्बन्ध रहेगा, (३) मिश्रस्थ विदेशी प्रजा की जान और माल की रक्षा का दायित्व मिश्र की सरकार पर रहेगा, (४) मिश्री सेना को अगर विदेशी राष्ट्रों से वैदेशिक शिक्षागत सहायता लेने की आवश्यकता होगी तो ब्रिटिश सरकार से अनुमति लेने की आवश्यकता होगी, (५) स्वेज़ नहर की रक्षा के लिए मिश्र में एक ब्रिटिश सेना मौजूद रहेगी, (६) मिश्र के जो अफ़सर विदेशों में नियुक्त होंगे, वे अङ्गरेज़ होंगे, (७) हाई-कमिश्नर के स्थान पर दोनों देशों में एक-एक राजदूत रहेंगे, (८) सुदान का शासन-कार्य सन् १८९९ की सन्धि के अनुसार होता रहेगा, परन्तु इस सम्बन्ध में नवीन सुधार करने का अधिकार इङ्गलैण्ड को रहेगा, (९) इस समझौते के कारण विश्वराष्ट्र-सङ्घ अथवा केलग के समझौते में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ेगी, (१०) यह केवल २५ वर्ष तक जीवित रहेगी।

इन शर्तों के सम्बन्ध में महमूद पाशा के साथ अङ्गरेज़ों का जो पत्र-व्यवहार हुआ है, उससे मालूम हुआ है कि मिश्री सेना को ब्रिटिश प्रणाली से शिक्षा दी जाएगी और उसका भार इङ्गलैण्ड पर रहेगा। स्वेज़ की रक्षा के लिए जो फ़ौज मिश्र में रहेगी, बिना भाड़ा के ही रहेगी। ब्रिटिश और मिश्र के सिवा कोई हवाई जहाज़ स्वेज़ के ऊपर तेरह मील से अधिक नहीं आ सकेगा। मिश्र के विचार और राजस्व विभाग में जो अङ्गरेज़ अफ़सर नियुक्त हैं, वे कुछ दिनों तक अपने पदों पर बदस्तूर क़ायम रहेंगे।

परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक पण्डितों का कथन है कि उपर्युक्त शर्तें भी चालबाज़ी से ख़ाली नहीं हैं। अङ्गरेज़ किसी तरह मिश्र को पूर्णरूप से स्वाधीन नहीं रहने देंगे।

अस्तु, जिस समय इन शर्तों पर दोनों दलों के नेता विचार कर रहे थे, उस समय मिश्र के राष्ट्रीय दल वालों ने इसका तीव्र विरोध किया था। उन लोगों ने घोषणा की कि मिश्र का वर्तमान शासन-तन्त्र न्यायानुमोदित नहीं है, इसलिए जब तक पार्लामेण्ट का पुनः निर्वाचन न हो, तब तक इस सन्धि के सम्बन्ध में कोई बातचीत नहीं होनी चाहिए। परन्तु इङ्गलैण्ड की वर्तमान मज़दूर-सरकार को यह आशा है कि अन्त में मिश्र का राष्ट्रीय दल राज़ी हो जायगा। क्योंकि उसे यह मानना ही पड़ेगा कि इङ्गलैण्ड के अनुदार दल की सरकार इतना देना भी स्वीकार नहीं करेगी। इधर इङ्गलैण्ड का अनुदार दल भी इस सन्धि का घोर विरोध कर रहा है। देखना चाहिए ऊँट किस करवट बैठता है।

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

ईश्वर उन्हीं का सहायक होता है, जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं।

❀

पिञ्जरे में गाने वाली चिड़िया विस्तृत पर्वत-राशियों में आकर अपना राग भूल जाती है।

❀

पुस्तक मस्तिष्क को अलंकृत करने के लिए है; आलमारी की शोभा बढ़ाने के लिए नहीं।

❀

पृथ्वी के पुष्पालंकृत यौवन को देख कर अपने नेत्रों को सफल करने की लालसा से शीतकाल दबे पाँव वसन्त के समीप आता है।

❀

दीवार के भी कान होते हैं।

❀

युवावस्था आश्रय की उपेक्षा करती है; वृद्धावस्था आश्रय की खोज।

❀

काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती; धोखे का व्यापार एक ही बार होता है।

❀

गुलाम का कोई धर्म नहीं होता है।

❀

संसार की कोई वस्तु स्थिर नहीं, किन्तु पाप की कालिमा अमर और अमिट है। कीर्ति और यश कालान्तर में मिट जाते हैं, परन्तु पाप का धब्बा नहीं मिटता।

❀

मन की बात आदमी के मुख से अनायास ही निकल जाती है। सावधान होकर अपने भावों को हम छिपा लेते हैं।

❀

किसी को धोखा देना अपने आपको धोखा देना है।

❀

एक धृष्ट कहता है—मैं अपनी फूस की छोटी कुटिया में बैठ कर तेरी उपासना करूँगा। तेरे मन्दिर की विशालता अपनी सुन्दरता द्वारा मेरी उपासना में बाधक होती है।

ईश्वर इस धृष्टता से प्रसन्न होता है।

❀

शत्रु से अपनी निर्बलता कहने वाले को हम क्या कहेंगे?

❀

विधवा का लाल उसका लाड़ला बेटा ही नहीं, उसके पति की निशानी भी है।

❀

परमात्मा पूजा का नहीं, प्रेम का भूखा है।

❀

वन की निर्जनता में कोई पाप करो, तुम देखोगे कि तुम्हारे नीचे की घास, हरे-भरे वृक्ष, निर्जीव पत्थर तुम्हारे ऊपर अभियोग लगाएँगे।

❀

पेट की ज्वाला पक्षी को जाल में फँसाती है।

❀

जो जितना ही लोगों के लिए अधिक चिन्तित है, वह उतना ही बड़ा देश-भक्त है।

❀

लेनिन और गाँधी

[श्री० त्रिवेणीप्रसाद जी, बी० ए०]

लेनिन और गाँधी उन दिव्य महात्माओं में से हैं, जिन्होंने स्वार्थ को तिलाञ्जलि देकर मानव जाति के उपकार के लिए अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर दिया है। हम बुद्ध और ईसा के विषय में जानते हैं; हम जानते हैं कि मानव जाति का उद्धार करना ही बुद्ध और ईसा का उद्देश्य था। उन्होंने मानव जाति के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर दिया था। यदि हम कहें, कि लेनिन और गाँधी त्याग में बुद्ध और ईसा से कम नहीं हैं, तो अत्युक्ति न होगी।

लेनिन और गाँधी आज मनुष्य-मात्र के लिए पूज्य हैं। इनकी दिव्य प्रभा किसी देश-विशेष तक ही परिमित नहीं है, बल्कि संसार का कोना-कोना इनके महान त्याग से जगमगा उठा है। सचमुच बहुत दिनों के बाद संसार को लेनिन और गाँधी-जैसे लालों को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ज़रा देखें तो संसारोद्यान के इन दो पुष्पों में क्या विशेषताएँ हैं!

लेनिन

लेनिन के विषय में कुछ जानने के पहले उसके जन्म के पूर्व रूस की परिस्थिति कैसी थी, इस पर विचार करना आवश्यक है। अस्तु

लेनिन के जन्म के बहुत पहले ही पीटर-महान ने रूस में पाश्चात्य सभ्यता—विशेषतया वहाँ के आविष्कारों का प्रचार करना चाहा था। उनका उद्देश्य था अपनी शक्ति को बढ़ाना; और इसलिए यूरोपीय आविष्कारों की सहायता अनिवार्य रूप से आवश्यक थी। यद्यपि पीटर-महान का उद्देश्य कुछ दूसरा ही था, तो भी भविष्य के लिए उन्होंने रूस का मार्ग साफ़ कर दिया। एक बार सुयोग मिल जाने पर रूस पर पाश्चात्य विद्वानों के विचारों का प्रभाव पड़ने लगा। हम जानते हैं कि यूरोप क्रान्ति का केन्द्र रहा है। फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति ने जिन विचारों का उद्घाटन किया था, वह सारे यूरोप में फैल चुका था। अब रूस भी इन्हीं विचारों को अपनाने के लिए आगे झुका।

ऐसी दशा में जो होना चाहिए था, वही हुआ। रूस दो दलों में विभक्त हो गया। सामाजिक क्रान्ति करने के लिए एक दल पश्चिम की ओर और दूसरा पूर्व की ओर देखने लगा। सुधार की आवश्यकता दोनों को जान पड़ने लगी, किन्तु उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे भिन्न-भिन्न उपायों का अवलम्बन करना चाहते थे। भला एक म्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती हैं! दोनों दलों में तनातनी बढ़ती ही गई। इसी समय मानों किसी दैवी शक्ति ने इस समस्या को हल करने के लिए लेनिन के रूप में अवतार ग्रहण किया।

लेनिन ने रूस में एक नई जान डाल दी। वह पक्का साम्यवादी था। वह साम्यवाद की नींव पर एक नए रूस की इमारत खड़ा करना चाहता था। यों तो यूरोप में भी अनेक प्रकार के साम्यवादी विचार फैले हुए थे, जिनका उद्देश्य पूँजीपतियों का नाश करना था। किन्तु वे पूँजीपतियों का नाश कर मध्यम श्रेणी के लोगों को सारे अधिकार दिलाने के पक्ष में थे। किन्तु लेनिन का विचार कुछ दूसरा ही था। वह पूँजीपतियों और मध्यम वर्ग के लोगों—दोनों को हटा कर केवल एक जनता का साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। यूरोप वाले (कार्ल मार्क्स के अनुयायियों को छोड़ कर) तीन श्रेणियों के स्थान पर दो श्रेणियाँ स्थापित करना चाहते थे। किन्तु लेनिन केवल एक ही चाहता था। हम एक शब्द में कह सकते हैं कि वह मज़दूरों का राज्य स्थापित करना चाहता था। वह कार्ल मार्क्स का कट्टर अनुयायी था। यद्यपि रूस के तत्कालीन नेता लोग उसके विचारों के तथ्य में सन्देह प्रकट किया करते थे, किन्तु लेनिन ने जो सफलता प्राप्त की है वह प्रत्यक्ष है।

रूस के क्रान्तिकारी नेता मोशिए लेनिन

[यह सन् १९१७ का वह ऐतिहासिक चित्र है, जिसकी अनेक प्रतियाँ पुलिस वालों को मोशिए लेनिन की गिरफ़्तारी के लिए बाँटी गई थीं]

जो बातें कल असम्भव सी जान पड़ती थीं, वे ही आज सम्भव हो गई हैं। किसी को भी ऐसा विश्वास न था कि लेनिन रूस में ग़रीबों का राज्य स्थापित करने में सफल हो सकेगा; किन्तु लेनिन के कार्यों ने संसार को सचमुच स्तम्भित कर दिया है।

लेनिन ने अपनी मृत्यु के पहले ही रूस में पाश्चात्य औद्योगिक प्रणाली की नींव दृढ़ कर दिया था। कल-कारख़ाने खुलने लगे थे, बिजली की बत्तियाँ देहातों तक में जलने लगी थीं और कृषि-सम्बन्धी नए-नए पाश्चात्य औज़ार आने लगे थे। इतना ही नहीं, लेनिन ने यूरोप के नामी-नामी इञ्जीनियरों और कारीगरों को भी रूस में बुला कर उनसे अनेक प्रकार की सहायताएँ लीं, जिससे रूस औद्योगिक उन्नति में, आज यूरोप के किसी भी देश से पीछे नहीं है।

लेनिन ने रूस को मज़दूरों का राष्ट्र बना दिया सही, किन्तु पाश्चात्य सभ्यता के आधार पर। आज वहाँ बड़े-बड़े कारख़ाने हैं। कुछ कारख़ाने ऐसे बन रहे हैं, जो शायद संसार में सब से बड़े कारख़ाने होंगे। इतने ही से पता चल सकता है कि लेनिन का लगाया हुआ पौधा कैसा लहलहा रहा है।

अब लेनिन की इन सफलताओं पर दृष्टिपात करते हैं, तो हमें आश्चर्य होता है, कि इस एक व्यक्ति ने थोड़े समय में इतने बड़े राष्ट्र में किस प्रकार उथल-पुथल मचा दिया। किन्तु आश्चर्य की बात नहीं है। लेनिन में नेपोलियन की शक्ति थी। नेपोलियन का व्यक्तित्व लेकर वह आया था। उसकी बातों में नेपोलियन की बातों का सा असर था। रशियन मज़दूरों को इस तरह उसने अपने वश में कर लिया था, जैसे कोई सँपेरा साँप को अपने वश में कर लेता है। सीधी-सादी बात यह है कि वह इतना निःस्वार्थ था, मज़दूरों की भलाई में इतनी दिलचस्पी लेता था कि उनका इसके वश में आ जाना स्वाभाविक ही था। उसके मित्रों का कहना है, कि न तो वह लम्बी-लम्बी स्पीचें झाड़ता था, न अलङ्कारपूर्ण शैली में लेख ही लिखता था और न उसकी पोशाक ही में कुछ

तड़क- भड़क थी। देखने में भी वह कुछ ऐसा नहीं था, कि उसके चेहरे का कुछ प्रभाव पड़े। वह बहुत सीधा-सादा व्यक्ति था। वह औरों की अपेक्षा मज़दूरों के लिए अधिक परिश्रम करता था, औरों की अपेक्षा वह अधिक निःस्वार्थ था तथा औरों से अधिक परिस्थिति समझने की अक़्ल उसमें थी। इन्हीं गुणों के कारण उसने कुछ ही दिनों में रूस के मज़दूर राष्ट्र को संसार के बड़े राष्ट्रों की पंक्ति में बिठा दिया।

लेनिन धार्मिक था, किन्तु महात्मा जी की तरह अहिंसावादी नहीं था। उसने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिंसा और अहिंसा का विचार नहीं किया। उसका धर्म था क्रान्ति करना, रूस को ज़ारशाही के पञ्जे से विमुक्त करना। उसकी समझ में बिना क्रान्ति की आग लगाए, बिना भयानक उथल-पुथल किए रूस के लिए ज़ारशाही से छुटकारा पाना असम्भव था। वह कार्यदक्ष था, भारतीय दार्शनिक नहीं! वह कूटनीति में निपुण चाणक्य था, कोरे ज्ञान और अध्यात्म पर विचार करने वाला भोला-भाला नहीं।

गाँधी

लेनिन ने बुद्ध और ईसा की तरह मानव जाति के उपकार के लिए आत्मोत्सर्ग किया है; किन्तु गाँधी ने बुद्ध और ईसा बन कर आत्मोत्सर्ग किया है! महात्मा जी ने जिस मार्ग को ग्रहण किया है, वह लेनिन के मार्ग से भिन्न है; इसका कारण भी है।

महात्मा गाँधी

पहली बात तो यह है कि रूस को अपने प्राचीन इतिहास से कुछ सीखना नहीं था। वहाँ का प्राचीन इतिहास कुछ ऐसा गौरवपूर्ण भी नहीं था, कि वहाँ वाले उसे आदर्श मान कर, उसी की नींव पर नवीन रूस का महल खड़ा कर सकते। लेनिन ने मानो एक नए क्षेत्र में—जो पहले कभी अच्छी तरह से जोता नहीं गया था—उर्वरा-शक्ति उत्पन्न कर बीज बोया था! इसके पहले न तो यह क्षेत्र कभी अच्छी तरह जोता ही गया था, और न कोई जानता ही था कि कौन बीज किस प्रकार बोना चाहिए। यही कारण है कि रूस में साम्यवाद का बीजारोपण करने का उसे मौक़ा मिला। उसने नई नींव पर रूस की इमारत खड़ी कर दी।

किन्तु भारत के विषय में वैसी बात नहीं है। भारत कभी सभ्य देशों का शिरमौर था। उसे अपनी पुरानी बातें अभी तक याद हैं, जिन्हें वह कभी भूल नहीं सकता। यदि कोई भारत की पुरानी सभ्यता को मिटा कर एक नई सभ्यता का महल यहाँ खड़ा करना चाहे, तो उसे निश्चय ही असफलता मिलेगी। न जाने कितनी विदेशी जातियाँ यहाँ आईं, और यहाँ की सभ्यता में इस प्रकार विलीन हो गईं कि आज उनका पता लगाना तक कठिन है। पठानों और मुग़लों का प्रभुत्व यहाँ लगभग ८०० वर्षों तक रहा, किन्तु नाना प्रकार के अत्याचारों के होते हुए भी, भारत अपनी पुरानी सभ्यता को किसी न किसी रूप में क़ायम रख सका है। अङ्गरेज़ों के राज्यकाल में भी यद्यपि भारत का शिक्षित समुदाय अङ्गरेज़ी सभ्यता की ओर कुछ अंशों में झुक पड़ा है, तो भी साधारण जनता अभी इससे कोसों दूर है। इसी से पता चल सकता है कि रूस और भारत में क्या अन्तर है। भारत के अनेक नेताओं का मत है कि भारत अपनी पुरानी सभ्यता के बल पर ही फिर खड़ा हो सकेगा। यूरोपीय सभ्यता इसके लिए विष है। जब भारत के लिए एक आधार-स्तम्भ वर्तमान है, तो उसे दूसरी ओर देखने की क्या आवश्यकता हो सकती है? जब उसकी पुरानी नींव अभी तक ज्यों की त्यों बनी हुई है, तो दूसरी नींव खोदने की क्या आवश्यकता? महात्मा गाँधी का मूल-मन्त्र यही है। वे भारत को भारतीय सभ्यता के रङ्ग में ही रँगना चाहते हैं, यूरोपीय सभ्यता के विषैले रङ्ग में नहीं!

महात्मा जी की सम्मति में यूरोपीय सभ्यता भारत के लिए हानिकर सिद्ध हुई है। पाश्चात्य आविष्कारों द्वारा भी भारत को बहुत हानि सहनी पड़ी है। रेल, मोटर और ट्राम ने भारत के कोमल कलेजे को दल दिया है। इतना ही नहीं, अङ्गरेज़ी शिक्षा ही हमारी ग़ुलामी का कारण है।

भारत की वास्तविक जनता कलकत्ते और बम्बई में आपको नहीं मिलेगी। वह देहात के झोपड़ों में निवास करती है, बम्बई और कलकत्ते के महलों में नहीं। ज़रा उन देहाती झोपड़ों की ओर नज़र उठा कर देखिए, फिर कलकत्ते और बम्बई जैसे शहरों की ओर मुख फेरिए; देखिए तो कितना अन्तर है! ये शहर केवल थोड़े से पूँजीपतियों की रङ्गभूमि हैं, जहाँ इन्हीं बेचारे ग़रीबों का रक्त चूसा जाता है!

महात्मा जी फिर भी लेनिन की तरह पूँजीपतियों का नाश करना नहीं चाहते। वे केवल पूँजीवाद का रूप बदल देना चाहते हैं। इस प्रकार महात्मा जी लेनिन के सिद्धान्तों के विरोधी हैं। इतना ही नहीं, बोलशेविज़्म के वे कट्टर विरोधी हैं। लेनिन ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए हिंसा-मार्ग को ग्रहण किया था; किन्तु महात्मा जी का मार्ग दूसरा ही है। यहाँ हम फिर एक बार प्राचीन ऋषियों का उपदेश सुन रहे हैं—'अहिंसा परमो-धर्मः।' अहिंसा, मन से, वचन से, और कर्म से!! महात्मा जी के सिद्धान्तों का शुरू से आज तक यही मूल-मन्त्र रहा है।

महात्मा जी के अहिंसा का अर्थ साधारण अर्थ से बहुत ऊँचा है। इसका सच्चा अर्थ है, आत्म-दमन। यदि कोई दुष्ट हमारी बहू-बेटियों की बेइज़्ज़ती करने पर उतारू हो जाय, तो उस समय हम अपने को असमर्थ समझ कर यदि 'अहिंसा व्रत' पालन करें, तो महात्मा जी के विचार से यह अहिंसा नहीं है, बल्कि यह कायरता है। अहिंसा का भाव कायरों के हृदय में नहीं आ सकता। वह तो शुद्ध, सात्विक और बलवान हृदय का गुण है!

इस प्रकार हम देखते हैं कि लेनिन और गाँधी के सिद्धान्तों में बहुत अन्तर है। लेनिन क्रान्तिकारी था और उसने क्रान्ति किया—तलवार की सहायता से। तलवार ही की सहायता से, उसने ज़ारशाही की जड़ खोदी। बुद्ध और ईसा की शक्ति रखते हुए भी वह उनसे बहुत भिन्न था। किन्तु यहाँ गाँधी में हम दूसरा ही नज़ारा पाते हैं। 'अहिंसा परमोधर्मः' का मन्त्र फिर आकाश तक गूँज उठा है। महात्मा जी की क्रान्ति का यही राज़ है! मालूम होता है, बुद्ध ने फिर अवतार ग्रहण किया है; अथवा ईसा फिर अपने इस उपदेश की "यदि कोई तुम्हारे एक गाल में तमाचा मारे तो उसकी ओर दूसरा गाल भी फेर दो" शिक्षा देने के लिए संसार में आए हैं। किन्तु नहीं, बुद्ध और ईसा दोनों की शक्ति लेकर गाँधी पैदा हुए हैं।

दो महापुरुषों की तुलना नहीं हो सकती है। अपने-अपने क्षेत्र में वे अतुलनीय हैं। हम केवल उनके सिद्धान्तों में अन्तर दिखा सकते हैं। किन्तु इससे कोई यह सिद्ध नहीं कर सकता कि अमुक महापुरुष, अमुक महापुरुष से ऊँचे या नीचे हैं। इसी प्रकार लेनिन और गाँधी भी अपने-अपने क्षेत्र में अद्वितीय हैं। संसार के इतिहास में दोनों का नाम अमर रहेगा। दोनों के सिद्धान्तों में अन्तर अवश्य है, किन्तु यह अन्तर स्वाभाविक भी है। यह सम्भव है कि जो बात एक देश के लिए लागू है, वह दूसरे देश के लिए लागू न हो। परिस्थिति भिन्न-भिन्न होने से भिन्न-भिन्न उपायों का भी अवलम्बन करना ही पड़ता है।

यही कारण है कि लेनिन और गाँधी का उद्देश्य एक रहते हुए भी, उपायों में अन्तर देख पड़ता है। वास्तव में वे एक ही उद्यान के दो मनोरम पुष्प हैं, जिनकी सुगन्ध सारी मानव जाति के हृदय में नया उत्साह, नया जीवन और नई भावनाएँ भरती रहेंगी।

* * *

फ़रियादे "बिस्मिल"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

जब कहने पर आते हैं तो क्या-क्या नहीं कहते!
भूले से कभी मुझको वह अच्छा नहीं कहते!!
बेसबब बेफ़ायदा सर अपना यों धुनते नहीं.
सबकी सुनते हैं, हमारी बात वह सुनते नहीं!
समझ वाले यह कहते हैं, ज़माना क्या समझता है,
वह है सब से बुरा, अपने को जो अच्छा समझता है!
अश्क आँखों में भरे रहते हैं फ़रते-ग़म से,
मुफ़लिसो क़ौम की देखी नहीं जाती हमसे!
ख़िलाफ़ अपने से हो कर मुल्क में वह जाबजा चमके,
चमकना यह नहीं अच्छा, जो यों चमके तो क्या चमके?
बात यह मुझको पसन्द आई जनाबे पोप की,
इस ज़माने में हुकूमत रह गई है तोप की!
नज़्म में योंही जो अलफ़ाज़ तराशी होगी,
बिलयक़ीं आपकी भी ख़ानातलाशी होगी!
क्या बताऊँ क्या जताऊँ; क्या कहूँ क्या चीज़ हूँ,
नाम है "बिस्मिल" मेरा, मैं बन्दए नाचीज़ हूँ!

कुछ प्रमुख व्यक्तियों की चित्रावली

मिस्टर एस० साको

आप हाल ही में जापान की ओर से भारत में एलची (Consul General) नियुक्त हुए हैं।

सय्यद मोहम्मद पादशा साहब बहादुर

जो हाल ही में कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के सदस्य चुने गए हैं।

मि० सी० एफ़० ल्यो

आप चीन की प्रजातन्त्र सरकार की ओर से भारत में एलची (Consul General) नियुक्त हुए हैं।

श्री० बी० जी० खापर्डे

आप मध्य-प्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौन्सिल के उप-प्रधान और नेशनलिस्ट पार्टी के अगुआ थे। आपने सरकार की वर्तमान दमन-नीति के विरोध स्वरूप अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया है।

मि० वी० चेल्लिया पीटर

आप सेण्ट जोन्स कॉलेज, पालमकोटा (मद्रास) के छात्र हैं। खेलों में सर्वोत्तम सिद्ध होने के उपलक्ष में आपको "ग्रिग मेमोरियल" नाम का स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया है।

रेवरण्ड टी० जे० जोज़फ़

आप कोज़ेनचेरी (ट्रावनकोर) के एक प्रतिष्ठित सीरियन 'डीकन' हैं। आप उच्च कोटि की धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने के अभिप्राय से टोरण्टो के ट्रिनिटी कॉलेज में गए हैं। आपको छात्रवृत्ति भी दी गई है।

श्री० आर० के० राणादिवे, एम० ए०

आप बड़ोदा स्टेट के राजनैतिक विभाग के सुयोग्य मैनेजर हैं। आप अच्छे इतिहासज्ञ भी हैं।

महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी संस्थाएँ

बम्बई सेवा-सदन के अनाथ-भवन की कुछ स्त्रियाँ तथा बच्चे

बम्बई सेवा-सदन के मराठी ट्रेनिङ्ग क्लास का अध्यापन-विभाग और छात्राएँ

आज भारत में क्या कर रही हैं ?

बम्बई सेवा-सदन के आश्रम (Training Home) की महिलाएँ

बम्बई सेवा-सदन की गृह-पाठशाला की अध्यापिकाओं व छात्राओं का ग्रुप

बम्बई के सेवा-सदन की शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण नमूने

सेवा-सदन की ड्राइङ्ग-क्लास

सेवा-सदन की छात्राएं सिलाई का काम सीख रही हैं

सेवा-सदन की छात्राएँ भोजन बनाना सीख रही हैं

सेवा-सदन की छात्राएं ड्रिल (क़वायद) कर रही हैं

केसर की क्यारी

देते हो क्यों सज़ाएँ तुम, मुजरिमे-इश्क़ जान कर !
दिल में तो आरज़ू नहीं, दर्द-जिगर को क्या करूँ ?

रात ही रात में तमाम, तै हुए उम्र के तमाम,
हो गई ज़िन्दगी की शाम, अब मैं सहर[1] को क्या करूँ ?
अहले-नज़र कोई नहीं, इसलिए ख़ुद-पसन्द हूँ,
आप ही देखता हूँ मैं, अपने हुनर को क्या करूँ ?

—"हफ़ीज़" जालन्धरी

* * *

इनके तो ढङ्ग हैं वही, इनके तो रङ्ग हैं वही,
आहे फ़लक[2] शिगाफ़[3] के, जज़बो असर को क्या करूँ ?
ज़िद तो यह है, जो मैं कहूँ, वह न हो और न हो कभी,
हाले-दिल इससे क्या कहूँ, दर्दे-जिगर को क्या करूँ ?
राह पर आही जाएँ वह, हो जो न शह रक़ीब[4] की,
क्योंकि दिल उसका लूँ बदल, उसकी नज़र को क्या करूँ ?

—"कैफ़ी" देहलवी

* * *

ज़ुलमते[5] यास[6] है वही, दाग़े-जिगर को क्या करूँ,
ग़म की घटा न खुल सकी, आहे-सहर को क्या करूँ ?
अश्के[7] रवाँ[8] न एक दिन, दिल की लगी बुझा सके,
गिरयए[9] ग़म से क्या मिला, दीदए[10] तर को क्या करूँ ?
जलवए[11] बर्क़े[12] हुस्न है, दुशमने ख़िरमने[13] क़रार,
दिल को बचाऊँ किस तरह, ज़ौक़े-नज़र को क्या करूँ ?

—"मरहूम" लाहौरी

* * *

लुत्फ़ो-करम[14] का शुक्रिया, अब मगर इससे फ़ायदा,
पहलू में दिल नहीं तो फिर, तीरे-नज़र को क्या करूँ ?
हज़रते 'डारविन' से कल, पूछ रहे थे "दोज़ख़ी"
आपका मोतक़िद[15] तो हूँ, दुम की कसर को क्या करूँ ?

—"दोज़ख़ी" साहब

* * *

उनके सितम[16] का माजरा, ज़ब्त में किस तरह रहे,
नालए-दिल को थाम लूँ, उड़ती ख़बर को क्या करूँ ?
वाज़[17] तो मैंने सुन लिया, अब यह मुझे बताइए,
आएँ अगर वह सामने, ज़ौक़े-नज़र को क्या करूँ ?
सुबहे शबे-विसाल का, उनको यक़ीन हो चला,
मुर्ग़े-सहर की जान लूँ, नूरे-सहर[18] को क्या करूँ ?
सोज़े[19] दुरूँ[20] के सामने, किसको मजाले-दुशमनी,
और तो सबको फूँक दूँ, दीदे-तर को क्या करूँ ?

—"जोश" मलसियानी

ज़ब्ते फ़ुग़ाँ[21] तो कर लिया, सीने पे सङ्ग[22] रख लिया,
सोज़िशे ग़म तू ही बता, दीदे-तर को क्या करूँ ?
देते हो क्यों सज़ाएँ तुम मुजरिमे इश्क़-जान कर,
दिल में तो आरज़ू नहीं, दर्दे-जिगर को क्या करूँ ?
कोशिशे दिल तो है यही, देखूँ न हुस्ने-आरज़ी[23]
जलवा मगर नज़र में है, अपनी नज़र को क्या करूँ ?

—"रौशन" पानीपती

* * *

ताब नहीं है ज़ब्त की, यार इन्हें है सब्र का,
दिल पे तो जब्र कर भी लूँ, आहे-सहर को क्या करूँ ?
आना तेरा मुहाल[24] है, यह तो मुझे ख़याल है,
दर पे जमी हुई है यह, अपनी नज़र को क्या करूँ ?

—"श्याम" लाहौरी

* * *

पार किसी के दिल से हो, इससे कभी न हो सका,
आहे-जिगर ख़राश[25] के, उल्टे असर को क्या करूँ ?
रोकूँ मैं लाख फिर भी यह, महवे[26] फ़रेबे-हुस्न है,
जो न रहे निगाह में, ऐसी नज़र को क्या करूँ ?

—"अर्श" मलसियानी

* * *

लाख हैं परदादारियाँ, इश्क़ की कोशिशें मगर,
दीदे-तर को क्या करूँ, दर्दे-जिगर को क्या करूँ ?
आज भी हैं उसी तरह, इश्क़ की नारसाइयाँ[27]
मेरे ख़ुदा, मैं गरदिशे शामो-सहर को क्या करूँ ?

—"रसा" फ़ारानी

* * *

दहरे[28] के इनक़िलाब[29] पर, करके नज़र को क्या करूँ,
शामो-सहर हज़ार ग़म, शामो-सहर को क्या करूँ ?
उनके हज़ार ढङ्ग हैं, जलवे के लाख रङ्ग हैं,
जमती नहीं कहीं नज़र, अपनी नज़र को क्या करूँ ?
देख ली सबकी सरज़निश[30], लाख हुई दवा-दविश[31],
दर्दे-जिगर न मिट सका, दर्दे-जिगर को क्या करूँ ?
कुञ्जे-क़फ़स[32] में रह के भी, सहने चमन का शौक़ है,
उड़ना मगर मुहाल है, बाज़ुओ पर को क्या करूँ ?
रात हो, दिन हो, सुबह हो, शाम हो, कोई वक़्त हो,
रोने से इसको काम है, दीदे-तर को क्या करूँ ?

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१—सुबह, २—आकाश, ३—चीरने वाला, ४—ग़ैर, ५—अँधेरा, ६—निराशा, ७—आँसू ८—बहने वाला, ९—रोना, १०—आँख, ११—ज्योति, १२—बिजली, १३—खलयान, १४—कृपा, १५—मानने वाला, १६—ज़ुल्म, १७—नसीहत भरी बातें, १८—रोशनी, १९—जलन, २०—दिल, २१—शोर, २२—पत्थर, २३—नक़ली, २४—मुश्किल, २५—छीलने वाला, २७—नाकामयाबी, २८—संसार, २९—उलट-फेर, ३०—दवा, ३१—दौड़-धूप, ३१—पिंजड़ा ।

वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता ? सन् १८५७ के स्वातन्त्र-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए ; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीत, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं ; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं ; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं ; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

"दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी॥"

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र।

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १) ; स्थायी ग्राहकों से ॥।); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥।) स्थायी ग्राहकों से ॥-); नवीन संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

बीसवीं सदी का नैपोलियन

एकान्त द्वीप में निर्वासित स्वदेश-भक्त अब्दुल करीम

["इतिहास का एक विनम्र विद्यार्थी"]

आज से लगभग दो सौ वर्ष पहिले सेण्ट-हेलेना के द्वीप में विश्व-विजयी नैपोलियन बन्दी अवस्था में रक्खा गया था। उसने अपने साहस तथा शौर्य से यूरोप के सारे राज्यों को हिला दिया था। अपनी तलवार की झङ्कार से प्रजातन्त्र-प्रेमी फ़्रान्स को भी साम्राज्यवाद के मद से चूर कर दिया था। पर सन् १८१५ में वह यूरोप के राष्ट्रों का क़ैदी था। उसका सारा साम्राज्य, सारी सत्ता नवीन राष्ट्रीय जाग्रति के सामने बालू की दीवार की तरह गिर पड़ी थी। फिर भी नैपोलियन स्वदेश-प्रेमी था। आज एक और स्वदेश-प्रेमी इसी अवस्था में, एक एकान्त द्वीप में बन्दी बना कर रक्खा गया है। वह स्वदेश-भक्त अवश्य है, पर नैपोलियन की तरह साम्राज्यवाद का नेता नहीं, वरन साम्राज्यवाद का कट्टर दुश्मन है। वह अपने देश को साम्राज्यवाद के कठिन पञ्जे से छुड़ाना चाहता है।

एक एकान्त द्वीप, जहाँ रात-दिन वर्षा हुआ करती है, जहाँ की जलवायु मनुष्यों के लिए ज़रा भी स्वास्थ्य-दायक नहीं है—ऐसे द्वीप के एक दूर-स्थित मकान में एक सैनिक बैठा हुआ है। उसकी छाती पर एक लम्बी और शानदार दाढ़ी लहरा रही है। उसका क़द छोटा है, पर शरीर बहुत हृष्ट-पुष्ट तथा सुगठित है। यही रिफ़ जाति का वीर नेता अब्दुल करीम है।

किसी समय वह स्पेनी सेना में अफ़सर था। एक स्पेनी अधिकारी ने उसका अपमान किया। बस इस छोटी सी घटना ने अब्दुल करीम का जीवन-स्रोत बिलकुल दूसरी ओर बहा दिया। एकाएक उसकी आँखें खुल गईं। मैं एक परतन्त्र राष्ट्र का निवासी हूँ। ये मेरे स्वामी हैं। हमें इनके बराबर अधिकार नहीं है। हमारा देश विदेशियों के क़ब्ज़े में है। अब्दुल करीम समझ गया कि बिना स्वाधीनता के हम मनुष्योचित आदर को नहीं पा सकते। हम दूसरे देशों से समान व्यवहार नहीं रख सकते। तब से वह अपने देश को स्वतन्त्र करने का उपाय ढूँढने लगा और स्पेनियों का पक्का दुश्मन हो गया।

थोड़े ही दिनों में उसने शौर्य तथा बल से रिफ़ जाति का झण्डा ऊँचा उठाया। स्वदेश-प्रेम से प्रोत्साहित होकर उसने सन् १६२० तथा १६२१ में बड़े-बड़े करश्मे कर दिखाए, १६२० में उसने स्पेन की सेना को पराजित किया। सन् १६२१ में उसने १५ हज़ार स्पेनी सैनिकों को युद्ध-बन्दी बना लिया। उसकी वीर-गाथा सारे संसार में फैल गई। स्वदेश में एक दृढ़ सत्ता की स्थापना करके उसने एक नवीन स्वाधीन राष्ट्र की नींव डाली। इसके पश्चात वह यूरोप के और स्वतन्त्र राष्ट्रों से राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न करने लगा। पर भला साम्राज्यवादी यूरोप के राष्ट्र इस नवीन स्वाधीनता की लहर को सरल दृष्टि से कब देख सकते थे? लगभग सभी देशों ने रिफ़ देश की स्वाधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया। वे सब इसे अपने-अपने क़ब्ज़े में लाने का प्रयत्न करने लगे। यह अब्दुल करीम के लिए असह्य था। वह अपने बने-बनाए काम को मिट्टी में नहीं मिलाना चाहता था। उसने अपने राष्ट्र की स्वाधीनता की रक्षा करना निश्चय किया। और राष्ट्रों ने भी सशस्त्र संग्राम का सहारा लिया। इस बार भी अब्दुल करीम ने अपना शौर्य तथा पराक्रम दिखलाने में कुछ कमी न रक्खी। पर अन्त में उसे फ़्रान्सीसियों से हार माननी पड़ी। इस हार के बाद फ़्रान्सीसी सरकार ने देश-भक्त अब्दुल करीम तथा उसके कुटुम्ब को देश-निर्वासन का दण्ड दिया। अब वह यूरोप-विजयी नैपोलियन की तरह जीवन का शेष भाग बन्दी अवस्था में व्यतीत कर रहा है! पर दोनों के उद्देश्य कितने भिन्न थे। एक ने साम्राज्य-वाद के लिए अपनी तलवार उठाई थी, दूसरे ने साम्राज्य-वाद के विरुद्ध अपनी सारी शक्ति लगा दी है!

कुछ साल पहले अब्दुल करीम अपने देश का प्रधान शासक था। वह राजसी ठाट से रहता था। हज़ारों पौण्ड ख़र्च करता था। पर आज उसकी आर्थिक अवस्था बहुत शोचनीय है। फ़्रेञ्च सरकार उसे सालाना केवल एक लाख फ़्रेंक देती है। इसी में उसे सारे

मोरक्को का बहादुर नेता अब्दुल करीम

कुटुम्ब का ख़र्च चलाना पड़ता है। अब्दुल करीम के साथ उसका भाई तथा अन्य सम्बन्धी भी रहते हैं। घर भर में सब मिला कर क़रीब दस-बारह बच्चे हैं। इतने बड़े कुटुम्ब को इतनी छोटी सी रक़म में चलाने में उसे बड़ी कठिनता होती है। उन्हें कई आवश्यक वस्तुओं से वञ्चित रहना पड़ता है। उसे घर भी बहुत मामूली दिया गया है। उसमें कई सामान्य सुविधा की चीज़ों का भी अभाव है।

फिर इस द्वीप की जलवायु उसके स्वास्थ्य के लिए बड़ी हानिकारक है। इस वाष्प-पूरित वायु में उसकी जीवन-ज्योति का शनैःशनैः अवसान होता जा रहा है। कुछ समय पहिले वह बीमार पड़ा था। वह इतना निर्बल हो गया, कि कई दिनों तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकल सका। गृह के अन्य लोगों को भी यही कष्ट है। बच्चों को तो विशेषकर बहुत तकलीफ़ है। इस द्वीप की जलवायु उनके स्वास्थ्य के ज़रा भी अनुकूल नहीं है।

फिर बच्चों के पठन-पाठन का प्रबन्ध ठीक नहीं है। इस द्वीप में केवल एक पाठशाला है, वह भी उसके मकान से बहुत दूर। इस कार्य के लिए उसने एक फ़्रान्सीसी महिला को वेतन पर रख छोड़ा है। वह जो कुछ हो सकता है, करती है।

अब्दुल करीम के पत्रों पर कड़ा पहरा रक्खा गया है। उसे मिलने के पहिले उसका प्रत्येक पत्र खोल कर पढ़ लिया जाता है। यदि उसके मित्रवर्गों में से कोई उसे भोजन, वस्त्र या कोई अन्य उपहार भेजता है, तो उसका निरीक्षण पहिले एक अधिकारियों की सभा द्वारा किया जाता है।

वह अपना सारा समय पढ़ने तथा ताश खेलने में व्यतीत करता है। फ़्रेञ्च सरकार ने पुस्तकों के चुनाव में उसे स्वाधीन रक्खा है। समाचार-पत्र भी उसे नियमित रूप से दिए जाते हैं; गो कि वे इतनी देर के बाद दिए जाते हैं, कि सारे समाचार बिलकुल पुराने हो जाते हैं। वह घर के बाहर बहुत कम जाता है। कभी-कभी उस द्वीप के रहने वाले भारतवासी उससे जाकर मिलते हैं। पर वह बहुत कम बोलता है।

"भविष्य"

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

स्वागत तुम्हारा कर्मक्षेत्र में भविष्य, नव
जगमग ज्योति छिटकाते तुम आए हो।
गतिविधि ऐसी दृष्टिगोचर तुम्हारी हुई,
जन्म ही से जनता के मन में समाए हो॥
वेश सुविचित्र, नीति निर्भय, पुनीत रीति,
स्पष्ट वाद, मृदु-व्यंग्य-वाद अपनाए हो।
क्रान्ति का, सुधार का, समुन्नति का युग, और
भारत का उज्ज्वल भविष्य साथ लाए हो॥

अभी हाल ही में फ़्रान्स के एक प्रसिद्ध लेखक मोशिए लॉक ब्रोसिनी उससे मिलने गए थे। (उनके शब्दों में अमीर की दशा का वर्णन करते हुए इस लेख का अन्त करना बहुत ठीक होगा) वे कहते हैं कि "अमीर की दशा बहुत शोचनीय है। मुझे अमीर से मिल कर बहुत ख़ुशी हुई, पर उसका कष्ट देख कर मुझे बहुत खेद हुआ। वह अब भी सदा अपने प्रिय देश का ध्यान किया करता है। जब मैंने उससे कुशल-समाचार पूछा, तब सारे कष्टों का वर्णन करते हुए वह बोला—'भला मैं अपने प्रिय देश को छोड़ कर कैसे सुखी रह सकता हूँ। फिर यहाँ तो एक भी वस्तु ऐसी नहीं है, जो कि उसकी समता कर सके। यहाँ का जलवायु मेरे देश से कितना भिन्न है। यहाँ की वाष्प-पूरित वायु मेरे जीवन-ज्योति को धीरे-धीरे मलीन कर रही है। यहाँ सदा वर्षा ही हुआ करती है और हम लोगों को कई दिनों तक सूर्य के दर्शन तक नहीं होते। अब तो मेरे जीवन में केवल पीड़ा तथा सन्ताप शेष रह गया है। मेरा देश सुन्दर नहीं है। वहाँ के प्रचण्डातप-तप्त-मरुस्थल में जानवर भी नहीं टिक सकते; पर तब भी वह मेरी मातृभूमि है! वह मुझे अन्य देशों से अधिक प्रिय है। और मैंने इस प्रेम का परिचय भी दिया था। मैं उसे एक बलशाली राष्ट्र बनाना चाहता था; पर यह बदा ही न था। मुझे अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में रिफ़ की याद आती है—हाय! मैं उसे स्वाधीन न कर पाया!! मुझे अपने सम्बन्धियों तथा विशेषकर उन सहयोगियों का ख़याल आता है, जो कि युद्ध-भूमि में मेरे साथ थे। वे कितनी वीरता से लड़े थे! मेरी आज्ञा का वे किस तरह पालन करते थे! जब मुझे इन सब बातों का ख़याल आता है, मेरा जी भर आता है।" उसका गला रुँध गया था। शोक से उसने अपना मुँह फेर लिया। मोशिए ब्रोसिनी ने देखा कि वह अपनी ढीली अरबी पोशाक की बाँह से अपनी आँखें पोंछ रहा था।

* * *

बम्बई का सेवा-सदन

[कुमारी बी० ए० इञ्जीनियर, एम० ए०, एल्-एल्० बी०; जे० पी०]

सेवा-सदन की स्थापना हुए आज बीस वर्ष से अधिक बीत गए। उस समय समाज-सुधार के विषय में लोगों के कैसे विचार थे, इसका अनुमान लगाना भी आजकल ज़रा मुश्किल है। यद्यपि आजकल भी समाज-सुधार का कुछ कम विरोध नहीं होता, तथापि आजकल भारत-भूमि पर समाज-सुधार का प्राणप्रद समीर पहले की अपेक्षा कहीं अधिक निर्बाध गति से बह रहा है। आज भारत की देवियाँ पारिवारिक जीवन से लेकर स्वाधीनता के युद्ध-क्षेत्र तक सर्वत्र एक अपूर्व जागरूकता के साथ अपने कर्तव्य-पालन में अग्रसर हो रही हैं। उनका कार्य-कलाप आज केवल गृह के मनोरम आङ्गण तक परिमित नहीं है, उनके उत्साह और जागरण की क्रान्तिकारी लहरें, जेल की भीषण प्राचीरों तक से टकरा कर भारत-माता के दासत्व की श्रृङ्खला को चूर-चूर कर देने के लिए व्याकुल हो उठी हैं। जिनके सुकुमार और कोमल हाथों में सुन्दर चूड़ियाँ शोभती हैं, आज वे अपने उन्हीं हाथों में कठोर लौह-श्रृङ्खला धारण करने का पराक्रम दिखा रही हैं। यह एक ऐसा स्वर्गीय दृश्य है, जिसे देख कर एक बार मुर्दों में भी जान आ जायगी। परन्तु आज की अवस्था और आज से बीस वर्ष पहले की अवस्था में ज़मीन और आसमान का अन्तर था। आज जिन सुधारों की आवश्यकता और उपयोगिता को प्रत्येक व्यक्ति मुक्त-कण्ठ से स्वीकार करता है, उन्हीं सुधारों का उस ज़माने में घोर विरोध किया जाता था। उस समय जन-साधारण में समाज-सेवा की चर्चा सुनना तो दूर रहा, ऐसे व्यक्ति भी विरले ही थे, जो समाज-सेवा का नाम भी जानते हों। ऐसे ही समय में सेवा-सदन की स्थापना हुई थी। इसका उद्देश्य था स्त्रियों में समाज-सेवा की भावना का प्रचार करना तथा उन्हें इस कार्य के करने योग्य बनाना। इस संस्था को खोल कर इसके स्वनामधन्य संस्थापक श्रीयुत मालाबारी तथा उनके अनन्य सहायक श्रीयुत दयाराम गीदूमल जी ने सेवा-भाव का जो बीज बोया था, वह आज हरे-भरे पौधे के रूप में लहलहा रहा है। आज सेवा-सदन के समान विशुद्ध सेवा-भाव से कार्य करने वाली अनेक संस्थाएँ देश में खुल गई हैं और दिनोंदिन उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है। भारतीय स्त्रियों में इस समय जो अभूतपूर्व जाग्रति दिखाई दे रही है, उसके लिए क्षेत्र प्रस्तुत करने में इन संस्थाओं ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। ऐसी सभी संस्थाओं में सेवा-सदन ही सब से पहिली संस्था है और आज भी कई दृष्टियों से भारत में इसका स्थान अद्वितीय है।

बम्बई सेवा-सदन की मन्त्रिणी

कुमारी बी० ए० इञ्जीनियर, एम० ए०, एल्-एल्० बी०, एम० बी० ई०, जे० पी०

इसके संस्थापक श्रीयुत मालाबारी स्त्री-शिक्षा के बड़े उत्साही समर्थक थे। स्त्रियों को शिक्षा देकर उन्हें स्वाधीनता प्रदान करने की इच्छा ही एक-मात्र वह शक्ति थी, जो उनके जीवन में स्फूर्ति का सञ्चार करती थी। देश में भ्रमण करके भारतीय विधवाओं का दुःखमय जीवन और उनकी कारुणिक दशा उन्होंने अपनी आँखों से देखी थी और तभी से उन्होंने इनकी सेवा करना अपने जीवन का प्रधान कार्य बना लिया था। ऐसे कामों में जन-समुदाय की कट्टरता और अनुदारता के कारण स्वभावतः अनेक विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं, यही बात श्रीयुत मालाबारी के साथ भी हुई। उस समय वे स्त्रियों का सहवास-वय बढ़ा कर १२ वर्ष कराने का आन्दोलन कर रहे थे। उनके कार्य का घोर विरोध किया गया, परन्तु मालाबारी महोदय विघ्न-बाधाओं से विचलित होने वाले व्यक्ति नहीं थे। अपरिवर्तनवादियों के विरोध करने पर भी सन् १८९१ ई० में लड़कियों का सहवास-वय बढ़ा कर १२ वर्ष कर दिया गया। मालाबारी जी के हृदय में स्त्री-जाति के प्रति अगाध सहानुभूति थी। स्त्रियाँ ही राष्ट्र की सच्ची निर्माता हैं, इस बात को उन्होंने बहुत अच्छी तरह समझा था; और समझ कर इसे अपनी जीवन-क्रिया का एक अङ्ग बना डाला था। अपने जीवन में समाज-सुधार सम्बन्धी अनेक कार्य उन्होंने किए, परन्तु उन सभी कार्यों में स्त्री-जाति की सेवा ही प्रमुख थी। सौभाग्यवश इस कार्य में श्रीयुत दयाराम गीदूमल जी, श्रीमती रमाबाई रानडे, श्रीमती जमनाबाई सक्काई और दिलशेद बेगम नवाब मिर्ज़ा के समान सुयोग्य और उत्साही महिलाओं और महानुभावों से उन्हें प्रचुर सहायता मिली। अन्य कारणों में इन लोगों की सहायता और सहानुभूति भी एक कारण थी, जिससे श्रीयुत मालाबारी को अपने कार्यों में इतनी सफलता मिल सकी।

सेवा-सदन की स्थापना प्रधानतः इस उद्देश्य से हुई थी कि अमीर घरों की स्त्रियों को ग़रीब स्त्रियों के सम्पर्क में लाया जाय और इस प्रकार धनी महिलाओं में अपनी ग़रीब बहिनों की सेवा करने का भाव भरा जाय। इस काम में सेवा-सदन को काफ़ी सफलता मिली है। सेवा-सदन की एक शाखा की स्थापना पहले-पहल सन् १९०९ ई० में पूना में हुई थी। तब से पिछले बीस वर्षों में देश में इस ढङ्ग की अनेक संस्थाएँ खुल गई हैं, और वे सभी स्त्री-शिक्षा और समाज-सेवा के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं। ऐसी संस्थाओं में बम्बई के सेवा-सदन का एक प्रमुख स्थान है, क्योंकि इस संस्था ने कई बातों में मार्ग-दर्शक का काम किया है। इस लेख द्वारा इसी संस्था का परिचय मैं "भविष्य" के पाठकों को देना चाहती हूँ।

बम्बई के सेवा-सदन का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह संस्था भिन्न-भिन्न प्रकार के कई कार्य कर रही है। परन्तु इन सभी कार्यों को मुख्यतः तीन विभागों में बाँट सकते हैं—शिक्षा-विभाग, शिल्प-विभाग तथा समाज-सेवा और चिकित्सा-विभाग। शिक्षा-विभाग के दो अङ्ग हैं—गृह-विद्यालय और नॉर्मल क्लास।

गृह-विद्यालय

(१) गृह-विद्यालय (Home Educational Class) प्रधानतः ऐसी बड़ी उम्र की महिलाओं के लिए है, जिनका विवाह हो गया हो अथवा जो अन्य किसी कारण से साधारण स्कूलों में न पढ़ सकती हों। इसीलिए इस विद्यालय का समय भी ऐसा रक्खा गया है, जो ऐसी महिलाओं के लिए सुविधाजनक हो, अर्थात् ११ बजे से ४ बजे तक। इसमें देशी भाषाओं में से मराठी, गुजराती और उर्दू पढ़ाई जाती है तथा अङ्गरेज़ी, इतिहास, भूगोल और गणित का साधारण ज्ञान कराया जाता है। इस विद्यालय की जो सब से बड़ी विशेषता है वह है घरेलू काम-धन्धों तथा अन्य उपयोगी कलाओं की शिक्षा। यहाँ सिलाई और क़सीदा, कपड़ा काटना तथा सीना, भोजन बनाना, कपड़े धोना और उन पर कलफ़ तथा लोहा करना, चित्रकारी तथा सङ्गीत आदि उपयोगी घरेलू शिल्प के अतिरिक्त प्रारम्भिक चिकित्सा, रोगियों की सेवा करना तथा स्वास्थ्य और सफ़ाई आदि वैज्ञानिक व्यवसायों की भी शिक्षा दी जाती है। विद्यार्थिनियों को इनमें से अपनी रुचि के अनुकूल विषय चुन लेने की स्वतन्त्रता है। इस विद्यालय की शिक्षा का प्रधान उद्देश्य यह है कि स्त्रियों को घर के काम-धन्धों में दक्ष बनाया जाय तथा उनके चरित्र का विकास करके उन्हें अपने नागरिक कर्तव्यों का पालन करने के योग्य बनाया जाय।

नॉर्मल क्लास

(२) नॉर्मल क्लास (Normal Classes) में अध्यापिकाएँ तैयार की जाती हैं तथा इसके द्वारा अध्यापिकाओं की दशा सुधारने का भी प्रबन्ध किया जाता है। आजकल स्त्री-शिक्षा के प्रचार में जो सब से बड़ी कठिनाई पड़ती है, वह सुयोग्य और सच्चरित्र अध्यापिकाओं की कमी है। यह संस्था अपने परिमित क्षेत्र में इस कमी को दूर करने की शक्ति भर चेष्टा कर रही है। यह क्लास सन् १९१४ ई० में खोला गया था। अब यह बढ़ते-बढ़ते एक ट्रेनिङ्ग कॉलेज बन गया है, जिसमें बम्बई के गवर्नमेण्ट महिला ट्रेनिङ्ग कॉलेज के सर्वोच्च कक्षा (Final Diploma Course) तक की शिक्षा दी

जाती है। अब तक इस कॉलेज से शिक्षा पाकर कई सौ अध्यापिकाएँ निकल चुकी हैं, जिनमें से अधिकांश को बम्बई के म्युनिसिपल स्कूलों में स्थान मिला है। कहना न होगा कि अध्यापिकाओं की शिक्षा के लिए बम्बई में यह एक ही संस्था है। इस संस्था की विशेषता यह है कि यह केवल अध्यापिकाएँ ही नहीं तैयार करती, वरन् उन अध्यापिकाओं को इस योग्य भी बना देती है कि वे स्त्रियों की उन्नति और स्त्री-जाति की सेवा सम्बन्धी सब प्रकार के कार्यों में भाग ले सकें। अध्यापिकाओं के मानसिक विकास के लिए समय-समय पर मैजिक लैण्टर्न द्वारा उपयोगी और मनोरञ्जक विषयों पर व्याख्यान देने का भी प्रबन्ध किया जाता है तथा अध्यापिकाओं का दल बना कर उन्हें नगर के महत्वपूर्ण स्थानों को दिखाया जाता है।

गृह-विद्यालय और नॉर्मल क्लास दोनों में मिल कर इस समय १४९ स्त्रियाँ शिक्षा पा रही हैं। ये दोनों ही कक्षाएँ बम्बई शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत हैं तथा दोनों को गवर्नमेण्ट से सहायता मिलती है।

शिल्प-विभाग

(३) शिल्प-विभाग (Industrial Department) में दस्तकारी की शिक्षा देकर स्त्रियों को इस योग्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है कि वे स्वयं अपनी जीविका कमा सकें। आजकल प्रायः ऐसी स्त्रियाँ देखी जाती हैं, जो बहुत ही ग़रीब हैं तथा जिनका पालन-पोषण करने वाला कोई नहीं है। ऐसी स्त्रियाँ प्रायः आत्म-सम्मान खोकर या तो किसी सम्बन्धी के यहाँ रहने लगती हैं और उसके सिर का बोझ बन जाती हैं अथवा भीख माँग कर समाज के सिर पर अपने पालन-पोषण का बोझ लाद देती हैं। ऐसी ही स्त्रियों को स्वावलम्बी बनाने के लिए यह शिल्प-विभाग खोला गया है। इसमें कपड़े काटना और सीना, भोजन बनाना, मोज़े और गुलूबन्द आदि बुनना, कपड़े धोना और उस पर कलफ़ तथा लोहा करना, बेत का काम, बेल-बूटे काढ़ना आदि सिखाया जाता है। इस समय इस विभाग में २२९ से भी कुछ अधिक स्त्रियाँ शिक्षा पा रही हैं। अब तक इसमें से लगभग ३०० स्त्रियाँ शिक्षा पाकर निकल चुकी हैं, जिनमें से लगभग ६० स्त्रियाँ इस समय म्युनिसिपल तथा प्राइवेट स्कूलों में दस्तकारी की अध्यापिका हैं, बहुत सी प्राइवेट तौर पर दस्तकारी का काम सिखा कर अपनी जीविका कमाती हैं, तथा ४० के लगभग नर्स और दाई का काम सीख चुकी हैं। इन कामों के लिए सेवा-सदन को अब तक बम्बई पूना, हुगली तथा लाहौर की शिक्षा, शिल्प तथा शिशुपालन-सम्बन्धी प्रदर्शनियों से तमग़े और प्रशंसा-पत्र मिले हैं।

अनाथ-गृह

(४) अनाथ-गृह (Home for the Homeless Women and Children) में अनाथ स्त्रियों और बच्चों को रखने का प्रबन्ध है। इस समय ७० स्त्रियों और बच्चों को इस संस्था की ओर से मुफ़्त भोजन-वस्त्र और शिक्षा दी जा रही है। इन लोगों की व्यक्तिगत योग्यता तथा रुचि के अनुसार इन्हें उपरोक्त विभागों में अध्यापिका, नर्स या दस्तकारी-शिक्षक का काम सिखाया जाता है। जिन लोगों में पढ़ने-लिखने की या किसी प्रकार का मानसिक काम करने की योग्यता बिलकुल नहीं होती, उन्हें कोई घरेलू शिल्प सिखाया जाता है। हमारी सामाजिक बुराइयों तथा दरिद्रता के कारण हर साल अधिकाधिक संख्या में स्त्रियाँ और बच्चे इस अनाथ-गृह में शरण लेने के लिए आया करते हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश जगह की कमी होने के कारण सेवा-सदन के अधिकारियों को उन्हें वापस लौटा देना पड़ता है। इस समय इस अनाथ-गृह में अधिक से अधिक ७० व्यक्तियों के रहने का स्थान है और वह सब स्थान भरा हुआ है। "भविष्य" के पाठकों को यह जान कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि इस अनाथ-गृह में जात-पाँत का बिलकुल ख़याल नहीं किया जाता। इस समय इसमें जो ७० स्त्रियाँ और बच्चे हैं, उनमें ५२ हिन्दू, १४ पारसी और ४ मुसलमान हैं।

यह सारी संस्था ही ऐसी है, जहाँ जात-पाँत का कोई विचार नहीं किया जाता। इस समय सेवा-सदन में स्त्रियाँ और बच्चे सब मिल कर क़रीब ४०० व्यक्ति शिक्षा पा रहे हैं, जिनमें से केवल गृह-विद्यालय तथा नॉर्मल क्लास में १८९ हिन्दू, ४७ पारसी, ९ मुसलमान तथा १० क्रिश्चियन हैं। इसी प्रकार अन्य विभागों में भी सभी जातियों, सभी सम्प्रदायों और सभी धर्मों की स्त्रियाँ और बच्चे भरे हुए हैं।

समाज-सेवा और चिकित्सा-विभाग

(५) समाज-सेवा तथा चिकित्सा-विभाग (Social and Medical Department) भी बहुत उपयोगी कार्य कर रहा है। यहाँ शिक्षा पाने वाली नर्सों और दाइयों को साधारणतः एक वर्ष तक इस संस्था की अवैतनिक सेवा करनी पड़ती है। इसके बाद जिनकी इच्छा होती है, उन्हें सेवा-सदन की ओर से वेतन देकर रख लिया जाता है और वे ग़रीब तथा मध्यम श्रेणी के घरों में चिकित्सा करने के लिए भेजी जाती हैं। सेवा-सदन की नर्सें प्रायः बिना फ़ीस लिए ही ग़रीबों की सेवा करती हैं, और यदि कभी कुछ फ़ीस ली भी जाती है तो केवल नाम-मात्र की। नर्सों और दाइयों की आवश्यकता दिनोंदिन इस तरह बढ़ती चली जा रही है कि अब तो अपेक्षाकृत सम्पन्न घरों से भी दाइयों की माँग आती है और इन सब माँगों को पूरा करना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। गर्भिणी तथा प्रसूता स्त्रियों की सेवा और परिचर्या कर सकने योग्य दाइयाँ तैयार करके तथा ग़रीबों से बिना फ़ीस लिए उनके घरों में दाइयाँ भेज कर सेवा-सदन वास्तव में समाज की एक बहुत बड़ी आवश्यकता पूरी कर रहा है। इस आदर्श संस्था की सेवाएँ यहीं तक परिमित नहीं हैं। इसकी परिचारिकाएँ जेलों का निरीक्षण करती हैं। स्कूलों, अनाथालयों और अस्पतालों में जाकर वहाँ के पीड़ितों की शुश्रूषा और सहायता करती हैं, तथा इसी प्रकार के और भी कितने ही लोक-सेवा के काम करती हैं।

इन बातों से सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि इस संस्था के पास और भी अधिक साधन होते, तो यह समाज के लिए कितना अधिक उपयोगी हो सकती। बम्बई के एक आर्क-बिशप ने इसके विषय में कहा है कि यह पूरी संस्था "अत्यन्त उपयोगी और अपने ढङ्ग की निराली संस्था है।" एक ऐसी उपयोगी और आदर्श संस्था को साधनों की कमी के कारण अपने कार्यों के विस्तार करने का अवसर न मिले, यह वास्तव में खेद की बात है। यों तो यह संस्था जितनी ही बड़ी तथा उपयोगी है, इसकी आवश्यकताएँ भी उतनी ही बड़ी तथा विविध प्रकार की हैं। परन्तु उनमें दो आवश्यकताएँ ऐसी हैं, जिनकी पूर्ति बहुत ही शीघ्र होनी चाहिए। इसके ट्रेनिङ्ग कॉलेज के साथ एक प्रैक्टिसिङ्ग स्कूल का होना बहुत ही ज़रूरी है। अब तक यहाँ की अध्यापिकाएँ एक म्युनिसिपल स्कूल में जाकर पढ़ाने का अभ्यास किया करती हैं, किन्तु अब इस प्रबन्ध से काम नहीं चल सकेगा। गवर्नमेण्ट ने इस संस्था को सूचना दी है कि तीन वर्षों के अन्दर ट्रेनिङ्ग कॉलेज के लिए एक प्रैक्टिसिङ्ग स्कूल का प्रबन्ध अवश्य हो जाना चाहिए। इस प्रकार का एक स्कूल चलाने के लिए कम से कम ३००) रु० मासिक ख़र्च की आवश्यकता है। इसके अलावा, यदि मकान-किराए आदि का हिसाब छोड़ दिया जाय, क्योंकि सेवा-सदन अपने वर्तमान मकानों में ही किसी तरह एक ऐसे स्कूल का प्रबन्ध कर लेगा, तो भी बेञ्च, कुरसियों, डेस्क, ब्लैक-बोर्ड, किण्डर गार्टेन के सामान आदि के लिए लगभग ६,०००) रु० की आवश्यकता है। सेवा-सदन के छात्रावास में भी जगह की कमी है तथा अनाथ-गृह में अधिक व्यक्तियों के लिए प्रबन्ध होने की आवश्यकता है। अनाथ-गृह के लिए एक ज़मीन ले ली गई है, परन्तु धनाभाव के कारण उस पर मकान बनवाने का काम रुका हुआ है। इसकी बड़ी शीघ्र आवश्यकता है कि अनाथ-गृह के लिए अधिक स्थान और अधिक द्रव्य का प्रबन्ध किया जाय। इस गृह में शरण लेने आने वाले दीन-हीन बच्चों और दुःखिनी स्त्रियों को निराश करके लौटा देना कितना कठोर और कितना दुःखद कार्य है, इसको वही लोग समझ सकते हैं, जिन्हें कभी ऐसा कठोर कार्य करने के लिए विवश होना पड़ा हो। समाज-सेवा के प्रत्येक हिमायती और स्त्री-शिक्षा के प्रत्येक प्रेमी का यह परम कर्तव्य है कि वह यथाशक्ति इस संस्था की कठिनाइयों को दूर करके देश और समाज की उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करे।

सेवा-सदन में कपड़ा धोने का काम सिखाया जा रहा है।

(शेष मैटर ३२ वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

बम्बई की प्राण--श्रीमती हंसा मेहता

(संक्षिप्त परिचय)

[श्रीमती लक्ष्मीदेवी, बी० ए०]

महासती सीता ने अग्नि-प्रवेश कर अपने सतीत्व का प्रमाण दिया था। आज भारत की अनेकों महिलाएँ क्रान्ति की धधकती हुई ज्वाला में कूद कर अपनी देशभक्ति का प्रोज्ज्वल प्रमाण दे रही हैं। देश के लिए क़ुर्बान होने वाली ऐसी महिलाओं में श्रीमती हंसा मेहता का स्थान बहुत ऊँचा है। आप १ली दिसम्बर को ही कृष्ण-सदन से मुक्त की गई हैं।

श्रीमती हंसा मेहता के समान वीर और देशभक्त रमणी, किसी भी देश का गौरव हो सकती है। आपका देश-प्रेम और स्वार्थत्याग महिलाओं के लिए ही नहीं, पुरुषों के लिए भी अनुकरणीय है। पाठकों की जानकारी के लिए देवी जी का संक्षिप्त जीवन नीचे दिया जा रहा है।

आपका जन्म प्रसिद्ध नगर सूरत में ३री जुलाई, सन् १८९७ को हुआ था। आपके पिता का नाम सर मनुभाई मेहता है। आप बीकानेर के प्रधान-मन्त्री हैं। और बड़ोदा राज्य के भी प्रधान-मन्त्री रह चुके हैं। आप गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के निर्वाचित सदस्यों में से हैं!

केवल ८ ही वर्ष की आयु में श्रीमती जी को मातृ-सुख से हाथ धोना पड़ा। माता की मृत्यु ने आपके हृदय पर गहरी चोट की। वह बाल-सुलभ-चपलता अब आप में न रही। आपकी गम्भीरता देख कर आपके पिता चिन्तित हो उठे। फल-स्वरूप आप एक पाठशाला में भर्ती कर दी गईं।

कहावत है—'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।' छोटी ही उम्र से आपमें वे गुण पाए जाते थे, जिनके कारण आज आप महिला-समाज का एक मूल्यवान रत्न हो गई हैं। अपनी प्रखर बुद्धि के कारण, अपनी पाठशाला के प्रायः सभी पारितोषिक आपने प्राप्त किए।

१६ वर्ष की आयु में आपने योग्यतापूर्वक इण्ट्रेन्स की परीक्षा पास की। इसके उपलक्ष में आपको बम्बई-

श्रीमती हंसा मेहता, बी० ए०
जो हाल ही में जेल से छूट कर आई हैं

विश्वविद्यालय की ओर से, 'चैटफ़ील्ड पारितोषिक' तथा 'नारायण परमानन्द पारितोषिक' भेंट किए गए। बड़ोदा कॉलेज से आपने एफ़० ए० की परीक्षा पास की। इस बार भी आपको 'गङ्गाबाई भट्ट' पारितोषिक दिया गया। सन् १९१८ में आपने दर्शन-शास्त्र में सम्मान-सहित बी० ए० पास किया।

विदेश-यात्रा का आपको बड़ा शौक़ था। आपका कवि-हृदय मिल्टन और शेक्सपियर, रूसो और वालटेयर की क्रीड़ा-भूमि का दर्शन करने के लिए लालायित हो उठा था। सन् १९१९ में आपको अपनी हार्दिक इच्छा को कार्यरूप में परिणत करने का सुयोग हाथ लगा।

भारतीय कोकिला सरोजिनी नायडू के साथ आपने इङ्गलैण्ड की यात्रा की। जिस अवस्था में हमारे देश की अधिकांश महिलाएँ अन्ध-कूप में—विलासिता के गर्त में, नरक की यातना में—पड़ी रह कर पुरुषों की विलास-सामग्री बनती हैं, उस अवस्था में उन्हीं की एक बहिन लन्दन के विश्वविद्यालय में सम्पादन-कला का अध्ययन करने लगी—नहीं-नहीं, वह रूसो और वालटेयर, मिल्टन और शैली की आत्माओं से उपदेश ग्रहण करने लगी; प्रातःस्मरणीया, स्वतन्त्रता की पुजारिन, देवी जोन की शक्ति, उसका वह अलौकिक तेज अपने में भरने लगी, जिसमें वह भारतीय क्रान्ति का एक अङ्ग बन जाय, भारत की धधकती हुई ज्वालामुखी का एक स्फुलिङ्ग बन जाय।

सन् १९२० के जून में जनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय महिला-परिषद् की बैठक हुई। इसका उद्देश्य था स्त्रियों की राजनैतिक और सामाजिक दशा को सुधारना। श्रीमती जी एक विशेष सदस्या की हैसियत से उसमें सम्मिलित हुईं। उक्त परिषद् में आपने भारतीय जातियों की अड़चनों की ओर परिषद् का ध्यान आकर्षित किया! उनकी वास्तविक दशा, और उसका कारण वहाँ खोल कर आपने संसार के सामने रख दिया।

सन् १९२१ के नवम्बर मास में आप भारत लौट आईं। यूरोप का सैर तो हो चुका था। अब आपने अमेरिका जाने की ठानी। इस बार दलितों के पिता, वाशिङ्गटन की जन्मभूमि के दर्शनों की इच्छा आपके हृदय में उठी।

सन् १९२२ के मई के महीने में, वाशिङ्गटन में स्त्रियों की सामाजिक कॉन्फ्रेन्स हुई थी। निमन्त्रण पाकर आप उसमें शरीक होने के लिए चल पड़ीं। वहाँ भी आपने भारतीय महिलाओं की दशा का अच्छा ख़ाका खींचा। आप कोरी व्याख्यानबाज़ी नहीं करती थीं। आपकी प्रत्येक उक्ति से सचाई और मार्मिकता झलकती थी। प्रत्येक शब्द आपके हृदय के रक्त से रँगे हुए होते थे। इस कारण आपके व्याख्यानों का वहाँ बड़ा प्रभाव पड़ा। भारत के प्रति अमेरिकन महिलाओं की आँखों पर जो पर्दा पड़ा हुआ था, उसके हटाने में आपने श्रीमती सरोजिनी नायडू को अच्छी सहायता पहुँचाई। सैनफ्रैन्सिस्को में होने वाली World Educational Conference में आपने अङ्गरेज़ सरकार की भारत में स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी नीति की पोल अच्छी तरह खोली थी।

सन् १९२३ के अगस्त मास में आपने जापान-यात्रा की। इस यात्रा में आपका उद्देश्य विशेषतया जापानी स्त्रियों की शिक्षा-प्रणाली का अध्ययन करना था, किन्तु वहाँ के विद्यालय छुट्टियों के कारण बन्द हो जाने से आपका उद्देश्य सफल न हो सका।

बीकानेर स्टेट के प्रधान मन्त्री सर मनुभाई मेहता
जो गोलमेज़-परिषद में सम्मिलित होने विलायत गए हुए हैं!

श्रीमती हंसा मेहता की माता लेडी मेहता

जापान से लौटने पर आपके जीवन का दूसरा पहलू आरम्भ होता है। यूरोप और अमेरिका के स्वतन्त्र भावों ने आपके हृदय में घर बना लिया था। भारत की अन्ध और कुत्सित कुरीतियों का समूल नाश करने का

सङ्कल्प आप कर चुकी थीं। विद्यार्थी-जीवन में भी आप बराबर सभा-सोसाइटियों में प्रमुख भाग लिया करती थीं। जिस समय आप एफ़० ए० में पढ़ती थीं, उसी समय आपने विद्यार्थी-सङ्घ की नींव डाली थीं, और स्वयं उसकी सभानेत्री भी चुनी गई थीं। सुधार की ओर आपका झुकाव बहुत पहले ही से था। किन्तु अब आपने अपने मनोभावों को कार्यरूप में प्रकट करने का निश्चय किया।

सन् १९२४ के जनवरी मास में आपने, अन्तर्जातीय विवाह सम्बन्धी विचारों को कार्यरूप में परिणत कर दिखाया। बड़ोदा के प्रधान मेडिकल ऑफ़िसर डॉक्टर जीवराव के साथ आपने विवाह किया। अन्तर्जातीय विवाह का जो आदर्श आपने भारतीय महिला-समाज के सामने रक्खा है, उससे हमारी बहिनों को कुछ सीखना चाहिए। आपने दिखा दिया है कि विवाह का सम्बन्ध हृदय से है, सामाजिक रीतियों से नहीं! विवाह एक पवित्र-बन्धन है, धर्म का आडम्बर नहीं। आपने दिखा दिया है कि अपने विवाह का निर्णय करना, अपने पति का वरण करना स्त्रियों का ईश्वर-प्रदत्त अधिकार है।

अब हम श्रीमती जी को उस क्षेत्र में पाते हैं, जहाँ दमन का दानव प्रचण्ड प्रताप और कठोर गर्जना से भारत को पीस डालना चाहता है। भारतीय महिलाओं की जाग्रति का प्रयत्न करते हुए आप दिनोंदिन स्वतन्त्रता के भीषण संग्राम में अग्रसर होती जा रही हैं। श्रीयुत मोदी के जेल जाने पर आप ही बम्बई की 'युद्ध-समिति' की डिक्टेटर बनाई गई थीं। इस भीषण संग्राम के समय, आपने एक वीर सेनापति की तरह जो वीरता के कार्य किए, जिस धीरता और बुद्धिमत्ता के साथ सैन्य-सञ्चालन किया, उससे प्रसन्न होकर ही सरकार ने आपको तीन मास के लिए कृष्ण-मन्दिर में विहार करने की आज्ञा दी थी।

अपने एक कॉङ्ग्रेस-बुलेटिन में श्रीमती जी ने अपने हृदय को खोल कर रख दिया है। वे कहती हैं :—

"स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए त्याग अनिवार्य है। अपने उद्देश्य तक पहुँचने के लिए हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम यातनाओं का सामना करें, अपनी क़ुर्बानियाँ करें, और युद्ध तब तक जारी रक्खें, जब तक कि हमें मनोवाञ्छित वस्तु न मिल जाय।"

एक वीर रमणी ही ऐसा कह सकती है। संसार ज़रा आँखें उठा कर देखे, एक भारतीय महिला आज स्वतन्त्रता का क्या मूल्य देने को तैयार है?

* * *

(३०वें पृष्ठ का शेषांश)

निस्सन्देह सेवा-सदन भारतवर्ष में अपने ढङ्ग की अकेली और आदर्श संस्था है। हमारा विश्वास है कि मानव जाति का प्रत्येक प्रेमी इस संस्था की उन्नति के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करेगा और ईश्वर से प्रार्थना करेगा कि यह संस्था देश और समाज की सेवा के लिए दिनोंदिन अधिकाधिक उपयोगी और शक्तिमान बन सके।

जिन देवियों अथवा महानुभावों को इस संस्था के साथ किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करना हो, उन्हें—मन्त्री, सेवा-सदन, गामदेवी, बम्बई नं० ७ के पते से पत्र लिखना चाहिए।

* * *
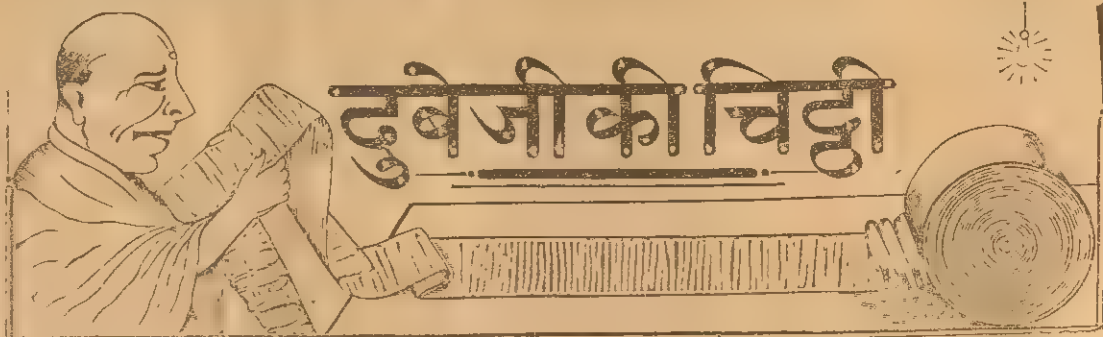
अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की!

मि० चर्चिल की स्पीच पढ़ कर तो जी ख़ुश हो गया। क्या बेलाग बातें कही हैं। कहने वाला हो तो कम से कम ऐसा तो हो। आख़िर बेचारे क्या करें। तबीयत ही तो है, क़ाबू में न रही। परन्तु इसमें बहुत बड़ा सन्देह नहीं है कि उन्होंने यह बातें जान-बूझ कर नहीं कहीं। जान पड़ता है उस दिन ज़्यादा ढाल गए होंगे। मुफ़्त की जब मिलती है तब ज़्यादा ढल ही जाती है। और जब ज़्यादा ढल जाती है तो आदमी राजा हरिश्चन्द्र का एक बहुत ही सस्ता संस्करण बन जाता है। उस समय यही जी में आता है कि "क्या परवाह है! हमारा कोई क्या कर लेगा? हम तो साफ़ ही साफ़ कहेंगे, चाहे किसी को बुरा लगे या भला।" अब वलायती अख़बार तथा राजनीतिज्ञ बिगड़ रहे हैं कि—"चर्चिल बड़े ख़राब आदमी हैं, जो ऐसी बातें कहते हैं। उनकी बात का कोई मूल्य नहीं है—इत्यादि-इत्यादि।" अपने राम का भी यही ख़याल है कि चर्चिल साहब बड़े वैसे आदमी हैं, उन्हें ज़रा समझ नहीं है। भाइयो, आप लोग उनके कहने का कुछ बुरा मत मानिए—वह तो यों ही बका करते हैं। उनका स्वभाव ही कुछ नटखटपन का है। छप्पन वर्ष के होने आए, परन्तु उनका लौण्डापन नहीं गया। यह नहीं देखते कि कौन बात किस समय कहना चाहिए और किस समय नहीं कहना चाहिए। ऊँट की तरह से मुँह उठाया और बलबलाने लगे। यह माना कि नशे में कह गए; परन्तु ऐसा नशा किस काम का जिससे कि अपनी पोल खुले। ऐसी बातें कहीं यों कही जाती हैं। वह तो कहिए यही ख़ैरियत है कि हिन्दुस्तानी बेचारे बड़े भोले हैं—लीपापोती को मान लेते हैं, नहीं तो बड़ा गड़बड़ हो जाय। बस आज से यह नियम कर दिया जाय कि जब कभी वह किसी सभा-सोसायटी में जायँ तो जब तक वह अपना भाषण न दे लें तब तक उन्हें बोतल की झलक न दिखाई जाय। अजी जनाब उनका क्या बिगड़ेगा? वह तो यह कह कर अलग हो जायँगे कि भाई माफ़ करो, नशे में मुँह से निकल गया; परन्तु ब्रिटिश सरकार का तो सब भण्डाफोड़ हो जायगा। यदि राउण्ड-टेबुल कॉन्फ़्रेन्स के प्रतिनिधि बिगड़ कर चल देते तो जनाब, नाक कट जाती या नहीं? सारा करा-धरा चौपट हो जाता। यह तो लोग जानते ही हैं कि देना-लेना क्या, मुहब्बत अजब चीज़ है। परन्तु जो गुड़ दिए मरे उसे ज़हर क्यों दिया जाय। अपने मुँह से यह क्यों कहा जाय कि कुछ नहीं मिलेगा, हवा खाओ। ऐसा कहने में ख़राबी है। और मि० चर्चिल, आपके भाषण की कटु आलोचना की जायगी—आपको बुरा-भला कहा जायगा; परन्तु आप बुरा मत मानिएगा, सुन कर सोंठ हो जाइएगा। इस समय ऐसा ही मौक़ा है। ऐसा न हो कि फिर बलबलाने लगो, समझे? ख़ैर, अब तो जो होना था हो गया; परन्तु भविष्य में ज़रा ध्यान रखना।

और एक हिसाब से मि० चर्चिल ने कुछ बेजा भी नहीं किया। यह तो होना ही चाहिए कि एक तमाचा रसीद करे और दूसरा सोहरा दे। काम इसी तरह से होता है। सब मारते ख़ाँ ही हो जायँ तब भी ठीक नहीं और सब दयालु बन जायँ तब भी बुरा है। इसलिए यही ठीक है कि कुछ लोग तो यह आशा दिलाते रहें कि वाह! यह क्या बात है, सब कुछ दिया जायगा, आप लोग घबराते क्यों हैं? और दो-एक यह कहते रहें कि यह सब ढकोसला है—कानी कौड़ी भी नहीं दी जायगी। इससे यह लाभ होगा कि समय पर जिस ओर उचित समझा जायगा उस ओर का पक्ष लिया जायगा। और फिर इससे यह लाभ भी तो है कि जब याचक लोग यह देखेंगे कि यहाँ से तो कुछ भी मिलने की आशा नहीं तो वे जो कुछ थोड़ा-बहुत मिलेगा, उसी को ग़नीमत समझ कर सन्तोष कर लेंगे। यदि घर भर दाता बन जाय तो जनाब, याचक लोग घर खोद ले जायँ, और फिर भी सन्तुष्ट न हों। इसी दातापन की बदौलत राजा हरिश्चन्द्र को चार लोगों ने बेच खाया था। इससे यही नीति ठीक है कि कुछ दाता बने रहें और कुछ सूम! मि० चर्चिल, आपने बहुत अच्छा किया जो ऐसी स्पीच दे डाली। परन्तु अब कुछ दिनों ख़ामोश रहिए, कुछ दिन बाद फिर एक फुलझड़ी छोड़ देना। लेकिन इस बार जो स्पीच देना वह ज़रा सोच-समझ कर देना। पिछली स्पीच वैसे तो अच्छी रही, परन्तु उसमें दो-चार बातें आप बौड़मपन की कह गए हैं। जैसे आपने यह बक डाला कि गाँधीवाद को कुचल डालना चाहिए, नेताओं को निर्वासित कर देना चाहिए था, गाँधी जी को क़ानून तोड़ने के समय तुरन्त ही गिरफ़्तार कर लेना चाहिए था। ब्रिटिश सरकार को दिखा देना चाहिए कि वह कितनी शक्तिशाली है, इत्यादि-इत्यादि! ये बातें कहने योग्य नहीं थीं। इससे हिन्दुस्तानी और ज़्यादा भड़क जायँगे। क्या आपको नहीं मालूम कि आज प्रत्येक देश में कुछ ऐसे लोग मौजूद हैं, जो गाँधी जी को संसार का महापुरुष समझते हैं। यह माना कि वे बिलकुल अहमक़ हैं, परन्तु भाईजान, वे साधारण आदमी नहीं हैं—वे सब आपकी ही तरह स्वतन्त्र तथा शक्तिशाली हैं—आप लोग उनको नाराज़ करने का साहस नहीं कर सकते। इससे उन लोगों में भी आप लोगों के प्रति विरोध-भावना उत्पन्न हो जायगी। एक तो आपके दिन वैसे ही ख़राब हैं—तमाम ज़माना दुश्मन हो रहा है, आपके पाले-पोसे बच्चे तक बग़ावत पर कमर बाँध रहे हैं; उस पर आप ऐसी बातें कहते हैं जो और भी नाराज़ी फैलावे। यह समय अदावत बढ़ाने का नहीं है। हिन्दुस्तान से इस समय सबको सहानुभूति है। इसलिए आप अपनी शक्ति को ज़रा समझ-बूझ कर ख़र्च कीजिए। यह तो अपने राम को अच्छी तरह पता है कि आप बड़े शक्तिशाली हैं। आप चाहें तो हिन्दुस्तान को भारत-महासागर में डुबो सकते हैं; परन्तु आपकी शक्ति में थोड़ा पिलपिलापन यह है कि हिन्दुस्तान को नष्ट-भ्रष्ट करने में आपके लिए साठों दण्ड एकादशी हो जायगी। आपकी जाति के अनाथ, आवारा और ऐसे नवयुवक, जिनके न बाप का पता, न माँ का ठिकाना, और जो हिन्दुस्तान की बदौलत चैन की बंसी बजाते हैं, इङ्गलैण्ड में धँधे रहने के कारण चूहों और खटमलों की तरह आपके आराम में ख़लल डालेंगे।

कनाडा और ऑस्ट्रेलिया ये दो आपके कमाऊ पूत हैं—यह हमने माना, परन्तु आपकी बदक़िस्मती और कलिकाल के प्रभाव से दोनों बड़े नालायक़ और हरामी निकले। आपके चलते हाथ-पैरों जब ये दूर से अँगूठा दिखाते हैं, तो बुढ़ौती में क्या काम आएँगे। इसके अतिरिक्त आप यदि हिन्दुस्तान को तबाह कर डालेंगे तो अमेरिका, जापान, रूस इत्यादि को आपके साथ धौलधप्पा करने का मौक़ा मिल जायगा; क्योंकि आपकी घुटी चाँद देख-देख कर अक्सर इन लोगों का हाथ खुजलाया करता है; मगर क्या करें, मौक़ा न मिलने से मजबूर होकर रह जाते हैं। फिर, हिन्दुस्तानी कमबख़्त भी मार खाने में आलातोल मज़बूत साबित हुए। तादाद भी कमबख़्तों की इतनी ज़्यादा है कि इन्हें मारते-मारते आपको फ़ालिज मार जायगा और इनका अन्त न होगा। इसलिए भाई साहब, ग़ुस्से को थूक डालिए। एक बात और कीजिए—कुछ दिनों के लिए बोतल चढ़ाना बन्द कर दीजिए—ठण्डा पानी पिया कीजिए। बोतल ग़ुस्से को बढ़ाती है, ठण्डा पानी शान्त करता है। ऐसा ग़ुस्सा, जिससे अपनी ही जान पर बवाल हो, बुरा है। हाँ, ज़रा यह तो बताइए कि आपने यह क्या बक डाला कि चौबीस हज़ार कॉङ्ग्रेसवादी जेलों में बन्द हैं। बूढ़े हो गए, मगर अक़्ल न आई। इतनी लम्बी तादाद बताने की क्या ज़रूरत थी—अधिक से अधिक दस-पन्द्रह हज़ार बताते। सच बोलने का माद्दा आपमें कुछ आवश्यकता से अधिक है। आपने शायद भारत-मन्त्री मि० बेन की बात को सच मान लिया। मि० बेन तो हिन्दुस्तानियों से मिले हुए हैं, वह ऐसी ही बात कहेंगे जिससे हिन्दुस्तानियों का हित हो। आप जैसे पुराने घाघ भी उनके चकमे में आ गए। मि० बेन की बात का तो किसी को विश्वास नहीं हुआ था; क्योंकि वह हिन्दुस्तान के लाभ के लिए बात को बढ़ा कर ही कहते हैं—परन्तु आपकी बात को सब ब्रह्म-वाक्य मानते हैं। अब आपने उनके कथन पर अपनी मुहर लगा दी तो वह बात पक्की हो गई। आप जानते हैं कि इस बात का क्या प्रभाव पड़ेगा? इतनी लम्बी तादाद सुन कर आपके जाति-भाइयों तथा अन्य देश के लोगों का हार्ट फ़ेल होने लगेगा। वे तो इस तादाद को सुन कर सहम जाएँगे। भला कुछ ठिकाना है—चौबीस हज़ार आदमी जेलों में बन्द हैं! आपने किया बड़ा लौण्डापन; मगर ख़ैर अब तो जो होना था हो गया। भविष्य में किसी स्पीच में इसका सुधार इस प्रकार कर दीजिएगा कि चौबीस हज़ार में से बीस हज़ार माफ़ी माँग कर छूट गए हैं और केवल चार हज़ार रह गए हैं। यह काम याद करके कीजिएगा, भूल न जाइएगा। चार-पाँच हज़ार की तादाद सुन कर कोई न चौंकेगा। इतने आदमी तो जेल आया-जाया ही करते हैं, यह एक साधारण बात है। परन्तु चौबीस हज़ार!!! ओफ़-ओह! ज़रा ठहर जाइए, एक गिलास ठण्डा पानी पी लूँ तो फिर कुछ कहूँ। यह तादाद सुन कर तो अपने राम का गला भी ख़ुश्क हो गया। हालाँकि यहाँ हिन्दुस्तानी कमबख़्त साठ-सत्तर हज़ार की गिनती गिनाते हैं, परन्तु अपने राम को उनकी बात पर कभी विश्वास नहीं हुआ; क्योंकि अपने राम को यह अच्छी तरह मालूम है कि हिन्दुस्तानी परले सिरे के गप्पी होते हैं। और यह भी बड़ी अच्छी बात है कि भारत-सरकार हिन्दुस्तान की गप्पें बाहर जाने नहीं देती, अन्यथा साठ-सत्तर हज़ार की तादाद सुन कर तो इङ्गलैण्ड का एक कोना समुद्र में डूब जाता। हाँ, नेताओं के निर्वासित करने की सलाह जो आपने दी है, उसके लिए आप अधिक चिन्ता मत कीजिए। नेता लोग सब जेलों में निर्वासित हैं और जो उन नेताओं का स्थान ले सकते थे, उन लोगों को भारत-सरकार ने कॉन्फ़्रेन्स के बहाने निर्वासित करके इङ्गलैण्ड भेज दिया। अब यह आपका काम है कि आप ऐसा प्रबन्ध करें कि वे जल्दी हिन्दुस्तान न लौटने पावें। उनको लौटने देने में हर प्रकार से ख़तरा है। यदि स्वराज्य लेकर लौटे तब भी आपकी शामत है, और यदि ख़ाली हाथ लौटे तब भी आपकी ख़राबी है; क्योंकि खिसियाया हुआ आदमी क्या नहीं करता। इसलिए अपने राम की सलाह तो यह है कि आप उन्हें दो-चार बरस वहीं बन्द रखिए—तब तक यहाँ सब मामला ठण्डुस हो जायगा। परन्तु आप जैसी बातें करते हैं, उससे यह भय है कि कहीं ये लोग रस्सियाँ तुड़ा कर थान की तरफ़ न भागें। इससे भाई जी, अपने राम की अन्तिम प्रार्थना या सलाह (जो कुछ आपकी खोपड़ी शरीफ़ा में आवे समझ लें) मान कर ज़रा अपनी चोंच सम्हाल कर खोला कीजिए।

सम्पादक जी, कृपया मेरा उपर्युक्त सन्देश मि० चर्चिल तक पहुँचाने की चेष्टा कीजिएगा। हालाँकि सन्देश में कही हुई बातें आपको विष-समान प्रतीत होंगी; क्योंकि आप भी ठेठ हिन्दुस्तानी हैं।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

तूफ़ाने ज़राफ़त

[नाख़ुदाए सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

बड़े दिन में यह कह कर लेडियों के साथ सोते हैं,
जो तुम हव्वा की पोती हो, तो हम आदम के पोते हैं !
तसव्वर जिन मुसलमानों को है लन्दन की मस्जिद का,
अरब के तुख़्म को यूरुप के गमले में वह बोते हैं !

❀

पूछा जो हमने किससे तेरा रब्तोज़ब्त है ?
मुँह फेर कर वह कहने लगा, तुमको ख़ब्त है !

❀

अजब क्या उनके हँसने पर जो दुनिया ख़ूब रोती है,
जहाँ बिजली चमकती है, वहाँ बारिश भी होती है !

❀

नाम लिखना तो लिफ़ाफ़े पे मुनासिब ही नहीं,
इस सबब से कि यह एक पर्दा-नशीं का ख़त है !

❀

अबस दैरो-हरम में काफ़िरो-दींदार लड़ते हैं,
कहीं यह सर झुकाते हैं, कहीं वह सर रगड़ते हैं !

❀

[महाकवि (स्वर्गीय) 'अकबर' इलाहाबादी]

मज़हब का हो क्योंकर इल्मो-अमल, दिल ही नहीं भाई एक तरफ़,
किरकिट की खिलाई एक तरफ़, कॉलिज की पढ़ाई एक तरफ़ !
क्या ज़ौक़े-इबादत हो उनको, जो मिस के लबों के शैदा हैं !
हलवाए-बिहिश्ती एक तरफ़, होटल की मिठाई एक तरफ़ !
ताऊनोतप और खटमल, मच्छड़ सब कुछ है यह पैदा कीचड़ से,
बम्बे की रवानी एक तरफ़, और सारी सफ़ाई एक तरफ़ !
हर सिम्त तो है एक दामे-बला, रह सकते हैं ख़ुश किस तरह भला ?
अग़यार की ख़्वाहिश एक तरफ़, आपस की लड़ाई एक तरफ़ !
क्या काम चले, क्या रङ्ग जमे, क्या बात बने, कौन उसकी सुने ?
हैं "अकबरे" बेकस एक तरफ़, और सारी ख़ुदाई एक तरफ़ !

❀

[नाख़ुदाए सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

मुन्तख़िब होने को हमको ध्यान है, वोट क्या है, मेम्बरी की जान है !
अहले-मशरिक़ से नहीं करते वह बात, अहले-मग़रिब की यही पहिचान है !
नौकरी मिलने में आसानी नहीं, पास हो जाना बहुत आसान है !
ढूँढ़ते हैं कौन्सिलों में सीट वह, अपने घर से जिनको इतमीनान है !
सर जो टेबुल से कभी उठता नहीं, क्या किसी अङ्गरेज़ का एहसान है !!
दिल में कुछ है और लब पर और कुछ, इन दिनों यह दीन, यह ईमान है
रोज़ के चन्दों से आजिज़ आ गए, लीजिए हाज़िर हमारी जान है !
चाहिए होटल की दरबानी हमें, हाथ ख़ाली है मकाँ वीरान है !
'पानियर' में जो न शाया हो सके, वह कोई नोटिस, कोई ऐलान है !
काबा ओ बुतख़ाना की हसरत नहीं, सैर लन्दन का फ़क़त अरमान है !
"नूह" ईसाई न होते हों कहा, आज गिरजा में बड़ा सामान है !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

लीडर का रोना एक तरफ़, पबलिक का रोना एक तरफ़,
दोनों का असर क्या रखता है, सरकार का होना एक तरफ़ !
वह क़द्र नहीं कुछ भी करते, कुछ भी उनकी नज़रों में,
जान अपनी खोनी एक तरफ़, दिल अपना खोना एक तरफ़ !
हँसता है ज़माना दिल में इसे, सोचो तो सही, समझो तो सही;
ऐ शेख़ो-बरहमन अब रक्खो, मज़हब का रोना एक तरफ़ !
आलम से नहीं कुछ हो सकता, पत्थर की लकीर इसको समझो,
दुनिया का होना एक तरफ़, सरकार का होना एक तरफ़ !
क्या मञ्ज़रे-इबरत यह भी है, दुनिया के लिए, आलम के लिए
क़ातिल का हँसना एक तरफ़, "बिस्मिल" का रोना एक तरफ़ !

❀

अखिल भारतवर्षीय महिला-शिक्षा-कॉन्फ़्रेन्स का प्रधाना तथा कार्य-कारिणी समिति का ग्रूप

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिक्षा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। मूल्य केवल ३); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिक्षा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल ३); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्तन हो जायगा—एक दिव्य ज्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २॥)

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील धारणाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वाच्छन्द्यपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रता-पूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झञ्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके हृदय का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १।); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १७ छोटी-छोटी, शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायँगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—ख़ुशी के मारे उछलने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिक्षा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १।) ; स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पाश्चात्य, हिन्दू और मुसलमान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सचाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायँगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिक्षा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); ले० ज़हूरबख़्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ॥); स्थायी ग्राहकों के लिए ॥–)

लालबुझक्कड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोलियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिक्षा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य २); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से ॥–)

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के मुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैण्ड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेज़ों की ग़ुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के शिनफ़ीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेज़ी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से।=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मँगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव; मूल्य ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

बड़ा दिन

[श्री० बनारसीदास जी कौशिक]

(उनका)

स्वतन्त्रता ! साम्राज्य !! वैभव !!!

तब फिर क्यों न आज आमोद-प्रमोद अपने पूर्ण वेग से टेम्स के तट पर ताण्डव-नृत्य करने लगे। और यह नृत्य ? स्वर्ग का सा ! बहिश्त का सा ! नहीं, उससे भी कई गुना मनोहर और सुन्दर ! यह तो इन धर्माख्यानों (Myths) के काल्पनिक रचयिताओं की क्षुद्र कल्पनाओं में महाप्रलय तक न आता।

टेम्स ! संसार के सब से समृद्धिशाली नगर की टेम्स ! अपने शैशव काल से ही तूने ऐसे कितने ही 'बड़े दिन' देखे हैं और उनमें से प्रत्येक ही तेरे दुकूल की विस्तृतता के साथ-साथ 'बड़ा' ही होता चला गया है। यहाँ तक कि आज तो उसके बड़प्पन का अनुभव करते हुए कल्पनातन्तु भी बुरी तरह काँपने लगते हैं !

पार्लामेण्ट की वे गगन-चुम्बी विशाल अट्टालिकाएँ, पूँजीपतियों के वे शानदार भवन और तेरे वक्षस्थल पर द्रुतगति से तैरते हुए नादिरशाही सरीखे, विदेशी लूट से भरे वे भीमकाय जलयान पूर्व (East) की निःस्वार्थ आतिथ्य-स्वीकार तथा उसकी सादगी और भोलेपन पर जब एक व्यङ्ग-हास्य हँसते होंगे, तब टेम्स ! तू अवश्य ही इन कूटनीतिज्ञों और सच्चे (?) व्यवसायियों के 'बड़े पन' का पूर्ण आभास पाती होगी ! और श्याम वर्ण कोहरे में से विद्युत की छनी हुई प्रखर किरणें जब गुलाबी गौराङ्ग युवतियों के अरुण, पीत, नील-सम्नियों को जगमगा, तुझमें अनोखे प्रतिबिम्ब डालती होंगी ; तथा तटस्थ शानदार होटलों, नृत्य-भवनों, थियेटरों और क्लबों का मादकतापूर्ण आह्लाद तेरे वक्षस्थल पर घण्टों थिरकता रहता होगा, तब तू अवश्य ही जॉनबुल के आनन्द (Epicurianism) को विशेष मात्रा से परिचित होती होगी।

आज के दिन प्रत्येक वस्तु, भाव, योजना बड़ी ही बड़ी दिखाई पड़ती है—उस तल्लीन, प्रेमोन्मत्त, पकी हुई मिस (!) और बैचेलर (?) को चर्च में, स्ट्रीट में, घर में, मोटर में, नौका में, जहाँ कहीं भी अवसर मिले, Gift-exchange, Heart-exchange तथा......exchange करते हुए देखिए ! रूप, लावण्य और प्रेम का बाज़ार कितना गर्म है ; और है कितनी 'बड़ी' सहृदयता, और सरसता उनकी कामनाओं और प्रणयकेलि में !!

'बड़ा दिन' आया और लाया उनके श्रमजीवियों को अधिक सुखमय, सभ्य और शिक्षित बनाने वाली यथोचित मज़दूरी ! फिर क्यों न वे भी अपनी प्रिय पत्नियों तथा छोटे-छोटे भोले शिशुओं के साथ इस विश्व-व्यापी आनन्द में लवलीन हो जायँ। और विशेषकर इस 'बड़े दिन' के ऊपर तो वे असाधारण रीति से प्रसन्न हैं—वे ही तो White Hall में बैठे-बैठे ब्रिटिश साम्राज्य की नकेल घुमा रहे हैं। कौन उन्हें गिरी दृष्टि से देखने का साहस करेगा ? वे हैं "अपने भाग्य को आप बनाने वाले" सनातनी स्वामियों की ढोंगी और बेहूदा सृष्टि के "अस्पृश्य, शूद्र, म्लेच्छ............" भारत-भाग्य-विनायक मज़दूर बादशाह।"

और उनके ग्राम ! वे प्रकृति के अङ्क में पले हुए कितना स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे हैं ! न रोग और न दरिद्रता। कितने स्वच्छ और कितने शान्त ! सबका रहन-सहन सामान्य, जीविका सामान्य, पर निश्चित और सुलभ। पुरुष सुखी, स्त्रियाँ सुखी, बच्चे सुखी ! फिर क्यों न वे भी आज जङ्गल में मङ्गल मनाएँ और समयानुसार गाँव और दीनों को प्यार करने वाले महात्मा ईसा की पुण्य-स्मृति में बजाए गए चर्च के घण्टे के घहराते हुए शब्द में, अपनी सामान्य स्थिति को विलीन कर, क्यों न सब के सब आज के इस "बड़े उछाह" में मग्न हो जाएँ !

ऑक्सफ़र्ड और केम्ब्रिज के उस तत्ववेत्ता शिक्षक की प्रसन्नता में कितनी उत्सुकता है ! उसे अपने आविष्कार, अपने सिद्धान्त तथा अपनी वैज्ञानिक गवेषणाओं पर नाज़ है। उसने इस वर्ष के बीच में दिन-रात परिश्रम कर ऐसी नई बातों को, ऐसे नए तत्वों को, ऐसे नए तन्त्रों को खोज निकाला है, जो बिलकुल मौलिक (Original) हैं। इसके उपलक्ष में आज उसे विद्यालय से समस्त विद्वानों और शिष्यों की करतल-ध्वनि के मध्य मान और उपाधि दी गई है। प्रकृति के गुप्त रहस्यों के पता लगाने वाले का कितना उचित सत्कार !

ईटन (Eton) के मैदान पर बड़े उल्लास के साथ खेलते हुए उन विश्वविद्यालयों के नवयुवक और नवयुवतियों को देखो ! बलिष्ट शरीर, प्रबल राष्ट्र की आत्मा के कितने देदीप्यमान मन्दिर हैं। स्त्री और पुरुष दोनों ही स्वच्छन्दतापूर्वक विचर रहे हैं। चेहरों पर तमतमाहट है, हृदय में उत्साह है, और है उनके विचारों और उद्देश्यों में नवीनता और सजीवता ! आकाश-भेदी वेधशाला में खड़े हुए, किसी 'बड़े दिन' पर, मङ्गल ग्रह की कौतूहलमय यात्रा की कामना, संसार के अगम्य वन, पर्वतों, नदियों, भूगर्भ तथा हिममय प्रदेशों के ग्लेशियर्स को अपने उद्दण्ड साहस से मर्दन कर, विश्व भर में यूनियन जैक (Union Jack) को फहरा कर, ब्रिटिश साम्राज्य का आतङ्क जमाने की इच्छा आ-आकर उनको कितना चञ्चल बना रही है। फ़ादर विलियम (Father William) और ओल्ड ग्रैनीज़ (Old Grannies) बाबा आदम के वे अन्ध-विश्वास, जीर्ण-शीर्ण सिद्धान्त किसी पाताल के नरक में धू-धू जल रहे हैं। और नया समाज, नया विज्ञान, नया प्रेम, नई भावनाएँ उसकी जगह ले रही हैं। युवावस्था और स्वतन्त्र आन्दोलन के सामने क्या करना असम्भव है ?

(अपना)

परतन्त्रता ! दासता ! दरिद्रता ! लाठी ! जेल ! और कोड़े !

तब क्या यह बड़ा कहलाए जाने वाला दिन एक भौगोलिक सत्य (Geographical Truth) के अतिरिक्त अपने लिए कुछ और विशेषता रखता है ? हाँ, केवल एक और !! चिरकाल के बड़े-बड़े रक्त-स्रावित ज़ख़्मों पर नमक छिड़क कर इसका इस क्रूरता से ठट्ठा मार कर चला जाना !!

इस दिन वे यों हँसते होंगे, यों गाते होंगे और हम यों रो रहे हैं, यों बिलख रहे हैं, और भविष्य में भी बहुत दिनों तक ऐसे ही रहने की सम्भावना है—बस यही सोच-सोच कर हमारी मूक वेदनाएँ हमें विशेषकर इस दिन अधिक विषादयुक्त बना डालती हैं !

संसार के आदि-सभ्य-आचार्यों के विश्व-व्यापी प्रेम, उदारता, और बन्धुत्व के विचारों की सहायक, स्वयं महात्मा ईसा के बौद्ध-गुरुओं के पवित्र आश्रमों को दिव्य बनाने वाली मात भागीरथी आज टूटे हृदय से बह रही है, ब्रिटिश साम्राज्य के स्पञ्ज ने उसके असंख्य रत्नों को खींच टेम्स में भर दिया है—उसके किनारे के लहलहाते 'शस्य-श्यामलाम्' 'Trusteeship' की भारी शुल्क में टेम्स पर के बने पूँजीपतियों के विशाल कार्यालयों में न जाने कब से जा रहे हैं। तब फिर जब वह धन, यौवन, चपलता, निरशङ्कता और मस्तानेपन पर गर्व करे और गङ्गा अपने तटस्थ उजड़े खेतों, पुराने ढङ्ग के फूस के झोपड़ों, वस्त्रविहीन ग्रामवासियों की दारुण दरिद्रता को देख, तीव्र वेदना का अनुभव कर, 'दुःखी भारत पर' आँसू बहाने लगे, तब आश्चर्य ही क्या है ?

शिशिर के कटकटाते शीत में दिन भर कड़ा परिश्रम कर गोधूली के समय धूल-धूसरित उन गाँव की पवित्र स्त्रियों की, Heorthrug पर बहुमूल्य सोफ़ों पर बैठी, तथा मनसिज (cupid) की पुण्य (?) स्मृति में ह्विस्की पी-पीकर पियानों पर प्रेम-गीत गा आनन्द मनाने वाली उन सुखी लेडियों से समानता कीजिए। अकस्मात किसी भारत के साधारण मज़दूर के अतिथि बन कर उसकी दारुण दरिद्रता, दीनता, अज्ञानता और भूख में से उन 'Vagabond-wages' के ठाठ देखिए ! युवकों के राष्ट्र-प्रेम के ज्वार की प्रचण्ड लहरों को बोतल में बन्द करने की व्यर्थ और मूढ़ योजना करने वाले इन भीरु विद्यालयों का उन...........!

और किस-किस की तुलना करें—भारत के युवक हों या युवती, मज़दूर हों या तत्ववेत्ता, विद्यार्थी हों या मास्टर, सभी कोई यदि अपनी स्थिति की अपने उन प्रतिपक्षियों से समानता करेंगे, तो ज्ञात हो जायगा कि यहाँ तो "सुख सरसों, शोक सुमेरु।"

तब फिर इस व्यर्थ के अरण्य-चीत्कार से लाभ क्या ? 'आज के महात्मा' के नाम पर इस विषमता का कारण ढूँढ़िए। पर इसके लिए 'काशी' के किसी ज्योतिषी या शास्त्री बाबा पर न जाइए। क्योंकि वहाँ भाग्यवाद या दैववाद का चक्कर निरुत्साह, भीरु और निठल्ला बनाए बिना न छोड़ेगा। इन तमाम समस्याओं के कारण तथा क्रिया बताएँगे कर्मवादी महर्षि मार्क्स और महात्मा लेनिन के 'लाल' ग्रन्थ।

आओ, 'दुःखी भारत' के एकमात्र आश्रय—युवको और युवतियो ! अपनी गड़बड़ दशा का; अपनी हीनावस्था का, अपने घोर अज्ञान की तनिक भी चिन्ता न करते हुए, तमाम भारत की दुःखी आत्मा को सुखी बनाने का भार अपने ऊपर लो, और अपना भार न्याय, धर्म, साहस और स्वतन्त्रता के प्रतिपक्षी सर्व-शक्तिमान परमात्मा पर छोड़, इस घोर विषमता का नाश करने के लिए आगे आओ। तुम्हारे अतिरिक्त और किसी में इतना साहस नहीं है, जो ऐसा कर सके........

क्राइस्ट आए थे निर्धनों की निर्धनता मिटाने, श्रमजीवियों को सुखी बनाने, अज्ञानतम को विद्या-भास्कर से छिन्न-भिन्न करने और विश्व-व्यापी बन्धुत्व, त्याग और सेवा का पाठ पढ़ाने। ऐसा न होने पर क्रान्ति करके क्रॉस (Cross) पर लटकने ! तुम भी आओ ! जिन्हें भारत के युवक कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और 'माता' के पचास सहस्र वीर, साहसी, त्यागी और अहिंसक सुपुत्रों की दारुण यन्त्रणा जेल की कठोर दीवारों को पार कर जिनके हृदयों में भीषण उथल-पुथल मचा रही है; वह इन अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी महात्मा की पुण्य-स्मृति में, उस ढोंगी पुजारी के लाख मना करते रहने पर भी, मन्दिर के घण्टे को ज़ोर से बजा गाने लगें :—

"बहने दो, रोक-टोक से कभी नहीं रुकती है।
यौवन-मद की बाढ़ नदी की, किसे देख झुकती है।"

* * *

तिनके का सहारा

गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स डूब ही चुकी थी, कि मेकडॉनल्ड साहब ने एक तिनका उसमें फेंक दिया ; और अब भारतीय प्रतिनिधि उसी के सहारे उतरा रहे हैं। यह तिनका और कुछ नहीं, हिन्दू-मुस्लिम झगड़े को तै करने की एक आशा मात्र है ; फन्दा काम कर गया है। मि० फ़ज़लुलहक़ ने बङ्गाल के मुसलमानों के पास एक सन्देशा भेजा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि मुसलमानों को संयुक्त चुनाव को इस शर्त पर स्वीकार करना चाहिए, कि बङ्गाल लेजिस्लेटिव कौन्सिल में उनके लिए प्रतिशत ५१ जगहें सुरक्षित रहें ! ऐसी पागलपन भरी बातों का प्रभाव भी पागलपन ही के रूप में पड़ा है। हम देखते हैं कि जो मुस्लिम नेता गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स का बहिष्कार करने के लिए अपने देशवासियों को सलाह दे रहे थे, वे भी अब इसके महत्व का अनुभव करने लगे हैं, और बड़े ज़ोरों से अपने देशवासियों को सलाह दे रहे हैं कि, कम से कम इन साम्प्रदायिक झगड़ों का निबटारा तो इसके द्वारा करा ही लेना चाहिए ! उनका इस प्रकार रङ्ग बदलना रहस्यपूर्ण है !

संयुक्त चुनाव के लिए हिन्दुओं से बहुत अधिक त्याग करने के लिए कहा जा रहा है। हमारे कुछ मुस्लिम मित्रों का विचार है, कि संयुक्त चुनाव का सम्बन्ध विशेषकर हिन्दुओं से है। राष्ट्रीयता जो केवल संयुक्त चुनाव से ही उन्नति कर सकती है—हिन्दुओं का भाव है ! स्वराज्य से हिन्दू और मुस्लिम दोनों का सम्बन्ध है, किन्तु उसके लिए अपना बलिदान करना विशेषकर हिन्दुओं का काम है ! हम बराबर ऐसे विचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाते रहे हैं, और फिर भी इसका विरोध करते हैं। हमारी सम्मति में, मुसलमानों का भी स्वराज्य और उसकी प्राप्ति के साधनों से उतना ही सम्बन्ध है, जितना कि हिन्दुओं का। इसलिए संयुक्त चुनाव से मुसलमानों को भी उतना ही लाभ है, जितना कि हिन्दुओं को। इस कारण स्वराज्य-प्राप्ति में त्याग का अपना भाग एक दूसरे के मत्थे नहीं मढ़ना चाहिए। कहा जाता है, कि अल्पसंख्यक समुदाय की रक्षा के लिए तब तक प्रबन्ध होना चाहिए, जब तक कि साधारण नागरिकता उन्नत रूप धारण न कर ले। किन्तु यह दुर्भाग्य की बात है कि कुछ मुसलमान नेता केवल उन्हीं प्रान्तों में जहाँ मुसलमानों की संख्या कम है, विशेष प्रतिनिधित्व नहीं चाहते, बल्कि यह माँग वे उन स्थानों के लिए भी पेश करते हैं, जहाँ वे अधिक संख्या में हैं। उन्हीं के कथनानुसार बङ्गाल में उनकी संख्या अधिक है। यदि ऐसी बात है, तो यहाँ की लेजिस्लेटिव कौन्सिल में उनके लिए विशेष स्थान सुरक्षित क्यों रक्खे जायँ ? बङ्गाल के लोकल बोर्डों में उनके लिए उससे कहीं ज़्यादे स्थान प्राप्त हैं, जितना कि उन्हें अपनी संख्या के परिमाण से मिलना चाहिए। यह कहा जा सकता है कि, लोकल बोर्डों के प्रतिनिधित्व के लिए योग्यता की सीमा बहुत छोटी है। अगर ऐसी बात है, तो उचित यह होगा कि लेजिस्लेटिव कौन्सिल के लिए भी योग्यता की सीमा घटा दी जाय।

इस सम्बन्ध में हिन्दू मुसलमानों को तहे-दिल से सहायता पहुँचावेंगे। यह बात सच है, कि नेहरू रिपोर्ट में, युवावस्था प्राप्त सभी मनुष्यों को चुनाव का अधिकार दिए जाने की सिफ़ारिश की गई है। यदि ऐसा किया जाता, तो भारत की गति प्रजातन्त्र की ओर फिर जाती। किन्तु हमारे कुछ मुस्लिम नेता इस ओर नहीं जाना चाहते। वे केवल एक साम्प्रदायिक समूह का राज्य मात्र चाहते हैं।

गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में गड़बड़ मची हुई है। जिन बातों पर पहले विचार करना चाहिए था, वे सब से पीछे के लिए रख छोड़ी गई हैं ! भारतीय प्रतिनिधिगण उदार दल की सरकार से इस बात का वचन चाहते थे, कि यदि कॉन्फ़्रेन्स में हिन्दू-मुसलमानों का समझौता हो जाय, तो सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य की प्राप्ति में उन्हें सहायता देगी। किन्तु मि० रेमज़े मैकडॉनल्ड ऐसी प्रतिज्ञा करने के लिए राज़ी नहीं हुए। इसके बाद ही चुनाव का प्रश्न उठना चाहिए था, किन्तु अब तक उसका ज़िक्र भी नहीं किया गया है। मि० मैकडॉनल्ड कहते हैं—"पहले अपना मसविदा तैयार कर लीजिए, और तब हम उस पर विचार करेंगे।" भारतीय प्रतिनिधि अब चाहते हैं कि, शीघ्रतापूर्वक कुछ करके, मि० मैकडॉनल्ड के भरोसे बैठ जायँ। मि० जे० एन० बसु और सर पी० सी० मित्र तो शीघ्र सब काम कर डालने के लिए इतने चिन्तित थे कि बङ्गाल के साम्प्रदायिक झगड़े को मिटाने के लिए चट मि० आग़ा ख़ाँ तक को पञ्च बनाना स्वीकृत कर लिया, मानो बङ्गाल भारत से बाहर है, और आग़ा ख़ाँ भी एक बड़े निष्पक्ष पुरुष हैं ! इसमें सन्देह नहीं, कि भारतीय प्रतिनिधियों के लिए, हिन्दू-मुस्लिम समस्या का अच्छा जाल बिछाया गया है। इन्हें औपनिवेशिक स्वराज्य या कुछ और मिले चाहे नहीं, किन्तु ये साम्प्रदायिक उलझनों को लेकर तो ज़रूर ही लौटेंगे !!

यदि गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के भारतीय सदस्यों को ज़रा भी अक़्ल होती, तो वे इस तरह हिन्दू-मुस्लिम समस्या को वहाँ न छेड़ते। उन्हें पहले औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए वचन ले लेना चाहिए था ; फिर चुनाव का प्रश्न उपस्थित किया जाता। किन्तु वे केवल काठ के पुतले बने हुए हैं।

—"अमृत बाज़ार पत्रिका" (अङ्गरेज़ी)

* * *

मि० मेकडॉनल्ड की सफ़ाई

जान पड़ता है, कि मि० चर्चिल की ब्रिटिश राजनीति सम्बन्धी साफ़ बातों से और उनके इस कथन से, कि आधुनिक भारतीय आन्दोलन को कुचल डालना चाहिए, मि० रेमज़े मेकडॉनल्ड कुछ असन्तुष्ट-से हो गए हैं। उनका कहना है कि मि० चर्चिल का व्याख्यान द्वेषपूर्ण है। यदि मि० मैकडॉनल्ड की सरकार का भण्डाफोड़ कर देना एक बुरी बात है, तब मि० चर्चिल का व्याख्यान अविवेकपूर्ण कहा जा सकता है। किन्तु क्या मि० मैकडॉनल्ड अपनी छाती पर हाथ रख कर यह कह सकते हैं, कि भारत के साथ उनकी सरकार का व्यवहार दमन-नीतिपूर्ण नहीं रहा है ? आपका ख़्याल है कि मि० चर्चिल ने अपने व्याख्यान में पुराने राज्याधिकारियों के अधीनस्थ देशों के प्रति व्यवहार का दिग्दर्शन मात्र कराया है। किन्तु लाखों भारतवासियों को उनकी देशभक्ति के पुरस्कार-स्वरूप जेलों में डाला जाना, ऑर्डिनेन्सों का पास किया जाना, लाठियों का प्रहार भीड़ों पर किया जाना, जुलूसों तथा सार्वजनिक सभाओं का ग़ैर-क़ानूनी ठहराया जाना, समाचार-पत्रों पर प्रेस-ऑर्डिनेन्स का बोझ लाद दिया जाना ; आदि का क्या अर्थ है ? क्या हम इतना देखते हुए भी समझें कि मि० चर्चिल ने केवल पुरानी बातों को उगल डाला था ? मि० मैकडॉनल्ड ने इस बात पर बड़ा ज़ोर दिया है, कि भारत में राजनैतिक विकास का एक मात्र कारण पाश्चात्य साहित्य, और अङ्गरेज़ों के राजनैतिक विचारों का प्रभाव है ! किन्तु भारत की बदली हुई दशा के अनुरूप शासन की क्या व्यवस्था उन्होंने की है ?

मि० मैकडॉनल्ड शायद गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स की ओर अँगुली उठा कर कहेंगे कि, बर्क के व्याख्यान, मेकॉले के इतिहास और मॉर्ले के राजनीति सम्बन्धी लेखों ने भारत में जो जागृति फैला दी है, उसके योग्य शासन-विधान की व्यवस्था करने के लिए ही तो उदार दल की सरकार ने गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स से भूमिका आरम्भ की है ! किन्तु मैकडॉनल्ड साहब को यह ज्ञात नहीं कि भारतीय दशा की वास्तविकता से सामना पड़ने पर मॉर्ले महाशय को भी मुँह की खानी पड़ी थी ? क्या मि० मॉर्ले उन सुधारों के विधायकों में नहीं थे, जिनके द्वारा सम्प्रदाय-प्रतिनिधित्व की व्यवस्था की गई थी ? क्या कॉमन्स-सभा में उन्होंने यह नहीं कहा था, कि हिन्दू और मुसलमान का भेद प्राकृतिक है ? उन्होंने कहा था कि "उनके जीवन में उनके इतिहास में, उनके सामाजिक व्यवहार में, तथा उनके धार्मिक विचारों में गहरा भेद है।" तब इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है, यदि उन साम्प्रदायिक भेदों के अन्वेषण से प्रभावित होकर, गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के कुछ सदस्यगण साम्प्रदायिकता की ओर अधिक झुकें, और सच्चे राष्ट्रीय प्रस्तावों को ठुकरा दें ? यदि कुछ मुसलमानों ने सयुक्त निर्वाचन का विरोध किया है, तो इसमें ग़ज़नवियों तथा उनकी तरह सोचने वालों का उतना दोष नहीं है, जितना कि उनका, जो यह सोचते हैं कि "भारत में दो विरोधी धर्मों का होना विदेशी आधिपत्य के लिए सुविधा जनक है !"

जान पड़ता है कि मि० मैकडॉनल्ड को यह डर है कि कॉङ्ग्रेस वाले तथा वे, जो गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स की असफलता चाहते हैं, कहीं मि० चर्चिल की बातों की ओट में फिर ब्रिटिश राज के विषय में ग़लतफ़हमी फैलाने की कोशिश न करने लगें ! प्रधान-मन्त्री शायद यह भूल रहे हैं, कि मि० चर्चिल के व्याख्यान को प्रभावशाली बनाने वाली केवल उसके भीतर की सच्ची बातें हैं। यदि मि० मैकडॉनल्ड यह सिद्ध करना चाहते हैं, कि मि० चर्चिल के विचार ग़लत हैं, और उन्होंने अपने व्याख्यान में इङ्गलैण्ड और भारत का केवल प्राचीन चित्र खींचा है, तो वे केवल कोरे शब्दों से, चाहे कितने ही जोशीले और कर्ण-मधुर क्यों न हों—ऐसा नहीं कर सकते ! भारत की शासन-नीति के परिवर्तन से ही दोनों देशों के सम्बन्ध में परिवर्तन हो सकता है।

—"लिबर्टी" (अङ्गरेज़ी)

* * *

निःशस्त्रीकरण आन्दोलन का उपहास

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्य" एम० ए०, पी० एच-डी०]

गत महायुद्ध के अन्त होने पर उसमें भाग लेने वाले पचास राष्ट्रों ने यह वचन दिया था, कि आज से अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को सुलझाने के लिए हम सशस्त्र युद्ध का सहारा न लेंगे। पर आज इन्हीं राष्ट्रों की क्या हालत है? प्रत्येक राष्ट्र अपनी शक्ति को औरों से अधिक बलिष्ठ बनाने का प्रयत्न कर रहा है। प्रत्येक राष्ट्र का फ़ौजी ख़र्च बढ़ता चला जा रहा है। क्या ये सब निशस्त्रीकरण के लक्षण हैं? यदि इन देशों को अपने वचनों पर कुछ भी विश्वास होता, यदि उन्हें क्षण भर के लिए भी इस बात का ख़याल होता, कि हम अपने आपसी झगड़ों का निबटारा बिना युद्ध के कर सकते हैं, तो आज यूरोप की दशा दूसरी ही होती। स्वयं इङ्गलैण्ड, जो संसार की शान्ति की रक्षा करने का दावा करता है और जहाँ आजकल मज़दूर-दल का राज्य है, इस साल अपने सैनिक बल पर १,००० लाख पौण्ड ख़र्च करने वाला है। मज़दूर-दल सदा निशस्त्रीकरण की माला जपा करता था, पर आज जब वह देश का शासक बना बैठा है, तब अपने सारे सिद्धान्तों को उसने एक बार ही भुला दिया है!!

यूरोप के राष्ट्र निशस्त्रीकरण (Disarmament) की नीति पर किस तरह अमल कर रहे हैं!

सब से बड़ी मुश्किल तो यह है, प्रत्येक राष्ट्र यह चाहता है कि सब राष्ट्र एक साथ ही निशस्त्रीकरण का कार्य आरम्भ करें। कोई भी उसमें अगुआ नहीं होना चाहता। इसीसे सारे प्रयत्न निष्फल हो रहे हैं। युद्ध के बाद निशस्त्रीकरण-परिषद की कई बैठकें हुई हैं, पर इनसे यूरोप की दशा में कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है। सब यही डरते हैं, कि यदि हमने निशस्त्रीकरण का कार्य आरम्भ कर दिया, तो दूसरे देश हमारी सत्ता तथा उपनिवेशों पर क़ब्ज़ा जमा लेवेंगे। इस आपस के अविश्वास को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि कोई एक देश आदर्श बनने को तैयार हो। वह अपने देश के फ़ौजी ख़र्च को इतना कम कर दे, कि वह यह कह सके, कि हम अपने वचन के पक्के हैं, हमने निशस्त्रीकरण को कार्यरूप दे दिया है! उसे चाहिए कि वह अपने देश में केवल उतनी ही सेना तथा जङ्गी जहाज़ें रक्खे, जितनी कि उसे आन्तरिक उपद्रवों को दबाने के लिए आवश्यक हैं। इङ्गलैण्ड के लिए यह बहुत अच्छा अवसर है। वहाँ मज़दूर-दल का शासन है, जो कि निशस्त्रीकरण का पक्षपाती है। उसे चाहिए कि वह इस समय सब राष्ट्रों का आदर्श बने। फ़ौजी ख़र्च को उद्योग-धन्धों में लगा कर देश की उन्नति करे। उसे चाहिए कि वह युद्ध-कार्यों में लगे हुए असंख्य सैनिकों को व्यापार तथा उद्योगों में स्थान दे और बम, गोला तथा बारूद बनाने वाले कारख़ानों में खाने-पीने की तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ बना कर राष्ट्र को धनाढ्य तथा सुखी बनावे। इस सब के लिए यह आवश्यक है, वह निम्नलिखित कार्यक्रम का अनुकरण करे :—

१—निशस्त्रीकरण को कार्य रूप दे।

२—फ़ौज में काम करने वाले मनुष्यों को उद्योग-धन्धों में लगावे।

३—बम, गोला इत्यादि फ़ौजी सामान बनाना और बेचना बन्द कर दे।

४—अपने अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को सुलझाने के लिए लीग ऑफ़ नेशन्स का सहारा ले।

यदि इस कार्यक्रम का अनुसरण न किया गया, तो अब दूसरे महायुद्ध में देर नहीं है। सब देश बड़ी संख्या में सेना रक्खे हुए हैं, वे मुफ़्त में पल रही हैं। फ़ौजी हथियार तथा जहाज़ों की भी संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। संसार के बलशाली देशों में आपसी प्रतिस्पर्धा तथा घृणा भी आवश्यकता से अधिक मात्रा में उपस्थित है। फिर युद्ध में क्या देर हो सकती है? संसार की शान्ति-रक्षा के लिए इङ्गलैण्ड को चाहिए कि वह इस शुभ अवसर को न खोवे व और निशस्त्रीकरण के कार्य में अगुआ बने।

* * *

कुछ अद्भुत बातें

क्या लम्बा होना अच्छा है?

बहुत से लोग ख़ूब लम्बे-चौड़े—दैत्याकार लोगों को प्रशंसा की निगाह से देखते हैं, और सम्भवतः उनको भविष्य में उत्पन्न होने वाली उन्नत मनुष्य-जाति का नमूना समझते हैं। पर यह बात बिलकुल ग़लत है। दैत्याकार होना भी उसी तरह बुरा है, बीमारी का लक्षण है, जिस प्रकार कि बौनापन। शरीर-शास्त्र के ज्ञाताओं का कहना है कि दैत्याकार मनुष्य वास्तव में एक बालक के समान है, क्योंकि उसके शरीर की वृद्धि उस समय के बाद भी होती रहती है जब कि स्वाभाविक दशा में उसको रुक जाना चाहिए था। दैत्याकार मनुष्यों के शारीरिक अङ्ग यथा प्रमाण नहीं होते, उनके हाथ-पैर सदैव बहुत बड़े होते हैं और चेहरा प्रायः बेढङ्गा होता है। जिन डॉक्टरों ने दैत्याकार मनुष्यों की परीक्षा की है उनका कहना है कि उनको प्रायः पेशाब की बीमारी होती है और यक्ष्मा होने की भी पूरी सम्भावना रहती है। उनको दूसरे रोग भी बहुत जल्दी हो सकते हैं। वे स्वाभाविक क़द के आदमियों की अपेक्षा शीघ्र थक जाते हैं, वे कोई कड़े परिश्रम का काम नहीं कर सकते, उनके पुट्ठे उनके आकार की अपेक्षा कमज़ोर होते हैं, उनके स्नायुओं में सहनशक्ति नहीं होती। दैत्याकार लोग सुन्दर भी कदाचित ही देखने में आते हैं।

विचित्र घड़ी

सिसली के प्रसिद्ध नगर मेसिना में एक विचित्र मीनार बनाई गई है। इस पर एक घड़ी लगाई है और मीनार के ऊपर काँसे का एक विचित्र सिंह खड़ा किया गया है। इस सिंह के अगले पञ्जे में झण्डा है। दोपहर दिन को इस सिंह की पूँछ खड़ी हो जाती है और झण्डा फहराने लगता है। सिंह के नीचे काँसे का ही मुर्ग़ा बैठाया गया है जो सूर्य के निकलते ही बाँग देने लगता है। दोपहर के समय और शाम को भी यह मुर्ग़ा बोला करता है।

मीनार पर जो घड़ी लगाई गई है उसके डायल मीनार के चारों ओर लगे हैं। प्रत्येक डायल का व्यास ८ फ़ुट है। इन पर चाँद की भिन्न-भिन्न कलाएँ दिखाई गई हैं और साथ ही स्थाई कैलेण्डर भी लगाया गया है। सूर्य के चारों ओर ग्रह किस प्रकार चक्कर लगाया करते हैं, यह भी दिखाया गया है। प्लूटो नामक ग्रह का अभी हाल ही में आविष्कार हुआ है और इसमें उसे भी स्थान दिया गया है। घड़ी के नीचे एक मञ्च सा बना है जिस पर आदमियों की मूर्तियाँ लगी हैं। ये यन्त्र द्वारा चलाई जाती हैं और गिर्जे के आमन्त्रण का दृश्य दिखाती हैं। उपर्युक्त मुर्ग़े के ऊपर मेहराब पर घण्टे लगे हुए हैं जिनकी आवाज़ बहुत दूर तक पहुँचती है।

सब से अधिक बुड्ढे कहाँ हैं?

बलगेरिया में सौ वर्ष से अधिक आयु के लोग ३१३१ हैं। ग्रेट ब्रिटेन की जन-संख्या बलगेरिया से अधिक है, पर वहाँ सौ वर्ष से अधिक के व्यक्ति केवल १४९, स्पेन में ३९९ और आयर्लैण्ड में ११६ हैं।

Registered No. A—2085

Hindi edition :
Annual Rs. 6/8
Six monthly
Rs. 3/8

The 'CHAND'

Urdu edition :
Annual Rs. 8/-
Six monthly
Rs. 5/-

A magazine which has raised consciousness in India

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like CHAND.

***

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

***

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

***

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

***

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

***

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

***

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

***

The Rajasthan :

The CHAND undoubtedly stands high among the existing Hindi monthlies and we heartily congratulate the conductors for their unabated zeal.

***

The Searchlight :

It can unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

***

The Indian Social Reformer :

We have often noticed in these columns the excellent work done by the Hindi Journal—the CHAND. The CHAND has justified its existence as one of the best Hindi magazines.

The Forward :

The neatness of the paper and its get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness in the Hindi-knowing world.

***

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful *journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.*

***

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out and Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

***

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer"

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social custom that are choking the young and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

Pt. Moti Lal Nehru, Ex-President, All India Congress :

I welcome the appearance of the Urdu CHAND. It supplies a real want. I hope it will fulfil the expectations *raised by the excellence of its Hindi parent.* I wish it every success.

***

Major D. R. Ranjit Singh, O. B. E., (Kaisar-i-Hind) I. M. S., (Late):

I am conscious of the great good the Hindi CHAND has already done and I am confident its Urdu edition will be able to do the same.

***

Munshi Iswar Saran Saheb, Member Legislative Assembly :

(By Air Mail from London)

I wish this magazine every success. The work of social reform is blessed and thrice blessed are those, who honestly do it. I hope this magazine will advocate the right policy in social matters and if it does, it will have to fight the obscurantists on the one hand and the blind imitators of the west on the other. I trust it will strive for the realisation of the fact that a girl has as much right to education and freedom as has her brother. I sincerely wish it to work for the preservation of the true type of Indian woman-hood. I wish it a long career of usefulness.

***

Prof. M. H. Syed, M. A., Lecturer in Urdu, Allahabad University :

I am glad to learn that an Urdu edition of the CHAND is being issued. I wish this new venture every success. I understand that this monthly is devoted to the cause of social reform in India. In our present state of society there is no cause as laudable as this and I do hope that the CHAND in its Urdu garb will bring light to a large number of people who are still steeped in ignorance and are averse to new ways of life.

***

Dr. Sir Tej Bahadur Sapru, M. A., LL. D., Ex-Law Member of the Government of India :

I wish it every success.

***

Mr. M. M. Verma, M. A., Director of Education, Bikaner State writes :

. . . . I need hardly say that I have been following the career of your Journal with keen interest, and I have extremely refreshing outlook of the work which it is sure to accomplish in the most important of phases of Social Reform in India . . . .

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road Chandralok—Allahabad.

सम्पादक :—

वार्षिक चन्दा ...	... ६) रु०
छः माही चन्दा	... ५) रु०
तिमाही चन्दा ...	... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य	... ≡)

Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुकताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए।

इलाहाबाद—बृहस्पतिवार

यूरोपियन रमणी का भारतीय स्वतन्त्रता के लिए त्याग

बङ्गाल के सुप्रसिद्ध नेता श्री० सेन गुप्ता की धर्मपत्नी

श्रीमती नेली सेन गुप्ता

(आपका सविस्तर परिचय अन्दर देखिए)

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says :

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjea of the Allahabad High Court :

. . . The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consumate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITTRAWALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice Allahabad High Court :

. . . I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail :

. . . The Album ADARSH CHITTRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letter-press in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture.

W. E. J. Dobbs. Esq., I. C. S., District Magistrate and Collector. Allahabad :

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad Agricultural Institute :

. . . I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie. Esq., Director of Public Instruction, U. P. :

. . . I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
डाक-व्यय अतिरिक्त

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—१ जनवरी, १६३१ | संख्या २, पूर्ण संख्या १४

दमन एवं स्वेच्छाचारिता का तांडव

क्या कर-बन्दी आन्दोलन भयङ्कर रूप धारण कर रहा है ?

'भविष्य' की ओर से सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट को नोटिस !

जेल में कई नेताओं की दशा चिन्ताजनक !

(३१ दिसम्बर की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—कहा जाता है कि इलाहाबाद ज़िले के सोराँव तहसील में जो करबन्दी का आन्दोलन चल रहा है, उसके सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्रीयुत मेवालाल जी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—लगान न देने के कारण सूरत ज़िले के कई गाँवों में जो खेत ज़ब्त कर लिए गए हैं, उनमें लगी हुई फ़सल की रक्षा के लिए अतिरिक्त-पुलिस नियुक्त की गई है। सरकार को गुजरात में इतने अधिक खेतों की रक्षा करनी पड़ रही है, कि सरकारी रखवालों की कमी पड़ गई है। इसलिए सरकार अछूत जातियों के लोगों को इस काम के लिए नियुक्त कर रही है। तलाटियों को पहरेदार नियुक्त करने का अधिकार दिया गया है। टिम्बरवारा में इसी तरह के रखवाले फ़सल की रखवाली कर रहे हैं।

—कलकत्ते से ख़बर आई है कि २री अक्टूबर को दमदम जेल के राजनैतिक क़ैदियों ने महात्मा गाँधी का जन्म-दिवस मनाया था। इस सम्बन्ध में उन्होंने चरख़ा-प्रदर्शन भी किया था, जिसमें १ लाख गज़ सूत काता गया। यह सूत बाँकुरा में काता गया और इससे बनाया हुआ कपड़ा महात्मा जी के पास यरवदा जेल में भेजा गया। इस उपहार के उत्तर में महात्मा जी ने यह लिखा है—"आपके भेजे हुए खद्दर के थान मिले, इनको मैं बहुत ख़ुशी के साथ काम में लाऊँगा। मेरी ओर से मेरे सब सहयोगियों को धन्यवाद दीजिए। इन कपड़ों के मोटे होने के सम्बन्ध में आपको माफ़ी माँगने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। हृदय की सरलता तथा कोमलता में ही कार्य का सौन्दर्य है। फिर मैं तो हरदम मोटे खद्दर ही को काम में लाता हूँ और मैं समझता हूँ कि चिकने और महीन कपड़े पहिनने में मुझे कुछ उलझन-सी मालूम होगी।"

—गत रविवार, ता० २८ दिसम्बर को स्थानीय जवाहर पार्क में श्रीमती उमा नेहरू ने राष्ट्रीय झण्डा फहराया और झण्डे के सम्बन्ध में जनता की ज़िम्मेदारी पर एक व्याख्यान भी दिया गया।

—पञ्जाब गवर्नर की हत्या करने की असफल चेष्टा में जो लोग गिरफ़्तार हुए थे, उनमें श्री० वीरेन्द्र और अहसान इलाही को १५ दिन तक हिरासत में रखने की अवधि बढ़ा दी गई है। श्री० वीरेन्द्र को 'जूडिशल लॉक अप' में रक्खा गया है।

श्री० अमरसिंह, जो 'क्रिमिनल एमेण्डमेण्ट' की रू से देहली में व्याख्यानादि देने के कारण गिरफ़्तार हुए थे, ८ रोज़ तक हिरासत में रखने के बाद छोड़ दिए गए हैं।

—'भविष्य' का ख़ास तार है, कि आज बम्बई में 'स्वतन्त्रता-दिवस' के उपलक्ष में जो बृहत् सभा हुई थी, उसका कार्य-क्रम हज़ारों की संख्या में अनेक भिन्न-भिन्न भाषाओं में मोटर द्वारा बाँटा गया था। बाँटने वाले लोग मोटर-द्वारा कहीं बाहर से आए थे। ये सारे ही पर्चे ज़ब्त कर लिए गए हैं। पुलिस के बहुत पीछा करने पर कहा जाता है, कि अब तक इस सम्बन्ध में बोरी-बन्दर पर ८ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। इन पर क्रिमिनल एमेण्डमेण्ट की दफ़ा १७ वीं के अनुसार अभियोग चलाया जायगा।

—बम्बई के विदेशी वस्त्र के व्यापारी श्रीयुत नवीनदास फूलचन्द ने ३१ दिसम्बर को विदेशी वस्त्र हटाने की कोशिश की। चार लॉरियों में विदेशी वस्त्र भरे गए थे, कि इसकी ख़बर लगते ही २ बजे रात में भी सत्याग्रही घटनास्थल पर जा पहुँचे और उन्होंने लॉरियों को रोकने का प्रयत्न किया। परन्तु मसजिद-बन्दर के स्टेशन मास्टर की सहायता से उस व्यापारी ने एक लॉरी स्टेशन के अन्दर कर ली। जब से यह घटना घटी है, ४ स्वयंसेवक इस व्यापारी के मकान पर मायडवी में धरना दे रहे हैं और अनशन कर रहे हैं।

—'भविष्य' के सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक श्री० सहगल जी के वकील ने २७ दिसम्बर को स्थानीय कलक्टर की मार्फ़त सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट को इस मज़मून का नोटिस दिया है, कि 'भविष्य' के प्रथमाङ्क की लगभग २२,००० प्रतियाँ, जो बिना किसी कारण के जनरल पोस्ट ऑफ़िस में रोक ली गई थीं, उससे सहगल जी को अपार हानि हुई है, फिर भी वे नाम-मात्र का हर्जाना लेकर सन्तुष्ट हो सकते हैं, अतएव या तो आज से २ मास के भीतर आप १,००१) रु० हर्जाना-स्वरूप देने की कृपा करें, नहीं तो भविष्य में बिना दूसरा नोटिस दिए आप पर हर्जाने की नालिश दायर कर दी जायगी।

—आगामी रविवार ४थी जनवरी को स्थानीय मनमोहन पार्क (कटरा) में प्रातःकाल ८ बजे राष्ट्रीय झण्डा फहराया जायगा।

—श्री० सेन गुप्ता की रक्त-परीक्षा देहली के सिविल अस्पताल में हुई थी। मेजर एश्विनल ने स्वयं आपकी परीक्षा की थी। कहा जाता है आपका रक्त-प्रवाह १६४ डिग्री है, जो चिन्ताजनक बतलाया जाता है! मेजर एश्विनल का कहना है, कि इस बीमारी का कारण उनके दाँतों की शिकायत है। एक्स-रे द्वारा उनके दाँतों के कई चित्र भी लिए गए हैं।

—'भविष्य' का ख़ास तार है कि 'मोतिहारी षड्यन्त्र केस' की पेशी, जिसमें श्री० रामविनोदसिंह तथा श्री० जोगेन शुक्ल आदि सम्मिलित हैं, ५वीं जनवरी को जेल में ही होगी। कहा जाता है कि इस मामले के सम्बन्ध में लाहौर-षड्यन्त्र केस की वह सारी मिसलें तलब की गई हैं, जिनसे सरदार भगत-सिंह आदि का सम्बन्ध था!

—बम्बई में अभी बराबर पिकेटिङ्ग जारी है। ३० दिसम्बर को जो ३ महिलाएँ तथा १ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किया गया था, ३१ दिसम्बर को उनका मुक़दमा हुआ। दो स्त्रियों को ४ महीने की सादी सज़ा और एक लड़की को ३ मास की सादी सज़ा दी गई है। स्वयंसेवक को ६ महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। एक और स्वयंसेवक को एक दिन की सज़ा हुई है। यह २६ दिसम्बर को कॉङ्ग्रेस बुलेटीन बेचने के अपराध में गिरफ़्तार किया गया था।

—कलकत्ते का २६ वीं दिसम्बर का समाचार है कि २८ वीं तारीख़ की रात्रि को पण्डित मोतीलाल जी को फिर १०० डिग्री बुख़ार चढ़ आया।

—ख़बर है कि बरार में पूँजिपतियों के विरुद्ध एक खुली बग़ावत खड़ी हो गई है। मुसलमान, अछूत और मराठा क़ौम के कुछ लोगों ने एक गरोह बना कर दिन दहाड़े खड़ी फ़सलों को लूट लिया। मज़दूर और नौकर लोग इस गिरोह में शामिल हो रहे हैं। पुलिस लाचार है।

—ख़बर है कि गुजरानवाला ज़िले के जाम नामक एक गाँव में एक स्त्री ने अपनी ग़रीबी के कारण और सरकारी यमदूतों के लगान के सम्बन्ध में तङ्ग करने के कारण अपने बच्चों को गिरवी रख दिया। कहा जाता है कि बहुत तङ्ग आकर उसने अपनी लड़की को केवल ६) में बेच डाला है। पूर्वी बङ्गाल से भी ऐसी ही ख़बरें सुनने में आती हैं।

—कानपुर का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि झण्डा-सत्याग्रह के सम्बन्ध में वहाँ, श्री० विश्वनाथ और श्री० रामगुलाम नाम के दो स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—करवार का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सत्याग्रह-डिक्टेटर श्रीयुत बी० बी० गोकरण, तथा अन्य दो स्वयंसेवकों को, जिन्हें ज़िला पुलिस-एक्ट की १६वीं धारा के अनुसार शहर छोड़ देने की आज्ञा दी गई थी, आज्ञा-भङ्ग के अपराध में १२-१२ दिन की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—धारवार का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि, मनागल के एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता श्री० अनन्त भट्ट को ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—फ़रीदपुर के मैजिस्ट्रेट ने गत २२वीं दिसम्बर को, नौका के अभियुक्त श्रीयुत शारदाप्रसाद हलदार वकील, श्रीयुत अमरनाथ विश्वास, तथा चौदह अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं के मामले का फ़ैसला सुना दिया।

उक्त दोनों महानुभावों के प्रति अभियोग यह था, कि उनके नेतृत्व में कुछ लोगों ने पुलिस तथा आबकारी-अफ़सरों के दल पर हमला किया था, जिससे लाचार होकर पुलिस को गोली चलानी पड़ी थी। मैजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में कहा है कि "यह हो नहीं सकता कि पुलिस, बिना किसी कारण के गोली चलावे"

श्रीयुत शारदाप्रसाद हलदार, श्रीयुत अमरनाथ विश्वास आदि ७ अभियुक्तों को भारतीय दण्ड-विधान की १४७वीं धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० शारदाप्रसाद हलदार तथा श्री० अमरनाथ विश्वास को, ११७वीं धारा के अनुसार ६ मास की अतिरिक्त कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। ३ व्यक्ति छोड़ दिए गए।

—बारीसाल का गत २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत दिनेश सेन गुप्त बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—ख़बर है कि धारवार के हुनागुण्ड नामक स्थान में दमन-चक्र ज़ोरों से चल रहा है। दो स्वयंसेवकों को, जो हाल ही में वहाँ गए थे, कहा जाता है, पुलिस ने बुरी तरह से पीटा तथा गालियाँ दीं, और फिर गिरफ़्तार कर लिया। इन्हें ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कराची का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि भद्र अवज्ञा-आन्दोलन के सम्बन्ध में वहाँ अनेक गिरफ़्तारियाँ की गई हैं। १२वीं दिसम्बर को जो १३ स्वयंसेवक, शिकारपुरी क्लॉथ मार्केट, तथा रेलवे बुकिङ्ग ऑफ़िस के फाटक पर, विदेशी वस्त्र की गाँठों पर धरना देने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, उन्हें १४३वीं धारा के अनुसार ४-४ माह की कड़ी क़ैद तथा १ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

४ अन्य स्वयंसेवक भी, जिनमें एक मुसलमान है, नमक-क़ानून के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—नोआखाली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व डिक्टेटर श्री० हारानचन्द्र घोष चौधरी को ज़िला मैजिस्ट्रेट ने १८ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। 'कॉङ्ग्रेस सङ्कल्प' नामक एक पर्चा बाँटने के सम्बन्ध में आप पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया था।

—धारवार २५ दिसम्बर—रानेबेन्नूर ताल्लुक़े की कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्रीयुत पाण्डुरङ्ग को ४ माह की सख़्त क़ैद तथा १५०) रु० जुर्माने अथवा २ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० हनुमसागर को भी १००) रु० जुर्माने अथवा ३ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—नागपुर का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि मध्य प्रान्तीय मराठी युद्ध-समिति के सेक्रेटरी श्रीयुत के० अमानिदार तथा उसके सदस्य श्री० यादवराव देशमुख बी० ए० युद्ध-समिति के दफ़्तर में, १०८ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए।

—सागर का २३वीं दिसम्बर का एक समाचार है कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के पाँचवें डिक्टेटर श्रीयुत भावे को १०७ वीं धारा के अनुसार १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। उन्होंने अदालत की कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार किया। उनके स्थान पर श्री० प्रभाशङ्कर वैद्य निर्वाचित किए गए हैं।

बम्बई की कॉङ्ग्रेस कमिटी पर पुलिस का धावा

दग़ाबाज़ी का सन्देह

बम्बई का २४वीं दिसम्बर का समाचार है, कि पुलिस ने सुबह एक ही समय में, शहर के भिन्न-भिन्न भागों में कॉङ्ग्रेस से सम्बन्ध रखने वाले स्थानों की तलाशियाँ लीं। वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के श्री० मूलराज कुर्सनदास, श्री० दीक्षित मेनन, श्री० मेहर अली जौहरी तथा श्री० दोस्त मुहम्मद गिरफ़्तार किए गए। स्वयंसेवक दल के नायक श्रीयुत ऐयर तथा २० स्वयंसेवक भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

यह धर-पकड़ २ बजे दिन तक जारी रही और इस बीच में क़रीब १० मुख्य कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए। पुलिस को कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं के वासस्थान से, कुछ ऐसे काग़ज़-पत्र मिले हैं जिनके बल पर वह १७ (१) और १७ (२) धारा का अभियोग खड़ा कर सकती है। पुलिस के इस आकस्मिक धावा से, कुछ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं को यह विश्वास हो गया है, कि उनके कुछ असन्तुष्ट सहयोगियों ने ही कॉङ्ग्रेस की कुछ गुप्त कार्यवाहियों का भण्डाफोड़ पुलिस में किया है।

इसी सन्देह पर स्वयंसेवक-दल के एक भूतपूर्व कप्तान को लोगों ने पीटा भी है।

जाँच करने पर पता चला है कि गिरफ़्तारियाँ अभी पूरी नहीं हुई हैं। कुछ और लोग गिरफ़्तार किए जायँगे। पीछे का एक समाचार है कि इस सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए २४ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता तथा कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ता, ८ जनवरी तक जेल में बन्द रक्खे जायँगे। उसके बाद उनके मामले की सुनवाई होगी।

—अमृतसर का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के हकीम अब्दुल नामक एक अन्धे कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता तथा एक और दूसरे कार्यकर्त्ता सिराजुद्दीन से मैजिस्ट्रेट ने राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध में १०००) रु० की ज़मानत माँगी थी। आप लोगों के ज़मानत देने से इन्कार करने पर ८-८ मास की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि 'लोकमान्य' के सम्पादक श्री० रमाशङ्कर त्रिपाठी १२४-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए थे। आप २५०) की ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं। आप ६ जनवरी को प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होंगे।

—अलीबाग़ का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि पुलिस की आज्ञा न मानने के अपराध में वहाँ के कार्यकर्त्ता श्री० विष्णुगणेश चौबे को १ मास का दण्ड दिया गया है।

—कानपुर का समाचार है कि गत २२वीं दिसम्बर को वहाँ झण्डा-सत्याग्रह के सम्बन्ध में श्री० गणेशदत्त, श्री० सीताराम, श्री० गयाप्रसाद और श्री० जयनारायण गुप्त, गिरफ़्तार किए गए।

—दिल्ली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीमती सावित्री देवी को सिटी मैजिस्ट्रेट ने, उनके ८ दिसम्बर के भाषण के अपराध में ६ मास की क़ैद की सज़ा दी है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

महिलाओं की गिरफ़्तारी

बम्बई का एक समाचार है कि वहाँ नागदेवी स्ट्रीट पर धरना देते समय श्रीमती चन्द्राबाई बालकृष्ण और श्रीमती चम्पाबाई पुरुषोत्तम गिरफ़्तार कर ली गईं। ये अभी हिरासत में रक्खी गई हैं।

बम्बई युद्ध-समिति के सदस्यों को जेल

बम्बई का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि युद्ध-समिति की अध्यक्षा श्रीमती स्नेहलता हज़रत, और ४ अन्य सदस्य, जो २८ दिसम्बर को झण्डे की सलामी के सम्बन्ध में आज़ाद मैदान में गिरफ़्तार किए गए थे, उन्हें वहाँ के चौथे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने सज़ाएँ दे दीं।

श्रीमती स्नेहलता तथा एक अन्य महिला सदस्य को ६-६ महीने की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। तीन अन्य सदस्यों को ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

९ वर्ष के लड़के की गिरफ़्तारी

वरधा का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्री० जमनालाल बजाज के भतीजे, तथा अन्य दो बालकों को मर्दुमशुमारी के नम्बर बिगाड़ने के अपराध में गिरफ़्तार किया गया है। उनमें से एक की अवस्था ९ वर्ष की है, शेष की अवस्था क्रमशः १६ और १२ वर्ष की है।

भागलपुर में गिरफ़्तारी

भागलपुर का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष मौलवी नज़ीर अहमद तथा शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्रीयुत कैलाश बिहारीलाल १७-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। इस सम्बन्ध में शहर में पूर्ण हड़ताल भी मनाई गई।

—पालघाट का एक समाचार है कि वहाँ के स्टेशनरी मैजिस्ट्रेट ने ३ सत्याग्रहियों को ४-४ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

—कलकत्ते का २७वीं दिसम्बर का समाचार है, बड़े बाज़ार में, राष्ट्रीय गीत गाने के अभियोग में चार गुजराती महिलाओं को ५०)-५०) जुर्माने या एक माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई। देवियों ने जेल ही जाना स्वीकार किया।

—कोयम्बटूर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ ३ स्वयंसेवक झण्डे की सलामी के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बम्बई का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सहकारी सम्पादक जो हाल ही में जेल से छूटे हैं, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए। आप थाने में अपने एक गिरफ़्तार मित्र को देखने गए थे, वहीं गिरफ़्तार कर लिए गए।

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम पर देखिए)

हिन्सात्मक क्रान्ति की लहर

सिम्पसन हत्याकाण्ड की गवाही

कलकत्ते का २३ दिसम्बर का समाचार है कि इन्स्पेक्टर जनरल सिम्पसन की हत्या के विषय में गवाही देते हुए मि० नेलसन ने कहा है कि घटना के दिन साढ़े बारह बजे के क़रीब, उन्हें गोली की आवाज़ सुनाई दी, बाद में ही उन्होंने देखा कि एक बङ्गाली युवक यूरोपियन पोशाक में, हाथ में रिवॉल्वर लिए आ रहा है। उसे देख कर वे अपने कमरे में चले आए, किन्तु उस युवक ने उन पर गोली चलाई, जो उनकी जाँघ में लगी। वह युवक उनके कमरे में चला आया और वे उससे हाथा-पाई करने लगे। इसी समय उस युवक ने अपने साथियों को पुकारा, जिन्होंने आकर उनके सिर में पिस्तौल के दस्ते से मारा। डॉक्टरी जाँच से पता चला है कि कर्नल सिम्पसन के नौ घाव लगे थे। किन्तु उनकी मृत्यु गले वाले घाव से हुई है।

पुलिस ने अपने बयान में कहा है कि श्री० दिनेशचन्द्र गुप्त को फिर चीरा लगा, जिससे उनकी दूसरी गोली भी निकल आई।

दिल्ली स्टेशन पर बम

दिल्ली का २६ वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सेण्ट्रल रेलवे स्टेशन में दोपहर के समय बम का एक धड़ाका हुआ, जिससे तीन व्यक्तियों को सख़्त चोटें आई थीं। कहा जाता है, कि दूसरे दर्जे के वेटिङ्ग रूम में एक स्वेटर और बिछौने की एक गठरी को लावारिस माल की तरह पड़ा देख कर, वहाँ के नौकर ने उन्हें हटाना चाहा; वह ज्योंही उन वस्तुओं को उठा कर लिफ़्ट द्वारा नीचे आ रहा था, उसमें से एक सिगरेट केस तथा बम नीचे गिर पड़ा और एक भयानक धड़ाका हुआ। लिफ़्ट चलाने वाले की दोनों बाहें उड़ गईं। वहाँ पर दो और नौकर थे, उन्हें भी सख़्त चोट आई है। वेटिङ्ग रूम के २ सज्जन सन्देह पर गिरफ़्तार कर लिए गए थे जो बाद में छोड़ दिए गए। बाद का समाचार है कि उस लिफ़्टमैन की, जिसके दोनों हाथ बम द्वारा उड़ गए थे, हस्पताल में मृत्यु हो गई!

रङ्गून में १ रिवॉल्वर और २४ गोलियाँ बरामद हुई हैं!

रङ्गून का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि शेर मुहम्मद और मानिकराम नाम के दो व्यक्ति वहाँ गिरफ़्तार किए गए हैं। दोनों व्यक्ति सेक्रेट्रियट के कम्पाउण्ड में घूम रहे थे। पुलिस ने शक पर उन्हें गिरफ़्तार किया। तलाशी लेने पर शेर मुहम्मद के पास १ रिवॉल्वर और २४ गोलियाँ मिलीं।

सक्कर में बम-दुर्घटना

हैदराबाद (सिन्ध) का २०वीं दिसम्बर का एक समाचार है कि सक्कर में, बम का धड़ाका होने से, पास ही खड़े दो व्यक्ति घायल हो गए।

पञ्जाब गवर्नर पर गोली चलाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तारी

लाहौर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि दैनिक 'मिलाप' के व्यवस्थापक श्री० ख़ुशहालचन्द ख़ुरसन्द के पुत्र श्री० रणवीर सिंह वीर, गवर्नर पर आक्रमण करने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। वह क़िले में रक्खे गए हैं, जहाँ कि अन्य दो सज्जन, हरिकिशन और गिरधारीलाल भी रक्खे गए थे।

बङ्गाली युवकों पर इन्स्पेक्टर की हत्या का अभियोग

कलकत्ता का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि, एक असाधारण गज़ट द्वारा, श्रीयुत रामकृष्ण विश्वास और कालिदेव चक्रवर्ती के मामले को जाँच के लिए एक 'स्पेशल ट्रिब्यूनल' के नियुक्त किए जाने की घोषणा की गई है।

दोनों अभियुक्त चाँदपुर रेलवे स्टेशन पर इन्स्पेक्टर तारणी मुकर्जी की हत्या करने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए हैं। कहा जाता है, अभियुक्तों के पास तीन भरे हुए रिवॉल्वर, एक बम और कुछ गोलियाँ पाई गई थीं।

गाँव में बम फटा

पेशावर का २८वीं दिसम्बर का एक समाचार है कि रउज़र नामक एक गाँव में बम फटने से एक व्यक्ति सख़्त घायल हुआ है।

अहमदाबाद में बम

'पायोनियर' के सम्वाददाता का कहना है कि गत शनिवार की रात को अहमदाबाद में जो बम का धड़ाका हुआ था, उसके विषय में जाँच करने पर पुलिस को पता लगा है कि वहाँ के पुलिस के डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट, तथा कुछ अन्य अफ़सरों को मारने के लिए एक षड्यन्त्र रचा गया था। कहा जाता है कि कॉङ्ग्रेस के ४ स्वयंसेवकों ने जिनमें एक दर्ज़ी भी था, बम बनाने का षड्यन्त्र रचा था। कहा जाता है कि बम बनाने के सामान भी उस दर्ज़ी के घर में इकट्ठे किए गए, किन्तु उस दर्ज़ी की स्त्री के विरोध करने पर, बम बनाने का काम रुका रहा। गत बृहस्पतिवार को उस स्त्री के अन्यत्र चले जाने पर ३ व्यक्ति उस दर्ज़ी के मकान में शनिवार की रात्रि को बम बनाने का प्रयत्न करने लगे। इसी समय धड़ाका हुआ, जिससे वह दर्ज़ी तथा अन्य दो मनुष्य घायल हुए हैं। पुलिस अभी जाँच कर रही है।

ख़बर है कि गुजरात प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी का केशवलाल बाथलाल नामक एक मोटर-ड्राइवर भी उक्त बम के धड़ाके के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है कि उसके मकान की तलाशी लेने पर पुलिस को सन्देहजनक कुछ काग़ज़-पत्र मिले, जिन्हें वह उठा ले गई है।

स्कूल के अहाते में बम

सियालकोट का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सरकारी स्कूल के अहाते में, टिफ़िन के समय, अली मुहम्मद नामक एक विद्यार्थी को एक बन्द टीन मिला। उसने उसे लात से ठुकरा दिया, जिससे बड़ा भयङ्कर धड़ाका हुआ। उस लड़के को सख़्त चोट आई है। कहा जाता है कि स्कूल की लाइब्रेरी के पास भी एक ऐसा ही टीन मिला, जिसमें बारूद था। पुलिस बड़े ज़ोरों से जाँच कर रही है।

क्रान्तिकारियों की धमकी

कानपुर का एक समाचार है कि गाँधी रोड पर विलायती शराब के दुकानदार जमशेद जी के यहाँ क्रान्तिकारी-दल का एक पर्चा चिपका मिला, जिसमें लिखा था "तुम्हारे कारण १६ बहिनें जेल भोग चुकी हैं, लेकिन तुम अभी तक नहीं चेते, इसलिए तुम्हारा परिवार ख़तरे में है।"

बनारस थाने के पास बम

सहयोगी 'लोकमान्य' को उसके एक विशेष सम्वाददाता से मालूम हुआ है, कि गत २८वीं दिसम्बर को बनारस-चौक के थाने के पास एक बम पड़ा मिला। बम के ऊपर लाल कपड़ा लपेटा था। लाल कपड़े सहित बम लोहे के बारीक तारों से कसा हुआ था। कुछ कॉन्स्टेबिलों ने उसे गेंद समझ कर डण्डे से ठुकराया, जिससे धड़ाका हुआ, किन्तु किसी को चोट नहीं आई।

माण्डला-मेल का षड्यन्त्र

गत अक्टूबर महीने में मायडला-मेल को उलटने की चेष्टा करने के अभियोग में श्रीयुत डी० एम० दास गुप्त को मुचलका देने की आज्ञा हुई थी। मुचलका न देने के कारण, आपको २१ दिसम्बर को १ साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

पञ्जाब गवर्नर पर गोली चलाने के अभियोग में ११ गिरफ़्तारियाँ

लाहौर का ३०वीं दिसम्बर का समाचार है कि पञ्जाब गवर्नर पर गोली चलाने के सम्बन्ध में अब तक ११ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

श्री० हरकिशन और गिरधारीलाल तो घटनास्थल पर ही गिरफ़्तार किए गए थे। रणवीरसिंह २४ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए। चमनलाल की गिरफ़्तारी मर्दन में हुई। बाद को ये ७ मनुष्य गिरफ़्तार किए गए—श्री० वीरेन्द्र, अहसान इलाही, दुर्गादास, दलीपाराम, मुहम्मद तुफ़ैल, प्रेमदत्त, जयदयाल।

दिल्ली में २९ महिलाएँ गिरफ़्तार

जुर्माना देने की अपेक्षा जेल जाना स्वीकार

दिल्ली का २०वीं दिसम्बर का समाचार है कि शराब के व्यापारी भोलाराम की दूकान पर धरना देने के अभियोग में गिरफ़्तार की गईं। महिलाओं के मामले का फ़ैसला वहाँ के एडिशनल ज़िला मैजिस्ट्रेट ने कर दिया। सभी अभियुक्तों ने मामले में भाग लेने से इन्कार किया। केवल श्रीमती विशननारायण और श्रीमती रूपरानी ने अपने ऊपर लगाए गए, अभियोग को स्वीकार किया।

सब-इन्स्पेक्टर ने अपनी गवाही में कहा कि उक्त महिलाओं ने भोलाराम और उसके लड़के की नक़ली अरथी निकाली थी, और सियापा मचाया था। पुलिस ने उन लोगों से जुलूस भङ्ग करने के लिए कहा, किन्तु उन लोगों ने पुलिस की आज्ञा नहीं मानी।

अभियुक्तों में कुछ कम उम्र की लड़कियाँ थीं। मदन नाम का १० वर्ष का एक बालक भी था। मैजिस्ट्रेट ने १० लड़कियों को तथा मदन को चेतावनी देकर छोड़ दिया।

शेष को भिन्न-भिन्न अवधि की सज़ाएँ दी गईं।

—कलकत्ते का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि बड़ा बाज़ार में विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर धरना देने के सम्बन्ध में ११ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। २० महिलाओं ने पिकेटिङ्ग का काम जारी रक्खा है।

—कलकत्ते का ३०वीं दिसम्बर का समाचार है कि तीन गुजराती महिलाएँ और एक १० वर्ष की बालिका गिरफ़्तार कर ली गई है। कहा जाता है कि उनकी गिरफ़्तारी प्रभात फेरी के सम्बन्ध में हुई है।

उक्त तीनों महिलाओं को १-१ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। बालिका को चेतावनी देकर छोड़ दिया गया।

* * *

१४४वीं धारा जारी की गई

लुधियाना का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के म्युनिसिपल-कमिश्नर तथा वकील पं० मुनिलाल कालिया, कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर लाला कृपाराम चार्य, कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व सभापति लाला कुरुदास राम, तथा भूतपूर्व सेक्रेटरी स्वामी रामलाल पर १४४ वीं धारा के अनुसार आज्ञा-पत्र निकाला गया है, जिसके अनुसार उन्हें सभाएँ करने, और जुलूस निकालने की मनाही की गई है।

'ए' श्रेणी के क़ैदी तीसरे दर्जे की गाड़ी में !

अमृतसर का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि डॉक्टर मुन्नीलाल भाटिया, जिन्हें दो मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है, और जो 'ए' श्रेणी में रक्खे गए हैं, लाहौर से ३रे दर्जे के खाने में गुजरात जेल ले जाए गए।

१०० ताड़ के वृक्ष काट डाले गए

बेलगाँव का एक समाचार है कि किटूर में गत सप्ताह में लगभग १०० ताड़ के वृक्ष काट डाले गए हैं। ताड़ी के ठेकेदार ने पुलिस में इस बात की शिकायत की, कि काटने वालों ने उसके नौकर को, जो वहाँ पहरा देने के लिए रक्खा गया था, पीटा है और उससे एक दुनली बन्दूक़ छीन ली है। पुलिस ने गाँव में आकर जाँच की तथा तलाशियाँ लीं। अभी तक कोई गिरफ़्तार नहीं हुआ है।

धारवाड़ में गेनू तथा झण्डा-दिवस

धारवाड़ का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि बाबू "गेनू दिवस" के उपलक्ष में वहाँ की महिलाओं ने एक जुलूस निकाला। २२ वीं दिसम्बर को वहाँ के नागरिकों ने भी एक झण्डा-जुलूस निकाला। जुलूस ख़तम होने के बाद झण्डा ४० फ़ीट के एक पोल पर फहराया गया। वहाँ के कुछ नेताओं पर दो महीने तक धारवाड़ में भाषण न देने का आज्ञा-पत्र सरकार ने निकाला है।

करबन्दी का प्रस्ताव

दोहाद का २० दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के ३०० खातेदारों ने हलाल तालुक़े के 'बाज' नामक स्थान पर इकट्ठा होकर उन पुलिस पटेलों को बधाइयाँ दी हैं, जिन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया है। उन्होंने उन पुलिस-पटेलों के बहिष्कार का भी प्रस्ताव पास किया है, जो अभी तक नौकरी कर रहे हैं।

एक यह प्रस्ताव भी उन लोगों ने पास किया है कि जब तक महात्मा जी तथा श्री० सरदार पटेल, बिना किसी शर्त के छोड़ न दिए जायँ, तब तक भूमि-कर न दिया जाय।

उनका तीसरा प्रस्ताव यह है कि, सभी सरकारी नौकरियों का सामाजिक बहिष्कार किया जाय।

—धारवाड़ का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सिरसी तालुक़ा की कॉङ्ग्रेस-कमिटी तथा उसकी शाखाओं के प्रति जो विज्ञप्ति निकाली गई थी, उसके अनुसार पुलिस ने सिरसी तालुक़ा कॉङ्ग्रेस-कमिटी के भवन को अपने क़ब्ज़े में कर लिया है। वहाँ की चल-सम्पत्ति भी ज़ब्त कर ली गई है। अभी तक कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

वर्मा में भीषण उपद्रव

रङ्गून का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि, गत २२ दिसम्बर की रात को थारावाड़ी के पास के गाँवों में जो दङ्गा हो गया था, उसका सूत्रपात, थारावाड़ी-इनसीन ज़िले की सीमा पर स्थित, पेगू-योमास गाँवों के पास से हुआ था।

गत २२ दिसम्बर की रात को दङ्गाइयों ने दो या तीन गाँवों पर धावा किया, उन गाँवों के दो मुखियों को मार डाला, और एक फ़ारेस्ट-रेञ्जर को घायल किया। २३ दिसम्बर को सवेरे सब-डिविज़नल अफ़सर के अधीन एक पुलिस का दल भेजा गया। दङ्गाइयों ने पुलिस पर गोलियाँ चलाईं, जिससे पुलिस के ५ जवान घायल हुए।

पुलिस ने भी फ़ायरें कीं, जिससे उनका कहना है कि अनेक दङ्गाई मरे और घायल हुए। किन्तु गोलियाँ समाप्त हो जाने के कारण पुलिस लौट आई। इसी सम्बन्ध का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि दङ्गाई अभी तक जङ्गलों में छिपे हुए हैं। दङ्गाइयों के एक दल २४ दिसम्बर की रात को पेगू योमास के समीप 'वेवा बङ्गले' पर धावा किया, उसे जला डाला और जङ्गल विभाग के इञ्जीनियर को, जो वहाँ रात भर के लिए ठहरे थे, मार डाला। कहा जाता है कि पुलिस का एक दल उसी समय वहाँ पहुँच गया और उसने दङ्गाइयों का मुक़ाबला किया। चार दङ्गाई मारे गए, और दो पकड़ लिए गए। दो बन्दूक़ें भी छीन ली गईं। पुलिस के कप्तान को थोड़ी चोट आई।

यदाईक के समीप एक पुलिस-पोस्ट पर भी दङ्गाइयों ने धावा किया, जिससे पुलिस को थारावाड़ी आकर शरण लेनी पड़ी। ख़बर है कि सब-डिविज़नल पुलिस अफ़सर तथा एक दूसरे अफ़सर का पता नहीं है।

पुलिस और मिलिटरी दङ्गाइयों का पीछा कर रही हैं। कहा जाता है, कुछ दङ्गाई पकड़े भी गए हैं।

बाद का समाचार है कि उदकविन नामक स्थान पर कुछ दङ्गाइयों ने पञ्जाबी मिलिटरी पर आक्रमण किया। ४० विद्रोही मारे गए और ५० के लगभग घायल हुए। गत २६वीं दिसम्बर को सैनिक अफ़सरों ने रात में दङ्गाइयों पर छापा मारना चाहा था, किन्तु दङ्गाइयों को यह बात मालूम हो गई और उन्होंने सेना पर धावा कर दिया। किन्तु वे हटा दिए गए।

अब सैनिक अफ़सर उन्हें घेर कर हथियार रख देने के लिए विवश करना चाहते हैं। इसी उद्देश्य से प्रधान-प्रधान रास्ते बन्द किए जा रहे हैं।

ख़बर है कि घटनास्थल के समीप की रेलवे लाइनों पर कड़ा पहरा है।

अफ़वाह है कि विद्रोही दल के कुछ आदमी उस गाँव में गए, जहाँ मि० फ़ील्ड्स क्लार्क की हत्या की गई थी, और इस आशय का एक पत्र उन्होंने वहाँ रख दिया कि गाँव के उन लोगों को कड़ी सज़ा दी जायगी, जिन्होंने कि अफ़सरों को विद्रोहियों की ख़बरें पहुँचाई हैं।

—ख़बर है कि पं० नीलकान्त दास, जिन्होंने कॉङ्ग्रेस की आज्ञानुसार, एसेम्बली से इस्तीफ़ा दे दिया था, और जिन्हें नमक-क़ानून के अनुसार १६वीं जून को ७ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई थी, गत २२वीं दिसम्बर को हज़ारीबाग़ जेल से छोड़ दिए गए।

आजकल देहली का सारा आन्दोलन शराब-फ़रोश रायसाहब भोलाराम एण्ड सन्स की दूकान पर सीमित है। नित्य स्त्री-पुरुषों के नए-नए अनेक जत्थे पिकेटिङ्ग के अपराध में पकड़े जा रहे हैं। दूकान पर पाठक देखेंगे, गवर्नमेण्ट ने लठबन्द सिपाहियों की ख़ास व्यवस्था कर दी है।

—मद्रास का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत आर० के० शण्मुखम चेट्टी ने दो बिलों के विषय में विज्ञप्ति निकाली है, जो एसेम्बली के अगले अधिवेशन में पेश किए जायँगे। इनमें पहला अछूतों के सम्बन्ध में है। कहा जाता है कि इस बिल के पास हो जाने से अछूतों की वर्तमान दशा में परिवर्तन होने की आशा है।

दूसरा बिल देवदासियों की बढ़ती रोकने के विषय में है।

—लाहौर का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि 'सर्वेण्ट्स ऑफ़ दी पिपुल सोसायटी' के सदस्य लाला जगन्नाथ के क़ैद की अवधि पूरी हो जाने पर वे गुजरात जेल से छोड़ दिए गए। वे लाहौर पहुँच गए हैं।

—अमृतसर की २४वीं दिसम्बर की ख़बर है कि, श्रीयुत अब्दुर्रहीम पर, जिन पर कि १०८ वीं धारा के अनुसार, कुछ क्रान्तिकारी कविताएँ गाने का अभियोग चल रहा था, एक दूसरा अभियोग पुलिस एक्ट की ३री धारा के अनुसार लगाया गया है। अदालत के पूछने पर उन्होंने कहा कि "मुझे याद नहीं, कि मैंने कभी उन कविताओं को गाया हो।" मामला २री जनवरी के लिए स्थगित कर दिया गया।

—पूना का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि महाराष्ट्र हिन्दू-सभा की एक्ज़ेक्यूटिव कमिटी ने डॉ० मुञ्जे तथा अन्य हिन्दू प्रतिनिधियों के पास इस आशय का तार दिया है कि कमिटी को डॉ० मुञ्जे तथा मि० जयकर पर पूरा विश्वास है और उन्हें अपनी पहली माँगों पर डटे रहना चाहिए। कमिटी ने मुसलमानों की आपत्तिजनक माँगों की निन्दा की है।

—वर्द्धमान का गत २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि पट्ली के निवासी बाबू हीरालाल राय तथा नारायणपुर के बाबू कुमारीशचन्द्र राय के मकान की तलाशियाँ ली गईं। कहा जाता है कि तलाशियाँ कॉङ्ग्रेस के सम्बन्ध में हुई थीं। पुलिस बहुत-सा काग़ज़-पत्र उठा कर ले गई है।

—ख़बर है कि गत २०वीं दिसम्बर को ख़ुफ़िया पुलिस के कुछ अफ़सरों ने, कलकत्ते के 'प्रवासी' कार्यालय की तलाशी ली। यह तलाशी सरकार द्वारा ज़ब्त '१९३० में मिदनापुर में अमन और क़ानून' नामक पुस्तक के विषय में ली गई थी। कहा जाता है कि तलाशी करने पर, उक्त पुस्तक की एक प्रति वहाँ मिली।

इस चित्र में पाठक देखेंगे, शराब-फ़रोश रायसाहब की दूकान पर एक ओर गोद में नन्हा-सा बच्चा लिए एक महिला और नवयुवक धरना दे रहे हैं, दूसरी ओर सिपाही उन्हें भीड़ न इकट्ठी करने की धमकी दे रहा है।

—अलीबाग़ का २१वीं दिसम्बर का समाचार है, कि श्रीयुत देवधर और श्रीयुत जनार्दन जोशी को ज़िला पुलिस एक्ट की ४६ वीं धारा के अनुसार २४ घण्टे के अन्दर शहर छोड़ देने का आदेश दिया गया है।

—ख़बर है कि अलीपुर के प्रेज़िडेन्सी जेल में जो राजनैतिक क़ैदी गत १९ दिसम्बर से अनशन कर रहे थे, वे अभी तक अनशन कर ही रहे हैं।

—सूरी का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि लवपुर (बीरभूमि) के हाई-स्कूल के विद्यार्थी श्री० सरोजनाथ मुकर्जी, अलीपुर जेल में २ महीने की सख़्त सज़ा भुगतने के बाद छोड़ दिए गए हैं। स्कूल के अधिकारियों ने इन्हें पुनः स्कूल में पढ़ने की अनुमति नहीं दी।

—बम्बई का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ पं० मदनमोहन मालवीय की ७०वीं वर्ष-गाँठ बड़े धूमधाम से मनाई गई। पुरुषों और महिलाओं ने हज़ारों की संख्या में, चौपाटी में एकत्रित होकर, पण्डित जी के स्वास्थ्य और दीर्घजीवन के लिए प्रार्थनाएँ कीं।

श्रीयुक्त पटेल की दशा चिन्ताजनक

कोयम्बटूर का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत वी० जे० पटेल की डॉक्टरी जाँच नित्य हो रही है। उन्हें हार्निया और अर्श का रोग है। जलवायु बदल देने पर भी इन रोगों की मात्रा कम नहीं हुई है। आशा की जाती है कि अपने घर पर यदि वे भेज दिए जायँ तो वहाँ शीघ्र अच्छे हो सकेंगे।

सरकारी सहायता रोक दी गई

अहमदाबाद का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि बम्बई की सरकार ने, अहमदाबाद के म्युनिसिपल बोर्ड के अधीनस्थ स्कूलों की सहायता, इसलिए बन्द कर दी है, कि उक्त स्कूल स्थानीय राजनैतिक नेताओं के गिरफ़्तार किए जाने पर तथा बहिष्कार सप्ताहों के उपलक्ष में बन्द रक्खे गए थे!

कॉङ्ग्रेस को दबाने के लिए नई अङ्गरेज़ी फ़ौज!

ख़बर है कि इङ्गलैण्ड से एक नई अङ्गरेज़ी फ़ौज आई है। यह बड़े-बड़े शहरों में रक्खी जायगी। कहा जाता है कि कॉङ्ग्रेस को दबाने के लिए ही यह फ़ौज बुलाई गई है!

—बम्बई, २६ दिसम्बर—ख़बर है कि सरदार पटेल का मामला ६ जनवरी तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। यह पूछे जाने पर, कि उन्हें इस विषय पर कोई आपत्ति है या नहीं, सरदार पटेल ने कहा कि वे अदालत की कार्यवाही में भाग लेना नहीं चाहते, किन्तु इस विषय में उन्हें आपत्ति है। चूँकि वे अदालत की किसी कार्यवाही में भाग नहीं लेना चाहते, अतः उनके मामले का फ़ैसला शीघ्र हो जाना चाहिए था। मैजिस्ट्रेट ने उनकी आपत्ति दर्ज कर ली है।

—पटने के वकील श्रीयुत गोकुलदास को, जो नमक-क़ानून भङ्ग करने के अपराध में ६ मास की सज़ा दी गई थी। हाईकोर्ट ने आपसे पूछा है, कि वकीलों की सूची से आपका नाम क्यों नहीं काट दिया जाय?

बोरसद के किसानों की कारुणिक दशा

हाल ही में, पूना के क्राईस्ट सेवा-सङ्घ के रेवरेण्ड फ़ादर इल्वान, बम्बई सरकार के भूतपूर्व मन्त्री दीवान बहादुर हीरालाल देसाई, गुजरात विद्यापीठ के अध्यापक जे० सी० कुमारप्पा, और श्रीयुत ए०वी० ठक्कर ने बोरसद की यात्रा की थी, उन्होंने किसानों के जले हुए मकानों को अपनी आँखों से देखा। एक दुमन्ज़िला मकान जल कर ख़ाक हो गया था। उन्होंने किसानों के ही साथ झोपड़ियों में रात बिताई। किसानों ने अपने दुःखों का वर्णन उनके सामने किया। पुलिस उन किसानों के मकानों के ताले तोड़ कर सब चीज़ें उठा ले गई थी। खेत भी कटवा लिए गए थे। पग-पग पर उन्हें किसानों की दुर्दशा दिखाई दी।

पुलिस-अफ़सरों को पीटा गया!

सलेम, २४ दिसम्बर—नमकल ताल्लुक़े का एक समाचार है कि आबकारी और पुलिस के दो सब-इन्स्पेक्टर कुछ कॉन्स्टेबिलों के साथ, शराब बनाने की ग़ैर-क़ानूनी कार्रवाई के सम्बन्ध में एक मकान की तलाशी लेने गए। कहा जाता है, उसी समय एक भीड़ ने उन पर आक्रमण किया, दोनों सब-इन्स्पेक्टरों को कॉन्स्टेबिलों से अलग कर पीटा और एक कमरे में बन्द कर दिया। किन्तु दूसरे दिन वे छोड़ दिए गए।

शराब-फ़रोश रायसाहब की दूकान पर सफलतापूर्वक धरना देने के उपलक्ष में स्त्री-पुरुष तालियाँ बजा-बजा कर स्वयंसेवकों को उनकी सफलता पर बधाई दे रहे हैं। कहा जाता है, स्वयंसेवक एक भी ग्राहक दूकान में नहीं घुसने देते।

जनरल अवारी पागलख़ाने में

कहा जाता है कि मध्य-प्रान्त के जनरल अवारी पागलख़ाने में रक्खे गए हैं। आपने मध्य प्रान्तीय सरकार को सूचना दी है, कि यदि उन्हें पागलख़ाने से न हटाया जायगा, तो वे अनशन शुरू करेंगे।

जेल में मृत्यु

बेवारी (बङ्गाल) का २२वीं दिसम्बर का एक समाचार है कि अलीपुर जेल में प्रबाला सुब्बराव नामक एक सत्याग्रही क़ैदी की मृत्यु हृदय-रोग से हो गई है। वह गत १० दिनों से अनशन कर रहा था।

राजबन्दी गिडवानी जेल में सख़्त बीमार

कराची का २६वीं दिसम्बर का समाचार है, कि सिन्ध प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष, डॉ० चोइथराम पी० गिडवानी वहाँ के जेल में सख़्त बीमार हैं। सिविल सर्जन ने आपके छोड़ दिए जाने की सिफ़ारिश की है। इस समय आप [illegible] वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा भुगत रहे हैं।

बोर्स्टल जेल में अनशन

लाहौर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है, कि श्री० टहलसिंह, जो ३०७ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं, जेल के अधिकारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में अनशन कर रहे हैं। कहा जाता है कि आपको हथकड़ी बेड़ी डाल दी गई है, और आप काल-कोठरी में बन्द कर दिए गए हैं।

स्वयंसेवकों पर लाठियाँ चलाई गईं

पटना का २८वीं दिसम्बर का समाचार है कि कुछ कांग्रेस के स्वयंसेवक, पूर्णिया में होने वाली गुलाबबाग़ मेला में जुलूस बना कर जा रहे थे। पुलिस ने उन्हें रोका, उनके न मानने पर लाठियाँ चलाई गईं। सरकारी रिपोर्ट का कहना है कि किसी को सख़्त चोट नहीं आई है।

मि० स्प्रैट जेल में सख़्त बीमार

मेरठ की एक ख़बर है कि मेरठ षड्यन्त्र केस के अङ्गरेज़ क़ैदी मि० वी० स्प्रैट बहुत दिनों से बीमार हैं। इस समय आपकी दशा अधिक चिन्ताजनक है। आप जेल के अस्पताल में रक्खे गए हैं। मेरठ-षड्यन्त्र के अन्य बन्दियों तक से आपको नहीं मिलने दिया जाता है।

बाँदा में जेल-कष्ट

बाँदा का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के जेल में राजनैतिक क़ैदियों को अधिक ठण्ढ के कारण बड़ा कष्ट हो रहा है। कहा जाता है, उन्हें केवल दो कम्बल दिए जाते हैं, जो ओढ़ने और बिछाने दोनों काम के लिए काफ़ी नहीं हैं। इसके फल-स्वरूप, कुछ राजनैतिक क़ैदी अस्वस्थ हो गए हैं। सरदार प्रेमसिंह अभी तक अच्छे नहीं हुए हैं।

—लाहौर का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के 'असाधारण गज़ट' में, [illegible] ऑर्डिनेन्स सारे पञ्जाब के लिए लागू किए जाने की घोषणा की गई है।

[illegible] चारों ओर बनी रहती है और एक भी ग्राहक दूकान में घुसने का साहस नहीं करता।

—[illegible] का [illegible] दिसम्बर का समाचार है, कि वहाँ [illegible] जेल के अधिकारियों के [illegible] दिया है। कहा जाता है कि [illegible] में रक्खे जाने के कारण उन्होंने अनशन किया था।

—[illegible] दिसम्बर को पुलिस ने [illegible] ले गई। अभी तक कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

—मद्रास का [illegible] दिसम्बर का समाचार है कि [illegible] गिरफ़्तार कर लिए गए [illegible] छोड़ दिए गए हैं।

गुजरात के मज़दूरों में त्याग का भाव

बारडोली इलाक़े में सरकार ने किसानों के लगे हुए खेत ज़ब्त तो कर लिए हैं, किन्तु अब उसकी समझ में नहीं आता कि उन खेतों की फ़सलों का क्या किया जाय। ख़बर है कि बारडोली के बाजीपुरा नामक एक गाँव में, एक अफ़सर गया और वहाँ के मज़दूरों को केवल ५) बीघे के दर से उन खेतों की फ़सलों को दे देने का लोभ दिखाया। किन्तु वे मज़दूर, जिन्होंने उन किसानों की दुर्दशा अपनी आँखों से देखी थी, उन फ़सलों को लेने से साफ़ इन्कार कर दिया। अफ़सर ने ख़ाली हाथ लौटना उचित न समझ कर, कहा जाता है, एक मकान के ताले तोड़ कुछ चारपाइयाँ ज़ब्त कर लीं।

—शिकोहाबाद (आगरा) का एक समाचार है कि वहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन ज़ोरों से चल रहा है। हाल में ही वहाँ एक सैनिक-सम्मेलन हुआ था, जिसमें देहातों से आए हुए ६०० सैनिकों को अनेक आवश्यक बातें बताई गईं। करबन्दी आन्दोलन के लिए भी सङ्गठन हो रहा है। मर्दुमशुमारी के लिए मकानों पर लगाए हुए नम्बर भी मिटा दिए गए हैं!

शराब-फ़रोश राय साहब की दूकान पर पिकेटिङ्ग का दृश्य देखने के लिए उत्सुक नागरिकों की भीड़; इन निरपराध दर्शकों पर भी प्रायः लाठियों की वर्षा भी हुआ करती है।

—लाहौर का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि सपरिषद् गवर्नर ने, 'स्वराज्य-संग्राम' नामक एक चित्र की ज़ब्ती की सूचना दी है, जो श्री० नारायन दत्त सहगल ने प्रकाशित की थी।

—लाहौर का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि पुलिस ने 'मिलाप' कार्यालय तथा, उसके व्यवस्थापक श्री० ख़ुशहालचन्द के मकान की तलाशियाँ लीं। वह कुछ काग़ज़-पत्र उठा ले गई है।

युक्त प्रान्त में ऑर्डिनेन्सों का शासन !

कानपुर का सेवा-दल भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया गया

लखनऊ का २६वीं दिसम्बर का समाचार है, कि एक असाधारण गज़ट के द्वारा, 'अनलॉफ़ुल इन्स्टीगेशन ऑर्डिनेन्स' जो अपने ढङ्ग का दूसरा ऑर्डिनेन्स है, युक्त प्रान्त के तीसों ज़िले के लिए लागू कर दिया गया है। अब लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, आगरा और मेरठ भी इसके शिकञ्जे में आ गए हैं। एक दूसरे गज़ट के द्वारा कानपुर का 'हिन्दुस्तानी सेवा-दल' भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया गया है।

आगरे में कर-बन्दी का आन्दोलन

लाठियाँ चलीं :: ३०० घायल

आगरा, २३ दिसम्बर—गत २१वीं दिसम्बर को क़रीब एक हज़ार आदमी बरोद नामक गाँव गए जहाँ लगानबन्दी आरम्भ होने वाली थी। कहा जाता है, कि पुलिस ने १६ सत्याग्रहियों को बरोद-सत्याग्रह-शिविर से हटा दिया, और वह गाँव के चारों ओर घेरा बना कर खड़ी हो गई। जब लोगों ने अन्दर घुसना चाहा तो, पुलिस ने बेंत और लाठियों की वर्षा की। ख़बर है कि क़रीब १०० मनुष्य इससे आहत हुए, इनमें कुछ की दशा चिन्ताजनक है। एक ८ वर्ष के लड़के को भी सख़्त चोट आई है। पं० द्वारका प्रसाद रावत, श्री० जयन्तीप्रसाद तथा चार अन्य कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार कर लिए गए। पीछे क़रीब २१० सत्याग्रही गिरफ़्तार घोषित किए गए, जिनमें ८६ लॉरियों में बिठा कर ले जाए गए। क़रीब २० महिलाएँ एक लॉरी पर बिठा कर फ़तेहपुर सिकरी ले जाई गईं, और वहाँ छोड़ दी गईं। ख़बर है कि वे आगरे लौट आई हैं।

इसके बाद क़रीब ८०० स्वयंसेवक घटनास्थल पर पहुँच गए। उन्होंने दल बना कर पुलिस के घेरे तोड़ कर गाँव में घुसने की कोशिश की। कुछ को सफलता भी मिली। कहा जाता है, क़रीब ३०० स्वयंसेवकों को चोटें लगी हैं, जिनमें ४ और १० वर्ष से नीचे के लड़के भी शामिल हैं। १६ को सख़्त चोटें आई हैं।

साधारण क़ैदियों की रिहाई

ख़बर है कि सरकार ने जो 'सन्टेन्स सस्पेन्शन स्कीम' पेश की है, उसके अनुसार ३,२०० मोपला क़ैदी छोड़ दिए गए हैं। मार्च, १९२८ से दिसम्बर, १९३० तक अण्डमन द्वीप से भी ४८५ क़ैदी छोड़े जा चुके हैं। आगामी जनवरी से जून तक २५० भारतीय जेलों के तथा २५ अण्डमन के क़ैदियों को भी छोड़े जाने की अफ़वाह है।

लाठी की चोट से स्वयंसेवक की मृत्यु

बनारस का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत सरयूराम की मृत्यु कॉङ्ग्रेस अस्पताल में हो गई। एक मास पहले आप राजघाट और फिर ब्रह्मनाल में पुलिस की लाठी से सख़्त घायल हुए थे। आप कॉङ्ग्रेस अस्पताल में लाए गए थे। वहाँ इन्हें न्यूमोनिया हो गया था और ख़ून के क़ै आने लगे थे। इनकी मृत्यु के शोक में एक जुलूस भी निकाला गया।

—ख़बर है कि सक्खर (सिन्ध) के कलेक्टर साहब विदेशी वस्त्रों की एक प्रदर्शनी करना चाहते हैं। सुनने में आया है कि यदि ऐसा किया गया तो ५०० स्वयंसेवक इस प्रदर्शनी पर धरना देंगे।

—सूरत का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ वानर-सेना का एक वृहत जुलूस निकला। फिर झण्डा-वन्दन हुआ और श्रीमती हंसा मेहता का भाषण हुआ। इस परिषद में शरीक होने के लिए प्रान्त के कितने ही बालक उपस्थित हुए थे।

बन्दूक़ के कुन्दे की चोट से मृत्यु

श्री० कालीशङ्कर वाजपेयी की मृत्यु के विषय में डॉक्टर कोरोवर ने अदालत के सामने कहा है कि श्री० कालीशङ्कर की मृत्यु बन्दूक़ के कुन्दे की चोट के कारण हुई है।

अदालत बन्द कर दी गई

किशोरगञ्ज का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि तीसरे स्थायी मुन्सिफ़ की अदालत अनिश्चित समय के लिए बन्द कर दी गई है। मुक़द्दमे के अभाव से ही ऐसा किया गया है।

—कलकत्ते का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ पुलिस ने ब्रह्मसमाज के बालिकाओं के छात्रावास पर धावा किया और तलाशी ली। किन्तु कोई सन्देहजनक वस्तु नहीं पाई गई। एक छात्रा को गिरफ़्तार कर पुलिस साथ लेती गई, जिसे कुछ घण्टों बाद छोड़ दिया गया।

—लाहौर का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीमती कोहली और श्रीमती पार्वती देवी, लाहौर की महिला जेल से छोड़ दी गई हैं।

—बरेली का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि काकोरी के मामले के अभियुक्त श्रीयुत मन्मथनाथ गुप्त को बरेली जेल में पागलपन की बीमारी हो गई है। वे पागलख़ाने में रक्खे गए हैं।

—ख़बर है कि गत २४वीं दिसम्बर को कानपुर के अकबरपुर नामक तहसील में ६ कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए।

—कानपुर का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीमती सरला देवी, ११७ वीं धारा के अनुसार, २३वीं दिसम्बर की रात में गिरफ़्तार कर ली गईं। कहा जाता है कि आपके नाम वारण्ट इटावा ज़िले से था।

मैनपुरी में गोली-काण्ड

मैनपुरी (संयुक्त प्रान्त) का गत १६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ चतुरीपुरी नामक एक ग्राम में, कुछ स्वयंसेवक सवेरे की फेरी लगाने के बाद, झण्डा-प्रार्थना कर रहे थे। इसी समय पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट कई सिपाहियों सहित वहाँ आ पहुँचे और उन लोगों से झण्डा छीनना चाहा। स्वयंसेवकों ने झण्डा देने से इनकार किया। कहा जाता है कि इस पर ८-१० फ़ायरें की गईं, जिससे कुछ लोग घायल हुए। दूसरे दिन दुर्गासिंह और श्री० माधवसिंह आदि ४ सज्जन गिरफ़्तार भी कर लिए गए।

संयुक्त प्रान्त में गिरफ़्तारियाँ

गत १७ दिसम्बर को समाप्त होने वाले सप्ताह में, इस प्रान्त में २२८ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। अब तक सब मिला कर १०,४७३ व्यक्ति राजनैतिक मामले में गिरफ़्तार हो चुके हैं।

—कानपुर का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि पुलिस ने प्रकाश पुस्तकालय की तलाशी ली और कुछ पुस्तकें उठा कर ले गई।

—मिर्ज़ापुर के कॉङ्ग्रेस-कार्यकर्त्ता सेठ महादेवप्रसाद (स० मतवाला) को फिर १ साल की सज़ा दी गई है। पाठकों को स्मरण होगा, वे हाल ही में जेल से लौटे थे।

मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में २८ अन्य लोग भी मिर्ज़ापूर में गिरफ़्तार किए गए हैं। वे अभी हिरासत में ही हैं।

—गत २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि पं० मदनमोहन मालवीय के १६ वर्षीय पौत्र श्री० कमलनारायण मालवीय को राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अभियोग में १ वर्ष की कड़ी क़ैद और १५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ माह की अतिरिक्त सज़ा दी जायगी। आप 'बी' श्रेणी में रक्खे जायँगे।

लखनऊ में ६६ गिरफ़्तारियाँ

लखनऊ का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि उस रोज़ दोपहर में वहाँ ४१ गिरफ़्तारियाँ हुईं। नई कॉङ्ग्रेस कमिटी के उद्घाटन के समय बाबू मोहनलाल सक्सेना, हरप्रसाद सक्सेना आदि प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार कर लिए गए। फिर शाम को बाबू कैलाश पति वर्मा और बाबू परमेश्वरीदयाल गिरफ़्तार किए गए। एक विदेशी वस्त्र की दूकान पर धरना देते समय भी कुछ लोग पकड़े गए। सब मिला कर ६६ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—ख़बर है कि पं० पद्मकान्त जी मालवीय गाज़ीपुर की जेल से ६ मास की सज़ा भुगत कर छूट गए। आप इलाहाबाद आ गए हैं।

—स्थानीय समाचार है कि गत २६ दिसम्बर को एक २२ वर्ष के युवक ने यमुना में डूब कर आत्महत्या कर ली।

—आगरे की २२ दिसम्बर की ख़बर है कि सहयोगी 'सैनिक' के सम्पादक श्री० सरदारसिंह को 'दो सरकारें' नामक लेख छापने के अभियोग में १ साल की क़ैद और २५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ मास की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

पुलिस पर आक्रमण

ख़बर है कि गत २६वीं दिसम्बर को कामा नामक एक स्थानीय गाँव में सभा हो रही थी; पुलिस के कुछ जवानों ने वहाँ जाकर सभा को तितर-बितर कर दी और अयोध्या नामक एक व्यक्ति को गिरफ़्तार किया। कहा जाता है, कि कॉन्स्टेबिलों के पुलिस स्टेशन पर पहुँचने के पहले ही, कुछ भीड़ ने उन पर लाठियों से आक्रमण किया और अयोध्या को छुड़ा लिया। एक कॉन्स्टेबिल सख़्त घायल हुआ है। कॉन्स्टेबिलों के एक नए दल के पहुँचने पर भीड़ भाग गई।

कहा जाता है कि अभी तक २७ मनुष्य गिरफ़्तार किए गए, जिनमें कुछ इस आक्रमण के सम्बन्ध में पकड़े गए हैं। अयोध्या अभी तक गिरफ़्तार नहीं किया जा सका है। पुलिस पीछा कर रही है!

श्रीमती उमा नेहरू के इस्तीफ़े के लिए सरकारी दबाव

स्थानीय क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज की सहायक सेक्रेटरी श्रीमती उमा नेहरू से कॉलेज-कमिटी के सदस्यों ने अपने पद से इस्तीफ़ा न देने के लिए प्रार्थना की थी। किन्तु सरकारी सहायता के बन्द हो जाने के कारण कॉलेज की आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय हो जाने से तथा सरकार के यह प्रतिज्ञा करने पर, कि यदि श्रीमती जी अपने पद से हट जायँ तो वह इस विषय में विचार कर सकती है, कमिटी के सदस्यों ने, आपसे, कॉलेज से अपना सम्बन्ध हटा लेने की प्रार्थना की। इस विषय का एक प्रस्ताव भी पास किया गया है।

—ख़बर है कि लाहौर के बोर्स्टल जेल में हफ़ीज़ुद्दौला नामक एक सिविल-सर्जन का लड़का, जिसकी अवस्था ११ वर्ष की है, और जो 'ए' श्रेणी में रक्खा गया है, अपने प्रति 'सी' श्रेणी का व्यवहार किए जाने के विरोध में अनशन कर रहा है।

—मद्रास का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि सलेम जेल में लाहौर षड्यन्त्र के अभियुक्त श्री० बटुकेश्वर दत्त अनशन कर रहे हैं। कहा जाता है कि उनके उस जेल में पहुँचने पर उक्त जेल के अधिकारियों ने उनके साथ क्रूरता का बर्ताव किया। जिसके विरोध में ही वे अनशन कर रहे हैं।

* * *

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

भई, भारत के इन पाव-दर्जन बूढ़ों ने तो आजकल हमारी स्नेहशीला सखी नौकरशाही को बेतरह परेशान कर रक्खा है। इन्हें अगर बिना 'छान-पगहा' (!!!) के छोड़ दिया जाए, तो सारा तख़्ता ही उलट दें और अगर पकड़ कर क़ैद में रक्खा जाए, तो इनके लिए मुनक़्क़े का इन्तज़ाम करो, बकरी का दूध लाओ, रसोईदार और ख़िदमतगार का बन्दोबस्त करो! बाप रे बाप, इस ज़हमत का भी कोई ठिकाना है?

❀

बड़े हज़रत—उन्हीं बूढ़े नेहरू जी महाराज का ज़िक्र है—बाहर थे तो एक दिन इतनी आग उगल दी, कि हमारी सखी का लहँगा जलते-जलते बाल-बाल बचा, और 'अन्दर' गए तो लगे ख़ून थूकने! बताइए, अगर सखी को नाहक़ परेशान करने की नीयत न थी तो क्या जेल से बाहर कहीं थूकने की जगह न थी? थूक-थाक कर वहाँ जाते और कुछ दिन मेहमानदारी के मज़े लेते, तो क्या कुछ बिगड़ जाता? मगर नहीं, उन्हें तो था नाहक एक "भलीमानुस।" (नाक क्या सिकोड़ते हो पाठक जी, श्रीजगद्गुरु तुम्हारी तरह व्याकरण के ग़ुलाम नहीं हैं) को तङ्ग करना!

❀

अब ज़रा महामना मालवीय जी की कथा सुनिए। छुआ-छूत के ऐसे कट्टर प्रेमी कि गाँधी की आँधी की छाया भी न छूते थे। इसके बाद बढ़े तो ऐसे कि नैनी के जेलख़ाने में ही जाकर थमे, और साथ लेते गए सखी को दिक़ करने के लिए टोकरी भर बुख़ार! अब बताइए, वह बेचारी अपने बाल-बच्चे सँभाले या इनकी तीमारदारी करे? अगर जेल जाकर बीमार ही पड़ना था तो सखी और खरी कहने की ज़रूरत ही क्या पड़ी थी? क्या इतने बड़े 'पण्डित' होकर इतना भी नहीं जानते थे, कि यह सखी का राज्य है, यहाँ सच बोलना 'गुनाह कबीरा' है—"इस मैक़दे में काम नहीं होशियार का!"

❀

ये महर्षि-सी दाढ़ी वाले बूढ़े पटेल साहब तो, ख़ुदा झूठ न बुलवाए, बेचारी के पीछे हाथ धोकर पड़े रहते हैं। एसेम्बली के तख़्त पर थे तो ऐसा हैरान किया—ऐसा हैरान किया कि बस ख़ुदा की पनाह! 'डिसिपलिन' और 'कन्स्टीट्यूशन' की इतनी कनेठियाँ दीं, कि बेचारी के कान लाल हो गए! वहाँ से हटे तो कॉङ्ग्रेस वालों से मिल कर उसकी जड़ खोदने लगे। अब जेल के मज़े ले रहे हैं, तो बुढ़ौती की सहचरी बीमारी को भी बुला लिया है, उस धृष्ट कवि की तरह, जिसने कहा है,—

"या ख़ुदा जन्नत से किसी हूर को भेज,
मेरे मौला! मुझे आदत नहीं तनहाई की।"

❀

इधर इस देश के काले, ऐसे एहसान फ़रामोश हो गए हैं, कि "खायँ भतार का और गीत गाएँ यार के!"—रहते हैं, श्रीमती नौकरशाही के राम-राज्य में और मङ्गल मनाते हैं, इन बूढ़ों का—श्रीमती के शत्रुओं का!! कोई ईश्वर से उनकी आरोग्यता के लिए प्रार्थना कर रहा है, तो कोई अल्लाहताला के दरबार में सिजदा कर रहा है; कोई शाहमदार की मज़ार की ओर दौड़ रहा है तो कोई काल-भैरव को मना रहा है! कोई इन भलेमानसों से पूछता भी नहीं, कि आख़िर ये बूढ़े बच जायँगे तो क्या किसी को दिल्ली का लड्डू दे देंगे, या मथुरा का खुरचन! क्यों इनकी आरोग्यता के लिए दर-दर की ख़ाक छानी जा रही है?

❀

इसलिए श्री० १००८, यानी श्रीजगद्गुरु का फ़तवा है कि अगर आसानी से वैतरणी पार कर जाना चाहते हो और बाल-बच्चों के लिए भी कुछ कमा कर रख जाने की इच्छा है तो, मनसा, वाचा और कर्मणा से श्रीमती सखी नौकरशाही की ख़ैर मनाओ। इन्हीं के लिए जिओ और इन्हीं के लिए मरो। बोलो—'श्रीमती नौकरशाही की जय!' बोलो—'लॉर्ड इरविन साहब की जय!' बोलो—'आयुष्मती पुलिस की जय!!!'

❀

इत्तेरी स्मृति की! श्रीमती के गुणों पर इतने मुग्ध हुए, कि चचा चर्चिल की चेंचें की चर्चा ही छोड़ दी! बेचारे ने भरी सभा में—'क़ाग़ज़ पर' नहीं, बल्कि—"टेबिल पर रख दिया है, कलेजा निकाल के!" क्या कमबख़्त बुलबुले-हज़ार दास्तान चहकेगा, जो अब की चचा-चर्चिल चहके हैं! अल्लाह ने ज़बान दी है, या मुँह में भकभका लगा दिया है? न विराम न विश्राम! बोलना शुरू किया तो दिल का सारा ग़ुबार निकाल कर रख दिया!

"ख़ुदा सलामत रक्खे चचा को हज़ार बरस,
हर बरस के हों दिन पचास हज़ार।"

❀

ठीक है, जब चोंच खुली तो फिर चेंचें में कमी क्यों की जाय? कम से कम कोंपर कॉन्फ़्रेन्सियों को तो मालूम हो जाय; कि यहाँ 'वह गुड़ नहीं, जो चिउँटे खायँ!' चचा की राय है कि देने-लेने की तो बात ही क्या? अगर कोई चूँ करे, तो चिमटे से उसकी गिद्दी-सी ज़बान खींच ली जाय। 'गाँधीवाद' को कुचल दिया जाय। कॉङ्ग्रेस वालों को ठण्डी-फाँसी दे दी जाय! सम्राट के मुकुट का वह महामूल्यवान 'हीरा' (भारत) क्या यों ही छोड़ दिया जाएगा। हरे-हरे! हर्गिज़ नहीं! कौन कमबख़्त कहता है, कि यों ही छोड़ दीजिए। पहने रहिए। कानों में कुण्डल बनवा लीजिए या नकबेसर पर उसी का नगीना जड़वा लीजिए!! मगर ख़ुदा के लिए इस बात को हर्गिज़ न भूलिए कि "हीरे की कनी जान के खाई न जायगी।"

❀

यह तो आपने सुना ही होगा, कि 'चमार के मनाए डाँगर नहीं मरता!' इसलिए 'गाँधीवाद' की चिन्ता छोड़िए। कमबख़्त कौवे का मांस खा चुका है! मरेगा नहीं, चाहे जन्म भर पानी पी-पीकर कोसा कीजिए। देखते नहीं, सखी नौकरशाही ने उसे कुचल डालने के लिए लज्जा और शर्म को बालाए-ताक़ रख कर, नग्न-नृत्य आरम्भ कर दिया है। मगर मरना तो दूर रहा, कमबख़्त 'माचा' भी नहीं छोड़ता!

❀

सुनते हैं, इलाहाबाद की 'विद्यार्थी-समिति' बड़ी सरगरमी से इस प्रश्न पर विचार कर रही है, कि 'विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेना चाहिए या नहीं?' इसलिए श्रीजगद्गुरु भी भङ्ग-बूटी छान कर इस प्रश्न पर विचार करने वाले हैं, कि आग लगने पर कुआँ खोदना चाहिए या नहीं? क्योंकि ये दोनों ही प्रश्न को एकसा ज़रूरी और एकसा महत्वपूर्ण समझते हैं। परन्तु पहले प्रश्न पर उस समय विचार होना चाहिए, जबकि जेल-यात्रियों की संख्या पूरी एक लाख तक पहुँच जाए!!

❀

(दूसरे पृष्ठ का शेषांश)

मोतिहारी में गिरफ़्तारी

पटना का ३०वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत गोरखप्रसाद वकील, जिन्होंने चम्पारन के कृषि-सम्बन्धी आन्दोलन में महात्मा जी को अच्छी सहायता पहुँचाई थी, मोतिहारी में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

बीमार को सज़ा

तङ्गील का २५ वीं दिसम्बर का समाचार है कि स्थानीय स्कूल के भूतपूर्व शिक्षक श्री० मन्मथनाथ सान्याल को १ साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। आप इस समय बहुत बीमार हैं, और अस्पताल में रक्खे गए हैं। अस्पताल ही में सजा का हुक्म सुनाया गया था।

—बोरसद का एक समाचार है कि वहाँ के आश्रम की दो स्वयंसेविकाएँ श्रीमती लक्ष्मी बहन और श्रीमती गोदावरी बहन को डेढ़-डेढ़ मास की क़ैद और ३०)-३०) जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर १५-१५ दिन की अतिरिक्त सज़ा होगी।

—बरार प्रान्तीय युद्ध-समिति के डिक्टेटर श्री० एल० एस० मराठे गत २४वीं दिसम्बर को १२४-ए धारा के अनुसार अकोला में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—नोआखाली का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि राजद्रोह और षड्यन्त्र के अभियोग में गिरफ़्तार श्री० हारनचन्द्र घोष चौधरी प्रभृति ६ व्यक्तियों को सज़ाएँ दे दी गईं। श्रीयुक्त घोष को १८ महीने तथा अन्य अभियुक्तों को १-१ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अमृतसर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ कटरा करमसिंह में स्वदेशी प्रचारिणी सभा की एक मीटिङ्ग में पुलिस ने बाबासिंह नामक एक व्यक्ति को गिरफ़्तार कर लिया है। यह भी समाचार है कि हिस्साम राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल के नायक कॉमरेड तामदीन १०८वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए। किन्तु २,०००) रु० की ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं।

—दरभङ्गा का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि बाबू दुन्दबहादुर सिंह, जो एक बड़े ज़मींदार और उत्साही कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता हैं, ४ स्वयंसेवकों के साथ, बिना वारण्ट दिखाए ही गिरफ़्तार कर लिए गए।

—भागलपुर का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी पं० बोधनारायण मिश्र और शेखर प्रेस के मैनेजर श्री० पद्माकर झा १७ (ए) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। दोनों अभियुक्त स्थानीय जेल में रक्खे गए हैं।

—ख़बर है कि देवकली तहसील (शाहजहाँपुर) की कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० शिवकुमार मिश्र गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—ख़बर है कि पश्चिमी ख़ानदेश की कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० बर्वे को ३ माह की क़ैद और २००) जुर्माने की सज़ा हुई है। शहदा तालुक़ा कॉङ्ग्रेस के डिक्टेटर को भी यही सज़ा दी गई है और भी गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं।

* * *

दमन-चक्र और गोलमेज़ परिषद

"कॉङ्ग्रेस का विद्रोह खुला विद्रोह है"

"ऐसे विकट और सामूहिक विप्लव के समय दमन-नीति से क्या लाभ हो सकता है ?"

"इस पाशविक दमन के लिए गवर्नमेण्ट के पास कोई दलील नहीं है"

सुप्रसिद्ध पत्रकार मि० ब्रेलसफ़र्ड के कटु अनुभव

"दमन से एक दल को दबाना सम्भव है, पर सम्पूर्ण राष्ट्र को नहीं। समझौता असफल हो जाने पर ऐसे समय में, जब कि देश में विद्रोह की आग प्रज्वलित हो रही हो, कोई गवर्नमेण्ट चैन से शासन नहीं कर सकती।"

सुप्रसिद्ध पत्रकार मि० ब्रेलसफ़र्ड ने गोलमेज़ परिषद और सरकार की दमन-नीति के सम्बन्ध में २२ नवम्बर को अमेरिका के 'नेशन' नामक सुप्रसिद्ध पत्र में एक लेख प्रकाशित कराया था। पाठकों के मनोरञ्जनार्थ हम उसका सार यहाँ देते हैं :—

"जिस समय ये पंक्तियाँ प्रकाशित होंगी, उस समय लन्दन गोलमेज़ परिषद के लिए सजधज कर लैस हो जायगा। मैं इसका अनुमान नहीं कर सकता कि पाठक उसका स्वागत किस प्रकार करेंगे, परन्तु जिस राष्ट्र के के बीच में मैं तीन सप्ताहों से भ्रमण कर रहा हूँ, वह उसे सङ्कुचित घृणा और निराशा की दृष्टि से देखता है। क़ानून को तलाक़ देकर, शासन की बागडोर ऑर्डिनेन्सों के हाथों में आ गई है और ऑर्डिनेन्स पर ऑर्डिनेन्स निकलते चले जा रहे हैं। उन मकानों पर, जिनमें कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस स्थित हैं, ताले डाले जा रहे हैं और वे ज़ब्त किए जा रहे हैं। जिस अतिथि ने कल रात्रि को तुम्हारा सत्कार और आवभगत की थी, वही दूसरे दिन सवेरे जेल में बन्द दिखाई देता है ! पुलिस लाठियों के प्रहार से आए-दिन जो जुलूस भङ्ग करती है उनकी तो गणना नहीं है। केवल लाठी-प्रहार ही से उसकी इतिश्री नहीं हो जाती ; पिछले सप्ताह में बम्बई में केवल एक जुलूस के अन्त में २०० व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए थे और ८० घायल हुए थे, जिनकी मरहम-पट्टी अस्पताल में की गई थी। बम्बई जैसे औद्योगिक केन्द्रों में सप्ताह में एक बार और अवसर आने पर दो बार तक हड़ताल हो जाती है। मिलें बन्द हो जाती हैं और ९० प्रतिशत दुकानों में ताले लग जाते हैं। भारत भर में ६० हज़ार से ऊपर व्यक्ति देशभक्ति के अपराध में जेलों में सड़ रहे हैं और इसमें बम्बई का हाथ उसकी शक्ति से अधिक है। इन राजनैतिक क़ैदियों में से अधिकांश 'सी' क्लास में रक्खे गए हैं और उन्हें वही खाना दिया जाता है, जो अधम से अधम पातकी क़ैदियों को ; वे उसी परिस्थिति में रक्खे जाते हैं, जिसमें ये अधम क़ैदी। यूरोपियन ऑफ़िसरों की दृष्टि में, बड़े शहरों में हाथ खींच कर ज़ुल्म ढाए जाते हैं, परन्तु उन गाँवों में, जिनमें मैंने पाँच दिन भ्रमण किया है, हर प्रकार के सङ्कोच का बाँध टूट जाता है और जहाँ कहीं लगानबन्दी का आन्दोलन प्रारम्भ हो गया है, निरपराध किसान नृशंसतापूर्वक पीटे जाते हैं। आफ़तों का पहाड़ ढा देने पर और धन-जन की इतनी अधिक हानि होने पर भी बम्बई प्रेज़िडेन्सी का हिन्दू जन-समुदाय कॉङ्ग्रेस के साथ है। मैंने बड़े-बड़े गाँवों और शहरों में लोगों को प्रायः गाँधी-टोपी पहने देखा है, कहीं कहीं मुसलमानों की तुर्की टोपी ही इस ऐक्ट को भङ्ग करती है।

मुसलमानों का रुख़

"स्वतन्त्रता के इस विकट संग्राम में मुसलमानों का कितना हाथ है, इसका अनुमान लगाना आसान नहीं है। जो लोग उसमें सम्मिलित हो गए हैं, उनमें से मुख्य-मुख्य को ख़तरनाक, परन्तु सम्माननीय पद दिए गए हैं और वे जेल जाने के लिए तैयार हैं। एक क़ानूनी-क्लब में मैंने छः मुसलमान बैरिस्टरों से इस संख्या का अनुमान लगाने के लिए कहा, उनमें से प्रायः सभी का यह अनुमान था कि बम्बई प्रान्त में आधे मुसलमान कॉङ्ग्रेस के साथ हैं। एक पुलिस इन्स्पेक्टर का अनुमान एक तिहाई का था। परन्तु सबकी सम्मति इस बात में एक थी कि शिक्षित मुसलमान युवक मौलानाओं के अनुगामी नहीं हैं और वे धार्मिक युद्ध से आजिज़ आ गए हैं। सब से अधिक आश्चर्य तो मुझे इस बात पर हुआ कि मुसलमानों की जमायतुल-उलेमा जैसी कट्टर धार्मिक संस्था ने भी गोलमेज़-परिषद के बहिष्कार में कॉङ्ग्रेस का साथ दिया।

राजनैतिक विप्लव

"राजनैतिक विप्लव के समय यह राष्ट्र प्रति दिन अधिकाधिक दृढ़ होता जाता है। उसने कॉङ्ग्रेस के कार्यों पर वाद-विवाद करना अब बन्द कर दिया है; क्योंकि कॉङ्ग्रेस कोई नया कार्य नहीं कर रही है। हर एक व्यक्ति नमक-कर को घृणा की दृष्टि से देखता है। हर एक शराब की दूकानों की निन्दा करता है। विदेशी कपड़े के बहिष्कार में अभूतपूर्व सफलता मिली है। विदेशी कपड़े के बहिष्कार का अवलम्बन हमें (अङ्गरेज़ों को) झुकाने और कॉङ्ग्रेस से समझौता करने को बाध्य करने के लिए किया गया है। परन्तु हर एक भारतीय के हृदय में यह विश्वास जम गया है कि ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत जो व्यापारिक उन्नति की गई है, उसका एकमात्र कारण भारत को चूसना था। यद्यपि बम्बई और अहमदाबाद के व्यापारियों को भयङ्कर हानि हुई है, तब भी वे कॉङ्ग्रेस के साथ हैं। करोड़पति मिल-मालिकों की धर्मपत्नियाँ और पुत्रियाँ केसरिया रङ्ग की साड़ी पहन कर दुकानों पर पिकेटिङ्ग करती हैं और उनमें से सैकड़ों पारसी और हिन्दू महिलाएँ प्रसन्नतापूर्वक जेल जा रही हैं। मैं कॉङ्ग्रेस के इन कार्यों की आलोचना नहीं करता। राष्ट्र के सामने एक निश्चित कार्यक्रम रक्खा है। आलोचना केवल हमारे (अङ्गरेज़ों के) कार्यों की होती है। हर एक ऑर्डिनेन्स, हर एक लाठी-प्रहार और हर एक नेता की गिरफ़्तारी के साथ ही गवर्नमेण्ट के प्रति घृणा के भाव भी बहुत दृढ़ होते जाते हैं। एक औद्योगिक और व्यस्त शहर पण्डित जवाहरलाल की गिरफ़्तारी के समाचार सुन कर उसके विरोध में पूरी हड़ताल मनाएगा, और उन्हें राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अभियोग में ढाई साल की क़ैद की सज़ा मिलने पर अपना क्रोध प्रदर्शित करने के लिए आठ दिन बाद वहाँ फिर हड़ताल मनाई जायगी। राष्ट्रपति का भाषण गवर्नमेण्ट की दृष्टि में राजविद्रोहात्मक भले ही हो, परन्तु करोड़ों भारतीय उसके एक-एक शब्द से सहमत हैं।

"ऐसे विकट और सामूहिक विप्लव के समय दमन-नीति से क्या लाभ हो सकता है ? वह कॉङ्ग्रेस के रास्ते में रोड़े सचमुच अटका सकती है। परन्तु कॉङ्ग्रेस का विद्रोह खुला विद्रोह है, किसी गूढ़ षड्यन्त्र के लिए

लाहौल बिलाक़ूवत

आगामी अङ्क से हास्य-रस के सुप्रसिद्ध लेखक—श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी० लिखित "लाहौल बिलाक़ूवत" नामक हास्यरस-पूर्ण लेख 'भविष्य' के कई अङ्कों तक धारावाही रूप से प्रकाशित होगा, इसे नोट कर लीजिए। इसके समाप्त होने पर "रहस्यमयी" शीर्षक उपन्यास का धारावाहिक प्रकाशन प्रारम्भ होगा, जिसकी सूचना 'भविष्य' के गताङ्क में दी जा चुकी है। हमें खेद है, स्थानाभाव के कारण दोनों लेखों को एक साथ प्रकाशित करना एक बार ही असम्भव है।

वहाँ स्थान नहीं। गाँधी के सिद्धान्तों का मुख्य आधार सत्य है, जिस पर समस्त आन्दोलन स्थिर है, उसके कार्यों की नीति अबाध है। कॉङ्ग्रेस में सङ्गठन की कमी भले ही हो, परन्तु जगह-जगह के वाॅलण्टियर अपना कार्य किए जाते हैं। यदि हम (अङ्गरेज़) उनके सत्याग्रहियों को गिरफ़्तार करते हैं तो दूसरे उनका स्थान ग्रहण करने के लिए तैयार रहते हैं। दमन-नीति से किसी दल का विद्रोह दबाया जा सकता है, परन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र को कुचलना असम्भव है। कोई विचारवान पुरुष यह नहीं कह सकता, कि समझौते का प्रस्ताव असफल हो जाने के बाद कोई गवर्नमेण्ट विप्लव के ज़माने में, चाहे वह अहिंसात्मक ही क्यों न हो, चैन से राज्य कर सकती है।

"परन्तु इस पाशविक दमन के लिए गवर्नमेण्ट के पास कोई दलील नहीं है। भारतीयों की ओर से जो हिंसात्मक कार्य होते हैं वे आन्दोलन के विराट स्वरूप के सामने नगण्य हैं। बड़े-बड़े शहरों में भी जुलूसों को तितर-बितर करने का एक मात्र उपाय लाठी-प्रहार रह गया है। मैंने अपने जीवन में इतनी बड़ी भीड़ को थोड़े से आदमियों की लाठियाँ इतने शान्तिपूर्वक सहते कभी नहीं देखा। वे खड़े नहीं रहते, वरन् स्त्री-पुरुष दोनों अलग-अलग बैठ जाते हैं और शान्तिपूर्वक राष्ट्रीय गीत और भाषण सुनते हैं। सच-मुच भाषण राजविद्रोहात्मक रहते हैं, परन्तु उनमें हिंसा और अशान्ति की भड़क नहीं रहती। तिस पर भी शान्ति-रक्षा के हिमायती शान्ति के नाम पर इस निरपराध भीड़ पर लाठी-प्रहार करते हैं। भारतीय इस प्रकार के शारीरिक दण्ड को हमसे अधिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं। स्वयं उनका शारीरिक सङ्गठन निर्बल और दुबला होता है, उन्हें अङ्गरेज़ी सभ्यता की शिक्षा नहीं दी गई और कुछ भागों को छोड़ कर, उनमें फ़ौजी वीरता भी नहीं है, परन्तु जिस समय वे आपत्तियाँ झेलने के लिए आगे बढ़ जाते हैं तब वे फ़ौलाद के बन जाते हैं। हम इस बात पर तर्क-वितर्क न करेंगे कि हमारा यह पाशविक व्यवहार लज्जाजनक है। मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि इसका कोई लाभदायक परिणाम नहीं हुआ। इस दमन-चक्र का भारतीयों पर इसीलिए कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि उनका जातीय सङ्गठन अत्यन्त दृढ़ नींव पर स्थापित हुआ है। कुछ दिन पहले, जब मैं एक गाँव में पहुँचा, तब वहाँ लोगों ने इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि "जब तक गाँधी जी मुक्त न कर दिए जायँगे, हम लगान न देंगे।" सदैव की भाँति पुलिस वहाँ आई और उसने किसानों को बड़ी निर्दयतापूर्वक पीटा। मैंने अपनी आँखों से उन नृशंसता के चिन्ह और घाव उनके शरीर पर देखे थे। मार के कारण उनमें से दो किसानों ने लगान दे दिया। इसके परिणाम-स्वरूप उनकी जाति की एक पञ्चायत बैठी, जिसने उन पर ५०) रुपया जुर्माना किया और इस आशय का एक प्रस्ताव पास किया कि जो भविष्य में लगान देगा, उसको सौ रुपया जुर्माना किया जायगा। जुर्माना वसूल करने का सब से सरल उपाय उन्हें जाति से बहिष्कृत कर देना है। जाति-पाँति का यह बन्धन शहरों में उतना दृढ़ नहीं है, जितना गाँवों में। यह बन्धन अब ढीला पड़ चला है और अब उसका अन्तिम समय भी आ चला है; परन्तु नष्ट होने पर भी जाति के दृढ़ सङ्गठन का श्रेय उसी को रहेगा। लाठी भीड़ को तितर-बितर कर सकती, वह हमारे मुँह पर सदैव के लिए कालिख भी पोत सकती है, परन्तु वह भारत के सामाजिक सङ्गठन पर वार नहीं कर सकती!

अभागे भारतीय पत्रकारों का वर्तमान जीवन
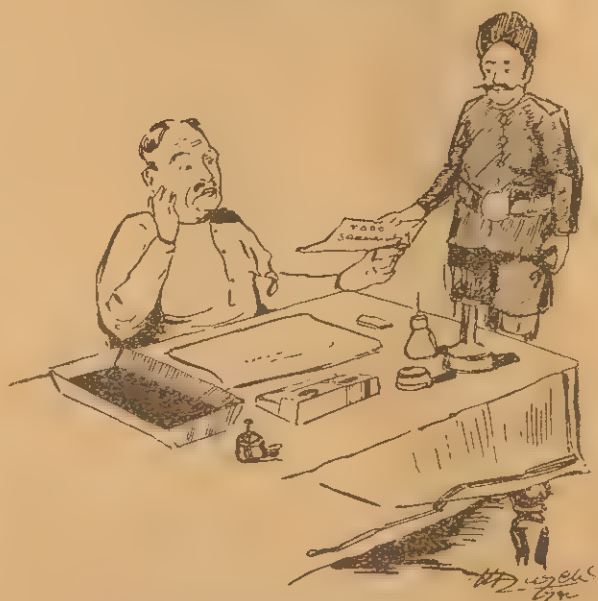
प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार ५,०००) रु० की ज़मानत फ़ौरन दाख़िल कीजिए!

प्रेस के कर्मचारी—यदि प्रेस बन्द करना हो तो हमारा वेतन पहिले अदा कर दीजिए!!

देश की विभूति—गाँधी

"यहाँ, भारतवर्ष में, गोलमेज़ के सम्बन्ध में जो समाचार आते हैं, उनमें कोई यथार्थता नहीं रहती। यह किसी की समझ में नहीं आता कि ऐसे समय में, जब कि देश में विद्रोह का दावानल प्रचण्ड वेग से प्रज्वलित हो रहा हो, गोलमेज़ में स्वतन्त्रता का कोई चार्टर तैयार किया जा सकता है। भारतीय, मज़दूर-सरकार का जो अपनी सहानुभूति लाठियों के प्रहार से दिखा रही है और अपने उन अवसरवादी देश-भाइयों का, जिन्होंने परिषद का निमन्त्रण स्वीकार किया है, ख़ूब मज़ाक़ उड़ाते हैं। जब बम्बई का एक कुली दूसरे को गाली देता है तब वह कहता है कि 'तुम शीघ्र गोलमेज़ में जाने लायक़ हो जाओगे।' गोलमेज़ प्रतिनिधियों में से आठ या दस पर भारतीयों का कुछ विश्वास है, वे इनका भी अनुगमन करने के लिए तैयार नहीं। भारत के सच्चे भाग्य-निर्माता तो इस समय हमारे जेलों में हैं। गाँधी की स्वीकृति के बिना यह आशा करना भी व्यर्थ है कि कॉन्फ्रेन्स जो शासन-विधान तैयार करेगी, भारत उस पर विचार करेगा। वे भारत के वर्तमान ऋषि और डिक्टेटर हैं। उनकी फ़ोटो उन किसानों के घरों में है, जिनके पास पहनने-ओढ़ने के थोड़े से चिथड़े और भोजन बनाने के थोड़े से पीतल के बर्तनों के सिवा कुछ नहीं है, वह हर एक दुकान पर टँगी मिलेगी, मेलों के अवसर पर उनकी फ़ोटो राधा-कृष्ण की तस्वीरों के साथ बेची जाती है। इस व्यक्ति को जेल में रख कर हमने उसे अन्तर्यामी बना दिया है।

दमन-चक्र और गोलमेज़

"ब्रिटेन की नीति का रुख़ देख कर कोई विचारवान व्यक्ति केवल एक बात कह सकता है। जब तक यह दमन-चक्र जारी रहेगा, कॉन्फ्रेन्स केवल समय का अप-व्यय है। भूत की विवेचना करना अब अनावश्यक मालूम होता है—परन्तु साइमन कमीशन में सभी अङ्गरेज़ सम्मिलित कर, और भारत के सम्बन्ध में अपनी नीति को गूढ़ रख कर, ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने महापातक किया है। हमारे सम्मुख सब से भारी समस्या भारत-वासियों के हृदय में विश्वास उत्पन्न करना है। चाहे वह लिबरल-दल का हो या कॉङ्ग्रेस-दल का। मुझे अभी तक ऐसा एक भी भारतीय नहीं मिला जिन्हें गवर्नमेण्ट की सदिच्छाओं में कुछ भी विश्वास हो। सभ्य पाठको! यदि गवर्नमेण्ट की पुलिस एक ओर तुम्हारे बच्चों को निर्दयतापूर्वक पीटती रहे और बम्बई के पार्क में राष्ट्रीय झण्डा फहराने के अपराध में तुम्हारी स्त्री को हवालात में बन्द करती जावे और दूसरी ओर औपनिवेशिक स्व-राज्य देने का जाल भी फैलावे तो क्या तुम कभी ऐसे सत्य पर विश्वास करोगे? यदि हम केवल अपने वचनों पर दृढ़ रहें, तो भारतीय शासन-विधान सम्बन्धी हर प्रकार शर्तें मानने के लिए तैयार हो जाएँगे। वाक्-चातुर्य से अब काम न चलेगा। यदि गवर्नमेण्ट साहस और दूरदर्शिता से काम ले तो अब भी एक नया सहानुभूति-सूचक वायु-मण्डल तैयार किया जा सकता है। और उसके लिए केवल एक चीज़ की आवश्यकता है। हमारी जेलों के दरवाज़े केवल महात्मा गाँधी के ही लिए नहीं, बल्कि सभी ६० हज़ार राजनैतिक क़ैदियों के लिए खुल जाना चाहिए। यदि हम केवल तीन ही माह के लिए शान्तिमय वायु-मण्डल प्राप्त कर सकें, तो समझौते जो अभी कठिन मालूम होते हैं और उस समझौते के लिए नत-मस्तक होना जो इतना उपहास और अपमान-जनक मालूम होता है, इतने सरल हो जाएँगे, कि उसे देख कर आश्चर्य का ठिकाना न रहेगा। यदि भारतीयों के साथ भारत के लिए एक सुचारु और व्यावहारिक शासन-विधान के सम्बन्ध में वाद-विवाद किया जाय तो हमारी सदिच्छाओं और उन मार्गों में कोई विशेष अन्तर नहीं रह जाता। अन्तर केवल अविश्वास का है, जो भयङ्कर रूप से दोनों के बीच में लहरें मार रहा है। और यह अविश्वास हमने पहले तो अपने स्वेच्छाचारी व्यवहार से और उसके बाद लाठी-प्रहार से उत्पन्न किया है। हम इस अविश्वास को केवल एक महत् कार्य द्वारा ही दूर कर सकते हैं।"

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी!!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

१ जनवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

काले क़ानून कहाँ-कहाँ जारी किए जायँगे ?

दिल्ली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि वायसराय ने सन् १९३० के १०वें और ११वें ऑर्डिनेन्सों अर्थात् इन्स्टीगेशन ऑर्डिनेन्स और प्रेस-ऑर्डिनेन्स को—बम्बई, युक्तप्रान्त, पञ्जाब, बिहार और उड़ीसा, आसाम और सीमा प्रान्त के गवर्नरों को अपने-अपने प्रान्त में जारी करने का अधिकार दे दिया है।

देशी राज्यों की नमकहलाली

'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' के सम्वाददाता के समाचार से मालूम होता है, कि पश्चिम-भारत के देशी राज्य, आन्दोलन-कारियों के पीछे सत्तू बाँध कर पड़े हुए हैं।

राजकोट स्टेट की शासन समिति ने एक निर्वासन-क़ानून की घोषणा की है, जिसके अनुसार वहाँ के मैजिस्ट्रेटों को ब्रिटिश-भारत से निर्वासित मनुष्यों से ५००) रु० तक की ज़मानत लेने का अधिकार दिया गया है। यदि वह मनुष्य ज़मानत न देवे तो उसे ६ मास की क़ैद की सज़ा दी जायगी। यदि इस क़ैद की अवधि के भीतर या इसके बाद भी वह ज़मानत न पेश करे तो उसे ३ साल की क़ैद की सज़ा दी जायगी।

इसी क़ानून के अनुसार जगन्नाथ देसाई नामक एक व्यक्ति को ६ महीने की क़ैद की सज़ा दी गई है।

कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता शिवनन्द जी को, जो हाल ही में जेल से छूट कर आए हैं और भावनगर गए हुए हैं, २४ घण्टे के भीतर स्टेट छोड़ देने की आज्ञा दी गई है। ऐसा नहीं करने पर उन्हें गिरफ़्तारी के अलावे २,०००) का जुर्माना भी अदा करना होगा।

कॉङ्ग्रेस-सभा पर लाठियों की वर्षा

कोयम्बटूर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की एक कॉङ्ग्रेस-सभा में उपस्थित सज्जनों को पुलिस ने उठ जाने की आज्ञा दी। उन लोगों के ऐसा करने से इन्कार करने पर पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेन्ट ने लाठी चलाने की आज्ञा दे दी।

ख़बर है कि क़रीब ३० स्वयंसेवक और कुछ सर्व-साधारण के लोग घायल हुए हैं। क़रीब १२ स्वयंसेवक ग़ैरक़ानूनी संस्था के सदस्य होने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए हैं।

प्रभात-फेरी वालों पर लाठी की मार

धारवाड़, २१ दिसम्बर—ख़बर है कि सिरसी में प्रभात-फेरी वालों को पुलिस ने लाठी से पीटा, जिसके फल-स्वरूप, कहा जाता है, क़रीब १२ मनुष्य घायल हुए हैं।

स्वयंसेवक पीटा गया

दोहद की एक ख़बर है कि वहाँ जमायतुल-उलेमा के कुछ मुस्लिम स्वयंसेवकों ने गत २३ दिसम्बर को शराब की दुकान पर धरना दिया। अब लेन में कुछ पियक्कड़ों ने एक स्वयंसेवक को पीटा और एक नाले में फेंक दिया। उसे कुछ चोट आई है। वह अभी अस्पताल में ही है।

* * *

जल्लाद

[श्री० 'उग्र']

प्रातः आठ-साढ़े आठ बजे का समय था। रात को किसी पारसी कम्पनी का कोई रद्दी तमाशा अपने पैसे वसूल करने के लिए दो बजे तक झख मार-मार कर देखते रहने के कारण सुबह नींद कुछ विलम्ब से टूटी। इसीसे उस दिन हवाख़ोरी के लिए निकलने में कुछ देर हो गई थी; और लौटने में भी।

मैं वायु-सेवन के लिए अपने घर से कोई चार मील की दूरी तक रोज़ ही आया-जाया करता था। मेरे घर और उस रास्ते के बीच में हमारे शहर का ज़िला-जेल भी पड़ता था, जिसकी मटमैली, लम्बी-चौड़ी और उदास चहारदीवारियाँ रोज़ ही मेरी आँखों के आगे पड़तीं और मेरे मन में एक प्रकार की अप्रिय और भयावनी सिहर पैदा किया करती थीं।

मगर उस दिन उसी जेल के दक्षिणी कोने पर अनेक घने और विस्तृत वृक्षों की अनुज्ज्वल छाया में मैंने जो कुछ देखा, उसे मैं बहुत दिनों तक चेष्टा करने पर भी शायद न भूल सकूँगा। मैंने देखा, मुश्किल से तेरह-चौदह वर्ष का कोई रूखा, पर सुडौल; दरिद्रता से सूखा, पर सुन्दर लड़का, एक पेड़ की जड़ के पास अर्द्धनग्नावस्था में पड़ा तड़प रहा है और हिचक-हिचक कर बिलख रहा है। उसी लड़के के सामने एक कोई परम भयानक पुरुष असुन्दर भाव से खड़ा हुआ, रूखे शब्दों में उससे कुछ पूछ-ताछ कर रहा था। यह सब मैंने उस छोटी सड़क पर से देखा, जो उस स्थान से कोई पचीस-तीस गज़ की दूरी पर थी। यद्यपि दिन की बाढ़ के साथ-साथ तपन की गरमी भी बढ़ रही थी, और यद्यपि मैं थका और अनमना सा भी था, पर मेरे मन की उत्सुकता उस दयनीय दृश्य का भेद जानने को मचल उठी। मैं धीरे-धीरे उन दोनों की नज़र बचाता हुआ उनकी तरफ़ बढ़ा।

अब मुझे ज्ञात हुआ—ओह! अब मुझे ज्ञात हुआ कि वह लड़का क्यों बिलख रहा था। मैंने देखा, उसके शरीर के मध्य-भाग पर, जो खुला हुआ था, प्रहार के अनेक काले और भयावने चिह्न थे। उसको बेत लगाए गए थे। बेत लगाए गए थे उस कोमल-मति ग़रीब बालक को अदालत की आज्ञा से? उफ़! मेरा कलेजा धक् से होकर रह गया। न्याय ऐसा अहृदय, ऐसा क्रूर होता है?

अब मैं आड़ में लुक कर उस तमाशे को न देख सका। झट मैं उन दोनों के सामने आ खड़ा हुआ और उस भयानक प्राणी से प्रश्न करने लगा—क्या इसको बेत लगाए गए हैं?

"हाँ" उत्तर देने से अधिक ग़ुर्रा कर उस व्यक्ति ने कहा—"देखते नहीं हैं आप? ससुरे ने ज़मींदार के बाग़ से दो कटहल चुराए थे।"

लड़का फिर पीड़ा और अपमान से बिलबिला उठा। इस समय वह छाती के बल पड़ा हुआ था; क्योंकि उसके घाव उसे आराम से बेहोश भी नहीं होने देना चाहते थे। वह एक बार तड़पा और दाहिनी करवट होकर मेरी ओर देखने की कोशिश करने लगा। पर अभागा वैसा कर न सका! लाचार फिर पहले ही सा लेट कर अवरुद्ध कण्ठ से कहने लगा—नहीं बाबू, चुरा कहाँ सका! भूख से व्याकुल होकर लोभ में पड़ कर मैं उन्हें चुरा ज़रूर रहा था, पर ज़मींदार के रखवालों ने मुझे तुरन्त ही गिरफ़्तार कर लिया।

"गिरफ़्तार कर लिया तो तेरे घर वाले उस वक़्त कहाँ थे?" नीरस और शासन के स्वर में उस भयानक पुरुष ने उससे पूछा—"क्या वे मर गए थे? तुझे बचाने—ज़मींदार से, पुलीस से, बेंत से—क्यों नहीं आए?"

"तुम विश्वास ही नहीं करते?" लड़के ने रोते-रोते उत्तर दिया—"मैंने कहा नहीं, मैं विक्रमपुर गाँव का एक अनाथ भिखमङ्गा बालक हूँ। मेरे माता-पिता मुझे छोड़ कर कब और कहाँ चले गए, मुझे मालूम नहीं। वे थे भी या नहीं, मैं नहीं जानता। छुटपन से अब तक दूसरों के जूठन और फटकारों में पला हूँ। मेरे अगर कोई होता तो मैं उस गाँव के ज़मींदार का चोर क्यों बनता? मेरी यह दुर्गति क्यों होती?× × × आह! बाप रे× × × बाप× × ×!"

वह ग़रीब फिर अपनी पुकारों से मेरे कलेजे को बेधने लगा। मैं मन ही मन सोचने लगा कि किस रूप से मैं इस बेचारे की कोई सहायता करूँ। मगर उसी समय मेरी दृष्टि उस भयानक पुरुष पर पड़ी, जो ज़रा तेज़ी से उस लड़के की ओर बढ़ रहा था। उसने हाथ पकड़ कर अपना बल देकर उसको खड़ा किया।

"तू मेरी पीठ पर सवार हो जा?" उसी रूखे स्वर में उसने कहा—"मैं तुझे अपने घर ले चलूँगा।"

"अपने घर?" मैंने विवश भाव से उस रूखे राक्षस से पूछा—"तुम कौन हो? कहाँ है तुम्हारा घर? और इसको अब वहाँ क्यों लिए जा रहे हो?"

"मैं जल्लाद हूँ बाबू!" लड़के को पीठ पर लादते हुए ख़ूनी आँखों से मेरी ओर देख कर लड़खड़ाती आवाज़ में उसने कहा—"मैं कुछ रुपयों का सरकारी ग़ुलाम हूँ। मैं सरकार की इच्छानुसार लोगों को बेत लगाता हूँ तो प्रति प्रहार कुछ पैसे पाता हूँ, और प्राण ले लेता हूँ तो प्रति प्राण कुछ रुपए।"

"फाँसी की सज़ा पाने वालों से तो नहीं, पर बेत खाने वालों से सुविधानुसार मैं रिशवत भी खाता हूँ। सरकार की तलब से मैंने तो बाबू यही देखा है—बहुत कम सरकारी नौकरों की गुज़र हो सकती है। इसीसे सभी अपने-अपने इलाक़ों में ऊपरी कमाई के 'कर' फैलाए रहते हैं। मैं ग़रीब छोटा-सा ग़ुलाम हूँ, मेरी रिशवत की चर्चा तो वैसी चमकीली है भी नहीं कि किसी के आगे कहने में मुझे कोई भय हो। मैं तो सब से कहता हूँ कि मुझे कोई पूजे तो मैं उसके सगे-सम्बन्धियों को 'सुच्चे' बेत न लगा कर 'हलके' लगाऊँ। और नहीं—और नहीं सड़ासड़! सड़ासड़!!"

उसने ऐसी मुद्रा बना ली, मानो वह किसी को बेत लगा रहा हो। वह भूल गया कि उसकी पीठ पर उसकी 'सड़ासड़' का एक ग़रीब शिकार काँप रहा है।

"मगर इस अनाथ को धोखे में 'सुचे' बेत लगा कर मैंने ठीक काम नहीं किया। इसने जेल ही में बताया था कि मेरे कोई नहीं है! मगर मैंने विश्वास नहीं किया। मैं अपने जिस शिकार का विश्वास नहीं करता, उसके प्रति भयानक हो उठता हूँ, और मेरा भयानक होना कैसा वीभत्स होता है, इसे आप इस लड़के की पीठ पर देखें। मगर इसे 'काट' कर मैंने ग़लती की है। यही न जाने क्यों मेरा मन कह रहा है।

"इसीसे बाबू मैं इसे अपने घर ले जा रहा हूँ, वहाँ इसके घाव पर केले का रस लगाऊँगा और इसको थोड़ा आराम देने के लिए 'दारू' पिलाऊँगा, बिना इसको चङ्गा किए मेरा मन सन्तुष्ट न होगा, यह मैं ख़ूब जानता हूँ!"

भैंसे की तरह अपनी कठोर और रूखी पीठ पर उस अनाथ अपराधी को लाद कर वह एक ओर बढ़ चला। मगर मैंने उसे बाधा दी—

"सुनो तो, मुझसे भी यह एक रुपया लेते जाओ। मुझको भी इस बालक की दुर्दशा पर दया आती है।"

"क्या होगा रुपया बाबू?"—भयानकता से मुस्करा कर उसने रुपए की ओर देखा और उसको मेरी उँगलियों से छीन कर अपनी उँगलियों में ले लिया।

"इसको 'दारू' पिलाना, पीड़ा कम हो जायगी। अभी एक ही रुपया जेब में था, मैं शाम को इसके लिए कुछ और देना चाहता हूँ। तुम्हारा घर कहाँ है? नाम क्या है?"

"मैं शहर के पूरब उस क़बरिस्तान के पास के डोमाने में रहता हूँ। डोमों का चौधरी हूँ। मेरा नाम रामरूप है—पूछ लीजिएगा।"

२

उस अनाथ लड़के का नाम 'अलियार' था, यह मुझे उक्त घटना के सातवें या आठवें दिन मालूम हुआ। ग्रामीणों में 'अलियार' शब्द 'कूड़ा-कर्कट' के पर्याय-रूप में प्रचलित है। उस लड़के ने मुझे बताया। उनके गाँव वालों का कहना है कि उसे पहले-पहल गाँव के एक 'भर' ने 'अलियार' पर पड़ा पाया था। उसी ने कई बरसों तक उसको पाला भी और उसका उक्त नाम-करण भी किया।

अलियार के अङ्ग पर के बेतों के घाव, वधिक रामरूप के सफल उपायों से तीन-चार दिनों के भीतर ही सूख चले; मगर वह बालक बड़ा दुर्बल-तन और दुर्बल-हृदय था। सम्भव है, उसको बारह बेतों की सज़ा सुनाने वाले मैजिस्ट्रेट ने, पुलिस की मायामयी डायरियों पर विश्वास कर, उसकी उम्र अठारह या बीस वर्ष की मान ली हो, मगर मेरी नज़रों में तो वह बेचारा चौदह-पन्द्रह वर्षों से अधिक वयस का नहीं मालूम पड़ा। तिस पर उसकी यह रूखी-सूखी काया! आश्चर्य!! किसी डॉक्टर ने किस तरह उसको बेत खाने योग्य घोषित किया होगा। जेल के किसी ज़िम्मेदार और शरीफ़ अधिकारी ने किस तरह अपने सामने उस बेचारे को बेतों से कटवाया होगा!!

जब तक अलियार खाट पर पड़ा-पड़ा कराहता रहा, अपने उस बेत खाने के भयानक अनुभव का स्वप्न देख-देख कर अपनी रक्षा के लिए करुण दुहाइयाँ देता रहा, तब तक मैं बराबर, एक बार रोज़, रामरूप की गन्दी झोपड़ी में जाता था और अपनी शक्ति के अनुसार प्रभु के उस असहाय प्राणी की मन और धन से सेवा करता था, मगर मेरे इस अनुराग में एक आकर्षण था और वह था जल्लाद रामरूप।

न जाने क्यों उसका वह 'अलकतरा' रङ्ग, उसकी वह भयानक नैपालियों-सी नाटी काया, उसका वह मोटा, वीभत्स अधर और पतला ओष्ठ, जिस पर घनी, काली, भयावनी तथा अव्यवस्थित मूँछों का भार अशो-

भायमान था, मुझे कुछ अपूर्व-सा मालूम पड़ता था। न जाने क्यों उसकी बड़ी-बड़ी, डोरीली, नीरस और रक्त-वर्ण आँखें मेरे मन में एक तरह की सिहर सी पैदा कर देती थीं। पर आश्चर्य! इतने पर भी मैं उसे अधिक से अधिक देखना और समझना चाहता था।

उसकी मिट्टी की झोपड़ी में उसके अलावा उसकी प्रौढ़ा स्त्री भी थी। एक दिन जब मैंने रामरूप से उसकी जीवनी पूछी और यह पूछा कि उसके परिवार का कोई और भी कहीं है या नहीं, तो उसने अपनी कहानी मुझे विचित्र सुनाई।

"बाबू" उसने बताया—"पुश्त दो पुश्त से ही नहीं, मेरे ख़ानदान में तेरह पुश्त से यही जल्लादी का काम होता है। हाँ, उसके पहले, मुसलमानी राज में, मेरे पुरखे डाके डाला करते थे। मेरे दादा के दादा ऐसे प्रतापी थे कि सन् ५७ के ग़दर में उन्होंने इसी शहर के उस दक्खिनी मैदान में सरकार बहादुर के हुकुम से पाँच सौ और तीन पचीस और दो दस आदमियों को चन्द दिनों के भीतर ही फाँसी पर लटका दिया था। उन दिनों वह आठों पहर शराब छाने रहा करते थे! और कैसी शराब? मामूली नहीं बाबू, गोरों के पीने वाली—अङ्गरेज़ी!"

मैंने उसे टोका—रामरूप! क्या अब भी फाँसी देने के पूर्व तुम लोगों को शराब मिलती है?

"हाँ, हाँ, मिलती क्यों नहीं बाबू, मगर 'देसी' की एक बोतल का दाम मिलता है, विलायती का नहीं, जिसको छान-छान कर मेरे दादा के दादा बाग़ियों के बाग़ी लोगों को काल के पालने पर झुला देते थे। वही मेरे ख़ानदान में सब से अधिक धनी और ज़बरदस्त भी थे। लम्बे-चौड़े तो वह ऐसे थे कि बड़े-बड़े पलटनिए साहब उनका मुँह तकर-तकर ताका करते थे। मगर उनमें एक दोष भी बहुत बड़ा था। वह शराब बहुत पीते थे। इसी में वह तबाह हो गए और मरते-मरते ग़दर की सारी कमाई फूँक-ताप गए। हाँ, मैं भूल कर गया बाबू! वह मरे नहीं, बल्कि शराब के नशे में एक दिन बड़ी नदी में कूद पड़े और तब से लापता हो गए। नदी के उस ऊँचे घाट पर हमारे दादा ने उनका 'चौरा' भी बनवाया है, जिसकी सैकड़ों डोम पूजा किया करते हैं, और हमारे वंश के तो वह 'वीर' ही हैं।"

अपने 'वीर' परदादा के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए, उनकी कहानी समाप्त करते-करते रामरूप ने धीरे से अपने दोनों कान उमेंठे।

"रामरूप!" मैंने कहा—"जाने दो अपने पुरखों की कहानी। वह बड़ी ही भयानक है। अब तुम यह बताओ कि तुम्हारे कोई बच्ची-बच्चा भी है?"

"नहीं बाबू!" किञ्चित् गम्भीर होकर उसने कहा—"मेरी औरतिया को कोई सात बरस हुए—एक लड़का हुआ ज़रूर था, मगर वह दो साल का होकर जाता रहा। बच्चे तो वैसे भी मेरे ख़ानदान में बहुत कम जीते हैं। न जाने क्यों। जहाँ तक मुझे मालूम है, मेरे किसी भी पुरखे का एक से ज़्यादा बच्चा नहीं बचा! मुझको तो वह भी नसीब नहीं। मेरी लुगैया तो अध-बूढ़ी हो जाने पर भी अभी बच्चा-बच्चा रिरियाया करती है। मगर यह मेरे बस की बात तो है नहीं। मैं तो आपही चाहता हूँ कि मेरे एक 'वीर' बच्चा हो, जो हमारे इस पुश्तैनी रोज़गार को मेरे बाद सँभाले, पर जब दाता देता ही नहीं, तब कोई क्या करे?"

"जब तक तुम्हारे और कोई नहीं है," मैंने उस जल्लाद के हृदय की थाह ली—"तब तक तुम इसी भिखमङ्गे को क्यों नहीं पालते-पोसते? तुमने कुछ अन्दाज़ लगाया है? कैसा है उसका मिज़ाज? यह तुम्हारे यहाँ खप जाने लायक़ है?"

"है तो, और मेरी लुगैया उसको चाहती भी है।" रामरूप ने ज़रा मुस्करा कर कहा—"पर मेरे अन्दाज़ से वह अख़ियार कुछ दब्बू और डरूं है। और मेरे लड़के को तो ऐसा निडर होना चाहिए कि ज़रूरत पड़े तो बिना डरे काल की भी खाल खींच ले और जान निकाल ले। यह मङ्गत छोकरा भला मेरे रोज़गार को क्या सँभालेगा?"

"कोई दूसरा रोज़गार देखो रामरूप," मैंने कहा—"छोड़ो इस हत्यारे व्यापार को, इसमें भला तुम्हें क्या आनन्द मिलता होगा। ग़ज़ब की है तुम्हारी छाती, जो तुम लोगों को प्रसन्न भाव से बेत लगाते हो और फाँसी के तख़्ते पर चढ़ा कर अपने परदादा के शब्दों में काल के पालने पर झुला देते हो! मगर यह सुन्दर नहीं!"

"हा हा हा हा!" रामरूप ठठाया—"आप कहते हैं यह सुन्दर नहीं! नहीं बाबू, हमारे लिए तो यह परम सुन्दर है। आप जानते ही हैं, मैं आप लोगों की 'नीच जाति' का एक तुच्छ प्राणी हूँ। आप तो नए ख़्याल के आदमी हैं, इसलिए न जाने क्या समझ कर इस लड़के के प्रेम में मेरी झोपड़ी तक आए भी हैं, नहीं तो मैं और मेरी जाति इस इज़्ज़त के योग्य कहाँ? मेरे घर वाले यदि जल्लादी न करते, तो आपलोगों के मैले साफ़ करते और कुत्तों को मारते। मगर—हा हा हा हा—कुत्तों को मारने से तो आदमी को मारना कहीं अच्छा है, इसे आप भी मानेंगे, यद्यपि मेरी समझ से कुत्ता मारना और आदमी मारना, जल्लाद के लिए एक ही बात है। हमारे लिए वे भी अपरिचित और निरपराध और ये भी। दूसरों के कहने से हम कुत्तों को भी मारते हैं, और कुत्तों से ज़्यादा समझदारों—आदमियों—को भी!"

३

इसके बाद मुझे एक काम के सिलसिले में बम्बई चला जाना पड़ा और वहाँ पूरे दो महीने रुकना पड़ा। वहाँ से लौटने पर मैं भूल गया उस जल्लाद को और उसके विचित्र परिचित उस अख़ियार को। प्रायः दो बरस तक मुझे उनकी कोई ख़बर न थी। फ़ुर्सत भी, अपनी मानसिक हाय-हायों से, इतनी न थी कि उनकी ओर ध्यान देता।

मगर उस दिन अचानक अख़ियार दिखाई पड़ा, और मैंने नहीं, उसीने मुझको पहचाना भी। मुझे इस बार वह कुछ अधिक स्वस्थ, प्रसन्न और सुन्दर मालूम पड़ा।

"कहाँ रहते हो आजकल अख़ियार?" मैंने दरियाफ़्त किया, और तुम्हारे वह अद्भुत मित्र कैसे हैं, जिनको तुम शायद सपने में भी न भूल सकते होगे?"

"वह मज़े में है," उसने उत्तर दिया—"और मैं तभी से उसीके साथ रहता हूँ। तभी से उसकी वह स्त्री मुझको अपने बेटे की तरह मानती और पालती है।"

"तो क्या अब तुम भी वही व्यापार सीख रहे हो और रामरूप की गद्दी के हक़दार बनने के यत्न में हो?"

"मुझे स्वयं तो पसन्द नहीं है उसका वह हत्या-व्यापार, मगर उसकी रोटी खाता हूँ तो बातें भी माननी ही पड़ती हैं। वह अब अकसर मुझे फाँसी या बेत लगाने के वक़्त अपने साथ जेल में ले जाता है और अपने निर्दय व्यापार को बार-बार मुझे दिखा कर मुझको भी अपना ही सा बनाना चाहता है।"

"तुम जेल में जाने कैसे पाते हो?" मैंने पूछा—"वहाँ तो बिना अफ़सरों की आज्ञा के कोई भी नहीं जाने पाता। फिर ख़ासकर बेत मारने और फाँसी के वक़्त तो और भी बाहरी लोगों को मनाही रहती है।"

"मगर" उसने उत्तर दिया—"अब तो मैं उसे 'मामा' कह कर पुकारता हूँ और वह मुझे अपनी बहिन का लड़का और अपना 'गोद लिया हुआ बेटा' कह कर अफ़सरों के आगे पेश करता है। कहता है, हमारे ख़ानदान के सभी लड़कों ने इसी तरह देख-देख कर इस विद्या का अभ्यास किया था।"

"तो तुम भी अब," मैंने एक उदास साँस ली—"जल्लाद बनने की धुन में हो?—वही जल्लाद, जिसके अस्तित्व के कारण उस दिन जेल के उस कोने में पड़े तुम तड़प रहे थे और अपने भावी मामा की ओर देख-देख कर उसकी क्रूरता को कोस रहे थे। बाप रे! तुम उस भयानक रामरूप को प्यार करते हो—कर सकते हो?"

मेरे इस प्रश्न पर कुछ देर तक अख़ियार चुप और गम्भीर रहा। फिर बोला—नहीं बाबू जी, मैं उस पशु को तो कदापि नहीं प्यार करता, बल्कि आप से सच कहता हूँ; उससे घृणा करता हूँ। जब-जब मेरी नज़र उस पर पड़ती है, तब-तब मैं उसे उसी रूप में देखता हूँ, जिस रूप में उस दिन देखा था, जिसकी आप अभी चर्चा कर रहे थे। पर मैं उसकी स्त्री का आदर करता हूँ, जो हत्यारे की औरत होने पर भी हत्यारिणी नहीं, माँ है। बस उसी के कारण मैं वहाँ रुका हूँ, नहीं तो मेरा बस चले तो मैं उस रामरूप को एक ही दिन में इस पृथ्वी पर से उठा दूँ, जो लोगों की हत्या कर अपनी जीविका चलाता है। और आप से छिपाता नहीं, मैं शीघ्र ही किसी न किसी तरह उसको इस व्यापार से अलग करूँगा, इसमें कोई भी सन्देह नहीं।

"वह ऐसा कपड़ा नहीं है अख़ियार" मैंने कहा—"जिस पर कोई दूसरा रङ्ग भी चढ़ सके। रामरूप को, जहाँ तक मैंने समझा है, स्वयं भगवान भी उसके व्यापार से अलग नहीं कर सकते। दूसरे जल्लाद चाहे कुछ कच्चे वधिक हों, मगर तुम्हारा यह मामा तो ज़रूर ही सभी जल्लादों का दादा-गुरु है। बचना तुम उससे—और उसको उसके पथ से विरत करने से। नहीं तो सावधान! वह ऐसा निर्दय है कि कुछ उलटी-सीधी समझते ही तुम्हारे प्राणों तक को मसल डालेगा।"

"पर बाबू" अख़ियार ने सच-सच कहा—"अब तो वह भी मुझको प्यार करने लग गया है। मुझे तो कभी-कभी ऐसा ही मालूम पड़ता है। आश्चर्य से चकित होकर कभी-कभी मेरी वह नई 'माँ' भी ऐसा ही कहा और सोचा करती है। वह क्रुद्ध होने पर अब भी अक्सर मेरी माँ को बुरी तरह मारने लगता है, पर मेरी ओर—बड़ा से बड़ा अपराध होने पर भी—न जाने क्यों, तर्जनी उँगली तक नहीं उठाता। मुझे अपने ही साथ खिलाता भी है, और यहाँ-वहाँ—जेल में और छोटे-मोटे अफ़सरों के पास—ले भी जाता है। मगर इतने पर भी मैं उससे घृणा करता हूँ। उसका अमङ्गल और सर्वनाश चाहता हूँ।"

"क्यों?"—मैंने साश्चर्य पूछा।

"न जाने क्यों—न जाने क्यों!" उसने उत्तर दिया—"मैं उस पशु को कभी प्यार नहीं कर सकता। अच्छा बाबू; आपको भी देर हो रही है, मुझे भी। यहाँ रहा तो फिर कभी सलाम करने आऊँगा। इस वक़्त जाने दीजिए—सलाम!"

४

मुझको यह विश्वास नहीं था कि वह दुबला-पतला भिखमङ्गा बालक अपने निश्चय का ऐसा पक्का निकलेगा कि एक दिन सारे शहर में तहलक़ा मचा कर छोड़ेगा। पर वह विचित्र निकला। एक दिन प्रातःकाल होते ही शहर में ज़ोरों की सनसनी फैली कि आज स्थानीय ज़िला-जेल से कोई बड़ा मशहूर फाँसी का क़ैदी भाग निकला है। यद्यपि उसके भागने के वक़्त पहरेदार वार्डरों

को कुछ आहट मिल गई थी, पर उससे कोई फ़ायदा नहीं हो सका। भागने वाला तो भाग ही गया। हाँ, भगाने वालों में से एक नवयुवक पकड़ा गया है।

समाचार तो आकर्षक था, ख़ासकर इसलिए कि फाँसी का कोई क़ैदी भागा था। मेरे जी में आया कि ज़रा जेल की ओर टहलता हुआ चलूँ। देखूँ, वहाँ शायद रामरूप या अख़ियार मिले। उन दोनों में से किसी के भी मिलने से बहुत सी भीतरी बातों का पता चल सकेगा।

कपड़े पहन और टहलने की छड़ी हाथ में लेकर जब मैं जेल के पास पहुँचा तो वहाँ का हङ्गामा देख कर एक बार आश्चर्य में आ गया। फाटक के बाहर अपने क्वार्टरों के सामने मैदान में ड्यूटी से बचे हुए अनेक वार्डर हताश और उदास खड़े गत रात्रि की घटना पर मनोरञ्जक ढङ्ग से वाद-विवाद कर रहे थे।

"भीतर बड़े साहब और कलेक्टर" एक ने दरियाफ़्त किया—"उसका बयान ले रहे हैं, ग़ज़ब कर दिया उस लौंडे ने। ऐसे ज़ालिम आदमी को भगा दिया, जिसे कि अब सरकार पा ही नहीं सकती। मैंने पहले इस छोकरे को ऐसा नहीं समझा था।"

"अरे उसको छोकरा कहते हो?" दूसरे मुसलमान वार्डर ने कहा—"साला चाहे तो बड़े-बड़ों को वश के छोड़ दे। मगर उस पाजी की वजह से बेचारा रामरूप पिस जायगा, क्योंकि अपना-अपना बोझ हलका करने के लिए सभी ग़रीब रामरूप पर टूटेंगे। उसी की वजह से वह जेल में आने-जाने और उसके भेद पाने लायक़ हुआ था। अब देखना है, रामरूप की डोंगी किस घाट लगती है।"

"वह भी भीतर अफ़सरों के सामने जेलर साहब द्वारा बुलाया गया है। शायद उसको भी बयान देना होगा।"

"नहीं!" किसी गम्भीर वार्डर ने कहा—"जेल के कर्मचारियों से जब कोई ग़लती हो जाती है, तब अपनी सारी ताक़त लगाकर वह उसे छिपाने की कोशिश करते हैं। मुझे ठीक मालूम है, जेलर ने जेल के प्रत्येक आदमी को समझा दिया है कि उस लड़के के सिलसिले में रामरूप का नाम लिया ही न जाय और यह साबित ही न होने दिया जाय कि वह पहले से यहाँ आता-जाता था। यह बात रामरूप को और उस लौंडे को भी समझा दी गई है।"

"मगर वह पाजी छोकरा, जिसने उस मशहूर डाकू को भगा कर हमारे सर पर आफ़त का पहाड़ ढा दिया है, जेलर की सलाह मानेगा ही क्यों? अगर अपने बयान में वही कुछ कह दे?"

"अजी कहेगा ज़रूर ही!" किसी बूढ़े वार्डर ने राय दी—"आख़िर इस भगाई में एक ख़ून भी तो हुआ है। माना कि ख़ून लड़के ने नहीं, उस डाकू के किसी साथी ने किया होगा, पर अगर दूसरे न पकड़े गए तो उस वार्डर का ख़ून तो इसी छोकरे के माथे मढ़ा जायगा। उफ़! बड़े जीवट की यह घटना हुई है। मैं तो तीस साल से इस नौकरी में हूँ। इस बीच में पचासों क़ैदियों के भागने की बातें मैंने सुनीं, मगर उनमें ऐसी घटना एक भी नहीं। फाँसी के क़ैदी का भाग जाना और भाग जाने पाना—कमाल है! अरे इस मामले में जेल का सारा 'स्टाफ़' बदल दिया जायगा—बड़े साहब से लेकर छोटे जमादार तक। लोग तनज़्ज़ल होंगे, सो अलग।"

इसी समय रामरूप जेल के फाटक के बाहर आता हुआ दिखाई पड़ा। सबकी नज़र उस पर पड़ी।

"वह देखो!" एक ने कहा—"वह बाहर आया, ओह! कैसी लाल हैं आज उसकी आँखें! कैसे उसके होठ फड़क रहे हैं! ज़रा बुलाओ तो इधर। पूछा जाय कि भीतर क्या हो रहा है।"

"क्या हो रहा है रामरूप?" अपनी ओर बुला कर वार्डरों ने उससे दरियाफ़्त किया—"क्या कलेक्टर के आगे तुम्हारा नाम भी लिया जा रहा है?"

"नहीं बाबू" उसने दाँत किटकिटा कर कहा—"आप लोगों की दया से मेरा नाम तो नहीं लिया जा रहा है। वह छोकरा भी इस बारे में चुप है। कुछ बोलता ही नहीं, सिवा इसके कि—हाँ, मैंने ही उस डाकू को भगा दिया है। मैंने ही मारा भी है उस वार्डर को। मेरी सहायता में और लोग भी थे, मगर मैं उन्हें इस बारे में नहीं फँसाना चाहता। मेरी सज़ा हो, मुझको फाँसी दी जाय। मैं तैयार हूँ।"

"फिर क्या होगा राम रूप?" एक ने पूछा—"लच्छन कैसे दिखाई पड़ते हैं?"

"क्या होगा, इसे आज ही कौन बता सकता है जमादार साहब?" उसने नीरस उत्तर दिया—"अभी तो सरकार उस डाकू और उसके साथियों को पकड़ने की कोशिश करेगी। इसके बाद उस साले भिखमङ्गे को फाँसी दी जायगी। इसमें कोई सन्देह नहीं, वह पाजी ज़रूर फाँसी पर लटकाया जायगा। मैं फाँसी पाने वालों की आँखें पहचान जाता हूँ। एक ज़माने से यही काम कर रहा हूँ, और सच कहता हूँ, भैरव बाबा की दया से मैं ही उस शैतान के बच्चे को मृत्यु के झूले पर टाँगूँगा।"

न जाने क्या विचार कर रामरूप एकाएक उत्तेजित हो उठा—"इन्हीं हाथों से मैंने अच्छे-अच्छों और बड़े-बड़ों को फाँसी पर टाँग दिया है। सच मानना जमादार साहब! आज तक चार-बीस और सात आदमियों को लटका चुका हूँ। अब यह साला आठवाँ होगा; हाँ-हाँ, आठवाँ होगा! आठवाँ होगा!!"

उत्तेजित रामरूप उस भीड़ से दूर एक ओर तेज़ी से बड़बड़ाता हुआ बढ़ गया। उस समय उससे कुछ पूछने की हिम्मत न हुई।

५

मगर आश्चर्य की बात तो यह है कि धीरे-धीरे वह क्रूर-हृदय जल्लाद उस अख़ियार को प्यार करने लग गया था। अख़ियार ने उस दिन बिलकुल सच कहा था। क्योंकि जब सेशन अदालत से, और किसी प्रामाणिक मुजरिम के अभाव में और प्रमाणों के आधिक्य से, अख़ियार को फाँसी की आज्ञा सुनाई गई, तब वही रामरूप कुछ ऐसा उत्तेजित हो उठा कि पागल-सा हो गया।

"हा हा हा हा?" वह अदालत के बाहर ही निस्सङ्कोच बड़बड़ाने लगा—"अब लूँगा—अब बचू से लूँगा बदला! क्यों न लूँ बदला उससे? मैंने सरकारी हुक्म से उसको, उस दिन बेत मारे थे, जिसका उसने मुझसे ऐसा भयानक बदला लिया है कि मेरी रोज़ी मारते-मारते बचा। वह तो बचा ही, उस पापी ने मेरी औरत को अपने प्रेम में खाट पकड़वा दी है। अब भोगो बेटे; अब झूलो पालना बचू! हा हा हा हा हा!!"

यद्यपि अख़ियार की फाँसी की आज्ञा सुन कर जल्लाद रामरूप अट्टहास कर उठा, पर मेरा तो कलेजा धक् से होकर रह गया। मुझको ऐसी आशा नहीं थी कि जिस कहानी का आरम्भ, उस दिन जेल के कोने में, अख़ियार और जल्लाद से मेरे परिचित होने से हुआ था, उसका अन्त ऐसा वीभत्स होगा। मैंने बड़े दुःख के साथ, उस दिन यह निश्चय किया कि अब मैं कभी उस रामरूप के सामने न जाऊँगा।

मगर संयोग को कौन टाल सकता है? जिस दिन अख़ियार को दुनिया के उस पार फेंक देने का निश्चय हो गया था, उससे एक दिन पूर्व मैंने उसको अन्तिम बार पुनः देखा। हाथ में एक हाँडी लिए परम उत्तेजित भाव से वह शहर की एक चौमुहानी पर खड़ा था और उसको घेरे हुए लड़कों, युवकों और बेकारों की एक भीड़ खड़ी थी। अजीब-अजीब प्रश्न लोग उस पर बरसा रहे थे और वह उनके रोमाञ्चकारी उत्तर दे रहा था। किसी ने पूछा—"तुम कौन हो भाई?"

"मैं?" वह मुस्कराया—"मैं महापुरुष हूँ। आह! तुम आश्चर्य कर रहे हो कि मैं महापुरुष क्योंकर हो सकता हूँ, क्योंकि मैं तो ख़ानदानी जल्लाद रामरूप हूँ। पर अफ़सोस! तुम नहीं जानते कि प्रत्येक जल्लाद महापुरुष होता है।"

"अच्छा यार" एक ने कहा—"हमने मान लिया कि तुम महापुरुष हो। पर यह तो बताओ कि आज यहाँ इस तरह क्यों खड़े हो? यह तुम्हारे हाथ में जो हाँडी है, इसमें क्या है?"

"यह हाँडी, × × ×" उसने हाँडी का मुँह भीड़ के सामने किया—"इसमें फाँसी की रस्सी है ज़रूर, यह असली नहीं है। असली रस्सी तो दुरुस्त करके आज ही जेल में ऐसे ही एक बर्तन में रख आया हूँ। वह रस्सी इससे कहीं सुन्दर, कहीं मज़बूत है। इसको तो केवल अभ्यास के लिए अपने साथ लेता आया हूँ। आज रात भर इन उस्ताद हाथों को फाँसी देने का अभ्यास ज़ोर-शोर से कराऊँगा! क्योंकि इस बार मामूली आदमी को नहीं लटकाना है। इस बार उसको लटकाना है, जिसके झूलते ही कोई आश्चर्य नहीं, जो मेरी औरतिया भी इस दुनिया से कूच कर जाय; क्योंकि वह उस पापी को प्यार करती है।"

किसी ने कहा—ज़रा अपने गले में इस रस्सी को लगा कर बताओ तो रामरूप कि फाँसी की गाँठ कैसे दी जाती है?

"हाँ, हाँ" उसने रस्सी को अपने गले के चारों ओर लपेट कर, गाँठ देना शुरू किया—"यह देखो, यह गले का फन्दा है और यह है मेरी मृत्यु-गाँठें। बस, अब केवल चबूतरे पर खड़ा कर झुला देने की कसर है। जहाँ एक झटका दिया कि बचू गए जम-धाम। यह देखो! यह देखो!"

अपने गले में उस रस्सी को उसी तरह लपेटे वह उन्मत्त रामरूप हाँडी फेंक कर, भीड़ को चीरता हुआ एक ओर बेतहाशा भाग गया!

* * *

दूसरे दिन अख़ियार को फाँसी देने के लिए जब सशस्त्र पुलिस, मैजिस्ट्रेट, जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट और अन्य अधिकारी एकत्र हुए तो मालूम हुआ कि जल्लाद रामरूप हाज़िर नहीं है!

पुलिस दौड़ी, जेल के वार्डर दौड़े, उसको ढूँढने के लिए। मगर वह मिल न सका। न जाने कहाँ ग़ायब हो गया। अख़ियार को उस दिन फाँसी नहीं हो सकी।

मगर उसी दिन दोपहर को कुछ लोगों ने रामरूप को शहर के बाहर एक बरगद की डाल में, फाँसी पर टँगे देखा। उसकी गर्दन में वही रस्सी थी, जिसको कुछ घण्टे पूर्व शहर के अनेक लोगों ने उसके हाथ में देखा था। उस समय भी उसकी आँखें खुली, भयानक और नीरस थीं। जीभ मुँह से कोई चार अङ्गुल बाहर निकल आई थी और उसका दानवी रूप ऐसा रोमाञ्चकारी हो गया था कि बड़े-बड़े हिम्मती तक उसकी ओर देख कर दहल उठते थे!

* * *

इटली का स्वाधीनता-संग्राम और फ़ैसिस्टवाद

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

विगत यूरोपीय महा संग्राम के बाद से जिन तीन राजनैतिक आन्दोलनों ने संसार की दृष्टि अपनी ओर आकर्षित किया है, उनमें प्रथम महात्मा लेनिन का बोलशेविकवाद, द्वितीय महात्मा गाँधी का अहिंसात्मक असहयोग और तृतीय वीरवर बेनितो मुसोलिनी का फ़ैसिस्टवाद हैं। इन तीनों आन्दोलनों के प्रवर्तकों का उद्देश्य प्रायः एक है; तीनों ही शान्ति के उपासक और संसार के मङ्गलाकांक्षी हैं। यद्यपि महात्मा गाँधी का आन्दोलन राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने की एक नवीन प्रणाली मात्र है और मुसोलिनी तथा लेनिन का उद्देश्य संसार के सामने एक सम्पूर्ण नई जीवन-प्रणाली रखना है, परन्तु महत्व की दृष्टि से तीनों ही विचित्र, अभिनव तथा मनन करने के योग्य हैं। महात्मा गाँधी की आन्दोलन-प्रणाली कसौटी पर है; फलाफल भविष्य के गर्भ में है। लेनिन के बोलशेविकवाद की चर्चा भी काफ़ी हो चुकी है। परन्तु मुसोलिनी के फ़ैसिस्टवाद से अभी हमारे देशवासी बहुत कम परिचित हैं, इसलिए हम आशा करते हैं कि 'भविष्य' के पाठकों को इटली के स्वाधीनता-संग्राम का दिग्दर्शन कराने के साथ ही, मुसोलिनी के फ़ैसिस्टवाद पर भी थोड़ा सा प्रकाश डालना अप्रासङ्गिक न होगा।

इटली संसार का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक देश है। राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक उत्थान तथा पतन के करिश्मे जितने इटली ने देखे हैं, उतने भारतवर्ष के सिवा और बहुत कम देशों को नसीब हुआ होगा। संसार के इतिहास में इटली कोई नवीन देश नहीं है। एक ज़माना था, जब रोमन सभ्यता का प्रभाव प्रायः समस्त यूरोप, अफ़्रिका और मध्य एशिया तक फैला हुआ था। उस समय यूरोप की समस्त जातियों को रोमन साम्राज्य के सामने सिर झुकाना पड़ा था। यहाँ तक कि पश्चिम एशिया को अपने विजय-दुन्दुभी से मुखरित कर रोमन वीर भारतवर्ष के द्वार तक पहुँच गए थे और कुछ दिनों के लिए उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य भी जमा लिया था। शिल्प, कला, इतिहास, साहित्य और व्यवहार-शास्त्र में इटली ने जो उन्नति प्राप्त की थी, उसकी समता करने का गौरव अभी तक किसी भी आधुनिक जाति को प्राप्त नहीं है।

यद्यपि वह गौरवशाली रोम साम्राज्य अतीत के गर्भ में चला गया है, परन्तु उसकी स्मृति आज भी मौजूद है। आज भी इटली का प्रत्येक नगर, ग्राम और जनपद मानो उसके अतीत की गौरवपूर्ण गाथा सुना रहा है। आज भी इटली अद्भुत और विचित्र है। इटली की कारीगरी, इटली की इमारतें, इटली की चित्रकला और इटली की मूर्तियाँ आज भी उसके महान् अतीत की साक्षी हैं।

ऐतिहासिक सम्पद की तरह प्राकृतिक सम्पद में भी इटली अपना सानी नहीं रखता। यह प्रायद्वीप रूम सागर से घिरा हुआ है। इसके पश्चिम में विसूवियस नाम का विख्यात ज्वालामुखी पर्वत है। इटली का जलवायु गरम है, इसलिए इसका सारा पहाड़ी प्रदेश लहलहाती लताओं से परिपूर्ण है। अङ्गूर, शहतूत और अञ्जीर आदि स्वादिष्ट फल इटली में बहुतायत से होते हैं। सिसली और सारडीनिया आदि बहुत से छोटे-छोटे द्वीप इटली के अधीन हैं। यहाँ बहुत सी ज्वालामुखी पहाड़ियाँ हैं। इटली की राजधानी रोम किसी समय संसार के बड़े और समृद्धिशाली नगरों में गिना जाता था। आज भी उसकी बराबरी में संसार के बहुत थोड़े नगर ठहर सकते हैं। रोम की सड़कों के किनारे की सुदृश्य मर्मर मूर्त्तियाँ, सुनते हैं, आज भी देखने वालों को मुग्ध कर देती हैं। यहीं ईसाई-जगत् के प्रधान गुरु या महन्त, पोप का निवास-स्थान है। इसका विशाल महल और सेण्ट पिटर्स का गिरजाघर संसार की दर्शनीय वस्तुओं में गिने जाते हैं। कहते हैं, इतना बड़ा और ऐसा सुन्दर गिरजाघर संसार में दूसरा नहीं है। पोप की चित्रशाला भी एक अनूठी चीज़ है। इटली का यह विचित्र नगर सात छोटी-छोटी पहाड़ियों पर बसा है। पहाड़ियों के बीच में एक समतल मैदान है। शहर के बाहर वह इतिहास-प्रसिद्ध क़बरिस्तान है, जहाँ धर्म-प्रचार के अपराध में हज़ारों ईसाई मार डाले गए थे। ईसाई-धर्म के आदि-काल में उन पर जो अत्याचार हुए थे, उनका निदर्शन वहाँ आज भी मौजूद है। वहीं वे इतिहास-प्रसिद्ध सुरङ्गें हैं, जहाँ अपने विरोधियों के भय से ईसाई साधु छिपे रहते और अवसर पाते ही निकल कर अपने पवित्र धर्म का प्रचार किया करते थे! इटली का नेपिल्स नगर देखने योग्य अच्छे शहरों में गिना जाता है। टस्कनी नगर के चित्रकार और कवि किसी समय सारे संसार में प्रसिद्ध थे। इटली में ही वह जिनोवा नगर है, जहाँ कोलम्बस ने जन्म लिया था। कोमो के खगोल-दर्शक यन्त्र संसार में प्रसिद्ध हैं।

परन्तु इस नश्वर जगत् में कुछ भी चिरस्थायी नहीं है। इसलिए रोमन सभ्यता भी चिरस्थायिनी नहीं हो सकी। सम्राट् सीज़र के निधन के बाद ही रोम साम्राज्य का पतन आरम्भ हुआ। द्वारकापुरी के यदुवंशियों की तरह रोमन जाति को भी आत्मकलह ने ध्वंस कर डाला। सीज़र के बाद अगस्टस का आविर्भाव हुआ। इसके बेहूदे शासन ने देश को और भी दुर्बल बना डाला। अन्त में उत्तर की बर्बर जातियों के आक्रमण से रोम सम्राज्य एकदम छिन्न-भिन्न होगया।

पन्द्रहवीं शताब्दी में इटालियन सभ्यता ने फिर सारे यूरोप पर अपना प्रभाव डाला था। इस समय इटली के दान्ते, दाविन्ची, टटेसिली, लियोलेपी, गेटो, गेलीलियो, मैडिसी और मैकियावेली आदि मनीषियों ने जिस ज्ञान का प्रचार किया था, उससे सारा यूरोप उद्भासित हो उठा था, परन्तु इन मनीषियों ने अपने राष्ट्र के लाभ के लिए कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं किया। उस समय इटालियन पण्डितों का अध्यात्मवाद, साहित्य और शिल्पकला सारे यूरोप में फैल गई थी। परन्तु इटालियन जाति में राष्ट्रीय एकता का तनिक भी सञ्चार नहीं हो सका। इस समय इटली में कितने ही अद्भुत विद्वानों का आविर्भाव हुआ। परन्तु किसी ने बिखरी हुई राष्ट्रीय शक्ति को केन्द्रीभूत करने की कोई चेष्टा नहीं की। जिस तरह बौद्ध साम्राज्य के पतन के बाद भारतवर्ष कितने ही छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया था, उसी तरह, उस समय इटली में भी दर्जनों छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गए थे। इन राज्यों में पारस्परिक हिंसा-द्वेष की भी कमी न थी। इससे बहुधा वे आपस में ही लड़ा-झगड़ा करते थे। यहाँ तक कि सामान्य स्वार्थ के रक्षार्थ प्रतिपक्षी को दबाने के लिए ये दूसरी जातियों से भी सहायता लेने में सङ्कोच नहीं करते थे। इन विभीषणों की कृपा से इटली पराधीनता की शृङ्खला में आबद्ध हो गया। बाहरी जातियों के बारम्बार आक्रमण के कारण इटालियनों के कष्ट की कोई सीमा न रही। आक्रमणकारियों ने इटली को छः भागों में बाँट लिया था। एकता के अभाव के कारण सारी जाति विजेता के अत्याचारों से जर्जरित हो उठी। इस तरह प्रायः आठ सौ वर्ष बीत गए।

गत चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ में स्वदेश-प्रेमिक कोलादिरिएञ्जी ने जन्म लिया और होश सँभालते ही देश की दुरवस्था देख कर काँप उठा। उसने देश-सेवा के लिए अपना अमूल्य जीवन उत्सर्ग कर दिया। अपनी सारी शक्ति लगाकर देशवासियों को जगाया। जो लोग हाथ पर हाथ धरे अवस्था के दास बने थे, उनकी आँखें खुल गईं। कोलादिरिएञ्जी ने उन्हें समझाया कि देश के राजे आपस में लड़-झगड़ कर हमें तबाह कर रहे हैं। इनकी स्वार्थपरता के कारण देश में दरिद्रता फैल रही है। इनके अत्याचार सहते-सहते हमारे नाकों दम है। बस अब हमें सङ्घबद्ध होकर इनके अत्याचारों के प्रतिकार के लिए तैयार हो जाना चाहिए। और कह देना चाहिए कि हमें किसी राजा की आवश्यकता नहीं है। हम अपना शासन स्वयं कर लेंगे—प्रजातन्त्र की स्थापना करेंगे।

कोलादिरिएञ्जी की वाणी का अच्छा प्रभाव पड़ा। अत्याचार-पीड़ित इटालियन मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता के लिए मर मिटने को तैयार हो गए। देखते-देखते कोलादिरिएञ्जी के अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। समस्त देश में नवीन जाग्रति, नवीन उत्साह फैल गया। परन्तु सदियों की जमी हुई मलिन मूर्खता को अल्प आयास से दूर कर देना मुश्किल था। सङ्गठित राजशक्ति को ध्वंस करने के लिए सङ्गठित जनबल की आवश्यकता थी। राजा ने कोलादिरिएञ्जी के विरुद्ध प्रचार करने के लिए सैकड़ों कर्मचारी नियुक्त किए। नतीजा यह हुआ कि राजशक्ति के भुलावे में आकर कुछ मूर्ख कोलादिरिएञ्जी के शत्रु बन गए और बेचारे को नाना प्रकार से अपमानित और लाञ्छित करके अन्त में जान से ही मार डाला!

यद्यपि अन्त में उन मूर्खों को अपनी ग़लती मालूम हो गई और पछता कर उन्होंने देशभक्त कोलादिरिएञ्जी की एक मर्मर मूर्ति स्थापित करके उसकी पवित्र स्मृति को अमर बना कर अपने पाप का थोड़ा सा प्रायश्चित्त भी कर डाला। परन्तु इस स्वदेश-प्रेमिक वीर की हत्या के कारण इटली फिर सैकड़ों वर्षों के लिए पराधीनता के गहरे गह्वर में समा गया!

उपर्युक्त लज्जाजनक दुर्घटना के प्रायः दो सौ वर्ष बाद—पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में—फिर एक देशभक्त का आविर्भाव हुआ। उसका शुभ नाम था, सावोना-

रोला। यह परम दयालु पुरुष पहले पादरी था। भव-भ्रान्त प्राणियों को पवित्रता, सत्यता और धार्मिकता का उपदेश दिया करता था। यही उसके पवित्र जीवन का प्रधान लक्ष्य था। परन्तु मातृ-भूमि का पराधीनता-जनित महान कष्ट देख कर उसका हृदय विचल गया। धर्म-प्रचार छोड़ कर वह राजनीति के कण्टकाकीर्ण मैदान में कूद पड़ा और पवित्रात्मा का कोलादिरिएञ्जी ने देशवासियों को जिस महामन्त्र से दीक्षित किया था, उसी मन्त्र की दीक्षा सावोनारोला ने भी देना आरम्भ कर दिया। हज़ारों इटालियन मातृ-भूमि को बन्धन-मुक्त करने के लिए तैयार हो गए। सावोनारोला की साधना सफल हुई! समस्त इटली में तो नहीं, परन्तु उसके फ़्लोरेन्स नामक प्रदेश में प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली क़ायम होगई।

इस समय इटली के अन्यान्य प्रदेशों में भी देश-प्रेम की हवा चल पड़ी थी। परन्तु एक विशेष राजनीतिक व्यापार को लेकर सावोनारोला और पोप से मनो-मालिन्य हो गया, इसलिए पापी पोप ने उसे जीते जी आग में झोंकवा दिया!

इसके बाद, उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग तक, इटली पूर्ववत् दुर्दशा-ग्रस्त रहा। इसी समय उत्तर इटली में फिर एक महापुरुष का आविर्भाव हुआ। इसने इटली को पुनः एकताबद्ध किया। यह इटली के पिडमेण्ट प्रदेश के राजा का मन्त्री था। इसका नाम कौण्टकैमेलियो कैवूर था।

कैवूर पहले पिडमेण्ट राज्य का एक छोटा सा ज़मींदार था। परन्तु था बड़ा मेधावी और परम चतुर। इसलिए तीस वर्ष की उमर में ही इसने राजनीतिक क्षेत्र में काफ़ी ख्याति प्राप्त कर ली थी। इसने 'लॉ रिसरजीमेण्टो' नामक एक साप्ताहिक पत्र निकाला और इस बात की चेष्टा में लगा कि किसी तरह शतधा विच्छिन्न इटली एक महान राष्ट्र के रूप में परिणत हो जाय। इधर पिडमेण्ट का चतुर नरेश इसे अपना प्रधान मन्त्री बनाने की फ़िक्र में था। इसलिए सन् १७५२ ईस्वी में कैवूर पत्र-सम्पादन छोड़ कर पिडमेण्ट राज्य का प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। परन्तु उसके जीवन का प्रधान लक्ष्य था इटली को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में परिणत करना। इसलिए राज-मन्त्री के पद पर रह कर भी उसने प्रचार-कार्य नहीं परित्याग किया। इसके साथ ही पिडमेण्ट को भी उसने एक प्रथम श्रेणी का राज्य बना डाला। राज्य-शासन की दक़ियानूसी प्रणाली को तोड़ कर सम्पूर्ण नवीन शासन-प्रणाली की प्रतिष्ठा की, राज्य की आर्थिक परिस्थिति का सुधार किया और इसके साथ ही एक शिक्षित तथा साहसी सेना का भी सङ्गठन किया। पिडमेण्ट के तत्कालीन नरेश विक्टर इमानुएल भी देश-प्रेमी नरेश था। इसने भी कैवूर के स्वप्न को सार्थक करने में काफ़ी मदद दी। फलतः इन दोनों महापुरुषों की समवेत चेष्टा से इटली का पिडमेण्ट राज्य जातीय अभ्युत्थान का केन्द्र-स्थल बन गया।

परन्तु इटली के दुर्दिनों का अभी अन्त नहीं हुआ था, इसलिए कैवूर और पिडमेण्ट-नरेश की चेष्टाओं का कोई प्रत्यक्ष फल दृष्टिगोचर नहीं हो सका। थोड़े दिनों के बाद ही इटली फिर कलह और पारस्परिक द्वेष का क्रीड़ास्थल बन गया। इसके बाद धीरे-धीरे कितने ही युग बीत गए। ऑस्ट्रिया और फ़्रान्स के शिकञ्जे में पड़ कर इटली फिर तबाह हो गया। यह दुरवस्था यहाँ तक बढ़ गई—देश इतना दुर्बल और निकम्मा बन गया था कि उसके पुनरुत्थान की कोई आशा ही नहीं रह गई!

इसी समय इतिहास-प्रसिद्ध फ़्रान्सीसी विद्रोह आरम्भ हुआ। यद्यपि यह विद्रोह फ़्रान्स में हुआ था, परन्तु उसके प्रभाव से यूरोप का कोई भी देश बाक़ी नहीं रह सका। इस विद्रोह के कारण निराशान्धकार-पूर्ण इटली में फिर आशा का विमल आलोक फैल गया। इटालियन युवकों का हृदय स्वतन्त्रता के लिए व्याकुल हो गया। परदेशियों के कठिन शृङ्खल से मातृभूमि को मुक्त करने की आकांक्षा प्रबल हो उठी। परन्तु उनकी भुजाओं में इतना बल कहाँ था, जो राजशक्तियों को उलट देते? खुल्लमखुल्ला कुछ करने का मौक़ा नहीं था, इसलिए कुछ उत्साही नौजवानों ने "कारबोनरी" नाम की एक गुप्त-समिति की स्थापना की और बड़ी सावधानी से धीरे-धीरे विद्रोह का सामान एकत्र करने लगे। कुछ दिनों के बाद एक तरुण तेजस्वी विद्यार्थी ने आकर इस गुप्त-समिति में योग दिया। इस अलौकिक शक्ति-सम्पन्न युवक का नाम था जोसेफ़ मेज़िनी। यह जैसा मेधावी और चतुर था, वैसा ही सत्साहसी और उत्साही भी था। इसके संयोग ने मानो सोने में सुगन्धि का कार्य किया। समिति में एक नवीन शक्ति का सञ्चार हो गया और थोड़े ही दिनों में मेज़िनी ने उसे एक शक्तिशाली संस्था के रूप में परिणत कर दिया। परन्तु समिति में जो कई त्रुटियाँ थीं, उन्हें हज़ार चेष्टा करके भी मेज़िनी दूर नहीं कर सका। इसलिए सन् १८२० में, जब प्रकाश्य विद्रोह की घोषणा की गई, तो उसे असफल ही रह जाना पड़ा।

परन्तु मेज़िनी वीर था। असफलता उसे निराश नहीं कर सकती थी। उसने देश को अच्छी तरह देख-सुन कर उसे नए ढङ्ग से गढ़ने का विचार किया। उसने अत्यन्त मनोहर और फड़कती हुई भाषा में स्वाधीनता के उच्च आदर्शों का प्रचार आरम्भ किया। एक बार की विफलता ने उसे अच्छी तरह सावधान कर दिया था। इसलिए अबकी उसने ख़ूब फूँक-फूँक कर क़दम रक्खा। उसकी वाणी और क़लम ने देश के नवयुवकों में एक नई शक्ति और नई आशा का सञ्चार कर दिया।

इसके बाद उसने "नवीन इटली" नाम की एक संस्था स्थापित की और बड़ी सावधानी से उसकी सदस्य-संख्या बढ़ाने लगा। जो उत्साही युवक इस संस्था के सदस्य बनाए जाते, उनके सम्बन्ध में काफ़ी छानबीन की जाती, और जब वे मेज़िनी की कठिन कसौटी पर खरे उतरते तो उनसे शपथ ली जाती। इतिहासकारों का कहना है कि इस शपथ की भाषा ऐसी ओजस्विनी और सारगर्भित थी कि एक बार उसका पारायण करते ही युवकों के दिल में स्वाधीनता का सञ्चार हो जाता था।

कुछ दिनों के बाद फिर विद्रोह की घोषणा की गई। परन्तु कुछ विश्वासघातकों ने उसे सफल नहीं होने दिया। मेज़िनी के सारे परिश्रमों पर पानी फिर गया और अन्त में उसे देश छोड़ कर भाग जाना पड़ा। परन्तु जान बचाने के लिए नहीं, वरन् एक बार फिर देश के भाग्य की परीक्षा करने के लिए। फलतः मातृभूमि की गोद से अलग जाकर भी वह देश का सच्चा सेवक निश्चेष्ट नहीं बैठा। वह नवीन इटली का जन्मदाता था, उसे अपने कर्तव्य के गुरुत्व का ज्ञान था। उसने पुनः नए सिरे से कार्य आरम्भ किया और तीसरे विद्रोह की तैयारी करने लगा।

इसी समय मशहूर इटालियन वीर गेरीबाल्डी का आविर्भाव हुआ। 'नवीन इटली' का एक उत्साही सदस्य तो वह पहले से ही था, अब वह मेज़िनी की दाहिनी भुजा बन गया। मेज़िनी अगर 'नवीन इटली' का मन्त्र-दाता ऋषि था, तो गेरीबाल्डी था स्वाधीनता-यज्ञ का प्रधान ऋत्विक। मेज़िनी के महामन्त्रों ने गेरीबाल्डी में एक नवीन शक्ति का सञ्चार कर दिया था। कल्पना की तूलिका से मेज़िनी ने जिस उच्च आदर्श का कमनीय चित्र अङ्कित किया था, उसे गेरीबाल्डी ने अपने बाहुबल द्वारा वास्तव में परिणत कर दिया था। इसलिए मेज़िनी को अगर इटली का मन्त्रगुरु कहा जाय तो गेरीबाल्डी को रणगुरु कहने में कोई अत्युक्ति न होगी। अस्तु।

इन दोनों वीरों की सम्मिलित चेष्टा से इटली का भाग्याकाश उज्ज्वल हो उठा। इटली के सभी प्रान्तों की प्रजा ने एक स्वर से प्रजातन्त्र की घोषणा कर दी। इसलिए ऑस्ट्रियन बिगड़ खड़े हुए। भयङ्कर युद्ध छिड़ा। वीरवर गेरीबाल्डी मानो इस अवसर की राह देख रहा था। समर छिड़ते ही वह कमर बाँध कर कूद पड़ा और वह रण-कौशल दिखाया कि शत्रुओं के दाँत खट्टे हो गए। परन्तु अभागे इटालियनों ने इस वीर का साथ नहीं दिया। इसलिए अबकी बार भी सफलता के दर्शन नहीं हो सके।

इटली के पिडमेण्ट प्रदेश का राजा विक्टर इमानुएल, जिसका ज़िक्र हम ऊपर कर आए हैं, केवल देशभक्त ही न था, वरन् प्रजातन्त्र का भी पक्षपाती था। यद्यपि उसकी कार्य-प्रणाली स्वतन्त्र थी, तथापि वह मेज़िनी और गेरीबाल्डी के साथ मिल कर कार्य करने का अवसर ढूँढ़ रहा था। गेरीबाल्डी की असाधारण वीरता की कथा सुन कर वह उसे अपनी सेना का प्रधान सेना-नायक बना कर शत्रुओं से लोहा लेना चाहता था। उसके सुयोग्य मन्त्री कैवूर की भी यही राय थी। अन्त में सुअवसर प्राप्त हुआ। कैवूर की चेष्टा से गेरीबाल्डी ने इमानुएल की सेना का प्रधान नायक बनना स्वीकार कर लिया।

गेरीबाल्डी के नाम में जादू था। जब लोगों ने सुना कि उसने इमानुएल के सेनापति का पद स्वीकार कर लिया है, तो समस्त देश में मानो आशा और उत्साह की आँधी सी आ गई। सेनापति गेरीबाल्डी की आह्वान-वाणी सुनते ही दल के दल जवान-बूढ़े, कृषक-कारीगर और मज़दूर-मुन्शी इमानुएल की सेना में भर्ती होने लगे।

गेरीबाल्डी बड़ी मुस्तैदी से सैनिकों को युद्ध-कला की शिक्षा देने लगा। मन्त्री-प्रवर कैवूर उन दिनों युद्ध-सम्बन्धी अन्यान्य उपकरण एकत्र करने में लगा था।

काफ़ी तैयारी हो जाने पर एक दिन ऑस्ट्रियनों के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी गई। लड़ाई छिड़ी और प्रबल आँधी का झोंका जिस तरह तृण के ढेर को उड़ा देता है, उसी तरह गेरीबाल्डी की सेना ने भी ऑस्ट्रियन सेना को देखते-देखते ठिकाने लगा दिया। ऑस्ट्रियन अपना सा मुँह लेकर भाग खड़े हुए।

इसके बाद और भी दर्जनों छोटी-मोटी लड़ाइयाँ हुईं और प्रत्येक बार गेरीबाल्डी ने विजय प्राप्त की। इसके साथ-साथ राजनीतिक संस्कार भी होते गए। विच्छिन्न और विभक्त इटली एकता-सूत्र में आबद्ध होकर एक बलशाली राष्ट्र के रूप में परिणत हो गया। पोप की पार्थिव क्षमता का भी विलोप हुआ। इन उत्साही वीरों की समवेत चेष्टा से सन् १८६० में उत्तर इटली का ट्रेनटिनो और वेनेसिया प्रदेश तथा मध्य इटली का रोम प्रदेश छोड़ कर अवशिष्ट सारा देश इमानुएल के अधीन कर दिया गया। सन् १८६६ में वेनेसिया से भी ऑस्ट्रियन मार भगाए गए। अन्त में पोप का रोम प्रदेश भी छीन लिया गया। गत यूरोपीय महायुद्ध के समय ऑस्ट्रियनों की अवशिष्ट सत्ता का भी इटली से विलोप हो गया।

यद्यपि सन् १८६० में इटली स्वतन्त्र हो गया था, परन्तु कैवूर के महा प्रस्थान के बाद से मुसोलिनी के अभ्युत्थान तक इटली में कोई ऐसा दूरदर्शी महापुरुष नहीं पैदा हुआ जो मेज़िनी और गेरीबाल्डी के परिश्रम के फल को स्थायी रूप प्रदान कर सकता। फलतः इतने पर भी इटली की दुर्दशा का अन्त नहीं हुआ। ऑस्ट्रिया का उखड़ा हुआ पैर फिर इटली की छाती पर जम गया। यहाँ तक कि धीरे-धीरे समस्त उत्तर इटली उसके क़ब्ज़े में आ गया। कई स्थानों पर प्रतिवेशी राज्यों के साथ इटली की कोई सीमा-रेखा भी निर्दिष्ट न रही।

फ़्रांको-प्रुसियन समर के बाद यूरोपियन शक्तियों को मालूम हुआ कि शीघ्र फिर कोई महासमर छिड़ने वाला है, इसलिए सभी अपनी-अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने की धुन में लगे। इसलिए इटली को भी अपनी बाहरी ताक़त बढ़ाने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसका परिणाम इटली के लिए बड़ा भीषण हो गया। सामरिक व्यय की इतनी वृद्धि हुई कि इटालियन सरकार को मजबूर होकर अन्यान्य ख़र्चे बन्द कर देना पड़ा। इसके साथ ही देश में दरिद्रता की भी वृद्धि हो गई।

इटालियन जन-नायकों की राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण सारे देश में एक प्रकार की विशृङ्खलता सी फैल गई। पूर्व-काल में स्वेच्छाचारी राजाओं द्वारा शासित होने के कारण मानो यह शासन-प्रणाली इटली की तमाम रगों में घुस गई। यद्यपि कैवूर इटली को एकताबद्ध करने के लिए अङ्गरेज़ों की तरह "पार्लामेण्टरी" शासन-प्रणाली की प्रतिष्ठा कर गया था। परन्तु इटली की अशिक्षित प्रजा इससे कोई लाभ नहीं उठा सकी। इसलिए विगत यूरोपीय महायुद्ध के पहले इटली की अभ्यन्तरीय अवस्था अत्यन्त विशृङ्खल हो उठी। पार्लामेण्ट के सदस्य विभिन्न दलों में विभक्त हो गए। स्वदेश-प्रेमी नेताओं का स्थान स्वार्थपर क्षमता-लोभियों ने ग्रहण कर लिया। जनता का अर्थ हड़प जाने के लिए बहुतों ने पार्लामेण्ट में अपना-अपना दल बना लिया। इससे बारम्बार मन्त्रि-सभा का पतन होने लगा। कोई भी मन्त्रि-सभा स्थायिनी या शक्तिशालिनी न हो सकी। आवश्यकीय क़ानून-क़ायदों का निर्माण पार्लामेण्ट के बदले राजा के आदेशानुसार होने लगा। यह अवस्था यहाँ तक पहुँच गई कि कई वर्षों तक पार्लामेण्ट में सरकारी बजट और आय-व्यय की आलोचना ही नहीं हो सकी। देश की यह दुरवस्था देख कर कितने ही देश-प्रेमिक और जन-नायक जर्मनी या ऐसे ही किसी शक्तिशाली राष्ट्र के हाथों में इटली का शासन-सूत्र सौंप देने की बात सोचने लगे। इतने में सारे यूरोप में सन् १९१४ की रण-दुन्दुभी बज उठी। इटली को भी बाध्य होकर समर-क्षेत्र में अवतीर्ण होना पड़ा। उस समय इटली की जनता की बाग-डोर बेनितो मुसोलिनी के हाथ में थी और इटली के सुप्रसिद्ध महाकवि डी० एनानजियो आदि कितने ही प्रतिष्ठित व्यक्ति मुसोलिनी के मतानुयायी थे। महायुद्ध छिड़ने के साल भर बाद इटली जर्मनी और ऑस्ट्रिया से मित्रता तोड़ कर इङ्गलैण्ड और फ़्रान्स के दल में आ मिला।

इस महा संग्राम में इटली ने किस तरह भाग लिया था और क्या-क्या किया था, इन बातों की आलोचना करना हमारा उद्देश्य नहीं। इसलिए इस सम्बन्ध में केवल इतना ही कह देना यथेष्ट होगा कि ६ लाख इटालियन योद्धा इस युद्ध में काम आए थे। स्वयं मुसोलिनी घायल होकर महीनों तक अस्पताल में पड़ा था और अन्त में युद्ध के अनुपयुक्त होकर घर लौट आया। अस्तु।

इस महायुद्ध में मित्र-शक्ति की विजय हुई। इटली ने ऑस्ट्रिया से अपना ट्रेण्टिनो प्रदेश वापस ले लिया, परन्तु उसे जो धन और जन की क्षति उठानी पड़ी, उसकी पूर्ति कठिन हो गई। यह धक्का इतना करारा था कि इटली के लिए सँभालना कठिन हो गया। इधर यूरोप के सोशलिस्टों ने वावेला मचाया कि इटली व्यर्थ ही इस महासमर में कूद पड़ा था। देश में विषम अर्थाभाव उपस्थित हो गया। सारा शिल्प-वाणिज्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया। दरिद्रता और असन्तोष के कारण दङ्गा-फ़साद, हड़ताल और गृह-कलह का बाज़ार गरम हो उठा। लोगों के दुःख और दुर्दशा की सीमा न रही। इस समय जो लोग सरकार के कर्णधार थे, वे अपनी हीन प्रवृत्तियों का परिचय देने लगे। इधर रूस के बोलशेविकों के उकसाने से इटली के सोशलिस्टों ने कल-कारख़ानों पर अपना क़ब्ज़ा करके इटली में रूस की तरह सोवियट शासन की प्रतिष्ठा का स्वप्न देखना आरम्भ किया। सरकार के सूत्रधार घबरा कर श्रमिक नेताओं के साथ समझौता करने लगे। भावी अराजकता और भीषण दुर्भिक्ष की सम्भावना देख कर देश-हितैषी घबरा उठे।

परन्तु असीम क्षमताशाली मुसोलिनी ने अग्रसर होकर इटली को दुर्दशाग्रस्त होने से बचा लिया। युद्ध से लौटे हुए सिपाहियों का सङ्गठन करके, उसने पहले से ही 'फ़ेसिस्ट' आन्दोलन की नींव डाल रक्खी थी। युद्ध में ऑस्ट्रिया और जर्मनी से हार जाने तथा सन्धि-सभा में मित्र-शक्तियों की बेउनवानी देख कर उसके दिल को गहरी चोट लगी थी। वह उसी समय से इटली को एक ज़बरदस्त राष्ट्र के रूप में परिणत करने का स्वप्न देखने लगा।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

[श्री० 'इतिहास-कीट', एम० ए०]

नाना फड़नवीस

मराठा साम्राज्य के पतन का इतिहास समस्त भारत के पतन की भाँति अदूरदर्शिता और विश्वासघात के अनेक कलुषित उदाहरणों से भरा पड़ा है। जिन नीति-निपुण माण्डलिक नरेशों और पराक्रमी सेनापतियों ने उन्नतिशील मराठा साम्राज्य को शक्ति और विस्तार प्रदान करने में अपूर्व राजनीति-कौशल और प्रशंसनीय वीरत्व का परिचय दिया था; उन्हीं के सामने, जब विदेशी कूटनीतिज्ञों ने प्रलोभन और कपट का जाल फैला दिया, तो वे अपने प्यारे देश के साथ विश्वासघात तक करने में कुण्ठित न हुए! जिन माण्डलिक नरेशों को मराठा साम्राज्य का अचल आधार-स्तम्भ होना चाहिए था, उन्हीं ने पारस्परिक ईर्षा और द्वेष से अन्ध होकर एक-दूसरे का सर्वनाश करने में विदेशी डाकुओं की सहायता की; और जिन विजयी सेनापतियों को राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का सच्चा रक्षक होना चाहिए था, उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ और क्षुद्र प्रलोभनों के वशीभूत होकर चरित्रहीन विदेशी बनियों के सामने अपना गौरवान्वित मस्तक नत कर दिया। उस समय के मराठे राजनीतिज्ञों और नरेशों का व्यवहार देख कर अनायास मुँह से निकल पड़ता है कि उनमें देश-भक्ति या दूरदर्शिता का लेश-मात्र भी शेष नहीं रह गया था!!

मराठा साम्राज्य के सञ्चालकों एवं माण्डलिक नरेशों की आँखों के सामने इस प्रकार की घटनाओं के अनेक उदाहरण विद्यमान थे, जिनमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारियों ने किसी भारतीय नरेश या सेनापति को कुछ प्रलोभन देकर उससे मैत्री की, और उसकी सहायता से किसी अन्य राजा का राज्य जीतने के बाद अन्त में अपने मित्र नरेश या सेनापति का भी सर्वस्व हरण कर लिया। कुछ ही वर्षों के भीतर-भीतर मीरजाफ़र से लेकर अमींचन्द तक कितने ही देश-द्रोहियों की शोचनीय दुर्दशा का दृश्य इतना करुण था कि कोई भी जागरूक राजनीतिज्ञ इन घटनाओं की उपेक्षा नहीं कर सकता था। किन्तु ये प्रत्यक्ष घटनाएँ मराठा राजनीतिज्ञों की आँखें खोलने में असमर्थ रहीं!

मराठों की नैतिक दशा

छत्रपति शिवाजी की मृत्यु के ७५ वर्षों के भीतर ही, अठारवीं शताब्दी के मध्य में मराठा साम्राज्य उन्नति के शिखर पर पहुँच चुका था। वीरवर राघोबा ने सुदूर दिल्ली और लाहौर तक के प्रदेशों को जीत कर अफ़ग़ानों को भारत की सीमा से बाहर निकाल दिया था। दिल्ली के सम्राट तक मराठों के अधीन हो गए थे। छत्रपति शिवाजी के वंशज अभी तक सतारा की गद्दी पर विराजमान थे। परन्तु उनकी अयोग्यता के कारण साम्राज्य का सारा प्रबन्ध पेशवा के कुशल और दक्ष हाथों में था। पेशवा के अतिरिक्त मराठा साम्राज्य के चार आधार-स्तम्भ या मराठा-मण्डल के चार प्रमुख सदस्य थे—गायकवाड़, सिन्धिया, भोसला और होलकर। इन पाँच नीति-कुशल शासकों के सञ्चालन में मराठा साम्राज्य इतना प्रबल और शक्तिशाली हो गया था कि एक बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि यह नव-जाग्रत विशाल शक्ति भारत को दासत्व की शृङ्खला से सदा के लिए मुक्त कर देगी। किन्तु भारतभूमि को अपने देशद्रोही कुपूतों के पापों का प्रायश्चित्त करना अभी शेष था! मराठा साम्राज्य की शक्ति और विस्तार के साथ ही साथ मराठे सरदारों की स्वार्थपरता और पारस्परिक स्पर्धा भी उग्रता की चरम-सीमा पर पहुँच चुकी थी। यह द्वेषाग्नि अपनी नाशक ज्वाला को प्रकट करने के लिए अवसर ढूँढ ही रही थी कि अफ़ग़ानों के सङ्घर्ष ने वह अवसर बहुत शीघ्र ही उपस्थित कर दिया। पारस्परिक कलह की ज्वालामुखी का प्रथम विस्फोट पानीपत के मैदान में हुआ—जिस समय अहमदशाह अब्दाली और मराठों की सेनाएँ घमासान युद्ध में व्यस्त थीं, ठीक उसी नाज़ुक अवसर पर मलहारराव होलकर ने देश के साथ विश्वासघात किया! मराठे सेनापतियों के लिए जिस समय मिल कर काम करने की सब से बड़ी आवश्यकता थी, उसी समय विदेशी शत्रुओं के इशारे पर नाचने वाले मलहारराव ने अपनी सेना को युद्ध-भूमि से हट जाने की आज्ञा दी। मलहारराव के रण से विमुख होते ही मराठी सेना के पाँव उखड़ गए। इस एक विश्वासघात का भारत के इतिहास पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि पानीपत के तीसरे युद्ध के बाद उत्तर भारत में मराठों का प्रवेश पुनः कभी न हो सका।

मलहारराव होलकर के गर्हित कर्म के बाद तो मराठे सेनापतियों और नरेशों में देश के साथ विश्वासघात करने की परिपाटी सी स्थापित हो गई!! जिन वीर सेनापतियों ने अपने अखण्ड भुजबल और असीम पराक्रम से अटक से कर्नाटक और बङ्गाल से गुजरात तक का विशाल प्रदेश जीत कर पेशवा को एक प्रकार से समस्त भारत का क्रियात्मक सम्राट बना दिया था, उन्होंने नीति और कौशल को तिलाञ्जलि देकर, पेशवा के विरुद्ध षड्यन्त्र रचे। प्रसिद्ध मराठा सेनापति राघोबा अङ्गरेज़ों

के बहकावे में आकर पेशवा का सब से भयानक शत्रु बन बैठा! उसने अपने भतीजे माधोराव पेशवा को धोखा देकर स्वयं पेशवा बनने के लिए अङ्गरेज़ों से गुप्त सन्धि की। मराठा-मण्डल के प्रमुख सदस्यों—गायकवाड़, सिन्धिया, भोसला और होलकर—में से प्रत्येक ने अपने अधिराज पेशवा को धोखा दिया और कम्पनी के कूटनीतिज्ञ अधिकारियों के बहकावे में आकर एक-दूसरे के राज्य पर आक्रमण तक किए! गायकवाड़ ने प्रकट रूप से पेशवा के विरुद्ध विद्रोह किया। और गुजरात में अङ्गरेज़ों के पैर सदा के लिए जम जाने दिए। माधोजी सिन्धिया ने, जो पेशवा की ओर से अङ्गरेज़ों को गुजरात से निकाल भगाने के लिए भेजा गया था, जान-बूझ कर अङ्गरेज़ों पर आक्रमण नहीं किया। उसने अङ्गरेज़ों से पुरस्कार पाने की दुराशा में अपने देश को विदेशी लुटेरों द्वारा मनमाने तौर पर लूटे जाने के लिए अरक्षित छोड़ दिया! मूदाजी भोसला ने पेशवा के साथ एक ऐसे समय पर विश्वासघात किया, जब मराठा साम्राज्य के हित की दृष्टि से पेशवा को मूदाजी की सहायता की सब से बड़ी आवश्यकता थी। जिस समय मराठा साम्राज्य पर चारों ओर से विपत्तियों के बादल मँडरा रहे थे, उस समय अङ्गरेज़ों को गुजरात से भगाने के अभिप्राय से पेशवा के मन्त्री ने मूदाजी को बङ्गाल पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी; किन्तु मूदाजी भोसला, मराठा साम्राज्य के सब से बड़े शत्रु—कम्पनी के कर्मचारियों से गुप्त सन्धि करके बङ्गाल पर आक्रमण करने से विमुख रहा। आदर्श-चरित महारानी अहल्याबाई होलकर के अयोग्य उत्तराधिकारी तुकाजी होलकर ने, किसी कारण के न रहते हुए भी, केवल मात्र विदेशी कूटनीतिज्ञों के कृपापात्र बनने की पापमय अभिलाषा से, अपने निष्कपट मित्र माधोजी सिन्धिया के राज्य पर आक्रमण किया। इस शोचनीय दुर्घटना के थोड़े ही दिनों बाद अदूरदर्शी यशवन्तराव होलकर ने तो एक प्रकार से मराठा साम्राज्य का लगभग सर्वनाश ही कर दिया। जिस समय तत्कालीन महाराष्ट्र का एकमात्र राजनीतिज्ञ दौलतराव सिन्धिया मराठों की रही-सही शक्ति को सुरक्षित और सङ्गठित करने के सम्बन्ध में पूना में पेशवा के साथ परामर्श कर रहा था, उस समय अङ्गरेज़ों के बहकावे में आकर यशवन्तराव होलकर ने दौलतराव सिन्धिया के राज्य पर आक्रमण किया। वहाँ से आगे बढ़ कर उसने पूना पर आक्रमण किया और पेशवा को पूना छोड़ कर भागने के लिए विवश किया। इस प्रकार मराठे देश-द्रोहियों ने अपने पैरों में आप ही कुल्हाड़ी मार ली और अपने गर्हित अस्तित्व के साथ-साथ समस्त भारत की स्वतन्त्रता को भी ले डूबे!

तत्कालीन भारत के नरेशों और राजनीतिज्ञों की अदूरदर्शिता और देशद्रोह को देख कर हृदय आश्चर्य और ग्लानि से भर जाता है। जिस समय भोसला का सर्वनाश किया जा रहा था, उस समय सिन्धिया और होलकर अपनी-अपनी राजधानियों में सुख की नींद सो रहे थे! जिस समय नाश की शक्ति ने सिन्धिया की ओर रुख मोड़ा, उस समय भोसला और होलकर निश्चिन्त बैठे हुए थे!! जिस समय कम्पनी की साम्राज्य-लिप्सा की अग्नि में होलकर की स्वतन्त्रता की आहुति दी जा रही थी, उस समय सिन्धिया और भोसला के दरबार में शायद ख़ुशियाँ मनाई जा रही थीं!!! ये तो भारतवासियों की अदूरदर्शिता और अपने देश के साथ विश्वासघात करने के उन उदाहरणों में से थोड़े से हैं, जिनका उल्लेख इतिहास के पृष्ठों में हुआ है, किन्तु इनके अतिरिक्त सेना के सिपाहियों से लेकर राजमहल के नौकरों तक में से कितने विश्वासघातक, विदेशी षड्यन्त्रकारियों की ओर मिले रहे होंगे, इसका अनुमान लगाना असम्भव है!!!

नाना फड़नवीस

नाना फड़नवीस

मराठा साम्राज्य का अन्तकाल जहाँ इस प्रकार अदूरदर्शिता के अन्धकार और निराशा के बादलों से आच्छन्न था, वहाँ उसमें प्रकाश की ज्योति और आशा के चमकते हुए नक्षत्रों का नितान्त अभाव न था। मराठा साम्राज्य में जहाँ राघोबा और माधोजी सिन्धिया के समान स्वार्थी विश्वासघातक थे, वहाँ सखाराम बापू और नाना फड़नवीस के समान स्वार्थत्यागी देशभक्त भी थे। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की रक्षा के प्रयत्न में अन्तिम पेशवा बाजीराव के मन्त्रियों—ख़ुरशेद जी जमशेद जी मोदी और त्र्यम्बक जी—का बलिदान इतना उज्ज्वल है कि संसार की कोई भी जाति ऐसे नीतिज्ञ देशभक्तों को पाकर अपने को गौरवान्वित समझ सकती है। किन्तु दूरदर्शिता और देशभक्ति दोनों के विचार से महाराष्ट्र के सभी राजनीतिज्ञों में नाना फड़नवीस का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। नाना फड़नवीस अपने युग का भारतवर्ष का सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ था। उसने एक ओर जहाँ हेस्टिंग्स तथा वेलज़ली के समान धूर्त साम्राज्यवादियों की कुटिल कूटनीति का सफलतापूर्वक सामना किया, वहाँ दूसरी ओर अपने ही देशभाइयों की विश्वासघातकता के नाशक प्रभाव से अपने देश की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखने में भी उसे कम सफलता न मिली। नाना फड़नवीस जब तक जीवित रहा, तब तक उसने पेशवा-दरबार के विरुद्ध विदेशियों की एक चाल को भी सफल न होने दिया। उसने व्यक्तिगत कष्ट सहे, पारिवारिक आपदाएँ झेलीं; अपनी अमूल्य सेवाओं के पुरस्कार में वह अपने ही देशभाइयों द्वारा जेल में बन्द किया गया; किन्तु देशभक्त नाना फड़नवीस ने पेशवा-दरबार की निस्स्वार्थ सेवा से कभी मुँह न मोड़ा।

विदेशी व्यापारियों के सम्बन्ध में नाना फड़नवीस की सदा यह नीति रही कि उन्हें किसी भी प्रकार देश में पैर रखने को स्थान न मिलना चाहिए। एक बार नाना ने माधोजी सिन्धिया को अङ्गरेज़ों से मित्रता करने की हानियाँ बताते हुए लिखा था—"अङ्गरेज़ों को इस साम्राज्य में पैर रखने की जगह नहीं मिलनी चाहिए। यदि उन्हें पैर रखने की जगह मिल गई तो सारा साम्राज्य ख़तरे में पड़ जायगा।" नाना फड़नवीस की यह उक्ति कितनी दूरदर्शितापूर्ण थी, इसे सोच कर आज भी नाना के प्रति हृदय से श्रद्धा का स्रोत उमड़ पड़ता है। नाना फड़नवीस ने आजीवन इस नीति का इतनी कठोरतापूर्वक पालन किया कि पेशवा-दरबार में रहने वाले चार्ल्स मैलेट नामक अङ्गरेज़ी राजदूत को हार मान कर पूना से एक पत्र में लिखना पड़ा—

"As long as Nana remained supreme at the Poona Court, they (the British) should never dream of obtaining a firm footing in the Marhatta Kingdom."*

अर्थात्—"पूना-दरबार में जब तक नाना की प्रधानता है, तब तक हमें (अङ्गरेज़ों को) स्वप्न में भी मराठा साम्राज्य में पैर जमा सकने की आशा नहीं रखनी चाहिए।" मराठा साम्राज्य के पतन-रूपी दुःखान्त नाटक में नाना फड़नवीस ही एकमात्र ऐसा राजनीतिज्ञ, देशभक्त और स्वार्थ-त्यागी पात्र था, जो कभी अङ्गरेज़ व्यापारियों के चङ्गुल में नहीं फँसा, जिसने आत्मीय जनों द्वारा अपमानित और प्रताड़ित होकर भी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के टिमटिमाते हुए दीपक को प्रकाशित रक्खा और जिसने आजीवन अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की ओर कभी दृष्टिपात नहीं किया।

नाना फड़नवीस के पूर्वज पेशवा-दरबार में राज्य के आय-व्यय का हिसाब लिखने का काम करते थे। बाल्यावस्था में नाना फड़नवीस का नाम बालाजी जनार्दन था। बालक बालाजी जनार्दन पेशवाओं के विशेष कृपा-पात्र थे। इन्हें पेशवाओं के सामीप्य के कारण मराठा साम्राज्य की राजनीति को समझने का अपूर्व सुअवसर प्राप्त हुआ था। पानीपत के मैदान में इन्होंने अपनी आँखों से मराठा-शक्ति को पारस्परिक फूट और कलह के कारण छिन्न-भिन्न होते हुए देखा था। बालाजी जनार्दन ने ही सब से पहले पानीपत से पूना पहुँच कर इस शोकजनक घटना का समाचार पेशवा को सुनाया था। इसके पहले पेशवा के पास एक व्यापारिक दूत द्वारा लाया हुआ वह प्रसिद्ध समाचार पहुँच चुका था, जिसमें कहा गया था कि—"दो मोती भङ्ग हो गए, सत्ताईस मोहरें ग़ायब हैं, और चाँदी तथा ताँबे की कितनी हानि हुई है, इसका हिसाब नहीं लगाया जा सकता।" बालाजी जनार्दन के आगमन से इस दुःखद समाचार की पुष्टि हो गई।

कम्पनी की तीन इच्छाएँ

तत्कालीन पेशवा बालाजी बाजीराव के स्वास्थ्य पर इस शोकजनक दुर्घटना का इतना घातक प्रभाव पड़ा कि पानीपत के तीसरे युद्ध के कुछ ही सप्ताह के बाद उसकी मृत्यु हो गई। बालाजी बाजीराव के बाद उसका नाबालिग़ लड़का माधोराव अपने चचा राघोबा के संरक्षण में पेशवा की मसनद पर बैठा। राघोबा का पूरा नाम रघुनाथराव था। उसकी पञ्जाब-विजय आदि का उल्लेख ऊपर हो चुका है। राघोबा जितना ही वीर था, उतना ही महत्वाकांक्षी और अदूरदर्शी था। उसकी विवेक-

* *A letter of Charles Malet, the British ambassador at the Poona Court.*

हीन महत्वाकांक्षा ने उसकी विचार बुद्धि को भी नष्ट कर दिया था। इसी कारण जब पेशवा-दरबार में राघोबा की प्रधानता हुई, उस समय कम्पनी को दक्षिण में अपनी नीति को सफल करने का अपूर्व सुअवसर मिला। प्रसिद्ध इतिहास-लेखक ग्राण्ट डफ़ इस समय मराठा साम्राज्य के प्रति कम्पनी की नीति का वर्णन करते हुए लिखता है—

"The Court of Directors, were desirous of seeing the Marhattas checked in their progress, and would have beheld combinations of other native powers against them with abundant satisfaction."*

अर्थात्—"कम्पनी के डायरेक्टर इस बात के इच्छुक थे कि मराठों की उन्नतिशील सत्ता को किसी प्रकार धक्का पहुँचे, और यदि देश की अन्य शक्तियाँ गुट बना कर मराठों पर आक्रमण करतीं, तो वे उसे देख कर हृदय से प्रसन्न होते।"

अपनी इस अभिलाषा को पूरी करने के लिए कम्पनी के कर्मचारियों ने राघोबा को बहकाना आरम्भ किया। उन्होंने झूठमूठ राघोबा को यह भय दिखाया कि दक्षिण का सूबेदार निज़ामुलमुल्क बहुत ही शीघ्र मराठा साम्राज्य पर आक्रमण करने वाला है। राघोबा उस आक्रमण के धोखे में आ गया और उसने अदूरदर्शिता के कारण बम्बई के अङ्गरेज़ गवर्नर से इस आशय की एक सन्धि कर ली कि यदि निज़ाम मराठों पर आक्रमण करे तो अङ्गरेज़ सेना और सामान से मराठों की सहायता करेंगे और इस सहायता के बदले उन्हें पूना-दरबार की ओर से साष्टी (Salsette) का द्वीप और बसईं (Bassein) के क़िले दे दिए जायँगे। यही सन्धि मराठा साम्राज्य के विनाश का सूत्रपात सिद्ध हुई! यद्यपि इसके बाद, न तो निज़ाम ने मराठों पर आक्रमण किया और न मराठों को अङ्गरेज़ों की सहायता की ही आवश्यकता पड़ी, तथापि इस सन्धि के द्वारा अङ्गरेज़ों को पेशवा-दरबार में घुसने और मराठों की आन्तरिक दुर्बलताओं का पता लगाने का स्वर्ण-सुयोग प्राप्त हो गया !!

इस सन्धि के बाद पेशवा के दरबार में अङ्गरेज़ों ने अपना एक दूत भेजा, जिसका नाम मॉस्टिन था। इस समय कम्पनी यह चाहती थी कि दक्षिण की तीन बड़ी-बड़ी शक्तियाँ—हैदरअली, निज़ाम और मराठे—आपस में ही लड़ती रहें। कम्पनी को यह भय था कि ये तीनों शक्तियाँ यदि किसी प्रकार एक साथ मिल गईं, तो भारत से अङ्गरेज़ों को अनायास निकाल बाहर कर सकती हैं। कम्पनी की दूसरी इच्छा यह थी कि मराठों को पारस्परिक झगड़ों में इस प्रकार फँसाए रक्खा जाय, जिससे उन्हें बङ्गाल और उत्तर भारत में अङ्गरेज़ों की बढ़ती हुई सत्ता में हस्तक्षेप करने का अवसर न मिले। कम्पनी की तीसरी इच्छा यह थी कि पेशवा-दरबार से जितना शीघ्र हो सके, साष्टी का द्वीप और बसईं का क़िला प्राप्त कर लिया जाय, जिससे कम्पनी को भारत के पश्चिमी तट पर पैर फैलाने का आधार मिल जाय। इन्हीं तीनों इच्छाओं की पूर्ति के लिए कम्पनी के डायरेक्टरों ने मॉस्टिन को अपना दूत बना कर इङ्गलैण्ड से पूना-दरबार में भेजा। कम्पनी की तीसरी इच्छा के सम्बन्ध में डायरेक्टरों ने बम्बई के गवर्नर और वहाँ की काउन्सिल के नाम ३१ मार्च सन् १७६९ ई० के पत्र में लिखा—

"Salsette and Bassein, with their dependencies and the Marhatta's portion of Surat provinces. . . . These are the objects you are to have in view, in all your treaties, negotiations, and military operations,—and that you must be ever watchful, to obtain."*

अर्थात्—"साष्टी और बसईं, और उनके अधीनस्थ प्रदेश, और सूरत प्रान्त का वह भाग, जो मराठों के अधिकार में है × × × ये चीज़ें हैं, जिन्हें आपको अपनी सभी सन्धियों, सभी पत्र-व्यवहारों और सभी युद्धों में अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए, और जिन्हें प्राप्त करने के लिए सदा अवसर ढूँढ़ते रहना चाहिए।"

सन् १७७२ ई० में मॉस्टिन भारत पहुँचा और बम्बई की काउन्सिल ने शीघ्र ही उसे अपना दूत बना कर पेशवा के दरबार में भेज दिया। मॉस्टिन के आगमन का उद्देश्य बताते हुए इतिहास-लेखक ग्राण्ट डफ़ लिखता है—

"Mr. Mostyn was sent to Poona by the Bombay Government, for the purpose of . . . using every endeavour, by fomenting domestic dessensions or otherwise, to prevent the Marhattas from joining Hyder or Nizam Ally."†

यशवन्तराव होलकर

अर्थात्—"बम्बई-सरकार के द्वारा श्रीयुत मॉस्टिन के पूना भेजे जाने का यह उद्देश्य था कि × × × मराठों को घर ही में एक-दूसरे से लड़ा कर, अथवा जिस प्रकार से हो सके, उस प्रकार से इस बात का प्रयत्न किया जाय कि हैदर और निज़ाम में से किसी के साथ भी मराठों की मित्रता न हो सके!"

उस समय तक गङ्गा के उत्तर में कुछ प्रदेशों पर मराठों का अधिकार हो चुका था; और मिल के इतिहास‡ से मालूम होता है कि सन् १७७३ ई० में यदि मराठों में घरेलू झगड़े उत्पन्न न हो जाते, तो वे अवध रुहेलखण्ड, कड़ा और इलाहाबाद पर आक्रमण करते। इस प्रकार अङ्गरेज़ इतिहास-लेखकों के ग्रन्थों से ही यह बात स्पष्टतः प्रमाणित हो जाती है कि उस समय मराठों के सम्बन्ध में कम्पनी की क्या नीति थी!

राघोबा का विद्रोह

मॉस्टिन ने पूना पहुँचते ही बड़ी चालाकी से कम्पनी की इस नीति को सफल करने का प्रयत्न आरम्भ किया। महत्वाकांक्षी राघोबा तो पहले से ही अङ्गरेज़ों का मित्र हो चुका था। उसने मॉस्टिन की सहायता करने में कोई कसर न रक्खी। किन्तु जिस दरबार में नाना फड़नवीस के समान उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ और देशभक्त विद्यमान थे, उस दरबार में स्वार्थपरायण विश्वासघातकों और विदेशी दूतों की चालों का सफल होना कोई सरल काम न था। नाना फड़नवीस राघोबा की स्वार्थपरता और मॉस्टिन की धूर्तता को ख़ूब पहचानता था। नाना ने उस सन्धि का विरोध किया, जो राघोबा ने अङ्गरेज़ों से की थी, क्योंकि नाना समझता था कि वह सन्धि देश के लिए घोर अनिष्टकर थी। पेशवा माधोराव पूर्ण रूप से नाना के प्रभाव में था। ऐसी अवस्था में अङ्गरेज़ी दूत मॉस्टिन ने प्रत्यक्ष रूप से इस बात का अनुभव किया कि पूना-दरबार में जब तक नाना का प्रभाव है, तब तक साष्टी और बसईं को प्राप्त करने की उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकती।

अब मॉस्टिन राघोबा और नाना में फूट डालने की चेष्टा करने लगा। राघोबा मॉस्टिन के कहने में आकर पेशवा माधोराव को नाना के प्रभाव से हटा कर अपने प्रभाव में लाने की कोशिश करने लगा। किन्तु पेशवा माधोराव इस समय तक बालिग़ हो गया था। उसके हृदय में नाना के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा थी। अतः राघोबा की अनधिकार चेष्टा के फल-स्वरूप माधोराव और राघोबा में यहाँ तक वैमनस्य बढ़ गया कि एक बार माधोराव ने विवश होकर अपने चाचा राघोबा को क़ैद कर लिया! किन्तु शीघ्र ही राघोबा फिर छोड़ दिया गया। इतने में १८ नवम्बर, सन् १७७२ ई० को २८ वर्ष की अवस्था में पेशवा माधोराव का देहान्त हो गया! इस अल्प आयु में माधोराव की मृत्यु के सम्बन्ध में बहुतों को अङ्गरेज़ी दूत मॉस्टिन पर सन्देह होता है। इस सन्देह के लिए यथेष्ट कारण भी विद्यमान हैं; किन्तु इतने समय के बाद इन गुप्त पापों का रहस्य खुल सकना एक प्रकार से असम्भव ही है। इस नवयुवक पेशवा की मृत्यु के सम्बन्ध में ग्राण्ट डफ़ लिखता है—

"दूर-दूर तक फैले हुए मराठा साम्राज्य रूपी उस वृक्ष को, जिसे कुछ आघात पहले ही पहुँच चुका था, जो जड़ नीचे से रस पहुँचा रही थी, वह तने से कट कर अलग हो गई! उस साम्राज्य को पानीपत के तीसरे युद्ध से भी इतनी हानि नहीं पहुँची थी, जितनी इस सुयोग्य शासक की अकाल-मृत्यु से पहुँची। माधोराव युद्ध-कला में तो अत्यन्त प्रवीण था ही, शासक की दृष्टि से भी उसका चरित्र उसके पूर्वाधिकारियों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रशंसा और आदर के योग्य था।"

माधोराव के बाद, उसका भाई नारायणराव पेशवा

* *History of Marhattas*, by Grant Duff.

* *Director's letter, dated 31st March, 1769.*

† *History of Marhattas*, by Grant Duff.

‡ Mill's *History of British India, vol. iii.*

की मसनद पर बैठा। मरते समय माधोराव ने राघोबा से प्रार्थना की कि आप नारायणराव की सहायता और रक्षा कीजिएगा, किन्तु स्वार्थी राघोबा और षड्यन्त्रकारी मॉस्टिन दोनों के लिए अपनी-अपनी आकांक्षाओं को सिद्ध करने का इससे अच्छा अवसर मिलना कठिन था। माधोराव की मृत्यु के केवल ८ महीने बाद, ३० अगस्त, सन् १७७३ ई० को राघोबा ने अपने भतीजे पेशवा नारायणराव को मरवा कर अपने आपको पेशवा घोषित कर दिया! इतिहास से भली-भाँति प्रमाणित है कि इस हत्याकाण्ड में मॉस्टिन का हाथ था! उसने बम्बई काउन्सिल को इस घटना की सूचना देते हुए हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की!

इस समाचार को सुन कर बम्बई-काउन्सिल को भी बड़ी प्रसन्नता हुई। पेशवा नारायणराव की हत्या के केवल १८ दिनों के बाद, १७ सितम्बर सन् १७७३ ई० को बम्बई-काउन्सिल ने पत्र लिख कर मॉस्टिन को यह हिदायत दी—

" . . . to improve diligently every circumstance favourable to the accomplisment of that event (the acquisition of Salsette and Bassein), and on no account whatever to leave the Marhatta Capital."*

पेशवा नारायण राव की हत्या का दृश्य

अर्थात्—"किसी भी ऐसी परिस्थिति को, जो साष्टी और बसई प्राप्त करने में हमारी सहायिका हो सकती है, उत्पन्न करने में इस समय तुम परिश्रम से काम लेना और चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय, मराठों की राजधानी छोड़ कर कहीं न जाना!"

इस अवसर पर अङ्गरेज़ी सरकार के आचरण की आलोचना करते हुए सर हेनरी लॉरेन्स 'कलकत्ता रिव्यु' में एक स्थान पर लिखता है—

'Raghoba afterwards murdered Narayan Rao . . . . and was supported by the British Government. A very evil chapter in Anglo-Indian History."†

अर्थात्—"बाद में राघोबा ने नारायणराव को मार डाला × × × और अङ्गरेज़ी सरकार ने उसका पक्ष ग्रहण किया। भारत में अङ्गरेज़ी राज्य के इतिहास का यह एक अत्यन्त कलुषित अध्याय है।"

पुरन्दर की सन्धि

पेशवा नारायणराव की मृत्यु के बाद मॉस्टिन ने सबसे पहले अपने क्रीत-दास राघोबा को पेशवा बनने में सहायता दी। उसके बाद उसने दक्षिण के तीन बड़े-बड़े राज्यों को आपस में लड़ाए रखने की ओर ध्यान दिया। उस समय दक्षिण भारत में मराठे, निज़ाम और हैदरअली—ये तीन बड़ी-बड़ी शक्तियाँ थीं, जिन्हें अङ्गरेज़ आपस में ही लड़ा कर चूर-चूर कर देना चाहते थे। मॉस्टिन ने राघोबा को बहका कर निज़ाम और हैदर-अली दोनों से उसका युद्ध छिड़वा दिया। राघोबा सेना लेकर दक्षिण विजय करने के लिए पूना से निकल पड़ा।

राघोबा की अनुपस्थिति में मराठा-साम्राज्य के सच्चे हितचिन्तक नाना फड़नवीस और उसके सहायकों को पूना में अपनी शक्ति को बढ़ाने और सङ्गठित करने का अच्छा अवसर मिला। इसी बीच मृत पेशवा नारायण-राव की गर्भवती विधवा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसे पूना-दरबार ने सर्वसम्मति से पेशवा घोषित कर दिया। किन्तु अङ्गरेज़ों का हित इस बात में था कि राघोबा पेशवा की मसनद पर बना रहे। पूना में नाना फड़नवीस की शक्ति बढ़ी हुई देख कर राघोबा को दक्षिण से पूना लौटने का साहस न हुआ। वह दक्षिणी युद्धों में हार कर प्राण बचाने के लिए गुजरात की ओर भागा। अङ्गरेज़ों ने राघोबा की इस विपन्नावस्था से लाभ उठा कर उसे सूरत बुलाया और वहाँ ६ मार्च, सन् १७७५ ई० को उससे एक सन्धि की, जिसमें राघोबा ने बम्बई-काउन्सिल को साष्टी, बसई और सूरत प्रदेश का एक अंश सदा के लिए दे दिया। इसके बदले में अङ्गरेज़ों ने प्रतिज्ञा की कि वे सेना से राघोबा की सहायता करेंगे और उसे पुनः पेशवा की मसनद पर बिठावेंगे। इस प्रतिज्ञा के अनुसार अङ्गरेज़ों ने राघोबा को साथ लेकर पूना पर आक्रमण किया। युद्ध में नाना फड़नवीस की भेजी हुई सेनाओं ने अङ्गरेज़ों को गहरी पराजय दी। अङ्गरेज़ लोग बहुत हानि उठा कर गुजरात की ओर भाग गए।

इस समय अङ्गरेज़ों को गुजरात में अपने षड्यन्त्र फैलाने का अच्छा अवसर मिला। उन्होंने गायकवाड़ वंश के झगड़ों से लाभ उठा कर सयाजी गायकवाड़ से सन्धि कर ली। सयाजी ने भड़ोच, खिचली, बरियाव और कोरल के परगने कम्पनी को दे दिए। मॉस्टिन अब पूना छोड़ कर गायकवाड़ के दरबार में रहने लगा। इस सफलता से उत्साहित होकर अङ्गरेज़ों ने सूरत की सन्धि के अनुसार साष्टी और बसई को भी अपने अधिकार में कर लिया। पेशवा सरकार ने सूरत की सन्धि को स्वीकार नहीं किया था। ऐसी अवस्था में साष्टी और बसई पर अधिकार करके तथा विद्रोही राघोबा को सहायता देकर अङ्गरेज़ों ने पेशवा-सरकार को अपना शत्रु बना लिया। अब बम्बई-काउन्सिल को पेशवा से बातचीत करने तथा उसके दरबार में दूत भेजने का कोई मार्ग न रह गया।

यह परिस्थिति अङ्गरेज़ों के लिए वास्तव में बड़ी ही निराशाजनक थी। उन्हें अब न तो पेशवा के दरबार में घुस कर षड्यन्त्र रचने का अवसर था और न राघोबा के ही पुनः पेशवा बन सकने की कोई आशा थी, किन्तु अङ्गरेज़ों की धीरता और चालाकी दोनों ही प्रशंसनीय हैं! इस निराशामय परिस्थिति में भी कूटनीतिज्ञ हेस्टिंग्स ने पूना-दरबार को धोखा देने की एक निराली चाल सोच निकाली। उसने सीधे कलकत्ता से एक दूत पूना-दरबार में भेज कर पेशवा के मन्त्रियों को यह कहलवाया कि बम्बई काउन्सिल ने राघोबा से जो सन्धि की है और उसे जो सहायता दी है, उसके लिए हमें दुःख है। ये दोनों काम हमारी इच्छा के विरुद्ध और बिना हमारी आज्ञा लिए हुए किए गए हैं। हम सूरत की सन्धि को नाजायज़ समझते हैं। अङ्गरेज़-सरकार न तो विद्रोही राघोबा की सहायता करना चाहती है और न पेशवा-सरकार से युद्ध करना। हेस्टिंग्स की आज्ञा पाकर बम्बई काउन्सिल ने पेशवा के विरुद्ध भेजी हुई अपनी सेना को भी वापस बुला लिया।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि हेस्टिंग्स के दूत के पास पेशवा के मन्त्रियों और राघोबा दोनों के लिए दो प्रकार के पत्र विद्यमान थे। राघोबा के पत्र में हेस्टिंग्स ने सूरत की सन्धि और तत्सम्बन्धी सभी कारवाइयों का पूर्ण समर्थन किया था। दूत को यह आदेश था कि यदि उसके पूना पहुँचने के पहले संयोगवश राघोबा की विजय हो चुकी हो, तो वह राघोबा के नाम के पत्र का उपयोग करे। हेस्टिंग्स का दूत पेशवा के मन्त्रियों से पुरन्दर में मिला। उसने पेशवा-सरकार के प्रति हेस्टिंग्स की ओर से पूर्ण मित्रता की शपथ खाने के बाद पेशवा के मन्त्रियों से प्रार्थना की कि साष्टी और बसई के प्रदेश अङ्गरेज़ों के ही पास रहने दिए जायँ। पेशवा के मन्त्रियों ने, जिनमें सखाराम बापू और नाना फड़नवीस के समान नीतिज्ञ वर्तमान थे, इस प्रार्थना का जो उत्तर दिया, वह अङ्गरेज़ी दूत के ही शब्दों में सुनने योग्य है। अङ्गरेज़ी दूत ने २री फ़रवरी, सन् १७७६ ई० को वारन हेस्टिंग्स के नाम एक पत्र में लिखा है—

"They ask me a thousand times, why we make such professions of honour? How disapprove the war entered into by the Bombay Government, when we are so desirous of availing ourselves of the advantages of it?" *

अर्थात्—"वे मुझसे हज़ार बार पूछते हैं कि आप मित्रता की इतनी शपथ क्यों खाते हैं? आप लोग बम्बई-सरकार के युद्धों को तो नाजायज़ बताते हैं; किन्तु उनके द्वारा जो प्रदेश आपके क़ब्ज़े में आगए हैं, उन्हें आप अपने पास रखने के इतने इच्छुक हैं, यह सब मामला क्या है?"

अन्त में पूना-दरबार ने हेस्टिंग्स की प्रार्थना को स्वीकार न किया। वारन हेस्टिंग्स ने जब देख लिया कि पेशवा को चालबाज़ी से फँसाना मुश्किल है, तो उसने अपने दूत के पूना में रहते हुए भी गुप्त रूप से एक बहुत बड़े युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दी। कलकत्ता और मद्रास दोनों स्थानों पर पूना पर आक्रमण करने के लिए सेनाएँ इकट्ठी की जाने लगीं। हेस्टिंग्स इस बात का भी प्रयत्न करने लगा कि भोसला, सिन्धिया और होलकर को अपनी ओर मिला ले। उसने हैदरअली और निज़ाम से भी गुप्त पत्र-व्यवहार आरम्भ किया। पूना-दरबार को इन सब षड्यन्त्रों का पता मिलता रहा। किन्तु इतिहास से पता नहीं चलता कि किन कारणों से विवश होकर या डर कर पूना-दरबार को इस समय अङ्गरेज़ों से सन्धि कर लेने की आवश्यकता प्रतीत हुई। वारन हेस्टिंग्स का दूत जिस समय निराश होकर पुरन्दर से लौटा जा रहा था, उस समय पेशवा के मन्त्रियों ने उसे रोक लिया। ३री जून सन् १७७६ ई० को पेशवा-सरकार और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बीच पुरन्दर की सन्धि हुई, जिसमें अङ्गरेज़ों ने सूरत की सन्धि को नाजायज़ माना और प्रतिज्ञा की कि हम राघोबा को फिर कभी सहायता न देंगे। बसई का क़िला पूना-दरबार को वापस कर देंगे और इस दरबार के साथ सदा मित्रता का बर्ताव रक्खेंगे। पेशवा ने इस मित्रता को दृढ़ करने के अभिप्राय से साष्टी का द्वीप कम्पनी को उपहार में दे दिया। इसके अतिरिक्त पेशवा ने भड़ोच नगर की मालगुज़ारी और उसके आस-पास तीन लाख

(शेष मैटर ३०वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

* Mill's *History of British India, vol. iii.*

† *Calcutta Review, vol. ii, p. 430.*

* *From a letter of Colonel Upton to Warren Hastings, dated the 2nd February, 1776.*

राष्ट्रीय संग्राम में बम्बई का छलकता हुआ ओज

१

४

२

५

३

१—बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सञ्चालक 'वार-कौन्सिल' के वीर सत्याग्रही नेताओं का ग्रुप, जिनके नेतृत्व में हाल ही में दो लाख व्यक्तियों का जुलूस निकला था। अगली पंक्ति में खड़े हुए (बाईं ओर से) श्री० गिल्दर, श्री० मुन्शी (प्रधान) श्री० चन्द्रचूड़ और श्री० नायक।

२—बम्बई के १८वें 'वार-कौन्सिल' के मन्त्री—श्री० हिम्मतलाल शाह।

३—बम्बई के वे स्वयंसेवक, जिन्होंने मेसर्स हाजी आदम जी और हाजी करीम के यहाँ तब तक अनशन-सत्याग्रह किया, जब तक उन्होंने विलायती कपड़े का व्यापार बन्द नहीं कर दिया।

४—बम्बई तिलक विद्यालय के आचार्य—श्री० आपटे, जिन्हें छः मास का कारावास-दण्ड दिया गया है।

५—१८वें 'वार-कौन्सिल' की कार्यकारिणी समिति—(बीच में बैठी हुईं) श्रीमती गङ्गाबेन पटेल (प्रधान) (उनके बाईं ओर) श्रीमती शान्ताबेन पटेल (उप-प्रधान) (दाहिनी ओर) कुमारी सुमन्त त्रिवेदी (सम्पादिका "कॉङ्ग्रेस बुलेटिन") (पीछे खड़े हुए) श्री० हिम्मतलाल शाह और श्री० मानसिंह जगताप (मन्त्रीगण)

कुछ प्रमुख व्यक्तियों की चित्रावली

श्री० पी० मुकर्जी
आप पञ्जाब चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स की ओर से कौन्सिल के सदस्य नियुक्त हुए हैं।

कुमारी हेस्टर स्मिथ, बी० ए०
आप हाल ही में ट्रावनकोर में होने वाली अखिल भारत-वर्षीय महिला कॉन्फ़्रेन्स की प्रधाना नियुक्त हुई थीं।

श्री० आर० बोकेट, जे० पी०
आप मैसोर गवर्नमेण्ट के खानों के चीफ़ इन्स्पेक्टर थे, जो हाल ही में छुट्टी लेकर विलायत गए हैं।

मङ्गलोर के महिला क्लब की सदस्याओं का ग्रुप
जो मद्रास के गवर्नर की धर्मपत्नी के निरीक्षण के समय लिया गया था। बीच में हर एक्सेलेन्सी लेडी बीट्रिक्स स्टानली बैठी हैं।

श्री० जे० सी० स्मिथ, आई० सी० एस०
आप संयुक्त प्रान्तीय गवर्नमेण्ट की कार्यकारिणी सभा के नए सदस्य नियुक्त हुए हैं।

हिज़ एक्सेलेन्सी सर हर्बर्ट स्टानली
आप सीलोन (लङ्का) के गवर्नर थे, जो हाल ही में दक्षिण अफ़्रिका के हाई कमिश्नर नियुक्त किए गए हैं।

कमाण्डर आर० एम० रेनॉल्ड्स
आप रॉयल इम्पायर सोसाइटी के कमिश्नर हैं, जो हाल ही में भारत की वर्तमान दशा का निरीक्षण करने यहाँ पधारे हैं।

कुछ प्रमुख व्यक्तियों की चित्रावली

ख़ानबहादुर ख़्वाजा मोहम्मद नूर, सी० आई० ई०
आप श्री० पी० आर० दास की जगह पटना हाईकोर्ट के जज नियुक्त हुए हैं।

श्री० शफ़ी अहमद
आप हैदराबाद के उस्मानिया कॉलेज के प्रतिभाशाली छात्र हैं, जो हाल ही में डोवर से राम्स गेट तक (२२ मील) सफलतापूर्वक तैरे थे।

नवाब अग़ियार जङ्गबहादुर
आप निज़ाम-गवर्नमेण्ट के अर्थ-विभाग के संयुक्त मन्त्री थे। आपने अभी हाल ही में पेन्शन ले ली है।

श्री० एल० दामोदरन
आप विरुदूनगर (मद्रास) के क्षत्रिय वैद्यशाला हाई-स्कूल के एक प्रतिभाशाली छात्र हैं, जिन्हें हाल ही में खेलों में सर्व-प्रथम आने के लिए 'ग्रिग मेमोरियल' नामक स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया है।

श्री० आर० पी० धरगालकर
आप समस्त भारत में सब से छोटे उड़ाकू हैं, जिन्हें ब्रिटिश एयर मिनिस्ट्री' की ओर से केवल १८ वर्ष की अवस्था में 'बी' क्लास के उड़ने वाले का लाइसेन्स प्रदान किया गया है।

श्री० जी० रङ्गय्या, बी० ए०, बी० ई०
जो हाल ही में मैसूर गवर्नमेण्ट के मन्त्री और चीफ़ इञ्जीनियर नियुक्त हुए हैं।

'चाँद' तथा 'भविष्य'-परिवार के सुपरिचित—कविवर आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव

आगरा विश्वविद्यालय के वाइस चेन्सलर, कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के सदस्य और इलाहाबाद हाईकोर्ट के सुप्रसिद्ध एडवोकेट—मुन्शी नारायण प्रसाद जी अस्थाना

महाकवि दाग़ (देहलवी) का प्रतिभाशाली वंशज

महाकवि दाग़ के जानशीन—नाख़ुदाय-सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी

हुस्न रोज़-अफ़ज़ूँ ने कितना फ़र्क़ पैदा कर दिया !
देखिए यह आप हैं, यह आपकी तस्वीर है !!
सब ने आँखों में, निगाहों में, दिलों में दी जगह;
सैकड़ों घर बन गए, एक आपकी तस्वीर के !!
दैर को हम घटाएँ क्यों ? काबे को हम बढ़ाएँ क्यों ?
क्या वह ख़ुदा का घर हुआ—क्या यह ख़ुदा का घर नहीं ?
—"नूह" नारवी

जो रुक न सकें, बहते ही रहें, वह इश्क़ो-वफ़ा के आँसू हैं !
जो बुझ न सके, रौशन ही रहे, वह उल्फ़त की चिनगारी है !!
वह तीरे-नज़र बरसाते हैं, मैं थाम के दिल रह जाता हूँ !
कुछ ज़ोर नहीं चलता मेरा, यह उल्फ़त की लाचारी है !!
—"आज़म" करेवी

हज़रत 'नूह' के शागिर्द डॉक्टर अनसार-अहमद "आज़म" करेवी

बुतकदे की नींव ज़ाहिद !
किस क़दर मज़बूत थी,
आज तक काबा भी है,
क़ायम उसी बुनियाद पर !

❀

चूमते हैं बार-बार, आकर—
जिसे अहले-हरम !
क्या कोई काबे में, बुतख़ाने
का पत्थर रह गया ?

ऐ अहले-हरम तुम क्या जानो !
हम जानते हैं, हम से पूछो,
काबा जिसे अब सब कहते हैं,
पहले तो यही बुतख़ाना था !

मतलब है इबादत से मुझको,
मतलब है परस्तिश से मुझको !
जिस दर पर झुकाया सर मैंने—
काबा था, वही बुतख़ाना था ।

हज़रत 'नूह' के शागिर्द तथा 'केसर की क्यारी' के सम्पादक—मुन्शी सुखदेवप्रसाद जी सिन्हा "बिस्मिल" इलाहाबादी

यहाँ के एक-एक पत्थर से,
होता है गुमाँ मुझको !
पड़ी है नींव भी काबे की,
तो दस्ते-बिरहमन से !!

❀

मालूम रहे तुमको
ऐ हज़रते-ज़ाहिद !
मन्दिर में नहीं वह;
तो हरम में भी नहीं है !!

बुतख़ाने की तलाश में,
वह बेख़ुदी रही !
मैं दो क़दम हरम से भी
आगे निकल गया !!

ज़ाहरी असबाब से इसको
ताल्लुक़ कुछ नहीं !
इश्क़-परस्ती के लिए "बिस्मिल"
भी बुतख़ाने में है !!

कविवर 'बिस्मिल' के शागिर्द मुन्शी बद्रीनाथ "शातिर" इलाहाबादी

दिल मेरा देख सके हुस्न के जलवे क्योंकर ?
सौ तमाशे हैं, मगर एक तमाशाई है !
घर में आए हुए सय्याद के मुद्दत गुज़री !
गुल तो गुल ही हैं, नशेमन भी हमें याद नहीं !!
एक दुनियाए-जुनूँ साथ लिए फिरता है,
कोई देखे तो यह आलम तेरे दीवाने का !!
—"शातिर" इलाहाबादी

बुत-परस्ती मेरे हक़ में, हक़-परस्ती हो गई !
दे दिया तेरा पता, मुझको तेरी तस्वीर ने !
सौ अदा से जो चुभा था, आपका तीरे-नज़र !
रहते-रहते अब वही दिल में, रगे-दिल हो गया !!
—"ज़िया" देवानन्दपुरी

कविवर 'बिस्मिल' के शागिर्द श्री० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी० "ज़िया" देवानन्दपुरी

केसर की क्यारी

[विगत सप्ताह पटना में एक अखिल भारतवर्षीय मशायरा हुआ था, जिसमें इस स्तम्भ के सम्पादक कविवर 'बिस्मिल' भी पधारे थे। आपकी सरस एवं सुललित कविताओं और उसे पढ़ने की शैली की बड़ी प्रशंसा हुई। आपने 'भविष्य' के पाठकों के मनोरञ्जनार्थ जो संग्रह हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा है, वह वास्तव में बड़ा महत्वपूर्ण है और हमें आशा है 'भविष्य' के पाठक इसे बहुत पसन्द करेंगे।

—स० 'भविष्य']

हर घड़ी यादे-बुताँ रहती है दिल में 'बिस्मिल'—कोई आसाँ नहीं, हिन्दू का मुसल्माँ होना !

मेरी शोरीदा[1] मिज़ाजी ने, असर दिखलाया,
कह रहा है, तेरी ज़ुल्फ़ों का परेशाँ होना !
—"रज़ी" अज़ीमाबादी

लाख समझाए कोई, लाख सँभाले कोई,
मेरे क़ाबू में नहीं, मेरा परेशाँ होना !
—"हाशिम" जौनपुरी

सर पे उशशाक़[2] के, एक रोज़ बला आएगी,
कह रहा है, तेरी ज़ुल्फ़ों का परेशाँ होना !
—"शम्श" अज़ीमाबादी

ज़ुल्फ़े-काफ़िर का, बिखर कर उधर आना रुख़ पर,[3]
और सिपारए[4] दिल का वह परेशाँ होना !
—"समर" आरवी

अहले हिम्मत का, मददगार है ख़ुद रब्बेकरीम[5],
किसी मुशकिल में, न ऐ यार परेशाँ होना !
—"शाग़िल" अज़ीमाबादी

शौक़ से आप दिखाएँ, मुझे अपनी ज़ुल्फ़ें,
ख़ुद परेशाँ जो हो, क्या उसका परेशाँ होना !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

नहीं बे वजह है, इन ज़ख़्मों का ख़न्दाँ[6] होना,
दिल को है शौक़, बसद रङ्गे-गुलिस्ताँ[7] होना !
—"असग़र" अज़ीमाबादी

यासो[8] हसरत की तमन्ना, कि बयाबाँ[9] होना,
गुले[10]-उम्मीद का अरमाँ, कि गुलिस्ताँ होना !
—"नसीर" अज़ीमाबादी

लोग कहते हैं "समर" बाग़े-सख़ुन का मुझको,
फूल फल कर, मुझे लाज़िम है गुलिस्ताँ होना !
—"समर" आरवी

दाग़ पर दाग़ दिए जाती है, तक़दीर "नसीर",
दिल की क़िस्मत में है, दाग़ों का गुलिस्ताँ होना !
—"नसीर" अज़ीमाबादी

मोसिमे-गुल का तसौवर[11] भी, नशेमन[12] की भी फ़िक्र,
वह क़फ़स[13] ही में मेरा महवे गुलिस्ताँ होना !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

दफ़्तरे पीरेमुग़ाँ[14] से, यह मिली है तालीम,
अपनी इसियाँ[15] पे मुझे आप पशेमाँ[16] होना !
—"असग़र" अज़ीमाबादी

मैं तो उलफ़त में, वफ़ा करके पशेमान हुआ,
देखना तुम, न जफ़ा[17] करके पशेमाँ होना !
—"अता" अज़ीमाबादी

अपने सर ले लिया, महशर[18] में ख़ता को उनकी,
मुझसे देखा न गया, उनका पशेमाँ होना !
—"वायज़" अज़ीमाबादी

१—दीवानगी, २—चाहने वाले, ३—चेहरा, ४—क़ुरान का तीसवाँ हिस्सा, ५—ईश्वर, ६—हँसना, ७—बाग़, ८—निराशा, ९—जङ्गल, १०—फूल, ११—ध्यान, १२—घोंसला, १३—पिंजड़ा, १४—गुरु, १५—गुनाह, १६—लज्जित, १७—ज़ुल्म, १८—प्रलय।

क्या मेरे शिकवे पे, महशर में वह शरमाएँगे,
जिनको आता नहीं, दुनिया में पशेमाँ होना !
कर गया उज़्रे-सितम, मुझसे खुले लफ़्ज़ों में,
दिल ही दिल में, किसी ज़ालिम का पशेमाँ होना !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

ख़ूब मालूम है, दामन को इलाही[19] रक्खे,
जेब का जेब, गरीबाँ का गरीबाँ होना !
कोई ऐसा है, करे चाक जो दामन दिल का,
किस से सीखे कोई दामन से गरीबाँ होना !
—"समर" आरवी

जोशे-वहशत में भी, लाज़िम है ख़याले महबूब[20],
सूरते-गुल न कहीं, चाक गरीबाँ होना !
—"हफ़ीज़" अज़ीमाबादी

ख़ुश्क[21] लब, ख़ूने-जिगर, मायएदिल[22] चश्म पुर आब[23]
नालाकश[24], ख़ाक सरे चाक ग़रीबाँ होना !
—"अन्दलीब" कानपुरी

दरे मैख़ाना[25] पे, नासेह[26] का उलझना मुझसे,
और वह मुझसे, मेरा दस्तो गरीबाँ होना !
—"बेदिल" अज़ीमाबादी

बख़ियागर छेड़ न, हम चाक गरीबानों को,
रङ्ग लाएगा, गरीबाँ का गरीबाँ होना !
—"मुबारक" अज़ीमाबादी

हाय वहशत में, मेरा बेसरो सामाँ होना,
चाक दिल, चाक जिगर, चाक गरीबाँ होना !
कर चुका चाक, तो क्या बख़ियागरी से हासिल,
अब गरीबान को मुश्किल है गरीबाँ होना !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

आलमे-इश्क़ में, दानाई[27] है नादाँ होना,
होशियारी है, ज़ेख़ुदरफ़्त[28] औ हैराँ होना !
—"वली" अज़ीमाबादी

उनकी क़िस्मत, कि बसद रङ्ग गुलिस्ताँ होना,
मेरी तक़दीर, कि आशुफ़्तओ[29] हैराँ होना !
—"समर" आरवी

सर ख़ुशे[30], वलवले, नाज़िशे यकताईए हुस्न,
आइना देखना, फिर आप ही हैराँ होना !
—"अज़ीज़" अज़ीमाबादी

आइना देखने को, शौक़ से देखो लेकिन,
अपनी सूरत न कहीं, देख के हैराँ होना !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

ज़ख़्मे-दिल हँसते हैं, क़िस्मत पे मेरी सूरते गुल,
शक्ल शबनम[31] है, मुक़द्दर[32] में जो गिरयां[33] होना !
—"हाशिम" जौनपुरी

१९—ईश्वर, २०—प्रेमिका, २१—सूखे, २२—पूँजी, २३—आँखों में आँसू, २४—आह भरना, २५—शराबख़ाना, २६—नसीहत करने वाला, २७—अक़्लमन्दी, २८—पागल, २९—परेशान, ३०—मस्त, ३१—ओस, ३२—क़िस्मत, ३३—रोना।

आह सौदा ज़दगी[34], इश्क़ के दीवानों की,
मुस्कुराना, कभी हँसना, कभी गिरयाँ होना !
—"अन्दलीब" कानपुरी

आजकल आपके, दीवानों का यह आलम है,
बैठे-बैठे कभी ख़न्दा, कभी गिरयाँ होना !
—"नसीर" अज़ीमाबादी

लोग समझें न कहीं इसका यही क़ातिल है,
तुम मेरी लाश पे, कुछ सोच के गिरयाँ होना !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

करके बरबाद मुझे, क्या है पशेमाँ होना,
हो गया था जो मुक़द्दर में, मेरी जाँ होना !
—"समर" आरवी

दिल में, तीरे-निगहे-नाज़ का मेहमाँ होना,
कोई मुश्किल नहीं, अब इसको रगे-जाँ होना !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

मेरी पीरी की है, ख़मयाज़ाए अय्यामे[35] शबाब,
यूँ कि असरारे[36] जवानी, का नुमायाँ[37] होना !
—"बेदिल" अज़ीमाबादी

मैं इसे शर्म कहूँ, या इसे शोख़ी समझूँ,
कभी छुपना, कभी परदे से नुमायाँ होना !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

एक तू, और तेरी मञ्ज़िल का, पता नामुमकिन,
एक मैं, और बयाबाँ पे बयाबाँ होना !
—"हाशिम" जौनपुरी

दश्तो[38] गुलज़ार से, कह दे कोई दिल से सीखे,
बाग़ का बाग़, बयाबाँ का बयाबाँ होना !
देखना, ख़ुद ही सिखा देगी तरक़्क़ी एक दिन,
क़तरओ ज़र्रा का, दरियाओ बयाबाँ होना !
—"समर" आरवी

आबले पाँव के मुज़तर[39] हैं, बहुत ज़िन्दाँ[40] में
चाहिए अब कशिशे ख़ारे बयाबाँ होना !
—"रज़ी" अज़ीमाबादी

मुझपे डोरे, न बहारे गुलो-गुलशन डाले,
मैंने देखा है, गुलिस्ताँ का बयाबाँ होना !
—"मुबारक" अज़ीमाबादी

बचता तूफ़ाने हवादिस[41] से, मेरा घर क्योंकर,
इसकी तक़दीर में, लिक्खा था बयाबाँ होना !
—"वायज़" अज़ीमाबादी

मैं भी हूँ वाक़िफ़े असरारे रमूज़े[42] हस्ती,
मेरे ज़र्रों को भी आता है, बयाबाँ होना !
कसरते यास[43] से है, वहशते[44] आलम पैदा,
गोशए दिल को मुबारक हो, बयाबाँ होना !
—"सबा" अज़ीमाबादी

३४—दीवानगी, ३५—ज़माना, ३६—भेद, ३७—ज़ाहिर, ३८—जङ्गल, ३९—बेचैन, ४०—क़ैदख़ाना, ४१—घटनाएँ, ४२—भेद, ४३—निराशा, ४४—फैलाव।

अरबी जगत की छीछालेदर

["इतिहास का एक विनम्र विद्यार्थी"]

वर्तमान काल के राजनैतिक शब्द-कोष में 'सभ्य' का अर्थ 'शक्तिशाली' है। जो राष्ट्र बलवान है, जो अपने सैनिक बल द्वारा दूसरे राष्ट्रों को दबा सकता है, वही सभ्य है और उसी की संस्कृति सब से ऊँचे दर्जे की है। बलवान राष्ट्र ही वर्तमान युग का शिक्षक बन सकता है और वही धर्म तथा न्याय की रक्षा करने का ढोंग कर सकता है। भारत की संस्कृति पुरानी है, निष्पक्ष लोग तो कहेंगे कि बहुत ऊँचे दर्जे की है, परन्तु फिर भी पाश्चात्य राजनीतिज्ञों की दृष्टि से वह असभ्य है। चीन भी असभ्य है, परन्तु उसी संस्कृति के अनुयायी जापान को कोई भी असभ्य नहीं कह सकता। प्राचीन सभ्यता के गुरु तथा धर्मों के शिक्षक अरब, मिश्र, भारत, पैलेसटाइन इत्यादि देश जङ्गली हैं, क्योंकि वे कमज़ोर हैं और आज पाश्चात्य राष्ट्रों का मुक़ाबला करने में असमर्थ हैं। इसी कमज़ोरी के कारण उन्हें इन बलशाली राष्ट्रों के, जो कि सभ्य कहलाते हैं, संरक्षण में रहना पड़ता है और उनके सार्वभौमत्व को तथा गुरुत्व को स्वीकार करना पड़ता है। आज इतने वर्षों की शिक्षा तथा संरक्षण के बाद भारत तथा अन्य पराधीन देशों ने जो फ़ायदा उठाया है, वह सबको मालूम है। इन सभ्यता के आचार्यों ने और न्याय के रक्षकों ने जो-जो कार्य किए हैं, उनका यहाँ वर्णन करना व्यर्थ है। इन्होंने अपनी शिक्षा तथा संरक्षण द्वारा संसार के राष्ट्रों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं। एक देश-निवासी जातियों में आपस में कलह पैदा कर दिया है और इस तरह उनकी शक्ति को तोड़ कर उनके बल को चूसा है। भारत की कहानी तो अब काफ़ी पुरानी हो गई है और आज प्रत्येक भारतवासी को अङ्गरेज़ों की करामातों का पूर्ण परिचय हो गया है। पर इस संरक्षण रूपी आपत्ति का पूर्ण रूप जानते हुए भी, आज संसार के कई राष्ट्रों को पाश्चात्य राष्ट्रों का यह गुरुत्व स्वीकार करना पड़ रहा है। इसका एकमात्र कारण यह है, कि वे आज कमज़ोर हैं !!

गत महायुद्ध में टर्की ने जर्मनी का साथ दिया था। उस समय सारे मुस्लिम राष्ट्र टर्की का सार्वभौमत्व स्वीकार करते थे। इसलिए युद्ध-काल में इङ्गलैण्ड तथा उसके साथी देशों ने यह प्रयत्न किया, कि मुस्लिम-जगत में आपस में फूट हो जावे; वे टर्की का साथ छोड़ देवें। इस उद्देश से उन्होंने कई छोटे-छोटे मुस्लिम राष्ट्रों को वचन दिया, कि यदि वे युद्ध में टर्की का साथ न देवेंगे, तो वे उनकी स्वाधीनता का समर्थन करेंगे। कई देश इनके चक्कर में आ भी गए, पर उस समय इन्हें इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त न हुई। युद्ध ख़तम हुआ, इङ्गलैण्ड तथा उसके सहयोगियों की जीत हुई, अब उन्हें टर्की को कसने का मौक़ा मिला। उन्होंने सोचा कि जब तक टर्की तथा अन्य अरब-भाषा बोलने वाली जातियाँ (जिसमें अरेबिया, पैलेसटाइन, इराक़, सीरिया तथा अन्य समीपवर्ती देश शामिल हैं) एका करके रहती हैं, तब तक पाश्चात्य राष्ट्र उन पर अपना क़ब्ज़ा सरलता से नहीं जमा सकते। यदि इस सङ्घ में सम्मिलित सारे राष्ट्र अलग-अलग हो जावें, तो टर्की की राजनैतिक शक्ति को भी एक गहरी चोट पहुँचेगी और इन छोटे-छोटे राष्ट्रों पर क़ब्ज़ा जमाना भी बहुत सहल हो जावेगा। इस उद्देश से कार्य आरम्भ किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय परिषद ने, जिसमें युद्ध में जीते हुए देशों का प्रधानत्व है, यह तय किया कि टर्की के सार्वभौमत्व में छोटी-छोटी मुस्लिम जातियाँ बहुत पीछे पड़ी जा रही हैं। उनकी स्वाधीनता की रक्षा तथा आर्थिक और सामाजिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है, कि टर्की के सार्वभौमत्व का अन्त कर दिया जावे। इधर इन छोटे-छोटे राष्ट्रों को भी टर्की के विरुद्ध भड़काया गया। आख़िर सन् १९२३ में विजयी देशों का काम पूरा हुआ और टर्की ने अपना सार्वभौमत्व हटा लेना स्वीकार किया। इस तरह १२० लाख मनुष्य अपने प्राचीन सङ्घ को तोड़ कर अलग-अलग राष्ट्रों में बँट गए। अब यह कहा गया, कि ये छोटे-छोटे राष्ट्र हैं, कमज़ोर हैं और असभ्य हैं। इनके संरक्षण का भार बड़ी जातियों को लेना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे इन्हें सभ्य बनावें और इनकी आर्थिक तथा सामाजिक दशा का सुधार करें। इस 'पवित्र' उद्देश्य से इङ्गलैण्ड तथा फ़्रान्स ने यह 'महान कार्य' अपने सिर पर लिया। और कौन देश था जो इतने ऊँचे कार्य को कर सकता था? आज इन्हीं दो राष्ट्रों ने भारत तथा मिश्र को उन्नति तथा गौरव के शिखर पर चढ़ाया है और वे ही इनको भी ऊँचा उठा सकते हैं।

इस तरह इङ्गलैण्ड तथा उसके साथी देश ने अरबी-जगत को अपने क़ाबू में किया। अब इन संरक्षकों की देख-भाल में इन 'असभ्य' देशों का शासन शुरू हुआ। आज सात वर्षों के बाद इन देशों ने जो उन्नति की है, उसका हाल हम पाठकों के सामने रखते हैं। इस संरक्षण का सब से पहिला फल तो यह हुआ है, कि इन राष्ट्रों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। युद्ध के पहिले जो मनुष्य अपने को एक देश के निवासी समझते थे और क़ुस्तुनतुनिया की पार्लामेण्ट में सब मिल कर सदस्य भेजते थे, वे अब भिन्न-भिन्न देशों के निवासी हो गए हैं। उनकी शासन-प्रणाली भिन्न-भिन्न हैं, उनके सिक्के अलग-अलग हैं, और अब वे न एक-दूसरे से पूर्ण स्वतन्त्रता से व्यापार कर सकते, न बिना सरकारी अनुमति-पत्र के एक-दूसरे से मिल ही सकते हैं। यह उन्हें भिन्न-भिन्न जातियाँ बनाने का और उनमें फूट पैदा करने का प्रयत्न है। इस नीति का उन्होंने विरोध किया। उन्होंने कहा, कि इस परिवर्तन से हम लोग छोटे-छोटे राष्ट्रों में बँट गए हैं और इस तरह हमारी राजनैतिक शक्ति बहुत घट गई है। फिर इस बटवारे से हमारी औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति में भी बाधा पड़ती है; पर उनकी सुनता कौन है?

आज पैलेसटाइन की दशा कितनी शोचनीय हो रही है! ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने पैलेसटाइन में जाति-विरोध पैदा करके उसे इस बहाने से अपने क़ाबू में रख छोड़ा है! इङ्गलैण्ड ने यहूदियों को, जो कि उस देश के निवासी नहीं हैं, पैलेसटाइन में अपना राष्ट्र बनाने का वचन दे दिया है, और उनके इस कार्य को प्रोत्साहित किया है। अब जब पैलेसटाइन में रहने वाली अरबी तथा अन्य जातियाँ इससे चिढ़ कर यहूदियों से झगड़ रही हैं, ब्रिटिश-सरकार अपनी पुरानी चाल चल रही है। वह कहती है कि तुममें आपस में फूट है, पहिले एका करो, फिर स्वराज्य लो। वह पहिले फूट पैदा करके अब उसका फ़ायदा उठा रही है। जिस तरह वह भारत के हिन्दू और मुसलमानों से कहती है, उसी तरह वह पैलेसटाइन के अरब और यहूदियों से कहती है, कि बिना हमारे इस देश में शान्ति नहीं रह सकती। वर्तमान दशा में हमारा यहाँ रहना बहुत आवश्यक है। फिर भी झगड़े बढ़ते ही जा रहे हैं। ब्रिटिश सरकार ने यहूदी-अरबी प्रश्न को ज़रा भी हल नहीं किया है, इससे सन् १९२९ की ग्रीष्म-ऋतु में एक बहुत बड़ा दङ्गा हुआ, जिसमें १३३ यहूदी तथा ११९ अरबियों ने अपने प्राण खोए और राष्ट्र की बहुत सी सम्पत्ति का नाश हुआ! सन् १९२२ में पैलेसटाइन के ब्रिटिश हाई-कमिश्नर ने पैलेसटाइन-निवासियों को कुछ अधिकार देने का वचन दिया। शासन-प्रणाली निर्माण हुई, पर इस शासन-प्रथा में कुछ ऐसी शर्तें रक्खी गईं कि अरबियों ने उसे अस्वीकार किया। उस समय से पैलेसटाइन का शासन ब्रिटिश सरकार के हाथ में है। वे ख़ास क़ानूनों द्वारा उसका शासन चलाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय परिषद तथा उसकी प्रतिनिधि ब्रिटिश सरकार क्या इसी तरह से छोटे देशों की स्वतन्त्रता की रक्षा करती है?

यह उदाहरण तो इङ्गलैण्ड के 'पवित्र विचारों' का हुआ, अब फ़्रेञ्च सरकार के संरक्षण का हाल सुनिए। सीरिया फ़्रेञ्च-सरकार के संरक्षण में है। वह अन्य देशों से कहीं ज़्यादा सभ्य तथा उन्नतिशील है। अरब की जनता अन्य देशों से ज़्यादा शिक्षित है और वहाँ के निवासी अन्य देशों में जाकर विज्ञान तथा साहित्य का अध्ययन करते रहे हैं। फिर सीरिया में पैलेसटाइन की तरह कोई जातीयता का झगड़ा भी नहीं है। फिर भी सीरिया में न शान्ति है, न वहाँ के निवासियों को कोई अधिकार ही दिए गए हैं। सीरिया में आने के बाद फ़्रेञ्च-सरकार का पहिला काम यह हुआ, कि उसने वहाँ के राजा फ़ैज़ल को देश के बाहर निकाला। इसने अङ्गरेज़ों की इच्छा तथा सहायता से टर्की के सार्वभौमत्व को दूर किया था। टर्की से अलग होने के बाद वह स्वतः ही देश से निकाल बाहर किया गया। देश का सारा शासन-भार फ़्रान्स ने अपने हाथ में लिया। उसने सीरिया की शासन-प्रथा तथा तत्सम्बन्धी सारी संस्थाओं को उलट-पुलट कर दिया। इससे सीरिया-निवासियों में बहुत असन्तोष फैल गया। उन्होंने बार-बार अन्तर्राष्ट्रीय सभा से शिकायत की, कि इस नवीन रचना से तो हमारी स्वाधीनता ही छीन ली गई है, पर इसका कुछ भी फल न हुआ। अन्त में निराश होकर सन् १९२५ में उन्होंने राज्यक्रान्ति की और दो साल तक बराबर वे फ़्रेञ्च सरकार से लड़ते रहे। आख़िर में फ़्रेञ्च सरकार ने कुछ अधिकार देना स्वीकार किया। उन्होंने सीरिया-निवासियों से राष्ट्रीय शासन-प्रथा की रचना करने के लिए एक सभा बनाने को कहा। इस सभा ने जो शासन-प्रणाली बनाई, वह नामञ्ज़ूर की गई। फिर झगड़ा चलता रहा। सन् १९३० के मई मास में फ़्रेञ्च सरकार ने सीरिया के नेताओं की इच्छानुसार वहाँ की शासन-प्रणाली बनाना निश्चित किया, पर फिर भी उसमें कुछ ऐसी बातें रख दी गईं, कि सीरिया-निवासियों ने उसे अस्वीकार किया। इस तरह सीरिया अभी तक पराधीन है!!

यह तो राजनैतिक दशा का वर्णन हुआ, अब आर्थिक दशा को लीजिए। इङ्गलैण्ड तथा उसके साथी-देश, व्यापार-प्रधान देश हैं, दूसरे देशों पर राजनैतिक प्रधानत्व जमाने में उनका पहिला उद्देश यह होता है, कि वे वहाँ

(शेष मैटर २९वें पृष्ठ के पहिले कॉलम पर देखिए)

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता ? सन् १८५७ के स्वातन्त्र-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २।) ; स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

"दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी ॥"

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २।) ; स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र।

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १) ; स्थायी ग्राहकों से ॥।) ; केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥।) स्थायी ग्राहकों से ॥-) ; नवीन संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

श्रीमती नेली सेन गुप्ता

[श्री० मङ्गलदेव जी शर्मा, स० सम्पादक "अभ्युदय"]

"When an English girl marries an Indian, India must become her home in every sense of the word."

Nellie Sen Gupta.

समाचार-पत्र-पाठकों और वर्तमान भारतीय प्रगति से जानकारी रखने वाले बहुत कम लोगों को यह ज्ञात होगा कि, कॉङ्ग्रेस के जेल-प्रवासी स्थानापन्न प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत यतीन्द्र मोहन सेन गुप्त की पत्नी एक अङ्गरेज़ महिला हैं। अलबत्ता श्रीमती नेली सेन गुप्ता के जेल-प्रवास के बाद कुछ लोगों को अवश्य इस तथ्य का पता चला होगा।

ढूँढ़ने पर देश में आज सैकड़ों नहीं, तो पचासों हिन्दू-मुसलमान ऐसे मिल सकते हैं, जिनके घरों में यूरोपियन अथवा अमेरिकन पत्नियाँ हैं; लेकिन उनमें से मिसेज़ नेली को छोड़ कर, आज एक भी ऐसी नहीं दिखाई देती, जिसने अपने पति का उसके कार्यक्षेत्र में इतने त्याग और तत्परता से साथ दिया हो, अथवा जो स्वतन्त्र रूप से ही भारत को अपना घर (Home) मान कर उसके हित में लगी हो। मीरा बहन, श्रीमती एनी बीसेण्ट, श्रीमती मारग्रीट कज़िन्स भी ऐसी महिला-रत्न हैं, जो भारतोद्धार की पूर्णाभिलाषिणी हैं, और जो इस देश को अपनी मातृभूमि के समान ही प्यार करती हैं; बल्कि डॉक्टर एनी बीसेण्ट और मीरा बहन ने तो अब भारत-भूमि को ही अपना सर्वस्व मान लिया है। इन तीनों माननीय महिलाओं का उल्लेख हमारे कथन से पृथक ही अपनी विशेषता रखता है।

यहाँ यह कहना कदाचित अप्रासङ्गिक न होगा कि, भारत में अधिकांश यूरोपियन हिन्दुस्तानी गठजोड़े असफल हुए हैं। महाराजाओं के साथ हुए ऐसे गठ-बन्धन तो इतने निकम्मे सिद्ध हुए हैं कि, उनको कथा भी कष्टकर है। देखा प्रायः यह गया है कि जो भारतीय यूरोपियन या अमेरिकन लड़कियों से शादी करके लाए, वे उन्हीं के हो रहे; अपनापन खो बैठे और समाज के लिए सर्वथा व्यर्थ प्रमाणित हुए।

लेकिन श्रीयुत जे० एम० सेन गुप्त और श्रीमती नेली सेन गुप्ता, दोनों ही उपरोक्त तथ्य के अपवाद हैं। इस समय राजनीति ही मि० सेन गुप्त का जीवन है, वे स्वभावतः नेता हैं; राजनीति की उथल-पुथल में उन्हें आनन्द आता है, और उसके लिए वे सब कुछ सहन कर सकते हैं। पिछले आठ मास वे आन्दोलन में निरन्तर रत रहते हुए दो बार जेल जाकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है, कि अवसर पड़ने पर वे पीछे हटने वाले भी नहीं हैं। बङ्गाल में उनका अपना एक ज़बरदस्त सङ्गठन है। अवसर के वे बड़े अच्छे पारखी हैं। मौक़े पर सेनानायक की सी सूझ और सैनिक के से साहस से काम लेना वे जानते हैं, अभी-अभी यू० पी० और पञ्जाब में, काग-भुशुण्ड के राम-बाण की भाँति दफ़ा १४४ उनके पीछे-पीछे चलती थी, लेकिन इसकी उन्होंने बहुत कम परवाह की। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें पिछली लाहौर की कॉङ्ग्रेस में—जहाँ कॉङ्ग्रेस के अन्तरङ्ग में एक ओर श्रद्धेय मालवीय जी और दूसरी ओर सुभास बाबू जैसे दिग्गज नेताओं के लिए कोई स्थान नहीं था—कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी का सदस्य बनाया, और हाल ही में ६ मास की सज़ा काट कर आने पर, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की इन दिनों की दूसरी ढाई साल के लिए जेल-यात्रा के बाद स्थानापन्न राष्ट्रपति बनाया, भले ही गिरफ़्तारी के कारण उस पद पर वे पाँच रोज़ से अधिक न रह सके। अस्तु—

गत अक्टूबर मास में श्रीयुत सेन गुप्त कलकत्ते की अलीपुर सेण्ट्रल जेल से ६ मास की सज़ा भुगत कर आए। घर आते ही आपने एक प्रोग्राम निश्चित किया और देश के दौरे पर निकले। श्रीमती सेन गुप्ता भी उनके साथ चलीं। बङ्गाल के कुछ हिस्सों में दौरा करने के उपरान्त यह दोनों बम्बई, कराची, हैदराबाद, प्रयाग, लखनऊ, देहली होते हुए पञ्जाब के दौरे के लिए अमृतसर पहुँचे ही थे, कि २९ अक्टूबर की रात को वहाँ जलियाँ-वाला बाग़ में, देहली के एक भाषण के लिए पकड़े जाकर मुक़द्दमे के लिए देहली लाए गए। जलियाँवाला में आपकी गिरफ़्तारी के बाद श्रीमती सेन गुप्ता ने एक छोटे से व्याख्यान के साथ अपने पति का सन्देश सभा में सुनाया। उनके दौरे में यह पहला अवसर था, जब सार्वजनिक रूप से वे बोलीं। अलबत्ता इससे पूर्व प्रयाग के विद्यार्थियों की एक सभा में वे बोली थीं, जिसमें उन्होंने विद्यार्थियों से स्वातन्त्र्य-संग्राम में पूर्ण सहयोग देने की अपील की थी।

पुलिस द्वारा मि० सेन गुप्त के देहली लाए जाने पर आप भी देहली आ गईं और यहाँ के सार्वजनिक जीवन में भाग लेने लगीं। देहली की कॉङ्ग्रेस कमिटी आदि संस्थाएँ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी जा चुकी हैं, गत २९ अक्टूबर को वहाँ सार्वजनिक समारोह के उपरान्त कम्पनी बाग़ में जब सभा होने लगी, तो पुलिस ने आकर इसे रोका। सभा पर लाठियों की वर्षा की गई। कहते हैं, जनता में से किसी उत्पाती ने एक रोड़ा फेंक दिया और वह मैजिस्ट्रेट मि० ईसर की आँख पर लगा। मजमे को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया गया और लाठियों की मार से वह तितर-बितर कर दिया गया। १२९ आदमियों को इसके कारण थोड़ी-बहुत चोटें आईं। श्रीमती सेन गुप्ता की आँखों के सामने यह सब हुआ। वे आज की सभा की विशेष वक्ता थीं, लेकिन बोल न सकीं।

दूसरे दिन ३० अक्टूबर को, आज के पुलिस अत्या-चारों का विरोध करने के लिए फिर उसी स्थान पर सार्वजनिक सभा हुई। देहली की पाँचवीं डिक्टेटर डॉक्टर श्रीमती वेदी सभानेत्री थीं। पुलिस ने आज भी मीटिङ्ग को आ घेरा, लेकिन मीटिङ्ग की कार्रवाई आरम्भ हुई। सभा-नेत्री के भाषण के उपरान्त श्रीमती नेली सेन गुप्ता भाषण के लिए उठीं। उन्होंने कहना शुरू किया—"गवर्नमेण्ट कहती है कि भारतीय स्वातन्त्र्य-आन्दोलन ढीला पड़ता आ रहा है। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि जब बात ऐसी ही है, तो पुलिस के यह भारी-भारी प्रदर्शन किस डर से किए जाते हैं और क्यों शान्त जनता पर लाठियाँ बरसाई जाती हैं। मैं अधिकारियों को आगाह कर देना चाहती हूँ, कि यह लड़ाई तो अब अन्त में जाकर ही समाप्त होगी, उनका दमन और अत्याचार अब कारगर न होगा।" आप इतना ही कह पाई थीं, कि वे गिरफ़्तार कर ली गईं। आपके साथ ही सभानेत्री और महिला स्वयंसेविकाओं की जत्थेदारनी श्रीमती रामरानी भी पकड़ ली गईं और पुरुषों में से २३ गोरखे वाल-ण्टियरों समेत ३३ को गिरफ़्तार किया गया। आज भी पुलिस ने लाठी चलाई। अपने पति की अनुगामिनी श्रीमती नेली सेन गुप्ता भी उनके पाँचवें दिन ही जेल में जा बैठीं।

३री नवम्बर, १९३० ई० को देहली के अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० पूल ने मि० सेन गुप्त को कुल मिला कर एक साल की सादी क़ैद की सज़ा सुनाई। दूसरे दिन, ४थी तारीख़ को, उन्हीं के सामने श्रीमती सेन गुप्ता और उनके साथी गिरफ़्तार शुदाओं का मुक़द्दमा शुरू हुआ। मैजिस्ट्रेट ने उन पर क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट ऐक्ट की धारा १७ (१) का अपराध लगाया। वे ग़ैर-क़ानूनी संस्था की मेम्बर क़रार दी गईं, क्योंकि इस्तग़ासे की तरफ़ से कहा गया था, कि मीटिङ्ग कॉङ्ग्रेस की ओर से की गई थी, जो ग़ैर-क़ानूनी संस्था है, और यह अभियुक्त उसमें भाग ले रहे थे। देश की वर्तमान परम्परा के अनुसार आपने अभियोग की कार्यवाही में कोई भाग नहीं लिया। क्यों नहीं लिया, इसके सम्बन्ध में अङ्गरेज़ रमणी श्रीमती सेन गुप्ता ने अङ्गरेज़ मैजिस्ट्रेट मि० पूल को उनके एक जवाब में जो झाड़ बताई, वह उनकी स्वतन्त्र मनोवृत्ति, निर्भीकता और स्पष्टवादिता की द्योतक होने से स्मरणीय रहेगी। इस्तग़ासे की दरख़्वास्त दायर हो जाने के बाद मैजिस्ट्रेट ने अभियुक्तों से एक-एक करके दरि-याफ़्त किया कि क्या वे लोग कुछ कहना चाहते हैं? इसके जवाब में सब अभियुक्तों ने अपने को अपराधी स्वीकार किया। अन्य देवियाँ तो चुप रहीं, लेकिन श्रीमती सेन गुप्ता ने उत्तर में कहा:—

"मैं आपको यह सूचित कर देना चाहती हूँ कि यद्यपि मैं मङ्गलवार (३० अक्टूबर) की रात को कम्पनी बाग़ में गिरफ़्तार की गई थी, लेकिन मुझे किसी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश नहीं किया गया। आप पहले मैजिस्ट्रेट हैं, जिन्हें मैंने कल प्रातःकाल १० बजे देखा, जब आप हवालात में मुझसे मिलने गए थे। आप या किसी भी मैजिस्ट्रेट ने यह कैसे जान लिया कि मैं सफ़ाई पेश नहीं करना चाहती? यह आपने कैसे समझ लिया कि मैं ज़मानत की दरख़्वास्त नहीं दूँगी? दूसरी बात यह कि मुझे इस जेल की (क्योंकि मुक़द्दमा

(२७वें पृष्ठ का शेषांश)

अपना माल बेच सकें और वहाँ के उद्योग तथा व्यापार को अपने हाथ में ले सकें। [इसलिए इन अरबी देशों में ऊपरी उन्नति तो बहुत हुई है, उद्योग तथा व्यापार बढ़ गया है, सड़कें बनाई गई हैं, रेल निकाली गई है; पर सारी पूँजी विदेशियों की है। इन संस्थाओं से आने वाली सारी कमाई विदेशियों की जेब में जाती है। रेल, तार तथा सड़कों की जो उन्नति की गई है, वह भी विदेशी माल की बिक्री बढ़ाने की दृष्टि से की गई है! इन देशों की सब से बड़ी पेट्रोल की कम्पनी ब्रिटिश, फ्रेञ्च तथा अमेरिका के निवासियों के हाथ में है। डेडसी से जो अनेक रासायनिक पदार्थ निकाले जाते हैं, उसका भी ठेका अङ्गरेज़ तथा अमेरिकन कम्पनियों के हाथ में है। फिर पैलेसटाइन में अमेरिका तथा इङ्गलैण्ड आदि देशों के यहूदी आ-आकर बस रहे हैं। वे अपने धन द्वारा पैलेसटाइन में आर्थिक प्रधानत्व स्थापित कर रहे हैं। इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय सभा ने अरबी-जगत को क़ाबू में करने के लिए, तथा उसकी धन-सम्पत्ति लूटने के लिए यह महान षड्यन्त्र रचा है! इस पर भी जब इस परिषद की बैठकें होती हैं, तब वे कहते हैं कि "इस नवीन रचना से ये देश बहुत ज़बरदस्त उन्नति कर रहे हैं। फ़्रान्स तथा इङ्गलैण्ड यह परोपकार का महान कार्य बड़ी ख़ूबी से कर रहे हैं।" लूट की लूट, उस पर फिर यह न्याय का ढोंग! ठीक है "समरथ को नहिं दोष गुसाईं।"

* * *

जेल में ही हुआ था) हवालात में रखने के लिए जेलर को कोई वारण्ट नहीं दिया गया। इसलिए उन लोगों को मुझे हिरासत में रखने का कोई हक़ नहीं है।

"दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इन मुक़दमों के सम्बन्ध में, जिस ढङ्ग से यह चलाए जाते हैं, क्या आप सम्भवतः इन्हें सार्वजनिक अदालती कार्रवाई कह कर पुकार सकते हैं ? इन बातों से तो यही पता चलता है कि भारत में आकर अङ्गरेज़ लोग भिन्न ही प्रकृति के हो जाते हैं। और यह सब बातें होती हैं देहली में; जहाँ वायसराय रहते हैं, और जहाँ वह रोज़ न्याय और स्वतन्त्रता के नाम पर चलाई जाने वाली इस गवर्नमेण्ट के तौर-तरीक़े की बहुत सी बातें किया करते हैं। इन कारणों से मैं अपने मामले में कोई सफ़ाई पेश करने से इनकार करती हूँ।"

श्रीमती नेली सेन गुप्ता की इस बयान पर टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। यदि यही बयान किसी भारतीय ने दिया होता, तो राजनीतिक दृष्टि से उसका महत्त्व अधिक न था, लेकिन एक भारत-प्रवासिनी अङ्गरेज़ महिला के ये शब्द बहुत मूल्यवान हैं। भारतीयों के घरों में आकर रही हुई कितनी ही यूरोपियन महिलाओं में यह देखा जाता है, कि शासित जाति के एक सदस्य की पत्नी होने पर भी वे अपनी व्यर्थ की ऐंठ-अकड़ को नहीं छोड़तीं, दूसरे उनके व्यर्थाभिमान के कारण उनकी न्याय-बुद्धि सदैव कुण्ठित रहती है। वे समाज की अन्य दिशाओं में सहृदय हो सकती हैं, लेकिन उनका राजनीतिक कल्पनाकाश सदैव सन्देह और द्वैध के बादलों से घिरा रहता है।

लेकिन इस सम्बन्ध में मैडम नेली की सहृदयता शतशः प्रशंसनीय है। और आज ही क्यों, आज से दस वर्ष पूर्व भी वे इतनी ही सत्य की उपासिका, सहृदय और सौम्य थीं। बात सन् १९२१ ई० के असहयोग-काल की है। उन दिनों भी आप चुप न बैठी थीं। यह सच है कि मि० सेन गुप्त उन दिनों आज के-से मुसल्लिमा लीडर न थे, लेकिन उस आन्दोलन में भी, स्वर्गीय देशबन्धु के एक लेफ़्टिनेण्ट की हैसियत से वे, हमें याद है, तीन मास के लिए जेल गए थे। मैडम नेली को तो तब कदाचित् बङ्गाल के कुछ लोगों को छोड़ कर, कोई भी नहीं जानता था। लेकिन उन्होंने उन दिनों भी काम किया।

सन् १९२१ ई० में आप एक बार चटगाँव गई हुई थीं कि वहाँ के तब के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० एफ़० डब्ल्यू० स्ट्रॉङ्ग ने आपके ख़िलाफ़ दफ़ा १४४ लगा दी ? मैजिस्ट्रेट ने जो नोटिस आपके पास भेजा था, उसमें इस कार्रवाई के लिए जो कारण दिए थे, वे बड़े लचर थे। मैडम नेली ने उस नोटिस के लिए अपने उत्तर में मैजिस्ट्रेट की जो ख़बर ली है, वह उनके पूर्वोक्त गुणों, साथ ही उनके भारत-प्रेम की पूर्ण परिचायक है। अपने उत्तर में उन्होंने मैजिस्ट्रेट को लिखा था :—

"...........I do not know what your section 144 means. If this section prohibits encouraging home industry and requesting people to purchase home-made cloth in preference to foreign cloth, which as I know all the civilized world and which specially Home Government and Home people——I mean British people at Home——often support, the people who drafted the law must have been very bad.

I challenge the proof of the allegations made against me and also most emphatically declare the report as false. I am indeed shocked at the absolute demoralisation of your police and their wanton disregard for truth and fair dealing.

I went out this morning in a bazar to see if I could appeal to my fellow citizens here to sell and purchase their own country-made cloth. I created no row, no traffic was obstructed and we were peacefully prosecuting our work without interruption from any quarter............It was the police who were disturbing the people by their frequent visits. One police officer arrested a boy, who was with me, for no reason whatsoever and when I protested against this misconduct on the part of the police and asked him to arrest me as I had brought the boy with me; the police officer threatened me and I presume, true to his words, this officer ran to you with a concocted story and came back in the evening with a notice signed by you. Is it a sin to request people openly to patronise their home industry? Is it a crime to ask the shopkeepers to exhibit country-made production to attract the notice of purchasers? Is the law in India so destructive of her industry? Are we here to prohibit from encouraging what we hold up zealously at home, or are we here under the British rule? Am I to understand that British Officers cease to be gentlemen and honorable when they come to India? I reserve the right to disobey this order when Mahatma Gandhi, the leader of the National Movement in India and the Indian National Congress order me to disobey it."

अर्थात्—"मैं नहीं जानती कि आपकी दफ़ा १४४ का क्या अर्थ है। अगर यह दफ़ा देशी उद्योग-धन्धों को उन्नत करने और जनता से यह कहे जाने को, कि वे विदेशी के मुक़ाबिले में देश का बना कपड़ा ख़रीदें, जैसा कि मैं जानती हूँ, समस्त सभ्य संसार करता है, और जिसका पक्ष ख़ासकर अङ्गरेज़ लोग और उनकी सरकार अपने देश में ग्रहण करते हैं, रोकती है, तो इस क़ानून को बनाने वाले अवश्य ही बहुत बुरे आदमी थे।

"मेरे ख़िलाफ़ जो मैं तुहमत बयान किए जाते हैं, उनके सुबूत के लिए चुनौती देती हूँ और बलपूर्वक कहती हूँ कि आपको मिली हुई रिपोर्ट ग़लत है, आपकी पुलिस के घोर नैतिक पतन और उनकी, सत्य और सद्व्यवहार के प्रति उपेक्षापूर्ण विचारहीनता पर, मुझे हार्दिक दुःख है।

"मैं आज प्रातःकाल बाज़ार में अपने सहयोगी नागरिकों से यह अपील करने गई थी, कि वे अपने देश के ही बने कपड़े बेचें और ख़रीदें। मेरे कारण कोई शोर नहीं हुआ, न रास्ता ही रुका; हम लोग बिना किसी प्रकार की बाधा के अपना काम कर रहे थे। ×××× अलबत्ता पुलिस बार-बार आकर जनता के काम में अशान्ति डालती थी। एक पुलिस-अफ़सर ने अकारण ही मेरे साथ के एक लड़के को पकड़ लिया, और जब मैंने उसकी इस बेक़ायदगी के ख़िलाफ़ प्रतिवाद करते हुए उससे कहा कि तुम मुझे पकड़ो, क्योंकि लड़के को मैं अपने साथ लाई हूँ, तो उसने मुझे धमकी दी और जैसा कि उसने कहा था वैसा ही हुआ। यह पुलिस वाला भागा हुआ आपके पास पहुँचा, अपनी गढ़ी-गढ़ाई कहानी इसने आपको कह सुनाई और शाम को आपका दस्तख़ती नोटिस लेकर फिर आ धमका। जनता से खुले-आम यह कहना, कि वह अपने देश के उद्योग-धन्धों का संरक्षण करे, क्या कोई पाप है ? क्या यह कोई जुर्म है, कि दूकानदारों से देश की बनी चीज़ें दूकान में सजाने के लिए कहा जाय? क्या भारत में प्रचलित क़ानून उसके उद्योग-धन्धों के लिए ऐसा विघातक है ? क्या हम (अङ्गरेज़) लोग यहाँ इसीलिए आए हैं कि, अपने देश में हम जिन बातों को धड़ाके के साथ करते हैं, उनकी उन्नति का यहाँ निषेध करें ? अथवा हमें भी यहाँ ब्रिटिश शासन की नीति से शासित होना है ? क्या (इस सबका अर्थ) मैं यह समझूँ कि ब्रिटिश अफ़सर लोग भारत में आकर सज्जनता और भलमनसाहत को तिलाञ्जलि दे देते हैं ? अभी तो नहीं, जब असहयोग-आन्दोलन और कॉङ्ग्रेस के नेता महात्मा गाँधी मुझे हुक्म देंगे, तब मैं आपकी इस आज्ञा की अवज्ञा करूँगी।"

यह तो हुई सन् १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन की बात; सन् १९३० में भी श्रीमती सेन गुप्ता की विचारधारा, वर्तमान शासन-प्रणाली के सम्बन्ध में, उतनी ही खरी, निष्पक्ष और सहृदयतापूर्ण है। वे एक शुद्ध भारतीय ललना की भाँति अपने पति की अनुगामिनी हैं, आन्दोलन को भी वे एक भारतीय की भाँति ही देखती हैं; अङ्गरेज़ होने का घमण्ड उन्हें छू तक नहीं गया। अपनी गिरफ़्तारी के दूसरे दिन, ३१ अक्टूबर को उन्होंने अपने पुत्रों—शिशिर और अनिल—को जो पत्र लिखा है, उसके कुछ उद्धरण देकर हम यहाँ अपने कथन की पुष्टि करते हैं। वे लिखती हैं :—

"..........I was merely addressing a meeting which had not been declared unlawful and I certainly was not given time to say anything that could probably be called sedition, we were not even shown the order. . . . It will merely show what a farce these trials and arrets are. I really think they have lost their heads completely."

अर्थात्—"मैं केवल एक सभा में व्याख्यान दे रही थी, जो ग़ैर-क़ानूनी क़रार नहीं दी गई थी, और मुझे इतना अवसर ही कहाँ दिया गया, कि मैं बोल सकती, जिसे सम्भवतः राजद्रोह कहा जा सकता; हमें ऑर्डर तक तो दिखाया नहीं गया। ×××× इन बातों से पता चलता है कि यह मुक़द्दमे और गिरफ़्तारियाँ महज़ एक ढकोसला हैं। सचमुच मैं तो ऐसा

(२०वें पृष्ठ का शेषांश)

रुपए वार्षिक आय का प्रदेश भी कम्पनी के नाम जागीर में लिख दिया। यह भी निश्चित हुआ कि कम्पनी का एक दूत पूना-दरबार में रहा करेगा।

विश्वास नहीं होता कि इस अदूरदर्शितापूर्ण सन्धि में नाना फड़नवीस का हाथ रहा होगा। जो नाना फड़नवीस अङ्गरेज़ों को आश्रय देने का आजीवन विरोधी रहा—जिस नाना फड़नवीस की निश्चित सम्मति थी कि "इन टोपी वालों (यूरोपियनों) के व्यवहार, चालाकी और बेईमानी से भरे होते हैं" उसने अङ्गरेज़ों को साष्टी का द्वीप "मित्रता के उपहार" में, और भड़ोच और उसके आस-पास का प्रदेश "जागीर" में दे देने वाली सन्धि का समर्थन किया होगा, इस बात की कल्पना नहीं की जा सकती ! पुरन्दर की सन्धि से यह अनुमान होता है कि उस समय पेशवा-दरबार में नाना फड़नवीस का अधिक प्रभाव न था। अस्तु।

(क्रमशः)

['चाँद' के हिन्दी संस्करण से उद्धृत]

* * *

सोचती हूँ, कि इन लोगों के दिमाग़ बिलकुल फिर गए हैं।"

वर्तमान धाँधलियों से वे कैसी ऊबी हुई हैं, इसका परिचय नीचे के उद्धरणों से मिलता है :—

"I realised two days ago I should most probably be arrested but one doesn't get in the least excited or nervous but just disgusted with the idea of law and order which has now become illegal law and disorder caused by the Government."

अर्थात्—"दो दिन पूर्व मुझे ऐसा भास हुआ था, कि अवश्य ही मैं पकड़ ली जाऊँगी। लेकिन गिरफ़्तारी से किसी को किञ्चित मात्र भी जोश या घबराहट नहीं होती, बल्कि वह परेशान होता है न्याय और व्यवस्था के उस विचार से, जो आज सरकार की कार्यवाहियों के कारण अन्याय और अव्यवस्था बने हुए हैं।"

गिरफ़्तारी और जेल के लिए वे कैसी तैयार बैठी थीं, यह नीचे के वाक्य से सिद्ध होता है :—

"Don't worry about me at all. I am absolutely all right. The thought of jail when one is outside is much worse than when one is actually in it. . . . . Mum's (Mr. Sen Gupta's) judgment will be given to-day. It will probably be two years, but don't be alarmed by that or if they give me six months."

अर्थात्—"मेरी चिन्ता बिलकुल मत करना। मैं भली भाँति हूँ। जेल तो उससे बाहर रहते हुए ही हौआ जान पड़ता है, यहाँ आ जाने पर तो वह कुछ भी नहीं। तुम्हारे पिता का फ़ैसला आज सुनाया जायगा। उन्हें शायद दो वर्ष की क़ैद की सज़ा दी जायगी; लेकिन तुम उससे, या मुझे भी यदि ६ मास के लिए भेज दिया जाय, तो घबड़ाना मत।"

अब से २१ वर्ष पूर्व केम्ब्रिज में मिस नेली ग्रे (Miss Nellie Gray) और मिस्टर जे० एम० सेन गुप्त का विवाह-सम्बन्ध हुआ था। दोनों का प्रेम-सम्बन्ध आशातीत सफल हुआ है। पूर्व और पश्चिम—प्रकाश और अन्धकार—दो विभिन्न सभ्यताओं के होते हुए भी आज दोनों के बीच सन्ध्या समागम का-सा उज्ज्वल चन्द्रोदय हुआ है। हमने इस लेख के आरम्भ में श्रीमती नेली के जो वाक्य उद्धृत किए हैं, उसे उन्होंने अक्षरशः सत्य सिद्ध कर दिखाया है। दो प्राणियों में दो शरीर होते हुए भी, कैसी एक-प्राणता है, इसके सम्बन्ध में मैडम नेली की माता मिसेज़ ग्रे ने जो विचार, मि० सेन गुप्त की गत १२ अप्रैल की जेल-यात्रा के उपरान्त, उनके अलीपुर सेण्ट्रल जेल में अनशन करने के समय, लन्दन के 'डेली न्यूज़' के सम्वाददाता से प्रकट किए थे, उन्हें यहाँ उद्धृत करने का लोभ हम सम्वरण नहीं कर सकते। श्रीमती ग्रे ने कहा था :—

"I love the dear boy. I love them both. They are such a devoted couple. I never know husband and wife more fond of each other. Nellie was determined to have him, and she has stuck to him through thick and thin. She has very strong views on Anglo-Indian marriages, and holds that when an English girl marries an Indian, India must become her home in every sense of the word, and she has thrown herself wholeheartedly into all her husband's affairs.

"I have not worried because I know she was happy in her love. I cannot say anything good enough about my son-in-law, and if the term of a white man can be applied to a black man, then it applies to him. My daughter could not have a better husband."

अर्थात्—"मैं उस प्रिय युवक (श्रीयुत सेन गुप्त) को प्यार करती हूँ! मुझे दोनों ही प्यारे हैं। इस दम्पति में क्या ही सुन्दर प्रेम है। ऐसे पारस्परिक प्रेम करने वाले पति-पत्नी को मैंने कभी नहीं देखा। नेली उससे विवाह करने पर तुल गई थी, और आज वह सब प्रकार से उसकी अनुगामिनी है। "अङ्गरेज़-हिन्दुस्तानी" विवाह के सम्बन्ध में उसके विचार बहुत उच्च हैं। उसका कहना है, कि यदि कोई अङ्गरेज़ लड़की किसी भारतीय से विवाह करे, तो भारत को अक्षरशः उसे अपना देश बना लेना चाहिए। और आज वह तो अपने पति के प्रत्येक कार्य में दिलो-जान से उसकी सहगामिनी बन गई है।

"मुझे चिन्ता नहीं है, क्योंकि मैं जानती हूँ, कि नेली अपने प्रेम-सम्बन्ध में सर्वसुखी है। अपने दामाद के सम्बन्ध में तो मैं कहूँ ही क्या; उसके लिए मैं तो यह कहूँगी कि वह काली जाति का नहीं, बल्कि गोरी जाति का व्यक्ति है। मेरी लड़की को उससे अच्छा पति नहीं मिल सकता था।"

गत अप्रैल वाली सज़ा के वक़्त कलकत्ते की अलीपुर जेल में श्रीयुत सेनगुप्त ने, सुभास बाबू आदि के साथ जेल-दुर्व्यवहार के विरोध में अनशन किया था; उस समय श्रीमती सेन गुप्ता जेल के फाटक पर कई घण्टों तक खड़ी रही थीं, लेकिन उन्हें अपने पति से मुलाक़ात करने की आज्ञा नहीं दी गई। उस समय उन्होंने अपनी माता को जो पत्र लिखा था, उसी के उपरान्त उनकी माता ने उपरोक्त उद्गार प्रकट किए थे। पिछले २१ वर्ष में, जब से उन्होंने अपना घर, केम्ब्रिज, छोड़ा है, वे केवल एक बार, सन् १९२३ में वहाँ गई थीं। अपने घर पर कुँवारपन में मिस नेली ग्रे को नाचने का बेहद शौक़ था; वे उन दिनों वहाँ के समाज में वे कलाविद् नर्तकी मानी जाती थीं, और आज भी केम्ब्रिज के नाचघरों में उन्हें इसलिए याद किया जाता है। लेकिन आज तो श्रीमती नेली एक अङ्गरेज़ महिला होकर भी हृदय और मस्तिष्क दोनों से भारतीय बन गई हैं; भारत उनका घर है, उसका दुःख-सुख उनका दुःख-सुख है, और आज वे उसी के लिए अपने रङ्ग और देश के लोगों के जेलख़ाने में पड़ी भारत के नाम की माला जप रही हैं। भारतीय समाज को इस सहृदय ललना से अभी अधिकाधिक आशा करनी चाहिए।

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

विफल मनोरथ होने पर भी प्रयत्न करते रहो। एक ही डुबकी लगाने से समुद्र से मोती न मिलने पर, हताश होने वाले कभी मोती नहीं पाते।

❀

हे मेरे मित्र, अपने अनुभवों का दान देकर मुझे लज्जित न कर। मुझे इन अनुभवों को पूरा मूल्य देकर प्राप्त करने की अभिलाषा है।

❀

पापों में लिप्त होने की अपेक्षा दुःखों में फँसा रहना उत्तम है।

❀

अपने विषय में दूसरों की सम्मति का अत्यधिक विचार करना अपनी सहज उन्नति में बाधा डालना है।

❀

लज्जा अत्यन्त निर्लज्ज होती है।

❀

अपनी निर्जन कुटी में, दीपक जला कर, उसके द्वार पर बैठा हुआ मैं अन्धकार में तेरी प्रतीक्षा करता हूँ।

मेरी आँख लग जाती है, तू इसी बीच में आता है और उदासीन होकर लौट जाता है।

❀

धनी दरिद्र से भी दरिद्र हैं; क्योंकि उनकी आवश्यकताएँ अधिक हैं।

❀

द्वेषाग्नि घर को जला कर बुझती है।

❀

पशुओं के हृदय में भी कोमल और रसिक भाव छिपे रहते हैं। वीणा का अलाप काले नाग को भी मस्त कर देती है।

❀

पाप और साहस में बैर है।

❀

जिस घर में आग लगती है, उसके आदमी ईश्वर को नहीं याद करते, कुएँ की ओर दौड़ते हैं।

❀

यश त्याग से मिलता है, धोखे-धड़ी से नहीं।

❀

मैले बर्तन में साफ़ पानी भी मैला हो जाता है, द्वेष से भरा हुआ हृदय पवित्र आमोद भी नहीं सह सकता।

❀

मन ही अपना मित्र है; मन ही अपना बैरी।

❀

हम सब नौका के यात्री हैं। जब तक हम यह नहीं जानते कि उस अलक्षित तट के किस स्थल पर हमारी नाव लगेगी, तब तक हम घबराते हैं।

जब हमें वह तट स्पष्ट दिखाई देने लगता है, तब हमारी घबराहट उत्सुकता में परिवर्तित हो जाती है।

❀

निराशा असम्भव को सम्भव बना देती है।

❀

ईर्ष्या कानों की पुतली होती है; विपक्षी सम्बन्ध में वह सब कुछ सुनने को तैयार रहती है।

* * *

लड़कियों की शिक्षा

[मिसेज़ जी० पी० द्विवेदी, बी० ए०]

गत चौथी दिसम्बर के भविष्य में एक लेख "लड़कियों की शिक्षा" शीर्षक छपा है। उसमें लेखक महाशय ने लड़कियों की अङ्गरेज़ी शिक्षा के विरुद्ध ख़ूब दिल के फफोले फोड़े हैं। निम्न-लिखित पंक्तियों में मेरा यह आशय नहीं है कि लेखक की आलोचना करूँ, वरन् मेरा मतलब है, कि उनका ध्यान उनकी कुछ भूलों की ओर आकर्षित कर दूँ। इस धृष्टता को मैं आशा करती हूँ कि लेखक महाशय क्षमा करेंगे।

पहली भूल तो आपने यह की है, कि आप फ़रमाते हैं—"लड़कियों को अङ्गरेज़ी शिक्षा देने का उद्देश्य यही हो सकता है, कि वे अच्छी अङ्गरेज़ी शिक्षा प्राप्त कर बड़े-बड़े सरकारी पदाधिकारियों को वरण कर सकें। इसके अतिरिक्त और कोई आशय इसके अन्तर्गत नहीं दीख पड़ता"। आपकी इस प्रकार कल्पना करना, मेरी समझ में शिक्षा का बेरहमी के साथ गला घोटना है। ज़रा विचार कीजिए कि प्रति वर्ष अङ्गरेज़ी शिक्षा-प्राप्त कितनी लड़कियों की शादी सरकारी पदाधिकारियों से होती है? ऐसे विवाह शायद उँगलियों ही पर गिने जा सकेंगे। अधिकांश ऐसे विवाह बराबरी में ही होते हैं। इसके सिवा अङ्गरेज़ी शिक्षा देने वाले माँ-बाप के तथा शिक्षा पाने वाली लड़कियों के मन की बात का भी कुछ पता आपको लगा लेना चाहिए था। मुझे जहाँ तक ज्ञात है, प्रायः सभी की यह धारणा है कि अङ्गरेज़ी शिक्षा प्राप्त करके वह (लड़कियाँ) स्वयं उच्च पदाधिकारी बन सकें। समाज-सेवा कर सकें, जिससे देश का कल्याण हो। कहने की ज़रूरत नहीं, कि देश में कितनी ऐसी अङ्गरेज़ी शिक्षित महिलाएँ हैं, जिन्होंने बड़े-बड़े पदाधिकारियों से विवाह किए हैं? सोचने की बात है कि आजकल श्रीमती सरोजिनी नायडू के समान अनेक अङ्गरेज़ी शिक्षित स्त्रियों ने स्त्री-समाज को कितना जाग्रत कर दिया है। देश के प्राङ्गण में इन महिलाओं ने कैसी हलचल मचा दी है। यदि आपके वेद-वाक्य में कुछ भी सत्यता होती तो इनमें से अधिकांश आज के दिन बड़े-बड़े लाट साहबों के महलों में सुख की नींद सो रही होतीं।

दूसरी आश्चर्य की बात यह है, कि आप अङ्गरेज़ी स्कूलों के व्यय से भी घबड़ाते हैं। वर्तमान स्थिति में उच्च शिक्षा के लिए व्यय करना ही पड़ेगा। यह बात दूसरी है कि आप लोग कुछ नई व्यवस्था करें, जिससे भविष्य में व्यय कम पड़ने लगे। यह आपका अपनी पुत्रियों के प्रति अन्याय होगा, यदि आप अधिक व्यय का बहाना करके उन्हें प्राइमरी शिक्षा से आगे न बढ़ने दें। जिनमें प्रतिभा है, जिनकी इच्छा उच्च शिक्षा प्राप्त करने की है और जिनके पास ईश्वर की कृपा से धन भी है, उन्हें अवश्य अवसर देना चाहिए। यह बात अब स्वयं-सिद्ध है कि यदि अवसर दिया जाय तो स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकतीं। यह भी बात बिलकुल साफ़ है कि वही लड़कियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का हौसला करती हैं, जिनके यहाँ पर्याप्त धन होता है। मेरा मतलब यह नहीं, कि प्राइमरी स्कूल न खोले जावें। ऐसे स्कूलों की भी बड़ी ज़रूरत है। क्योंकि सबकी माली हालत एक सी नहीं होती। ऐसी लड़कियों की शिक्षा के लिए उन्हें प्राइमरी कक्षा तक ही पढ़ा कर सन्तोष करना होगा। हाँ, इतनी प्रार्थना ज़रूर है कि आप फावड़ा लेकर इन उच्च शिक्षा देने वाले इने-गिने स्कूलों की बुनियाद न खोदें। इस समय स्त्री-समाज के हित के लिए तथा देश-हित के लिए ऐसी संस्थाओं की बड़ी आवश्यकता है। इन्हीं से पढ़ कर निकली हुई लड़कियाँ आज बड़े-बड़े काम कर रही हैं; जिसका प्रभाव भविष्य में पढ़ने वाली बालिकाओं पर अवश्य ही पड़ेगा।

आपकी विदुषी कन्या को छोड़ कर लड़कियों ने अङ्गरेज़ी अपनाई, आपके प्रलोभन के चकमे में न आईं। क्यों? इसका कारण अङ्गरेज़ी शिक्षा के भूत के वशीभूत होना नहीं था, बल्कि आपकी अन्याय-प्रियता की मनोवृत्ति के प्रतिवाद-रूप ही उन्हें ऐसा करना पड़ा। क्या वह नहीं समझ सकतीं कि आप लोग तो अङ्गरेज़ी शिक्षा प्राप्त कर बड़े पदों की शोभा बढ़ावें और वह केवल हिन्दी पढ़ा कर समझा दी जावें, कि बस अब तुम्हारे कार्यक्षेत्र का अन्त है, आगे पढ़ने की ज़रूरत नहीं है! महाशय, अब वह दिन लद गए, जब बच्चों की तरह स्त्रियों से भी हौआ कह कर उन्हें डरा दिया जाता था!! अब स्त्री पुरुष के समान अधिकार प्राप्त करना चाहती है और वास्तव में वह प्रत्येक कार्यक्षेत्र में अपनी पूर्ण योग्यता का परिचय दे रही है।

आपकी तीसरी धारणा भी कुछ ठीक नहीं जँचती। मेरा यही अनुरोध है कि ध्यानपूर्वक देखिए, कितनी अङ्गरेज़ी शिक्षित महिलाएँ अपनी मातृ-भाषा के महत्व को भूल गई हैं और पैतृक विचारों को तिलाञ्जलि दे दी है? केवल अनुमान से कहना कि अङ्गरेज़ी शिक्षा से यह हो जावेगा, वह हो जावेगा और प्रत्यक्ष की बात न देखना, मेरी समझ में बड़ी भूल करना है। माता की गोद से लेकर बड़े होने पर्यन्त तक पुत्रियों के हृदय पर मातृ-भाषा का ही संस्कार बराबर पड़ता रहता है। बड़े अङ्गरेज़ी शिक्षित ख़ानदानों में भी घरेलू बोल-चाल में मातृ-भाषा का ही उपयोग होता है। फिर यह कैसे सम्भव है कि दस-पाँच बरस की अङ्गरेज़ी शिक्षा उस संस्कार को समूल नष्ट कर दे। मेरा मत तो यह है कि अङ्गरेज़ी शिक्षित पुत्रियाँ अङ्गरेज़ी भाषा के दोष-गुण समझ कर अपनी मातृ-भाषा ही के गुणों पर मुग्ध होंगी और अपनी भाषा की त्रुटियों को दूर करने की योग्यता प्राप्त करेंगी।

रही स्वधर्म और पैतृक विचारों की बात, इसके बारे में मैं केवल इतना ही कहना चाहती हूँ, कि यदि आपका अभिप्राय यह है कि हम लोगों की तरह हमारी लड़कियाँ भी धार्मिक ढकोसलों की तथा पुरानी रूढ़ियों की गुलाम बनी रहें, बुद्धि को कुण्ठित बनाए रक्खें, तो ऐसे स्वधर्म तथा पैतृक विचारों को दूर ही से प्रणाम है। कहने की ज़रूरत नहीं कि इन धर्म-भगवान तथा पैतृक विचारों के नाम से क्या-क्या अत्याचार नहीं होते हैं!!! इन्हीं की बदौलत आज हिन्दू-समाज जर्जरीभूत हुआ जा रहा है!! ऐसी दशा में यह बिलकुल उचित है, यदि शिक्षित स्त्रियाँ इन पोच विचारों को छोड़, सत्य-धर्म तथा बुद्धि-सङ्गत पैतृक विचारों को अपना रही हैं। यह अवगुण नहीं है। यह सराहनीय गुण है—घोर विरोध के सामने अटल साहस है, अन्धपरम्परा को एक ज़बरदस्त फटकार है!! इसमें सन्देह नहीं कि आजकल अङ्गरेज़ी पढ़ी स्त्रियाँ बहुत-कुछ इन रोगों से बची हुई हैं। शायद इसी कारण से यह लोग किसी का कुछ भी न बिगाड़ते हुए, अन्ध-विश्वासियों की अप्रसन्नता की पात्र हैं। इनके पीछे बेचारी अङ्गरेज़ी शिक्षा की भी छीछालेदर की जाती है!!!

चौथी भूल आपकी यह है कि आप सोचते हैं कि सौ वर्षों में मनुष्यों द्वारा जो हानि नहीं हुई है, वह स्त्रियों द्वारा थोड़े समय में हो जावेगी, और वह भी अङ्गरेज़ स्त्रियों के अवगुण ग्रहण करके! बस क्षमा कीजिए; ऐसी कल्पनाओं से जी ऊब गया! आजकल शिक्षित स्त्री-समाज पर यह भी एक मिथ्या दोषारोपण किया जाता है और अकारण ही लोगों की आँख में खटकता है!! साथ ही यह कहना सर्वथा अनुचित है कि शिक्षित स्त्रियाँ अपने हाथ से पानी तक उठा कर पीना नहीं चाहतीं। वास्तव में यह बात ऐसी नहीं है। अपनी परिस्थिति तथा अवकाश के अनुसार वह लोग अपनी गृहस्थी के सभी छोटे-बड़े काम करती हैं। इस गुण में वह एक अङ्गरेज़ महिला से एक क़दम भी पीछे नहीं हैं। यह बात दूसरी है कि किसी विशेष कारणवश वह कोई मामूली काम न कर सकती हों, तो उसके लिए यदि वह धनवान हैं तो दूसरा प्रबन्ध रहता है। हाँ, यह बात ज़रूर है कि यह लोग सब कुछ करते हुए आगे बढ़ रही हैं। मनुष्यों के समान जीवन के कार्यक्षेत्र के प्रत्येक विभाग में क़दम बढ़ा रही हैं, 'ताड़ना की अधिकारी' नहीं बनना चाहतीं; इसीलिए बड़ी अपराधिनी हैं!! इस प्रकार तो पढ़ी स्त्रियाँ उन्नति-पथ पर अग्रसर हो रही हैं, और इसे यदि पतन कहा जाय, तो सोलह आने अन्धेर है! यदि इससे यह निष्कर्ष निकाला जाय कि अङ्गरेज़ी पढ़ी स्त्रियाँ बड़ी हानि कर रही हैं या अगले सौ वर्षों में कर डालेंगी, तो ऐसी धारणा कोरी कल्पना नहीं तो और क्या है?

इसी सिलसिले में यह कहना, कि अङ्गरेज़ी पढ़ने से यहाँ की स्त्रियाँ अङ्गरेज़ महिलाओं के अवगुण ही सीखेंगी, क्योंकि यह मनुष्य-स्वभाव का नियम है। धन्य है इस नियम को!! इसी नियम के बाद मनोविज्ञान का भी दिवाला पिट जाता है!! इस नियम का समर्थन न करते हुए यदि यह कहा जाय कि वह गुण ही शीघ्र ग्रहण करेंगी तो उचित होगा। प्रत्यक्ष में भी यही देखने में आता है। शायद ही कुछ ऐसी स्त्रियाँ हों, जो अङ्गरेज़ी सभ्यता के रङ्ग में बिलकुल डूब गई हों। कुछ ईसाई स्त्रियों को छोड़, प्रायः सभी अङ्गरेज़ी शिक्षित स्त्रियों का रहन-सहन, वेष-भूषा सब हिन्दोस्तानी ही रहती है। 'साड़ी' के सामने 'साया' नहीं डट रहा है। साथ ही में यह कहना कि "उनमें अपव्यय बढ़ जावेगा, उनसे लक्ष्मी दूर भागने लगेंगी" शङ्का मात्र ही है। सफ़ाई से रहना, साफ़-सुथरे वस्त्र धारण करना, गहनों के लिए अपने पतियों की खोपड़ी न चाटना—ऐसे गुण उनमें अवश्य उत्पन्न हो जाते हैं। इनको यदि अवगुण समझा जावे तो फिर क्या ठिकाना है!! ऐसा भी कभी देखने में नहीं आता कि शिक्षित स्त्रियाँ रुपए की क़द्र न जानती हों। वह उसे उत्तम ढङ्ग से ख़र्च करती हैं। यदि किसी एक को फ़िज़ूलख़र्ची की लत हो, तो यह शिक्षा का प्रभाव नहीं है, बल्कि किसी और कारणवश मानसिक कुसंस्कार है। जितने अच्छे ढङ्ग से वह अपना घर सम्हाल सकती हैं, वह प्रशंसनीय है। जब वह अङ्गरेज़ी रङ्ग-ढङ्ग को नहीं अपना रही हैं, तो फ़िज़ूलख़र्ची से कोसों से दूर रहेंगी। ऐसी दशा में लक्ष्मी सदा ही उनकी सेवा में रहेंगी। वह स्वयं इस योग्य हो जावेंगी कि इतना धन उत्पन्न कर सकें, जिससे चार अन्य व्यक्तियों का पालन भी हो सकेगा।

आप परीक्षा-विवाह (ट्रायल मैरेज) तथा तलाक़ (डाइवोर्स) को भी हौआ समझ कर अवगुण ही बतलाते हैं। इस विषय में मेरा यही नम्र निवेदन है कि

यदि पक्षपात-रहित दृष्टि से देखिए तो विदित हो जावेगा कि यह प्रथाएँ स्वयं बुरी नहीं हैं। केवल आपके लिखने के ढङ्ग से भयानक जान पड़ती हैं। "पति की खोज में चाहे उसे अनेकों पति ही क्यों न करने पड़ें" इस प्रकार लिखना कितनी भद्दी बात है! आपको मालूम रहना चाहिए कि यह बात हिन्दू-महिला के आदर्श के सर्वथा प्रतिकूल है; और न वह इस प्रथा को इस बुरे ढङ्ग से अपनाया ही चाहती है। यह उसके हृदय की अन्तर्ध्वनि नहीं है और न हो सकती है। वह मनुष्य-समाज से न्याय चाहती है—उसकी इच्छा है कि उसे आँख मूँद कर अयोग्य वर के सुपुर्द न किया जावे। इतना अवसर उसे अवश्य मिले कि वह अपने भावी भाग्य-विधाता का आवश्यक परिचय ज़रूर जान ले। उसे देख भी ले और अपनी अनुमति दे सके। यह बातें बिना 'अनेकों पति करते हुए' सरलतापूर्वक हो सकती हैं। ऐसी अवस्था में अङ्गरेज़ी परीक्षा-विवाह की विधि की कोई ज़रूरत ही न पड़ेगी। आजकल शिक्षित स्त्रियाँ अङ्गरेज़ी प्रथा से घृणा करती हैं और अपनी इस सरल प्रथा को, जो पुरानी 'स्वयम्बर' की प्रथा से मिलती-जुलती है, पसन्द करती हैं। इस प्रकार जब पति-पत्नी में कोई अनबन की गुञ्जाइश न रहेगी तो तलाक़ का प्रश्न ही न उत्पन्न होगा। इसलिए पाश्चात्य देशों का रोग यहाँ न उत्पन्न हो सकेगा। इसके विपरीत यदि मनुष्य बुद्धि से काम न लेंगे, उपरोक्त सरल सुविधा न देंगे और तलाक़ से भी आना-कानी करेंगे, अपनी हठधर्मी पर आरूढ़ रहेंगे, तो स्त्री-समाज की दशा अवश्य ही बुरी होती चली जावेगी !!!

आपकी यह पाँचवीं भूल है कि आप कहते हैं कि अङ्गरेज़ी शिक्षा देने का आशय यह है कि हमारी लड़कियाँ अङ्गरेज़ तथा अङ्गरेज़ महिलाओं से बात कर सकें; ऐसा नहीं है। प्रत्येक शिक्षा का आशय मानसिक, चारित्रिक तथा शारीरिक उन्नति करना होता है। साथ ही में इस शिक्षा से दूसरा आशय यह भी है कि वह न केवल बातचीत ही कर सकें, बल्कि उनकी बराबरी का भी दावा कर सकें और अपने को एक तुच्छ दास समझना छोड़ दें।

यह भी स्मरण रहना चाहिए कि जब तक हिन्दी-शिक्षा के लिए पूरे साधन पर्याप्त नहीं हैं, तब तक अङ्गरेज़ी ही से काम लेना पड़ेगा। आज के दिन वर्तमान युग की सभी आवश्यक बातें अङ्गरेज़ी भाषा ही में हैं; इसलिए जब तक हमारा भाषा-भण्डार पूर्ण न हो जावे, हम अङ्गरेज़ी भाषा का पूर्ण तिरस्कार नहीं कर सकती हैं। मेरा मतलब यह नहीं है, कि अङ्गरेज़ी के सामने हम अपनी प्यारी हिन्दी को भुला देवेंगी, वरन् हमें उसकी उत्तरोत्तर उन्नति करना है। हमें आशा है कि यह काम हम अङ्गरेज़ी पढ़ते हुए भी अच्छी तरह कर सकेंगी। हमको वह स्वप्न भी प्रत्यक्ष देखने की लालसा है, जबकि हमारी 'हिन्दी' राष्ट्र-भाषा के पद पर आसीन होगी। हाँ, इतनी प्रार्थना अवश्य है, कि जब तक स्त्रियों के लिए कोई समुचित हिन्दी-शिक्षा-प्रबन्ध नहीं है, जो अङ्गरेज़ी शिक्षा के टक्कर का हो, तब तक इस थोड़ी सी अङ्गरेज़ी शिक्षा ही से स्त्री-समाज का कल्याण होने दीजिए। एक तो यों ही स्त्रियाँ समाज-रूढ़ियों की चक्की में पिसी जा रही हैं, ऊपर से उन पर आग उगली जावे, यह सर्वथा अन्याय है !!!

* * *

क्षत्राणी का साहस

[श्री० कलिकाप्रसाद जी चतुर्वेदी]

मेरे एक गुजराती मित्र उस दिन अपनी एक आँखों-देखी घटना का इस प्रकार वर्णन कर रहे थे :—

"बात काठियावाड़ की है—मैं रेल में सफ़र कर रहा था। डब्बे में हम लोग ६-७ बनिए एक ओर बैठे थे और ६-७ मुसलमान दूसरी ओर। वे मुसलमान असभ्य, बदमाश और गुण्डे मालूम देते थे। कुछ देर बाद एक स्टेशन पर एक युवती भी उसी डब्बे में सवार हो गई। वह बड़े शील से अपने को भली-भाँति पर्दे में ढके एक बेञ्च पर चुपचाप बैठ गई। स्त्री के साथ में एक नौजवान लड़का था, जिसके सर पर रङ्गीन साफ़ा और कमर में झूलने वाली तलवार उन लोगों के क्षत्री होने का परिचय दे रही थी। लड़का राजपूत होने पर भी सफ़र में कच्चा मालूम देता था, और इतने नए-नए आदमियों के बीच में सङ्कुचित और भयभीत-सा दिखाई पड़ता था। क्योंकि उन बदमाश गुण्डों ने जब अपने जमाव के बीच में एक असहाय अबला को पाकर उसे लक्ष्य करके आपस में फ़ोश मज़ाक़ और कहनी-अनकहनी बातें शुरू कर दी थीं—तब भी लड़के को चुप ही बैठना पड़ा था। हम लोग भी यद्यपि ६-७ थे और युवती का इस प्रकार छेड़ा जाना नापसन्द कर रहे थे, फिर भी जाति के बनिए थे और मुफ़्त में झगड़ा मोल लेकर अपनी जान-जोखिम करना बुद्धिमानी के विरुद्ध समझ चुपचाप बैठ रहे थे। बेचारी युवती अपनी इस अवस्था को देख कर और इस प्रकार अपमानित हुआ पाकर सचमुच ख़ून के घूँट पीती रही होगी, यह थोड़ी देर बाद प्रत्यक्ष हो गया था।

"केवल ज़बानी असभ्यता के आगे भी वे दुष्ट बढ़ने लगे और रमणी के लटकते हुए डुपट्टे की गाँठ उन्होंने अपने बीच में बैठे एक अधिक मोटे बदमाश की गाँठ से चुपचाप बाँध दी और पहिले से भी अधिक प्रसन्न होकर ही-ही करने लगे।

"युवती का सफ़र लम्बा न था, वे अगले स्टेशन पर उतरने लगे। लड़का तो अपनी एक छोटी सी पोटली बग़ल में दबाए खिड़की के नीचे प्लेटफ़ार्म पर आ चुका था और स्त्री के उतरने का रास्ता देख रहा था। युवती ने भी उठ के खिड़की की ओर क़दम बढ़ाया, पर वह तुरन्त ही सहम के खड़ी हो गई। यह क्या? एक असूर्यम्पश्या कुल-वधू की लाज रखने वाला उसका डुपट्टा उसके ऊपर से खसकने लगा। "क्या बात है?" उसने घूम कर बड़े आश्चर्य और शर्म से देखना चाहा।

"किन्तु उधर क्या था? एक हिन्दू कुल-ललना की गाँठ एक बदमाश मुसलमान से जुड़ रही थी। अपना यह अपमान देख कर अबला की भी आँखें जलने लगीं—आख़िर वह क्षत्राणी थी; उधर वे बदमाश ख़ूब ठहाका मार कर हँसने लगे। एक ओर हम लोग मर्द-नामधारी उदासीन भाव से यह सब तमाशा देख रहे थे।

"उस समय तक उन बदमाशों ने उसकी आँखों की चिनगारियों को नहीं देख पाया और एक गुण्डे ने मुस्करा कर कहा—अब कहाँ जाओगी, अब तो यहीं बैठो।

"नीचे से लड़के ने अधीर होकर कहा—अरे जल्दी उतरो, गाड़ी छूट रही है।

"मैं उतरूँ कैसे? पहिले ऊपर आकर इन लोगों से मेरा निपटेरा तो कर दो।"—युवती ने तुनक कर कहा।

इन थोड़े से शब्दों में अपमान के प्रति कैसी दाह थी? कैसा उलाहना था? कैसी उत्तेजना थी? किन्तु यह गँवार क्षत्री कुछ भी न समझा—उसमें अभिमन्यु की बुद्धि न थी, उसमें अभय-निर्भय या गोरा बादल के अंश न थे!

"फिर भी क्षत्राणी तो क्षत्राणी थी; उसने खीज कर एक बार अपने संरक्षक को देखा, फिर पीछे दृष्टि दौड़ाई। उसका डुपट्टा उसी हालत में था और वे बदमाश उसी भाँति खिलखिला रहे थे।

"गाड़ी ने चलने के लिए सीटी दी और रमणी ने बिजली की तरह तड़प कर सामने खड़े लड़के की कमर की तलवार खींच ली और पलक मारते-मारते में एक! दो! तीन! बदमाशों के अभी-अभी खिलखिलाने वाले सर इधर-उधर लोट कर ख़ून से खेलने लगे! सारा हँसी-मज़ाक़ बन्द हो गया, बचे हुए बदमाश सब कुछ भूल कर अपनी जान बचाने की फ़िक्र में इधर-उधर दौड़ने लगे। किन्तु रमणी के सामने कोई नहीं था। यद्यपि वह अब भी आँखों से आग बरसाती नङ्गी तलवार हाथ में लिए हँसी खेलने के लिए तैयार खड़ी थी। हम कायरों के भी बदन में इस दृश्य ने ख़ून दौड़ा दिया, हम लोग वाह-वाह करने लगे—किन्तु वह बालक अब भी भौचक्का सा जहाँ का तहाँ खड़ा था।

"गाड़ी जहाँ की तहाँ रुक गई, स्टेशन पर तहलका मच गया। सब मुसाफ़िर वीराङ्गना के दर्शन करने को इकट्ठे हो गए। स्टेशन-स्टाफ़ अपनी कारगुज़ारी दिखाने लगा और पुलिस घटना की जाँच-पड़ताल करने में मशग़ूल हो गई।

"बचे हुए गुण्डे अब भी भय से काँप रहे थे। इतने आदमियों के इकट्ठे हो जाने पर उनमें कुछ साहस का सञ्चार हुआ और वे काँपते हुए युवती के चरणों में लोट गए। उन्होंने अपना क़सूर स्वीकार कर लिया। हम सब लोगों ने आगे बढ़-बढ़ कर गवाहियाँ दीं और युवती न्यायाधीश द्वारा पुरस्कृत की गई।"

* * *

फ़रियादे "बिस्मिल"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

ये माना मुझको कर दोगे नज़रबन्द,
नज़र तो हो नहीं सकती मगर बन्द !
न देखी जायगी मेरी तरक़्क़ी,
करेंगे अब तरक़्क़ी का वह दर बन्द !
नज़र वाले नज़र करते नहीं क्यों,
हुए हैं हज़रते "बिस्मिल" नज़रबन्द !

* * *

कोई "जापान" कोई "रूस" के साथ,
और मैं आपके जुलूस के साथ !

* * *

अपने मतलब की सब यह घातें हैं,
एक मुँह है हज़ार बातें हैं !

* * *

उनसे कल इस बात पर थी बहस गर्म,
मज़हबी झगड़ों को ठण्डा कीजिए !

* * *

नहीं होने की तय मञ्ज़िल हमारी,
अलग सब से अगर है लय हमारी !

एक मनोरञ्जक कहानी

एक समय किसी विद्वान और धनिक ब्राह्मण ने इस बात की घोषणा की, कि यदि कोई मुझे शास्त्रार्थ में हरा देगा तो उसे मैं अपना सारा धन दे दूँगा। उसकी स्त्री को यह बात जान कर बड़ी चिन्ता हुई। वह अपने पति से बोली—"प्रिय, तुमने यह क्या किया? मान लो, यदि तुमसे भी कोई विद्वान पण्डित तुम्हें शास्त्रार्थ में हरा दे, तो हमारी क्या गति होगी? तब तो हमें इस वृद्धावस्था में भीख माँगनी पड़ेगी!"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया—"प्रिये, तुम व्यर्थ ही चिन्ता करती हो। क्या तुम्हें यह विश्वास है कि मैं अपनी हार कभी मानूँगा?" स्त्री की चिन्ता मिट गई।

मान लीजिए, कि वह ब्राह्मण की स्त्री मूर्खतावश सबों से यह भेद खोल दे कि हमारे पति कभी हार मानने वाले ही नहीं हैं, तो क्या उसका पति क्रुद्ध न होगा?

मि० चर्चिल, जिन्होंने कभी बेतमीज़ी नहीं की है, 'डेली हेरल्ड' के कथनानुसार, आज बेतमीज़ी कर बैठे हैं! उन्होंने इसी बात का भण्डाफोड़ कर दिया है, कि "ब्रिटिश सरकार भारत के प्रति जो कुछ भी प्रतिज्ञा करे, वह उसे औपनिवेशिक स्वराज्य, अथवा इसी प्रकार की और कोई चीज़ देने के लिए तैयार नहीं है।" उन्होंने भारतीयों को भी 'मृगतृष्णा' से बचने का आदेश दिया है। मि० चर्चिल को कितना ही दोष क्यों न दिया जाय, उन्होंने बातें सच्ची कही हैं। हमारे देशवासियों को मि० रैमज़े मैकडॉनल्ड की चिकनी-चुपड़ी बातों की अपेक्षा, मि० चर्चिल की खरी बातों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

मि० मैकडॉनल्ड को भी मि० चर्चिल ही का दूसरा संस्करण समझिए। वे चर्चिल की बातों का कितना ही प्रतिवाद क्यों न करें, स्वयं भी उसी राह पर चल रहे हैं! आपने भारतीय प्रतिनिधियों की प्रत्येक माँग को सुहला-सुहला कर हटा दिया, मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन-संस्था की सिफ़ारिश कर, एक झगड़ा खड़ा कर दिया, और बर्मा के विषय में भी इसी प्रकार लीपा-पोती कर अपनी कूटनीतिज्ञता का अच्छा परिचय दिया है। शास्त्री और जयकर जैसे चतुर राजनीतिज्ञ मुँह ताकते ही रह गए! मि० चर्चिल ने गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स को एक 'हवाई वस्तु' कह कर, मि० रैमज़े मैकडॉनल्ड की उन चालबाज़ियों का सारांश मात्र हमारे सामने रख दिया है।

ब्रिटेन का कहना है, कि यदि भारतीय स्वराज्य के योग्य हो जायँगे, तो वह ख़ुशी से अपना शासन भारत पर से हटा लेगा, किन्तु इस योग्यता का निर्णय कौन करेगा? ऊपर की कहानी में, ब्राह्मण जिस प्रकार अपनी हार-जीत का निर्णय स्वयं करना चाहता है, ठीक उसी प्रकार ब्रिटिश सरकार भी भारतीयों की योग्यता का निर्णय अपने ही हाथों रखना चाहती है। तब यदि वह ब्राह्मण की स्त्री और मि० चर्चिल, उनके इस भेद को खोल ही दें, तो क्या दोष?

—'अमृत बाज़ार पत्रिका' (अङ्गरेज़ी)

*　　*　　*

दमन का दौर-दौरा

भारतवर्ष में पुलिस जो कुछ करे थोड़ा ही है। उससे आशा ही इसी बात की की जाती है! यहाँ की पुलिस को शिक्षा ही इस बात की दी जाती है। ठीक शब्दों में कहना हो तो उनके स्वभाव में जान-बूझ कर एक प्रकार की ज़हनियत—गुण्डा प्रकृति—पैदा की जाती है, जो भयङ्कर से भयङ्कर अपराधियों में पाई जाती है! यही कारण है कि पुलिस के लोग आम-तौर पर भारी से भारी अपराध कर सकते हैं। चाहे अधिकारी पुलिस की योग्यता और कर्त्तव्यनिष्ठा के कितने गीत गाया करें, इस बात को तो मानना ही पड़ेगा, कि यहाँ की पुलिस अपनी अविनयशीलता, असभ्यता और नृशंसता के लिए जितनी बदनाम है, उतनी शायद ही किसी देश की होगी। सरकार को अपनी इसी पुलिस का घमण्ड है, और वह इसी की शक्ति से अपनी इस निरङ्कुशता का सिक्का भारतवासियों पर बिठलाना चाहती है। हम जानते हैं कि आज गुजरात के इन किसानों की करुण-गाथा को सुनने वाला कोई नहीं। परन्तु वे शिकायत करना ही कब चाहते हैं? उन्हें अपनी अहिंसा, त्याग और बलिदान की शक्ति पर विश्वास है—श्रद्धा है। सरकार उन्हें कुचल देना चाहती है। जहाँ कहीं भी लोग इस आत्मत्याग के के लिए उद्यत होंगे, वहीं सरकार गुजरात के रोमाञ्चकारी दृश्य उपस्थित कर देगी। परन्तु आख़िर कभी तो हमें इस मार्ग से गुज़रना ही होगा। स्वतन्त्रता का आसन इस मार्ग के उस पार है। जितनी जल्दी हम इस मार्ग से गुज़र जायँ, उतनी जल्दी हम अपने उद्देश्य पर पहुँच सकेंगे। सरकार को समझ लेना चाहिए कि कुछ देर के लिए और वह भी कुछ लोगों को, डरा-धमका कर भले ही वह शान्त कर दे, सारी क़ौम को हमेशा के लिए डण्डे के ज़ोर से दबाए रखना उसके लिए असम्भव है।

गुजरात के वीर किसानों ने समझ लिया है, कि विदेशी शासन की यन्त्रणाएँ सहते हुए तिल-तिल करके मरने की अपेक्षा, एक बार ही समस्त आपत्तियों को झेल कर उस शासन का मुक़ाबला करना ज़्यादा बेहतर है। भारत की स्वतन्त्रता की नींव गुजरात के इन वीर किसानों के रक्त से रक्खी जा रही है। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के स्वाँगों की इस उज्ज्वल और दिव्य त्याग के सम्मुख क्या हस्ती है?

—'पञ्जाब केसरी' (हिन्दी)

*　　*　　*

विद्यार्थियों की मनोवृत्ति

सहयोगी 'सैनिक' के इसी सप्ताह के अङ्क में हमने पढ़ा कि आगरा के कुछ विद्यार्थी श्रीमती कमला नेहरू के पास शायद उन्हें बुलाने के लिए गए थे। श्रीमती कमला नेहरू ने उन विद्यार्थियों को फटकार बताई। हमें पूरा विवरण नहीं मालूम है, परन्तु यह तो हमारा दृढ़ विश्वास है कि भारतीय विद्यार्थी निरे बातूनी हैं। वे किसी अर्थ के नहीं, वे कुछ भी कर नहीं सकते। देश ने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने का निश्चय नौजवानों के बल पर किया था। नौजवानों ने एक वर्ष पूर्व ऐसा शोरोग़ुल मचा रक्खा था, कि मालूम होता था कि मानो वे आसमान को सर पर उठा लेंगे। ऐसी-ऐसी प्रतिज्ञाएँ की गईं, ऐसी-ऐसी क़समें खाई गईं कि मालूम होता था कि भारत का काया-पलट हो गया। लोग बोलते थे, तो ऐसा मालूम होता था कि गरजते हैं। एक-एक शब्द में आग बरसती थी। ऐसा मालूम होने लगा था कि विद्यार्थी, भारतीय स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने वाले युवक, देश के बूढ़े अनुभवी सेवकों से बाज़ी मार ले जायँगे। २६ जनवरी का दिन था। आज़ादी की लड़ाई की तैयारी करने का बिगुल उसी दिन बजाया गया था। झण्डे उस दिन ख़ूब फहराए गए। गाने की ध्वनि में अजब माद-कता का अनुभव हुआ। विद्यार्थी उस दिन सभाओं में झुण्ड के झुण्ड बना कर आए थे। परन्तु उस दिन दीपक तेज़ होकर बुझने ही वाला था। उस दिन बातों का युग समाप्त हो गया। काम करने का समय आ गया। और काम करने से घबड़ाने वाले विद्यार्थी पीछे हट गए। फिर इनका पता न चला। 'इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद' की ध्वनि करने वाले इन्क़िलाब के आरम्भ होते ही लापता हो गए। उनके हृदयों में डर था, उनमें साहस नहीं था। वे किसी भी प्रकार का बलिदान करने के लिए तैयार नहीं थे। उनमें चरित्र ही न था, वे कहते कुछ थे, और करते कुछ। वे देश-भक्ति का अभिनय कर रहे थे। उनके हृदय में आग नहीं लगी थी। ग़रीबों की आह ने, कष्ट से व्याकुल, अत्याचार-पीड़ितों के करुण-क्रन्दन ने उनके हृदय पर कुछ भी असर न किया था। वे पीछे हट गए। उनकी ओर देश आशा किए हुए देख रहा था, देश का शिर लज्जा से झुक गया। पीछे हटने वाले विद्यार्थी याद रक्खें, कि यदि वे अपना कर्त्तव्य भूल गए और काम सम्हालने के लिए तैयार नहीं हैं, तो उनके बिना आन्दोलन रुक न सकेगा, लड़ाई में कमज़ोरी न आवेगी। स्वतन्त्रता के महान यज्ञ का, दरिद्र-नारायण की इस पूजा का—असफल होना असम्भव है।

—'प्रताप' (हिन्दी)

*　　*　　*

फ़रियादे "बिस्मिल"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

तङ्ग आकर उन्हीं के हो बैठे,
हम ग़ुलामी में सबको रो बैठे!
वेद से वास्ता नहीं "बिस्मिल"
पढ़ के कॉलिज में दीन खो बैठे!

*　　*　　*

नतीजा जीने-मरने का मिला क्या,
न था दुनिया में कुछ, दुनिया में था क्या!
बजा करती है, दोनों हाथ ताली,
बनावट में मुहब्बत का मज़ा क्या!
तड़पते हैं ग़मे-उलफ़त में "बिस्मिल"
नहीं मालूम हमको हो गया क्या!

*　　*　　*

हम यह तर्के-कुसूर कर न सके,
दिल को दुनिया से दूर कर न सके।
सब से अकड़ा किए मगर "बिस्मिल"
मौत से कुछ ग़ुरूर कर न सके।

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

एक दिन मैं घूमता घामता चण्डूख़ाने की ओर जा निकला। वहाँ का हाल सुनिए—चण्डूख़ाने में चार अफ़ीमी बैठे अफ़ीम घोल रहे थे। इनमें से दो हिन्दू थे, दो मुसलमान। अफ़ीम घोल कर चारों ने चुस्की लगाई और जब ज़रा सुरूर गठा तो बातें होने लगीं। उनमें से एक, जिनका नाम मियाँ ईदू था, यों बोले—अय्याँ सुनते हो, चीन से जङ्ग छिड़ने वाली है।

दूसरे मियाँ बकरीदी बोले—हाँ य्याँ, सुना तो हमने भी है, ख़ुदा करे यह ख़बर ग़लत निकले।

गज्जू नामक अफ़ीमी बोल उठा—जे तुमने क्या कही, ग़लत क्यों हो ?

बकरीदी—इसकी बड़ी भारी वजह है। अरे य्याँ अभी तुम लोगों को दुनिया की ख़बर तो है नहीं। कुछ पढ़े-लिखे हो तो ख़बर हो ! वही मसल है कि पढ़े न लिखे नाम मुहम्मद फ़ाज़िल। ख़ुदा बख़्शे अब्बा जान को जो हमें कुछ शुद-बुद पढ़ा गए। वही आज काम आ रहा है। वल्ला अगर इस वक़्त जैसी समझ उस वक़्त होती तो आज हम भी किसी इजलास पर डटे होते और बात-बात में डिगरी देते, किसी को जेलख़ाने भेजते किसी को काले पानी, किसी के बेत लगवाते और किसी को सीधे ख़ुदागञ्ज भेज देते।

मियाँ ईदू बोले—हमारे अब्बा जान सख़्त नामाक़ूल आदमी थे, जो हमें इल्म से क़तई महरूम रक्खा। मगर हाँ, इतनी नेकी ज़रूर कर गए कि चिनिया बेगम (अफ़ीम) से राहो-रस्म पैदा करा गए। सिर्फ़ इतनी ही बात पर हम उनके हक़ में दुआए ख़ैर किया करते हैं।

बकरीदी—अहा हा! वल्ला क्या प्यारा नाम है—चिनिया बेगम ! मैं तो इस नाम का आशिक़ हूँ, आशिक़ ! अल्लाह जानता है, कहीं इसकी रङ्गत भी सफ़ेद होती तो दुनिया मर मिटती। वह तो बदक़िस्मती से रङ्गत स्याह हो गई, इससे ज़रा लोग झिझकते हैं।

गज्जू—हाँ, और जो कहीं ज़ायक़ा मीठा होता तो—

ईदू—ओहो ! तो फिर क्या कहना था। फिर तो कोई लड्डू, पेड़ा, बर्फ़ी, गुलाबजामन, बताशफ़ेनी को छूता तक नहीं। जब मीठे को तबीयत चलती, बस चिनिया बेगम ही याद आती।

बकरीदी—और क्या ? दोनों मज़े—मिठाई की मिठाई और सुरूर घाते में।

इतना सुनते ही शेष दोनों व्यक्ति चिल्ला उठे—वाह-वाह ! क्या बात कही है—'सुरूर घाते में !' भई कितना प्यारा कलमा है। जी चाहता है, कहने वाले का मुँह चूम लूँ।

गज्जू—घाते का लफ़्ज़ कुछ प्यारा होता ही है और ख़ासकर अफ़ीम के मामले में !

ईदू—ऐ है, यह भी बड़ी प्यारी बात कही। वाह उस्ताद। तुम भी छिपे रुस्तम निकले। क्या कही है—घाते का लफ़्ज़ अफ़ीम के मामले में और भी ज़्यादा प्यारा लगता है। वाह-वाह !

दूसरा हिन्दू मिट्ठू, जो अभी तक आँखें बन्द किए बैठा था, आँखें खोल कर बोला—भगवान जाने इस बख़त चीन का क्या हाल होगा।

यह सुनते ही मियाँ ईदू बोले—वल्ला ख़ूब याद दिलाई ! (बकरीदी से) मियाँ वह चीन की जङ्ग का क्या ज़िक्र था ?

बकरीदी—हाँ कुछ था तो ज़रूर ! कुछ लड़ाई-भिड़ाई की बात थी।

गज्जू—तुम कह रहे थे कि चीन बड़ा अच्छा शहर है।

ईदू—अय्याँ यह नहीं, कुछ और बात थी। वल्ला—हाफ़िज़ा (स्मरण-शक्ति) इतना कमज़ोर हो गया है कि ख़ुदा की पनाह ! कल क्या खाया था, इसकी भी ख़बर किसी मरदूद ही को होगी।

बकरीदी—आप कल की बात कहते हैं। अय्याँ हमें तो इतना भी याद नहीं कि पार साल आज के दिन हम इस वक़्त क्या कर रहे थे।

गज्जू—यार, हमें अपने लड़कपन की बहुत सी बातें अब तक याद हैं। मगर आप एक महीने पहले की बात पूछें तो हर्गिज़ नहीं बता सकेंगे—हाँ, अगर साल दो साल बाद कोई पूछे तो शायद बता दें। बात जितनी ही पुरानी पड़ती जाती है उतनी ही याददाश्त खुलती जाती है।

ईदू—वल्ला, यह हिसाब भी ख़ूब है। जितनी ही बात पुरानी पड़ती जाय उतनी ही याददाश्त खुलती जाय।

बकरीदी—ख़ुदा की शान है। उसमें सब क़ुदरत है।

ईदू—बिल्कुल दुरुस्त है—उसमें सब क़ुदरत है।

गज्जू—उसकी क़ुदरत की बात पर मुझे एक बात याद आ गई—तीन-चार बरस की बात होगी। एक दिन हम अफ़ीम पीना भूल गए। अब मज़ा देखिए कि अफ़ीम पी नहीं, मगर सुरूर वैसा ही मौजूद ! गोया अभी अफ़ीम पी है।

बकरीदी—वाह-वाह। वाह रे तेरी क़ुदरत ! वल्ला अगर बेपिए सुरूर आने लगे तो सोने की दीवारें खड़ी हो जायँ !

गज्जू—सोने की ! हीरे की कहिए साहब। लाखों रुपए इस अफ़ीम के पीछे गँवा दिए। कुछ ठिकाना है ? अच्छा अब मज़ा देखिए कि हम ज्योंही बाहर जाने लगे तो हमारी घर वाली बोली—आज तुमने अफ़ीम नहीं पी—क्या बात है, क्या छोड़ दी ? ऐ है—बस इतना सुनना था कि सारा नशा हिरन हो गया—जम्हाइयाँ आने लगीं। जब जम्हाइयों की डाक लग गई, तब हमें याद आया कि अफ़ीम नहीं पी।

ईदू—मगर आपकी घर वाली भी बड़ी नामाक़ूल थी ऐन हत्थे पर टोक दिया। वल्ला, अगर मेरी घर वाली होती तो मुझसे जूता चल जाता। अफ़ीम के मामले में बन्दा किसी की रियायत नहीं करता।

बकरीदी—सही है, अफ़ीम के मामले में रियायत करना सख़्त नादानी है।

ईदू—अजी अफ़ीम तो दूर किनार रही, एक बार हमारी चाय में चीनी कुछ कम हो गई। आप जानिए, हमें तो चाय में डबल चीनी पसन्द है। चाय पीने के बाद अगर लब न चटचटाने लगें और घण्टे भर तक मुँह मीठा न रहे तो ऐसी चीनी पर ख़ुदा की मार।

बकरीदी—अजी की फिटकार !

ईदू—बस जनाब, इस चीनी के मामले में झगड़ा हो गया।

मिट्ठू पुनः पीनक से चौंक कर बोला—क्या कहा, चीनी ही के मामले में झगड़ा हो गया, आख़िर झगड़ा हुआ क्यों ? चीन बेचारे ने किसी का क्या बिगाड़ा है ?

ईदू—लाहौल विलाक़ूवत, वह चीन वाली बात फिर भी रह गई। अय्याँ बकरीदी, वह चीन वाला क़िस्सा तो पूरा कर दो !

बकरीदी—वल्ला ख़ूब याद दिलाया। मियाँ, हमने सुना है कि चीन में अफ़ीम के पहाड़ हैं।

ईदू—हमारी क़सम ? अरे मज़ाक़ करते हो। वल्ला अगर कहीं ऐसा हो तो बन्दा तो कल ही चीन का टिकट कटावे। वल्ला जहाँ अफ़ीम के पहाड़ होंगे वहाँ तो बिहिश्त ही समझना चाहिए।

बकरीदी—बिलकुल सही बात है। चीन में वाक़ई अफ़ीम के पहाड़ हैं। तभी तो लोग अफ़ीम को चिनिया बेगम कहते हैं—अफ़ीम चीन ही ने ईजाद की है।

गज्जू—हमने सुना है कि पहले जे जितने पहाड़ हैं सब अफ़ीम ही के थे—मगर फिर एक साधु की दुआ से पत्थर के हो गए। फिर चीन के पहाड़ क्यों अफ़ीम ही के बने रहे, जे बात समझ में नहीं आती।

बकरीदी—यह वाक़या मुझसे सुनो। जब फ़क़ीर की बददुआ से सब पहाड़ पत्थर के हो गए और चीन के पहाड़ भी पत्थर के हो गए तो चीन की रियाया में ग़दर फैल गया।

ईदू—वह तो ग़दर फैला ही चाहे। बिना अफ़ीम के अमन क़ायम ही नहीं रह सकता।

बकरीदी—बस जनाब, जब बादशाह को मालूम हुआ कि अफ़ीम के पहाड़ पत्थर के हो गए, इस वजह से ग़दर फैला हुआ है तो बादशाह ने इसकी वजह मालूम की कि ये पहाड़ पत्थर के क्यों हो गए। जब उसे पता लगा कि फ़क़ीर की दुआ से ऐसा हुआ है तो उसने उस फ़क़ीर की तलाश कराई।

ईदू—तलाश कराई ! वाह रे मेरे शेर। ख़ुदा उसे बिहिश्त अता करे। बड़ा अच्छा आदमी था। हाँ, तो फिर क्या हुआ ?

बकरीदी—बस जनाब, आदमी चारों तरफ़ दौड़ पड़े और उस फ़क़ीर को तलाश करके लाए।

ईदू—वाह-वाह ! वाह-वाह !! आदमी भी बड़ा खोजू होता है। ले बताइए न जाने कहाँ-कहाँ घूमे होंगे, तब वह फ़क़ीर मिला होगा।

गज्जू—आदमी सब कुछ कर सकता है। एक बार मेरी अफ़ीम की डिबिया खो गई। बस जनाब, मेरी जान निकल गई, गोया करोड़ों रुपए चले गए।

ईदू—डिबिया ख़ाली थी ?

गज्जू—अजी ख़ाली होती तो कम अफ़सोस होता, मगर उसमें पूरी एक तोला अफ़ीम थी।

बकरीदी—ऐ है। तब तो वाक़ई अफ़सोस की बात थी। अच्छा फिर ?

गज्जू—बस जनाब, मैंने तलाश शुरू की। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दो घण्टे हो गए। अब मैं सोचूँ कि न जाने वह डिबिया किस भागवान के हाथ पड़ी होगी।

ईदू—बेशक, अफ़ीम से भरी डिबिया क्या आसानी से मिल जाती है ? जिसे मिले वह बड़ा ख़ुशनसीब है। हाँ फिर ?

गज्जू—बस साहब दो घण्टे बाद कोठरी में सन्दूक़ के नीचे मिली—चूहे घसीट ले गए थे।

बकरीदी—चूहे अफ़ीम के बड़े शायक़ (प्रेमी)

हास्यकला का चमत्कार ! हास्योपन्यासों का लकड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

छप रहा है ! की छप रहा है !!

हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !

लतखोरी लाल

छः खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानों की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा को छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है, कहीं एक से एक रहस्यमय गुप्त लीलाओं का इतना सच्चा, स्वाभाविक और रोचक भण्डाफोड़ है कि सैकड़ों बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं भी ढूँढ़े से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा !

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामों को एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं, तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २)

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका वर्णन इसमें बहुत ही रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा। मूल्य ॥)

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

होते हैं। निगाह पड़ भर जाय, बस फिर ले ही जायँगे। छोड़ेंगे नहीं।

मिट्ठू पीनक से चौंक कर बोला—छोड़ें क्यों? जहाँ पहाड़ खड़े हैं वहाँ क्यों छोड़ें? कुछ घाटा हुआ जाता है।

ईंदू—बल्ला ख़ूब याद दिलाई। हाँ मियाँ बकरीदी, फिर क्या हुआ?

बकरीदी—काहे का क्या हुआ?

ईंदू—अरे वही तुम जो कह रहे थे?

बकरीदी—क्या?

ईंदू—अरे वही फ़क़ीर वाली बात!

बकरीदी—हाँ वह! हाँ तो जनाब—मैं कहाँ तक कह गया था?

ईंदू—वही बादशाह फ़क़ीर को ढूँढने निकला!

बकरीदी—हाँ जनाब, बादशाह फ़क़ीर को ढूँढने निकला। बस जनाब बादशाह चलते-चलते एक बयाबान जङ्गल में पहुँचा। ऐसा जङ्गल जहाँ आदमी न आदम-ज़ाद—फ़क़त ख़ुदा की ज़ात!

ईंदू—सुभान तेरी क़ुदरत! हाँ फिर?

बकरीदी—बस जनाब, बादशाह ने देखा कि फ़क़ीर एक दरख़्त के साए में आँखें बन्द किए बैठा है और उसके चारों तरफ़ शेर बैठे हैं।

ईंदू—शेर?

गज्जू—सचमुच के?

बकरीदी—हाँ, सचमुच के नहीं तो क्या मिट्टी के। मिट्टी के भी कहीं शेर होते हैं?

गज्जू—जे बात आप कैसे कहते हैं। लखनऊ के कुम्हार मिट्टी के ऐसे शेर बनाते हैं कि बिलकुल शेर के बच्चे मालूम होते हैं।

ईंदू—अहा हा! लखनऊ के कुम्हारों की क्या बात है। ऐसे खिलौने बनाने वाले तो दुनिया के पर्दे पर नहीं हैं। विलायत वाले भी नहीं बना सकते।

बकरीदी—अजी विलायत वाले क्या ख़ाक बनाएँगे—किराए पर तो वह रहते हैं।

यह सुनते ही सब के कान खड़े हुए। ईंदू मियाँ हुक़्क़े की निगाली छोड़ कर बोले—क्या कहा, किराए पर रहते हैं, यह कैसे?

बकरीदी—विलायत की सब ज़मीन तुर्कों की है, अङ्गरेज़ उसे किराए पर लिए हुए हैं। सालाना किराया देते हैं।

ईंदू—ख़ुदा क़सम?

बकरीदी—ख़ुदा क़सम, मैं झूठ थोड़ा ही कहता हूँ। चाहे जिससे पूछ लीजिए, मगर हाँ, अङ्गरेज़ों के ख़ौफ़ से कोई अलानिया (प्रकट रूप में) यह बात न कहेगा। उससे ख़ुफ़िया तौर पर पूछिए—फ़ौरन बता देगा। जो न बतावे तो समझ लीजिए अङ्गरेज़ों से मिला हुआ है।

गज्जू—जे बात छिपाई क्यों जाती है?

बकरीदी—आप भी निरे चोंच ही रहे। इतना बड़ा बादशाह और किराए पर रहे। यह बात किरकिरे की है या नहीं?

गज्जू—ज़रूर है।

बकरीदी—तो बस। इसलिए छिपाते हैं कि यह बात ज़ाहिर होगी तो किरकिरी होगी। मगर मियाँ विलायत तो ऊजड़ गाँव है। न वहाँ अफ़ीम पैदा होती है, न पौण्डा, न रेवड़ी। आख़िर वहाँ कोई भलामानुस रहता कैसे होगा? अलबत्ता चाय होती है। मगर ख़ाली चाय से क्या होता है।

ईंदू—जहाँ ये चारों न्यामतें हों—अफ़ीम, पौण्डा, रेवड़ी और चाय—बस उसे बिहिश्त समझना चाहिए।

बकरीदी—इसमें क्या शक है। भई हम तो चीन में जाकर रहेंगे। वहाँ अफ़ीम के पहाड़ हैं। मगर ख़ुदा जाने पौण्डा, रेवड़ी और चाय होती है या नहीं। पहले इसका पता लगा लेना चाहिए। ऐसा न हो कि बैरङ्ग लौटना पड़े! अफ़ीम का तो आराम है, जब चाहा पहाड़ से एक ढेला काट खाए। मगर पौण्डा, रेवड़ी वग़ैरह भी होना चाहिए। बिना इनके अफ़ीम का लुत्फ़ कहाँ।

ईंदू—जी हाँ, यह तीनों चीज़ें तो चिनिया बेगम के ज़ेवर हैं।

इतना सुनते ही सब चिल्ला उठे। वाह-वाह! वाह! क्या कही है, चिनिया बेगम के ज़ेवर हैं। ख़ूब कही, कमाल की कही—क़लम तोड़ दिया। बल्कि क़लमदान का ही सफ़ाया कर दिया।

ईंदू अकड़ कर बोले—यह शायरी है, शायरी! और मैं भला क्या ख़ाक कहूँगा—यह सब चिनिया बेगम कहला रही है।

मिट्ठू चौंक कर बोले—क्या कहा, चिनिया बेगम बुला रही हैं। कहाँ बुला रही हैं, चीन में? अजी राम भजो, वहाँ लड़ाई छिड़ी हुई है—वहाँ इस वक़्त कौन भला आदमी जायगा।

ईंदू—बल्ला, ख़ूब याद दिलाई—क्यों मियाँ बकरीदी, वह चीन की जङ्ग का क़िस्सा क्या था? वह तो रह ही गया।

ईंदू—यही कह रहे थे कि चीन की जङ्ग में राज़ है, वह राज़ क्या है?

बकरीदी—हूँ, वह राज़ यही है कि चीन की अफ़ीम का महसूल अङ्गरेज़ लोग माँगते हैं, चीन इस बात पर राज़ी नहीं होता। चीन में तो अफ़ीम के पहाड़ हैं न, तो उनसे चीन को करोड़ों रुपए सालाना महसूल के मिलते हैं। अब अङ्गरेज़ लोग यह कहते हैं कि उसमें से आधा हमको दो। चीन वाले राज़ी नहीं होते इसी बात पर जङ्ग छिड़ गई।

ईंदू—यह बात तो बड़ी बेजा है, अङ्गरेज़ लोग आधा महसूल किस हक़ से माँगते हैं?

बकरीदी—मियाँ ज़बरदस्ती का हक़ है। अङ्गरेज़ चीन से कहते हैं कि अगर हमको आधा महसूल न मिलेगा तो हम हिन्दुस्तान में तुम्हारी अफ़ीम का बिकना बन्द कर देंगे।

ईंदू—मआज़ अल्ला, यह ज़बरदस्ती। यह तो पूरी नादिरशाही है। और सुनिए, हिन्दुस्तान में अफ़ीम बिकना बन्द कर देंगे। इस अन्धेर का कोई ठिकाना है? तोबा-तोबा!

गज्जू—अच्छा अब समझ में आया। हिन्दुस्तान में अफ़ीम इसीलिए मँहगी बिकने लगी कि अङ्गरेज़ों को अफ़ीम का महसूल नहीं मिलता, जे बात है।

ईंदू—और क्या, महसूल नहीं मिलता तभी तो यहाँ अफ़ीम मँहगी कर दी, उधर की कसर इधर निकालते हैं। अच्छा जो चीन महसूल देने लगे, तब तो शायद अफ़ीम सस्ती बिकने लगे।

बकरीदी—हाँ, इसमें क्या शक है।

ईंदू—तब तो हम लोगों को दुआ करनी चाहिए कि चीन महसूल देने को राज़ी हो जाय या अङ्गरेज़ों से हार जाय। तब तो अफ़ीम सस्ती हो जायगी। अल्लाह जानता है, जब से अफ़ीम मँहगी हो गई, अफ़ीम पीने का लुत्फ़ जाता रहा। अब तो महज़ दिल बहलाव रह गया है। मगर क्या, ऐसे पीने से न पीना भला है। वह मसल है—'नकटा जिए बुरे अहवाल!'

इसी समय एक मियाँ साहब आए और बकरीदी मियाँ के सामने बैठ गए। बैठते ही उन्होंने एक ज़ोर की जम्हाई ली। बकरीदी मियाँ यह देखते ही आग हो गए। बोले—ऐ है, सारा नशा काफ़ूर हो गया। इन मियाँ से हज़ार मर्तबा कहा कि नशे के वक़्त सामने बैठ कर न जम्हाया करो, मगर इनकी ऐसी नामाक़ूल आदत है कि जब जम्हाई लेंगे तब ऐन नाक के सामने—और ख़ास नशे के वक़्त। वल्ला जी चाहता है बोटियाँ नोच खाऊँ। सारा मज़ा किरकिरा हो गया। अब दो गण्डे और गलाने पड़ेंगे तब सुरूर गँठेगा। सुनते हो जी, तुम नशे के वक़्त यहाँ मत आया करो—वरना मुफ़्त में किसी दिन तकरार बढ़ जायगी। गँवार कहीं का! न मौक़ा देखे न वक़्त; आते ही भाड़ ऐसा मुँह फाड़ दिया। ऐसे आदमियों को तो यहाँ क़दम न रखने देना चाहिए। अब जो यहाँ बैठे उस पर लानत! अब घर जाकर चुस्की लगाएँगे। तोबा-तोबा—मुफ़्त में दो गण्डे की चपत लगी।

वकील बनाम वेश्या
(दोनों में समाज पर अधिक अत्याचार कौन करता है?)

बकरीदी की आँखें बन्द हो रही थीं। अतएव वह बोला—मियाँ, इस वक़्त मत छेड़ो, इस वक़्त चिनिया बेगम की आग़ोश (गोद) में हूँ—फिर किसी दिन देखा जायगा। वह दास्तान भी सुनने लायक़ है, ज़रूर सुनाऊँगा।

ईंदू मियाँ झल्ला कर बोले—बस इन्होंने तो जहाँ पी—गै हो गए। और यहाँ पेट में खलबली मची हुई है। अरे मियाँ, आदमी बैठे हुए हैं, कुछ बात करो। हाँ, वह ज़रा चीन की जङ्ग का क़िस्सा तो कह डालो—शाबाश है मेरे शेर!

बकरीदी—चीन की जङ्ग का क़िस्सा इतना ही है कि वहाँ जङ्ग छिड़ गई।

ईंदू—आख़िर जङ्ग छिड़ने की वजह क्या है?

बकरीदी—अब यह न पूछिए। इसमें बड़े-बड़े राज़ (रहस्य) हैं।

गज्जू—क्या राज़ है, कुछ बताओगे भी।

बकरीदी—राज़ कुछ नहीं, राज़ यही है कि... (आँखें खोल कर) हाँ, मैं क्या कह रहा था?

यह कह कर मियाँ बकरीदी उठ खड़े हुए, उनके साथ ही ईंदू और गज्जू भी अपने-अपने घर की ओर चल दिए।

भवदीय,
—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

रोगी—डॉक्टर साहब! मुझे ऐसा नुस्ख़ा लिख दीजिए, जिससे मेरे ख़ून में गर्मी पैदा हो।

डॉक्टर—अच्छा, अब मैं अपनी फ़ीस का बिल भेज दूँगा।

* * *

पहली मेम साहबा—भला पुरुषों में तुम्हारा कोई हार्दिक मित्र भी है?

दूसरी मेम साहबा—था तो, मगर × × ×

पहली मेम साहबा—मगर क्या हुआ? क्या मर गया?

दूसरी मेम साहबा—नहीं, उसने शादी कर ली।

पहली मेम साहबा—किससे?

दूसरी मेम साहबा—मुझसे।

* * *

मित्र—कहिए मिस्टर, आपका लोहे वाला बॉक्स खुला, जिसकी चाभी खो गई थी; और जिसके खोलने में आप दिन भर परेशान थे?

मिस्टर—हाँ भाई, बड़ी तरकीब से उसे खुलवाया।

मित्र—क्या लोहार बुलाया था?

मिस्टर—नहीं जी, जब सब तरह से हार गया, तब मैंने कह दिया कि इसमें मेरी पूर्व-प्रेमिका के पत्र रक्खे हुए हैं। इतना सुनते ही न जाने कहाँ से मेरी बीबी में इतनी ताक़त आ गई कि उसने एक ही झटके में उसे खोल दिया।

* * *

बाप—इस दफ़े तुमने हिसाब का पर्चा कैसे किया?

लड़का—सिर्फ़ एक सवाल ग़लत है।

बाप—और कितने पूछे गए?

लड़का—दस।

बाप—बाक़ी नौ तो ठीक हैं न?

लड़का—नहीं, उन्हें तो मैंने किया ही नहीं।

* * *

बाप—तुम कहते हो कि इस साल ख़ूब मेहनत की थी, फिर कैसे फ़ेल हो गए?

लड़का—क्या करूँ, मास्टर ने इस साल भी इम्तहान में वही सवालात पूछे थे, जो पारसाल पूछे थे।

* * *

छात्र—क्यों जनाब, आप ही स्मरण-शक्ति बढ़ाने के उपाय बताने वाले प्रोफ़ेसर हैं?

प्रोफ़ेसर—हाँ भाई, मैं ही अभागा हूँ।

छात्र—अभागा कैसे?

प्रोफ़ेसर—क्या बताऊँ, एक हफ़्ता तक एक आदमी को मैंने स्मरण-शक्ति बढ़ाने की शिक्षा दी और वह कम्बख़्त चलते वक़्त मेरी फ़ीस ही देना भूल गया।

छात्र—आपको उस आदमी का नाम तो मालूम है न?

प्रोफ़ेसर—यही तो और भी अफ़सोस है कि उसका नाम मुझे याद नहीं है। तुम कैसे आए? क्या तुम भी मेरी शिक्षा से लाभ उठाना चाहते हो?

छात्र—चाहता तो था, मगर अब ज़रूरत नहीं मालूम होती।

* * *

[श्री० रमेशप्रसाद जी, बी० एस-सी०]

संसार में सब से बहुमूल्य कौन धातु है?

रेडियम संसार का सब से अधिक मूल्यवान धातु है। प्रायः ६० लाख रुपए में इसकी सिर्फ़ आधी छटाँक मिल सकती है। मूल्यवान धातुओं में इरीडियम को दूसरा स्थान प्राप्त है। 'फ़ौन्टेन पेन' की 'निब' की नोक इसी धातु की बनी होती है। इसी कारण वह जल्दी घिसती नहीं। प्रायः ४०० रुपए में इसकी आधी छटाँक मिलती है। प्लैटिनम तीसरा मूल्यवान धातु है। ३२०) रु० में यह आधी छटाँक मिलता है। सोना का चौथा नम्बर है। यह २३)-२४) रु० तोला बिकता है।

* * *

तरल हवा क्या है और वह किस काम में आती है?

हवा पर अत्यधिक दबाव और सर्दी डाल कर उसे तरल अवस्था में लाया जाता है। तरल हवा आजकल अनेक कामों में व्यवहृत होने लगी है। फल, मछली, मांस आदि विकृत होने वाले पदार्थ तरल हवा में बहुत दिनों तक अविकृतावस्था में रहते हैं, इसके द्वारा शून्य से ३०० डिग्री कम सर्दी प्राप्त की जा सकती है।

* * *

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहाविरेदार। मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

समाज की चिनगारियाँ

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; सजीव प्रोटेक्टिङ्ग कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत मात्र ३) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से २।) रु०।

विधवा-विवाह-मीमांसा

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; मूल्य ३)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई और मुसलमान अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य ॥)

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसीसे इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। मूल्य ।)

Registered No. A—2085

सर्वश्रेष्ठ राजनैतिक एवं सामाजिक (Socio-Political) पत्रिका

के ग्राहक बनिए

हिन्दी-संस्करण के सम्पादक :—श्री० रामरखसिंह सहगल, सम्पादक 'भविष्य'

उर्दू-संस्करण के सम्पादक :—मुन्शी कन्हैयालाल, एम० ए०, एल्-एल्० बी०

नवीन विशेषताएँ

(१) नवम्बर से 'चाँद' में सामाजिक सुधार सम्बन्धी लेखों के अतिरिक्त गम्भीर राजनीति का भी समावेश हो जाने से 'चाँद' में चार चाँद लग गए हैं।

(२) ख़ास मैकेनिकल काग़ज़ का प्रबन्ध हो जाने से लगभग प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया जाता है। इस प्रकार सैकड़ों चित्र आपको 'चाँद' में मिलेंगे।

(३) तिरङ्गा अथवा रङ्गीन चित्र एक के बजाय दो कर दिए गए हैं।

(४) चुटीले सामयिक कार्टूनों का भी विशेष प्रबन्ध किया गया है।

(५) इतना सब होते हुए भी—केवल प्रचार की दृष्टि से फ़ी कॉपी का मूल्य **बारह आने से घटा कर दस आने,** इसलिए कर दिया गया है, ताकि जो लोग एक मुश्त चन्दा देने में असमर्थ हों, वे हमारे एजेण्टों अथवा मेसर्स ए० एच० व्हीलर कम्पनी के विभिन्न बुक-स्टॉलों से प्रत्येक मास एक कॉपी ख़रीद कर लाभ उठा सकें!

कुछ चुनी हुई सम्मतियाँ

आज—इस पत्र ने निर्भयता और योग्यता के साथ समाज-सेवा किया है। 'चाँद' ने बहुत घाटा उठाया है। हमें आशा है, स्वतन्त्र विचार के पक्षपाती हिन्दू सज्जन यथाशक्ति उसकी सहायता करेंगे।

मारवाड़ी-अग्रवाल—पत्रिका में यह पढ़ कर हमें अत्यन्त वेदना हुई कि इस विद्वान युगल जोड़ी को अब तक लगभग ८,०००) का घाटा सहना पड़ा है। भारत में अब भी ऐसे-ऐसे देश-भक्त और समाज-सेवी धनी-मानी व्यक्ति हैं, जो चाहें तो इस देशोपकारी पत्रिका के सञ्चालकों का बोझ सहज ही में उतार सकते हैं। हम उनका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए मारवाड़ी अग्रवाल के प्रत्येक पाठक से अनुरोध करते हैं कि वे 'चाँद' के ग्राहक स्वयं बनें तथा अपने इष्ट-मित्रों को बनाकर इसे आर्थिक कष्ट से मुक्त करें......।

आर्यमित्र—'चाँद' स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी, हिन्दी का सुप्रसिद्ध मासिक पत्र है। चित्र और लेख सब भावपूर्ण रहते हैं। वे समाज के भीषण अत्याचार का दुर्दृश्य हृदय-पट पर अङ्कित कर देते हैं।

माधुरी—ऐसे सुसम्पादित और सुसञ्चालित पत्र को भी घाटा उठाना पड़ रहा है, यह बात हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए लज्जाजनक है। स्त्री-शिक्षा के पक्षपाती हिन्दी-प्रेमियों से हमारा अनुरोध है कि वे अपनी माँ, बेटी-बहू और बहिनों के लिए 'चाँद' अवश्य ख़रीदें।

मतवाला—सरस्वती, मनोरमा और 'चाँद' के विशेषाङ्क इस समय हमारे सामने हैं। प्रयाग के इन तीनों मासिक पत्रों के विशेषाङ्क बड़े सुन्दर हुए हैं, सच पूछिए तो तीनों में पहिला नम्बर 'चाँद' का है। नाम भी प्यार के क़ाबिल, रूप भी वैसा ही; गुण भी उतना ही।

वर्तमान—प्रयाग के प्रियदर्शक सहयोगी 'चाँद' का गौरव और विमल छटा उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

अर्जुन—सहयोगी 'चाँद' दिनोंदिन उन्नति कर रहा है। सहयोगी के रङ्ग-रूप ने "सरस्वती" और "माधुरी" के दिल में हलचल पैदा कर दी है; हमें हर्ष इस बात का है कि सहयोगी सुधार का पक्षपाती है और उन्नतिशील विचार को रखता है!

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ...६) रु०
छः माही चन्दा ... ५) रु०
तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य ... ≡)
Annas Three Per Copy

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने से पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार: ८ जनवरी, १९३१ | संख्या ३, पूर्ण संख्या १५

राष्ट्रीय संग्राम की नई कुर्बानियाँ

सत्याग्रह अस्त्र ले, अहिंसा का कवच कसे,
राष्ट्र-धर्म-ध्वजा फहराती आसमान पर!
बढ़तीं समर में, मिटातीं मानियों का मान;
होतीं कुरबान एक देश-अभिमान पर!
विश्व है चकित आज साहस महान पर;
आन पर, शान पर, इन बलिदान पर!
झेल जातीं आपदा; दुरापदाएँ ठेल जातीं,
हँस-हँस जेल जातीं, खेल जातीं जान पर!!

बम्बई की श्रीमती भिखारबाई, जिन्हें विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देने के अपराध में ४½ मास का दण्ड मिला है।

तीरूपुर (मद्रास) 'युद्ध-समिति' की सर्वप्रथम सदस्या श्रीमती पद्मावती अशर—आप बम्बई की सुप्रसिद्ध गुजराती महिला हैं। झण्डा-अभिवादन दिवस को सरकारी आज्ञा का तिरस्कार करने के कारण आपको ६ सप्ताह का कारावास दण्ड दिया गया है।

कालीकट की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री—कुमारी ई० नारायणकुट्टी, बी० ए०, जिन्होंने हाल ही में जेल-यात्रा की है।

दक्षिण कनारा महिला-सङ्घ की मन्त्रिणी—श्रीमती रत्नबाई, जो हाल ही में जेल गई हैं।

गाँवों में घूम-घूम कर स्वदेशी का प्रचार करने वाली—धारवाड़ की श्रीमती कृष्णाबाई पञ्जीकर, जो इस समय जेल में हैं।

'चाँद' कार्यालय की विख्यात पुस्तकें

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। मूल्य ३) रु०

अनाथ पत्नी

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें।

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने की सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल लागत मात्र २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण। आप देखेंगे कि प्रत्येक कहानी के अन्दर लेखक ने किस सुगमता और सचाई के साथ ऊँचे आदर्शों की प्रतिष्ठा की है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—८ जनवरी, १९३१ | संख्या ३, पूर्ण संख्या १५

इङ्गलैण्ड को १८ करोड़ पाउण्ड का भयङ्कर घाटा !

प्रेज़िडेण्ट-पटेल रिहा हुए :: सर्दार-पटेल को ६ मास का दण्ड !

पेशावर का खद्दर-भण्डार ज़ब्त कर लिया गया !!

मौलाना मोहम्मद अली की शोकजनक मृत्यु !

लाहौर के नए षड्यन्त्र केस का उद्घाटन :: लाहौर में ३ क्रान्तिकारियों का अनशन

क्या सर सप्रू "लॉर्ड" बनाए जायँगे :: भारतीय किसानों में भयङ्कर असन्तोष

(८ तारीख़ के प्रातःकाल तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—बम्बई का गत ६ वीं जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत सरदार पटेल पर १७ (१), और १७ (२) धाराओं के अनुसार अभियोग उपस्थित किए गए। प्रत्येक अभियोग के लिए उन्हें ६-६ मास की क़ैद की सज़ा दी गई। दोनों सज़ाएँ साथ ही साथ चलेंगी। मैजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में कहा, कि श्रीयुत पटेल कॉङ्ग्रेस के अध्यक्ष हैं, और इस हैसियत से वे कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी कमिटी के भी अध्यक्ष हैं, जो ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई है।

सरदार पटेल ने अपने स्थान पर बिहार के गाँधी—बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी को स्थानापन्न राष्ट्रपति चुना है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने देशवासियों को निम्नलिखित सन्देशा दिया है :—

"जेल जाने के पहले गुजरात के वीर किसानों से मिल लेने की प्रबल इच्छा थी; बम्बई की जनता से भी, जो भारतीय संग्राम में सब से आगे रही है, मिलने की इच्छा थी; किन्तु ईश्वर की मर्ज़ी कुछ दूसरी ही थी।

"मैं नहीं समझता, कि मुझे कोई नया सन्देशा देना है। पिछले ९ महीनों में हम लोगों ने जो कुछ किया है, उस पर हम गर्व कर सकते हैं; किन्तु हमें अभी बहुत काम करना है। किसी जाति की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए बड़ा से बड़ा त्याग भी तुच्छ है; किन्तु हमें यह भूल नहीं जाना चाहिए, हमारे संग्राम का तीन चौथाई हिस्सा अहिंसात्मक है, और चौथाई भाग में त्याग और कष्ट है। यदि हम अहिंसा पर अड़े रहें, और जब तक दम रहे अहिंसा व्रत का पालन करते हुए कष्ट सहन करते रहें, तो विजय अवश्यम्भावी है। विशुद्ध हृदय से जितना अधिक त्याग हम करेंगे, उतनी ही शीघ्र विजय भी हमें प्राप्त होगी; क्योंकि ईश्वर को न्याय करना ही पड़ेगा। वन्देमातरम्।"

—"पायोनियर" को अपने विशेष-सम्वाददाता द्वारा ख़बर मिली है, कि भारत में आने वाली कमेटी में श्रीयुत वेजवुड बेन तथा लॉर्ड सेन्की, सर तेज बहादुर सप्रू को भी नियुक्त करेंगे। सुना जाता है वे हाल ही में "प्रिवी कौन्सिल" के मेम्बर बनाए जावेंगे। यह भी सुना जाता है कि जब भारत की नवीन शासन-प्रणाली का प्रस्ताव "हाउस ऑफ़ लॉर्ड्ज़" के सामने पेश होगा, उस समय भी ब्रिटिश सरकार को इनकी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

—इङ्गलैण्ड की सरकार को वर्तमान औद्योगिक शिथिलता के कारण बहुत बड़ा घाटा उठाना पड़ रहा है। इस साल ख़र्च से कुछ ज़्यादा आमदनी होने की आशा की जाती थी, परन्तु गत ९ महीनों में वहाँ की सरकार को १८ करोड़ पाउण्ड घाटा हो गया है ! आगे भी वर्तमान दशा सुधरने की कोई उम्मीद नहीं है, क्योंकि बेकारी दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है।

—ख़बर है कि बेलगाँव के ज़िला मैजिस्ट्रेट ने, वहाँ की प्रभातफेरियों के लिए १४४वीं धारा के अनुसार एक निषेधाज्ञा प्रकाशित की है।

वहाँ के वकीलों ने मैजिस्ट्रेट से उक्त आज्ञा को वापिस ले लेने की प्रार्थना की, किन्तु मैजिस्ट्रेट ने साफ़ इनकार कर दिया। १६०० व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित २४ प्रार्थना-पत्र भी दिए गए हैं।

—नागपुर ६ जनवरी—बुल्दाना ज़िले की घटनाओं के सम्बन्ध में मध्यप्रान्तीय सरकार ने एक विज्ञप्ति निकाली है। उसका कहना है कि, वहाँ के ज़मींदारों और महाजनों ने मज़दूरों को उनकी मज़दूरी के लिए पैसे न देकर, अनाज देने की प्रथा जारी करना चाहा था। मज़दूरों ने इसका घोर विरोध किया और अनेक स्थानों पर खेतों से ग़ल्ले की चोरी की गई। यहाँ की जनता भद्र-अवज्ञा-आन्दोलन के द्वारा सार्वजनिक आन्दोलन के महत्व से परिचित हो चुकी है। ये मज़दूर अब स्वयं ऐसा ही सङ्गठन करना चाहते हैं।

मारवाड़ी और ब्राह्मण महाजनों के यहाँ कई डाके डाले गए हैं। पुलिस ने १०० से अधिक गिरफ़्तारियाँ इस सम्बन्ध में की हैं। कहा जाता है कि "परिस्थिति हाथ में आ गई है।"

—लाहौर में पञ्जाब यूनीवर्सिटी के उपाधि-वितरण उत्सव के अवसर पर वहाँ के गवर्नर पर गोलियाँ चलाने के अभियोग में जो गिरफ़्तारियाँ हुई थीं, उनमें से श्री० रणवीरसिंह, वीरेन्द्रनन्द और अहसान इलाही तीन अभियुक्तों ने अधिकारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में ५ वीं जनवरी से अनशन प्रारम्भ कर दिया है।

—फ़्री प्रेस जर्नल के सम्पादक श्री० सदानन्द को, कॉङ्ग्रेस बुलेटीन के कुछ अंश प्रकाशित करने के अभियोग में तीन माह की सादी क़ैद और २५० रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर, उन्हें एक माह की सज़ा और भोगनी पड़ेगी।

—मौलाना मुहम्मदअली का, जो कुछ दिनों से लन्दन में अस्वस्थ थे, ४ थी जनवरी को प्रातःकाल साढ़े नौ बजे स्वर्गवास हो गया ! आपकी मृत्यु के समय आपकी धर्मपत्नी, आपके भाई मौलाना शौकतअली, आपकी पुत्री तथा दो दामाद आपके पास थे। आपका शरीर अन्त्येष्टिक्रिया के लिए भारत में लाया जायगा। लन्दन का ६ठीं जनवरी का समाचार है, कि उनकी लाश भारत भेजने का प्रबन्ध गवर्नमेण्ट की ओर से किया गया है। पेलिस्टाइन के मुसलमानों के नेता ई० आई० हुसेन ने मौ० शौकतअली को इस आशय का तार भेजा है, कि मौ० मुहम्मदअली की लाश जेरूसेलम की अबूमा की सुप्रसिद्ध मस्जिद में दफ़नाने के लिए भेज दी जाय। गवर्नमेण्ट इस सम्बन्ध में भी परामर्श कर रही है। अपनी मृत्यु के कुछ घण्टे पहिले तक मौलाना साहब ने हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल करने का प्रयत्न किया। रात में उन्होंने अपने पुराने वक्तव्य को फिर से ठीक किया और भारत के हिन्दू और मुसलमानों को एक होकर भारत की स्वतन्त्रता की चेष्टा करने का उपदेश दिया। आपकी आलोचनात्मक एवं सचित्र जीवनी "भविष्य" के आगामी अङ्क में प्रकाशित की जायगी।

—एसेम्बली के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट श्री० विट्ठल भाई पटेल बिना किसी शर्त के आज सवेरे कोइम्बटूर जेल से रिहा कर दिए गए। जनता ने धूमधाम से उनका स्वागत किया। वे आज शाम को मद्रास के लिए रवाना हो जायँगे। शुक्रवार को बम्बई पहुँचेंगे।

—डेरा इस्माईल ख़ाँ का ४थी जनवरी का समाचार है, कि पिछले दिनों सीमा प्रान्त में कॉङ्ग्रेस कमिटियों को क़ानून-विरुद्ध ठहराया गया था। पेशावर कॉङ्ग्रेस कमिटी पर हाल ही में धावा किया गया और साथ ही खद्दर भण्डार पर भी क़ब्ज़ा कर लिया गया था। मैनेजर खद्दर भण्डार से पूछताछ करने पर पता चला है, कि १०००) रु० का खद्दर और ८०) रु० नक़द भी पुलिस ने ज़ब्त कर लिए। चीफ़ कमिश्नर के पास कई प्रार्थना-पत्र भेजे गए हैं, कि खद्दर-भण्डार का कॉङ्ग्रेस से कोई सम्बन्ध न था, परन्तु वहाँ कोई सुनता ही नहीं।

—जेकोबाबाद में ६ठीं जनवरी को मौलाना मुहम्मद अली की शोक-सभा में सिन्ध के डिक्टेटर निचलदास, स्थानीय डिक्टेटर डॉ० गोविन्दराम और दो वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए।

श्रीमती कमला नेहरू पति के पथ पर !

राष्ट्रपति जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी को छः मास की क़ैद !

स्थानीय 'डिक्टेटर' और राष्ट्रपति पण्डित जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी श्रीमती कमला नेहरू १ली जनवरी को प्रातःकाल आनन्द-भवन में गिरफ़्तार कर ली गईं।

पता चला है कि कमला जी की गिरफ़्तारी क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की धारा १७ (१) तथा भड़काने वाले दूसरे ऑर्डिनेन्स की धारा ३ के अनुसार, गत २६ दिसम्बर को इलाहाबाद ज़िले के कर्मा नामक गाँव में होने वाली एक सार्वजनिक सभा में दिए गए व्याख्यान के कारण हुई। आपको गिरफ़्तार करके ज़िला जेल में रक्खा गया था।

सुना है, आप शङ्करगढ़ जाने वाली थीं। आपके शङ्करगढ़ जाने की ख़बर पाकर पुलिस ने सब नाके पहले ही से रोक रक्खे थे।

प्रातःकाल अभी लोग अपने-अपने काम पर जा ही रहे थे कि गिरफ़्तारी का समाचार शहर में बिजली की तरह फैल गया। लोगों ने ख़बर पाते ही अपना कारबार बन्द कर दिया। सन्ध्या-समय स्थानीय खद्दर-भण्डार से एक बड़ा भारी जुलूस निकाला गया, जो शहर की सभी प्रधान-प्रधान सड़कों पर से होता हुआ पुरुषोत्तमदास पार्क में समाप्त हुआ।

पुरुषोत्तमदास पार्क में श्रीमती उमा नेहरू के सभापतित्व में एक विराट सभा हुई, जिसमें प्रान्तीय 'डिक्टेटर' श्री० पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने यह घोषित किया कि कमलाजी के स्थान पर श्रीमती उमा नेहरू को स्थानीय 'डिक्टेटर' बनाया गया है।

श्रीमती कमला जी का सन्देश

श्रीमती कमला जी ने गिरफ़्तारी से पहले निम्नलिखित सन्देश दिया—"मुझे आज इस बात का बहुत उल्लास है, कि मैं आज अपने पतिदेव का अनुसरण कर रही हूँ। मुझे आशा है कि लोग झण्डा ऊँचा रक्खेंगे।"

२री जनवरी को श्रीमती कमला जी मलाका जेल के कोर्ट-रूम में बुलाई गईं और उनको वे धाराएँ बताई गईं, जिनके अनुसार उन पर अभियोग चलाया गया है। ३री जनवरी को कमला जी का मामला फिर श्री० मुहम्मद इशहाक़ मैजिस्ट्रेट के सामने पेश हुआ। मुक़दमे की कार्रवाई शीघ्र ही समाप्त हो गई और आपको दोनों जुर्मों में ६-६ मास की सादी क़ैद की सज़ा दे दी गई।

शुरू से अन्त तक आपने मुक़दमे में भाग नहीं लिया। आप मौन रहीं। यद्यपि मैजिस्ट्रेट ने आपको 'ए' क्लास में रक्खे जाने की सिफ़ारिश की है, किन्तु अभी आपके साथ 'बी' श्रेणी के क़ैदियों का सा ही व्यवहार हो रहा है। बाद के समाचार से मालूम हुआ है, कि आप लखनऊ जेल में रक्खी जायँगी।

—लखनऊ, २री जनवरी का समाचार है, कि कल शाम को १२ स्वयंसेवक हाफ़िज़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ अब्दुल समद की दूकान पर पिकेटिङ्ग करते हुए गिरफ़्तार कर लिए गए। गत सप्ताह में कुल १४० स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए जा चुके हैं।

—बम्बई, ३री जनवरी का समाचार है, श्रीयुत दीक्षित ने (जोकि कॉङ्ग्रेस के एक प्रमुख कार्यकर्ता हैं और जिनको पुलिस गत २९ दिसम्बर से ढूँढ रही थी) अपने आप पुलिस के पास जाकर आत्म-समर्पण कर दिया। उनका मामला २४ और सज्जनों के साथ १० जनवरी को पेश होगा।

इलाहाबाद में गिरफ़्तारियों की भरमार

इलाहाबाद, २री जनवरी का समाचार है, कि आज मि० मुहम्मद ईशहाक़, मैजिस्ट्रेट ने इलाहाबाद ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी की सहायता करने के अपराध में ३९ सज्जनों को छः-छः मास की कड़ी क़ैद का हुक्म दिया। यह भी सुना गया है कि चालीस सज्जन अभी और ज़िला जेल में बन्द पड़े हैं। उन पर भी इसी अपराध में शीघ्र ही मामला चलाया जायगा।

कानपुर में बानर-सेना का सत्याग्रह

कानपुर, १ली जनवरी का समाचार है, कि बानर-सेना के छोटे-छोटे लड़के पिछले एक सप्ताह से फूलबाग़ में सत्याग्रह कर रहे हैं। वह किसी प्रकार से फूलबाग़ में घुस जाते हैं और वहाँ जाकर निज को गिरफ़्तारी के लिए पेश कर देते हैं। आज तक ८९ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। इनमें से आधे छोड़ दिए गए हैं, बाक़ी को जेल भेज दिया गया है।

नदियाद के कुछ प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ता, जो हाल ही में लाठियों की वर्षा के शिकार हुए थे।

स्थानीय कॉङ्ग्रेस के मन्त्री गिरफ़्तार

इलाहाबाद, ३री जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत मङ्गलप्रसाद वकील, सेक्रेटरी इलाहाबाद कॉङ्ग्रेस कमिटी को पुलिस ने इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट जेल में गिरफ़्तार कर लिया, जब कि वह श्रीमती कमला नेहरू का मामला सुनने वहाँ गए थे। ज्योंही श्री० मङ्गलप्रसाद जेल के दरवाज़े से बाहर निकले, कि ख़ुफ़िया-विभाग के श्री० भृगुप्रकाश ने उनको गिरफ़्तार कर लिया। श्री० मङ्गलप्रसाद ने वारण्ट देखना चाहा, परन्तु उत्तर मिला कि वारण्ट दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं; गिरफ़्तार करने वाला पुलिस अफ़सर अपनी वर्दी में नहीं था इस कारण से श्री० मङ्गलप्रसाद ने कहा कि मुझे कैसे पता चले, कि आप पुलिस-अफ़सर हैं। परन्तु इसका भी उन्हें कोई उत्तर न मिला।

बाद का समाचार है, कि ६ठी तारीख़ को ज़िला-जेल में आपके मुक़दमे की पेशी हुई, जिसमें आपको बतलाया गया, कि आप भी श्रीमती कमला नेहरू के साथ कर-बन्दी आन्दोलन में भाग लेने के लिए गिरफ़्तार हुए हैं। सरकारी गवाहियाँ हुईं, किन्तु आपने अपने केस में कोई भाग नहीं लिया। आपने केवल अपने बयान में इतना ही कहा कि 'सरकारी गवाहों ने जो कुछ भी बयान किया है, इससे स्पष्ट झूठ हो ही नहीं सकता!' फ़ैसला नहीं सुनाया गया!

देहली जेल में एक बूढ़े स्वयंसेवक का बलिदान

नई देहली, १ली जनवरी का समाचार है, कि चीफ़ कमिश्नर देहली ने अपना एक वक्तव्य छपवाया है, जिस में यह कहा गया है, कि देहली-जेल में लखना गाँव, ज़िला मेरठ के निवासी श्री० तोता के पुत्र श्रीयुत सगवा, जिन पर कि पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में अभी मामला चल रहा था, गत २६ दिसम्बर को न्यूमोनिया से बीमार हुए। पाँच दिन की बीमारी के पश्चात् श्रीयुत सगवा, गत ३० दिसम्बर की रात्रि को नौ बजे स्वर्ग सिधार गए।

उसके सम्बन्धियों ने उसके मृत-देह पाने के लिए जेल के अधिकारियों से प्रार्थना की, किन्तु पुलिस स्वयं अस्पताल की गाड़ी में लाश ले गई और यमुना के किनारे, कहा जाता है, मृतक देह को 'दफ़न' कर दिया।

मुज़फ़्फ़रपुर में ३०० गिरफ़्तारियाँ

मुज़फ़्फ़रपुर का १ली जनवरी का समाचार है, कि आज प्रातःकाल स्वतन्त्रता-दिवस के उपलक्ष में स्वयंसेवकों के कई दल बड़े-बड़े तिरङ्गे झण्डे लिए तथा राष्ट्रीय गीत गाते हुए शहर में घूम रहे थे।

समाचार पाते ही पुलिस के सिपाही चारों ओर भेजे गए और ३०० स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया गया। परन्तु उनमें के अधिकांश कुछ समय के पश्चात् छोड़ दिए गए। केवल २२ स्वयंसेवक जेल में रह गए हैं।

—लखनऊ, ३१ दिसम्बर का समाचार है कि अमीनाबाद में पिकेटिङ्ग ख़ूब उत्साह से जारी है। पुलिस ने आज दोपहर को इसी सम्बन्ध में ९ सज्जनों को गिरफ़्तार किया है।

—लखनऊ, २री जनवरी का समाचार है, कि लखनऊ कॉङ्ग्रेस कमिटी के नए 'डिक्टेटर' श्रीयुत चन्द्रभान गुप्त और श्रीयुत जगदम्बाप्रसाद नायक को पुलिस ने कल अमीनाबाद पार्क में स्वतन्त्रता-दिवस सम्बन्ध में राष्ट्रीय झण्डाभिवादन कराने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया है।

डॉ० हार्डीकर गिरफ़्तार

बम्बई, १ली जनवरी का समाचार है कि हिन्दुस्तानी सेवा-दल के सञ्चालक, श्रीयुत डॉ० हार्डीकर धारा १७ (१) क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार हुबली में गिरफ़्तार कर लिए गए। आपको मुक़दमे के लिए बम्बई लाया गया है। पाठकों को स्मरण होगा कि, गत दिसम्बर मास में पुलिस ने हिन्दुस्तानी सेवा-दल के केम्प पर धावा करके उसके कप्तान सहित ३२ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया था। उसी समय सुना है कि डॉ० हार्डीकर का वारण्ट भी पुलिस ने जारी किया था।

२ री जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने डॉ० हार्डीकर के १० जनवरी तक हिरासत में रखने की आज्ञा कोर्ट से ले ली है। मैजिस्ट्रेट ने कहा, कि यदि डॉक्टर साहब चाहें, तो एक सौ की ज़मानत देकर छूट सकते हैं, परन्तु डॉक्टर साहब ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया।

जेल का क़ानून भङ्ग

सत्याग्रही क़ैदियों को कड़ी सज़ाएँ

इलाहाबाद, ३ जनवरी। आज नैनी सेन्ट्रल जेल में मि० मुहम्मद इशहाक़ मैजिस्ट्रेट के सामने जेल क़ानून को तोड़ने के अपराध में, सात सत्याग्रही क़ैदियों का मामला पेश हुआ। अभियुक्तों के नाम यह हैं :—

श्री० अब्दुल मुहम्मद ज़ैदी, मुज़फ़्फ़र हुसेन, गुरु नारायण खन्ना, ओङ्कारनाथ, बन्शीधर, रूपनारायण और यूसुफ़ हुसेन। पाठकों को स्मरण होगा, ये पाँचों अभियुक्त सत्याग्रह के सम्बन्ध में कड़ी क़ैद भोग रहे हैं।

मैजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में कहा कि अभियुक्तों ने भूख-हड़ताल स्वयं भी की और जेल के दूसरे क़ैदियों से भी करवाई, इसके अलावा उन्होंने क्रान्तिकारी नारे लगाए तथा गिनती के समय उपस्थित होने से साफ़ इन्कार कर दिया।

नदियाद वानर-सेना का १४ वर्षीय नेता—श्री० मनीभाई ; जिस पर राष्ट्रीय झण्डे की मान-रक्षा के अपराध में लाठियों का प्रहार हुआ था।

सभी अभियुक्त, चूँकि जेल में सर्वप्रिय हो गए थे और इनका बड़ा मान होता था, इसी कारण से अभियुक्त शरारत करने में ख़ूब सफल होते रहे। जेल के अधिकारियों की बार-बार चेतावनी देने पर भी अभियुक्त अपने कृत्यों से बाज़ न आए।

अभियुक्तों का कहना है, कि चूँकि उनकी शिकायतें गिनती के समय सुनी नहीं जाती थीं, इसी कारण से उन्होंने जेल क़ानून को भङ्ग किया। दूसरा कारण था एक छोटे बच्चे को, जो क़ैद में बन्द था, कोड़े लगाने की अमानुषिक सज़ा। तीसरा कारण यह था, कि जब दारोग़ा-जेल से यह शिकायत की गई, तो उत्तर मिला कि जो कोई जेल में इन्सपेक्टर जनरल के आने पर शरारत करेगा, उसको भी बेतों की सज़ा मिलेगी। मैजिस्ट्रेट ने फ़ैसले में कहा है, कि चूँकि यह साबित हो चुका है कि ये अभियुक्त जेल-नियम तोड़ने पर तुले हुए थे, इसलिए मैं इनको अधिक से अधिक सज़ा देता हूँ।

सातों अभियुक्तों को एक-एक साल की कड़ी क़ैद की सज़ा सुनाई गई। श्री० गुरुनारायण खन्ना की पहिली सज़ा समाप्त हो चुकी थी और इस नए अभियोग में वे ज़मानत पर छोड़ दिए गए थे, किन्तु अब वे फिर पकड़ लिए गए हैं।

—मद्रास का ३री जनवरी का समाचार है, कि दो और स्वयंसेवक विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बनारस का ४वीं जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने गाँजे की दूकान पर धरना देने के अपराध में छः स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

नागपुर में ८ देश-सेविकाएँ गिरफ़्तार

नागपुर का ३री जनवरी का समाचार है कि विदेशी कपड़े की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में ८ देश-सेविकाएँ गिरफ़्तार कर ली गईं।

—धारवाड़, ३१ दिसम्बर का समाचार है कि गदग के एक वकील श्रीयुत दत्तात्रेय नागदिर को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के आधार पर गिरफ़्तार करके उन पर अभियोग चलाया गया। उन्होंने अदालत की कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार कर दिया। मैजिस्ट्रेट ने आपको छः मास की कड़ी क़ैद और २००) रु० जुर्माना की सज़ा दी है।

—सूरत का ४वीं जनवरी का समाचार है कि सूरत कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिक्टेटर' श्री० रामचन्द्र विद्यानन्द पाण्डेय आज प्रातःकाल गिरफ़्तार कर लिए गए।

—इटावा का ४वीं जनवरी का समाचार है, कि कॉङ्ग्रेस तथा हिन्दू-सभा के प्रसिद्ध कार्यकर्ता पं० रामकुमार त्रिपाठी, कल भड़काने वाले दूसरे ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए।

—नई दिल्ली, ३री जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने कॉङ्ग्रेस-दफ़्तर पर धावा किया और ३२ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया, पर पीछे सब छोड़ दिए गए।

—मुज़फ़्फ़रपुर, ४वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० शिवकुमार को एक साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

कॉङ्ग्रेस कमिटी के दूसरे कार्यकर्ता को भी ४ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई।

—मेरठ, ४थी जनवरी का समाचार है, कि यहाँ निम्न-लिखित सज्जन गिरफ़्तार कर लिए गए :—

श्री० किशनचन्द, मुरलीधर, महेश और रामोप्रसाद। श्रीमती वासोदेवी भी, जो कि महिला सत्याग्रह-समिति की एक प्रधान कार्यकर्त्री हैं, आज गिरफ़्तार कर ली गईं। सब कोई ज़िला-जेल में रक्खे गए हैं।

—कानपुर के विदेशी कपड़े की दुकानों पर, जिनके मालिकों ने पेटियों पर कॉङ्ग्रेस-मुहर लगवाने से इन्कार कर दिया है, पिकेटिङ्ग आरम्भ कर दी गई है।

मैजिस्ट्रेट की आज्ञा न मानने के अपराध में १७ महिलाओं को सज़ा

बम्बई का ६ठीं जनवरी का समाचार है कि बान्द्रा के मैजिस्ट्रेट ने जवाहर-दिवस के अवसर पर मैजिस्ट्रेट की आज्ञा भङ्ग करने के अभियोग में १७ महिलाओं को २०)-२०) रु० जुर्माने की सज़ा, अथवा १-१ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी है। महिलाओं ने जेल जाना ही ठीक समझा।

देश-सेविकाओं को सज़ा

नागपुर का ६ठीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के एक मुसलमान विदेशी कपड़े के व्यापारी की दूकान पर धरना देने के अभियोग में जिन ८ महिलाओं को गिरफ़्तार किया गया था, उनमें ६ को ग़ैर-क़ानूनी संस्था की सदस्या होने के अपराध में ४-४ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। बक़ीया दो को १-१ मास की सादी सज़ा हुई है। एक स्वयंसेवक को भी उक्त अभियोग में ४ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

महिला ने जुर्माना देने की अपेक्षा जेल भोगना स्वीकार किया

सूरत का ४वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत विनायक आपटे की पत्नी श्रीमती शारदा आपटे को, जो अदालत के कमरे में गिरफ़्तार की गई थीं, १००) रु० जुर्माने अथवा ३ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई। श्रीमती जी ने जेल ही जाना पसन्द किया।

विलापार्ले के 'डिक्टेटर' को सज़ा

बम्बई का ४वीं जनवरी का समाचार है कि विलापार्ले के 'डिक्टेटर' भाई साहब कोतवाल को, जो कि स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर गिरफ़्तार किए गए थे, १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा और २००) रु० जुर्माने की सज़ा अथवा ४ मास की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

कानपुर में गिरफ़्तारियाँ

गत ४वीं जनवरी का समाचार है कि कानपुर में सवेरे ५ बजे ४ बङ्गाली युवक गिरफ़्तार कर लिए गए।

६ठीं जनवरी को श्रीयुत जयनारायण गोयनका क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए।

हुबली के राष्ट्रीय कार्यकर्ता श्री० नारायण राव आपटे—जो हाल ही में लाठी-प्रहार के शिकार हुए हैं, आपकी दशा चिन्ताजनक बतलाई जाती है।

फ़रीदपुर की भद्र अवज्ञा-समिति के अध्यक्ष फिर गिरफ़्तार किए गए

फ़रीदपुर का ६ ठीं जनवरी का समाचार है कि फ़रीदपुर की ज़िला भद्र अवज्ञा-समिति के अध्यक्ष बाबू सतीशचन्द्र राय चौधरी जो हाल ही में दमदम स्पेशल जेल से छोड़े गए थे, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

* * *

(८वें पृष्ठ का शेषांश)

अमृतसर षड्यन्त्र केस

अमृतसर ४वीं जनवरी का समाचार है कि षड्यन्त्र केस के पाँच अभियुक्तों को मि० एण्डर्सन सेशन जज के सामने पेश किया गया।

सरकारी वकील ने प्रारम्भिक वक्तव्य में कहा, कि अभियुक्तों ने कई स्थानों पर डाका डालने के लिए षड्यन्त्र रचा तथा शस्त्र-संग्रह किया। श्री० बोस, इक़बाली गवाह, ने गवाही में कहा, कि मैं अमृतसर नौकरी के लिए बनारस से आया था। यहाँ सुशीलकुमार से मेरा परिचय हो गया, हम लोगों ने कई स्थानों पर डाका डालने का विचार किया, परन्तु किसी न किसी कारण से सफलता नहीं हुई।

—अहमदाबाद का २री जनवरी का समाचार है, कि पुलिस गत शनिवार को बम फटने के सम्बन्ध में बड़े परिश्रम से खोज कर रही है। पूना से स्पेशल सी० आई० डी० के कई अफ़सर स्थानीय पुलिस की सहायता के लिए बुलाए गए हैं। अभी तक ७ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

* * *

बम्बई में पूर्ण हड़ताल

फ़ौज की परेड तक बन्द

गत १ली जनवरी का समाचार है कि ३१वीं दिसम्बर को लाठी और गोली के प्रहार के विरोध में, बम्बई में पूर्ण हड़ताल मनाई गई। छोटे-बड़े सभी व्यापारियों ने इसमें योग दिया।

शहर की चिन्ताजनक अवस्था देख कर अधिकारियों ने नए साल की फ़ौजी क़वायद तक रोक दी।

—अमृतसर का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के व्यापारी मेसर्स फ़तहचन्द मदनगोपाल ने, जिनकी दूकान पर पिकेटिङ्ग शुरू की गई थी, अपने विदेशी कपड़े की दूकानों को बन्द कर, उन कपड़ों की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाना स्वीकार कर लिया है। उन्होंने बॉयकॉट-कमिटी को दान भी दिया है।

श्रीमती गाँधी का भ्रमण

अहमदाबाद का १ली जनवरी का समाचार है कि श्रीमती गाँधी बोरसद तालुक़े में भ्रमण कर रही हैं। वहाँ लगानबन्दी का आन्दोलन बड़े ज़ोरों से जारी है। लोग उनके दर्शनों के लिए बड़ी संख्या में आते हैं। वे सबों से उत्साहपूर्वक कठिनाइयों को झेलने के लिए कहती हैं। आपका कहना है—"जितना अधिक त्याग हम लोग करेंगे, उतना ही शीघ्र हमें स्वराज्य मिलेगा।"

अलीगढ़-समाचार

अलीगढ़ का २री जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के अरौली शहर में कुछ व्यापारियों के विदेशी कपड़ों की गाँठों पर से कॉङ्ग्रेस की मुहर तोड़ देने के कारण, वहाँ की तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी ने उनकी दूकानों पर पिकेटिङ्ग जारी कर दी है। तीन को छोड़ कर, सभी व्यापारी उन गाँठों पर फिर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाने के लिए तैयार हैं।

एक कपड़े के व्यापारी ने पुलिस से सहायता के लिए प्रार्थना की। पुलिस ने गत १ली जनवरी को क़रीब २५ व्यक्तियों को इस सम्बन्ध में गिरफ़्तार किया। गिरफ़्तार होने वालों में प्रमुख व्यक्ति हैं—डॉक्टर शिवदयाल, श्री० मदनमोहन, श्री० बनारसीदास, श्री० वासुदेव सहाय, श्री० श्यामलाल सर्राफ़, और श्री० ओ३म्प्रकाश।

अलीगढ़ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी ने वहाँ फ़रवरी के दूसरे सप्ताह में होने वाले मेले का बहिष्कार करने का विचार किया है। प्रदर्शनी के बहिष्कार के लिए, वहाँ स्वयंसेवकों की भर्ती ज़ोरों से हो रही है। सभी दूकानदारों को इस बहिष्कार के विषय में चेतावनी दे दी गई है। उक्त मेले के सेक्रेटरी से भी इस साल देश की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए, मेला बन्द रखने के लिए कहा गया है।

खैर नामक तहसील इस समय, कॉङ्ग्रेस-कार्यों में अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक भाग ले रही है। हाल ही में सरकार ने खैर तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया है। इस आन्दोलन को दबाने के लिए वहाँ बड़ी सख़्ती की जा रही है।

बम्बई में ५ महिलाएँ घायल हुईं!

प्रेस-रिपोर्टर पर भी लाठी पड़ी

गत १ली जनवरी को, बम्बई में 'स्वतन्त्रता-दिवस' के अवसर पर, जो लाठियाँ चली थीं, उसका विस्तृत विवरण पाठक १६वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखेंगे।

बाद का एक समाचार है कि मारवाड़ी में जुलूस पर जो मार पड़ी थी, उसमें ५ महिलाएँ भी घायल हुई हैं। ख़बर है कि प्रेस-रिपोर्टरों के साथ भी बुरा व्यवहार किया गया। कुछ प्रेस-रिपोर्टरों ने अधिकारियों से घटनास्थल पर (चौपाटी पर) ऐसी जगह खड़े होने की अनुमति माँगी थी, जहाँ से वे सारी घटनाएँ देख सकें। किन्तु अधिकारियों ने साफ़ इन्कार कर दिया, और उन्हें फ़ौरन उस स्थान को छोड़ देने की आज्ञा दी।

कहा जाता है 'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' के एक रिपोर्टर पर भी, जो अधिकारियों से इसी बात की आज्ञा माँगने जा रहा था, लाठी पड़ी!

हुबली के प्रसिद्ध चित्रकार श्री० गणेशराव, जो हाल ही में लाठी-प्रहार से सख़्त ज़ख़्मी हो गए थे।

—ख़बर है कि सपरिषद् गवर्नर ने, मेरठ के स्वयंसेवकों की सभी संस्थाओं को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया है।

—ख़बर है कि मनकापुर के राजा के पुत्र श्री० कुँवर राघवेन्द्र प्रतापसिंह तथा बहराइच के सरदार योगेन्द्रसिंह जेल से छूट गए। गत ३१वीं दिसम्बर को गोंडा में आप लोगों का बड़े धूमधाम से स्वागत किया गया।

बिजनौर जेल में अनशन

बिजनौर का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है, कि वहाँ के ज़िला जेल के राजनैतिक क़ैदियों ने अनशन कर दिया था। उन्हें साधारण क़ैदियों के साथ भोजन दिया गया था, जो वहाँ के राजनैतिक क़ैदियों के लिए एक नई बात थी। इसीके विरोध में उन्होंने कई दिनों तक अनशन जारी रक्खा। ज़िला मैजिस्ट्रेट के कहने-सुनने पर जेल के अधिकारियों ने फिर पहले का नियम जारी कर दिया। इससे क़ैदियों ने अब अनशन तोड़ दिया है।

बिहार-समाचार

पिछले सप्ताह बिहार प्रान्त में ४०६ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, जिनका ज़िलेवार ब्योरा इस प्रकार बताया जाता है:—

चम्पारन २३१, मुङ्गेर ७४, मुज़फ़्फ़रपुर ३१, सारन ३०, भागलपुर १३, पटना ११, दरभङ्गा ७, राँची २, शाहाबाद १—कुल जोड़ ४०६।

इस प्रकार इस प्रान्त में अब तक की गई गिरफ़्तारियों का नम्बर ११,६४६ तक पहुँच चुका है, ज़िलेवार ब्योरा इस प्रकार है:—

(१) मुङ्गेर २,०३४ (२) भागलपुर १,६३६ (३) पटना १,५१२ (४) चम्पारन १,३३८ (५) सारन १,१२६ (६) दरभङ्गा ७६१ (७) मुज़फ़्फ़रपुर ६१८ (८) शाहाबाद ६०४ (९) गया ४६४ (१०) पूर्णिया ३४६ (११) सन्थाल परगना २६३ (१२) मानभूम २३२ (१३) हज़ारीबाग़ १३८ (१४) सिंहभूम ४७ (१५) राँची ४७ (१६) पलामू १—कुल जोड़ ११,६४६।

मादक द्रव्यों के प्रचार को रोकने का काम जारी है। बिहपुर के फ़ज़्त शिविर के सम्बन्ध में भी सत्याग्रह जारी है। अनेक ज़िलों में पञ्चायतों का सङ्गठन हो रहा है। ख़बर है कि इन पञ्चायतों द्वारा फ़ौजदारी मुक़द्दमों के भी फ़ैसले हो रहे हैं।

अहमदाबाद तालुक़े में लगानबन्दी आन्दोलन!

किसानों ने गाँव छोड़ दिया!!

अहमदाबाद का २री जनवरी का समाचार है, कि दसकरोई तालुक़ा के उत्तर की ओर के कुछ गाँवों के किसानों ने लगानबन्दी का आन्दोलन बड़े ज़ोरों से आरम्भ कर दिया है! कहा जाता है, कि भदाज गाँव के किसान गाँव छोड़ कर बड़ोदा राज्य में चले गए हैं, और वहीं झोपड़ी बना कर बसे हुए हैं। उनका निश्चय है, कि जब तक महात्मा जी और सरदार पटेल उन्हें लौटने के लिए न कहेंगे, तब तक वे न लौटेंगे।

जुलूस भङ्ग किया गया

सौदागर पीटे गए

अहमदाबाद का १ली जनवरी का समाचार है कि गत ३१वीं दिसम्बर को वहाँ 'बानर-सेना-दिवस' के उपलक्ष में बानर-सेना का एक जुलूस निकाला गया। पुलिस ने इसे तितर-बितर कर दिया और बानर-सेना के नायक श्री० पुञ्जाभाई और उनके भाई को गिरफ़्तार कर लिया, जिन्हें बाद में चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। बानर-सेना का दूसरा जुलूस शाम को निकाला गया, किन्तु पुलिस ने कुछ छेड़छाड़ नहीं की। कहा जाता है, कि जब जुलूस भङ्ग होगया, तब पुलिस ने कुछ राह-चलतों और दूकानों पर बैठे हुए कुछ व्यापारियों को पीटा। क़रीब ७ व्यापारी, जिनमें एक मर्चेण्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भी थे, गिरफ़्तार कर लिए गए, किन्तु पीछे छोड़ दिए गए। मर्चेण्ट्स एसोसिएशन इस विषय में पुलिस के विरुद्ध क़ानूनी कार्रवाई करना चाहती है।

पुलिस का धावा

दरभङ्गा का एक समाचार है कि गत २७ वीं दिसम्बर को पुलिस ने वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी पर ६ बजे सुबह धावा किया। उसने ८ स्वयंसेवकों को, जो उस समय भोजन कर रहे थे, गिरफ़्तार किया, और वहाँ की प्रत्येक वस्तु को उठा कर वह साथ लेती गई।

लखनऊ में नया जेल

लखनऊ का १ली जनवरी का समाचार है कि, वहाँ 'सी' श्रेणी के क़ैदियों के लिए जो नया जेल कुछ दिनों से बन रहा था, आज खुल गया है। इसमें 'सी' श्रेणी के सभी क़ैदी रक्खे जायँगे।

बर्मा में भयङ्कर उपद्रव

३०० मरे :: २०० घायल

"परिस्थिति हाथ में है"

रङ्गून का समाचार है, कि थारावड्डी के सिरकवीन नामक स्थान के समीप गत ३०वीं दिसम्बर को १८ विद्रोहियों का एक पञ्जाबी सेना से मुक़ाबला हुआ। ३ बाग़ी मारे गए।

इन्सीन ज़िले में पुलिस ने कुछ बाग़ियों को गिरफ़्तार किया, जिनसे कहा जाता है, दङ्गाइयों के विषय में कुछ महत्वपूर्ण रहस्य की बातें मालूम हुई हैं।

जङ्गल में ठहरी हुई फ़ौज पर भी विद्रोहियों ने आक्रमण किया था। विद्रोहियों का प्रधान अड्डा पेशवेगाँ नामक स्थान के समीप जङ्गलों में बतलाया जाता है।

गत ३१वीं दिसम्बर की ख़बर है, कि विद्रोहियों ने एक पुल और इनीवा स्टेशन के तीन क्वार्टर उड़ा देने की कोशिशें कीं, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। रेलवे-विभाग के अधिकारियों ने उस ओर रात में ट्रेनें चलाना बन्द कर दिया है।

सरकारी रिपोर्ट के अनुसार विद्रोहियों ने पुलिस-स्टेशन पर धावे डालना बन्द कर दिया है। किन्तु हथियारों की प्राप्ति के लिए वे गाँवों पर धावे करते हैं।

सरकारी रिपोर्ट के अनुसार विद्रोहियों ने ३०वीं दिसम्बर की रात में मेजर हेयर के कैम्प पर आक्रमण किया था, किन्तु मैशीनगनों से क़रीब १०० विद्रोही मारे गए। दो फुङ्गी (धर्म-गुरु) विद्रोही दल के जासूस होने के सन्देह में गिरफ़्तार किए गए हैं!

१ली जनवरी का समाचार है, कि बर्मी सैनिकों ने रात्रि में दङ्गाइयों के प्रधान अड्डे पर धावा किया। वह स्थान घने जङ्गलों से घिरा हुआ अलान्तुङ्ग नामक पहाड़ पर है। कहा जाता है, कि यह स्थान केवल विद्रोहियों के नेताओं का अड्डा था। सैनिकों को उस स्थान तक पहुँचने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। स्थान-स्थान पर विद्रोहियों के सन्तरी पहरा दे रहे थे। उन्होंने सैनिकों पर गोलियाँ चलाईं। अनेक स्थानों पर उन्हें विद्रोहियों के दलों से सामना करना पड़ा। सभी विघ्न-बाधाओं को पार करते सैनिक उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ उन्हें पहाड़ की चोटी पर एक 'महल' मिला। यही विद्रोहियों के नेता का प्रधान वास-स्थान था, जहाँ वह अपने अफ़सरों के साथ रहता था।

सैनिकों के उस 'महल' पर धावा करने पर वहाँ कुछ विद्रोही मिले। कुछ औरतें भी वहाँ थीं। कहा जाता है कि सैनिकों को देख कर एक औरत भय के मारे पहाड़ से नीचे लुढ़क पड़ी, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। पुलिस ने फ़ायरें शुरू कीं, जिससे ३० विद्रोही मारे गए। इनमें १७ उनके अफ़सर भी थे; बाक़ी भाग गए। सैनिकों में से केवल एक को थोड़ी सी चोट आई। 'महल' के अन्दर घुसने पर एक विद्रोही की लाश मिली, जिसे दो विद्रोही ले भागने का प्रयत्न कर रहे थे। सैनिकों ने गोली से उन्हें मार दिया। पता चला है, कि वह व्यक्ति वास्तव में, यदि उन लोगों का प्रधान नेता नहीं, तो एक भारी अफ़सर तो ज़रूर ही रहा होगा। उसकी पगड़ी में सफ़ेद चूने का निशान लगा हुआ था। उसके हाथ में माला थी।

'महल' के अन्दर मिट्टी का तेल, पेट्रोल, बन्दूक़ की गोलियाँ, डेनामाइट, बारूद आदि वस्तुएँ मिलीं। एक बर्मी घण्टा, एक लाल झण्डा, जिस पर बाज़ चिड़िए का चित्र बना हुआ था, और एक कार्ड, जिस पर नाम और नम्बर छपा हुआ था, पुलिस के हाथ लगे।

कहा जाता है, उस मकान में आग लग गई। यह नहीं मालूम कि आग किसने लगाई, वह मकान बाँस का बना हुआ था और अधूरा था। आग से मकान नष्ट हो गया।

जिस समय विद्रोहियों के अड्डे पर सैनिकों ने धावा किया था, उसी समय मेजर हेयर का भी पेशवेगाँ के समीप विद्रोहियों के तीन दलों से सामना हुआ। कहा जाता है, कि विद्रोही शीघ्र ही भाग गए। उनके १० मनुष्य मारे गए और ५ घायल हुए, जो क़ैद कर लिए गए।

विद्रोहियों के अड्डे में छपा हुआ जो कार्ड मिला था, कहा जाता है वह इनीवा के छापेख़ाने का छपा हुआ था।

५वीं जनवरी का समाचार है कि ८० विद्रोहियों ने एक चीनी के मिल पर धावा किया। पुलिस के घटना-स्थल पर पहुँचने पर उन्होंने गोलियाँ चलाईं। पुलिस ने भी फ़ायरें कीं। कहा जाता है कि ६ विद्रोही मारे गए और ३६ सजीव गिरफ़्तार किए गए।

पेगू के एक गाँव में विद्रोहियों ने धावा मारा और वहाँ के मुखिया से रिवॉल्वर छीन लिया। जब मुखिया ने अपनी बन्दूक़ से फ़ायरें कीं, तो विद्रोहियों ने उसे भी आकर मार डाला और बन्दूक़ ले ली।

ख़बर है कि अब तक ३०० विद्रोही मारे जा चुके हैं, २०० घायल हुए हैं और ११७ गिरफ़्तार किए जा चुके हैं। केवल थारावड्डी में ७५ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। पुलिस विद्रोहियों को दबाने की भरपूर चेष्टा कर रही है। रेलवे-लाइनों पर सख़्त पहरा है।

एक अफ़वाह है कि यामेथिन ज़िले में भी बलवा हो गया है। कहा जाता है, कि दिन-दहाड़े वहाँ एक गाँव जला दिया गया। किन्तु अभी तक इस घटना के विषय में विश्वस्त रूप से कुछ नहीं मालूम हुआ है। सरकारी अधिकारियों का कहना है कि "परिस्थिति अब हाथ में आ गई है।" गिरफ़्तारियाँ जारी हैं। कहा जाता है कि विद्रोहियों का प्रधान अड्डा पेशवेगाँ ही के आस-पास के जङ्गलों में छिपा हुआ है। बर्मी सेना उसका अनुसन्धान कर रही है। इस दुर्घटना से समस्त बर्मा में सनसनी फैली हुई है।

गत ६वीं जनवरी का समाचार है कि गत शनिवार की रात को १०० से अधिक विद्रोहियों ने किम्पत पुलिस आउट-पोस्ट पर धावा किया, और सन्तरी को घायल किया। कहा जाता है कि उन्होंने एक मकान में आग लगाने की चेष्टा की, किन्तु पुलिस-इन्सपेक्टर के यह कहने पर कि उस मकान में डिनामाइट है, उन लोगों ने उस मकान पर फ़ायरें शुरू कीं। किन्तु पुलिस ने उन लोगों को खदेड़ दिया। कहा जाता है, कि पुलिस की गोली से ७ विद्रोही मारे गए और अनेक घायल हुए। ख़बर है कि पेगू ज़िले में जो विद्रोही छिपे हुए थे, वे गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। अब इस समय विद्रोहियों को, भिन्न-भिन्न स्थानों में घेरने का प्रयत्न किया जा रहा है। ख़बर है कि वे गाँवों से भाग रहे हैं और छोटे-छोटे दल बना कर छिपने की चेष्टा कर रहे हैं। इस समय परिस्थिति शान्त-सी जान पड़ती है। ख़बर है कि एक पञ्जाबी सेना को पेशवेगाँ से लौटते समय रास्ते में एक बौद्ध-मठ में दो छोटे-छोटे बम मिले।

—कलकत्ते का १ली जनवरी का समाचार है कि श्रीमती कमला नेहरू की गिरफ़्तारी की ख़बर से पं० मोतीलाल नेहरू को बड़ी ख़ुशी हुई। किन्तु अपनी पौत्री के लिए वे चिन्तित थे, क्योंकि माँ की गिरफ़्तारी हो जाने से बेचारी अकेली रह गई थी। कुमारी कृष्णा नेहरू को उन्होंने इसीलिए यहाँ भेज दिया है। पण्डित जी स्वयं भी अब अच्छे हो चले हैं, सम्भवतः ७ जनवरी को पण्डित जी पञ्जाब मेल से यहाँ पहुँच जायँ।

—बम्बई का २री जनवरी का समाचार है, कि गत बृहस्पतिवार को सवेरे कालबादेवी में जो गोली चली थी, उससे घायल, श्री० लक्ष्मीदास नामक एक पञ्जाबी युवक का अस्पताल में स्वर्गवास हो गया। आपका शव एक बड़े जुलूस के साथ निकाला गया। सोनापुर पहुँचने पर 'युद्ध-समिति' के अध्यक्ष श्री० जे० सी० मित्र ने मृत व्यक्ति के विषय में एक भाषण दिया। शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई गई।

संयुक्त-प्रान्त-समाचार

ख़बर है, कि गत सप्ताह में संयुक्त प्रान्त के अनेक ज़िलों ने विदेशी वस्त्र के बहिष्कार में अच्छी उन्नति की। शहरों के कुछ व्यापारियों ने अपने विदेशी कपड़ों की गाँठों पर लगी हुई कॉङ्ग्रेस की मुहर को तोड़ डाला है। फिर मुहर लगाने की कोशिशें की जा रही हैं। जिन दूकानदारों ने विदेशी कपड़े बेचना बन्द नहीं किया है, उनकी दूकानों पर धरना दिया जा रहा है। ख़बर है कि मादक द्रव्यों की दूकानों पर भी धरना जारी है। बाँदा ज़िले के अछूतों में इसके बहिष्कार के लिए, उनकी पञ्चायतों द्वारा कोशिश की जा रही है। पता चलता है कि मादक द्रव्यों की बिक्री दिन-ब-दिन कम होती जा रही है।

मर्दुमशुमारी-बहिष्कार का आन्दोलन भी जारी है। ख़बर मिली है, कि कर-बन्दी के सम्बन्ध में भी सङ्गठन जारी है। कहा जाता है कि ज़मींदारों की सख़्ती किसानों के प्रति बढ़ती जा रही है। इस विषय में इलाहाबाद ज़िले के कुछ ज़मींदारों की शिकायत विशेष रूप से सुनने में आ रही है।

खादी की बिक्री दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। जौनपुर में १५ से २१ दिसम्बर तक खादी-सप्ताह मनाया गया था। वहाँ लगभग ७००) की बिक्री हुई। इलाहाबाद में खादी-सप्ताह में लगभग ४,३००) की खादी बिकी।

ख़बर है कि हाथरस (अलीगढ़) में विदेशी चीनी का भी बहिष्कार किया गया है। अन्य ज़िलों में भी यह बहिष्कार जारी है।

पता चला है कि गत सप्ताह तक इस प्रान्त में १०,६२२ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं!

लगानबन्दी आन्दोलन

किसान गाँव छोड़ रहे हैं

अहमदाबाद का ६वीं जनवरी का समाचार है कि पञ्चमहाल ज़िले के हलाल तालुक़े में भी लगानबन्दी आन्दोलन जारी किया गया है। किसान गाँवों को छोड़ कर देशी राज्यों में जा रहे हैं। सरकार ने अनेक पुलिस स्टेशनों पर अतिरिक्त पुलिस तैनात की है।

कमिश्नरी पर राष्ट्रीय झण्डा

मुज़फ़्फ़रपुर का एक समाचार है कि वहाँ की कमिश्नरी अदालत पर से किसी व्यक्ति ने गत २६वीं दिसम्बर को 'यूनियन जैक' उतार कर राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया। पुलिस उस व्यक्ति का पता लगाने की कोशिश कर रही है, किन्तु अभी तक इस सम्बन्ध में कोई गिरफ़्तार नहीं किया जा सका है।

अलीगढ़ की कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गईं

अलीगढ़ का ५वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ की ज़िला, तहसील और शहर की कॉङ्ग्रेस कमिटियों को ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया गया है। कहा जाता है कि सिटी कॉङ्ग्रेस कमिटी से पुलिस कुछ चीज़ें भी उठा कर ले गई है। सहयोगी 'लीडर' के सम्वाददाता का अनुमान है कि शहर के प्रत्येक भाग से पुलिस राष्ट्रीय झण्डे भी उठा ले गई है।

* *

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

पञ्जाब के क्रान्तिकारी-दल का मनोरञ्जक इतिहास

पुलिस वालों को मारने के लिए आप से आप फटने वाले बम रक्खे गए !

सरदार भगतसिंह का छुड़ाने का निष्फल-प्रयत्न

सरकारी ख़ज़ानों पर डाका डालने की चेष्टा :: लाहौर का नया षड्यन्त्र-केस शुरू हो गया

लाहौर के सेण्ट्रल जेल में २ री जनवरी को स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने लाहौर के नए षड्यन्त्र केस के २६ अभियुक्त पेश किए गए। अभियुक्तों को कचहरी में चोर-दरवाज़े से लाया गया था। कचहरी के बाहर पुलिस का कड़ा पहरा था। कचहरी के भीतर भी बहुत सी पुलिस बन्दूक़ इत्यादि से सुसज्जित नियुक्त थी। सड़क पर पुलिस मोटरों में बैठ कर पेटरोल कर रही थी, आने-जाने वालों पर बड़ी कड़ी निगाह रक्खी जाती थी।

कचहरी में जाने के लिए अभियुक्तों के सम्बन्धियों तक को पास दिए गए थे। प्रेस के प्रतिनिधियों तथा सम्बन्धियों की तलाशी लेकर कचहरी में जाने दिया जाता था। कई सज्जनों की पगड़ी तथा पाजामे तक उतरवा कर तलाशी ली गई !

सरकारी गवाह

इस केस में पाँच सरकारी गवाह (Approvers) हैं। श्री० इन्द्रपाल, ख़ैरातीलाल, शिवराम, सरनदास, और मदनगोपाल।

भागे हुए अभियुक्त

पिछली पेशी पर बताया गया था, कि इस केस में १२ अभियुक्त भागे हुए हैं ; परन्तु आज एक और का नाम बढ़ा दिया गया है। १३ फ़रार अभियुक्तों के नाम ये हैं :—

(१) श्री० चन्द्रशेखर आज़ाद
(२) श्री० यशपाल
(३) श्री० सुखदेवराज, बी० ए०
(४) श्री० प्रोफ़ेसर सम्पूर्णसिंह, एम० ए०
(५) श्री० हंसराज
(६) श्रीमती दुर्गादेवी, धर्मपत्नी श्री०भगवतीचरण
(७) श्रीमती सुशीला देवी
(८) श्रीमती प्रकाश देवी
(९) श्री० लेखराम
(१०) श्री० प्रेमनाथ
(११) श्री० सीताराम
(१२) श्री० विश्वनाथ राव ; और
(१३) श्री० बिहारी छबीलदास

रायबहादुर ज्वालाप्रसाद इस केस में सरकारी वकील नियुक्त हुए हैं ! अभियुक्तों की ओर से लाला श्यामलाल एडवोकेट, श्री० अमोलक राम कपूर और श्री० प्राणनाथ मेहता वकील पैरवी कर रहे हैं।

अभियुक्तों की ओर से लाला श्यामलाल ने ट्रिब्यूनल को एक प्रार्थना-पत्र इस आशय का दिया, कि १२८) रु०, जो दैनिक वकीलों के ख़र्च के लिए दिया जाता है, पर्याप्त नहीं है, अतएव ६४) रु० दैनिक और बढ़ा दिया जाय। हुक्म हुआ कि इस प्रार्थना-पत्र का फ़ैसला लीगल रिमेम्बरैन्सर करेगा।

हमको इकट्ठा रक्खा जाय

इसके पश्चात अभियुक्तों ने कहा कि जेल में हम सबको इकट्ठा रक्खा जाय, क्योंकि हमको अपने केस की सफ़ाई के लिए आपस में मिल कर विचार करना पड़ता है। मि० ब्लेकर प्रेज़िडेण्ट ट्रिब्यूनल ने कहा कि ऐसा कोई प्रबन्ध जेल में नहीं हो सकता।

सरकारी वकील का वक्तव्य

सरकारी वकील ने इसके पश्चात अपना वक्तव्य अङ्गरेज़ी में आरम्भ किया ही था, कि अभियुक्तों के विरोध करने पर उन्हें अपना वक्तव्य हिन्दी में ही देना पड़ा।

अपने वक्तव्य में सरकारी वकील ने कहा, कि यह केस बड़ा महत्वपूर्ण है। इस केस से कुल ३९ व्यक्तियों का सम्बन्ध है, जिनमें से १३ अभी तक गिरफ़्तार नहीं किए जा सके हैं। इस केस के अभियुक्तों ने सरकारी अफ़सरों की हत्या करने के लिए यह षड्यन्त्र रचा था। इस कार्य के लिए इन लोगों ने चन्दा माँग कर और डाके डाल कर धन इकट्ठा किया। यह एक बड़ा भारी षड्यन्त्र है और इस षड्यन्त्र में भाग लेने वाले २६ क्रान्तिकारी आपके सम्मुख खड़े हैं।

भारत की क्रान्ति का इतिहास

भारतवर्ष की क्रान्ति का इतिहास वर्णन करते हुए सरकारी वकील ने कहा :—

भारतवर्ष में क्रान्ति के विचार बङ्ग-भङ्ग (Partition of Bengal) के समय से आरम्भ हुआ है। चूँकि बङ्ग-भङ्ग सरकार ने जनता की सम्मति के प्रतिकूल किया था, इस कारण से हताश-बङ्गालियों में क्रान्ति के अङ्कुर उत्पन्न हुए। यह सब लॉर्ड कर्ज़न के समय में हुआ। षड्यन्त्र का सब से पहला मामला सन्, १९०८ में चला, जिसमें श्रीयुत अरविन्दो घोष तथा उनके भाई और कई दूसरे व्यक्ति सम्मिलित थे। दूसरा मामला सन्, १९१२ में चला, जब लॉर्ड हार्डिञ्ज पर बम फेंका गया। पुलिस ने लाख ढूँढा, परन्तु बम फेंकने वालों का पता न चला। सन्, १९१३-१४ में पञ्जाब में भी क्रान्ति की आग फैल गई और अङ्गरेज़ों की हत्या के लिए षड्यन्त्र रचे जाने लगे। सन्, १९१५ में देहली में एक बड़ा भारी षड्यन्त्र-केस चला।

यूरोपीय महायुद्ध के समय केलिफ़ोर्निया इत्यादि से सहस्रों क्रान्तिकारी लौटे। उनके आते ही देश में आग-सी लग गई। चूँकि उनमें अधिकतर पञ्जाबी सिक्ख थे, इस कारण से पञ्जाब पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा। सरकार को एक स्पेशल ट्रिब्यूनल भारत-रक्षा-क़ानून (Defence of India Act) के अनुसार बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्पेशल ट्रिब्यूनल ने अपने फ़ैसले में कई व्यक्तियों को फाँसी और कइयों को कालापानी की सज़ा दी। इस दमन के पश्चात कुछ समय तक क्रान्ति की लहर दब गई।

विप्लववाद का पुनर्जन्म

सन् १९२५ में काकोरी षड्यन्त्र चला, जिसमें चार क्रान्तिकारियों को फाँसी लगी। इस मामले से पता चला कि भारतवर्ष में एक नया विप्लववादी-दल का निर्माण हुआ है, जिसका नाम "हिन्दुस्तान रिपब्लीकन एसोसिएशन" रक्खा गया है। पं० चन्द्रशेखर आज़ाद काकोरी षड्यन्त्र-केस का एक भागा हुआ अभियुक्त है, जिसका सम्बन्ध कि इस वर्तमान केस से भी है।

काकोरी के पश्चात लाहौर का विख्यात षड्यन्त्र-केस चला, जिसमें सरदार भगतसिंह, श्रीयुत दत्त, राजगुरु, सुखदेव इत्यादि अभियुक्त थे। पं० चन्द्रशेखर आज़ाद, श्रीयुत भगवतीचरण तथा श्री० यशपाल इस केस के भागे हुए अभियुक्त हैं, जिनका वर्तमान केस से भी सम्बन्ध है। श्रीयुत भगवतीचरण का बम के फट जाने से रावी के किनारे पर देहान्त हो गया। वर्तमान षड्यन्त्र में पञ्जाब तथा संयुक्त-प्रान्त के व्यक्ति भी सम्मिलित हैं।

वर्तमान केस में इन्द्रपाल एक महत्वपूर्ण सरकारी गवाह (Approver) है। इन्द्रपाल कोई एक वर्ष विप्लव-दल में रहा। इस विप्लव-दल के चन्द्रशेखर आज़ाद और भगवतीचरण मुख्य कार्यकर्ता थे। सितम्बर, १९२८ में विप्लव-दल का नाम "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आरमी" रक्खा गया। चन्द्रशेखर सेना-विभाग का मुखिया था।

जब पहले लाहौर षड्यन्त्र-केस का पुलिस को पता चला, तो बहुत से गिरफ़्तारी के वारण्ट जारी किए गए। भगवतीचरण तथा यशपाल, लाहौर से भाग गए। उन्होंने इन्द्रपाल को देहली बुलाया। इन्द्रपाल को बताया गया, कि वाइसराय की गाड़ी को बम से उड़ाने की योजना हो रही है। इन्द्रपाल को साधु बना कर रेलवे लाइन पर रक्खा गया, कि वह स्थिति का निरीक्षण करता रहे।

कई कारणों से उन दिनों वाइसराय पर आक्रमण न हो सका। फिर २३ दिसम्बर को वाइसराय की गाड़ी को बम से उड़ाने का प्रयत्न किया गया। परन्तु वाइसराय बच निकला।

महात्मा गाँधी का विरोध

गाँधी जी ने वाइसराय पर बम चलाने वालों की निन्दा लाहौर काँङ्ग्रेस में की तथा एक लेख, जिसका शीर्षक 'बम' था, अपने पत्र 'यङ्ग-इण्डिया' में लिखा। इसके उत्तर में एक लेख, जिसका शीर्षक "बम की फ़िलासफ़ी" (Philosophy of Bomb) था, इस पार्टी की ओर से बाँटा गया।

भगतसिंह को छुड़ाने का उद्योग

इसके पश्चात लाहौर षड्यन्त्र-केस के विख्यात अभियुक्त सरदार भगतसिंह को छुड़ाने की योजना की गई। हंसराज ने एक ऐसी गैस बनाने का प्रबन्ध किया, जिसके छोड़ने से सारे लोग बेहोश हो जायँ। परन्तु उसको सफलता न हुई। इस कारण से हंसराज फिर बम बनाने लग गया।

यशपाल ने इसी काम के लिए बहावलपुर रोड पर एक कोठी किराए पर ली। वहाँ पर भगवतीचरण, यशपाल, चन्द्रशेखर, दुर्गा देवी व सुशीला रहा करते थे।

भगवतीचरण का देहान्त

उन्हीं दिनों २८ मई, १९३० को भगवतीचरण, सुखदेवराज तथा शिव बमसाज़ी का अभ्यास करने के लिए रावी के किनारे पर गए। परन्तु अचानक बम फट गया, जिससे कि भगवतीचरण तथा सुखदेव घायल हुए। भगवतीचरण का कुछ ही समय के पश्चात स्वर्गवास हो गया। मरते समय भगवतीचरण ने कहा—"मैं मर रहा हूँ। मेरे पश्चात काम करते रहना।" यशपाल ने पीछे इन्द्रपाल को बताया कि भगवतीचरण के शरीर को वहीं ज़मीन खोद कर धन्वन्तरि तथा चन्द्रशेखर ने दबा दिया।

इसके एक ही दो दिन पश्चात कोठी में एक बम फटा, जिससे कि इनके काम में बहुत बाधा पड़ी। सब लोगों को लाहौर छोड़ कर भाग जाना पड़ा।

इसके पश्चात लाहौर के क्रान्तिकारियों ने चन्द्रशेखर की सलाह से एक 'आतशी चक्कर' नामी दल की स्थापना की। कई शहरों में अपने आप फटने वाले बम रक्खे गए, जिससे कि गुजराँवाला में अहमद्दीन हेड कॉन्स्टेबिल मर गया! सफ़दरअली सब-इन्स्पेक्टर अस्पताल में मरा। सन्तसिंह इन्स्पेक्टर घायल हुआ, इत्यादि।

दूसरा दिन

३री जनवरी का समाचार है कि रायबहादुर ज्वाला-प्रसाद सरकारी वकील ने लाहौर षड्यन्त्र केस में अपना प्रारम्भिक भाषण आज समाप्त किया। सरकारी वकील ने कहा, कि २१ जुलाई को देहली में एक विप्लव-दल की मीटिङ्ग हुई। इसमें यह तय पाया कि सहारनपुर के सरकारी ख़ज़ाने पर डाका डाला जाय। यह प्रस्ताव श्री० चन्द्रशेखर का था। इस समय श्री० यशपाल, सुखदेवराज, गुलाबसिंह, अमरीकसिंह, हरनामसिंह, अमीरचन्द तथा इन्द्रपाल उपस्थित थे। गुलाबसिंह लाहौर से रिवॉल्वर लेकर सहारनपुर गया, परन्तु वहाँ पर डाका इस कारण न डाला जा सका, क्योंकि वहाँ पुलिस बहुत थी।

२४ अगस्त को पार्टी ने यह तय किया, कि लाहौर के ख़ज़ाने पर डाका डाला जाय। इस मीटिङ्ग में इन्द्रपाल, गुलाबसिंह, जहाँगीरीलाल, रूपचन्द, अमीरचन्द, तथा दयानतराय थे। यह प्रस्ताव पास हो गया, परन्तु हंसराज ने कुछ सन्देह प्रकट किया और कार्य न हो सका। रावलपिण्डी में भी डाका डालने का प्रयत्न किया गया, परन्तु सफलता न हुई। इसके पश्चात लाहौर के क्रान्तिकारियों ने थानों में बम रखने की योजना की। हंसराज ने बम तैयार किए, परन्तु बम ठीक समय पर फटे नहीं।

इसके पश्चात सरदार हरदयालसिंह मैजिस्ट्रेट, रावलपिण्डी, को बम से उड़ा देने का प्रयत्न किया गया, परन्तु सफलता न हुई। इसी प्रकार से अभियुक्तों ने सरकाली गाँव तथा चकवाल में डाका डालने का निष्फल-प्रयत्न किया।

१ली सितम्बर को पुलिस को इस षड्यन्त्र का पता चला। इसी सम्बन्ध में जहाँगीरीलाल, रूपचन्द, कुन्दनलाल, इन्द्रपाल तथा गुलाबसिंह गिरफ़्तार हुए। कृष्णगोपाल के कहने पर एक घर की तलाशी ली गई, जहाँ से दो बम और एक पिस्तौल मिली।

भागे हुए अभियुक्त

इसके पश्चात सरकारी वकील ने कहा कि इस केस में १३ अभियुक्त फ़रार हैं। बहुत तलाश करने पर भी उनकी गिरफ़्तारी नहीं हो सकी। इसलिए इनके विरुद्ध धारा ५१२ के अनुसार कार्यवाही की जानी चाहिए।

लाला काशीराम इन्सपेक्टर सी० आई० डी० ने कहा कि मैंने श्री० सुखदेवराज बी० ए०, सम्पूर्णसिंह एम० ए०, प्रेमनाथ, श्रीमती दुर्गादेवी, सुशीला तथा प्रकाशो की बहुत तलाश की, परन्तु कुछ पता नहीं चला।

मि० सलीम के पूछने पर गवाह ने कहा कि मैं श्री० सुखदेव की तलाश में लाहौर, अमृतसर, दीनानगर, पठानकोट, गुरुदासपुर में गया, परन्तु कुछ भी पता न चला। प्रोफ़ेसर सम्पूर्णसिंह की तलाश कई स्थानों पर की गई, परन्तु कोई पता न चला। श्री० प्रेमनाथ की खोज काङ्गड़ा, लाहौर तथा अमृतसर में की। इसी ने प्रकाशवती को भी भगाया है। श्रीमती सुशीला की तलाश लाहौर, अमृतसर तथा गुजरात में की गई। श्रीमती दुर्गादेवी—पत्नी श्री० भगवतीचरण—की तलाश कई स्थानों पर की गई। आप श्री० सुखदेव के साथ चली गई हैं। मैं इन सबको ख़ूब अच्छी तरह से पहचानता हूँ।

इन्सपेक्टर गुलाम मुहम्मद ने कहा, कि मैंने श्री० हंसराज की तलाश लायलपुर, चन्योट, झङ्ग, मुलतान, जालन्धर, पेशावर इत्यादि स्थानों में की, परन्तु कुछ पता नहीं चला।

सब-इन्सपेक्टर मन्सफ़अली ने कहा कि मैं श्री० लेखराम को खोज रहा हूँ।

हेड-कॉन्स्टेबिल इब्राहीमबेग ने कहा कि मैंने श्री० चन्द्रशेखर आज़ाद को सारे भारतवर्ष में ढूँढ़ा है, परन्तु कोई पता ही नहीं चलता। मैं काकोरी-षड्यन्त्र के समय से इसकी खोज कर रहा हूँ, परन्तु सब बेकार। श्री० शिव, श्री० चन्द्रशेखर के साथ रहते हैं।

हेड-कॉन्स्टेबिल रामसरनदास ने कहा कि मैं श्री० यशपाल को पहचानता हूँ, परन्तु मुझे अभी तक उसकी कोई खोज नहीं मिली है।

पण्डित दीवानचन्द सब-इन्सपेक्टर तथा बख़्शी सम्पूर्णसिंह इन्सपेक्टर श्री० छबीलदास तथा सीताराम की खोज करते रहे।

भागे हुए अभियुक्तों के विरुद्ध धारा ५१२ के अनुसार कार्यवाही होगी। कहा जाता है सरकार की ओर से ३२ गवाह पेश किए जायँगे।

पुलिस इन्सपेक्टर का बध

कलकत्ते का ३री जनवरी का समाचार है, कि इन्सपेक्टर तारिणी मुकर्जी को गोली से मार देने के अपराध में रामकृष्ण विश्वास तथा कालिपाद चक्रवर्ती को अलीपुर में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने पेश किया गया। अभियुक्तों की ओर से कोई वकील नहीं था। सरकारी वकील रायबहादुर एन०-एन० बैनर्जी ने अपने भाषण में कहा, कि अभियुक्तों के विरुद्ध धारा ३०२ आई० पी० सी०, १६ एफ़ आर्म्स एक्ट, और १२० बी०, आई० पी० सी० के अनुसार अभियोग चलाया जाएगा।

सरकारी वकील ने इन्सपेक्टर के बध की कहानी बताते हुए कहा कि गत १ली दिसम्बर को, २ बजे सबेरे इन्सपेक्टर तारिणी मुकर्जी, चाँदपुर स्टेशन पर इन्स्पेक्टर जनरल-पुलिस से मिलने गए। ४॥ बजे गाड़ी चाँदपुर स्टेशन पर पहुँची तो इन्सपेक्टर-जनरल के साथ वाले डिब्बे से दो बङ्गाली युवकों ने निकल कर इन्सपेक्टर तारिणी मुकर्जी पर गोलियाँ चलाई। इन्सपेक्टर घायल होकर धरती पर गिर पड़ा।

अभियुक्त गोली चला कर वहाँ से भाग गए। इन्सपेक्टर-जनरल तथा उसके अरदली ने गोली चलाई, परन्तु वह ख़ाली गई। इन्सपेक्टर को अस्पताल भेजा गया, जहाँ उसका देहान्त हो गया।

सबेरे स्टेशन पर तलाशी लेने पर कई गोलियाँ मिलीं। हमला करने वालों का हुलिया तार द्वारा चारों ओर भेज दिया गया था और पुलिस अभियुक्तों की खोज कर रही थी। मेहर कालीबारी स्टेशन के समीप दो नवयुवकों पर पुलिस को शक हुआ और उनको गिरफ़्तार कर लिया गया। अभियुक्तों के पास दो रिवॉल्वर तथा एक बम मिला।

दोनों अभियुक्तों का सम्बन्ध चिटगाँव केस से भी बतलाया जाता है।

गवर्नर गोली-काण्ड केस

लाहौर में मुक़दमा आरम्भ हो गया

८ अभियुक्त क़िले की जेल में

लाहौर का ३री जनवरी का समाचार है, कि पञ्जाब यूनिवर्सिटी के उपाधि-वितरण (कन्वोकेशन) के अवसर पर गवर्नर पर गोली चलाने के सम्बन्ध में पुलिस ने जिन १० व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया था, उनके नाम यह हैं :—

(१) श्री० हरिकृष्ण, (२) श्री० गिरधारी लाल, (३) श्री० रणवीरसिंह, (४) श्री० दुर्गादास, (५) श्री० इहसान इलाही, (६) श्री० वीरेन्द्र, (७) श्री० चमनलाल, (८) श्री० जयदयाल, (९) श्री० मुहम्मद तुफ़ैल, (१०) श्री० दसौन्धा राम

इसके अतिरिक्त पुलिस ने निम्न-लिखित सज्जनों की भी तलाशियाँ लीं :—

श्री० अमीरचन्द, सरदार भगतसिंह के पिता—श्री० किशनसिंह, श्री० धन्वन्तरी के भाई श्री० विद्यानन्द जी, श्री० हीरालाल, २रे अभियुक्त गिरधारी लाल को पुलिस ने छोड़ दिया, श्री० हरिकृष्ण को आज मि० लूइस की अदालत में पेश किया गया। बाक़ी ८ अभियुक्त अभी तक क़िले में बन्द हैं।

मि० पी० एन० दत्त ने गवाही देते हुए कहा, कि २३ दिसम्बर को कन्वोकेशन एक बजे दोपहर में आरम्भ हुआ। गवर्नर सभापति थे। वाइस चान्सलर तथा दूसरे सिण्डीकेट के मेम्बर प्लेटफ़ॉर्म पर विराजमान थे। हॉल में कुल १५०० व्यक्ति थे। लोगों को अन्दर आने के लिए पास दिए गए थे। १ बज कर २० मिनट पर कन्वोकेशन समाप्त हुआ और लोग जुलूस बना कर बाहर निकले। सब से आगे मैं था और मेरे पीछे गवर्नर तथा श्री० ए० सी० वुल्नर, वाइस चान्सलर आ रहे थे। इनके पीछे अन्य व्यक्ति थे। मैंने अभी बरामदे में एक क़दम बढ़ाया ही था, कि मैंने गोली चलने की आवाज़ सुनी। उस समय गवर्नर मुझसे एक गज़ पीछे थे। इसके पश्चात एक और आवाज़ आई। मैंने समझा कि शायद बच्चे बड़े-दिन के उत्सव में पटाख़े छोड़ रहे हैं।

मैंने गवर्नर को 'रोबिङ्ग रूम' में भेज दिया। वहाँ मैंने दो और गोली चलने की आवाज़ सुनी और अभियुक्त हरिकृष्ण को हाथ में रिवॉल्वर लिए देखा। इतने ही में पुलिस वालों ने हरिकृष्ण को गिरफ़्तार कर लिया। फिर मैंने गवर्नर के पास जाकर देखा कि वह घायल हो गए हैं। मैंने करनल हारपर नेलसन को बुलाया और उन्होंने गवर्नर की मरहम-पट्टी की। पीछे मुझे पता चला कि मिस मेकडरमैट के भी चोट लगी है तथा सब-इन्स्पेक्टर चननसिंह तथा एक दूसरा पुलिस अफ़सर भी घायल हुए हैं। उनको तुरन्त अस्पताल पहुँचाया गया।

इसके पश्चात रायसाहब जवाहरलाल ने गवाही देते हुए कहा कि उन्होंने हरिकृष्ण को हाथ में रिवॉल्वर लिए "विज़िटर गैलरी" में खड़े देखा। हरिकृष्ण ने छः गोलियाँ चलाईं। जब उसकी गोलियाँ समाप्त हो चुकीं, तो हमने दौड़ कर उसको पकड़ लिया। हरिकृष्ण की तलाशी लेने पर छः गोलियाँ मिलीं। हरिकृष्ण ने पुलिस को बताया कि वह मरदान का रहने वाला है। चननसिंह अस्पताल में मर गया।

इसके पश्चात कई और गवाहियाँ हुईं, जिसमें पहली गवाहियों का ही समर्थन किया गया।

४ थी जनवरी को मुक़दमा फिर आरम्भ हुआ। श्री० हरिकृष्ण ने मैजिस्ट्रेट से कहा, कि मैं चूँकि अनशन कर रहा हूँ, और न मैं मुक़दमे में भाग ही ले रहा हूँ, इसलिए हाज़िरी से मुझे मुक्त कर देना चाहिए। एक दो गवाहियों के पश्चात मैजिस्ट्रेट ने अभियुक्त से पूछा—क्या तुमने बुद्धसिंह सब-इन्सपेक्टर को गोली से घायल किया?

हरिकृष्ण—मुझे पता नहीं, कि वह मेरी गोली से घायल हुआ है। मैंने उसे नहीं देखा।

प्रश्न—क्या तुम्हारे पास रिवॉल्वर का लाइसेन्स है?

उत्तर—नहीं, मैंने रिवॉल्वर अपने गाँव में एक अफ़रीदी से ख़रीदा था।

प्र०—तुम्हें कुछ और कहना है?

उ०—नहीं।

मैजिस्ट्रेट के एक सवाल पूछने पर हरिकृष्ण ने कहा—मैं गवर्नर का बध करने के लिए ही लाहौर आया था। मैंने छः गोलियाँ चलाईं, दो गवर्नर को मारने के लिए और चार आत्म-रक्षा के लिए। मुझे उसी समय गिरफ़्तार कर लिया गया। मैंने क्यों ऐसा किया, इसका कारण मैं नहीं बताना चाहता।

मैजिस्ट्रेट के प्रश्न करने पर, कि आप लाहौर कब और किस लिए आए थे, अभियुक्त ने उत्तर दिया, कि मैं यह सब कुछ नहीं बतला सकता, पर गवर्नर को मारने के उद्देश्य से मैं अवश्य यहाँ आया था।

प्र०—आप लाहौर में कहाँ ठहरे थे?

उ०—मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहता।

प्र०—क्या यूनिवर्सिटी में दाख़िल होने के लिए आपके पास टिकट था?

उ०—जी हाँ, मुझे टिकट मिल गया था।

प्र०—आपको टिकट कहाँ से मिला था?

उ०—मैं यह नहीं बतलाना चाहता।

प्र०—आप कुछ और कहना चाहते हैं?

उ०—केवल इतना ही, कि इस सारे काण्ड के लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ, इससे अधिक मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

अभियुक्त को सेशन्स सुपुर्द कर दिया गया है।

बाद के तार से पता चला है, कि श्री० हरिकृष्ण, मर्दन ज़िला के अन्तर्गत ग़ल्लाधेर नामक स्थान के सुप्रसिद्ध ज़मींदार—लाला गुरुदास राम के १८ वर्षीय पुत्र हैं। कहा जाता है कि श्री० हरिकृष्ण के पिता श्री० गुरुदास राम जी के पिस्तौल का लाइसेन्स ज़ब्त कर लिया गया है।

देहली षड्यन्त्र केस

बनारस में गिरफ़्तारी

देहली का ३री जनवरी का समाचार है कि "देहली षड्यन्त्र" केस के सम्बन्ध में पुलिस बड़ी सरगर्मी से खोज कर रही है। बनारस के एक नवयुवक श्री० विद्याभूषण, एम० ए० को गिरफ़्तार करके लाया गया है। उनको श्री० बाबूराम के साथ (जिनको पुलिस ने देहली से पकड़ा है) देहली-जेल में रक्खा है।

इस मामले में पुलिस ने अभी तक १२ गिरफ़्तारियाँ की हैं। सुना है देहली क़िले में एक ख़ास बैरक बनाई जा रही है। यह मामला इसी बैरक में चलाया जायगा।

अभी तक श्री० विद्याभूषण और श्री० बाबूराम ने कोई बयान पुलिस को नहीं दिया है।

इनके अतिरिक्त पुलिस ने देहली षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में बहुत सी अन्य गिरफ़्तारियाँ भी की हैं। सुना जाता है, श्री० धन्वन्तरि भी (जिनको चाँदनी चौक में गिरफ़्तार किया गया था) इसी केस में अभियुक्त हैं। इस केस में पुलिस दूसरे अभियुक्तों की भी खोज कर रही है। इसी सम्बन्ध में पुलिस ने आनन्द-भोजन-भवन पर भी धावा किया और मैनेजर से कई प्रश्न पूछे। सुना है, इसी केस के एक अभियुक्त श्री० विमलप्रसाद के किसी साथी को भी पुलिस खोज रही है।

—नई देहली का २री जनवरी का समाचार है, कि पुलिस ने महात्मा जी के सेक्रेटरी श्रीयुत प्यारेलाल के छोटे भाई श्री० मोहनलाल को देहली रेलवे-स्टेशन पर बम फटने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किया है। कहा जाता है, देहली में जो नया षड्यन्त्र का मामला चलने वाला है, उसके सम्बन्ध में पुलिस आपकी तलाश कर रही थी।

—कलकत्ते का ४थी जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत दिनेश गुप्ता को, जिनको राईटर-बिल्डिङ्ग में कर्नल सिम्पसन की हत्या के सम्बन्ध में पुलिस ने गिरफ़्तार किया था, आज अस्पताल से अलीपुर जेल में भेज दिए गए। उनके भाई को कुछ शर्तों पर उनसे मिलने की आज्ञा प्राप्त हो गई है। कल अभियुक्त को मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जावेगा।

—५वीं जनवरी का समाचार है कि आज चिटगाँव शस्त्रागार पर आक्रमण करने वाला मामला, इसलिए पेश नहीं हो सका, क्योंकि ट्रिब्यूनल के जज रायबहादुर नरेन्द्रनाथ लहिरी की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया है।

कर्नल सिम्पसन का बध

एक एङ्ग्लो-इण्डियन गिरफ़्तार

कलकत्ते का ५वीं जनवरी का समाचार है कि मि० आर० ए० जे० हैकरडन नामक एक एङ्ग्लो इण्डियन महाशय को दक्षिण कलकत्ता के समीप ही गिरफ़्तार किया गया है।

कहा जाता है कि स्वर्गीय कर्नल सिम्पसन की हत्या इन्हीं महाशय के रिवॉल्वर से हुई है। अभियुक्त को ज़मानत पर छोड़ दिया गया है।

कानपुर में अफ़सरों पर गोलियाँ दाग़ी गईं!

क्रान्तिकारी गिरफ़्तार

कानपुर का २री जनवरी का समाचार है कि आज शाम के लगभग ४॥ बजे गाँधी रोड, कानपुर पर मि० जमशेद जी की शराब की दूकान के समीप श्री० अशोक कुमार नामक एक बङ्गाली युवक ने, बा० टीकाराम इन्सपेक्टर सी० आई० डी० और पण्डित अयोध्याप्रसाद पाठक सी० आई० डी० पर, जो वहाँ आपस में बातें कर रहे थे, फ़ायर कर दिया। पर गोली लगी नहीं, फ़ायर की आवाज़ सुनते ही दोनों अफ़सरों ने उधर देखा ही था, कि अशोककुमार लापता हो गया।

कुछ समय पश्चात पुलिस का एक दल सन्देह पर श्री० अशोककुमार के मकान पर पहुँचा। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। अन्त में क्रान्तिकारी पकड़ लिया गया। कहा जाता है, उसके पास ३ कारतूस भी मिले हैं।

लाट-साहब के दफ़्तर के पास पिस्तौल-सहित एक नौजवान पकड़ा गया

लाहौर का ३री जनवरी का समाचार है कि एक नौजवान सेक्रेटेरियट में गिरफ़्तार कर लिया गया। कहा जाता है कि वह गवर्नर के दफ़्तर की ओर जा रहा था। एक सफ़ेद-पोश सिपाही को कुछ सन्देह हुआ और उसने नवयुवक को गिरफ़्तार कर लिया। तलाशी लेने पर नवयुवक के पास एक पिस्तौल मिली।

—पेशावर का ३री जनवरी का समाचार है, कि चारसद्दा में पिछले शुक्रवार को अमीरुल्ला नामक एक "रेड शर्ट" की बम फट जाने के कारण मृत्यु हो गई, पुलिस जाँच कर रही है।

"हमने हार मानना नहीं सीखा"

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री० विशेश्वर के साथी सरदार टहलसिंह पर अभियोग

लाहौर का ५वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० विशेशर के साथी, सरदार टहलसिंह को आज मि० लुईस की कचहरी में पेश किया गया। अभियुक्त का चालान धारा ३०७ तथा आर्म्स-एक्ट के अनुसार हुआ है।

मि० सैयद अलीशाह इन्सपेक्टर-पुलिस ने गवाही देते हुए कहा, कि ४ नवम्बर को मैं पुलिस का एक दल लेकर धर्मपुर में कुछ सन्देहजनक मकानों की तलाशी लेने गया। हमको पता चला था, कि लाहौर षड्यन्त्र केस के कुछ भागे हुए अभियुक्त वहाँ पर रहते हैं। हमारे आने का पता पाकर श्री० विशेशरनाथ तथा सरदार टहलसिंह मकान छोड़ कर नहर की तरफ़ निकल आए। मैंने सिपाहियों को उनके पीछे लगाया। सिपाहियों ने जाकर श्री० विशेशरनाथ को घेर लिया। पुलिस वालों ने श्री० विशेशरनाथ की ओर राइफ़ल से निशाने बाँध लिए और उसको गिरफ़्तार हो जाने को कहा। परन्तु श्री० विशेशर ने चाक़ू से पुलिस वालों पर प्रहार करने का यत्न किया। पुलिस वालों ने बन्दूक़ चला दी, जिस से वह घायल होकर धरती पर लोटने लगा।

इतने ही में पीछे से फ़ायर की आवाज़ हुई और एक पुलिस वाले के पैर में गोली लगी। पुलिस ने घूम कर देखा, कि सरदार टहलसिंह अभियुक्त गोली चला रहा है।

पुलिस ने श्री० टहलसिंह की ओर बन्दूक़ें तान कर उसे हथियार रख देने को कहा; परन्तु सरदार ने उत्तर दिया, कि 'हमने हार मानना नहीं सीखा है।' इस पर गोली चलाई गई। सरदार टहलसिंह के कोट में गोली लगी जिससे वह धरती पर गिर गया। पुलिस ने उसे गिरफ़्तार किया। उसके पास एक ६२४ बोर की छोटी पिस्तौल तथा कुछ गोलियाँ मिलीं। श्री० विशेश्वरनाथ का देहान्त दूसरे दिन अस्पताल में हुआ।

अभियुक्त ने कोई बयान नहीं दिया। मामला स्थगित रक्खा गया है!

लाहौर षड्यन्त्र केस के 'अभियुक्त' की ज़मानत पर रिहाई

लाहौर का ६ठी जनवरी का समाचार है कि नए षड्यन्त्र केस के 'अभियुक्त' श्री० हरनामसिंह को १०,०००)रु० की ज़मानत पर छोड़ने की आज्ञा स्पेशल ट्रिब्यूनल ने दे दी है।

श्री० सुखदेवराज गिरफ़्तार

लाहौर षड्यन्त्र केस

लाहौर, ५ जनवरी। सहयोगी "ट्रिब्यून" के विशेष सम्वाददाता के कथनानुसार पञ्जाब गवर्नमेण्ट की ओर से एक घोषणा की गई है, कि श्री० सुखदेवराज विद्यार्थी एम० ए० क्लास, जिनकी गिरफ़्तारी के लिए पञ्जाब सरकार की ओर से २,०००) रु० का पुरस्कार घोषित हुआ था, देहली में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

यह घोषणा ज़िला-कचहरी में लगे हुए एक इश्तिहार में मिली है।

—मदारीपुर का ३री जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने एक बङ्गाली नवयुवक अनन्तरञ्जन गङ्गूली को डाका डालने के उद्योग करने में गिरफ़्तार किया है। तलाशी में पुलिस को ११ बम और कुछ बम बनाने का सामान मिला। अभियुक्त का मामला ५ जनवरी को पेश होगा।

(शेष मैटर ३२वे पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

सम्मिलित-चुनाव की असफलता

देश-प्रेमी भारतीयों को यह सुन कर दुख होगा कि भारत के लिबरल-दल के नेताओं ने गोलमेज़ परिषद में, जो भारत में सम्मिलित-चुनाव की प्रथा आरम्भ करने का प्रयत्न किया था, वह असफल हो गया और भविष्य में कोई आशा नहीं है, कि इस शर्त को वहाँ गए हुए मुस्लिम सदस्य क़बूल करेंगे! इस तरह मुसलमानों के जातीय नेताओं की तो विजय अवश्य हुई है, परन्तु भारत के सब मुसलमान इस प्रबन्ध से सन्तुष्ट नहीं हैं। राष्ट्रीयता के भावों को उच्च स्थान देने वाले मुसलमानों की संख्या अब दिनोंदिन बढ़ रही है और वे जातीय चुनाव के ख़िलाफ़ हैं। यह बात नेहरू-रिपोर्ट की रचना के समय में किए गए वाद-विवादों से साफ़ मालूम हो जाती है। विलायत में जो इस सम्बन्ध में बातचीत हुई है, उससे प्रधान-मन्त्री रैमज़े-मैकडॉनेल्ड को साफ़ मालूम हो गया होगा कि मुस्लिम सदस्य इस प्रश्न को न्यायपूर्ण रीति से क्यों नहीं हल करना चाहते। १३ तारीख़ के "स्पेक्टेटर" में डॉक्टर ई० टॉमसन लिखते हैं, कि "कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन ने जो एक बहुत ही अच्छी बात की है, वह यह है कि उसने नवयुवक हिन्दू तथा मुसलमानों के हृदय से जातीयता का भाव बिलकुल उठा दिया है। राउण्डटेबिल परिषद में आए हुए मुसलमान सदस्यों को चाहिए, कि वे जातीय भाव रखने वालों से सम्बन्ध तोड़ कर राष्ट्र-प्रेमी नवयुवक दल के भावों को प्रोत्साहित करें।" पर मुस्लिम सदस्यों ने इस बुद्धिमत्तापूर्ण मार्ग पर चलने से इनकार किया है। क्या वे मुस्लिम नेता, जो इस प्रथा के विरुद्ध हैं, इङ्गलैण्ड से लौटने के बाद अपनी जाति को सम्मिलित चुनाव की ओर झुकाने का, प्रयत्न करने का, साहस करेंगे? एङ्ग्लो-इण्डियन समाचार-पत्र तथा यूरोपियन सङ्घ, जोकि जातीय चुनाव के समर्थक थे, इस नई घटना से अवश्य बहुत ख़ुश हुए होंगे। पर भारत की भावी शासन-प्रणाली में इस प्रश्न के महत्व का ख़्याल करते हुए, तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता का ध्यान रखते हुए, हम समझते हैं कि यह बहुत आवश्यक है, कि राष्ट्रीयता के भावों की विजय होवे और सम्मिलित चुनाव स्वीकार किया जावे।

—"लीडर" (अङ्गरेज़ी)

* * *

"हमने तो पहिले ही कहा था"

जो भारतवासी यह समझते थे, कि भारतवर्ष के सारे दुखों का निबटारा गोलमेज़ परिषद में हो जावेगा, आज उनकी आशा पर पानी फिर रहा है। 'इण्डियन डेलीमेल' का लन्दन-स्थित सम्वाददाता लिखता है, कि सारी परिस्थिति बहुत ही घृणित और खेदजनक है। स्वराज्य-विरोधी अङ्गरेज़ अब बहुत ख़ुश हैं और साफ़ कहते फिरते हैं कि हमने तो पहिले ही कहा था, कि भारतवासी स्वराज्य देने के योग्य नहीं हैं। गोलमेज़ परिषद में जाने वाले हिन्दू तथा मुस्लिम सदस्यों की मुठभेड़ देख कर इस सम्वाददाता की बुद्धि चक्कर में पड़ गई है और वह कहता है कि "भारतवासियों को यह साफ़-साफ़ कह देना चाहिए, कि जातीयता के तुच्छ झगड़ों में पड़ कर हम राष्ट्रीय कल्याण के मार्ग को नहीं छोड़ सकते।" हमारा तो यह ख़्याल है, कि इन जातीय झगड़ों से भारत की जनता का कोई सम्बन्ध नहीं है। लन्दन की कॉन्फ़्रेन्स के लिए सरकार ने जो तैयारी की थी, वह सफल हुई है। मिस्टर वेजवुड बेन तथा लॉर्ड इरविन ने जो गोलमेज़ के प्रतिनिधि चुने हैं, उन्हें वे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं, उन्होंने यह चुनाव बहुत सोच-समझ कर किया है। गोलमेज़ परिषद में जातीयता के समर्थन करने वाले सदस्य बहुत बड़ी संख्या में रक्खे गए हैं और वे किसी विशेष उद्देश्य से ही वहाँ बुलाए गए हैं। प्रधान-सचिव मैकडॉनल्ड भी यह अच्छी तरह जानते थे, कि इस तमाशे का अन्त किस तरह होगा। इसीलिए उन्होंने भारत की भावी शासन-प्रणाली के विषय में कोई घोषणा नहीं की। परिषद में हिन्दू-मुस्लिम दङ्गा हो गया है! अब वे संसार के और देशों से कह सकते हैं कि हम क्या करें, हम तो भारत के सुधार के लिए, उसकी उन्नति के लिए हर एक बात करने को तैयार हैं। हम लोगों ने इस परिषद की सफलता के लिए बहुत प्रयत्न किया, पर वह सफल न हो सकी, इस सबके लिए भारतवासी ख़ुद ज़िम्मेदार हैं। भारत की स्वतन्त्रता के विरोधी अङ्गरेज़ यदि ख़ुश हैं, तो वह इसलिए हैं कि मि० मैकडॉनल्ड भी उनकी ही नीति का पूर्ण तौर से अनुकरण कर रहे हैं!

पर इससे भारतवासियों को चिन्तित होने की कोई ज़रूरत नहीं है। इस दशा के लिए वे ज़िम्मेदार नहीं हैं। भारतनिवासी तो शुरू से ही गोलमेज़ परिषद के ख़िलाफ़ हैं; और लिबरल तथा अन्य दलों के नेता, जो इस परिषद में गए हैं, वे जनता की इच्छा के विरुद्ध वहाँ उनके प्रतिनिधि बन कर बैठे हैं। फिर उन पर बीतने वाले कष्टों से भारतनिवासी दुखी क्यों हों? अब रही स्वराज्य-विरोधी अङ्गरेज़ों की बात, जोकि मज़दूर-दल की चालाकी की तारीफ़ कर रहे हैं और ख़ुश हो रहे हैं, तो उनके विषय में हम केवल यह कहेंगे, कि वे ज़्यादा दिन तक इस तरह ख़ुश नहीं रह सकते। "कण्टेम्पोरेरी रिव्यू" ने लिखा था कि "इङ्गलैण्ड के कुछ मूर्ख नेता यह समझते हैं, कि हम दमन तथा तलवार के ज़ोर से ३० करोड़ भारतवासियों पर उनकी इच्छा के विरुद्ध शासन कर सकते हैं, पर यह कभी नहीं हो सकता। जिस दमन-नीति से हम आयर्लैण्ड को अपने क़ब्ज़े में रख सके थे, उस नीति से अब हम भारत को नहीं रख सकते। अब फ़ौज तथा शस्त्र-बल द्वारा दूसरे देशों पर शासन करने के दिन नहीं रहे!"

पर इङ्गलैण्ड के कई नेता अभी इस उपदेश की सचाई में विश्वास नहीं करते। लन्दन के इन राजनीतिज्ञों को, जो कोरी चालाकी से भारत की माँग को टालना चाहते हैं, शीघ्र ही यह मालूम हो जावेगा, कि इन चालाकियों से राष्ट्रीयता की लहर रुक नहीं सकती। हमारे शासक हमसे कहते हैं, कि अपनी दशा को देखो, ठोस बातों का ख़्याल रक्खो! हम कहते हैं, कि ये ही ठोस बातें तो हमारे माँग की समर्थक हैं। भारत विदेशी राज्य के नीचे दबा हुआ है और स्वतन्त्रता पाने के लिए व्याकुल है। यह एक ऐसी ठोस बात है, जिसे एक अन्धा भी जान सकता है। भारत की भावी रचना न जातीयता के समर्थक भारतीय नेताओं के हाथ में है और न स्वराज्य-विरोधी अङ्गरेज़ी शासकों के हाथ में ही! दमन होने पर भी भारतीयों के दबे हुए प्राकृतिक भाव एक दिन उमड़ेंगे और उनके वेग को कोई भी न रोक सकेगा। जब वह मौक़ा आवेगा, तब फिर भारतीय अपने ब्रिटिश शासकों से कह सकेंगे—

"हमने तो आपसे पहिले ही कहा था।"

—"लिबर्टी" (अङ्गरेज़ी)

* * *

विरोध या दमन?

यूरोपियन सङ्घ को वाइसराय के उस भाषण को सुनने का आदर प्राप्त हुआ है, जिसमें उन्होंने अपनी नीति की, जोकि ब्रिटिश सरकार की नीति के अनुकूल है, प्रशंसा की है। वे कहते हैं कि "इस आन्दोलन के आरम्भ होने के पूर्व ही मैंने इस विषय में अपने विचार निश्चित कर लिए थे, जिन पर अनुभव के बाद मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया है। वह यह है कि इस आन्दोलन को दबाने के लिए बहुत वैध दमन से काम लिया जाना सम्भव है और फिर कुछ समय के बाद जब समस्त आन्दोलन का विनाश हो जावेगा, हम कह सकेंगे कि अब शान्ति स्थापित हो गई।" प्रत्येक भारतवासी वाइसराय के इन शब्दों की प्रशंसा करेगा। परन्तु क्या वाइसराय यह समझते हैं, कि वे ब्रिटिश सरकार की आज्ञा का ठीक-ठीक पालन कर रहे हैं, जैसा कि उन्होंने कहा है कि मेरा यह दृढ़ विचार है? क्या प्रान्तीय सरकारें, जोकि इनकी आज्ञा-पालन कर रही हैं तथा पुलिस, जिनकी आपने बार-बार मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है, इनके इन विचारों पर ध्यान दे रही हैं? वाइसराय महोदय को विश्वास है कि वे यह कर रही हैं। यही नहीं, उन्होंने अपने भाषण में इस विषय पर काफ़ी ज़ोर दिया है।

लॉर्ड इरविन ने अपनी नीति का अपने सामर्थ्य भर बहुत ही ज़ोरों में समर्थन किया है। और इस बार भी उन्होंने वर्तमान आन्दोलन तथा राष्ट्रीय माँग से मित्रता दर्शाने का प्रयत्न किया है। इससे उनका उद्देश्य यह दिखाने का है, कि वर्तमान आन्दोलन महज़ विनाशकारी है, यह रचनात्मक नहीं है। वे कहते हैं कि "यदि इस भयानक दुर्घटना को रोकने का नाम दमन है, तो सरकार गुनहगार अवश्य है। पर दुनिया में कौन ऐसी सरकार है, जो इस नीति का अनुसरण न करती।" यदि वाइसराय महोदय ने गत छः महीनों के इतिहास का ख़्याल करने का प्रयत्न किया होता, तो उन्होंने "रोकना" शब्द का उपयोग न किया होता। वर्तमान आन्दोलन तो केवल उनकी दमन-नीति से बढ़ रहा है।

ऑर्डिनेन्स तथा अन्य असाधारण क़ानून आन्दोलन को "रोक" नहीं रहे हैं, वे सत्याग्रहियों के हाथ में सरकार की सत्ता को "रोकने" का मौक़ा दे रहे हैं। इस दमन-नीति की केवल यही एक ग़लती नहीं है। जेल में सत्याग्रही क़ैदियों के साथ दुर्व्यवहार, हर जगह निःशस्त्र जनता के ऊपर लाठी-वर्षा, ११४ धारा का दुरुपयोग और बारदोली का दमन—इन सब दुर्घटनाओं से वाइसराय महोदय पूर्णतया परिचित हैं। और इन सबके लिए उन्हें श्रीयुत ब्रेल्सफ़र्ड तथा एलेक्ज़ेण्डर

ऐसे पुरुषों की शहादत मिली है, जिन्हें अपने देश की भलाई का पूरा ध्यान है। फिर भी वाइसराय इस नीति—भयङ्कर दमन की नीति को क्या साधारण दमन-नीति तक कहने को तैयार नहीं हैं? हमें शान्ति और विनाश में कोई भेद ही नज़र नहीं आता। दमन-नीति के विरोधियों को शान्त करने के लिए वे उन्हें भारत-सरकार के ख़रीते की याद दिलाते हैं, जिसे वे अब तक भूल चुके हैं, यह उनकी बड़ी ग़लती है। यदि एक बार यह भी कह दिया जावे, कि उसमें इन्होंने उदारता दिखाई है, तो भी इसमें इन्होंने जो वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में अदूरदर्शिता तथा अनुदारता प्रदर्शित की है, उससे लोगों को और भी दुख है! फिर वाइसराय ने जो यह कहा, कि कॉङ्ग्रेस ने जो अहिंसा का धर्म स्वीकार किया है, वह केवल ढोंग मात्र है, यह बिलकुल ग़लत है। क्या वाइसराय तथा उनके साथी इस बात को भी मानने को तैयार नहीं हैं, कि कॉङ्ग्रेस ने चाहे और जो कुछ किया हो, पर उसने क्रान्तिकारियों को कभी भी प्रोत्साहित नहीं किया है? केवल यही नहीं, लॉर्ड इरविन को यह अच्छी तरह मालूम है, कि महात्मा गाँधी ने वर्तमान आन्दोलन क्रान्तिकारी तथा ब्रिटिश साम्राज्य दोनों के विरुद्ध लड़ने के लिए उठाया है। यह मत प्रत्येक भारतवासी का है, जोकि भारत के विषय में कुछ भी जानकारी रखता है। यहाँ तक कि वाइसराय द्वारा राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स के लिए नियुक्त किए हुए सदस्य श्रीयुत के० टी० पाल तक इस विचार से सहमत हैं। परन्तु लॉर्ड इरविन ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया है। यह क्रिसमस का समय है, इसमें शान्ति तथा परोपकार के भावों का राज्य होना चाहिए और इस समय में बेचारी ग़ैर-क़ानूनी ठहराई हुई कॉङ्ग्रेस ऐसी संस्था के विषय में भी लॉर्ड इरविन को इतने ख़राब विचार नहीं रखने चाहिए थे। पर भारत पर तो वे सदा दयालु रहते हैं। अपनी नीति-समर्थक भाषण देने के बाद क्रिसमस-उपहार के बतौर उन्होंने झट से तीन "फ़रमान" जारी कर दिए, जोकि उनके भाषण में कहे हुए विचारों के सर्वथा विरुद्ध हैं।

—"बॉम्बे क्रॉनिकल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

ऑर्डिनेन्सों का पुनरागमन

आन्दोलन सम्बन्धी सरकारी रिपोर्टों से तो यह मालूम होता है, कि उनके दृष्टि-कोण से भारत की दशा बेहतर होती जा रही है, परन्तु समाचार-पत्रों पर तथा लगानबन्दी के सम्बन्ध में जो हाल ही में ऑर्डिनेन्स फिर से जारी किए गए हैं, उनसे यह साफ़ मालूम होता है, कि अभी भारत की दशा काफ़ी भयानक है। प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अन्त होने के बाद भारत के सम्पादकों को ज़रा खुल कर साँस लेने का मौक़ा मिला था और यह ख़याल किया जाता था, कि अब वाइसराय को इसको फिर से जारी करने का अधिकार नहीं है। यदि वे इसका फिर से उपयोग करना चाहते हैं, तो उन्हें लेजिस्लेटिव एसेम्बली की अनुमति माँगनी पड़ेगी। पर अब यह साफ़ ज़ाहिर हो रहा है, कि वाइसराय बिना उसकी अनुमति के उसी ऑर्डिनेन्स को फिर से लगा सकता है। यदि यही बात ठीक है, तो फिर वर्तमान शासन-प्रणाली में वाइसराय के ऑर्डिनेन्स जारी करने के अधिकारों पर जो रुकावट रक्खी गई है, वह किस उद्देश्य से रक्खी गई है? इस तरह तो हर एक ऑर्डिनेन्स फिर से जारी किया जा सकता है और ऑर्डिनेन्स का शासन-काल अनियमित समय तक बढ़ाया जा सकता है। शासन-प्रणाली की रक्षा के

(शेष मैटर ११वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

गत सात महीनों में विदेशी कपड़े का भारत में आयात

[प्रोफ़ेसर दयाशङ्कर जी दुबे, एम० ए०, एल्-एल्० बी०, इलाहाबाद युनिवर्सिटी]

विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में भारत-सरकार प्रति मास एक रिपोर्ट प्रकाशित करती है। अक्टूबर सन् १९३० की रिपोर्ट अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है, उसके आधार पर इस लेख में यह बतलाया जाता है कि गत सात महीनों में व ख़ासकर अक्टूबर १९३० में भारत में विदेशी कपड़े के आयात की क्या दशा थी।

भारत में विदेशी कपड़ा कराची, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता और रङ्गून के बन्दरगाहों द्वारा ही आता है। नीचे के कोष्ठक में यह बतलाया जाता है कि सन् १९२९ और १९३० के पहली अप्रैल से ३० अक्टूबर तक सात महीनों में प्रत्येक बन्दरगाह में कितना विदेशी कपड़ा जहाज़ द्वारा आया :—

नाम बन्दरगाह	विदेशी कपड़े के आयात का मूल्य (लाख रुपयों में)			विदेशी कपड़े के आयात का परिमाण (लाख गज़ में)		
	सन् १९२९ के सात महीने	सन् १९३० के सात महीने	प्रति सैकड़ा कमी	सन् १९२९ के सात महीने	सन् १९३० के सात महीने	प्रति सैकड़ा कमी
कलकत्ता ...	१,१३४	५५२	५१	४,६५९	२,६८४	४५
बम्बई ...	८७५	३३५	६२	३,१३८	१,३२५	५८
कराची ...	४५२	२८५	३७	१,६७६	१,२१०	२८
रङ्गून ...	२८४	१९५	३२	८३५	६६०	२१
मद्रास ...	२००	११६	४२	६१३	४३१	३०
मीज़ान ...	२,९४५	१,४८३	५०	१०,९२१	६,३१०	४२

इस कोष्ठक से मालूम होता है कि गत सात महीनों में विदेशी कपड़े का आयात क़रीब ६३ करोड़ गज़ था और उसका मूल्य १४ करोड़ ८३ लाख रुपया था। सन् १९२९ के इन्हीं सात महीनों में कपड़े के आयात का परिमाण १०९ करोड़ गज़ और उसका मूल्य २९ करोड़ ४५ लाख रुपया था। अर्थात् गत वर्ष की अपेक्षा सन् १९३० के गत सात महीनों में कपड़े के आयात में ४६ करोड़ गज़ की तथा मूल्य में १४ करोड़ ६२ लाख रुपयों की कमी हुई। मूल्य के हिसाब से यह कमी प्रायः ५० प्रति सैकड़ा है, अर्थात् गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष सात महीनों में आधे मूल्य का कपड़ा ही भारत में विदेश से आया। आयात की कमी प्रायः सब बन्दरगाहों में हुई, परन्तु सब से अधिक कमी बम्बई में हुई है। वहाँ ६२ प्रति सैकड़ा कमी आयात के मूल्य में हुई है और परिमाण के हिसाब से वह ५८ प्रति सैकड़ा के बराबर है। कपड़े का सब से अधिक आयात कलकत्ता के बन्दरगाह के द्वारा होता है। उसमें क़रीब ५० प्रति सैकड़ा कमी आयात में हुई है। सब से कम कमी रङ्गून के बन्दरगाह में हुई। कराची में कमी मद्रास की अपेक्षा कम है।

विदेशी कपड़े के आयात की कमी प्रति मास बढ़ती जा रही है। अक्टूबर १९२९ और १९३० में प्रत्येक बन्दरगाह से विदेशी कपड़े के आयात का मूल्य और परिमाण नीचे लिखे अनुसार था :—

नाम बन्दरगाह	विदेशी कपड़े के आयात का मूल्य (लाख रुपयों में)			विदेशी कपड़े के आयात का परिमाण (लाख गज़ में)		
	अक्टूबर १९२९ में	अक्टूबर १९३० में	प्रति सैकड़ा कमी	अक्टूबर १९२९ में	अक्टूबर १९३० में	प्रति सैकड़ा कमी
कलकत्ता ...	१३५	२९	७९	५६१	१५३	७३
बम्बई ...	१२७	१८	८६	४८१	७३	८५
कराची ...	४४	१६	६४	१६०	७१	५६
रङ्गून ...	३०	२२	२७	८१	८३	...
मद्रास ...	२०	११	४५	६६	४८	२७
मीज़ान ...	३५६	९६	७३	१,३४९	४२८	६८

इस कोष्ठक से स्पष्ट रूप से मालूम होता है, कि विदेशी कपड़े के आयात की बड़ी तीव्र गति से कमी हो रही है। अक्टूबर १९३० में केवल ९६ लाख रुपयों का कपड़ा भारत में आया, जिसका परिमाण ४ करोड़, २८ लाख गज़ था। अक्टूबर १९२९ में ३ करोड़, ५६ लाख रुपयों का कपड़ा भारत में आया था, इस प्रकार एक मास में ही २ करोड़, ६० लाख रुपए के कपड़ों का आयात कम हो गया। सब से अधिक कमी बम्बई के बन्दरगाह में हुई है। वहाँ पर एक पञ्चमांश से भी कम कपड़ा विदेश से इस मास में आया। केवल रङ्गून का बन्दरगाह ही ऐसा है, जिसमें विदेशी कपड़े के आयात का परिमाण गत वर्ष की अपेक्षा अधिक हो गया है, यद्यपि उसका मूल्य गत वर्ष की अपेक्षा कम है।

विदेशी कपड़ों में बिना धुले सफ़ेद कपड़े, धुले हुए सफ़ेद कपड़े और रङ्गीन कपड़ों की प्रधानता रहती है। नीचे के कोष्ठक में यह बतलाया जाता है कि अक्टूबर सन् १९२९ और १९३० में इन कपड़ों के आयात का मूल्य और परिमाण क्या था :—

'सीमा-प्रान्त के गाँधी—अब्दुल ग़फ्फ़ार ख़ाँ को राष्ट्रपति चुनो'

"उससे सीमा-प्रान्त के लोगों के कष्ट दूर हो जायँगे और आन्दोलन की प्रगति बढ़ जायगी"

'बाम्बे क्रॉनिकल' में एक पारसी सज्जन, श्री० जवेरी ने, सीमा प्रान्त के अहिंसा के मूर्तिमान अवतार श्री० ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ को आगामी कॉङ्ग्रेस का सभापति चुनने का प्रस्ताव करते हुए, लिखा है कि :—

"हमें सर्वशक्तिमान नौकरशाही की इस शैतानी-चाल के विरुद्ध, कि इस संग्राम में हर एक जाति के लोग सम्मिलित नहीं हैं, अपना ध्यान आकर्षित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। कॉङ्ग्रेस ने यह प्रमाणित कर दिया है, कि इस युद्ध में हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख, पारसी आदि सभी जातियों के लोग सम्मिलित हैं। गवर्नमेण्ट दुनिया में इस बात का डङ्का पीट रही है, कि मुसलमानों का इस आन्दोलन में बिलकुल हाथ नहीं है। गवर्नमेण्ट की पदवियों से विभूषित कुछ मुसलमान-पिट्ठू उससे अधिक सम्मान प्राप्त करने और नाम कमाने के लिए देश के हितों पर कुठाराघात तक करने के लिए अवश्य तैयार हैं; किन्तु कॉङ्ग्रेस ने उनका भण्डाफोड़ कर दिया है, फिर भी अभी लाखों मुसलमान किसानों और गाँवों में जीवन व्यतीत करने वाली उस जनता को उचित रास्ते पर लाने का प्रयत्न नहीं किया गया है, जो अभी कॉङ्ग्रेस को अपना सर्वस्व समर्पण करने में हिचकिचाती है। जिस दिन उनके सम्मुख इन नक़ली मुसलमान-नेताओं की देश-भक्ति का भण्डाफोड़ कर दिया जायगा, उसी दिन उन मुसलमानों की स्वतन्त्रता की भावनाओं पर से पर्दा हट जायगा। यह सफलता प्राप्त हो जाने से इस युद्ध में हम शीघ्र ही विजय प्राप्त कर सकेंगे।

परन्तु इस पर्दे को हटाने की शक्ति किस महापुरुष में है? कौन व्यक्ति इस भटकी हुई मुसलमान जनता को सच्चे मार्ग पर ला सकता है? मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ, कि ऐसा व्यक्ति सीमा प्रान्त का गाँधी, और एक लाख देशभक्त ख़ुदाई ख़िदमतगारों का नायक ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ है, जो इस समय जेल की चहारदीवारी के अन्दर अपनी कठिन तपस्या का दण्ड भोग रहा है! उसके मुक्त होते ही या मुक्त न होने पर, उसके प्रतिनिधि, उसके पुत्र, या किसी अन्य निर्वाचित व्यक्ति को देश के सिंहासन पर आरूढ़ कर उसकी बागडोर उसके हाथों में दे देना चाहिए। उस व्यक्ति के हाथों में, जो अहिंसा के अवतार महात्मा गाँधी का सच्चा पुजारी है और जिसने सीमा प्रान्त के ख़ूँख़्वार और जल्लाद पठानों तक, उनका सन्देश पहुँचा कर, उन्हें इस अहिंसात्मक आन्दोलन में अग्रसर किया है, भारत भर की भूली-भटकी मुसलमान जनता का और देश का नेतृत्व दे दो! यदि देश को आदर्श गौरव प्रदान करना है, तो उसकी बागडोर ऐसे व्यक्ति के हाथों में दो, जिसे भौतिक सभ्यता छू तक न गई हो। वे गवर्नमेण्ट के अन्यायपूर्ण क़ानूनों का पालन भले ही न करें, परन्तु वे सच्चे ईश्वरीय नियमों का पालन अवश्य करेंगे और उनकी रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पण कर देंगे। जो व्यक्ति शेरों को पालने में समर्थ हुआ है, जिसने पठान जैसी जङ्गली और ख़ूँख़्वार जाति के घातक शस्त्र फिंकवा कर उसे महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक युद्ध में अग्रसर किया है; वह सचमुच में देश के सिंहासन पर आरूढ़ होने के योग्य है। और जब यह देवदूत अपना उज्ज्वल प्रकाश फैलाएगा, उनके आत्म-सम्मान तथा इज़्ज़त के नाम पर अपील करेगा, तब उसके वे सभी धर्मावलम्बी, जो अभी तक सोच-विचार में पड़े हैं, लज्जा से अपना मस्तक झुका लेंगे और इस महायुद्ध में अपना सर्वस्व समर्पण कर अपनी भूत की शिथिलता का प्रायश्चित करेंगे। हमें इस महापुरुष को इस सम्मान के पद पर विभूषित करने दो और स्वतन्त्रता शीघ्र ही दौड़ कर हमारा दरवाज़ा खटखटाने लगेगी।"

* * *

(१०वें पृष्ठ का शेषांश)

कपड़े का भेद	आयात का परिमाण (लाख गज़ में)			आयात का मूल्य (लाख रुपयों में)		
	अक्टूबर सन् १९२९ में (लाख गज़)	अक्टूबर सन् १९३० में (लाख गज़)	कमी प्रति सैकड़ा	अक्टूबर सन् १९२९ में (लाख रुपए)	अक्टूबर सन् १९३० में (लाख रुपए)	कमी प्रति सैकड़ा
बिना धुला सफ़ेद कपड़ा	६७०	१५०	७८	१५४	२७	८३
धुला हुआ सफ़ेद कपड़ा	२६४	१३३	५०	७६	२९	६२
रङ्गीन कपड़ा ...	३८३	१४३	६३	१२१	३९	६८
अन्य कपड़ा ...	३२	२	९४	५	१	८०
मीज़ान...	१,३४९	४२८	६८	३५६	९६	७३

इस कोष्ठक से मालूम होता है कि विदेशी कपड़े के आयात में सब से अधिक कमी बिना धुले सफ़ेद कपड़ों में हो रही है। उसका आयात गत वर्ष की अपेक्षा अब पञ्चमांश ही रह गया है। सब से कम कमी धुले कपड़ों में हुई है, तिस पर भी उनका आयात अब गत वर्ष की अपेक्षा आधे से कम हो गया है। रङ्गीन कपड़े के आयात में भी दो तिहाई कमी हो गई है।

विदेशी कपड़ा अधिकांश में इङ्गलैण्ड और जापान से ही आता है। नीचे के कोष्ठक में यह बतलाया जाता है कि अक्टूबर सन् १९२९ और १९३० में इन देशों से सूती कपड़े के आयात का मूल्य और परिमाण क्या था :—

देश	कपड़े के आयात का मूल्य (लाख रुपए में)			कपड़े के आयात का परिमाण (लाख गज़ में)		
	अक्टूबर १९२९	अक्टूबर १९३०	प्रति सैकड़ा कमी	अक्टूबर १९२९	अक्टूबर १९३०	प्रति सैकड़ा कमी
इङ्गलैण्ड ...	२२२	५४	७६	८१३	२१६	७४
जापान ...	९८	३३	६६	४३२	१८५	५७
अन्य देश ...	३६	९	७५	१०४	२७	७४
मीज़ान ...	३५६	९६	७३	१,३४९	४२८	६८

इस कोष्ठक से विदित होता है कि विदेशी कपड़े के आयात की सबसे अधिक कमी इङ्गलैण्ड से हुई है। इस देश से आयात गत वर्ष की अपेक्षा तीन चौथाई से भी अधिक कम हो गया है। केवल एक महीने में ही इङ्गलैण्ड से १ करोड़, ६८ लाख रुपयों का कपड़ा कम आया। आयात में सब से कम कमी जापान से हुई है। वहाँ से अब भी पहले की अपेक्षा एक तिहाई से अधिक कपड़ा भारत में आ रहा है। धुले हुए कपड़ों के सम्बन्ध में तो जापान से आयात बढ़ रहा है। अक्टूबर सन् १९२९ में केवल ४ लाख गज़ धुला हुआ कपड़ा जापान से आया था और उसका मूल्य केवल एक लाख रुपया था। अक्टूबर १९३० में जापान से धुले हुए कपड़े के आयात का परिमाण २५ लाख गज़ तक बढ़ गया, जिसका मूल्य ४ लाख रुपए था। इस प्रकार जापान से धुले हुए कपड़े के आयात में चौगुनी बढ़ती हो गई है। अन्य देशों से भी कपड़े के आयात में बराबर कमी हो रही है।

* * *

(१०व पृष्ठ का शेषांश)

ख़्याल से हम इस प्रथा का घोर विरोध करते हैं। भारतीय सम्पादकों के सिर पर फिर ऑर्डिनेन्स की तलवार लटकाई गई है। इस सम्बन्ध में हम वाइसराय महोदय का ध्यान लाहौर हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस श्रीयुत सर शादीलाल के उस फ़ैसले की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, जो कि उन्होंने "हिन्दुस्तान टाइम्स" की ज़ब्त की हुई ज़मानत के विषय में दिया था। उसके पढ़ने से उन्हें मालूम हो जावेगा कि अधिकारियों के हाथ में अनियमित अधिकार दे देने से क्या नुक़सान होता है। यह आशा की जाती थी, कि चूँकि लन्दन में गोलमेज़ परिषद हो रही है और यह कहा जा रहा है, कि राष्ट्रीय आन्दोलन कमज़ोर होता जा रहा है, भारत की सरकार अब साधारण क़ानूनों द्वारा शासन चलाने का प्रयत्न करेगी और इन ऑर्डिनेन्सों को हटा लेगी। पर सरकार के इस नवीन कार्य से यह साफ़ प्रतीत होता है, कि दमन-नीति में अभी किसी तरह से फ़र्क़ न किया जावेगा। क्या यह इसलिए किया जा रहा है, कि गोलमेज़ परिषद द्वारा भारत की राजनैतिक दशा में कुछ परिवर्तन होने की आशा नहीं है?

—"लीडर" (अङ्गरेज़ी)

* * *

'यह जेल पृथ्वी पर नर्क के समान है'

राजनैतिक क़ैदियों के लिए पशुओं का सा भोजन

डॉ० किचलू तथा अन्य क़ैदियों द्वारा भयङ्कर भण्डाफोड़

घास तथा पत्तियों की तरकारी :: स्वयं सरकारी डॉक्टर ने जेल की निन्दा की

डॉक्टर किचलू के लिए पाख़ाना रसोई-घर बनाया गया !

वे जेल में भी चौबीसों घण्टे कड़े पहरे में रक्खे जाते हैं

पाठकों को विदित होगा कि साङ्गला हिल, ज़िला शेख़ूपुरा के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता कॉमरेड ज्ञानचन्द १०८वीं धारा के अनुसार, रावलपिण्डी जेल में रक्खे गए थे। विगत ९ वीं दिसम्बर से अनशन करने के कारण उनका जेल-क़ानून की १४२ वीं धारा के अनुसार चालान किया गया था।

गत १५ वीं दिसम्बर को उनके मामले की कार्यवाही जेल ही में प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट भाई हरदयाल सिंह की अदालत में की गई थी। अभियुक्त की ओर से लाला गोकुलचन्द वकील थे। अदालत को यह सूचना दी गई, कि अभियुक्त बहुत निर्बल है। उसे चारपाई पर ले जाने की कोशिश की जा रही है। अदालत का कार्यक्रम तीन बजे से शुरू हुआ।

जेल का भोजन

चौधरी बिशनदास भाटिया, जो रावलपिण्डी के महाशय आशानन्द के मामले में, गवाह के रूप में अटक जेल से १२वीं दिसम्बर को लाए गए थे, कॉमरेड ज्ञानचन्द के मामले में भी गवाही देने के लिए रोक लिए गए थे। उन्होंने कहा कि वे रावलपिण्डी जेल में ५ महीने क़ैद रह चुके हैं। ८ वीं सितम्बर को उनकी बदली अटक जेल कर दी गई। पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के आपत्ति करने पर अदालत ने पहले के जेल के भोजन के विषय में कुछ सुनने से इनकार कर दिया। कहा गया कि इस विषय में, कि चौधरी महाशय को पहले यहाँ अच्छा भोजन दिया जाता था या ख़राब, अदालत इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती। उनके समय में किसी ने अनशन किया था या नहीं? अथवा उनके समय में इस जेल का भोजन मनुष्य के खाने लायक़ था या नहीं? आदि० प्रश्न का भी इसी आधार पर उत्तर नहीं दिया गया।

गवाह ने कहा कि उसे इस बार (१२-१२-३०) इस जेल में रहने के पिछले तीन दिनों में ऐसा ख़राब भोजन मिला था, जो मनुष्य के खाने योग्य न था। इस बार जब से वह यहाँ है, उसे ऐसा शाक मिलता रहा है, जो मनुष्य के खाने के सर्वथा अयोग्य है।

क़ैदियों को जो रोटियाँ दी जाती हैं, वे प्रायः बासी और कच्ची रहती हैं। जेल के अधिकारियों के पास लिख कर कोई शिकायत करना सम्भव नहीं है, क्योंकि क़ैदियों को लिखने के साधन नहीं दिए जाते। उन्होंने जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट से ख़राब भोजन के विषय में शिकायत भी की थी। पिछले तीन दिनों से ऐसा शाक जेल में तैयार किया जाता रहा है, जिसमें यह भी पता नहीं चलता कि उसमें कौन-कौन सी चीज़ें हैं।

कैनेडा वाले श्रीयुत शेरसिंह, जिनकी उम्र ५० साल की है और जो आजकल रावलपिण्डी जेल में क़ैद हैं, गवाह के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि अभियुक्त १२ दिन पहले उनके बैरक में रक्खा गया था। मुझे 'सी' श्रेणी का भोजन दिया जाता है। रोटियाँ अच्छी नहीं मिलतीं; वे प्रायः ठण्डी रहती हैं। तरकारी ऐसी मालूम पड़ती है, जैसे घास के पत्तों की हो। जिस दिन सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब आने वाले थे, उस दिन शायद गोभी की तरकारी दी गई थी। और साधारणतः प्रायः मूली और शलजम आदि के पत्तों का शाक बनता रहा है। मैंने कई बार जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट से ख़राब भोजन के विषय में शिकायत की है। गवाह ने फिर कहा कि अभियुक्त ने मेरे बैरेक में आने के ४ दिन बाद अनशन प्रारम्भ किया। अभियुक्त ने मुझसे अनशन शुरू करने के पहले कहा था, कि उसने सुपरिण्टेण्डेण्ट से ख़राब भोजन के विषय में शिकायत की है। प्रायः प्रत्येक सोमवार को सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब आते हैं, उनके सामने परेड की जाती है। पूछने पर गवाह ने कहा कि उसने रावलपिण्डी जेल में कभी अनशन नहीं किया। उसे आजन्म कालेपानी की सज़ा हुई थी।

डॉक्टर किचलू की गवाही

डॉक्टर किचलू अन्तिम गवाह थे। उन्होंने कहा कि वे क़रीब पाँच महीने से रावलपिण्डी जेल में थे। इस बीच में अनेक राजनैतिक क़ैदी वहाँ आए हैं।

उन्होंने कहा कि 'सी' श्रेणी के अनेक क़ैदी उनसे ख़राब भोजन की शिकायत किया करते थे। शिकायत यह थी, कि आटे में बालू मिला दिया जाता है और शाक भी इतना ख़राब दिया जाता है, जो मनुष्य के खाने योग्य नहीं होता। पहले भी उनके पास ऐसी शिकायतें आया करती थीं, और जब वे स्वयं 'सी' श्रेणी का भोजन खाते थे, तब उन्हें भी इन बातों का अनुभव होता था। उन्होंने स्वयं ख़राब भोजन के कारण, एक बार अनशन किया था। कुछ अन्य क़ैदियों ने भी उनका साथ दिया था। यद्यपि उनके लिए अलग रसोई-पानी का बन्दोबस्त किया गया था, तो भी अन्य क़ैदी बराबर भोजन के विषय में शिकायत किया करते थे।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के प्रश्न करने पर उन्होंने कहा कि १२वीं, १३वीं और १४वीं अप्रैल के भाषण के सम्बन्ध में वे गिरफ़्तार किए गए थे। वे 'ए' श्रेणी के क़ैदी हैं, और यूरोपियन वार्ड में रक्खे गए हैं। दो-तीन महीने से उनके लिए अलग भोजन का प्रबन्ध किया गया है। जेल से उन्हें आटा और तरकारी मिलती है। उन्होंने भोजन के विषय में जेल के अधिकारियों से कभी शिकायत नहीं की, क्योंकि वे असहयोगी हैं। अनेक क़ैदी, जो भोजन के विषय में शिकायत किया करते थे, इस समय दूसरे जेलों में भेज दिए गए हैं। उनमें से एक सर्दार दरबार सिंह, अब भी जेल में मौजूद हैं। रावलपिण्डी के बख़्शी अवनाशी राम ने भी उनसे भोजन के बारे में शिकायत की थी। इन दो-तीन महीनों से जब से उनके अलग भोजन का प्रबन्ध किया गया है, कोई 'सी' श्रेणी का क़ैदी उन्हें अपना भोजन नहीं दिखा पाता। क्योंकि वे (डॉक्टर किचलू) २४ घण्टे कड़े पहरे के अन्दर रक्खे जाते हैं, और इस कारण, कोई उनके पास नहीं जा सकता। किन्तु वे क़ैदी, जिन्हें उनके काम करने की आज्ञा मिली थी, उन्हें अपना भोजन दिखाते थे। उन्होंने उनके भोजन को ऐसा ख़राब पाया, जो मनुष्य के खाने योग्य नहीं था। अधिकांश वस्तुएँ सड़ी हुई थीं। पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि एक पाख़ाना-घर ही उनके लिए रसोई-घर बना दिया गया है। यह उनकी आँखों देखी बात है। उसमें कुछ परिवर्त्तन नहीं किया गया है, केवल चूना फेर दिया गया है।

अदालत की कार्यवाही ख़तम होने पर, मैजिस्ट्रेट की सम्मति से डॉ० किचलू ने अभियुक्त को अपना अनशन तोड़ने की सलाह दी। जेल के डॉक्टर ने भी इस बात पर ज़ोर दिया। डॉक्टर ने जेल की शिकायत करते हुए कहा कि "मैंने ऐसा सड़ा हुआ जेल और कहीं नहीं देखा! सचमुच यह पृथ्वी पर नरक के समान है।" अभियुक्त ने कहा कि अटक जेल से लाते समय उसके पैरों में और हाथों में बेड़ियाँ डाल दी गई थीं, जिसके फल-स्वरूप उसके वे अङ्ग छिल गए थे; पर मरहम-पट्टी का भी कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था। हाँ, अनशन आरम्भ करने पर मरहम-पट्टी कर दी गई। बहुत कहने-सुनने पर अभियुक्त ने अनशन तोड़ना स्वीकार किया। उसे दूध दिया गया है।

* * *

गोलमेज़ परिषद भारतीयों को फँसाने का व्यूह मात्र है!

कॉन्फ़्रेन्स की सफलता की एक शक्ति 'छोटे से आदमी' के साथ यरवदा जेल में बन्द है

एक अमेरिकन पत्र की कॉन्फ़्रेन्स के सम्बन्ध में निष्पक्ष सम्मति

"परन्तु समस्त भारतीय और ब्रिटिश प्रतिनिधि यह अच्छी तरह जानते हैं, कि भारतीय समस्या कॉन्फ़्रेन्स के वाद-विवाद से हल नहीं हो सकती। उसकी सफलता तो गाँधी और कॉङ्ग्रेस पार्टी की इच्छा पर निर्भर है।........गोलमेज़-परिषद के व्यूह की रचना का प्रधान उद्देश्य यह है, कि मज़दूर-गवर्नमेण्ट के अतिरिक्त इङ्गलैण्ड की शासक जाति उन भारतीय नेताओं की मनोवृत्ति और उनके चरित्र का अध्ययन और मनन कर सके, जिनका ब्रिटिश शासन से ख़ासा सम्बन्ध है और जो बाद में ब्रिटेन का भारतीय शासन, वह चाहे जिस रूप में हो, सफल बनाने का प्रयत्न कर सकें। उसका एक दूसरा उद्देश्य ऐसी माँगें पेश करवाना भी है, जो ब्रिटेन का शिकञ्जा दृढ़ रख सकें।"

गोलमेज़ परिषद के सम्बन्ध में अमेरिका के क्या विचार हैं, यह जानने के लिए पाठक अवश्य उत्सुक होंगे। न्यूयार्क (अमेरिका) से प्रकाशित होने वाले सुप्रसिद्ध 'नेशन' नामक पत्र में हाल ही में एक लेख प्रकाशित हुआ है, जो इस सम्बन्ध में बहुत प्रकाश डालता है। नीचे हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ उसी का भावानुवाद देते हैं:—

"लन्दन में गोलमेज़ परिषद के प्रारम्भ होते ही भारत की समस्या एक बार फिर भयङ्कर रूप धारण कर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के सम्मुख उपस्थित हो गई है। भारत में गवर्नमेण्ट की काली करतूतों, ब्रिटिश अख़बारों में भारत के सम्बन्ध में वादविवाद और उनकी सम्मतियाँ और इस सम्बन्ध में पास हुए 'ब्रिटिश मज़दूर पार्टी' के प्रस्तावों से यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि संग्राम को और भी भीषण बनाए बिना ब्रिटिश गवर्नमेण्ट गाँधी और कॉङ्ग्रेस की माँगों के सम्मुख नत-मस्तक न होगी।

"गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के भारतीय प्रतिनिधियों में से कुछ—उदाहरणार्थ ज़मींदार, केवल अपने स्वार्थों की रक्षा का प्रयत्न कर रहे हैं; अन्य मित्रता अथवा अपनी निर्बलता के कारण ब्रिटेन की हाँ में हाँ मिलाया करते हैं। जिन्ना के विचारों के कुछ व्यक्ति सोचा करते हैं, कि वे ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से कुछ निश्चित सुधार अवश्य ले लेंगे और कुछ सोचते हैं, कि ब्रिटेन से एक और अपील करने से समस्या हल हो जायगी। वे निर्बल और असङ्गठित हैं, क्योंकि उनके पास कॉन्फ़्रेन्स में ब्रिटिश लोगों के सम्मुख रखने के लिए कोई निश्चित-माँगें नहीं हैं और न उसके पास कोई ऐसा कार्यक्रम है, जिसका कॉन्फ़्रेन्स असफल होने पर वे अनुगमन कर सकें।

सार्वभौम—गाँधी

"परन्तु भारतीय और ब्रिटिश दोनों ओर के प्रतिनिधि यह अच्छी तरह जानते हैं, कि भारतीय समस्या को हल करने की शक्ति परिषद में ज़ोरदार भाषण देने और तर्क-वितर्क करने में नहीं, परन्तु गाँधी और कॉङ्ग्रेस की इच्छाओं में है। भारतीय प्रतिनिधियों की माँगें काफ़ी ऊँची हैं, परन्तु गाँधी और उनके दल की माँगें उनसे कहीं ऊँची हैं और साथ ही उनकी पूर्ति के लिए वे संग्राम कर रहे हैं। भारतीय प्रतिनिधि अपने वाक्-व्यापार से जो कुछ भी सुधार लेंगे, उसका श्रेय भी उन्हें नहीं, वरन् यरवदा जेल में बन्द उस 'छोटे से' आदमी को रहेगा। भारतीय प्रतिनिधियों की ब्रिटेन को सब से ज़बरदस्त धमकी, जिससे वे डरते हैं, यह हो सकती है, कि "यदि आप हमें हमारी माँगों के अनुसार सुधार न देंगे, तो हम गाँधी के दल में सम्मिलित हो जायँगे।" मुसलमान भी ब्रिटेन को यह धमकी दे सकते हैं कि वे ईजिप्ट, पैलेसटाइन, ईराक़, पर्शिया और अफ़ग़ानिस्तान में अपने धर्म भाइयों को भड़का कर उसे आफ़त में डाल देंगे। परन्तु ब्रिटेन ऐसी गीदड़-धमकियों से डरने वाला नहीं है।

लिबरल-दल

"'मैनचेस्टर गार्जियन' ने अपने १९वीं सितम्बर के अङ्क में श्री० श्रीनिवास शास्त्री का वह भाषण प्रकाशित किया था, जो उन्होंने भारतीय परिस्थिति के सम्बन्ध में मैनचेस्टर क्लब में दिया था। उसमें उन्होंने इस बात की ओर सङ्केत किया था, कि भारतीय लिबरल, यद्यपि उसमें उन्हें आपत्ति होगी, तो भी वे फ़ौज ब्रिटेन के अधीन रखने के लिए तैयार हो जायँगे। गोलमेज़ की कार्यवाही के उपरान्त पार्लामेण्ट भारत के लिए जो नया शासन-विधान तैयार करेगी, उसके सम्बन्ध में उन्होंने कहा था, कि यदि उस नए शासन-विधान में भारतीयों को अन्य उपनिवेशों की नाईं बराबरी के अधिकार दे दिए जायँगे, तभी वे भावी भारत के सम्मुख उज्ज्वल मुख लेकर उपस्थित हो सकेंगे और उन ब्रिटिश लोगों की ओर भी हम अभिमान और आदर की दृष्टि से देखेंगे, जिनसे हमें वे अधिकार प्राप्त होंगे।

क्रान्ति की लहर

गोलमेज़ का व्यूह

"गोलमेज़ परिषद के व्यूह की रचना का प्रधान उद्देश्य यह है कि मज़दूर-गवर्नमेण्ट के अतिरिक्त इङ्गलैण्ड की शासक जाति, उन भारतीय नेताओं की मनोवृत्ति और उनके चरित्र का अध्ययन और मनन कर सकें, जिनका ब्रिटिश शासन से ख़ासा सम्बन्ध है और जो बाद में ब्रिटेन का, भारतीय शासन, वह चाहे जिस रूप में हो, सफल बनाने का प्रयत्न कर सकें। उसका एक दूसरा उद्देश्य ऐसी माँगें पेश करवाना भी है, जो ब्रिटेन का शिकञ्जा दृढ़ रख सकें। परन्तु कॉन्फ़्रेन्स के भारतीय प्रतिनिधियों ने पत्रों में जो विज्ञप्तियाँ प्रकाशित की हैं, उनसे शायद कॉन्फ़्रेन्स का उपर्युक्त उद्देश्य सिद्ध न हो सके और उसके विपरीत ब्रिटेन की शासक जाति यह अनुभव करने लगेगी, कि भारत की हर एक जाति के और दल के अन्दर स्वतन्त्रता की लगन कितनी गहरी घुस गई है।

"कॉन्फ़्रेन्स में कोई निश्चित समझौता होने की कोई आशा नहीं है। कॉङ्ग्रेस पार्टी की जो माँगें हैं, गवर्नमेण्ट उन्हें कभी पूरी न करेगी और न वह उन्हें, अपने स्वार्थ की दृष्टि से पूरी कर ही सकती है। यदि वह उन माँगों को मान ले, तो दूसरे ही दिन भारत से उसका अस्तित्व उठ जाय। तिस पर भी भारत की माँगें उससे कम नहीं हो सकतीं। यदि भारतीय प्रतिनिधि समझौता करने के लिए केवल वे ही अधिकार स्वीकार कर लें, जो ब्रिटिश गवर्नमेण्ट आसानी से दे सकती है तो क्या भारतीय उनके इस समझौते को स्वीकार कर लेंगे? यदि दूसरी ओर वे ख़ाली हाथ लौट आवें तो उससे कॉङ्ग्रेस का आन्दोलन और भी प्रचण्ड रूप धारण कर लेगा।

"कॉन्फ़्रेन्स चाहे सफल हो या असफल, भारतीय स्वतन्त्रता का युद्ध जारी है। 'एसोसिएटेड प्रेस' का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि बारदोली के ८० हज़ार किसान लगान देने की अपेक्षा, अपने घरों को छोड़ कर जङ्गल में चले गए हैं और यद्यपि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारत की सच्ची ख़बरों को छिपाने का जी-तोड़ प्रयत्न करती है, तो भी यह स्पष्ट हो गया है कि स्वतन्त्रता का सच्चा युद्ध प्रारम्भ हो गया है और यह युद्ध इङ्गलैण्ड में नहीं, भारत में छिड़ा हुआ है।"

* * *

भारत के 'सबसे बड़े मित्र' का प्रलाप

"पेशावर का विशाल क़िला कई दिनों तक विद्रोहियों के क़ब्ज़े में रह चुका है !"

"अङ्गरेज़ी-झण्डा लातों से कुचला जा रहा है"

क़ाज़ी जी दुबले क्यों ? शहर के अन्देशे से !!

"यदि भारत हमारे क़ब्ज़े से निकल गया, तो हमारा सारा साम्राज्य मिट्टी में मिल जायगा"

लॉर्ड इरविन की गत नवम्बर की घोषणा के सम्बन्ध में लॉर्ड रॉथरमियर ने, जो अपने को भारत का "सब से बड़ा मित्र" समझते हैं, लन्दन के सुप्रसिद्ध पत्र "डेली मेल" में यह लेख हाल ही में प्रकाशित कराया था। पाठकों को ज्ञात होगा, कि ये भारतीय स्वराज्य आन्दोलन के बड़े कट्टर दुश्मन हैं। इस लेख में वे साम्राज्य में भारत का कितना महत्वपूर्ण स्थान है, यह बताते हैं !

"मैं जानता हूँ कि अनेक लोग इस मत के हैं, कि हम लोगों को भारत से अपना क़ब्ज़ा हटा लेना चाहिए। वे कहते हैं कि भारत-निवासी अपना राज्य-प्रबन्ध हम लोगों से कहीं अच्छा कर सकेंगे। पर हम लोगों के भारत छोड़ने पर वहाँ जो मार-काट तथा अराजकता फैलेगी, उसका ध्यान करके हम लोग कभी भी इस दुर्विचार को कार्य-रूप नहीं दे सकते।

"ये मेरे शब्द नहीं हैं, गोकि मैं इनकी सच्चाई में पूर्णतया विश्वास करता हूँ ! इन शब्दों का कहने वाला जॉन मॉर्ले था। आज से २३ साल पहिले हाउस ऑफ़ कॉमन्स में उसने अपने वक्तव्य में ये शब्द कहे थे। वह प्रजातन्त्र का बड़ा भक्त था, वह साम्राज्यवादी लूट का सब से बड़ा विरोधी था। वह किसी विशेष रङ्ग या जाति का पक्षपाती भी नहीं था। वह मनुष्य-जाति मात्र की भलाई का ख़्याल रखता था। इसके अतिरिक्त उसे भारत की असली हालत हम लोगों से कहीं ज़्यादा मालूम थी। वह उस समय भारत का राज-मन्त्री था।

"यदि इस समय मॉर्ले के समान लोग भारत का राज्यकार्य चलाते होते, तो हमारा भारत का साम्राज्य इस तरह राजविद्रोह न करता। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि मामूली बातों से विचलित न होती थी; वह हमारे आजकल के मज़दूर-दल तथा अन्य दल वाले नेताओं की तरह इतनी जल्दी भारतवासियों को अधिकार देने के लिए राज़ी न हो जाता। आज २५० वर्ष से इङ्गलैण्ड भारतवर्ष में सुख व शान्ति का राज्य स्थापित करने का तथा भारतवासियों को सभ्य बनाने का कार्य कर रहा है। मॉर्ले इसी नीति का धैर्य तथा साहस के साथ अनुकरण करता रहा। वह यह जानता था, कि यदि हम लोग राज्यकार्य का भार हिन्दुस्तानियों पर छोड़ देंगे, तो भारत में मार-काट मच जायगी।

"जॉन मॉर्ले ने एक समय पर कहा था—'यदि हम अपने उद्देश्य से हट जावें तो सारा सभ्य संसार हमें क्या कहेगा ? जब हम भारतवासियों के दुःख, पीड़ा व मार-काट का हाल सुनेंगे, तब हमारी आत्मा हमसे क्या कहेगी ?' मैं अपने देशवासियों से प्रार्थना करता हूँ, कि वे इन उच्च विचारों पर अवश्य ध्यान दें।

"आजकल हमारे पास भारतवर्ष से हर घड़ी बड़े भयानक समाचार आ रहे हैं। अङ्गरेज़ी सैनिकों की हत्या हो रही है, राजभक्त मुस्लिम पुलिस मारी-पीटी जा रही है, औरतें और बच्चे क़िलों में आश्रय लेने के लिए भाग रहे हैं। पेशावर का विशाल क़िला कई दिनों तक विद्रोहियों के क़ब्ज़े में रह चुका है ! उपद्रवी नेता कई हफ़्तों तक जङ्गली अफ़ग़ानी जातियों को सीमा-प्रान्त पर धावा करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे हैं। क़ानून खुले-आम तोड़ा जा रहा है, अङ्गरेज़ी झण्डा लातों से कुचला जा रहा है। वाइसराय की ट्रेन के नीचे बम लगाया जा रहा है। कई बम इत्यादि के कारख़ाने ढूँढ निकाले जा रहे हैं और कई नए तैयार होते जा रहे हैं ! सिक्ख, जिस जाति से हमारी अधिकतर हिन्दुस्तानी फ़ौजें ली जाती हैं, गाँधी के नए आन्दोलन में बड़े उत्साह से भाग ले रहे हैं। ये सब केवल कल्पना नहीं, वरन् सच्ची घटनाएँ हैं, जो केवल भारत-निवासी ब्रिटिश प्रजा के लिए नहीं, वरन् इङ्गलैण्ड-निवासियों के लिए भी बहुत ख़तरनाक हैं ! हम लोगों ने अपने पूर्वजों से इस साम्राज़्य को इतनी सुदृढ़ दशा में पाया कि हम समझते थे, बिना प्रयत्न के हम उसी सुदृढ़ अवस्था में इसे रख सकेंगे; पर हम लोगों को ध्यान रखना चाहिए कि यदि हम अपनी इस सम्पत्ति का ठीक तरह से प्रबन्ध नहीं करेंगे, तो शीघ्र ही वह हमारे हाथों से निकल जावेगी।

"सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य को जोड़ कर रखने के लिए भारत एक अपूर्व शक्ति है। यदि हमने भारत को खो दिया, तो हमारा सारा साम्राज्य मिट्टी में मिल जायगा, टुकड़े-टुकड़े हो जायगा !

"पहिले हमारा आर्थिक पतन होगा, फिर राजनैतिक पतन ! जब से द्वितीय चार्ल्स को अपने विवाह में बम्बई दहेज में मिला है, उसी समय से हमारे विदेशी साम्राज्य की नींव पड़ी है। भारत के बिना हम सिङ्गापूर तथा मलाया को किस तरह से अपने वश में कर सकते थे ? बिना इसके हम न्यूज़ीलैण्ड तथा ऑस्ट्रेलिया में अपना साम्राज्य कैसे स्थापित कर सकते ? इसके बिना हम चीन में इतना लाभदायक व्यापार कैसे स्थापित कर सकते ? फिर हम स्वतः ही अपने पैरों में कुल्हाड़ी क्यों मार रहे हैं ? स्वतः ही भारत से अपना क़ब्ज़ा हटा कर ब्रिटिश साम्राज्य का नाश क्यों कर रहे हैं ???

"लॉर्ड इरविन ने अपनी नवीन घोषणा में भारतवर्ष को औपनिवेशिक स्वराज्य देने का वचन दिया है। यह वचन कभी नहीं दिया जाना चाहिए। सन्धि दोनों दलों के मेल से हो सकती है। जब भारत के विद्रोही नेता हमसे सब सम्बन्ध काटने पर उतारू हैं, तब हम उनकी माँग क्यों पूरी करें। औपनिवेशिक स्वराज्य देकर हम अपने शत्रुओं की शक्ति को क्यों बढ़ावें ?

"औपनिवेशिक स्वराज्य दे देने से तो हम सारा अधिकार भारतवासियों को सौंप बैठेंगे। इस अधिकार से उपनिवेश अपनी फ़ौज रख सकता है, स्वतः दूसरे राष्ट्रों से सन्धि कर सकता है और जब चाहे इङ्गलैण्ड से अपना सम्बन्ध तोड़ सकता है और भारतीय विद्रोही यही सब बातें चाहते हैं। हम ये सब अधिकार उन्हें क्यों दें ?

"हमने जो सन् १९१९ में अधिकार दिए थे, वही हमारी बड़ी भारी भूल थी। ये अधिकार हम लोगों ने अमृतसर की कॉङ्ग्रेस को ख़ुश करने के लिए दिए थे। इन अधिकारों के साथ हज़ारों हत्यारे और लुटेरे भी जेल से रिहा किए गए थे। पर इसका कुछ भी असर न हुआ। इतना सब करने पर भी वहाँ इकट्ठे हुए भारतीय विद्रोहियों ने लॉर्ड चेम्सफ़र्ड को वापस बुलाने का प्रस्ताव पास किया। यह वही वाइसराय था, जिसने अपनी मूर्खता से भारतीयों को इतने ज़्यादा अधिकार सौंप दिए थे। पर हम लोग उस वक़्त गत युद्ध के सन्धि-कार्यों में लगे हुए थे, इससे इस पर पूर्णतः ध्यान ही न दे पाए थे।

"पर ये अधिकार तो केवल अनुभव प्राप्त करने के लिए दिए गए थे। यह साफ़ लिख दिया गया था, कि १० साल बाद इनका निरीक्षण एक नए कमीशन द्वारा किया जावेगा। वह कमीशन सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में भारत का निरीक्षण करके अब अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करने वाला है।

"उस कमीशन के सदस्यों ने भारत में क्या-क्या देखा, यह अब सब लोग जानते हैं। उनका तिरस्कार अवश्य किया गया, पर इससे हमसे कुछ सम्बन्ध नहीं। हमसे तो एक बात से मतलब है, वह यह कि उन्हें यह देखने का पूरा मौक़ा मिला, कि राज्य का प्रबन्ध भारतीयों के हाथ में सौंपने से उसमें हज़ारों तरह की बुराइयाँ पैदा हो गई हैं।

"भारत का प्रबन्ध भारतीयों के हाथ में दे दिया जावे, यह सिद्धान्त चाहे हमारे देश के वासियों को

कतना ही प्रिय क्यों न हो, पर इस सिद्धान्त को कार्य-रूप देने के पहले, उन्हें भारत की जनता की भलाई का ख़्याल रखना चाहिए ! जो मूर्खता से इस सिद्धान्त के अनुयायी हो जाते हैं, उन्हें चाहिए कि वे अधिक बुद्धिमत्ता से काम लें। भारत के बत्तीस करोड़ किसान, मज़दूर तथा व्यापारियों के लिए ब्रिटिश शासकों ने निर्पक्ष न्याय देने की, शान्ति स्थापित करने की तथा शारीरिक सुधार करने की संस्थाएँ क़ायम की हैं। इनमें से हर एक संस्था का सुचारु रूप से चलाना इनकी भलाई के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यह कार्य केवल अङ्गरेज़ ही कर सकते हैं।

"कभी आपने यह भी सुना था, कि फ़्रेञ्च या डच लोग भी अपने भारतीय साम्राज्य को भारतीयों के हाथ में सौंप रहे हैं ? और क्या यह सच नहीं है कि गए दस सालों से, जब से कि हमने भारतीयों को अधिकार देना आरम्भ किया है, भारत का आन्दोलन बढ़ता ही चला जा रहा है। पर एशिया के फ़्रेञ्च तथा डच साम्राज्यों में बिलकुल शान्ति है।

"हम लोगों के लिए तथा भारतीयों की भलाई के लिए, यह आवश्यक है, कि जो कुछ अधिकार आज तक हम लोगों ने उन्हें दिए हैं, वे भी वापस ले लिए जावें और भारत में युद्ध के पूर्व वाली शासन-प्रथा पुनः स्थापित की जावे।

"भारत, जिसमें कि अनेक जातियाँ और भिन्न-भिन्न धर्म के अनुयायी निवास करते हैं, किसी तरह भी एक नहीं हो सकता। जब एक धर्म के अनुयायी यूरोप को एक करना असम्भव हो रहा है, तब भारत के हिन्दू नेताओं ने न जाने कैसे हमारे कुछ मूर्ख शासकों को यह विश्वास दिला दिया है, कि भारत एक हो सकता है ! और हम इस भिन्नतापूर्ण राष्ट्र को चला सकते हैं !!

"अपने साहस तथा स्वार्थ-त्याग द्वारा हम लोगों ने भारत की विरोधी जातियों में शान्ति रक्खी है। हम लोगों ने न्याय से, दया-भाव से तथा अपूर्व बुद्धिमत्ता से भारत का शासन किया है। यदि संसार ब्रिटिश जाति के और सब कारनामे भूल जाय, तब भी ब्रिटिशों का भारतीय शासन, संसार के इतिहास में उनका नाम क़ायम रख सकता है। क्या यह ठीक होगा, कि कुछ मूर्ख भारतीयों की बक-बक से डर कर हम लोग इन सब अपूर्व कार्यों को अधूरा छोड़ दें ?

"सर रेजिनॉल्ड क्रेडक, जो कि भारत में ४० वर्ष रह आए हैं, अपनी पुस्तक "दि डायलेमा इन इण्डिया" (भारत की कठिन समस्या) में लिखते हैं, कि यदि भारतीयों को औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया जावे, तो वे अपने देश की रक्षा ही नहीं कर सकेंगे। अफ़ग़ानी तथा सीमा प्रान्त की अन्य लड़ाकू और वीर जातियाँ भारत पर हमला करके, उसे क़ब्ज़े में करना चाहेंगी। पञ्जाब के सिक्ख पठानों से लड़ेंगे। देश का सारा व्यापार-उद्योग और लेन-देन, जिसकी नींव ब्रिटिश शासकों ने शान्ति स्थापित करके डाली है, एकदम गिर जायगा। भारत की रियासतें अपनी-अपनी सेना लेकर एक-दूसरे पर धावा करना आरम्भ कर देंगी, सारे देश में लूट-मार, हत्या, विनाश तथा उपद्रवियों का राज्य स्थापित हो जावेगा !!

"हमारे और उपनिवेशों की गोरी जातियाँ, जो हमारी सन्तान हैं, सदा प्रजातन्त्र की आदी रही हैं। पर भारत, जहाँ कि कभी भी प्रजातन्त्र रहा ही नहीं है, इतनी जल्दी पूर्ण अधिकार कैसे पा सकता है ? आग़ा ख़ाँ, जो कि भारत के नहीं, वरन सारे संसार के बहुत बड़े विद्वान तथा सभ्य पुरुषों में हैं, कहते हैं कि "अभी भारत को एक होने के लिए सैकड़ों वर्ष लगेंगे" और कई बड़े-बड़े विद्वान भी यही कहते हैं।

"और यह कौन कह रहा है कि भारतीयों को सारा राज्याधिकार दिया जावे ? गाँधी तथा उसके अनुयायी ? पर गाँधी स्वतः ही ब्रिटिश भारत का निवासी नहीं है। वह गुजरात की एक रियासत में पैदा हुआ था।

"क़रीब ४ लाख बाबुओं के अतिरिक्त, जो कि भारत की लूट में भाग लेना चाहते हैं, भारत का कोई भी निवासी यह नहीं चाहता, कि भारत में अङ्गरेज़ी राज्य का अन्त हो। गो कि भारत-सरकार की कमज़ोरी से भारतीय जनता को विश्वास हो चला है, कि अब अङ्गरेज़ लोग भारत से निकाले जाने वाले हैं।

"भारत के आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन कहना, बड़ी ही भूल है। कई लाख मुस्लिम तथा क्रिश्चियन जनता को निकाल देने के बाद भारत के ६ करोड़ निवासी अछूत हैं, जिन्हें हिन्दू लोग बिलकुल जानवरों की तरह रखते हैं। वे हिन्दू-राज्य के कट्टर विरोधी हैं। वे ग़रीब हैं और यदि हम सारे अधिकार भारतीय हिन्दुओं को दे देंगे, तो वे उन पर अत्यन्त अत्याचार करेंगे। इनकी रक्षा के लिए हमारा वहाँ रहना बहुत आवश्यक है।

"अङ्गरेज़ों का भारतीय व्यापार चाहे इस वक़्त ख़राब हो रहा हो, पर यदि हमने भारत में गाँधी-राज्य स्थापित कर दिया, तो उसका पूर्ण विनाश ही हो जावेगा। हम लोगों ने भारत में करोड़ों रुपए की पूँजी लगा रक्खी है। क़रीब २०० वर्ष से बड़े-बड़े अङ्गरेज़ी बैङ्क, जहाज़ी कम्पनियाँ तथा व्यापार की संस्थाएँ क़ायम हैं। हमारा भारतीय साम्राज्य अभी भी हमारे माल का सब से बड़ा ग्राहक है। इङ्गलैण्ड के सारे व्यापार का २० फ़ी सदी हिस्सा हमें भारत से मिलता है।

"राष्ट्रीय आन्दोलन से हमें नुक़सान अभी भी हो चुका है। युद्ध के पहिले भारत का ६० फ़ी सदी विदेशी माल इङ्गलैण्ड से आता था। पार साल वह केवल ४३ फ़ी सदी था और लङ्काशायर के कपड़े का व्यापार तो आधा हो गया है !

"भारत की लेजिस्लेटिव एसेम्बली ने क़ानून बनाया है, कि विदेशी पूँजीपतियों को कोई भी सरकारी सहायता नहीं मिलेगी। इङ्गलैण्ड से आने वाले कपड़े पर १५ फ़ी सदी का टैक्स लगाया जायगा। भारतीय राष्ट्रीय दल चाहता है, कि जहाज़ों का व्यापार तथा भारत का प्रबन्ध बिलकुल भारतीयों के हाथ में आ जावे।

"अङ्गरेज़ी व्यापार तथा कारख़ानों को भारत में बहुत नुक़सान पहुँचाया जा रहा है। क्या हमारे नेता तथा जनता ने इस पर भी ध्यान दिया है, कि बिना भारतीय व्यापार के हम लोग अपने देश की वर्तमान आर्थिक अवस्था को कदापि स्थिर नहीं रख सकते।

"भारतीय उपद्रवी चाहते हैं, कि भारत में हिन्दुओं की सत्ता स्थापित हो जावे, जिसमें दुष्टता तथा घूसख़ोरी का राज्य होगा ! इससे भारत में शान्ति नहीं, वरन अत्याचार, गृह-युद्ध, दासता, रोग, अकाल तथा विदेशी धावों की भरमार रहेगी !!

"इसलिए हम अपने कर्म-पथ से कभी नहीं हट सकते। हम इङ्गलैण्ड के शत्रुओं का साथ नहीं दे सकते। यदि हम यह सब करेंगे, तो अपनी कायरता दिखा कर सदा के लिए इङ्गलैण्ड का मुँह काला करेंगे।

"भारत से ब्रिटिश शासन किसी तरह भी नहीं हटाया जा सकता। हमारा धर्म है, कि हम लोग विद्रोहियों से बक-बक न करें, वरन अपने राज्यकार्य को ख़ूबी से तथा दृढ़ता से चलावें।"

* * *

गाँधी की आँधी ने संसार का व्यापार चौपट कर दिया

सत्याग्रह आन्दोलन का अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव

एक अमेरिकन अर्थशास्त्रज्ञ का निष्पक्ष एवं खरी सम्मति

'यूनाईटेड स्टेट्स चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स' की अन्तर्राष्ट्रीय कमिटी के सभापति, मि० सिलास एच० स्ट्रान ने फ़्रान्स में एक भाषण में कहा है कि "चीन के गृह-युद्ध, भारत के सत्याग्रह आन्दोलन और सोवियट गवर्नमेण्ट के असाधारण कार्यों के फल-स्वरूप ही आज संसार के व्यापार पर भयङ्कर आघात पहुँचा है।" 'शिकागो ट्रिब्यून' ने लिखा है, कि "श्री० स्ट्रान अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों के विशेषज्ञ हैं और उन्होंने अपनी दूरदर्शिता के कारण शिकागो की भयङ्कर आर्थिक परिस्थिति से रक्षा की है।"

चीन और भारत के सम्बन्ध में आपने लिखा है कि "चीन में गृह-युद्ध के कारण और भारत में विदेशी शासन के कारण ग़रीबी फैल गई है और आज वहाँ की जनता भूखों मर रही है। उसमें विदेशी माल ख़रीदने की शक्ति बिलकुल शेष नहीं रह गई। मेरी राय में, यदि इन देशों की राजनैतिक परिस्थिति सुधर जाय और उनमें शान्ति स्थापित हो जाय, तो वे हमारे देश के सब माल की खपत कर लेंगे और हमें वर्तमान व्यापारिक आपत्ति से मुक्त कर देंगे।

"रूस का विकराल काल भी हमारे सिर पर मँडरा रहा है। हमें इस बात का ज्ञान नहीं है, कि रूस की पञ्च-वर्षीय योजना को कितनी सफलता प्राप्त होगी; परन्तु वह हमारे बाज़ारों में गेहूँ, कच्चा माल और अन्य माल ठेल रहा है और वह किसी भाव पर यहाँ बेचने के लिए उत्सुक है। हम यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते, कि इसका परिणाम हमारे देश पर कितना भयङ्कर होगा। संसार के व्यापार पर रूस के इन कार्यों और भारत की वर्तमान आँधी का बड़ा ही घातक प्रभाव हुआ है।

"फ़्रान्स और अमेरिका में सोना बहुत बड़ी तादाद में इकट्ठा हो गया है, इससे भी हमारे रास्ते में कम कठिनाइयाँ नहीं आईं। इन दोनों देशों को सोना एकत्र करने का कुछ चाव नहीं है, परन्तु वे ऐसी गवर्नमेण्टों को ऋण में नहीं देना चाहते, जिनकी नींव कच्ची है। इन समस्याओं के साथ ही चुङ्गी का भी संसार के व्यापार पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। यदि संसार अपने व्यापार को सुरक्षित रखना चाहता है, तो हर देश को चुङ्गी की समस्या फिर से हल करनी होगी।"

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए।आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाद-दाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

८ जनवरी, सन् १६३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

बम्बई में स्वतन्त्रता-दिवस

गोलियों और लाठियों की निर्मम वर्षा

बम्बई का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की युद्ध-समिति ने 'स्वतन्त्रता-दिवस' मनाना निश्चय किया था। इस अवसर पर सभाओं को रोकने के लिए पुलिस और मिलिटरी का कड़ा पहरा नियत किया गया था। युद्ध-समिति के कार्यक्रम के अनुसार आधी रात के समय शहर के भिन्न-भिन्न भागों में २५ सभाएँ करने का विचार किया गया था। क़रीब १५० सिपाही चौपाटी पर, जहाँ एक वृहत् जन-साधारण सभा होने वाली थी, घेरा बना कर खड़े किए गए थे। इन सिपाहियों के अलावा २१० पुलिस के हथबन्द जवान भी तैनात रक्खे गए थे। शहर के भिन्न-भिन्न भागों में भी इसी प्रकार की तैयारियाँ की गई थीं। जब सभा होने का समय आया और भीड़ चौपाटी पर एकत्रित होने लगी, उस समय पुलिस ने लाठियों की मार से भीड़ को तितर-बितर कर दिया। शहर के भिन्न-भिन्न भागों में भी पुलिस ने जुलूसों को भङ्ग करने के लिए इसी प्रकार लाठियाँ चलाईं। कहा जाता है कि कुछ स्थानों में पुलिस ने छेड़-छाड़ नहीं की। ख़बर है, क़रीब ६० मनुष्य पुलिस की लाठियों से घायल हुए हैं, जिनमें १० की अवस्था विशेष चिन्ताजनक है।

क़रीब दो बजे रात में एक भीड़ उस स्थान पर इकट्ठी हो गई, जहाँ बाबू गेनू लॉरी से दबा था। कहा जाता है कि इस भीड़ ने पास ही खड़े पुलिस के एक दल पर पत्थर चलाया गया, जिसके फल-स्वरूप पुलिस ने फ़ायरें कीं। ख़बर है कि क़रीब ६ मनुष्य घायल हुए हैं।

१ली जनवरी का समाचार है कि शहर में इस समय शान्ति है। १७५ मनुष्य कॉङ्ग्रेस के अस्पताल में भर्ती हुए हैं, जिनमें ३३ की अवस्था चिन्ताजनक है। ७ मनुष्यों को गोली की चोट लगी है, जिनमें एक की अवस्था विशेष चिन्ताजनक है।

वहाँ के एक असाधारण गज़ट से विदित होता है कि मिलिटरी (फ़ौज) की संख्या वहाँ १ ली जनवरी से बढ़ा दी गई है।

अछूतों का सत्याग्रह

जलगाँव का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ जो वर्णाश्रम-धर्म परिषद् हो रही है, उसमें अछूतों को नहीं घुसने दिया जाता। अछूतों ने इसके विरोध में सत्याग्रह कर रक्खा है। परिषद् के अधिकारियों को लाचार होकर पुलिस की सहायता लेनी पड़ी है।

सरदार नर्बदाप्रसाद सिंह जेल से छूटे

स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के एक प्रधान कार्यकर्ता सरदार नर्बदाप्रसाद सिंह, ६ महीने की सज़ा भुगत कर १ ली जनवरी को छूट गए। आप 'ए' श्रेणी में रक्खे गए थे। कहा जाता है कि आप एक सप्ताह पहले ही छूटने वाले थे, किन्तु दूसरे जेलों में क़ैदियों के साथ दुर्व्यवहार के विरोध में आपने जो ३ दिनों तक अनशन किया था, उसीके कारण आप देर से छोड़े गए। आपका कहना है कि जेल में उनका वज़न क़रीब २३ पाउण्ड घट गया है !

* * *

[श्री० डॉक्टर धनीराम जी 'प्रेम' (लन्दन)]

"भाइयो, हमारे सामने यह जीवन-मरण का प्रश्न है।"

छोटी सी एक अँधेरी कोठरी में, मॉस्को नगर के एक निर्धन मुहल्ले में, एक छोटी सी पुरानी मेज़ के सामने खड़ा हुआ एक अधेड़ पुरुष अपने सामने बैठे हुए बीस युवकों को यह व्याख्यान दे रहा था।

यह सन् १९११ की बात है। रूस की प्रजा पर ज़ार के मनमाने अत्याचार हो रहे थे। प्रजा के निर्धन व्यक्ति, मज़दूर और कृषक अन्याय और पाशविक निर्दयता की चक्की में घुन की भाँति पीसे जा रहे थे। उस पाशविक निर्दयता का बदला लेने के लिए, उस अन्याय की भित्ति को समूल नष्ट करने के लिए, यह निहिलिस्टों का छोटा-सा, परन्तु क्रान्तिकारी समूह इस स्थान पर एकत्र हुआ था। उनके हृदय निर्धनों की दयनीय दशा से रक्त के आँसू रो रहे थे। वे रक्त के आँसू उनके नेत्रों को लाल बनाए हुए थे। उनके शरीर कृश थे, अत्याचारों ने उन्हें किसी काम का न छोड़ा था! उनके शरीरों पर फटे हुए वस्त्र थे; उन्हें अच्छे वस्त्र पहनने का अधिकार कहाँ था? उनकी आत्मा? परन्तु, वह सो नहीं रही थी। उस आत्मा में प्रतिक्रिया की ज्वाला भरी हुई थी, जो उनके सारे शरीर में स्फूर्ति पैदा कर रही थी। वे ध्यान से अपने नेता के शब्द सुन रहे थे।

"भाइयो, हमारे सामने यह जीवन-मरण का प्रश्न है," वह मेज़ पर हाथ मार कर बोला। युवकों के नेत्र फड़क उठे। उनके कन्धे ऊँचे उठ गए, उनके मुख तमतमा गए। हाँ, वह उनके लिए जीवन-मरण का प्रश्न था। युद्ध में वीर-गण जिस प्रकार अपनी तलवारें अपने सेनापति के शब्द पर, ऊँची उठा देते हैं, उसी प्रकार उन वीरों ने अपने हाथ ऊँचे उठा दिए, जिसका अर्थ था, कि वे अपने नेता के वाक्यों की गम्भीरता को समझते थे।

नेता बोला—रूस की ग़रीब प्रजा की दशा नरक-निवासियों की दशा से भी बुरी हो गई है। यदि सृष्टि में कहीं नरक है, तो मैं कह सकता हूँ, कि वहाँ के निवासियों पर भी इतने अत्याचार न होते होंगे, जितने हमारे देश-वासियों पर। हम पेट भर खा नहीं सकते, शरीर पर साधारण वस्त्र तक नहीं धारण कर सकते; हमारे बच्चे भूखे, नङ्गे, रोगी रह कर काल के गाल में चले जाते हैं; और यह सब किस लिए? कि हमारे पास उनके लिए दूध की एक बूँद तक नहीं है, कि उनके लिए औषधि ख़रीदने को हमारे पास पैसे नहीं हैं! कहाँ जाता है सारा अनाज, जिसे हम पैदा करते हैं? कहाँ जाता है सारा दुग्ध, जो हमारी गाएँ देती हैं? कहाँ जाता है सारा धन, जिसे हम अपना रक्त पानी करके कमाते हैं? मुट्ठी भर अत्याचारियों की जेबों में! वे आनन्द करते हैं, जबकि हम कीड़ों की भाँति मरते हैं!! उन्होंने हमारी जिह्वा पर ताला लगा दिया है, हम शिकायत तक नहीं कर सकते। उन्होंने हमारी आत्मा का हनन कर दिया है, हम साहस से उनके सम्मुख खड़े नहीं हो सकते। और यदि हममें से कोई साहस करता भी है, तो उसका फल क्या है? जेल, साइबीरिया का कालापानी; या फाँसी का तख़्ता! हम जीवित रहते हुए भी मृतकों से गए-बीते हैं। मनुष्य होते हुए भी पशुओं से भी अधिक हीनावस्था में हैं! हम अपने ही घर में बन्दी हैं! क्या हम इस दशा को सहन करते ही जाएँगे?

इस प्रश्न पर नेता चुप हो गया, परन्तु उसका उठा हुआ हाथ और स्थिर नेत्र इस प्रश्न को उन बीसों नवयुवकों के सामने दुहरा रहे थे। एक स्वर में, दृढ़ता के साथ, सब ज़ोर से चिल्ला उठे—नहीं!

नेता—क्या हमारी माताएँ और हमारे बच्चे अत्याचारियों द्वारा अब भी ठुकराए जाएँगे?

युवक—नहीं।

नेता—क्या तुम बदला लेने के लिए तैयार हो?

युवक—हाँ।

नेता—मार्ग विकट है। यह जीवन-मरण का प्रश्न है। तुम्हारे सामने कण्टकमय संसार है। वहाँ जेल, साइबीरिया, फाँसी, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। और उन सब विपत्तियों, उन सब बलिदानों का पुरस्कार क्या होगा? केवल यह विचार है, कि तुम अपने पीड़ित भाइयों के लिए कष्ट सहन कर रहे हो। क्या इस बलिदान के लिए, इस त्याग के लिए तैयार हो?

युवक—तैयार हैं।

नेता—यदि तुममें से कोई भयभीत है, तो अभी समय है कि इस कार्य को वह हाथ में न ले।" नेता चुप हो गया। वह युवकों की ओर देख रहा था और युवक एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। किसी ने मुख से शब्द न निकाला। नेता कुछ देर बाद बोला—"तो तुम सब यहाँ आकर इस बात की शपथ लो, कि तुममें से कोई धोखा न देगा।

एक-एक करके बीसों युवक नेता के सामने गए। उसने प्रत्येक के हाथ में एक पिस्तौल देकर शपथ ली। जब अन्तिम युवक का नम्बर आया, तो पिस्तौल पकड़ते समय उसका हाथ हिल गया। नेता ने यह देखा, उसने अपने हाथ से उस युवक का मस्तक ऊँचा करके कहा—निकोलाई!

निकोलाई—जी!

नेता—मेरे नेत्रों की ओर देखो!

युवक ने नेता की दृष्टि से दृष्टि मिलाई।

नेता—हाथ क्यों काँपा?

युवक—क्षणिक बात थी।

नेता—भयभीत हो?

युवक—नहीं।

नेता—प्रतिज्ञा करते हो, कि विपत्ति आने पर विचलित न होओगे?

युवक—प्रतिज्ञा करता हूँ।

नेता—ईश्वर तुम्हें बल दे!

२

सारे नगर में कोलाहल मच गया।

नाना प्रकार की किम्वदन्तियाँ उड़ने लगीं।

"षड्यन्त्र पकड़ा गया है।"

"अफ़सर की हत्या हो गई।"

"पाँच निहिलिस्ट एक अफ़सर की हत्या करते हुए पकड़े गए हैं।"

"अपराधियों का पता नहीं।"

जितने मुख थे, उतनी ही बातें थीं।

औल्गा ने सुना, कि उसका पति निकोलाई भी षड्यन्त्रकारियों के साथ गिरफ़्तार हो गया। उसने दुःख नहीं किया। जिस पड़ोसिन ने आकर यह समाचार दिया था, वह पूछने लगी—औल्गा तुम्हें दुःख नहीं है?

औल्गा—किस बात का?

पड़ोसिन—निकोलाई की गिरफ़्तारी का।

औल्गा—निकोलाई की गिरफ़्तारी का? दुःख? क्या वह चोरी करके गिरफ़्तार हुआ है? क्या उसने कोई पाप किया है? वह देश के लिए अपने दीन भाइयों के लिए पकड़ा गया है। इससे अधिक गर्व की क्या बात हो सकती है? देश बलिदान चाहता है, स्वतन्त्रता की देवी आहुतियाँ चाहती है। जो यह बलिदान चढ़ाते हुए पकड़ा गया है, उसकी स्त्री को दुःख होगा?

पड़ोसिन—तुम्हारा क्या होगा?

औल्गा—मेरा क्या होगा? इसकी मुझे क्या चिन्ता है, अभी कौन सा मुझे सुख है! जो ग़ुलामों की भाँति जीवन व्यतीत करते हैं, जिनके प्रत्येक पग पर जासूसों की दृष्टि रहती है, जिनके भाग्य में सदा जूतियाँ खाना ही लिखा है उनके लिए दुःख क्या और सुख क्या है? उनके लिए सौभाग्य क्या और वैधव्य क्या? जो आजकल दशा है, उससे और बुरी दशा क्या होगी?

पड़ोसिन—और यह एक वर्ष का बच्चा?

औल्गा—ग़ुलामों के बच्चों का क्या? वे भाग्य लेकर थोड़े ही पैदा होते हैं। समय उनका पालन करता है, न कि उनके माता-पिता! उनके माता-पिता जीवित हों, तब भी उनका पालन होता है, वे मर गए हों, तब भी उनका पालन होता है। वे परिस्थितियों की सन्तान हैं, परिस्थितियाँ ही उनकी ख़बर लेंगी!!

पड़ोसिन—तुम वीराणी हो, औल्गा!

पड़ोसिन चली गई। छोटा बच्चा एक ओर खिलौनों से खेल रहा था। वह रोने लगा। औल्गा ने उसे गोद में उठाया। उसके गालों पर आँसुओं की धारा बह रही थी। माँ ने मुख चूमते हुए कहा—रोता है पागल, आज तो हँसने का दिन है। तेरे पिता देश-वासियों की सेवा करते हुए गिरफ़्तार हुए हैं। तू कभी याद करेगा, कि तेरे पिता कौन थे? तू कभी इन बातों को समझेगा? शायद तू न याद रख सके, शायद तू न समझ सके। परन्तु लोग तेरी ओर देख कर कहेंगे—'यह निकोलाई का पुत्र है, जिसने प्राण देश के लिए निछावर कर दिए थे।'

बच्चे के आँसू सूख गए। उसका मुख खिल उठा। उसने मुसकराते हुए मुख खोला और सामने के छोटे-छोटे दाँतों के नीचे अपनी नन्हीं-नन्हीं उँगलियाँ दबा लीं। औल्गा ने उसे अपनी छाती में छिपा लिया।

* * *

दो दिन बाद।

जनता को फिर बातें करने की सामग्री प्राप्त हो गई।

चारों ओर लोग बातें करने लगे।

"आख़िर एक मुख़बिर निकल ही आया।"

"देश-द्रोहियों की कमी नहीं है।"

"निकोलाई से यह आशा नहीं थी।"

"कल उसकी गवाही होने वाली है। पूरे षड्यन्त्र का भण्डा फूट जायगा।"

"पचासों युवकों के जीवन-मरण का प्रश्न है। फाँसी या साइबेरिया।"

ओल्गा ने यह भी सुना। वह बाज़ार में निकल रही थी। कुछ उसकी ओर घृणा से देखते थे, कुछ उपेक्षा से देखते थे और कुछ सहानुभूति दिखाते थे। वह एक मुख़बिर की स्त्री थी!

एक पड़ोसिन मिली। कहने लगी—अब तो तुम्हें हर्ष होगा, ओल्गा।

ओल्गा—किस बात से?

पड़ोसिन—निकोलाई अब छूट जायगा।

ओल्गा—हर्ष? निकोलाई के छूटने का हर्ष?

पड़ोसिन—क्या, पति को फिर से पाकर तुम्हें हर्ष न होगा?

ओल्गा—पति? कैसा पति? किसका पति? मेरा पति था, अब कोई मेरा पति नहीं है। मेरा पति था; वह वीर था, देश-सेवी था। वह मर गया; मैं विधवा हूँ। यह मेरा पति है? कायर, देश-द्रोही, मुख़बिर—मेरा पति! जिसके कारण देश के तड़पते हुए निर्धन-स्त्रियाँ, पुरुष, बच्चे—गुरुतर बन्धनों में जकड़े जायँगे, वह मेरा पति? नहीं बहिन, मैं विधवा हूँ, मैं विधवा हूँ!

पड़ोसिन—क्या करोगी?

ओल्गा—क्या करूँगी? इन निर्धन, पददलित प्राणियों को बचाने का प्रयत्न करूँगी। उसे गवाही देने से रोकूँगी। देश को अत्याचारियों के पञ्जे से जो बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं, उन सैकड़ों नवयुवकों को मृत्यु के मुख में जाने से रोकूँगी।

पड़ोसिन—कर सकोगी?

ओल्गा—प्राण देकर भी।

पड़ोसिन—ओल्गा, तुम वीराणी हो।

पड़ोसिन चली गई। बच्चा खिलौनों से एक ओर खेल रहा था। ओल्गा ने उसे गोद में उठा लिया। उसके मुख पर मुस्कान की एक रेखा दौड़ गई। ओल्गा ने यह देखा। वह बच्चे की चिबुक ऊपर को करके बोली—हँसता है, अभागे? आज रोने का दिन है। तेरा पिता जेल से छूटने के लिए सब से बड़ा मूल्य दे रहा है—देश, धर्म, आत्मा, सबको इसलिए बेच रहा है कि रूसी अफ़सरों की जूतियों के पास बैठ कर दो टुकड़े खाने को प्राप्त कर सके। तू कभी याद करेगा कि तेरे पिता कौन थे? तू कभी इन बातों को समझेगा? शायद तू न याद रख सके, शायद तू न समझ सके। परन्तु लोग तेरी ओर देख कर कहेंगे—'यह निकोलाई का पुत्र है, वह निकोलाई जिसने सैकड़ों युवकों को फाँसी के तख़्ते पर भेज दिया था!' तेरा पिता देशद्रोही, मुख़बिर! ओह, मेरे लाल!

ओल्गा की आँखों से आँसू बहने लगे। बच्चा माँ की भाषा समझता है। उसकी आकृति पर जो मुस्कान थी, वह दूर हो गई। उसकी आँखों से भी आँसू बह रहे थे।

३

सारे शरीर को एक कपड़े से ढके हुए, बच्चे को गोद में लिए, एक स्त्री जेल के फाटक के पास आ खड़ी हुई। दरबान ने पास आकर तीव्रता से कहा—कौन है?

"एक स्त्री।"

"क्या नाम है?"

"ओल्गा।"

दरबान—यहाँ क्या कर रही है?

ओल्गा—मिलना चाहती हूँ।

दरबान—किससे?

ओल्गा—इस बच्चे के बाप से।

दरबान—कौन है वह?

ओल्गा—निकोलाई।

दरबान—निकोलाई? तुम उसकी स्त्री हो?

ओल्गा—मिलने की आज्ञा मिलेगी?

दरबान—मुश्किल है?

ओल्गा—एक मुख़बिर को उसके बच्चे से मिलने की भी मनाही है?

दरबान—सरकारी आज्ञा है।

ओल्गा—सरकारी आज्ञा क्या उल्लङ्घन नहीं होती?

दरबान—नहीं।

ओल्गा—मूर्ख! सरकार की रोटियाँ खाकर भी सरकार का नाश चाहता है? विद्रोहियों का दमन करने में जो सहायता मिल रही है, उसे ठुकरा कर क्या सैकड़ों अफ़सरों का ख़ून कराना चाहता है?

दरबान—तो क्या तुम किसी और षड्यन्त्र का भेद जानती हो

ओल्गा—यह तो तुम्हें कल निकोलाई की गवाही से पता चल जायगा। मैं उसकी गवाही के लिए कुछ आवश्यक पत्र लाई हूँ।

दरबान—कहाँ है?

ओल्गा—मेरे पास।

दरबान—मुझे दो तो जेलर के पास पहुँचा दूँ।

ओल्गा—यह जेलर के लिए नहीं है, यह केवल निकोलाई को दिए जा सकते हैं और वह मैं स्वयं ही देना चाहती हूँ।

* * *

एक छोटे से कमरे में निकोलाई बन्द था। वह कमरा जेल के अन्य कमरों से अच्छा था। सरसरी निगाह डालने से ही पता चल जाता था कि निकोलाई के साथ क़ैदी का सा नहीं, मुख़बिर का सा व्यवहार हो रहा था।

द्वार खुला। निकोलाई ने ओल्गा को देखा, ओल्गा ने निकोलाई को देखा। निकोलाई के नेत्रों में लज्जा थी, ओल्गा के नेत्रों में क्रोध। निकोलाई चिल्ला उठा—ओल्गा

ओल्गा—हाँ, निकोलाई, यह ओल्गा है।

निकोलाई—यहाँ तुम कैसे आ पहुँची?

ओल्गा—तुमने मुझे नहीं बुलाया तो क्या मैं तुमसे बिना मिले रह सकती थी? किसी प्रकार तुम्हें एक बार देखने को आ ही गई।

निकोलाई—तो, तुम समझती हो?

ओल्गा—समझती हूँ? क्या?

निकोलाई—क्या तुमने कुछ भी नहीं सुना?

ओल्गा—बहुत कुछ सुना है और उसे मैं समझती हूँ, अच्छी तरह समझती हूँ।

निकोलाई—तो क्या तुम मुझे देख कर सचमुच प्रसन्न हो?

ओल्गा—क्यों नहीं? एक असाध्य वस्तु को साध्य देख कर कौन प्रसन्न न होगा? तुमसे मिलने का अवसर पा सकी, फिर भी प्रसन्न न हूँगी? हाँ, निकोलाई मैं प्रसन्न हूँ, बहुत प्रसन्न!

बच्चा ओल्गा की छाती से चिपटा हुआ था। उसने एक बार अपने पिता पर एक दृष्टि डाली और फिर शीघ्र ही अपनी माँ की छाती में मुख छिपा लिया। यह देख कर निकोलाई बोला—इसे क्या हो गया है? दो दिन में ही मुझे भूल गया?

ओल्गा ने उत्तर दिया—भूल नहीं गया है, उसे अच्छी तरह याद है कि तुम कौन हो। बच्चे बड़ों की अपेक्षा कम भूलते हैं।

निकोलाई ने अपने हाथ बच्चे की ओर बढ़ाए। ओल्गा ने उसे बच्चे को छूने का अवसर न दिया। निकोलाई की ओर अग्नि-भरे नेत्र फिरा कर उसने उसके हाथों को एक ओर झटके से हटा दिया। और गरजती हुई बोली—अपने अपवित्र हाथ बच्चे से एक तरफ़ रख, देशद्रोही, मुख़बिर! निकोलाई की आकृति बदल गई। वह काँपता हुआ बोला—तो तुम झूठ बोल रही थी। तुम प्रसन्न नहीं थी।

ओल्गा—मैं झूठ नहीं बोल रही थी। मैं प्रसन्न हूँ। एक देशद्रोही को देख कर मैं प्रसन्न हूँ।

निकोलाई—तुम समझ सकती हो, मैंने यह क्यों किया। ज़ार के हाथों में पड़ कर किसका भला हुआ है। षड्यन्त्रकारियों के भाग्य में फाँसी और अन्य घातक दण्ड के अतिरिक्त क्या है? मैं अभी नवयुवक हूँ। मैंने संसार में अभी क्या देखा है? मैं मरना नहीं चाहता। मैं तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सकता। मेरी भूल है कि मैंने षड्यन्त्र में भाग लिया। मैं इतने बलिदान के योग्य नहीं हूँ। ओल्गा, ओल्गा, मैं यह सब तुम्हारे लिए और इस बच्चे के लिए कर रहा हूँ।

ओल्गा—मेरे लिए और इस बच्चे के लिए? कायर, डरपोक! जीवित रहना चाहता है—एक अपयश का जीवन व्यतीत करने के लिए; जिन दीनों के लिए कल आँसू बहाता था, उन्हीं के गले पर छुरा फेरने के लिए; जिस अन्याय को नष्ट करने की शपथ ली थी, उसी को दृढ़ करने के लिए। निर्लज्ज, इस जीवन से तो यशपूर्वक मरना कहीं अच्छा था। जीवित रहने की साध है! मेरे लिए और इस बच्चे के लिए! किस लिए? कि मैं भी तेरे साथ कल से उन अत्याचारियों की सहायता करूँ, जो देश को रसातल में पहुँचा रहे हैं! किस लिए? कि यह बच्चा बड़ा होकर अपने ही भाइयों पर गोलियों का वार करे, अपनी ही माँ-बहिनों की प्रतिष्ठा नष्ट कराने में सहायक बने। किस लिए? कि कल से चारों ओर यही शब्द सुनाई पड़े—'देखो, यह देशद्रोही निकोलाई की स्त्री है। और यह उस मुख़बिर का बच्चा है।' मेरे लिए और इस बच्चे के लिए! कर्त्तव्य और प्रतिज्ञा, यश और लज्जा, शरीर और अन्तःकरण; सबका संहार। किस लिए? मेरे लिए और इस बच्चे के लिए!

निकोलाई—यदि मैं न रहूँगा, तो तुम्हारा और इस बच्चे का क्या होगा?

ओल्गा—क्या तुम समझते हो कि तुम्हीं स्त्री-बच्चे वाले हो? उन सैकड़ों नवयुवकों का तुम्हें ध्यान नहीं आता, जो कल तुम्हारे विश्वासघात के कारण फाँसी के तख़्तों पर भेज दिए जायँगे? उनके स्त्री-बच्चे नहीं हैं? उनकी क्या दशा होगी? कौन उन्हें भोजन देगा, कौन उन्हें कपड़े देगा? उन अगणित स्त्री-बच्चों का क्या होगा, जो तुम्हारी कायरता के कारण शिर उठाने योग्य भी न रहेंगे? इस एक बच्चे को देखते हो या पूरे देश को देखते हो? क्या दो-तीन प्राणियों का जीवन देश के जीवन से अधिक महत्व का है? यदि मेरा देश डूब रहा है, तो मैं अपने स्नेहियों को बचाने की चिन्ता नहीं करती। मेरे लिए देश आगे है, पति और अपना जीवन पीछे।

निकोलाई—परन्तु अब क्या हो सकता है?

ओल्गा—सब कुछ।

निकोलाई—कुछ नहीं। मैंने कल गवाही देने का निश्चय कर लिया है।

ओल्गा—तुम्हें इस बात का विश्वास है?

निकोलाई—पूर्ण विश्वास।

ओल्गा—कल तुम्हारी गवाही नहीं होगी!

निकोलाई—कौन रोकेगा?

ओल्गा—मैं!

निकोलाई—किस प्रकार?

(शेष मैटर १६वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

इटली का स्वाधीनता-संग्राम और फ़ैसिस्टवाद

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

सन् १९२२ में इटली की दुरवस्था चरम सीमा पर पहुँच गई। श्रमजीवियों ने देश-व्यापी हड़ताल की घोषणा की। बोलशेविकों ने कितनी ही हत्याएँ कर डालीं। देश में विषम अशान्ति मचने का सूत्रपात होने लगा। तब मुसोलिनी ने सरकार को एक पत्र लिखा कि या तो अड़तालीस घण्टों के अन्दर पूर्ण शान्ति स्थापित करो या अपना बोरिया-बँधना समेट लो। परन्तु सरकारी कर्मचारियों में इतनी शक्ति कहाँ थी, जो इस देश-व्यापी अशान्ति का सामना कर सकते? इसलिए मुसोलिनी के पत्र का कोई परिणाम नहीं निकला। सरकार ने मुसोलिनी को लिखा कि शासन-कार्य में भाग लेकर देश में शान्ति की स्थापना की चेष्टा करो। मुसोलिनी ने उत्तर दिया—तुम लोगों के साथ साझीदार रह कर शान्ति स्थापन करने की इच्छा हमारी नहीं है।

अन्त में, मुसोलिनी के 'ब्लैक शर्टस्' (Black Shirts) अर्थात् फ़ैसिस्टों ने एक दिन इटली की राजधानी रोम पर चढ़ाई कर दी। शासकों ने कोई बाधा न की। बिना ख़ून-ख़राबी के राजधानी मुसोलिनी के क़ब्ज़े में आ गई। इसके पहले ही मुसोलिनी ने एक घोषणा-पत्र द्वारा इटली-सम्राट की वश्यता स्वीकार कर ली थी। इसलिए उसके राजधानी में आते ही सम्राट ने उसे अपना प्रधान-मन्त्री बना लिया, रोम पर फ़ैसिस्ट पताका फहराने लगी।

इस समय इटली के शासन की बागडोर सम्पूर्ण-रूपेण मुसोलिनी के हाथों में है। इन आठ वर्षों में इस अमित प्रतिभावान पुरुष ने इटली को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। आज वीरवर मुसोलिनी की धाक सारे यूरोप पर जमी हुई है। यूरोप की महान् शक्तियाँ आज सशङ्कित दृष्टि से इटली की ओर ताक रही हैं। किसी में इतनी ताब नहीं जो इटली से समझौता किए बिना कोई कार्य कर सके। आज उसकी गणना संसार की श्रेष्ठ शक्तियों में है।

अद्भुत क्षमताशाली मुसोलिनी की नवीन कार्य-प्रणाली अर्थात् फ़ैसिस्टवाद का कुछ परिचय देने से पहले हम, थोड़े शब्दों में उसका परिचय दे देना आवश्यक समझते हैं। क्योंकि हमारा ख़्याल है कि इससे उसके फ़ैसिस्टवाद को समझने में पाठकों को अधिक सुगमता होगी। अस्तु—

आज से ४३ वर्ष पहले इटली के एमिलिया प्रदेश के फ़रली नामक ग्राम में बेनितो मुसोलिनी का जन्म हुआ था। इसका बाप एक साधारण कारीगर और माता किसी पाठशाला की शिक्षयत्री थी। लड़कपन में मुसोलिनी का स्वभाव बड़ा ही चञ्चल था। उसका पिता सोशलिस्ट था। इसलिए उसने अपने लड़के को भी इस बात का दिग्दर्शन करा दिया था कि किस तरह संसार के धनवान ग़रीबों का रक्त चूस कर मोटे बने हुए हैं और किस तरह बेचारे ग़रीब उनकी भीषण विलासाग्नि के शिकार बन रहे हैं। परन्तु मुसोलिनी की माता बड़ी धर्म-परायणा थी। वह उसे 'स्वर्ग-राज' की अलौकिक बातें सुनाया करती और बतलाती कि इहकाल में धैर्य और शान्ति के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करते रहने से मृत्यु के बाद, स्वर्ग में, असीम सुख प्राप्त हो सकता है। इसलिए बाल्यावस्था से ही मुसोलिनी के मन में पिता के उपदेशों के कारण, एक ओर अन्याय और अविचार के विरुद्ध तीव्र विद्रोह का उद्रेक हुआ था, उसी तरह माता के उपदेशों के कारण कर्तव्य-परायणता की शिक्षा तथा दायित्व का ज्ञान भी उसे प्राप्त हुआ था। बाल्यावस्था में जब लड़के आपस में किसी विषय को लेकर विवाद करते तो उसका फ़ैसला मुसोलिनी को ही करना पड़ता। उसकी पाठशाला के शिक्षक और गिरजाघर के पादरी साहब कहा करते कि इस बालक का परिणाम अत्यन्त शोचनीय होगा। पहले ये भविष्यद्वाणियाँ सत्य भी प्रतीत हुई थीं। क्योंकि मुसोलिनी की रुचि लिखने-पढ़ने की ओर अधिक न थी। इसके बाद, कुछ उपार्जन करने की क्षमता अर्जित करने से पहले ही उसने शादी भी कर ली। घर में खाने का ठिकाना नहीं; मुश्किल से कभी-कभी पेट भर जाता था, तिस पर एक बीबी भी आ धमकी। इससे मुसोलिनी को कुछ चिन्ता हुई और चेष्टा करके उसने एक स्कूल में मास्टरी कर ली। परन्तु इससे भी कोई विशेष सुविधा न हो सकी, इसलिए वह पत्थर पर खुदाई का काम करने के लिए स्विटज़रलैण्ड चला गया।

उन दिनों स्विटज़रलैण्ड यूरोप के विप्लववादियों का प्रधान अड्डा बन रहा था। उनके सहवास के कारण मुसोलिनी को यूरोप के विभिन्न देशों की राजनीति के सम्बन्ध में काफ़ी जानकारी प्राप्त हो गई और कुछ दिनों के बाद वह स्वयं भी एक विप्लववादी बन गया। इसके कुछ दिन बाद (सन् १९१०) इटली ने ट्रिपोली पर आक्रमण करके उसे तुर्कों से छीन लिया। उन दिनों मुसोलिनी वीर सोशलिस्ट बन रहा था। इटली का यह कार्य उसे घोर अन्यायपूर्ण प्रतीत हुआ। वह फ़ौरन इटली चला आया और "दी क्लास स्ट्रगल" (जातिगत संग्राम) नामक पत्र का सम्पादक बन कर इटली के इस अन्याय का तीव्र प्रतिवाद करने लगा। साथ ही इटली की परम्परागत कुरीतियों के विरुद्ध भी आन्दोलन आरम्भ किया। यह देख कर इटालियन सरकार ने "दी क्लास स्ट्रगल" का अस्तित्व ही मिटा दिया।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही इटली के अन्यान्य सोशलिस्ट नेताओं से उसका मतभेद हो गया। क्योंकि मुसोलिनी दिन-रात यही सोचा करता था कि किस तरह इटली की सर्वाङ्गीन उन्नति की जाय और सोशलिस्ट, हमारे विश्वप्रेमिक सर रवीन्द्रनाथ टैगोर की तरह, सारे संसार का कल्याण साधन करना चाहते थे। फलतः गत महासमर के समय इटली के सोशलिस्टों ने जर्मनी से सहानुभूति दिखाना आरम्भ किया तो मुसोलिनी उनसे नाराज़ होकर अलग हो गया। मुसोलिनी पहले 'घर में दिया जला कर तब मसजिद में जलाना चाहता था।' इसलिए उसने इटली के समर में उतर कर, अपने देश से ऑस्ट्रिया को मार भगाने की सलाह दी और स्वयं सेना में भर्ती होकर लड़ने भी चला गया। वह पहले से ही युद्ध का प्रबल पक्षपाती था और उसके लिए क़लम द्वारा लड़ा भी करता था। इसीलिए मौक़ा मिलते ही तलवार द्वारा लड़ने को भी तैयार हो गया।

मुसोलिनी की अद्भुत कार्य-प्रणाली और उसके फ़ैसिस्टवाद ने यूरोप के राजनीतिज्ञों को चकित कर दिया है। बड़ी-बड़ी शक्तियाँ आज मुसोलिनी के कारण इटली को सशङ्कित दृष्टि से देखने लगी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की आलोचना करने वाला कोई ऐसा यूरोपियन अख़बार नहीं है, जिसमें इस नए 'वाद' की चिन्ता न रहती हो। 'फ़ैसिस्ट' या 'फैसिज़्म' की उत्पत्ति इटालियन भाषा में Fasces शब्द से हुई है। इटालियन भाषा में Fasces एक प्रकार की पताका को कहते हैं। प्राचीन काल में जब रोम साम्राज्य के विचारकगण न्यायासन पर बैठते थे तो उनकी बग़ल में एक आदमी Fasces नाम की पताका लेकर खड़ा हो जाता था। मानों इससे सूचित होता था कि इसी शासन-दण्ड द्वारा न्यायाधीश दण्ड प्रदान भी कर सकते हैं। 'फ़ैसेस' के एक सिरे पर एक छोटी सी कुल्हाड़ी भी लगी रहती थी, जिससे सूचित होता था कि विचारक महोदय अपराध-विशेष में अपराधी को प्राणदण्ड भी प्रदान कर सकते हैं। यह कुठार-मण्डित न्यायदण्ड अकेला नहीं होता था। इसमें कई पतली-पतली सींकें होती थीं, जो एकत्र

(१८वें पृष्ठ का शेषांश)

औल्गा ने शीघ्रता से एक पिस्तौल निकाली और निकोलाई की ओर उसे करके वह बोली—"इस प्रकार!" निकोलाई उसकी ओर बढ़ना चाहता था कि वह तेज़ी से बोली—ख़बरदार! एक क़दम भी आगे बढ़े!

निकोलाई—हत्या करोगी?

औल्गा—यदि इसे हत्या कहते हो तो हाँ।

निकोलाई—पति की?

औल्गा—पति की नहीं, देशद्रोही की, मुख़बिर की।

निकोलाई—निश्चय कर लिया है, निर्दय?

औल्गा—पूर्ण निश्चय? यदि न देखा जाय तो नेत्र बन्द कर लो।

उसके मुख पर एक ऐसी ज्योति जगमगा रही थी कि निकोलाई के मुख से एक भी शब्द न निकला। उसने एक बार औल्गा की ओर देखा और धीरे-धीरे नेत्र बन्द कर लिए।

"बैंग! बैंग!!"

निकोलाई का शरीर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

"बैंग! बैंग!!"

औल्गा का शरीर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

छाती से चिपटे हुए बच्चे की ओर देखते हुए वह बोली—मेरे बच्चे, यह सब तेरे भविष्य के लिए है। यदि पिता के देशद्रोह की कभी तुझे याद आवे तो साथ ही माता के इस हत्याकाण्ड की भी याद कर लेना।

पीड़ा-जनित तड़पन के साथ दोनों ने अन्तिम श्वांस ली। परन्तु एक की तड़पन में पश्चात्ताप का भाव था, दूसरे की तड़पन में सन्तोष का।

* * *

करके एक मोटी लाठी के रूप में परिणत कर दी जाती थीं। इससे यह सूचित होता था कि एक लाठी आसानी से तोड़ी जा सकती है, परन्तु कई लाठियाँ एक साथ ही नहीं तोड़ी जा सकतीं। थोड़े शब्दों में इटालियन न्यायाधीशों का यह फ़ैसेस "परित्राणाय साधूनाम् विनाशायच दुष्कृताम्" का द्योतक था।

कालक्रम से इसी फ़ैसेस शब्द से Fasci शब्द की उत्पत्ति हुई। किसी एक दल के लोगों का किसी विशेष प्रकार की उद्देश्य की पूर्ति के लिए सङ्घबद्ध होने पर उसे "फ़ैसी" कहा जाता था। हिन्दी भाषा का 'समिति' शब्द जिस अर्थ का द्योतक है, इटली का 'फ़ैसी' शब्द भी किसी ज़माने में उसी अर्थ का द्योतक था। मुसोलिनी के पहले भी इटली में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कितनी ही फ़ैसी या समितियाँ थीं। सोशलिस्टों से मतभेद हो जाने पर मुसोलिनी ने भी अपनी एक अलग फ़ैसी या समिति बनाई थी। लड़ाई से लौटने पर उसने अवसर-प्राप्त सैनिकों को लेकर एक "फ़ैसी ऑफ़ कोम्बटेण्ट" अर्थात् सैन्य-समिति नाम की एक संस्था की स्थापना की थी और प्रतीक स्वरूप प्राचीन रोम के इतिहास-प्रसिद्ध 'फ़ैसेस' का व्यवहार आरम्भ किया। मुसोलिनी की यह फ़ैसी या समिति ही आज सारे संसार में फ़ैसिस्ट दल और उसका मतवाद Fascism या फ़ैसिस्टवाद के नाम से विख्यात हो रहा है। अन्तर केवल इतना है कि आज उसका वह व्यापक अर्थ नहीं है, वरन् सङ्कुचित होकर मुसोलिनी की वर्तमान शासन-प्रणाली का द्योतक बन गया है। सन् १९२४ में मुसोलिनी ने एक अङ्गरेज़ विद्वान के सामने फ़ैसिज़्म की जो परिभाषा बताई थी, वह इस प्रकार है :—

" Fascism holds that dutiful service to his state is the higher obligation of the citizen than the pursuit of his own ambition ; that the affairs of the state must be governed not by those who will seek to flatter the selfish hopes of the individual but by those who have the highest faith in the state and who will lead it to its highest expression of strength."

अर्थात्—"फ़ैसिस्ट मतवाद का यह उद्देश्य है कि देश का प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत उच्चाकांक्षा की पूर्ति की अपेक्षा अपने देश की राजशक्ति की सेवा कर्तव्य-परायणता के साथ करे। जो अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए समुत्सुक रहते हैं, उनके द्वारा देश का शासन-कार्य नहीं चल सकता। जो लोग कि राजशक्ति पर सब से अधिक श्रद्धा-भक्ति रखते हैं और जो उसे पूर्ण शक्तिशाली बनाने की चेष्टा करेंगे, वही देश के शासन-कार्य को चला सकते हैं।"

यहाँ यह स्पष्ट कर देने की ज़रूरत है कि राजशक्ति से मुसोलिनी का मतलब स्वाधीन देश की अपनी सरकार से है, जो हमेशा प्रजा के हित की चिन्ता किया करती है। भारत जैसे पराधीन देश के लिए राजशक्ति की सेवा तो एक विडम्बना मात्र है। अस्तु।

उपर्युक्त उद्धरण से मालूम होता है कि मुसोलिनी का फ़ैसिस्टवाद व्यक्तिगत आशा-आकांक्षा या दुःख-सुख की चेष्टा को प्रश्रय नहीं देता। देश का प्रत्येक मनुष्य अपनी सारी शक्ति लगा कर अपनी जातीय सरकार की सेवा करेगा और वह सरकार अपनी सारी शक्ति लगा कर प्रजा का हित-साधन किया करेगी। हमारे मतानुसार बहुत थोड़े शब्दों में यही मुसोलिनी की राजनीति का आदर्श है। परन्तु महात्मा लेनिन का बोलशेविज़्म, इसके विपरीत व्यष्टि को ही सर्वोपरि स्थान प्रदान करता है। उसका आदर्श है, देश में तथा देश के बाहर समस्त राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पार्थक्य को हटा कर मानव समाज को एक अखण्ड राज्य के रूप में परिणत कर देना। वह मानव समाज को एक ऐसी अवस्था पर लाना चाहता है, जहाँ न अर्थ की आवश्यकता होगी और न राजस्व की। देश का प्रत्येक मनुष्य अपने परिश्रम के बदले समस्त जीवनोपयोगी वस्तु प्राप्त कर सकेगा और अन्त में ऐसी अवस्था उत्पन्न कर देगा, जब कि संसार में 'सरकार' नाम की कोई चीज़ ही न रह जायगी। बोलशेविज़्म मानव समाज को ऐसी अवस्था पर पहुँचाना चाहता है, जहाँ सरकार की कोई आवश्यकता ही नहीं है। परन्तु फ़ैसिस्टवाद का यह सिद्धान्त है कि सर्वसाधारण की स्वेच्छाप्रदत्त सहायता पाकर किसी समय सरकार इतनी बलवती हो जाएगी, कि उस समय सरकार की सेवा छोड़ कर प्रजा के लिए और कोई कार्य ही न रह जाएगा। और उसके बदले में सरकार उन्हें हर प्रकार से सुखी और स्वच्छन्द रक्खेगी।

मुसोलिनी ने सरकार को एक नाम-मात्र की संस्था के रूप में परिणत कर रक्खा है। वह बहुमत की परवाह नहीं करता और न किसी विषय पर लोगों का मत (वोट) लेने की आवश्यकता समझता है। इसीसे लोग उसे स्वेच्छाचारी कहा करते हैं। परन्तु मुसोलिनी के नवीन मतवाद पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने वाले विद्वानों का कथन है कि वह स्वेच्छाचारी नहीं है। वह शासन-व्यापार में अपने मित्रों से राय लेकर अपने विवेक और बुद्धि के अनुसार काम करता है। यह अगर स्वेच्छाचार है तो श्रीरामचन्द्र का 'राम राज्य' और युधिष्ठिर का 'धर्म राज' भी क्यों न स्वेच्छाचार कहा जाएगा। उस समय भी तो कोई प्रजातन्त्र, पार्लामेण्ट या वोट-संग्रह प्रणाली न थी।

इटली का शासन वह वहाँ के सम्राट के नाम से ही करता है। वही उनकी मन्त्रिसभा के लिए सदस्य चुनता है, और उन्हें विभिन्न विभागों का कार्य सौंपता है। विभिन्न प्रदेशों के शासनकर्ताओं की नियुक्ति भी उसीके द्वारा होती है। ये शासनकर्ता उसीके आदेशानुसार शासन-कार्य किया करते हैं। इटली की म्युनिसिपैलिटियाँ भी उसी के आदेशानुसार चलती हैं। प्रत्येक प्रान्त का प्रधान-शासनकर्ता अपने प्रान्त की म्युनिसिपैलिटियों के लिए एक अफ़सर नियुक्त कर देता है। कमिश्नर लोग उसीके आदेशानुसार कार्य करते हैं। शासन के अन्यान्य विभागों का कार्य भी इसी प्रणाली द्वारा होता है। इसलिए इटली के सभी शासन-विभागों का प्रधान-कार्यकर्ता मुसोलिनी है। सर्वत्र उसीकी तूती बोलती है।

मुसोलिनी की प्रधान ताक़त है इटली की फ़ैसिस्ट समितियाँ। यहीं से इटली के लिए सेना का संग्रह होता है, और इन्हीं समितियों के उपदेशानुसार वह कार्य भी करता है। देश के दायित्वपूर्ण पदों पर इन्हीं समितियों में आदमी नियुक्त होते हैं। जिन लोगों ने इटली के लिए संग्राम किया था, वही इन समितियों के सदस्य हैं। इनके अतिरिक्त ऐसे लोग भी इन समितियों के सदस्य हो सकते हैं, जिन्होंने स्टेट या सरकार की विशेष सेवा की है। आज अगर मुसोलिनी की मृत्यु हो जाए तो इन्हीं समितियों में से कोई दूसरा मुसोलिनी निकल आवेगा, और फ़ैसिज़्म के अनुसार देश का शासन-कार्य चलता रहेगा। वर्तमान समय में जो लोग रणक्षेत्र से वापस आए हैं, वही लोग अधिकांश रूप से इटली की समितियों के सदस्य हैं, इसलिए कुछ लोग मुसोलिनी की शासन-पद्धति को 'क्लास-रूल' या श्रेणी-विशेष का शासन के नाम से भी अभिहित करते हैं। कुछ अंशों में यह संज्ञा सत्य भी है। परन्तु मुसोलिनी सदैव इस बात की चेष्टा में रहता है कि उसका यह 'क्लास-रूल' किसी समय 'मास-रूल' या सार्वजनीन शासन का रूप धारण कर ले। इसीलिए उसने समस्त देश में नवयुवकों के लिए 'बेलेलिया समिति' नाम की बहुत सी समितियाँ बनाई हैं। इन समितियों में देश के युवक और युवतियों को फ़ैसिज़्म की शिक्षा दी जाती है। इससे मालूम होता है कि निकट-भविष्य में सारा इटली फ़ैसिस्ट मतावलम्बीय हो जावेगा।

'बेलेलिया' जनेवा के एक स्कूल के एक बालक का नाम है। यह प्रदेश जिस समय ऑस्ट्रिया के अधीन था, उस समय इसी प्रदेश के एक बालक ने पत्थर का एक टुकड़ा लेकर ऑस्ट्रियन सेना पर आक्रमण किया था। उसी बालक के नाम पर इन समितियों का नामकरण हुआ है।

मुसोलिनी का फ़ैसिस्टवाद अन्तर्जातिकता नहीं पसन्द करता। मुसोलिनी यह नहीं चाहता कि भिन्न देशों के आन्दोलनों में भाग लेकर देश की अभ्यन्तरीय अवस्था को जटिल कर दिया जाय। इसी सबब से आज-कल कोई बाहरी आन्दोलन की दाल इटली में नहीं गलती।

मुसोलिनी ने इन आठ वर्षों में इटली की आशातीत उन्नति की है। उसके उद्योग से इटली से मलेरिया का नाम-निशान तक मिट गया है। मलेरिया फैलाने वाले मच्छड़ों का नाश करने के लिए उसने कितनी ही गन्दी झीलों को पटवा दिया है और कितनी ही झीलों में तेल छुड़वा कर मच्छड़ों का वंश नाश कर दिया है। देश में अब खाद्य पदार्थों का कोई अभाव नहीं है। पहले इटली में जो गेहूँ उत्पन्न होता था, उससे इटलीवासी छः महीने भी गुज़र नहीं कर सकते थे। इसलिए प्रति वर्ष करोड़ों रुपए का गेहूँ इटली को दूसरे देशों से लेना पड़ता था। मुसोलिनी की चेष्टा से इटली में कृषि की भी उन्नति हो रही है। लकड़ी के हलों की जगह अब वहाँ के किसान कल के हल व्यवहार करते हैं, इसलिए पैदावार पहले की अपेक्षा कई गुना बढ़ गई है। इस पैदावार की वृद्धि के कारण इटली को प्रति वर्ष १६० 'लिरा' (इटालियन सिक्का, जो हमारे दस आने के बराबर का होता है) की बचत होती है। शासन सम्बन्धी ख़र्च घटाने में भी मुसोलिनी ने कमाल किया है। पहले जिस विभाग में दस अफ़सर काम करते थे, वहाँ केवल पाँच ही हैं। पहले राज-कर्मचारी आलसी और विलासी हुआ करते थे, परन्तु मुसोलिनी के ज़माने के राज-कर्मचारी बड़ी तत्परता से अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। इससे सरकार के विभिन्न विभागों की आय में काफ़ी वृद्धि हो गई है। रेल-विभाग में पहले की अपेक्षा आजकल अधिक बचत है, अथच पहले की अपेक्षा भाड़ा भी कम है। इसी तरह डाक और तार-विभाग में भी आमदनी की वृद्धि और ख़र्च की कमी हुई है, इसके सिवा देश के शिल्प-कला की उन्नति की ओर भी मुसोलिनी की सरकार का यथेष्ट ध्यान है। 'हाइड्रोइलेक्ट्रिक' कारख़ानों की स्थापना के कारण, इटली की शिल्प-कला की आशातीत उन्नति हो रही है। परन्तु मुसोलिनी का सब से बड़ा कृतित्व है, इटली की श्रमिक समस्या का समाधान। उसने क़ानून बना दिया है कि इटली में कभी कोई हड़ताल न होगी और न कोई कारख़ाने वाला अनिश्चित समय के लिए कारख़ाना बन्द कर सकेगा। श्रमिकों और कारख़ाने वालों के झगड़ों को मिटाने के लिए उसने जगह-जगह पञ्चायतें क़ायम कर दी हैं। ये पञ्चायतें जो फ़ैसला कर देती हैं, उसकी कहीं अपील नहीं हो सकती। इस प्रबन्ध से इटली में अब कोई झगड़ा ही नहीं रह गया है और फल-स्वरूप शिल्प-वाणिज्य की उत्तरोत्तर उन्नति हो रही है। इटली की आर्थिक उन्नति करने में भी मुसोलिनी ने कमाल किया है। दूसरे देशों में वहाँ के "लिरा" नामक सिक्के का मूल्य बढ़ गया है। मुसोलिनी की नीति से दिलचस्पी

(शेष मैटर २९४वें पृष्ठ के दूसरे और तीसरे कॉलम में देखिए)

राष्ट्रीय महायुद्ध के कुछ वीर सैनिक

पं० हरिश्चन्द्र बाजपेयी

आप लखनऊ के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं, जिन्हें दूसरी बार गिरफ़्तार करके ६ मास का कठिन कारावास दण्ड और १००) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। आप करबन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए हैं।
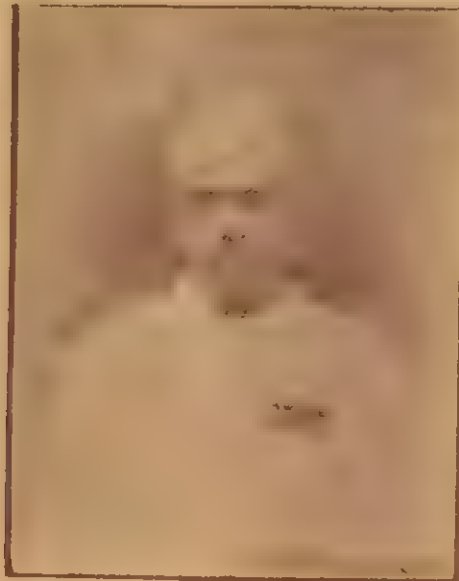
वयोवृद्ध श्री० सेठ सुन्दरदास वल्लभदास

आप ६९ वर्ष को परिपक्व अवस्था में कराची 'वार-कौन्सिल' के 'डिक्टेटर' नियुक्त हुए हैं।

सरदार मङ्गलसिंह जी

आप पञ्जाब कॉङ्ग्रेस के सुप्रसिद्ध नेता हैं। आप हाल ही में देहली में गिरफ़्तार हुए थे। आपको ६ मास का कारावास-दण्ड प्रदान किया गया है।

श्रीमती सुनीति देवी मित्रा

आप लखनऊ की सर्व-प्रथम 'डिक्टेटर' थीं, जिन्हें झण्डा-सत्याग्रह के सम्बन्ध में ६ मास का कारावास-दण्ड दिया गया था। आप हाल ही में जेल से मुक्त हुई हैं।

विहार के 'गाँधी'—बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी, जो हज़ारीबाग़ जेल से हाल ही में छूटे हैं, आपका स्वास्थ्य चिन्ताजनक है।

मुरादाबाद नवयुवक-सङ्घ (Youth League) के मन्त्री—श्री० ब्रजनारायण मेहरा, जिन्हें हाल में सज़ा हुई थी। आप मुरादाबाद ज़िला-जेल के 'ए' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

श्री० वी० जे० पटेल, भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट लेजिस्लेटिव एसेम्बली, जो कोयम्बटूर के जेल में बीमार हैं और जिनकी दशा अत्यन्त चिन्ताजनक कही जाती है।

मुरादाबाद कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री और 'डिक्टेटर'—श्री० हृदयनारायण जी, बी० एस-सी०; एल्-एल्० बी०; जो हाल ही में गिरफ़्तार हुए थे। आप मुरादाबाद के ज़िला-जेल में 'ए' क्लास में रक्खे गए हैं।

भारतीय महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी

देहली के इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स हाई-स्कूल तथा इण्टरमीजियट कॉलेज के छात्रावास में रहने वाली कुछ लड़कियाँ। इनमें से कुछ भारतवर्ष के दूर-दूर के स्थानों से आई हुई हैं। छात्रावास की कर्तव्य-परायणा मेट्रन श्रीमती प्रियम्बदा देवी, प्रिन्सिपल की बग़ल में बाईं तरफ़ बैठी हैं।

इन्द्रप्रस्थ हिन्दू-गर्ल्स हाई-स्कूल तथा इण्टरमीजियट कॉलेज के यूनियन क्लब की कुछ सदस्याएँ, जो कि प्रिन्सिपल के ऑस्ट्रेलिया जाते समय विदा करने के लिए एकत्रित हुई थीं।

बैठी हुईं—मिस एल० गमाइनर;
खड़ी हुईं—मिस राजदुलारी शर्मा, बी० ए० (ऑनर्स) इन्द्रप्रस्थ हिन्दू-गर्ल्स हाई-स्कूल की क्रमशः स्थायी तथा स्थानापन्न प्रिन्सिपल।

इन्द्रप्रस्थ हिन्दू-गर्ल्स हाई-स्कूल और इण्टरमीजियट कॉलेज के मैट्रिक क्लास की कुछ लड़कियाँ, जो साइन्स का प्रयोग और अध्ययन कर रही हैं।

संस्थाएँ आज भारत में क्या कर रही हैं

देहली के इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स हाई-स्कूल तथा इण्टरमीजियट कॉलेज के सङ्गीत क्लास की कुछ छात्राएँ

इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स हाई-स्कूल तथा इण्टरमीजियट कॉलेज की कुछ पुरानी छात्राएँ, जो २० मई, सन् १९२९ को मनाई जाने वाली स्कूल की सिलवर जुबली के उत्सव में सम्मिलित हुई थीं। इनमें से अब अधिकांश भिन्न-भिन्न यूनिवर्सिटियों की ग्रेजुएट हैं।

इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स हाई-स्कूल तथा कॉलेज का गर्ल्स-गाइड्स

महाकवि दाग़ (देहलवी) का प्रतिभाशाली वंशज

महाकवि दाग़ (देहलवी) के दामाद नव्वाब मिर्ज़ा सिराजुद्दीन अहमद ख़ाँ साहब "सायल" (देहलवी)

तीरे-नज़र को देखो, ज़ख़्मी जिगर को देखो !
इस देखने को देखो, इसके असर को देखो !!
दिल उनसे कह रहा है, ख़स्ता जिगर को देखो,
आगे तुम्हारी मर्ज़ी, चाहे जिधर-को देखो !!
लाश परवानों की कहती है ज़बाने-हाल से,
बोलती-महफ़िल में एक ख़ामोश-महफ़िल चाहिए !!

—"सायल" देहलवी

कुछ क़द्र न की उसने, गर तेरे वफ़ाओं की,
तू उसकी जफ़ाओं पर, ख़ुश होके फ़िदा हो जा !
मज़हब जो तेरा पूछे, कह दे कि मोहब्बत है !
ईसार कर अपने को, और उसपे फ़िदा हो जा !

—"शाद" हैदराबादी

हिज़ एक्सेलेन्सी महाराजा सर किशनप्रसाद साहब बहादुर ; जी० सी० आई० ई० "शाद" हैदराबादी

हुआ यह है, कि वह
गुम हो गया है ख़ुद मुझमें,
मज़ा यह है, कि उसे
ढूँढने चला हूँ मैं !

—"साग़र" अकबराबादी

जनाब "साग़र" अकबराबादी

ताल्लुक़ात मोहब्बत,
यह तेरी ज़ात से हैं,
किसी ने नाम लिया है,
तड़प गया हूँ मैं !

—"साग़र" अकबराबादी

प्रोफ़ेसर "अहसन" मारहेरवी

देखिए किसको वह मिलें, देखिए किसके दिन फिरें !
आँख भी ताक-झाँक में, दिल भी है साज़-बाज़ में !
इश्क़ की हैं जो हसरतें 'अहसन' उठा यह ज़हमतें !
जान को फूँक सोज़ में, दिल को घुला गुदाज़ में ॥

—"अहसन" मारहेरवी

जनाब "मञ्ज़र" सिद्दीक़ी अकबराबादी

मेरे हाथों में है क़ूवते जुनूने फ़ितना-सामाँ की !
जो मैं चाहूँ तो बुनियादें हिला डालूँ बियाबाँ की !
यह रक़्से-आसमाँ, यह चाँद, यह तारों की ख़ामोशी !
गवाही दे रहे हैं, सब मेरे हाले-परेशाँ की !!

—"मञ्ज़र" अकबराबादी

हज़रत "सीमाब" अकबराबादी

आग लग जायगी, सोज़े-दिल सलामत चाहिए !
हम तो बाक़ी हैं, जो बाक़ी गर्मिए-महफ़िल नहीं !!
एक सदा कुञ्जे-क़फ़स से, आई और तड़पा गई,
कोई कहता था, रिहा होना मेरा मुशकिल नहीं है !!

—"सीमाब" अकबराबादी

केसर की क्यारी

लीजिए, बरसाइए, सरकार अब तीरे-नज़र! इस दिले-नाज़ुक को भी फ़ौलाद कर लेता हूँ मैं !!
ले क़फ़स ही को, समझ लेता हूँ अपना आशियाँ! तेरा कहना आज ए सय्याद, कर लेता हूँ मैं !!

जो मुझे भूला है उसको याद कर लेता हूँ मैं,
अपना उजड़ा दिल यूँही आबाद कर लेता हूँ मैं !
भूलने वाले नहीं मुझको असीरी[1] के मज़े,
छुट के तौफ़े[2] कूचए सय्याद कर लेता हूँ मैं !
सौ मसर्रत[3] की मसर्रत है, उमीदे जाँ फ़िज़ाँ[4],
लाख ग़म हो, फिर भी दिल को शाद कर लेता हूँ मैं !
ज़िक्र गुलहाए[5] चमन, तारीफ़े-ख़ुरशीदो[6] क़मर[7],
हर बहाने से, किसी की याद कर लेता हूँ मैं !
बे-निशाँ होने से, मिलता है निशाने बे-निशाँ,
अपनी हस्ती, इसलिए बरबाद कर लेता हूँ मैं !
मुद्दतें गुज़रीं क़फ़स में, है वही अब भी लगाव,
पत्ते-पत्ते को चमन के, याद कर लेता हूँ मैं !
बे कहे रौशन है, उन पर हाल अपना ऐ "ज़या",
कब लबे ख़ामोश[8] से फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !

—"ज़या" देवानन्दपुरी

कुछ नहीं तो, शिकवए बेदाद[9] कर लेता हूँ मैं,
इस तरह तुमको सितमगर, याद कर लेता हूँ मैं !
या तसव्वर[10] से तेरे, या फिर तेरी तस्वीर से,
दिल इन्हीं दोनों से, अपना शाद कर लेता हूँ मैं !
दिल से कहता हूँ, कि तू महवे ख़याले-यार हो,
और भी नाशाद को, नाशाद[11] कर लेता हूँ मैं !
लीजिए, बरसाइए, सरकार अब तीरे-नज़र,
इस दिले-नाज़ुक को भी फ़ौलाद कर लेता हूँ मैं !
काँप उठती है ज़मीं, चक्कर में आता है फ़लक[12],
दिल से, जी से, जब कभी फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !
बे वफ़ा, बे मेह, ज़ालिम, और मतलब-आश्ना,
अब इन्हीं नामों से, उनको याद कर लेता हूँ मैं !
भूल कर "ज़ाहिद" कहीं आता नहीं, जाता नहीं,
काबए दिल में, ख़ुदा की याद कर लेता हूँ मैं !

—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

दो घड़ी के वास्ते, दिल शाद कर लेता हूँ मैं,
जब मिली फ़ुरसत, तुम्हारी याद कर लेता हूँ मैं !
दिल बहलने का, कोई जब आसरा मिलता नहीं,
आसमाँ को देख कर, फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !
मौत का जब ध्यान आ जाता है, मुझको हमनशीं[13],
ज़िन्दगी भर के फ़िसाने[14], याद कर लेता हूँ मैं !
दिल में आने ही नहीं देता हूँ, फ़िक्रो रञ्जो-ग़म,
अपने को हर क़ैद से, आज़ाद कर लेता हूँ मैं !
शिकवए-सय्याद से, मिलती है जब मुझको निजात[15],
ऐ चमन वालो, तुम्हारी याद कर लेता हूँ मैं !
यह न जानो, ज़ब्त ज़ुल्मो ज़ोर मुशकिल बात है,
कुछ समझ कर, सोच कर, फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !
दिल के बहलाने की सूरत, हज़रते "शातिर" यह है,
सिद्क़[16] दिल से, रोज़ उसकी याद कर लेता हूँ मैं !

—"शातिर" इलाहाबादी

१—क़ैद, २—परिक्रमा, ३—ख़ुशी, ४—बढ़ाने वाली, ५—फूल, ६—आफ़ताब, ७—चाँद, ८—चुप रहना, ९—ज़ुल्म, १०—ध्यान, ११—नाख़ुश, १२—आकाश, १३—साथी, १४—क़िस्से, १५—छुटकारा, १६—सच्चा।

याद करके आपको, दिल शाद कर लेता हूँ मैं
ख़ानए-बरबाद यूँ, आबाद कर लेता हूँ मैं !
ले क़फ़स[17] ही को, समझ लेता हूँ अपना आशियाँ[18],
तेरा कहना आज ऐ सय्याद, कर लेता हूँ मैं !
दिल के बहलाने की, जब सूरत नज़र आती नहीं,
भूलने वाले को, अपने याद कर लेता हूँ मैं !
देखता हूँ जब शबे-ग़म, अपना हाले-बेकसी,
ख़ुद ज़यादा, क़ैद की मीयाद कर लेता हूँ मैं !

—"अरमान" देहलवी

मिटने वाली हसरतें ईजाद कर लेता हूँ मैं,
एक जहाने नेसती आबाद कर लेता हूँ मैं !

—"हफ़ीज़" जालन्धरी

मै फ़रोश[19] आँखों को, जिस दम याद कर लेता हूँ मैं,
एक जहाने-बेख़ुदी, आबाद कर लेता हूँ मैं !
बर्क़[20] का भी काम, ऐ सय्याद कर लेता हूँ मैं,
आप अपना आशियाँ, बरबाद कर लेता हूँ मैं !
उनकी फ़ितरत[21] है, कि मुझको भूल जाते हैं, मगर—
मेरी आदत है, कि उनको याद कर लेता हूँ मैं !

—"क़ैस" जालन्धरी

जब कभी माज़ी[22], की बातें याद कर लेता हूँ मैं,
ख़ुद को क़ैदे-हाल से, आज़ाद कर लेता हूँ मैं !
मैं तसव्वर[23], में बसा लेता हूँ, एक दुनिया नई,
दिल के वीराने को, यूँ आबाद कर लेता हूँ मैं !

—"तालिब" जकराली

यूँ दिले वीराँ को, ख़ुद आबाद कर लेता हूँ मैं,
बन्द आँखें करके, उनको याद कर लेता हूँ मैं !
तङ्ग करता है, मुझे सय्याद तू क्यों इस क़दर,
क्या ख़ता मेरी, अगर फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !

—"अज़ीज़" शिमलवी

याद जब आती है, उनको याद कर लेता हूँ मैं !
दिल ख़याली राहतों से, शाद कर लेता हूँ मैं !

—"दानिश" सेवहारी

हम-क़फ़स[24] क्या पूछता है, दिल की बेताबी का हाल,
जब असीरी[25] में चमन को याद कर लेता हूँ मैं !

—"साबिर" पटियालवी

आलमे-फ़ानी[26] में, आती है मुझे यादे-अदम,
यानी ग़ुर्बत[27] में वतन को याद कर लेता हूँ मैं !

—"हसरत" ज़ईफ़ाबादी

देख कर उसकी जफ़ाएँ और अपनी बेकसी,
आह भर लेता हूँ मैं, फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !

—"राम" करनाली

जब क़फ़स में क़ैद तनहाई से घबराता है दिल,
आशियाँ को, गुलिस्ताँ[28] को, याद कर लेता हूँ मैं !

१७—पिंजड़ा, १८—घोंसला, १९—शराब बेचने वाली, २०—बिजली, २१—स्वभाव, २२—भूत, २३—ध्यान, २४—साथी, २५—क़ैद, २६—मिटने वाला, २७—परदेश, २८—बाग़।

कम अगर "मूनिस" कभी होती है बेताबीए-दिल,
उनको दम भर के लिए, फिर याद कर लेता हूँ मैं !

—"मूनिस" सेवहारी

आपसे झूठे दिलासों पर, उमीदें बाँध कर,
दिल में दुनियाए तरब[29], आबाद कर लेता हूँ मैं !!

—गौरीशङ्कर "साग़र"

जब हुजूमे-आरज़ू दिल में नज़र आता नहीं,
आलमे हसरत ही को आबाद कर लेता हूँ मैं !

—"ज़री" लाहारी

जिस चमन की, आ गई मुझको पसन्द आबोहवा,
आशियाँ अपना वहीं, आबाद कर लेता हूँ मैं !
देखता हूँ मैं जहाँ "तालिब" किसी को ग़मज़दा,
अपनी रुस्वाई क़फ़स को याद कर लेता हूँ मैं !

—"तालिब" अनसारी

दिल के वीराने में रौनक़ हो ही जाती है कभी,
गाहे-गाहे[30] अब भी उनको याद कर लेता हूँ मैं !

—"करतार" सिन्धी

क्या ज़रूरत है, फ़लक[31] इस पर गिराए बिजलियाँ,
अपने हाथों, आशियाँ बरबाद कर लेता हूँ मैं !

—"ख़ादिम" लाहौरी

चुटकियाँ लेती है जब दिल में, मेरे हुब्बे वतन,
ग़ैर को आमादए बेदाद, कर लेता हूँ मैं !

—"मजज़ूब" लाहौरी

जब तसव्वर में, किसी को याद कर लेता हूँ मैं,
एक जहाने[32] आरज़ू, आबाद कर लेता हूँ मैं !
इस क़दर पाबन्दियाँ हैं, फिर भी मुझको नाज़ है,
यह न पूछो, किस तरह फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !
हर नफ़स[33] एक मौत है, तो हर नफ़स के साथ-साथ—
क़ैदे-ग़म से, अपने को आज़ाद कर लेता हूँ मैं !
ग़म नहीं, तुम दिल से, जी से, भूल भी जाओ मुझे,
फिर भी, दिल से, जी से, तुमको याद कर लेता हूँ मैं !
यह मेरा दावा है, जब चाहो सता कर देख लो,
अपने नालों में, असर ईजाद कर लेता हूँ मैं !
मेरे दिल को जब कोई सदमा पहुँचता है कहीं,
ऐशो-राहत[34] का ज़माना, याद कर लेता हूँ मैं !
अल्ला-अल्ला यह मेरी, मशक़े-तसव्वर का असर,
एक दुनिया दूसरी, आबाद कर लेता हूँ मैं !
छेड़ता हूँ आसमाँ से, गुफ़्तगू का सिलसिला,
जब कोई तरज़े-फ़ुग़ाँ[35] ईजाद कर लेता हूँ मैं !
हज़रते "बिस्मिल" अभी तक, क़तआ रस्मो राह पर,
भूलने वाले को दिल से, याद कर लेता हूँ मैं !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२९—आनन्द, ३०—कभी-कभी, ३१—आकाश, ३२—आशाओं का संसार, ३३—साँस, ३४—आराम, ३५—आह करने का ढङ्ग।

हास्यकला का चमत्कार ! हास्योपन्यासों का लकड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

छप रहा है ! का छप रहा है !!

हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !

लतखोरी लाल

छः खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा को छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है, कहीं एक से एक रहस्यमय गुप्त लीलाओं का इतना सच्चा, स्वाभाविक और रोचक भण्डाफोड़ है कि सैकड़ों बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं भी ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामों को एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं, तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २)

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका वर्णन इसमें बहुत ही रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा। मूल्य ॥)

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

लाहौल बिलाक़ूवत

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

["लतखोरीलाल" नामक अप्रकाशित सचित्र पुस्तक के "लाहौल बिलाक़ूवत" खण्ड से—जो इस समय प्रेस में है और एक मास तक प्रकाशित होगी]

"ढाई सौ आदमी बारात में जा रहे हैं—यह बारात है या शैतान की आँत ? भला इतने आदमी ले जाकर क्या कीजिएगा पण्डित जी ? आप अपने लड़के का ब्याह करने जाते हैं, या लश्कर लेकर समधी के घर डाका डालने ?"

"भइया यह सलाह आपने अपने पिता जी को क्यों नहीं दी थी, जब वे आपके विवाह में सारे नगर भर को बटोर ले गए थे ?"

अररररर ! पण्डित जी ने बुरी नस दबाई। मैं अपना सा मुँह लेकर रह गया। बात सच थी। कुछ जवाब देते न बन पड़ा। फिर भी खाँस-खूँस कर किसी तरह मैंने कहना शुरू किया—जो बात हो गई, वह हो गई। उसका अब ज़िक्र क्या ? आदमी को हमेशा आगे देखना चाहिए, न कि अपने पीछे। इसीलिए तो ईश्वर ने सामने आँखें दी हैं, कुछ गर्दन की गुद्दी में नहीं।

पण्डित जी—भइया ईश्वर की कृपा से अब आप वकील हो गए हैं। आपसे तर्क में तो मैं जीत नहीं सकता। परन्तु विवाह की शोभा बारात से और बारात की शोभा आदमियों से होती है। यदि बारात में चार-पाँच सौ भी आदमी न हुए, तो वह फिर बारात ही क्या ? ऐसे ही समय जाना जाता है कि किसके कितने सङ्गी-साथी, हितू-मेली, यार-मददगार, नातेदार, पट्टीदार इत्यादि हैं। इन्हीं लोगों से ऐसे शुभ अवसरों पर आबरू की लाज रहती है। नहीं तो संसार में कोई काहे को किसी को पूछे, नमस्कार पैलगी करे ? मेल-जोल, भाई-चारा, नातेदारी सब इन्हीं दिनों के लिए हैं भइया। जब आपके लड़के-बाले होंगे और उनके विवाह आदि के समय आएँगे, तब इन बातों का महत्व आप आप ही जान लेंगे। अधिक क्या कहूँ ?

मैं—तो क्या ढाई सौ आदमी आपकी आबरू की रखवाली के लिए कम हैं, जो आप उनकी तादाद और बढ़ाना चाहते हैं ?

पण्डित जी—यह आप क्या कहते हैं ? ढाई सौ किस गिनती में हैं ? एक वह भी दिन था, जब हम लोगों के पुरखे ढाई-ढाई हज़ार आदमियों की बारात लेकर लड़कों का ब्याह करने जाते थे.........

मैं बात काट कर बीच ही में बोल उठा—हाँ-हाँ जब रेल नहीं थी। और रास्ते में लूट-मार के डर से बिना गरोहबन्दी किए दो क़दम भी चलना मुश्किल था। मगर अब इतनी बड़ी फ़ौज लेकर कहीं जाने की क्या ज़रूरत ? मुफ़्त में अपने सर परेशानी लेना और दूसरों को भी हलाकान करना। रुपए की बरबादी अलग। और ख़ासकर ऐसे समय, जब देश कङ्गाल हो रहा है।

पण्डित जी—हाय ! हाय ! रुपए-पैसे होते किस दिन के लिए हैं ? इन कामों में तो गाँव-गिराँव, घर-द्वार तक बिक जाते हैं, आबरू से बढ़ कर भला कहीं रुपया हो सकता है ? यह तो सोचिए आपको चलना पड़ेगा। इस तरह की बातों से आप छुट्टी थोड़े ही पा जायँगे ?

मैं—कौन मैं ? माफ़ कीजिए। एक दफ़े एक बारात में गया, भूखों मर गया। दूसरी दफ़ा खाना पड़ा तो बेवक्त खाने-पीने से महीना भर तक बीमार पड़ा रहा। तीसरी बार कच्ची पूड़ियाँ खाते-खाते पेचिश हो गई। चौथे मरतबे किसी रस्म पर समधियों में जो तक-रार हुई तो डण्डे चल गए। भागने तक का रास्ता न मिला। यही ग़नीमत हुई कि खोपड़ी फूटने से बच गई। तभी से चाहे कोई नाराज़ हो या ख़ुश, मैं किसी बारात में नहीं जाता और ख़ासकर देहात में।

पण्डित जी—तो भइया मधनगरा देहात थोड़े ही है। उन्नाव शहर से कुल तीन ही कोस पर तो है। जो गाँव शहर से इतना मिला हो उसमें देहातीपन कहाँ रह सकता है ? उस पर लड़की के पिता स्वयं एक रिया-सत के उच्च पदाधिकारी हैं। उन्नाव शहर के सभी अफ़-सरों से उनका मेल-जोल है। वहाँ के बड़े-बड़े हाकिम, वकील-बालिस्टर सभी उनके यहाँ आयँगे। तभी तो आप लोगों को कष्ट दे रहा हूँ कि हमारी तरफ़ भी दस-बीस बड़े आदमियों की भीड़ हो जाए। क्या बताऊँ, आपके पिता जी अभी तक इलाहाबाद से लौटे नहीं। और बारात कल सुबह ही की गाड़ी से जाने वाली है। नहीं तो मैं उनको भी हाथ-पाँव जोड़ कर ले चलता। इसलिए अब आप ही पर भरोसा है। और यह पगड़ी आपके चरणों पर है......!

मैं—अरे ! राम ! राम ! आप ब्राह्मण देवता होकर यह क्या करते हैं पण्डित जी ? नाहक़ आप मेरे पीछे पड़े हुए हैं। मैं बारातों में जाने से क़सम खा चुका हूँ। यहाँ तक कि हाल ही में मेरी सगी स्त्री के सगे भाई की शादी थी और मैं उसमें नहीं गया। यह तो आप जानते ही हैं।

"और पण्डित जी यह भी जानते होंगे कि उसमें आपके पिता जी गए थे, इसलिए वहाँ घर भर के जाने की ज़रूरत न थी।" यह कहते हुए हमारे सहपाठी मिस्टर लॉजीशियन, जिन्होंने हमारे साथ ही यहाँ वकालत शुरू की थी, कमरे में फट पड़े। और आते ही इन्होंने पण्डित जी की तरफ़ से ऐसी पैरवी की कि अन्त में मुझसे कहला ही कर छोड़ा कि अच्छा भाई चलूँगा।

पण्डित जी के जाने के बाद मैंने लॉजीशियन को फटकारना शुरू किया—अजब आदमी हो। तुम्हें बारात में जाने का बहुत शौक़ है तो तुम्हीं जाते, मुझे काहे को इस झगड़े में फँसाया ?

लॉजीशियन—उस्ताद, बिना तुम्हारे मज़ा जो नहीं आता। 'वह महफ़िल वीरान जहाँ भाँड़ न बाशद।'

मैं अपनी उसी धुन में बकता गया—तब क्या बहुत सुधार-सुधार चिल्लाया करते हो ? यों कहने को तो अक्सर कहा करते हो कि शादी में बारात ले जाना बहुत बुरा है। इसी से सारे झगड़े-बखेड़े पैदा होते हैं। आजकल मुल्क की माली हालत ऐसी ख़राब हो रही है कि दो-चार मिहमानों की एक वक्त भी मिहमा-नदारी करते नहीं बन पड़ती। उस पर चार-चार दिन तक किसी के घर एक फ़ौज का पड़ाव डाल देना कहाँ की अक़्लमन्दी है। बस दूल्हे के साथ ख़ाली घर वालों ही का जाना बहुत काफ़ी है। मगर जब वक्त पड़ा तो तुम ख़ुद ही दुम दबा गए। लगे पण्डित जी से राग में राग मिला कर कहने कि हाँ भाई आबरू का मामला है, ज़रूर चलना चाहिए।

लॉजीशियन—अस्तग़फ़िरुल्लाह ! यह कहिए इस वक्त आपके सर पर सुधार का भूत सवार है। अजी रिफ़ॉर्मर साहब, हर जगह तलवार नहीं चलाई जाती। यह सुधार का बड़ा ही मुख्य नियम है। अगर इनसे कहीं कह देता कि हम नहीं जायँगे तो सुबह तक दरवाज़े पर चक्कर लगाते-लगाते हमारा द्वार खोद डालते और ज़बरदस्ती हमें उठा कर ले जाते।

मैं—तो अब क्या जाना नहीं पड़ेगा ?

लॉजीशियन—जाने वाले को कुछ कहता हूँ। इसी-लिए तो कह दिया कि कल एक ख़फ़ीफ़ा का बहुत ज़रूरी मुक़दमा है। बारात के साथ तो नहीं जा सकता, मगर मुक़दमा करके दोपहर की गाड़ी से ज़रूर आऊँगा।

मैं—यह तो सरासर धोखेबाज़ी है।

लॉजीशियन—क्या करता ? न मानने वाले असा-मियों को इसी तरह राह पर लाया जाता है, और उसी तरकीब से अपना भी गला छुड़ाया जाता है। नहीं उल्टे लेने के देने पड़ जाएँ। इसे धोखेबाज़ी नहीं, कूटनीति कहते हैं !

मैं—बस अपनी कूटनीति अपने घर रखिए। मुझे फँसा कर देखता हूँ, तुम अब कैसे निकल जाते हो। मैं भी अब बारात के साथ न जाकर महज़ तुम्हें ले जाने की ख़ातिर दोपहर की गाड़ी से जाऊँगा।

लॉजीशियन—यह बात ? ख़ैर ! जब पण्डित जी को तुम पर इतना भरोसा होगा कि तुम्हें दोपहर की गाड़ी से आने के लिए छोड़ जाएँ तब तो।

मैं—होगा कैसे नहीं ? मैं क्या तुम्हारी तरह धोखे-बाज़ हूँ कि कहूँ कुछ और करूँ कुछ। पण्डित जी से कह दूँगा कि बिना मेरे लॉजीशियन अकेला पड़ कर हर्गिज़ नहीं आएगा।

लॉजीशियन—देखा जायगा। अब तो तुम्हें अपना कच्चा चिट्ठा सब बता ही दिया। उस पर भी डरता हूँ कि तुम कहीं फिर अपनी सी न कर जाओ।

मैं—अपनी सी के क्या मानी ?

लॉजीशियन ने मुस्करा कर जवाब दिया—वही जो सदा करते आए हो।

यह अलबत्ता समझ में नहीं आया।

२

सचमुच लॉजीशियन ने पण्डित जी को न जाने कैसी पट्टी पढ़ा रक्खी थी कि उन्हें मेरी बातों का किसी तरह विश्वास ही नहीं होता था। बल्कि वह उल्टे यही समझते थे कि मैं अपनी जान छुड़ाने के लिए बहाना कर रहा हूँ। इसलिए उन्होंने मुझे अपने साथ ही बारात में ले जाने के लिए और भी ज़िद पकड़ ली। यहाँ तक कि तीन ही बजे रात से मेरे घर पर धावे शुरू हो गए। और पाँच बजते-बजते मैं पण्डित जी के दरवाज़े पर ज़बरदस्ती पकड़ कर लाया गया। उस वक्त मैंने लॉजीशियन की कूटनीति का फ़ायदा समझा और जाना कि दुनिया में बिना इसके किसी भलेमानुस का गुज़र नहीं हो सकता। लॉजीशियन भी वहीं बारात की रवानगी के इन्तज़ाम में मौजूद था। आख़िर उसीने जब कहा कि—"अगर यह किसी वजह से इस वक्त नहीं जा सकते तो कोई हर्ज नहीं। मैं इन्हें अपने साथ लेता आऊँगा। अगर मुझे मुक़दमे से छुट्टी न मिली या और कोई ज़रूरी काम फट पड़ा तो भी मैं इन्हें तो भेज ही दूँगा। चाहे जैसे बन पड़े। ख़ातिरजमा रखिए।"—तब जाकर पण्डित जी ने किसी तरह जान छोड़ी। वाह री अक़्ल ! उन्होंने एतबार भी किया तो किस पर ? मेरी शिकायतों और दलीलों का अच्छा नतीजा निकला !

आख़िर बारात चलने के लिए जमा हो गई। मगर जिनको पण्डित जी बड़े आदमी समझते थे, वे एक नहीं दिखाई पड़े। हाँ, उनकी जगह पर उनके लड़के-वाले और ऐरे-ग़ैरे रिश्तेदार, जिनसे पण्डित जी से जान-पहचान तक नहीं थी, एवज़ीदार बन कर दुगने की तादाद में अलबत्ता जुट गए। गोया बारात मित्र-मण्डली के ख़ान्दानों की पार्लामेण्ट है, जिसमें हर ख़ान्दान का कोई न कोई प्रतिनिधि ज़रूर होना चाहिए। यह लोग माँगी हुई गाड़ियों और मोटरों पर, जिस तरह से छकड़े पर बोरे लादे जाते हैं, दौड़-दौड़ कर लदने लगे। सवारियाँ कम और आदमी ज़्यादे, उस पर दूसरे खेवे के लिए न समय ही था और न किसी में इन्तज़ार करने के लिए दम। बस बारातियों में हो गई भीड़। ख़ैर, किसी तरह स्टेशन पर बारात पहुँची। लॉजीशियन के साथ वहाँ तक देख-रेख के लिए हमें भी जाना पड़ा। पण्डित जी ने मारे अक़्लमन्दी के रेल की एक ही गाड़ी 'रिज़र्व्ड' कराई थी और न्योता दिया था सारे शहर भर को। बारातियों के एक ही रेला में वह ठसाठस भर गई। मगर प्लेटफ़ॉर्म पर की भीड़ फिर भी कम न हुई। डाँट-डपट और लड़-झगड़ कर किसी तरह उस गाड़ी में कुछ और भी ठूँसे गए। जब तक भीतर गाली-गुफ़्ता के साथ ढकेलम-ढकेला शुरू हो गया। इस शोर-गुल में रेल के कर्मचारीगण फट पड़े और लगे मुसाफ़िर गिनने, तब तो पण्डित जी के होश उड़ गए। बेचारे सिकुड़ कर कोने में दबक रहे और टिकट कलेक्टरों ने आधे से ज़्यादे आदमी उतार दिए। यह लोग अपनी यह आवभगत देख पण्डित जी पर उबल पड़े। लगे गालियाँ दे-देकर कहने कि जब इसे हम लोगों को ले जाने का दम नहीं था तो किस बिरते पर न्योता देकर बुलाया? इन आबरू की लाज रखने वालों ने पण्डित जी की अच्छी आबरू बनाई। बड़ी ख़ैरियत हुई कि गाड़ी छूट गई, नहीं तो बेचारे पर न जाने और कौन सी आफ़त आती? बारात ले जाने वाले और जाने वालों की जब यह हालत है तो हिन्दू-समाज को चाहिए कि महाब्राह्मणों की तरह बारातियों की भी एक जाति फ़ौरन बना दे, ताकि किसी को न ख़ुशामद करने की ज़रूरत पड़े और न शिकायत करने की नौबत आए। जब जितने बारातियों की ज़रूरत हो, चट किराए पर बुला लिए जाया करें। बस झगड़ा ख़तम। उम्मीद है, मेरे इस प्रस्ताव पर हिन्दू-समाज ज़रूर ध्यान देगा। मगर जब अक़्ल होगी तब।

शादियों में जाने से मैं पहिले ही घबड़ाता था। उस पर स्टेशन पर का हाल देख कर मेरी तबियत कुछ ऐसी खट्टी हुई कि मकान आकर जी में ठान लिया कि बला से मेरी क़समें टूटें या पण्डित जी नाराज़ हों, मगर अब मैं दोपहर की क्या, किसी भी गाड़ी से नहीं जाऊँगा। इस शादी में जाने के लिए मेरे राज़ी हो जाने का कारण कुछ और भी था। मगर उसको भी मैंने इस समय तिलाञ्जलि दे दिया। यह तो मैं जानता ही था कि लॉजीशियन जाएगा नहीं और उसीको ले जाने के लिए बात पड़ जाने पर मैं रुक गया था। मगर मेरे ताज्जुब की हद न रही, जब वही दोपहर की गाड़ी आने के डेढ़ घण्टे पहिले ही इस शादी में जाने के लिए तैयार होकर मेरे यहाँ आ धमका। मैंने घबड़ा कर पूछा—अरे! यह क्या? तुम तो जाने वाले नहीं थे?

लॉजीशियन—ऐसा नहीं कहता तो तुम मेरा साथ देने के लिए रुकते कैसे? यह भी कूटनीति थी। क्या मैं अकेले थोड़े ही जाता?

मैं—तुम तो अजब थाली के बैंगन मालूम होते हो। कभी इधर लुढ़कते हो और कभी उधर।

लॉजीशियन—मैं क्या करूँ, संसार में सफलता इसी में है कि समयानुसार अपनी नीति धड़ाधड़ बदलता रहे।

मैं—तो अब क्या तुम ब्याह-शादी में बारात ले जाने के फिर पक्ष में हो गए।

लॉजीशियन—भई वाह! कहाँ राम-राम और कहाँ टें-टें! मैं तो समझता था कि जब से तुम वकालत करने लगे हो तब से बहुत कुछ आदमी हो गए हो, दुनियादारी की बातें समझने लगे हो; मगर देखता हूँ कि अब भी कसर बाक़ी है। अरे भाई, बारात से क्या बहस? यहाँ तो सवाल अपने आने-जाने का है। अच्छा अब उठिए, चटपट चलने के लिए तैयार हो जाइए। अब सुधार-उधार पर लेक्चर झाड़ने का समय नहीं है।

मैं अपनी बुद्धि पर कटाक्षपूर्ण समालोचना सुन कर जल मरा। फिर भी अपना गुस्सा दबा कर रुखाई से इतना ही कहा—तुम्हें जाना हो जाओ, मैं तो नहीं जाने का।

लॉजीशियन—क्यों? क्यों? तब किस बिरते पर पण्डित जी के सामने इतना अकड़ते थे और सैकड़ों क़समें खाई थीं।

मैं—ख़रबूज़ा, ख़रबूज़ा देख कर रङ्ग पकड़ता है। मैं भी अपनी कुशलता अब अपनी नीति के बदलने ही में देखता हूँ।

लॉजीशियन अपनी ही तरह जवाब पाकर अपना सा मुँह लेकर रह गया, मगर झेंपती मिटाने के लिए हँस कर बोला—अल्लाह! आप नख़रा करना भी जानते हैं?

मैंने चिढ़ कर कहा—मुझे नख़रा करने की ज़रूरत? क्या मैं औरत हूँ? तुम शायद समझते होगे कि वहाँ जाने में मेरी भी ग़रज़ अटकी है, क्योंकि मेरे ससुर जी आजकल उन्नाव ही में हैं और वहीं मेरी श्रीमती जी भी हैं। इसलिए मैं इस शादी में जाऊँगा ज़रूर, ताकि ज़रा मैं अपनी ससुराल में भी जा सकूँ। क्यों, यही बात है न? मगर हज़रत, तुम्हें यह पता नहीं है कि मैं ससुराल जीते जी हर्गिज़ नहीं जा सकता। वहाँ जाने से मैंने क़सम खा ली है। ख़ासकर इसीलिए तो मैं अपने साले की शादी में नहीं गया था। मेरे ही न जाने की वजह से श्रीमती जी का अभी तक आना नहीं हुआ।

लॉजीशियन—अरे! यार तब तो नाहक़ मौक़ा हाथ से खोते हो। मैं तुम्हारी जगह पर होता तो मैं इस शादी में नाक के बल जाता। इधर पण्डित जी भी ख़ुश और उधर अपना भी दिल ख़ुश। इससे उम्दा बहाना तुम्हें श्रीमती जी से मिलने का मिल नहीं सकता।

श्रीमती जी की याद उभर पड़ी और इससे मेरी कुछ ऐंठ जाती रही। मैं ज़रा नर्म पड़ कर बोला—"आह! उनसे मिलना और साँप को हाथ से पकड़ना दोनों एक ही है। सारी ज़िन्दगी बीत गई और उनसे ...." बड़ी अक़्लमन्दी की कि मैं चुप हो गया। क्योंकि तुरन्त ही ख़्याल आया कि अपनी कम्बख़्ती का भेद कभी नहीं बताना चाहिए।

लॉजीशियन ने शायद मेरी बात सुनी नहीं। इसलिए उसने और ही धुन में पूछा—आख़िर ससुराल जाने से क्यों घबड़ाते हो?

मैं—घबड़ाने की कोई बात नहीं, मगर मैं वहाँ रहना नहीं चाहता; क्योंकि वहाँ के लोग ज़रा बेहूदे हैं। यही तो मुश्किल है।

लॉजीशियन—बस इतनी ही बात है? तुम्हारा मेरे साथ जाना और भी अच्छा है यार! मज़े से बारात की बारात की, लौटते समय ससुराल भी हो लिया। मैं ऐसी तरकीब बता दूँगा कि तुम्हें वहाँ ठहरने की ज़रूरत ही न पड़ेगी। बस दो घड़ी बैठे, बीबी साथ ली और खट से चले आए।

मैं—हाय! हाय! ऐसा जब कहीं मुमकिन हो तब तो। मैं अब तक जाकर उन्हें ले न आता? जब जाऊँगा तो वहाँ दो-एक दिन ठहरना ज़रूर ही पड़ेगा। और ठहरने में ....ख़ैर! मगर जब साले साहब की शादी में मैं वहाँ नहीं गया, तब अब जाऊँ भी तो कौन सा मुँह लेकर। इसीसे वह लोग मुझे अब बुलाते भी नहीं हैं।

लॉजीशियन—अजी वाह! इन बातों के चक्कर में न पड़ो। बस श्रीमती जी की याद करो और चल खड़े हो। बेड़ा पार है। मैं तो तुम्हारी मदद के लिए साथ ही हूँ। घबड़ाते किसलिए हो?

इसके बाद लॉजीशियन ने श्रीमती जी की याद दिला-दिला कर मुझे ऐसा बेक़ाबू कर दिया कि मेरी मुहब्बत भड़क उठी और उसके ताव से मेरी प्रतिज्ञा ही पिघल गई। फिर तो अपनी ससुराल जाकर श्रीमती जी से मिलने और उनको अपने साथ लाने की बड़ी-बड़ी तरकीबें सोची जाने लगीं। मगर अभी कोई राय ठीक नहीं हुई थी कि इतने में लॉजीशियन घड़ी देख कर बोल उठा कि—"अरे! यार गाड़ी आने में अब सिर्फ़ आधा ही घण्टा रह गया। बस अब झटपट स्टेशन चले चलो। वहीं यह बातें तय हो जायँगी।"

स्टेशन पहुँच कर लॉजीशियन एकाएक मेरा हाथ पकड़ कर बड़े ज़ोर से बोला—बाज़ी मार ली दोस्त! तरकीब सूझ गई।

मैं—क्या?

लॉजीशियन—सुनो। पण्डित जी की बारात मघनगरा गई है। वह उन्नाव से तीन ही कोस पर है। जिनके यहाँ शादी होगी वह सुन ही चुके हो कि बड़े आदमी हैं और उन्नाव के अफ़सरों से उनका मेल-जोल है। इसलिए उन्होंने तुम्हारे ससुर जी को ज़रूर न्योता दिया होगा......!

मैं—यह तो मैंने पहिले ही सोचा था। और इसी भरोसे पर मैं बारात की मुसीबतें झेलने को तैयार हो हो गया था, क्योंकि ससुर जी से वहाँ मुलाक़ात होगी और लाख मनमुटाव हो, आँख मिलते ही मुरव्वत आ ही जाती है। इसलिए वह बारात से अपने साथ मुझे अपने यहाँ ले ही जाते। मगर मैं किसी तरह वहाँ ठहरता नहीं। ज़रूरी मुक़दमों का बहाना करके तुरन्त ही भाग खड़ा होता। अगर वह भलेमानुस होंगे तो ऐसे वक़्त श्रीमती जी को मेरे साथ कर ही देंगे। मगर बाद को सोचा कि फिर भी यह दुविधे वाली बात है। वहाँ जाएँ भी और मुफ़्त में अपना सा मुँह लेकर लौटें, यह तो ठीक नहीं। उस पर बारातियों की ऐसी आवभगत देखी कि बेचारे गर्दन में हाथ दे-देकर रेल से उतारे गए। बस मेरी राय बदल गई।

लॉजीशियन—उस्ताद, सोचा तो था तुमने बहुत ठीक, फिर भी बिलकुल ग़लत। क्योंकि तुम यहीं देख चुके हो कि यहाँ के सभी बड़े आदमियों ने आख़िरी वक़्त पर एक न एक बहाना करके अपने-अपने एवज़ीदार भेज दिए, ख़ुद नहीं गए। कोई जाए कैसे? आजकल नौकरी पेशे वालों को बारातों में जाने के लिए फ़ुरसत कहाँ मिलती है? इसी तरह तुम्हारे ससुर जी भी देहात में जाने वाले असामी नहीं हैं, जब तक उन पर कोई ख़ास दबाव न पड़े। उस पर बिना तुम्हारे पिता के लिखे वह तुम्हारी श्रीमती जी को भेज नहीं सकते।

मैं—हाँ, यह तो सही कहते हो। तब?

लॉजीशियन—तब क्या, मैं तुम्हारे पिता की तरफ़ से तुम्हारे ससुर जी को ऐसा तार दिए देता हूँ कि ख़ासकर तुम्हीं से मिलने के लिए वह इस शादी में ख़ुद जाकर शरीक़ हों और दूसरे ही दिन तुम्हें वहाँ से लाकर वह तुम्हारी श्रीमती जी को तुम्हारे साथ फ़ौरन बिदा कर दें। एक दिन के लिए भी वह तुम्हें न रोकें।

मैं फड़क उठा। और दिल खोल कर लॉजीशियन की बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा—वाह दोस्त, यह तुम्हें ख़ूब सूझी। क्यों न हो, आख़िर मेरे ही दोस्त तो। मान गया। मगर तार में श्रीमती जी को फ़ौरन भेज देने के लिए कौन सा बहाना गढ़ोगे?

लॉजीशियन—यही तो सिर्फ़ सोचना रह गया है। मैं चाहता हूँ कि उसे एकाध घण्टे ख़ूब ग़ौर से सोच कर लिखूँ, ताकि तुम्हारे ससुर जी के दिल में पैठ जाए और ऐसी घटना गढ़ूँ जो उनको मालूम हो कि तुम्हारे रवाना हो जाने के बाद यहाँ हुई है, तभी तो वह तुमसे मिलने के लिए दौड़े हुए मधनगरा जायँगे।

मैं—बेशक! बेशक! तार तो ऐसा ही होना चाहिए, तभी काम बनेगा।

लॉजीशियन—मगर मुश्किल यह है कि इसके लिए मुझे रुकना पड़ेगा, और मैं पण्डित जी के आगे झूठा भी बनना नहीं चाहता।

मैं—हाँ, यह अलबत्ता एक अड़चन पड़ गई। और हाय! हाय! गाड़ी भी कम्बख़्त आ रही है। इतनी जल्दी में भला क्या हो सकता है? तुम्हें रुकना तो पड़ेगा ही।

लॉजीशियन—वाह! ऐसा भी कहीं हो सकता है? भला पण्डित जी क्या कहेंगे? दोस्ती में फ़र्क़ आ जायगा। यह गाड़ी गई तो और किसी गाड़ी से हम द्वार-चार में पहुँच नहीं सकते। और हम लोगों को—जो पण्डित जी के न पट्टीदार हैं और न सजातीय—बस उसी में शरीक होने से मतलब है। इसलिए अगर हम इस गाड़ी से न जा सके तो फिर हमारे लिए वहाँ जाना बिलकुल बेकार ही है।

मैं—पण्डित जी से तो तुम्हारी चार दिन की मुलाक़ात है और हमारी-तुम्हारी दोस्ती लड़कपन से है। इसका तो ज़रा ख़याल करो।

लॉजीशियन—नाहक़ मैं तुम्हें बुलाने गया। तुमने अजब धर्म-सङ्कट में डाल दिया। अच्छा पण्डित जी से मेरी तरफ़ से बहुत-बहुत माफ़ी माँग लेना और कह देना कि उनका मुक़दमा ख़तम नहीं हुआ, बल्कि कल पर टल गया।

मैं—कह दूँगा भाई। मगर तुम रुक जाओ। हाथ जोड़ता हूँ।

गाड़ी छूटी तो मैंने खिड़की से सर निकाल कर फिर उससे ताकीद कर दी—"दोस्त, तार देने में देर न होने पावे। मेरे पहुँचने से पहिले ही वह ससुर जी को मिल जाए। समझे, और बहाना ख़ूब......!" उसने गाड़ी के साथ दौड़ते हुए चिल्ला कर कहा—"समझ गया, समझ गया। ख़ातिर जमा रक्खो। मगर ज़रा मेरी पीठ ठोंक कर बताना तो कि मेरी कूटनीति कैसी रही।"

उसकी पीठ तो हाथ बढ़ा कर मैंने ठोंक दी। मगर उसके सवाल का जवाब देते न बन पड़ा। महज़ गाड़ी की घड़घड़ाहट के मारे।

(क्रमशः)

* * *

(२०वें पृष्ठ का शेषांश)

रखने वाले एक यूरोपियन विद्वान ने लिखा है कि सन् १९२६ में एक पौण्ड की चीज़ का मूल्य चुकाने के लिए इटली को १२१ 'लिरा' देना पड़ता था, परन्तु अब केवल ८८ देना पड़ता है। इस अवस्था की क्रमशः और भी उन्नति हो रही है। इसके साथ ही मुसोलिनी ने सरकारी ख़ज़ाने की भी उन्नति की है। सरकार को अब एक पैसे का भी घाटा नहीं है; बल्कि वह बड़ी तेज़ी से अपना पुराना ऋण चुका रही है। परन्तु सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि मुसोलिनी ने इसके साथ ही प्रजा पर लगे हुए कितने 'टैक्स' भी बन्द कर दिए हैं।

यूरोपियन देशों में आजकल आजीवन अविवाहित रहने की एक प्रथा सी चल पड़ी है। कितने ही युवक और युवतियाँ वैवाहिक बन्धन से विमुक्त रहना ही पसन्द करते हैं। मुसोलिनी ने ऐसे कुँआरों और कुँआरियों पर एक टैक्स लगा रक्खा है। पच्चीस से पैंतीस वर्ष के कुँआरों और कुँआरियों को साल में ३५ लिरा, ३५ से ५० वर्ष वालों को प्रति वर्ष ५० लिरा और ५० से ६६ वर्ष तक २५ लिरा टैक्स देना पड़ता है। परन्तु यह कर जनता से रुपए वसूल करने की इच्छा से नहीं, वरन् इटली की घटती हुई जन-संख्या की वृद्धि के लिए लगाया गया है। इस अभिनव कर द्वारा लाखों की आय होती है, वह सरकारी ख़ज़ाने से बिलकुल अलग रक्खी जाती है और देश के नवजात शिशुओं तथा प्रसूतियों के उपकारार्थ ख़र्च की जाती है।

मुसोलिनी ने ३१५ लिरा अपने देशवासियों से ऋण लेकर 'बैङ्क ऑफ़ इटली' में जमा कर दिया है। इस रक़म से जो आय होती है, वह देश के शिल्प-वाणिज्य की उन्नति के लिए ख़र्च की जाती है। जहाज़ी व्यवसाय में इङ्गलैण्ड के बाद इटली का ही नम्बर था, इसे मुसोलिनी ने और भी समुन्नत कर दिया है। ज़्यादा माल ढोने वाले बहुत से नए जहाज़ तैयार किए गए हैं। रेशम के काम के लिए इटली संसार का अन्यतम श्रेष्ठ स्थान समझा जाता है। इसलिए मुसोलिनी ने इस ओर विशेष रूप से ध्यान दिया है और आशा की जाती है, इस काम में संसार का कोई भी देश इटली की समता नहीं कर सकेगा। इस रेशम के व्यवसाय द्वारा आजकल इटली को पाँच करोड़ सालाना की आमदनी है। इसके साथ ही नक़ली रेशम का व्यवसाय भी वहाँ बड़े ज़ोरों से होता है। मुसोलिनी की अनवरत चेष्टा से वहाँ खाद्य पदार्थों के मूल्य में आधे से भी अधिक की कमी हो गई है। इसके सिवा बेकारों की संख्या भी वहाँ उत्तरोत्तर घट रही है। देशोन्नति सम्बन्धी ऐसा कोई विभाग नहीं है, जिस ओर मुसोलिनी ने ध्यान न दिया हो। सारे देश में नए-नए रास्ते निकल रहे हैं, नए-नए स्कूल और कॉलेज खुल रहे हैं। रेल, नहर, कारख़ाना, बन्दरगाह, वन-विभाग और मत्स्य-विभाग की भी ख़ासी उन्नति हो रही है। मुसोलिनी का शासन किसी के धार्मिक विचारों में हस्तक्षेप नहीं करता।

देश की भीतरी शान्ति की प्रतिष्ठा के लिए भी मुसोलिनी ने कम चेष्टा नहीं की है। 'माफ़िया' नाम के विख्यात डाकू-दल का उसने मूलोच्छेद कर डाला है। चोरों, ठगों तथा अन्यान्य अवैध उपायों से जीविका अर्जन करने वालों को भी उसने नेस्तोनाबूद कर डाला है।

बेनितो मुसोलिनी प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली का प्रबल विरोधी है। उसका यह सिद्धान्त है कि—"राजा ही राष्ट्र की मूर्ति है! प्रजा व्यक्तिगत भाव से सदैव ही नियम और शृङ्खला भङ्ग किया करती है। शासन-तन्त्र का कर्तव्य है, नियम और शृङ्खला की रक्षा करना। प्रजा अपने शासन का भार राजशक्ति को सौंप सकती है, पर वह स्वयं उसे परिचालित नहीं कर सकती। जिस समय किसी जाति के किसी स्वार्थ-विशेष की रक्षा का प्रश्न सामने आता है, उस समय कोई भी प्रजातन्त्र जन-साधारण से राय लेकर कार्य नहीं करता। प्रजा की सम्मति से शासन-कार्य चलाने की बात एक व्यर्थ की कल्पना है। इसके द्वारा कोई कार्य नहीं हो सकता।

"भगवान और इटली का नाम लेकर शपथ करता हूँ—इटली के नाम को अधिकतर उज्ज्वल करने के लिए जिन लोगों ने जीवन विसर्जन किया है, उनका नाम लेकर शपथ करता हूँ कि जब तक जीवित रहूँगा तब तक मन, वचन और कर्म से इटली का मङ्गल-साधन किया करूँगा। हम पवित्र तथा अविचल भाव से इटली की सेवा करेंगे। इस सम्बन्ध में सुविधावाद और सावधानतावाद को हम कापुरुषता समझ कर घृणा करेंगे।

"हमारे फ़ैसिस्ट दल का यह उद्देश्य है कि इटली के सिर पर हाथ फेर कर जो जाति अपने अधिकार में विस्तार की चेष्टा करेगी, उससे हम युद्ध करेंगे। हम लोग यूरोप तथा सारे संसार में इटली का नाम क़ायम रखने की चेष्टा करेंगे।

"हमारी एक मात्र राजनीति है, इटली को प्यार करना। इटली के स्वर्गीय सौन्दर्य का प्रत्येक कण हमारे देश-प्रेम से ओत-प्रोत है। जो लोग जीवित हैं, वे देश के अतीत गौरव की रक्षा के लिए बाध्य हैं।

"प्रत्येक श्रेष्ठ आन्दोलन में कोई प्रधान पुरुष अवश्य ही रहता है और आन्दोलन का समस्त आघात भी उसे सहन कर लेना पड़ता है। समस्त अमङ्गल अपने सिर पर लाद लेना पड़ता है। यहाँ तक कि उस आन्दोलन की आग में उसे भस्म हो जाना पड़ता है। फ़ैसिस्ट विप्लव की पताका इस समय मेरे हाथ में है। परन्तु फ़ैसिज़्म मैं ही नहीं हूँ। मैं तो केवल मुखपात्र हूँ। फ़ैसिज़्म मुसोलिनी से बड़ कर है। मेरे बाद मेरा कार्य जीवित रहेगा।"

परन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो मुसोलिनी के इस सिद्धान्त को उसकी धूर्तता बताते हैं। उनकी धारणा है कि वह स्वयं बादशाह बनना चाहता है। शायद इसी-लिए ख़ास इटली में भी उसके बहुत से शत्रु हैं और उन्होंने उसे मार डालने की भी कई बार असफल चेष्टा की है।

प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली पर विश्वास रखने वाले विद्वानों का कथन है कि मुसोलिनी का स्वेच्छाचारतन्त्र चाहे जितना भी समुन्नत क्यों न हो जाए, उसका पतन अनिवार्य है। जिस समय प्रजातन्त्र सिर उठाएगा, उस समय मुसोलिनी का फ़ैसिज़्म अवश्य ही हवा में उड़ जायगा।

* * *

वारसाईल की सन्धि रद्द कर दो !!

[डॉक्टर "पोल खोलानन्द भट्टाचार्य" एम० ए०; पी० एच-डी०]

आज से १६ वर्ष, पूर्व तारीख़ ३ अगस्त सन् १९१४ को सर एडवर्ड ग्रे ने ब्रिटिश पार्लामेण्ट को युद्ध में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा था, कि "इङ्गलैण्ड हरदम न्याय का साथ देता रहा है। वह कभी भी संसार के छोटे तथा अशक्त देशों पर अन्याय होता हुआ नहीं देख सकता। इसलिए न्याय के रक्षार्थ हमें इस युद्ध में भाग लेना पड़ेगा।" आज हम लोगों को ख़ूब मालूम है, कि इङ्गलैण्ड ने युद्ध में क्यों भाग लिया था। क्या इङ्गलैण्ड इतना उदार है, इतना दयालु है, कि वह केवल दूसरे देशों के रक्षार्थ अपना सारा धन, सारी शक्ति लगाने को तैयार हो जावेगा; और अपना की विजय हुई। सन्धि का अवसर आया। इङ्गलैण्ड को अब बदला निकालने का अच्छा मौक़ा मिला, उसने जर्मनी को ख़ूब कसा। उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उसके पक्षपाती राष्ट्रों के भी अङ्ग-भङ्ग कर डाले। युद्ध का नुक़सान देने का भार भी सारा जर्मनी के ऊपर रख दिया। पर फिर भी अपना ढोंग न छोड़ा। असल में तो "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत का अक्षरशः अनुकरण किया गया। पर फिर भी यह कहा गया कि "हम लोग तो न्याय के लिए लड़े थे। हम लोग इस युद्ध के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। हम लोगों ने तो आक्रमणकारियों के

यूरोप की किश्ती बारूद के ऊपर रक्खी है; बस एक चिनगारी की कसर है !!

फ़ायदा देखे बिना युद्ध में कूद पड़ेगा? कदापि नहीं, इङ्गलैण्ड एक व्यापार-प्रधान देश है; वहाँ की जनता आर्थिक प्रश्नों को जीवन का सब से प्रधान प्रश्न समझती है। प्रत्येक राजनैतिक, व्यापारिक सम्बन्ध को वह रुपए, आने, पाई के तराज़ू में तौलती है। ऐसे देश की सरकार में भला इतनी सात्विकता, इतनी उदारता कहाँ पाई जा सकती है। असल कारण तो यह था, कि युद्ध के कुछ समय पूर्व इङ्गलैण्ड तथा जर्मनी में बहुत बड़ी प्रतिस्पर्धा थी। अपनी नवीन औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति द्वारा जर्मनी विलायती माल की बिक्री को घटा रहा था। वह अङ्गरेज़ी उपनिवेशों तक में अपना व्यापार बढ़ा रहा था। यह सब इङ्गलैण्ड भला चुपचाप बैठे हुए कैसे देख सकता था? वह तो एक मौक़ा ढूँढ़ रहा था कि युद्ध छिड़े और मैं इस देश की शक्ति का नाश करूँ। गत युद्ध ने उसे वह मौक़ा दिया। युद्ध में दोनों दलों ने ख़ूब नुक़सान उठाया, पर आख़िर में इङ्गलैण्ड अन्याय को रोकने के लिए युद्ध में भाग लिया था। इस युद्ध के लिए जर्मनी तथा उसके साथी ज़िम्मेदार हैं, इसलिए इस युद्ध से हमें जितनी हानि हुई है, वह सब इन लोगों से वसूल की जानी चाहिए।" जो शक्तिशाली है वह सब कुछ कर सकता है। जर्मनी को सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े। वह आगे युद्ध चला ही नहीं सकता था, क्या करता? युद्ध की सारी ज़िम्मेदारी उसके सिर पर रक्खी गई। वह यह भली-भाँति जानता था, कि यह ग़लत है, फिर भी क्या कर सकता था? उसने सारी शर्तें मान लीं!

आज १६ वर्ष के बाद जर्मनी की जनता यह देख रही है, कि अब वह अपने क्रूर विजेताओं के सामने गर्दन नहीं झुका सकती। वह इस सन्धि को मान कर प्रति वर्ष इतनी बड़ी आर्थिक हानि नहीं उठा सकती। आज जर्मनी की जनता अशान्त है। वह जर्मनी के आन्तरिक शासन में उस दल का साथ देने को तैयार है, जो सन्धि को रद्द कर देगा और उसकी अन्यायपूर्ण शर्तों का तिरस्कार करेगा।

इसी बीच में यूरोप के अन्य देशों में भी कुछ परिवर्तन हुआ। बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ तथा इतिहास के आचार्यों ने इस प्रश्न का पूरी तरह से निरीक्षण किया। उससे सम्बन्ध रखने वाली सब समस्याओं का पूरी तौर से अध्ययन किया। उन्हें भी मालूम हुआ कि वारसाईल की सन्धि बिलकुल अन्यायपूर्ण सिद्धान्तों पर निर्धारित है। वे कहते हैं कि इस महायुद्ध की ज़िम्मेदारी केवल जर्मनी तथा उसके साथियों के सिर पर मढ़ना न्याय-सङ्गत नहीं है।

पर यदि इस युद्ध के लिए जर्मनी ज़िम्मेदार नहीं है, तो वह युद्ध-हानि का इतना बड़ा भाग क्यों देवे? प्रति वर्ष जर्मनी इतनी बड़ी आर्थिक हानि क्यों उठावे? जर्मनी का साम्राज्य स्थापित करने का तथा उपनिवेश बनाने का अधिकार क्यों दबा लिया जावे? फ़्रान्स के विद्वान राजनीतिज्ञ पॉनकारे ने सन् १९२० में स्वतः यह स्वीकार किया था कि "यदि यूरोप के मध्यस्थ राज्यों ने गत महायुद्ध शुरू नहीं किया था, तो सारी युद्ध-हानि उनके सिर पर क्यों रक्खी जावे? यदि इस युद्ध के लिए सब राष्ट्र ज़िम्मेदार हैं, तो न्याय की दृष्टि से युद्ध-हानि का भार भी सब राष्ट्रों में बराबर-बराबर बाँटा जाना चाहिए।" इसी तरह "फ़्रिंगो" ने भी कहा था कि "यदि गत युद्ध के लिए जर्मनी ज़िम्मेदार नहीं है तो वारसाईल की सन्धि अन्यायपूर्ण है।"

संसार की शान्ति के लिए यह आवश्यक है कि वारसाईल की सन्धि रद्द कर दी जावे। जर्मनी की जनता इस सन्धि के विरुद्ध आन्दोलन उठा रही है। यदि इस मौक़े पर सन्धि की शर्तों को बदलने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया तो निराश होकर, उसे हथियार उठाने पड़ेंगे। अब यह कहना कि जर्मनी तथा उसके साथी क्या कर सकते हैं, उनकी क्या शक्ति है जो वे ब्रिटिश दल का सामना कर सकें, यह बिलकुल फ़िज़ूल है। अब यूरोप की राजनैतिक दशा में प्रतिदिन परिवर्तन होता जाता है। राजनैतिक सम्बन्ध भी, किसी भी दिन टूट सकते हैं। सम्भव है कि किसी समय यूरोप के कई शक्तिशाली राष्ट्र जर्मनी को सहायता देने को तैयार हो जावें। इटली की सरकार ने तो अपना रुख़ दिखा ही दिया है। वह चाहती है कि गत सन्धि की शर्तों में परिवर्तन कर दिया जावे। जब यह सन्धि अन्यायपूर्ण सिद्धान्तों पर निर्धारित है तो भला वह कितने दिनों तक चल सकती है। "बकरे की माँ कहाँ तक ख़ैर मनाएगी" एक न एक दिन तो यूरोप जर्मनी की दुखमय आवाज़ सुनने को तैयार हो जावेगा। इङ्गलैण्ड को चाहिए कि वह ऐसा मौक़ा आने के पहिले ही इस अन्यायपूर्ण सन्धि का अन्त कर दे। और एक नई सन्धि कर ले जिससे युद्ध की हानि केवल जर्मनी तथा उसके साथियों को नहीं, वरन गत युद्ध में भाग लेने वाले सब राष्ट्रों के सिर पर रक्खी जावे। यदि यह नहीं हुआ तो क्या होगा, यह आज यूरोप के सब राजनीतिज्ञ अच्छी तरह जानते हैं। हाल ही में जर्मनी का चुनाव ख़तम हुआ है। वहाँ की प्रजा ने यह साफ़ दिखला दिया है, कि हम उसी दल का साथ देने को तैयार हैं, जो वारसाईल की सन्धि और लीग ऑफ़ नेशन्स के विरुद्ध हैं। जर्मनी के साम्यवादी तथा फ़ैसिस्ट-दल यह करने को तैयार हैं और इस नए चुनाव में उनके प्रतिनिधियों की संख्या की आश्चर्यजनक उन्नति हुई है। इङ्गलैण्ड को अब सोच-समझ कर काम करना चाहिए। आजकल वह ऐसे ही अपनी सारी शक्तियाँ साम्राज्य की रक्षा में लगाए हुए है, क्या वह आज एक नवीन महायुद्ध के लिए तैयार है?

* * *

इतिहास के कुछ पृष्ठ

[श्री० 'इतिहास-कीट', एम० ए०]

(गताङ्क से आगे)

अङ्गरेज़ों के षड्यन्त्र

पूना के ब्राह्मणों ने यह सन्धि करके निश्चय ही यह आशा की होगी कि वे अपने नवीन विदेशी मित्र के साथ कुछ दिनों तक शान्तिपूर्वक रह सकेंगे ; किन्तु उन्हें अपनी इस भयङ्कर मूर्खता का फल भोगना अभी शेष था। इस सन्धि की सूचना मिलते ही कम्पनी के डायरेक्टरों ने फ़ौरन वारन हेस्टिंग्स को लिख भेजा—

"We approve, under every circumstance, of the keeping of all the territories and possessions ceded to the Company by the treaty concluded with Raghoba ; and direct that you forth with adopt such measures as may be necessary for their preservation and defence."*

अर्थात्—"हम सभी परिस्थितियों में उन सब प्रदेशों को अपने ही अधिकार में रखने के इच्छुक हैं, जो सूरत वाली सन्धि के अनुसार कम्पनी को मिले थे, और हम आपको आदेश देते हैं कि उन प्रदेशों को अपने क़ब्ज़े में रखने और उनकी रक्षा करने के लिए जिस उपाय के अवलम्बन की आवश्यकता हो, आप उसी उपाय से काम लें।"

इस प्रकार कम्पनी के डायरेक्टरों ने मानो वारन-हेस्टिंग्स को विश्वासघात करने का परवाना दे दिया। हेस्टिंग्स के लिए इतना इशारा काफ़ी था। उसने इस पत्र के मिलते ही पुरन्दर की सन्धि का उल्लङ्घन करना आरम्भ कर दिया। उसने न तो राघोबा को सहायता देना बन्द किया और न बसई का क़िला पेशवा-सरकार को वापस किया। एक ओर कम्पनी के कर्मचारी जहाँ इस प्रकार पेशवा-सरकार को धोखा दे रहे थे और उसके साथ शत्रुता का बर्ताव कर रहे थे, वहाँ दूसरी ओर वे पुरन्दर की सन्धि से लाभ उठाने से भी न चूके। उन्होंने पुराने षड्यन्त्रकारी मॉस्टिन को अपना दूत बना कर पुनः पूना-दरबार में भेजा। जिस मॉस्टिन ने मराठों में फूट उत्पन्न करके मराठा साम्राज्य के नाश का बीज बो दिया था, उसी मॉस्टिन के पुनः दरबार में भेजे जाने का पेशवा के मन्त्रियों ने घोर विरोध किया। किन्तु उनकी कौन सुनता था ? कम्पनी के अधिकारी और कर्मचारी तो येन-केन-प्रकारेण मराठों का सर्वनाश करने पर ही तुले हुए थे। सन् १७७७ ई० के मार्च में मॉस्टिन पूना पहुँच गया।

इस बार मॉस्टिन को पूना-दरबार में फूट उत्पन्न करने में काफ़ी सफलता मिली। इसने पेशवा के एक मन्त्री मोरोबा को अपनी ओर मिला कर नाना फड़नवीस से उसकी लड़ाई करा दी ; पेशवा के प्रधान-मन्त्री सखाराम बापू और फड़नवीस में भी फूट डलवा दी। इन सब झगड़ों ने इतना उग्र रूप धारण किया कि दरबार में नाना का पद मोरोबा को मिल गया और देश-भक्त नाना दरबार के कार्यों से उदासीन होकर पुरन्दर में रहने लगा। नाना की अनुपस्थिति में मोरोबा ने अङ्गरेज़ों से मिल कर तत्कालीन पेशवा के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना आरम्भ किया। मोरोबा ने बम्बई-काउन्सिल को निमन्त्रण दिया कि आप राघोबा को, पेशवा बनाने के लिए शीघ्र पूना ले आइए। पूना के मन्त्रि-मण्डल को किसी प्रकार इस गुप्त षड्यन्त्र का पता लग गया। अब पेशवा के मन्त्रियों को अपनी भूल मालूम हुई। उन लोगों ने फ़ौरन मोरोबा को क़ैद कर लिया और नाना फड़नवीस को पुरन्दर से बुला कर पेशवा का प्रधान मन्त्री नियुक्त किया।

इस षड्यन्त्र में भी असफल होने पर वारेन हेस्टिंग्स ने दूसरी बार युद्ध की तैयारी शुरू की। उधर बम्बई, मद्रास और बङ्गाल में पूना पर आक्रमण करने के लिए सेनाएँ प्रस्तुत की जाने लगीं, इधर मॉस्टिन नाना फड़नवीस और उसके साथियों को विश्वास दिलाता रहा कि कम्पनी पुरन्दर की सन्धि को पूर्णतः पालन करना चाहती है और उसकी सभी शर्तें बहुत ही शीघ्र पूरी कर दी जाएँगी। सन् १७७८ ई० के मई मास में हेस्टिंग्स ने एक विशाल सेना कलकत्ते से पूना की ओर रवाना कर दी। इस सेना को भोंसला, सिन्धिया, होलकर आदि कई भारतीय नरेशों के राज्यों से होकर गुज़रना था। हेस्टिंग्स ने बरार के राजा मूदाजी भोंसला के पास एक दूत भेज कर उससे कहलवाया कि इस समय सतारा की गद्दी ख़ाली है। आप यदि हमारा प्रस्ताव स्वीकार करें तो हम अपनी पूरी शक्ति लगा कर आपको सतारा का समस्त राज्य और पेशवा का पद दिलवाने के लिए तैयार हैं। मूदाजी भोंसला ने किसी कारणवश हेस्टिंग्स का यह प्रस्ताव तो स्वीकार न किया, किन्तु उसने बङ्गाल वाली सेना को अपने राज्य से होकर जाने की आज्ञा दे दी। अब हेस्टिंग्स को सिन्धिया और होलकर को धोखा देना बाक़ी रह गया। उसने इन दोनों को यह पट्टी पढ़ाई कि फ़्रान्सीसी सेना भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर आक्रमण करने वाली है। हम उसका सामना करने के लिए बङ्गाल से एक सेना भेज रहे हैं। आप लोग इस सेना को अपने राज्य से होकर जाने की आज्ञा दे दीजिए। सिन्धिया और होलकर दोनों फ़्रान्सीसी आक्रमण के धोखे में आ गए। इन लोगों ने हेस्टिंग्स की प्रार्थना स्वीकार कर ली। हेस्टिंग्स ने ठीक यही धोखा नाना फड़नवीस को भी देना चाहा, किन्तु दूरदर्शी नाना, हेस्टिंग्स के भुलावे में आने वाला व्यक्ति न था, उसने कम्पनी की सेना के आगे बढ़ने पर आपत्ति की, किन्तु हेस्टिंग्स ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब नाना ने कम्पनी की सेना की गतिविधि पर अपनी आपत्ति का कोई प्रभाव होता हुआ न देखा, तो विवश होकर युद्ध की तैयारी शुरू कर दी।

एक ओर से बङ्गाल की सेना शीघ्रतापूर्वक पूना की ओर बढ़ी आ रही थी, दूसरी ओर से बम्बई-काउन्सिल ने राघोबा के साथ एक विशाल सेना पूना पर आक्रमण करने के लिए रवाना कर दी। नाना भी असावधान न था। उसके गुप्तचरों का सङ्गठन इतना मज़बूत था कि पूना में बैठे ही बैठे उसे समस्त भारत की राजनीतिक अवस्था के सच्चे समाचार मिला करते थे। उस समय सिन्धिया और होलकर पूना में थे। नाना ने उन दोनों को बम्बई वाली सेना का मुक़ाबला करने के लिए भेजा। तलेगाँव में लड़ाई हुई। अङ्गरेज़ लोग बुरी तरह हारे और मराठों से सन्धि करके बम्बई वापस लौट गए। तलेगाँव की सन्धि में यह तय हुआ कि अङ्गरेज़ लोग अविलम्ब राघोबा को पूना-दरबार के हाथों में समर्पित कर देंगे, भड़ोच, सूरत आदि मराठों के जितने प्रदेशों पर कम्पनी ने क़ब्ज़ा जमा रक्खा है, उन सबको शीघ्र पेशवा-सरकार को वापस कर देंगे और बङ्गाल से जो सेना पूना की ओर बढ़ी आ रही है, उसे वापस लौट जाने का सन्देश भेज देंगे। अङ्गरेज़ों ने राघोबा को उसी समय मराठों के हवाले कर दिया और दो अङ्गरेज़ अफ़सरों को इस सन्धि की शर्तों के पूरी किए जाने के समय तक के लिए मराठों के पास बन्धक रख दिया। नाना फड़नवीस ने राघोबा और दोनों अङ्गरेज़ अफ़सरों को माधोजी सिन्धिया के ज़िम्मे कर दिया।

झूठ बोलना और धोखा देना कम्पनी के कर्मचारियों का परम प्रिय व्यवसाय था। बम्बई पहुँचते ही अङ्गरेज़ों ने बङ्गाल वाली सेना के नाम पत्र भेजा कि आप लोग जितना शीघ्र हो सके, बम्बई पहुँचने की चेष्टा कीजिए। वारेन हेस्टिंग्स को जब बम्बई वाली सेना की अपमान-जनक पराजय का पता लगा, तो उसने उसी समय बङ्गाल वाली सेना के सेनापति कर्नल गॉडर्ड को पत्र लिखा कि आप तलेगाँव की सन्धि की कुछ भी परवा न कीजिए और सीधे आगे बढ़ते चले आइए। कर्नल गॉडर्ड ने पेशवा-दरबार को विश्वास दिलाया कि हमारा उद्देश्य पेशवा-सरकार से लड़ना नहीं है, हम तो पेशवा के मित्र हैं। हम केवल फ़्रान्सीसियों का सामना करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। किन्तु नाना फड़नवीस ऐसी मीठी बातों के धोखे में आ जाने वाला नीतिज्ञ न था। जब उसने देख लिया कि कर्नल गॉडर्ड किसी तरह नहीं मानता और आगे बढ़ता ही चला आ रहा है, तो उसने माधोजी सिन्धिया को अङ्गरेज़ों का सामना करने के लिए गुजरात की ओर रवाना किया और मूदाजी भोंसला को आज्ञा दी कि तुम तीस हज़ार सेना लेकर फ़ौरन बङ्गाल पर चढ़ाई कर दो। निस्सन्देह नाना के उपाय आसन्न-विपत्ति को मार भगाने के लिए बहुत ही प्रबल थे; किन्तु नाना को पता नहीं था कि स्वार्थ-परता और विश्वासघात-रूपी रोग के कीटाणु मराठा-साम्राज्य की जीवनी-शक्तियों को निर्बल और मृतप्राय बना चुके हैं।

सिन्धिया और भोंसला का विश्वासघात

मूदाजी भोंसला एक प्रकार से पहले ही से वारेन हेस्टिंग्स के साथ मिल गया था। उसने बङ्गाल वाली सेना के वास्तविक उद्देश्य को जानते हुए भी उसे अपने राज्य से होकर जाने की आज्ञा दे दी थी। जब नाना ने मूदाजी भोंसला को बङ्गाल पर आक्रमण करने की आज्ञा दी तो मूदाजी नाना फड़नवीस को धोखे में रखने के लिए तीस हज़ार सेना लेकर बङ्गाल की ओर बढ़ा तो अवश्य, पर उसने वारेन हेस्टिंग्स को पहले ही एक गुप्त पत्र लिख दिया कि—"मैं यह आक्रमण केवल नाना फड़नवीस और अन्य मराठों को प्रसन्न रखने के लिए कर रहा हूँ। यह आक्रमण केवल दिखावा-मात्र है। मैं मार्ग में ही जान-बूझ कर इतनी देरी लगा दूँगा कि वर्षा-काल के पहले किसी तरह बङ्गाल की सीमा तक न पहुँच सकूँ, और उसके बाद बरसात का

* Letter of the Court of Directors to the Government of Bengal, as quoted in Mill's *History of British India.*

बहाना करके बरार वापस लौट जाऊँगा।" मूदाजी के आचरण के सम्बन्ध में इतना लिख देना ही यथेष्ट है कि उसने वारेन हेस्टिंग्स के साथ अपने वचन का अक्षरशः पालन किया। मूदाजी ने अपने देश को धोखा दिया; किन्तु विदेशियों के साथ उसने पूर्ण सच्चाई का व्यवहार किया।

अब माधोजी सिन्धिया का हाल भी सुनिए। माधोजी और अङ्गरेज़ों के बीच तलेगाँव में ही एक गुप्त सन्धि हो चुकी थी, जिसमें तय पाया था कि अङ्गरेज़ लोग माधोजी सिन्धिया को प्रकारान्तर से पेशवा के सब अधिकार दिला देंगे और उसे भड़ोच का ज़िला दे देंगे तथा उसके आदमियों को नक़द ४१ हज़ार रुपए देंगे। इसके अतिरिक्त अङ्गरेज़ों ने माधोजी से यह भी प्रतिज्ञा की कि वे उसके लिए यूरोपियन ढङ्ग की, और यूरोपियन अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित एक बहुत बड़ी सेना का प्रबन्ध कर देंगे, जिसके द्वारा थोड़े ही दिनों में माधोजी का प्रभाव समस्त भारत में प्रबल हो जायगा। इन प्रलोभनों में फँस कर माधोजी ने देश के प्रति अपने पवित्र कर्त्तव्य की अवहेलना की और राघोबा तथा दो अङ्गरेज़ बन्धकों को छोड़ दिया। इसके बाद माधोजी ने केवल दिखावे के लिए नाना फड़नवीस की आज्ञा मान कर गुजरात की ओर प्रस्थान किया, परन्तु वहाँ पहुँच कर अङ्गरेज़ों पर आक्रमण नहीं किया। गॉडर्ड की सेना गुजरात में पेशवा के प्रदेशों को मनमाने ढङ्ग से लूट रही थी और प्रजा को तबाह कर रही थी, किन्तु माधोजी इन रोमाञ्चकारी अत्याचारों को अपनी आँखों से देखते हुए भी अकर्मण्य की भाँति चुपचाप बैठ कर अपने शिविर में आराम करता रहा। वह स्वयं इस बात की फ़िक्र में था कि अङ्गरेज़ों के साथ मिल कर पूना पर आक्रमण करें और नाबालिग़ पेशवा को अपने क़ब्ज़े में कर लें।

कर्नल गॉडर्ड इस समय सूरत में बैठा हुआ एक ओर पूना पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कर रहा था, दूसरी ओर नाना फड़नवीस के पास सन्धि के लिए पैग़ाम पर पैग़ाम भेज रहा था। नाना ने स्पष्ट शब्दों में गॉडर्ड को लिख भेजा कि सन्धि के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की बातचीत होने के पहले अङ्गरेज़ों को पिछली सन्धि के अनुसार साष्टी का द्वीप और विद्रोही राघोबा को पेशवा-दरबार के हवाले कर देना होगा। किन्तु यह सब बातचीत केवल नाना को धोखा देने के लिए थी। जिस समय कर्नल गॉडर्ड की तैयारियाँ पूरी हो गईं, उसी समय उसने मराठों पर आक्रमण कर दिया। सब से पहले उसने अपने प्यारे मित्र माधोजी सिन्धिया पर एक दिन अचानक आक्रमण करके अपनी निष्कपट मित्रता का परिचय दिया! इस समय तक माधोजी से कर्नल गॉडर्ड का काम निकल चुका था। अब उसने माधोजी को अपने रास्ते से साफ़ कर देना ही उचित समझा। माधोजी की सेना लड़ने के लिए सावधान न थी; वह बात की बात में तितर-बितर हो गई। माधोजी जान बचा कर गुजरात से भागा। इस प्रकार माधोजी को देशद्रोह का उचित पुरस्कार देने के बाद कर्नल गॉडर्ड आगे बढ़ा। अब उसके लिए केवल पूना पर आक्रमण करना बाक़ी रह गया था।

नाना फड़नवीस का विराट् प्रयत्न

यह विपज्जनक परिस्थिति किसी भी साहसी सेनापति या कुशल राजनीतिज्ञ की हिम्मत तोड़ देने के लिए काफ़ी थी; किन्तु नाना फड़नवीस की कठिनाइयाँ जितनी ही बढ़ती जाती थीं, उसका प्रयत्न उतना ही विराट् रूप धारण करता जाता था। जब नाना फड़नवीस को माधोजी सिन्धिया के विश्वासघात और गॉडर्ड के घातक इरादों का पता चला, तो वह लेश-मात्र भी हतोत्साह या निराश न हुआ; बल्कि उसने समस्त भारत के प्रभावशाली नरेशों और नवाबों को अङ्गरेज़ों के विरुद्ध सङ्गठित करने का महान प्रयत्न आरम्भ किया। नाना ने ६ मई, सन् १७८० ई० को दिल्ली-सम्राट् के नाम एक पत्र में लिखा :—

"इन टोपी वालों (यूरोपियनों) के व्यवहार चालाकी और बेईमानी से भरे होते हैं। इनकी चाल यह है कि पहले तो ये किसी भारतीय नरेश को प्रसन्न करते हैं। उसे अपने साथ सन्धि करने के लाभ दिखाते हैं, और अन्त में उसे क़ैद करके स्वयं उसके राज्य पर अधिकार कर बैठते हैं। उदाहरण के लिए शुजाउद्दौला, मोहम्मदअली ख़ाँ, अरकाट के प्रान्त और तञ्जोर के नरेश इत्यादि की दशा देख लीजिए। अतः इन टोपी वालों का दमन करना आपका कर्त्तव्य है। केवल मात्र इसी उपाय से भारतीय नरेशों के सम्मान की रक्षा हो सकती है; अन्यथा विदेशी टोपी वाले इस देश के सभी राज्यों को हड़प लेंगे और समस्त देश को अपने क़ब्ज़े में कर लेंगे। ऐसा होना अच्छा नहीं है; यह भविष्य में सभी नरेशों के लिए घातक सिद्ध होगा। सम्राट समस्त पृथ्वी के स्वामी हैं। अतः यह सर्वथा उचित है कि सम्राट इस मामले की ओर ध्यान देना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझें। दक्षिण के सब नरेश आपस में मिल गए हैं। नवाब, निज़ामअली ख़ाँ, हैदर नायक और पेशवा—इन चारों में सन्धि हो गई है; इन्होंने चारों ओर से अङ्गरेज़ों का दमन करने का निश्चय कर लिया है और अपने-अपने राज्य में अङ्गरेज़ों से युद्ध करने के लिए सेना, तोपख़ाना और अस्त्र-शस्त्र का प्रबन्ध भी कर लिया है।

"उत्तर भारत में सम्राट और नजफ़ ख़ाँ को चाहिए कि वे सब राजाओं को मिला कर अङ्गरेज़ों का दमन करें। इससे साम्राज्य की कीर्त्ति और प्रतिष्ठा दोनों की वृद्धि होगी।"

नाना ने इसी आशय के पत्र दक्षिण भारत के प्रायः समस्त छोटे-बड़े नरेशों को लिख कर उन्हें अङ्गरेज़ों के विरुद्ध एक सङ्घ में आबद्ध होने का आह्वान् किया। इस महान कार्य में नाना को अभूतपूर्व सफलता मिली। जैसा कि उपरोक्त पत्र से प्रकट है, हैदराबाद के निज़ाम, मैसूर के सुलतान हैदरअली और पेशवा-दरबार में आपस में यह बात तय हो गई कि वे लोग एक साथ अपने-अपने राज्य के समीपवर्ती अङ्गरेज़ी प्रान्तों पर आक्रमण करके अङ्गरेज़ों को भारतवर्ष से बाहर निकाल दें। निस्सन्देह नाना अपने समय का एक ही राजनीतिज्ञ था। वह जितना ही देशभक्त था, उतना ही दूरदर्शी और नीतिकुशल।

माधोजी सिन्धिया की शक्ति का छलपूर्वक नाश करने के बाद कर्नल गॉडर्ड अपनी विशाल सेना सहित पूना की ओर बढ़ा। रास्ते में उसने पेशवा के प्रदेशों को जी भर कर लूटा और प्रजा को तबाह किया। पूना से कुछ दूर भोरघाट तक पहुँचते-पहुँचते हरिपन्त फड़के, परशुराम भाऊ और होलकर की सेनाओं ने आगे बढ़ कर उसे घेर लिया। एक घमासान युद्ध के पश्चात विजय-लक्ष्मी ने इस बार भी मराठों का ही साथ दिया। अङ्गरेज़ों को जान और माल दोनों की भारी हानि उठा कर बम्बई की ओर भागना पड़ा।

वारेन हेस्टिंग्स को जब यह समाचार मालूम हुआ कि नाना फड़नवीस, निज़ाम और हैदरअली में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध एक सन्धि हो गई है, तो उसने फ़ौरन इस सङ्घ में फूट डालने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया। मूदाजी भोसला के विश्वासघात के कारण बङ्गाल पर मराठों का आक्रमण किस प्रकार विफल हो चुका था—इसका वर्णन पहले ही हो चुका है। अब अङ्गरेज़ों के दो प्रबल विरोधी निज़ाम और हैदरअली रह गए थे। इनमें से भी हेस्टिंग्स ने निज़ाम को अपनी ओर फोड़ लिया, किन्तु हैदरअली के साथ उसकी एक भी चाल सफल नहीं हो सकी। हैदर ने नाना का सन्देश पाते ही अङ्गरेज़ों के साथ युद्ध छेड़ दिया। अङ्गरेज़ हार पर हार खाने लगे।

सालबाई की सन्धि

उधर कर्नल गॉडर्ड की लज्जाजनक पराजय, इधर वीर हैदरअली के भयानक हमले—दोनों ने मिल कर वारेन हेस्टिंग्स की हिम्मत तोड़ दी। वह निराश हो गया। घबराहट और भय से व्याकुल होकर हेस्टिंग्स ने पेशवा-दरबार से सन्धि की प्रार्थना की। १३ अक्टूबर सन् १७८१ ई० को वारेन हेस्टिंग्स ने पुनः माधोजी सिन्धिया से एक गुप्त सन्धि की और उसके द्वारा नाना फड़नवीस से सन्धि की बातचीत आरम्भ की। ११ सितम्बर सन् १७८१ ई० को मद्रास-काउन्सिल ने भी हैदर के हमलों से त्रस्त होकर बड़ी नम्रतापूर्वक नाना से सन्धि की प्रार्थना की। इसके पहले अङ्गरेज़ लोग पुरन्दर और तलेगाँव में दो बार मराठों से सन्धि करके दोनों सन्धियों को जान-बूझ कर भङ्ग कर चुके थे। किन्तु लज्जित होना कम्पनी के कर्मचारियों को शायद मालूम न था! इस बार मद्रास-काउन्सिल ने पेशवा-दरबार से सन्धि की प्रार्थना करते हुए बड़ी निर्लज्जतापूर्वक ईश्वर, ईसामसीह, इङ्गलैण्ड के सम्राट, अङ्गरेज़ जाति और कम्पनी—पाँचों की शपथ खाकर प्रतिज्ञा की और विश्वास दिलाया कि इस बार हम जो सन्धि करेंगे, उसका कभी उल्लङ्घन न करेंगे और उसकी सभी शर्तों का यथावत् पालन करेंगे। कई महीनों के पत्र-व्यवहार के बाद १७ मई सन् १७८२ ई० को सालबाई नामक स्थान पर पूना-दरबार और कम्पनी के बीच तीसरी बार सन्धि हुई, जिसमें यह तय पाया कि प्रारम्भ से लेकर अब तक छल से अथवा बल से कम्पनी ने पेशवा के जितने प्रदेशों पर अधिकार कर लिया है, वे सब प्रदेश पेशवा को वापस कर दिए जायँगे। गायकवाड़ का राज्य ठीक उसी अवस्था में रक्खा गया, जिस अवस्था में वह अङ्गरेज़ों के गुजरात में घुसने के पहले था। राघोबा को २५ हज़ार रुपए मासिक पेन्शन देकर एक स्थान पर रहने की आज्ञा दी गई। कैप्टेन पोफ़म ने माधोजी सिन्धिया की राजधानी ग्वालियर को जीत कर उसे गोहद के राना को दे दिया था। इसके बदले राना ने कम्पनी से मित्रता कर ली थी। सालबाई की सन्धि के अनुसार माधोजी सिन्धिया के उक्त सभी प्रदेश गोहद के राना से वापस दिला दिए गए।

सन्धि की शर्तें तो तय हो गईं; पर नाना फड़नवीस ने सात महीने बाद तक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर न किया। इसका कारण यह था कि नाना का सच्चा मित्र और कम्पनी का पक्का शत्रु हैदरअली अभी तक अङ्गरेज़ों का मूलोच्छेद करने में निरत था। ऐसी अवस्था में यदि नाना अङ्गरेज़ों से सन्धि कर लेता, तो उसका यह कार्य हैदरअली के साथ घोर विश्वासघात करना होता। नाना अभी तक निराश नहीं हुआ था। वह हैदरअली के बल पर अभी भी भारत को स्वतन्त्र करने की आशा लगाए बैठा था। वीर हैदरअली प्रान्त पर प्रान्त और गढ़ पर गढ़ जीतता चला जा रहा था और पूना में बैठा हुआ नाना उत्सुक हृदय से उसकी विजयों के समाचार सुन रहा था। अचानक सन् १७८२ ई० के दिसम्बर में नाना को समाचार मिला कि अरकाट के क़िले में हैदरअली की मृत्यु हो गई। यह समाचार सुन कर नाना की क्या अवस्था हुई होगी, यह अनुमान करने का विषय है; लिखने का नहीं। गायकवाड़, सिन्धिया, भोसला आदि समस्त आत्मीय जनों द्वारा छले जाकर नाना की सारी आशाएँ एक-मात्र हैदरअली में ही केन्द्रित होकर भारतीय स्वतन्त्रता का सुख-स्वप्न देख रही थीं; किन्तु वह स्वप्न भी अकाल में ही भङ्ग हो गया। हैदरअली अपने जीवन का परम प्रिय उद्देश्य—दक्षिण भारत से अङ्गरेज़ों

(शेष मैटर ३४वें पृष्ठ के पहिले कॉलम के नीचे देखिए)

स्त्रियों का ओज

दुर्गाधिकारिणी

[लेखक—???]

"यह कोलाहल कैसा है महारानी"

"महाराज, दुर्ग भङ्ग होना चाहता है"

"क्या प्राचीर के भीतर शत्रु आ चुके ?"

"हाँ महाराज !"

"हमारी सेना कितनी अवशिष्ट है ?"

"केवल १०० वीर शेष बचे हैं"

"सेनापति को बुलाओ"

"सेनापति काम आए"

"इस समय दुर्गाध्यक्ष कौन है ?"

"मैं"

"ओह, कोलाहल बढ़ रहा है"

(एक सैनिक का प्रवेश)

"महाराज की जय हो—द्वार भग्न हो गया—शत्रु इधर ही आ रहे हैं ।"

"महारानी, मुझे सहारा देकर उठाओ । मैं युद्ध करूँगा ।"

"महाराज, आपके शरीर पर असंख्य घाव हैं, राजवैद्य की आज्ञा नहीं ।"

"राजवैद्य को अभी बुलाया जाय ।"

(राजवैद्य उपस्थित होते हैं)

"राजवैद्य, मैं अभी युद्ध के लिए सज्जित होना चाहता हूँ ।"

"महाराज, यह असम्भव है"

"नहीं, इसे सम्भव करो"

"महाराज, आपके शरीर पर ८० घाव हैं, जिनमें ८ मर्मान्तक हैं ।"

"खेद है, तब क्या मैं शत्रु का बन्दी हूँगा ? महारानी ?"

"महाराज !"

"क्या मैं बन्दी हूँगा"

"महाराज, यह असम्भव है"

(सेवक—प्रवेश करके)

"जय राजमाता की—पालकी और सैनिक प्रस्तुत हैं ।"

"अच्छा, कुल कितने सैनिक शेष हैं ?"

"केवल ७० शेष हैं"

"बहुत अच्छा, ५० सैनिक दुर्ग की रक्षा करें और शेष २० हमारे साथ चलें । महाराज ! आप पालकी में सवार हूजिए ।"

"यह क्या महारानी, क्या प्राण रहते मैं पलायन करूँगा ?"

"महाराज, पतङ्गे की भाँति मरने से क्या लाभ ? वीरों की भाँति मरने का भी समय आएगा ।"

"महारानी, मैं मानूँगा नहीं, तुम पालकी में बैठ कर चली जाओ ।"

"महाराज, क्या इसी अशक्त और घायल अवस्था में बन्दी होंगे ?"

"हाय, महारानी, इस अपमान से बचने का कोई उपाय नहीं ।"

"महाराज, आप पालकी में सवार हों, विलम्ब का समय नहीं ।"

"परन्तु .... "

"महाराज, मैं दुर्ग-रक्षक के पद पर हूँ, मेरा पद वापस लीजिए। "

"नहीं महारानी !"

"तब मेरी आज्ञा मानिए"

"एक शर्त पर दुर्ग-स्वामिनी !"

"वह क्या ?"

"मैं जीवित बन्दी न होने पाऊँ"

"महाराज को बन्दी करने की सामर्थ्य किसी में नहीं । उठिए रामरक्ष !"

"महारानी !"

"महाराज को पालकी में लिटाओ । मेरा घोड़ा लाओ, २० सैनिकों का मैं सञ्चालन करूँगी, शीघ्रता करो, शत्रु आ चुके ।"

"जो आज्ञा, गुलहार सुरक्षित है"

"तब चलो"

२

"महारानी, मालूम होता है, शत्रु पीछा कर रहे हैं, घोड़ों की टाप कैसी है ?"

"महाराज निश्चिन्त रहें—शत्रु आपका चरण छू नहीं सकेंगे ।"

"महारानी, वह शत्रुओं की हुङ्कार सुनो"

"सुनती हूँ, रामरक्ष ?"

"महारानी"

"१० वीर यहीं रुक कर शत्रु-दल का मुक़ाबला करेंगे, शेष १० वीर पालकी के साथ बढ़ेंगे । पालकी के साथ मैं जाऊँगी । शेष दस वीरों के नायक तुम हो ।"

"जो आज्ञा स्वामिनी"

"महारानी, शत्रु फिर आ रहे हैं, उनकी चीत्कार सुनती हो ?"

"सुनती हूँ महाराज ! वाहको, पालकी तेज़ ले चलो ।"

"महारानी, मैं बन्दी न होने पाऊँ ?"

"कदापि नहीं स्वामी !"

"केवल १० रक्षक शेष हैं"

"और मैं भी उपस्थित हूँ महाराज, धीरज से लेटे रहिए ।"

"नहीं, महारानी, मेरी तलवार लाओ—मैं युद्ध करूँगा"

"ओह, स्वामिन, पेट के सब टाँके टूट गए—घाव बह गए—आप लेटे रहिए । वीरसिंह !"

"महारानी !"

"शत्रु आ पहुँचे—सावधान !"

"जो आज्ञा !"

"तुम छः वीरों को यहीं रह कर शत्रु को रोकना है, शेष चार पालकी के साथ चलेंगे । वाहको, क्या अधिक तेज़ नहीं चल सकते ?"

"महारानी, हम प्राण पर खेल कर भाग रहे हैं, मार्ग ख़राब और रात अँधेरी है ।"

"महाराज !"

"महारानी!"

"अब आगे पालकी बढ़ना असम्भव है ।"

"तब क्या मैं बन्दी हूँगा ? नहीं महारानी, यह नहीं होगा ।"

"नहीं स्वामी, आप बन्दी न होंगे !"

"तब ?"

"आप देखिए, मैं आपके मान-पद-गौरव की रक्षिका हूँ ।"

"जयसिंह, पालकी रोक लो । और लौट कर खड़े हो जाओ !"

"जो आज्ञा महारानी !"

"तलवारें सूत लो !"

"महारानी की जय हो !"

"दो-दो आदमी आगे बढ़ो"

"जो आज्ञा महारानी"

"महारानी"

"महाराज"

"अब कितने योद्धा बचे हैं ?"

"केवल दो, तीसरी मैं"

"आह, मेरे सम्मान की रक्षा कैसे होगी !"

"महाराज उद्विग्न न हों । (कटार निकालती है)

"स्वामी"

"क्या प्रतिष्ठा प्राणों से बढ़ कर नहीं ?"

"सब से बढ़ कर प्रिये !"

"महाराज, प्राणनाथ, मैं उसकी रक्षा के लिए कठोर कर्म करूँगी, मैं क्षत्रिय महिला हूँ ।"

"महारानी, मेरी प्रतिष्ठा भङ्ग न हो"

"महाराज, अन्तिम वीर गिरा (आगे बढ़ कर) स्वामी, मैं क्षण भर ठहर कर आऊँगी—दासी के स्नेह से परिपूर्ण अपना वक्षस्थल सीधा कीजिए"

(राजा की छाती में कटार घुसेड़ देती है)

"शत्रुओ ! तुम महाराज को बन्दी नहीं कर सकते"

"महारानी को आदाब, क्या आपने अपने हाथ से महाराज का वध किया ?"

"हाँ, महाराज की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए । अब मेरा अन्तिम कर्म देखो । तुममें कोई एक वीर मुझसे युद्ध करने को प्रस्तुत है ?"

"नहीं महारानी, आपसे हमें कुछ शत्रुता नहीं"

"तुम्हारे साथ कोई ब्राह्मण है ?"

"नहीं"

"हिन्दू है ?"

"नहीं"

"तुममें मनुष्यत्व है ?"

"महारानी, युद्ध के नियम कठोर हैं—परन्तु आप आज्ञा कीजिए ।"

(शेष मैटर ३५वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

(३३वें पृष्ठ का शेषांश)

का अस्तित्व मिटा देना—लगभग पूर्ण कर चुका था ; किन्तु यज्ञ की पूर्णाहुति होने के पहले ही काल ने उसको धोखा दे दिया । हैदरअली की मृत्यु के साथ ही साथ अङ्गरेज़ों को भारत से निकाल भगाने की नाना की रही-सही आशा भी नष्ट हो गई । विवश होकर नाना ने सालबाई की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिया ।

इस प्रकार प्रथम मराठा युद्ध का अन्त हुआ । इस युद्ध ने अङ्गरेज़ों की धोखेबाज़ी, उनकी कपटपूर्ण नीति और केवल उल्लङ्घन करने के लिए ही की हुई उनकी सन्धियों का रहस्य खोल कर मराठे सरदारों और भारतीय नरेशों की आँखों के सामने रख दिया ; किन्तु जिस प्रकार अब तक घटित होने वाली अनेक राजनीतिक घटनाओं के वास्तविक महत्व को भारतीय राजे नहीं समझ सके थे, उसी प्रकार उन्होंने इस युद्ध से भी कोई विशेष शिक्षा नहीं ग्रहण की । इसके बाद मराठा-इतिहास के साथ ही साथ नाना फड़नवीस के जीवन का एक नवीन अध्याय आरम्भ होता है, जिसका वर्णन अगले अङ्क में किया जायगा ।

(क्रमशः)

['चाँद' के हिन्दी संस्करण से उद्धृत]

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आप तो पत्रोत्तर में ज़रा देरी होते ही, मारे तक़ाज़ों के नाक में दम कर देते हैं। पर यहाँ तो लॉर्ड इर्विन की जवाई का हाल सुन कर अपने राम का नशा ही हिरन हो गया ! क्या ख़ूब आदमी थे। देखिए चलते-चलाते भी आप लोगों को नहीं भूले; भूलते भी कैसे ? आप लोगों से इन्हें सदा प्रेम रहा है। समय-समय पर "प्रेस-ऑर्डिनेन्सों" द्वारा आप लोगों की बराबर मिज़ाज-पुर्सी कर ही ली जाती थी। मगर इस बार जैसा तोहफ़ा आप लोगों को दिया गया है, इस क़द्रदानी पर अपने राम तो मस्त हो गए ! सुबह से दो बार छान चुका हूँ, तीसरी बार रगड़ने जा ही रहा था, कि आप का प्रेम-पत्र मिला ! क्यों न हो, एक तो पुराना प्रेम, उस पर 'बिछुड़न की घड़ियाँ' तीसरे बड़े दिन का अवसर ! बड़ा दिन तो आप जानते ही हैं, कितना मुबारक-दिन होता है ! ऐसे शुभ अवसर पर न जाने कितनों को मिठाई, कम्बल, तरह-तरह के इनाम और भेंट इत्यादि मिला करते हैं। मगर आपको इस उपलक्ष में क्या मिलेगा, यही एक बड़ी कठिन समस्या थी जो बड़े-बड़े ज्ञानियों, नजूमियों और ज्योतिषियों से भी हल न हो सकी थी। सच जानिए सम्पादक जी ! इसमें पसेरी भर भी झूठ नहीं है, कि अपने राम को इसकी चिन्ता ने ऐसा घनचक्कर बना दिया था कि एक दिन अपने राम आधी रात को सीधे पण्डित भविष्य-दर्शक दत्तात्रेय के द्वार पर जा धमके और पण्डित जी को जगा कर उसी वक़्त आपका इनाम विचरवाया। उनके ज्योतिष में निकला कि "लड़का होगा।"

भई वाह ! ज्योतिष भी अजब औंधी चीज़ है। "पूछी ज़मीं की, कही आसमान की !" इसलिए इस पर अब विश्वास करके दिमाग़ पच्ची करना बेकार था। निराश लौट ही रहा था, कि रास्ते में एक राजनैतिक ज्ञानी महोदय से टकरा गया ! उनसे समस्या हल करवाई तो उन्होंने बताया कि "लाट-साहब इस बड़े दिन के शुभ अवसर पर स्वराज्य का उपहार देंगे।" क्या ख़ूब ! अच्छी उड़ाई !! स्वराज्य का उपहार खण्ड-खण्ड करके भला किस तरह बाँटा जा सकता है, आपही कहिए ?

कुछ और दूर बढ़ा, तो एक मारवाड़ी बज़ाज से मुठभेड़ हो गई। "जै गोपाल" के बाद मालूम हुआ कि धरना देने वालों के डर से वह रात में विलायती माल न घूम-घूम कर बेचते हैं ! और इसी तिकड़म में वे "निस अँधियारी" में निकले थे ! तरकीब तो अच्छी है; मगर उनकी बुद्धि की बलिहारी, कि उन्होंने मुझे भी ऐसे माल का लुक-छिप कर लेने वाला कोई गाहक समझा ! इसलिए उनसे जान छुड़ानी मुश्किल हो गई !! वह चुपके से अपना माल दिखाने और रुपए पीछे सिर्फ़ पौने तीन आने मुनाफ़ा लेने का वचन देकर, अपने साथ ले चलने के लिए हठ पर हठ—हठ पर हठ करने लगे ! तब अपने राम ने घबड़ा कर कहा कृपा-निधान ! किसी और को फाँसिए अपने राम तो इस बात का पता लगाने निकले थे, कि इस बड़े दिन के अवसर पर लाट-साहब हमारे सम्पादक जी को कौन सा उपहार देंगे। मेरी किरकिरी बात सुन कर सेठ जी बड़ी व्यग्रता से बोले—"आहा ! तुम नहीं जानते ? साढ़े दस हज़ार बल्लायती थान हमारी दूकान से लिए गए हैं, उसी का एक-एक कोट इनाम में बाँटा जाएगा ! इसी से कहता हूँ, चलो उसी कपड़े का तुम भी एक सिलवा लो।" बड़ी ख़ैरियत हो गई सम्पादक जी, कि किसी जूते वाले से मुलाक़ात

पत्र-सम्पादक—या अल्लाह ! यह एक बकरा कहाँ-कहाँ हलाल होगा ?
न जाने किस समय प्रेस-ऑर्डिनेन्स रूपी शैतान आ धमके !!

नहीं हुई, वरना यही हाल था तो वह भी अपनी ही ऐसी कहता !

मरता-खपता घर पहुँचा, तो लल्ला की महतारी पाजामे से बाहर मिलीं। उनका हाल कुछ न पूछिए। उन्हें ऐसा नशा चढ़ा था, कि उन्होंने पहिले तो मुझे चोर समझ कर मेरी आवभगत की। बिना द्वार खोले ही आँगन में ऐसी चिल्ल-पों मचाई कि सारा मुहल्ला मेरे द्वार पर डण्डा ले-लेकर फट पड़ा ! किसी तरह घर में पहुँच हुई, तो "रात-रात भर बाहर घूमने" के विरोध में लल्ला की महतारी की कर्कश रागनी जो आरम्भ हुई, तो सुबह तक वह अपने सम पर ही नहीं पहुँची ! उस समय अपने राम बारम्बार यही प्रार्थना करते रहे, कि हे ईश्वर ! हमारे बड़े लाट-साहब को ऐसी सुबुद्धि दो, कि वह चलते-चलते कोई ऐसा क़ानून बना दें, (यदि क़ानून बनाने की क्षमता न हो, तो एक ऑर्डिनेन्स ही पास करते जायँ) जिससे लल्ला की महतारी की ज़बान एकदम बन्द हो जाए !

लेकिन सम्पादक जी ! विश्वास नहीं होता, कि लाट-साहब दूबे जी की इस विनम्र प्रार्थना पर ध्यान देंगे और यदि वे ऑर्डिनेन्स पास कर भी दें, तो इसका फल कुछ होगा भी, मुझे इस बात का बड़ा दगदगा है ! सम्पादक जी, सच जानिए, लल्ला की महतारी की ज़बान ठीक उसी तरह चलती है, जिस तरह आपकी 'दईमारी' लेखनी !! यदि आप प्रेस-ऑर्डिनेन्स का तिरस्कार कर जेल जायँ, तो वह अपनी जिह्वा-रूपी कतरनी की रक्षार्थ जेल जाने को तैयार है !

हाँ, तो सम्पादक जी, अपने राम की तो स्पष्ट-सम्मति है कि लगाइए आग इन अख़बारों को ! चलिए इस बार गर्मियों में काश्मीर चला जाय; लेकिन नहीं, ठहरिए, ठहरिए; सम्पादक जी ! नशे में कह गया—वहाँ का भी तो बुरा हाल है, आज मैंने पत्रों में पढ़ा है, वहाँ भी पुस्तकें ज़ब्त होने लगी हैं—और आप जैसे कई लोग जेल में डाल दिए गए हैं ! फिर कहाँ चलिएगा ? कोई ऐसी जगह ढूँढ़ कर लिखिए, जहाँ न "भविष्य" जाता हो और न 'चाँद'—पर ऐसी जगह है कौन ? तो चलिए चित्रकूट के जङ्गलों में चला जाय; जहाँ एक बार श्रीरामचन्द्र महाराज को भी जाना पड़ा था, याद है वह ज़माना—

चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर!
तुलसीदास प्रभु चन्दन रगड़े, तिलक देत रघुबीर !!

सम्पादक जी ! एक बात और कीजिए, प्रेस-ऑर्डिनेन्स के विरोध-स्वरूप अपना छापाख़ाना लॉर्ड इर्विन के नाम लिख दीजिए। बेचारे भारतवर्ष की इतनी अधिक सेवा करके जा रहे हैं, घर के लोग पूछेंगे ही, कि 'सोने की चिड़िया' वाले देश से क्या कमा लाए ? यदि बेचारों के पास थोड़ी सी पूँजी बनी रहेगी, तो वहाँ कमा-खायँगे, नहीं तो सिवा 'मटरगश्ती' के, बेचारे वहाँ करेंगे क्या ? कार-बार सब वैसे ही चौपट हो गया है; लगान वग़ैरह से थोड़ा-बहुत 'टैक्स-इन्कम' का सहारा था, वह अपने राम 'ज्ञान-चक्षु' से देख रहे हैं, जाने चाहता है, फिर आख़िर ये बेचारे करेंगे ही क्या ? विलायती कपड़ों के व्यवसाय में केवल थोड़ा-बहुत सहारा रह गया है, वह भी ख़ुदा कलकत्ते के मारवाड़ी सेठों को सलामत रक्खे, नहीं तो यार लोग कहीं के न रहते—'न दीन के, न दुनिया के।' यह बेचारे मारवाड़ी भाइयों के 'जीव-दया' वाले अटल सिद्धान्त का ही फल है, कि यार लोग आज भी गुलछर्रे उड़ा रहे हैं, नहीं तो न जाने मुक़द्दर अब तक क्या दिखाता। हरे, हरे ! सम्पादक जी, अपने राम तो बेचारों की हालत देख कर एक बार ही सिहर उठते हैं। यदि आपमें परोपकार का कुछ भी अंश शेष है, जिसकी आशा अपने राम को नहीं है—तो प्रतिज्ञा कीजिए कि आज से आप केवल विदेशी वस्त्रों और वस्तुओं का ही प्रयोग करेंगे। अपने राम ने तो लल्ला की महतारी के सर पर दोनों हाथ धर कर शपथ खा ली है, कि अब जब कभी मिर्ज़ई बनवाने की नौबत आई, जिसकी बहुत कम सम्भावना है—तो ख़ास वलायती कपड़ा ख़रीदेंगे, और वह भी उसी मारवाड़ी मित्र से, जो उस दिन रात को कटकटाती हुई सर्दी में लावारिस बच्चे की तरह भटकता हुआ मिला था; नहीं तो अर्द्ध-नग्न अवस्था में ही शेष जीवन बिता देंगे ! कहिए आपने क्या निश्चय किया !

(३४वें पृष्ठ का शेषांश)

"महाराज का और मेरा शरीर कोई शत्रु न छुए, उसकी अन्त्येष्टि कोई ब्राह्मण करे। देखते हो—मेरे सब वीर स्वर्ग जा चुके !"

"महारानी की इच्छा पूर्ण होगी"

"धन्यवाद, शत्रु-श्रेष्ठ"

(वही कटार सीने में मार कर महाराज की लोथ पर जा गिरती है।)

* * *

सम्पादक जी, आपको क़सम है मेरी इस परिपक्व बुढ़ौती की, जैसे ही ज़मानत माँगी जाय, १) रु० का इलाहाबादी अमरूद (सफ़ेदा) ख़रीद कर भेजिएगा और उसी पार्सल में चित्रकूट वाला टाइमटेबुल रख दीजिएगा, ताकि मैं ठीक समय पर आपसे मिल सकूँ—कुशल-क्षेम लिखते रहिएगा!

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

पुनश्चः—

सम्पादक जी! अभी-अभी मद्रास के एक बड़े भारी ज्योतिषी मुझसे मिलने आए थे, मैंने उनसे वही मसला पूछा, जिसकी आजकल मुझे चिन्ता है। उन्होंने जो कुछ कहा, वह समझ में आने वाली बात थी—उन्होंने मेरे कमरे में से बच्चा की महतारी को बाहर निकाल कर, सारे दरवाज़ों को बन्द करके, मेरे कान में धीरे से—बहुत धीरे से कहा है, कि "जिस तरह 'मोहमडन ला' में कहा गया है, कि यदि कोई मुसलमान-पति सोते-सोते तीन बार 'तलाक़, तलाक़, तलाक़' कह दे, तो 'तलाक़' हो जाता है। ठीक उसी प्रकार जिस समय लाट-साहब की ज़बान से 'ऑर्डिनेन्स' निकले—उसी समय से वह पास समझा जाता है—चाहे ऑर्डि-

पूँजी भी गई घर की बेटे की पढ़ाई में!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

"फ़ादर" का हुआ नुक़सान इस फ़र्ज़-अदाई में,
पूँजी भी गई घर की, बेटे की पढ़ाई में!
मज़लूम की ख़ामोशी, फ़रियाद से बढ़ कर थी,
मशहूर हुआ ज़ालिम, वह सारी ख़ुदाई में!
आएँगे "डिनर" खाने, अङ्गरेज़ यहाँ शब को,
मसरूफ़ हूँ मैं दिल से, बँगले की सफ़ाई में!
हिन्दू से कोई पूछे, मुसलिम से कोई पूछे,
मिल जायगा क्या तुमको, आपस की लड़ाई में!!
क्या-क्या न सितम तोड़े, बन्दों ने ख़ुदाई पर!
क्या-क्या न ख़ुदाई की "यूरुप" ने ख़ुदाई में!!
'बिस्मिल' की नसीहत से, मिल-जुल के रहें बाहम,
अहबाब न उभरेंगे, आपस की लड़ाई में!

* * *

नेन्स किसी भी प्रकार का हो; और तुरन्त काम में लाया जाने लगता है। मैंने भी धीरे से ज्योतिषी जी का कान पकड़ कर पूछा, कि "फिर 'प्रेस-ऑर्डिनेन्स' अब तक काम में क्यों नहीं लाया गया?" पहले तो वह बुक्का फाड़-फाड़ कर हँसते रहे, फिर उन्होंने मुझे धीरे से समझाया कि लॉर्ड इर्विन ने प्रेस-ऑर्डिनेन्स पास तो कर दिया, लेकिन बाबा आदम, यानी 'विलायती महाप्रभुओं' ने तार देकर इसे काम में लाने से रोक दिया—उनका कहना है, कि-"एक ऑर्डिनेन्स दूसरी बार पास नहीं हो सकता, नहीं तो घृणा और भी फैल जायगी, इसलिए दस-पाँच दिन और सब्र करो, एसेम्बली में क़ानून ही क्यों नहीं बनवा लेते, सदा का टण्टा ही जाता रहे।" सो सम्पादक जी, इसीलिए यह ऑर्डिनेन्स अभी काम में नहीं लाया जा रहा है, और आप भी चैन की बंसी बजा रहे होंगे। लेकिन देखिए यह बात बहुत गुप्त है, किसी से कहिएगा मत! नहीं तो व्यर्थ ही में चलते-चलाते हमारे परम शुभचिन्तक लॉर्ड इर्विन महाशय की बदनामी हो जायगी, सम्झे!

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स स्कूल और कॉलेज

[श्री० नवीनचन्द जी, बी० ए०]

भारतवर्ष में शिक्षित मनुष्यों की संख्या ज्यों-ज्यों बढ़ती जा रही है (दुर्भाग्यवश यह संख्या बहुत ही धीरे-धीरे बढ़ रही है), त्यों-त्यों स्त्री-शिक्षा के अभाव के कारण उत्पन्न होने वाली बुराइयों का रूप अधिकाधिक भयावह होता जा रहा है। पति महाशय बी० ए०, एल्-एल्० बी० पास सुयोग्य वकील हैं, तो पत्नी महाशया चक्की चलाने में बी० ए० और गोबर पाथने में एल्-एल्० बी० परीक्षोत्तीर्ण फूहड़ गृहस्वामिनी हैं! इस प्रकार की अनमेल और हास्यास्पद जोड़ियों का भारतवर्ष में अभाव नहीं है। इससे उत्पन्न होने वाली बुराई भी प्रत्यक्ष है। कोई बी० ए० अथवा एम० ए०, एल्-एल्० बी० साहब अपनी अपढ़ पत्नी के फूहड़पन से ऊब कर दूसरा विवाह कर लेते हैं, तो कोई दुराचार का मार्ग पकड़ते हैं। दोनों अवस्थाओं में अशिक्षित पत्नी का सर्वनाश ही होता है। यह मानी हुई बात है कि पत्नी जब तक विद्या और बुद्धि में पति के समान न होगी, तब तक पति उसको अपनी अर्द्धाङ्गिनी और सहधर्मिणी किसी भी प्रकार नहीं समझ सकता। इस स्वाभाविक नियम के विरुद्ध शिकायत करना मूर्खता है। प्राकृतिक नियमों को मान कर चलने से ही मनुष्य अपनी परिस्थिति का स्वामी बन सकता है, अन्यथा नहीं।

पति-पत्नी की जोड़ी मिलाने में यदि विवेक से काम लिया जाय तो भारतीय समाज की बहुत सी समस्याएँ अनायास ही हल हो सकती हैं। इसके लिए स्त्री-शिक्षा की सब से बड़ी आवश्यकता है। मूर्ख पुरुषों के लिए देश में मूर्खा स्त्रियों का अभाव नहीं है; पर शिक्षित पुरुषों के योग्य स्त्रियों का मिलना बहुत ही कठिन हो गया है। पुरुषों की बराबर संख्या में ही जब तक स्त्रियाँ भी शिक्षित नहीं की जायँगी तब तक यह समस्या हल नहीं हो सकती। स्त्रियों की शिक्षा का क्या स्वरूप होना चाहिए, इस विषय पर मतभेद हो सकता है; किन्तु इसमें कोई शङ्का नहीं कि समाज में यदि पारिवारिक शान्ति की स्थापना करना अभीष्ट है, तो स्त्रियों के लिए किसी न किसी प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध करना ही पड़ेगा। आज पाठकों को हम एक ऐसी संस्था का परिचय देना चाहते हैं, जो अपनी परिस्थिति के अनुसार स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

दिल्ली का इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स स्कूल और इण्टरमीजियट कॉलेज एक ऐसी संस्था है, जिसके लिए भारतवासी अभिमान कर सकते हैं। इस स्कूल ने आज से २५ वर्ष पहले एक भाड़े के मकान में केवल ९ लड़कियों को लेकर अपना कार्य आरम्भ किया था; पर चौथाई शताब्दी के अथक परिश्रम और निरन्तर अध्यवसाय के बाद आज यह स्कूल एक प्राइमरी पाठशाला की स्थिति से उठ कर इण्टरमीजियट कॉलेज की श्रेणी तक पहुँच गया है। जिस स्कूल में आरम्भ में केवल नौ लड़कियाँ पढ़ती थीं, उसमें आज ५५० से अधिक लड़कियाँ शिक्षा पा रही हैं। उपयुक्त स्थान का अभाव, आर्थिक कठिनाइयाँ तथा प्रोत्साहन का अभाव आदि अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी स्कूल के प्रबन्धकों ने जिस उत्साह और तत्परता का परिचय दिया है, उसके लिए यह संस्था बधाई की पात्र है। स्कूल के प्रबन्धकों में जो सब से प्रशंसनीय गुण है, वह यह है कि स्कूल के इतनी उन्नति कर चुकने के बाद भी वे सन्तुष्ट होकर नहीं बैठ गए हैं; वे अपनी संस्था को इण्टरमीजियट कॉलेज की श्रेणी से भी ऊपर उठा कर उपाधि विद्यालय (Degree College) के पद तक पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्कूल ने गत २५ वर्षों में किस प्रकार धीरे-धीरे, किन्तु निश्चित गति से उन्नति की है, इसका इतिहास बहुत ही मनोरञ्जक है।

श्रीमती एनी बिसेण्ट के स्त्री-शिक्षा-सम्बन्धी विचारों से प्रोत्साहित होकर स्वर्गीय लाला बालकिशन दास जी ने इस स्कूल की स्थापना की। आज दिल्ली नगरी को इस बात पर गर्व हो सकता है कि उसके लगभग प्रत्येक मुहल्ले में लड़कियों का एक स्कूल है; किन्तु जिस समय लाला बालकिशन जी ने इस स्कूल की स्थापना की थी, उस समय दिल्ली में हिन्दुओं के द्वारा स्थापित अपने ढङ्ग की यह सर्व-प्रथम संस्था थी। उस समय का कट्टर हिन्दू-समाज स्त्री-शिक्षा के नाम से ही घबराता था। जनता की सहानुभूति होने के कारण प्रबन्धकों को क़र्ज़ लेकर स्कूल का काम चलाना पड़ता था। सन् १९०७ ई० में जिस समय स्कूल के संस्थापक लाला बालकिशन दास जी की मृत्यु हुई, उस समय स्कूल पर लगभग एक हज़ार रुपयों का क़र्ज़ था। तब स्कूल में केवल ८२ लड़कियाँ पढ़ती थीं। धीरे-धीरे विद्यार्थिनियों की संख्या बढ़ने लगी और उनके लिए स्थान की कमी का अनुभव होने लगा। बहुत दिनों तक स्कूल का काम इसके उदार संस्थापक के मकान में चलाया गया। इसके बाद जब स्कूल के लिए नया मकान बन गया, तब स्कूल उसमें चला गया।

सन् १९११ ई० में यह स्कूल मिडिल कक्षा तक पहुँच गया और जिन लड़कियों की इच्छा होती थी, उन्हें अङ्गरेज़ी भी पढ़ाई जाने लगी। सन् १९१३ ई० में प्रथम बार इस स्कूल की ३ लड़कियाँ मिडिल की परीक्षा में सम्मिलित हुईं और तीनों उत्तीर्ण हुईं। विद्यार्थिनियों की संख्या जब ३०० तक पहुँच गई, तब एक छात्रावास की आवश्यकता प्रतीत होने लगी और अगले ही वर्ष एक छोटे से छात्रावास का प्रबन्ध भी हो गया। सन् १९१६ में छोटे-छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए इस स्कूल में किण्डरगार्टन की प्रणाली का प्रवेश कराया गया और मिस जेम्स बड़ी ही योग्यतापूर्वक इस प्रणाली से लड़कों को शिक्षा देने लगीं। दुर्भाग्यवश सन् १९२६ ई० में मिस जेम्स की मृत्यु हो जाने से स्कूल को बड़ी हानि पहुँची और आज तक उनके स्थान की पूर्ति नहीं हो सकी है। सन् १९१६ ई० में स्कूल को हाई स्टैण्डर्ड तक पहुँचाने के अभिप्राय से धन इकट्ठा करने का एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। अगले दो ही वर्षों में प्रबन्धकों और सहायकों के उत्साह और तत्परता के फल-स्वरूप आवश्यक धन एकत्र हो गया और सन् १९१८ ई० में प्रथम बार एक विवाहित लड़की ने इस स्कूल से मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की। इसके बाद इस होनहार कन्या ने बनारस हिन्दू-युनिवर्सिटी से बी० ए० की उपाधि प्राप्त की और आजकल वे पटना में स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं।

सन् १९१७ ई० में स्कूल की सुयोग्य प्रिन्सिपल मिस गमाइनर के राजनीतिक कार्यों से असन्तुष्ट होकर सरकार ने स्कूल को सहायता देना बन्द कर दिया; पर स्कूल के प्रबन्धक लेश-मात्र भी हतोत्साह नहीं हुए। वे स्कूल का काम पहले की भाँति ही सफलतापूर्वक चलाते रहे। सन् १९२२ ई० में कई प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित महानुभावों ने स्कूल का निरीक्षण किया और स्कूल का काम देख कर वे बहुत प्रसन्न भी हुए। दर्शकों में हिज़ हाइनेस महाराज कोटा, हिज़ हाइनेस महाराज झाला-

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीत, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

"दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी॥"

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र।

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥।); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥।) स्थायी ग्राहकों से ॥-); नवीन संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

बाद, श्रीमती एनी बिसेण्ट, लोकमान्य तिलक, सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। सन् १९२४ ई० में यह स्कूल इण्टरमीजियट कॉलेज के पद तक पहुँच गया। सरकार ने इसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर सन् १९२१ ई० में इसे पुनः सहायता देना आरम्भ कर दिया था और भारत-सरकार ने हाल ही में कुछ विशेष शर्तों पर इसे अपना "अलीपुर हाउस" नामक विशाल भवन देने का भी वचन दिया है। संस्था के प्रबन्धकगण इस मकान में कॉलेज-विभाग का प्रबन्ध करना चाहते हैं।

स्कूल में विज्ञान तथा गृहशिल्प की शिक्षा का भी प्रबन्ध है। लड़कियों को घरेलू आवश्यकता की सभी बातों की शिक्षा दी जाती है। भोजन बनाना, कपड़े पर बेल-बूटा काढ़ना, सिलाई करना, रोगियों की सेवा, प्रारम्भिक चिकित्सा, शरीर-विज्ञान और स्वास्थ्य-विज्ञान से लेकर कपड़े धोना तथा बरतन साफ़ करने तक की शिक्षा का बहुत ही उत्तम प्रबन्ध किया गया है। इस स्कूल का परीक्षा-फल विशेष रूप से अच्छा होता है। इस समय तक यहाँ की पढ़ी हुई बहुत सी लड़कियाँ युनिवर्सिटी की डिग्री प्राप्त कर चुकी हैं और आज भी पञ्जाब तथा यू० पी० की प्रायः सभी युनिवर्सिटियों में यहाँ की लड़कियाँ पढ़ रही हैं। स्कूल की प्रिन्सिपल मिस गमाइनर हाल ही में छुट्टी लेकर ऑस्ट्रेलिया गई हैं और उनके स्थान पर इस स्कूल की ही पढ़ी हुई एक प्रतिभाशालिनी छात्रा कुमारी राजदुलारी शर्मा, बी० ए० (ऑनर्स) बड़े मनोयोग से प्रिन्सिपल का कार्य सञ्चालन कर रही हैं। इस स्कूल की स्थापना के एक वर्ष बाद ही मिस गमाइनर ऑस्ट्रेलिया से भारतवर्ष आई थीं और उसी समय उन्होंने स्कूल के प्रिन्सिपल का कार्य-भार स्वीकार किया था। उस समय से लेकर अब तक बराबर मिस गमाइनर जिस उत्साह और लगन से इस स्कूल की सेवा करती आ रही हैं, उसके लिए वे भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं।

भारत की राजधानी दिल्ली जैसी विशाल नगरी में स्त्रियों के लिए एक पृथक डिग्री कॉलेज की बहुत ही आवश्यकता है। स्वर्गीय लाला लाजपतराय जी ने इस आवश्यकता की ओर सरकार का ध्यान भी आकर्षित किया था। इन्द्रप्रस्थ स्कूल के सुयोग्य सञ्चालकों ने भी इस आवश्यकता का अनुभव किया है और वे अपने कॉलेज-विभाग में बी० ए० तक की पढ़ाई जारी कराने का प्रयत्न कर रहे हैं। विगत २५ वर्षों में उन्होंने जिस परिश्रम और उत्साह से स्कूल का काम चलाया है, उसे देखते हुए हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि उनकी शुभाकांक्षा अवश्य ही सफलीभूत होगी। स्कूल की प्रशंसनीय सफलता का अधिकांश श्रेय इसकी सुयोग्य प्रिन्सिपल मिस गमाइनर तथा उत्साही प्रबन्धकों, विशेष कर प्रबन्ध-समिति के अध्यक्ष रायबहादुर लाला सुल्तानसिंह जी को है।

एक ऐसी उपयोगी संस्था के सामने आर्थिक कठिनाइयों का उपस्थित होना वास्तव में देश की दुरवस्था और स्त्री-शिक्षा के प्रति जनता की उदासीनता का ही परिचायक है। सहृदय पाठकों को यह जान कर कष्ट हुए बिना नहीं रह सकता कि इस संस्था की उपयोगिता ज्यों-ज्यों बढ़ती जा रही है, त्यों-त्यों इसकी आर्थिक कठिनाइयाँ भी वृहत रूप धारण करती जा रही हैं। सूद की दर के गिर जाने और व्यापार की मन्दी के कारण धनाढ्य महानुभावों से प्राप्त होने वाले चन्दे और सहायता में कमी हो जाने के कारण एक तो इस संस्था की मासिक आय योंही कम हो गई थी, उस पर स्थानीय म्युनिसिपल-कमिटी से मिलने वाली सहायता के बन्द हो जाने के कारण उसमें ३००) मासिक की और भी कमी हो गई है। एक ओर संस्था की आय इस प्रकार घटती जा रही है, दूसरी ओर संस्था के कार्यों का विस्तार होने के कारण उसके व्यय में वृद्धि हो रही है। अभी "अलीपुर हाउस" को प्राप्त करने तथा उसका सालाना लगान चुकाने के लिए, सरकार ने जो ६०,०००) की सहायता दी है, उसके अतिरिक्त १,२५,०००) की और आवश्यकता है। यह धन एकत्र करने के लिए एक योजना प्रस्तुत की गई है, जिसका विवरण इस प्रकार है। १६ महानुभावों से, प्रत्येक से ५,०००) के हिसाब से ८०,०००) और ९० महानुभावों से, प्रत्येक से ५००) के हिसाब से ४५,०००); कुल १,२५,०००) चन्दे से एकत्र किया जाय। सौभाग्यवश पाँच-पाँच हज़ार देने वाले १६ महानुभावों में ११ और पाँच-पाँच सौ रुपयों का दान करने वाले ९० सज्जनों में ६१ की सहायता अथवा वचन प्राप्त हो गए हैं। धनवान महानुभावों का यह पवित्र कर्त्तव्य है कि वे शेष आवश्यकता की पूर्ति शीघ्र करके इस परमोपयोगी संस्था को आर्थिक कठिनाइयों से मुक्त करें।

स्कूल ने हाल ही में अपनी रजत-जयन्ती का उत्सव बड़े समारोह और सफलता के साथ मनाया है। हम आशा करते हैं कि इस संस्था को इसी प्रकार अनेक रजत और स्वर्ण-जयन्तियाँ मनाते हुए दीर्घ काल तक समाज की सेवा करते रहने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

* * *

(४०वें पृष्ठ का शेषांश)

संसार की शान्ति तथा सुख के लिए यह आवश्यक है, कि किसी भी देश की विदेशी नीति इतनी गुप्त न रक्खी जावे, कि वहाँ की जनता अपने शत्रु तथा मित्रों तक को न जान सके। जहाँ प्रजातन्त्र है, वहाँ जनता को राष्ट्र की नीति को जानने का पूरा अधिकार है। राष्ट्र के शासकों को चाहिए, कि वे बिना उसकी इच्छा के कभी भी ऐसी सन्धियाँ न करें। यदि इस सिद्धान्त को कार्य-रूप दिया गया, तो आशा है कि निकटवर्ती-भविष्य में संसार में अवश्य शान्ति का साम्राज्य रहेगा। यदि विदेशी नीति पर जनता को अधिकार दिया गया, तो निशस्त्रीकरण आन्दोलन भी सफल हो सकेगा। सामान्य जनता को युद्ध से बहुत घृणा हो गई है, वह चाहती है कि युद्ध सम्बन्धी सारी चीज़ें इस संसार से उठ जावें। यदि यूरोप के वर्तमान प्रजातन्त्र राष्ट्र वास्तव में प्रजातन्त्र होते, तो हम विश्वासपूर्वक कह सकते थे कि निकटवर्ती-भविष्य में युद्ध होने की सम्भावना बिलकुल नहीं है।

पर दुर्भाग्य से वे आदर्श प्रजातन्त्र नहीं हैं। जनता की इच्छा का वे पूरी तरह से पालन नहीं करते हैं। तब भी जनता बहुत कुछ कर सकती है। उसे चाहिए कि वह अपने अधिकारों को बलिष्ठ करने का प्रयत्न करे और भविष्य में कभी भी युद्ध-प्रेमियों का साथ न दे। सन्धि के दिन उन्हें यह याद करना चाहिए कि यदि गत युद्ध में मरे हुए मनुष्य दस-दस की पंक्ति बना कर चलें, तो रात-दिन चल कर एक निश्चित स्थान से निकलने के लिए उन सबको चार महीने लग जायँगे !!!

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

(गताङ्क से आगे)

वह तरलाग्नि!

निःशङ्क प्रवाहित होकर अप्रतिहत गति से भारत के गम्भीर गर्भ में व्याप्त हो गई। करोड़ों मनुष्यों की ज्वलन्त आकांक्षाएँ भस्म हुईं।

करोड़ों मनुष्यों के आत्म-बलिदान के मनोरथ पूर्ण हुए।

करोड़ों मनुष्यों के बद्ध मस्तिष्क खुले।

करोड़ों मनुष्यों ने अपने आपको सँभाला, उस अलौकिक अग्नि-समुद्र के उज्ज्वल आलोक में बहुतों ने बहुत-कुछ देखा।

पराई विद्या के बैल—

* * *

पराई विद्या के बैल—

और पराई बुद्धि के दलाल, जो अर्ध शताब्दी तक अपने को प्रकाण्ड पण्डित समझ रहे थे।

अपने आप पर लज्जित हुए।

उन्होंने तरलाग्नि में स्नान कर प्रायश्चित्त किया।

गौरवशालिनी महिलाएँ—जो नैतिक पतन के पथ पर दूर तक यात्रा करके मात्र प्रदर्शन की वस्तु हो रही थीं—कर्मठ माता और पत्नियाँ बनीं।

यह ज्योतिर्मय अग्नि-समुद्र में स्नान का चमत्कार था।

कोकिला—

* * *

कोकिला—

जो अविकसित वसन्त के प्रस्फुटित रसाल-कुसुमों के सौरभ से मत्त होकर सदा कुहू-कुहू करती थी।

इस, इस अग्नि-रूप पर चकोरी की तरह लोट-पोट हो गई।

सागर के हृदय को विदीर्ण करके सीलोन और अफ्रीका का सुदूर आकाश उसकी पञ्चम तान पर कम्पायमान हुआ।

वह पौरुषमय स्त्रीत्व भारत में दर्शनीय था।

सहस्रों नेत्र कौतूहल से देख रहे थे।

तेज—

* * *

(क्रमशः)

गत महायुद्ध की याद में—

["एक शान्ति का उपासक"]

विगत १२ नवम्बर को, महायुद्ध का सन्धि-दिवस मनाया गया था ! संसार के सब राष्ट्रों ने इसमें भाग लिया, पर क्या केवल सन्धि-दिवस मनाने से हम संसार को सुखी रख सकते हैं ? हम गत युद्ध में मरे हुए वीरों की याद करते हैं और उन्हें मान देते हैं, पर इसके साथ ही साथ संसार के राजनीतिज्ञों को चाहिए, कि वे जीवित जनता की भलाई पर ज़्यादा ध्यान रक्खें। उसे फिर से युद्ध में फँसने से बचावें।

गत महायुद्ध से यूरोप की साधारण जनता ने जो सबक़ सीखा है, वह उसे बहुत दिनों तक याद रहेगा। परन्तु यूरोप के राजनीतिज्ञ अभी तक चौकन्ने नहीं हुए हैं। जनता ने जो वियोग, दुःख, आर्थिक कष्ट तथा शारीरिक पीड़ा पाई है, उससे वह युद्ध से घृणा करने लगी है। परन्तु राजनीतिज्ञों की बात दूसरी है, वे अभी भी पुरानी युद्ध-वीरता तथा राष्ट्र-गौरव आदि भावों से प्रेम रखते हैं। यूरोप के एक प्रसिद्ध यात्री जॉनगिबन्स, जिन्होंने हाल ही में यूरोप की पैदल यात्रा की है, लिखते हैं, कि "यूरोप में जहाँ-जहाँ मैं गया और जहाँ-जहाँ मैं बात कर सका, मुझे मज़दूर जातियों तथा मध्यम श्रेणी का एक भी ऐसा प्राणी नहीं मिला, जिसका हृदय गत महायुद्ध का स्मरण करके काँप न उठा हो। मुझे ऐसा कोई मनुष्य नहीं मिला, जो सदा ईश्वर से यह प्रार्थना न करता हो, कि उसके बच्चों को और बच्चों के बच्चों को भी भविष्य में युद्ध में भाग न लेना पड़े। यूरोप की साधारण जनता अखण्ड शान्ति चाहती है।

"कहीं-कहीं आपको बहुधा कोई श्रमजीवी, सरायवाला अथवा स्कूल-मास्टर मिलेगा—वे सब एक ही कथा सुनावेंगे। 'युद्ध में इतने पति, इतने भाई, इतनी स्त्रियाँ व बच्चे मारे गए।' युद्ध-स्थलों में कितने ही सुखी घरों का नाश हुआ है, कितने ही सुखी कुटुम्ब मिट्टी में मिल गए हैं। कई और तरह की भी बातें सुनने में आती हैं। कई पुरुष मरे नहीं हैं, पर युद्ध में उनकी आत्मा का नाश हो गया है। ऑस्ट्रिया का एक लड़का युद्ध में शत्रु-दल द्वारा पकड़ा गया। वह चार साल तक शत्रु का बन्दी रहा। उसके कुटुम्ब वाले मर-घुट कर किसी तरह पैसा इकट्ठा कर करके, पाई-पाई बचा कर, उसके पास धन भेजते रहे। पर चार साल तक ख़राब सङ्गति में रहने के कारण वह चोर और साथ ही जुआरी हो गया। अब वह कई ख़राब कामों द्वारा अपना पेट भरता है। उसकी माँ रोती है कि यह युद्ध में क्यों नहीं मार डाला गया! ऐसी कई कहानियाँ सुनाई पड़ती हैं। ऐसे ही कई आत्म-पतन के क़िस्से स्त्रियों के विषय में भी सुनाई देते हैं।

"युद्ध में जिनके अङ्ग-भङ्ग हो गए हैं, ऐसे लङ्गड़े-लूलों की संख्या का तो अन्दाज़ लगाना तक मुश्किल है। फ़्रान्स तथा इटली की ट्राम-गाड़ियों तथा रेलगाड़ियों में युद्ध के लूले-लङ्गड़े सैनिकों के लिए अलग टिकट-घर रहता है। वहाँ की गाड़ियों पर ऐसे मनुष्य सैकड़ों की संख्या में मिलते हैं। उनकी दशा कितनी दयनीय है। गत युद्ध में करोड़ों मनुष्यों ने प्राण खोए और करोड़ों अभी भी अधमरी अवस्था में जीवित हैं।

"ऑस्ट्रिया के कई भागों में युद्ध में आहत लोगों की संख्या बहुत ज़्यादा होने के कारण, उन लोगों को इतनी कम पेन्शन मिलती है, कि वे उससे जीवित नहीं रह सकते। इसलिए वहाँ की सरकार ने उन्हें इतवार को गिरजों के सामने भीख माँगने की आज्ञा दे दी है। पर वे कुछ बोल नहीं सकते। जब आप किसी गिरजे से लौटते हैं, आपको हज़ारों लूले-लङ्गड़े चुपचाप बैठे मिलते हैं। यह गत महायुद्ध का पुरस्कार है। ये किसी के पति हैं, किसी के पुत्र, किसी के भाई और किसी के पिता। इस शोचनीय दशा को देखते हुए क्या उनके सम्बन्धी फिर कभी युद्ध छेड़ने की इच्छा रख सकते हैं ?"

यह रही सामान्य जनता की बात, पर बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों की बात अलग है। उनके हृदय को जानना अति कठिन है। न वे ये सब दृश्य देखते हैं, न उन्हें देख कर उनका हृदय ही पसीजता है। वे आत्म-सम्मान तथा युद्ध-वीरता के रङ्ग में रँगे रहते हैं। सत्य को छिपाना और अपने हृदय के भावों को न दर्शाना, यही आजकल के राजनीतिज्ञों का आदर्श है !

जब गत महायुद्ध छिड़ा, इङ्गलैण्ड के लोगों ने यह जानने का बहुत प्रयत्न किया, कि इसमें उनका देश भाग लेगा या नहीं, पर यह बात बिलकुल छिपा कर रक्खी गई। इङ्गलैण्ड की जनता को धोखा दिया गया। फिर बाद को झूठे-मूठे कारण बता कर सारा देश युद्धाग्नि में झोंक दिया गया ! तारीख़ १० मार्च, १९१३ को इङ्गलैण्ड में किसी को भी युद्ध का ध्यान न था। कुछ पार्लामेण्ट के सदस्यों को अवश्य सन्देह हुआ था और उन्होंने इस विषय पर प्रश्न भी किए थे। लॉर्ड ह्यू सेसिल ने प्रधान सचिव से पूछा कि "इङ्गलैण्ड की जनता में यह बड़े ज़ोरों की ख़बर है कि इङ्गलैण्ड के मन्त्रि-मण्डल ने फ़्रान्स को सहायता देने का वचन दिया है। क्या यह ख़बर सच है ?" प्रधान-सचिव मिस्टर एसक्विथ ने कहा कि "यह ख़बर बिलकुल ग़लत है।" थोड़े ही दिनों बाद सर विलियम बाईल्स ने प्रधान-सचिव से यही प्रश्न किया। प्रधान सचिव ने उत्तर में कहा कि "बार-बार कहा जा चुका है, कि इङ्गलैण्ड ने किसी भी देश के साथ ऐसा सम्बन्ध नहीं किया है कि जिससे उसे किसी युद्ध में सहायता देनी पड़े।"

पर ये सब बातें झूठ थीं। अब सारे संसार को मालूम है, कि वे फ़्रान्स को सहायता देने का वचन दे चुके थे। और ३ अगस्त, १९१४ को सर एडवर्ड ग्रे ने पार्लामेण्ट में सुनाया कि अपने देश के मान की रक्षा के लिए हमें फ़्रान्स को सहायता देना पड़ेगा। हम लोग सन् १९०६ से फ़्रान्स से सलाह कर रहे हैं और हमने उसे सहायता का वचन दे दिया है। कौन जान सकता है कि आज किस देश को किस वक़्त युद्ध में भाग लेना पड़े। जनता युद्ध से घृणा करती है, पर देश के शासक अभी तक युद्ध से नहीं थके हैं। कौन कह सकता है कि वे कैसे राजनीतिक षड्यन्त्रों में फँसे हों ?

(शेष मैटर ३९वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम के नीचे देखिए)

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says :

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjea of the Allahabad High Court :

. . . The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consumate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITTRAWALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice Allahabad High Court :

. . . I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail :

. . . The Album ADARSH CHITTRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letterpress in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture.

W. E. J. Dobbs, Esq., I. C. S., District Magistrate and Collector, Allahabad :

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad Agricultural Institute :

. . . I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie, Esq., Director of Public Instruction, U. P. :

. . . I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
डाक-व्यय अतिरिक्त

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

सम्पादक :—

वार्षिक चन्दा ... ... ६) रु०
छः माही चन्दा ... ५) रु०
तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य ... ≡)
Annas Three Per Copy

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

कूटनीति की बलिवेदी पर भारत का लोमहर्षण बलिदान

धीरे देना ही बुद्धिमानी है, नहीं तो हिन्दोस्तानी तोते उड़ जायँगे !!

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—१५ जनवरी, १६३१ | संख्या ४, पूर्ण संख्या १६

लाहौर के फ़ौजी कप्तान की स्त्री की निर्मम हत्या !

मुन्शीगञ्ज के फ़ौजदारी अदालत का बोर्ड जला डाला गया !!

शोलापुर वाली ४ फाँसियों के कारण देश भर में हड़तालें !!!

क्या कर-बन्दी आन्दोलन दिन-दिन भीषण होता जा रहा है ?

इलाहाबाद में दमन का दौरा :: किसानों की सभाएँ भङ्ग की गईं

१७ वर्षीय बालक गोली का शिकार :: सूरत में क़ानून की धज्जियाँ उड़ाई गईं !

(१४ वीं जनवरी की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—हुबली का समाचार है, कि मैजिस्ट्रेट ने १४४ धारा शहर में लगा दी, परन्तु लोगों ने क़ानून भङ्ग करके एक सभा की और यह प्रस्ताव पास किया। "यह सभा शोलापुर के अभियुक्तों को सर्वथा निरपराध समझती है, तथा देश के लिए उनके त्याग की प्रशंसा करती है और आशा करती है कि वह शीघ्र ही पुनर्जन्म लेकर अपने पवित्र उद्देश्य की पूर्ति करेंगे तथा दूसरे लोग भी उनकी भाँति त्याग करने के लिए जन्म लेंगे।"

—लाहौर १४ जनवरी। आज श्री० हरिकृष्ण को गवर्नर पर गोली चलाने तथा इन्सपेक्टर चनन सिंह की हत्या के अपराध में सेशन्स जज के सामने पेश किया गया। कचहरी के चारों ओर पुलिस का कड़ा पहरा था।

अभियुक्त के भाई तथा पिता के अतिरिक्त किसी को अन्दर जाने की आज्ञा नहीं दी गई। अभियुक्त की ओर से देहली के बैरिस्टर श्री० आसफ़अली पेश हुए। वकील-सफ़ाई ने मुक़द्दमे के आरम्भ में ही कहा कि गवर्नमेण्ट अभियुक्त के विरुद्ध बड़ा प्रचार कर रही है। अपना भाषण जारी रखते हुए वकील ने कहा, कि गवर्नर एक यूरोपियन है और अभियुक्त भारतवासी; इस लिए धारा ४४३ के अनुसार अभियुक्त का मामला जूरी के सामने पेश होना चाहिए। सरकारी वकील ने यद्यपि इसका विरोध किया, परन्तु जज ने आज्ञा दी कि मुक़द्दमा जूरी के सामने १६वीं जनवरी को पेश किया जावे।

—बम्बई का समाचार है कि श्री० शिवाल दीपचन्द पत्वा 'डिक्टेटर' कॉङ्ग्रेस कमिटी भूलेश्वर वार्ड को ६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई। अभियुक्त का अपराध यह था कि उन्होंने मकान पर लगे मर्दुमशुमारी के नम्बरोंको मिटा दिया था।

—बम्बई का १४ वीं जनवरी का समाचार है कि मिसेज़ सदानन्द से प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार २,०००) रु० की ज़मानत फ़्री प्रेस जरनल के मालिक होने की हैसियत से तथा २,०००) की ज़मानत मुद्रक होने की हैसियत से माँगी है।

—मुन्शीगञ्ज का समाचार है, कि कुछ शरारती लोगों ने फ़ौजदारी अदालत के बाहर राजनैतिक आन्दोलन के सम्बन्ध में लगे इश्तहार वाले बोर्ड में आग लगा कर उसे पूर्णतया भस्म कर दिया।

—कलकत्ता का १४वीं जनवरी का समाचार है कि 'एडवान्स' के सम्पादक के विरुद्ध मैजिस्ट्रेट ने विद्रोह का अपराध लगाया। उसी मैजिस्ट्रेट ने 'नवशक्ति' के सम्पादक के विरुद्ध एक लेख "पिस्तौल वाली सरकार" के आधार पर विद्रोह का अपराध लगाया है।

—करीमगञ्ज का समाचार है कि दफ़ा १४४ के लगे रहने पर श्री० गिरीशलाल गुप्ता को एक सभा में वक्तृता देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया गया।

—मैमनसिंह का समाचार है कि श्री० शिबेष मुकर्जी वकील की बन्दूक़ का लाइसेन्स ज़ब्त कर लिया गया। पुलिस उनकी बन्दूक़ उनसे छीन ले गई है।

—लाहौर १४वीं जनवरी का समाचार है कि कल सायङ्काल को लाहौर छावनी में एक सिक्ख ने कैप्टन करटिस की पत्नी पर उनके बँगले में तलवार से आक्रमण किया, मिसेज़ करटिस उस समय बरामदे में बैठी कुछ पढ़ रही थीं, कि आक्रमणकारी ने तलवार से उनका हाथ काट लिया।

मिसेज़ करटिस के चिल्लाने की आवाज़ सुन कर उनके दो बच्चे, जिनकी आयु ६-७ वर्ष की थी, उधर आ निकले। आक्रमणकारी उन पर भी झपटा, जिससे दोनों घायल हो गए। इतने में मिसेज़ करटिस के बैरा ने मौक़े पर पहुँच कर आक्रमणकारी को क़ाबू में कर लिया। मिसेज़ करटिस का देहान्त हो गया है।

—देहली का १३वीं जनवरी का समाचार है कि देहली षड्यन्त्र केस का एक प्रधान इक़बाली गवाह मैजिस्ट्रेट के सामने बयान देते-देते बेहोश हो गया।

—जबलपुर तथा अहमदाबाद की म्युनिसिपल कमेटियों ने, शोलापुर के चार व्यक्तियों को फाँसी लगाने के प्रति अपना विरोध दिखाने के लिए, अधिवेशन स्थगित कर दिए।

—सूरत का १४वीं जनवरी का समाचार है कि मैजिस्ट्रेट ने शहर में धारा १४४ आठ दिन के लिए जारी कर दी है। परन्तु लोगों ने कई स्थानों पर सभाएँ करके इस आज्ञा की धज्जियाँ उड़ाईं।

—अफ़वाह है कि सरकार ने स्थानीय विश्वविद्यालय के अधिकारियों को इस बात की चेतावनी दी है कि यदि सीनेट हॉल पर से राष्ट्रीय झण्डा नहीं उतारा गया तो, विश्वविद्यालय की सरकारी सहायता बन्द कर दी जायगी।

इलाहाबाद ज़िले में गोली चली

गत १०वीं जनवरी का एक समाचार है कि कल्यानपुर नामक एक गाँव में, गाँव वालों और पुलिसों के बीच में दङ्गा हो गया। एक प्रेस-प्रतिनिधि के पूछने पर पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट ने घटना का जो बयान किया है, उसका आशय इस प्रकार है :—

गत शनिवार को कल्यानपुर गाँव में लगानबन्दी के सम्बन्ध में एक सभा हो रही थी। पुलिस को यह ख़बर मिल चुकी थी। नियत समय पर मऊआइमा पुलिस स्टेशन से एक सब-इन्सपेक्टर और ७ कॉन्स्टेबिल वहाँ गए। सभा में क़रीब २,००० मनुष्य उपस्थित थे। सभा भङ्ग होने पर श्री० अजीतसिंह और श्री० ज्वालाप्रसाद, जनता को भड़काने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। जब पुलिस उन्हें थाने की ओर ले जाने लगी, तो क़रीब १,२०० मनुष्यों ने पुलिस पर आक्रमण किया, और गिरफ़्तार व्यक्तियों को छुड़ा लिया। लोगों ने पुलिस के सिपाहियों और सब-इन्सपेक्टर को पीटा। लाठी के अतिरिक्त ईंट और पत्थर भी उन पर फेंके गए। गिरफ़्तार व्यक्तियों के छूट जाने पर भी लोग पुलिस का पीछा करते रहे। इस पर सब-इन्सपेक्टर ने लोगों पर अपनी रिवॉल्वर से तीन बार फ़ायरें कीं, जिसके फल-स्वरूप देवनारायण नामक एक १७ वर्षीय युवक घायल हो गया। अन्त में पुलिस भागते-भागते बालाडीह नामक गाँव में आ पहुँची। वहाँ छिप कर उन लोगों ने प्राण बचाए। तब भीड़ उन लोगों को न पाकर लौट आई। एक सिपाही इसी बीच में सब-इन्सपेक्टर के घोड़े पर सवार होकर पुलिस थाने में आया और उसने वहाँ उक्त घटना की ख़बर दी। ८ बजे के लगभग पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट, हथियार बन्द पुलिस के साथ वहाँ पहुँच गए। बालाडीह गाँव, पर तथा थाने पर पहरा बिठा दिया गया है। ख़बर है कि वे दोनों व्यक्ति जो गिरफ़्तार किए गए थे, वकील की मार्फ़त स्वयं अपने को गिरफ़्तार करा दिया। देवनारायण की हालत नाज़ुक है।

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट का कहना है कि, सोराम पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत सिरायत नाम के एक गाँव से भी ऐसी ही घटना हुई है।

पता चला है कि इस घटना की जड़ लगानबन्दी आन्दोलन है।

बम्बई में लाठी-प्रहार

बम्बई का ८वीं जनवरी का समाचार है कि मूलजी जेठा मार्केट में विदेशी कपड़ों से भरी एक लॉरी को रोकने के अपराध में १८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए। मैजिस्ट्रेट ने सबको छः-छः मास की कड़ी क़ैद तथा २०-२०) २० जुर्माने की सज़ा दी है। जुर्माना न देने पर छः-छः सप्ताह की क़ैद और भोगनी पड़ेगी। गिरफ़्तारी के समय मूलजी जेठा मार्केट में बहुत भीड़ हो गई थी। इससे पुलिस ने लोगों पर लाठी-प्रहार किया, जिससे बहुत से मनुष्य घायल हुए। इसी समय भगदड़ में किसी ने एक विदेशी कपड़े के गोदाम में आग लगा दी परन्तु आग शीघ्र ही बुझा दी गई।

—नागपुर का ७वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत दत्त ११७ (सी) धारा के अनुसार गोंदिया में गिरफ़्तार कर लिए गए। वे भण्डारा जेल में रक्खे गए हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री को ५ माह की सज़ा

नई दिल्ली का ८वीं जनवरी का समाचार है कि स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री श्रीमती कौशल्या देवी को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार ५ माह की सज़ा दी गई है। आपको 'बी' श्रेणी में रक्खे जाने की सिफ़ारिश की गई है। १ माह तक हवालात में रहने के बाद, आपके मामले का फ़ैसला दिया गया है।

सत्याग्रही वकील का बलिदान

बुल्दाना (बरार) का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के युवक वकील श्रीयुत सिद्धेश्वर गोरे की, जिन्हें शराब की दूकान पर धरना देते समय, शराब-फ़रोश ने डण्डे से मारा था, मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि डण्डे की चोट से उनकी खोपड़ी फट गई थी। उनके शव के साथ एक जुलूस निकाला गया।

—बलिया के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्रीयुत शिवराज मिश्र गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। इस ज़िले में अब तक लगभग २०० गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। कहा जाता है कि यहाँ के जेल के कुएँ का पानी ख़राब हो गया है। इस कारण स्नान के लिए शुद्ध जल न मिलने के कारण अनेक क़ैदियों को खुजली हो गई है।

विदेशी कपड़े की गाँठों पर फिर दूसरी बार मुहर लगा दी गई है।

—त्रिचिनापल्ली का ६वीं जनवरी का समाचार है कि एक सत्याग्रही क़ैदी, स्वस्यनारायण गुप्त की मृत्यु जेल में पेचिश की बीमारी से हो गई। उसका शव अन्त्येष्टि क्रिया के लिए दे दिया गया।

—नागपुर का ६वीं जनवरी का समाचार है कि सी० पी० मराठी युद्ध-समिति के अध्यक्ष श्री० अप्पाराव हाल्दे गिरफ़्तार कर लिए गए। पुलिस ने युद्ध-समिति के दफ़्तर पर धावा किया और वह क़रीब १२० कॉङ्ग्रेस बुलेटीन उठा ले गई।

—बनारस का ८वीं जनवरी का समाचार है कि यहाँ ५ महिलाएँ श्रीमती दुर्गेश्वरी, श्रीमती सीता देवी, श्री० सुन्दर देवी, श्री० तुलसी देवी और श्री० मनोरमा विदेशी वस्त्र की दूकान पर धरना देते समय गिरफ़्तार कर ली गईं। कहा जाता है कि एक महिला श्री० रमा देवी, एक विदेशी कपड़े के ख़रीदार को रोकते समय गिर पड़ीं। आप अस्पताल पहुँचा दी गईं।

इस घटना से शहर में सनसनी फैल गई; और एक भीड़ उस स्थान पर इकट्ठी हो गई। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर उक्त ५ महिलाओं के अतिरिक्त ५ स्वयंसेवकों को भी गिरफ़्तार किया, जिनमें से दो पीछे छोड़ दिए गए।

—आरा का ६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ प्रभात-फेरी के सम्बन्ध में ११ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं। ख़बर है कि गाँजा की दूकान पर पिकेटिङ्ग करने के सम्बन्ध में भी ११ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कलकत्ते का ८वीं जनवरी का समाचार है कि बङ्गाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्रीयुत यशोदानन्दन गोस्वामी गिरफ़्तार कर लिए गए।

लाल फ़ौज के ३० स्वयंसेवक गिरफ़्तार

लाहौर का ७वीं जनवरी का समाचार है कि लाल फ़ौज के ३० स्वयंसेवक पेशावर से विदेशी कपड़े की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने आए थे। स्वयंसेवकों का जुलूस सारे शहर में निकाला गया। जब जुलूस साढ़े आठ बजे दिल्ली दरवाज़े पर समाप्त हुआ तो पुलिस ने, सब स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

—नई दिल्ली का ८वीं जनवरी का समाचार है कि दिल्ली युद्ध-समिति के ६वें डिक्टेटर श्रीयुत केदारनाथ गोयनका को ६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं। हिन्दुस्तानी सेवा-दल के नायक श्रीयुत वसुदेव को ५ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। ६ स्वयंसेवकों को ६-६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। ७ छोटी उम्र के स्वयंसेवक चेतावनी देकर छोड़ दिए गए हैं।

—बम्बई का १०वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने, एक स्वयंसेवक को मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में ६ माह की कड़ी क़ैद, और २०) जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—कलकत्ते का ६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ बड़ा बाज़ार में, विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय १६ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मद्रास का ६वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० सत्यमूर्त्ति, जिन्हें सिटी पुलिस-एक्ट की ४थी धारा के अनुसार १०) के जुर्माने की सज़ा दी गई थी, विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देने के अभियोग में १४ स्वयंसेवकों के साथ; जिनमें एक महिला और कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी भी शामिल थे, गिरफ़्तार कर लिए गए। ख़बर है कि श्रीयुत सत्यमूर्त्ति को ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

डॉ० हार्डिकर को ९ मास की सख़्त क़ैद

बम्बई का १०वीं जनवरी का समाचार है कि हिन्दुस्तानी सेवा-दल के सङ्गठनकर्त्ता डॉ० एन० एस० हार्डिकर को, जो १ली जनवरी को हुबली में गिरफ़्तार किए गए थे, चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने १७ (१) धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और २००) जुर्माने या एक सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा और १७ (२) के अनुसार ३ माह की कड़ी क़ैद और २००) रु० जुर्माने या एक सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है। दोनों सज़ाएँ साथ ही साथ चलेंगी। डॉ० हार्डिकर ने अदालत की कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार किया।

—हाथरस का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ, श्रीयुत भगवनादास हलवा और लाला झावरमल, जनता को भड़काने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। लाला केशवदेव, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—पेशावर का १२ वीं जनवरी का एक समाचार है कि चारसद्दा में शराब की दूकानों पर पिकेटिङ्ग जारी है। गिरफ़्तारियों की संख्या २०० से अधिक हो गई है। कुछ लालकुर्ती वालों को ६ माह की कड़ी क़ैद और ५०) जुर्माने की सज़ा दी गई है। कुछ प्रधान कार्यकर्त्ताओं को, 'फ़्रण्टियर क्राइम्स रेगुलेशन' की ४० वीं धारा के अनुसार ज़मानत देने से इन्कार करने पर ३-३साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। ३० व्यक्ति चेतावनी देकर छोड़ दिए गए हैं।

—मैमनसिंह का ८ वीं जनवरी का समाचार है कि चार व्यक्ति श्रीयुत नरेशचन्द्र राय, श्री० देवेन्द्र दास, और हीरेन्द्र चक्रवर्ती नामक एक १० वर्ष का लड़का, गौरीपुर में, गाँजा की दूकान पर धरना देते समय गिरफ़्तार कर लिए गए। इन्हें ६-६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

गौरीपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी हीरेन्द्र सेन को भी १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—गौहाटी का समाचार है कि गत ६वीं नवम्बर को वहाँ के कुकुरमारा कैम्प को पुलिस ने सवेरे घेर लिया और श्रीमती चन्द्रप्रभा, श्रीयुत महेन्द्रनाथ दास, श्री० कनक चन्द्रनाथ आदि १० कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं को १२८वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया। ये सभी हवालात में रक्खे गए हैं।

शोलापुर के अभियुक्तों को फाँसी

पूना का १२वीं जनवरी का समाचार है कि शोलापुर के हत्याकाण्ड के अभियुक्त श्री० मल्लप्प धनशेट्टी, श्री० श्रीकिसन सारदा, श्री० जगन्नाथ शिन्दे और अब्दुल-रसूल क़ुर्बान हुसैन नामक चार व्यक्तियों को यरवदा जेल में फाँसी दे दी गई। इनकी अपील प्रिवी कौन्सिल में अस्वीकृत कर दी गई थी।

—बम्बई का ८वीं जनवरी का समाचार है कि १६ स्वयंसेवकों को, जो मूलजी जेठा मार्केट के समीप, विदेशी वस्त्रों से भरी हुई एक लॉरी को आगे बढ़ने में बाधा पहुँचा रहे थे, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १६वीं धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद और २०)-२०) जुर्माने की सज़ा दी गई है।

—झाँसी का १३वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ, कौन्सिल के भूतपूर्व सदस्य श्री० भागवत नारायण भार्गव, श्री० कुञ्जविहारी लाल वकील, श्री० किशनचन्द तथा श्री० रुस्तम, गत रात्रि को मऊ रेलवे स्टेशन पर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—लखनऊ का १३वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ गिरफ़्तारियों की धूम मची हुई है। नित्य गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं। क़रीब-क़रीब सभी गिरफ़्तारियाँ, वहाँ के व्यापारी अब्दुल रज्ज़ाक़ की दूकान पर धरना देने के सम्बन्ध में की गई हैं। इस सम्बन्ध में हाल में ५ महिलाएँ भी गिरफ़्तार की गई हैं।

—सीतापुर का १२वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत नन्दकिशोर, श्री० शिवदयाल, और श्री० शिवचरण गत ४ थी जनवरी को ग़ैर-क़ानूनी नमक बनाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए। ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री० ठाकुरप्रसाद शर्मा भारतीय दण्ड-विधान की १०८ वीं धारा के अनुसार गत ५वीं जनवरी को गिरफ़्तार किए गए।

—कलकत्ते का १२वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत जगदीश चटर्जी और श्री० प्रतुल भट्टाचार्य को, जो कि वहाँ के प्रेज़िडेन्सी जेल के क़ैदी हैं, यूरोपियन जेलर के पीटने के अभियोग में ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा और दी गई है।

—पटना का १३वीं जनवरी का समाचार है कि पटना युवक-सङ्घ के सेक्रेटरी श्री० राजेश्वरप्रसाद को भारतीय दण्ड-विधान की १२७वीं धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—दिल्ली का १३वीं जनवरी का समाचार है कि मुहल्ला कॉङ्ग्रेस-कमिटी की अध्यक्षा श्रीमती वासन्ती देवी से ६ माह की नेकचलनी के लिए २,०००) रु० की ज़मानत माँगी गई। उन्होंने ज़मानत न देकर, ६ माह के लिए जेल ही जाना पसन्द किया। चाँदनी चौक में मुसलमान कपड़े के व्यापारियों की दूकानों पर धरना देने के सम्बन्ध में २५ स्वयंसेवक भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—अलीगढ़ का १२वीं जनवरी का समाचार है कि ठाकुर टोडरसिंह, जो हाल ही में जेल से छूटकर आए हैं, और डॉक्टर जगदम्बा सहाय जो वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी हैं, कलेक्टरी में जाते समय, पुलिस द्वारा गिरफ़्तार कर लिए गए। उन्हें वारण्ट भी नहीं दिखाया गया। यह भी नहीं बताया गया है, कि वे किस धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं। वहाँ के एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता स्वामी शोभाराम, भी एडवर्ड पार्क की एक साधारण सभा में, जिसके वे सभापति थे, गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बम्बई का १२वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ की 'युद्ध-समिति' के अध्यक्ष श्री० जे० सी० मित्र, वाइस प्रेज़िडेण्ट श्री० कान्तिलाल पारीख, सेक्रेटरी श्री० तय्यब जी के० बेलामवाला, और कॉङ्ग्रेस बुलेटिन के सम्पादक श्री० मोहनलाल ठक्कर को, जो गत रविवार को, गिरगाँव के, कॉङ्ग्रेस के पुराने मकान पर से मर्दुम-शुमारी का नम्बर मिटाने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) और (२) धाराओं के अनुसार भिन्न-भिन्न अवधि की सज़ाएँ दे दी गईं। प्रथम तीन सज्जनों को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और १५०) रु० जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त-क़ैद की सज़ा दी गई। श्रीयुत ठक्कर को ४ माह की सादी क़ैद और ५०) रु० जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई। अभियुक्तों ने अदालत की कार्रवाई में कोई भाग नहीं लिया।

—मद्रास का १२वीं जनवरी का समाचार है कि तीसरे पहर के समय पुलिस ने ट्रिप्लीकेन में 'जनरल स्टोर्स' नामक एक दूकान के सामने खड़ी हुई भीड़ को हटा कर धरना देते हुए दो स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

—खुलना का एक समाचार है कि गत ७वीं जनवरी को ६० स्वयंसेवक आबकारी की दूकानों पर धरना देने के लिए फुलतला गए। कहा जाता है कि शराब-फ़रोश ने पहले ही ज़िला-मैजिस्ट्रेट को सहायता के लिए फ़ोन कर दिया था। फल-स्वरूप पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट २५ हथियारबन्द पुलिस के साथ घटनास्थल पर आ पहुँचे। कहा जाता है कि कुछ देर की ज़ोरदार पिकेटिङ्ग के बाद, पुलिस ने स्वयंसेवकों पर लाठियाँ चलाई, जिसके फल-स्वरूप २५ स्वयंसेवक घायल हुए। उनमें ३ की हालत ख़तरनाक बताई जाती है। पुलिस ने स्वयंसेवकों के नायक श्री० सुधांशुकुमार बोस तथा ५ अन्य स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

*　　*　　*

शहर और ज़िला

१६ व्यक्तियों को कड़ी क़ैद

इलाहाबाद में ७वीं जनवरी को मि० मुहम्मद ईशाक मैजिस्ट्रेट के सामने २३ राजनैतिक अभियुक्त पेश किए गए। अभियुक्तों के विरुद्ध ग़ैर-क़ानूनी कॉङ्ग्रेस कमिटी की सहायता करने का अभियोग लगाया गया था। मैजिस्ट्रेट ने १६ अभियुक्तों को छः-छः मास की कड़ी क़ैद तथा २५-२५) रु० जुर्माने की सज़ा दी। बाक़ी सात ने क्षमा माँग ली।

—गत १०वीं जनवरी को स्थानीय मुसलमान सज्जनों ने, प्रधान-मन्त्री, आग़ा ख़ाँ, सर तेज बहादुर सप्रू आदि के नाम, निम्न-लिखित तार भेजा है :—

"देश की भलाई के लिए और मुसलमानों के हित की रक्षा के लिए, सुरक्षित स्थानों के साथ, संयुक्त निर्वाचन की नितान्त आवश्यकता है।"

—१० वीं जनवरी का एक समाचार है कि रामेश्वर नामक एक व्यक्ति, जो कॉङ्ग्रेस का स्वयंसेवक बताया जाता है, ग़ैर-क़ानूनी संस्था (कॉङ्ग्रेस कमिटी) को सहायता पहुँचाने के अपराध में गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है कि तलाशी लेने पर उसके मकान में कॉङ्ग्रेस सम्बन्धी कुछ काग़ज़-पत्र मिले थे।

—गत ९वीं जनवरी को पं० मोतीलाल नेहरू, श्रीमती कमला नेहरू को देखने के लिए, स्थानीय ज़िला जेल में गए थे।

झण्डा-उत्सव में पुलिस का हस्तक्षेप

गत १३वीं जनवरी का सोराम तहसील के अन्तर्गत शिवगढ़ नामक एक गाँव के लोगों ने, शिवगढ़ बाज़ार में राष्ट्रीय झण्डा फहराना चाहा। शिवगढ़ सरकारी स्टेट है, इस कारण अधिकारियों ने, गाँव वालों के उद्देश्य को पूरा न होने देने के लिए पहले ही से बन्दोबस्त कर रक्खा था। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट और मैजिस्ट्रेट की अधीनता में हथियारबन्द पुलिस का एक दल, शिवगढ़ में तैनात कर दिया गया था। बाज़ार के भीतर जाने के सभी दरवाज़ों पर पुलिस वालों का पहरा था। यद्यपि साढ़े तीन बजे तक बाज़ार के भीतर जाने में कोई रोक-टोक नहीं थी, तो भी पुलिस वालों को आज्ञा दे दी गई थी कि वे जनता को बाज़ार के भीतर जाने से रोकें। शिवगढ़ कॉङ्ग्रेस आश्रम के सामने भी, जहाँ लोग झण्डा फहराना चाहते थे, पुलिस का पहरा था।

गाँव में लोगों ने एक सभा की, जिसमें हज़ारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। ५ बजे सन्ध्या के समय, जब सभा भङ्ग हो गई, लोग बाज़ार के भीतर जाने की कोशिश करने लगे। किन्तु पुलिस के रोकने पर वे लौट गए। उसके बाद पुलिस भी वहाँ से हट गई। एक ग़ैर-सरकारी रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस वालों के चले जाने पर, आश्रम के ऊपर झण्डा फहराया गया। गाँव वालों के उद्देश्य को जान कर, पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० मेज़र्स ने युक्तप्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन को जो पत्र लिखा था, उसका आशय इस प्रकार है :—

"मुझे विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि शिवगढ़ और सोराम के कुछ लोग, शिवगढ़ में कल राष्ट्रीय झण्डा फहराना चाहते हैं। इसके बाद लोग सोराम तहसील और पुलिस-थाने पर भी राष्ट्रीय झण्डा फहराना चाहते हैं। आप यह समझ रक्खें, कि सरकार की ओर से ऐसे कार्यों को रोकने का यत्न किया जावेगा। मैं समझता हूँ, कि आप इस बात से सहमत होंगे कि ऐसे कार्य न तो उचित ही हैं, और न कॉङ्ग्रेस की कार्य-प्रणाली का यह एक अङ्ग ही हो सकता है। मुझे पूर्ण-विश्वास है कि आप इस बात का अनुभव करेंगे कि यदि गाँव वालों की ओर से इस प्रकार का कोई प्रयत्न किया जायगा, तो पुलिस को इसे रोकने के लिए, बल प्रयोग करना ही पड़ेगा। किन्तु यह मेरी इच्छा के विरुद्ध है। इसलिए मैं आपको इस रिपोर्ट के विषय में सूचना दे रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आप गाँव वालों के ऐसे कार्यों का समर्थन नहीं करेंगे। गाँव वालों का ख़्याल है, कि वे कॉङ्ग्रेस की आज्ञा का पालन कर रहे हैं। दूसरी बात यह है कि हाल ही में कल्यानपुर में होने वाली एक घटना के सम्बन्ध में, पुलिस पर ज़्यादतियाँ करने का दोष लगाया गया है। यदि सोराम में भी बल-प्रयोग की आवश्यकता पड़ेगी, तो मैं यह पत्र प्रकाशित करा दूँगा।" इसके बाद सुपरिण्टेण्डेण्ट ने फिर उसी दिन शाम को यह पत्र टण्डन जी के पास भेजा—"अपनी चिट्ठी की नक़ल पढ़ने पर पीछे मुझे ख़्याल हुआ, कि मैंने पहली चिट्ठी में यह बात साफ़-साफ़ नहीं लिखी है, कि शिवगढ़ गाँव सरकारी-स्टेट है और वहाँ का बाज़ार भी सरकारी ही है। इसलिए इन स्थानों पर झण्डा फहराने का उसी तरह विरोध किया जायगा, जिस तरह कि तहसील और पुलिस-स्टेशन पर।"

टण्डन जी ने दोनों पत्रों का जवाब इस प्रकार दिया—"मुझे आपके दोनों पत्र कल शाम को मिले। मैंने इस विषय की जाँच की है, और मुझे पता चला है कि शिवगढ़ में आज झण्डा फहराने का उत्सव किया जायगा ; किन्तु किसी भी कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता का उद्देश्य तहसील या पुलिस-स्टेशन पर झण्डा फहराने का नहीं है। आपके दूसरे पत्र को पढ़ कर मुझे आश्चर्य हुआ। 'शिवगढ़ एक सरकारी स्टेट है' इसका अर्थ तो यह जान पड़ता है, कि सरकार शिवगढ़ की ज़मींदार है। किन्तु केवल इसीलिए, आपका वहाँ गाँव वालों को झण्डा फहराने से रोकना मुनासिब नहीं है। शिवगढ़ पर सरकार का जो ज़मींदारी हक़ है, उसके अनुसार, खुले स्थानों में साधारण सामाजिक कृत्यों को करने की, जनता को कोई मुमानियत नहीं हो सकती। मकान-मालिकों के, किसी भी काम में, जो कि ग़ैर-क़ानूनी नहीं है, अपने व्यक्तिगत अधिकार और सम्पत्ति के प्रयोग में भी ज़मींदार किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता। आप बाज़ार को भी तहसील और पुलिस-स्टेशन की श्रेणी में नहीं रख सकते। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप एक बार फिर इस पर विचार करेंगे, और शिवगढ़ के लोगों को, झण्डा फहराने में किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचावेंगे।

"आपने अपने पहले पत्र में कल्यानपुर का ज़िक्र किया है, और आपके लिखने से मालूम होता है कि आप पुलिस की फ़ायरों का समर्थन करते हैं। मैं आप से प्रार्थना करता हूँ, कि आप ज़रा देवनारायण के पास जावें, जो इस समय मृत्यु के समीप है, और उसकी बातों को सुनें तब आप एक मनुष्य की हैसियत से यह निर्णय कर लें, कि पुलिस के उस अफ़सर ने, जिसने कि घबड़ा कर उसे गोली मार दी, पुरस्कार के योग्य कार्य किया है या दण्ड के योग्य ?"

—गत १२वीं जनवरी को स्थानीय मैजिस्ट्रेट ने शारदाप्रसाद नामक एक व्यक्ति को, राजविद्रोहात्मक भाषण देने तथा स्थानीय ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी को, जो एक ग़ैरक़ानूनी संस्था है, सहायता पहुँचाने के अभियोगों में ६-६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। दोनों सज़ाएँ साथ ही साथ चलेंगी।

*　　*　　*

—कलकत्ते का ८वीं जनवरी का समाचार है कि 'एडवान्स' के सम्पादक श्री० ब्रजेन्द्रनाथ गुप्त, जिनके ऑफ़िस की तलाशी ७वीं जनवरी को ली गई थी, राजद्रोह के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए, किन्तु पीछे ज़मानत पर छोड़ दिए गए। कहा जाता है कि तलाशी और उनकी गिरफ़्तारी का कारण, उनका अपने पत्र में कुछ विद्रोहात्मक लेखों का प्रकाशित करना था।

—बम्बई का ६वीं जनवरी का समाचार है, कि गत रात्रि के समय, ग्रान्ट रोड पर हिन्दू और मुसलमानों की भीड़ को हटाने के लिए पुलिस ने लाठियाँ चलाईं। ख़बर है कि ३० व्यक्ति घायल हुए हैं।

—कलकत्ते का ८वीं जनवरी का समाचार है कि 'बन्दूक़ हरकार' शीर्षक एक कविता छापने के सम्बन्ध में, 'नवशक्ति' के ऑफ़िस की तलाशी ली गई, और उसके सम्पादक श्री० सरोजकुमार राय, तथा प्रकाशक और मुद्रक भारतीय दण्ड-विधान की १२४वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए, परन्तु पीछे ज़मानत पर छोड़े गए।

डिप्टी कलेक्टर के घर में चोरी

ख़बर है कि स्थानीय डिप्टी कलेक्टर मुहम्मद इसहाक (जो विशेष रूप से आजकल राजनैतिक मामलों का फ़ैसला करने के लिए नियुक्त किए गए हैं) के घर में चोरी के सम्बन्ध में ६ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं।

इधर कस्बा में अनेक चोरियाँ हुई हैं। कहा जाता है कि इनमें सब से भारी चोरी, श्री० इश्हाकअली मिर्ज़ा के यहाँ हुई है। क़रीब २०,०००) रु० चोरों के हाथ लगे। एक व्यक्ति इस सम्बन्ध में सन्देह पर गिरफ़्तार किया गया है।

—आरा का ६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के दो प्रमुख कार्यकर्त्ता बाबू रामायणप्रसाद और बिहार-उड़ीसा कौन्सिल के भूतपूर्व सदस्य बाबू सिद्धेश्वरी प्रसाद अपनी सज़ाओं की अवधि पूरी कर हज़ारीबाग़ जेल से छूट गए।

रामायण बाबू के कहने से पता चलता है कि उनका वज़न जेल में १० पौण्ड घट गया है।

—लाहौर का १०वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ ११वीं जनवरी से अखिल एशिया-महिला परिषद का अधिवेशन टाउन हाल में आरम्भ होगा। कपूरथला की महारानी ने स्वागतकारिणी-समिति की अध्यक्षता स्वीकार कर ली है। स्वागतकारिणी-समिति में २०० सदस्य हैं। ५० महिला प्रतिनिधियों के उपस्थित होने की आशा है।

—बम्बई का १०वीं जनवरी का समाचार है कि बम्बई-सरकार ने एक असाधारण गज़ट के द्वारा, क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट की १६वीं धारा के अनुसार कोलाबा ज़िले की ६ कॉङ्ग्रेस संस्थाओं को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया है।

एक दूसरे असाधारण गज़ट के द्वारा, सान्ताक्रूज़, वरली, मलाड, घाटकोपर और कुरला की छः कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई हैं।

—लाहौर का गत ६ वीं जनवरी का समाचार है कि पण्डित सन्तराम, लाला दुनीचन्द आदि कॉङ्ग्रेस नेताओं के मामले में मुहम्मद तुफ़ैल नामक एक व्यक्ति की, जो पहले प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी का टाइपिस्ट था, गवाही हुई। ज़िरह में गवाह ने कहा कि टाइपिस्ट के सिवाय वह पेशेवर गवाह भी है।

—ख़बर है कि काश्मीरी दरबार ने 'गाँधी का चर्ख़ा' 'गाँधी की आँधी', 'आज़ादी का डङ्का', 'कॉङ्ग्रेस बिगुल' और 'आज़ाद भारत के गाने' ये ५ हिन्दी के पेम्फ़लेटों को ज़ब्त कर लिया है।

जुलूस पर लाठियों की वर्षा
महिलाओं की गिरफ़्तारी

कराची का ११वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के कॉङ्ग्रेस के अनुयायियों ने रामबाग़ में सवेरे एक सभा करना चाहा; किन्तु पुलिस ने उन्हें ऐसा करने से रोका। तब पुलिस मैजिस्ट्रेट की आज्ञा के विरुद्ध नानकवारा स्ट्रीट पर एक जुलूस तैयार किया गया, जिसमें कई हज़ार दर्शक भी शामिल थे। जब यह जुलूस प्रिन्सेज़ स्ट्रीट पर खादी-भण्डार के समीप पहुँचा तब हथियारबन्द पुलिस के एक दल ने उसे रोका और जुलूस भङ्ग करने के लिए लोगों से कहा। मैजिस्ट्रेट ने लोगों को चेतावनी दी कि जुलूस ग़ैर-क़ानूनी है, तो भी लोगों ने इटना अस्वीकार किया, जिसके फल-स्वरूप पुलिस ने लाठियाँ चलाईं। जुलूस की महिलाएँ जुलूस के सामने चली आईं, किन्तु वे गिरफ़्तार कर ली गईं। इसी समय पुलिस वालों पर पत्थर फेंके गए, जिसके फल-स्वरूप पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा कुछ दूसरे लोग घायल हुए।

आधी रात के समय भी जब जुलूस के लोग हटने को तैयार न हुए, और भोजन का प्रबन्ध उसी स्थान पर किया जाने लगा तब पुलिस वहाँ से हट गई।

मीठादार के समीप एक दूसरा जुलूस तैयार किया गया। यहाँ भी लाठियों की वर्षा की गई, जिनके फल-स्वरूप कुछ लोग घायल हुए। कहा जाता है कि कुल १५० व्यक्ति घायल हुए हैं, जिनमें ५० की अवस्था चिन्ताजनक बताई जाती है। वे अस्पताल भेजे गए हैं। ३६ गिरफ़्तारियाँ भी की गईं। जिनमें महिला डिक्टेटर गोनीबाई तथा १२ अन्य महिलाएँ भी हैं।

दूसरी बार लाठी चलने के बाद, फिर लोगों ने जुलूस तैयार करना चाहा, किन्तु पुलिस ने उन्हें हटा दिया। सवेरा होते-होते सभी घर चले गए। पीछे का समाचार है कि ११७ मनुष्य अस्पतालों में भर्ती किए गए हैं। लगभग ४०० मनुष्यों को हलकी चोटें आई हैं। ७ व्यक्तियों की अवस्था चिन्ताजनक है। पुरुषोत्तम खीमजी नामक एक १८ वर्षीय युवक की हालत नाज़ुक बताई जाती है।

—अहमदाबाद का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के कुछ विदेशी कपड़े के व्यापारियों के अपने विदेशी कपड़े की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर दिलवाने से इन्कार करने पर, श्रीयुत अब्बास तैयब जी की पुत्री मिस रहाना तैयब जी, तथा कुछ अन्य क़ैदी पाटन जेल में अनशन कर रहे हैं।

—ख़बर है कि मुज़फ़्फ़रपुर में जिन ३८ व्यक्तियों पर जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में मुक़दमा चल रहा था, उनमें १८ छोड़ दिए गए हैं। रायबहादुर द्वारकानाथ एम० एल० ए० पर भी, अपने पुत्र के बहकाने के अभियोग में मुक़दमा चल रहा था। वे भी पुत्र सहित छोड़ दिए गए।

जो लोग पण्डित जी का स्वागत करने के लिए स्टेशन पर गए थे, उनमें से १० गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बनारस का ३१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि बम्बई में शहीद होने वाले श्री० काशीशङ्कर वाजपेयी की मृत्यु के सम्बन्ध में, वहाँ हड़ताल मनाई गई। उनके बड़े भाई, उनका चिता-भस्म गङ्गा में डालने के लिए यहाँ आए थे।

सन्ध्या-समय सत्याग्रह की डिक्टेटर श्रीमती सरोजिनी देवी के नेतृत्व में एक सभा की गई, जिसमें मृत व्यक्ति के त्याग-भाव के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एक प्रस्ताव पास किया गया।

—ख़बर है कि कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता बाबू राजदेवसिंह हज़ारीबाग़ जेल से छोड़ दिए गए। कहा जाता है कि जब वे रामगञ्ज स्टेशन पर पहुँचे, तो वहाँ के डोमों ने आपका स्वागत बड़ी धूमधाम से किया।

—६वीं जनवरी का समाचार है कि बरार प्रान्तीय युद्ध-समिति के प्रथम डिक्टेटर श्रीयुत एम० एस० अनी सिवनी-जेल से रिहा कर दिए गए।

क़ैदी को चर्ख़ा दिया गया

जम्मू (काश्मीर) का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के भूतपूर्व सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट को, जो इस समय लगानबन्दी के लिए एक पैम्फ़लेट लिखने के अभियोग में बाहु ज़िले में क़ैद हैं, उनके माँगने पर राज्य के अधिकारियों ने जेल में उन्हें एक चर्ख़ा दिया है।

कॉङ्ग्रेस की शक्ति बढ़ रही है
सरकारी रिपोर्ट

सरकार की ओर से, भिन्न-भिन्न प्रान्तों की राजनैतिक अवस्था के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट प्रकाशित की गई है, उसका सारांश निम्न-प्रकार है :—

कलकत्ते में पिकेटिङ्ग बढ़ रही है। ढाका डिवीज़न के कई ज़िलों में भी पिकेटिङ्ग बढ़ रही है। अमृतसर में कॉङ्ग्रेस की शक्ति बहुत प्रबल है। बहिष्कार आन्दोलन यहाँ पर ज़ोरों से चल रहा है। युक्त प्रान्त में लगानबन्दी आन्दोलन ज़ोरों से चल रहा है। बिहार और उड़ीसा प्रान्त में, सारन ज़िले की अवस्था चिन्ताजनक है। लगानबन्दी आन्दोलन का ज़ोर वहाँ भी बहुत अधिक है।

मध्य प्रान्त में भी बारडोली के ढङ्ग का लगानबन्दी आन्दोलन जारी करने की कोशिश की जा रही है। नागपुर इस सम्बन्ध में बहुत प्रयत्न कर रहा है।

—अमृतसर का ६वीं जनवरी का समाचार है कि सरदार दर्शनसिंह, जिन्हें ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई थी, छूट कर अमृतसर आए। वे बहुत दुर्बल हो गए हैं। उनका कहना है कि जेल में उन्हें अच्छा भोजन नहीं दिया जाता था।

—नागपुर का ६वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० एम० वी० अभ्यङ्कर, बैरिस्टर को, जो सिवनी जेल में 'ए' श्रेणी के क़ैदी हैं, पहले की भाँति अब अपनी स्त्री और अपने मित्रों से नहीं मिलने दिया जाता।

—किशोरगञ्ज का ७वीं जनवरी का समाचार है कि कलकत्ता विश्वविद्यालय के एम० ए० के विद्यार्थी, श्रीयुत नवेन्द्रदत्त मजूमदार पर ज़िला-मैजिस्ट्रेट के समक्ष 'बन्दे-मातरम्' चिल्लाने के अभियोग में मामला चल रहा है।

बर्मा में गवर्नमेण्ट को उलटने की भयङ्कर चेष्टा !

विद्रोहियों के सरदार की गिरफ़्तारी के लिए पाँच हज़ार के इनाम की घोषणा !!

विद्रोहियों का आतङ्क सारे बर्मा में फैल रहा है !!!

रङ्गून ७ जनवरी—मिनलाङ्ग के एक समाचार से विदित होता है कि बर्मा में जो विद्रोह उठ खड़ा हुआ है, उसका उद्देश्य राजनैतिक है। सरकारी रिपोर्ट से मालूम होता है कि विद्रोहियों का नेता अभी तक ज़िन्दा है। अलान्तुङ्ग पहाड़ी पर विद्रोहियों के पहुँचने के पहले ही वह भाग गया था। जिस मृत-सरदार को विद्रोहियों का नेता समझा गया था, वह वास्तव में उसका प्रधान-मन्त्री था। इसका नाम पोलिवन बताया जाता है।

कहा जाता है कि विद्रोहियों के प्रधान सरदार ने टाङ्ग्ग्यात में अपना प्रधान अड्डा स्थापित किया है, और वहाँ वह शक्ति संग्रह कर रहा है। मिन्हला, ओक्पो तथा आसपास के गाँवों के लोगों से पुलिस ने बन्दूक़ें इस डर से छीन ली हैं कि कहीं वे विद्रोहियों के हाथों में न पड़ जायँ।

४थी जनवरी को विद्रोहियों ने यामेथिन में जो धावा किया था, उसके सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक कुछ बातें मालूम हुई हैं। कहा जाता है, कि १०० हथियारबन्द विद्रोहियों ने हुमान्सी और बाराव नाम के दो गाँवों पर, जो यामेथिन गाँव से ८ मील की दूरी पर हैं, धावा किया। गाँव के अधिकांश लोग बाज़ार गए हुए थे। विद्रोहियों ने गाँव में आग लगा दी, जिससे क़रीब २०० घर जल गए। उन्होंने गाँवों के दो मुखियों से बन्दूक़ें छीन लीं। एक घुड़सवार कॉन्स्टेबिल को घायल किया, और एक मुखिया को भी घायल कर जङ्गल में छोड़ दिया।

कहा जाता है कि, थारावड्डी से १० मील की दूरी पर एक गाँव में विद्रोहियों ने एक अस्पताल खोला था, जिसमें वे अपने दल के घायलों और बीमारों का इलाज किया करते थे। किन्तु पुलिस के वहाँ पहुँचने पर विद्रोहियों का वहाँ नाम-निशान भी नहीं मिला। कहा जाता है कि विद्रोहियों को पुलिस के आने की ख़बर पहले ही मिल चुकी थी, इसलिए वे वहाँ से भाग गए थे। पुलिस जैसे-जैसे आगे बढ़ती गई, उसे विद्रोहियों के उन स्थानों पर ठहरने के चिह्न मिलते गए, किन्तु विद्रोहियों का कोई पता नहीं चला।

सिरकविन से ४ मील की दूरी पर गङ्गाले नामक एक गाँव में भी विद्रोहियों ने एक धनिक व्यक्ति के मकान पर धावा मारा था। किन्तु गाँव वालों के जुट जाने से उनका प्रयत्न निष्फल हो गया। पुलिस के अधिकारियों ने विद्रोहियों की एक बन्दूक़ के लिए ५०) रु० के इनाम की घोषणा की है।

भिन्न-भिन्न स्थानों पर अनेक विद्रोही गिरफ़्तार किए गए हैं। एक गाँव का मुखिया भी, विद्रोहियों को शरण देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया गया है। विद्रोहियों को पुलिस के आने की सूचना देने के अपराध में एक पुङ्गी भी गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है कि विद्रोहियों का प्रधान गरोह योमास के समीप जङ्गलों में छिपा हुआ है। ज़िगोन और गौङ्गदा में कुछ घायल विद्रोही पाए गए हैं। इससे समझा जाता है कि विद्रोहियों का सङ्गठन ढीला पड़ गया है। अभी तक कुल ५०० विद्रोही गिरफ़्तार किए गए हैं। ८वीं जनवरी की एक सरकारी रिपोर्ट से मालूम होता है, कि देदाए नामक स्थान के समीप फ़ौज की ६०० विद्रोहियों से मुठभेड़ हुई। कहा जाता है कि विद्रोही लोग अच्छी तरह हथियारों से सज्जित नहीं थे। पुलिस ने फ़ायरें कीं तथा विद्रोहियों में अनेक हताहत हुए; किन्तु अन्धकार हो जाने के कारण पुलिस लौट आई। मालूम हुआ है, कि थारावड्डी के विद्रोहियों के नेता का नाम सायासान है। उसके जीवित होने की बात अनिश्चित है। सरकार ने उसकी गिरफ़्तारी के लिए ५,०००) रु० की घोषणा की है। पुलिस उसे वर्षों से जानती है। वह ज्योतिषी और वैद्य का काम किया करता था। अनाधिकृत लॉटरी डालने के अपराध में उसे दो बार सज़ाएँ भी दी जा चुकी हैं। वह हत्या का भी अपराधी है। वह एक साधारण व्यक्ति है जो अपनी धूर्त्तता से, बर्मा में जीविका उपार्जन करता था। कुछ वर्षों से उसने राजनीति में भी भाग लेना शुरू किया था।

यामेथिन के विषय में रङ्गून का ९वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के विद्रोहियों ने अपने नेता के साथ आत्म-समर्पण कर दिया है। पुलिस को विद्रोहियों की २९ लाशें मिलीं। ७ घायल व्यक्ति भी पाए गए। आहतों की ठीक-ठीक संख्या बताना कठिन है, क्योंकि वे अपने दल के आहतों को भी ले भागते थे। कुछ अभी जङ्गलों में छिपे हैं। इन यामेथिन के विद्रोहियों के नेता का नाम थाततालावका है, और वह थारावड्डी का रहने वाला है।

१०वीं जनवरी का समाचार है कि एक वायुयान थारावड्डी के विद्रोहियों की खोज में उड़ा, लेकिन उनका कुछ पता नहीं लगा।

हवाई जहाज़ पर से, गाँवों में पर्चे गिराए गए, जिसमें विद्रोहियों के नेता को पकड़ने वाले को इनाम देने की घोषणा की गई थी। थारावड्डी से क़रीब ३०० क़ैदी रङ्गून लाए गए हैं। क़ैदी-विद्रोहियों के मामले का फ़ैसला स्पेशल ट्रिब्यूनल द्वारा किया जायगा।

१२वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के 'उसिओ थीन गोवा' की सभी संस्थाओं की तलाशियाँ ली गईं। रङ्गून में उसके प्रधान दफ़्तर की भी तलाशी ली गई। क़रीब १५० स्थानों की तलाशियाँ लेने पर, थारावड्डी विद्रोह के सम्बन्ध में कुछ काग़ज़-पत्र पाए गए हैं।

थारावड्डी-विद्रोह का उद्देश्य वर्तमान सरकार को उलट देना कहा जाता है। यह भी मालूम हुआ है, कि इसी उद्देश्य से कुछ दिनों से, गुप्त रूप से तैयारियाँ हो रही थीं। दूसरे-दूसरे स्थानों में भी असन्तोष के लक्षण पाए गए हैं, और यद्यपि थारावड्डी-विद्रोह का बल टूट गया है, तो भी भिन्न-भिन्न स्थानों में उत्पात खड़ा होने की सम्भावना है।

फ़ैज़ाबाद जेल में अत्याचार

['भविष्य' के विशेष सम्वाददाता द्वारा]

फ़ैज़ाबाद जेल में पता चला है, कि कोई २५० के लगभग "बी" क्लास के क़ैदी बन्द हैं। उनमें से १६० ने "सी" क्लास के क़ैदियों के प्रति बुरे व्यवहार के विरुद्ध विरोध प्रकट करने के लिए 'बी' श्रेणी के विशेष-अधिकार त्याग दिए हैं। कुछ दिनों से जेल के राजनैतिक क़ैदी एक नया सत्याग्रह कर रहे हैं। पहले राजनैतिक क़ैदी इकट्ठे बैठ कर अपना दिल बहला लिया करते थे, परन्तु अब जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट की आज्ञा से ऐसा नहीं करने दिया जाता। राजनैतिक क़ैदियों को चार अलग-अलग बैरकों में बाँट दिया गया है। जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट की इस आज्ञा के विरुद्ध ये सारे क़ैदी "ताला-सत्याग्रह" कर रहे हैं। रात के समय सब क़ैदी अपनी-अपनी बैरकों के बाहर, वन्देमातरम् तथा राष्ट्रीय झण्डा-सम्बन्धी गीत गाकर, लेट जाते हैं। जेल के चार-पाँच व्यक्ति फिर प्रत्येक राजनैतिक क़ैदी को ज़बर्दस्ती उठा कर बैरकों में बन्द करते हैं।

जेल में भी इनका एक "डिक्टेटर" नियुक्त किया गया है। अभी समस्त क़ैदियों से यह सत्याग्रह नहीं कराया जाता। परीक्षा-स्वरूप केवल १५० राजनैतिक क़ैदी ही यह "ताला-सत्याग्रह" कर रहे हैं। कहा जाता है, यदि इन क़ैदियों की इच्छानुकूल शीघ्र प्रबन्ध नहीं किया गया, तो स्थिति और भी गम्भीर हो सकती है। कई राजनैतिक क़ैदियों का वज़न बहुत घट गया है।

—बम्बई का १२वीं जनवरी का समाचार है कि शोलापुर के अभियुक्तों की फाँसी की ख़बर से वहाँ बड़ी सनसनी फैल गई है। कालबा देवी रोड पर लोगों ने उपद्रव करना शुरू किया। कहा जाता है, कि ट्रामकार तथा दूसरी गाड़ियों पर लोग पत्थर फेंकने लगे, जिसके फल-स्वरूप यात्रियों को उतर जाना पड़ा। जब पुलिस-कमिश्नर मि० विलसन घटनास्थल पर पहुँचे तो उनकी मोटर पर भी पत्थर फेंके गए। तीन पुलिस वालों को लोगों ने घेर लिया, और शोलापुर के मृत अभियुक्तों के सम्मानार्थ अपनी पगड़ी उतारने को कहा। कॉङ्ग्रेस वालों ने भीड़ को हटा कर उन पुलिस वालों की रक्षा की। भीड़ ने सड़कों पर गाड़ियों को चलने से रोका और इसलिए पुलिस को लाठियाँ चलानी पड़ीं। किन्तु तो भी अनेक स्थानों पर ट्राम तथा अन्य गाड़ियों का चलना बन्द हो गया। ख़बर है कि लाठी की चोट से १८५ व्यक्ति घायल हुए हैं। इनमें ३० की हालत नाज़ुक बताई जाती है।

—लखनऊ का ७वीं जनवरी का समाचार है, भरतपुर के अधिकारियों ने मुसवार के आर्य-समाज को जुलूस निकालने के सम्बन्ध में एक निषेधाज्ञा निकाली है। कहा जाता है, कि यह जुलूस १९०७ से हर साल बिना रोक-टोक के निकाला जाता था। अखिल भारतीय आर्य लीग की सम्मति के अनुसार, वहाँ के आर्य-समाजी इस सम्बन्ध में सत्याग्रह करने का विचार कर रहे हैं।

—पटना का १२वीं जनवरी का समाचार है कि एक असाधारण गज़ट के द्वारा, पूर्णिया ज़िला, जमाइतारा, पाकुर और गोडा सब-डिविज़नों की कॉङ्ग्रेस कमेटियाँ ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दी गई हैं।

—बाँदा का ९वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के सभी दूकानों के विदेशी कपड़ों की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगा दी गई है।

—ब्राह्मण बरिया (टिपरा) का ११वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ अदालत के अहाते में, २ बजे रात में आग लग गई। ख़बर है कि मर्दुमशुमारी के सम्बन्ध के सभी काग़ज़-पत्र जल कर ख़ाक हो गए। पुलिस ने इस सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस-दफ़्तर पर धावा किया।

❀

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

'साधु' तथा उनके 'चेलों' के मनोरञ्जक करशमे !

वायसराय की गाड़ी को उड़ाने का निष्फल-प्रयत्न

बहिन ने भाई को बम भेजे :: बनारस कोतवाली में बम !!

कानपूर के पास डाका :: डिप्टी कलेक्टर पर बम !!

लाहौर षड्यन्त्र केस

इक़बाली गवाह इन्द्रपाल का बयान

लाहौर का ६वीं जनवरी का समाचार है कि आज बारह बजे सेण्ट्रल जेल में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने षड्यन्त्र केस के २६ अभियुक्त पेश किए गए। दर्शकों को आज्ञा लेकर तथा तलाशी देकर भीतर घुसने की आज्ञा थी। बाहर पुलिस का कड़ा पहरा था। आरम्भ में श्री० कृष्णगोपाल ने कहा—"चूँकि श्री० धर्मपाल अभियुक्त बीमार है, इसलिए उसके बैठने का प्रबन्ध होना चाहिए। इस पर श्री० धर्मपाल को एक कुर्सी बैठने के लिए दे दी गई। लाला काशीराम सब-इन्सपेक्टर ने गवाही देते हुए कहा, कि मैंने चन्द्रशेखर तथा दूसरे फ़रार अभियुक्तों की बहुत खोज की, परन्तु कोई पता नहीं चला। इस मामले के फ़रार अभियुक्तों में से श्री० चन्द्रशेखर आज़ाद, यशपाल, सुखदेवराज, लेखराज, दसराज, श्रीमती दुर्गादेवी तथा प्रकाशवती को गिरफ़्तार करने के लिए पुरस्कारों का विज्ञापन दिया जा चुका है। बाक़ी पाँच के विरुद्ध वारण्ट जारी कर दिए गए हैं, परन्तु अभी तक वे गिरफ़्तार नहीं किए जा सके।"

इसके पश्चात इक़बाली गवाह श्री० इन्द्रपाल कचहरी में लाया गया। उसने चुपचाप, पुलिस वालों के साथ, कमरे में प्रवेश किया। सिर पर एक बढ़िया कुल्ला तथा पेशावरी लुङ्गी और गले में मफ़लर लगाए था, परन्तु मुरझाया हुआ मुँह लेकर वह गवाहों के कटहरे में आकर खड़ा हुआ।

गवाह ने कहा—'मेरा असली नाम मङ्गतराम है। पहले मैं स्कूल में पढ़ाया करता था। फिर प्रेस में नौकरी करने लगा। मैंने प्रेस भी छोड़ दिया और हिन्दू सभा के 'सङ्गठन पत्र' में काम करने लगा। इस पत्र के सम्पादक श्री० कृष्णकुमार वर्म्मा थे! वहीं मेरा यशपाल से भी परिचय हुआ। यशपाल मेरे दफ़्तर में आया करता था। वह उन दिनों नेशनल कॉलेज में पढ़ता था। बलदेवराज से उन्हीं दिनों मेरा परिचय हुआ। बलदेवराज समाज सुधारक था, परन्तु यशपाल क्रान्तिवादी था। मुझे रावलपिण्डी में नौकरी मिल जाने के कारण छः मास 'सङ्गठन' में काम करने पश्चात, मैं वहाँ चला गया। वहाँ अभियुक्त पं० रूपचन्द्र मैनेजर था। कृष्णगोपाल तथा सरनदास से मेरा परिचय वहीं पर हुआ। रावलपिण्डी में मैंने एक छोटा सा लेख लिखा जिसका शीर्षक 'मञ्ज़िले-आज़ादी' था। इसका सारा ख़र्च मैंने स्वयं उठाया। अपना नाम मैंने लेखक के स्थान पर नहीं दिया, क्योंकि मुझे डर था कि पुलिस कहीं मेरे पीछे न लग जाय। लेखक के स्थान पर मैंने "आशिक़े-हिन्द" लिख दिया। इन्हीं दिनों मैंने अपना नाम भी मङ्गतराम छोड़ कर, इन्द्रपाल रख लिया।

मि० सलीम (जज)—"तुमने नाम क्यों बदला ?"

गवाह ने जवाब दिया—"लोग मुझे 'मँगतू' कह कर पुकारते थे, जो मुझे अच्छा नहीं लगता था। दूसरे मैंने यशपाल के नाम की नक़ल की।" उसने फिर बयान प्रारम्भ करते हुए कहा—

१६२६ में, जब मैं 'हिन्दू-पत्र' में काम करता था, यशपाल मेरे पास आया करता था। एक बार सरदार भगतसिंह भी यशपाल के साथ आए और मेरा परिचय उनसे हुआ। सरदार भगतसिंह ने कहा कि परीमहल में नवयुवकों की एक सभा होने वाली है, तुम भी वहाँ आना। मैं वहाँ गया तो लाला केदारनाथ सहगल, सरदार भगतसिंह तथा कई और व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे। वहाँ एक नवयुवकों की सभा स्थापित करने का निश्चय किया गया, जिसका नाम "नौजवान भारत सभा" रक्खा गया। इसका उद्देश्य नवयुवकों में राष्ट्रीय भावों का प्रचार करना था। एक दिन यशपाल, सुखदेव को मेरे मकान पर ले आए, परन्तु मुझे उसका नाम नहीं बताया। वह मेरे पास एक बेग रख गए और दो सप्ताह के पश्चात वे वह बेग वापस ले गए। मुझे पता नहीं, उस बेग में क्या था। सुखदेव के नाम का मुझे उस समय पता लगा, जब वह गिरफ़्तार कर लिया गया। सरदार भगतसिंह को मेरे मकान का पता यशपाल ने दे दिया था। एक दिन सरदार भगतसिंह ने आकर काकोरी के शहीदों की तस्वीरों के नीचे कुछ कविताएँ मुझसे उर्दू में लिखवाईं और बताया कि वे कीरती में छपेंगी। मैंने यह काम कर दिया। सरदार भगतसिंह ने और भी कई पोस्टर मुझसे लिखवाए, जिनके मैं उनसे पैसे नहीं लिया करता था। १७ नवम्बर को लाला लाजपतराय जी का देहान्त हुआ। लाला जी को पुलिस ने पीटा था उसीके घावों से उनका प्राणान्त हुआ था। मैंने यशपाल से कहा कि हमें उसी पुलिस वाले को, जिसने लाला जी को पीटा था, मार कर बदला लेना चाहिए। यशपाल ने कहा कि इस प्रकार जोश में आने से हानि होती है, इसलिए तुम किसी गुप्त सोसाइटी से मिल कर काम करो। मैंने कहा कि मैं तो किसी गुप्त सभा को नहीं जानता। यशपाल ने कहा कि सुखदेव गुप्त सभा का प्रान्तीय सञ्चालक है। मुझे यशपाल की बातों से यह भी पता चला कि वह भी गुप्त समिति का मेम्बर है। एक मास पश्चात जब मैं दफ़्तर में बैठा था, मैंने सुना कि लाला जी को पीटने वाले, पुलिस अफ़सर की हत्या कर डाली गई है। मुझे यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

८ अप्रैल १६२६ को मैंने पढ़ा कि सरदार भगतसिंह तथा श्री० बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम फेंका है। कुछ दिन पश्चात यह समाचार-पत्रों में छपा कि इन दोनों में से एक इक़बाली गवाह बन गया है। मैंने यह बात यशपाल से कही। उसने कहा कि इन दोनों में से कोई इक़बाली गवाह नहीं बनेगा और वे अदालत में एक महत्वपूर्ण बयान देंगे, जिसका बड़ा प्रभाव पड़ेगा। उन दोनों ने पार्टी की आज्ञानुसार ही यह कार्य किया था और पार्टी के कहने पर ही वे बयान देंगे। यशपाल ने बताया कि पार्टी का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी, है।

१०वीं जनवरी को फिर इन्द्रपाल ने अपने बयान के सिलसिले में कहा कि "जब मैं पार्टी का मेम्बर बन गया, तो मैंने यशपाल से पूछा कि क्या सॉण्डर्स की हत्या हमारी पार्टी ने की है? यशपाल ने उत्तर दिया कि पार्टी के मेम्बरों को भी सब बातों का पता नहीं दिया जाता। मेरे पूछने पर यशपाल ने बताया कि भारत की आर्थिक तथा राजनैतिक दशा बहुत बिगड़ गई है, और वह उस समय तक नहीं सुधर सकती, जब तक भारतवर्ष में विदेशी शासन है। हमारी पार्टी का कार्य-क्रम देश में आतङ्क फैलाना है जो महान क्रान्ति की पहली सीढ़ी है। प्रचार करके पार्टी के मेम्बर बनाना, चन्दा इकट्ठा करके अथवा डाके डाल कर रुपया एकत्र करना तथा शस्त्र संग्रह करना—पार्टी के तीन प्रधान कार्य हैं। पार्टी की आज्ञा सबको माननी पड़ती है और जो व्यक्ति पार्टी का भेद खोलेगा उसे मृत्यु-दण्ड दिया जायगा। मैंने वचन दिया, कि मैं पार्टी के नियमों का पालन करूँगा। जब काश्मीरी बिल्डिङ्ग में बम-फ़ैक्टरी पकड़ी गई, तो यशपाल बाहर चला गया। यशपाल ने मुझे एक पत्र लिखा, जिसमें मुझे यह बताया गया था, कि जिस पत्र पर 'प्राणनाथ' लिखा हो वह पत्र मैं यशपाल की बहिन प्रेमवती को दे दिया करूँ। कुछ दिन पश्चात मेरे पास एक और पत्र आया जिसमें 'प्राणनाथ' लिखा हुआ था। मैंने वह पत्र यशपाल की बहिन को दे दिया। इन्हीं दिनों मेरा विवाह होने वाला था। यशपाल ने इसका विरोध किया और कहा कि क्रान्तिकारी दल के लोगों को विवाह नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे काम में रुकावट पैदा होती है। मैंने उत्तर दिया कि मैं विवाह को रोकने का यत्न करूँगा। यशपाल ने मुझसे यह भी कहा कि भविष्य में जिन पत्रों पर 'आनन्द स्वरूप' लिखा हो, वे पत्र मैं उसकी बहिन को दे दिया करूँ। बाक़ी मैं स्वयं खोल लिया करूँ। कुछ दिनों के पश्चात यशपाल की एक चिट्ठी आई जिस पर 'आनन्द स्वरूप' लिखा था। मैंने वह चिट्ठी श्रीमती प्रेमवती को दे दी। श्रीमती प्रेमवती ने मुझे एक चमड़े का बेग, जो बहुत भारी था और उसके साथ एक पत्र भी दिया। मैं दोनों चीज़ें लेकर दिल्ली आया, और यशपाल से क़िला फ़िरोज़शाह तुग़लक़ में मिला, और वे दोनों वस्तुएँ उसको सौंप दीं। यशपाल ने बेग खोला तो उसमें ख़ाली बम रक्खे थे। यशपाल ने बमों को एक कमरे में बन्द कर दिया। जाते समय यशपाल ने कहा कि काम का समय आ

गया है, इसलिए तैयार हो जाओ। मैं ख़ाली बेग लेकर काम करने के लिए तैयार हो, लाहौर वापस लौट आया।"

१२वीं जनवरी को इन्द्रपाल ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि "जब मैं लाहौर पहुँचा तो यशपाल की बहिन को ख़त देने के लिए गया। वह बीमार थीं और उन्होंने मुझसे कहा कि दो-तीन दिन में रुपए का बन्दोबस्त हो जाएगा। दो तीन के पश्चात अभियुक्त धर्मपाल मेरे पास आया और मुझे बताया कि श्रीमती प्रेमवती बीमार होकर बाहर चली गई हैं, अतएव जो पत्र आए हों, वह श्री० भगवतीचरण की धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गादेवी को पहुँचा आना। इसके पश्चात यशपाल का एक पत्र आया, जिसमें यह लिखा था कि मैं श्रीमती दुर्गादेवी से रुपए लेकर देहली पहुँचू। मैं श्रीमती दुर्गादेवी को पहले नहीं जानता था। मैं पत्र उनके पास ले गया और राह के ख़र्च के लिए दस रुपए उन्होंने मुझे दिए। मैं ७ सितम्बर को देहली पहुँचा। वहाँ यशपाल मुझे मिला। यशपाल के साथ हम लक्ष्मी नारायण की धर्मशाला की ओर जा रहे थे कि रास्ते में श्री० भगवती चरण से भेंट हो गई। मैं श्री० भगवतीचरण को पहचानता था, परन्तु वह मुझे नहीं पहचानते थे। वहाँ से हम यमुना-तट की ओर साइकलों पर गए। यमुना-तट जाकर मुझको बताया गया कि पार्टी ने मुझको साधु बन कर बैठने के लिए बुलाया है। मैंने कहा, कि मैं तैयार हूँ।

"इसके पश्चात यशपाल ने मुझे बताया कि देहली से ६ मील की दूरी पर रेलवे लाइन के पास मुझे अपना अड्डा जमाना पड़ेगा। यह स्थान देहली से मथुरा को जाने वाली सड़क के किनारे पर था और वहाँ पर एक पियाऊ भी था। ४॥ बजे हम लोग नए बाज़ार में गए। श्री० भगवतीचरण पहले ही से वहाँ हाज़िर थे। श्री० भगवतीचरण का नाम वहाँ पर हरिश्चन्द्र तथा यशपाल का नाम जगदीशचन्द्र रक्खा हुआ था। वहाँ सब लोगों को यह बताया गया था, कि हरिश्चन्द्र इन्शोरेन्स का काम करते हैं तथा जगदीशचन्द्र के पिता सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस हैं। यशपाल के कहने के अनुसार मैंने अपने आपको जगदीशचन्द्र का छोटा भाई बताया! वहाँ पर इन लोगों ने एक नौकर रक्खा हुआ था, जिसका नाम परभाई था। उस मकान में दो फ़ौजी टोप भी रक्खे हुए थे। दूसरे दिन श्री० भगवतीचरण बाहर से एक बक्स लाए, जिसमें कि साधु बनने का सामान था। मैंने उनके कहने के अनुसार अपना शिर मुँड़वा लिया। सायङ्काल के ७ बजे मैं क़िला फ़िरोज़शाह तुग़लक में गया और साधु का भेस बना कर अपने अड्डे पर चला गया। वहाँ पर मुझसे लोगों ने पूछा कि तुम कहाँ से आए हो, तो मैंने उनको बता दिया कि मैं तीर्थयात्रा करके लौट रहा हूँ और यह स्थान अच्छा देख कर मेरा मन कुछ दिन यहाँ ठहरने को चाहता है।

"मैं गाँव में जाकर भीख माँग लाया करता था। एक दिन मैंने गाँव से केवल आध छटाँक आटा पाया। वह लाकर मैंने चींटियों को डाल दिया। लोगों ने मुझसे इसका कारण पूछा तो मैंने उनसे कह दिया, कि यह भी शिव जी महाराज की सृष्टि हैं, इनका भी पालन करना हम लोगों का कर्त्तव्य है। इससे लोग मेरे बड़े भक्त हो गए और जाकर गाँव वालों से कह दिया कि जब भी बाबा जी गाँव में आवें तो इनको काफ़ी भिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे कि इनका गुज़र हो जाए।

"मेरे पास श्री० भगवतीचरण तथा यशपाल भी वहाँ पर आया करते थे। लोगों के पूछने पर मैंने बताया कि यह देहली के सेठ हैं और यहाँ असामियों से रुपया वसूल करने आते हैं। मैंने एक बार इनके घर में एक स्त्री का इलाज किया था, इसीसे यह मेरे बहुत भक्त हो गए हैं।

"इन्हीं दिनों यशपाल ने मुझे कहा, कि पियाऊ तथा रेलवे लाइन के भीतर का फ़ासला नापना और पता करना कि रात को गाँव वाले कहाँ पर सोते हैं और रात को कुत्ते कहाँ-कहाँ पर भूँकते हैं इत्यादि। रात को होने वाली सब बातों का ठीक-ठीक पता लगाऊँ। उसने मुझे बताया कि वाइसराय २७ अक्टूबर को विलायत से आने वाले हैं उस दिन उनकी गाड़ी को बम से उड़ाया जायगा।

"रात के समय १२ बजे के लगभग यशपाल ने बम की परीक्षा की। बैटरी के साथ एक बल्ब लगाया गया बैटरी के एक ओर कोई जल-पदार्थ (Liquid) तथा दूसरी ओर कोई पौडर लगा दिया गया। इस बैटरी के समीप थोड़ी सी गन-कॉटन (Gun-cotton) रख दी गई। ठीक बारह बजे गन-कॉटन (Gun-cotton) भक से जल गई। इतने में नीचे से किसी ने पूछा कि इस मकान पर कौन रहता है। मैंने उठ कर देखा कि नीचे दो सिपाही खड़े हैं। मैंने यशपाल से कहा कि दो सिपाही आ गए हैं और सारा काम बिगड़ने वाला है। यशपाल ने कहा कि मैं अपनी पिस्तौल निकालता हूँ। परन्तु मैंने उसको कहा कि ठहरो मैं सिपाहियों से बात करता हूँ। मैंने सिपाहियों से कह दिया कि भाई यहाँ पर बाबा लोग रहते हैं। सिपाहियों के पूछने पर मैंने बताया कि मेरे पास मेरा एक भक्त बैठा है।" मामला कल पर स्थगित किया गया।

पुलिस-इन्सपेक्टर का वध

कलकत्ता का ७वीं जनवरी का समाचार है कि पुलिस-इन्सपेक्टर तरिणी मुखर्जी के वध का मामला आज अलीपुर स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने पेश हुआ। मि० क्रेग इन्सपेक्टर-जनरल पुलिस ने गवाही देते हुए कहा कि "जब गाड़ी चाँदपुर स्टेशन पर पहुँची तब मैं सो रहा था। गोली की आवाज़ से मेरी आँख खुल गई। मैंने बाहर झाँक कर देखा कि दो बङ्गाली युवक एक मनुष्य पर गोली चला रहे हैं। मैंने अपना पिस्तौल निकाली और आक्रमणकारियों पर गोली चलाई। परन्तु गोली लगी नहीं। मेरे अर्दली ने भी दो गोलियाँ चलाईं, परन्तु वे भी बेकार हुईं। आक्रमणकारी इतनी देर में लापता हो गए। बहुत ढूँढने पर भी उनका कुछ पता नहीं लगा। दूसरे दिन सवेरे पता लगा कि अभियुक्त मेहर कालीबारी स्टेशन पर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। ६वीं जनवरी को डॉ० अधिकारी ने गवाही देते हुए कहा कि—"मैंने इन्सपेक्टर तरिणी मुखर्जी की लाश की जाँच की थी। लाश में १२ घाव लगे थे। जाँच पूर्णतया नहीं हो सकी, क्योंकि चीर-फाड़ नहीं की गई। बाहरी घावों से प्रतीत होता था कि इन्सपेक्टर की मृत्यु गोली लगने से हुई है। एक गोली उसके हृदय में, दूसरी पेट तथा तीसरी फेफड़े में लगी होगी। जब कपड़े उतारे गए तो एक गोली और मिली।" डॉ० मित्रा ने कहा कि "एलीमोनियमका बम विस्फोटक पदार्थों से भरा था। इस बम के फटने से ३० गज़ की दूरी तक के मनुष्य घायल हो सकते थे।"

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट की गवाही

१३वीं जनवरी को मि० दास गुप्ता सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस ने गवाही देते हुए कहा, कि "१ली दिसम्बर को मैं असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस था। जब मैं प्रातःकाल परेड ग्राउण्ड में खड़ा था, तब मुझे सुपरिण्टेण्डेण्ट का आदेश मिला कि चाँदपुर स्टेशन पर इन्सपेक्टर तरिणी मुखर्जी गोली से मार डाला गया है, और आक्रमणकारियों की, जो गिरफ़्तार नहीं किए जा सके, लक्षम स्टेशन की ओर खोज की जाय। मैं तीन सशस्त्र सिपाही, एक अर्दली तथा एक मोटर-ड्राइवर को साथ ले लक्षम की ओर चल पड़ा। लक्षम स्टेशन पर जाकर मैंने आक्रमणकारियों की हुलिया पूछी, तो मुझे बताया गया कि आक्रमणकारी २०-२१ वर्ष की आयु के दो हिन्दू नवयुवक हैं, जिन्होंने शाल तथा हरे रङ्ग की चादरें ओढ़ रक्खी हैं। लक्षम स्टेशन से हुलिया लेकर मैं चाँदपुर स्टेशन की ओर मोटर में गया। मेहरकाली-बारी स्टेशन से कोई चौथाई मील पश्चिम की ओर मैंने दो नवयुवकों को, जो शाल और हरे रङ्ग की चादरें ओढ़े थे, देखा। मैंने ड्राइवर को मोटर रोकने की आज्ञा दी। हम सबने झपट कर दोनों को क़ाबू में कर लिया। हमने उन दोनों से पूछा कि 'तुम कहाँ से आए हो, और कहाँ जा रहे हो?' कोई विश्वासपूर्ण उत्तर न पाकर, जब मैंने उनकी तलाशी ली, तो दो रिवॉल्वर तथा एक बम मिला। इतनी देर में वहाँ कई देहाती लोग इकट्ठे हो गए। समय बहुत हो गया था और इस डर से कि कहीं अभियुक्तों के और साथी आकर आफ़त न मचाएँ, मैंने वहाँ से टल जाना ही ठीक समझा। हमने बम को एक ठण्डी जगह पर लपेट कर रख दिया ताकि फट न जाए और अभियुक्तों को वहाँ से पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट के पास ले गए। अभियुक्तों ने मुझे अपना नाम कालिप्रसाद चक्रवर्ती तथा रामकृष्ण विश्वास बताया था। वहाँ मैजिस्ट्रेट के सामने अभियुक्तों की तलाशी ली गई, और तलाशी में जितनी वस्तुएँ मिलीं उनको रजिस्टर में लिख दिया गया।"

जिरह करने पर गवाह ने कहा कि "अभियुक्तों ने गिरफ़्तार होते समय कोई मुक़ाबिला नहीं किया। रिवॉल्वर गाँव वालों के आने से पहले ही इन्सपेक्टर के हाथ में नहीं थे। बम अभियुक्तों के कपड़ों में मिला था, पास के खेतों में नहीं मिला था। मैंने दोनों अभियुक्तों की तलाशी अच्छी प्रकार से नहीं ली, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं इनके साथी जो बड़े भयङ्कर होते हैं, पहुँच कर कहीं आफ़त न मचाएँ।"

—पटना का ७वीं जनवरी का समाचार है कि मोतीहारी के मैजिस्ट्रेट श्री० पुष्कर ठाकुर के इजलास में डाका डालने तथा षड्यन्त्र करने के अपराध में १३ अभियुक्तों का विचार आरम्भ हुआ। सरकारी वकील श्री० सैयद अब्दुल अज़ीज़ ने प्रारम्भिक भाषण देते हुए कहा, कि अभियुक्तों ने मिल कर षड्यन्त्र रचा था, जिसके परिणाम-स्वरूप गत मई मास में दरभङ्गा तथा चम्पारन में डाके डाले गए।

यद्यपि अभियुक्त जोगेन्द्र शुक्ल की भाईं दो-एक व्यक्ति क्रान्तिकारी दल से सम्बन्ध रखते हैं, तथापि यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि ये डाके राजनैतिक-ध्येय से डाले गए थे। पूर्व में कॉङ्ग्रेस से सम्बन्ध रखने वाले रामविनोद ने, जो कि आर्थिक कष्टों में था, एक गिरोह तैयार किया था, जिसमें गुण्डे भी शामिल किए गए थे।

इन दोनों डाकों में बन्दूक़ें तथा तलवारें काम में लाई गई थीं तथा व्यक्तिगत लाभ ही अभियुक्तों का ध्येय था। दोनों डाकों में कोई १९,०००) रुपया प्राप्त हुआ।

इन अभियुक्तों में जोगेन्द्र शुक्ल का सम्बन्ध मौलानियाँ राजनैतिक डाके से भी है। उसके पास तीन पिस्तौलें मिली हैं। इस मामले में कुल १९ व्यक्तियों का सम्बन्ध है—दस अभियुक्त, दो फ़रार तथा ३ इक़बाली गवाह।

—लाहौर का ६वीं जनवरी का समाचार है कि लाहौर षड्यन्त्र केस के तीन अभियुक्तों—प्रो० भीमसेन, गोकुलचन्द तथा कुन्दनलाल ने ट्रिब्यूनल को एक प्रार्थना-पत्र इस आशय का दिया है कि उन्होंने मैजिस्ट्रेट के सामने जो बयान दिए थे, वे उन्हें वापस लेना चाहते हैं।

गवर्नर-गोली-काण्ड केस

दो नवयुवक और गिरफ़्तार

लाहौर का ८ वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० लक्ष्मीचन्द तथा किशनचन्द गवर्नर-गोली काण्ड केस में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। इस मामले में पुलिस ने ताँदलियाँवाले से एक युवक दसौंधाराम को भी गिरफ़्तार किया था। मालूम हुआ है कि दसौंधाराम इक़बाली गवाह बन गया है और उसने एक बयान भी पुलिस को दिया है।

—लाहौर का १०वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० दुर्गादास तथा रणवीरसिंह की ज़मानत के लिए जो प्रार्थना-पत्र हाईकोर्ट में दिया गया था, उसका फ़ैसला आज सेशन्स जज ने सुना दिया। जज ने अपने फ़ैसले में लिखा है, कि दसौंधाराम इक़बाली गवाह का बयान पढ़ कर इस बात पर विश्वास कर लेना सहज है, कि दोनों अभियुक्तों ने गवर्नर के मारने के लिए षड्यन्त्र रचा था। इस कारण इनको छोड़ देना न्यायसङ्गत न होगा।

इक़बाली गवाह पर जूता फेंका गया

अमृतसर का ६वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ उस दिन मि० एण्डरसन सेशन्स जज के सामने अमृतसर षड्यन्त्र केस के पाँचों अभियुक्तों का मामला पेश किया गया था। इक़बाली गवाह हरीन्द्रनाथ बोस की गवाही हो रही थी तो एक बड़ी मनोरञ्जक घटना हुई। जब इक़बाली गवाह कचहरी से बाहर जाने लगा तो अभियुक्त श्री० नारायण ने एक जूता ज़ोर से फेंका, जो गवाह के मुँह पर लगा। जज के पूछने पर अभियुक्त ने कहा कि गवाह मेरी ओर देख कर मुँह चिढ़ा रहा था। मैंने पुलिस से शिकायत की, परन्तु इसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। जज ने अभियुक्त को चेतावनी देकर छोड़ दिया, कि वह फिर कभी ऐसा न करे।

कर्नल मिलर पर बम

अजमेर का ६वीं जनवरी का समाचार है कि कल सन्ध्या समय सेण्ट्रल जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री० कर्नल मिलर की मोटर पर एक बम फेंका गया। बम फेंकने वाले दो नवयुवक थे, जो शीघ्र ही वहाँ से लापता हो गए। पुलिस ने सारा शहर तथा आसपास की पहाड़ियाँ छान डालीं, परन्तु आक्रमणकारियों का कुछ पता ही नहीं चला।

प्रोफ़ेसर निगम फिर हवालात भेज दिए गए

देहली का ६ वीं जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत प्रोफ़ेसर निगम, एम० ए० जो कि दिल्ली षड्यन्त्र केस के एक अभियुक्त हैं, मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। श्री० निगम कुछ अस्वस्थ दिखाई पड़ते थे। आपका वज़न बहुत कम हो गया है। पुलिस का बड़ा कड़ा पहरा था। मैजिस्ट्रेट ने उन्हें फिर हवालात भेज दिया।

बनारस में बम फटा

बनारस का ६वीं जनवरी का समाचार है कि कल रात को कोदाई चौकी पुलिस स्टेशन में एक बम फेंका गया। कुछ शीशे के टुकड़े जो बम में थे, एक सिपाही को लगे। उसे चोट नहीं लगी, केवल कोट फट गया। इस सम्बन्ध में अभी तक कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई।

तीन अभियुक्त ज़मानत पर छोड़ दिए गए

लाहौर का समाचार है कि श्री० वीरेन्द्र, इहसान-इलाही तथा जयदयाल ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं। ये लोग गवर्नर पर गोली चलाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे।

क्या श्री० सुखदेवराज गिरफ़्तार नहीं हुए?

पिछले सप्ताह में यह समाचार पत्रों में छपा था कि लाहौर षड्यन्त्र केस के फ़रार अभियुक्त श्री० सुखदेवराज को पुलिस ने दिल्ली में गिरफ़्तार कर लिया है।

इस समाचार को पढ़ कर श्री० सुखदेव के पिता ला० गण्डामल जी ने सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस, दिल्ली को तार दिया कि यदि श्री० सुखदेव की गिरफ़्तारी का समाचार ठीक है, तो उससे मिलने की आज्ञा दी जाय। पर, उन्हें जवाब मिला कि श्री० सुखदेव दिल्ली में गिरफ़्तार नहीं किए गए।

इसके बाद का एक तार इन्सपेक्टर जनरल पुलिस पञ्जाब को दिया गया, कि यदि गिरफ़्तारी का समाचार ठीक है तो यह बताया जाय कि अभियुक्त को कहाँ रक्खा गया है। परन्तु इसका उत्तर भी यही आया कि श्री० सुखदेव अभी गिरफ़्तार नहीं हुए।

—कलकत्ते का ७वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० दिनेश गुप्त, जो राइटर बिल्डिङ्ग में कर्नल सिम्पसन

बङ्गाल की जेलों के इन्सपेक्टर-जनरल, स्वर्गीय लेफ़्टिनेन्ट-कर्नल एन० एस० सिम्पसन, आई० एम० एस० जो विगत ८ वीं दिसम्बर को बङ्गाल के क्रान्तिकारियों की गोली के शिकार हुए थे!

के वध के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, २१ जनवरी तक के लिए हवालात भेज दिए गए हैं।

बनारस में डाक की मोटर पर सशस्त्र डाका

बनारस का ८वीं जनवरी का समाचार है, कि शहर में सशस्त्र डाकुओं की एक मण्डली ने डाक की मोटर लूटने का प्रयत्न किया। मोटर डाक लेकर शहर के डाकघर से बनारस छावनी के रेलवे-स्टेशन की तरफ़ जा रही थी। यह मोटर जब लोहार बाज़ार में पहुँची तो दो व्यक्तियों ने इसका रास्ता रोक लिया। दो अन्य आदमियों ने ड्राइवर को पिस्तौल दिखा कर कहा—"चुप रहो, नहीं तो जान से हाथ धो बैठोगे? और सब थैले हमारे सुपुर्द करके चुपचाप अपना रास्ता नापो।" परन्तु इतने में पीछे से एक और मोटर लॉरी आ गई और डाकू एक बम फेंक कर भाग गए, जिससे कोई उनका पीछा न करे।

लेमिङ्गटन रोड गोली-काण्ड

११७ सरकारी गवाह

बम्बई ८ जनवरी का समाचार है कि आज मि० एच० पी० एच० दस्तूर चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट की कचहरी में लेमिङ्गटन रोड गोलीकाण्ड के १२ अभियुक्त पेश किए गए। ४ अभियुक्त श्री० पी० बी० कॉपीकर, वैशङ्कर मोघे, काने तथा कृष्ण वैद्य पर्याप्त प्रमाण न मिलने के कारण छोड़ दिए गए। शेष आठ श्री० गणेश रघुनाथ वैशम्पायन, दयोधर, बरवे, बापट, शिंदे, उपाध्याय, धमनकर तथा मोघे के विरुद्ध धारा १२० ख, ३०७ तथा १०९ के अनुसार अभियोग चलाया जायगा।

मि० मानकर, सरकारी वकील ने कहा कि इस अभियोग में ११७ सरकारी गवाह पेश किए जाएँगे। कम से कम २० दिन इन लोगों की गवाही में लगेंगे। मैजिस्ट्रेट ने कहा कि मैं लगातार बैठ कर इस मुक़दमे को शीघ्र ही समाप्त करने का प्रयत्न करूँगा।

मुक़दमा २२ जनवरी के लिए स्थगित कर दिया गया है। गवाहियाँ २६ जनवरी से प्रारम्भ की जाएँगी।

—करवाल (कानपुर) का ६वीं जनवरी का समाचार है कि आधी रात के समय सेठ बनवारीलाल के मकान में दस सशस्त्र मनुष्य घुस आए। डाकुओं ने सेठ जी को जगाया, और उनसे पूछा, कि रुपया कहाँ है। सेठजी डाकुओं को देख कर घबरा गए, परन्तु जी कड़ा करके कहने लगे कि घर में रुपया नहीं है। परन्तु जब सेठ जी को तीन-चार चपतें रसीद की गईं, तो सेठजी ने सन्दूक़ की चाबियाँ डाकुओं के सुपुर्द कर दीं। डाकुओं ने सेठ जी से कहा कि हम रुपया अपने व्यक्तिगत ख़र्च के लिए नहीं चाहते, किन्तु उसे देश-सेवा में ख़र्च करेंगे। इसके पश्चात डाकुओं ने सन्दूक़ खोला, और रुपया लेकर चम्पत हो गए। सेठ जी ने उनके जाने के पश्चात बहुत शोर मचाया, परन्तु कुछ लाभ न हुआ। डाकुओं ने गले में लाल रूमाल बाँध रक्खे थे और जाते समय वे सब 'बन्देमातरम्' के नारे लगाते गए।

—इन्दौर का १०वीं जनवरी का समाचार है कि गत गुरुवार को रात के दस बजे एक मकान के चबूतरे पर नारियल जैसी कोई वस्तु रक्खी थी। मकान का मालिक नाई था। उसके १८ साल के माधव नामक लड़के ने जब उसे तोड़ने की चेष्टा की, तो एक भयङ्कर धड़ाका हुआ और माधव सख़्त घायल हो गया। वह अस्पताल भेज दिया गया है। कहा जाता है कि अस्पताल में दूसरे दिन माधव का देहान्त हो गया। दूसरे दो व्यक्तियों को सख़्त चोट आने की ख़बर है। उसके टूटे फूटे अंश की परीक्षा के बाद पुलिस ने उसे बम बताया है। इसी सम्बन्ध में यहाँ के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्रीयुत भगवानदास अग्रवाल के घर की तलाशी भी ली गई। इस घटना से शहर में बड़ी सनसनी फैली है।

कानपुर में क्रान्तिकारियों का उपद्रव

डिपुटी-कलेक्टर पर बम फेंका गया

कानपुर का १३वीं जनवरी का समाचार है कि शहर में क्रान्तिकारियों ने उपद्रव मचा रक्खा है। थोड़े ही दिन हुए कि एक व्यक्ति श्री० अमरनाथ सिंह, सय्यद तक़ीहुसैन डिपुटी-कलेक्टर की कचहरी में सन्देह में गिरफ़्तार किया गया था। तलाशी लेने पर उसके पास कोबरा बूट-पॉलिश की डिब्बी में बन्द एक बम मिला। आज सबेरे का समाचार है कि मि० शौकतअली डिपुटी-कलेक्टर पर रात के समय किसी ने बम फेंका। डिपुटी-कलेक्टर आजकल दौरे पर हैं, और बम उनके ख़ीमे पर फेंका गया। परन्तु कोई हानि नहीं हुई। पुलिस बड़े यत्न से आक्रमणकारी की खोज लगा रही है।

—बनारस का १२वीं जनवरी का समाचार है कि तीन-चार दिन पहले दशाश्वमेध-पुलिस-थाने पर एक बम फेंका गया था। आज एक बम चौक के पुलिस थाने के पास पड़ा हुआ पाया गया। जब एक मुसलमान लड़का उसे उठाने लगा, तो वह फट गया जिससे उसके हाथ में बड़ा भारी घाव हो गया है। पुलिस इन बम फेंकने वालों तथा डाक की लॉरी पर डाका डालने वालों की बड़ी खोज कर रही है। इसी सम्बन्ध में पुलिस ने कई बङ्गाली सज्जनों की तलाशियाँ भी ली हैं, तथा कुछ गिरफ़्तारियाँ भी कीं, परन्तु पीछे सब छोड़ दिए गए।

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

एक दिन 'देहि पदपल्लव मुदारम्' दल के एक सज्जन तशरीफ़ लाए। मुँह लगडन की ओर था, मगर चेहरे पर क़ौमी-मुहब्बत के आसार नुमायाँ थे। हिज़ होलीनेस को देखते ही सरपट बोल उठे—"गुरु जी! ए गुरु जी! ग़ज़ब हो गया! सर महम्मद इक़बाल ने राउण्डटेबिल पर पानी फेर दिया!" श्रीजगद्गुरु ने उनके दिमाग़ पर एक नज़र पटक कर कहा—"शान्त हो वत्सल, सर महम्मद इक़बाल तो लगडन गए ही नहीं। किसी दूसरे के हाथ से कोई ग्लास लुढ़क गया होगा और कुछ काग़ज़-वाग़ज़ भींग गए होंगे। इसके लिए इतना घबराने की क्या ज़रूरत है?" उन्होंने फिर सरपट शुरू किया—"ग्लास नहीं, गुरु जी! उन्होंने इलाहाबाद में एक 'स्पीच' दे डाली है। कहते हैं—हिन्दोस्तान में एक 'मुस्लिम-राज्य' क़ायम होना चाहिए।" अब डॉक्टर मुञ्जे और राजा नरेन्द्रनाथ एक साथ ही भड़क जायँगे; दाढ़ी-चोटी का आसन्न गँठबन्धन काफ़ूर हो जायगा! उन्हें बादशाहत का शौक़ था, तो ज़रा ठहर जाते, राउण्डटेबिल की 'दराज़' से हमारे स्वयम्भू-प्रतिनिधियों को 'डोमिनियन स्टेटस' तो ले लेने देते! स्पीच झाड़ने की इतनी मारामार क्या पड़ी थी?" इसके बाद एक आहे-सर्द खींच कर रूमाल से मुँह पोंछते हुए, भर्राई हुई आवाज़ में बेचारे बोले—

दी मुअज़्ज़ ने अज़ाँ वस्ल की शब पिछले पहर,
हाय! कमबख़्त को किस वक़्त ख़ुदा याद आया!

❀

सर इक़बाल दीनदार आदमी हैं; मुसलमान हैं। वे चचा चर्चिल की तरह ढालते न होंगे, परन्तु बहकने में तो उन्होंने चचा क्या, बड़े-बड़े पियक्कड़ों के भी कान कतर डाले हैं! एक तो कल्पना-प्रस्रवण कवि-हृदय, ऊपर से पड़ गया 'शेख़-चिल्लीपन' का पुट! मानों 'तितलौकी नीम पर चढ़ गई!' सुरूर में आए, तो तख़्ते-ताऊस की याद आ गई! बस, झट हुक्म फ़रमाया, कि हिन्दोस्तान में मुस्लिम बादशाहत क़ायम हो जानी चाहिए, नहीं तो राउण्डटेबिल की 'दाँत निपोरई' में मुसलमान साथ न देंगे और लगडन से लौट कर स्वतन्त्र रूप से देशोद्धार आरम्भ कर देंगे!

❀

इतने में सुरूर का दूसरा दौरा हुआ। सिन्ध, पञ्जाब और सीमान्त प्रदेश भारत से अलग कर दिए गए, कुफ़्र टूटने लगा, दीवाने-आम और दीवाने-ख़ास में हज़ार बत्ती वाले शमादान जलने लगे, तुरनो-तरब का बाज़ार गरम हो गया, जिन्होंने झूम-झूम कर—"पिला साक़िया अर्ग़वानी शराब, जो पीरी में दे नौजवानी शराब!" के नारे बुलन्द किए। मगर गुस्ताख़ी माफ़, हज़रत ने यह तो फ़रमाया ही नहीं कि 'दारुल-ख़िलाफ़त' (-राजधानी) की ज़ीनत-किस शहर को बख़्शी जायगी?

❀

श्रीजगद्गुरु की तो अर्ज़ है, कि इसके लिए लाहौर ही मौज़ूँ होगा। गो दिल्ली वाले बड़ा वावेला मचाएँगे; उसके गुज़िश्ता शानो-शौकत की दोहाई देकर कान खाने लग जाएँगे; मगर 'पान-इस्लाम' के ख़याल से उनका दावा ख़ारिज-बातिल समझा जायगा। फिर, लाहौर वाले ही क्यों दबने लगे, वे भी अपने तारीख़ी सबूत पेश करेंगे। इसलिए हुज़ूर अपने इस दोआगो की सलाह मानें और श्रीमुख से ही इस झगड़े का निपटारा कर दें, ताकि आइन्दा के लिए कोई अड़चन न रह जाय!

❀

ख़ुदानाख़्वास्ता, कहीं सुरूर का तीसरा दौरा हो जाता, तो बेचारे बङ्गाल की भी तक़दीर खुल जाती और लगे-हाथ मुर्शिदाबाद और ढाके में भी रौनक़ आ जाती। मगर जनाब, वहाँ भी कलकत्ते को लेकर एक झगड़ा खड़ा हो जाता। वावेला मचाने में बङ्गाली एक ही होते हैं। एक स्वर से चिल्ला उठते—"आँमरा कलिकाता भिन्न आर कोनो जायगा पछन्दो कोरीना।" मगर मालूम होता है, कि सिन्ध, पञ्जाब और सीमान्त प्रदेश की तरह बङ्गाल का पुण्योदय अभी नहीं हुआ है, वरना एक इतने बड़े 'मुस्लिम प्रधान' प्रदेश की व्यवस्था सर इक़बाल की सरकार कैसे भूल जाती?

❀

मगर 'अन्धे को सूझा बहराइच' की तरह, इस सम्बन्ध में परमाराध्या 'हर होलीनेस' की एक निराली ही राय है। आप फ़रमाती हैं—"सर इक़बाल नौकरशाही के 'किट्' (Kt ?) हैं; वह उनकी क़द्र करती है और वे उसके क़द्रदाँ—एकदम 'अहोरूपमहोध्वनिः' वाला पवित्र सम्बन्ध है। इसीलिए मौक़ा देख कर उन्होंने एक शिगूफ़ा छोड़ दिया है। इससे कुछ जाहिल मुसलमान बादशाहत का ख़्वाब देखने लगेंगे, मुसलमानों से आन्दोलन को जो थोड़ी सी मदद मिल रही है, वह न मिलेगी, हिन्दू-मुसलमानों में नफ़ाक़ पैदा हो जायगा और नौकरशाही का काम बन जायगा। वरना 'सर' कुछ पागल थोड़े ही हो गए हैं, जो ऐसी बेतुकी हाँक देते।"

❀

भई, वाह! बीवी हो तो ऐसी हो। क्या पते की कही है! मगर हे जनाबा! भाई परमानन्द आपकी बात बिलकुल न मानेंगे। उन्हें मुसलमानों के रग-रेशे तक की ख़बर है, वे सर इक़बाल को भी पहचानते हैं और भारत की आज़ादी पर अपना डील वार देने वाले मियाँ शौकत-अली को भी! बेचारे मुद्दत से चिल्ला रहे हैं, कि मुसलमानों के दिलों में मुस्लिम-भारत की नींव पड़ गई है; ईंटें और सुर्ख़ी तैयार हो रही है, हिन्दुओं को 'सुन्नत' के लिए तैयार हो जाना चाहिए। मगर यहाँ तो सखी-नौकरशाही की शिकवा-गोई से ही किसी को फ़ुर्सत नहीं, दूसरी तरफ़ ध्यान कौन दे?

❀

कुछ भी हो जनाब, अपने राम ने तो दाढ़ी घुटाना अभी से छोड़ दिया है, मँदारू मियाँ दर्ज़ी को ढीली मोरी के पाजामे के लिए भी फ़रमाइश दे दी है, नमस्कार-प्रणाम छोड़ कर 'अस्सलामालेकुम' का अभ्यास आरम्भ कर दिया है। मौक़ा आते ही 'जगद्गुरुत्व' को अलविदा कह 'पीरे-मुग़ाँ' की पदवी हासिल कर लेंगे और किसी 'तकिया' पर जम कर बैठ जायँगे; कविवर 'बिस्मिल' चाहे चिल्लाते ही रह जायँ कि—"हर घड़ी यादे-बुताँ रहती है दिल में 'बिस्मिल', कोई आसाँ नहीं, हिन्दू का मुसलमाँ होना।" मगर अपने राम तो इसे 'आसाँ' करके ही दम लेंगे। चाहे पड़े नौ या छः!

❀

बड़ा मज़ा रहेगा। 'मलिकुल शोरा' सर महम्मद इक़बाल शहन्शाहे 'हिन्दे-मुस्लिम' की सवारी निकलेगी गङ्गा-जमुनी तञ्जाम पर! नक़ीब आवाज़ें देंगे—"हट जा घास वाली सामने से! ओ मरदूद, हटती नहीं, क़ब्र में जायगी क्या?" 'बिस्मिल' साहब जहाँपनाह की ख़िदमत में क़सीदा लिखेंगे—"पीरोमुर्शिद! अगरचे मुझको नहीं, ज़ौक़ आराइशे सरोदस्तार! कुछ तो जाड़े में चाहिए आख़िर, ता न दे बादे ज़महरीर आज़ार!" फिर लीजिए न, ख़िलअत व सरोपा—पञ्ज हज़ारी मनसबदारी थोड़े ही कहीं गई है!

❀

परन्तु, शुभ कार्य में विघ्न उपस्थित करने वाले भी बड़े विचित्र होते हैं; बक़ौल बाबा तुलसीदास के "बिन काज दाहिने-बाएँ" आकर डट जाते हैं। बेचारे इक़बाल साहब इधर भारत में एक बार फिर 'शाही जाहो-जलाल' क़ायम करने की धुन में हैं और उधर बङ्गाल के कुछ अदूरदर्शी मुसलमान 'बेवक़्त की शहनाई' की तरह राष्ट्रीयता के राग अलापने में लगे हैं! इन्होंने बिना सोचे-समझे घोषणा निकाली है, कि मुसलमानों को न तो जिन्ना साहब की चौदह शर्तों से कोई वास्ता है और न वे स्वतन्त्र निर्वाचन चाहते हैं! यही नहीं, इनका कहना है, कि राउण्डटेबिल के आस-पास मँड़राने वाले मुसलमान हमारे प्रतिनिधि भी नहीं हैं! हरे-हरे! बताइए, इस बेवक़ूफ़ी की भी कोई इन्तहा है! मालूम होता है, इसी वजह से 'सर' महोदय ने अपने भावी 'मुस्लिम भारत' से बङ्गाल को दूर ही रक्खा है। लो कमबख़्तो! भोगो अपनी करनी का फल!

❀

ख़ैर जनाब, ख़ुदा के फ़ज़ल से बङ्गाल में भी इक़बालों की कमी नहीं है। नवाबी का ख़्वाब देखने वाले वहाँ भी मनों मौजूद हैं; बल्कि सच पूछिए, तो पूर्व बङ्गाल के 'केरामोत आली' (करामत अली?) और सरदार 'जोनाबाली' (जनाब आली?) तो सखी नौकरशाही के दामन में ही बादशाहत के मज़े ले रहे हैं! आफ़त में तो फँस गए इस 'इक़बाली बादशाहत' के कारण, बेचारे हिज़ होलीनेस! एक दिन अख़बार पढ़ते-पढ़ते 'दिलोजान' से ही नहीं, वरन सारे शरीर से, सुदूर मद्रास प्रान्त की गोदावरी नगरी निवासिनी, कमनीय-कलेवरा आयुष्मती पुलिस पर फ़रेफ़्ता हो गए और बजाय "दामन व गेरबाँ चाक करने के" लगे दोनों हाथों से ताबड़तोड़ लँगोटी नोंचने!

❀

बात यह हुई, कि वहाँ की पुलिस ने जो कमाल किया है, वह सारे हिन्दोस्तान में कहीं की पुलिस को नसीब नहीं! एक बाग़ में कुछ नर-नारी अपने बच्चे-कच्चे समेत उद्यान-भोज की तैयारी में थे, इतने में बी अठखेलियाँ करती पहुँचीं और ऐसी 'लट्ठ-वृष्टि' आरम्भ की कि सावन की झड़ी भी होंठ चाट कर रह गई! ओह! वह कमाल की पैंतरेबाज़ी और अनिर्वचनीय हस्त-लाघवता क्या कोई दईमारी-पुलिस दिखाएगी, जो इस 'गोदावरी' ने उस दिन दिखाए। माशा अल्लाह, अगर आप अपनी आँखों से देखते 'भविष्य' के सम्पादक जी महाराज, तो क़सम ख़ुदा की, अश-अश करके रह जाते और अपने अख़बार में उनकी तस्वीर छाप देते!

❀

आजकल हमारे श्रद्धेय दादा 'सिड़ी सनातन धरम' भी उधर ही बढ़े जा रहे हैं, गोदावरी की तरफ़। शायद बुढ़ौती में एक बार श्रीरामेश्वर दर्शन कर लेने का विचार है। उस दिन जलगाँव में 'वर्णाश्रम स्वराज' की व्यवस्था में लगे थे, इतने में उनके चिर-शत्रु अछूत भी न जाने कहाँ से आ धमके और लगे पण्डाल-प्रवेश के लिए सत्याग्रह करने ! अन्त में भवभय-हारिणी, विपद्-विभञ्जनी, भगवती पुलिस की शरण लेनी पड़ी और जिस तरह एक बार महिष-मद-विमर्दनी देवी चामुण्डा जी ने दादा जी की रक्षा की थी, उसी तरह अब की इस कलियुग की चामुण्डा जी ने जान बचाई, नहीं तो अछूत पण्डाल में घुस कर तथा उन्हें छूकर ऐसा तहस-नहस कर देते कि फिर रौरव के सिवा कहीं ठिकाना भी न लगता !!

❀

और अगर रौरव से बचने के लिए करोड़ों सनातनियों को प्रायश्चित्त करना पड़ता, तो और भी अनर्थ हो जाता ! लोग पञ्चगव्य बना कर सारे देश का गोमूत्र चाट जाते और गोबर कस्तूरी के भाव बिकने लगता ! बड़ी मुश्किल हो जाती, बेचारे द्विज होलीनेस को तापने के लिए उपले तक न मिलते !! इसलिए आप (श्रीजगद्गुरु) आयुष्मती पुलिस और दादा 'सनातन धर्म' के प्रति अपनी आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं और आइन्दा के वास्ते यह फ़तवा देते हैं, कि सर महम्मद इक़बाल के 'मुस्लिम भारत' की तरह सुन्दरबन में, या हिमालय की तराई में एक 'अछूत-भारत' भी क़ायम कर दिया जाय ! क्योंकि अछूत भी स्वतन्त्र-निर्वाचन के लिए लड़ रहे हैं और 'छूत' भी उनके उत्पातों से घबराए हुए हैं !!!

❀

इस पर कुछ लोग—ख़ासकर कॉङ्ग्रेस वाले—यह एतराज़ पेश करेंगे, कि सिक्ख भी तो अल्प-संख्यक होने के कारण स्वतन्त्र निर्वाचन चाहते हैं, तो क्या कहीं 'सिक्ख भारत' की भी नींव पड़ेगी ? बेशक, पड़नी चाहिए ! आजकल के 'खिचड़ी भारत' की अपेक्षा वह 'अपनी-अपनी डफ़ली और अपना-अपना राग वाला 'भारत' हज़ार दर्जे अच्छा होगा। कहीं 'मुस्लिम भारत' कहीं 'ईसाई भारत', कहीं 'पारसी भारत', कहीं 'डोम भारत', कहीं 'मेहतर भारत' और कहीं पण्डित लक्ष्मण शास्त्री महोदय का 'महामहोपाध्याय-भारत।' भारत क्या होगा, ख़ासा कलकत्ते का 'चिड़ियाख़ाना' बन जाएगा। ख़ुदाताला शीघ्र वह दिखलाए। आमीन ! आमीन !! आमीन !!!

❀

ऑर्डिनेन्साचार्य, श्रीमान् लॉर्ड इरविन महोदय जैसे पहले दर्जे के सहृदय हैं, वैसे ही पराकाष्ठा के बुद्धिमान भी हैं। क्योंकि मरे हुए 'प्रेस-ऑर्डिनेन्स' को फिर से चन्द्रोदय की घुटी 'पिला कर आपने शेषनाग की चोटी तक पहुँची हुई ब्रिटिश साम्राज्य की सुदृढ़ नींव पर दो रद्दा और भी रख दिया है ! बस, अब सारा क़िस्सा पाक हो गया, कॉङ्ग्रेस का ख़ौफ़ जाता रहा—यहाँ तक कि अब गाँधी-टोपी भी सखी नौकरशाही का कुछ नहीं बिगाड़ सकती !

❀

बात यह है, कि पहले प्रेस-ऑर्डिनेन्स की मृत्यु के कारण अभागे प्रेस-कर्मचारियों को फिर से रोटी-दाल मिलने की सम्भावना हो गई थी, इसलिए आन्दोलन से मुँह मोड़ कर वे अपने-अपने स्थानों पर लौट आए थे; देश-सेवा से वञ्चित हो रहे थे; परन्तु प्रेस-ऑर्डिनेन्स के पुनर्जन्म ने उनका धर्म बचा लिया। इसलिए अख़बार वालों का तथा प्रेसवालों का यह कर्तव्य होना चाहिए, कि वे लॉर्ड महोदय के मङ्गलार्थ एक रोज़ शाह-मदार की मज़ार पर जाकर 'तिलचौरी' चढ़ा आवें।

* * *

स्वर्गीय मौलाना मोहम्मदअली

(संक्षिप्त परिचय)

"मैं यहाँ जातीय चुनाव का फ़ैसला करने नहीं आया और न मुसलमानों की माँगों का समर्थन करने ही आया हूँ। मैं तो यहाँ भारत के लिए स्वतन्त्रता लेने आया हूँ, जिससे भारत के मुसलमान भी स्वतन्त्र हो सकेंगे। यदि हमारी यह माँग पूरी न हुई, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुसलमान बिना किसी हिचकिचाहट के भारत के वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन में भाग ले लेंगे।"

—मोहम्मदअली

मौलाना मोहम्मदअली के नाम से आज प्रत्येक भारतवासी परिचित है। सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलन में भाग लेकर वे भारत के इतिहास में अमर हो गए हैं। उन दिनों आपका नाम प्रत्येक भारतवासी के मुख पर रहता था। आपके जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों से प्रत्येक भारतवासी परिचित है। पाठकों के मनोरञ्जनार्थ यहाँ उनका संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

मौलाना मोहम्मदअली के पितामह श्रीयुत अली-बख़्श ख़ाँ धनी व्यक्ति थे। वे रामपूर स्टेट के एक उच्च पदाधिकारी थे। रामपूर के नवाब यूसुफ़अली ख़ाँ आपका बहुत सम्मान करते थे। सन्, १८५७ के बलवे में आपने ब्रिटिश सरकार को बहुत सहायता दी थी। इस राजभक्ति के उपहार में उन्हें मुरादाबाद ज़िले में एक बहुत बड़ी जागीर दी गई थी। मौलाना मोहम्मदअली के पिता श्री० अब्दुलअली ख़ाँ भी रामपूर स्टेट में एक ऊँचे पदाधिकारी थे। तरुणावस्था में ही इनकी हैज़े से मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के समय मौलाना शौकतअली केवल २ वर्ष के थे और मौलाना मोहम्मदअली बहुत छोटे थे। पिता की मृत्यु के उपरान्त इन दोनों बच्चों का भार इनकी सुयोग्य माता बी-अम्मा ने लिया। मौलाना मोहम्मदअली का जन्म सन् १८७८ में हुआ था। आपने २० वर्ष की अवस्था में बी० ए० की परीक्षा पास की। इसके बाद वे इण्डियन सिविल सर्विस की परीक्षा देने के लिए विलायत गए और वहाँ ऑक्सफ़र्ड के लिङ्कन कॉलेज में चार वर्ष तक शिक्षा प्राप्त की। कई कारणों से आप सिविल सर्विस की परीक्षा में सफल न हो सके। और वे नौकरशाही की मशीन के पुर्ज़े बनने से बच गए।

विलायत से लौटने के बाद आप रामपूर स्टेट के शिक्षा अधिकारी बनाए गए। वहाँ से सन् १९०८ में आप बड़ोदा राज्य में एक बड़े पद पर नियुक्त किए गए। बड़ोदा में आपने बड़ी तत्परता से कार्य किया और प्रजा की दशा सुधारने का सतत प्रयत्न किया। परन्तु इससे आपको सन्तोष नहीं हुआ। मौलाना आरम्भ से ही बड़े साहसी और उत्साही मनुष्य थे। आरम्भ से ही उन्हें धार्मिक शिक्षा दी गई थी। वे इस्लाम के कट्टर अनुयायी थे। इससे वे अपनी जाति तथा धर्म की सेवा करने को लालायित हो रहे थे। अपनी जाति तथा धर्म के वे केवल भारत मात्र के मुसलमानों का नहीं, वरन इस्लाम के संसार भर के अनुयायियों का पुनरुत्थान तथा सङ्गठन करना चाहते थे। यह कार्य बड़ोदा स्टेट की नौकरी करते हुए नहीं हो सकता था। इसलिए छः साल नौकरी के बाद, दो वर्ष की छुट्टी लेकर आपने अपने सम्पादकत्व में कलकत्ते से "कॉमरेड" नामक साप्ताहिक समाचार-पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया। आपने और कई प्रसिद्ध समाचार-पत्रों में लेखादि भेजना शुरू किया। इन लेखों में आपने अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया। आपके लेख विद्वत्ता तथा हास्य-रस से परिपूर्ण रहते थे। थोड़े ही दिनों में आपकी गिनती उच्च कोटि के लेखकों में होने लगी। अपनी इस सफलता से प्रोत्साहित होकर आपने शेष जीवन में यही कार्य करना निश्चय किया और अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया। आपको जावरा स्टेट की दीवानी भी दी गई, पर आपने इसे भी स्वीकार न किया। "कॉमरेड" कलकत्ते से शुरू हुआ था, पर जब भारत की राजधानी कलकत्ते से दिल्ली को हटाई गई, तब "कॉमरेड" का दफ़्तर भी सन् १९१८ में कलकत्ते से दिल्ली को हटा दिया गया। इस साप्ताहिक पत्र को प्रकाशित करने में मौलाना ने अपनी असाधारण मानसिक शक्ति का परिचय दिया और थोड़े ही दिनों में यह पत्र बहुत लोक-प्रिय हो गया। इस पत्र को निकालने का मुख्योद्देश्य अपनी जाति की सेवा तथा भारत की भिन्न-भिन्न जातियों में प्रेम-भाव उत्पन्न करना था। वे अपने पत्र द्वारा सदैव हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रचार करने का प्रयत्न करते थे। १४ जनवरी, १९११ के "कॉमरेड" में उन्होंने जो अपने पहले लेख में लिखा था, कि "यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि भारत की हिन्दू या मुस्लिम जाति बिना एक-दूसरे की भलाई का ख़्याल किए और बिना एक-दूसरे की सहायता लिए सफलता प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगी, तो यह निश्चय है कि उनका यह प्रयत्न सर्वथा असफल होगा।" आपने लिखा था "भारत की समस्याएँ बहुत विकट हैं। परन्तु जब यूरोप में इतनी राष्ट्रीय स्पर्धा, इतने युद्ध तथा कलह होते हुए भी वहाँ के राजनीतिज्ञ उस दिन की आशा कर रहे हैं, जब सारा यूरोप एक होकर रह सकेगा, तब क्या हम इतनी भी आशा नहीं कर सकते कि भारत-निवासी एक होकर एक बलिष्ठ राष्ट्रीय शासन-विधान की नींव स्थापित करें।" इन शब्दों से मौलाना का देश-प्रेम तथा हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल करने की चिन्ता साफ़-साफ़ ज़ाहिर होती है।

पर "कॉमरेड" की स्थापना करके उनकी तबियत न भरी। वे यह पूर्णतया समझते थे कि राष्ट्रीय तथा जातीय उत्थान के लिए देश की सारी जनता को जगाने की आवश्यकता है। अङ्गरेज़ी समाचार-पत्र तो केवल अङ्गरेज़ी पढ़े-लिखे लोगों की सेवा कर सकता है। इस उद्देश्य से उन्होंने ने एक उर्दू पत्र "हमदर्द" की स्थापना की। यह बहुत ही लोकप्रिय हो गया। और इसमें प्रकाशित विचार लोगों पर जादू का काम करने लगे। इससे यह सरकार द्वारा बन्द कर दिया गया।

इसके अतिरिक्त भी मौलाना मोहम्मद अली ने हर प्रकार से अपने धर्म की सेवा करने का प्रयत्न किया। सन् १९१३ में कानपुर की एक मसजिद का कुछ भाग सरकार द्वारा गिरवा दिया गया। यह भाग एक नई

निकलने वाली सड़क के ऊपर पड़ता था। इसके विरोध में कानपुर तथा अन्य शहरों की मुस्लिम जनता ने सभाएँ कीं और आन्दोलन उठाया। मौलाना मोहम्मद अली ने अपने पत्र द्वारा इसका घोर विरोध किया। उस समय के लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर सर जेम्स मेस्टन से प्रार्थना की गई, पर उनकी ये प्रार्थनाएँ सफल न हुईं। अन्त में मौलाना मोहम्मद अली तथा सय्यद वज़ीर हसन ने विलायत जाने का निश्चय किया। वहाँ उन्होंने इस सम्बन्ध में सभाएँ कीं, व्याख्यान दिए तथा बड़े-बड़े पदाधिकारियों से भेंट की। इसका फल यह हुआ कि वाइसराय ने स्वयं कानपुर आकर मुसलमानों की माँगें पूरी कर दीं।

हम पहले कह चुके हैं, कि मुस्लिम धर्म की सेवा में वे केवल भारत के मुसलमानों का ही नहीं, वरन संसार के सब मुसलमानों को सङ्गठित करना चाहते थे। वे अपने जीवन भर संसार के सब देशों में रहने वाले अपने सहधर्मियों की उन्नति की चेष्टा करते रहे। गत यूरोपीय महायुद्ध में जब टर्की ने मित्र-दल के विरुद्ध युद्ध छेड़ा, तब भारत के मुसलमान बहुत अशान्त हो उठे। इङ्गलैण्ड के सारे समाचार-पत्र टर्की की बुराइयों से भरे रहते थे। मौलाना मोहम्मद अली से यह न सहा गया। आपने इनके उत्तर में टर्की के अधिकारों तथा माँगों का समर्थन किया। इससे घबरा कर ब्रिटिश सरकार ने आपको जेल में बन्द कर दिया और "हमदर्द" तथा "कॉमरेड" की ज़मानतें ज़ब्त कर लीं। आप चार साल तक बन्दी अवस्था में रहे। सन् १९१९ में सन्धि हो जाने पर आप रिहा कर दिए गए।

जेल से छूट कर आप सीधे अमृतसर पहुँचे, जहाँ कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन हो रहा था। वहाँ पर सर माइकल ओडायर को पञ्जाब से हटा देने के प्रस्ताव पर आपने बड़ा जोशीला भाषण दिया। सरकारी ज़ादतियों के कारण तथा चार वर्ष तक बन्दी अवस्था में रहने के कारण, आपको बहुत आर्थिक हानि उठानी पड़ी। इसलिए जब आप जेल से छूटे तब हिन्दुस्तान के प्रमुख हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने आपके लिए द्रव्य एकत्रित करने के उद्देश्य से एक कमिटी नियुक्त की। और उसके एकत्रित द्रव्य की थैली मौलाना मोहम्मद अली को दी गई, पर आपने इसे अपने ख़ानगी-ख़र्च में लाने से इनकार कर दिया और उसे सामाजिक सेवा में ख़र्च किया।

युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार तथा उनके सहयोगियों ने मुस्लिम जगत की छीछालेदर करना आरम्भ कर दिया। टर्की को सार्वभौमित्व के पद से हटाने का प्रयत्न होने लगा। मौलाना मोहम्मद अली ने इसके विरुद्ध फिर कमर कसी। भारत में ख़िलाफ़त का आन्दोलन बड़े उत्साह के साथ उठाया गया, महात्मा गाँधी ने भी इसमें सहायता देने का वचन दिया। इसी सम्बन्ध में सन् १९२० की जनवरी में भारत के प्रमुख हिन्दू और मुस्लिम नेता वाइसराय से मिले और उनसे ख़िलाफ़त के प्रश्न पर बातचीत की। परन्तु इसका कुछ भी फल न निकला। इसी साल मार्च में मौलाना मोहम्मद अली के प्रतिनिधित्व में कुछ लोग इङ्गलैण्ड भेजे गए। इन्होंने ब्रिटिश जनता के सामने अपनी माँगें पेश कीं और उन्हें अपनी यात्रा का उद्देश्य सुनाया। इङ्गलैण्ड तथा फ़्रान्स में समाचार-पत्रों की भी स्थापना की गई, परन्तु इनसे भी उन्हें कुछ सफलता प्राप्त न हुई। हताश होकर अक्टूबर में वे भारत लौट आए और बम्बई की विराट सभा में व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि "जब तक भारत स्वतन्त्र नहीं होता, तब तक हमारी माँगें पूरी नहीं हो सकतीं, इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हिन्दू तथा मुसलमान एक होकर भारत को स्वतन्त्र करें। स्वतन्त्र भारत एशिया के मुस्लिम देशों को काफ़ी सहायता पहुँचा सकेगा।" इसीलिए आप भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध में कूद पड़े। सन् १९२० की नागपुर की कॉङ्ग्रेस में महात्मा गाँधी का असहयोग का प्रस्ताव पास हुआ। इसमें मौलाना उनके दाहिने हाथ थे, उन्हीं के प्रयत्न से इस आन्दोलन में भारत के मुसलमान हिन्दुओं के कन्धे से कन्धा लगा कर लड़े। असहयोग आन्दोलन ने भारत की काया पलट कर कर दी। चरख़े-झण्डे तथा राष्ट्रीय गानों से भारत का गगन-मण्डल गूँज उठा। भारत-सरकार ने घबरा कर नेताओं की धर-पकड़ प्रारम्भ कर दी। आप भी सितम्बर में विज़गापट्टम में गिरफ़्तार किए गए और कराची के प्रसिद्ध मुक़द्दमे में आपको दो वर्षों की कड़ी सज़ा दी गई।

उन दिनों सारा भारत अली भाइयों के गुण-गान से गूँज रहा था। वे राष्ट्रीय संग्राम के वीर तथा उत्साही नेता थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। फिर क्यों प्रिय न होते? इसलिए सन् १९२३ में, जब आप जेल से छूट कर आए तब भारत ने इन्हें अपने सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित किया। मोहम्मद अली कोकोनाडा में होने वाली कॉङ्ग्रेस के सभापति चुने गए। इसी साल हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों को रोकने के लिए दिल्ली में 'ऑल पार्टीज़' (All Parties) कॉन्फ़्रेन्स हुई जिसमें महात्मा गाँधी ने २१ दिन का व्रत किया। इसमें मौलाना ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए बहुत प्रयत्न किया और उसमें उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

स्वर्गीय मौलाना मोहम्मद अली

बस इस घटना के बाद से आपके राष्ट्रीय जीवन का अन्त हुआ। धीरे-धीरे असहयोग आन्दोलन की प्रचण्ड ज्वाला धीमी हुई और राष्ट्रीय वातावरण में जातीयता की दुर्गन्धि फैलने लगी। भारत के कोने-कोने से हिन्दू-मुस्लिम दङ्गों के समाचार आने लगे। यहाँ मौलाना का भी ख़ून ठण्डा हो चला। एक अङ्गरेज़ विद्वान ने कहा है कि "वृद्धावस्था में मनुष्य को दो दुर्गुणों से बचना चाहिए—एक तो कञ्जूसी से और दूसरे धार्मिक द्वेष से।" मौलाना भी जातीयता के भँवर में जा फँसे। उनका पुराना जोश जाता रहा और पुरानी निष्पक्षता का अन्त हो गया। भारत की जनता ने भी धीरे-धीरे उन्हें अपनाना छोड़ दिया, परन्तु फिर भी मौलाना का देश-प्रेम इकदम ठण्डा नहीं हुआ था। यह मानना पड़ेगा कि उनके हृदय में देश-प्रेम तथा जातीयता की भावनाओं में परस्पर युद्ध हुआ करता था! दोनों उनके हृदय को अपनी-अपनी ओर खींचती थीं। पुराने जोश के ठण्डे हो जाने पर भी वे राष्ट्रीय संग्राम के वीर योद्धा बने रहे। जातीयता के घोर पङ्क में पड़ने पर भी कभी-कभी उनके हृदय में देशभक्ति की पुरानी उमङ्गें उमड़ पड़ती थीं और इसका पूर्ण परिचय उन्होंने अपने गोलमेज़ परिषद् के भाषण में दिया था। उसमें उन्होंने कहा था कि "यदि स्वराज्य न मिला, तो यहीं अपने प्राण-त्याग कर दूँगा। मैं पराधीन भारत में वापस लौट कर न जाऊँगा।" फिर अपने साथियों को लक्ष्य करके उन्होंने कहा कि "यदि हमें औपनिवेशिक स्वराज्य न दिया गया, तो समझो कि भारत ब्रिटिश सरकार के हाथ से सदा के लिए निकल गया। तब तो यह निश्चित है कि ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर एक नवीन संयुक्त राज्य का उदय होगा, जिसमें वहाँ के समस्त धर्मों के अनुयायी एक होकर रहेंगे। × × ×"

* * *

"ब्रिटिश सरकार का सब से बड़ा दोष यह है, कि वह भारत के न्याययुक्त अधिकारों को दबाने का प्रयत्न कर रही है। क्या वह समझती है कि वह भारत के ३३ करोड़ निवासियों को, जो स्वतन्त्रता के लिए प्राण देने को तैयार हैं, किसी तरह भी अपने बन्धन में रख सकती है।" हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों के विषय में उन्होंने कहा था कि "हमारे हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों के लिए ब्रिटिश सरकार ज़िम्मेदार है। वह हम लोगों में भेद डाल कर हम पर शासन करना चाहती है। भारत के स्कूलों में जो इतिहास की शिक्षा दी जाती है, वही हिन्दू और मुसलमानों में आपस में बैर-भाव उत्पन्न कर देती है।"

मौलाना मोहम्मदअली बहुत ही निर्भय तथा स्पष्ट वक्ता थे। इसी भाषण में उन्होंने लॉर्ड रीडिङ्ग पर जो फ़िकरा कसा था, उसमें उनके इन गुणों का पता चलता है। उन्होंने कहा था कि "मैं पुराना असहयोगी हूँ। इस अपराध के लिए लॉर्ड रीडिङ्ग ने मुझे और मेरे भाई को जेल में बन्द किया था। मैं इसका बदला हरगिज़ नहीं चाहता, परन्तु मैं आज वह शक्ति चाहता हूँ, जिससे यदि लॉर्ड रीडिङ्ग कोई अन्याय करें, तो मैं उन्हें जेल में बन्द कर सकूँ।"

विलायत जाने के पूर्व ही से आपका स्वास्थ्य ठीक न था। पर इस रुग्णावस्था में भी आपने गोलमेज़ परिषद में जाना स्वीकार कर लिया। वहाँ जाकर आपका स्वास्थ्य और भी ख़राब हो गया; पर आप गोलमेज़ परिषद में बराबर काम करते रहे। ३री जनवरी की रात को आपकी तबियत और भी ख़राब हो गई। आप समझ गए कि अब अन्तिम समय आ पहुँचा है। आपको यही अफ़सोस था, कि आप हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल न कर सके। रात को उन्होंने कई ब्रिटिश नेताओं तथा हिन्दू सदस्यों को पत्र लिखे, और अपनी जातीय माँगों को पत्र में परिवर्तन किया। प्रधान-मन्त्री मिस्टर मैकडॉनल्ड को भी उन्होंने एक पत्र लिखा था, उसमें उन्होंने अपना वक्तव्य स्पष्ट रूप से ज़ाहिर कर दिया था। उन्होंने लिखा था कि "मैं यहाँ जातीय चुनाव का फ़ैसला कराने नहीं आया, और न मुसलमानों की माँगों का समर्थन करने ही आया हूँ। मैं तो यहाँ भारत के लिए स्वतन्त्रता लेने आया हूँ, जिससे भारत के मुसलमान भी स्वतन्त्र हो सकेंगे। यदि हमारी यह माँग पूरी न हुई, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुसलमान बिना किसी हिचकिचाहट के भारत के वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने लगेंगे।" इन शब्दों में आपने अपनी देशभक्ति का पूर्ण परिचय दिया था। अपने जीवन में अन्त काल तक मौलाना भारत की तथा अपने धर्म की सेवा में लगे रहे। ४थी जनवरी को सुबह ९॥ बजे मौलाना को कराल-काल ने इस नश्वर संसार से उठा लिया। परमात्मा आपकी आत्मा को अक्षय शान्ति और परिवार के प्रिय जनों को धैर्य प्रदान करें।

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

१५ जनवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले—
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

गोली से एक युवक की मृत्यु

बम्बई का ९वीं जनवरी का समाचार है कि मोहनलाल उद्धवजी जोशी नामक एक १७ वर्ष के युवक की, जिसे गत १ली जनवरी के गोली-काण्ड में कालबा देवी रोड पर गोली लगी थी, अस्पताल में मृत्यु हो गई। गोली उसके शरीर से नहीं निकाली जा सकी थी।

स्वर्गीय मौलाना मुहम्मद अली की पुत्री की तलाशी

मुरादाबाद का ९वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ की एक सभा में जनता ने ख़ुफ़िया-पुलिस के द्वारा स्वर्गीय मौलाना की पुत्री की तलाशी ली जाने की बहुत निन्दा की। कहा जाता है, कि जब अपने पिता की मृत्यु के दो दिन बाद वे रामपुर जा रही थीं उसी समय पुलिस ने आपकी तलाशी ली थी। इस तलाशी के उत्तरदाताओं को दण्ड देने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी पास किया गया। कहा जाता है कि अधिकारीगण इस विषय की जाँच कर रहे हैं।

प्रेस-ऑर्डिनेन्स की प्रथम आहुति

लाहौर का ८वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के 'बन्देमातरम्' पत्र से प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार दस हज़ार रुपए की ज़मानत माँगी गई है। ५०००) रु० की ज़मानत पत्र से और ५०००) रु० प्रेस से माँगा गया है।

महात्मा जी का स्वास्थ्य

"न्यूज़ ऑफ़ इण्डिया" के अनुसार महात्मा जी के एक पत्र से पता चलता है, कि उनका वज़न पहले की अपेक्षा १॥ पौण्ड बढ़ गया है। उन्हें अब कमज़ोरी नहीं मालूम होती है। वे नित्य दो घण्टे तकली पर सूत काता करते हैं। इससे उन्हें कुछ भी थकावट नहीं मालूम पड़ती। उनकी पाचन शक्ति बढ़ गई है, और उनका साधारण स्वास्थ्य अच्छा है।

जेल में दुर्व्यवहार

सहयोगी 'अर्जुन' के एक सम्वाददाता का कहना है, कि अजमेर की जेल में कुछ राजनैतिक क़ैदियों के परेड में शामिल न होने पर उन्हें हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ डाल दी गईं। कहा जाता है, कुछ दिन पहले उन्हें उठा-उठा कर पटका भी गया था, और मुख पर जालीदार क्लिप लगा कर खाना-पीना तक नहीं दिया गया था।

जुलाहों की प्रतिज्ञा

सोनागाँव (ढाका) का समाचार है, कि वहाँ की एक काँग्रेस सभा में इमलादी नामक स्थान के जुलाहों ने विदेशी सूत के सर्वथा बहिष्कार करने की प्रतिज्ञा की है।

दयदियावारी के व्यापारियों ने भी विदेशी वस्त्र न बेचने की प्रतिज्ञा की है। उनके विदेशी कपड़ों की गाँठों पर काँग्रेस की मुहर लगा दी गई है।

बिहार प्रान्तीय कोऑपरेटिव कॉङ्ग्रेस

ख़बर है कि बिहार-उड़ीसा-प्रान्तीय कोऑपरेटिव कॉङ्ग्रेस का आगामी अधिवेशन राँची में १९ से २१ जनवरी तक होने वाला है।

* * *

यह दासता है या प्रजातन्त्र ?

दक्षिण अफ़्रिका में गोरों का नृशंस राज्य !

[डॉक्टर "पोल खोलानन्द भट्टाचार्या" एम० ए०, पी० एच-डी०]

आजकल संसार की गोरी जातियों को यह घमण्ड है, कि हम संसार के न्याय की रक्षक तथा सभ्यता की सर्वोत्तम आचार्य हैं। वे कहती हैं, कि गोरी जातियों का यह धर्म है कि वे असभ्य काली जातियों को कला-विज्ञान में निपुण करें, उन्हें न्यायोचित व्यवहार करना बतावें और उन्हें प्रजातन्त्र के नियमों की शिक्षा दें। यही गोरी जातियों का भार (Whitemen's burden) है। वे समझते हैं, कि इस भार को पूर्ण रीति से चलाने के लिए उनमें ईश्वर ने ख़ास गुण दिए हैं, जो काली जातियों में नहीं पाए जाते। क्या करें, बेचारे इन काले-कलूटों को सभ्य बनाते-बनाते थके जा रहे हैं। पर इतने वर्ष हो गए, फिर भी इन कलूटों को अपने राज्य चलाने की तथा उद्योग और कला में उन्नति करने की ज़रा भी तमीज़ नहीं आई। पर इसमें उनका क्या दोष है ? काली जातियाँ इतनी कूढ़मग्ज़ होती हैं कि वे कोई बात जल्दी सीख ही नहीं सकतीं। विदेशी सत्ता का समर्थन करने का यही सब से बड़ा साधन है। साम्राज्य-वाद के अगणित अन्यायों को ढाँकने का तथा मूर्ख एवं अशिक्षित जनता की आँखों में धूल झोंकने का यही सब से अच्छा तरीक़ा है।

आजकल दक्षिण अफ़्रिका का शासन इसी गोरी जाति के हाथ में है। गोरी जाति के मनुष्य अल्पसंख्यक होने पर भी अपने राजनैतिक तथा आर्थिक बल द्वारा वहाँ के प्राचीन निवासियों पर राज्य कर रहे हैं। यदि वहाँ की काली जातियाँ इनके विरुद्ध क्रान्ति की आवाज़ उठावें, तो आज इङ्गलैण्ड तथा यूरोप के अन्य देश इन गोरे शासकों की हर प्रकार से सहायता करने को तैयार हो जावेंगे। ये यूरोप के राज्यों के उपनिवेश हैं, जिनमें उनकी सन्तानें आकर बसी हैं और वे अपनी मातृभूमि के अपार सैनिक बल द्वारा वहाँ के निवासियों को दासता के निष्ठुर बन्धन में जकड़े हुए हैं। इङ्गलैण्ड की दिनोंदिन बढ़ती हुई मनुष्य-संख्या को इन्हीं उपनिवेशों में जाकर उद्योग तथा धन्धों में लगने का मौक़ा मिल सकता है। इन्हीं उपनिवेशों में वे अपना माल बेच कर रुपया कमा सकते हैं। इन्हीं देशों में रेल, तार तथा कारख़ाने बना कर वे एक मज़बूत पूँजी-पतित्व की स्थापना कर सकते हैं और इस तरह वहाँ के निवासियों पर आर्थिक प्रभुत्व स्थापित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ के शासक इन्हीं की सन्तान हैं, उनकी सभ्यता के अनुयायी हैं और औपनिवेशिक स्वराज्य पाने पर भी उनके प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं। ऐसी सोने की चिड़िया को कौन खोना चाहेगा ? इन्हीं सब कारणों से यूरोप के राष्ट्र इन देशों में शासन करने वाली अपनी सन्तान को नीति का पूर्णरूप से समर्थन करते हैं, फिर चाहे वह वहाँ के प्राचीन निवासियों के लिए अच्छी हो या बुरी !

इसी नीति का आज इङ्गलैण्ड भी अनुकरण कर रहा है, दक्षिण अफ़्रिका के प्राचीन निवासियों के साथ वहाँ की गोरी जातियाँ जिस तरह पेश आ रही हैं, वह आज सबको मालूम है। उन्होंने उनके सारे राजनैतिक अधिकार छीन लिए हैं, उनकी अधिकतर ज़मीन पर क़ब्ज़ा जमा लिया है और उन पर अतिरिक्त लगान लगा कर और शिक्षा तथा कला से दूर रख कर बिलकुल कुली बना दिया है !

पर ब्रिटिश सरकार जब कभी घोषणा निकालती है, तब वह अपनी चालाकी से बाज़ नहीं आती। उसने सन् १९२३ में केनिया के सम्बन्ध में एक घोषणा निकाली थी। उसमें वह कहती है कि "केनिया एक अफ़्रिकन देश है और ब्रिटिश सरकार का यह निश्चित-मत है कि इस देश के शासन में हमें वहाँ के प्राचीन निवासियों का ख़्याल सब से पहिले करना पड़ेगा।" ब्रिटिश सरकार कितनी उदारचित्त है ? वह न्याय की रक्षा के लिए अपनी सन्तानों के हस्तगत अधिकारों तक को छोड़ देने को तैयार है। वह ग़रीब, अशिक्षित और असभ्य अफ़्रिकन जातियों के अधिकारों की किस उदारता से रक्षा कर रही है !!

पर दक्षिण अफ़्रिका के इन्हीं देशों की असली हालत क्या है ? इन्हीं देशों में न्याय के परदे के नीचे असहाय काली जातियों पर कितने घोर अत्याचार किए जा रहे हैं, इसका ठीक पता लगाना कुछ अधिक कठिन नहीं है। ब्रिटिश सरकार कहती है कि "हमें वहाँ के निवासियों का ख़्याल सब से पहले करना पड़ेगा।" पर असल में वहाँ के निवासियों की भलाई को प्रथम स्थान देना तो दूर रहा, उन्हें वे भी अधिकार तथा सुविधाएँ नहीं दी गई हैं, जो कि दूर देशों से आकर अफ़्रिका में बसने वाली गोरी जातियों को दी गई हैं ! श्रेष्ठता का व्यवहार तो दूर रहा, यहाँ तो समता तक का अधिकार नहीं है। दक्षिण अफ़्रिका निवासी गोरी जातियाँ वहाँ की काली जातियों को इस तरह देखती हैं, मानों वे मनुष्य ही न हों। वे समझती हैं कि ये जङ्गली तथा असभ्य हैं, इसलिए इन्हें समाज का सब से कठिन तथा रद्दी काम सौंपा जाना चाहिए। इसके फल-स्वरूप वहाँ के गोरे निवासियों ने काले निवासियों के उपजाऊ खेतों तथा अच्छी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया है। समस्त दक्षिण अफ़्रिका में कुल १२ लाख गोरे निवासी हैं। ये इस देश की २८ करोड़ एकड़ ज़मीन पर क़ब्ज़ा किए हुए हैं !! वहाँ के काले निवासियों की संख्या ४७ लाख है, पर उनके पास केवल २ करोड़ एकड़ ज़मीन है ! यह ज़मीन गोरों ने काले निवासियों को उनकी ज़मीन से ज़बर्दस्ती निकाल कर अपने क़ब्ज़े में कर ली है। फिर वहाँ के प्राचीन निवासियों को नई ज़मीन को मोल लेने का, या जोतने का अधिकार नहीं है। वे बिना गवर्नर-जनरल की आज्ञा लिए एक इञ्च ज़मीन नहीं ख़रीद सकते। हाँ, थोड़ी सी रद्दी पथरीली ज़मीन ज़रूर उनके लिए छोड़ दी गई है, जिसमें वे स्वच्छन्दता से विचर सकते हैं और बस सकते हैं। पर यह भी इसलिए, कि यह ज़मीन गोरी जातियों के काम की नहीं है। इस तरह एक तो उनके पास गोरों की ज़मीन का केवल $\frac{1}{10}$ भाग है, और जो कुछ है, वह भी उपजाऊ नहीं है ! इसलिए वहाँ की काली जातियों को मज़दूरी करने के अतिरिक्त जीवन-निर्वाह करने का कोई दूसरा उपाय ही नहीं है। वे गोरों के खेतों में मज़दूरी करके अपना पेट भरते हैं। काली जातियों की करुण आर्थिक दशा का यहीं अन्त नहीं हुआ है। शहरों में जो कारख़ाने हैं, उनमें इन लोगों से काम तो अवश्य लिया जाता है, परन्तु वे वर्तमान उद्योग-सम्बन्धी कला तथा विज्ञान नहीं सीख सकते हैं। इसलिए यहाँ भी वे सिवाय मोटे काम के और कुछ नहीं कर सकते। फिर काले तथा गोरे मज़दूरों के वेतन में भी फ़र्क़ रक्खा गया है। जिस तरह भारत के अङ्गरेज़ी तथा हिन्दुस्तानी सैनिकों के वेतन में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है, उसी तरह वहाँ के गोरे मज़दूरों को कारख़ानों में ६ गुना ज़्यादा वेतन मिलता है और इसके लिए वहाँ की सरकार गोरे मज़दूरों को काम देने वाले कारख़ानों को विशेष आर्थिक सहायता भी देती है।

अफ़्रिका के लोग घड़ियाल के मुँह में पकड़े गए व्यक्ति को छुड़ाने का सतत प्रयत्न कर रहे हैं !

बम्बई के जन-समूह का वह दृश्य, जो उस दिन चौपाटी पर त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल जी नेहरू, महामना पं० मदनमोहन जी मालवीय तथा श्री० विट्ठल भाई पटेल आदि नेताओं की स्वास्थ्य तथा आयुकामना के उद्देश्य से एकत्र हुआ था। हर्ष है कि देशवासियों की यह प्रार्थना पूर्णतः सफल हुई। अब ये तीनों महान नेता जेल से भी मुक्त कर दिए गए हैं और परमात्मा की कृपा से दिनोंदिन स्वस्थ हो रहे हैं।

यहाँ तक तो आर्थिक दशा हुई, अब क़ानून का हाल सुनिए। कहा जाता है कि क़ानून अन्धा होता है। उसके आँखें नहीं होतीं और वह सबसे एकसा बर्ताव करता है। परन्तु यहाँ के क़ानून के देवता ऐसे अन्धे नहीं हैं उनकी आँखें अभी इतनी ख़राब नहीं हुई हैं कि वे काले, गोरे तक की पहिचान न कर सकें। वे जानते हैं, गोरों पर ईश्वर की ख़ास मेहरबानी है। वहाँ की काली जातियों के लिए ख़ास क़ानून बनाए गए हैं, जिससे उनके एक जगह एकत्रित होने के तथा अपने विचारों को दर्शाने के अधिकार छीन लिए गए हैं। यदि वे ऐसा करें, तो वे राज-विद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार किए जा सकते हैं, उन पर लाठियाँ चलाई जा सकती हैं और ज़रूरत पड़े तो गोलियों तक की सहायता ली जा सकती है। इसके अतिरिक्त काले मज़दूर अपना सङ्गठन नहीं कर सकते और हड़ताल नहीं कर सकते। यदि वे बिना आज्ञा के अपने गोरे मालिकों की नौकरी छोड़ देवें, तो यह जुर्म में शामिल है। यह दासता नहीं तो क्या है? इससे अधिक पराधीनता और क्या हो सकती है?

छोटे-छोटे अपराधों के लिए गिरफ़्तारियाँ की जाती हैं और जेल की सज़ा दी जाती है। सरकार को भी इससे कुछ अड़चन नहीं होती। वे इन अपराधियों को गोरे किसानों के खेतों में काम करने को भेज देते हैं और इस तरह २९ काले अपराधियों के जत्थे के लिए उन्हें एक दिन के लिए सरकार को केवल १८ पेन्स अर्थात् १) रुपया देना पड़ता है। इससे गोरी सरकार का भी फ़ायदा है और गोरे पूँजीपतियों का भी !!!

रही राजनैतिक अधिकारों की बात, सो इस जगह भी शून्य है। काली जातियाँ राज्य के शासन चलाने वाले परिषदों में अपने प्रतिनिधि नहीं भेज सकतीं। उनके लिए एक अलग परिषद है, जिसके सदस्यों के हाथ में कुछ भी अधिकार नहीं दिया गया है। इन सब बातों के होते हुए भी, काले निवासियों को गोरों की अपेक्षा अधिक टैक्स देना पड़ता है। वे इस अतिरिक्त-टैक्स से इसी शर्त पर बच सकते हैं, जब वे यह सिद्ध कर दें कि हम गोरे पूँजीपति के कारख़ाने या खेत में काम करते हैं।

यह दक्षिण अफ़्रिका का न्याययुक्त शासन है! जहाँ पर ब्रिटिश सरकार को वहाँ के "प्राचीन निवासियों का ख़याल सब से पहिले" करना पड़ रहा है। क्या ब्रिटिश सरकार इस अन्याय तथा अत्याचार के लिए ज़िम्मेदार नहीं है? क्या वह काली जातियों के ख़ून चूसने वाली वर्तमान सरकार के विरुद्ध है। क्या वह यह कह कर बचना चाहती है, कि दक्षिण अफ़्रिका इस सम्बन्ध में स्वतन्त्र है? कभी नहीं। क्या यदि आज दक्षिण के काले निवासी तलवार का सहारा लेकर दक्षिण अफ़्रिका में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेवें तो ब्रिटिश सरकार इस बात को चुपचाप देख सकेगी? क्या यदि वहाँ की काली जातियाँ गोरों पर इतना अत्याचार करें, जितना कि आज वे उन पर कर रहे हैं, तो निष्पक्ष ब्रिटिश सरकार इसमें दख़ल न देवेगी? यह कभी नहीं हो सकता। स्वाधीनता का तो ढोंग मात्र है। जब तक वहाँ की नीति ब्रिटिश सरकार के अनुकूल है और लाभप्रद है, तब तक वह उसकी स्वाधीनता की रक्षा क्यों न करे। जब परिस्थिति विपरीत होगी तब वे न्याय-रक्षा तथा जगत की शान्ति-रक्षा का स्वाँग करके वहाँ की स्वाधीन सरकार के कार्यों में दख़ल देगी! अभी तो अपनी निर्बलता दिखाने में ही भलाई है।

परन्तु ब्रिटिश सरकार को यह याद रखना चाहिए, कि वे किसी भी जाति को अपरिमित समय तक इस दासावस्था में नहीं रख सकती। और यदि शीघ्र अन्याय तथा अत्याचारों का अन्त न किया गया, तो दक्षिण अफ़्रिका की समस्त काली जाति एक दिन उठेगी और इस अन्याय का बदला चुकावेगी। इस सम्बन्ध में उन्हें लन्दन से प्रकाशित मज़दूर-दल के प्रमुख पत्र 'न्यू लीडर' में छपे हुए मिस विनिफ़्रेड होल्टबी की भविष्यवाणी को याद रखना चाहिए।

"If this government continues, it would mean the embitterment of more than 50 million people, who must inevitably one day learn how to use the weapons which civilization has forged and exact a terrible revenge."

* * *

इजिप्ट की वर्तमान राजनैतिक दुर्दशा के लिए भी इङ्गलैण्ड ज़िम्मेदार है !

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

कुछ दिन हुए एक डच समाचार-पत्र ने ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री मैकडॉनल्ड का एक कार्टून निकाला था। उसमें श्रीयुत मैकडॉनल्ड की दो तस्वीरें थीं। एक में वे मामूली मज़दूरों के कपड़े पहिने हुए थे। उनके चेहरे से शान्ति टपकती थी। इस चित्र से यह दर्शाया गया था, कि वे मज़दूर-दल के सिद्धान्तों के समर्थक हैं। दूसरे चित्र में ये ही सज्जन फ़ौजी पोशाक धारण किए थे। सारे शरीर पर फ़ौजी हथियार सजे हुए थे। आँखों से क्रूरता तथा कठोरता टपकती थी। ये आजकल के मैकडॉनल्ड थे। बीच में एक स्त्री खड़ी थी। यह भारतवर्ष की प्रतिमा थी। वह कह रही थी कि "पहिले तो तुम बड़े ऊँचे सिद्धान्तों पर चलने वाले, प्रजातन्त्र के समर्थक और संसार के सब राष्ट्रों की स्वाधीनता के पक्षपाती थे, पर आज तुमने एक दूसरा ही स्वरूप धारण कर लिया है। आज तुम एक सैनिक हो और सैनिक बल तथा दमन-नीति के समर्थक हो। तुम एक ग़रीब पराधीन देश की न्यायपूर्ण आवाज़ को अपने सैनिक बल से दबाने का प्रयत्न कर रहे हो, उसके न्यायपूर्ण अधिकारों को छुड़ा रहे हो। तुममें आज कितना परिवर्तन हो गया है।" आज प्रत्येक भारतवासी इस कार्टून के भाव की सत्यता का अनुभव कर रहा है। प्रत्येक भारतवासी अब यह देख रहा है, कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की बातों पर विश्वास करना मूर्खता है। राजसत्ता पाने के पूर्व मज़दूर-दल तथा उसके नेता स्वाधीनता के रक्षक बनने का दावा भरते थे। मज़दूरों की दशा सुधारने की क़सम खाते थे, पर आज वे क्या कर रहे हैं? केवल भारतवर्ष ही नहीं, वरन् संसार के सब देश, जो कि अभाग्य से ब्रिटिश सत्ता के अधीन हैं, आज यह अनुभव कर रहे हैं कि "कोऊ नृप होय हमैं का हानी, चेरी छोड़ न होउब रानी।" चाहे मज़दूर-दल इङ्गलैण्ड का शासन करे, चाहे अन्य कोई दल; परन्तु हमारे सम्बन्ध में तो सदा वही दमन की नीति क़ायम रहेगी! इङ्गलैण्ड के शासकों के परिवर्तन से हमारे शासन में कुछ भी परिवर्तन न होगा।

भारत की शासन-नीति तो मज़दूर-दल का राज्य होने से सुधरने के बजाय, दिनोंदिन बिगड़ती ही जाती है। और हम सब लोग इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं, पर और देशों का भी वही हाल है। हाल ही में इजिप्ट की वैफ़्द पार्टी के सेक्रेटरी जनरल श्रीयुत मकराम रबीद बे ने लन्दन से निकलने वाले मज़दूर दल के मुख्य पत्र "न्यू लीडर" में एक लेख दिया है। उसमें उन्होंने लिखा है कि "हाल में इजिप्ट के एक छोटे से दल ने वहाँ की सारी सत्ता अपने हाथ में ले ली है। इस दल ने वहाँ की शासन-पद्धति को एकदम बदल दिया है। अब शासन में प्रजा का बिलकुल हाथ नहीं है। इजिप्ट की सारी प्रजा इस दल के विरुद्ध है। पर वह क्या कर सकती है? इस दल की सहायता के लिए इजिप्ट में ब्रिटिश फ़ौजें मौजूद हैं! यदि वे इसके विरुद्ध आन्दोलन उठावें, तो वह अङ्गरेज़ी फ़ौज की सहायता से दबा दिया जावेगा। इजिप्ट में आज सेना का शासन है? प्रत्येक स्थान पर सेना और सिपाही उपस्थित हैं। राष्ट्र के सारे समाचार-पत्रों की स्वाधीनता छीन ली गई है! प्रत्येक दिन गिरफ़्तारियाँ होती हैं और घरों की तलाशियाँ ली जाती हैं! देश भर में दमन का भयानक राज्य स्थापित हो रहा है। और इस सबके लिए प्रजातन्त्र-समर्थक, स्वाधीनता-प्रेमी ब्रिटिश मज़दूर-दल ज़िम्मेदार है।"

पाठकों को याद होगा, कि इजिप्ट भारत की तरह पराधीन नहीं है। वहाँ का शासन हाल में कुछ दिनों तक एक प्रजा के प्रतिनिधि-सभा के हाथ में था। पर वहाँ पर ब्रिटिश सेना मौजूद है। यह सेना वहाँ के विदेशी निवासियों की रक्षा के लिए रक्खी गई है। पर यह तो एक बहाना मात्र है। इजिप्ट में ब्रिटिश सेना की उपस्थिति ही उनकी स्वाधीनता की राह का रोड़ा है। इजिप्ट की सन्धि में यह कहा गया था, कि ब्रिटिश

डॉक्टर सप्रू—(प्रधान-मन्त्री से) यह भारत-रूपी बालक आपकी सेवा में ले आया हूँ, "डायर्की" के स्तन का दूध इसे नहीं पचेगा, कम से कम इसे दूध पीने के लिए "फ़ेडरल" का चम्मच ही दे दीजिए!

लोगों से इजिप्ट के अन्दरूनी शासन से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस विषय में वे बिलकुल निष्पक्ष रहेंगे, परन्तु जब वे देखेंगे, कि कोई विदेशी जाति की भलाई तथा उनकी शारीरिक, आर्थिक दशा की रक्षा का भय है, तो वे इजिप्ट के राज्य-कार्य में अपना हाथ डाल सकेंगे। यदि इजिप्ट को पूर्ण स्वाधीनता है, तो उसे आन्तरिक शासन तथा विदेशी नीति दोनों में पूर्ण स्वाधीनता होनी चाहिए, परन्तु पूर्ण स्वाधीनता का तो केवल एक ढोंग मात्र है! जब तक ब्रिटिश सेना वहाँ के शासन में दख़ल देने के लिए मौजूद है, जब तक ब्रिटिश शासकों को अपने सैनिक बल द्वारा वहाँ की नीति में विघ्न डालने का अधिकार है, शासन में प्रजा का पूरा हाथ हो ही नहीं सकता। इजिप्ट का शासन वहाँ के निवासियों की इच्छानुसार हो ही नहीं सकता। आजकल की राजनैतिक दशा इस मत का पूर्ण समर्थन करती है। आज इजिप्ट का शासन एक बहुत छोटे से दल के हाथ में है। जनता उस दल से ज़रा भी सहानुभूति नहीं रखती, राष्ट्र और देश के मुख्य लोकप्रिय दल भी उसके विरुद्ध हैं, पर वे उसे हटाने में असमर्थ हैं। यह तो स्वाधीनता और प्रजातन्त्र का उपहास है।

भारत की तरह इजिप्ट को भी अपनी स्वाधीनता के लिए आन्दोलन करना पड़ा था। इस आन्दोलन के चलाने वाले वैफ़्द-दल वाले थे। जिस तरह आज काँग्रेस भारत में सर्व-व्यापी हो रही है, उसी तरह इजिप्ट में वैफ़्द-दल सर्व-व्यापी है। राष्ट्र के नब्बे फ़ी सदी मनुष्य इसके सिद्धान्तों के अनुयायी हैं। इन्होंने इजिप्ट को राजनैतिक अधिकार दिलवाए हैं और जब इजिप्ट में प्रतिनिधि सभा स्थापित हुई, तब चुनाव में इसी दल की जीत हुई। इसके शासन-काल में इजिप्ट ने बहुत अच्छे-अच्छे क़ानून पास किए। इजिप्ट के किसानों को राष्ट्रीय शासन-सभा के लिए प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया गया। देश में अनिवार्य शिक्षा-प्रणाली स्थापित हुई। इजिप्ट में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की गई और कई पाठशालाएँ तथा ग्राम-शालाएँ खोली गईं। किसानों की सहायता के लिए सहकारी संस्थाएँ क़ायम की गईं। मज़दूरों की सहायता के लिए क़ानून पास किए गए और उनके प्रति दिन काम करने के घण्टे निश्चित किए गए। देश की नहरों तथा तालाबों की उन्नति की गई और कपास की खेती को सहायता दी गई। भारत की तरह इजिप्ट भी एक कृषि-प्रधान देश है। वहाँ की वैफ़्द-सरकार ने कृषकों को हर प्रकार से सहायता दी। इस नवीन राज्य-पद्धति में किसानों ने भी अपनी आर्थिक दशा सुधारी। उन्होंने चुनावों में भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

फिर वैफ़्द-सरकार ने किसानों तथा स्त्रियों की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में भी कई क़ानून पास किए। बेगारी के विरुद्ध क़ानून बनाए। इस तरह से उन्होंने इजिप्ट की दासता, पराधीनता, दरिद्रता को दूर करने की भरसक कोशिश की।

पर अब सम्भव है कि यह सारी उन्नति पर पानी फेर दिया जावे। इजिप्ट फिर से अपने उन्नति के शिखर पर से दासता, अशिक्षा तथा दरिद्रता के महान अन्धकार में ढकेल दिया जावे। आज इजिप्ट की सारी सत्ता एक प्रजातन्त्र-विरोधी दल के हाथ में है। इजिप्ट के निवासियों के प्रतिनिधियों के चुनाव तथा शासन-पद्धति-निर्माण के अधिकार जो कभी नहीं छीने जा सकते थे, वे भी एकाएक छीन लिए गए हैं। इस दल ने एक नवीन शासन-प्रणाली का निर्माण किया है। इसके अनुसार देश की शासन-सभा के तीन-चौथाई सदस्यों का चुनाव राजा स्वतः करेगा। राज्य के ख़र्च इत्यादि के प्रस्तावों को प्रतिनिधि सभा के आगे रखना भी आवश्यक नहीं है। इस तरह यह दल मनमाना ख़र्च कर सकता है। वैफ़्द-दल ने जो इजिप्ट के सारे निवासियों को चुनाव का अधिकार दिया था, वह भी छीन लिया गया है। अब केवल धनी मनुष्य तथा ज़मींदार ही अपने प्रतिनिधि चुन सकते हैं! कोई डॉक्टर, वकील या ओहदे वाला आदमी चुनाव के लिए नहीं खड़ा हो सकता। इस तरह राज्य की सारी सत्ता आलसी, पूँजीपति और ज़मींदारों के हाथ में रख दी गई है। किसान तथा मज़दूर फिर दासता के बन्धन में कस दिए गए हैं। हमारी दयालु मज़दूर सरकार, जिसका अन्तिम उद्देश्य सब देशों में मज़दूर तथा किसानों का राज्य स्थापित कर देने का है, जिसका सब से पहिला सिद्धान्त मज़दूरों तथा किसानों की भलाई करने का है, आज इसी नीति का समर्थन कर रही है। केवल यही

(शेष मैटर १७ वें पृष्ठ के पहिले कॉलम के नीचे देखिए)

महात्मा ईसा और महात्मा गाँधी

"यदि आज महात्मा ईसा भारत में होते तो वे भी यरवदा जेल में बन्द मिलते !!"

बम्बई के राष्ट्रीय क्रिश्चियन दल ने विगत २६ वीं दिसम्बर को ब्लावाटस्की हॉल में एक बड़ी सभा की थी। उसमें श्रीयुत मुन्शी ने, जोकि इस सभा के सभापति थे, निम्न-लिखित भाषण दिया :—

आज मुझ ऐसे छोटे सत्याग्रही सिपाही को सभापति का आसन देकर, क्रिश्चियन जाति ने सत्याग्रह आन्दोलन को बहुत बड़ा आदर दिया है, परन्तु मैं यह स्वीकार करता हूँ, कि मैं इस महान अवसर पर सभापति का आसन ग्रहण करने के योग्य नहीं हूँ। संसार में ऐसे बहुत कम मनुष्य हैं, जो अपनी अद्भुत मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति द्वारा महात्मा ईसा के उस उपदेश को समझ सकते हैं, जिसके लिए उन्होंने अपना सारा जीवन व्यतीत किया और अन्त में प्राण तक दे दिए। पर जब मैं आज यह देख रहा हूँ, कि हमारे देश में एक अहिंसात्मक और सत्यमय राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा है, जब मैं यह देख रहा हूँ, कि अहिंसा की वेदी पर बाबू गेनू ऐसे वीर अपने प्राणों तक की बलि देने को तैयार हैं, तब मुझे यह प्रतीत होता है कि आज महात्मा ईसा की आत्मा ही स्वतः महात्मा गाँधी के नेतृत्व में उठे हुए इस सत्यमय आन्दोलन का रूप धारण करके आई है।

महात्मा ईसा

सैकड़ों वर्षों से संसार के महान पुरुष इस पृथ्वी पर सत्य का राज्य स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे इस पृथ्वी पर ईश्वरीय साम्राज्य स्थापन करने का प्रयत्न करते-करते थक गए, परन्तु उन्हें सफलता न हुई। इतने प्रयत्न होने पर भी आज संसार के राष्ट्र सत्ता तथा धन के लिए मरे जा रहे हैं, हर घड़ी युद्ध के शस्त्र बनाने में लगे हुए हैं। फिर राजनैतिक धूर्तता भी बढ़ती ही जा रही है? संसार के पुरुष तथा स्त्रियाँ इनके असत्यमय झूठे व्यवहारों के शिकार बन रहे हैं और इनके पापाचारों के बोझ के नीचे कराह रहे हैं। इन पापाचारियों को संसार के कई महात्माओं ने चुनौती दी है। उन्होंने कहा है कि तुम्हारे पाप का भण्डा एक रोज़ अवश्य फूटेगा। जब सत्य का सूर्य उदित होगा, तब तुम सब उल्लुओं की तरह भागते नज़र आओगे। यही सदुपदेश महात्मा ईसा ने अपने अनुयायियों को प्रदान किया था। यही उपदेश आज महात्मा गाँधी भारतवर्ष को और उसके ज़रिए सारे संसार को दे रहे हैं। वे संसार को अपने पाशविक विचारों को दबाने का तथा हृदय में सात्विक भावों का राज्य स्थापित करने का उपदेश दे रहे हैं। हम लोगों को हरदम यह ख़याल रखना चाहिए, कि वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन महज़ एक राजनैतिक आन्दोलन नहीं है। यह एक आध्यात्मिक आन्दोलन है। महात्मा गाँधी ने यह बात पहिले ही से बता दी थी। वे मनुष्यों के विचारों को एकदम बदल देने का प्रयत्न कर रहे हैं। यही महात्मा ईसा ने किया था; ईसा ने कहा था—"वे धन्य हैं जो सत्य को ग्रहण करने के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि वे ही स्वर्गीय राज्य के योग्य हैं।" महात्मा ईसा की तरह महात्मा गाँधी भी कहते हैं, कि "जो केवल तुम्हारे शरीर का नाश कर सकते हैं उनसे मत डरो, क्योंकि वे तुम्हारी आत्मा का नाश नहीं कर सकते।" और यदि आज महात्मा ईसा भारत में होते तो वे भी यरवदा जेल में बन्द पाए जाते।

ईसा के अपूर्व जीवन तथा उपदेश की तरह यह आन्दोलन भी सत्य पर स्थित है। सच्चा सत्याग्रही सत्य की रक्षा के लिए सारे दुःख, सारे कष्ट ख़ुशी से सहन करता है। इसमें कितने ज़बर्दस्त साहस, कितने दृढ़ निश्चय की आवश्यकता है। भारत आज सत्य पर स्थित है। अपनी शक्ति, अपनी एकता तथा स्वातन्त्र्य की सरसता दिखाने के लिए वह सब कष्ट सहने को तैयार है। वे मनुष्य, जिनके हृदय दुर्बल हैं, जिनकी निश्चयात्मक शक्ति कमज़ोर है, उसके इस महत्व पर ध्यान नहीं दे सकते, उसके इस महान सौन्दर्य को नहीं देख सकते। इस देश के बाबू गेनू तथा यतीन्द्रदास ऐसे वीरों ने उसके इस महत्व को देखा है और उसके इस सौन्दर्य का पान किया है। उन्होंने सिद्ध किया है, कि आज जो भारत के लिए मरता है वह जीवित है। इस आन्दोलन में बुज़दिल तथा डरपोक मनुष्यों के लिए स्थान नहीं है। युद्ध से डरने वाले लोगों के लिए जगह नहीं है। यहाँ उन लोगों के लिए स्थान नहीं है, जो सत्ता तथा नाम के पीछे दिवाने हैं। ऐसे मनुष्यों के लिए राउण्डटेबुल कॉन्फ्रेंस का द्वार खुला है। वे वहाँ जाकर चैन कर सकते हैं, और नाम कमा सकते हैं। हम लोगों के लिए तो एक साथ जेलों में जन्म बिताना ही सब से बड़ा गौरव है, एक साथ लाठियों से सिर फोड़वाना तथा देश के लिए शहीदों के ख़ून में अपना ख़ून मिला देना ही, सब से बड़ा आदर्श है। हमें तो सब से बड़ा गौरव इसमें है, कि हम कन्धे से कन्धा लगा कर इस सत्यमय आन्दोलन में भाग लें तथा सारे कष्टों को चुपचाप सहन करें। हमारी सब से बड़ी कामना यह है, कि हमारे इस आत्म-बलिदान से एक ऐसा ज़बर्दस्त प्रेम-बन्धन तैयार होवे, कि जो भारत को इतना शक्तिमान बना देवे कि न कोई इसके टुकड़े कर सके और न कोई इसे अपने वश में रख सके!

इस आन्दोलन के लिए जितना ही कष्ट सहन करना आवश्यक है, उतना ही अहिंसा के मार्ग पर दृढ़ रहना भी ज़रूरी है। उस वायु-मण्डल में, जहाँ कि हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा में दिया जाता है, आत्मा का पूर्ण विकास नहीं हो सकता। सत्य के लिए कष्ट भोगना और प्राण दे देना ही हमारा धर्म है। सत्य का नाश करना दूसरे दल का धर्म है, हमारा नहीं। कष्ट भोगने में तथा प्राण देने में ही हमारा गौरव है। हमें अपने प्यारे देश को स्वतन्त्र करने के लिए हज़ारों की संख्या में ख़ुशी से अपने प्राण गँवाने पड़ेंगे, लाखों को हाथ-पैर तुड़वाने पड़ेंगे और करोड़ों को पूर्ण विनाश सहन करना पड़ेगा। जो इस महान आदर्श की पूर्ति के लिए अपने प्राण न्योछावर करेगा, वही उसे पावेगा। परन्तु जो इसके लिए तैयार नहीं है, वह इस महान कार्य के योग्य नहीं है।

(शेष मैटर १८ व पृष्ठ के पहिले कॉलम के नीचे देखिए)

परिवर्तन

[श्री० प्रकाशदत्त जी, एम० ए०]

दीपकों का आलोक होते ही सन्ध्या जैसे खिल-खिला कर हँस पड़ी। मौलवी रौशनअली साहब कपड़े पहिन कर बाहर जाने के लिए तैयार हुए। इतने में ही उनकी धर्मपत्नी ज़ोहरा बेगम उनके सामने आ पहुँचीं। मुखड़े पर रुलाई थी, विरस स्वर में बोलीं—कहाँ जा रहे हो? जान पड़ता है, आज भी कोई मीटिङ्ग है। तुम्हें कितना मने करती हूँ, पर तुम मानते ही नहीं। देखती हूँ कि अब तुम्हें स्वराज्य के मशविरों के सिवा कोई काम ही नहीं रह गया है। ख़ुदा इन स्वराजियों को ग़ारत करे, इन्होंने न जाने कितनी सोने की गृहस्थियाँ ख़ाक में मिला दी हैं!

"ज़ोहरा! ख़ुदा के वास्ते ऐसा न कहा करो। हिन्दोस्तान हमारा मुल्क है। इसी चमन की मिट्टी से हमारा यह जिस्म बना है, और एक दिन इसी चमन की मिट्टी में यह जिस्म मिल जाने वाला है। इस मुल्क की ख़ातिर हमारे इतने फ़रायज़ हैं कि उनकी फ़ेहरिस्त कभी ख़तम नहीं हो सकती, शायद हमारी क़ुरबानी से भी वह फ़रायज़ अदा नहीं हो सकते। ज़ोहरा, क्या अपने इस उजड़े हुए बाग़ को देख कर तुम्हें कुछ भी तर्स नहीं आता?" मौलवी साहब के चेहरे पर मुस्कान थी और कण्ठ में करुणा।

"मैं तुम्हारी बातों की तसकीन करती हूँ। पर एक बात पूछती हूँ। आख़िर अङ्गरेज़ों से तुम लोगों की इतनी दुश्मनी क्यों है? तुम लोग उन्हें हिन्दोस्तान से निकाल बाहर करने के लिए क्यों इतने परेशान हो रहे हो?"

"ज़ोहरा! कहती क्या हो! तुमसे यह किसने कहा कि हम लोग अङ्गरेज़ों के दुश्मन हैं, या उन्हें हिन्दोस्तान से बाहर निकाल देना चाहते हैं? हम तो यह समझते हैं, कि दुनिया में अगर अङ्गरेज़ों के सब से ज़्यादा कोई दोस्त हैं तो वह हम हैं। और हम तो ख़्वाब में भी यह नहीं चाहते कि वह हिन्दोस्तान छोड़ कर चले जाएँ।"

"फिर इतना तूफ़ान किस लिए?"

"यही तो समझने की बात है। हम दुनिया को अपना यह दावा सही करके दिखलाना चाहते हैं कि दुनिया में अङ्गरेज़ के सब से बड़े दोस्त हमी हैं, और कोई नहीं। पर मौजूदा हालत में यह दावा फ़िज़ूल है। अभी हम ग़ुलाम हैं, और अङ्गरेज़ हमारे बादशाह।"

"तब तुम उनसे क्या चाहते हो?"

"यही कि वह अब हमें ग़ुलाम समझना छोड़ दें और यह समझने लगें, कि हम भी उन्हीं जैसे इन्सान हैं। वह हुकूमत के तर्ज़ को इस तरह से बदल दें कि ग़रीब हिन्दोस्तानी रोज़-रोज़ की मुसीबतों से निजात पाएँ और तरक़्क़ी के मैदान में आगे बढ़ सकें।"

"आख़िर हिन्दोस्तानियों को क्या-क्या तकलीफ़ें हैं?"

"ज़ोहरा! तकलीफ़ों की क्या पूछती हो! बेशुमार हैं, और उनके भार से सारा हिन्दोस्तान पिसा जा रहा है। हमारे दिए हुए टैक्स से ही हुकूमत का सारा कारोबार चल रहा है, पर उस कारोबार में हमारा कोई हक़ नहीं है, जैसे हम इस मुल्क के कोई नहीं हैं; यही वह बीमारी है, जिसने इस हरे-भरे मुल्क की नस-नस में से जान खींच ली है। तुम शहर से बाहर निकल कर देहात में जाओ, तो देखोगी कि बेशुमार ग़रीब लोग यतीम बच्चों की नाईं मोहताज हो रहे हैं, न उनके बदन पर सूत के तार हैं, न बेचारे दोनों वक़्त पेट भर खाना पाते हैं। एक नमक ही को लो, यह क़ुदरती चीज़ है, ग़रीब लोग थोड़ी सी मेहनत से—पैसे ख़र्च किए बिना ही इसे हासिल कर सकते हैं, पर नमक का यह सब ख़ज़ाना सरकार अपने पञ्जों में दबाए बैठी है। घास और जङ्गल को देखो, यह भी ख़ुदाई चीज़ें हैं। पर ग़रीब लोग अगर जङ्गल से सूखी लकड़ियाँ बटोर लें और भूख से तड़पते हुए जानवर उसमें उगी हुई घास पर मुँह मार दें तो यह सरकार की नज़र में बहुत बड़ा जुर्म है—सज़ा के क़ाबिल! उफ़! कितनी ज़्यादती है! ज़ोहरा, भला तुम्हीं बताओ, ऐसी-ऐसी ज़्यादतियाँ इन्सान कब तक बर्दाश्त कर सकता है?" मौलवी साहब की आँखों से जैसे चिनगारियाँ उड़ने लगीं, वाणी में जैसे छाती को फाड़ डालने वाला कम्प आ गया।

सुप्रसिद्ध नर्तक श्री० उदयशङ्कर की १८ वर्षीय फ़्रेञ्च-सहयोगिनी—मिली सिमकी

आपने भारतीय नृत्य-कला में अलौकिक उन्नति प्राप्त की है। जब आप भारतीय वेष-भूषा में भारतीय नृत्य करती हैं, तो स्वयं फ़्रान्स वालों तक को आपके भारतीय युवती होने का धोखा हो जाता है। इस चित्र में पाठक इन्हें भारतीय ढङ्ग से नाचते हुए देखेंगे।

परन्तु ज़ोहरा ने इस ओर ध्यान न देकर, कहा—सल्तनत अङ्गरेज़ों के हाथ में है। उनके बाज़ुओं में क़ूवत है। वह तुम्हारी बातें नहीं सुनेंगे।

मौलवी साहब प्रलय की हँसी जैसा अट्टहास करते हुए बोले—"यह तो हम आज पचास साल से समझ रहे हैं। पर अब ज़माना आ गया है, वह हमारी बातें सुनेंगे, दुनिया हमारी बातें सुनेगी। वह हमारी ज़बान बन्द करेंगे, पर हमारी आहें हमारी मुसीबतों का इज़हार करेंगी। वह हमें जेल में बन्द करेंगे, पर हमारी चाल हमारी मुसीबतों का इज़हार करेगी। वह हमारे सीने को सङ्गीनों से चाक करेंगे, पर हमारे ख़ून के क़तरे आसमान को फाड़ डालने वाली आवाज़ में हमारी मुसीबतों का इज़हार करेंगे। हमें अङ्गरेज़ों से लड़ना नहीं है, केवल उनके हाथ से मर कर अपने वाजिब हुक़ूक़ लेने हैं।" मौलवी साहब की वाणी में सत्य और आत्म-विश्वास का प्रवाह था। उनका मुखड़ा प्रदीप्त हो उठा। वह बोलते ही गए—"और हम करते ही क्या हैं, केवल अपने भाइयों से यही कहते हैं कि अपने देश का बना कपड़ा पहिनो—अपने देश की बनी हुई चीज़ें इस्तेमाल में लाओ। नशीली चीज़ों पर ठोकर मार दो, ताकि तुम्हारे पास

(१५वें पृष्ठ का शेषांश)

नहीं, इस नीति की स्थिरता के लिए वह अपनी सैनिक शक्ति इस दल को सौंपे हुए है। यदि आज इजिप्ट में ब्रिटिश सेना न होती तो जनता के विरुद्ध यह दल यह सब कार्य कदापि न कर सकता। यदि आज इजिप्ट के निवासियों को ब्रिटिश तोपों और गोलियों का डर न होता तो वे इतनी शान्ति के साथ अपने सारे अधिकार इस एकतन्त्रवादी घृणित दल के नेताओं के हाथ में न सौंप देते। पर उन्हें मालूम है कि आज इस दल का साथ सारा ब्रिटिश राज्य दे रहा है। इससे वे इसके विरुद्ध लड़ने में असमर्थ हैं। क्या फिर भी आशा की जावे कि उनकी प्रार्थना उस दूरस्थित द्वीप के बलशाली निवासियों तक पहुँच सकेगी। क्या इस सब वादाख़िलाफ़ी के बाद भी इजिप्ट के ग़रीब किसान यह आशा कर सकते हैं कि हमारे दयालु शासकों का हृदय किसी समय पसीजेगा।

* * *

चार पैसे तो बचें। क्या इसका नाम भी अङ्गरेज़ों से लड़ना है?"

पर ज़ोहरा ने, जैसे मौलवी साहब की बातें सुनी ही नहीं, बोलीं—कुछ भी हो, है यह अङ्गरेज़ों की मुख़ालफ़त ही। मुझे तुम्हारी बातें पसन्द नहीं। बैठे-बिठाए आफ़त मोल लेना कहाँ की अक़्लमन्दी है? स्वराज्य वालों ने तो यह क़स्द ही कर लिया है कि न ख़ुद ख़ामोश बैठेंगे, न दूसरों को बैठने देंगे। तुम्हें किस बात की कमी है, ख़ुदा का दिया सब कुछ है; फिर इन टण्टे-बखेड़ों में पड़ने की ज़रूरत? तुम्हारी बातें सुन कर मेरी तबीयत घबराने लगती है। ख़ुदा न करे, कहीं तुम गिरफ़्तार कर लिए गए, तो हमारा क्या होगा? इन नन्हें-नन्हें बच्चों की ख़बर कौन लेगा?

हाल ही में मैसूर में होने वाले अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महा-सम्मेलन के प्रधान—कविराज गङ्गानाथ सेन, एम० ए०, एल-एम० एस० (कलकत्ता)

ज़ोहरा का मुखड़ा उतर गया। आँखों में आँसू भर आए।

ज़ोहरा का उतरा हुआ चेहरा देखते ही मौलवी साहब के जोश पर जैसे हिम-वर्षा हो गई। ज़बर्दस्ती मुस्कुराहट को घसीट कर स्नेह-मिश्रित स्वर में बोले—ज़ोहरा! सारे मुल्क में आग लग चुकी है, अब हम चैन से नहीं रह सकते। जो सबकी गति होगी, वही हमारी। मुझे इन बातों का कोई ग़म नहीं, ग़म है तो केवल तुम्हारे उतरे हुए चेहरे का! मोहब्बत के यह मानी नहीं हैं, कि अगर मैं ठीक रास्ते पर चल रहा होऊँ, तो तुम मेरा पल्ला पकड़ कर मुझे पीछे खींचो। हाँ, अगर मैं ग़लत रास्ते पर जाता होऊँ तो दूसरी बात है। अच्छा, यह उदासी छोड़ो और एक बार मुस्कुरा दो। तुम्हारा मुस्कुराता हुआ चेहरा देख कर मेरी जान हरी हो जाती है, और तब गिरफ़्तारी की तो बात ही क्या, मैं झूमते हुए छुरी के नीचे भी गला रख सकता हूँ।

ज़ोहरा ने अपने धानी दुपट्टे के अञ्चल से नेत्रों के कोने पोंछ लिए और थोड़ा सा मुस्कुरा दिया।

मौलवी साहब कनखियों से उनकी ओर देखते हुए धीरे-धीरे बाहर निकल गए।

* * *

शहर के लोग एक तीव्र उत्कण्ठा के आवेग में तालाब के उस लम्बे-चौड़े घाट की ओर दौड़े जा रहे थे, जहाँ आए दिन सार्वजनिक सभाएँ हुआ करती हैं और जहाँ कर्त्तव्य की पुकार जल की लोल-लहरों पर नाचने लगती है। आज की सभा अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। गवर्नमेण्ट हाई-स्कूल के कुछ मनचले देश-भक्त विद्यार्थियों ने हाई-स्कूल के विशाल-भवन पर राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया था। जब हेडमास्टर साहब ने नाराज़ होकर, एक भङ्गी के हाथों राष्ट्रीय ध्वजा नीचे उतरवा दी और विद्यार्थियों को बुरी तरह डाँटा, तब बहुत से स्वाभिमानी विद्यार्थी स्कूल से बाहर निकल आए। शहर में क्षोभ की बाढ़ आ गई। कुछ समझदार लोगों ने इस बात की चेष्टा की कि किसी तरह मामला शान्त हो जाय, पर अधिकारी अपनी ज़िद रखना चाहते थे, विद्यार्थी राष्ट्रीय ध्वजा का सम्मान रत्ती भर भी घटाने के लिए प्रस्तुत न थे। आज की सभा का विचारणीय विषय यही था कि अब इस सम्बन्ध में नागरिकों और विद्यार्थियों का कर्त्तव्य क्या है?

वर्धा-निवासी सुविख्यात रेलवे-सत्याग्रही—श्री० पोपटलाल शाह, जिन पर ३ बार चलती हुई गाड़ी को चेन खींच कर रोकने का अभियोग चल चुका है। जब कभी गाड़ी में भीड़ के कारण मुसाफ़िरों को तकलीफ़ होती है, आप चेन खींच कर गाड़ी रोक देते हैं। तीसरे केस में आप छोड़ दिए गए हैं।

हज़ारों आदमियों की भीड़ थी, पर सभा का कार्य अब तक शुरू न हुआ था, केवल एक व्यक्ति की प्रतीक्षा हो रही थी, और वह व्यक्ति थे हमारे मौलवी रौशनअली साहब। मौलवी साहब शहर और ज़िले के नेताओं में सर्व-श्रेष्ठ समझे जाते हैं। वह एक मशहूर हकीम और अरबी, फ़ारसी तथा उर्दू के धुरन्धर पण्डित हैं। परन्तु उनके मुख्य गुण हैं—हृदय की सरलता, वाणी की मधुरता, मिलनसारी और अनन्य देश-भक्ति। जनता उन्हें हकीम की अपेक्षा देश-भक्त के रूप में ही अधिक पहचानती है। वह उन्हें आरम्भ से ही देश-भक्त के रूप में देखती आ रही है। लोगों ने कभी उनके या उनके बच्चों के शरीर पर विदेशी तार नहीं देखे।

नगरपरकार ताल्लुका (गुजरात) के देश-सेवक-मण्डल के प्राण—श्री० ए० जी० चैनानी। आप विद्या-प्रचारक सभा के भी प्रधान हैं।

असहयोग आन्दोलन में मौलवी साहब ने नगर और ज़िले के बच्चे-बच्चे को देश-प्रेम का पाठ पढ़ाने की चेष्टा की थी। उस समय, देश का काम करते हुए वह परिश्रम को परिश्रम, दिन को दिन और रात को रात नहीं समझते थे। असहयोग आन्दोलन के बाद जब देश में हिन्दू-मुस्लिम-विग्रह का तूफ़ान आया, और दोनों जातियों के बड़े-बड़े ज़िम्मेदार नेता निरन्तर विष-वमन करने लगे, तब मौलवी साहब अपने नगर और ज़िले में हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य दृढ़ बनाए रखने की चेष्टा करते थे। वह दोनों को बार-बार यही समझाते थे, कि तुम्हारे विग्रह में ही भारत का सर्वनाश और हुकूमत का स्वार्थ निवास करता है। फलतः दोनों जातियों में न गाली-गलौज हुआ और न उन्हें धींगा-मुश्ती करने का ही अवसर मिला। मौलवी साहब जनता के हृदय में बैठ गए। सभी उन पर विश्वास और प्यार करने लगे।

वर्तमान स्वाधीनता आन्दोलन आरम्भ होते ही मौलवी साहब की सिंह-गर्जना से नगर, ज़िले और प्रान्त के कोने-कोने काँप उठे। लोगों ने देखा कि वह युद्ध लड़ने के लिए हमें मौलवी साहब से बढ़ कर सिपहसालार नहीं मिल सकता। बस, वह नगर और ज़िला-काँग्रेस कमेटी के 'डिक्टेटर' बना दिए गए। उनका डिक्टेटर बनना था कि सम्पूर्ण ज़िले में एक नवीन प्राण-प्रतिष्ठा हो गई, वर्षों का काम दिनों में और दिनों का मिनटों में होने लगा। अस्तु—

थोड़ी ही देर में दो-चार मित्रों के साथ मौलवी साहब ने मुस्कुराते हुए सभा में प्रवेश किया। अपने प्यारे नेता को देखते ही सब लोग खड़े हो गए और उसके सम्मान में उन्होंने अपने हृदय की समस्त पुण्य-प्रेरणाएँ निछावर कर दीं। 'भारतमाता की जय, महात्मा गाँधी की जय, मौलवी साहब की जय' आदि की सम्मान-पूर्ण ध्वनियों से आसमान गूँज उठा। मौलवी साहब धीरे-धीरे चल कर मञ्च पर जा विराजे। सभा का कार्य आरम्भ हो गया।

कुछ नेताओं के भाषण हो जाने के बाद मौलवी साहब खड़े हुए। सम्पूर्ण सभा निस्तब्ध हो गई, हज़ारों

(१६वें पृष्ठ का शेषांश)

इसी आदर्श से प्रोत्साहित होकर महात्मा गाँधी तथा उनके अनुयायी इस महान कार्य में लगे हुए हैं और इसीसे वे विजयी भी होवेंगे। जो यह कहते हैं कि सत्याग्रह का उद्देश्य किसी जाति-विशेष या धर्म-विशेष की सहायता करना है, वे झूठे हैं; जो यह कहते हैं कि सत्याग्रह आन्दोलन केवल मज़दूरों या पूँजीपतियों का पक्षपाती है, वे ग़लती कर रहे हैं। जो मनुष्य सत्य तथा अहिंसा का व्रत धारण करता है, वह किसी तरह के भी अन्याय को नहीं देख सकता। प्रत्येक मनुष्य के जीवित रहने के, उन्नति प्राप्त करने के तथा अपने जीवन को स्वतन्त्रतापूर्वक चलाने के अधिकार की रक्षा करना ही सत्याग्रही का धर्म है। प्रत्येक देश की स्वतन्त्रता तथा उसकी उन्नति की रक्षा करना ही उसके जीवन का सब से बड़ा उद्देश्य है। किसी देश-विशेष की परतन्त्रता हो सम्पूर्ण मनुष्य जाति की उन्नति को रोक सकती है। स्वतन्त्रता ही सब दोषों को दूर करने वाली है। इसी भाव से हमें अपने कार्य में जुटे रहना चाहिए। हम संसार की बेड़ियाँ काटेंगे, हम अपने आत्म-बलिदान की अग्नि में सारे संसार को तपा कर उसके हिंसा, दमन तथा अन्याय रूपी सम्पूर्ण मल को जला देंगे। क्रिसमस के समय में यही हमारा सन्देश है।

* * *

नेत्र मौलवी साहब के प्रफुल्ल मुखड़े पर जा अटके। मौलवी साहब के भाषण में जादू हुआ करता है, उनकी जिह्वा से शब्द नहीं, तीर निकला करते हैं, जो सीधे जाकर श्रोताओं के हृदय छेद डालते हैं। सभा में सदा बहुत से लोग तो केवल मौलवी साहब के इसी जादू से मुग्ध होने के लिए आया करते हैं। झण्डे की महिमा और अन्य देशों के लोगों के झण्डा-प्रेम का वर्णन करते हुए मौलवी साहब ने विद्यार्थियों से कहा—"मेरे छोटे-छोटे भाइयो! हम लोगों से सलाह-मशविरा किए बग़ैर यह झगड़ा उठा कर तुमने सख़्त ग़लती की है। कॉङ्ग्रेस कमेटी की हरगिज़ यह मन्शा न थी, कि तुम लोग इस झगड़े में पड़ते। पर इसके लिए मैं तुम्हारी लानत-मलामत न करूँगा। हमें इस बात का फ़ख़्र है, कि तुम्हारे छोटे-छोटे कलेजों में इतनी जान है, तुम्हारे दिलों में मुल्क की मोहब्बत का इतना हौसला और अरमान है, और तुम अपने क़ौमी झण्डे की इज़्ज़त करना जानते हो। जब तुम्हारे हौसले इतने बढ़े-चढ़े हैं, तुम्हारे दिलों में ऐसे-ऐसे जज़्बात भरे हैं, तब हम तुम्हारा साथ देंगे। हर एक तालिब-इल्म से मेरा यही कहना है, कि जब तक हाई-स्कूल पर हमारा क़ौमी झण्डा न फहराया जाए, तब तक वह स्कूल के भीतर पैर रखने का भी ख़याल न करे।"

इसके बाद मौलवी साहब जनता से बोले—"और भाइयो, इस मामले में आपको हमारा और लड़कों का साथ देना पड़ेगा। इससे ज़्यादा और कुछ कहना फ़िज़ूल है, आप लोग ख़ुद अपने झण्डे की इज़्ज़त करना जानते हैं। हाँ, कुछ भाई ऐसे ज़रूर हैं, जो अब तक अपने मुल्क की और अपने झण्डे की इज़्ज़त करना नहीं जानते। उनसे मेरी यही इल्तजा है, कि वह अपने को हिन्दोस्तान से बाहर न समझें; इसमें केवल झण्डे

श्री० विडमन ए० अबाराहम

आप एक टैमिल छात्र हैं, जिनकी प्रतिभा से प्रसन्न होकर मद्रास विश्वविद्यालय ने आपको १,०००) रु० की थैली भेंट की है।

की ही नहीं, उनकी भी बेइज़्ज़ती है। उम्मीद तो यही है, कि वह हमसे जुदा न रहेंगे, फिर भी अगर वह अपने लड़कों को स्कूल भेजेंगे, तो हमें बुर्जे-लाचारी पिकेटिङ्ग करना पड़ेगा।"

इसी समय एक आवाज़ आई—"और पढ़ाई बन्द रहने से लड़कों का जो नुक़सान होगा, वह?"

मौलवी साहब ने जवाब दिया—"हमें उसकी परवाह नहीं। मैं समझता हूँ, कि थोड़े से पढ़ने के पेश्तर आप अपनी और अपने मुल्क की इज़्ज़त का ख़याल करेंगे। इज़्ज़त के लिए अपना ख़ून भी मानिन्द पानी के बहा देना पड़ता है, पढ़ने-लिखने की तो बात ही क्या। इस मामले में आपको उन व्यापारियों से सबक़ लेना चाहिए, जो आज मुल्क की ख़ातिर विलायती माल की बिक्री बन्द कर, करोड़ों का नुक़सान बर्दाश्त कर रहे हैं! फिर हम लड़कों का नुक़सान नहीं चाहते। ऐसी कोशिश की जायगी जिससे लड़कों का थोड़ा-बहुत पढ़ना-लिखना जारी रहे।"

लाट साहब को बड़े दिन में भी डाली न गई!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

वक़्त पर तेग़ सितमगर से सँभाली न गई!
सरे-मक़तल मेरी हसरत भी निकाली न गई!!
ग़म है क्या, ग़म को समझता हूँ ख़ुशी से बढ़ कर!
मेरे चेहरे की मुसीबत में बहाली न गई!!
क्या करें, हो गए मजबूर, कुछ ऐसे मिस्टर!
मिसे-लन्दन की कोई बात भी टाली न गई!!
सामने बैठ गया उनके झुकाए हुए सर!
किस लिए म्यान से तलवार निकाली न गई?
राय-साहब भी हुए, ख़ान-बहादुर भी हुए!
क्या मुबारक घड़ी आई थी, जो ख़ाली न गई!!
फिर भी समझे हैं, कि मिल जायगा उनसे सब कुछ!
न गई हाँ, न गई ख़ाम-ख़याली न गई!!
फूल फल सकते नहीं बाग़े-जहाँ में "बिस्मिल"
लाट साहब को बड़े दिन में भी डाली न गई!!

सहसा हथियार-बन्द पुलिस का एक दस्ता सभा के चारों ओर बिखर पड़ा। कई कॉन्स्टेबिलों को साथ लिए हुए चार पुलिस-ऑफ़िसर मञ्च की ओर बढ़े। उन्होंने मौलवी साहब को और उनके साथ ही अन्य तीन नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया। जहाँ जादू की वर्षा हो रही थी, वहाँ क्षोभ की उत्ताल तरङ्गें उठने लगीं। मौलवी साहब तथा अन्य बन्दी सज्जनों के सम्मान में अपना हृदय बिछाती हुई जनता पुलिस-दल के पीछे चल पड़ी। संसार में कितनी अस्थिरता है।

* * *

मौलवी साहब ने अगर ग़ौर से देखा होता, तो उन्हें मालूम हो जाता कि ज़ोहरा की उस मुस्कुराहट में वेदना का कैसा विराट संसार छिपा हुआ है, परन्तु उस समय वह कर्तव्य की धुन में इस प्रकार मस्त हो रहे थे कि उतनी बड़ी चीज़ न देख सके, और झूमते हुए बाहर निकल गए।

मौलवी साहब के पीठ फेरते ही ज़ोहरा के बड़े-बड़े नेत्रों से आँसू बाहर निकलने लगे—मानो हृदय की वेदना आँखों की राह बाहर निकल जाना चाहती हो। वह एक बड़े सरकारी ऑफ़िसर की बेटी हैं। उनके पिता मौलवी साहब के आचार-विचार से अपरिचित नहीं हैं, अतः वह मौलवी साहब को हमेशा राजनैतिक झगड़ों से दूर रहने के लिए लिखा करते हैं। परन्तु जब इतने से ही स्नेह-वत्सल हृदय को सन्तोष नहीं होता, तब वह कभी-कभी ज़ोहरा को भी ख़त में लिख दिया करते हैं, कि बेटी, ज़रा अक्खड़ मौलवी साहब पर नज़र रक्खा करो। ख़ुदा न करे, अगर कभी वह जेल भेज दिए गए, तो हम लोगों को बड़ी ज़िल्लत उठानी पड़ेगी। अगर वह शामिल न होंगे, तो स्वराज्य वालों का कुछ बनने-बिगड़ने वाला नहीं। हज़ारों-लाखों आदमी काम कर रहे हैं, एक रौशनअली के दूर रहने से कुछ हर्ज न होगा।

* * *

जेल! उफ़! जेल कैसी ख़ौफ़नाक चीज़ है। ज़ोहरा ने सुना था कि जेल दोज़ख़ का ही एक हिस्सा है। जेल में जाना और दोज़ख़ में जाना—दोनों के मानी एक ही हैं। ज़ोहरा को मालूम था, और अख़बार उन्हें रोज़-रोज़ बतलाया करते थे, कि आजकल सियासती मामलों में सड़ी-सड़ी सी बातों पर बड़े-बड़े आदमी जेल में भेज दिए जाते हैं। मौलवी साहब भी सियासती मामलों में शामिल रहते हैं। अगर कहीं वह भी जेल भेज दिए गए तो? यह विचार आते ही ज़ोहरा की आँखों के सामने अँधेरा छा जाता था, उनके प्राण इस तरह काँप उठते थे, जैसे छोटा सा बच्चा अपने सामने मास्टर की भयङ्कर मूर्ति और उसके लपलपाते बेत को देख कर काँप उठता है!

केवल इसी काल्पनिक भय के कारण ज़ोहरा बार-बार मौलवी साहब को राजनैतिक मामलों में पड़ने से रोका करती थीं। मौलवी साहब उनकी इस कमज़ोरी को जानते थे, पर प्रिया के सजल नेत्र देख कर कर्तव्य-पथ से पीछे हट जाना उन्होंने नहीं सीखा था। वह ख़ुद हँस कर, ज़ोहरा को हँसा-मुसकुरा कर अपने कार्य में व्यस्त हो जाते थे। आज जब मौलवी साहब ज़ोहरा को ज़बर्दस्ती हँसा कर बाहर चले गए, तब ज़ोहरा का नारी-सुलभ स्वाभिमान जाग्रत हो उठा। इतनी मग़रूरी—इतनी ख़ुदपरस्ती—जैसे मैं इनकी कोई नहीं हूँ—इन पर मेरा कुछ भी अख़्तियार नहीं है। परन्तु दूसरे ही क्षण जेल के ख़याल से वह काँप उठीं। "आह! मैं क्या करूँ?" कहती हुई वह रो पड़ीं।

बुढ़िया हमीदन अभी तक आँगन के एक कोने में बैठी हुई बर्तन मल रही थी। वह मौलवी साहब के घर की पुरानी दासी थी। उन्हीं के घर में उसकी जवानी बीती थी, उन्हीं के घर में उसके बाल सफ़ेद हुए

श्री० सी० बी० तारपोरवाला, बी० ए०, बी० एस-सी०; सी० ए० आई० बी० (लन्दन)

जो हैदराबाद स्टेट के अर्थ-विभाग के सहायक मन्त्री नियुक्त हुए हैं।

थे। वह विधवा थी, बाल-बच्चे उसके थे नहीं। मौलवी साहब का परिवार ही हमीदन का परिवार था। मौलवी साहब को ही वह अपना पुत्र समझती थी। मौलवी साहब का शैशव हमीदन की गोद में ही व्यतीत हुआ था। वह कहने को तो दासी थी, पर मौलवी साहब और ज़ोहरा पर उसका प्रभाव उसी प्रकार था, जैसा कि माता का अपने बच्चों पर होता है।

ज़ोहरा की सिसकियाँ सुन, वह उनके पास आ पहुँची। अपने दुपट्टे से उनके आँसू पोंछती हुई बोली—दुलहिन! मत रो! आजकल के लौंडे ऐसे ही होते हैं।

जो उन्हें अच्छा लगता है वही करते हैं। मैंने भी उसे कितना मने किया, पर वह माने तब न! जब वह मेरी नहीं सुनता, तो तेरी क्या सुनेगा! मत रो—रो-रोकर अपने जी को न जला।

ज़ोहरा और भी रोने लगी। बोली—अम्माँ! तुम नहीं जानतीं। वह बड़े ख़तरनाक रास्ते पर चल रहे हैं। वह चाहते हैं कि हुकूमत हिन्दोस्तानियों को भी उनके वाजिब हुक़ूक़ दे। इस बात से सरकार नाराज़ होती है। इसी बात पर उसने बड़े-बड़े लोगों को जेल में डाल दिया है। उनकी फ़िक्र से मेरा कलेजा जला जाता है—मैं कहाँ तक उन्हें समझाऊँ।

हमीदन बड़बड़ा कर बोली—बेवक़ूफ़ है बेवक़ूफ़। उस नालायक़ को कौन समझावे, कि तू क्या खाकर सरकार से लड़ेगा। मैंने तो अब उससे कुछ कहना-सुनना ही छोड़ दिया है। जो उसे अच्छा लगे, वही करे। किसी दिन रगड़े में आ जायगा, तो आप ठीक हो जायगा। पर तू अपने जी को क्यों जलाती है?

"अम्माँ! तुम मुल्क की ख़िदमत को ख़ुराफ़ात समझती हो—यह तुम्हारी ग़लती है।"

ज़ोहरा के कण्ठ में कम्पन और ओज था।

अभी इन लोगों में यह बातें हो ही रही थीं, कि हाँफते-हाँफते कल्लू वहाँ आ पहुँचा। वह घबराया हुआ था, आते ही बोला—हुज़ूर! ग़ज़ब हो गया! पुलिस सरकार को गिरफ़्तार कर ले गई। हज़ारों आदमी उनकी जय बोलते हुए, उनके पीछे गए हैं।

ज़ोहरा पर बिजली गिर पड़ी। वह एक चीख़ मार कर बेहोश हो गई।

*　　*　　*

सवेरा हुआ। शहर में ज़बर्दस्त हड़ताल थी। कुछ दिन चढ़ते ही हाई-स्कूल पर पिकेटिङ्ग करने की तैयारियाँ होने लगीं। नौ बजते-बजते एक विशाल दल हाई-स्कूल की ओर चल पड़ा। आगे-आगे राष्ट्रीय झण्डा लिए हुए बालिकाएँ और महिलाएँ थीं, उनके पीछे स्वयंसेवक और विद्यार्थी थे तथा उनके पीछे उत्तेजित तमाशबीनों की एक बहुत बड़ी भीड़ चल रही थी।

बम्बई के गिरगाँव पुलिस-कोर्ट का दृश्य

यह चित्र उस समय लिया गया था, जब कुछ राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को सज़ा की आज्ञा सुनाने के बाद पुलिस वाले जेल ले जा रहे थे। ऊपर के घेरे में पाठक बम्बई के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता श्री० मेहरअली तथा प्रोफ़ेसर जौहरी को खिड़की में से झाँकता हुआ देखेंगे।

ज़ोहरा ने आँसू पोंछ लिए। कहा—अम्माँ! तुम उन्हें बेवक़ूफ़ न कहा करो! वह काफ़ी अक़्लमन्द हैं। वह भी जानते हैं कि सरकार हमारे कामों से नाराज़ होती है, पर मुल्क के करोड़ों ग़रीबों की हालत देख कर, लाखों लोगों के दिलों में जो आग लग गई है, वही आग उनके कलेजे को भी जला रही है। फिर वह सरकार से लड़ते कहाँ हैं? केवल लोगों से यही कहते हैं, कि अपने मुल्क का बना कपड़ा पहनो, अपने मुल्क की बनी चीज़ें काम में लाओ, नशीली चीज़ों से नफ़रत करो।

ज़ोहरा का चेहरा चमक उठा। आवाज़ में तेज़ी आ गई।

बुढ़िया चमक उठी। बोली—तभी वह इतना बेहाथ हो गया है। जब तू ख़ुद इन बातों को अच्छा समझती है, तब रोती क्यों है? अगर तू इन बातों को बुरा समझती, इन बातों से नफ़रत करती, तो मेरा रौशन कभी इन ख़ुराफ़ाती बातों में न पड़ता!

मौलवी साहब का मकान रास्ते में ही पड़ता था। महिलाओं और स्वयंसेवकों की राय हुई, कि मौलवी साहब की बेगम साहबा को बधाई देनी चाहिए। बस, उनके मकान के सामने पहुँचते ही राष्ट्रीय आत्माओं का वह वीर दल रुक गया। विजय-ध्वनि से रह-रह कर आसमान काँपने लगा।

ज़ोहरा उस समय उदास बैठी थी। कोलाहल सुन कर उन्होंने हमीदन से कहा—अम्माँ, ज़रा बाहर जाकर तो देखो, यह कैसा शोरो-ग़ुल है।

हमीदन ने ज्योंही किवाड़ खोले, त्योंही घोर विजय-ध्वनि के साथ आँगन महिलाओं, स्वयंसेवकों और विद्यार्थियों से भर गया! तेज़ मुस्कराहट के साथ ज़ोहरा के चेहरे का एक-एक अणु उद्दीप्त होने लगा। वह आगत महिलाओं के स्वागतार्थ उठ कर खड़ी हो गई। दूसरे ही क्षण असंख्य पुष्प-वर्षा नगर के हृदय की ओर से उनका स्वागत कर रही थी। एक भद्र-महिला ने आगे बढ़ कर और हाथ जोड़ कर ज़ोहरा से कहा—आपके ज़रिए हमारे नगर ने नई ज़िन्दगी पाई है। आपके ज़रिए हमारे नगर की गौरव-वृद्धि हुई है। हम आपको किस मुँह से धन्यवाद दें, किस मुँह से आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करें। आपके दुःख में हमारा हृदय आपके साथ है।

ज़ोहरा ने मुस्करा कर कहा—इसमें अफ़सोस की क्या बात! शुक्रिया अदा करने की भी ज़रूरत नहीं। मुल्क के ख़ातिर इन्सान का जो फ़र्ज़ होना चाहिए, वही उन्होंने अदा किया है।

हमीदन एक ओर खड़ी-खड़ी बड़बड़ा रही थी। उसकी समझ में नहीं आता था, कि यह सब क्या हो रहा है। इसी समय स्वयंसेवकों की ओर से आवाज़ आई—"हम भी अपनी माता का दर्शन करेंगे।" ज़ोहरा ने महिलाओं से कहा—"आप लोग मिहरबानी कर उन लोगों को आगे आने दीजिए।"

हमीदन का मुँह तमतमा उठा। वह बिगड़ कर बोली—"तेरे सामने ग़ैर-मर्द आएँगे?" ज़ोहरा ने मुस्कुरा कर कहा—"नहीं, वह मेरे बच्चे हैं। बच्चों के सामने..."

ज़ोहरा की बात अभी पूरी भी न होने पाई थी, कि बीसों स्वयंसेवक और विद्यार्थी 'माता की जय' करते हुए ज़ोहरा के चरणों में लेट गए। ज़ोहरा के नेत्रों से आँसू बहने लगे, जैसे हृदय की समस्त शुभ्र आकांक्षाएँ आशीर्वाद-रूप से उन बच्चों पर बरस पड़ीं। स्वयंसेवकों ने हाथ जोड़ कर कहा—"माँ, तुम्हारा आशीर्वाद पाकर, हमारा बल सौगुना बढ़ गया है। अब हम लोगों को ऐसा आशीर्वाद और दो, कि हम भी अपने पूज्य मौलवी साहब का अनुकरण कर सकें।"

ज़ोहरा ने हमीदन से कहा—"अम्माँ! तुम बच्चों को सँभाले रहना, मैं इन लड़कों के साथ जाऊँगी।" हमीदन रोकर बोली—"बेटी, तुझे क्या हो गया है! क्या तू पर्दा तोड़ कर बाहर जाएगी? या ख़ुदा! यह कहाँ का क़हर तूने हम ग़रीबों पर पटक दिया!"

ज़ोहरा के नेत्रों से भी अश्रुधारा बहने लगी। उन्होंने हमीदन को जवाब दिया—अम्माँ! रोओ नहीं! आज मुझ पर ही नहीं, सारे मुल्क पर यह ख़ुदाई क़हर बरस रहा है। वह अपने भाइयों को नसीहत की बातें सिखलाने के क़ुसूर में चोर-डाकुओं की नाईं पकड़ लिए गए हैं। वही मेरी इज़्ज़त और अस्मत हैं। जब वही मुझसे छीन लिए गए, तब मेरा पर्दा कहाँ रहा? जब शरीफ़ज़ादे जेलों में जा रहे हैं, तब शरीफ़ज़ादियाँ कैसे पर्दे में रह सकती हैं?

इसके बाद ज़ोहरा एक राष्ट्रीय झण्डा लेकर बाहर निकल गई। संसार में कितनी अस्थिरता है। अस्थिरता परिवर्तन की जननी और परिवर्तन नव-जीवन का उत्पादक है, इसमें भला कौन सन्देह करेगा?

*　　*　　*

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

वर्धा के ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री—श्री० बलवन्त-राव पिङ्गारकर, जो हाल ही में ४ मास का कठिन कारावास-दण्ड भुगत कर छूटे हैं।

बगलकोट (करनाटक) स्त्री-सेविका-सङ्घ की नेत्री—कुमारी सीताबाई बलबल्ली, जो हाल ही में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण गिरफ़्तार हुई हैं।

कराद (सूरत) के ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान—श्री० पन्डुअन्ना शिराल्कर, जिनकी गिरफ़्तारी बम्बई-हाईकोर्ट ने क़ानून के विरुद्ध बतलाया था, आप हाल ही में जेल से रिहा हुए हैं।

श्रीमती रानी विद्यादेवी

(आपका विस्तृत परिचय अन्यत्र देखिए)

कोयम्बटूर कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिक्टेटर'—श्री० वेलप्पा नायडू, जो हाल ही में पकड़े गए हैं।

कराची की 'डिक्टेटर'

श्रीमती कीकीबेन छबीलदास

श्री० सी० ए० अय्यामुथू

आप दक्षिण-भारत में स्वदेशी का प्रचार कर रहे हैं।

सभ्यता, शान्ति और क़ानून के नाम पर

[विस्तृत परिचय नम्बर के हिसाब से

चित्र-नम्बर ८

चित्र-नम्बर १४

चित्र-नम्बर ५

चित्र-नम्बर १०

चित्र-नम्बर ११

चित्र-नम्बर ६

विभिन्न देशों में प्राण-दण्ड के भिन्न-भिन्न तरीके

[अन्यत्र प्रकाशित लेख में देखिए]

चित्र-नम्बर १२

चित्र-नम्बर २

चित्र-नम्बर १३

चित्र-नम्बर १

चित्र-नम्बर ६

चित्र-नम्बर ७

लखनऊ-स्कूल के कुछ प्रतिभाशाली कवि

मौलाना "हसरत" मोहानी

नहीं आती, तो याद उनकी महीनों तक नहीं आती,
मगर जब याद आते हैं, तो अक्सर याद आते हैं !
कौन उस निगहे-नाज़ के क़ाबू में नहीं है,
फिर दिल की ख़ता क्या ? जो पहलू में नहीं है !

बैठे हैं उन पे सब निसार किए;
दिल से कुछ काम है, न जी से ग़रज़ !
कुछ नहीं जानते वफ़ा व जफ़ा !
जिनको है आपकी ख़ुशी से ग़रज़ !

—"हसरत"

एक ज़माना सुन रहा है, फिर 'कोई' सुनता नहीं,
किस क़दर ख़ामोश है, दुनिया मेरे फ़रयाद की !
दिल का हर एक ज़र्रा है, आलमे-इन्तशार में,
जाना पड़ा कहाँ-कहाँ आपके इन्तज़ार में !

—"बहार" लखनवी

जनाब "बहार" लखनवी

वतन का ज़र्रा-ज़र्रा
जाने वालों से यह कहता है
जहाँ तक देख सकते हो,
ठहर कर देखते जाओ !

—"शौकत" थानवी

जनाब "शौकत" थानवी

जिगर में दर्द है, और
दर्द में है एक कशिश-पिनहा
खिंचे आते हैं दोनों हाथ—
दिल पर, देखते जाओ !!

—"शौकत" थानवी

जनाब "वस्ल" लखनवी

हाय जवानी दीवानी कैसी ज़ालिम होती है,
जाकर दुख दे जाती है, आकर काँटे बोती है !
मेरी तुम्हारी हालत में, फ़र्क़ इतना है ग़ौर करो !।
तुम पर दुनिया हँसती है, मुझको दुनिया रोती है !!

—"वस्ल" लखनवी

हज़रत "रयाज़" ख़ैराबादी

लौ दिल का दाग़ दे उठे, ऐसा न कीजिए;
है डर की बात, आइना देखा न कीजिए !
वह क्या हमसे ऐसी बुराई हुई है !
कि दुश्मन हमारी .ख़ुदाई हुई है ?

—"रयाज़" ख़ैराबादी

जनाब "अज़ीज़" लखनवी

कोई दुनिया की क़ूवत अब मिटा सकती नहीं तुझको;
ज़मीने-दिल ! तुझे हम इस तरह आबाद करते हैं !
मर गया बीमारे-उल्फ़त उनसे इतना कह के बस—
जाइए, अब आपसे कोई गिला बाक़ी नहीं !!

—"अज़ीज़" लखनवी

केसर की क्यारी

साक़ी तो मुझको चाट लगा कर अलग हुआ, धो-धो के पी रहा हूँ प्याला शराब का !
पीरी में सब को रञ्ज हुआ इनक़िलाब का, मैंने किया शबाब में मातम शबाब का !

चरचा है उनके घर में मेरे इज़्तिराब[1] का,
देखा सलूक़ इस दिले ख़ाना-ख़राब का !
यह बात है बहारे-चमन ही के वास्ते,
आता नहीं पलट के, ज़माना शबाब का !
साक़ी तो मुझको चाट लगा कर अलग हुआ,
धो-धो के पी रहा हूँ, प्याला शराब का !
मैं एक सवाल करके, पशेमान[2] हो गया,
लच्छा बँधा हुआ है हज़ारों जवाब का !
उट्ठा है ख़्वाबे-नाज़ से, कोई जो दिन-चढ़े,
चमका हुआ है आज नसीब आफ़ताब का !
रोज़ा रखें, निमाज़ पढ़ें, हज अदा करें;
अल्लाह ! यह सवाब भी है, किस अज़ाब का !
जब मैं करूँ सवाल तो, कहते हैं चुप रहो !
क्या बात है ? जवाब नहीं इस जवाब का !
ख़ुशबू वही, वही है नज़ाकत, वही है रङ्ग,
माशूक़ क्या है, फूल है तू भी गुलाब का !

—महाकवि "दाग़" देहलवी

पीरी[3] में सब को रञ्ज हुआ इनक़िलाब[4] का,
मैंने किया शबाब में मातम शबाब[5] का !
इतने गुनाह मैंने किए, इस ख़याल से,
लेना था जायज़ा करमे बे-हिसाब का !
दुनिया से बे-सबातिए[6] दुनिया को पूछिए,
सुनिए ज़बाने मौज[7] से, क़िस्सा हबाब[8] का !

—"नूह" नारवी

मैं और जलवागाह तेरी ऐ ख़ुशनसीब[9] !
ज़र्रे को आज रुतबा मिला, आफ़ताब का !
आलम में हम तो वक़्फ़े ग़मोयास ही रहे,
चरचा बहुत सुना किए, गो इनक़िलाब का !

—"महरूम" लाहौरी

वायज़[10] दिखा रहा है, यह जन्नत का डर किसे ?
आलम मेरी नज़र में है, दौरे-शबाब का !
है अब पयामे[11] मौत की हर वक़्त आरज़ू,
हर ज़र्रा मुन्तिज़र[12] है मेरा, इनक़िलाब का !

—"शर्मा" मालारवी

१—बेचैनी २—लज्जा ३—बुढ़ापा ४—परिवर्तन ५—जवानी ६—न ठहरने वाला ७—लहर ८—पानी का बुलबुला ९—अच्छी क़िस्मत वाला १०—नसीहत करने वाला ११—सन्देश १२—राह जोहना।

मैं, और मेरे हाथ में साग़र शराब का,
कितना बड़ा सबूत है, यह इनक़िलाब का !
बदले न बदले रङ्गे-सितम वह जफ़ाशआर[13],
रुकना मुहाल[14] है, मगर अब इनक़िलाब का !

—"आज़ार" जालन्धरी

सोज़े शबे फ़िराक़ है, आलम अज़ाब का,
दोज़ख़ है एक नाम, मेरे इज़्तिराब का !
कहते हैं वह शिकायते दर्दे-फ़िराक़ पर,
क्यों सब्र नाम रखते नहीं, इज़्तिराब का !

—"अरमान" देहलवी

तसवीर उनकी सारे मुरक़्क़े[15] की जान है,
गोया चमन में फूल खिला है गुलाब का !
मुद्दत हुई, वही है ज़माने का इनक़िलाब,
नक़शा खिंचा हुआ है, मेरे इज़्तिराब का !
सहने-चमन में ज़िक्र न कर अन्दलीब[16] को,
ऐ बाग़बान ख़ून है, हलका गुलाब का !

—"जलील" मानिकपुरी

आज़ादियों की [17]दहर में अल्लाह रे धूम-धाम !
फीका है रङ्ग सर्व के आगे गुलाब का !!

—"मुनौअर" लखनवी

सुनता हूँ, आज ग़ैब से आवाज़े-इनक़िलाब,
लेता हूँ ज़र्रे-ज़र्रे से [18]दर्स इनक़िलाब का !
मुझको नहीं है ख़ौफ़ ज़रा उनकी ज़ात से,
और उनको डर नहीं, ज़रा रोज़े-[19]हिसाब का !

—"दीनानाथ" लाहौरी

पीरी को है क़याम, कि आकर न जायगी,
था इनक़िलाब के लिए, आलम शबाब का !

—"अमरसिंह" लाहौरी

तेरी सितमगरी, मेरी मज़लूमे-बेकसी,
दोनों बनेंगी मिल के वजूद इनक़िलाब का !

—"अज़हर" अमृतसरी

पिनहाँ[20] नज़र, नज़र में है रङ्ग इनक़िलाब का,
नक़शा बदल गया है, जहाने-ख़राब का !

—"रौनक़" देहलवी

१३—ज़ालिम १४—मुशकिल १५—साँचा १६—बुलबुल १७—संसार १८—सबक़ १९—क़यामत का दिन २०—छुपा हुआ।

फन्दे में है [21]नसीम के जोशे बहारे-गुल,
पकड़ा गया है, चोर किसी के शबाब का !

—"क़ैसीम" बुलन्दशहरी

पुर-जोश गो बहुत था, ज़माना शबाब का,
लेकिन खुला यह अब, कि फ़िसाना था ख़्वाब का !
ऐ [22]अब्र माहताब को परदे में ढाँक ले,
जलता है [23]मैकदे में चराग़ आफ़ताब का !

—"अज़हर" लाहौरी

ऐ आफ़ताब अपनी [24]शुआओं को थाम ले,
मैं तो जला हुआ हूँ, किसी आफ़ताब का !

—"अख़्तर" देहलवी

कहता है रङ्ग फूट के जोशे-शबाब का,
ज़ेरे नक़ाब फूल खिला है गुलाब का !
तसकीन से, जिगर की तड़प और बढ़ गई,
सच है, कोई इलाज नहीं इज़्तिराब का !
छेड़ेंगे उनको दावरे [25]महशर के सामने,
कुछ देर लुत्फ़ होगा, सवालो-जवाब का !

—"जोश" मुज़फ़्फ़रपुरी

क़ुदरत के कारख़ाने में दख़ले-सबब नहीं,
बे-तेल जल रहा है, चराग़ आफ़ताब का !

—"तसलीम" लखनवी

दिल ख़ूँ है, हिज्रे-यार में रञ्ज है, ज़ख़्म-ज़ख़्म,
[26]मायूसियों में रङ्ग भरा है शबाब का !

—"शैदा" देहलवी

झगड़ा लगाया उसने सवालो-जवाब का,
आलम बदल गया, दिले-नाकामयाब का !
साक़ी मनाऊँ मैं भी, तेरे मैकदे की ख़ैर,
मिल जाय, मुझको एक प्याला शराब का !
तारे करेंगे क्या रुख़े-रौशन से [27]सरकशी,
झुकता है तेरे सामने, सर आफ़ताब का !
उम्मीद पर जो [28]यास मेरी ग़ालिब आ गई,
नक़शा बदल गया, दिले पुर इज़्तिराब का !
मशहूर हूँ जहान में "बिस्मिल" के [29]नाम से,
कुशता हूँ मैं किसी निगहे-बर्क़ताब का !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२१—हवा २२—बादल २३—शराबख़ाना २४—किरनें २५—प्रलय २६—निराशाएँ २७—सर उठाना २८—निराशा २९—बिजली की-सी चमक।

ईरान का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

ज़मीने-चमन गुल खिलाती है क्या-क्या, बदलता है रङ्ग आसमाँ कैसे-कैसे !
न गोरे सिकन्दर, न है क़ब्रे दारा, मिटे नामियों के निशाँ कैसे-कैसे !!

संसार-चक्र के उलट-फेर तथा उत्थान और पतन के करिश्मे ईरान ने भी ख़ूब ही देखे हैं। एक दिन वह संसार का सभ्य-शिरोमणि देश था। उसके डङ्के से ज़मीन-आसमान गूँज उठते थे। भारत से लेकर एशिया के अन्तिम छोर तक ईरान की सभ्यता की धाक थी। न्याय-निपुण ख़लीफ़ा हारूँरशीद की जन्मभूमि होने का गौरव उसे प्राप्त था। वहीं वह क़ारूँ पैदा हुआ था, जो यक्षराज कुबेर की तरह धनवान था और जिसके ख़ज़ाने की चाबियाँ, कहते हैं, हज़ारों (?) ऊँटों पर लदा करती थीं। ईरान की सभ्यता का इतिहास, उसका प्राचीन साहित्य, महाकवि हाफ़िज़, फ़िरदौसी, शेख़-सादी और उमर ख़य्याम का ललित काव्य-सौरभ आज भी साहित्यिकों तथा इतिहास-प्रेमियों के दिलों में अपूर्व आनन्द का सञ्चार कर देता है। ईरान के गुलो-बुलबुल की हृदयग्राहिणी कहानी, बुतों की बेनियाज़िया, लैला और मजनूँ की प्रेम-कथा, ज़ुलेख़ा के इश्क़ की दास्तान ; ईरान की अलौकिक सौन्दर्य-सम्पदा, उसकी शिक्षा-दीक्षा, धर्म और शिल्प-वाणिज्य का इतिहास आज भी हमें आश्चर्य-चकित कर डालता है। ईरान उस समय सभ्य और स्वतन्त्र था। वे ईरान के उत्थान के दिन थे।

इसके बाद पतन के दिन आए। ईरान की वह प्राचीन शोभा-सम्पद काल के गाल में समा गई। उसका समस्त विभव, शिल्प-वाणिज्य, और कला-कौशल नष्ट-भ्रष्ट हो गया। भारत की तरह वह भी पाश्चात्य सभ्यता का शिकार बन कर अपना सब कुछ खो बैठा! इतने में रज़ाख़ाँ पहलवी का जन्म हुआ और उसने अपने अध्यवसाय और परिश्रम से ईरान की रक्षा की।

कहते हैं, किसी समय ईरान में 'ईरज' और 'तूरज' नाम के दो राजे रहते थे और अपने नामों के अनुसार इन्होंने 'ईरान' और 'तूरान' नाम के दो राज्यों की स्थापना की थी। परन्तु कुछ इतिहासकार कहते हैं कि 'आर्य' शब्द से भी ईरान का सम्बन्ध है। बादशाह होशङ्ग के पुत्र 'पारस' के नाम से इसका दूसरा नाम 'फ़ारिस' भी पड़ गया। अस्तु।

ईरान के उत्तर की ओर कास्पियन सागर, पश्चिम में तुर्किस्तान, दक्षिण में उमान और फ़ारिस की खाड़ियाँ हैं, पूर्व में बिलोचिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान तथा पश्चिम में एशियाई रूम हैं। कुछ दिन पहले गुर्जि-स्तान, आर्मीनिया और कुर्दिस्तान के कुछ हिस्से भी ईरान में शामिल थे, परन्तु आजकल उससे अलग हो गए हैं। ईरान की भूमि उपजाऊ है। समस्त देश की पञ्चमांश भूमि पर खेती-बारी होती है। सिंचाई के काम के लिए नहरें हैं, जिन्हें वहाँ वाले 'क़नात' कहते हैं। ख़रबूज़े और अङ्गूर यहाँ ख़ूब होते हैं। यहाँ की खानों से फ़ीरोज़ा, गन्धक और नमक निकलता है। ईरान के कई पर्वतों से शिलाजीत की तरह एक प्रकार का तेल टपकता है, जिसे 'मोमयाई' कहते हैं। यह शिलाजीत ही की तरह कई रोगों की दवा है। बूशहर के पास मिट्टी के तेल का भी स्रोत है। तेहरान ईरान की राज-धानी और प्रधान नगर है। प्राचीन काल में स्फ़हान यहाँ का प्रसिद्ध नगर और राजधानी था। हमदान हकीम बूअली सीना की, तूस फ़िरदौसी की, शीराज़ शेख़-सादी की और बूशहर प्रसिद्ध ईरानी पहलवान रुस्तम की जन्मभूमि है। यज़्द में आज भी अग्निपूजक पारसी मौजूद हैं। मशहद शीया मुसलमानों का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। इस्तख़र के खँडहरों में एक मकान है, जिसे 'तख़्ते-जमशेद' कहते हैं। इसका दूसरा नाम 'चेहल-मीनार' भी है। वहाँ सङ्गमर्मर पर खुदाई का काम बहुत बढ़िया बना है। कहते हैं, एक बार शराब के नशे में सिकन्दर ने इसे फुँकवा दिया था, नहीं तो इसकी शोभा आज भी अपूर्व होती। ईरान में प्रधानतः ईरानी, तुर्क, यहूदी, कुर्द, अर्मन और तुर्कमान जाति के लोगों का निवास है। इस्लाम-धर्म के प्रभुत्व-विस्तार से पहले ईरानियों का वेश, भाषा और सभ्यता भी आर्यों के समान थी। वे पुरानी लिपि भी हमारी देवनागरी के समान ही है।

ईसा के पूर्व छठीं शताब्दी में ईरान एसिरियनों के अधीन था। उस समय वहाँ एक वीर पुरुष का आवि-र्भाव हुआ। उसका नाम 'साइरस' था।

साइरस स्वदेश-प्रेमी था। देश की पराधीनता उसे अच्छी नहीं लगती थी। उसने अपने देशवासियों को जाग्रत किया। परन्तु उसे सफलता नहीं प्राप्त हुई। देश अविद्या के अन्धकार में भटक रहा था। स्वतन्त्रता का महत्व हृदयङ्गम करना उसके लिए मुश्किल था। इधर साइरस भी उन्हें खुल्लमखुल्ला राजद्रोह के लिए उभाड़ नहीं सकता था, इसलिए राजा एस्टिया, जिसके हाथ उसने अपने को बेंच दिया—उसका ज़रख़रीद ग़ुलाम बन गया।

एस्टिया के राज-दरबार में रह कर साइरस ने बड़े मनोयोग के साथ विदेशियों की रीति-नीति तथा उनकी सभ्यता का अध्ययन किया, साथ ही उनकी भीतरी कमज़ोरियों का भी अनुभव किया। इसके बाद उनके धनबल, बाहुबल और नीति-ज्ञान का भी पता लगाया। इसके साथ ही राजद्रोह और देशभक्ति का भी प्रचार आरम्भ कर दिया। राज-दरबार का आदमी होने के कारण किसी को उसकी नीयत पर सन्देह करने का मौक़ा नहीं मिलता था। राज-दरबार में भी उसका यथेष्ट सम्मान था। राजा स्वयं उसे अपना शुभचिन्तक समझते थे। अगर कोई राज-कर्मचारी उस पर सन्देह करता और उसकी शिकायत राजा के कानों तक पहुँच जाती, तो वह उन्हें समझा देता कि मैं जो कुछ करता हूँ, केवल राज्य की भलाई के लिए ही करता हूँ। राजा को उसकी बातों पर विश्वास हो जाता और शिकायत करने वाले को मुँह की खानी पड़ जाती।

अन्त में एक दिन भीषण दावानल की भाँति राज-द्रोह की आग सारे देश में फैल गई। सुअवसर देख कर वीर साइरस ने खुल्लमखुल्ला राजद्रोह का झण्डा ऊँचा कर दिया। राजशक्ति ने विद्रोहियों को कुचल डालने की ख़ूब चेष्टाएँ कीं। हज़ारों देशभक्त शूली पर चढ़ा दिए गए। हज़ारों निर्दोष-निरीह कुपित राजसत्ता के शिकार बन गए। परन्तु अन्त में विजय-श्री राजद्रोहियों को प्राप्त हुई। वीरवर साइरस के स्वयं-सेवकों ने विदेशियों को मार भगाया। साइरस ने स्वाधीनता की घोषणा की। उसका आत्मत्याग सार्थक हुआ।

इसके बाद इस्लाम-धर्म के उत्थान तक किसी विदेशी शक्ति ने ईरान की ओर नज़र नहीं उठाया। अन्त में हज़रत मुहम्मद का आविर्भाव हुआ। अरबों ने ईरान पर चढ़ाई कर दी। ईरान की धार्मिक स्वतन्त्रता सदा के लिए छिन गई। उसे बाध्य होकर इस्लाम-धर्म स्वीकार करना पड़ा। अग्नि-पूजकों को मुसलमान बनाने के लिए उन पर भीषण अत्याचार हुए। धर्म और ईश्वर के नाम पर ख़ून की नदियाँ बह गईं। परम दयालु, समदर्शी (!!!) अल्लाहताला के हुक्म से 'काफ़िरों' के रक्त से धरित्री का आँचल लाल हो गया! जान जाने के भय से ईरानियों ने अपना पैतृक धर्म छोड़ कर इस्लाम के रक्त-रञ्जित दामन में पनाह ली और कुछ कट्टर धर्मभीरु अपनी प्यारी जन्मभूमि को सदा के लिए 'अलविदा' कह कर भारत की शरण में चले आए! तब से आज तक ईरान पर इस्लाम का अखण्ड प्रताप मौजूद है। इस्लाम ने उसकी सूरत ही बदल दी। ईरान का आर्यत्व और उसकी प्राचीन गौरव-गरिमा केवल इतिहास की सामग्री रह गई है।

विगत अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्त में यूरोपियन जातियों ने ईरान को अपना राजनीतिक क्रीड़ा-क्षेत्र बनाया, साथ-साथ भौगोलिक अवस्थान के कारण उसका महत्त्व भी अधिक बढ़ गया। इसलिए एक साथ ही कई यूरोपियन जातियों की लोलुप दृष्टि ईरान पर पड़ी। जिस समय का ज़िक्र हम कर रहे हैं, उस समय ईरान के तख़्त पर फ़तहअली शाह नाम का एक बाद-शाह था। राजनीतिक अपटुता के कारण उसे गोरों के हाथ का खिलौना बन जाना पड़ा। गोरों के पारस्परिक स्वार्थ-सङ्घर्ष के कारण ईरान की अवस्था बड़ी ही विचित्र हो गई। इतिहास-पण्डितों का कथन है कि दूरदर्शी सम्राट नेपोलियन की साम्राज्य-गठन प्रतिभा के कारण ही पाश्चात्य जातियों की दृष्टि में ईरान का महत्त्व बढ़ गया। नेपोलियन की इच्छा, ब्रिटिश साम्राज्य की प्रधान शक्ति भारत को हस्तगत करने की थी, इसलिए वह अफ़ग़ा-निस्तान के अमीर को भारत पर चढ़ाई करने के लिए उत्तेजित करने लगा। ठीक उसी समय लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह तथा कतिपय हिन्दू-नरेश अफ़ग़ा-निस्तान से मिल कर अङ्गरेज़ों के विरुद्ध साज़िश करने में लगे थे। चतुर अङ्गरेज़ इस साज़िश का हाल जान गए और, इसे विफल कर डालने की इच्छा से उनके ईरानी रेज़ीडेण्ट ने फ़तहअली शाह को अफ़ग़ा-निस्तान के ख़िलाफ़ उभाड़ा। साथ ही शाह से प्रतिज्ञा करा ली गई कि फ़्रान्स को ईरान से दूर ही रखना होगा, अफ़ग़ानिस्तान और ईरान में मित्रता न हो सकेगी और ब्रिटिश वाणिज्य के लिए ईरान में काफ़ी सुविधा कर दी जाएगी।

शाह ने अङ्गरेज़ों की उपर्युक्त शर्तें स्वीकार कर लीं। परन्तु अधिक दिनों तक उनका निर्वाह न कर सके। सन् १८०४ में, जार्जिया नामक स्थान के लिए ईरान और रूस में झगड़ा छिड़ा तो अङ्गरेज़ तटस्थ रहे, परन्तु फ़्रान्स ने शाह की सहायता की। इसलिए वह अङ्गरेज़ों

को छोड़ कर फ़्रान्स के मित्र बन गए। सन् १८०७ में फ़्रान्स और ईरान में एक सन्धि हुई। निश्चय हुआ कि फ़्रान्स और ईरान मिल कर रूस का विरोध करेंगे। फ़्रान्स के एक रण-पण्डित महोदय ईरानी सिपाहियों को सामरिक शिक्षा प्रदान करने के लिए ईरान आए। इसी समय से ईरान के राजनीतिक रङ्ग-मञ्च पर नित्य नए पट-परिवर्त्तन होने लगे। यूरोपियनों ने ईरानियों के दिलों में कितनी ही नवीन आशाओं का सञ्चार किया। इस समय ईरान की विचित्र दशा थी, वह अपने को भूल कर सम्पूर्ण रूप से यूरोपियनों के हाथ का खिलौना बन गया था। ब्रिटेन ईरान को अपनी मुट्ठी में करने का मौक़ा ताक रहा था और फ़्रान्स उसे अपनी मुट्ठी में कस रहा था। इसी खींचातानी में सात वर्ष बीत गए। सन् १८१७ में अङ्गरेज़ों ने ईरान को पन्द्रह लाख रुपए वार्षिक कर देना स्वीकार किया और बदले में उससे प्रतिज्ञा कराई गई कि वह अपने देश में किसी भी गोरी जाति को अपनी सामरिक शक्ति न बढ़ाने देगा।

इसके बाद सन् १८२५ ईस्वी में रूस ने ईरान का गोकचा नामक स्थान छीन लिया। ईरान और रूस में भयङ्कर समर छिड़ा और तीन वर्षों तक चलता रहा। इस संग्राम में ईरान को भयङ्कर रूप से क्षतिग्रस्त होना पड़ा। बहुत से ईरानी योद्धा मारे गए। आर्थिक हानि भी उठानी पड़ी। अन्त में सन्धि-सभा बैठी। ईरान को तीस लाख पौण्ड क्षति-स्वरूप देना पड़ा। इरेवान और नाकचीवान आदि कई प्रदेशों से भी हाथ धोना पड़ा। इसके सिवा रूस-सरकार को कितनी ही अभ्यन्तरीय सुविधाएँ भी मिलीं। अभागा ईरान सैकड़ों वर्षों के लिए निर्वीर्य हो गया। ईरान में रूस के ज़ार की तूती बोलने लगी। रूस के आधिपत्य के कारण इङ्गलैण्ड और फ़्रान्स को ईरान से अपना बोरिया-बँधना समेट लेना पड़ा। रूस की सरकार ने ईरान की सरकार को भारत-सरकार के विरुद्ध ऐसा पाठ पढ़ाया कि वह लगातार पच्चीस वर्षों तक अफ़ग़ानिस्तान के साथ झगड़ता रह गया। इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे ईरान को अपनी सारी शक्ति खो देनी पड़ी।

सन् १८३३ ईस्वी में ईरान के फ़तहअली शाह ने अफ़ग़ानिस्तान के हिरात प्रदेश पर आक्रमण किया। परन्तु थोड़े दिनों के बाद ही उनकी मृत्यु हो गई, इसलिए इस आक्रमण का कोई नतीजा नहीं निकला। फ़तहअली के बाद महम्मद शाह ईरान का बादशाह हुआ। उसने १८३७ में फिर हिरात पर चढ़ाई की। अङ्गरेज़ों ने बाधा दी और रूस उत्साह प्रदान करने लगा। परन्तु अन्त में महम्मद को विफल मनोरथ होकर लौट जाना पड़ा। महम्मद और उसके मन्त्री की निर्बुद्धिता के कारण ईरान की बड़ी क्षति हुई। जिस समय वह मरा उस समय समस्त ईरान में भयङ्कर विश्रृङ्खलता फैली हुई थी। ख़ज़ाना ख़ाली पड़ा हुआ था, फ़ौज की तनख़्वाह तीन महीने से लेकर पाँच वर्ष तक की बाक़ी पड़ी थी, घुड़सवार सेना इस्तीफ़ा देकर घर चली गई थी। और विद्रोह का धुँआ सारे देश में छा गया था।

महम्मद शाह की मृत्यु के बाद उसका सोलह वर्ष का लड़का नसीरुद्दीन ईरान के तख़्त पर बैठा। उसी समय 'बाबी' सम्प्रदाय वालों ने विद्रोह की घोषणा कर दी। नसीरुद्दीन की सरकार ने उन्हें निर्दयतापूर्वक कुचलना आरम्भ किया। सारे देश में असन्तोष फैल गया। परन्तु इससे ईरानियों का उपकार भी हुआ। सैकड़ों वर्षों के बाद ईरान में एक बार फिर जाग्रति के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे। गोरों की चालबाज़ियों ने भी इसे मदद दी, ईरानी धीरे-धीरे अपनी परिस्थिति को समझने लगे।

सन् १८५० में यूरोपियन राजनीति में विशेष रूप से परिवर्त्तन हुआ। रूस ने ईरान को तुर्किस्तान के विरुद्ध अस्त्र धारण करने की सलाह दी, किन्तु मन्त्रियों की सलाह से नसीरुद्दीन ने फ़्रान्स और ब्रिटेन के साथ मेल रखना उचित समझा। मन्त्रियों ने बताया कि अगर फ़्रान्स और ब्रिटेन से दोस्ती रहेगी तो रूस ने ईरान का जो भू-भाग हड़प लिया है, उसे भविष्य में फिर उसके हाथों से छीन लेने का अवसर मिल सकेगा। परन्तु अङ्गरेज़ों और फ़्रान्सीसियों ने उसे सम्पूर्ण रूप से निरपेक्ष रहने का ही परामर्श दिया। अपनी कमज़ोरी के कारण ईरान को भी यही सलाह मान लेनी पड़ी। परन्तु यह दोस्ती केवल पाँच ही वर्ष तक रह सकी। सन् १८५५ में तेहरान को लेकर अङ्गरेज़ों और ईरान में फिर मतान्तर हो गया। अङ्गरेज़ों ने ख़फ़ा होकर बूशहर में सेना एकत्र करना आरम्भ कर दिया, और थोड़े दिनों के बाद ही ईरान के एक भू-भाग पर अपना क़ब्ज़ा भी कर लिया। इस समय अङ्गरेज़ों को भारत की रक्षा की बड़ी चिन्ता थी। इसलिए उन्होंने शीघ्र ही ईरान से सन्धि भी कर ली। फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड ने दया करके ईरान को स्वाधीन राज्य स्वीकार किया। इसके बदले में अङ्गरेज़ों को अफ़ग़ानिस्तान और ईरान के बीच मध्यस्थ बनने का अवसर प्राप्त हो गया। इतिहासकारों का कहना है कि इस सन्धि से अङ्गरेज़ों का विशेष उपकार हुआ। क्योंकि इसके कुछ दिन बाद ही भारत में सन् १८५७ के सिपाही-विद्रोह की आग धधक उठी थी और इस विद्रोह को दमन करने के लिए उन्होंने ईरान से अपनी सारी सेना वहाँ बुला ली थी। उस समय अगर अफ़ग़ानिस्तान और ईरान में पारस्परिक मनमुटाव न होता और अङ्गरेज़ इस झगड़े में पञ्च न होते, तो भारत के सिपाही-विद्रोह का कुछ और ही परिणाम होता।

शाह नसीरुद्दीन की मृत्यु से पहले समस्त मध्य एशिया पर रूस की प्रधानता थी। इसी समय उसने काकेशिया पर दख़ल जमाया था। इसके बाद वह सनीचर की भाँति अफ़ग़ानिस्तान की खोपड़ी पर आ धमका। अङ्गरेज़ घबरा उठे। कहीं यह सनीचर एक दिन उनकी सोने की चिड़िया—भारत को न फाँस ले।

इस समय ईरान की हीनावस्था पराकाष्ठा तक पहुँच चुकी थी। सुअवसर देख कर रूस ने उसके उत्तरी प्रदेश पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया। अङ्गरेज़ भी निश्चिन्त न थे, उन्होंने दक्षिणी ईरान को अपने चङ्गुल में दबाया। भारत की रक्षा के लिए ईरान को मुट्ठी में रखने की उन्हें सख़्त ज़रूरत थी। रूस की अनधिकार चेष्टा के उत्तर में अङ्गरेज़ों ने ईरान में अपने लिए काफ़ी सुविधा कर ली। ईरानियों के प्रबल प्रतिवाद की परवाह न कर, ईरान और भारत के बीच तारबर्क़ी जारी हो गई। फ़ारस की खाड़ी में उनका जहाज़ी बेड़ा रहने लगा, 'कोरन' (Kaurn) नदी में जहाज़ चलाने का अधिकार मिल गया और मिल गया ईरान में ब्रिटिश व्यापार के विस्तार का अलभ्य अवसर। इसके बाद 'मालज़ुए पर चीनी' के अनुसार शाह नसीरुद्दीन ने अङ्गरेज़ों को अपना बैङ्क स्थापित करने और 'नोट' चलाने का भी अधिकार दे दिया।

परन्तु इसका परिणाम बहुत अच्छा न हुआ, ईरान में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध असन्तोष का सञ्चार होने लगा। सन् १८९० में, जब शाह ने अङ्गरेज़ों को तम्बाकू की खेती का अबाध अधिकार दे दिया, तो यह असन्तोष की आग और भी धधक उठी। ख़ास करके 'हुक़्क़ेबाज़' बहुत ही नाराज़ हो गए। धर्माचार्य हाजी मिर्ज़ा हसन शीराज़ी ने 'फ़तवा' दिया कि 'काफ़िरों' का पैदा किया हुआ तम्बाकू पीना 'हराम' है। सारे देश में बहिष्कार आन्दोलन आरम्भ हो गया। इसके साथ ही स्थान-स्थान पर ख़ून-ख़राबी और मार-पीट होने लगी। शाह ने विद्रोहियों के भय से अङ्गरेज़ों का बहुत सा अधिकार छीन लिया। परन्तु अङ्गरेज़ों ने इसके बदले में पाँच लाख पौण्ड शाह से वसूल कर लिए। उस समय ईरान के लिए यह अर्थदण्ड अतीव कठोर साबित हुआ। देश ने मानो पाँच लाख पौण्ड देकर अपने लिए दरिद्रता ख़रीद ली।

इसके बाद ईरान, रूस और इङ्गलैण्ड की चक्की में दिन-रात पिसने लगा। नसीरुद्दीन की बादशाहत के वे अन्तिम दिन थे; बुढ़ौती का ज़माना था। शासन-शक्ति क्षीण हो चली थी। वह अपने दरबारियों के हाथ का खिलौना बन गया था। इसलिए समस्त राज्य में विषम विश्रृङ्खलता उपस्थित हो गई। ठीक समय पर वेतन न मिलने के कारण फ़ौज के सिपाहियों ने घर की राह ली। धनागार और अन्नागार शून्य होने लगे। राज-कर्मचारियों की उच्छृङ्खलता के कारण प्रजा भी विद्रोही हो उठी। किसी गुप्त-घातक ने एक दिन नसीरुद्दीन को गोली मार दी।

अत्याचार जब अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है, तो उसका परिणाम यही होता है। उस समय एक साधारण रस्सी भी सर्प बन जाती है। शाह नसीरुद्दीन की हत्या इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। उसे मारा था एक साधारण—निरीह दूकानदार ने। जब अत्याचार से उसकी आत्मा खलबला उठी तो एक दिन दूकान-दौरी उठा कर वह राजद्रोही बन गया। जिस शहर में उसकी दूकान थी, वहाँ एक क्रान्तिकारी सरदार रहता था। दूकानदार ने उसका शिष्यत्व स्वीकार किया और देश को अत्याचार के हाथों से मुक्त करने के लिए जान पर खेल गया! उसका नाम मिर्ज़ा रज़ा था, उसे फाँसी की सज़ा दी गई थी।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

पढ़ के कॉलेज में दीन खो बैठे !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

उन्हें बेतरह मुझसे अब दुशमनी है,
मुसीबत में दिल और ज़हमत में जी है !
तकल्लुफ़ ने रङ्ग अपना आकर जमाया,
कहाँ अब वह पोशाक में सादगी है !
सुनाऊँ अगर हो कोई सुनने वाला,
बड़ी लम्बी-चौड़ी मेरी हिस्टिरी है !
कहे कौन दुनिया में "बिस्मिल" को अच्छा,
जो दुनिया कहे, यह बुरा आदमी है !

* * *

तङ्ग आकर उन्हीं के हो बैठे,
हम गुलामी में सबको रो बैठे !
वेद से वास्ता नहीं "बिस्मिल",
पढ़ के कॉलिज में दीन खो बैठे !

* * *

ख़याल आता है दिल में कब हमारा,
सुनें क्यों हमसे वह मतलब हमारा !
हमें है उन्स हर मज़हब से "बिस्मिल",
नहीं है कोई भी मज़हब हमारा !

* * *

विभिन्न देशों में प्राण-दण्ड के भिन्न-भिन्न तरीक़े

[श्री० रमेशप्रसाद जी, बी० एस्-सी०]

यह कहना ज़रा कठिन है कि फाँसी देने की प्रथा कब से चली। इतिहासज्ञों के लिए भी इसका ठीक समय बतलाना कठिन हो जायगा, किन्तु यह बात सभी मानेंगे कि फाँसी देने की प्रथा सब समय एक सी नहीं थी। फाँसी देने का अर्थ है मनुष्य का किसी न किसी प्रकार प्राण-हरण करना। चाहे गले में रस्सी डाल कर, चाहे कुत्तों से नुचवा कर, चाहे पत्थरों से मार कर—किसी भी रूप में मनुष्यों को फाँसी दी जा सकती है। यह विषय बड़ा विस्तृत है और यूरोपीय भाषाओं में इस पर बहुत सी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।

प्राचीन काल में लोगों की धारणा थी कि जब तक कोई मनुष्य अपना अपराध स्वयं स्वीकार न कर ले, तब तक उसे दण्ड न दिया जाय। सन्देहजनक व्यक्तियों को अपराध स्वीकार कराने के लिए भी भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट दिए जाते थे और अक्सर देखा जाता था कि प्रायः इस क्रिया में उनकी जीवन-लीला भी समाप्त हो जाती थी। ख़ैर, हमें इन बातों से प्रयोजन नहीं है, फाँसी देने के यन्त्र भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न-भिन्न होते आए हैं। तारीफ़ करनी चाहिए उन लोगों की, जिन्होंने ऐसे यन्त्रों का आविष्कार किया था। कहा जाता है कि प्रायः ६०० प्रकार के फाँसी देने के यन्त्र आविष्कृत हुए हैं और उनमें कई तो बड़े विचित्र हैं। प्राचीन काल में अङ्गरेज़ों में फाँसी देने की एक प्रथा यह थी कि अपराधी फाँसी पर लटका दिया जाता था और जब उसका आधा प्राण निकल जाता था, तो उसे उतार कर ज़मीन पर लिटा देते थे। इस समय उसका सिर किसी औरत की जङ्घा पर रख दिया जाता था, जिससे उसके कष्ट में उसे शान्ति मिले, और तब उसका पेट चीर कर उसकी आँतें निकाल ली जाती थीं।

सूली द्वारा प्राण-हरण

प्राण-हरण के अन्य अमानुषिक उपायों में सूली की प्रथा भी कम घृणित नहीं थी! अभियुक्त को गुदा द्वारा लोहे की एक नुकीली—भाले जैसी—छड़ पर बिठा दिया जाता था, जो पेट तथा हृदय को बेधती हुई सिर से निकलती थी! न जाने कितने लालों के इस प्रकार प्राण-हरण किए जा चुके हैं!!

इङ्गलैण्ड में फाँसी देने की एक प्रथा चली थी, जिसका नाम लोगों ने Scavenger's daughter रख दिया था। यह और कुछ नहीं, सिर्फ़ एक लोहे का तार होता था, जिससे अपराधी को मोड़ कर बाँध देते थे और उसे मरने के लिए छोड़ देते थे!

'स्ट्रॉपेडो' नामक प्राण-दण्ड देने का तरीक़ा यह था कि अपराधी के पैर में कोई तीन मन का पत्थर बाँध दिया जाता था और उसके एक या दोनों हाथ बाँध कर लटका दिया जाता था। इस प्रकार अपराधी बिना भोजन और जल के मर जाता था! (देखिए चित्र नं० १)

फाँसी के तरीक़ों में "रशिया की गाँठ" (Russian knot) एक प्रसिद्ध तरीक़ा है। यह एक चमड़े का चाबुक होता था, जिसमें केवल एक ही गाँठ रहती थी। चमड़े को पानी में भिगो कर और फिर सुखा कर कड़ा बना लेते थे और फिर इस चाबुक से अपराधी की पीठ का चमड़ा उधेड़ डालते थे, जिसकी पीड़ा से मृत्यु ही आ जाती थी!

न्यूयार्क के औबर्न जेल में सन् १८५८ ई० तक अपराधी के सिर पर पानी की धार डाल कर प्राण-दण्ड दिया करते थे। (चित्र नं० २ देखिए) अपराधी का हाथ एक पलने में बाँध देते थे और ऊपर से उसके सिर पर अनवरत पानी की धार गिराते थे। इससे अपराधी को साँस लेने के लिए हवा नहीं मिल सकती थी और दम घुट कर उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती थी।

किन्तु पानी से फाँसी देने की यही एक प्रथा नहीं है। सब से आसान तरीक़ा है पानी में डुबा कर मारना। इङ्गलैण्ड में एक समय डायनों को पानी में डुबा कर फाँसी दी जाती थी। ऐसे भी उदाहरण अनोखे नहीं हैं, जहाँ लोगों को खौलते हुए पानी के कड़ाह में डाल कर मारा गया हो। भारतवर्ष ही में इसके कई उदाहरण मिलेंगे।

चित्र नं० ३ देखिए। इसमें अपराधी के गले के नीचे तक एक टीप (Funnel) घुसेड़ दिया गया है। इस क्रिया से अपराधी के पेट में इतना पानी उड़ेल दिया जाता था कि अपराधी का प्राणान्त हो जाता था। एक तो गिलोय यों ही कड़वी होती है, दूजे यदि वह नीम पर चढ़ जाय तो क्या पूछना? चित्र नं० ४ में अपराधी का प्राण निकालने के लिए काफ़ी साधन है, किन्तु इससे सन्तुष्ट न होकर आविष्कारक ने उसके गले के नीचे पानी पहुँचाने का भी प्रबन्ध कर दिया है।

चित्र-नम्बर ३

चित्र-नम्बर ४

"Ducking Stool" प्रायः स्त्रियों को फाँसी देने के काम में आता था (चित्र नं० ५ देखिए)। एक कुर्सी पर अपराधी बैठा दिया जाता था। इसे अपराधी सहित पानी में डुबाते और निकालते थे। पानी में अपराधी को रखने का समय धीरे-धीरे बढ़ाते जाते थे और अन्त में उसे जल-समाधि लगाने के लिए पानी में हमेशा के लिए छोड़ देते थे। अपराधी का दम फूल जाता था और वह मर जाता था।

अपराधी के प्राण-हरण करने के लिए अग्नि भी बहुत दिनों तक काम में लाई जाती थी। अग्नि में जला कर या आग पर गरम किए हुए पानी या तेल के कड़ाह में अपराधी को डाल देना तो प्राण-हरण के ऐसे तरीक़े हैं, जिन्हें सब कोई जानता है। किन्तु कुछ पत्थर के हृदय वाले अधिकारियों को यह सह्य नहीं हुआ कि अपराधी अपना प्राण इतनी आसानी से गँवावे, इसलिए उन्होंने कई ऐसे तरीक़े आविष्कार किए, जिनसे अपराधियों की तकलीफ़ बढ़ जाय। अपराधी के हाथ-पैर बाँध दिए जाते थे और उसे भालों की नोकों से उठा कर आग में धीरे-धीरे झुलसा जाता था। कैसा हृदय-विदारक दण्ड है? (देखिए चित्र नं० ६)

कभी-कभी एक लोहे के पहिए में अपराधी को बाँध देते थे, पहिए के नीचे आग जला देते थे और पहिए को चारों तरफ़ घुमाते थे, जिससे कि प्राण धीरे-धीरे और कष्ट से निकले।

रोम में एक सीज़र के विषय में कहा जाता है कि वे अपराधियों को मोम से लपेटवा देते थे और रात में उनमें आग लगवा देते थे, जिससे उनका राज-भवन रात में प्रकाशित होता था। नहीं कहा जा सकता कि वह बात कहाँ तक सच है, किन्तु एक पुराने चित्र में यह बात दिखलाई गई है।

'क्रॉस' पर लटका कर फाँसी देने का तरीक़ा बहुत पुराना नहीं है। इसके विषय में प्रायः सभी कुछ न कुछ जानते हैं (चित्र नं० १०-११ देखिए)।

'मृत्यु-सेज' नामक दण्ड-विधान बड़ा दारुण है। इसका दृश्य चित्र—नं० १२ में देखिए। एक तख़्ते पर तेज़ कीलें जड़ी रहती हैं। उसी पर अपराधी को सुला कर बाँध देते हैं और फिर शिकञ्जे से इस प्रकार कसते हैं कि अपराधी के शरीर में कीलें गड़ जायँ। अपराधी असह्य कष्ट भोग कर प्राण छोड़ देता है। इसीसे मिलता-जुलता हुआ फाँसी देने का वह तरीक़ा है, जिसमें अपराधी को तेज़ कील लगे हुए तख़्ते पर खड़ा करा कर कोड़े लगाते हैं। (देखिए चित्र-नं० १३)

कवि गङ्ग का प्राण-दण्ड

मृत्युदण्ड की अनेक अमानुषिक प्रथाओं में हाथी के पैर तले अभियुक्त को रौंदवा कर उसका जीवन नष्ट करना भी एक घृणास्पद प्रथा थी, जिसका अस्तित्व मुग़ल-शासन के अन्त तक पाया जाता है। इस चित्र में कवि गङ्ग के मृत्यु-दण्ड का दृश्य अङ्कित है। अमानुषिकता का कितना नग्न प्रदर्शन है !!

फाँसी के पिंजड़े का व्यवहार अब तक काबुल में होता है। इस पिंजड़े में अपराधी को बन्द कर देते हैं और धूप में रख देते हैं या किसी ऊँचे मचान या पेड़ पर टाँग देते हैं। अपराधी बिना अन्न-जल और असह्य गरमी आदि के कारण कुछ दिनों में दूसरे लोक की यात्रा कर देता है (चित्र नं० १४ देखिए)

दीवार में चुनवा देना, कुत्ते से नुचवाना, ऐसे हिंसक पशुओं के पिंजड़े में छोड़ देना, जो कई दिनों से भूखे रक्खे गए हों; पत्थर से मरवाना आदि और भी कितने प्रकार के फाँसी देने के तरीक़े हैं। आजकल भारतीय जेलों में फाँसी देने की जो प्रथा प्रचलित है, उसे सभी जानते हैं। बिजली से फाँसी देने के तरीक़े का भी आविष्कार हो चुका है। अपराधी को एक कुर्सी पर बैठा देते हैं और उसका सम्बन्ध बिजली पैदा करने वाली एक मशीन से करा देते हैं। बस, दो सेकेण्ड में सारा काम तमाम हो जाता है।

बुरा हो चर्ख़ी का, जिसने न मालूम कितने हज़ार मनुष्यों के प्राण लिए होंगे। पाठक चित्र नं० ७ देखें और विचार करें। इसमें दो पहिए हैं, जिनके बीच में अपराधी को खड़ा कर देते हैं। प्रत्येक पहियों से तेज़ धारदार छुरियाँ निकलती रहती हैं। ये अपराधी के शरीर से लग-लग कर उसे क्षत-विक्षत कर देती हैं। इस यन्त्र द्वारा अपराधी कुछ ही मिनटों में मार डाला जा सकता है, किन्तु उसे तकलीफ़ बहुत ज़्यादा होती है।

घोड़े और गाड़ी के पीछे अपराधी को बाँध कर मार डालने की प्रथा ऐसी नहीं है, जिसे लोग न जानते हों, किन्तु यदि अपराधी का 'टग ऑफ़ वार' (Tug of war) हो तो उस पर कैसा बीतेगा। 'टग-ऑफ़-वार' में जैसे रस्सी काम में लाई जाती है, वैसे ही इसमें मनुष्य काम में लाया जाता था। नतीजा यह होता था कि मनुष्य के दो टुकड़े हो जाते थे !! (देखिए चित्र नं० ८)। एक समय अपराधियों को फाँसी देने के लिए उन्हें रस्सी के सहारे बाँध देते थे और घोड़े से उस रस्सी को बाँध कर खिंचवाते थे। और ऊपर से उन्हें पत्थरों से मारते थे (देखिए चित्र नं० ९)

फाँसी देने के सारे तरीक़ों का यदि वर्णन किया जाय तो एक बड़ा सा पोथा तैयार हो जाय। पाठकों की जानकारी के लिए जो कुछ दिया गया है, उसीसे वे अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि फाँसी कितनी निर्दयतापूर्वक दी जाती है। इसलिए आजकल कुछ ऐसे लोग उठ खड़े हुए हैं, जिनका कहना है कि जब मनुष्य, मनुष्य की सृष्टि नहीं कर सकता तो उसे किसी का प्राण हरण करने का क्या अधिकार है? इसलिए इस प्रथा को एकदम उठा देना चाहिए। ईश्वर अधिकारी वर्गों को ऐसी सुमति दे कि संसार से फाँसी का लोप हो जाय। तथास्तु—

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

विजय पाकर परास्त शत्रु को मुँह चिढ़ाना परले सिरे की नीचता है।

❀

स्त्री के लिए सतीत्व से बढ़ कर क्या वस्तु हो सकती है; उसका नाश किसी सामान्य कारण से नहीं होता।

❀

कुत्ते की पूँछ कभी सीधी नहीं होती; स्वभाव कभी नहीं बदलता।

❀

न्याय करना उतना ही कठिन है, जितना अन्याय का दमन करना।

❀

कौन कह सकता है कि चिड़ियों के सङ्गीत अर्थ-विहीन हैं?

चिड़ियों के सङ्गीत पर आकाश में वृक्षों की पत्तियाँ नर्तन करती हैं।

इस साज को लख कर आज का प्रभात मुदित है।

❀

जिसका कोई नहीं होता, उसके सब होते हैं।

❀

आँसू हृदय से निकल कर दुःख प्रकट कर देते हैं। जिसे घर से निकालोगे वह भेद अवश्य बता देगा।

❀

अतीत चाहे दुःखद ही क्यों न हो, उसकी स्मृतियाँ मधुर होती हैं।

❀

हे नाथ! मैं तो तुमसे मिलने को सर्वस्व त्याग कर बैठा हूँ। तुम मेरे पास सब कुछ लेकर क्यों आते हो? क्या तुम्हें भी दिखावा पसन्द है?

❀

नियमों से सुधार नहीं होते; सुधारों से नियम बनते हैं।

❀

मेरे नेत्रों में जो नींद रेंगने लगती है, क्या कोई बता सकता है वह कहाँ से आती है?

❀

नीरद, सन्तप्तों को शीतल करने के हेतु अपने आपको बरस देता है। इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है?

❀

असम्भव का नाम न लो। इस सम्भव-विश्व में असम्भव कहाँ?

❀

ईश्वर, हमें अपने भविष्य में विश्वास होवे।

* * *
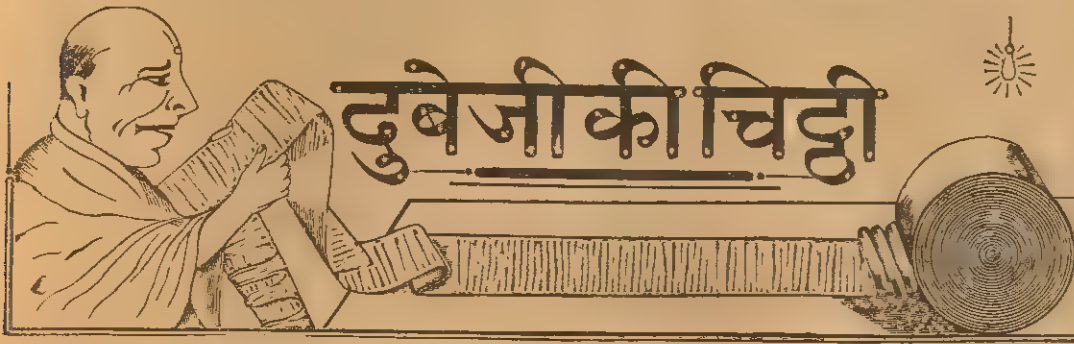
अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

अच्छा सुनिए, आपको एक बड़ी आवश्यक बात सुनाता हूँ। हमारे मुहल्ले में एक वृद्ध महाशय रहते हैं। यह महाशय कट्टर सनातनधर्मी हैं, और जितने यह वृद्ध हैं उतने ही वृद्ध इनके विचार हैं। एक दिन की बात है कि मैं शाम को ठण्ढाई-बूटी छान कर झूमता हुआ घर से निकला। इच्छा थी कि पार्क में जाकर बैठूँगा, परन्तु ज्योंही द्वार के बाहर निकल कर दस क़दम चला कि वृद्ध महाशय से ठोकर खाई। वृद्ध महाशय की सूरत देखते ही आधा सुरूर तो वहीं ठण्ढा हो गया; क्योंकि यह महाशय वह बला हैं कि ईश्वर बचावे। रास्ते में कहीं मिल गए तो समझ लीजिए कि दो घण्टे के लिए बेकारी से छुट्टी मिल गई। मैंने चाहा कि कतरा कर निकल जाऊँ, पर उन्होंने भी शिकार देख लिया था। मुस्कुरा कर बोले—"अजी दुबे जी, ऐसे अलग-अलग जाइएगा—किधर के इरादे हैं?" मैंने मन में कहा—"इरादे तो बहुत-कुछ थे, पर आपकी सूरत देखते ही सबों को लक़वा मार गया।" प्रकट में मैंने उनसे कहा—"कुछ नहीं, ज़रा योंही घूमने के लिए निकला था; परन्तु अब इच्छा होती है कि घर लौट जाऊँ।" वह बोले—"क्यों-क्यों, घर लौटने की कौन बात है? चलिए मैं भी तो उधर ही चल रहा हूँ।"

यह शुभ-समाचार सुनते ही दम खुश्क हो गया। समझ लिया कि आज बेगार में धर लिए गए। अच्छा, ईश्वर की इच्छा—योंही सही, असन्तोष की एक दीर्घ-निश्वास छोड़ कर मैंने कहा—"अच्छी बात है, चलिए।" ख़ैर साहब, दोनों आदमी चले। चार क़दम चलते ही वृद्ध सज्जन ने पूछा—"कहिए, आप सनातनधर्म के वार्षिक अधिवेशन में गए थे?" मैंने कहा—"नहीं, मैं तो नहीं जा सका।" वृद्ध विस्मित होकर बोले—"ऐं, नहीं गए?" मैंने पुनः धड़कते हुए कलेजे से कहा—"जी नहीं!" वृद्ध—"यह तो आपने बड़ा बुरा किया। इस वर्ष अधिवेशन देखने योग्य था। वह-वह स्पीचें हुईं कि मैं आपसे क्या तारीफ़ करूँ। विधवा-विवाह इत्यादि के तो वह धुर्रें उड़ाए गए कि कुछ न पूछिए। जवाब देते न बना। आप तो बस गाँव के ठर्रे हैं—घर में बैठे दुलत्तियाँ झाड़ा करते हैं। सभा में जाते तो मालूम पड़ता।"

यह सुनते ही मैंने भी ज़रा कान फटफटाए और सिर उठा कर कहा—"हाँ साहब, आप क्या फ़र्माते थे?" वह बोले—"मालूम होता है कि आज गहरी छन गई। मैं इतनी बातें कह गया, आप कहते हैं कि क्या फ़र्माते थे।" मैंने कहा—"जी नहीं, गहरी-ज़हरी तो कुछ नहीं छानी, और चाहे जितनी गहरी छानूँ, पर आपके सामने आते ही सब हलकी हो जाती है। हाँ, तो आप यह कह रहे थे कि विधवा-विवाह के ख़ूब धुर्रें उड़ाए गए, क्यों न?"

वृद्ध सज्जन बोले—"हाँ!" मैंने पूछा—"भला आप यह बता सकते हैं कि विधवा-विवाह के खण्डन में क्या कहा गया?" वृद्ध महाशय मुँह बना कर बोले—"यह पूरे तौर से तो मैं नहीं बता सकता; क्योंकि मैं बहुत पीछे बैठा हुआ था और बुढ़ापे के कारण कुछ ऊँचा भी सुनने लगा हूँ।" मैंने कहा—"तब तो आप जो भी कहें, मैं सब मान लेने को तैयार हूँ। चलिए, मैं भी कहता हूँ कि वाक़ई ख़ूब कहा गया—ऐसा और इतना कहा गया कि लोगों को याद नहीं कि क्या कहा गया!" वृद्ध महाशय बोले—"तो क्या आप विधवा-विवाह ठीक समझते हैं?" मैंने कहा—"मान लीजिए कि मैं ठीक समझता हूँ।" वृद्ध महाशय—"तो आप सख़्त ग़लती करते हैं। विधवा-विवाह को कोई भला आदमी ठीक न कहेगा।"

मैंने कहा—"क्यों?" वह बोले—"विधवा-विवाह का पक्ष किसी भले आदमी को नहीं लेना चाहिए। यदि आप भले आदमी हैं तो विधवा-विवाह का पक्ष कभी न लेंगे।"

मैंने कहा—यह आप बहस करते हैं या पाठ पढ़ा रहे हैं?

वह—अच्छा, तो आप बहस करना चाहते हैं? अच्छी बात है, चलिए। मैं कहता हूँ, विधवा-विवाह बुरा है।

मैंने उनके स्वर में स्वर मिला कर कहा—मैं कहता हूँ, विधवा-विवाह अच्छा है!

वह—अच्छा क्यों है?

मैं—बुरा क्यों है?

वह—आप बहस करते हैं या मज़ाक़? जो मैं कहता हूँ, वही आप कहते हैं! आप साबित कीजिए कि विधवा-विवाह अच्छा है।

मैं—आप साबित कीजिए कि विधवा-विवाह बुरा है!

वह—अभी तक विधवा-विवाह नहीं होता था, इसलिए वह बुरा है।

मैं—अब विधवा-विवाह होने लगा, इसलिए वह अच्छा है।

वह—आप तो मज़ाक़ करते हैं।

मैं—आपकी उम्र तो इस योग्य रही नहीं कि कोई आपसे मज़ाक़ करे, वैसे जो आप समझें, वह सर्वथा उचित है।

वह—विधवा-विवाह से वर्णसङ्कर पैदा होंगे—यह आप जानते हैं?

मैं—बिलकुल नहीं, जब विवाह होगा तब वर्णसङ्कर कैसे उत्पन्न होंगे—यह आप जैसे अनुभवी मनुष्य जान सकते हैं।

वह—विधवा-विवाह से व्यभिचार बढ़ेगा।

मैं—अभी दिन-प्रतिदिन घट रहा था और विधवा-विवाह से बढ़ेगा? यह तो निस्सन्देह घाटे की बात है।

वह—जहाँ विधवा-विवाह प्रचलित हुआ कि स्त्रियाँ पुरुषों को फूस समझने लगेंगी।

मैं—अभी तक सुवर्ण समझती थीं?

वह—बेशक! अभी तक तो वह समझती थीं कि यदि पति मर गया तो जन्म भर के लिए राँड हो जायँगी। विधवा-विवाह के प्रचलित हो जाने पर तो कोई डर नहीं रह जायगा—समझ लेंगी कि यदि यह मर गया तो दूसरा विवाह हो जायगा।

मैं—इसलिए वह पति को विष दे दिया करेंगी; क्यों न?

वह—क्या ताज्जुब है। जब यह स्वतन्त्रता है कि दूसरा विवाह हो जायगा, तब विष देना कोई आश्चर्य है?

मैं—आपने अपनी इतनी आयु में कितनी स्त्रियों को विष दिया है?

इस पर वृद्ध महाशय कुछ चकरा कर बोले—इसका क्या तात्पर्य है?

मैं—जब आपको यह स्वतन्त्रता थी कि दूसरा विवाह तो हो ही जायगा, तब आपको उचित था कि कम से कम दस-बारह स्त्रियों को तो ज़हर देते।

वह—राम! राम!! आप भी क्या बातें करते हैं, मैं क्या हत्यारा हूँ?

मैं—नहीं, आप तो महादयालु हैं—हत्यारी तो केवल स्त्रियाँ ही हैं।

इसी समय हम लोग पार्क में पहुँच गए। पार्क में एक ख़ाली बेञ्च पर बैठ कर पुनः वार्त्तालाप होने लगा। वृद्ध महाशय बोले—दुबे जी, सच-सच बताइएगा, क्या आपको यह अच्छा मालूम होता है कि आपके मर जाने पर आपकी स्त्री दूसरे पुरुष के पास चली जाय?

मैंने कहा—एक दिन लल्ला की महतारी ने भी मुझसे यही प्रश्न किया था। इसका उत्तर मैंने यही दिया था कि नहीं। इस पर उसने कहा कि फिर हम स्त्रियाँ कैसे यह अच्छा समझेंगी कि हमारे मरने पर हमारा पति दूसरी स्त्री का होकर रहे?

वह—तो इससे क्या मतलब निकला?

मैं—इससे यह मतलब निकला कि यदि विधवा-विवाह बुरा है तो विधुर-विवाह भी बुरा है। विधवा-विवाह पुरुषों की दृष्टि से बुरा है, विधुर-विवाह स्त्रियों की दृष्टि से।

वह—ओफ़ ओह! यह कलिकाल का प्रभाव है, जो आप ऐसी बातें करते हैं।

मैं—ख़ूब सोचे सत्ययुगी जी महाराज!

वह—हम सत्ययुगी न सही, पर विचार हमारे सत्ययुगी ही हैं।

मैं—बाबा आदम के समय के सब लोग ऐसे ही हैं।

वह—अच्छा, विधवा-विवाह को जाने दीजिए, स्त्री-शिक्षा के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?

मैं—स्त्री-शिक्षा पर आप पहले अपने विचार बताइए।

वह—नहीं, आप बताइए।

मैं—मैं तो आपके विचार सुन कर अपने विचार बनाऊँगा। आप अनुभवी आदमी हैं, पहले आप अपना अनुभव बताइए।

वह—मेरा विचार है कि स्त्री-शिक्षा महा ख़राब है।

मैं—यह तो आपने कोई नई बात नहीं कही, यह तो आपकी उम्र के सब लोग कहते हैं।

वह—(प्रसन्न होकर) देखिए, जो सब लोग कहते हैं, वही मैंने भी कही।

मैं—हाँ-हाँ, आप कुछ उनसे ज़्यादा बेवक़ूफ़ तो हैं नहीं, जो कुछ और अण्ट-शण्ट बकने लगते।

वह—बेशक, मैं इतना बेवक़ूफ़ नहीं हूँ कि अण्ट-शण्ट बकूँ। मैं तो जो कहूँगा, सो पक्की बात कहूँगा। भई दुबे जी, स्त्री-शिक्षा से मेरा नाकों दम आ गया। मेरी दो पोतियाँ स्कूल में पढ़ती हैं। आप जानिए, आजकल के आदमी तो हम बूढ़ों की बात सुनते नहीं। मैंने मना किया था कि स्कूल में न पढ़ाओ, पर हमारे सपूत न माने। सो जनाब, वे लड़कियाँ स्कूल में पढ़ाने बिठा दी गईं। अब मैं क्या बताऊँ कि उनकी क्या दशा है। घर की अपढ़ स्त्रियों को, जैसे अपनी दादी तथा माता को, तो वे कूड़ा-करकट समझती हैं। घर के काम-काज में हाथ लगाना उनके लिए महा-पाप है। भोजन

बनाना वे केवल स्कूल का पाठ-सा समझती हैं। हाँ, उपन्यास या नाटक मिल जाय तो रात भर बैठे बैठे भोर कर दें। बात-बात में बड़े-बूढ़ों से बहस करने को तैयार रहती हैं। ऐसी शिक्षा से तो हमारी पुरानी अशिक्षित स्त्रियाँ कहीं अच्छी हैं।

मैं—यह शिक्षा का दोष नहीं है, वरन शिक्षा-पद्धति का दोष है। आजकल जिस ढङ्ग से लड़कियों को शिक्षा दी जाती है, उससे लड़कियाँ यह समझने लगती हैं कि दुनिया में उनके लिए पढ़ने-लिखने के अतिरिक्त और कोई काम है ही नहीं। पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त और सब काम व्यर्थ हैं। उनको शिक्षा इस ढङ्ग से दी जानी चाहिए, जिससे वह गृह-कार्य में कुशल होना और गृहस्थी को सञ्चालित करना अपना पहला कर्त्तव्य समझें।

वह—यह सब कुछ नहीं, मैं तो कहता हूँ कि लड़कियों को शिक्षा देना ही न चाहिए।

मैं—तो क्या उन्हें बिलकुल मूर्ख रक्खा जाय?

वह—नहीं, उन्हें भोजन बनाना, कपड़े सीना सिखाया जाय; घर का काम-काज करना, गृहस्थी चलाना बताया जाय।

मैं—तो यह हुआ क्या, यह शिक्षा नहीं है?

वह—नहीं, शिक्षा पढ़ाने को कहते हैं।

मैं—तो आपका क्या यह मतलब है कि और सब सिखाया जाय, ख़ाली पढ़ाया न जाय?

वह—हाँ।

मैं—क्यों?

वह—जहाँ स्त्रियाँ पढ़ने लगीं, बस वह पुस्तकें पढ़ती हैं, घर का धन्धा बिलकुल भूल जाती हैं।

मैं—ओफ़ ओह! तब तो पुस्तकें मानो घर का धन्धा भुलाने वाली हैं।

वह—निस्सन्देह!

सम्पादक जी, कहाँ तक कहूँ—वे महाशय इसी प्रकार की बातें करते रहे। दिमाग़ के लिए तो वह वैसे ही हैं, जैसे गुड़ के लिए चींटी। उनसे बातचीत करने के पश्चात कम से कम १२ घण्टे के लिए दिमाग़ बेकार हो जाता है। इन बूढ़ों के मारे कोई सुधार का काम शीघ्र नहीं होने पाता। नई बातों से, वह चाहे कितनी ही लाभदायक क्यों न हों, ये लोग ऐसे भड़कते हैं जैसे बेवक़ूफ़ घोड़ा अपने साए से। कोई व्यक्ति चाहे जितना भी विद्वान क्यों न हो, चाहे जितना ज्ञानवान हो, परन्तु जहाँ उसने कोई बात ऐसी कही, जो इनके विरुद्ध पड़ी, बस झट उसके लिए यह कह दिया जाता है—"आख़िर लौंडा ही है न! अनुभव तो क़तई है ही नहीं। हम लोगों ने दुनिया देखी है।" इन लोगों के लिए बालों का श्वेत हो जाना इस बात का प्रमाण है कि तमाम ज़माने भर की बुद्धि इन्होंने समेट कर अपने दिमाग़ में भर ली है। इसीलिए बाल सफ़ेद पड़ गए।

दाँतों का गिर जाना इस बात का प्रमाण-पत्र है कि इनके अन्दर जितनी बेवक़ूफ़ी और बुद्धि की कमी थी, वह सब दाँतों के साथ निकल गई। पार्क में इन बूढ़ों की एक टुकड़ी जमा होती है। इस टुकड़ी में कोई बूढ़ा ऐसा नहीं होता, जिसकी वयस ६० से कम हो। उस समय इन लोगों की बातें सुनने में बड़ा आनन्द आता है। एक इधर से लम्बी साँस छोड़ कर कहता है—"अजी अब तो ज़माना ही बदल गया। हमारे सामने इन बातों की कहीं छाया भी नहीं थी।" दूसरा कहता है—"हम लोगों के समय में किसी की मजाल नहीं थी कि ये बातें ज़बान पर ले आए।" तीसरे सज्जन सिर हिला कर फ़र्माते हैं—"तो जनाब, जैसी नियत है वैसी बरकत भी तो है। हम लोगों ने जितना खा-पी डाला, उतना आज लोगों को देखने तक को नसीब नहीं।" इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपनी समझ में वेद-वाक्य ही कहता है। इन भले आदमियों से कोई पूछे कि ज़माना तो सदा बदलता ही रहता है, यदि आपके बुढ़ापे में बदल गया तो कौन सी बड़ी भारी क्रान्ति हो गई? जी हाँ, आपके समय में तो आपके नाती-पोते भी नहीं थे, फिर यह कहाँ से आ गए? यदि आप प्रत्येक नई बात और नई चीज़ को इसलिए अच्छा या बुरा समझते हैं कि वह आपके समय में नहीं थी, तब तो बेड़ा पार है। एक दिन मैंने एक बूढ़े को कहते सुना—"अजी हमें क्या, हमारी तो बीत गई, हम तो दो-चार बरस के मेहमान हैं—आगे जैसा समय आ रहा है, वह जो जिएँगे, वह देखेंगे।" उनके कहने के ढङ्ग से मालूम होता था कि आगे कोई बड़ा बुरा समय आ रहा है, जिसके कारण सारी पृथ्वी उलट-पलट हो जायगी। यदि वह इस दृष्टि से कहते थे कि आगे जो समय आ रहा है, उसमें वह नहीं रहेंगे, तब तो निश्चय ही उनके लिए वह बुरा समय आ रहा है। इस प्रकार इनकी बातें चुपचाप सुनें तो आपको मालूम होगा कि संसार में चारों ओर अनर्थ और अत्याचार ही हो रहा है। संसार में बूढ़ों के अतिरिक्त और कोई समझदार आदमी नहीं है। ये बूढ़े जब पैदा हुए थे, तब पूरा सतयुग था, अब घोर कलियुग है, और अब ये न रहेंगे, तब प्रलय हो जायगा। मैं यह नहीं कहता कि सब ऐसे ही हैं, परन्तु अधिक संख्या ऐसों की ही है। विशेषकर कुछ तो ऐसे हैं कि उन्हें पिंजरे में बन्द करके रक्खे और उनकी बोलियाँ सुना करे। फिर देखिए, वह भूत, वर्तमान, भविष्य—तीनों युग का हाल किस सुन्दरता से बताते हैं। जो घोर आशावादी हो, उसे कुछ दिनों तक किसी बूढ़े के साथ कर दीजिए, फिर देखिए, वह कितना निराशावादी हो जाता है। बात भी पक्की है। मृत्यु के निकट पहुँच कर मनुष्य निराशावादी बना ही चाहे, उस समय वह आशावादी रह ही कैसे सकता है? इस दृष्टि से तो उनकी सारी बातें क्षम्य हैं। अच्छी बात है, मैं अपनी सब बातें वापस लेता हूँ, क्योंकि मुझे भी एक दिन बूढ़ा होना है। सम्पादक जी, आपको भी एक दिन बूढ़ा होना है, इस कारण आप उनके विरुद्ध कुछ न कहें, आपको मेरे सर की क़सम है!!

भवदीय,
विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

रानी विद्यादेवी

[श्री० त्रिवेणीप्रसाद जी, बी० ए०]

आज अनेकों महिलाएँ वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन में जी-जान से भाग ले रही हैं। कुछ समय पहले लोगों का यह ख़याल था कि वे महिलाएँ, जो लक्ष्मी की गोद में पली हैं, जिन्होंने कभी सर्दी और गर्मी का अनुभव नहीं किया है, वे ऐसे आन्दोलनों में भाग नहीं ले सकतीं। किन्तु रानी विद्यादेवी-जैसी महिला-रत्नों ने कार्यक्षेत्र में पदार्पण कर इस धारणा को निर्मूल एवं सर्वथा निराधार सिद्ध कर दिया है; अस्तु।

पाठकों को विदित होगा कि उक्त रानी साहिबा ने गत २७वीं सितम्बर को ७ माह के लिए कृष्ण-मन्दिर की ओर पैर बढ़ा कर, किस प्रकार अपने त्याग का परिचय दिया है।

आप बेरूआ (हरदोई) के ताल्लुक़ेदार के छोटे भाई श्रीयुत जङ्गबहादुर सिंह जी की धर्मपत्नी हैं। गिरफ़्तार होने के पहले आप हरदोई कॉङ्ग्रेस-कमिटी की प्रथम अध्यक्षा थीं। आपने अपने पति को भी नमक-सत्याग्रह में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया था।

आप महात्मा जी के साथ, साबरमती आश्रम में भी रह चुकी हैं। महात्मा जी ने आपके त्याग-भाव की बड़ी प्रशंसा की थी। जिस समय महात्मा जी हरदोई गए हुए थे, उस समय आपने अपने त्याग और देश-भक्ति का अच्छा परिचय दिया था। गाँधी जी को वहाँ दान स्वरूप जितने द्रव्य मिले थे, उनमें अधिकांश रानी साहिबा के दिए हुए थे।

रानी साहिबा पर्दे की कट्टर विरोधिनी हैं। आपने स्वयं तो इसे त्यागा ही है, दूसरों को भी वे ऐसा करने के लिए सदा उत्साहित करती रही हैं।

आप चर्ख़े की भी बड़ी शौक़ीन हैं। नियमित रूप से चर्ख़ा कातना, आपकी निश्चित दिनचर्या है!

इस समय आप जेल में हैं। सम्भवतः आगामी अप्रैल मास तक आप कारागार से मुक्त हो सकें। आपका चित्र अन्यत्र दिया गया है।

* * *

लाहौल बिलाकूवत

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

(गताङ्क से आगे)

३

चिराग़ जलने के समय हमारी गाड़ी उन्नाव स्टेशन पर पहुँची। ख़्याल था कि तार पाकर शायद ससुर जी मेरे लिए पहिले स्टेशन ही पर आना मुनासिब समझें। क्योंकि उनके वास्ते यह ज़्यादा आसान था। मगर वहाँ कोई भी ससुराली आदमी न देख कर मैं ज़रा घबराया, मगर बाद को सोचा कि लॉजीशियन ने मेरे रवाना होने का वक़्त तार में थोड़े ही लिखा होगा। उसने सिर्फ़ इतनी ही सूचना दी होगी कि बारात में गए हैं। इसलिए ससुर जी का यहाँ न आना कोई अचरज की बात नहीं मालूम हुई।

मुझे विश्वास था कि पण्डित जी ने इस गाड़ी से आए हुए बारातियों को मधनगरा पहुँचाने के लिए स्टेशन पर सवारियाँ और आदमी तैनात कर रक्खे होंगे। मगर पिछड़े हुए बारातियों में अकेला मैं ही निकला दुटरूँ टूँ। और मुसीबत यह कि स्टेशन पर बड़ी देर तक मैं टापता रहा, मगर किसी कम्बख़्त ने मुझसे बात तक न पूछी कि तुम कौन हो। किराए के एक्के, गाड़ी-ताँगे, जो इस गाड़ी के मुसाफ़िरों के लिए जमा थे, वे भी सब फुर्र हो गए। अकेले तीन कोस जाना, वह भी नहीं मालूम किस तरफ़, इस अँधेरी रात में, उस पर न कोई सवारी न शिकारी। बड़ी तबीयत घबड़ाई। इधर श्रीमती जी की मुहब्बत दिल में अलग ऊधम मचाए हुए थी। उनके इतने पास पहुँच कर भला वह कब क़ाबू में रह सकती थी। बार-बार यही जी में आता था, सब ख़्याल छोड़-छाड़ कर एकदम सरपट दौड़ता हुआ सीधे ससुराल ही में जाकर दम लूँ। मगर न जाने क्या सोच कर टाँगें जवाब दे देती थीं। इतने में एक फ़ीलवान "चै मल" करता हुआ अपने हाथी को स्टेशन के पिछवाड़े खड़ा किया और वहीं से हाँक लगाई—"अरे कोऊ मधनगरा बरात में चलइया है हो?"

मेरी जान में जान आई। मैंने लपक कर जवाब दिया—हाँ हाँ, हैं हैं हैं, हम हैं हम।

फ़ीलवान—का कहत हो? तनि जोरे से बोलो। हम ऊँच सुनित है।

मैं—अरे! हम जायँगे।

फ़ीलवान—का बिलार अस मेंव-मेंव करत हौ? गटई में छेद नाहीं है? अउर जोरे से बोलो।

मुझे गला फाड़ कर कहना पड़ा कि हम जाएँगे।

फ़ीलवान—कै जने हौ?

मैंने इशारे से बताया कि अकेले ही।

फ़ीलवान—तू हीं हौ? अकसरे? बाट पड़ो। तब का जहाज अस हमार हाथी भिजवाइन? नहके तो।

मैं—तब हम किस पर जाते?

फ़ीलवान—तू तो फिर मेमियाय लाग्यो। मुँह से बक्कुर नाहीं फूटत है?

मैं झुँझला कर चिल्ला उठा—अबे तो हम जाते कैसे?

फ़ीलवान—गोड़ नाहीं रहा? चला अउतो पैदल। एक आदमी के लिए ससुर एतत बड़ा हाथी के साँसत दिहिन। अभी दुपहरिया के हीँया से खैंचियन मनई मुर्दा अस ढोए लेए गैन है। इनाम-बकसीस माड़े में गवा, किछौ दमो नाहीं लेवे पाएन कि तुरतिन रपटाए दिहिन। हाथी नाहीं जानौ गदहा होय। दौड़ौते तो आयन हैं, नाहीं पहुँचबो न करित।

भला हुआ तो मैं था ही, उस पर उसकी बड़बड़ाहट से और बदन में आग लग गई। बस मैं मारे गुस्से के उबल पड़ा—क्यों बे हरामज़ादे, सुअर के बच्चे? यह क्या बेहूदा बक रहा है? साले मारे जूतों के अभी फ़र्श कर दूँगा।

फ़ीलवान—अरे सरकार! हम आपका थोड़े कुछ कहेन हैं। हम तो आपन दुखड़ा रोवत रहेन। का करी सरकार, दिन भर भूखन मर गएन? अउर कौनो ससुर एक छेदामो बकसीस नाहीं दिहिस। यही लिए तो हम कब्बों बरात के सवारी नाहीं चढ़ाइत है। मुल का करी, हम अपने मालिक का। जेही माँगत है वही का हथिया दे देत हैं।

ज़माने में क्या था ज़माना वतन का!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

न वह ज़र, न वह है ख़ज़ाना वतन का,
मिला ख़ाक में, सब ज़माना वतन का!
क़फ़स में भी मञ्ज़ूर, रहना है मुझको,
जो सय्याद हो आबो-दाना वतन का!
हमीं क्या, इसे जानती है ख़ुदाई,
ज़माने में क्या था, ज़माना वतन का!
वतन वाले सुन लें, कभी गोशे-दिल से,
असर में है डूबा, फ़िसाना वतन का!
ज़माना इसे ख़ूब दिल में समझ ले,
कभी आएगा, फिर ज़माना वतन का!
कभी थी, कभी था, ज़माने के लब पर—
कहानी वतन की, फ़िसाना वतन का!
ज़माने की सर पर बलाएँ भी आईं,
हुआ जब से दुशमन, ज़माना वतन का!
यह बिस्मिल से कहते हैं अहबाबे "बिस्मिल"
लिखा ख़ूब तुमने तराना वतन का!

ख़ैरियत हो गई कि इस वक़्त गुस्से में मैं डाँट-डपट कर गया। नहीं तो यह बेहूदा न जाने मुझे कितना परेशान करता। सच है, नीच नीचता ही से ठीक रहते हैं। बात के देवता कभी बात से मानते नहीं। एक ही घुड़की में हज़रत कैसे ढीले पड़ गए? फिर भी मेरी तबीयत इससे घबराती ही रही। बदमाश तो बदमाश, कहीं बदमाशी किसी वक़्त कर ही बैठे, कौन ठिकाना? इसी ख़्याल से मैं हाथी पर सामने की तरफ़ मुँह करके आगे नहीं बैठा। क्योंकि उस जगह हाथी की सूँड़ पहुँचने का बहुत अन्देशा रहता है। दूसरे यह भी धड़का था कि फ़ीलवान का इशारा पाकर हाथी अपनी सूँड़ में पानी भर कर मुझ पर न छोड़ दे। यही सब सोच-विचार कर मैं दुम के पास पीछे की ओर मुँह करके उकड़ूँ बैठा और हर क़दम के झोंके में लट्टू की तरह इधर-उधर लुढ़कने लगा। ईश्वर जाने उस जगह पर कोई बिजली का तार लगा हुआ था या हाथी ही कम्बख़्त अपना पिछला धड़ नचाता हुआ चलता था कि मैं किसी तरह अपने को सम्हाल ही नहीं पाता था। उस पर वह बदमाश फ़ीलवान अपने हाथी की बदमाशी का जो हाल बयान करने लगा तो मेरे प्राण सूख गए। कहने लगा—"बाबू जी जानयो बीस बरस से हम यू हाथी पर हन। हम ही एका चलाय पाइत है। अउर कौनो के मान के नाहीं है। एक दाँईं एक साहब सिकार के लिए एका जबरदस्ती मँगवाए पठइन। हम रहेन नाहीं। चरकटा का लेइ जाय के पड़ा। बस बीच डरें में तो हथिया बिगड़ा। चरकटा का अपने गरदन पर से टाँग पकड़ के खींच लिहिस। और साहब झट पेड़े से लटक गए। नाहीं उनहूँ के अचार निकारत। तब्बे से कोऊ एकरे किनारे नाहीं जात है। मल मल चै!"

मैं सिकुड़ कर ईश्वर का नाम लेता हुआ दुम की तरफ़ और सरक गया। और इस डरावने प्रसङ्ग को बदलने के लिए उससे पूछा—"अब कितनी दूर है?" मगर उसने सुना कुछ और ही। और लगा अपना राग अलापने—"का पूछेयो बरात कहाँ टिकी है। टिकिहै कहाँ, बस बगिया में। देहात में एतिक मनई के लिए कहूँ महल बना होत है? दुई-चार जने होंय तो कौनो हरवाहे के बखरी खाली कराय दीन जाए। मुल सैकड़न मनई के लिए बस बगिए सहारा जानो। मल! मल! ठोकर! हाँ गउवाँ में आज एक अउर बरात आई है। ठकुरन के होय। भया बुद्धूसिंह के हीयाँ। तौन बरगदवा वाला पेड़ वही लोग छेकाए हैं। मुल ऊ बरात नीक। गावें के होय तो का? उनके हीयाँ सुनित है नाचो होई। पतुरिया बुलावे के लिए लढ़िया पठइन हैं। अउर पाँड़े के हीयाँ बस टिड्डी अस सहर के मनई फाट पड़े। न नाच न फाच, न इनाम न एकराम। बात अलबत्ता पसेरी-पसेरी भर के सुन लो। अउर लड़ाई के हवाल न पूछो। छिन-छिन भर पर आफ़त। अबते सो हुकुम लगाइन कि छे-छे सेर के हिसाब से दस घोड़ा के दाना पठै दो। पाँड़े कहिन कि घोड़ा के कहे एक गदहो तो नाहीं लायो है। दाना का करिहो लैके। यही पर भवा उखमज। यह लोग कहिन नाहीं लायन नाहीं सही। हमरे हीयाँ दाना लीन जात है। हम बिना लिहे मानब न। पाँड़े कहिन अच्छा लाहो। जब ताँई भाँवर न होए जाई, हमही के चीज न देब। भल किहिन। पानी तक पिए के नाहीं दिहिन। अब भले भूखन फटकत होइहैं। ओह पर सहर के मनई बगिया में रहे के हवाल का जानें? कइयू जने के कमला लाग गा। तौन खजुआवत-खजुआवत देहियाँ भर आपन नीच डारिन। सुथना-उथना उनके सब ढोल होईगा। ई नाहीं जानत रहे कि देहाते में जूता धरे काँधे पर, पैजामा बाँधे मूँड़े पर, तब गुजर होत है। मल! मल! मल! का कह्यो? तू तो अस मिन्न से बोलत हो, अउर ओहपर ओहर मुँह किए हो, सुनी का हम आपन मूँड़? पानी? हाँ आज बरसा है। बरसत में तो अउर छीछालेदर भवा। सबै भीग गए। कइयू जने धारी अउर मुसैला में घुसर गए। एक जने के बैल मारिस तौन पड़ा चिल्लात रहे। सोय गयो बाबू जी का?"

मैं चुप रहा। इस बेहूदे के मुँह लगना ठीक नहीं मालूम हुआ। उस पर जब कलेजे में चिल्लाने का दम हो तब तो कोई इस बहरे से बात करे। वह कम्बख़्त इसी तरह रास्ते भर बड़बड़ाता रहा। रस्सा पकड़े-पकड़े मेरा हाथ कला गया। और झकझोरों से सारा बदन टूटने लगा। मारे सुस्ती के आँख अलग बन्द होने लगी। एकाएक मेरी पीठ पीछे की तरफ़ झुकी, और हाथी के पैरों से छपाछप की आवाज़ आने लगी। अँधेरे में एक दफ़ा ग़ौर से देखा तो मालूम हुआ कि हाथी एक नाले में उतर रहा है। दूसरे किनारे के चढ़ाव पर मैं हाथी की दुम की तरफ़ झुक पड़ा। झोंके में हाथ का रस्सा छूट

गया। हाथी की चाप के चभाचभ के साथ एक भचाक सी आवाज़ और हुई। और वैसे ही जाना कि हाय! हाय! दलदल के कीचड़ में मैं खोपड़ी के बल एकदम उल्टा खूँटे की तरह ग़प से गड़ गया।

४

आँख खुली तो ठीक अपनी नाक की सिधाई में आसमान के तारे दिखाई पड़े और अपने को नाले में चित्त लेटा हुआ पाया। सिर्फ़ सर पानी के बाहर ज़रा किनारे पर था और बाक़ी समूचा धड़ पानी के भीतर। समझ में नहीं आया कि मैं ऐसी जगह इस फ़ैशन से क्यों लेटा हुआ हूँ। मगर जब कुछ होश ठिकाने हुए तो याद पड़ा कि ओ हो! मैं तो हाथी पर से गिरा था। यही ग़नीमत हुई कि पानी से ज़रा ही हट कर दलदल में मेरी खोपड़ी धँस गई थी, नहीं तो वह बेचारी भी इस वक्त पानी के नीचे ही आराम करती। और बेहोशी में उसीके भीतर दम घुट कर मैं हमेशा के लिए ठण्ढा हो जाता। यों तो कीचड़ में भी यही बात हो सकती थी। मगर मालूम होता है कि गिरने के झोंके में शायद मैं बाद को कला-बाज़ी खा गया या मेरे सारे बदन का बोझ टाँगों की तरह मेरी खोपड़ी सम्हाल न सकी, इसीसे वह दलदल से उखड़ गई और इस तरह बेसहारे का होकर मेरे धड़ को पानी में लेट जाना पड़ा है। मगर मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि यह बातें मेरे अनजाने हुई होंगी। क्योंकि होश में मुझसे कभी ऐसी बेवक़ूफ़ी हो नहीं सकती थी।

पानी से किसी तरह निकला तो। मगर चेहरे और खोपड़ी पर एक अजब कपटोप चढ़ा हुआ पाया। टटोला तो जाना कि कीचड़ है। लाहौल विलाक़ूवत! ख़ैरियत थी कि अँधेरा इतना था कि हाथ तक सुझाई नहीं देता था; वरना देखने वालों का ख़्याल तो अलग रहा, मुझे ख़ुद ही बीच धारा में जाकर कपड़े पहने डुबकियाँ लगाते शर्म मालूम होती। न जाने किस अक़्ल के दुश्मन ने हाथी की सवारी ईजाद की है। चढ़ते ही माथा आसमान को चला जाए। बैठो तो बैठना आफ़त। बदन की चूल-चूल बिखर जाए। हौलदिल हो जाए, दिमाग़ चकरा जाए। जो कहीं चढ़ाव-उतार मिल जाए तो बस सीधे मौत के मुँह में। न एक इञ्च इधर और न एक इञ्च उधर। भला ऐसा जानवर सवारी के लिए रखना चाहिए? हरगिज़ नहीं; इसे तो फ़ौरन मार कर खा जाना चाहिए।

अब लीजिए, हाथी का कहीं भी पता नहीं। अँधेरे में जिसे हाथी समझ कर पास जाता था वह कोई न कोई पेड़ ही निकलता था। यह बड़ी मुसीबत हुई। क्योंकि मेरा असबाब उसी पर था और भीगे कपड़े पहने रहना मेरे लिए अब ग़ैर-मुमकिन हो गया। ईश्वर जाने इतनी देर तक पानी में पड़े रहने से मेरे बदन की नस-नस में ठण्ढक समा गई थी या सफ़र की थकान और हाथी के झकझोरों से मुझे सचमुच जूड़ी आ गई कि मैं बजते हुए तार की तरह एकाएक थरथराने लगा। हाथी पर मुझे अब भूल कर भी चढ़ने का शौक़ नहीं था, मगर कपड़े बदलने के लिए उसका ढूँढ़ना तो ज़रूरी था। पर ढूँढ़ता किधर? हर तरफ़ अँधियारा। ज़रा सी बाइसिकिल जो होती है उसमें अगर रात में लम्प न हो तो चालान हो जाए, मगर इतने बड़े पहाड़ ऐसे जानवर की दुम में लालटेन भी नहीं बाँधी जाती। सरासर अन्धेर है कि नहीं? एक तो हाथी साला योंही काला, उस पर उसके पैरों में नाल भी नहीं कि उसकी कुछ आहट ही मिले, तीसरे फ़ीलवान भी मिला तो बदमाश, बहिरा और बेवक़ूफ़ तीनों। जिसे हाथी पर से आदमी लुढ़क जाने की ख़बर न हो सकी तो वह अब चिल्लाने से कहाँ सुन सकता था? चिल्लाने के लिए दम भी तो चाहिए। और यहाँ सारा ज़ोर बदन की कँपकँपी में घुसा हुआ था। ऐसे ही गाढ़े वक्त पर ईश्वर याद आते हैं और वह भी ऐसे मौक़ों पर अपनी ईश्वरीय मदद पहुँचा कर अपने ईश्वरपन का झट सबूत दे देते हैं। बड़े उस्ताद हैं, ताकि दुनिया में उनका मान रहे। इसीलिए मुझे इधर-उधर कटे हुए कनकौवे की तरह भटकते-भटकते एक तरफ़ चूँ-चूँ की आवाज़ सुनाई दी, उसके बाद आदमियों की भनक मालूम हुई। गिरता-पड़ता पास पहुँचा तो एक बैलगाड़ी जान पड़ी। धन्य भाग! पूछने पर पता चला कि ठाकुर साहब की बरात में नाचने के लिए उस पर बी नसीबन मधनगरा ही जा रही हैं। मगर अफ़सोस, पाँच रुपए देने पर भी साज़िन्दों के पास कोई फ़ालतू जोड़ा मर्दाने कपड़े का न निकला। आख़िर बी नसीबन को दया आई। उसके नाचने वाले कपड़े अलग बँधे थे। उस बेचारी ने उसी को मुझे देकर उस वक्त मेरी जान बचाई। मरता क्या न करता? इस जूड़ी में मेरे भीगे हुए कपड़ों से वे लाख दर्जे अच्छे थे। अब जाकर कलेजे में थोड़ी सी गर्माहट पहुँची। और जाना कि मुझ पर सचमुच बुख़ार चढ़ा हुआ है। इसीसे सिर-दर्द के मारे मुझसे गाड़ी पर बैठा न रहा गया। सिकुड़ कर किनारे लेट गया। कुछ ही देर में मुझे दीन-दुनिया का कुछ भी होश नहीं रहा।

एकाएक हल्ले-गुल्ले से मेरी आँख खुली। मगर 'किरसन लाइट' की रोशनी में मेरी आँखें चौंधिया गईं। मालूम हुआ कि कोई मुझे ज़बरदस्ती गाड़ी पर से उतार कर एक तरफ़ घसीटे लिए जा रहा है। मेरे चारों तरफ़ आदमियों की भीड़ लगी हुई है। और सभी जोश में चिल्ला रहे हैं कि—"ठाकुरों की ऐसी-तैसी! उनके यहाँ के बाराती नाच देखें और हम लोग मक्खी मारें?" "वाह! ऐसा नहीं हो सकता। यहाँ भी नाच होना चाहिए।" "दो रण्डियाँ तो आई हैं। एक उन लोगों के लिए छोड़ दो और एक को यहाँ नचाओ।"......"हाँ-हाँ, ज़रूर नाच होगा।"......"बारात में पण्डिताई नहीं चल सकती।" "......आख़िर हम लोगों को बुलाया क्यों?" "हम तो ज़रूर नाच देखेंगे।"......"बस-बस इसी को ले चलो।" "......हाँ-हाँ, यह उससे अच्छी है। अच्छे कपड़े पहने हुए है। अजी ज़बरदस्ती ले आओ।"......

इतने में कोई बोला—"अरे! यह तो रण्डी नहीं, कोई मेहरा मालूम होता है।"

तब तक मेरे सर से चादर किसी ने खींच ली। वैसे ही सामने ससुर जी पर नज़र पड़ी। क्योंकि नाच देखने वालों में इस समय अगुवा वही हो रहे थे। फिर तो बौखलाहट में मेरे और उनके दोनों के मुँह से एक-दूसरे के स्वागत के लिए एक ही शब्द निकला:—

"लाहौल विलाक़ूवत!"

भला ऐसा भी शुभागमन किसी ने सुना होगा?

(क्रमशः)

* * *

जातीयता

गोलमेज़ परिषद ने जातीयता के भावों को ख़ूब प्रोत्साहित किया है। गोलमेज़ में भेजे गए जातीयता के समर्थकों को भारत में तो कोई पूछता भी न था, पर अब इसके ज़रिए उन्होंने भारत के राजनैतिक गगन में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। आज भारत तथा अन्य देशों की जनता उनके कार्यों की ओर बड़े ग़ौर से देख रही है। इन महाशयों ने भी ख़ूब रङ्ग दिखलाया है। इन्होंने जातीय माँगों को इतना बढ़ा दिया है, कि यदि उन्हें पूरा कर दिया जावे, तो राष्ट्रीयता का पता भी न चलेगा। जिन जातीय नेताओं को लॉर्ड इर्विन ने बड़ी खोज के बाद इस अवसर के लिए चुना है (और उनके कुछ सहयोगी जो भारत में मौजूद हैं) वे अपना काम बख़ूबी कर दिखा रहे हैं। और अभी तक विपक्षी दल ने इस आक्रमणकारी जातीयता का विरोध नहीं किया है। इसमें शक नहीं, कि यदि लॉर्ड इर्विन अपने ज़रीते में जातीयता की माँगों के सामने सर न झुकाते, तो यह जातीयता का आन्दोलन इतना ज़ोर न पकड़ता। जातीयता को तो जितना ही सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया जावे उतनी ही वह बढ़ती है।

ज़रा अखिल भारतवर्षीय मुस्लिम लीग की वार्षिक बैठक के अवसर पर दिए हुए सर मुहम्मद इक़बाल के व्याख्यान पर ध्यान दीजिए। जातीयता के भावों को भड़काने के लिए आपने अपनी सारी कल्पना-शक्ति ख़तम कर दी है। "इस्लाम का सङ्गठन" ही उनका आदर्श है। और इस आदर्श को कार्य-रूप देने के लिए वे पञ्जाब, पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, सिन्ध तथा बलूचिस्तान में एक सुदृढ़ मुस्लिम राज्य की स्थापना करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि "चाहे हम स्वराज्य की स्थापना ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर करें, चाहे साम्राज्य से अलग होकर; पर एक बात निश्चित है, वह यह कि भारत के मुसलमानों को पश्चिमोत्तर में एक मुस्लिम राज्य की स्थापना करनी पड़ेगी।"

ऐसे लोगों से साफ़-साफ़ कह देना चाहिए, कि भारत में आज ऐसा कोई स्वदेश-प्रेमी नहीं है, जो आपके विचारों पर ज़रा भी ध्यान देगा। स्वदेश-प्रेमी हिन्दुस्तान के अन्दर न "मुस्लिम राज्य" की स्थापना होने देंगे, न "हिन्दू-राज्य" की। "सङ्गठित मुस्लिम राज्य" का आदर्श वर्तमान प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों के विरुद्ध है, आधुनिक संसार के राजनैतिक विचारों के विरुद्ध है और सब से बड़ी बात तो यह है, कि वह भारत के राष्ट्रीय विचारों के विरुद्ध है। आज भारतवर्ष स्वाधीनता चाहता है, आज वह राष्ट्रीय तथा व्यक्तिगत स्वाधीनता के लिए लड़ रहा है। आज वह उस स्वाधीनता का भूखा है, जिसमें वह आत्मोन्नति कर सके और स्वच्छन्दता से अपने भावों को प्रकट कर सके। जहाँ तक आत्मोन्नति और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का सम्बन्ध है, स्वाधीन भारत प्रत्येक हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, जैन, पारसी तथा ईसाई की माँग का समर्थन करेगा, जिससे वे भारत में रह कर अपनी संस्कृति की उन्नति कर सकें। पर यदि सर मुहम्मद इक़बाल कहें, कि इसके लिए एक "सङ्गठित मुस्लिम राज्य" स्थापित किया जावे तो यह तो असम्भव है। इस मत-विशेष के समर्थन में उन्हें आज भारत की सारी राष्ट्रीय शक्तियों का सामना करना पड़ेगा। और उन्हें यह मालूम होना चाहिए, कि उन्हीं के धर्मावलम्बी भी इस विरुद्ध-दल में काफ़ी संख्या में मौजूद हैं, इसके प्रमाण के लिए बङ्गाल के मुसलमानों द्वारा निकाला हुआ घोषणा-पत्र मौजूद है। इसमें वे कहते हैं कि "कुछ धनी मुस्लिम भारत की ग़रीब जनता को बहकाने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम इसे चुपचाप नहीं देख सकते। मुस्लिम जनता जातीय चुनाव के विरुद्ध है। वह जातीय चुनाव कभी नहीं चाहती, इसमें उसका नुक़सान है।" यह राष्ट्रीयता का सिंहनाद है, इसका मतलब यह नहीं कि हम लोगों को हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल न करनी पड़ेगी। जातीयता तथा अल्प-संख्यक जातियों के प्रश्न को हमें ठीक अवश्य

"सङ्गठित मुस्लिम राज्य" का स्वप्न देखने वाले, सर मोहम्मद इक़बाल, बार-एट-लॉ; एम० एल० सी०

करना पड़ेगा, पर इस कार्य को सफलता से करने के लिए भारत के सच्चे प्रतिनिधि राष्ट्रीय भाव वाले हिन्दू तथा मुस्लिम नेताओं की आवश्यकता है। इस कार्य को पराधीन भारत की सरकार द्वारा बने हुए जातीयता के समर्थक हिन्दू या मुस्लिम सज्जन नहीं कर सकते। इन प्रश्नों को हल करने के लिए सब से पहिले स्वाधीनता प्राप्त करने की आवश्यकता है। और सब प्रश्न तो इसके बाद तय होंगे। सर मुहम्मद इक़बाल को यह याद रखना चाहिए, कि स्वाधीनता प्राप्त करने का केवल एक मार्ग है। वह है आत्म-बलिदान! स्वाधीनता पर प्राण देने वाले देश के विरुद्ध यदि साम्राज्य तथा जातीयता की सारी शक्तियाँ लगा दी जावें, तब भी वे उसे अपने क़ाबू में नहीं रख सकतीं!!

—'लिबर्टी' (अङ्ग्रेज़ी)

* * *

'भीरु तथा तिरस्कृत'

गत तीसरी जनवरी के सहयोगी 'इण्डियन सोशल रिफ़ॉर्मर' में एक पत्र छपा है, जिसका भावानुवाद इस प्रकार है:—

महाशय,

आपने पञ्जाब गवर्नर पर किए गए आक्रमण के सम्बन्ध में जो आलोचना की है, उसको पढ़ कर मुझे बहुत दुःख हुआ है। यह बहुत ठीक है कि "यह एक दुःखार्द्र नवयुवक का पागल कृत्य है, जिसको कि ठीक निशाना लगाना भी नहीं आता था।" परन्तु आप इसे "भीरु तथा तिरस्कृत" कैसे समझते हैं? सो मेरी समझ में नहीं आया। क्या आपका आशय यह है, कि यह कार्य ऑर्डिनेन्सों तथा लाठी-प्रहारों से अधिक "भीरु तथा तिरस्कृत" है? क्या आपके विचार में लाठी-प्रहार बहुत साहसपूर्ण तथा प्रशंसनीय कार्य है?

समय तथा स्थान का चुनाव इस कार्य को साधारणतया से अधिक किस प्रकार घृणित कर देता है? यह दूसरी बात है जो मेरी समझ में नहीं आई। क्या आज़ाद मैदान तथा शरद्-ऋतु का सुहावना प्रभात लाठी-प्रहारों के लिए बहुत उपयुक्त हैं? क्या शिमले की चोटी तथा बड़े दिनों का शुभ अवसर ऑर्डिनेन्सों के लिए बहुत ठीक है?

मैं मानता हूँ, कि यह "एक भ्रान्त युवक का पागल कृत्य है।" यह सच है कि यह कॉङ्ग्रेस के धर्म के विरुद्ध है; यह सम्भव है कि यह अपने उद्देश्य की पूर्ति में लाभ से अधिक बाधा पहुँचाएगा; परन्तु क्या इसी कारण से यह 'भीरु तथा तिरस्कृत' हो गया? दलील के लिए मान लीजिए कि सत्याग्रह असफल हो जाय (ईश्वर ऐसा न करें); फिर क्या कीजिएगा? अच्छा मान लीजिए कि त्रासवाद (Terrorism) भी बेकार है। परन्तु क्या ऑर्डिनेन्सों, लाठी-प्रहारों, तलवारों, बन्दूक़ों, हवाई जहाज़ों से गिराए गए बमों तथा जेल के अत्याचारों को चुपचाप भेड़ों की नाईं नत-मस्तक होकर सहने की अपेक्षा, दर्प का साहसपूर्ण मुक़ाबला करना, अतीव गौरवमय तथा सुन्दर न होगा?

मेरा आशय स्पष्ट है। मैं हिंसा का पक्ष समर्थन बिना कारण के नहीं करता हूँ। मैं अत्याचारी को त्रासित करने को "भीरु तथा तिरस्कृत" नहीं समझता। क्या डॉक्टर का ऑपरेशन हिंसा नहीं है? क्या 'फ़िनाईल' से बिचैले जन्तुओं का मारना हिंसा नहीं है? क्या इसी कारण से उनका भी बहिष्कार करना होगा? सत्याग्रह भी क्या है? यह भी एक दलील है, विरोध है। यह विचारवान पर असर करेगी, परन्तु अँधेरी रात के लुटेरों तथा भयानक जङ्गली भालुओं के विरुद्ध निष्फल होगी।

मैं भी इस कृत्य को इतना ही निन्दनीय समझता हूँ, जितना कि आप; परन्तु मेरा विचार यह है और देश—देश ही नहीं, वरन समस्त संसार गवर्नर पर किए गए आक्रमण से अधिक आक्रमण के कारणों को घृणित समझेगा। अन्त में, इस 'भीरु तथा तिरस्कृत' कार्य का कारण क्या है? कॉङ्ग्रेस? जिसके कारण से सैकड़ों सिर प्रति दिन फूटते हैं और सहस्रों मनुष्य चुपचाप नित्य जेलों को भरते हैं? अथवा महात्मा? जो कि अहिंसा का ही अवतार है, और जो सम्प्रति पिंजड़े में बन्द हैं? अथवा अत्याचारी बेलगाम की सरकार? चाहे इसे जो भी कहो—मनमानी राज्य-पद्धति, ऑर्डिनेन्स, अथवा लूट-मार!!

बम्बई
१ जनवरी, १९३१

आपका
'मैन' (आदमी)

[विशेषण उपयुक्त थे। यूनिवर्सिटियाँ पठन-पाठन का स्थान हैं और चान्सलर उपाधि-वितरण के समय विद्यार्थियों की शुद्ध हृदयता तथा आत्मगौरव पर विश्वास करके ही वहाँ उपस्थित हुआ था। आक्रमण एक स्थान-विशेष पर किया गया। अस्तु, असाधारण घृणा प्रकट करने के लिए वह विशेषण रक्खे गए थे, जिन पर कि पत्र-लेखक ने इतना रोष प्रगट किया है। पुलिस का कॉङ्ग्रेस वालों के प्रति बर्ताव दूसरा प्रश्न है। हमने इस सम्बन्ध में भी अपना मत समय-समय पर प्रकट किया है !

—सम्पादक इ० सो० रि०]

* * *

बर्मा में क्रान्ति की आग

बर्मा से जो समाचार आ रहे हैं, उनसे पता चलता है, कि पिछले सप्ताह में थरावाडी में सरकार के विरुद्ध सशस्त्र क्रान्ति की आग भड़क उठी है। सरकार की ओर से इस सम्बन्ध में जो 'कम्यूनिक' छापा गया है, उससे पता चलता है, कि क्रान्ति बहुत सङ्गठित थी। क्रान्तिकारियों ने यूरोपियन तथा बर्मी राज-कर्मचारियों को मृत्यु के घाट उतारा, जङ्गी शस्त्रास्त्रों को लूटा तथा सरकारी मकानों को आग लगाई।

हमें यह पता लगा कर कुछ इतमीनान हुआ है, कि यह क्रान्ति राजनैतिक नहीं है, तथा उसका देश के राजनैतिक मामलों से रत्ती भर भी सम्बन्ध नहीं है। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के बर्मी प्रतिनिधि यू बा पे के कथनानुसार बर्मा की क्रान्ति राजनैतिक नहीं, किन्तु आर्थिक है और यह केवल चावल के भाव में असाधारण कमी हो जाने से फूट पड़ी है।

गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के एक दूसरे प्रतिनिधि श्री० थायन ने क्रान्ति का कारण वर्णन करते हुए कहा है, कि क्रान्ति ने जिन विचारों को प्रकट किया है, वह बड़े महत्वपूर्ण हैं। मेरे विचार में "सरकार ने बर्मा में चावल का भाव गिरा देने की जो पॉलिसी चलाई है, वह ग़लत है। क्योंकि इसका अर्थ यह है कि सर्वसाधारण को, थोड़े से यूरोपियन मिल वालों के लाभ के लिए, नीचा दिखाया जाय, ताकि वह थोड़े दाम पर विदेशी व्यापारियों को चावल बेच सकें। चावल के भाव की बागडोर जिनके हाथ में है, वह सरकारी पिट्ठू हैं। आगे चल कर श्री० थायन ने यह भय प्रकट किया है, कि जिस प्रकार से ऑस्ट्रेलिया तथा कैनेडा के गेहूँ के मामले को तय किया गया था, यदि उसी प्रकार से बर्मा में चावल का मामला तय न किया गया, तो झगड़ा बढ़ जाने का भय है।

हमें आशा है कि सरकार के बड़े-बड़े कर्मचारी बर्मा का झगड़ा मिटाने के लिए इन शब्दों पर अवश्य ध्यान देंगे।

—"रियासत" (उर्दू)

* * *

दण्ड या परिशोध

श्रीयुत वल्लभभाई पटेल को बम्बई के प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने कारावास दण्ड दिया है। यह कुछ आश्चर्यजनक नहीं। इस अन्तिम दण्ड-विधान में केवल विचित्रता यह है कि पुलिस ने १७ (२) क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार अपराध सिद्ध करने के लिए रीमाण्ड पर रीमाण्ड लिया। यदि अभियोग एक्ट की धारा १७ (१) के अनुसार चलाया जाता, तो अधिक से अधिक दण्ड छः मास का था। मैजिस्ट्रेट के कथनानुसार जो प्रमाण १७ (२) के अनुसार अपराध सिद्ध करने के लिए पेश किए गए हैं, वे सब खोखले हैं। तो भी उसके विचार में कई ऐसे साङ्केतिक अपराध बम्बई हाईकोर्ट के निर्णय के अनुसार इस बात के लिए पर्याप्त हैं, कि उसकी दूसरी धारा के अनुसार नौ मास तथा पहली के अनुसार छः मास (दोनों कारावास-दण्ड एक साथ आरम्भ) का दण्ड दिया जाय। वर्तमान दशा में श्री० वल्लभभाई पटेल को दण्ड इस कारण से दिया गया है, कि उन्होंने कॉङ्ग्रेस के सभापतित्व का साङ्केतिक भार ग्रहण किया और कॉङ्ग्रेस की कार्य-पद्धति के अनुसार क़ानून-विरुद्ध ठहराई गई कार्यकारिणी समिति (Working Committee) के भी वे सभापति हुए।

सरदार वल्लभभाई पटेल

कॉङ्ग्रेस तथा उसकी सहायक समितियों को वर्तमान समय में इस प्रकार से तङ्ग करने की मूर्खता पर हम कई बार पहले भी आलोचना कर चुके हैं

—"हिन्दू" (अङ्ग्रेज़ी)

* * *

"कोउ नृप होय हमैं का हानी"

आजकल भारत की जनता तो दूसरे काम में लगी हुई है और उसे भारत के पदाधिकारियों के आने-जाने के विषय में बहुत कम फ़िक्र है। परन्तु जो मनुष्य इस विषय पर ज़रा भी ध्यान देते हैं, उनको लॉर्ड इरविन की जगह पर लॉर्ड वेलिङ्गडन की नियुक्ति का समाचार सुन कर कुछ ताज्जुब होगा। जो लोग इस विषय में कुछ जानकारी रखते थे, उन्होंने इस सम्बन्ध में सर मेल्कम हेली से लेकर मिस्टर मैकडॉनल्ड तक का नाम लिया था, पर लॉर्ड वेलिङ्गडन का नाम तो इनमें से किसी को सूझा तक न था। इसका सब से बड़ा कारण तो यह था, कि ब्रिटिश-सरकार ने एक रूढ़ि स्थापित कर दी थी, कि भारत का भूतपूर्व गवर्नर वाइसराय के पद के लिए नियुक्त न किया जावे। पर आख़िर यह रूढ़ि की शृङ्खलता तोड़ी गई और लॉर्ड वेलिङ्गडन भारत के वाइसराय होकर शीघ्र ही यहाँ पधारेंगे। इस नियुक्ति के विषय में कमाण्डर केनवर्दी कहते हैं कि "हमें यह देख कर बहुत अफ़सोस है कि पार्लामेण्ट का सब से बलिष्ठ दल इस पद के लिए अपना प्रतिनिधि नहीं भेज सका।" दूसरी तरफ़ भारत की जनता कहती है, कि "यह बड़े अफ़सोस की बात है कि भारत, जो पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहा है, अभी तक अपने शासन को चलाने के लिए और अपनी नीति का परिपालन करने के लिए अपने वाइसराय की नियुक्ति नहीं कर सकता।" कुछ और भारतवासी श्रीयुत चिन्तामणि की तरह उदास भाव से कहते हैं कि "यह नियुक्ति अच्छी है या बुरी, यह कहना मुश्किल है; क्योंकि लॉर्ड वेलिङ्गडन से बेहतर मनुष्य भी मौजूद हैं, जो इस पद के लिए नियुक्त किए जा सकते थे और इनसे ख़राब भी मनुष्य मौजूद हैं, जो कि सम्भवतः इस पद के लिए चुने जा सकते थे।"

श्रीयुत बी० शिवराव की उक्ति में कुछ तत्व अवश्य है। वे कहते हैं—"इस समय किसी व्यक्ति-विशेष की नियुक्ति पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। लॉर्ड वेलिङ्गडन अपने कार्य में सफल होंगे या नहीं, इस प्रश्न का उत्तर उसी समय दिया जा सकता है, जब यह मालूम हो जावे कि भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य मिलेगा या नहीं।" वे सच कहते हैं। यदि भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य मिल गया, तो यह आशा है कि लॉर्ड वेलिङ्गडन अपने कार्य को ठीक तरह से चला सकेंगे, पर यदि भारत को यह अधिकार न मिला तो लॉर्ड वेलिङ्गडन चाहे अपनी सारी बुद्धि और सारी शक्ति लगा देवें, तब भी भारत की प्रजा उनके शासन-काल में शान्ति से न रहेगी। बम्बई के निवासी लॉर्ड वेलिङ्गडन से पूर्णतया परिचित हैं। इसमें शक नहीं कि और लोगों की तरह उनमें भी कुछ सत्यप्रियता अवश्य है। पर यह भी माना जा सकता है, कि जब वे पहिले भारत में गवर्नर थे तब उन्होंने भारत की दशा सुधारने का प्रयत्न किया हो। पर वे अक्सर ऐसे छोटे-छोटे अधिकारियों के कहने में आ जाते थे, जो कि भारत की उन्नति के विरोधी थे! इसीलिए वे बम्बई की जनता से असन्तुष्ट रहे और बम्बई की जनता उनसे।

अब तो समय ही दूसरा है। इस समय भारत की राष्ट्रीयता की लहर को कोई रोक नहीं सकता। यदि लॉर्ड वेलिङ्गडन न्याययुक्त शासन चलावेंगे तब भी भारत का फ़ायदा है और यदि वे दमन-नीति का सहारा लेंगे, तब भी भारत का फ़ायदा है। क्योंकि उससे अशान्ति की अग्नि और भी भड़केगी। चाहे जो आवे या जावे, अब तो राष्ट्रीयता का धारा-प्रवाह रुक नहीं सकता। वह तो अपने ध्येय को पाकर ही रुकेगा !

इङ्गलैण्ड के लिबरल तथा कन्ज़रवेटिव दल के समाचार-पत्र इस नियुक्ति से बहुत ख़ुश हैं। उन्हें यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई है कि कोई मज़दूर-दल वाला इस पद के लिए नहीं चुना गया है। कुछ भारतवासी भी, जो आजकल इङ्गलैण्ड में हैं, इस नई नियुक्ति से बहुत ख़ुश हैं। पर इससे क्या, वे तो प्रत्येक नए पदाधिकारी की तारीफ़ करने के लिए तैयार रहते हैं। भारत के असली प्रतिनिधि तो जेल में हैं। और असल में उनसे इस नई नियुक्ति से कुछ मतलब भी नहीं है। वे तो जानते हैं, कि अभी उन्हें ऑर्डिनेन्सों का मुक़ाबला करना है। फिर ऑर्डिनेन्स निकालने वाला कोई भी व्यक्ति-विशेष हो, इससे क्या। और जब सन्धि का मौक़ा आवेगा, उस समय भी उन्हें कोई व्यक्ति-विशेष से मतलब नहीं है। वे कोरे शब्दों में कभी विश्वास ही नहीं करते, इसलिए वे ऊपरी सत्य-प्रियता या धार्मिकता के फन्दे में फँस ही नहीं सकते। रही उन लोगों की बात, जो कि कॉङ्ग्रेस के बाहर हैं, सो वे तो अभी से तारीफ़ों के पुल बाँधे दे रहे हैं। श्रीयुत नटेसन कहते हैं कि "लॉर्ड इरविन ने अपने उदार-चरित द्वारा भारत को महान सङ्कट से बचाया है और मैं समझता हूँ कि लॉर्ड वेलिङ्गडन भारत को और उपनिवेशों की उच्च श्रेणी तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे।" इस विचार को प्रकट करते समय क्या नटेसन महोदय ने लॉर्ड इरविन के

(शेष मैटर ४० वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

मनोरञ्जन और शिक्षा

तम्बाकू से हानि

तम्बाकू भारत की निजी उपज नहीं है। विदेशियों के पदार्पण के साथ-साथ देश में इसका प्रचार और इसकी उपज बढ़ी है। विदेशों में और विशेष कर यूरोप और अमेरिका जैसे सभ्य देशों में तम्बाकू को जला कर सिगरेट अथवा सिगार के रूप में प्रयोग करते हैं; परन्तु भारत में सूँघ कर, खाकर और पीकर अर्थात् तीन प्रकार से व्यवहृत होता है। वैज्ञानिकों और विशेषकर आयुर्वेदाचार्य तथा डॉक्टरों का कथन है कि तम्बाकू खाने से जितनी हानि करता है, उतनी सिगरेट, हुक़ा और सिगार आदि द्वारा पीने से नहीं करता; क्योंकि अग्नि-स्पर्श से उसका विष अथवा हानिकारक तत्व भस्म हो जाता है। अतः उन व्यक्तियों को, जो तम्बाकू पीने के विरोधी और खाने के पक्षपाती हैं, वैज्ञानिकों के इस सिद्धान्त को मनन करना चाहिए। हमारे इस कथन से यह न समझ लेना चाहिए, कि सिगरेट, सिगार आदि के पीने में कोई हानि ही नहीं है। तम्बाकू चाहे खाया जाय या पिया जाय अथवा सूँघा जाय; हानि प्रत्येक दशा में अनिवार्य है और इसे वैज्ञानिकों, आयुर्वेद-शास्त्रियों तथा डॉक्टरों ने एक स्वर से स्वीकार किया है। परन्तु दुःख के साथ लिखना पड़ता है, कि भारत में इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है और युवक दिन पर दिन इसके अधिक आदी होते जा रहे हैं। अतः इसके प्रचार को रोकने का विशेष प्रयत्न होना चाहिए। संसार-प्रख्यात धनी तथा अमेरिकन कारख़ानेदार मिस्टर फ़ोर्ड धूम्रपान के कट्टर विरोधी हैं। वे "माई फ़िलासॉफ़ी ऑफ़ इण्डस्ट्री" (My Philosophy of Industry) नामक पुस्तक में लिखते हैं, "कि धूम्रपान तम्बाकू में एक ऐसी वस्तु मिश्रित है, जो नवयुवकों के लिए महान घातक है। मेरे कारख़ाने में एक भी कर्मचारी धूम्रपान नहीं करता।" कैसा भी व्यक्ति हो, किसी भी देश का रहने वाला हो और कैसा भी उद्योग-धन्धा करता हो, तम्बाकू उसे निश्चय ही हानिकारक होगा। इसका विष रुधिर में मिल कर उसे निर्बल कर देता है और इसको सेवन करने वाले व्यक्ति की उत्साह-शक्ति नष्ट हो जाती है। इसका जो सुस्पष्ट और सर्व-विदित कुप्रभाव दाँत, ओंठ, हथेली और जिह्वा पर पड़ता है, वह उसके विष की तीव्रता का पूरा-पूरा परिचय दे देता है। धूम्रपान करने वाले अथवा तम्बाकू खाने वाले व्यक्ति के स्वाँसोच्छ्वास से एक बहुत ही अरुचिकर दुर्गन्धि आती है और दाँत काले पड़ जाते हैं। सारांश यह कि इससे देश, जाति और व्यक्ति—किसी को भी तनिक लाभ नहीं है। इससे स्वास्थ्य और धन—दोनों को क्षति पहुँचती है। अतः यह सर्वथा त्याज्य है और इसी में देश का कल्याण है।

परन्तु सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है, कि भारत की अशिक्षित जनता की कौन कहे; यहाँ शिक्षित और उन्नत विचार के महानुभावों में भी इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है। भारत में केवल खाने और शीरे के साथ मिला कर पीने वाला तम्बाकू पैदा होता है। सिगरेट, सिगार आदि यहाँ विदेशों से आता है; इस प्रकार सन् १६२४-२५ में ४१ लाख रुपए की लागत का ४० लाख ५६ हज़ार पाउण्ड तम्बाकू भारत में विदेशों से आया है। सिगरेट आदि वस्तुएँ आयात-कर अत्यधिक होने से भारत में मँहगी पड़ती हैं, अतः अब चेष्टा की जा रही है कि भारत में ही तदुपयोगी तम्बाकू पैदा किया जाए। यह तो हुई "अशिक्षित" और "असभ्य" भारत की बात। अब ज़रा इङ्गलैण्ड की कथा भी सुन लीजिए। इङ्गलैण्ड धूम्रपान में प्रति वर्ष करोड़ों रुपया ख़र्च करता है। वहाँ पर इस दुर्व्यसन की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। सन् १६२४ ई० में वहाँ ४३,७२,६३,०४४ पाउण्ड सिगरेट्स ख़र्च हुई थीं और सन् १६२८ ई० में यह संख्या ४४,२६,८८,६६० पाउण्ड तक पहुँच गई। सिगार पीने वाली स्त्रियों की संख्या भी प्रति दिन बढ़ती जा रही है। पिछले पाँच वर्षों में धूम्रपान करने वाली स्त्रियों की संख्या में ५ प्रति शत वृद्धि हुई है। ब्रिटेन में प्रति दिन ४३,४१,६८४ सिगरेट ख़र्च होती है और प्रति वर्ष ३,८२,६३,६६,६६० सिगार फूँक दिए जाते हैं। इस प्रकार स्त्री-पुरुष सब मिला कर प्रत्येक व्यक्ति पीछे ६१२ सिगार खपत होते हैं। अमेरिका में यह अनुमान ८२६ तक ही पहुँचा है। ब्रिटेन में सिगरेट का धन्धा करने वाले व्यक्तियों की संख्या ४,६८,१७१ है।

—हरेन्द्र याज्ञिक

*　*　*

चिऊँटी की आयु

चिऊँटी की पूर्ण आयु औसत से ८ और १० वर्ष होती है, किन्तु बहुत सी चिऊँटियाँ, जिनको पकड़ कर क़ैद कर रक्खा गया था, १५ वर्ष की अवस्था तक जीवित रह सकी थीं।

*　*　*

कभी पानी न पीने वाले पशु

चीन, जापान तथा अन्य पूर्वीय देशों में एक प्रकार का हिरन होता है, जिसे अङ्गरेज़ी में Gazalle कहते हैं। और दक्षिणी अमेरिका में एक पशु होता है, जो ऊँट की तरह होता है, परन्तु इसके पीठ में कूबड़ नहीं होता और इसे अङ्गरेज़ी में Lama कहते हैं। इन प्राणियों को कभी तृषा नहीं सताती। उनके शरीर की रचना ही इस प्रकार की है कि प्यास की उन्हें किञ्चित भी आवश्यकता नहीं होती।

*　*　*

(३६४वें पृष्ठ का शेषांश)

ε ऑर्डिनेन्सों का तथा भारत के अधिकार के सम्बन्ध में दिए हुए भारत-सरकार के ख़रीते का और जेलों में सड़ने वाले ५०,००० सत्याग्रही क़ैदियों का भी कुछ ख़याल किया था? क्या ये सब यह दर्शाते हैं, कि लॉर्ड इरविन भारत को महान सङ्कट से बचा रहे हैं? जब भारतवासी ही ख़ुद ऐसी बातों को तारीफ़ करने को तैयार हैं, तो विदेशी वाइसराय क्यों ऐसी बातें न करें?

—"बॉम्बे क्रॉनिकल" (अङ्गरेज़ी)

*　*　*

[श्री० रमेशप्रसाद जी, बी० एस-सी०]

दाँत चमकते क्यों हैं?

दाँत एक प्रकार की हड्डी है। बिना कृत्रिम पॉलिश के हड्डियाँ चमकती नहीं हैं। दाँतों का चमकना एक विशेषता रखता है। इनके चमकने का कारण एक विषैला गैस 'फ़्लोरिन' है। 'फ़्लोरिन' बड़ा ही ज़हरीला गैस होता है। इसके संसर्ग में कोई भी पदार्थ अपनी असली अवस्था में नहीं रह सकता। सभी जीवित पदार्थों को यह खा डालता है। तो भी इसका बहुत थोड़ा अंश दाँतों की चमक बनाए रखने के लिए आवश्यक है। रासायनिक संयोग में यह पदार्थ हमारे भोजन पदार्थों से इन्हें मिल जाता है।

*　*　*

मलाई दूध के ऊपर क्यों उठ आती है?

दूध में तेल और चर्बी के बहुत ही छोटे-छोटे कण मिले रहते हैं। ये पानी से हलके होते हैं, किन्तु ये इतने छोटे होते हैं, कि उन्हें दूध के सतह पर आने में बहुत समय लग जाता है। ये बहुत धीरे-धीरे तैरते हैं। इसी कारण जो दूध कुछ देर तक रख छोड़ा जाता है, उसकी सतह पर मलाई जम जाती है। जब दूध मथा जाता है, तब ये कण एक साथ मिल जाते हैं और मक्खन रूप में परिणत हो जाते हैं।

*　*　*

साबुन मैल क्यों छुटाता है?

साबुन में एक ऐसा पदार्थ होता है, जो वस्तुओं से जकड़ जाता है। जिस प्रकार तेल पानी के ऊपर फैल जाता है, उसी प्रकार यह पदार्थ भी वस्तुओं पर फैल जाता है। जब आप हाथ धोते हैं, तब इस पदार्थ की एक पतली झिल्ली आपके हाथ के चमड़े पर फैल जाती है। यदि आपके हाथ में किसी प्रकार का मैल लगा हो, तो यह उसके नीचे भी प्रवेश करता है और मैल को ढीला बना देता है, जिसमें वह पानी से धोया जा सके। इसके बाद जब आप पानी से हाथ धोते हैं, तब साबुन की झिल्ली मैल के साथ धुल जाती है और आपका हाथ साफ़ हो जाता है।

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says :

[illegible]

Your album is a production of great taste & beauty & has come to me as a pleasant surprise as to what a press in Allahabad can turn out. Moon worshipped & visit to the temple are particularly charming pictures, [illegible] & full of details. I congratulate you on your remarkable enterprise & thank you for a present which has given & will continue to give me a great deal of pleasure.

Yours [illegible] B. J. Dalal.

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjea of the Allahabad High Court :

. . . The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consumate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITTRAWALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice Allahabad High Court :

. . . I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail :

. . . The Album ADARSH CHITTRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letter-press in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture.

W. E. J. Dobbs, Esq., I. C. S., District Magistrate and Collector, Allahabad :

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad Agricultural Institute :

. . . I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie, Esq., Director of Public Instruction, U. P. :

. . . I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
डाक-व्यय अतिरिक्त

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

Registered No. A—2085

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

सम्पादक :—

श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ... ६) रु०

छः माही चन्दा ... ५) रु०

तिमाही चन्दा ... ३) रु०

एक प्रति का मूल्य ... ≡)

Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—

'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; २२ जनवरी, १९३१ | संख्या ५, पूर्ण संख्या १७

नए षड्यन्त्र-केस में पुलिस के अत्याचारों का भण्डाफोड़

(पृष्ठ ५ में देखिए)

बम्बई की १९वीं 'बार कौन्सिल' की प्रधाना

श्रीमती स्नेहलता हज़रत

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—२२ जनवरी, १९३१ | संख्या ५, पूर्ण संख्या १७

स्वतन्त्रता की वेदी पर एक और स्वयं सेवक की आहुति !

भारत को स्वराज्य की मरीचिका प्रदान करने की घोषणा !!

किसानों की गंगातट पर लगान न देने की भीषण प्रतिज्ञा !!!

श्री० सुभाषचन्द्र बोस को सात दिन का कारावास

(२१ वीं जनवरी की रात तक आए हुए 'भविष्य' के खास तार)

लन्दन में प्रधान सचिव की घोषणा

लन्दन में २० तारीख़ को गोलमेज़ परिषद की बैठक ख़तम हुई। भारत के प्रतिनिधियों ने अपने काम की ओर ब्रिटिश प्रतिधियों की उदारता की प्रशंसा की। उधर प्रधान सचिव ने भी अपने अन्तिम भाषण में भारत के इन प्रतिनिधियों की तारीफ़ के पुल बाँध दिए। उन्होंने कहा कि यदि हम भारत को स्वराज्य न देना चाहते तो हम उन्हें स्वराज्य देने का वचन ही क्यों देते। अपने भाषण के बाद आपने ब्रिटिश सरकार की ओर से भारत के सम्बन्ध में निम्न-लिखित घोषणा की :—

"ब्रिटिश सरकार का यह मत है कि भारत की केन्द्रीय तथा प्रान्तीय शासन की ज़िम्मेदारी भारतीयों को दे दी जाय। परन्तु यह कार्य एकदम नहीं हो सकता, इसलिए वर्तमान शासन-प्रणाली तथा भारत की भावी शासन-पद्धति के बीच के समय में वहाँ की सरकार को सुदृढ़ अवस्था में रखने के लिए हमें कुछ विशेष अधिकार अपने हाथ में रखने पड़ेंगे, जो विशेष अवसरों का सामना करने के लिए तथा अल्प-संख्यक जातियों की स्वाधीनता की रक्षा करने के लिए रक्खे जावेंगे। इस समय में ब्रिटिश सरकार हर तरह से यह कोशिश करेगी कि इन अधिकारों का किसी तरह से भी दुरुपयोग न किया जावे।

"ब्रिटिश सरकार को यह अच्छी तरह मालूम है कि ऐसी शासन-प्रणाली को चलाने के लिए अभी बहुत सी ऐसी बातों की आवश्यकता है, जो कि अभी तक तय नहीं की गई हैं, परन्तु आशा की जाती है कि इस घोषणा के पश्चात यह कार्य भी बहुत सरलता से हो सकेगा।

"ब्रिटिश सरकार को यह जानकर ख़ुशी है कि इस परिषद के प्रस्तावों से इङ्गलैण्ड के सारे दल सहमत हैं। सब दल यह चाहते हैं कि भारत में फ़ेडरल गवर्नमेण्ट स्थापित की जावे, जिसमें भारतीय रियासतें भी शामिल हों। केन्द्रीय सरकार में दो प्रमुख सभाएँ हों। इस विषय-सम्बन्धी अन्य बातें रियासतों के महाराजाओं से बात-चीत करके तय की जा सकती हैं कि इन रियासतों का भारतीय सरकार से क्या सम्बन्ध होगा। जो अधिकार उन्होंने भारतीय सरकार को दे दिए हैं, उनके विषय में वे उस सरकार के ज़िम्मेदार होंगे। शेष विषयों में उनका सम्बन्ध ब्रिटिश सरकार से रहेगा। वायसराय उनके और ब्रिटिश सरकार के बीच में मध्यस्थ रहेंगे।

"प्रान्तीय शासन में भारतीयों को पूर्ण अधिकार दिए जावेंगे। केन्द्रीय सरकार इनके कार्य में बहुत कम विषयों में हस्तक्षेप कर सकेगी। गवर्नर के हाथ में बहुत कम अधिकार रक्खे जावेंगे, जिनका उपयोग अवसरों पर किया जावेगा।

"ब्रिटिश सरकार का यह मत है कि भारत की हिन्दू तथा मुस्लिम जातियों को चाहिए कि वे अपने आपस के झगड़े ख़ुद ही तय कर लें और अपने निश्चित अधिकारों के विषय में हमें शीघ्र सूचना दें।

"यदि इस घोषणा के बाद कॉङ्ग्रेस के नेता इस परिषद के कार्य में भाग लेने की इच्छा प्रकट करेंगे, तो हम सहर्ष उनकी सहायता स्वीकार करेंगे।"

* * *

श्री० सुभाषचन्द्र बोस को ७ दिन की क़ैद की सज़ा

अमलुगा का १८वीं जनवरी का समाचार है, कि बरहामपुर से मालदा जाते समय रास्ते ही में, श्री० सुभाषचन्द्र बोस को दण्ड-विधान की १४४वीं धारा के अनुसार मालदा ज़िले में प्रवेश करने की मनाही कर दी गई। श्री० बोस ने आज्ञापत्र की अवहेलना की, और वे गिरफ़्तार कर लिए गए। इस सम्बन्ध में उन्हें ७ दिन को सादी क़ैद की सज़ा दी गई। वे राजशाही जेल भेज दिए गए हैं।

किसानों की भीषण प्रतिज्ञा

१४वीं जनवरी को 'शोलापुर-दिवस' के अवसर पर सवेरे एक जुलूस खद्दर-भण्डार से श्रीमती उमा नेहरू के नेतृत्व में सङ्गम तक गया जिसमें हज़ारों की तादाद में किसान सम्मिलित थे। गङ्गा तट पर मेले के मैदान में राष्ट्रीय झण्डा लगा कर एक सभा की गई जहाँ, मालूम हुआ है, किसानों ने बिना कॉङ्ग्रेस की आज्ञा के लगान न देने की दृढ़ प्रतिज्ञा की। किसानों में अधिकांश इलाहाबाद ज़िले के थे। कहा जाता है कि इलाहाबाद ज़िले के उन स्थानों में जहाँ कर-बन्दी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है, पुलिस ने दमन प्रारम्भ कर दिया है।

—भावनगर का एक समाचार है कि यहाँ के जिन व्यापारियों ने विदेशी वस्त्र की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाने की प्रतिज्ञा की थी, वे इस समय अपनी प्रतिज्ञा से पीछे हट रहे हैं। इस सम्बन्ध में पिकेटिङ्ग मण्डल के स्वयंसेवक, कुछ प्रमुख नागरिक तथा कुछ महिलाएँ अनशन कर रही हैं।

—नई देहली का समाचार है कि आज लेजिस्लेटिव एसेम्बली की बैठक में, सर जॉर्ज रेनी का इण्डियन पोर्ट एक्ट एमेण्डमेण्ट बिल (Indian Port Act Amendment Bill) बग़ैर किसी बहस के पास हो गया। दो और बिल इण्डियन मर्चेण्ट शिपिङ्ग एमेण्डमेण्ट बिल (Indian Merchant Shipping Amendment Bill) तथा काउण्टर फ़ीट करेन्सी बिल (Counterfeit Currency Bill) सिलेक्ट कमेटी में विचार के लिए भेज दिए गए। सर ब्राइम चाम्सलर ने पार्टनर-शिप एमेण्डमेण्ट लॉ बिल (Partnership Amendment law Bill) पेश किया। सभासदों को चूँकि कई कमिटियों की बैठक में उपस्थित होना था इसलिए अधिवेशन आध ही घण्टे में समाप्त कर दिया गया।

—बम्बई का समाचार है कि शोलापुर-दिवस की गोलियों के शहीद श्रीयुत राम भगवान की स्मृति में आज बम्बई की तीन मिलों में पूर्ण हड़ताल रही। सन्ध्या के समय श्री० राम भगवान की अर्थी का जुलूस सारे शहर में निकाला गया।

—लाहौर का समाचार है कि गवर्नर गोली-काण्ड के अभियुक्त श्री० हरिकृष्ण का मामला आज सेशन्स में पेश हुआ। आज सेशन्स जज के साथ ६ जूरी के सभासद भी विराजमान थे। जूरी के सभासदों में ४ यूरोपियन तथा २ भारतवासी हैं। आरम्भ में वकील-सफ़ाई ने कहा कि चूँकि जूरी के सात सभासदों का सरकारी महकमों से सम्बन्ध है, इस कारण जूरी के सभासद बदल दिए जाएँ। इस पर सेशन्स जज ने एक सभासद को बदलने की आज्ञा दे दी। इन महाशय का सम्बन्ध पञ्जाब सेक्रेटेरियट से है। सरकारी वकील ने अपने प्रारम्भिक भाषण में यूनीवर्सिटी हाल की, २३ दिसम्बर वाली घटना बयान की। सरकार की ओर से करनल भरुचा, तथा करनल हार्पर नेलसन ने गवाही दी।

—अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी में उत्तरी अहमदाबाद के म्युनिसिपल कमिश्नरों की प्रार्थना पर, छुट्टी की लिस्ट से सम्राट का जन्म-दिवस हटा दिए जाने का प्रस्ताव फिर पेश किया गया है। गत जून में इसी प्रकार का एक और प्रस्ताव पास किया गया था। उस पर भी विचार किया जायगा।

—बम्बई का २१वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत काञ्जी मास्टर, जो कारावास होने के कारण बम्बई कारपोरेशन से निकाल दिए गए थे, कल के चुनाव में फिर कारपोरेशन के सभासद चुन लिए गए।

—लखनऊ को १४वीं जनवरी की ख़बर है कि अमीनाबाद पार्क में हाफ़िज़ अब्दुल रज़ाक़ की दूकान पर धरना देने के अभियोग में ४ महिलाएँ गिरफ़्तार की गईं। गत १२वीं जनवरी को इसी अभियोग में २ स्वयंसेवक भी गिरफ़्तार किए गए हैं। १२वीं जनवरी को महिलाओं की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में हड़ताल मनाई गई थी।

—लखनऊ का १४वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के द्वितीय डिक्टेटर श्री० सी० बी० गुप्त एडवोकेट, बॉयकॉट कमिटी के अध्यक्ष श्री० कैलाशपति शर्मा, तथा सेक्रेटरी श्री० परमेश्वरीदयाल को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। इसके अतिरिक्त उन्हें दो सौ रुपया जुर्माने की भी सज़ा हुई है, जिसके न देने पर उन्हें एक माह की क़ैद भुगतनी पड़ेगी। श्री० जगदम्बाप्रसाद को केवल ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कराची का १४वीं जनवरी का समाचार है कि 'स्टुडेण्ट्स ब्रदरहुड' के प्रथम डिक्टेटर श्री० जगजीवन गिरफ़्तार कर लिए गए। गत १२वीं जनवरी को रामबाग़ में भाषण देने के सम्बन्ध में उन पर मामला चलाया जायगा।

—पटने का १२वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० हरशङ्करदास वकील, श्री० दयानन्दसिंह वकील, श्री० अशर्फ़ी कुमार, श्री० बैजनाथसिंह तथा श्री० भुवनेश्वरसिंह को एक-एक साल की क़ैद की सज़ा दी गई है। पथरीघाट-आश्रम (बेतिया) के १४ स्वयंसेवकों को लगानबन्दी आन्दोलन में भाग लेने के अभियोग में ६-६ माह की सज़ा दी गई है। नमसौल (मुङ्गेर) के श्री० रामकिशोरसिंह फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—लाहौर का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि, पानीपत कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० सुमेरचन्द्र गुप्त गत ११वीं जनवरी को गिरफ़्तार कर लिए गए। इस सम्बन्ध में जनता की ओर से एक जुलूस निकाला गया, जिस पर पुलिस ने लाठियाँ चलाईं। इसके फल-स्वरूप ६० मनुष्य घायल हुए। १ व्यक्ति की हालत नाज़ुक है।

—अमृतसर का १३वीं जनवरी का समाचार है कि कटरा अहलूवालिया की एक विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देते हुए ११ स्वयंसेवकों को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया है। व्यापारी ने दूकान बन्द कर दी, और कहा जाता है, उसने शहर भी छोड़ दिया है।

—पेशावर का १३वीं जनवरी का समाचार है, कि चारसदा में, विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते हुए १३ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है कि घटनास्थल पर एक भीड़ इकट्ठी हो गई, और उसने एक सिपाही पर हमला किया। इससे उस स्थान पर सिपाहियों की संख्या बढ़ा दी गई। बाज़ार के मुख्य दरवाज़े बन्द कर दिए गए। मुख्य-मुख्य दूकानें भी बन्द हो गईं।

गत १४वीं जनवरी को यहाँ चारसदा से आए हुए ६ स्वयंसेवक, विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर धरना देते हुए गिरफ़्तार किए गए। कुल ७ गिरफ़्तारियाँ हुईं। १२वीं जनवरी को यहाँ के विदेशी कपड़े के व्यापारियों की एक सभा हुई। इसी समय, जबकि सभा हो रही थी, चारसदा के स्वयंसेवकों ने पीपल-मण्डी, चौक बाज़ार और किस्साख़ानी नामक तीन स्थानों पर धरना जारी किया। पुलिस ने उन्हें हट जाने को कहा। स्वयंसेवकों के हटने से इन्कार करने पर, पुलिस ने उन पर लाठियाँ चलाईं, जिसके फल-स्वरूप कुछ स्वयंसेवकों को सख़्त चोट आई। सेवा-समिति के स्काउटों ने उन्हें अस्पताल पहुँचाया। एक स्वयंसेवक गिरफ़्तार किया गया। घटनास्थल पर हथियार-बन्द पुलिस का पहरा बिठा दिया गया है।

—कालीकट (मद्रास) का १३वीं जनवरी का समाचार है, कि केरल की तीसरी डिक्टेटर श्रीमती सैयुन्नी ऐम्न के नेतृत्व में कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवकों के एक दल ने, जिसमें ४ महिलाएँ भी शामिल थीं, समुद्र के किनारे झण्डा-वन्दन किया। उत्सव के बाद महिलाओं ने, झण्डे के साथ एक जुलूस भी निकाला, जिसमें बड़ी संख्या में लोग सम्मिलित हुए। इसके फल-स्वरूप २ महिलाएँ और दो पुरुष स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—मद्रास का १३वीं जनवरी का समाचार है, कि गोडाउन स्ट्रीट पर, विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर धरना देते हुए १४ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं। ट्रिप्लिकेन में पाइक्रोफ़्ट-रोड पर भी धरना प्रारम्भ किया गया है। जिससे शहर में सनसनी फैल गई। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर भीड़ को हटा दिया, और एक स्वयंसेवक को गिरफ़्तार किया। गत १४वीं जनवरी को, जिस समय कुछ स्वयंसेवक गोडाउन स्ट्रीट पर धरना दे रहे थे, एक भीड़ वहाँ इकट्ठी हो गई। पुलिस ने बल-प्रयोग द्वारा उसे घटनास्थल से हटाया।
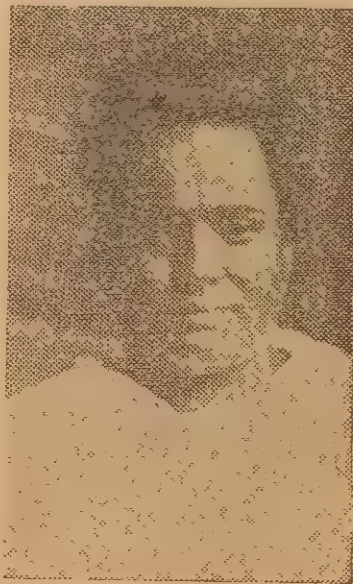
'फ़्री प्रेस' के सर्वस्व श्री० एस० सदानन्द, जिन्हें तीन माह की क़ैद की सज़ा दी गई है।

—मुज़फ़्फ़रपुर का १६वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ बसन्तपट्टी के कॉङ्ग्रेस-आश्रम पर पुलिस के कुछ गुर्खा सिपाहियों ने धावा किया। ५ स्वयंसेवक जो वहाँ उपस्थित थे, गिरफ़्तार कर लिए गए। इनमें तीन पीछे छोड़ दिए गए, किन्तु दो हवालात में रख लिए गए हैं।

—सीतापुर का १२वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० नन्दकिशोर, श्री० शिवदयाल, श्री० शिवदीन, श्री० जगमोहनसिंह तथा श्री० अङ्गने को गत १२ वीं जनवरी को नमक-क़ानून के अनुसार ४-४ माह की कड़ी क़ैद तथा २५-२५ रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई है।

—बीदर के सम्वाददाता को विश्वस्त-सूत्र से पता चला है कि कानपुर के श्री० मेहता, जो इस समय सीतापुर के ज़िला-जेल में हैं, अनशन कर रहे हैं।

—करीमगञ्ज का १३वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीमती गिरिबाला गुप्त, बियानी बाज़ार में १४४वीं धारा के विरुद्ध भाषण देते समय गिरफ़्तार कर ली गईं।

कुमारी ख़ुरशेद बेन को चार माह की सज़ा

अहमदाबाद का १२वीं जनवरी का समाचार है कि कुमारी ख़ुरशेद बेन नौरोजी को, जो भारतीय दण्ड-विधान की १४३ वीं धारा और ११वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार गत २री जनवरी को ढोलका नामक गाँव में गिरफ़्तार की गई थीं, चार माह की सादी क़ैद और १५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर उन्हें डेढ़ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा भोगनी पड़ेगी। आप 'ए' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

असेम्बली के अस्थायी अध्यक्ष श्री० चेट्टी के घर पर धरना

नई दिल्ली का १४वीं जनवरी का समाचार है, कि असेम्बली का सेशन शुरू होने के दो घण्टे पहले श्री० चेट्टी के घर पर, जो कि असेम्बली के अस्थायी अध्यक्ष चुने गए थे, उन्हें असेम्बली में आने से रोकने के लिए धरना दिया गया। पुलिस तुरन्त घटनास्थल पर पहुँच गई। एक भीड़ भी वहाँ इकट्ठी हो गई। जब श्री० चेट्टी, एक पुलिस सार्जेण्ट के साथ असेम्बली की ओर चलने लगे तो स्वयंसेवकों ने उन्हें बाधा पहुँचाई। तब पुलिस ने स्वयंसेवकों को पकड़ कर रोक लिया और तब मोटर घुमा कर असेम्बली पहुँचाई गई। उनके मकान पर धरना देते हुए १३ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं। महिला स्वयंसेवकों ने धरना जारी रक्खा है।

—पेशावर का १७वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने चारसदा के १४ स्वयंसेवकों को विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देने के अभियोग में ३-३ माह की कड़ी क़ैद और २०-२० रुपया जुर्माने की सज़ा दी है।

—कलकत्ते का १३वीं जनवरी का समाचार है कि बङ्गाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के श्री० इन्दुभूषण बनर्जी, को बड़े बाज़ार के पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में ५०) रुपया जुर्माने अथवा एक माह की क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० विभूतिभूषण मुकर्जी को भी २०) रुपया जुर्माने अथवा ८ दिन की क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का १३वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० अमिय भट्टाचार्य को बिना प्रेस और प्रिण्टर के नाम के ख़ास पर्चे छापने के अभियोग में, प्रेस एक्ट के अनुसार २५) रुपया जुर्माने अथवा १५ दिन की क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का १२वीं जनवरी का समाचार है कि बड़े बाज़ार में विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर धरना देने के अभियोग में २ महिलाएँ और १० पुरुष स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—लाहौर का १६वीं जनवरी का समाचार है कि बज़ाज़ हट्टा पर धरना देते समय ४२ देवियाँ गिरफ़्तार कर ली गई हैं। वहाँ के प्रमुख कार्यकर्त्ता लाला पिण्डीदास की पुत्री श्रीमती स्वदेशकुमारी तथा श्रीमती तुलसी भी इनमें शामिल हैं। कहा जाता है, श्रीमती स्वदेशकुमारी तथा अन्य दो बालिकाओं ने, जब दो मुसलमान महिलाओं से विदेशी वस्त्र न ख़रीदने की प्रार्थना की, तो व्यापारियों ने उन्हें गालियाँ दीं। १० स्वयंसेवक और ३ लड़के भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कलकत्ते का १४वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के तीसरे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने दो महिलाओं को, कुलियों को विदेशी वस्त्र की गाँठ ले जाने से रोकने के अभियोग में सौ-सौ रुपया जुर्माने की सज़ा अथवा ४ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है। तीन स्वयंसेवकों को भी इसी अभियोग में ५०-५० रुपया जुर्माने अथवा एक-एक माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई हैं।

'प्रताप' के सम्पादक को ६ मास की सज़ा

कानपुर का १९वीं जनवरी का समाचार है, कि 'प्रताप' के सम्पादक श्री० प्रकाशनारायण शिरोमणि के मामले का फ़ैसला, जेल ही में कर दिया गया। आपको ६ माह की कड़ी क़ैद और ५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई। अदालत में किसी को आने की आज्ञा न थी।

भड़ोंच में लाठी-प्रहार

भड़ोंच का १७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ शोलापुर-दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया। सन्ध्या समय एक बड़ा भारी जुलूस निकाला गया। पुलिस ने जुलूस पर लाठियों की वर्षा की। ५ व्यक्ति घटनास्थल पर गिरफ़्तार किए गए। क़रीब १०० स्वयंसेवकों को चोटें आई हैं। ढोलीकुई बाज़ार में भी लाठियाँ चलाई गईं। तीन स्वयंसेवकों की अवस्था चिन्ताजनक है। तीन छोटे-छोटे लड़कों को भी सख़्त चोटें आई हैं।

—गत १९वीं जनवरी का समाचार है कि गोरखपुर की टाउन कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० महेश शरण बी० ए०, एल्-एल् बी०, चार अन्य मनुष्यों के साथ गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। कहा जाता है, कि इन गिरफ़्तारियों के बाद लोगों ने जुलूस निकाला। हड़ताल भी मनाई गई।

—करद का १६वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट ने श्रीयुत बगलिल को ३ माह की कड़ी क़ैद और १००) रु० जुर्माने अथवा एक मास की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है। वे 'बी' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—जैकोबाबाद का १६वीं जनवरी का समाचार है, कि १४४वीं धारा के विरुद्ध कार्य करने के अभियोग में पुलिस ने यहाँ ८ व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया है। इनमें ५ स्वयंसेवक जुलूस बना कर बाज़ार में ग़ैर क़ानूनी नमक बेचने जा रहे थे, और इसी के सम्बन्ध में वे गिरफ़्तार किए गए। एक स्वयंसेवक गाँधीबाग़ में सरकारी आज्ञा के विरुद्ध झण्डा फहराने जा रहा था। वह दो दर्शकों के साथ बाग़ के दरवाज़े ही पर गिरफ़्तार कर लिया गया।

श्रीयुत बलदेव गजरा यह दरयाफ़्त करने कि वे स्वयंसेवक किस धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं, तथा गिरफ़्तार व्यक्तियों के भोजन की व्यवस्था करने के लिए पुलिस स्टेशन पर गए, किन्तु सब इन्सपेक्टर ने उन्हें धक्के देकर निकाल दिया। इन्सपेक्टर ने वहाँ के डिक्टेटर तथा कुछ अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं को शहर छोड़ देने के लिए कहा, किन्तु उन लोगों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया है।

—मथुरा का ८वीं जनवरी का समाचार है, कि गत ५वीं जनवरी को प्रेममहाविद्यालय प्रेस, वृजवासी प्रेस, सत्याग्रह आश्रम तथा कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस की तलाशियाँ ली गईं। वृजवासी प्रेस के प्रिण्टर श्री० रघुनन्दनप्रसाद गिरफ़्तार कर लिए गए। दूसरे दिन, सत्याग्रह आश्रम, जमुना प्रिण्टिङ्ग वर्क्स, तथा प्रेममहाविद्यालय के दर्ज़ी विभाग के विद्यार्थियों के रहने के स्थानों की तलाशियाँ ली गईं। 'वृजवासी' के सम्पादक प्रोफ़ेसर कृष्णस्वरूप तथा सहायक सम्पादक श्री० नरोत्तमप्रसाद नागर गिरफ़्तार किए गए। गत १४वीं जनवरी को फिर प्रेम महाविद्यालय के ऑफ़िस की तलाशी ली गई, और पुलिस कुछ पत्र उठा ले गई।

—बम्बई का १८वीं जनवरी का समाचार है, कि भूलेश्वर की अखिल भारत स्वदेशी सभा के ऑफ़िसों की तलाशियाँ ली गईं। वहाँ की सिटी पुलिस अनेक काग़ज़-पत्र उठा कर लेती गई। ७ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता भी गिरफ़्तार किए हैं।

—पूना का १६वीं जनवरी का समाचार है कि 'पूना युवक सङ्घ' के डिक्टेटर श्री० शिवाजी राव पाठक 'युवक सङ्घ बुलेटीन' प्रकाशित करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए। उन्हें प्रेस-ऑर्डिनेन्स की १८वीं धारा के अनुसार ४ माह की कड़ी क़ैद और २००) रु० जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। उन्होंने अदालत की कार्रवाई में कोई भाग नहीं लिया। वे यरवदा जेल में रक्खे गए हैं।

—लखनऊ का १२वीं जनवरी का समाचार है कि अमीनुद्दौला पार्क में ग़ैर-क़ानूनी नमक बनाते समय कुछ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए।

—लखनऊ का १६वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी की डिक्टेटर श्रीमती श्यामरानी साहनी, अपनी अवस्था के साथ गिरफ़्तार कर ली गईं—कहा जाता है कि ये गिरफ़्तारियाँ शोलापुर-दिवस के अवसर पर दी गई वक्तृताओं के सम्बन्ध में की गई हैं।

—अलीगढ़ का १४वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० जगदम्बाप्रसाद, श्री० कुँवरसिंह श्री० पुरुषोत्तमदास, श्री० भगवतीप्रसाद, श्री० भोलासिंह और ठाकुर टोडरसिंह गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। ठाकुर टोडरसिंह जो अभी विचाराधीन क़ैदी हैं, 'बी' श्रेणी में रक्खे गए हैं। भोलानाथ को ११वें ऑर्डिनेन्स की २री धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और पचीस रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई है।

—अलीगढ़ का १७वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने उस मामले का फ़ैसला कर दिया, जिसमें ठाकुर टोडरसिंह, श्री० पुरुषोत्तमदास अग्रवाल और श्री० कुँवरसिंह १७ (२) धारा के अनुसार अपराधी ठहराए गए थे। ठाकुर टोडरसिंह को १८ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा तथा १००) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा भोगनी पड़ेगी। अन्य दो अभियुक्तों को १५-१५ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अमृतसर का १९वीं जनवरी का समाचार है, कि एक गाड़ी को जो, विदेशी वस्त्र की गाँठों को स्टेशन लिए जा रही थी, कुछ स्वयंसेवकों ने रोका, और वे उसे घसीट कर शहर की ओर ले चले। इसमें ६ महिलाओं ने भी योग दिया। सभी मिल कर गाड़ी को जलियाँवाले बाग़ की ओर ले चले। रास्ते में पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उन्हें रोका, और सबों को गिरफ़्तार कर लिया।

करमन डेवढ़ी में भी, एक विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना दिया गया। पुलिस ने इस सम्बन्ध में ३ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया है। ख़बर है कि उस दूकान के मालिक ने बॉयकाट-कमिटी से सुलह कर ली है।

—लाहौर का २०वीं जनवरी का समाचार है कि जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में जुलूस निकालने के सम्बन्ध में जो १२ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए थे उनके मामले का फ़ैसला कर दिया गया। श्री० पुरुषोत्तमलाल सोंधी, के० सन्तानम् तथा श्री० दुनीचन्द को ढाई-ढाई माह की क़ैद की सज़ा दी गई है। वे 'ए' श्रेणी में रक्खे गए हैं। श्री० ज्ञानचन्द मोहता, श्री० नन्दकिशोर तथा पिण्डीदास को साढ़े तीन मास की सज़ा दी गई है। वे 'बी' श्रेणी में रक्खे गए हैं। श्री० ठाकुरदास को साढ़े तीन मास की सज़ा दी गई है और वे 'सी' श्रेणी में रक्खे गए हैं। श्री० अमीर पहलवान, श्री० बशीर महमूद श्री० महावीरसिंह तथा श्री० प्रकाशचन्द को ढाई-ढाई माह की सज़ा दी गई है, और वे 'सी' श्रेणी में रक्खे गए हैं। इन सबों को २५-२५) रुपए जुर्माना अथवा दो सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा भी दी गई है।

—कलकत्ते का १९वीं जनवरी का समाचार है, कि पुलिस जब कुछ महिला अभियुक्तों को, जिन्हें मैजिस्ट्रेट ने सज़ाएँ दे दी थीं, जोराबगान से जेल की ओर लिए जा रही थी, तो कुछ लोगों ने उनके रास्ते को रोक लिया। इस कारण पुलिस और जनता में भिड़न्त हो गई। तीन व्यक्ति घटनास्थल पर गिरफ़्तार किए गए।

कलकत्ता पुलिस-एक्ट के अनुसार एक पुरुष तथा दो महिलाएँ पिकेटिङ्ग के अभियोग में गिरफ़्तार की गई हैं।

—मदारीपुर का १७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ ५ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं। इन पर, अब्दुर्रहमान नामक एक व्यक्ति से गाँजा छीन लेने का अभियोग लगाया गया है। इनमें एक जो छोटा बालक है, छोड़ दिया गया है।

—मद्रास का १९वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० सुब्बाराव तथा अन्य २१ स्वयंसेवक, जो गत १२वीं जनवरी को गोडाउन स्ट्रीट पर धरना देने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे, उन लोगों के मामले का फ़ैसला कर दिया गया। सबों को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ाएँ दी गई हैं।

कुछ और स्वयंसेवक पिकेटिङ्ग के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—लखनऊ का १९वीं जनवरी का समाचार है कि, पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार, ४ महिलाओं को १२५) रुपया जुर्माना अथवा ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—श्रीमती श्यामरानी साहनी को ६ मास की सादी क़ैद की सज़ा और २००) रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर १ माह की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

—मोतिहारी का १३ वीं जनवरी का समाचार है कि कीतूराम नामक एक स्वयंसेवक धरना देते समय गिरफ़्तार कर लिया गया है। कहा जाता है कि पुलिस ने उसे मारा भी है

—किसनगञ्ज का १५वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ क़रीब १२ स्वयंसेवक क्रिमिनल प्रोसिडियर एक्ट की ५५वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार एक अकाली सिक्ख युवक भी गिरफ़्तार किया गया है। वे २८ तारीख़ तक के लिए हिरासत में रक्खे गए हैं।

—गत २०वीं जनवरी का एक स्थानीय समाचार है कि युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के भूतपूर्व सदस्य तथा 'सर्वेण्ट्स ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी' के सदस्य श्री० वेङ्कटेशनारायण तिवारी, लगानबन्दी के सम्बन्ध में एक भाषण देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए।

अखिल एशियाई महिला-परिषद्

लाहौर का १९वीं जनवरी का समाचार है कि—अखिल एशिया महिला-परिषद में, १० एशियाई देशों की महिला-प्रतिनिधि उपस्थित थीं। तीन अन्य महादेशों से भी महिलाएँ, इसमें भाग लेने आई थीं। मण्डी की रानी ने कपूरथला की महारानी की ओर से परिषद का उद्घाटन किया। आपने अपने भाषण के अन्त में ज़ोरदार शब्दों में कहा—"हमें समाज की प्राचीन रूढ़ियों को तोड़ कर, जो हमारी उन्नति में बाधा पहुँचा रही है, नवीन ज्योति की ओर बढ़ना चाहिए।"

जेरूज़ेलम सीरिया, ईराक़, तेहरान, अफ़ग़ानिस्तान फ़ारिस आदि देशों की महिलाएँ प्रतिनिधि बन कर आई थीं। नेपाल से ३, बर्मा से २, सीलोन से १० तथा जापान से २ महिलाएँ आई थीं। चीन से कोई महिला-प्रतिनिधि नहीं आई थी इसलिए येन हौन ने चीन की ओर से भाषण दिया। पञ्जाब सरकार की ओर से सर जोगेन्द्रसिंह ने परिषद् का स्वागत किया।

श्री० नरीमन रिहा कर दिए गए

बम्बई का १४वीं जनवरी का समाचार है, कि हाईकोर्ट की आज्ञानुसार, श्री० के० एफ़० नरीमन नासिक जेल से रिहा कर दिए गए।

—कराची का १३वीं जनवरी का समाचार है कि 'कराची कॉमर्स एण्ड सिपर्स चेम्बर' के सेक्रेटरी श्री० सेठ हरीदासलाल जी कराची के ४थे डिक्टेटर चुने गए हैं।

—बम्बई का १२वीं जनवरी का समाचार है कि विलापार्ले के ज़िला मैजिस्ट्रेट ने दण्ड-विधान की १४४वीं धारा के अनुसार एक आज्ञापत्र निकाला है, जिसमें शोलापुर के शहीदों के ऊपर सहानुभूति दिखाने के लिए, एक सप्ताह तक सभाएँ करने और जुलूस निकालने की मुमानियत की गई है। कहा जाता है कि खार, सान्टा-क्रुज और घाटकोपर में भी इसी सम्बन्ध में १४४वीं धारा जारी की गई है।

—गत १३वीं जनवरी को युक्त प्रान्त के एक असा-धारण सरकारी गज़ट में यह सूचना प्रकाशित हुई है:—"गवर्नर-इन-कौन्सिल का यह विचार है कि खेरी ज़िले की कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ, सरकारी क़ानून की अवज्ञा करती हैं इसलिए १९०८ के क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट की १६वीं धारा के अनुसार उक्त कॉङ्ग्रेस कमेटियाँ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी जाती हैं।"

—नई दिल्ली का १२वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत खड्गबहादुर सिंह के मामले की ज़िरह समाप्त हो गई। पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा कि अभि-युक्त ने गुर्खा स्वयंसेवकों को भर्ती करा कर तथा जवाहर-दिवस के सम्बन्ध के इश्तहार अपने पास रख कर, कॉङ्ग्रेस की कार्यवाही में भाग लिया है। श्री० खड्ग-बहादुर ने अदालत की कार्यवाही में कोई भाग नहीं लिया। मामले की सुनवाई समाप्त होने पर अभियुक्त ने अदालत को इस बात की सूचना दी, कि जेल में 'सी' श्रेणी के क़ैदियों के पीटे जाने के कारण, वह गत १३ जनवरी से अनशन कर रहा है और जब तक इसके लिए उत्तरदायी जेल के अधिकारियों को दण्ड नहीं दिया जायगा, तब तक वह अनशन न छोड़ेगा।

—मैमनसिंह का १६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी का दफ़्तर तथा स्वयंसेवकों के शिविरों की तलाशियाँ ली गईं। उन स्थानों से महात्मा गाँधी तथा स्व० सी० आर० दास के चित्र भी हटा लिए गए हैं। पुलिस राष्ट्रीय झण्डा भी अपने साथ ले गई।

—अलीगढ़ का १४वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के डिक्टेटर टोडरसिंह की पुनः गिरफ़्तारी की बात सुन कर वहाँ की जेल के राजनैतिक क़ैदियों ने बड़ा उपद्रव मचाया था। वे राष्ट्रीय गीत गाते और जेल के नियमों को पालन करने से साफ़ इन्कार करते थे। कहा जाता है कि टोडरसिंह 'बी' श्रेणी में रक्खे गए थे, इसीसे राजनैतिक क़ैदियों ने इतना उपद्रव मचाया था, किन्तु जेल के अधिकारियों के समझाने-बुझाने से मामला शान्त हो गया है।

—लखनऊ का गत १४वीं जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने हिन्दी दैनिक 'आनन्द' के दफ़्तर पर, श्रीदामोदर प्रेस पर, जहाँ उक्त पत्र छपता है, तथा उक्त पत्र के सम्पादक पं० महेशनाथ शर्मा के मकान पर धावा किया। कहा जाता है कि इस धावे का उद्देश्य, वह साइक्लोस्टाइल प्रेस प्राप्त करना था, जिसके द्वारा कॉङ्ग्रेस के बुलेटीन छापे जाते थे। बहुत खोज करने पर भी पुलिस का उद्देश्य सिद्ध न हो सका।

—अहमदाबाद का १४वीं जनवरी का समाचार है, कि शोलापुर के शहीदों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शनार्थ साबरमती जेल के सभी राजनैतिक क़ैदियों ने उपवास किया।

त्याग-मूर्ति पं० मोतीलाल नेहरू का हाल का चित्र जो उनकी रुग्णावस्था में दक्षिणेश्वर में लिया गया था।

—पटना का १२वीं जनवरी का समाचार है, कि सरकार ने हज़ारीबाग़ ज़िले की, लगानबन्दी से सम्ब-न्ध रखने वाली संस्थाओं को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया है।

—मध्य-प्रान्त और बिहार के सत्याग्रहियों के ऊपर, अक्टूबर १९३० तक होने वाले आर्थिक दण्ड का कुल जोड़ १,४४,०००) रु० है।

असेम्बली के नए सभापति

—नई दिल्ली का १७वीं जनवरी का समाचार है, कि सर इब्राहीम रहमतुल्ला असेम्बली के अध्यक्ष निर्वा-चित हुए हैं।

एक माता की हार्दिक कामना

कहा जाता है कि जिस समय विट्ठलदास जवेरी को क़ैद की सज़ा दी गई, उस समय उनकी माता श्रीमती बलीबाई जवेरी भी अदालत में उपस्थित थीं। आप अपने पुत्र को सज़ा पाते देख अत्यन्त आनन्दित हुईं। आपने "बॉम्बे क्रॉनिकल" के प्रतिनिधि से कहा :—

"मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे पुत्र को देश की स्वाधीनता के लिए कष्ट सहने का सुयोग प्राप्त हुआ है। मेरे तीन और पुत्र हैं। किन्तु वे अभी बच्चे हैं।

"मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि वे भी देश के लिए त्याग करेंगे। मेरे लिए वह अवसर बड़े आनन्द का होगा, जब मैं अपने उन तीनों पुत्रों को भी अपने बड़े भाई का अनुसरण करते देखूँगी।"

ग़रीबों के हृदय में भी महात्मा जी और कॉङ्ग्रेस के प्रति कितनी भक्ति है। देश के लिए त्याग करने की भावना उनमें कितनी मात्रा में है, इसका एक उदाहरण यहाँ पर दिया जाता है :—

वर्धा में मरोतीकला नामक एक ग़रीब मज़दूर है। कॉङ्ग्रेस के लिए लोगों को चन्दे देते देख, उसे भी चन्दा देने की इच्छा हुई। किन्तु दुर्भाग्यवश उस बेचारे के पास केवल १ या २ पैसे थे। कॉङ्ग्रेस के लिए इन ताँबे के टुकड़ों को देते उसे लज्जा आई। वह इतने कम पैसे चन्दे में न दे सका। किन्तु उस दिन से वह कड़ाके की मेहनत करने लगा। एक माह के भीतर ही वह एक रुपया कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस में चन्दा दे आया। धनवानों के तोड़ों से ग़रीब के एक रुपए का मूल्य कहीं अधिक है।

—पटना का १७वीं जनवरी का समाचार है, कि बिहार प्रान्त के डिक्टेटर तथा अखिल भारतवर्षीय कॉङ्-ग्रेस कमिटी की कार्यकारिणी समिति के सदस्य, श्री० दीपनारायणसिंह जी, अपनी सज़ा की ६ माह की अवधि पूरी करने पर, हज़ारीबाग़ जेल से छोड़ दिए गए।

—पटने का १७वीं जनवरी का समाचार है कि गत १२वीं जनवरी के झाल्दा के एक मेले में, जिसके लिए १४४वीं धारा के अनुसार निषेधाज्ञा जारी कर दी गई थी, गोली चल गई। कहा जाता है, सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट और पुलिस के ऊपर आक्रमण किया गया। फल-स्वरूप पुलिस ने फ़ायरें कीं, जिससे ४ मनुष्य मरे और अनेक घायल हुए। पुलिस के कुछ लोग भी घायल हुए हैं।

—अजमेर का १४वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के विदेशी कपड़े के व्यापारियों की दुकानों पर धरना देने वाले स्वयंसेवकों को पीटने के विरोध में, तथा उन व्यापारियों को अपने विदेशी कपड़े की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाने को राज़ी करने के लिए, ६ स्वयंसेवकों ने अनशन आरम्भ किया है। वे विदेशी कपड़े की दूकानों के सामने बैठे हैं। एक स्वयंसेवक ९ दिन पहले से अनशन कर रहा है। वह बहुत कमज़ोर हो गया है।

—ख़बर है कि प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार ज़मा-नत माँगे जाने पर लाहौर के 'गिरिधर-प्रेस' ने अपना काम बन्द कर दिया है।

—बम्बई का १४वीं जनवरी का समाचार है कि नए प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार, फ़्री प्रेस जरनल के सम्पादक से, २,०००) रु० की ज़मानत फ़्री प्रेस बुलेटीन प्रेस के लिए और २,०००) रु० की ज़मानत, उसके मुद्रक और प्रकाशक की हैसियत से माँगी गई है।

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

नए षड्यन्त्र केस में पुलिस के अत्याचारों का भण्डाफोड़

"मिसेज़ कर्टिस की हत्या, जलि ँवाला बाग़ तथा पेशावर का बदला है"

अभियुक्त का सनसनीपूर्ण बयान

लाहौर षड्यन्त्र केस

लाहौर का १३वीं जनवरी को दस बजे, स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने लाहौर षड्यन्त्र केस के २६ अभियुक्त पेश किए गए। इक़बाली गवाह इन्द्रपाल ने आरम्भ में ही जजों से प्रार्थना की, कि मैं पुलिस के क़ब्ज़े में नहीं रहना चाहता, इसलिए मुझे जुडीशियल हवालात में भेज दिया जाय।

मि० सलीम (जज)—तुम क्या चाहते हो ?

इन्द्रपाल—मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैंने पहले-पहल पुलिस के सामने एक बयान दिया था। पुलिस ने वह बयान तोड़-मरोड़ कर मैजिस्ट्रेट के सामने दिलवाया। अब मुझे विवश किया जा रहा है, कि मैं वह झूठा बयान यहाँ भी दूँ। परन्तु मैं झूठ बोलने के लिए तैयार नहीं हूँ। इस समय तक मैंने जो बयान दिया है, वह सच है और आगे भी सच कहूँगा। पुलिस यह विचार न करे कि मैं विपक्षी हो गया हूँ। मेरे बयान में केवल २५ प्रतिशत मिलावट है। मैं यह नहीं चाहता, कि झूठ बोल कर किसी को फँसा दूँ।

मि० सलीम—आपने सच बोलने की शपथ खाई है, आप सच बोलिए।

गवाह—मुझे क़िले में दो महीने तक, बयान याद करने को दिया गया था। आज भी वह बयान मेरे कमरे में पड़ा है। इसके अतिरिक्त दूसरे इक़बाली गवाहों के बयान भी मुझको पढ़ने के लिए दिए गए थे, ताकि इक़बाली गवाहों के बयानों में परस्पर विरोध न हो जाय।

लाला शामलाल वकील ने कहा कि इस इक़बाली गवाह के कमरे की तलाशी शीघ्र ही ली जानी चाहिए, क्योंकि प्रायः इक़बाली गवाहों के बयान एक-दूसरे को पढ़ा दिए जाते हैं। और गवाह यह मानता है, कि सारे गवाहों के बयान उसके कमरे में पड़े हैं।

गवाह—मुझे पुलिस ने ये बयान इसलिए दिए थे, कि मैं परस्पर विरोध को दूर करके, बयान दूँ।

वकील सफ़ाई—इन सब बातों को नोट करने के पश्चात, अदालत को शीघ्र ही कार्यवाही करनी चाहिए।

सरकारी वकील—इसने जो बयान दिया है वह कुछ-कुछ ठीक है। हमें किसी बात से डरना नहीं चाहिए, और न पुलिस के ही सम्बन्ध में कोई बुरी बात सोचनी चाहिए।

अभियुक्त—सी० आई० डी० के इन्सपेक्टर, ख़्वाजा ताजदीन चाबियाँ लेकर क़िला में गए हैं, वे कमरे की तलाशी लेकर बयान वहाँ से उठा ले जाएँगे।

सरकारी वकील—हम यह नहीं चाहते कि गवाह कोई झूठी बात कहे, किन्तु जिस बात का इसे पता है, वही सच-सच कहे।

वकील सफ़ाई—जो कुछ गवाह ने कहा है, उसे अच्छी प्रकार से नोट कर लिया जाय।

मि० सलीम—तुम जब अदालत में आओ तो केवल वही बात कहो, जिसका तुम्हें पता हो और जो सच हो। यदि तुमको कोई शिकायत हो तो अदालत से करो।

पुलिस का अत्याचार

गवाह—यदि मेरी निम्न शिकायत दूर कर दी जाय, तो बाक़ी मुझे कोई शिकायत नहीं रहेगी।

मेरी गिरफ़्तारी के दस-बारह दिन पश्चात मैं बीमार हो गया था, जिसके कारण मैं बहुत दुर्बल हो गया था। मैंने पुलिस को जो बयान दिया था, वह १६० पृष्ठ लम्बा था। अब १६ पृष्ठों का एक बयान मुझे रटने के लिए दिया गया है। चार पुलिस वाले प्रति दिन मुझको घेर कर बैठ जाते हैं, और मुझसे प्रश्न पूछते हैं। इस बकवाद से मेरा गला ख़राब हो गया है। आप किसी डॉक्टर को बुला कर मेरी परीक्षा करवा सकते हैं। बीमार होने पर भी मुझे प्रतिदिन कचहरी में ६ घण्टे तक खड़े रहना पड़ता है। कोई मनुष्य इस यातना को सहन नहीं कर सकता। शेष रहा मुझे पुलिस के क़ब्ज़े में भेजने का प्रश्न। पुराना अनुभव मैं अभी तक भूला नहीं हूँ। पुलिस वाले मेरे दोनों हाथ पीठ की ओर हथकड़ी से बाँध कर, रात भर लिटाए रखते थे। और भी कई प्रकार की यातनाएँ मुझे देते थे। मैं अब पुलिस के पास नहीं रहना चाहता। यदि आपको मुझ पर विश्वास है तो आप मुझे ज़मानत पर छोड़ दें या मुझे दूसरे अभियुक्तों के साथ ही रख दें। मैं पुलिस के पास किसी तरह नहीं रहना चाहता।

वकील सफ़ाई—अदालत को चाहिए, कि जाकर स्वयं गवाह के कमरे की तलाशी ले।

इसके पश्चात लाला अमोलक राम, दूसरे वकील सफ़ाई ने कहा कि जब एक गवाह, जो पुलिस के क़ब्ज़े में है, पुलिस पर दोषारोपण करता है, तो अदालत का कर्त्तव्य है, कि इस दोषारोपण की पूर्णतया जाँच करे।

मि० सलीम—(गवाह से) आजकल तुम कहाँ हो ?

गवाह—शाही क़िले में।

जज—अकेले रहते हो ?

गवाह—नहीं, मेरे साथ पुलिस का एक हवलदार भी रहता है।

जज—तुम्हारे कमरे में क्या तुम्हारा बयान पड़ा है ?

गवाह—हाँ ! मेरे कमरे में मेरे बयान के साथ सरनदास, शिवराम, मदनगोपाल तथा खैरातीराम इत्यादि इक़बाली गवाहों के बयान भी पड़े हैं। और भी एक काग़ज़ वहाँ पड़ा है, जिसमें वे तिथियाँ लिखी थीं, जिनके अनुसार यह कहना था कि अमुक दिन मैंने पुलिस को अमुक मकान दिखाया। ये तिथियाँ मुझे प्रतिदिन याद करनी पड़ती हैं, ताकि मैं भूल न जाऊँ।

मि० सलीम—यह बयान तुमको क्यों दिए गए ?

गवाह इसलिए कि सरनदास इक़बाली गवाह तथा मेरे बयानों में कुछ अन्तर है। मुझे इन बयानों को पढ़ कर उस अन्तर को दूर करना है। यह बात मुझको बरख़ुरदार सब-इन्सपेक्टर ने (जो कि इस समय कचहरी ही में हैं) कही थी। परन्तु उसने कहा था कि यह सब सरकारी वकील के कहने पर किया जा रहा है।

जज—तुमको बयान किसने दिए ?

गवाह—इसका प्रबन्ध स्वयं मलिक बरख़ुरदार सब-इन्सपेक्टर ने किया था और इनकी आज्ञा से दो हेड-कॉन्सटेबिल (जो इस समय कचहरी में उपस्थित हैं) यह बयान मुझे दे गए।

जज—जब से तुम्हारा बयान कचहरी में आरम्भ हुआ है, तब से तो पुलिस ने तुमको पट्टी नहीं पढ़ाई ?

गवाह—इक़बाली गवाहों के बयान मुझे दो-एक दिन से ही मिले हैं। पहले केवल मेरा अपना बयान ही मेरे पास था।

सरकारी वकील—मैं गवाह के इस बयान की परीक्षा करना चाहता हूँ।

अदालत—हम इसकी जाँच करेंगे और आपको समय दिया जायगा।

नाश्ते का समय हो रहा था, इस कारण यह प्रश्न उठा कि इस समय में गवाह को कहाँ पर रक्खा जाय। बहुत सोच-विचार के पश्चात यह निश्चय किया गया, कि गवाह इस समय क्लर्क ऑफ़ कोर्ट के पास रहे।

सरकारी वकील ने लञ्च के पश्चात कार्यवाही आरम्भ होने पर कहा कि पुलिस पर जो दोषारोपण किया गया है, वह सब झूठ है। मैं समझता हूँ कि वकील सफ़ाई ने कल जो प्रार्थना-पत्र इस आशय का दिया था कि इक़बाली गवाह को पुलिस के क़ब्ज़े से निकाल कर जुडीशियल हवालात में भेज दिया जाय, यह उसी का परिणाम है। पुलिस की डायरी से यह भी पता चलता है कि कल जहाँगीरी लाल अभियुक्त ने गवाह को यह कह कर डराया था कि "समझ लेंगे।" मैं न्याय के दिन के लिए यह कहता हूँ, कि गवाह को ऐसे स्थान पर रक्खा जाय, जहाँ इसकी जान का कोई भय न हो।

इसके पश्चात बहुत सोच-विचार करके यह निर्णय किया गया कि गवाह को सेण्ट्रल जेल भेज दिया जाय।

सेण्ट्रल जेल डिपुटी-सुपरिण्टेण्डेण्ट से पूछा गया, क्या वहाँ गवाह को रखने के लिए कोई स्थान है ? उसने उत्तर दिया कि सेण्ट्रल जेल में केवल फाँसी की कोठरी ख़ाली है। तब जजों ने यह निर्णय किया कि

गवाह को सेन्ट्रल जेल में रक्खा जाय, परन्तु उसके साथ बर्ताव अच्छा होना चाहिए। यह भी आज्ञा हुई, कि किसी सम्बन्धी को अथवा पुलिस वाले को गवाह के पास न जाने दिया जाय।

इसके पश्चात वकील-सफ़ाई ने एक प्रार्थना-पत्र और दिया, जिसका आशय था कि शेष इक़बाली गवाहों को भी पुलिस के क़ब्ज़े से निकाल लिया जाय।

गोला फेंकने वाला

इन्द्रपाल ने सत्य कहने की शपथ खाई, और अपना बयान आरम्भ किया। गवाह ने कहा कि दोनों कॉन्स्टिबिल मकान के ऊपर चढ़ आए। मैंने उनको बताया था कि मेरा दूसरा साथी मेरा भगत है, परन्तु सिपाही एक दूसरे की पीठ पर सवार होकर जियाऊ पर चढ़ आए। उन्होंने यशपाल से कहा कि यह तो साधु महात्मा हैं, जङ्गल में रहते हैं, मगर तेरा यहाँ पर क्या काम? यशपाल ने मथुरा की भाषा में उत्तर दिया, कि मैं मथुरा से आया हूँ। देहली नौकरी ढूँढ़ने जा रहा हूँ। यशपाल का सारा बमसाज़ी का सामान खुला पड़ा था, परन्तु उसने मुझे बताया था, कि ये बम केवल हाथ लगाने से नहीं फटेंगे। सिपाहियों को यशपाल पर शक हो गया और एक ने कहा, कि यह तो कोई बदमाश प्रतीत होता है, चलो इसको थाने ले चलें। यह सुनते ही यशपाल पहले सिपाहियों के, फिर मेरे पैरों पर गिर पड़ा और कहने लगा कि मैं और मेरे बाल-बच्चे तो भूखे मर जाएँगे। मैंने भी यशपाल को एक लात जमाई, और क्रोध से कहा—"बदमाश इम महात्मा लोगों को भी फँसाने आ जाता है।" एक सिपाही ने कहा, कि यह तो कोई गोला फेंकने वाला बदमाश प्रतीत होता है।

मैं सिपाहियों को नीचे ले गया, और उनसे पूछा कि यदि कहो तो मुट्ठी गरम कराऊँ। सिपाही ने उत्तर दिया—"अच्छा महाराज, आपकी कृपा। मैं ऊपर जाकर यशपाल की जेब से एक दस का नोट, दो रुपए, तथा दो चवन्नी निकाल लाया और आकर मैंने सिपाहियों के हाथ पर रुपए रख दिए, और फिर उनमें से एक चवन्नी यह कह कर निकाल ली कि बाबा की सुलफ़ा मँगाऊँगे। फिर मैंने उनसे कहा कि, एक रुपया उसके लिए रहने दो, बेचारे के पास कुछ नहीं रहा। सिपाहियों ने रुपया और लौटा दिया। इसके पश्चात् सिपाही चले गए।

१४वीं जनवरी को जब लाहौर षड्यन्त्र का मामला स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने पेश हुआ, तो आरम्भ में वकील-सफ़ाई के कहने पर, सारे इक़बाली गवाहों को कचहरी में बुलाया गया। इक़बाली गवाहों ने कहा कि हम पुलिस के पास बड़े मज़े में रहते हैं। वकील-सफ़ाई ने कहा, कि इन्द्रपाल ने जो पुलिस पर आक्षेप किए हैं, उनको ध्यान में रखते हुए मैं अदालत से यह प्रार्थना करता हूँ कि इक़बाली गवाहों को पुलिस के क़ब्ज़े से निकाल लिया जाय।

सरकारी वकील ने उत्तर दिया कि यदि इक़बाली गवाहों को पुलिस के पास न रख, किसी अन्य स्थान पर रक्खा गया, तो उनके प्राण हर समय सङ्कट में रहेंगे।

लाला अमोलक राम दूसरे वकील सफ़ाई ने कहा, कि हम तो रात-दिन इधर-उधर घूमते हैं, परन्तु हमसे तो क्रान्तिकारी कभी कुछ नहीं कहते।

सरकारी वकील ने कहा कि बङ्गाल में एक इक़बाली गवाह जेल में मार डाला गया था। क्रान्तिकारियों का कुछ पता नहीं रहता, न जाने किस समय, कहाँ पर आक्रमण कर दें।

वायसराय पर आक्रमण की योजना

इसके पश्चात इन्द्रपाल ने बयान जारी रखते हुए कहा, कि जब पुलिस वाले चले गए, तो हम दोनों नीचे उतर कर रेलवे लाइन की ओर गए। हमने रेलवे लाइन के नीचे बम दबा कर, वाइसराय की गाड़ी को उड़ाने का निश्चय किया था। रेलवे लाइन के नीचे से हमने दो पत्थर निकाले और उनके स्थान पर दो बम रख दिए। इस काम में हमको कोई पौन घण्टा लगा था। इतने में हमको एक माल गाड़ी आती हुई दिखाई दी। हम भाग कर लाइन से कुछ दूर जाकर खड़े हो गए। गाड़ी बमों के ऊपर से निकल गई, परन्तु बम फटे नहीं। गाड़ी के निकल जाने के पश्चात हमने बमों को ख़ूब अच्छी तरह दबा दिया और वापस लौट आए। कुछ दिन के पश्चात यशपाल एक और बम लाया, वह बम भी हमने पहले स्थान ही पर रख दिया। एक दिन मैंने जाकर लाइन पर देखा कि एक बम गुम हो गया है। मैंने यह सूचना यशपाल को दे दी। यशपाल ने कुछ तार, जो वह अपने साथ लाया था, मुझे दिखाया और कहा कि अब एक्शन (Action) वाइसलेस से नहीं, किन्तु तार बमों के साथ लगा कर किया जायगा। मैंने यशपाल के साथ जाकर बम के साथ तार जोड़ने में उसकी सहायता की। यशपाल ने मुझे बताया कि तार के एक सिरे पर एक बैटरी लगा दी जायगी, और तार का दूसरा सिरा बमों से जोड़ दिया जायगा। बैटरी से बिजली छोड़ी जायगी, जिससे बम फटेंगे। आक्रमण २७ अक्टूबर को निश्चित था, इसलिए मुझे यशपाल ने २६ को देहली चले आने को कहा था। परन्तु जब २७ अक्टूबर को वाइसराय की गाड़ी आई, तो उस पर कोई आक्रमण न किया गया। यशपाल ने मुझे बताया कि हमने आक्रमण का निश्चय कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया है, क्योंकि वाइसराय भारतवर्ष के हित के लिए कोई घोषणा करने वाला है और जनता ऐसे समय में हमारा साथ न देगी। इस समय श्री० भगवतीचरण भी यशपाल के साथ थे। हम तीनों जाकर रेलवे लाइन से बम उठा लाए। देहली पहुँच कर कुछ समय तक मैं श्री० भगवतीचरण तथा यशपाल के पास बैरा बन कर रहा।

मि० एच० ब्लैकर, सेशन्स-जज

आप ही लाहौर के नए षड्यन्त्र-केस के ट्रिब्यूनल के प्रधान जज नियुक्त किए गए हैं।

१५ जनवरी को मामला फिर ट्रिब्यूनल के सामने पेश किया गया। इक़बाली गवाहों को पुलिस के क़ब्ज़े से निकालने के प्रश्न पर बड़ी बहस हुई।

पुलिस का अन्धेर-खाता

वकील-सफ़ाई ने कहा, कि इक़बाली गवाहों तथा पुलिस ने, आपस में समझौता कर रक्खा है। पुलिस के क़ब्ज़े में उनका रहना क़ानून के विरुद्ध है। पुलिस की इच्छा है, चाहे उनको कचहरी में पेश करे, चाहे न करे, चाहे उनको खाना दे, चाहे भूखों मारे। क़ानून का इस विषय में कोई बन्धन नहीं है। यह दशा देख कर मुग़ल समय की याद आ जाती है, जब सरकार इच्छानुसार जिसको चाहती जेल में बन्द कर देती थी। यह क़ानून-सङ्गत नहीं है। वकील ने इस विषय पर बहुत दलीलें दीं, कि किसी मनुष्य को १५ दिन तक पुलिस के पास रक्खा जा सकता है, यदि इससे अधिक समय तक उसे रखना हो तो जेल के सिवाय दूसरा कोई स्थान नहीं है। सरकारी वकील ने कहा, कि पुलिस परम्परा से ऐसा ही करती आई है। अदालत ने निर्णय किया, कि इक़बाली गवाहों को पुलिस के क़ब्ज़े में ही रहने दिया जाय।

बैरा के वेश में

बयान जारी रखते हुए इक़बाली गवाह इन्द्रपाल ने कहा कि इस मकान में मैं तीन दिन तक बैरा बन कर रहा। इन दिनों मुझे श्री० भगवतीचरण तथा श्री० यशपाल ने बताया, कि वाइसराय १६ या १७ नवम्बर को कोल्हापुर जा रहे हैं, और उस समय उन पर आक्रमण किया जायगा।

कुछ दिन पश्चात श्री० भगवतीचरण ने अख़बार से पढ़ कर मुझे वाइसराय की घोषणा सुनाई। मुझे स्थान का चुनाव करने के लिए भेजा गया। मैं जगह देख आया, परन्तु यशपाल मोटर से टक्कर खाकर घायल हो गया और हंसराज समय पर नहीं पहुँच सका, इस कारण आक्रमण इस बार भी स्थगित करना पड़ा।

जब वाइसराय की गाड़ी पर आक्रमण न हो सका, तो श्री० भगवतीचरण १६वीं दिसम्बर को मेरे पास आए और मुझे नए सड़क वाले घर पर ले गए। यशपाल भी वहीं पर था। उसने मुझे बताया कि उसकी बहिन का देहान्त हो गया है। अब चूँकि मेरे लिए देहली में कोई काम न था, इस कारण मुझे लाहौर लौटने की आज्ञा मिल गई।

रहस्यमय युवक

लाहौर आने के दूसरे दिन मैं लायलपुर गया, क्योंकि वहाँ हंसराज को यशपाल की चिट्ठी देनी थी। २० नवम्बर का दिन था। लायलपुर ८॥ बजे प्रातःकाल पहुँचा। मैं स्टेशन से सीधा हंसराज के मकान पर गया। मैंने हंसराज को कई आवाज़ें दीं, परन्तु उस समय घर पर कोई नहीं था, इसलिए मैं घर के सामने ही बैठ गया। इतने में एक और नवयुवक आया, और उसने हंसराज को बाहर बुलाया। हंसराज ने बाहर आकर इस नवयुवक से कुछ बातचीत की। मैं चूँकि कुछ दूर खड़ा था, इस कारण मैं बातचीत नहीं सुन सका। जब यह दोनों बातचीत कर रहे थे, तो मैंने हंसराज से कहा, कि मैं कुछ बात कहना चाहता हूँ। उसने मुझे ठहरने को कहा। जब वह नवयुवक चला गया तो मैंने हंसराज से कहा, कि मैं प्राणनाथ के पास से आया हूँ। उसने आपको कह भेजा है, कि भविष्य में इस प्रकार आलस्य न किया करो। इस बार तुम्हारे आलस्य के कारण सारा काम बिगड़ गया है।

जब मैं हंसराज को सन्देशा देकर स्टेशन लौटा तो मैंने देखा कि वही नवयुवक स्टेशन पर टहल रहा है। पर उसे उस दिन से पहले कभी न देखा था। हंसराज ने मुझे बताया था कि यह नवयुवक कृषि-कॉलेज में पढ़ता है। जब गाड़ी चलने लगी, तो वह नवयुवक अगले डब्बे में बैठ गया। मैं पिछले के एक डब्बे में बैठ गया।

रास्ते में इस नवयुवक ने मुझे कई बार देखा, और मैंने उसे। मैंने सोचा, यह कोई सी० आई० डी० का आदमी है। वह नवयुवक बादामीबाग़ स्टेशन पर उतर गया, और मैं लाहौर जाकर उतरा। जब मैं घर जा रहा था, तब मैंने फिर उसी नवयुवक को 'अमृतधारा'

के पास देखा। मैं एक गली में घुस गया ताकि उसको सन्देह न हो। उसी सन्ध्या को मैं श्रीमती दुर्गादेवी के घर पर गया। वहाँ मैंने जाकर देखा कि वही नवयुवक यहाँ पर भी हाज़िर है। मुझे विश्वास हो गया कि यह नवयुवक भी कोई मेरे जैसा ही है। इसलिए हम दोनों ने एक-दूसरे को देख कर हाथ मिलाया। पीछे मुझे पता चला कि इस नवयुवक का नाम सुखदेव है।

मेरा व्याह

श्रीमती दुर्गादेवी से मेरी कोई विशेष बातचीत नहीं हुई। उन्होंने मुझसे कहा, कि सुना है कि तुम्हारे व्याह की तैयारी हो रही है, इसलिए ज़रा सोच-समझ कर काम करना। उनके पूछने पर मैंने उनको बताया कि श्री० भगवतीचरण तथा यशपाल दोनों कुशलपूर्वक हैं।

गवाह ने कहा कि मुझे पता नहीं, सुखदेव लायलपुर क्यों गया था।

सरदार गुलाबसिंह से मेल

लायलपुर से लौट कर आने के पश्चात मैं गुलाबसिंह से मिला। मैंने उन्हें बताया कि मैं क्रान्तिकारी दल का मेम्बर हूँ। इन्हीं दिनों अमीरचन्द अभियुक्त मेरे पास आया, और मैंने उसे श्रीमती दुर्गादेवी से काश्मीर बैली में मिलाया। श्रीमती दुर्गादेवी के कहने पर, मैंने अमारचन्द को अपने पास ठहरा लिया। श्रीमती दुर्गादेवी ने कहा, कि वह व्यय के लिए रुपए धर्मपाल अभियुक्त के हाथ भेज दिया करेंगी। १२ दिसम्बर को मेरा व्याह हुआ। गुलाबसिंह तथा अमीरचन्द ने मेरे व्याह में भाग लिया। इन्हीं दिनों हंसराज मेरे पास आया। उसने मुझे बताया कि मैं जब ताँगे में आ रहा था, तो मेरे सूट केस से गैस निकलनी आरम्भ हो गई जिसके कारण ताँगे में बैठे दूसरे सब व्यक्ति बेहोश हो गए। परन्तु हंसराज ने यह सब गप हाँकी थी।

हंसराज को साथ लेकर मैं १६ दिसम्बर को देहली पहुँचा। नए बाज़ार वाले मकान में, मैं श्री० भगवतीचरण तथा यशपाल से मिला। वहाँ पर एक और भी व्यक्ति था, जिसे वे 'जाट' कहा करते थे।

यशपाल ने मुझसे कहा कि २३ दिसम्बर को जब वाइसराय कोल्हापुर से लौटेंगे, तब उन पर आक्रमण किया जावेगा।

दो दिन पश्चात श्री० भगवतीचरण 'जाट' को साथ ले जाकर रेलवे लाइन पर बम फ़िट कर आए।

श्री० सीताराम की गिरफ़्तारी

१६वीं जनवरी को जब मामला पेश हुआ तो सरकारी वकील ने मामला स्थगित करने के लिए प्रार्थना की। सरकारी वकील ने कहा, कि चूँकि श्री० सीताराम फ़रार अभियुक्त सक्खर में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं, इस कारण जब तक वह लाहौर न लाए जायँ मामला स्थगित कर दिया जाय।

मामला २० जनवरी तक के लिए स्थगित कर दिया गया।

इन्सपेक्टर के बध का अभियोग

कलकत्ते की १६वीं जनवरी की ख़बर है कि स्पेशल ट्रिब्यूनल ने चटगाँव ज़िले के श्री० रामकृष्ण विश्वास और कालीपदा चक्रवर्ती नामक दो बङ्गाली नवयुवकों के विरुद्ध हत्या और बिना लाइसेन्स के शस्त्र रखने के अभियोग लगाए। इन युवकों पर, चाँदपुर रेलवे पुलिस के इन्सपेक्टर तारिणी मुकर्जी की १ली दिसम्बर की हत्या के सम्बन्ध में भी वही अभियोग चलाया जा रहा है। दोनों ने अपने को निर्दोष क़रार दिया।

देहली षड्यन्त्र केस

अभियुक्तों की शनाख़्त-परेड

देहली का १३वीं जनवरी का समाचार है, कि षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों की शनाख़्त-परेड आज दोपहर के समय मियाँ जगदीशसिंह मैजिस्ट्रेट के सामने कराई गई। एक लॉरी गवाहों से भरी हुई, तथा बहुत से गुप्त पुलिस के कर्मचारी शनाख़्त-परेड के समय जेल में लाए गए। षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों को दूसरे अभियुक्तों के साथ मिला दिया गया। सुना है किसी भी अभियुक्त के वकील को सूचना नहीं भेजी गई थी।

श्रीयुत धनवन्तरि के वकील, मि० बी० बी० तवकले ने जेल में जाकर, मैजिस्ट्रेट से प्रार्थना की, कि शनाख़्त-परेड के समय उसको उपस्थित रहने की आज्ञा दी जाय, परन्तु प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई। शनाख़्त-परेड में क्या हुआ, इसका कुछ पता नहीं लगा।

सुना है, गवर्नमेण्ट एक स्पेशल ट्रिब्यूनल बैठाने के प्रश्न पर विचार कर रही है। पता चला है, कि इसी
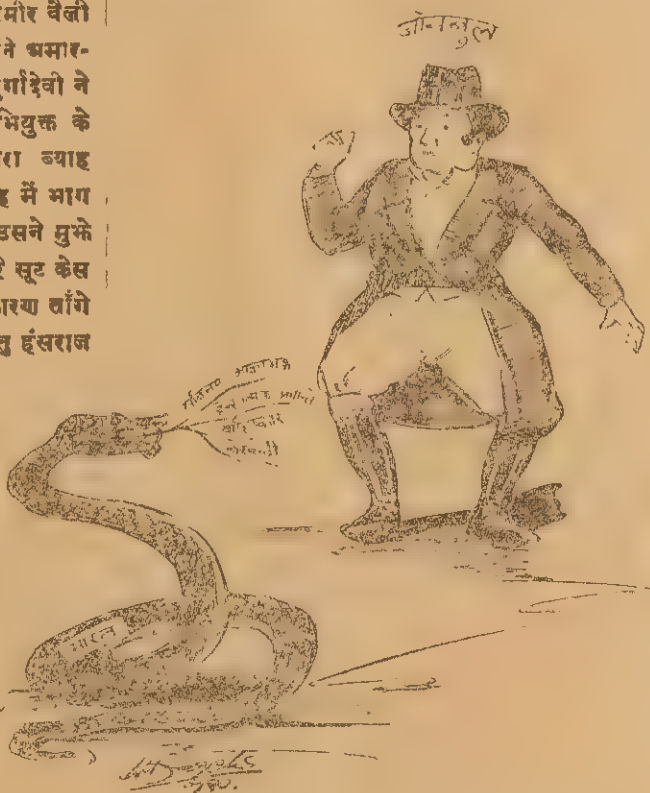
जॉनबुल की परेशानी

सम्बन्ध में कई वकीलों तथा पेन्शन याफ़्ता जजों से ट्रिब्यूनल का मेम्बर बनने को कहा जा रहा है, परन्तु अभी तक किसी ने स्वीकृति नहीं दी।

श्री० धनवन्तरि की शनाख़्त

देहली १४वीं जनवरी का समाचार है कि देहली षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों की शनाख़्त परेड के सम्बन्ध में पता चला है कि कोई आठ गवाहों ने एक पुराने क़ैदी को 'धनवन्तरि' बनाया। सुना है पुलिस कुछ और गवाहों को श्री० धनवन्तरि की शनाख़्त के लिए लाने का विचार कर रही है।

—लाहौर १४वीं जनवरी का समाचार है, कि लाहौर के पहले षड्यन्त्र-केस के, (जिसमें सरदार भगतसिंह अभियुक्त थे) दो फ़रन्टे इक़बाली गवाहों श्री० रामसरन तथा ब्रह्मदत्त, के विरुद्ध सरकार की ओर से हाईकोर्ट में इस आशय का प्रार्थना-पत्र दिया गया है, कि इन पर धारा १९३ के अनुसार अपना बयान वापस लेने के अपराध में, मुक़द्दमा चलाया जाय। अभी दोनों ओर के वकीलों में बहस जारी है। मामला स्थगित किया गया।

अमृतसर में तीन युवकों पर पिस्तौल रखने का मुक़द्दमा

१४वीं जनवरी का समाचार है, कि दो मास पहिले पुलिस की एक बड़ी पार्टी ने लाहौरी दवाज़े के पास, डायमगञ्ज में, तीन नवयुवकों को गिरफ़्तार कर लिया था। इनमें से एक श्री० केवल कृष्ण को हाईकोर्ट में ज़मानत की आज्ञा हो गई थी, और दो श्री० देवराज और श्री० वात्सायन स्थानीय सब-जेल में रक्खे गए हैं। इन सब पर धारा १२० के अनुसार मामला चलाया जा रहा है। आज पहले गवाह डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। उन्होंने बयान में कहा, कि गत अक्टूबर मास के अन्तिम दिनों में मुझे सूचना मिली, कि सूफ़ी ग़ुलाम मुहम्मद तुर्क के पास कुछ सन्देहजनक व्यक्ति आए हैं। सूफ़ी ग़ुलाम मुहम्मद कटरा के मस्जिद की ऊपरी मञ्ज़िल पर रहते थे। मैंने अपने एजेण्ट और ख़ुफ़िया पुलिस के आदमी, देख-भाल के लिए लगा दिए, फिर मुझे इनके द्वारा सूचना मिली, कि अब इन लोगों ने डायमगञ्ज, और शहर के दूसरे भागों में मकान किराए पर ले लिए हैं। १९ नवम्बर को आधी रात के समय पुलिस ने दल-बल सहित डायमगञ्ज पर छापा मारा। मैं भी उनके साथ था। पहले घर घेर लिया गया। फिर पुलिस के दो कर्मचारी दीवार फाँद कर भीतर घुसे, और द्वार खोल दिया। हम सब भीतर गए और कमरे के किवाड़ खटखटाए। १५ मिनट पीछे अभियुक्त बाहर निकल आए। मैं बारी-बारी से उन्हें भीतर ले गया और प्रत्येक के बिछौने तथा कमरे की तलाशी ली। मि० वात्सायन की चारपाई के सिरहाने एक रिवॉल्वर और १८ कारतूस मिले। एक पिस्तौल का भाग, और एक पुड़िया सफ़ेद पाउडर की भी मिली। शेष दो बिछौने फ़र्श पर लगे हुए थे। नीचे चटाई और ऊपर दरियाँ थीं और उनके ऊपर एक चादर बिछी थी। दोनों बिछौनों पर दो-दो कम्बल रक्खे थे। देवराज के बिछौने में से एक रिवॉल्वर, और कम्बल में दस कारतूस निकले, और केवल कृष्ण के बिछौने से एक रिवॉल्वर, और १८ कारतूस चमड़े के बेग में मिले। इनके अतिरिक्त अलमारी में रिवॉल्वर मिले। श्री० वात्स्यायन के कोट में भी कारतूस मिले, कोट को अदालत में गवाह ने पहिचाना। मि० वात्सायन ने अपना नाम ग़ुलाम हैदर और देवराज ने अब्दुल क़ादिर बतलाया था। केवल-कृष्ण ने नाम नहीं बताया जिरह के बाद मामला स्थगित किया गया।

दूसरे दिन ज़िरह में गवाह ने कहा, कि मुझे स्मरण नहीं कि किस कमरे में पिस्तौलें मिली थीं, और न उसकी खिड़कियों की स्थिति ही याद है। दूसरे वकील की ज़िरह पर गवाह ने बताया कि मैं भीतर से वस्तुएँ बाहर ला लाकर लिखवाता जाता था, किन्तु मुझे यह पता नहीं कि कौन-कौन वस्तु किस किस की है। उसने अपने ख़ुफ़ियों और एजेण्टों के नाम बताने से इन्कार कर दिया। दूसरे गवाह ने डायमगञ्ज वाली तलाशी और गिरफ़्तारियों का उल्लेख करके, यह बताया कि १२ नवम्बर को, बाज़ार चोबियान में, ख़्वाजा नूर हाउस की तलाशी ली गई थी। वहाँ से अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त, एक ट्रङ्क मिला, जिसमें देवराज के चार सार्टिफ़िकेट थे और एक बोतल क्लोरोफ़ार्म की थी, जिस पर सल्फ़्युरिक एसिड का लेबिल लगा हुआ था। एक छोटी बोतल में गोलियाँ और दो पुड़ियों में पाउडर था। इस कमरे का ताला तोड़ना पड़ा था। वकील ने एतराज़ किया कि ये सब बातें असम्बद्ध हैं। चार बजे मामला स्थगित कर दिया गया।

* * *

पञ्जाब कौन्सिल में राज-भक्ति का तूफ़ान

"पञ्जाब प्रान्त में ख़ूब सख़्ती की जाए"

"काँङ्ग्रेस क्रान्तिकारियों का अनुमोदन करती है"

पञ्जाब कौन्सिल में बहस

सभापति का भाषण

१६वीं जनवरी को पञ्जाब कौन्सिल के अधिवेशन में मियाँ अहमदयार ने इस आशय का प्रस्ताव पेश किया है, कि पञ्जाब में क्रान्ति की लहर को दबाने के लिए ख़ूब सख़्ती से काम लिया जाय। अर्थ-सचिव सर हैनरी क्रेक ने भी पञ्जाब में नए क़ानून जारी करने की सम्भावना प्रकट की, जिससे बढ़ती हुई क्रान्ति की आग को दबाया जा सके। सत्याग्रह-आन्दोलन तथा काँङ्ग्रेसी नेताओं पर सारा क्रोध निकाला गया और उन्हें हिंसात्मक क्रान्ति का समर्थक बताया गया। साथ ही यह भी कहा गया कि समाचार-पत्र क्रान्तिकारियों की प्रशंसा में लेख लिख-लिख कर उनको उत्तेजित करते हैं।

कौन्सिल के बहुत से सभासदों ने यह सम्मति भी प्रकट की, कि क्रान्ति को कुचलने के लिए सरकार को और भी ज़्यादा क़ानूनी ताक़त दी जाए। उदाहरणार्थ बङ्गाल में सरकार लोगों को बग़ैर अपील, बग़ैर दलील बन्द कर देती है, या सीमा प्रान्त में हत्या सम्बन्धी क़ानून था।

सर शहाबुद्दीन सभापति ने आरम्भ में निम्न-लिखित भाषण दिया :—

"सब उपस्थित सज्जनों को यह सुन कर बड़ा शोक हुआ होगा, कि यूनिवर्सिटी के उपाधि-वितरण उत्सव के समय, किसी व्यक्ति ने पञ्जाब के गवर्नर पर गोली चलाई थी, जिससे कि गवर्नर तथा कई अन्य व्यक्ति घायल हुए, और एक सब-इन्सपेक्टर का देहान्त हुआ। इसके कुछ ही समय बाद कौन्सिल के मन्त्री को बहुत से प्रस्ताव सभासदों की ओर से मिले, जिनमें इस कार्य की निन्दा तथा गवर्नर के बच निकलने पर बधाई दी गई थी। इन प्रस्तावों में इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया था, कि पञ्जाब में क्रान्तिकारियों के बढ़ते हुए उपद्रव को रोकने के लिए उपयुक्त कार्यवाही की जाय। गवर्नर पर किए गए आक्रमण से हमको बहुत शोक हुआ है। मैं समझता हूँ कि सब उपस्थित जन मुझसे सहमत हैं।"

सर हैनरी क्रेक

अर्थ-सचिव सर हैनरी क्रेक ने प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए अपनी वक्तृता में कहा, कि "मुझे यह देख कर, कि सारा हाउस इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता है, कोई प्रसन्नता नहीं हुई। जिन लोगों ने Punjab Criminal Procedure Amendment Act का विरोध किया था, उन लोगों का आज चुप रहना, किसी विशेष आशय का सूचक है। सरकार ने क्रान्ति को दबाने के लिए जो कुछ भी उससे हो सकता था, किया। मैंने पिछले बिल पर बहस करते हुए बताया था, कि पञ्जाब में केवल ३० क्रान्तिकारी घटनाएँ हुई हैं, परन्तु तब से आज तक केवल अढ़ाई मास में, १७ और भयङ्कर क्रान्तिकारी घटनाएँ हो गई हैं। अकेले लाहौर की पुलिस में १४०० मनुष्य भर्ती किए गए हैं, जिनका काम सन्देहजनक मनुष्यों पर निगरानी करना है। इसी प्रकार से दूसरे स्थानों पर भी अतिरिक्त पुलिस भर्ती की गई है।

क्रान्तिकारियों का मेगज़ीन

"अक्टूबर के अन्त में क्रान्तिकारियों का एक मेगज़ीन देहली में पकड़ा गया। वहाँ पर इतना मसाला मिला, जिससे कम से कम ६,००० भयानक बम तैयार हो सकते थे।

"इसके पश्चात पुलिस की लाहौर के दो क्रान्तिकारियों से मुठभेड़ हो गई, जिसमें एक क्रान्तिकारी विशेश्वरनाथ गोली लगने से मारा गया तथा उसका साथी सरदार टहलसिंह घायल होकर गिरफ़्तार हुआ। अमृतसर में तीन क्रान्तिकारी गिरफ़्तार किए गए, जिनके पास भी बहुत सा मसाला तथा शस्त्र मिले। इसके पश्चात देहली में एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी धनवन्तरि को पुलिस ने अपनी जान जोखम में डाल कर गिरफ़्तार किया।

काँङ्ग्रेस का अधिवेशन

"गत दिसम्बर को लाहौर में काँङ्ग्रेस का अधिवेशन हुआ। वहाँ पर 'नौजवान भारत सभा' तथा 'किरती किसान कॉन्फ्रेन्स' के अधिवेशनों में हिंसा का खुले तौर पर समर्थन किया गया।

"पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने जो वक्तृता गत अक्टूबर में, जेल से निकलने के पश्चात दी थी, उसमें उन्होंने कहा था, कि भगतसिंह एक साहसी मनुष्य है, और साहस से फाँसी पर चढ़ा है। भारतवर्ष को अपने भाग्य पर गर्व है, कि वह ऐसे-ऐसे साहसी पुरुष उत्पन्न कर सकता है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू यदि हिंसा का प्रचार नहीं करते तो फिर यह क्या है? यह एक ऐसा ही अपराध है, जैसा कि किसी मनुष्य को भरा हुआ पिस्तौल दे देना। बङ्गाल के प्रसिद्ध काँङ्ग्रेस के नेता जे० एम० सेन गुप्ता ने कराची में वक्तृता देते हुए कहा था, कि क्रान्ति की लहर तब बनी रह सकती है, जब बम मिल जाएँ, मनुष्य मिल जाएँ, और सारा काम गुप्त रूप से किया जाय। क्या यह हिंसा का समर्थन नहीं है? "शान्ति के अवतार पण्डित मदनमोहन मालवीय के पुत्र पण्डित गोविन्द कान्त मालवीय ने भगतसिंह की बड़ी प्रशंसा की थी, और उसे 'रत्न' कहा था। आपने यह भी कहा था, कि यदि अहिंसात्मक क्रान्ति असफल हो गई, तो लोगों को हिंसात्मक क्रान्ति करनी पड़ेगी। इसी प्रकार डॉक्टर सत्यपाल ने कहा था कि मुझे इस बात पर गर्व है कि मैंने देहली जेल में कुछ समय व्यतीत किया है, जो भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त का घर है। नवयुवको! यदि तुम्हें सफलता प्राप्त करनी है तो भगतसिंह तथा दत्त की ओर देखो। डॉक्टर मुहम्मद आलम ने स्टूडेण्ट्स कॉन्फ्रेन्स में कहा था, कि नवयुवको! सदैव क्रान्ति की उपासना करो और क्रान्तिकारी जीवन व्यतीत करो (Think dangerously and live dangerously.) इसी प्रकार दूसरे काँङ्ग्रेसी नेताओं ने भी अहिंसात्मक क्रान्ति का ढोंग उतार कर हिंसा का समर्थन आरम्भ कर दिया है। दशा बड़ी शोचनीय हो रही है, और सरकार को इसका मुक़ाबला करने के लिए लोगों की सहानुभूति की आवश्यकता है, जो दुर्भाग्यवश अभी तक प्राप्त नहीं हुई है।"

लाहौर हत्या-काण्ड

जलियाँवाला बाग़ का बदला

अभियुक्त का वक्तव्य

लाहौर का २०वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० सरदार सज्जनसिंह को मिसेज़ कर्टिस की हत्या के अभियोग में मि० लुइस की कचहरी में पेश किया गया।

कैप्टन कर्टिस के बैरा नूर मुहम्मद ने गवाही देते हुए कहा, कि १३ जनवरी को सायङ्काल के समय उसने मिसेज़ कर्टिस के चिल्लाने की आवाज़ सुनी। बाहर आकर उसने देखा कि सज्जनसिंह तलवार से मिसेज़ कर्टिस पर आक्रमण कर रहा है। उसने जब आक्रमणकारी को रोकने का प्रयत्न किया, तो उस पर भी प्रहार किया गया। तब उसने सहायता के लिए चिल्लाना आरम्भ किया। इसके पश्चात अभियुक्त ने मिसेज़ कर्टिस की पुत्रियों पर प्रहार किया, जो कि कम्पाउण्ड में खेल रही थीं। मिसेज़ कर्टिस उसी घायल अवस्था में, अपनी लड़की को भीतर उठा ले गईं।

कैप्टेन कर्टिस ने गवाही देते हुए कहा, कि १३ जनवरी को टेलीफ़ोन से समाचार पाकर मैं अपने बङ्गले पर आया। वहाँ पहुँच कर मैंने मेजर कैचर तथा वरदर्न को, अपनी स्त्री का इलाज करते हुए देखा। मैंने अभियुक्त को उस दिन पहली बार देखा था। मेरा मन बहुत खिन्न हो रहा है, इस कारण मुझे अपनी पुत्रियों को साथ लेकर शीघ्र ही इङ्गलैण्ड वापस लौटना है, कृपया मामला शीघ्र ही समाप्त कर दिया जाय।

श्री० सज्जनसिंह अभियुक्त ने कहा, कि "मैं लाहौर छावनी के कर्नल का वध करने के लिए आया था। किसी ने मुझे कर्नल का बङ्गला पूछने पर मि० कर्टिस के बङ्गले की ओर इशारा कर दिया। मैंने अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए, उसी बङ्गले में प्रवेश किया।

"पहले मैंने मिसेज़ कर्टिस पर आक्रमण किया, फिर मैंने गोरे को ढूँढ़ा, पर मुझे सफलता न हुई। "क्रोध में आकर मैंने मिसेज़ कर्टिस तथा उसके बच्चों पर वार किया। मैंने यह वार इस कारण किया था कि यूरोपियनों ने मेरे कई बच्चों को जलियाँवाला बाग़ तथा पेशावर में मौत के घाट उतारा था। अतः मैंने गोरे आदमी की खोज आरम्भ की। परन्तु वह बेकार हुई। शीशगञ्ज पर गोली चलने पर मैंने यह विचार किया था, कि किसी भी सच्चे सिक्ख को चुप नहीं बैठना चाहिए।" मामला स्थगित कर दिया गया है।

युक्तप्रान्तीय विद्यार्थी परिषद्

गत १७वीं जनवरी को डॉ० गङ्गानाथ झा ने संयुक्त-प्रान्तीय विद्यार्थी-परिषद् का उद्घाटन स्थानीय पुरुषोत्तमदास पार्क में किया। डॉ० सैयद महमूद ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

डॉ० गङ्गानाथ झा ने अपने भाषण में विद्यार्थियों का ध्यान भारतीय-संस्कृति की ओर आकर्षित किया। स्वागतकारिणी-समिति के अध्यक्ष श्री० सप्रू ने अपने भाषण में सामाजिक सुधार की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इसके बाद सभापति ने अपने भाषण में, विद्यार्थियों को गीता से कुछ उपदेश ग्रहण करने की अपील की। श्रीमती अतिया बेगम ने अपने भाषण में वर्त्तमान शिक्षा-पद्धति की बुराइयों को दिखाया विद्यार्थियों की एक सभा में श्री० राजेन्द्रप्रसाद ने भी भाषण दिया। १८वीं जनवरी को स्वागताध्यक्ष श्री० सप्रू की धर्मपत्नी की अध्यक्षता में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किए गए। रात्रि में एक अन्तर्जातीय सहभोज भी किया गया। १९वीं जनवरी को परिषद् समाप्त हुई।

हमारे सहयोगी

शोलापुर की फाँसियाँ

१२ जनवरी को यरवदा जेल में शोलापुर के अपराधियों को जो फाँसी दी गई है, वह इस सप्ताह की सब से बड़ी घटना है। आज भारत की जनता उन्हें "शोलापुर के शहीदों" के नाम से पुकार रही है। फाँसी का समाचार सुन कर भारत के कई शहरों ने हड़ताल मनाई। इसके विरोध में पुलिस ने कई जगह जनता की लाठियों से ख़बर ली। बम्बई ने अपूर्व हड़ताल कर दिखाई और वहाँ के पुलिस कमिश्नर ने भी अपनी पाशविक शक्ति का पूर्ण परिचय दिया। इससे यह साफ़ प्रतीत होता है कि इस सज़ा से जनता में बहुत असन्तोष फैल गया है। इस विषय में भारत के प्रमुख व्यक्तियों ने वाइसराय तथा बम्बई के गवर्नर से जो प्राणदान की प्रार्थना की थी वह व्यर्थ हुई। यदि इस सज़ा पर ध्यान दिया जावे तो यह मालूम होगा कि ये अपराधी क्षमा-प्रदान के योग्य थे। इन अभियुक्तों का मुक़दमा साधारण अदालतों में नहीं, वरन फ़ौजी अदालतों (Martial law tribunals) में हुआ था। अपील में हाईकोर्ट के एक जज ने यह राय दी थी कि इन चार अभियुक्तों में से तीन बिलकुल निरपराध हैं। क्षमा-प्रदान के लिए केवल यही काफ़ी था। भारत की जनता की भी यह उत्कट इच्छा थी कि इन्हें क्षमा-प्रदान की जावे। यदि लॉर्ड इर्विन सचमुच में भारत में शान्ति का राज्य स्थापित करना चाहते थे, यदि वे सचमुच में यह समझते हैं कि शान्ति स्थापन के ही लिए उन्हें ऑर्डिनेन्स लगाने पड़ रहे हैं, और गिरफ़्तारियाँ करनी पड़ रही हैं, तो उन्हें अपने शान्तिपूर्ण भावों को दर्शाने का यह अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ था। पर उन्होंने उसे अपने हाथ से जाने दिया और इससे जनता में और भी अशान्ति फैल गई है।

—"पीप्ल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

माफ़ी का रहस्य

सरकार की ओर से प्रति सप्ताह जो रिपोर्ट प्रकाशित होती है, उसमें तो सदा यही कहा जाता है कि आन्दोलन ठण्डा पड़ रहा है। पर जिनके आँखें हैं वे तो दिन पर दिन इसे ज़ोर पकड़ता ही देख रहे हैं। इसी तरह भिन्न-भिन्न प्रान्तों की सरकारों की ओर से समय-समय पर यह भी प्रकाशित होता रहता है कि प्रान्त भर में इतने सत्याग्रहियों ने माफ़ी माँगी और वे जेल से छोड़ दिए गए। इस प्रकार की माफ़ी का रहस्य कई दिन पहले जेल से लौटे हुए एक सज्जन ने हमें बताया है। उनका कहना है कि पुलिस वाले जो जगह-जगह राह चलते हुए निर्दोष आदमियों को भी कॉङ्ग्रेस वालों के साथ गिरफ़्तार करते हैं, वे इसीलिए ऐसा करते हैं जिसमें माफ़ी माँगने वालों की संख्या बढ़ा कर दिखाई जा सके। ये सज्जन भी राह चलते हुए पकड़ लिए गए थे, यद्यपि कॉङ्ग्रेस से इनका कुछ भी सम्बन्ध नहीं था। इनका कहना है कि 'जब पुलिस-अफ़सरों से मैंने कहा कि मैं कॉङ्ग्रेस का कार्यकर्त्ता नहीं हूँ, व्यर्थ ही पकड़ लिया गया हूँ, तब उन्होंने कहा कि तुम माफ़ी माँग कर छूट सकते हो।' अवश्य, इन्होंने माफ़ी नहीं माँगी, इसलिए एक महीने के लिए जेल गए। इनका कहना है कि जो लोग राजनीतिक बातों को कुछ भी नहीं समझते, वे तो तुरन्त माँफ़ी माँगने को तैयार हो जाते और माफ़ीनामा पर दस्तख़त बना कर छूट आते हैं। ऐसे ही लोगों को, सरकार की ओर से प्रचार करने वाले अफ़सर, कॉङ्ग्रेस के आदमी कह कर उनके माफ़ी माँग कर छूटने का उल्लेख किया करते हैं। उक्त सज्जन का तो यहाँ तक कहना है कि कितने ही लोग तो पुलिस-अफ़सरों के प्रयत्न से माफ़ी माँगने वालों की संख्या बढ़ाने के लिए ही अपने को पकड़ाते और फिर आगे चल कर माफ़ी माँग कर छूट आते हैं। हम नहीं कह सकते कि ये बातें कहाँ तक सत्य हैं, पर जिस तरह अन्धाधुन्ध गिरफ़्तारियाँ की जाती हैं, उससे आश्चर्य नहीं कि माफ़ी माँगने वाले अधिकांश ऐसे ही हों, जिनका कॉङ्ग्रेस से कोई वास्ता नहीं है। पर इस तरह माफ़ी माँगने वालों की संख्या-वृद्धि से कॉङ्ग्रेस वालों में किसी तरह की निर्बलता नहीं दिखती। हाँ, माफ़ी माँगने वाले अवश्य अपने को लोगों की नज़रों में गिरा लेते हैं।"

—"विश्वमित्र"

* * *

'केवल अङ्गरेज़ हमारे शत्रु हैं'

'हिन्दोस्तानियों को कष्ट नहीं दिया जायगा'

महात्मा बुद्ध के उत्तराधिकारी का फ़तवा

बर्मा के विद्रोही नेता की घोषणा

स्टेशन मास्टर की निर्मम हत्या

रङ्गून का १३वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के विद्रोहियों के नेता की घोषणा उनके दल के एक विद्रोही से प्राप्त हुई है। उससे साफ़ मालूम पड़ता है कि थारावड्डी के विद्रोह का उद्देश्य, सरकार को उलट देना है। पहले लोगों का ख़याल था कि यह विद्रोह बर्मा की आर्थिक परिस्थिति के कारण उठ खड़ा हुआ है। किन्तु इस घोषणा से वह बात ग़लत मालूम होती है। घोषणा इस प्रकार है :—

"सब लोगों को विदित हो—

"ऐ बर्मा के निवासियो! मुझे रङ्गून, धर्म और जनता की भलाई के लिए इस युद्ध की घोषणा करनी पड़ी है। मैं जनता को दुःख देना नहीं चाहता। केवल अङ्गरेज़ हमारे शत्रु हैं। हम केवल शत्रुओं का नाश करेंगे। भारतीय, चीनी, शान और करेन लोगों को हम दुःख देना नहीं चाहते। यद्यपि तुम अङ्गरेज़ों से तनख़्वाह पा रहे हो, तो भी यदि तुम अपने हथियार हमारे हवाले कर दो, तो हम तुम्हें क्षमा कर देंगे। जो मनुष्य हमारी शरण आएगा, और अपनी ग़लती के लिए माफ़ी माँगेगा, उसे भी हम क्षमा कर देंगे। पाशवेग्या, श्वेनिबाङ्गविन और हेलाङ्ग में आग लगाने का कारण यह है कि वहाँ के निवासी अङ्गरेज़ों के वश में हैं। यदि ग्रामवासी हमें विघ्न-बाधा न पहुँचावें तो हम उनके गाँवों का नाश नहीं करेंगे।

—(हस्ताक्षर) थुपानसाका"

गत १२वीं जनवरी का समाचार है कि क़रीब आधी रात के समय ५० हथियारबन्द मनुष्यों ने जेव्यूगन स्टेशन के स्टेशन मास्टर श्री० बी० सी० दे के क्वार्टर पर आक्रमण किया। उन लोगों ने दे महाशय को, घर का दरवाज़ा खोलने के लिए विवश किया। दरवाज़ा खोलने पर वे लोग स्टेशन मास्टर को ज़बरदस्ती स्टेशन पर ले गए और स्टेशन के ख़ज़ाने का बक्स खोलने के लिए लाचार किया। उन लोगों ने ऑफ़िस की सभी चीज़ें तोड़-फोड़ डालीं और तार भी काट डाले।

स्टेशन मास्टर की युवती पत्नी ने, अपने पति को बचाने के लिए, उन लोगों को बहुत रुपया और अपने सब आभूषण देना स्वीकार किया। परन्तु उन लोगों ने रुपए लेकर भी स्टेशन मास्टर की जान न छोड़ी। वे श्री० दे को स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म पर ले आए, और उन्हें घुटनों के बल झुकने के लिए कहा। बाद में उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डाला गया। स्टेशन मास्टर की पत्नी ने, जो बर्मी भाषा जानती थी, बार-बार कारुणिक शब्दों में उन लोगों से अपने पति के प्राणों की याचना की, किन्तु सब व्यर्थ हुआ। उसे और उसके एक सम्बन्धी लड़के को वहाँ से बलपूर्वक हटा दिया गया। स्टेशन के क़ुली भय के मारे कोई सहायता नहीं पहुँचा सके। जब सुबह को एक ट्रेन स्टेशन पर आकर खड़ी हुई तब सब बातों का रहस्य खुला। इस भाग में सभी स्टेशनें बन्द कर दी गई हैं। थोंज़े और मिन्हला के बीच पहरा दिया जा रहा है। ख़बर है कि इनसीन और थारावड्डी में अब तक ६०० से ऊपर गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। विद्रोही अभी तक जङ्गलों में छिपे हुए हैं। वे छोटे-छोटे दल बना कर गाँवों पर धावा करते हैं, और लोगों के हथियार और धन लूट ले जाते हैं। वे लोग, जो सरकार को सहायता पहुँचाते हैं, इन विद्रोहियों के विशेष रूप से शिकार बनते हैं। करेन लोगों को सब से अधिक उत्पीड़ित किया जाता है। पञ्जाबी सेना, ज़िले से हटा ली गई है। पुलिस और बर्मी सेना, विद्रोहियों का नाश करने का प्रयत्न कर रही है। कहा जाता है कि मौङ्ग म्याङ्ग नामक एक विद्रोही, जिसे वास्तविक विद्रोही नेता बताया जाता है, थाटोन में गिरफ़्तार कर लिया गया है। इसे जाँच के लिए थारावड्डी भेजा जायगा। कहा जाता है कि, सायासान अब विद्रोहियों का नेता नहीं समझा जाता।

* * *

लड़कों पर लाठियों की वर्षा

अहमदाबाद का १२वीं जनवरी का समाचार है, कि दोहद में वानर-सेना का एक जुलूस निकाला गया, किन्तु पुलिस ने उसे लाठियों का प्रहार कर, भङ्ग कर दिया। कहा जाता है कि लगभग २५ लड़के घायल हुए हैं, जिनमें दो की अवस्था चिन्ताजनक बताई जाती है। सन्ध्या समय फिर एक जुलूस निकाला गया, किन्तु पुलिस ने उसमें कुछ हस्तक्षेप नहीं किया। शोलापुर के अभियुक्तों की फाँसी के सम्बन्ध में, सहानुभूति-प्रदर्शनार्थ जुलूसें निकालने और सभाएँ करने के लिए, निषेधाज्ञा निकाली गई है।

* * *

पुलिस की नृशंसता का नंगा चित्र

"वे चाहे आग लगावें, चाहे मेरी सारी सम्पत्ति जला देवें, पर मैं उन्हें एक पाई लगान न दूँगी"

गाँवों में आग :: लोहे के पिंजड़े में १८ सत्याग्रही क़ैद !!

रानी राह की भिखारिणी हो गई :: सारा परिवार जेल में बन्द

मिस स्लेड (कुमारी मीरा बेन) किसानों पर होने वाले अत्याचार देख कर रो पड़ीं

"यदि आज इङ्गलैण्ड की जनता को यह ठीक-ठीक मालूम हो जाय कि उनके नाम पर भारत में क्या-क्या अत्याचार किए जा रहे हैं, तो इसकी करुण-कथा सुन कर वे रो पड़ेंगे। केवल यही नहीं...........देंगे।"

—मीरा बेन

हाल ही में मैं कैरा ज़िले से भ्रमण करके लौटी हूँ। मैं एक दिन सवेरे खानपुर और सेजपुर नामक दो गाँवों में गई। मैंने हाल में पुलिस की नृशंसता की एक नई कहानी सुनी थी। और मैं अपनी आँखों से यह देखना चाहती थी, कि वह कहाँ तक सच है। खानपुर के अधिकांश निवासी करबन्दी के आन्दोलन में गाँव छोड़ कर बड़ोदा स्टेट में जा बसे हैं। पहिले मैं उस स्थान पर गई, जहाँ इसी गाँव के कुछ किसान झोपड़े बना कर गाँव के बाहर पड़े हुए हैं। मेरे स्वागत के लिए एक किसान ने जल्दी से ज़मीन पर चटाई बिछा दी और हम लोग उस पर बैठ कर बातचीत करने लगे।

मैंने उससे पूछा—कहो भाई, क्या हाल है? वह बुड्ढा किसान कहाँ गया, जिसे पुलिस वालों ने बुरी तरह मारा था?

उसने उत्तर दिया—"उसे इलाज के लिए बोरसद ले गए हैं। मैं उसका छोटा भाई हूँ और इस घटना-सम्बन्धी सब बातें बता सकता हूँ।" यह कह कर उसने अपने भाई पर पड़ने वाली सारी मुसीबतों का वर्णन किया। वह कितनी दुखपूर्ण कहानी थी!

मैंने फिर प्रश्न किया—और वह मकान जलने का क्या क़िस्सा है?

वह बोला—हाँ, मैं इस सम्बन्ध में भी आपको सब बता सकता हूँ। जिस रोज़ पुलिस ने मेरे भाई को पीटा, उसी रोज़ हमारे गाँव के पाँच मकानों में आग लगी। क़रीब एक बजे रात को हमें यहाँ से बड़ी-बड़ी लपटें दिखाई पड़ीं, पर पुलिस के डर के मारे हम लोग उन घरों को बचा न सके। वे हमारे ही मकान हैं। आजकल उनमें कोई नहीं है। इस आग को बुझाने के लिए रनोली (बड़ोदा स्टेट) के कुछ आदमी दौड़े, पर मालूम नहीं कहाँ से उन पर पत्थर बरसने लगे। गाँव के मुसलमान और बारिया लोग भी वहाँ खड़े थे, पर पत्थरों के डर के मारे उन्होंने भी आग बुझाने का प्रयत्न नहीं किया। पर जब आग ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया, तब पत्थर फेंकना बन्द हो गया। और सब लोग उस भयङ्कर ज्वाला को बुझाने के लिए भिड़ गए। पर यह आग पाँच घरों के जल जाने पर शान्त हुई!!!

इसके बाद हम लोग उन जले हुए मकानों को देखने के लिए निकले, पर पुलिस के भय के मारे वह किसान बड़ोदा की हद के उसी पार रुक गया। हम लोग घटनास्थल पर पहुँचे। यह गाँव काफ़ी बड़ा था और इसके ज़्यादातर मकान भी अच्छे बने थे। हम लोगों ने उन जले हुए पाँचों मकानों को देखा, उनका छप्पर बिलकुल जल गया था। दीवारें काली पड़ गई थीं और सब चीज़ें ख़ाक हो गई थीं। हम लोग जले हुए दरवाज़ों से मकान के अन्दर गए। जहाँ देखो, वहाँ राख और कोयलों के अतिरिक्त कुछ भी नज़र न आता था। बड़ी-बड़ी मियालें टूटी पड़ी थीं। और केवल ईंटों की ऊँची दीवालें शेष रह गई थीं। पाँचों मकान दो-मञ्ज़िले थे। वे सब बिलकुल जल गए थे!

इसके बाद हम लोग एक दूसरे गाँव में गए। इसका नाम सेजपुर था, क़रीब ३६ घण्टे पहिले यहाँ भी आग से चार मकान जल चुके थे। खानपुर की तरह यहाँ भी हम लोग पहिले बड़ोदा-स्टेट स्थित उन झोपड़ों में गए, जहाँ आजकल इस ग्राम के निवासी बसे हुए थे, हम लोग वहाँ बैठ कर उन लोगों से बातचीत करने लगे।

हम लोगों ने उन किसानों से आग के बारे में पूछा। उत्तर में एक वृद्ध किसान बोला कि "मैं क़रीब दस आदमियों को लेकर आग बुझाने के लिए पहुँचा। इस गाँव के बारिया भी बहुत अच्छे हैं, वे भी हमारी सहायता करने के लिए दौड़े। जब हम लोग वहाँ पहुँचे, तो हम लोगों ने बीच वाले मकान का दरवाज़ा खुला पाया। इसके अन्दर सूखी घास भरी हुई थी। इस घास में किसी ने कुछ अङ्गार कपड़े में लपेट कर रख दिए थे। घास का जलना शुरू हो गया था। हम लोगों ने आग बुझाना शुरू ही किया था, कि वहाँ पुलिस पहुँच गई और उसने हम लोगों को गिरफ़्तार करने और मारने की धमकियाँ दीं और वहाँ से भगा दिया। हमारे ऊपर पत्थर भी फेंके गए, पर हम लोग यह पता न लगा सके कि उन्हें कौन फेंक रहा था।

"पुलिस ने इन मकानों को बचाने की कुछ भी चेष्टा नहीं की। मकान बराबर जलते रहे और उन्होंने किसी को भी आग न बुझाने दी। यह आग क़रीब आठ बजे रात को लगी थी।"

थोड़ी देर तक इस विषय पर बात करने के बाद हम लोग फिर घटनास्थल पर पहुँचे। वे मकान खानपुर के मकानों से कहीं अच्छे थे। यहाँ भी वही दृश्य था। आग उस समय तक बिलकुल नहीं बुझी थी, कुछ लकड़ियाँ धीरे-धीरे जल रही थीं। हम लोगों को मालूम हुआ कि इन मकानों में से एक की मालकिन श्रीमती जीवाबाई हैं। ये एक वृद्ध किसान-महिला हैं, जिनके पति और पुत्रों का स्वर्गवास हो चुका है। लगानबन्दी के सम्बन्ध में इनके सारे खेत ज़ब्त कर मुसलमानों को बेच दिए गए हैं। जब हम लोग आख़िरी मकान पर पहुँचे तो वे हम लोगों से मिलीं। उनका सारा मकान जल गया था। नीचे कोयला और राख थी और ऊपर खुली शरद्-ऋतु का नीला आकाश। वह मकान किसी समय बहुत अच्छा रहा होगा। बचे हुए दरवाज़ों और चौखटों पर बहुत बढ़िया नक्शेकारी का काम था। मकान तिमञ्ज़िला था। उसकी बड़ी-बड़ी मियालें उसकी मज़बूती की साक्षी थीं। एक तहख़ाने में कुछ मिट्टी के बर्तन पड़े हुए थे। इसमें इनका अनाज भरा रहता था। पर इस समय तो सिवाय राख और धुँए के कुछ भी नज़र नहीं आता था।

जीवाबाई इस सर्वनाश के महान अन्धकार में अपनी बची हुई चीज़ों को ढूँढ़ने का प्रयत्न कर रही थीं, गाँव के दो अन्य किसान इनके साथ थे, जो अपनी दुर्दशा पर रो रहे थे। पर जीवाबाई अपने हृदय को दृढ़ किए थीं। उनकी आँखों में आँसू अवश्य थे, पर वे बाहर नहीं निकलते थे। अपना सर्वस्व खोने पर भी वह अपने निश्चय पर दृढ़ थीं। वे हम लोगों से बोलीं—"वे चाहे आग लगावें, चाहे मेरी सारी सम्पत्ति जला देवें, पर मैं उन्हें एक पाई लगान न दूँगी।" कैसा भीषण निश्चय था।

हम लोग आगे बढ़े। कुछ लोग हमसे कहने लगे कि आप लोग बोरसद का कच्चा जेल अवश्य देखिए। हम लोगों ने उनकी बातों पर कुछ विशेष ध्यान न दिया। पर आख़िरी दिन शाम को हम लोग बोरसद पहुँचे और इस जेल को देखने गए। हम लोग एक फाटक से अन्दर गए। इस फाटक पर पहरा था। पर हम लोगों को अभी तक यह समझ में नहीं आता था, कि इसमें क्या होगा? अन्दर एक नीचे बरामदे के चारों ओर सीकचे लगे हुए थे। देखने में यह एक बड़ा पिंजड़ा-सा मालूम होता था, जिसमें शेर या भालू रक्खे जा सकते हैं। पर इसमें कोई शेर-भालू बन्द न थे। इसमें सत्याग्रही बन्द थे और इसके घोर अन्धकार में ३६ आँखें चमक रही थीं। पहले तो मैं यह दृश्य देख कर चकित-सी

(शेष मैटर ११वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

बम्बई में गोलियों और लाठियों का भयङ्कर प्रहार

३०० मनुष्य घायल :: महिलाओं पर पुलिस के प्रहार

एक यूरोपियन महिला की सार्जेंएट को फटकार

'शोलापुर दिवस' के अवसर पर पुलिस की नादिरशाही

१६ जनवरी को बम्बई-निवासियों का, 'शोलापुर शहीद-दिवस' मनाने का निश्चय जान कर, आधी रात से ही पुलिस के अधिकारियों ने, पहरे का प्रबन्ध कर रक्खा था। शहर की कुल पुलिस, जिसकी संख्या क़रीब २००० है, अनेक भागों में बाँट दी गई, और बहु-बन्द कॉन्स्टेबिलों के दल, प्रत्येक चौराहे पर, तथा अन्य स्थानों पर, जहाँ गड़बड़ी मचने की विशेष सम्भावना थी, तैनात कर दिए गए। कालबादेवी रोड पर पुलिस का विशेष प्रबन्ध था। पुलिस के अलावा फ़ौज का भी प्रबन्ध किया गया था। ८ बजे सुबह तक कोई विशेष गोलमाल नहीं हुआ। ११ बजे के क़रीब, कॉङ्ग्रेस स्वयं-सेवकों ने, दादर, मझगाँव, गिरगाँव और एस्प्लेनेड की पुलिस अदालतों पर धरना शुरू कर दिया।

पुलिस की अदालतों के साथ-साथ, हाईकोर्ट में भी धरना शुरू किया गया था। हाईकोर्ट के सभी दरवाज़ों पर पुलिस का कड़ा पहरा था। हाईकोर्ट के चारों ओर एक भीड़ इकट्ठी हो गई, जिसे पुलिस ने समय-समय पर लाठी की मार से हटाया। हाईकोर्ट पर पिकेटिङ्ग करने वाले एक स्वयंसेवक के मस्तक पर ५ बार लाठी का प्रहार किया गया। वह अपने स्थान से टस से मस न हुआ। अन्त में वह मूर्छित होकर गिर पड़ा। वहाँ पुलिस की लाठियों से १३५ स्वयंसेवक तथा २ महिलाएँ घायल हुई हैं। दादर में सबेरे तीन स्वयंसेवकों ने, ट्राम-गाड़ियों को रोकना चाहा। वे उसकी पटरियों पर लेट गए; किन्तु वे गिरफ़्तार कर लिए गए।

१,४०,००० मिल-मज़दूरों के हड़ताल कर देने के कारण सब मिलें बन्द हो गई थीं। शोलापुर के अभियुक्तों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए उन्होंने लगभग ५ हज़ार मज़दूरों की सभा लालबाग़ में की। पुलिस का ख़ासा प्रबन्ध था। भीड़ की ओर से जब पुलिस पर पत्थर फेंके गए, तब पुलिस ने गोली चला दी, जिसके परिणाम-स्वरूप ३ व्यक्ति घायल हुए। इनमें से एक को ११ गोलियाँ लगीं, उसकी दशा चिन्ताजनक है। शहर की सब दूकानें बन्द थीं। होम मेम्बर मि० हाट्सन, तथा पुलिस-कमिश्नर म० विल्सन, सवेरे मोटर पर घूम-घूम कर समूचे शहर की देख-भाल करते रहे।

स्वयंसेवकों ने एस्प्लेनेड मैदान में दोपहर के बाद कॉङ्ग्रेस का कार्यक्रम कार्यरूप में परिणत करने का प्रयत्न किया। इसके फल-स्वरूप क़रीब ३० व्यक्ति पुलिस की लाठियों से घायल हुए। शाम को ६ बजे एस्प्लेनेड मैदान के समीप फ़ौज का दल भी भेज दिया गया। सन्ध्या-समय ६ बजे युद्ध-समिति के अध्यक्ष श्री० डी० एस० जावलकर तथा ४ अन्य सदस्यों ने मैदान में प्रवेश किया, और उन्होंने भाषण देने का प्रयत्न किया, किन्तु वे तुरन्त गिरफ़्तार कर हिरासत में भेज दिए गए और लाठियों की मार से सभा भङ्ग कर दी गई।

एस्प्लेनेड मैदान से ७ बजे के बाद पुलिस और मिलिटरी हटा ली गई। पाइधोनी और बाइकुला से भी ९ बजे रात के बाद फ़ौज हटाई गई। कुल मिला कर लगभग ३०० व्यक्ति घायल हुए हैं, जिनमें २५ की अवस्था चिन्ताजनक है।

कहा जाता है कि भुलेश्वर फ़ायर ब्रिग्रेड के समीप कुछ पुलिस सर्जेएटों ने गाँधी टोपी पहने हुए कुछ लोगों को रोका, और उनकी गाँधी टोपी छीन ली। इसके बाद जब काफ़ी तादाद में टोपियाँ इकट्ठी हो गईं, तब उनके ढेर में आग लगा दी गई।

माधवलाल ऊधवलाल, १३ वर्ष का एक बालक, जो 'स्वतन्त्रता दिवस' के अवसर पर पुलिस की गोली का शिकार हुआ।

कहा जाता है कि विश्वविद्यालय के सामने सड़क पर एक बजे के लगभग, एक मनुष्य से, जो कि गाँधी टोपी लगाए था, पुलिस के सार्जेंएट ने हट जाने के लिए कहा। जब उसने हटने से इन्कार किया तो पुलिस के सार्जेंएट ने उस पर डण्डे चलाए। किन्तु वह फिर भी डटा ही रहा। तब फिर उस पर लाठी चलाई गई। इसी समय एक यूरोपियन महिला, जो भारतीय ढङ्ग की सफ़ेद साड़ी पहने थी, वहाँ सार्जेंएट और उस आहत व्यक्ति के बीच आ खड़ी हुई, और सार्जेंएट को धिक्कार देकर बोली—"तुम्हें अपने ऊपर लज्जा नहीं आती।" इसी समय पुलिस-कमिश्नर मि० विल्सन वहाँ पहुँच गए, और अपना टोप उतार कर नम्रतापूर्वक उन्होंने उस महिला से पूछा—"आप कौन हैं?"

महिला ने कहा—"मैं भारतवर्ष से प्रेम रखती हूँ।"

पुलिस-कमिश्नर—" भी भारत से प्रेम रखता हूँ।"

* * *

(१८वें पृष्ठ का शेषांश)

रह गई। धीरे-धीरे मैंने देखा तो मालूम हुआ, कि इनमें कई लोग ऐसे थे, जिन्हें मैं जानती थी। मैंने अपने आपको सँभाला और इनसे नमस्कार किया, पर यह भयङ्कर दृश्य देख कर मेरा दम घुटने लगा। मैंने उनसे पूछा कि यह कैसी जगह है? कितनी बड़ी है? उनमें से एक ने उसे पैर से नापा। वह क़रीब ३३ फ़ुट लम्बी और २७ फ़ुट चौड़ी थी। इतनी सी जगह में १८ सत्याग्रही दिन-रात बन्द रहते हैं। इनको प्रतिदिन सवेरे केवल ४० मिनिट की छुट्टी मिलती है, जिसमें वे इस पिंजड़े के बाहर निकाले जाते हैं। इस समय में वे शौच-स्नानादि ख़तम करके जल्दी से वापस लौटते हैं और फिर २४ घण्टे इसी में बन्द रहते हैं। लघुशङ्का के लिए इसी कमरे के एक कोने में एक छेद बना हुआ है। वहीं उन्हें लघुशङ्का से निवृत्त होना पड़ता है। इस महा-काल-कोठरी में कुछ अभियुक्त तो डेढ़ महीने से पड़े हैं और कुछ महीने भर से। यह सब देख कर मैं कुछ न बोल सकी!!

हमारे साथ एक महिला थी, जिनका पुत्र इसी काल-कोठरी में क़रीब महीने भर से बन्द है। ये किसी समय में रानी थीं, इनके सच्चरित्र से आज भी वह भूमि पवित्र है। पर आज वे केवल एक साधारण ग्रामीण स्त्री हैं। उनकी सारी सम्पत्ति तथा उपाधि छिन चुकी है। इसी महान आन्दोलन के सम्बन्ध में उनके पति तथा पुत्र गिरफ़्तार हो चुके हैं, और वे भी अब अपने छोटे से बच्चे के साथ जेल जाने के समय की प्रतीक्षा कर रही हैं! वे मेरे साथ बाहर खड़ी थीं। अन्दर पिंजड़े में उनका सुपुत्र खड़ा था। उसका सारा शरीर पीला पड़ गया था। वे दोनों चुप खड़े थे। क्या कहते! दुख असह्य था। इस कोठरी में रहने के कारण उसका स्वास्थ्य ख़राब हो गया था और वह बहुत दुर्बल मालूम पड़ता था! इतने में हम लोगों का निश्चित समय ख़तम हो गया। हम लोग बाहर की ओर चले। वे सब हम लोगों की ओर एक-टक देखते रहे।

ये सरकारी अभियुक्त थे, इनका मुक़दमा होने वाला है! इन दिनों जब-जब मैं ऐसे दृश्य देखती हूँ, तब-तब मैं अपने दिल में ख़्याल करती हूँ, कि "यदि आज इङ्गलैण्ड की जनता को यह ठीक-ठीक मालूम हो जाय, कि उनके नाम पर भारत में क्या-क्या अत्याचार किए जा रहे हैं तो इसकी करुण-कथा सुन कर वे रो पड़ेंगे। केवल यही नहीं, मुझे तो विश्वास है कि इससे उनका हृदय इतना पसीज उठेगा कि वे भारत की वर्तमान शासन-प्रथा का अन्त कर देंगे।"

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

२२ जनवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

क़ैरा ज़िले में गोली चली

महिला गोली से आहत : १५० व्यक्ति घायल

'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' का सम्वाददाता ख़बर देता है कि गत १४वीं जनवरी को क़ैरा ज़िले के डाकोर नामक एक स्थान पर, एक जुलूस पर गोली और लाठियों की वर्षा की गई। कहा जाता है कि वहाँ ६ जुलूस, जिनमें एक केवल महिलाओं का था, शोलापुर के अभियुक्तों के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिए निकाले गए थे। पुलिस ने इन जुलूसों को रोका और उनमें सम्मिलित लोगों को हट जाने के लिए कहा। किन्तु जुलूस के लोगों ने हटने से इन्कार किया और वे सड़क ही पर बैठ गए। कहा जाता है कि इस पर पुलिस ने बिना मैजिस्ट्रेट की आज्ञा के जुलूस पर फ़ायरें शुरू कर दीं। ६ कारतूस चलाए गए, जिसके फल-स्वरूप एक नवयुवती महिला तथा एक पुरुष घायल हुआ। फिर गोलियाँ बन्द कर दी गईं, और लोगों को हटाने के लिए, लाठियों का प्रहार किया जाने लगा। इस काण्ड से लगभग १५० लोग घायल हुए।

जेल में पुत्र प्रसव

कानपुर का १३वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ की मुख्य महिला कार्यकर्त्री श्रीमती सरला देवी, गत २४वीं दिसम्बर को गर्भावस्था की दशा में गिरफ़्तार की गई थीं। गिरफ़्तारी के समय गर्भ के नौ मास पूरे हो चुके थे। गत ९वीं जनवरी को, जेल की कोठरी में ही आपने एक पुत्र प्रसव किया। जेल के अधिकारियों ने इसका कोई प्रबन्ध नहीं किया। आपके पति श्री० वीरेन्द्र शर्मा को भी कोई ख़बर नहीं दी गई। ११वीं जनवरी को जब शर्मा जी अपनी पत्नी को देखने आए तो उन्हें यह समाचार मालूम हुआ। किन्तु आप केवल बच्चे के मृत-शरीर को ही देख सके। श्रीमती जी ने बच्चे की लाश को, जेल के अधिकारियों को देने से इन्कार किया। आपने कहा—"बच्चा न तो मेरा है, और न मेरे पति का है, बल्कि यह कॉङ्ग्रेस का है।" कॉङ्ग्रेस को यह ख़बर मिलते ही एक वृहत सभा की आयोजना की गई, जिसमें मृत बच्चे की लाश भी लाई गई। सभा में श्रीमती जी के त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। सभा समाप्त होने पर बच्चे की लाश हज़ारों की उपस्थिति में गङ्गा किनारे गाड़ दी गई।

'मिलाप' से दस हज़ार की ज़मानत

लाहौर का १७वीं जनवरी का समाचार है कि उर्दू दैनिक 'मिलाप' से ५,०००) रु० पत्र के लिए, और ५,०००) रु० प्रेस के लिए, प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार ज़मानत माँगी गई है। इसके अतिरिक्त वे पत्र, जिनसे अब तक ज़मानतें माँगी जा चुकी हैं, ये हैं :—(१) 'बन्दे-मातरम्' (२) 'अकालीते परदेशी', (३) 'रियासती दुनिया', (४) 'अकाली गज़ट'।

'कॉमरेड' से दो हज़ार की ज़मानत माँगी गई

लाहौर का १२वीं जनवरी का समाचार है कि 'पञ्जाब हिन्दुस्तानी सेवा-दल' के मुख पत्र साप्ताहिक 'कॉमरेड' से प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार २,०००) रु० की ज़मानत माँगी गई है।

रूस की मज़दूर-सरकार को उलटने का निष्फल-प्रयत्न

मॉस्को षड्यन्त्र-केस की मनोरञ्जक कहानी

पीरी में सब को रञ्ज हुआ इनकि़लाब का ! मैंने किया शबाब में मातम शबाब का !!

'झूठ'

'दग़ाबाज़ी'

'जुआ-चोरी'

यह सब साम्राज्यवादी देशों में उस समय रह-रह कर गूँजते थे, जब रूस का विख्यात षड्यन्त्र केस धीरे-धीरे समाप्त हो रहा था।

इस मामले में कुल आठ अभियुक्त थे ; सब के सब पढ़े-लिखे ; सब के सब इञ्जीनियर अथवा प्रोफ़ेसर। परन्तु एक बात बड़ी विचित्र थी। आठों अभियुक्तों में से किसी की भी आयु ४० से कम न थी। सभी पुराने खूसट थे।

२५ नवम्बर, १९३० का दिन चिर-स्मरणीय रहेगा। उस दिन क्रान्तिकारियों का मुक़दमा मॉस्को के विख्यात 'हाउस ऑफ़ कॉलम्स' (House of Columns) में आरम्भ हुआ था। यह भवन, जिसमें अब कचहरी लग रही थी, ज़ारशाही के समय राजकर्मचारियों तथा पूँजीपतियों का नाच-घर था।

मुक़दमा आरम्भ हुआ ही था, कि बाहर से ५,००,००० मज़दूरों ने एक स्वर में चिल्ला कर कहा—"देश-द्रोहियों को मृत्यु-दण्ड दिया जाय।"

सरकारी वकील क्राई लैङ्को ने अपना भाषण आरम्भ किया। अभियुक्तों की कृतियों को लोग निस्तब्ध होकर सुन रहे थे। किस प्रकार इस षड्यन्त्रकारी दल ने, जिसका नेता रैमज़िन था, खाद्य पदार्थों को नष्ट करके रूस में दुर्भिक्ष फैलाने का उद्योग किया, किस प्रकार अपने देश के गुप्त समाचारों को दूसरे देशों के हाथ बेचा, किस प्रकार रूस की सेना में उत्पात मचाने का प्रयत्न किया। और यह सब किसलिए ? यह सब इसलिए, कि रूस में मज़दूर-सरकार को नष्ट करके साम्राज्यवाद की स्थापना की जाय ! षड्यन्त्रकारी इतने ही में सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने विदेशी सरकारों के कर्मचारियों से भी सम्बन्ध स्थापित किया। इङ्गलैण्ड के अनुदार दल के सभासद श्री० चर्चिल महोदय, कर्नल लॉरेन्स तथा फ़्रान्स के भूतपूर्व सभापति एम० पायोन्केर बयान में कहा कि क्रान्तिकारी मज़दूर-राज्य की स्थापना से हम इञ्जीनियर लोगों की आय बहुत कम हो गई। ज़ारशाही के समय हम गुलछर्रे उड़ाते थे। इसीसे हम सन् १९१७ की राज्य-क्रान्ति को, जिसका अन्त मज़दूर-राज्य की स्थापना में हुआ, अपना शत्रु मानते थे। हम लोगों को पूर्ण आशा थी, कि मज़दूर-राज्य थोड़े ही समय में दिवालिया हो जावेगा और साम्राज्यवाद का पुनर्जन्म होगा। ज़ारशाही के समय के पूँजिपतियों से, जो राज्य-क्रान्ति के पश्चात विदेश चले गए थे, हमारा गुप्त सम्बन्ध था। परन्तु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, मज़दूर-सरकार दृढ़ होती गई और हमारी आशाओं पर भी पानी फिरता गया।

जब साम्यवादी दल में स्टेलिन तथा ट्रॉट्स्की का झगड़ा आरम्भ हुआ, तब हमारी आशा-लताएँ फिर से लहलहा उठीं। विदेश-स्थित पूँजीपतियों से पता चला, कि विदेशी राज्य भी हमारी सहायता करेंगे। हमने अपने विचार के लोगों को संग्रह करके एक दल बनाया,

सोवियट-रूस के चार प्रमुख क्रान्तिकारी नेता

बाईं ओर से—(१) जन-संघ (People's Commissars) की सोवियट-कौन्सिल के प्रधान और मोशिए स्टेलिन के विरोधी—मोशिए रिकोब ; (२) पूर्वीय लाल-सेना (Red Army) के कमाण्डर—जनरल ब्लूचर, हाल ही में जिनकी गिरफ़्तारी की अफ़वाह थी ; (३) मॉस्को ज़िला के प्रधान फ़ौजी अफ़सर—मोशिए कॉर्क, जिन्हें लाल-सेना की दो कम्पनियों में विद्रोह हो जाने के कारण पद-त्याग कर देने पर बाध्य किया गया था ; और (४) प्रधान डिक्टेटर—मोशिए स्टेलिन।

मामला आरम्भ हुआ। चार न्यायाधीश, जिनमें दो किसान थे, एक रक्त-वर्ण आसन पर आ विराजे। अभियुक्तों के कटहरे में आठों अभियुक्त तम्बाकू पी रहे थे, मानों उन्हें केस से कोई सम्बन्ध ही न हो। चारों ओर कैमरा-मैन धड़ाधड़ फ़िल्में बनाते जा रहे थे। कचहरी में लगे रेडियो के द्वारा दूर-दूर के लोग कार्यवाही को सुन रहे थे। रूस-सरकार का सब से बड़ा अस्त्र है प्रचार (Propaganda)। अपने शत्रुओं की कुटिल नीति का भण्डाफोड़ करके संसार के सामने उनका कच्चा चिट्ठा रख देना ही रूस-सरकार का ब्रह्म-अस्त्र है। दूसरे देशों के षड्यन्त्र तथा रूस के षड्यन्त्र के मामलों में यह भेद है, कि जहाँ दूसरे देश षड्यन्त्र रचे जाने के कारणों को छिपाना चाहते हैं, कचहरी की कार्यवाही लोगों पर प्रकट नहीं होने देना चाहते, अभियुक्तों को अनेक प्रकार की असुविधाएँ देते हैं, वहाँ रूस में सब कार्यवाही खुले-आम होती है। पाप अपने आपको छिपाता है, परन्तु निष्पाप छाती तान कर बाहर घूमता है।

और भूतपूर्व विदेश-मन्त्री एम० ब्रायण्ड का नाम इस सम्बन्ध में लिया गया।

न्यायाधीश ने सरकारी वकील को चेतावनी दी, कि वह विदेशी सरकारों पर कोई आक्षेप न करे। क्राई लैङ्को ने इस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया। उसने आवेश में आकर अभियुक्तों की ओर घूँसा तान कर कहा—"पायोन्केर ! मैं इस पायोन्केर को जता देना चाहता हूँ, कि समय पड़ने पर रूस-निवासी शत्रु के विरुद्ध जान हथेली पर रख कर लड़ेंगे।" उसने अभियुक्तों की ओर इशारा करके कहा—"इन देशद्रोहियों को, गोली से उड़ाने का दण्ड दिया जाय !"

सरकारी वकील का भाषण समाप्त हुआ। अभियुक्तों के बयानों की बारी आई। सब से पहले रैमज़िन खड़ा हुआ। धीमी आवाज़ से धीरे-धीरे वह एक बड़े अनुभवी वक्ता की तरह बोल रहा था। उसने कोई बात छिपाई नहीं। धीरे-धीरे सारे षड्यन्त्र का, जिसका उसने स्वयं सञ्चालन किया था, भण्डफोड़ किया। उसने अपने जिसका नाम 'इण्डस्ट्रियल पार्टी' (Industrial Party) रक्खा गया। इस दल के लगभग २,००० सभासद थे। अन्तरङ्ग सभा में ४० से ६० व्यक्ति होते थे। इस दल का उद्देश्य था पूँजीवाद का पुनरुत्थान करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए देश के भीतर उपद्रव करना तथा विदेशी राज्यों की सहायता से मज़दूर-सरकार पर आक्रमण करना आवश्यक था। सन् १९२८ के अक्टूबर मास में रैमज़िन फ़्रान्स गया। वहाँ वह भूतपूर्व सभापति एम० पायोन्केर तथा भूतपूर्व विदेश-मन्त्री एम० ब्रायण्ड से मिला। मि० चर्चिल से भी उसकी उन्हीं दिनों भेंट हुई। उसको धन इत्यादि की सहायता के वचन दिए गए। इतना सब करके, वह देश में फिर लौट आया।

इसके पश्चात दूसरे अभियुक्तों के बयान हुए। अभियुक्तों के नाम इस प्रकार हैं :—

(शेष मैटर १४वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

तोता

[श्री० वाचस्पति, पाठक]

"जवाहरलाल की जय।" मलका के आकर खड़े होते ही पिंजड़े का तोता पुकार उठा।

मलका ने हँस कर उल्लास से पूछा—नमक-क़ानून ?

"तोड़ डाला"—ज़ोर से पिंजड़े में झुक कर मलका के मुँह को देखते हुए तोते ने कहा।

मलका बाहर बैठक से पढ़ कर अभी लौटी थी। वह ज़रा साँवले रङ्ग की लड़की थी, पाँव में कामदार लाल मख़मल की चट्टी, काले रङ्ग का सुन्दर लहँगा पहने, ऊपर हल्के धानी रङ्ग का दुपट्टा ओढ़े वह, बड़ी भोली मालूम पड़ती थी। उसके नाक की सोने की छोटी सी नथनी और कान की बालियाँ उसके साथ क्रीड़ा कर रही थीं। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से बालपन का विस्मय सदैव हँसता रहता था।

वह शहर-कोतवाल की लड़की थी। उसके पिता ख़ान बहादुर नज़रुद्दीन साहब बड़े मशहूर और अपने काम के बड़े पक्के आदमी थे। अपनी मेहनत के ही बल पर सिपाही के ओहदे से कोतवाल हो गए थे। आज भी उनकी सफ़ेद लम्बी दाढ़ी में जवानी की अकड़ थी।

कोतवाली के बग़ल में टाउन हॉल का विस्तृत मैदान था। प्रति दिन सवेरे सैकड़ों स्वयंसेवक उस मैदान में खड़े होकर 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' के मधुर नाद से आकाश को प्लावित कर देते थे, मलका कोतवाली की छत पर से रोज़ यह देखती, सुनती और सिहर उठती। दस वर्ष की बालिका का हृदय उद्वेग से भर जाता।

एक दिन, दो दिन, चार दिन उसने देखा। एक दिन धीरे से, अपने आगे-पीछे देख कर, अपने प्यारे तोते के निकट आकर मलका ने प्रथम बार बड़े स्नेह से उसे सम्बोधन करके कहा—"परबत्ते! कहो बेटा! 'जवाहर-लाल की जय।'" वाक्य ख़तम करके उसके अधर ज्योंही बन्द हुए, उसी समय जैसे उसके हृदय में आनन्द का स्रोत फूट पड़ा। उसके गुणी तोते ने अपने इस छोटे, पर एकान्त मित्र की बात मान कर शान्त स्वर में प्रतिध्वनि की 'जवाहरलाल की जय।'

बस, बालिका नाच उठी। जिस भय के अभाव से उसका सारा राग भ्रष्ट हो गया था, उसका आविर्भाव हो गया। और साथ ही उसका सम्पूर्ण विषाद भी उल्लास में परिणत हो गया। तोता भी नारे का अभ्यस्त हो चला।

दाई ने देखा, मलका पढ़ कर आते ही तोते से उलझ गई। उसने झुँझला कर कहा—बेटी, पहले नाश्ता कर लेती। तू तो दिन-रात एक यही खेल लिए बैठी रहती है।

"आई झाला बीबी"—मलका ने पिंजड़े के पास से हट कर कहा। दाई का नाम झाला था।

"एक दिन हुज़ूर मुझ पर ज़रूर नाराज़ होंगे?" आगन्तुक-भय का नाट्य दिखलाते हुए झाला ने कहा—"मैं तो यही सोच कर मरी जाती हूँ। तू मानती ही नहीं।"

मलका ने तिनक कर कहा—ओह, मैं कब से खड़ी हूँ। तू नाश्ता लेकर आती भी तो नहीं। अब्बा इस पर नहीं बिगड़ेंगे?

नाश्ते की तश्तरी लेकर आते हुए झाला ने देखा—मलका अब भी हाथ में किताबें लिए खड़ी है। अभी उन्हें रखने की भी उसने कोई चेष्टा नहीं की। इस पर झाला ने नाराज़ होकर कहा—वाह री मलका! कब से तैयार खड़ी है? जो मुझे डाँटती है?

"देख मैं तो तैयार हूँ झाला बीबी" कॉपियाँ एक ओर फेंकते हुए मलका ने हँस कर कहा—"आ बैठ, देख मैं बैठी हूँ। तू अपने ही हाथ से मुझे खिला दे।" कह कर मलका वहीं एक चटाई पर बैठ गई।

झाला छोटे-छोटे नवाले उसे खिलाने लगी। मलका अब भी जब जी में आता, प्रसन्न होती, या झाला को ख़ुश करना होता, तो ऐसे अवसर पर उसे खाना खिलाने के लिए कहती और कभी-कभी तो केवल उसे तङ्ग करने के ही लिए वह ऐसा करती। खाना खाकर आज वह शान्तिपूर्वक बैठी मन की साधारण प्रेरणा के वशीभूत होकर धीरे, अर्धस्फुट स्वर में, स्वयंसेवकों का गान गुन-गुनाने लगी।

हम सरे दार वसद, शौक़ जो धर करते हैं;
ऊँचा सर क़ौम का हो, सर ये नज़र करते हैं!
सूख जाए न कहीं, पौदा ये आज़ादी का।
ख़ून से अपने इसे, इसलिए तर करते हैं!

२

असाढ़ मास प्रारम्भ हो चुका था। क्षितिज के बादलों का जमघट चिर-सुप्त भारत के आन्दोलन का भयङ्कर और विराट रूप उद्वेलित कर रहा था। देश का एक-एक बच्चा क्रान्तिकारी सत्याग्रही हो गया। कल और आज का अन्तर विद्वानों के लिए अध्ययन की चीज़ हो गई थी। मलका सब कुछ देखती। वे दृश्य रहस्य बन कर उसके मन से उलझ जाते। वह बैठी क़सीदा काढ़ रही थी।

"मलका! क्या कर रही है?"—एक सुन्दर बालक ने भीतर प्रवेश करके कहा।

"अरे, हनीफ़ भैया! तुम इलाहाबाद से कब आए?"—मलका ने क़सीदे से अपना ध्यान हटा कर आश्चर्य से उससे पूछा।

"पाँच-छः दिन हुए मलका।"—हनीफ़ ने उत्तर दिया।

हनीफ़ उसके मामू का लड़का था। उसके मामा इलाहाबाद में रोज़गार करते थे और हनीफ़ वहीं पढ़ता था।

"कोई छुट्टी पड़ गई क्या?"—हाथ की चीज़ें एक टीन के डब्बे में रखते हुए मलका ने प्रश्न किया।

"छुट्टी तो नहीं है, पर स्कूलों पर धरना दिया जा रहा है। ऐसी हालत में कोई कैसे पढ़ने जा सकता है।"

"क्यों हनीफ़! ये पढ़ने से क्यों रोकते हैं?"—मलका ने बड़ी गम्भीरता से पूछा।

"तुम यहाँ देखती नहीं हो मलका! लोग आज़ादी के लिए पागल हो रहे हैं। जब 'मर मिटेंगे, या आज़ाद होंगे' का निश्चय हो चुका हो तब विद्यार्थियों का 'पढ़ने जाना, उनका अज्ञान है न! इसी शर्म से हमें बचाने के लिए ही तो वे सब यह कर रहे हैं मलका!"—हनीफ़ ने रटी हुई कविता की तरह सब एक साँस में कह कर मलका की ओर देखा।

मलका कुछ बोली नहीं। वह जैसे ठीक समझ नहीं रही थी। पर उसकी बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी। यही देख कर हनीफ़ फिर से कहने लगा—मलका! इलाहाबाद में बड़े-बड़े घरों की स्त्रियाँ स्कूलों पर धरना देती हैं। पण्डित जवाहरलाल की स्त्री, बहन, माँ, हाँ—उनकी छोटी लड़की—बस तुम्हारी इतनी है, मैं क्या कहूँ, स्मरण कर मेरे रोएँ खड़े हो जाते हैं—धरना देती हैं। मैंने अब्बा से कह कर स्कूल जाना इसी-लिए बन्द कर दिया।

"हाँ" मलका का जैसे ध्यान टूटा, उसने ज़ोर से पूछा—"तुम इस साल न पढ़ोगे हनीफ़?"

"नहीं मलका" हनीफ़ ने कहा—"मैं तो इसमें कुछ काम भी करना चाहता हूँ।"

"अब्बा सुनेंगे तो नाराज़ न होंगे हनीफ़? और तुम जेल जा सकोगे??"—मलका ने चिन्तित होकर पूछा।

"क्यों न जा सकूँगा? जब जवाहरलाल ऐसे लोग जेल जा सकते हैं, तो क्या मैं उनसे भी सुकुमार हूँ मलका?"—बालक ने तेज़ी से कहा। उसका चेहरा दीप्त था।

"जवाहरलाल!" बालिका ने बड़ी उत्सुकता से कहा। फिर कुछ सोच कर पूछा—"वे कैसे हैं हनीफ़? तुमने देखा है?"

"ओह......मैंने उन्हें कई बार देखा है, मलका! उनकी बड़ी-बड़ी आँखें, तेज से भरा मुख-मण्डल एक अव्यक्त वेदना से झुलस कर बड़ा करुण हो गया है। आह वे बड़े सुन्दर हैं। करोड़पति अमीर होकर भी वे ग़रीबी की पूजा करते हैं। चने खाकर ही दिन बिता देना और फटे कपड़े पहने रहना, उन्हें ज़रा भी नहीं अखरता।"

बालिका चुपचाप सुन रही थी। उसके हृदय में एक दर्द, एक चित्र अपनी छाया डाल रहा था, वह व्याकुल हो गई। उसने पूछा—"उन्हें बड़ा कष्ट होगा, क्यों भैया?" उसकी आँखें भर आई थीं।

(१३वें पृष्ठ का शेषांश)

(१) रैमज़िन, आयु ४३ वर्ष
(२) विक्टर लॉरी चेव, आयु ४२ वर्ष
(३) निकोलाई चारनोवस्की, आयु ६२ वर्ष
(४) आईवन कालीनोकोव, आयु २६ वर्ष
(५) अलेग्ज़ी केदोतोव, आयु ६२ वर्ष
(६) वलेडिमर ओचकिन
(७) कूपरियानोव, और
(८) स्टिनन

मुक़दमा समाप्त हुआ। निर्णय का समय आया। सारा देश—देश ही नहीं, समस्त संसार—उत्सुकता से इस बात की प्रतीक्षा में था, कि देखें क्या निर्णय होता है। रूस-निवासी यह जानने के लिए उत्सुक थे, कि देखें देश-द्रोहियों का ऊँट किस करवट बैठता है। विदेशी साम्राज्यवादी अपने सहयोगियों के भाग्य का निर्णय सुनने को उत्सुक थे।

न्यायाधीश आकर आसन पर विराजमान हुए। चाय पीते-पीते न्यायाधीशों ने निम्न फ़ैसला सुनाया:—

"प्रथम पाँच अभियुक्तों को गोली से उड़ाया जाय, बाक़ी तीन को दस-दस वर्ष की कड़ी क़ैद। सब की सम्पत्ति ज़ब्त की जाय।"

परन्तु मज़दूर-सरकार ने दया दिखाई, उसने प्रथम पाँच अभियुक्तों को दस-दस वर्ष तथा बाक़ी तीन को आठ-आठ वर्ष का दण्ड ही पर्याप्त समझा!!

* * *

"नहीं मलका, वे बड़े प्रसन्न हैं, अपनी जान भी देश के लिए वे हँसते हुए दे सकते हैं।"—कह कर हनीफ़ ने एक लम्बी साँस ली और कहा—"अब चलूँ मलका! आज अब्बा को एक ख़त भी लिखना है।"

"यहाँ खाना खाकर जाना हनीफ़।"—मलका ने स्नेह से कहा।

"नहीं मलका, जाने दो। कई काम हैं।"—कह कर वह उठ पड़ा।

मलका भी उसी के सङ्ग उठ खड़ी हुई।

३

प्रभात की स्वर्ण-किरणों से कोतवाली का वह प्राचीन पीपल का वृक्ष नहा उठा। उसका एक एक पत्ता नाच रहा था। 'हर-हर' की मधुर ध्वनि उसके सङ्गीत की तरह पवन में प्रकम्प उत्पन्न कर रही थी।

स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमिटी ने आज कोतवाली के सामने नमक-क़ानून तोड़ने का निश्चय किया था। ठीक समय पर टिड्डी-दल की भाँति लोगों का समूह राष्ट्रीय झण्डे के नीचे उल्लास से गान गाते हुए आने लगा। थोड़े ही समय में राष्ट्रीय सङ्गीत की लहरी आकाश को व्याप्त करने लगी।

मलका उधर बरामदे में पढ़ रही थी, उसके कोमल हृदय में उत्पात मचने लगा। उसने अपने वृद्ध मास्टर से कहा—"मास्टर साहब, सर में बड़ा दर्द हो रहा है।" कह कर उसने पढ़ने से छुट्टी चाही।

"जाओ मलका, चुपचाप सो रहो।"—कह कर उन्होंने छुट्टी दे दी। बाहर के कोलाहल और एक आगन्तुक-भय की आशङ्का से वे सहम गए। सब की आँख बचा कर वे चले गए।

मलका के सर में दर्द नहीं था। वह कोतवाली के ऊपर बाहर वाले कमरे की खिड़की में बैठ, एकत्रित जन-समुद्र को देखने लगी।

सहसा नमक बनाने वालों का जत्था अधिनायक के साथ आता दीख पड़ा। उनके गान को स्वयंसेवक दुहराते हुए धीमी गति से चले आ रहे थे।

बना कर कुटिया—स्वतन्त्रता की,
सपूत जेलों में रम रहे हैं।
निकल के देखेंगे वे तपस्वी,
स्वतन्त्र भारत, स्वतन्त्र भारत!

मलका के हृदय के समस्त तार झनझना उठे—"स्वतन्त्र भारत, स्वतन्त्र भारत"

उपस्थित लोगों ने बढ़ कर उस जत्थे का स्वागत किया।

भारत-माता की जय।

मलका भी धीरे से कह उठी—"भारत-माता की जय।"

कोतवाली की चहारदिवारी से सटी हुई पटरी और सड़क पर गिट्टियाँ बिछी थीं। सड़क की मरम्मत हो रही थी। उसी पर स्वयंसेवक डट कर बैठ गए। ईंटों को जोड़ कर चूल्हा बनाया और उसी पर उन्होंने कड़ाही चढ़ा दी। नमक बनाना प्रारम्भ कर दिया। कोई भय नहीं, कोई सङ्कोच नहीं। पचास साठ पुलिस के जवान कोतवाली के हाते में खड़े यह दृश्य देख रहे थे। उनकी सत्ता को तुच्छ कर स्वयंसेवक 'महात्मा गाँधी की जय', भारत 'माता की जय' और 'नमक-क़ानून तोड़ो' या घोष ज़ोरों में कर रहे थे।

"कड़ाही छीन लो"—कोतवाल ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया।

सिपाही स्वयंसेवकों के दल पर टूट पड़े। कड़ाही डण्डे से मार कर गिरा देनी चाही, पर स्वयंसेवक वहाँ प्राण टेके अड़े थे। हाथा-पाई शुरू हुई। पुलिस बल-प्रयोग कर कड़ाही छीन लेने की चेष्टा करने लगी। किन्तु स्वयंसेवक यों ही उसे छोड़ना नहीं चाहते थे। पूरी दलबन्दी कर उसकी रक्षा में सचेष्ट थे।

कोतवाल को क्रोध आ गया। उसने यह दृश्य ही न देखा था, कि १० छोकरे पुलिस की अवज्ञा कर मन-मानी करें। वह हण्टर लिए उनमें घुस पड़ा और एक की कलाई पर उसके डण्डे से ऐसी चोट मारी कि बेचारा तिलमिला उठा। फिर भी उसने कड़ाही नहीं छोड़ी।

कोतवाल ने सिपाहियों को ललकारा। डण्डे पर डण्डे पड़ने लगे। स्वयंसेवक घायल होने लगे। किसी के कलेजे पर, किसी की छाती पर चोटें लगने लगीं। कितनों के ही खोपड़े लहू-लुहान हो गए। उसी समय एक सिपाही कड़ाही लेकर कोतवाली की ओर भाग आया।

मलका देख रही थी। वह देखती थी, कि इतनी मार पड़ने पर भी सब स्वयंसेवक छाती ताने अविचलित भाव से खड़े हैं। उसे क्रोध आ गया। उसने धीरे से कहा—"अब्बा इन्हें क्यों मारते हैं?" उसका कोमल हृदय विद्रोही भावनाओं का केन्द्र बन गया। छोटी सी बालिका आँखों में आँसू भरे बैठी थी।

कितने ही स्वयंसेवक और दर्शक घायल हुए पर उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के दूसरी कड़ाही चढ़ा कर नमक बनाना प्रारम्भ कर दिया।

पुलिस ने तीन बार लाठी के बल पर स्वयंसेवकों से नमक की कड़ाही छीनी। सभी स्वयंसेवक चिकित्सालय पहुँच चुके थे। किन्तु जनता ही में से दूसरे लोग आकर फिर से नमक बनाना प्रारम्भ कर देते थे। बिना नमक बनाए वहाँ से हटना उनकी हार थी।

चौथी बार पुलिस की हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं पड़ी। सारा शहर उमड़ कर कोतवाली के सामने प्रस्तुत था। पुलिस सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य—अहिंसा जान कर भी भय-त्रस्त हो रही थी।

नमक तैयार हुआ। स्वयंसेवकों ने अपार हर्ष का अनुभव किया। सब नमक जनता में वहीं बाँट दिया गया। लोगों ने बदले में रुपयों से उनकी थैलियाँ भर दीं।

मलका चाह कर भी वह नमक न पा सकी।

४

रुई के पहल की तरह छोटे-छोटे सफ़ेद बादल तमाम आकाश में सूर्य की सान्ध्य किरणों से लिपट कर सुनहले चँदवे की तरह पृथ्वी के ऊपर फैले थे। किन्तु मलका के लिए आज उसमें कुछ भी आकर्षण न था।

कोतवाली में आज २-४ सिपाहियों को छोड़ कर कोई भी न था। मुन्शी अपना काम अलग कर रहे थे। ख़ाला किसी काम से बाज़ार गई थी। नौकर मलका के कमरे को पानी से साफ़ कर रहा था। वह ऊपर चली आई थी।

मलका का हृदय कल ही से व्याकुल था। उसने उन निरीह स्वयंसेवकों को मार खाते देखा था, जो शान्ति-पूर्वक नमक बना रहे थे। नमक बनाने के मूल में जो रहस्य था, उसे वह न जानती थी। किन्तु उसके पिता की निष्ठुरता उसके कोमल हृदय में पके फोड़े की तरह कष्ट पहुँचा रही थी। उसी दर्द के कारण न जाने कब से वह बड़ी अन्यमनस्क थी। कोई ऐसा न मिला जिससे वह दिल खोल कर बातचीत करती। हनीफ़ आया ही नहीं। और उसके पिता इधर कई दिन से उसे प्यार भी न कर सके थे। आज यदि वे उसका प्यार भी करते, तो वह भय और सङ्कोच से उनके समीप खड़ी रह कर केवल एक कठोर आघात की तरह उसे सह लेती। आज उसका हृदय उनके विरुद्ध प्रज्वलित हो उठा था। कल जब दोपहर के बाद वे अधिनायक को पकड़ कर कोतवाली ले आए उस समय—ओह! सारी जनता, उनका कितना अपमान कर रही थी! वही उसके पिता हैं? सोचते-सोचते वह उद्विग्न हो उठी। वह टहलने लगी।

आज से नगर में १४४ दफ़ा जारी कर दी गई थी। उधर सभा की घोषणा थी। उसे रोकने का पूरा इन्तिज़ाम था। इसीसे मलका रह-रह कर कुछ सोचने लगती थी। वह चाहती थी, कि कहीं उसके अब्बा दिखलाई पड़ जायँ, तो वह उनका पाँव पकड़ उनको आज मार-पीट करने से रोक ले। वह अपने स्नेह के अधिकार का प्रयोग करना चाहती थी। उसके पिता उसका अनुरोध मान जायँगे। इसका उसको पूरा विश्वास था। जब से उसकी अम्मा मरी, तब से यही अकेली लड़की उनके साथ रहती थी। इसका प्यार करते समय वे अपनी सम्पूर्ण कठोरता भूल जाते थे। प्यार की भाषा में ही उसने अपने पिता को पढ़ा था। उस खँखाड़ पर्वत-प्रदेश में विशाल वृक्षों की शीतल छाया के नीचे जैसे एक निर्मल जल की कल-कल करती अपनी ही छोटी लहरों में उलझी हुई एक धारा बहती थी, वैसे ही उसके स्नेह की एक मात्र निर्झरिणी मलका थी। मलका की आँखें टाउन हॉल में जाते हुए जन-समुदाय में उन्हें खोज रही थीं। इसीलिए बिना इच्छा के भी वह ऊपर टहल रही थी। समीप जाकर देखने की उसमें हिम्मत न थी।

"बेटी ऊपर हो?"—ख़ाला ने नीचे आकर पुकारा।

"हाँ आती हूँ।"—कह कर मलका नीचे उतर आई। ख़ाला बाज़ार से आई हुई चीज़ों को ठीक से रख रही थी। उसी समय मलका ने नीचे आकर कहा—"उधर बड़ी भीड़ है ख़ाला। ज़रा मुझे दिखा दे।" कह कर वह उसका हाथ पकड़ कर खींचने लगी।

ख़ाला ने शीघ्रता से कहा—"नहीं बेटी! बड़ी आफ़त है। उधर नहीं जाना चाहिए।" भय-विजड़ित कण्ठ से उसने कहा।

"ना, मैं जाती हूँ।"—कह कर मलका चल पड़ी।

ख़ाला मलका को जाते हुए देख कर उसके पीछे-पीछे हो ली। उसने अभी राह में, आते समय जो दृश्य देखा था, उससे उसके प्राण सूख रहे थे। वह मलका को तीखी चेतावनियाँ देने लगी। कोतवाली से टाउन हॉल जाने के लिए एक छोटा-सा निकास बना था। ठीक उसी के एक पार्श्व में मलका आकर खड़ी हो गई। उस समय जुलूस आ रहा था। उसके समीप से जत्थे पर जत्था क़ौमी नारे लगाता बढ़ रहा था। वह उसे बड़े हर्ष से देख रही थी। सहसा एक जत्थे के पीछे मलका ने देखा हनीफ़ एक लाल पट्टा पहने गाता आ रहा है। उसका उत्साह अपूर्व था। समीप आते ही मलका ने पुकारा—हनीफ़ भैया।

हनीफ़ ने घूम कर देखा—मलका खड़ी है। उसने बिना सोचे ही कहा—"चलोगी मलका?" वह अपने जत्थे से अलग होकर उसके समीप आ गया था।

मलका ने ख़ाला की ओर देख कर कहा—मैं वहाँ चल कर क्या करूँगी, हनीफ़?

हनीफ़ ने कहा—"आओ न मलका! देखो तुमसे कितने ही छोटे-छोटे बच्चे और लड़कियाँ हाथ में झण्डियाँ लिए घूम रही हैं।" हनीफ़ उत्साह से पागल हो रहा था। उसने मलका को खींच लिया।

मलका जल्दी से बाहर निकल आई। ख़ाला उसे जाते देख कर अवाक रह गई। कुछ बोल न सकी। बात ही उसकी ज़बान से न निकली। मलका जब दूर चली गई। तब उसे ज्ञान हुआ। वह रोने लगी पर वहाँ से हिली-डुली नहीं।

मलका भी हनीफ़ के सङ्ग गाने लगी। उस मैदान में अपार भीड़ एकत्रित हुई थी। पर सभी शान्त, अपने जीवन की जैसे निधि खोज रहे थे! उनमें उद्विग्नता, अधीरता और विद्रोह की कोई भावना दृष्टि-गोचर नहीं

होती थी। उसी समय सशस्त्र पुलिस की एक फ़ौज और कुछ ऑफ़िसरों के साथ ज़िला मैजिस्ट्रेट आ डटे।

मैजिस्ट्रेट ने आते ही सभा को बन्द करने की आज्ञा दी। सभापति ने सबको शान्त रहने का आदेश दिया। और उन्होंने मैजिस्ट्रेट को विनम्रतापूर्वक उनकी आज्ञा न मानने की सूचना भिजवा दी। जनता हर्ष से पागल हो रही थी। उसमें अपनी शक्ति का ज्ञान तथा आत्म-मर्यादा का भाव जाग्रत हो रहा था। उसने एक स्वर से कहा—"आज जनता की आकांक्षा को रौंद कर इङ्गलैण्ड के व्यवसाइयों का हम पर प्रभुत्व करना असम्भव है।" असहाय जनता का ऐसा दुस्साहस सहना अधिकार के दर्प से चूर मैजिस्ट्रेट के लिए एक असम्भव-कल्पना थी। उसने अधिकारियों की भीड़ तितर-बितर करने की आज्ञा दे दी। उन्मत्त गोरे सैनिक और देशी सिपाही अपने तीव्र प्रहार से लोगों को घायल करने लगे।

मलका एक छोटी सी बच्चों की टोली के सङ्ग हाथ में राष्ट्रीय झण्डी लिए घूम रही थी। टोली के बच्चे लाठियों की वर्षा होते देख कर एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। उनकी लम्बी पतली आँखें एक-दूसरे के चेहरे पर स्थिर दृष्टि से जम गईं। दूसरे ही क्षण सबों ने एक स्वर से कहा—"महात्मा गाँधी की जय।" और वे फिर एक ओर को चल पड़े।

मलका आगे थी। उसके हाथ में छोटी सी झण्डी और पीछे उसकी टोली थी। राष्ट्रीय नारे लगाता वह दल निःशङ्क होकर सब से आगे बढ़ रहा था।

पुलिस ने पहले बैठी हुई भीड़ पर आक्रमण किया। परन्तु जब लोग इधर-उधर होने लगे, तब उसकी वर्षा घूम-घूम कर होने लगी। गोरे सैनिक भी घोड़े पर दौड़ लगा रहे थे। उनके हण्टर अबाध गति से लोगों पर पड़ रहे थे। जिधर ही वे समूह देखते टूट पड़ते। एक ने बच्चों की टोली पर भी प्रहार किया। मलका के हाथ की झण्डी दूर जा पड़ी और वह कोड़े की चोट से चीख़ उठी।

"अभी भागो"—उस गोरे सार्जेण्ट ने डाँट कर बच्चों से कहा। वह बढ़ना ही चाहता था कि सभी बच्चे एक स्वर में बोल उठे—"जवाहरलाल की जय।"

मलका जय बोल कर अपनी आँखों के आँसुओं को पोंछते हुए अपनी पताका में लगी धूल झाड़ रही थी, कि सार्जेण्ट घूम पड़ा। और उसने तीव्र गति से अपने हण्टर से वार किया। कई बच्चे गिर पड़े। गोरा बच्चों को डरते न देख कर, दूसरी बार हाथ उठा रहा था।

मलका ने ज़ोर से कहा—"मारो—मैं न जाऊँगी। जवाहरलाल की जय।" वह उत्तेजित थी। उसका चेहरा तमतमा उठा था। किन्तु उसने देखा सार्जेण्ट के पीछे उसके अब्बा आ रहे हैं। उसी क्षण वह काली पड़ गई। तब तक हण्टरों की वर्षा ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया।

"अब्बा"—एक कातर ध्वनि उस रौंद कर जाते हुए सार्जेण्ट के कानों में गूँज पड़ी।

मलका के अब्बा विचलित हो उठे। वे जैसे भविष्य के अन्धकार पूर्ण आँगन में अपनी राह न पा रहे हों। अवाक खड़े होकर कुछ पहचानने की चेष्टा कर रहे थे, हनीफ़ उस मार-पीट में मलका की खोज कर रहा था। वह दौड़ा-दौड़ा वहीं आ गया। उसने देखा मलका के मुँह से ख़ून आ रहा है। वह बेहोश है। और मलका के अब्बा खड़े उसे देख रहे हैं। क्षण भर के लिए वह विचार-विमूढ़ हो गया। किन्तु शीघ्र ही उसने पूछा—"जल्दी कहिए, क्या किया जाय।" वह बहुत गम्भीर था।

मलका की बेहोशी में कोई स्मृति मँडरा रही थी। उसने परिचित कण्ठ कि ध्वनि पाकर आँखें खोल दीं। हनीफ़ का चेहरा सर के ख़ून से तर होकर काला हो गया था। उसने देखा—आह! अब्बा भी तो हैं। उसके दर्द में जैसे शीतल हवा लगी। वह काँप कर फिर बेहोश हो गई। उसने धीरे से कहा—"हनीफ़ भैया।" और उसकी आँखें फिर मुँद गईं। मलका के अब्बा ने कहा—"इसे अस्पताल......" वे इससे अधिक कुछ न बोल सके। हनीफ़ यह सुनने के लिए वहाँ न था।

उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उस कोलाहल के बीच अकेले खड़े वे मलका के लिए फटफटाने लगे। वे अपने को भूल गए। मलका के शरीर को सहलाते हुए उन्होंने कई बार पुकारा—'बेटी!'

* * *

मलका के तोते का पिंजड़ा आँगन में पड़ा था। वहाँ उसकी सुध लेने वाला कोई नहीं था। दो दिन तक वह मलका के लिए उस पिंजड़े में विकल होकर घूमता रहा।

दूसरे दिन शाम को, जब मलका के अब्बा ने आकर दरवाज़ा खोला, तब तोता एक आशा से उत्फुल्ल होकर पुकार उठा—"मलका! जवाहरलाल की जय।" वह अपना सहज प्रत्युत्तर सुनने के लिए अपने दोनों डैने फैला कर दरवाज़े की ओर देखने लगा।

मलका के अब्बा की आँखों से आँसू गिरने लगे। उस तोते की आवाज़ में मलका के वियोग की ज्वाला जैसे साँस ले रही थी। तोते की पीड़ा उनकी वेदना की वीणा में झनझना उठी। वे पिंजड़े के पास बैठ कर फूट-फूट कर रोने लगे।

तोता फड़फड़ाने लगा। उन्होंने रोते-रोते कहा—मलका तुझे छोड़ कर कहाँ चली गई, परवत्ते?

तोता कुछ बोला नहीं। वह उनसे जैसे डर रहा था। अब भी अकेले में कभी-कभी तोता मलका को वैसे ही पुकार उठता है। उस समय उसका पुकारना सुन कर मलका के अब्बा की आँखों में आँसू आ जाते हैं। वे मलका की कण्ठ-ध्वनि से जैसे विचलित हो उठते थे, उसी तरह वे उसकी ओर बड़े प्यार से देखने लगते; किन्तु तोते ने उनके सामने कभी नहीं कहा—मलका! जवाहरलाल की जय।

* * *

इतिहास के कुछ पृष्ठ

[श्री० 'इतिहास-कीट', एम० ए०]

(शेषांश)

हैदरअली की मृत्यु और सालबाई की सन्धि का वर्णन किया जा चुका है। हैदरअली की असामयिक मृत्यु से निराश होकर, नाना फड़नवीस ने तो अङ्गरेज़ों के साथ सन्धि कर ली; किन्तु हैदर के सुयोग्य उत्तराधिकारी टीपू सुलतान ने अङ्गरेज़ों से सन्धि न की। टीपू वीर पिता का वीर पुत्र था। उसने युद्ध जारी रक्खा। टीपू के हाथों अङ्गरेज़ लोग हार पर हार खाने लगे। यहाँ तक कि अङ्गरेज़ों को चारों ओर "निर्बलता, निरुत्साह और निराशा" ("Debility, dejection and despair")* के अतिरिक्त और कुछ दिखाई न देता था। अन्त में अङ्गरेज़ों ने बड़ी नम्रतापूर्वक टीपू से सन्धि की प्रार्थना की। सन् १७८४ ई० में अङ्गरेज़ों से टीपू की सन्धि हो गई। उदार टीपू ने अङ्गरेज़ों से जीते हुए सभी प्रदेश उन्हें वापस लौटा दिए।

सन्धि तो हो गई; पर इस युद्ध में अङ्गरेज़ों को जो कड़वे अनुभव हुए थे, उन्होंने अङ्गरेज़ों को एक दिन भी चैन से न बैठने दिया। मैसूर-युद्ध की कठिनाइयों और उससे होने वाले अपमान को याद करके प्रत्येक अङ्गरेज़ दिल मसोस कर रह जाता था। उन दिनों टीपू का नाम अङ्गरेज़ों के लिए त्रास और भय उत्पन्न करने वाली चीज़ थी। अङ्गरेज़-माताएँ टीपू का नाम लेकर अपने दुष्ट बच्चों को शान्त किया करती थीं।† सन् १७८६ ई० में लॉर्ड कॉर्नवालिस गवर्नर जनरल होकर भारत पहुँचा। उसने भारत पहुँचते ही टीपू से युद्ध करने की तैयारी शुरू कर दी। सन् १७९० ई० में टीपू पर आक्रमण किया गया। यद्यपि टीपू युद्ध करने के लिए तैयार न था, तो भी उसने अपना रण-कौशल दिखा कर एक बार अङ्गरेज़ों के छक्के छुड़ा दिए। टीपू की सेना ने जनरल मीडोज़ नामक एक अङ्गरेज़-सेनापति को तो ऐसी बुरी तरह हराया, कि बेचारा मीडोज़ अपमान और लज्जा से विचलित होकर आत्मघात करने जा रहा था, पर

टीपू सुल्तान

उसके एक मित्र ने ऐन मौक़े पर पहुँचा कर उसके हाथ से पिस्तौल छीन ली। अस्तु—

इस युद्ध में निज़ाम और मराठों ने भी अङ्गरेज़ों की सहायता की। निज़ाम तो पहले से ही अङ्गरेज़ों का मित्र बन चुका था, पर मराठों की नीति में सहसा इस प्रकार से परिवर्तन के हो जाने का क्या कारण है, यह ठीक समझ में नहीं आता। सम्भव है, इस समय पेशवा-दरबार में नाना फड़नवीस की प्रधानता न रही हो! जो हो, मराठों और निज़ाम की सहायता से अङ्गरेज़ों ने टीपू को हराया। लॉर्ड कॉर्नवालिस ने मैसूर की राजधानी श्रीरङ्गपट्टन के पास लालबाग़ पर क़ब्ज़ा कर

* Mill

† *Rev. M. H. Hutton's Marquess of Wellesly. p. 32.*

लिया। यह एक बहुत ही सुन्दर बाग़ है। इसमें वीर हैदरअली की समाधि बनी हुई है। टीपू ने बहुत धन व्यय करके अपने पिता की समाधि और इस बाग़ को बहुत ही सुन्दर बना रक्खा था। लॉर्ड कॉर्नवालिस ने इस बाग़ के अनेक सुन्दर वृक्षों को कटवा डाला और हैदरअली की समाधि का अपमान किया। इससे टीपू को बहुत दुःख हुआ। इस समय टीपू मराठों से सन्धि के लिए पत्र-व्यवहार कर रहा था। कहा जाता है कि

लाल बाग़

श्रीरङ्गपट्टन में टीपू सुलतान के महल का बाहरी दृश्य

नाना फड़नवीस ने कॉर्नवालिस को सुलह करने के लिए विवश किया। अङ्गरेज़ों ने अब तक जो विजय प्राप्त की थी, वह प्रधानतः मराठों और निज़ाम के बल पर ही की थी। अतः कॉर्नवालिस मराठों को अप्रसन्न करने का साहस न कर सका। सन् १७९२ ई० में सन्धि हो गई, जिसके अनुसार कम्पनी, निज़ाम और मराठों ने टीपू का आधा राज्य लेकर आपस में बराबर बाँट लिया! इसके अतिरिक्त असहाय टीपू से तीन किश्तों में तीन करोड़ तीस हज़ार रुपए देने की प्रतिज्ञा कराई गई! इस रक़म के अदा किए जाने के समय तक के लिए लॉर्ड कॉर्नवालिस ने टीपू के दो बच्चे बन्धक के तौर पर अपने पास रख लिए!!

टीपू की शक्ति का दमन करने के बाद अङ्गरेज़ों ने मराठों की ओर रुख़ मोड़ा। इस समय माधोराव नारायण पेशवा था और नाना फड़नवीस उसका प्रधान मन्त्री। माधोराव नारायण पूर्ण रूप से नाना के कहने में था। अतः उसके पेशवा रहते हुए पूना-दरबार में अङ्गरेज़ों की कूटनीति का सफल हो सकना प्रायः असम्भव था। इस समय माधो जी सिन्धिया का प्रभुत्व भी काफ़ी बढ़ा-चढ़ा था। अङ्गरेज़ों के लिए नाना फड़नवीस और माधोजी सिन्धिया दोनों के बल को तोड़ देना आवश्यक था, क्योंकि इन दोनों की सम्मिलित शक्ति किसी भी समय अङ्गरेज़ों के लिए भयावह साबित हो सकती थी। सब से पहले माधोजी की सहायता से पेशवा-दरबार को क़ब्ज़े में कर लेने का षड्यन्त्र रचा गया। अङ्गरेज़ लोग गुप्त रूप से इस बात का प्रयत्न करने लगे कि माधोराव नारायण को पेशवा की मसनद से उतार कर उसके बदले राघोबा के नाबालिग़ पुत्र बाजीराव को पेशवा बना दिया जाय। नाना फड़नवीस को इस कुत्सित षड्यन्त्र का पता लग गया। उसने पेशवा की अनुमति से बाजीराव को गिरफ़्तार करके पूना में क़ैद कर दिया।

इस प्रयत्न के विफल होने पर अङ्गरेज़ों ने माधोजी सिन्धिया के सर्वनाश की तदबीरें करना आरम्भ किया। माधोजी के विरुद्ध षड्यन्त्र पर षड्यन्त्र रचे गए और उसको पङ्गु बना देने के लिए नीच से नीच प्रयत्न किए गए। मॉरिटन के बाद से अब तक कोई दूत पेशवा-दरबार में न भेजा गया था। अब चार्ल्स मैलेट कम्पनी का दूत बन कर पूना पहुँचा। उसने माधोजी के विरुद्ध मराठे सरदारों को भड़काना आरम्भ किया। माधोजी को जब इन बातों का पता चला तो वह इस कठिन समस्या पर नाना की सलाह लेने के लिए पूना पहुँचा। पूना में किसी प्रकार माधोजी सिन्धिया की मृत्यु हो गई, एक अङ्गरेज़ इतिहासकार लिखता है कि नाना ने माधोजी को मरवा डाला; पर इस बात की सत्यता में विश्वास नहीं होता। दूसरी ओर हम ग्रायट डफ़ जैसे प्रतिष्ठित लेखक के ग्रन्थ में पाते हैं—"सिन्धिया की शक्ति और उसकी महत्त्वाकांक्षा, उसका पूना जाना, और सब से बढ़ कर उस समय का लोकमत—इन सब बातों ने एक साथ मिल कर अङ्गरेज़ों के मन में माधोजी सिन्धिया के प्रति सन्देह उत्पन्न कर दिया; और इसलिए अङ्गरेज़ों के काग़ज़ों में इस बात के अनेक प्रमाण मिलते हैं कि वे माधोजी को ईर्षा की दृष्टि से देख रहे थे।" (. . . his power and ambition, his march to Poona, and above all, the general opinion of the country, led the English to suspect him; and we accordingly find in their records various proofs of watchful jealousy . .)*

ऐसी अवस्था में क्या आश्चर्य है यदि माधोजी को मरवाने वाला नाना फड़नवीस के बदले, चार्ल्स मैलेट रहा हो? ख़ैर, माधोजी की मृत्यु से कम्पनी के मार्ग का एक बहुत बड़ा काँटा दूर हो गया। यह समाचार सुन कर लॉर्ड कॉर्नवालिस बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने विलायत से सर जॉन शोर के नाम, जो उस समय भारत का गवरनर-जनरल था, एक पत्र में लिखा—"सिन्धिया की मृत्यु से आपकी सरकार की प्रत्येक राजनीतिक कठिनाई लगभग दूर हो जावेगी" (The death of

लॉर्ड कॉर्नवालिस टीपू सुलतान के दो बच्चे बतौर बन्धक ले रहा है!

Scindhia, . . . will nearly remove every political difficulty of your Government)† अब कम्पनी के लिए केवल नाना फड़नवीस की शक्ति को नष्ट करना शेष रह गया!

माधोजी की मृत्यु से महाराष्ट्र पर नाना का प्रभाव बहुत बढ़ गया। नाना के विरुद्ध अङ्गरेज़ों ने कई बार षड्यन्त्र रचे, पर सफलता न मिली। माधोराव नारायण के पेशवा रहते इस प्रकार के गुप्त षड्यन्त्रों के सफल हो सकने की आशा भी बहुत कम थी। कम्पनी के सौभाग्य से सन् १७९५ ई० के अक्टूबर में पेशवा माधोराव नारायण की मृत्यु हो गई। इतिहास-लेखक ग्रायट डफ़ के शब्दों में "२५ अक्टूबर को सवेरे पेशवा जान-बूझ कर अपने महल के एक छज्जे पर से कूद पड़ा।" समझ में नहीं आता कि विशाल मराठा साम्राज्य के सञ्चालक पेशवा को "जान-बूझ कर" महल के छज्जे पर से कूदने की क्या ज़रूरत पड़ी थी! ख़ैर, पेशवा जान-बूझ कर कूदा या गिर पड़ा या किसी ने उसे ढकेल दिया—इस विवाद को छोड़ कर हम केवल इतना ही कह देना चाहते हैं कि पेशवा ऊपर से ज़मीन पर गिरा; उसकी हड्डियाँ टूटीं, वह मरा और उसकी मृत्यु पर कम्पनी को प्रसन्नता हुई! अङ्गरेज़ी दूत मॉरिटन के पूना में रहते समय पेशवा माधोराव और पेशवा नारायण राव की हत्याएँ गुप्त रीति से हुई थीं। यदि चार्ल्स मैलेट के समय में माधोजी सिन्धिया और पेशवा माधोराव नारायण की मृत्यु सन्दिग्ध रीति से हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

पेशवा माधोराव नारायण की मृत्यु के बाद अङ्गरेज़ों ने राघोबा के पुत्र बाजीराव को पेशवा बनाना चाहा। तुकाजी होलकर ने पूना पहुँच कर बाजीराव का पक्ष लिया। ग्रायट डफ़ के इतिहास से मालूम होता है कि इस अवसर पर नाना फड़नवीस ने तुकाजी को समझाते हुए कहा—"बाजीराव की माँ ने आरम्भ से ही उसके मन में प्रायः सभी पुराने और अनुभवी मराठा नीतिज्ञों के प्रति विद्वेष का भाव भर दिया है। बाजीराव के वंश के साथ अङ्गरेज़ों का जो सम्बन्ध है, वह मराठा साम्राज्य के लिए घातक है। इस समय मराठों में अच्छी एकता है, चारों ओर प्रजा सुखी है और यदि इसी नीति का सावधानी से पालन होता रहा तो आगे भी बहुत अधिक लाभ की आशा की जा सकती है," इत्यादि। नाना की यह वाणी कितनी दूरदर्शितापूर्ण थी, इसका प्रमाण आगे चल कर मिलेगा। तुकाजी होलकर नाना की बात मान गया। सब मराठे सरदारों ने मिल कर यह तय किया कि मृत पेशवा की विधवा पत्नी एक पुत्र गोद ले और वही पुत्र पेशवा की मसनद पर बैठे।

इस अवसर पर सरल-प्रकृति नाना से एक भयङ्कर भूल हो गई। किसी लड़के के गोद लिए जाने के पहले ही अङ्गरेज़ी दूत चार्ल्स मैलेट के पूछने पर उसने मराठा सरदारों का उक्त निश्चय मैलेट को बता दिया। भला यह ख़बर पाकर अङ्गरेज़ी दूत चुप क्यों बैठने लगा था? अङ्गरेज़ों का स्वार्थ तो इस बात में था कि राघोबा का पुत्र बाजीराव पेशवा बनाया जाय। बाजीराव इस समय पूना में क़ैद था। चार्ल्स मैलेट ने गुप्त षड्यन्त्र रच कर

* Grant Duff's *History of the Marhattas.*

† *Cornwalis letter to Sir John Shore, September. 7, 1794.*

उसे क़ैद से निकलवाया और उसके समर्थकों की सहायता से उसे पेशवा घोषित कर दिया। पेशवा की मसनद पर बैठते ही बाजीराव ने नाना फड़नवीस को क़ैद करना चाहा। बेचारा नाना जान बचा कर भागा। पर अन्त में पकड़ कर क़ैद कर लिया गया !!

बाजीराव शासक की हैसियत से बहुत ही अयोग्य साबित हुआ। उसके विषय में नाना फड़नवीस की भविष्यवाणी पूर्ण-रूप से सत्य हुई। बाजीराव अन्तिम पेशवा था। उसके समय में अङ्गरेज़ों ने पेशवा की मसनद का सदा के लिए अन्त कर दिया। निर्बल और

श्रीरङ्गपट्टन में हैदरअली और टीपू सुलतान की समाधि

कायर बाजीराव को जिस अङ्गरेज़ गवर्नर-जनरल की नीति का सामना करना पड़ा, वह था प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ और साम्राज्य-लोलुप मार्क्विस वेलेस्ली। वेलेस्ली ने भारत में आने के बाद अपनी नीति का वर्णन करते हुए एक मित्र को लिखा था :—

"I will heap kingdoms upon kingdoms, victory upon victory, revenue upon revenue; I will accumulate glory and wealth and power, until the ambition and avarice even of my masters shall cry mercy . . ."

अर्थात्—"मैं राज्य पर राज्य, विजय पर विजय और मालगुज़ारी पर मालगुज़ारी के ढेर लगा दूँगा; मैं इतनी शान, इतना धन और इतनी सत्ता इकट्ठी कर दूँगा कि एक बार मेरे मालिकों की महत्वाकांक्षा और धन-लोलुपता भी 'त्राहि-त्राहि' चिल्ला उठेगी।"

वेलेस्ली ने अपनी नीति को सफल करने के लिए जिस अचूक अस्त्र का आविष्कार किया, वह था 'सबसिडियरी एलायन्स'। इस एलायन्स या मित्रता का अभिप्राय यह था कि भारतीय राजाओं से उनकी निजी सेना को बर्ख़ास्त करा दिया और उन्हें अपने राज्य में अपने ख़र्च से अङ्गरेज़ी सेना, जिसके अफ़सर यूरोपियन हों, रखने का आग्रह किया जाय! इस सेना का प्रबन्ध कम्पनी करेगी और इसके बदले भारतीय राजे कम्पनी को धन देंगे। वास्तव में भारतीय राजाओं के पद और उनके छत्र-चँवर आदि राज-चिन्हों को सुरक्षित रखते हुए भी, उनकी शक्ति को नष्ट कर देने की इससे बढ़ कर ज़बरदस्त तरकीब सोच निकालना मुश्किल था!

पेशवा को जाल में फँसाने के लिए अङ्गरेज़ों के कुचक्र बहुत दिनों से चल रहे थे। मार्क्विस वेलेस्ली ने भारत में आकर देखा कि अङ्गरेज़ों के मित्र राघोबा का पुत्र बाजीराव पेशवा की मसनद पर है और महाराष्ट्र का एकमात्र राजनीतिज्ञ नाना फड़नवीस जेल में बन्द है। इस समय ग्वालियर की गद्दी पर स्वर्गीय माधोजी सिन्धिया का पौत्र दौलतराव सिन्धिया था। दौलतराव एक बहुत ही सुयोग्य, बुद्धिमान् और देशभक्त राजनीतिज्ञ था। उसने देखा कि इस सङ्कट के समय केवल नाना फड़नवीस ही एक ऐसा दूरदर्शी और अनुभवी राजनीतिज्ञ है, जो महाराष्ट्र की रक्षा कर सकता है। उसने फ़ौरन पूना पहुँच कर नाना फड़नवीस को क़ैद से मुक्त किया और उसे पुनः पेशवा का प्रधान-मन्त्री बनवाया। मराठों के सौभाग्य से दौलतराव सिन्धिया, नाना फड़नवीस और पेशवा बाजीराव, तीनों में सौहार्द स्थापित हो गया और ये बड़ी योग्यतापूर्वक साम्राज्य का सञ्चालन करने लगे।

अङ्गरेज़ों का प्रधान शत्रु टीपू सुलतान अभी तक जीवित था। अपना आधा राज्य खोकर भी वह बचे हुए राज्य का शासन योग्यतापूर्वक कर रहा था। उसकी प्रजा सुखी थी। मार्क्विस वेलेस्ली की आँखों में टीपू की यह समृद्धि काँटे की तरह चुभ रही थी। वह टीपू पर शीघ्र ही आक्रमण करना चाहता था। पर दौलतराव सिन्धिया के पूना में रहते वह टीपू पर आक्रमण करने का साहस न कर सका। वेलेस्ली जानता था कि टीपू पर उसका आक्रमण करना न्याय-विरुद्ध है। ऐसी दशा में उसे भय था कि यदि वह टीपू पर आक्रमण करे और दौलतराव सिन्धिया की विशाल और शिक्षित सेना टीपू की सहायता के लिए पहुँच जाय तो उसका मनोरथ व्यर्थ हो जायगा। वेलेस्ली पेशवा बाजीराव को भी सबसिडियरी सन्धि के जाल में फँसाना चाहता था; पर उसके इस मनोरथ के पूर्ण होने में भी दौलतराव सिन्धिया का पूना में रहना बाधक-रूप था। दौलतराव के पूना में रहते न तो मार्क्विस वेलेस्ली पेशवा बाजीराव पर सबसिडियरी एलायन्स को स्वीकार करने के लिए दबाव डाल सकता था और न निर्भय होकर टीपू पर आक्रमण ही कर सकता था। इन दोनों कारणों से महाराज दौलतराव को पूना से हटा देना अङ्गरेज़ों के लिए अत्यन्त आवश्यक था।

दौलतराव सिन्धिया को पूना से हटाने के लिए अनेक उपाय किए गए। कई भारतीय नरेशों को सिन्धिया के विरुद्ध भड़काया गया, सिन्धिया के राज्य के भीतर विद्रोह खड़े कराए गए, स्वयं सिन्धिया-वंश में महाराज दौलतराव के विरुद्ध षड्यन्त्र रचाए गए; पर दौलतराव का राज्य-प्रबन्ध इतना अच्छा था कि पूना में बैठे ही बैठे वह योग्य नरेश इन सब कठिनाइयों को बड़ी सफलतापूर्वक दूर करता रहा। जब वेलेस्ली की कोई भी चाल सफल न हो सकी, तो उसने दौलतराव के राज्य की सीमा पर अपनी सेनाएँ ला-लाकर इकट्ठी करना शुरू कर दिया! इस समाचार से दौलतराव को निश्चय हो गया कि अब अङ्गरेज़ हमारे राज्य पर आक्रमण करेंगे। वह पूना छोड़ कर अपने राज्य की रक्षा का प्रबन्ध करने के लिए उत्तर की ओर चल पड़ा। वेलेस्ली तो यह चाहता ही था। उसने दौलतराव सिन्धिया के पूना से हटते ही पेशवा बाजीराव को लिखा कि टीपू के साथ युद्ध छिड़ने की सम्भावना है, इसलिए हम लोग अपने सभी मित्रों की सहायता को पक्का कर लेना चाहते हैं। पेशवा के सबसिडियरी सन्धि स्वीकार कर लेने का यह बहुत ही उपयुक्त अवसर है।

नाना उस समय पूना में था। नाना के समान अनुभवी नीतिज्ञ इस घातक सन्धि को कैसे स्वीकार कर सकता था? नाना की नीति को दर्शाते हुए इतिहास-लेखक टॉरेन्स लिखता है—"नाना फड़नवीस अङ्गरेज़ों के प्रति सम्मान प्रकट करता था, उनकी प्रशंसा करता था, किन्तु उनके राजनीतिक आलिङ्गन से पीछे हटता था। चाहे कैसी भी भयानक विपत्ति उसके सामने क्यों न खड़ी हो, उसने अङ्गरेज़ों से स्थायी सैनिक सहायता लेना कभी स्वीकार न किया।"* पेशवा के साथ कम्पनी की सबसिडियरी सन्धि तो न हो सकी, पर मराठों ने यह स्वीकार कर लिया कि टीपू के विरुद्ध हम कम्पनी को सैनिक सहायता देंगे। मराठों ने परशुराम भाऊ के अधीन एक बहुत बड़ी सेना अङ्गरेज़ों की सहायता के लिए तैयार कर दी। वेलेस्ली ने कहा कि इस समय इस सेना के मैसूर जाने की आवश्यकता नहीं। पीछे आवश्यकता पड़ने पर मराठी सेना को हम अपनी सहायता के लिए बुला लेंगे। इस प्रकार मराठों की ओर से निःशङ्क होकर वेलेस्ली ने टीपू के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। परशुराम भाऊ की सेना पूना के आस-पास अङ्गरेज़ों को सहायता के लिए कूच करने को तैयार रही।

युद्ध के बीच में वेलेस्ली ने कर्नल पामर को, जो उस समय पूना-दरबार में रेज़िडेण्ट था, पत्र लिख कर पेशवा को सूचित किया—"मैं इस बात को न भूलूँगा कि टीपू सुलतान से जो प्रदेश लिए जायँगे, उनमें से कम्पनी के अन्य सहायकों के साथ-साथ पेशवा को भी बराबर भाग दिया जायगा। मैं आपको (कर्नल पामर को) अधिकार देता हूँ कि आप अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में पेशवा और नाना दोनों को इस बात की सूचना दें,

महाराजा दौलतराव सिन्धिया

× × × मुझे विश्वास है कि इससे कम से कम अपने दोनों मित्रों (निज़ाम और पेशवा) के प्रति ब्रिटिश-सरकार का निस्स्वार्थ प्रेम साबित हो जायगा।" इस प्रकार जब तक युद्ध जारी रहा, तब तक वेलेस्ली पेशवा दरबार को यह विश्वास दिलाता रहा कि टीपू से जीते हुए प्रदेशों

* *Empire in Asia*, by Torrens.

में पेशवा को बराबर का हिस्सा दिया जायगा। पर इस अवसर पर वेलेस्ली ने इस बात की ओर विशेष सावधानी रक्खी कि परशुराम भाऊ की सेना को अङ्गरेज़ों की सहायता के लिए न बुलाया जाय। शायद वेलेस्ली को अब भी डर था कि परशुराम भाऊ कहीं अङ्गरेज़ों की सहायता करने के बदले, टीपू से न मिल जाय! इतिहास-लेखक ग्राण्ट डफ़ का मत है कि पेशवा-दरबार ने ऊपर से तो अङ्गरेज़ों को सहायता देने का वचन दिया; किन्तु भीतर ही भीतर वह टीपू से मिला हुआ था। इतिहास में इस बात का एक भी उदाहरण नहीं मिलता कि मराठों ने अङ्गरेज़ों के साथ विश्वासघात किया हो; किन्तु इसके विपरीत मराठों के साथ अङ्गरेज़ों के विश्वासघात करने के अनेक उदाहरण इतिहास के पन्नों में भरे पड़े हैं। इस विषय में सर फ्रेडरिक लेली नाम का एक अङ्गरेज़ विद्वान अपनी पुस्तक में लिखता है:—

"We now arrived at the Marhatta Raj, which is closely coupled with the earlier days of the British. However fairly told, there is much for the English to be ashamed of in this period."*

अर्थात्—"अब हम मराठा-राज्य का वर्णन करते हैं, जिसका अङ्गरेज़ों के आरम्भ-काल के साथ गहरा सम्बन्ध है। इस काल के इतिहास का वर्णन चाहे हम कितनी ही सफ़ाई के साथ क्यों न करें, इसमें अनेक बातें ऐसी हैं, जिन पर अङ्गरेज़ों को लज्जित होना चाहिए!"

इस प्रकार की ज्वलन्त साक्षियों को देखते हुए इस बात पर विश्वास नहीं होता कि मराठों ने अङ्गरेज़ों को धोखा देने की बात सोची होगी। आगे की घटनाओं को देखने से स्पष्ट पता चल जाता है कि वेलेस्ली की नीयत साफ़ न थी, जिससे उसने परशुराम भाऊ की सेना की सहायता न ली और उसे मैसूर बुला भेजने की आशा में बहुत दिनों तक पूना के पास व्यर्थ कूच करने के लिए तैयार रक्खा। वेलेस्ली पहले तो मराठों को यह विश्वास दिलाता रहा कि टीपू से जीते हुए प्रदेशों में से पेशवा को बराबर का हिस्सा दिया जायगा, पर टीपू के पराजित होते ही उसने रुख़ बदल दिया। टीपू के मारे जाने के बाद जब समस्त मैसूर को कम्पनी, निज़ाम और पेशवा के बीच बराबर-बराबर बाँटने का समय आया, तो वेलेस्ली ने पेशवा-दरबार के सामने यह शर्त रक्खी कि पहले पेशवा-सरकार सबसिडियरी सन्धि को स्वीकार कर ले, उसके बाद मैसूर का कोई भाग पेशवा को दिया जायगा!! यह मक्कारी की बात सुन कर नाना फड़नवीस को बड़ा क्रोध आया। उसने सब-सिडियरी सन्धि को स्वीकार करने से साफ़ इनकार कर दिया और वेलेस्ली पर इस बात के लिए ज़ोर डाला कि मैसूर का एक भाग फ़ौरन पेशवा-सरकार के हवाले कर दिया जाय। इसके अतिरिक्त नाना ने वेलेस्ली को यह भी बताया कि पहले दिल्ली के बादशाह की आज्ञानुसार सूरत के नवाब, हैदराबाद के निज़ाम और मैसूर के राज्य से पेशवा-सरकार को सालाना चौथ मिला करती थी। अब ये तीनों राज्य कम्पनी के प्रभाव में हैं। अतः कम्पनी को इन तीनों राज्यों की चौथ पेशवा-सरकार के पास अदा करनी चाहिए। नाना के तक़ाज़ों का जब वेलेस्ली के ऊपर कोई प्रभाव न पड़ा, तो हार मान कर नाना ने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी।

* *History as taught in Indian Schools*, by Sir Frederick Lely.

परशुराम भाऊ की सेना अङ्गरेज़ों पर आक्रमण करने के लिए तैयार ही हुई थी कि पेशवा के दक्षिणी जागीरदारों ने पेशवा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। सम्भव है कि इस विद्रोह में कम्पनी के उन कर्मचारियों का कुछ हाथ रहा हो, जो उस समय कम्पनी की ओर से मैसूर का प्रबन्ध करने के लिए अर्थात् टीपू के बचे-खुचे समर्थकों को रिश्वत देकर या डरा-धमका कर कम्पनी की ओर मिला लेने के लिए नियुक्त किए गए थे। इन कर्मचारियों का एक कमीशन उन दिनों मैसूर की ठीक उसी सीमा पर काम कर रहा था, जिस सीमा से सटे हुए पेशवा के विद्रोही जागीरदारों के प्रदेश थे। नाना को अङ्गरेज़ों से निबटने के पहले इन जागीरदारों के विद्रोह को दमन करने की ओर ध्यान देना पड़ा। परशुराम भाऊ की सेना दक्षिण की ओर रवाना की गई। भारत को स्वतन्त्र करने का नाना फड़नवीस का यह अन्तिम प्रयत्न था! दक्षिण का विद्रोह अभी पूर्णतया शान्त भी न होने पाया था कि अचानक फ़रवरी सन् १८०० ई० में नाना फड़नवीस की मृत्यु हो गई! पूना के तत्कालीन रेज़िडेण्ट कर्नल पामर के शब्दों में—"नाना फड़नवीस के साथ ही मराठा साम्राज्य की समस्त नीतिज्ञता और मर्यादा-पालन का भी सदा के लिए अन्त हो गया।"

पेशवा-दरबार में नाना फड़नवीस ही एकमात्र ऐसा नीतिज्ञ था, जो अङ्गरेज़ों की चालों को भली-भाँति समझता था और जिसने अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी भग्नप्राय मराठा साम्राज्य को अब तक नष्ट होने से बचा रक्खा था! नाना ने अपने जीवन के अन्तिम भाग में जिन व्यक्तिगत यातनाओं को सहते हुए पेशवा-सरकार की सेवा की, वे उसके निस्स्वार्थ देश-प्रेम के ज्वलन्त प्रमाण हैं। नाना ने पेशवा बाजीराव को सदा उसी कार्य के लिए परामर्श दिया, जिसे उसने देश के लिए हितकर समझा। परामर्श देने में नाना ने कभी इस बात की परवा न की कि किसी विशेष राय के प्रकट करने का उसके व्यक्तिगत जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। नाना का समस्त जीवन त्याग और बलिदान की एक उज्ज्वल कहानी है। नाना का स्वभाव बहुत ही दयालु और उदार था। उसका भीतरी जीवन सादगी और संयम का आदर्श कहा जा सकता है। नाना का सारा समय काम करने के लिए हिस्सों में बँटा हुआ था और वह प्रत्येक काम को उसके उपयुक्त समय पर करने के नियम का बड़ी कठोरतापूर्वक पालन करता था, यहाँ तक कि मरने के समय तक वह अपने सभी कामों की देख-भाल स्वयं करता रहा था!

नाना की मृत्यु के पचास वर्षों के बाद उसकी योग्यता को स्वीकार करते हुए एक अङ्गरेज़ ने लिखा:—

"Give us Nana Fadnavis and such like. what poor pigmies we are as Indian administrators when compared with natives of that Stamp!!!"*

अर्थात्—"नाना फड़नवीस और उसकी योग्यता के देशी नीतिज्ञों की तुलना में हम अङ्गरेज़ भारत के शासक की हैसियत से कैसे तुच्छ बौने प्रतीत होते हैं!!!"

* *J. Sullivan's letter to Colonel Briggs, 1850.*

* * *

अण्डाकार-मेज़ परिषद् का छकड़ा क्या करके लौट रहा है?

यहाँ चलना हमारा एक ही रस्ते पे मुश्किल था!
तुम्हारी और मञ्ज़िल थी; हमारी और मञ्ज़िल थी!!

(२०वें पृष्ठ का शेषांश)

पेश कीं, कि केवल सम्मति प्रकट करना अपराध नहीं है, मुक़द्दमे में यह बात साबित नहीं की गई, कि पत्र के पाठकों पर उनके लेखों का कैसा प्रभाव पड़ा और उनके ऊपर जो अभियोग लगाए गए हैं, वे उनके लेखों के कारण नहीं, बल्कि गवर्नमेण्ट अनुवादक के असङ्गत और भ्रष्ट अनुवाद के कारण लगाए गए हैं। इसके बाद उन्होंने जजों से उचित न्याय करने की प्रार्थना की और उन्हें वाह्य दलबन्दी में न फँसने की चेतावनी दी। उनके बाद मि० ब्रेन्सन खड़े हुए और उन्होंने जूरी को सम्बोधित करके कहा, कि श्री० तिलक का लम्बा-चौड़ा भाषण, जिसे सुनते-सुनते वे ऊबता गए थे, बिलकुल असङ्गत था और उसका मुक़द्दमे से कोई सम्बन्ध नहीं था। उन्होंने अपनी बहस में भी केवल उन्हीं के लेखों के अंश पढ़े और इस बात पर ज़ोर दिया कि उनके लेख, जिसमें अप्रत्यक्ष रूप से गवर्नमेण्ट को धमकियाँ दी गई हैं, और पोस्टकार्ड उनकी मानसिक विचार-धारा के सच्चे प्रदर्शक हैं। इसके बाद बेञ्च के अध्यक्ष जज मि० डावर ने अभियोगों और केस का सारांश कहते हुए, जूरी को मुक़द्दमे के सम्बन्ध में विधान की आज्ञा और उनके कर्त्तव्य समझाए। और इस बात पर अधिक ज़ोर दिया, कि पाठकों पर उनके लेखों के प्रभाव का निराकरण करते समय उन्हें इस बात पर अवश्य विचार करना चाहिए कि श्री० तिलक ने अपने लेखों को समझाने के लिए उनके सम्मुख २१ घण्टे और १० मिनिट तक जो लम्बी-चौड़ी वक्तृता दी है, उसका सौभाग्य उन लेखों के पाठकों को प्राप्त न हुआ था। सवा घण्टे से ऊपर के वाद-विवाद के उपरान्त जूरी के अधिकांश सदस्य इस निश्चय पर पहुँचे कि श्री० तिलक पर लगाए हुए अभियोग सच्चे हैं। उनमें से सात इस सम्मति के पक्ष में थे और दो विपक्ष में। जब अदालत ने सज़ा सुनाने के पहिले उनसे यह पूछा कि क्या वे इस मामले में कुछ और कहना चाहते हैं? तब उन्होंने उत्तर में कहा—"इस संसार में मनुष्यों और राष्ट्रों के भाग्य पर शासन करने वाली और भी उच्च और प्रबल शक्तियाँ हैं। और शायद उस परम-पिता की यही इच्छा हो, कि जिस कार्य का सम्पादन मेरे जीवन की एकमात्र महत्त्वाकांक्षा रही है, उसकी सिद्धि मेरे कष्टों और बलिदान से ही हो सकेगी।"

इसके बाद जज महोदय ने अधिकांश जूरियों की सम्मति से सहमत होकर, श्री० तिलक को १२४वीं 'ए' धारा के अनुसार राजविद्रोह के दो अभियोगों में अलग-अलग तीन-तीन साल के लिए कालेपानी की सज़ा और १२३वीं 'ए' धारा के दो अभियोगों में से एक में एक हज़ार रुपए जुर्माने की सज़ा सुना दी और १२३वीं 'ए' धारा के दूसरे अभियोग से उन्हें मुक्त कर दिया।

* * *

सुप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिज्ञों के मुक़द्दमे

१—लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक :: १६०८

सन्, १६०८ के जून मास की २४वीं तारीख़ को लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक, बम्बई के उस समय के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० एस्टन के वारण्ट के अनुसार अपने निवास-स्थान 'सरदार-गृह' में गिरफ़्तार किए गए थे। उन पर अपने पूना से प्रकाशित साप्ताहिक मराठी 'केसरी' में क्रमशः १२वीं मई और ६वीं जून के संस्करणों में दो लेख प्रकाशित करने के कारण दण्ड-विधान की १२४वीं 'ए' और १५३वीं 'ए' धाराओं के अनुसार दो अभियोग लगाए गए थे। पहले लेख का शीर्षक 'देश का दुर्भाग्य' था, जिसमें उन्होंने मुज़फ़्फ़रपुर (बङ्गाल) की बम की दुर्घटनाओं का उल्लेख किया था और दूसरे का शीर्षक 'ये औषधियाँ चिरस्थायी नहीं हैं' था, जिसमें उन्होंने गवर्नमेण्ट की दमन-नीति की धज्जियाँ उड़ाई थीं। जिस समय पुलिस उनके पास वारण्ट लेकर पहुँची थी, उस समय वे अपने मित्रों से वार्तालाप कर रहे थे। वारण्ट देखते ही उन्होंने कहा, कि वे उसकी बाट पहले से ही जोह रहे थे और इतना कह कर वे पुलिस के साथ जाने के लिए तैयार हो गए। पुलिस पहले उन्हें पुलिस-कमिश्नर के ऑफ़िस में और उसके बाद एस्प्लेनेड पुलिस कचहरी के हवालात में ले गई!

श्री० तिलक के पूना के निवास-स्थान में, जहाँ 'केसरी' का दफ़्तर भी था, उसी दिन सन्ध्या को ताला डाल दिया गया था और दूसरे दिन सवेरे उसकी तलाशी ली गई थी। इस तलाशी में पुलिस बहुत सी पुरानी फ़ाइलें, रजिस्टर, किताबें और हस्त-लिखित लिपियाँ ज़ब्त कर, बम्बई ले गई थी; परन्तु इनमें एक पोस्ट-कॉर्ड के सिवाय, जिसमें विस्फोटक-द्रव्यों से सम्बन्ध रखने वाली कुछ पुस्तकों का विज्ञापन था और जिससे मुक़द्दमे में बहुत सहायता ली गई थी, पुलिस को ऐसी कोई वस्तु प्राप्त न हो सकी, जिससे वह श्री० तिलक पर लगाए हुए अभियोग साबित कर सकती। श्री० तिलक के सिंहगढ़ के निवास-स्थान की भी तलाशी ली गई थी, परन्तु पुलिस को वहाँ भी कोई मनोवाञ्छित चीज़ न मिल सकी।

दूसरे दिन श्री० तिलक, मि० एस्टन के सम्मुख पेश किए गए। सरकार की ओर से सरकारी वकील मि० बोविन खड़े हुए, और श्री०तिलक की ओर से श्री०डॉवर, श्री० दीक्षित, श्री० बोद्स और कुछ अन्य वकील। मुक़द्दमा पेश होते ही उसे स्थगित कर देने के सम्बन्ध में गरमागर्म बहस प्रारम्भ हो गई। श्री० तिलक के वकील ने मुक़द्दमे को शीघ्र ही सेशन सुपुर्द कर देने को कहा। क्योंकि उनकी राय से ऐसी अवस्था में, जब कि उनका मवक्किल लेख का प्रकाशित होना क़बूल करता है, छोटी अदालत में व्यर्थ समय नष्ट करने की कोई आवश्यकता न थी। परन्तु मैजिस्ट्रेट ने उनकी प्रार्थना पर ध्यान न दिया और मुक़द्दमा दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दिया गया। तदुपरान्त श्री० तिलक को ज़मानत पर छोड़ाने के लिए प्रार्थना की गई, और इसके लिए मि० डॉवर ने दलीलों द्वारा यह स्पष्ट कर दिया कि श्री० तिलक एक प्रतिष्ठित और सम्माननीय नागरिक हैं। उन्होंने यह भी कहा, कि यदि आवश्यकता होगी तो लोग एक लाख तक की ज़मानत देने के लिए तैयार हो जायँगे। परन्तु सरकारी वकील मि० बोविन ने हाईकोर्ट की दलील पेश करते हुए इस प्रस्ताव का विरोध किया। उन्होंने श्री० तिलक के लेखों के विरोधपूर्ण अंशों की विवेचना करते हुए कहा, कि वे इतने भयङ्कर हैं कि उन्हें ज़मानत पर छोड़ना क़ानून की दृष्टि से अनुचित होगा। मैजिस्ट्रेट ने उनकी सम्मति स्वीकार की और श्री० तिलक की ज़मानत नामञ्ज़ूर कर दी गई!

मुक़द्दमे का श्रीगणेश, चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सम्मुख सोमवार २६वीं जून को हुआ। सरकार की ओर से मि० डी० बी० बिनिङ्ग बैरिस्टर नियुक्त हुए और सरकारी वकील मि० बोविन उनके सलाहकार बनाए गए। श्री० तिलक की ओर से श्री० जे० डी० डावर बैरिस्टर खड़े हुए और श्री० इन्द्रजीत, कालाभाई और गाडगिल

स्वर्गीय लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक

बैरिस्टर तथा बोद्स और एस० एम० दीक्षित वकील उनके सहायतार्थ उपस्थित हुए। दोनों अभियोगों की कार्यवाही अलग-अलग हुई। गवर्नमेण्ट के 'ओरिएण्टल ट्रान्सलेटर' के सर्व-प्रथम सहायक मि० बी० बी जोशी की गवाही सब से पहले हुई। उन्होंने अपने बयानों में कहा कि उन्होंने उन लेखों का अनुवाद किया था और वह अनुवाद बिलकुल ठीक था। दूसरी गवाही 'केसरी' के बम्बई के एजेण्ट मि० एन० जी० दलाल की हुई। उन्होंने अपने बयानों में कहा, कि बम्बई में 'केसरी' की बिक्री बहुतायत से होती है। तदुपरान्त बम्बई की ख़ुफ़िया पुलिस के इन्सपेक्टर सलीवान की गवाही हुई जिसमें उन्होंने कहा, कि उन्होंने 'केसरी' के दफ़्तरों की तलाशी ली थी; और वह 'पञ्चनामा' जिसमें ज़ब्त-शुदा लेखों की सूची है, बिलकुल ठीक है। गवाही की जिरह और श्री० तिलक के बयान दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दिए गए। और उनका मुक़द्दमा हाईकोर्ट की सेशन के सुपुर्द कर दिया गया।

हाईकोर्ट में श्री० तिलक को ज़मानत पर छोड़ने के लिए मि० एम० ए० जिन्ना बैरिस्टर ने जो दरख़्वास्त दी थी वह नामञ्ज़ूर कर दी गई। मुक़द्दमे की कार्यवाही के लिए सात यूरोपियनों और दो पारसियों की एक विशेष-जूरी नियुक्त की गई। मुक़द्दमे की कार्यवाही सोमवार १३वीं जुलाई को बम्बई हाईकोर्ट की तृतीय 'क्रिमिनल सेशन्स' के अध्यक्ष मि० जस्टिस डावर के सम्मुख प्रारम्भ हुई। श्री० तिलक मुक़द्दमा प्रारम्भ होने के एक दिन पहले सन्ध्या को हाईकोर्ट की इमारत के तृतीय मञ्ज़िल के एक कमरे में भेज दिए गए थे और वे मुक़द्दमे की कार्यवाही के अन्त तक विशेष यूरोपियन कॉन्स्टेबिलों की निगरानी में वहीं रक्खे गए। हाईकोर्ट में मुक़द्दमे की पैरवी के लिए सरकार की ओर से एडवोकेट-जनरल मि० ब्रेन्सन नियुक्त किए गए थे। और उनके सहायतार्थ पब्लिक प्रॉसीक्यूटर मि० बोविन और मि० इन्वेरारिटी और मि० बिनिङ्ग बैरिस्टरों की नियुक्ति हुई थी। श्री० तिलक ने अपने मुक़द्दमे की पैरवी स्वयं की, परन्तु उनकी सहायता के लिए श्री० जोज़ेफ़ बेप्टिस्टा बैरिस्टर और अन्य कई वकील भी उनकी ओर से खड़े हुए थे। एडवोकेट-जनरल, इस बात पर, कि उनके दोनों अभियोगों की पैरवी अलग-अलग होना चाहिए, वाद-विवाद कर अदालत से चले गए और उनके जाने के उपरान्त श्री० तिलक, जो इस समय तक सॉलिसिटर की टेबिल के पास बैठे हुए थे, कटघरे में बैठा दिए गए और वहाँ उन्हें एक कुर्सी दी गई। इसके बाद मैजिस्ट्रेट ने उन्हें उनके अभियोग पढ़ कर सुनाए। श्री० तिलक ने उत्तर दिया कि "अभियोग स्पष्ट नहीं हैं और न लेखों के विरोधपूर्ण अंश ही स्पष्ट किए गए हैं।" इसके बाद वे लेख, जिनके कारण उन पर अभियोग लगाया गया था, पढ़ कर सुनाए गए। परन्तु श्री० तिलक ने कहा कि "वे अपराधी नहीं हैं।"

सरकार की ओर से मुक़द्दमे की पैरवी का प्रारम्भ मि० इन्वेरारिटी ने किया। उन्होंने श्री० तिलक का १२वीं मई का प्रकाशित लेख पढ़ा और कहा कि सम्पूर्ण लेख का तात्पर्य यह है, कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट का शासन अब इतना नादिरशाही और नृशंसतापूर्ण हो गया है, कि अब उसके अत्याचारों को सहन करना एकान्त असम्भव है। दूसरे लेख के सम्बन्ध में, जो ६वीं जून को प्रकाशित हुआ था, उन्होंने कहा कि अभियुक्त ने उस लेख में अपने पत्र के पाठकों को दूसरे देशों में बम फेंकने के परिणाम बतलाए थे और उन्होंने इस बात की धमकी दी थी, यदि गवर्नमेण्ट भारतीयों को उनके अधिकार न देगी, तो वह इस देश में भी किसी उपाय से बम फेंकना बन्द नहीं कर सकती। इसके बाद गवाहियाँ प्रारम्भ हुईं। पहले गवाह गवर्नमेण्ट ट्रान्सलेटर मि० जोशी की ज़िरह में श्री० तिलक ने यह साबित कर दिया, कि उनके लेखों का अनुवाद आदि से अन्त तक ग़लत था। अन्य दो गवाह मि० दलाल और मि० सलीवान थे। श्री० तिलक ने जिरह में उनकी भी ख़ूब ख़बर ली। इसके बाद उन्होंने अपना बयान पढ़ा, जिसमें उन्होंने अपने मराठी लेख के बहुत से शब्दों का अङ्गरेज़ी में ठीक-ठीक अनुवाद किया था। पोस्टकार्ड के सम्बन्ध में उन्होंने अपने बयानों में कहा, कि वे गवर्नमेण्ट के 'एक्सप्लोज़िव्ज़ एक्ट' की आलोचना करना चाहते थे और इसलिए एक्ट में उल्लिखित विस्फोटक द्रव्यों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्हें कुछ पुस्तकों की आवश्यकता पड़ी थी, वह पोस्टकार्ड उन्हें उसी सम्बन्ध में एक विज्ञापनदाता से प्राप्त हुआ था। अन्त में उन्होंने कहा कि उन पर जो अभियोग लगाए गए, वे उनमें से किसी के भी दोषी नहीं हैं।

इसके बाद श्री० तिलक ने अपना वह प्रतिभाशाली भाषण प्रारम्भ किया, जो उन्होंने जूरी के सम्मुख दिया था और जो १५वीं जुलाई से २२वीं जुलाई तक जारी रहा था। अपने इस भाषण में उन्होंने अपने पक्ष की पुष्टि के लिए इङ्गलैण्ड के बहुत से मुक़द्दमे और दलीलें पेश कर यह साबित कर दिया कि पत्रों को गवर्नमेण्ट की किसी भी नीति की आलोचना करने का स्वतन्त्र अधिकार है। उन्होंने ओजस्वी शब्दों में ये दलीलें भी

(शेष मैटर १६वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस के महामन्त्री—डॉक्टर सय्यद महमूद जो त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल जी नेहरू के साथ पकड़े गए थे और हाल ही में, सज़ा काट कर नैनी जेल से मुक्त हुए हैं। आपका यह चित्र जेल से निकलते ही लिया गया है।

बम्बई के वयोवृद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता—और म्युनिसिपुल कमिश्नर—श्री० कञ्जी करमसी मास्टर, जिन्हें नमक-आन्दोलन के सम्बन्ध में ६ मास का दण्ड दिया गया है।

योतमाल (मध्य प्रान्त) के सुप्रसिद्ध नेता—डॉक्टर बी० एम० तम्बे, जिन्हें हाल ही में ६ मास का दण्ड मिला है। आप ११ वर्ष तक इन्दौर के मेडिकल ऑफ़िसर रह चुके हैं।

हवेरी (ज़िला धारवाड़) के कुछ सत्याग्रही स्वयंसेवकों का ग्रुप—जो हाल ही में लिया गया है। बीच में श्री० ग्रामन्ना होस्मानी खड़े हैं, जिन्हें ११ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

बम्बई के राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता श्री० बी० एन० माहेश्वरी। जब से राष्ट्रीय आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है आप दूसरी बार हाल ही में जेल गए हैं। आप "बी" (माण्डवी) वार्ड से म्युनिसिपुल कॉरपोरेशन की ओर से मेम्बरी के उम्मीदवार भी हैं।

उर्दू-पत्रों के कुछ प्रतिभाशाली सम्पादक

श्री० असग़र हुसेन साहब
सम्पादक "हिन्दुस्तानी एकेडेमी जरनल"

श्री० महजूब आलम साहब
सम्पादक "पैसा अख़बार"

श्री० अकबर हैदरी 'निगरान'
सम्पादक "नैरङ्ग"

श्री० "तालिब" इलाहाबादी
सम्पादक "अकबर"

श्री० "सिराज" लखनवी
सम्पादक "मबसर"

श्री० सय्यद अहमदुल्ला क़ादरी
स० सम्पादक "तारीख़"

श्री० महशर आवादी
सम्पादक "परवाना"

श्री० हनोफ़ हाशमी
स० सम्पादक "रियासत"

श्री० फ़हीमुद्दीन 'फ़िदवी'
सम्पादक "अख़्गर"

संसार की वायु-विजयिनी आदर्श वीराङ्गनाएँ

मिस स्पूनर
आपके लिए अङ्गरेज़ जाति का यह दावा है कि आपसे बढ़ कर दक्ष उड़ाका संसार में कोई है ही नहीं ।

संसार की सर्व-श्रेष्ठ उड़ाकू महिला
मिस एमी जॉन्सन

अमेरिका की सर्व-प्रथम उड़ाकू महिला
मिसेज़ चार्ल्स ए० लिण्डबर्ग
अपने पति से हवाई जहाज़ चलाना सीख रही हैं ।
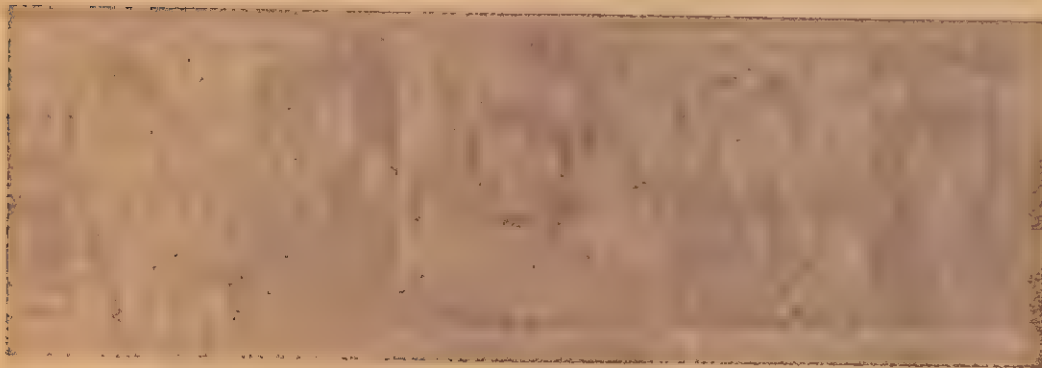
हवाई जहाज़ों की दौड़ में इङ्गलैण्ड का मस्तक ऊँचा करने वाली
मिस एमी जॉन्सन की पाँच प्रतिकृति
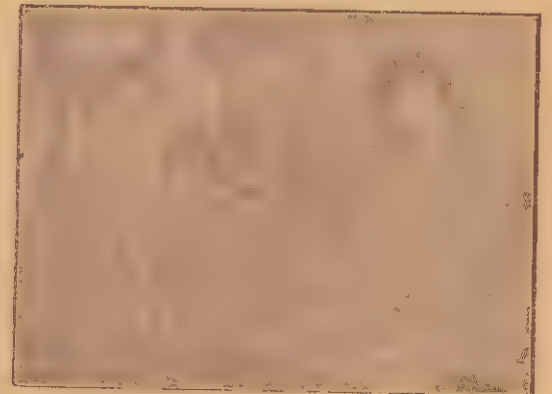
मिस एमी जॉन्सन के माता-पिता और बहिनें लन्दन में बैठे हुए टेलीफ़ोन द्वारा ऑस्ट्रेलिया में एमी से बातें कर रही हैं और उसकी अद्भुत सफलता के वर्णन सुन रही हैं ।

जर्मनी की सब से प्रसिद्ध उड़ाकू लड़की
फ़्रॉलीन जेनी लिण्ड
एक उड़ान में जर्मनी की राजधानी बर्लिन से केपटाउन जाने की तैयारी कर रही हैं ।

मिस एमी जॉन्सन—यात्रा में

मिस विनिफ़्रेड जॉयस ड्रिङ्कवाटर
यह सत्रह वर्षीया कुमारी संसार की सब से कम उम्र वाली एयर-पाइलट है ।

लखनऊ-स्कूल के कुछ प्रतिभाशाली कवि

हज़रत "ज़रीफ़" लखनवी

पासबाने-दरे-दिलदार से पूछा मैंने,
क्यों जी, इस घर में ज़नाना है, कि मर्दाना है ?
कौन्सिलों ने दोनों को ऑनरेबुल बना दिया !
थी जो सिफ़त शरीफ़ की, अब है वही चमार में !!

—"ज़रीफ़" लखनवी

ग़ैर की बज़्म में दरकार हैं साग़र के लिए,
गरदिशें कम न पड़ें, मेरे मुक़द्दर के लिए !
क्या देखते हो अपने पहलू में 'सफ़ी' आख़िर,
दिल जिसको समझते हो, वह आबलए-दिल है !
इन्सान मुसीबत में हिम्मत न अगर हारे,
आसाँ से वह आसाँ है, मुश्किल से जो मुश्किल है !

—"सफ़ी" लखनवी

हज़रत "सफ़ी" लखनवी

मुबारक नामे-आज़ादी, सलामत नामे-आज़ादी
दोआएँ दूँ किसे यारब, असीरे बालो-पर होकर !
फेंक दो आइनए-दिल को, जो गाहक उठ गए !
अब कहीं बाज़ार में इसकी ख़रीदारी नहीं !!
ख़ंजर उन्हें मिलता है, तो हमको नहीं पाते,
जब हमको वह पाते हैं, तो ख़ंजर नहीं मिलता !
गले में बाँह डाले चैन से सोना जवानी में,
नहीं मुमकिन, फिर ऐसा ख़्वाब देखूँ ज़िन्दगानी में !

—"यास" लखनवी

हज़रत "यास" लखनवी

हिजाब उट्ठा ज़मीं से, आसमाँ तक चाँदनी छिटकी,
गहन में चाँद था, जब तक छुपे बैठे थे चिलमन में !
बज़्म में भूले से लड़ जाती है, जिस वक़्त नज़र,
वह हमें देखते हैं, और उन्हें हम देखते हैं !
तकता है यार हर तरफ़ आइनाख़ाने में,
शायद किसी पर आप भी दीवाना हो गया
सदमे दिए, तो सब्र की दौलत भी देगा वह !
किस चीज़ की कमी है, सख़ी के ख़ज़ाने में !!

—"यास" लखनवी

जनाब "आशुफ़्ता" लखनवी

मौत का अहसान होगा, अब अगर आई मुझे !
ज़िन्दगी देती है रुस्वाई पे रुस्वाई मुझे !
अब वह आलम था, कि उसको भी तरस आने को था,
हाय कैसे वक़्त पर कम्बख़्त मौत आई मुझे !!
इस वक़्त तुम कहाँ हो, दिल इस घड़ी कहाँ है ?
नज़रें झुकी-झुकी हैं, चेहरा धुआँ-धुआँ है !

—"आशुफ़्ता" लखनवी

पहलू में आके बैठिए, हङ्गामे-नज़ा है,
दुनिया से जाके आएँगे हम बार-बार क्या ?
एक-एक घड़ी ज़्यादा है, एक-एक साल से,
'इशरत' है रोज़े-हश्र शबे-हिज्र यार क्या ?

—"इशरत" लखनवी

जनाब "इशरत" लखनवी

यह [illegible] ! अब [illegible] बहार को !
सय्याद ने रिहा न किया अबकी साल भी ! देखा न अन्दलीब ने फ़स्ले-बहार को !!

यह रङ्गे-गुल,[1] यह जलवए-गुल, यह जमाले-गुल
यह आइनी,[2] [illegible] बहार की,
यह [illegible] [illegible] के [illegible],
[illegible] है [illegible] में [illegible] बहार को !
—"नूह" नारवी

[illegible] परस्ती[6] से, ऐ "राज़" की मगर,
दिल क्या करेगा देख के अब्रे-बहार को !
—"राज़" लखनवी

[illegible] है [illegible] गुल, जो असीरे-क़फ़स[7] के पास
दी सैकड़ों दुआएँ, नसीमे-बहार[8] को !
—"हमदम" अकबराबाद

आए तुम और खिल गए, ज़ख़्मे दिलो-जिगर,
देखोगे इस बहार को, या उस बहार को ?
—"रज़ी" नगरामी

हर साल हम क़फ़स में, बड़ी हसरतों के साथ—
देखा किए हैं, आमदे फ़स्ले-बहार को !
—"एजाज़" इलाहाबादी

सय्याद[9] ने रिहा न किया, अबकी साल भी,
देखा न अन्दलीब[10] ने, फ़स्ले-बहार को !
—"आज़म" करवी

हसरत यही है, मेरे दिले दाग़दार[11] को,
एक रोज़ आके, देख लें वह इस बहार को !
—"बाँके" देहरादूनी

चोटी में अपनी उसने, जो गूँधा है हार को,
बाँधा है पेचे-ज़ुल्फ़ में, गोया बहार को !
—"शौक़" इलाहाबादी

"हशमत" गए जो रोज़-तरब[12], उसका ग़म है क्या,
किसने जहाँ में देखा, हमेशा बहार को ?
—"हशमत" राजापुरी

रञ्जो-ख़ुशी में एक अगर, दिल हो मुतमईन[13],
यानी ख़िज़ाँ में देखते हैं, हम बहार को !
—"आग़ा" इलाहाबादी

उलफ़त में रङ्ग लाए हैं, मिट कर जिगर के दाग़,
उजड़े हुए चमन की भी, देखो बहार को !
आँखें खुली न थीं, कि असीरे-क़फ़स हुए !
हम देख भी सके न, चमन की बहार को !!
—"सज्जाद" राजापुरी

[illegible] मेरा दाग़े-इश्क़ से, ख़ुद लालाज़ार था,
क्या देखता चमन में, गुलों की बहार को !
मातम के दाग़ दिल में हैं, दामन है चाक-चाक,
यारब यह किसका ग़म है, उरूसे-बहार[14] को ?
—"अफ़सूँ" राजापुरी

सब रफ़्ता-रफ़्ता बज़्मे-चमन[15] से चले गए,
बाक़ी ख़िज़ाँ ने, आह न रक्खा बहार को !
—"इबरत" बहराइची

[illegible] यह हौसला है, हर एक बादा-ख़्वार[16] को,
छू ले तड़प के, दामने-अब्रे-बहार को !
—"असग़र" दरियाबादी

क्या हाले-दिल सुनाए, किसी ग़म-गुसार को,
बैठा हुआ क़फ़स में, जो रोए बहार को !
—"ताज" इलाहाबादी

बारफ़्ता[17] कर गई, जो दिले-बेक़रार को,
क्या दुश्मनी थी मुझसे, हवाए-बहार को ?

१—फूल, २—भूरि-भूरि प्रशंसा, ३—चमत्कार, ४—बादल ५—बेक़रारी, ६—शराब पीना, ७—क़ैदी, ८—हवा, ९—बहेलिया, १०—बुलबुल, ११—दाग़ों से भरा हुआ, १२—आनन्द, १३—चैन से, १४—दुलहिन, १५—महफ़िल, १६—शराब पीने वाला, १७—दीवाना,

बुलबुल के दाग़े-दिल, उभर आए हैं दफ़अतन,
सुन कर नवेदे आमदे, फ़स्ले-बहार को !
—"[illegible]" [illegible]

हर पङ्खड़ी थी ख़ुद, सबक़[18] आमोज़े ज़ब्ते-इश्क़
बुलबुल न समझी फिर भी, ज़बाने-बहार को
—"तश्ना" राजापुरी

सीने से खींचते हैं, दिले-दाग़दार को,
शायद निकाल देंगे, चमन से बहार को !
खने ग़मे फ़िराक़ से, हैं रङ्गे दाग़े-दिल
फ़स्ले-ख़िज़ाँ से, मोल लिया है बहार को !
—"बेख़ुद" इलाहाबादी

अब अन्दलीबे-ज़ार का, हालत न पूछिए,
मुद्दत हुई कि रो चुकी, फ़स्ले-बहार को !
—"शमसी" इलाहाबादी

सैरे-चमन है, बुलबुले-गुलज़ार को नसीब,
हम रौज़ने[19] क़फ़स से हैं, तकते बहार को !
—"मसरूर" बिजनौरी

दावाए-इश्क़ भी है, तमन्नाए[20] लुत्फ़ भी,
दौरे ख़िज़ाँ में ढूँढ़ रहा हूँ, बहार को !
इसके सिवा कि है यह नज़र, और दिल का खेल,
समझा न आज तक, मैं ख़िज़ाँ को बहार को !
—"रज़ा" लखनवी

फिर मेरे दिल के ज़ख़्म हरे हो गए तमाम,
ऐ काश ! कोई आग लगा दे बहार को !!
—"शाद" प्रतापगढ़ी

दिल में खिला हुआ है, गुलिस्ताने[21] बेख़िज़ाँ,
हम क्या करेंगे देख के बाग़ो बहार को ?
—"कैफ़ी" काश्मीरी

आने लगे जो सहने-चमन से सुए-क़फ़स,
हम दिल के साथ, दफ़्न कर आए बहार को
—"क़तील" जौनपुरी

जी चाहता है, तोड़ के उड़ जाऊँ मैं क़फ़स,
करता हूँ याद, जब कभी लुत्फ़े-बहार को !
वह क्या गए कि बाग़ में, अब वह समाँ नहीं,
जैसे ख़िज़ाँ ने लूट लिया है, बहार को !
—"तरीक़" जौनपुरी

बाक़ी थी फ़स्ले-गुल, कि असीरे क़फ़स हुए !
जी भर के देखने भी, न पाए बहार को !!
—"मशहूर" मछलीशहरी

हो देखना अगर, सितमे[22] रोज़गार को,
देखो क़फ़स में मुझको, चमन में बहार को !
पीरी में भी "शहीर" शिगुफ़्ता[23] अगर हो दिल,
मैं मौसिमे-ख़िज़ाँ में, दिखा दूँ बहार को !
—"शहीर" मछलीशहरी

१८—शिक्षक, १९—खिड़की, २०—आरज़ू, २१—बाग़, २२—ज़माने के ज़ुल्म, २३—खिला हुआ

क़ुदरत के देखता हूँ मैं, नक़शो-निगार को,
पत्थर में लाल, और चमन में बहार को !
—"आशिक़" हिसारी

क़ैदे-क़फ़स में आए थे जब हम, तो याद है,
कुछ रोज़ रह गए थे, शुरूए-बहार को !
—"जिगर" बिसवानी

ग़म ने तसल्लिए दिले-वहशी के वास्ते,
नश्तर बना दिया, रगे अब्रे-बहार को !
—"असर" लखनवी

हर दाग़ दिल का फूट के, नासूर हो गया
आता है जी में, आग लगा दूँ बहार को !
—"आक़िल" लाहौरी

सय्याद हँस के कहता है, होगा क़फ़स हरा,
बुलबुल असर से लेती है, नामे-बहार को !
—"शफ़ीक़" लखनवी

मेरे लहू का जोश, ख़बर दे रहा है ख़ुद
सय्याद क्यों छुपाता है फ़स्ले-बहार को !
—"हुनर" लखनवी

आए थे जिस चमन से, वह बर्बाद हो गया,
अब क्या क़फ़स में याद करें, हम बहार को !
उतरे हैं सहने-बाग़ में, फूलों के क़ाफ़िले,
नज़रें[24] दिखा रहे हैं, उरूसे-बहार को !
—"[illegible]" [illegible]

बेफ़ैज़[25] क्यों कहूँ, चमने-रोज़गार को,
पीरी[26] मिली ख़िज़ाँ को, जवानी बहार को !
—"सफ़ी" लखनवी

सय्याद को मलाल हो और उसको इनफ़ेआल[27]
हाँ, हाँ, मेरा सलाम, न कहना बहार को !
—"बेख़ुद" मोहानी

मेंहदी बँधी नहीं, मेरे पाए[28]-ख़याल में,
चाहूँ तो खींच लाऊँ, गुज़श्ता[29] बहार को !
—"यास" अज़ीमाबादी

पीरी में अब शबाब के वह वलवले कहाँ,
फ़स्ले-ख़िज़ाँ ने लूट लिया है बहार को !
—"सफ़दर" मिर्ज़ापुरी

सन्नाटा-सा चमन में है, खोल अब क़फ़स का दर !
मुझको बहार रोती है, और मैं बहार को !!
—"क़ुदसी" जायसी

बाक़ी कहाँ है, अब वह ज़माना शबाब का,
रोता हूँ, अपनी उस गई-गुज़री बहार को !
सय्याद से यह कहती है, घबरा के अन्दलीब,
कर दे क़फ़स[30] में बन्द हवाए-बहार को !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२४—भेंट, २५—निरर्थक, २६—बुढ़ापा, २७—लज्जा, २८—पैर, २९—गुज़री ३० पिंजड़ा।

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

देवदास

[illegible] उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहाविरेदार। मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

समाज की चिनगारियाँ

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्ररञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; सजीव प्रोटेक्टिङ्ग कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत मात्र ३) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से २।) रु०

शैलकुमारी

यह उपन्यास अपनी मौलिकता, मनोरञ्जकता, शिक्षा, उत्तम लेखन-शैली तथा भाषा की सरलता और लालित्य के कारण हिन्दी-संसार में विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि आजकल एम० ए०, बी० ए० और एफ़० ए० की डिग्री-प्राप्त स्त्रियाँ किस प्रकार अपनी विद्या के अभिमान में अपने योग्य पति तक का अनादर कर उनसे निन्दनीय व्यवहार करती हैं, और किस प्रकार उन्हें घरेलू काम-काज से घृणा हो जाती है! मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई और मुसलमान अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य ॥)

प्राणनाथ

यह वही उपन्यास है, जिसकी ६००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। इसमें सामाजिक कुरीतियों का ऐसा भण्डाफोड़ किया गया है कि पढ़ते ही हृदय दहल जायगा। नाना प्रकार के पाखण्ड एवं अत्याचार देख कर आप आँसू बहाए बिना न रहेंगे। शीघ्रता कीजिए। मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसीसे इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। मूल्य ।)

तूफ़ाने-बहार !

[नाख़ुदाय-सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

क्या हमें हो, ऐतबारे शैकतो-शाने-बहार,
आज मेहमाने-ख़िज़ाँ हैं, कल थे मेहमाने-बहार !
महव-हैरत हो गए, हम देख कर शाने-बहार,
यह बहारे बोस्ताँ[1] है, या गुलिस्ताने बहार ?
जोश खाकर, ख़ून का दिल की रगों में दौड़ना,
कुछ दिनों पहले से, हो जाता है ऐलाने[2]-बहार !
बाग़ में आई ख़िज़ाँ,[3] पहुँचा पयामे[4]-रुख़्सती,
रह चुके इतने दिनों तक, हम भी मेहमाने-बहार !
हो ख़िज़ाँ रुख़्सत, तो निखरे ख़ुद-बख़ुद रङ्गे-चमन,
ढूँढ़ने जाना है क्या, फ़ितरत[5] को सामाने-बहार !
कोंपलों का फूटना, कलियों का हँसना कुछ नहीं,
रुत बदलने ही से, हो जाता है ऐलाने-बहार !
बाग़वाँ किस फूल को, किस फूल पर तरजीह दे[6] ?
एक है रूहे-गुलिस्ताँ,[7] दूसरा जाने-बहार !
सैरे-गुलशन[8] से उन्हें, दिल-बस्तगी[9] होती नहीं,
जो समझते हैं तुझे, रूहे-चमन जाने-बहार !
"नूह" से कह दो, सँभाले अपनी कशतीए[10]रदीफ़
अब ज़मीने-शेर पर, आया है तूफ़ाने-बहार !

* * *

ज़माना बसन्त का

[बाबू अवधकिशोरप्रसाद साहब "कुश्ता" वकील गयावी]

हर घर में आज, क्यों न हो चर्चा बसन्त का,
देखा फिर एक साल में, जलवा[11] बसन्त का !
सरसों के फूल, अपनी बहारें दिखा गए,
अब जिसको देखो, उसको है सौदा[12] बसन्त का !
खिल-खिल कर, एक-एक कली, फूल बन गई !
मुर्ग़े-चमन[13] ने, राग जो गाया बसन्त का,
तसवीरे फ़स्ले[14] गुल, वहीं आँखों में खिंच गई,
दिल में ख़याल, जिस घड़ी आया बसन्त का !
सब में कुछ और बात, तो इसमें कुछ और रङ्ग,
हर दौर[15] से है दौर, निराला बसन्त का !
दिल बाग़-बाग़ क्यों न हो, आलम को देख कर,
नक़शा यह बन गया है, सरापा[16] बसन्त का !
फ़स्ले-ख़िज़ाँ के पाँव, जो उखड़े, तो क्या अजब,
बाग़े जहाँ में, अब क़दम आया बसन्त का !
ख़ालिक़[17] से है दुआ यही, "कुश्ता" की हर घड़ी,
क़ायम रहे हमेशा, ज़माना बसन्त का !

* * *

[illegible] फूलों का !

[नाख़ुदाय-सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

गुलशन[18] में कभी हम सुनते थे,
वह क्या था ज़माना फूलों का,

[illegible]

कलियों से कहानी कलियों की,
फूलों से फ़िसाना[19] फूलों का !
क्या मौसिमे[20]-गुल पर इतरा कर,
हम गाएँ तराना फूलों का,
दो रोज़ में आने वाला है,
एक और ज़माना फूलों का !
फिर बादे[21]-सबा वह आ पहुँची,
फिर रङ्ग खिला, नकहत[22] फैली;
ऐ लूटने वालो ! अब लूटो—
मामूर[23] ख़ज़ाना फूलों का !
नाज़ाँ है जो अपनी क़िस्मत पर,
गुलचीं,[24] को यह क्या मालूम नहीं,
जाएगी बहार, आएगी ख़िज़ाँ,
बदलेगा ज़माना फूलों का !
पैयामे[25]-ख़िज़ाँ में ऐ बुलबुल,
तकलीफ़ मेरी बढ़ जाएगी,
फूलों की क़सम देता हूँ तुझे,
छेड़ अब न तराना फूलों का !
शाख़ें[26] भी बलाएँ लेती हैं,
पत्ते भी निछावर होते हैं,
अल्लह रे जवानी गुलशन की,
उफ़-उफ़ रे ज़माना फूलों का !
जब अहले[27]-चमन सो जाते हैं,
तो हुस्न के डाकू आते हैं,
कुछ रात गए, कुछ रात रहे,
लुटता है ख़ज़ाना फूलों का !
चलता ही नहीं, चलते ही नहीं,
क्या क़हर[28] है, कैसी आफ़त है,
सय्याद से हीले बुलबुल के,
गुलचीं से बहाना फूलों का !
रिन्दाने[29]-चमन यह सोच कर अब,
हुशियार हुए दिन ढलने पर,
छलकेगा शराबे-शबनम[30] से,
एक-एक पैमाना[31] फूलों का !
दुनिया में हमारे सामने है,
वैसी ही कहानी हूरों की,
परवाने[32] के आगे महफ़िल में,
जैसे हो फ़िसाना फूलों का !
अल्लाह रे यह ईसारे[33]-चमन,
जो सैरे-चमन को आता है,
ले जाता है अपने दामन में,
भर कर वह ख़ज़ाना फूलों का !
मुर्ग़ाने[34] क़फ़स को नींद कहाँ,
नींद आए भी, उम्मीद कहाँ ?
गुलचीं से उन्हें सुनवाता है,
सय्याद फ़िसाना फूलों का !
क्या-ज़िक्रे चमन, क्या फ़िक्रे-चमन,
क्या ज़ौक़े-चमन, क्या शौक़े-चमन,
दाग़ों से हमारा ख़ानए दिल,
है दौलतख़ाना फूलों का !
फ़ितरत[35] के मुसाफ़िर को बस में,
ला सकते नहीं अशजारे[36]-चमन,
आता है ज़माना फूलों का,
जाता है ज़माना फूलों का !
ऐ "नूह" असर तुम पर भी किया,
इतना तो चमन के मनज़र[37] ने,
तूफ़ान उठाना भूल गए,
ले बैठे फ़िसाना फूलों का !

* * *

मेहमाने-बहार !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

अब न वह रङ्गे-चमन है, अब न वह शाने-बहार,
[illegible]
बढ़ गई इनके सबब से, किस क़दर शाने-बहार,
दरहक़ीक़त फूल हैं, रूहे-चमन जाने बहार !
गुल[39] के खिलने, और मुरझाने से ज़ाहिर हो गया
एक सहराए[40]-ख़िज़ाँ है, एक गुलिस्ताने-बहार !
[illegible]
अहले[42]-गुलशन हो मुबारक, तुमको ऐलाने-बहार !
जब ख़िज़ाँ आई चमन में, तो यह ज़ाहिर हो गया,
कुछ दिनों के वास्ते, मिटती है अब शाने-बहार !
दिन फिरेंगे एक न एक दिन, सब के ऐ अहले-ख़िज़ाँ,
ज़िन्दगी है तो कभी, फिर होंगे मेहमाने-बहार !
यह उमङ्गों का ज़माना, यह तरङ्गों का समाँ,
दिल वह क्या दिल है, न हो जिस दिल को अरमाने-बहार !
बस यही ले दे के है, एक मुद्दआ[43] सय्याद[44] का
मौसिमे[45] गुल में भी, कोई हो न मेहमाने-बहार !
सफ़हए-काग़ज़ पे गुलहाए[46] मज़ामीं खिल गए,
[illegible]

१—बाग़, २—ढिंढोरा, ३—पतझड़ का ज़माना ४—सन्देश, [illegible] ८—बाग़, ९—दिल बहलाव, [illegible] १४—बहार का मौसम, १५—[illegible]

१९—क़िस्सा, २०—बहार का ज़माना, २१—ठण्डी हवा, २२—ख़ुशबू, २३—भरा हुआ, २४—फूल चुनने वाला, [illegible]

३४—पिंजड़े में रहने वाली चिड़ियाँ, ३५—पैदाइशी, ३६—पेड़, ३७—दृष्टि, ३८—संसार, ३९—फूल, ४०—जङ्गल, ४१—कली, ४२—बाग़ वाले, ४३—मतलब, ४४—बहेलिया, ४५—बहार का ज़माना, ४६—भाव रूपी फूल, ४७—संग्रह।

यौवन के अभिनव वसन्त में,
सरस स्नेह सञ्चार हुआ।
नई हुई कल्पना सुन्दरी,
और नया संसार हुआ॥

बसन्त

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

ऋतुपति से मिलने को बसुधा का सयत्न नूतन शृङ्गार।
नए हुए से पाँचों तत्वों का बदला प्रमत्त व्यवहार!
मृदुल कोपलों की सारी में फूलों के भूषण नाना।
मन्द पवन की छेड़-छाड़ में सारी का उड़-उड़ जाना!
नभ-मण्डल में अश्रुत केवल मन-स्रोतस्विनी का गुञ्जन,
होता हुआ वायु-मण्डल में अविरल गुरु अव्यक्त हवन!
था रह कर अदृश्य चन्दन का सिक्त विराट् व्यजन डुलना,
मृदु थपकी की मादकता में कलियों का हिलना-खुलना!
नव-कुसुमों का नव-विकासमय वासन्तिक वैभव कानन,
अपने ही गायन पर मोहित नृत्य-शील विहँगों का मन!
मृदु आन्दोलित लता-द्रुमों का मन्दस्पन्दित आलिङ्गन!
यौवन से अस्थिर सुमनों का मत्त-मधुप से मधुर मिलन!
सुमनों के अविराम स्फुरण पर मलयानिल का मृदु अभिमान
कलियों का कुछ ठिठक-ठिठक कर मृदु झिड़की से करना मान।
सदय उषा का दे जाना वन को असंख्य मुक्ता का दान।
मृदु रञ्जित उसमें फैलाना निज अञ्चल का अचिर वितान!
सन्ध्या का इस वन में करना, फूल और कलियों से बात।
उड्गुम्फित[1] कल अलकावलि से स्वर्णाञ्चल का मृदु सङ्घात!
सर के स्वच्छ सलिल में मृगयित[2] कञ्जों का झुक-झुक जाना।
कर गुन-गुन गुञ्जार मिलिन्दों का उन पर रुक-रुक आना!
सर-प्रतिबिम्बित कञ्ज-भृङ्ग का लहरों से मिल कर हिलना!
नए हाव से, नए भाव से, जल में नया सुमन खिलना!
पाटल[3] की प्रसून-माला का मोदमयी वसुधा करना,
अनायास अलि-सुमन-मिलन में शूल-विरोध-सुधा भरना!
पाटल-विटपावलि के ऊपर गाते हुए असंख्य भ्रमर!
अङ्गारे विरही के हित, आक्रमण श्याम घन का उन पर।
किन्तु प्रकृति से जो बैरी है उससे होता नहीं भला,
घन का कृपा-पात्र पाकर अपने को विरही और जला!
विरही का सहना मधु-मन्त्रों से प्रेरित पुष्पों के बाण,
उपमा पाना शिव की, करना सुषमा-सागर का विष-पान!
बौरे हुए रसाल-द्रुमों का मृदु सौरभ वितरण करना!
मादकता दिगन्त में भरना धैर्य प्राणियों का हरना!
हलकी ज्योत्स्ना-धारा में मधु-सुषमा का मुख धोना!
हलकी अँधियारी में उसका लज्जा तज कर श्रम खोना!
कलिकाओं की बाल-सुरभि में तरुण-चन्द्रिका का मिलना
सुन्दर वासन्तिक दिगन्त में, मुदित कुमुदगण का खिलना!
धूप-छाँह का तमश्चन्द्रिका का बदला ताना-बाना—
उन पर होकर मृदु भावों का हृदयों पर आना-जाना!
पिक के कलित कण्ठ से निकली तीक्ष्ण तीर सी मादक तान!
मदन महीप की महाछावनी का जग में अविफल आह्वान!
कण-कण में निर्बाध व्याप्त हो अथक मधुरिमा का नर्तन,
चरम सुषमता दिखलाने को यह विशेष-पट-परिवर्तन!
बहती गुप्त काल धारा में बहता भावों का कानन!
फँसा प्रचण्ड बसन्त भँवर में खो सवेग गति का बन्धन!
उसके स्वर्गिक अन्तराल से नूतन वासों का सुविकास!
उसकी वनदेवी के न्यारे गायन की नित नई मिठास!
सरसों के सुमनों का पहिने वसुधा पीत सरस परिधान!
शीत-ग्रीष्म के मधुर सम्मिलन में जीवों की स्फूर्ति महान।
पीताम्बर-मण्डित मनुजों का मिलन कृष्णमय जग सारा
सब पशुओं का मत्त विचरना, गौओं का दुलार न्यारा,
सत-रज-तम के उस मिश्रण का कब आवेगा मधुर वसन्त,
जिसमें होगा माया के गुरु गोरखधन्धे का बस अन्त?
मानस हो तन्मय शरीर, निर्लेप भाव हो पीताम्बर,
परम ज्योति ही जीव बने, यों बसें कृष्ण सबके भीतर!

१—तारों से गुँथी हुई सुन्दर अलकावलि का सुनहले अञ्चल से टकराना, २—शिकार बने हुए, ३—गुलाब।

ईरान का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

नसीरुद्दीन के बाद रूसी और अङ्गरेज़ मन्त्रियों ने शाहज़ादा मुज़फ़्फ़रुद्दीन को तख़्त पर बैठाया। वह मुँहचोर, डरपोक और बेवक़ूफ़ था। दिन-रात ज़नानख़ाने में छिपा बैठा रहता था। ईरानियों ने नाराज़ होकर उसका नाम 'बहन मुज़फ़्फ़र' रख छोड़ा था!

परन्तु राजनीतिक परिवर्तन की दृष्टि से शाह मुज़फ़्फ़रुद्दीन का शासन-काल विशेष महत्वपूर्ण था। क्योंकि उसीके समय में, वहाँ 'राष्ट्रीय शासन-विधान' पहली बार पढ़ा गया था और स्वेच्छाचार-मूलक शासन-प्रणाली की नींव हिली थी। बल्कि सच पूछिए तो उसीके समय से ईरान में विप्लव-युग का प्रारम्भ हुआ था। सिंहासनारूढ़ होकर मुज़फ़्फ़र ने सब से पहले धनागार की पूर्त्ति की ओर ध्यान दिया। प्रजा पर कई नए-नए कर लगाए गए। अपनी विलास-वासना की पूर्त्ति के लिए बहुत सा रुपया विदेशियों से ऋण लिया। ऐसे ही और भी कई कारणों से प्रजा अत्यन्त असन्तुष्ट हो उठी। परन्तु धार्मिक कट्टरता के कारण इस असन्तोष का कोई परिणाम नहीं निकला। रूढ़ियों की ग़ुलामी ने नवीन संस्कारों के पथ में विशेष रुकावटें डालीं। प्रजा अपनी वर्तमान परिस्थिति से ऊब कर के भी प्रतिकार की कोई तदबीर न सोच सकी। इसी समय सय्यद जलालुद्दीन नाम के एक वीर पुरुष का आविर्भाव हुआ। जाति का अधःपतन और अधिकारियों का अनाचार देख कर उसकी अन्तरात्मा विचलित हो उठी। यौवन-काल के आरम्भ में ही वह मातृभूमि को ग़ुलामी के बन्धन से विमुक्त करने के लिए व्याकुल हो उठा। परन्तु प्रतिकूल परिस्थिति के कारण उसे सफलता नहीं प्राप्त हुई। इसलिए उसने विदेशों में भ्रमण कर प्रचार-कार्य करने का विचार किया। सब से पहले अफ़ग़ानिस्तान पहुँचा और 'अफ़ग़ान' उपाधि से विभूषित होकर भारतवर्ष की सैर की। इसके बाद तुर्किस्तान तथा यूरोप का भ्रमण कर ईरान आया। इस लम्बी यात्रा में उसने कई तरह के अनुभव प्राप्त किए और इस सिद्धान्त पर पहुँचा कि जब तक देशवासी सामाजिक और धार्मिक ग़ुलामी से विमुक्त न होंगे, तब तक राजनीतिक पराधीनता से छुटकारा पाना सम्भव नहीं है। यही सोच कर, उसने स्ताम्बोल में अपना निवास-स्थान बनाया और अपने को 'सुन्नी' विघोषित कर, सब से पहले धार्मिक रूढ़ियों का मूलोच्छेद करना आरम्भ किया। उसकी वाणी में शक्ति थी, उसके तर्क अकाट्य होते थे। मुल्ले-मौलवी उसे नास्तिक, धर्म-द्रोही और पागल की पदवी से विभूषित करने लगे। हज़ारों नवयुवक उसके शिष्य बन गए। जन-साधारण पर उसका अखण्ड प्रभाव देख कर शाह की सरकार भी विचलित हो गई। उसने उसे देश से निकल जाने की आज्ञा प्रदान की। वह यूरोप के कई देशों में भ्रमण करता हुआ इङ्गलैण्ड पहुँचा और वहीं से ईरान की दक़ियानूसी सरकार के विरुद्ध प्रचार करने लगा। वहीं ईरान का विख्यात विद्रोही नेता मलकम ख़ाँ भी मौजूद था। दोनों ने मिल कर 'क़ानून' नाम का एक पत्र निकाला और ज़ोर-शोर से प्रचार-कार्य करना आरम्भ कर दिया। सारे देश में विप्लव का बीज वपन हो गया। विद्रोहियों की संख्या दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ने लगी। इसी समय जापान ने रूस को पछाड़ा था और उसकी उस असाधारण विजय ने समस्त एशिया में आशा का सञ्चार कर दिया। ईरान की आँखें भी खुल गईं। स्वदेश-प्रेम की शीतल स्निग्ध-धारा से सारा देश विप्लावित हो गया। इसी समय सरकार के विरुद्ध 'बस्त' नाम का निष्क्रिय प्रतिरोध आन्दोलन आरम्भ हुआ। और थोड़े ही दिनों में वह इतना शक्तिशाली हो उठा कि बेचारा मुज़फ़्फ़रशाह घबरा उठा। उसने राष्ट्रीय नेताओं को बुला कर 'मजलिस' नाम की एक जातीय महासभा की स्थापना की। सौभाग्यशाली ईरान युगों की ग़ुलामी से मुक्त हो गया। सारे देश में प्रतिनिधि-निर्वाचन की धूम मच गई। गत १९०६ ईसवी की ७वीं अगस्त को ईरान की जातीय पार्लामेण्ट का प्रथम अधिवेशन हुआ। स्वयं शाह मुज़फ़्फ़रुद्दीन ने, बीमार रहने पर भी, आकर सभा का उद्घाटन किया।

इस शुभ घटना के ठीक साल भर बाद शाह मुज़फ़्फ़रुद्दीन ने शरीर त्याग किया और उसकी जगह तख़्तनशीन हुआ उसका उत्तराधिकारी शाह मिर्ज़ा महम्मद-अली। इसने सिंहासनारूढ़ होते ही ईरान की जातीय जाग्रति को दबा डालने की चेष्टा की। 'मजलिस' की कोई प्रतिष्ठा न रही। यहाँ तक कि तख़्तनशीनी के उत्सव में भी उसके सदस्यों को निमन्त्रण नहीं दिया गया। जातीय आन्दोलन को कुचलने के लिए विपुल अर्थ स्वाहा होने लगा। हज़ारों प्रचारक राजसत्ता की तारीफ़ करने के लिए देहातों में भेजे गए और जिस तरह आजकल भारतवर्ष में जगह-जगह 'शान्ति-सभा' और 'प्रेम-सभा' की धूम है, उसी तरह वहाँ भी ख़ुशामदियों की बन आई। सरकारी भाड़े के टट्टुओं ने मूर्ख जनता को 'मजलिस' राष्ट्रीय आन्दोलन के विरुद्ध उभाड़ना आरम्भ कर दिया। अशिक्षित जनता इन मायावियों के मायाजाल में फँस कर राष्ट्रीयता का विरोध करने लगी।

शाह महम्मदअली पक्का कूटनीतिज्ञ था। एक ओर तो वह जातीय 'मजलिस' का आनुगत्य स्वीकार करता और दूसरी ओर उसे गुप्त रूप से ध्वंस कर डालने की चेष्टा करता। उसने असग़रअली नाम के एक आदमी को अपना प्रधान-मन्त्री नियुक्त किया था। यह व्यक्ति पक्का राजतन्त्रवादी और शाह नसीरुद्दीन का मन्त्री रह चुका था। जनता इसे अच्छी तरह पहचानती थी। इसलिए उसकी नियुक्ति से सारे देश में घोर असन्तोष फैल गया। लोगों ने खुल्लमखुल्ला विरोध भी किया। परन्तु शाह महम्मद के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगी। अन्त में एक विप्लववादी नवयुवक ने असग़रअली को गोली मार दी। शाह महम्मद को वाध्य होकर असग़र-अली के स्थान पर नासिरुलमुल्क नाम के एक नव-

युवक को मन्त्री बनाना पड़ा। नासिर ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय का ग्रेजुएट और पक्का राष्ट्रवादी था। परन्तु शाह के आगे उसकी एक भी चलती न थी। इस समय ईरान की अवस्था बड़ी विचित्र थी। राजसत्ता और प्रजातन्त्र में भयङ्कर द्वन्द्व चल रहा था। शाह मजलिस को ध्वंस कर डालने की चेष्टा में था और प्रजा उसे सुदृढ़ बनाने के प्रयत्न में लगी थी। महम्मद शाह के अत्याचार ने ईरान में विप्लववादियों की जड़ जमाने में अच्छी सहायता की। ईरान के सभी प्रमुख स्थानों में 'अन्जुमन' नाम की विप्लव-समितियाँ स्थापित हो गईं। गुप्त रूप से बड़े ज़ोरों से विप्लव-मन्त्र का प्रचार होने लगा। देश के नवयुवक मानो स्वतन्त्रता के लिए मतवाले हो उठे। असंख्य पत्र-पत्रिकाओं का प्रचार होने लगा। गुप्त समितियों की शाखाएँ देहातों में भी स्थापित हो गईं। विप्लववादियों ने गुप्त रूप से प्रचुर युद्ध-सामग्री भी एकत्र कर ली। जब शाह को इन बातों की ख़बर लगी तो वह अत्यन्त भयभीत हुआ।

इसी समय इङ्गलैण्ड ने अपने चिरशत्रु रूस से सन्धि कर ली। निश्चय हुआ कि आधे ईरान का तत्वावधान रूस की सरकार करेगी और आधे की ब्रिटिश सरकार। वही कहावत हुई कि "जिसकी ज़मीन उसे ख़बर ही नहीं, डोमों ने गाँव बाँट लिया।" मध्य का थोड़ा सा स्थान मानो स्वतन्त्र ईरान की स्मृति-स्वरूप छोड़ दिया गया! इस 'ऐङ्ग्लो-रशियन सन्धि' के कारण सारे ईरान में खलबली मच गई। विदेशियों के विरुद्ध खुल्लम-खुल्ला द्वेष-भाव का प्रचार आरम्भ हो गया। इधर महम्मद शाह राष्ट्रीय दल को कुचल डालने की अनवरत चेष्टा करने लगा। उसने अपनी प्रजा के उभड़ते हुए राष्ट्रीय भावों के दमन के लिए रूस से सहायता ली। रूसी सेनापति लियाकफ़ अपनी क़ज़्ज़ाक़ वाहिनी के साथ ईरान की छाती पर आ धमका। गोलों के आघात से मजलिस-भवन ढा दिया गया! उसके साथ ही एक मसजिद का भी ख़ातमा हो गया, बारह स्वयंसेवक जान से मारे गए। 'अन्जुमन' के सदस्यों ने बड़ी दिलेरी के साथ क़ज़्ज़ाक़ों का मुक़ाबिला किया, परन्तु दुर्भाग्यवश अन्त तक नहीं ठहर सके। क़ज़्ज़ाक़ों ने तेहरान शहर लूट लिया। इस तरह ईरान की जातीय जाग्रति के मूल पर कुठाराघात कर दिया गया। लोगों ने समझा, विप्लव की सदा के लिए मृत्यु हो गई; शाह महम्मद के पथ का कण्टक दूर हो गया। परन्तु किसी ने ठीक ही कहा है कि "जाको राखै साँइयाँ, मारि सकै नहिं कोय; बार न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय!" क़ज़्ज़ाक़ों का घोर अमानुषिक अत्याचार भी विप्लव की अन्तिम चिनगारी को नहीं बुझा सका। उपयुक्त ईंधन पाकर वह फिर सुलगने लगी। निर्वासित नेताओं ने फ्रान्स के पेरिस नगर में अपना अड्डा बनाया। अन्जुमन के बचे हुए सदस्यों ने उनका साथ दिया। वहीं से प्रचार-कार्य आरम्भ हुआ। विख्यात विप्लवी सरदार असद उन दिनों पेरिस में था। उसने वहीं से आग भड़काना शुरू कर दिया। काकेशिया से भी बहुत से विद्रोही आ पहुँचे। देश के गुण्डे और बद-माशों ने भी जातीय दल का साथ दिया। इस्फ़हान के बख़्तियारी सम्प्रदाय के लोग भी राजद्रोही हो उठे। गवर्नर मार डाला गया! तेब्रिज़ नामक स्थान जातीय दल वालों का प्रधान केन्द्र-स्थल बन गया। विराट विप्लव मानो शेषनाग की तरह सहस्र फण फैला कर राजसत्ता को निगल जाने के लिए तैयार हो गया। शाह ने रहीम ख़ाँ नाम के एक विख्यात डाकू को पाँच सौ घुड़सवारों के साथ तेब्रिज़ भेजा। उसने वहाँ जाकर भीषण अत्याचार किया। परन्तु अन्त में तेब्रिज़-वासियों ने उसे मार भगाया। इसके बाद शाह ने अपने सेनाध्यक्ष आईनउद्दौला को तेब्रिज़ भेजा। उसने विपुल वाहिनी द्वारा सारा शहर घेर लिया। उस समय एक अमेरिकन और एक अङ्गरेज़ राष्ट्रीय दल के स्वयंसेवकों को सामरिक शिक्षा प्रदान कर रहे थे। इन दोनों वीरों की सहायता से राष्ट्रीय दल वालों ने एक दिन अचानक शत्रुओं पर हमला कर दिया। भीषण संग्राम आरम्भ हो गया। देशभक्तों के रक्त से पृथ्वी लाल हो गई। वह वीर अमेरिकन शिक्षक भी खेत रहा। और भी बहुत से वीर धराशायी हुए। अन्त में सन्ध्या हो जाने के कारण जातीय दल वाले वापस लौट पड़े।

इस चढ़ाई में तेब्रिज़ की अवस्था बड़ी ही शोचनीय हो गई थी। साल भर तक सारा शहर शाही फ़ौज से घिरा रहा। कितने ही नर-नारियों ने खाद्याभाव के कारण प्राण विसर्जन किया, कितनों ने घास खा-खाकर जीवन धारण किए। राष्ट्रीय दल ने अदम्य उत्साह और अलौकिक वीरता का परिचय दिया। उनके असीम त्याग और दृढ़ता की कहानी सारे देश में साश्रु नेत्रों से सुनी गई। अन्त में रूसियों और अङ्गरेज़ों के दबाव डालने के कारण शाह ने अपनी फ़ौज हटा ली। तेब्रिज़ सम्पूर्ण रूप से विद्रोहियों के अधिकार में आ गया। इस घटना से सारे देश के विप्लवी उत्साहित हो गए। रेश्त से लेकर इस्फ़हान तक के विप्लववादियों का ज़बरदस्त सङ्गठन हुआ। आरमेनियन विप्लवी एफ़्रायम इस विराट वाहिनी का नेता बना। विद्रोहियों ने सब से पहले काज़्विन नामक शहर पर चढ़ाई की और वहाँ की शाही सेना को मार कर उस पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया। इसी समय असद ख़ाँ भी अपने स्वयंसेवकों के साथ एफ़्रायम के दल में आ मिला। मानो स्वर्ण में सुगन्ध आ गई। सरदार असद के बड़े-बड़े धनवान सौदागर मददगार थे। उसने बड़े ज़ोर-शोर से प्रचार-कार्य आरम्भ किया। इसके बाद तेहरान पर आक्रमण करने की घोषणा कर दी। विद्रोहियों तथा शाह की फ़ौज में घोर संग्राम आरम्भ हुआ। अन्त में विद्रोहियों की विजय हुई। तेहरान पर राष्ट्रीय पताका फहराने लगी और शाह को सपरिवार रूस की शरण लेनी पड़ी। राष्ट्र की साधना सफल हुई। ईरान के नौजवानों ने इस अवसर पर जिस वीरता का परिचय दिया था, उसका वर्णन करना हमारे लिए कठिन है।

इसके बाद शीघ्र ही शाह महम्मद के सिंहासन-च्युत होने की घोषणा की गई। सरदार सिपहदार ख़ाँ समर-सचिव नियुक्त हुए। असद ख़ाँ ने अभ्यन्तरीन शासन-विभाग का भार लिया। एफ़्रायम पुलिस का प्रधान अफ़सर बनाया गया। शाह महम्मद का लड़का, सुलतान अहमद ईरान का बादशाह बनाया गया। शाही महल 'मजलिस' भवन के रूप में परिणत हुआ।

इतने दिनों के बाद ईरान में वास्तविक नवयुग की प्रतिष्ठा हुई। राष्ट्रीय दल ने शासन-सूत्र ग्रहण किया। दक़ियानूसी क़ानून और व्यवस्था में परिवर्तन आरम्भ हुआ। मुल्ले-मौलवी घबरा उठे और जिस तरह काशी के कुछ 'पण्डित' नामधारी विलक्षण जीवों ने कॉङ्ग्रेस के विरुद्ध व्यर्थ प्रयास आरम्भ किया है, उसी तरह ईरानी मुल्लाओं ने भी कुछ बेवक़ूफ़ों तथा अशिक्षितों का एक दल बना कर राष्ट्रीय दल के मार्ग में रोड़े अटकाना आरम्भ किया। परन्तु राष्ट्रीय दल को सब से अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा, अर्थाभाव के कारण। शाह नसीरुद्दीन के ज़माने से ही ईरान के बादशाह विलासी तथा अमितव्ययी हो गए थे। हमारे देशी नरेशों और बड़े-बड़े ज़मींदारों की तरह वे भी प्रचुर अर्थ स्वाहा करके लन्दन और पेरिस की सैर किया करते थे। मानो 'बालडान्स' के मज़े लूटना ही उनके जीवन का उद्देश्य था। इसका परिणाम यह हुआ कि शाही ख़ज़ाने में एक कौड़ी भी नहीं रह गई थी। इसके सिवा शुल्क-विभाग की उन्नति तथा नवीन विधि-व्यवस्था के मार्ग में यूरोपियन शक्तियाँ भी रोड़े डालने लगीं। राष्ट्रीय दल को बाध्य होकर रूस और इङ्गलैण्ड से ऋण के लिए प्रार्थना करनी पड़ी। परन्तु इन दोनों शक्तियों ने इसके बदले में कुछ ऐसी शर्तें स्वीकृत करानी चाहीं, जो नितान्त अपमान-जनक थीं, इसलिए स्वाभिमानी ईरान ने उनसे ऋण लेना उचित नहीं समझा। दोनों शक्तियाँ नाराज़ हो गईं। इङ्गलैण्ड ने लिखा कि हमारे वाणिज्य के लिए दक्षिण ईरान में अपने ख़र्च से सारी सुविधाएँ कर दो; हमारे लिए रास्ते निष्कण्टक कर दो। राष्ट्रीय दल ने जर्मनी के क़ैसर को लिखा कि इसके प्रतिकार का कोई उपाय सोचिए। परन्तु जर्मनी और रूस में इससे पहले ही एक समझौता हो चुका था। इसलिए क़ैसर ने इस सम्बन्ध में दस्तन्दाज़ी करने से साफ़ इनकार कर दिया। बल्कि रूस और इङ्गलैण्ड के साथ ही वह भी ईरान का ख़ून चूसने की तदबीर सोचने लगा।

फलतः अत्याचारी राजसत्ता से परित्राण पाने पर भी साम्राज्य-लोलुप यूरोपियनों ने ईरान की राष्ट्रीयता को पनपने नहीं दिया। समय-समय पर धमकियाँ देकर तथा अन्यान्य अमानुषिक उपायों से उन्होंने 'मजलिस' को कमज़ोर बना दिया! आए-दिन के अड़ङ्गों के कारण उसे अपनी उन्नति करने का अवसर ही नहीं प्राप्त हुआ। यह घटना सन् १९१४ के पूर्व की है; अभी यूरोप का महासमर नहीं छिड़ा था। उस समय रूस मानो हाथ धोकर ईरान के पीछे पड़ गया था। उसकी इच्छा थी, उठते हुए राष्ट्र को कुचल कर उसे पराधीनता के कठोर शिकञ्जे में कस डालने की। उसने तरह-तरह के अत्याचार आरम्भ कर दिए। वह चाहता था कि राष्ट्रवादी घबरा कर 'मजलिस' तथा ईरान-सरकार को उसके हाथों में सौंप दें। इसके लिए भयङ्कर साज़िश की गई। 'मजलिस' तथा सरकार के ख़िलाफ़ ख़ूब प्रचार होने लगा। कुछ दिनों के बाद ही रूस की मनोकामना पूरी होने के लक्षण दिखाई देने लगे। मजलिस के अन्दर ही एक दल ऐसा तैयार हो गया, जो अपनी इच्छा से अपनी स्वतन्त्रता खो देने को तैयार था। उस समय ईरान की असूर्यम्पश्या पर्दानशीन स्त्रियों ने कमाल किया। राष्ट्र को इस घोर अपमान से बचाने के लिए उन्होंने कमर कस लिया। मजलिस का अधिवेशन हो रहा था। उसे रूस के हाथों में सौंप दिया जाय या नहीं, यही आज की बैठक का प्रधान विषय था। सदस्यगण गम्भीर मुद्रा

ज़माना बहार का

[पं० कालीप्रसाद जी "आसी" इलाहाबादी]

गाती है अन्दलीब[1], तराना बहार का,
लो आ गया चमन में, ज़माना बहार का!
तक़दीर उसकी ख़ूब है, क़िस्मत है उसकी ख़ूब,
आँखें दिखाएँ जिसको, ज़माना बहार का!
कहता रहा, यह ख़ानए[2]-सय्याद का असीर[3],
तक़दीर में नहीं है, ज़माना बहार का!
अहले-चमन, न फूलों पे फूलो ज़रा कभी,
है चलती-फिरती छाँव, ज़माना बहार का!
गुलशन[4] की तुझको सैर, मुबारक हो अन्दलीब,
दो-चार दिन है, और ज़माना बहार का!
कुञ्जे-क़फ़स[5] की सैर से, फ़ुरसत नहीं मुझे,
गुलशन में आ गया है, ज़माना बहार का!
"आसी" ख़ुदी की शान है यह, और क्या कहें?
आता है साल भर में ज़माना बहार का!

१—बुलबुल, २—बहेलिए का घर, ३—क़ैदी, ४—बाग़, ५ पिंजड़ा।

बनाए बैठे थे। ऊँचे आसन पर मजलिस के अध्यक्ष महोदय विराजमान थे। उनके प्रशस्त ललाट पर चिन्ता की रेखाएँ प्रत्यक्ष दिखाई दे रही थीं। इसी समय सैकड़ों वीर-बालाओं ने मजलिस में प्रवेश किया। उनके हाथों में पिस्तौल थे। वे सीधे 'प्रेज़िडेण्ट' के आसन की ओर बढ़ीं। सदस्यों ने विस्मय-विमूढ़ दृष्टि से उनकी ओर देखा। इन देवियों के तेज से मानो सारा भवन जगमगाने लगा। देवियाँ प्रेज़िडेण्ट के पास एक क़तार से खड़ी हो गईं। उन्होंने अपने हाथों के पिस्तौल ऊँचे किए। इसके बाद उनकी 'प्रधाना' ने प्रेज़िडेण्ट को सम्बोधन करके कहा—"ख़बरदार, अगर मजलिस रूस के अधिकार में दी गई, तो हमारे पिस्तौलों से निकली हुई गोलियाँ मजलिस के सदस्यों के हृदय छेद डालेंगी !"

राष्ट्र अपमानित होने से बच गया ! एकाएक शत-शत कण्ठों से यह ध्वनि निकल पड़ी—"कदापि नहीं, हम मर मिटेंगे, परन्तु अपनी स्वतन्त्रता नहीं खोएँगे !"

इसके बाद रूस ने बलपूर्वक मजलिस तोड़ दी ! फिर कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय दल बलहीन हो गया। इसी समय महासमर छिड़ा ! रूस ने अपना मतलब निकालने के लिए कठोरता की बागडोर कुछ ढीली कर दी। बहुत दिनों के बाद एक बार फिर मजलिस बैठी ! उसने घोषणा की, कि इस युद्ध में हम निरपेक्ष रहेंगे। परन्तु इतने पर भी ईरान को यूरोपियन राजनीति का लीलाक्षेत्र बनना ही पड़ा। अङ्गरेज़ों ने ईरान का सुप्रसिद्ध बन्दरगाह बसरा और अहवाज़ अपने क़ब्ज़े में कर लिया ! यह मानो उसकी निरपेक्षता का पुरस्कार था। अस्तु।

सन् १९१७ में जब ज़ारशाही का ध्वंस करके रूस के वीरों ने बोलशेविज़्म की दुन्दुभी पीटी, तो ईरान के भाग्य ने भी पलटा खाया। एक दिन एकाएक लोगों ने सुना कि रूस की सेना उत्तर ईरान छोड़ कर चली गई। परन्तु दक्षिण ईरान पर अङ्गरेज़ों का क़दम जमा ही रहा। बल्कि सच पूछिए तो रूस के हट जाने से उनकी और भी बन आई। वे इस अवसर से लाभ उठा कर सारे ईरान को हड़प जाने की तदबीर सोचने लगे। सन् १९१९ में ऐङ्गलो-ईरान सन्धि का माया-जाल फैला कर ईरान की बरायनाम स्वतन्त्रता स्वीकार की गई और अहमदशाह को कठपुतली बना कर आजन्म ईरान को चूसते रहने की व्यवस्था कर ली गई। परन्तु ईरान स्वतन्त्रता का स्वाद पा चुका था। अङ्गरेज़ों की इस चालबाज़ी ने फिर उसके हृदय में असन्तोष का सञ्चार किया। समाचार-पत्र तथा वक्तृता-मञ्च पर अङ्गरेज़ों की इस गन्दी नीति की कड़ी आलोचना होने लगी। हाहाकार ने फिर भीषण मूर्त्ति धारण की। राज-कोष में चूहे दण्ड पेलते थे, परन्तु शाह बहादुर पेरिस की सुन्दरियों के साथ 'बालडान्स' के मज़े ले रहे थे। थैलियों का मुँह खोल दिया गया था। पनी की तरह रुपए बहाए जा रहे थे। इस समय ईरान की दुर्गति मानो सीमा पार कर जाने की तैयारी कर रही थी।

परन्तु शाह रज़ा ख़ाँ पहलवी ने उसे बचा लिया। इसकी वीर वाणी ने एक बार फिर ईरानी नवयुवकों के दिलों में आशा का सञ्चार किया। एक बार फिर समस्त ईरान में देश-प्रेम की लहर उठी और एक बार फिर ईरान अपने ग़ुलामी के बन्धनों को तोड़ फेंकने के लिए तैयार हो गया !

ईरान के त्राता शाह रज़ा ख़ाँ एक सामान्य किसान के लड़के हैं। इनका बाल्य-जीवन प्रकृति माता की गोद में ही बीता है। उन्नीस वर्ष की उमर में ये रूस की क़ज़्ज़ाक़ सेना में एक रँगरूट के रूप में भर्ती हुए थे। परन्तु कुछ दिन के बाद ही रज़ा ख़ाँ एक होनहार सिपाही साबित हुए। शाह मुज़फ़्फ़रुद्दीन की मृत्यु के बाद जब ईरान में विषम विश्रृङ्खलता उपस्थित हुई तो रज़ा ख़ाँ फ़ौज की एक टुकड़ी के ऑफ़ीसर नियुक्त होकर ईरान आए। यहाँ इन्हें ईरान के भाग्य-चक्र का उलट-फेर देखने का काफ़ी मौक़ा मिला, और उसी समय से स्वदेशोद्धार की एक मधुर कल्पना भी इनके मस्तिष्क में नृत्य करने लगी। उसी समय डॉक्टर ज़ियाउद्दीन ने 'रआद' (Raad वज्र) नाम का एक क्रान्तिकारी पत्र-प्रकाशित करना आरम्भ किया। रज़ा उस पत्र के नियमित पाठक थे। उसके अग्नि-गर्भ लेखों को पढ़ कर आशा और उमङ्ग से रज़ा ख़ाँ का दिल नाच उठता था। क्रान्ति की कमनीय मूर्त्ति उनकी आँखों के आगे नाच उठती थी। "अहा ! देश में क्रान्ति मचती और मैं भी उसमें भाग ले सकता। क्या वे मनोहर दिन कभी देखने को न मिलेंगे ?" ऐसी कितनी ही लालसाएँ रज़ा ख़ाँ के दिल में उठतीं और विलीन हो जातीं।

एक दिन रज़ा ख़ाँ की चिरसञ्चित अभिलाषा पूरी हुई। सन् १९२१ के जाड़ों में उन्हें अपनी सेना के साथ क़ाज़विन से तेहरान जाने की आज्ञा मिली। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, सारा प्रान्त तुषारपात से ढक गया था, तुहिन-शीतल वायु के तीक्ष्ण झोंके बर्छों की तरह कलेजे में चुभ जाते थे। परन्तु रज़ा को इसकी कोई परवाह न थी। धैर्य और साहस उनके चिर-सहचर थे। उन्हें न तुषार-वर्षा रोक सकती थी और न अग्नि-वर्षा ! बिना विराम और विश्राम के एक दिन अतर्कित भाव से रज़ा ख़ाँ सदल-बल तेहरान पहुँच गए। स्वार्थपर, देशद्रोही शाह के तरफ़दार और मददगार बन्दी कर लिए गए। अङ्गरेज़ों द्वारा अनुमोदित शिथिल राजतन्त्र बात की बात में भहरा पड़ा ! शाह के सिंहासनच्युत हो जाने की घोषणा की गई। स्वयं रज़ा ख़ाँ ने सेनापति का पद ग्रहण किया। डॉक्टर ज़ियाउद्दीन प्रधान-मन्त्री बने। परन्तु कुछ दिन के बाद ही प्रजा ने ज़ोर देकर रज़ा ख़ाँ को शाह की पदवी से विभूषित कर दिया। अब वह 'शाह रज़ा ख़ाँ पहलवी' हैं। उन्होंने ईरान की काया-पलट कर दी है। राज्य की अभ्यन्तरीन व्यवस्था में उन्होंने समयोपयोगी व्यवस्था की है। पहाड़ी सर्दारों का दमन करके उन्हें देशभक्ति की शिक्षा प्रदान की है। आज रज़ा ख़ाँ की बदौलत ईरान एक स्वतन्त्र, सभ्य और उन्नतिशील राष्ट्र के रूप में परिणत हो गया है।

यद्यपि ईरान की वर्तमान अवस्था का अधिकांश श्रेय शाह रज़ा ख़ाँ पहलवी को प्राप्त है, परन्तु उसके गत शताब्दी के इतिहास के सिंहावलोकन से प्रतीत होता है, कि इस जाग्रति की सच्ची नींव आज से प्रायः अर्द्ध शताब्दी पहले ही पड़ गई थी। उसी समय ईरानी युवकों और युवतियों ने प्राचीन रूढ़ियों के विरुद्ध बग़ावत का झण्डा बुलन्द किया था। उसी समय पहले-पहल एक ईरानी युवती ने अपना 'नक़ाब' उतार कर 'मर्दों की अक़्ल पर' डाल दिया था। उसके बाद और भी कितनी ही पुर-महिलाओं ने उसका अनुकरण किया। उसी समय से ईरान ने सङ्गठित और दलबद्ध होना सीखा था। साम्राज्यवादी यूरोपियन राष्ट्रों ने उसे और भी सचेत कर दिया। उसे धीरे-धीरे आत्म-शक्ति पर विश्वास होने लगा। अब वह बड़ी सञ्जीदगी से अपनी अभ्यन्तरीन दशा सुधारने में लगा है। वह उन्नति-पथ की एक-एक गुत्थी को उठाता और सुलझाता है। उसकी उन्नति की चेष्टाएँ शतमुखी, सर्वदेशव्यापी और बीसवीं शताब्दी की अनुयायिनी हैं। अब ईरान एशिया का एक उन्नतिशील राष्ट्र है।

* * *

आती है बहार !

[जनाब "ज़ाहिद" इलाहाबादी]

देखना है, बाग़ में क्या रङ्ग लाती है बहार,
गुल खिलाने के लिए, सुनते हैं, आती है बहार !
बुलबुले-शैदा का, रङ्गे-जोशे मस्ती देख कर,
फूल हँसते हैं चमन में, मुस्कुराती है बहार !
नवजवाने चमन, क्या शाद[1] हैं, मसरूर[2] हैं,
अब ख़िज़ाँ जाती है, गुलशन[3] से, अब आती है बहार !
क्यों न हों शरमिन्दए-एहसान, सब अहले-जुनूँ[4],
दश्त[5] पैमाई की, तरग़ीबें[6] दिलाती है बहार !
हम असीराने[7] क़फ़स को, लुत्फ़ वह हासिल कहाँ,
दूर से बस सुन लिया करते हैं, आती है बहार !
कह दो बुलबुल से, कि अब छेड़े तराने[8] ऐश के,
बज़्मे[9]-गुल आरासता है, जगमगाती है बहार !
साल भर के बाद, दल के ताज़ा हो जाते हैं ज़ख़्म,
क्यों असीराने क़फ़स को, छेड़ जाती है बहार ?
होगी, जिसके वास्ते होगी, मसर्रत[10]-बख़्श यह,
मुझको तो, बस ख़ून के आँसू रुलाती है बहार !
रिन्द[11] कहते हैं कि "ज़ाहिद" को भी पीना चाहिए,
धूम से बाग़े-जहाँ में, आज आती है बहार !

१—ख़ुश, २—ख़ुश, ३—बाग़, ४—दीवाने, ५—जङ्गल में फिरना, ६—प्रोत्साहन, ७—क़ैदी, ८—आनन्द का राग, ९—फूलों की सभा, १०—ख़ुश करने वाली, ११—शराब पीने वाले।

पैलेस्टाइन की समस्या

[श्री० प्रभूदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर]

पैलेस्टाइन की समस्या एक बड़ी जटिल समस्या है। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता है, कि इस प्रश्न पर ही समस्त संसार की शान्ति निर्भर है। इस समस्या का श्रीगणेश सन् १९१७ से होता है। उस समय महायुद्ध ने भीषण रूप धारण कर लिया था। कोई व्यक्ति यह न कह सकता था, कि इस विकट युद्ध में किस पक्ष की विजय होगी। मित्र-राष्ट्र अपने भविष्य के लिए अत्यन्त चिन्तित थे। उन्हें युद्ध में विजयी होने के लिए धन की अत्यावश्यकता थी, क्योंकि प्रति दिन लाखों रुपया पानी की भाँति बहाया जा रहा था। उस समय इङ्गलैण्ड के प्रधान-मन्त्री मि० बालफ़ोर को युद्ध के लिए धन पाने का एक उपाय सूझ पड़ा।

यहूदी जाति बहुत धनी जाति है। प्राचीन काल में इनका निवास-स्थान पैलेस्टाइन था। पर अब से सैकड़ों वर्ष पूर्व इन्हें पैलेस्टाइन छोड़ना पड़ा था। उसी समय से ये लोग संसार भर में फैल गए थे। और इसीलिए इन लोगों का कोई एक राष्ट्र न रह गया था। परन्तु ये लोग पैलेस्टाइन को पुनः अपना घर बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। प्रधान-मन्त्री ने सोचा, कि यदि यहूदियों को यह विश्वास दिला दिया जाय, कि इङ्गलैण्ड पैलेस्टाइन को यहूदियों का घर बना देगा, तो उन्हें वे युद्ध के निमित्त उपयुक्त धन दे देंगे। अतएव सन् १९१७ में एक घोषणा की गई, जो बालफ़ोर-घोषणा (Balfour Declaration) के नाम से प्रसिद्ध है। इस घोषणा द्वारा इङ्गलैण्ड ने पैलेस्टाइन को यहूदियों का घर बना देने की प्रतिज्ञा कर ली। यहूदियों के लिए यह प्रतिज्ञा विभूति थी। उन्हें इसके सिवाय कोई अन्य आकांक्षा नहीं थी। इस प्रतिज्ञा से इङ्गलैण्ड को धन मिल गया।

युद्ध में इङ्गलैण्ड विजयी हुआ। और विजय के साथ ही उपयुक्त प्रतिज्ञा की पूर्ति का भी समय आ गया। उपनिवेश-मन्त्री मि० विन्स्टन चर्चिल स्थिति का अध्ययन करने पैलेस्टाइन भेजे गए। उन्होंने भी बालफ़ोर-नीति का समर्थन किया। सन् १९२१ में पैलेस्टाइन इङ्गलैण्ड को 'लीग ऑफ़ नेशन्स' (League of Nations) के द्वारा मेण्डेट (Mandate) के रूप में दिया गया था। पैलेस्टाइन प्राप्त होते ही इङ्गलैण्ड ने अपनी नीति का पालन करना प्रारम्भ कर दिया।

नीति की घोषणा करना तो सरल था। परन्तु उस नीति को कार्य-रूप में परिणत करना बड़ी टेढ़ी खीर थी। पैलैस्टाइन अरब लोगों का देश है। सैकड़ों वर्षों से वे वहाँ रहते आए हैं। अरबों की इच्छा के विरुद्ध उन्हीं के देश में यहूदियों को ला बसाना आसान न था। सन् १९२२ से १९२९ तक लाखों यहूदी वहाँ जाकर बसे। सैकड़ों एकड़ भूमि अरबों के हाथ से निकल कर यहूदियों के हाथ पहुँच गई। और उन्हें जीविका के सभी साधन दे दिए गए।

पैलेस्टाइन में दस लाख से अधिक पुरुष नहीं रह सकते। केवल अरब लोग ही वहाँ सात लाख हैं, जो सात सौ वर्षों से वहाँ रहते आए हैं। जब लाखों यहूदी वहाँ आकर बसने लगे, तो अरबों के आर्थिक कष्ट बढ़ने लगे। बहुत से अरब बेकार हो गए। उन्होंने देखा कि अब तो उन्हें रोटी के भी लाले पड़ने लगे। अतएव वे यहूदियों को अपना घोर शत्रु समझने लगे। दोनों जातियों में वैमनस्य हो गया। अरब लोग समझते थे कि यहूदी उनके घर में ज़बर्दस्ती रहना चाहते हैं। यहूदी कहते थे कि अरब हमको हमारे प्राचीन घर में रहने नहीं देना चाहते। दोनों जातियाँ एक-दूसरे से झगड़ने लगीं। उनके धार्मिक विचारों ने भी उन्हें एक-दूसरे का शत्रु बना दिया। पैलेस्टाइन में एक दिवाल है, जो वेलिङ्गवाल (Wailling Wall) के नाम से प्रसिद्ध है। यह दिवाल हज़रत मूसा के काल से चली आ रही है। यहूदी लोग इस दिवाल को बहुत धार्मिक महत्व देते हैं। वे वहाँ एकत्र होकर अपने पुराने वैभव की स्मृति में स्यापा करते हैं। इस दिवाल को मुसलमानों के ख़लीफ़ा ओमर ने जीत लिया था। तब से वह भूमि, जिस पर उपरोक्त दिवाल है, वाक़्फ़ (Waqf) है। उस दिवाल के पास एक मसजिद भी है। अतएव अरब लोग यहूदियों का वहाँ एकत्र होकर रोना पसन्द नहीं करते। इससे मामला और भी पेंचीदा हो गया है। मुसलमानों का यह विश्वास है, कि एक रात्रि पैग़म्बर साहब ने ख़ुदा से भेंट की थी। और उस रात को पैग़म्बर साहब जेरुसलम से गुज़रे थे। अतएव मुसलमान लोग भी जेरुसलम को अपना तीर्थ-स्थान समझते हैं। ईसाई भी पैलेस्टाइन को हज़रत ईसा की जन्मभूमि होने कारण अपना तीर्थ मानते हैं। एक ही भूमि पर इन तीनों जातियों के धार्मिक भावों का समावेश हो गया है।

१९२९ में इसी दिवाल के प्रश्न पर यहूदियों और अरब लोगों में बहुत मार-पीट हुई। दोनों पक्ष के बहुत से लोग जान से मारे गए। बहुत से अरबों पर मुक़दमा चलाया गया और बहुतों को फाँसी दे दी गई! इस पर अरब लोग बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने धारा-सभा के बहिष्कार का निश्चय किया। पैलेस्टाइन में अशान्ति और कलह की प्रचण्ड अग्नि भड़क उठी।

अब 'लीग ऑफ़ नेशन्स' (League of Nations) ने अपना ध्यान इस ओर आकर्षित किया। लीग ही ने पैलेस्टाइन को इङ्गलैण्ड के हाथों सौंपा था और उसीने इङ्गलैण्ड से इसका जवाब तलब किया। सन् १९३० के जून में 'परमनेण्ट मेनडेट कमीशन' ने इङ्गलैण्ड की चुटकी ली। सितम्बर में लीग की एसेम्बली में पैलेस्टाइन के प्रश्न पर ज़ोरदार बहस हुई। इस समय इङ्गलैण्ड में मज़दूर-दल शासन कर रहा था। जब उसने देखा कि इङ्गलैण्ड की नीति से लीग असन्तुष्ट है, तब उसने अपनी पुरानी नीति बदलनी चाही। २१वीं अक्टूबर को औपनिवेशिक मन्त्री लॉर्ड पैसफ़ील्ड ने नवीन नीति की घोषणा की। इस घोषणा में कहा गया कि २ लाख, ४० हज़ार एकड़ भूमि यहूदियों को मिल चुकी है। नए आने वालों को देने के लिए अब और भूमि नहीं है। केवल पुरानी भूमि की उपज बढ़ा कर ही उन्हें काम चलाना पड़ेगा। लॉर्ड पैसफ़ील्ड ने कहा—"यदि यहूदियों के आने से अरबों को अपना पेट भरने के लिए उपयुक्त काम नहीं मिलता या यदि यहूदियों की बेकारी मज़दूरों की स्थिति को हानि पहुँचाती है, तो हमारा यह कर्तव्य है कि हम यहूदियों का आना या तो कम कर दें या उस समय तक पूर्णतया बन्द कर दें, जब तक कि बेकारों को काम न मिल जाय।"

इस नीति की घोषणा से यहूदियों में घोर असन्तोष फैल गया। संसार में जहाँ-जहाँ वे रहते थे, वहाँ-वहाँ उन्होंने अरब लोगों के विरुद्ध आन्दोलन किया। न्यूयार्क से लेकर वारसा तक—प्रत्येक राजधानी में उन्होंने इस नीति का घोर विरोध किया। डॉक्टर वीज़मैन ने ज़ीओनिज़्म (Zioniesm) के सभापतित्व से इस्तीफ़ा दे दिया। लॉयड जॉर्ज, बाल्डविन, चर्चिल, सर जान साइमन आदि प्रमुख व्यक्तियों ने कहा, कि यह नीति यहूदियों से की हुई प्रतिज्ञा के विपरीत है। मि० लॉयड जॉर्ज ने इस सम्बन्ध में एक वक्तृता देते हुए कहा—"हम लोग अरब लोगों को मिला न सकेंगे, हाँ, एक अति बड़ी जाति को अपना विरोधी अवश्य बना देंगे। और इससे भी बुरी बात यह होगी, कि हम लोग विश्वासघाती कहलावेंगे।" मिस्टर बाल्डविन, सर ऑस्टिन चैम्बरलेन, और मिस्टर एमरी ने एक पत्र इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध पत्र "टाइम्स" को भेजा था, जिसमें उन्होंने लिखा था, कि यह बिलकुल स्पष्ट है, कि इस नीति के अवलम्बन से अमेरिका आदि के यहूदियों का इङ्गलैण्ड की नेकनीयती पर से विश्वास उठ जावेगा।

इस विरोध को देख कर इङ्गलैण्ड की सरकार सहम गई। और जब सन् १९३० के नवम्बर में हाउस ऑफ़ कॉमन्स में यह मामला उठाया गया, तब मज़दूर-सरकार को झुकना पड़ा और जो यहूदी पैलेस्टाइन में जा बसे थे, उनके लिए २५ लाख पौण्ड का क़र्ज़ लेने की अनुमति दे दी गई!

अरब लोग इस नवीन घोषणा से अत्यन्त प्रसन्न हुए। उनकी कार्यकारिणी-सभा ने इङ्गलैण्ड के प्रधान-मन्त्री श्री० रैमज़े मैकडॉनल्ड को तार भेज कर इस नीति पर बधाई दी। पैलेस्टाइन के अरब पत्र 'फ़लसटिन' ने इसको अरबों की महान विजय बतलाया। पर अरबों ने धारा-सभा में जाना स्वीकार न किया, क्योंकि उसमें उनके काफ़ी प्रतिनिधि न थे।

इस समय मामला यहीं पर रुका है। देखना है भविष्य में क्या होता है। अभी तो 'एक स्थान में दो तलवार' की कहावत चरितार्थ हो रही है। अन्त में पाठकों को यह भी समझ लेना चाहिए, कि पैलेस्टाइन पर इङ्गलैण्ड क्यों दाँत लगाए है। जब से मिश्र इसके हाथ से निकल गया है, तब से पैलेस्टाइन का मूल्य इसके लिए कई गुना बढ़ गया है। स्वेज़ नहर पर अपना प्रभुत्व स्थिर रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है, कि इस नहर के पास के किसी देश पर इङ्गलैण्ड अपना अधिकार रक्खे और पैलेस्टाइन ही एक ऐसा देश है। अतएव इङ्गलैण्ड इसे अपने अधिकार से बाहर नहीं जाने देना चाहता।

* * *

अपराधी कौन है ?

[श्री० सत्यभक्त जी, भूतपूर्व सम्पादक 'प्रणवीर']

[यह लेख एक व्याख्यान का अनुवाद है, जो कि शिकागो (अमेरिका) के प्रसिद्ध वकील मि० क्लेरेन्स डैरो ने शिकागो के जेलख़ाने में क़ैदियों के सामने दिया था। ज़बानी व्याख्यान देने के कारण इसमें कितनी बातों को दुहराया गया था और उदाहरण भी सब शिकागो या अमेरिका के ही दिए गए थे। हमने इसको लेख का रूप देने की कोशिश की है, और कितनी ही जगह उदाहरणों को भारतीय या सार्वजनिक बना दिया है। व्याख्यान का आशय बड़ा गम्भीर है और विचार सर्वथा नए हैं। आशा है, पाठक इन विचारों की मौलिकता और नवीनता से न घबड़ा कर, उन पर निष्पक्षता के साथ विचार करेंगे।

—लेखक]

अगर जेल, जुर्म और मुजरिमों (अपराधियों) के सम्बन्ध में मेरे विचार उसी तरह के होते, जैसे आम तौर पर लोगों के हुआ करते हैं, तो मैं तुम्हारे सामने कभी इस विषय पर बोलने को खड़ा न होता। मैं जुर्म, उनके कारण तथा उनको रोकने के उपायों के बारे में जो तुमसे बातचीत करने लगा हूँ, उसका कारण यही है कि वास्तव में मैं 'जुर्म' की सत्ता पर विश्वास ही नहीं करता। आम लोग 'जुर्म' के शब्द से जो भाव ग्रहण करते हैं, उसे मैं बिलकुल नहीं मानता। मैं हरगिज़ इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हूँ कि जो लोग जेलों के भीतर बन्द हैं, वे उन लोगों से चरित्र या नीति में किसी प्रकार नीच हैं, जोकि जेलों के बाहर रहते हैं। ये दोनों तरह के आदमी एक समान अच्छे या बुरे हैं। जो लोग जेल के भीतर बन्द हैं, वे यहाँ आने को लाचार थे, जिस प्रकार जेल के बाहर रहने वाले अपने स्थान पर रहने को लाचार हैं। मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि जो लोग जेल में आते हैं वे उसी के लायक़ हैं। उन लोगों को केवल ऐसी परिस्थिति के वश में होकर जेल में आना पड़ता है, जिसको बदल सकना उनकी ताक़त के बाहर होता है, जिसके लिए वे किसी तरह ज़िम्मेदार नहीं ठहराए जा सकते।

मैं समझता हूँ कि बहुत से लोग, जो जेलों के बाहर रहते हैं, वे अगर मेरे इस भाषण को सुनें, तो वे कहेंगे कि मैं तुमको नुक़सान पहुँचा रहा हूँ। पर तुम लोग जिस हालत में हो, इससे बढ़ कर नुक़सान तुमको शायद ही पहुँचाया जा सकता है, इसलिए इस बात के लिए डरना फ़िज़ूल है। बाहर रहने वाले लोग, जो 'भले आदमी' कहे जाते हैं, वे कहेंगे कि मैं तुमको जो बातें सिखला रहा हूँ, वे सचमुच समाज को नुक़सान पहुँचाने वाली हैं। पर तुम लोग दूसरे उपदेशकों और प्रचारकों से हमेशा जो बातें सुना करते हो, कभी-कभी उससे भिन्न प्रकार की बातें सुनना भी आवश्यक है। ये उपदेशक तुमसे कहते हैं कि तुम नेक आदमी बन जाओ, तब तुम धनी और सुखी हो सकोगे। पर हम अच्छी तरह जानते हैं कि नेक या सज्जन बनने से कोई आदमी धनवान नहीं बन जाता, वरन् आजकल के ज़माने में सज्जन पुरुषों को प्रायः दरिद्रता में ही जीवन बिताना पड़ता है। यही कारण है कि तुममें से बहुत से लोग दूसरे उपायों से मालदार बनने की कोशिश करते हैं। पर अन्तर इतना ही है कि तुम लोग इस उद्देश्य को सिद्ध करने की वैसी अच्छी तरकीब नहीं जानते, जैसी कि जेल से बाहर रहने वाले बड़े लोगों को मालूम है।

बहुत से लोगों का ऐसा ख़याल होता है कि संसार में सब बातें संयोगवश या भाग्यवश हुआ करती हैं। पर सचमुच 'संयोग' या 'भाग्य' निरर्थक शब्द हैं और उनमें कुछ भी सचाई नहीं है। बहुत से लोग कहते हैं कि जो लोग जेलों में मौजूद हैं, उनको तो वहाँ रहना ही चाहिए, साथ ही जेल से बाहर रहने वाले लोगों में से बहुत से ऐसे हैं कि उनको भी जेल में ही रखना चाहिए। पर मेरा विचार यह है कि जेलों में किसी को रखने की ज़रूरत नहीं, और जेलों का क़ायम रखना ही व्यर्थ है। जो लोग जेलों के बाहर रहते हैं उनका व्यवहार जेल जाने वालों के साथ यदि इतना लालची और सहानुभूति-रहित न होता, तो जेलों के बनाने की ज़रूरत ही न पड़ती।

मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि मैं तुम जेल में आने वाले सब लोगों को 'फ़रिश्ता' या 'देवता' समझता हूँ—मैं कभी ऐसा ख़याल नहीं रखता। तुममें सब तरह के लोग हैं, और तुम अपनी सामर्थ्य के अनुसार अच्छी से अच्छी और लाभदायक बात के लिए कोशिश करते हो। अगर एक निगाह से देखा जाय तो हम सब लोग एक बराबर हैं, न कोई बहुत बुरा है, न कोई बहुत अच्छा। हम सब लोग अपनी परिस्थिति के अनुसार अच्छे से अच्छे काम के लिए कोशिश करते हैं।* जिन कामों के लिए तुम जेल भेजे गए हो, उनमें से कुछ मामलों में तुम दोषी होगे, और रुपए की ज़रूरत होने से तुमने वह काम किया होगा। तुममें से कुछ लोग ऐसा काम इसलिए करते हैं कि उनको उसकी आदत पड़ गई है, और कुछ लोग इसलिए कि वे पैदायश से उसीके लायक़ बने हैं। तुम लोगों के लिए इस तरह का काम करना उसी प्रकार स्वाभाविक है, जैसा कि बहुत से लोगों के लिए डॉक्टरी, वकालत और दूसरे पेशे करना।

तुममें से ज़्यादातर लोगों को मेरे ख़िलाफ़ किसी प्रकार का भाव नहीं होगा, और तुममें से ज़्यादातर लोग मेरे साथ वैसा ही बर्ताव करेंगे जैसा सब लोग आमतौर पर करते हैं। ऐसी दशा में, जब कि तुमको मेरे ख़िलाफ़ किसी भी तरह की शिकायत नहीं है, तुम मेरा जेब काट कर रुपया चुरा सकते हो। मुझसे किसी प्रकार का द्वेष न रखते हुए भी तुम ऐसा करते हो, इसका कारण यही है कि तुम्हारा पेशा है। अगर मैं अपने दरवाज़े को खुला छोड़ दूँ तो तुममें से कुछ लोग मेरे घर के भीतर घुस कर माल चुरा लाएँगे। तुम यह काम इसलिए नहीं करोगे कि तुम मुझे अपना शत्रु समझते हो, वरन् इसलिए कि तुम्हारा यही रोज़गार है! तुममें से कुछ लोग ऐसे भी होंगे, जोकि और किसी उपाय से रुपया न मिलने पर राह चलते आदमी को पिस्तौल से धमका कर लूट लेते हैं। पर इस तरह के काम केवल तुम्हीं लोग नहीं करते। जब मैं बाहर रहता हूँ तो प्रायः हर एक आदमी मेरी जेब काटता है और मुझे लूटता रहता है। जब मैं अपने घर या दफ़्तर में रोशनी के लिए बिजली जलाता हूँ, तो बिजली की कम्पनी मुझे लूटती है। वे लोग मुझसे चार आने की बिजली के लिए एक रुपया वसूल करते हैं। पर तो भी ये सब लोग भले आदमी समझे जाते हैं, वे समाज के स्तम्भ माने जाते हैं, वे धर्म के रक्षक कहलाते हैं, और सब कोई उनका आदर करते हैं।

जब मैं ट्राम गाड़ी पर चढ़ता हूँ, तब भी मैं लूटा जाता हूँ। जितनी दूर जाने में एक आना ख़र्च होता है उतनी दूर के लिए मुझसे दो आने लिए जाते हैं। कारण यही है कि कुछ ख़ास लोगों ने रिशवत देकर म्युनिसिपैलिटी और शासन-सभा को अपने पक्ष में कर लिया है और वे बाक़ी सब लोगों से कर वसूल करते हैं।

अगर मैं बिजली की कम्पनी के फन्दे से बचना चाहूँ और बिजली की रोशनी के बजाय मिट्टी के तेल का लैम्प जलाऊँ, तो मि० रॉकफ़ेलर* मुझे लूटते हैं। वे ही मि० रॉकफ़ेलर अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा गिर्जाघर और विश्वविद्यालय (यूनीवर्सिटी) बनाने में लगाते हैं, जिनमें लोगों को 'ईमानदार' बनने का उपदेश दिया जाता है।

तुममें से कुछ लोग जालसाज़ी करके दूसरों से रुपया लेने के मामले में जेल भेजे गए होंगे। पर मैं हर रोज़ अख़बारों में किसी बड़े व्यापारी का विज्ञापन देखा करता हूँ कि—

"दाम घटा दिया! दस रुपए की घड़ी ३) रु० में!" क्या यह जालसाज़ी नहीं है? पर इन जालसाज़ों को कोई जेलख़ाने नहीं भेजता। जब मैं अख़बारों में विज्ञापनों को पढ़ता हूँ, तो मुझे यही मालूम होता है कि वे लोगों को धोखे में डालते हैं।

जब मैं बाहर जाता हूँ और दुनिया भर में किसी जगह खड़े रहने के लिए ज़रा सी जगह तलाश करता हूँ, तो मालूम होता है कि तमाम ज़मीन पर मेरे या तुम्हारे पैदा होने से बहुत पहले ही क़ब्ज़ा कर लिया गया है। मैं जहाँ कहीं खड़ा होता हूँ वहीं कोई आकर

* उदाहरण के लिए जानवर मारने के काम को बहुत लोग बुरा बतलाते हैं। पर जो आदमी वधिक वा क़साई के घर पैदा हुआ है और जिसे इस काम के सिवाय और कुछ नहीं आता, वह इसे नहीं छोड़ सकता। क्योंकि अगर वह ऐसा करे तो उसे खाने को न मिल सके। इसलिए वधिक की परिस्थिति को देखते हुए जानवर मारने के लिए वधिक को बुरा आदमी नहीं बतलाया जा सकता।

* मि० रॉकफ़ेलर अमेरिका के रहने वाले हैं और दुनिया में मिट्टी के तेल के सब से बड़े व्यापारी हैं। उनकी आमदनी तीस-चालीस करोड़ रुपए सालाना है।

कहता है—"यहाँ से दूर हो ! चाहे पानी में तैरो; चाहे हवा में उड़ो, पर इस ज़मीन से दूर हो !" इसीलिए ये लोग पुलिस रखते हैं, जेलें बनाते हैं, जज, वकील, सिपाही वग़ैरह नियत करते हैं, जिससे ये सब ज़मीन की रखवाली करते रहें, और हर एक आदमी को, जो उनके मार्ग में बाधक हो, हटाते रहें।

बहुत से लोग इन बातों को सच बतलाएँगे, पर वे कहेंगे कि इन बातों से जेल में आने वालों का जुर्म नहीं घट सकता। यह सच है कि बिजली की कम्पनी हर साल शासन-सभा के मेम्बरों को रिशवत देती है, अपने मन के माफ़िक़ क़ानून तैयार कराती है, और सब लोगों को, जिनका उससे काम पड़ता है, अच्छी तरह से मूँड़ती है। यह भी सच है कि ट्राम और रेलवे-कम्पनी वालों ने सड़कों और रास्तों पर क़ब्ज़ा जमा रक्खा है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि कुछ बड़े लोग तमाम ज़मीन के मालिक बने हुए हैं। पर इन बातों से उस आदमी का जुर्म नहीं मिट सकता, जो राह चलते निर्दोष आदमी की जेब से दस रुपए का नोट चुरा लेता है।

ऐसी दशा में हमको इस बात पर विचार करना चाहिए कि बड़े लोगों के 'जुर्मों' का तुम लोगों के जेलख़ाने में बन्द रहने से किसी प्रकार का सम्बन्ध है या नहीं ? तुममें से बहुत से लोग इसलिए जेल भेजे गए हैं कि उन्होंने सचमुच दूसरों के घर में घुस कर चोरी की है। तुममें से बहुत से लोगों ने और किसी तरह की चोरी की है; अर्थात् क़ानून के कथनानुसार तुमने किसी दूसरे शख़्स की चीज़ को ले लिया है। तुममें से कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्होंने किसी दुकान में घुस कर एक जोड़ा जूता इसलिए चुराया, क्योंकि उनके पास ख़रीदने के लिए दाम न थे। सम्भव है, तुममें से कुछ लोगों ने हत्या भी की हो। मैं नहीं जानता कि तुम सब लोगों ने क्या-क्या 'जुर्म' किए हैं, पर मैं इतना समझता हूँ कि तुममें से ज़्यादातर लोगों ने इसी प्रकार का कोई काम किया है। पर तुम लोग इन कामों को करते हुए भी यह नहीं समझ सकते कि तुम ऐसा काम क्यों करते हो।

पर मैं इस बात का भेद अच्छी तरह समझता हूँ कि तुमने उन कामों को क्यों किया ? तुमने उन कामों को इसलिए किया कि तुम्हारे लिए उसके सिवाय और कोई रास्ता ही न था। जब तुम कोई ऐसा काम करते हो तो तुम यही समझते हो कि हम अपनी मरज़ी से इस काम को करते हैं और चाहें तो उसे न करें। पर असल में तुम अपनी मरज़ी से उस काम को हरगिज़ नहीं करते। साधारण तौर पर विचार करने से इस बात का भेद नहीं समझा जा सकता कि तुम ऐसा काम क्यों करते हो। पर अगर गम्भीरता और ध्यानपूर्वक विचार करो तो तुम समझ सकते हो कि तुम जो कुछ काम करते हो वह अपनी परिस्थिति के वश होकर ही करते हो ! जिस प्रकार जेल से बाहर रहने वाले दूसरे लोग अपनी परिस्थिति के अनुसार तरह-तरह के काम करते हैं, उसी प्रकार तुमको अपनी परिस्थिति से लाचार होकर इस प्रकार के काम करने पड़ते हैं। सुधारक लोग तुमको उपदेश देते हैं कि तुम 'सज्जन' बन जाओ, उससे तुम सुखी हो सकोगे। पर उन्होंने और दूसरे लोगों ने, जिनके पास ज़मीन-जायदाद है और जो दुनिया में भले आदमी समझे जाते हैं, तुमको 'सज्जन' बनाने का यही रास्ता ठीक समझा है कि तुमको सदा जेलख़ाने के भीतर ताले में बन्द रक्खा जाय और कभी-कभी तुम्हारे सुधार के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर दी जाय।

मैं जब इन बातों पर विचार करता हूँ तो मुझे इनमें कुछ भी सचाई या ईमानदारी नहीं जान पड़ती। जेल में जितने 'मुजरिम' कहलाने वाले लोग पाए जाते हैं—मैं 'मुजरिम' का शब्द इसलिए इस्तेमाल करता हूँ कि यह आमतौर पर प्रचलित है, अन्यथा मेरे लिए इसका कोई अर्थ नहीं—उनमें से बहुत ज़्यादा तादाद ऐसे लोगों की होती है, जिनको अच्छा वकील न मिलने के कारण जेल जाना पड़ता है। अच्छा वकील तब तक कैसे मिल सकता है जब तक तुम्हारे पास काफ़ी रुपया न हो ? मालदार आदमी को जेल जाने का ख़तरा बहुत कम रहता है।

तुममें से कितने ही लोग पहली ही बार जेल में आए होंगे। आज जेल का दरवाज़ा खोल कर तुम सबको बाहर निकाल दिया जाय और सरकारी क़ानून जैसे आजकल हैं वैसे ही बने रहें, तो तुममें से बहुत से कल यहाँ वापस भी आजायँगे। इन लोगों को कोशिश करने पर भी रहने के लिए जेल से अच्छी और जगह नहीं मिलती, इसलिए वे इसी जगह वापस आ जाते हैं। तुममें से कितने ही लोग जेल में रहने के ऐसे आदी हो गए हैं कि वे यही नहीं जानते कि हम इसको छोड़ कर और कहाँ जायँ ? कुछ लोगों का जन्म का संस्कार ही ऐसा है कि वे मौक़ा लगते ही जेल के मेहमान बन जाते हैं और कोशिश करने पर भी इस आदत को नहीं छोड़ सकते। ऐसे लोग स्वयं अपने जीवन की इस ख़ासियत को नहीं जानते, न इसका कारण समझ सकते हैं। पर तो भी इन सब बातों के कारण मौजूद रहते हैं और यदि सब घटनाओं पर विचार किया जाय तो हम कारणों का पता भी लगा सकते हैं।

श्री० ए० मुबाराहम पिल्लाई

आप चिदामहारम (मद्रास) के टाउन हाई स्कूल के प्रमुख हिन्दी-अध्यापक हैं। आप तामिल भाषा के बड़े प्रकाण्ड विद्वान हैं। इस वर्ष आपने मद्रास विश्वविद्यालय से सर्वोच्च परीक्षा पास की है। आपको १०००) रु० का नक़द पुरस्कार भी दिया गया है।

एक उदाहरण लो। अमेरिका, इङ्गलैण्ड आदि ठण्डे देशों में जाड़े के मौसम में गर्मियों की अपेक्षा बहुत ज़्यादा लोग जेल जाते हैं। ऐसा क्यों होता है ? क्या जाड़ों में मनुष्य गर्मियों की अपेक्षा अधिक दुष्ट-प्रकृति या बदमाश बन जाते हैं ? नहीं, वरन् इसका कारण यह है कि कोयले की खानों के मालिक जाड़े के मौसम में कोयले का दाम बढ़ा देते हैं। जिस पत्थर के कोयले की लागत चार-पाँच आना मन पड़ती है, उसके लिए लोगों को बारह आने मन के दाम देने पड़ते हैं, नहीं तो जाड़े में ठिठुर कर मरना पड़ता है। उस दशा में लोगों को जेल जाने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं रहता, क्योंकि जेल के कमरे जाड़े के मौसम में गर्म रक्खे जाते हैं। इसी प्रकार जाड़ों में रातों के लम्बी हो जाने के कारण रोशनी में भी बहुत से लोग जेल जाते हैं। सम्भव है, तुम इन बातों को न जानते हो और ये तुमको मज़ाक़ की सी बातें जान पड़ें। पर इसमें सन्देह नहीं कि ये आर्थिक नियम सदा हमारे जीवन में काम करते रहते हैं और इन्हीं से लाचार होकर हमको ऐसे काम करने पड़ते हैं, जिनसे अन्त में जेल जाना पड़ता है।

इसी प्रकार अकाल के समय सुकाल की अपेक्षा बहुत ज़्यादा लोग जेल जाते हैं। इसके जवाब में यह हरगिज़ नहीं कहा जा सकता कि अकाल के समय मनुष्य सुकाल की अपेक्षा ज़्यादा बदमाश बन जाते हैं। सच बात यह है कि जब तक लोग मुसीबत और कठिनाइयों में नहीं फँसते, तब तक कोई राज़ी-ख़ुशी जेल जाना पसन्द नहीं करता। ये लोग इसलिए जेल जाते हैं, क्योंकि उनको ऐसी दूसरी कोई जगह नहीं दिखलाई देती जहाँ वे जा सकें। जेलों में जाने वाले प्रायः ग़रीब लोग ही होते हैं और उनके रहने को दुनिया में कोई जगह नहीं होती। जब उनको दुनिया में प्राण-रक्षा का कोई साधन नहीं मिलता, तब वे इस प्रकार के काम करने लगते हैं जिससे उनको जेल जाना पड़ता है। अकाल-मँहगी के समय बहुत से ऐसे लोगों को भी जेल का मुँह देखना पड़ता है जो सुकाल की हालत में वहाँ कभी नहीं जाते।

बहुत समय पहले बकल नाम के एक बहुत बड़े दार्शनिक और इतिहासज्ञ विद्वान ने बहुत से प्रमाणों का संग्रह करके यह सिद्ध किया था कि बाज़ार में जितने परिमाण में खाने-पीने की चीज़ों का दाम चढ़ता है, उसी परिमाण में जेलों में क़ैदियों की संख्या भी बढ़ जाती है। जब पानी और रोशनी का टैक्स बढ़ाया जाता है, तो उसके फल से अवश्य ही कुछ लोगों को जेल जाना पड़ता है। इसी प्रकार जब अनाज और कपड़े वग़ैरह का दाम बढ़ा दिया जाता है तो उसके कारण अनेक लोगों को जेल का मेहमान बनना पड़ता है।

यह सच है कि तुममें से कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने पास रुपया होते हुए भी चोरी, ठगईगीरी करते हैं। इसका कारण यह है कि वे लोग दूरदर्शिता से काम लेना चाहते हैं, और उस समय तक ठहरना पसन्द नहीं करते जब कि उनके पास खाने की फूटी कौड़ी भी न बचे। तुममें से कुछ लोग सेंध लगाने या चोरी से दूसरे के मकान में घुस जाने का पेशा करते होंगे। कोई समझदार आदमी, अगर उसके पास खाने-पीने का काफ़ी सामान हो, तो वह किसी दूसरे आदमी के मकान में आधी रात के समय घुसना और चोर-बत्ती की मदद से अनजान कमरों में हाथ-पैरों के बल चुपके-चुपके चलना और इस प्रकार अपनी जान को ख़तरे में डालना हरगिज़ पसन्द नहीं करेगा। मैं जानता हूँ कि तुम लोग अपनी ख़ुशी से कभी ऐसा न करोगे। अगर एक आदमी के पास ट्रङ्कों में काफ़ी कपड़े रक्खे हों, घर में बहुत सा आटा, घी शक्कर हो; बैङ्क में काफ़ी रुपया जमा हो, तो वह आदमी अँधेरी रात में ऐसे मकानों में इधर-उधर ढूँढ़ते फिरने की तकलीफ़ हरगिज़ न उठाएगा, जिनके दरवाज़ों और कमरों का उसे कुछ पता नहीं है। इस काम के लिए काफ़ी अनुभव और शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता होती है, और जो आदमी इस पेशे की तालीम हासिल करते हैं, वे उसी प्रकार निर्दोष हैं जैसे वकील और डॉक्टर अपने पेशे के लिए दोषी नहीं

माने जाते। जिस आदमी की जेब में काफ़ी रुपया होगा वह सड़क पर चलते हुए दूसरे आदमी को पिस्तौल से धमका कर उसका रुपया छीनने की कोशिश नहीं करेगा। हाँ, अगर उसके पास केवल दो-एक रुपया हो तो वह ऐसा कर सकता है। पर अगर उसके पास भी सेठ-साहूकारों के बराबर रुपया हो तो वह ऐसा काम कभी नहीं करेगा। सेठ-साहूकारों को लोगों को लूटने का इससे बहुत अच्छा ढङ्ग मालूम होता है।

जैसे-जैसे अमीर आदमी ग़रीबों को ज़्यादा लूटेंगे, वैसे-वैसे ग़रीब लोग भी अपना पेट भरने के लिए इस प्रकार के 'जुर्म' कहलाने वाले कामों का सहारा लेने लगेंगे। चाहे वे इस बात को न समझें, चाहे वे तुरन्त ही इस बात का ख़्याल न करें, तो भी वे अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस पेशे को अख़्तियार कर लेंगे।

थोड़े दिन पहले अमेरिका की शासन-सभा के सामने एक नए क़ानून का मसौदा पेश किया गया था, जिसके अनुसार बच्चे चुराने वालों के लिए फाँसी की सज़ा तजवीज़ की गई थी।* निस्सन्देह शासन-सभा के मेम्बर बड़े बुद्धिमान हैं कि बच्चे चुराने वालों को मृत्यु-दण्ड देकर इस काम को बन्द कर देंगे। मैं बच्चों की चोरी को अच्छा नहीं समझता, पर इस सम्बन्ध में शासन-सभा का ढङ्ग बिलकुल ग़लत और व्यर्थ है। बच्चों को चुराना भी आजकल एक पेशा बन गया है, और हमारी मौजूदा व्यापारिक नीति के कारण इसकी ख़ूब तरक़्क़ी हो रही है। आजकल रुपया कमाने के बहुत से तरीक़े नए निकले हैं, जिनमें से कितने ही ऐसे अजीब और नए हैं कि हमारे पुरखों ने उनका नाम भी न सुना था। हमारे पुरखों को मालूम भी न था कि अरबों रुपए मूलधन की कम्पनियाँ कैसी होती हैं। न वे ऐसे कारख़ानों की कल्पना कर सकते थे जिनमें लाख-लाख आदमी मज़दूरी करते हैं। जिस प्रकार अमीरों ने ग़रीबों को लूटने के लिए ऐसी कम्पनियाँ और कारख़ानों की सृष्टि की उसी प्रकार किसी ग़रीब आदमी ने कोई धन्धा-रोज़गार न देख कर, बच्चे चुराने का पेशा तलाश किया।

यह 'जुर्म' इसलिए पैदा नहीं हुआ कि आदमी पहले की अपेक्षा बदमाश बन गए हैं। कोई आदमी दूसरे का बच्चा इसलिए नहीं चुराता कि वह उसको अपने लिए चाहता है, अथवा वह स्वभाव से ही ऐसा दुष्ट है कि उसे इस काम में किसी तरह का मज़ा आता है, वरन् वह ऐसा काम इसीलिए करता है कि उसे इससे कुछ रुपया मिलने की आशा रहती है। जुर्म को तुम मौत की सज़ा देकर या क़ानून बना कर नहीं मिटा सकते। इसके सुधार का केवल एक ही रास्ता है। केवल इस एक जुर्म का ही नहीं, वरन् सब प्रकार के जुर्मों को मिटाने का रास्ता यही है कि लोगों को जीवन-निर्वाह का मौक़ा दिया जाय। जब से सृष्टि आरम्भ हुई है, तब से आज तक इस बात के लिए न कोई दूसरा रास्ता था और न आगे चल कर मिल सकता है। पर तो भी दुनिया के लोग ऐसे अन्धे और बेवक़ूफ़ हैं कि इस बात को जान कर भी अनजान बन जाते हैं। अगर संसार में हर एक पुरुष, स्त्री और बच्चे को नेक रास्ते से, सुख के साथ अपनी रोटी कमा कर खाने का मौक़ा दिया जाय तो फिर न जेलें रहेंगी, न क़ैदी, न वकीलों की ज़रूरत होगी, न जजों की। यह हो सकता है कि कुछ लोगों का दिमाग़ ही बिगड़ा हुआ हो और वे शौक़िया ही ऐसे काम करें। पर उनकी तादाद बहुत कम होगी और उनको बजाय जेल के अस्पताल में भेजा जायगा।

* अमेरिका में मुजरिमों के बड़े-बड़े सङ्गठित गिरोह अमीरों के लड़के-लड़कियाँ चुराने का पेशा करते हैं। वे बहुत बड़ी रक़म लेकर उनको छोड़ते हैं। कुछ समय पहले ऐसी घटनाएँ बहुत ज़्यादा बढ़ गई थीं।

कोशिश करने से ऐसे लोगों का पैदा होना दूसरी पीढ़ी में या हद तीसरी पीढ़ी में क़तई बन्द हो जायगा।

ये बातें केवल मेरी कल्पना नहीं हैं। इसके लिए मैं दो-तीन उदाहरण देता हूँ—

इङ्गलैण्ड के निवासी किसी ज़माने में अपने यहाँ के क़ैदियों को देश के बाहर भेज देते थे। वे उनको जहाज़ पर लाद कर ऑस्ट्रेलिया पहुँचा देते थे। इङ्गलैण्ड पर सरदार और रईसों का अधिकार था। वे ही सब ज़मीन के मालिक थे, और बाक़ी सब लोगों को उनके अधीन रह कर गुज़र करनी पड़ती थी। इन सब लोगों का जीवन बड़ा दुर्दशापूर्ण रहता था, जब कि सरदार और रईस लोगों को सिवाय ऐश-आराम के और कोई काम न था! ये रईस और सरदार अपने यहाँ के मुजरिमों को ऑस्ट्रेलिया भेज देते थे, जिससे वे अपने देश में बिना ख़तरे के चैन से रह सकें। जब ये मुजरिम ऑस्ट्रेलिया पहुँचते और वहाँ आज़ादी के साथ रहने का मौक़ा पाते, तो वे भेड़ पालने का पेशा करने लगते; और उनके दूध, मांस, ऊन वग़ैरह से अपना गुज़ारा करके आनन्दपूर्वक रहते। क्योंकि उस सुनसान और जङ्गली देश में यह काम चोरी करने की अपेक्षा सहज और फ़ायदेमन्द था। थोड़े दिन बाद वे ही मुजरिम इज़्ज़तदार नगर-निवासी बन गए, क्योंकि उनको

स्याम की राजकुमारी जो शीघ्र ही यूरोपीय देशों में भ्रमणार्थ जाने वाली हैं।

जीवन-निर्वाह का मौक़ा मिल गया। वे लोग किसी प्रकार का जुर्म नहीं करते थे। वे लोग उन अङ्गरेज़ों से किसी प्रकार हलके दरजे के नहीं जान पड़ते थे, जिन्होंने उनको देश-निकाला देकर वहाँ भेजा था, वरन् कुछ बातों में उनसे भी अच्छे थे। दूसरी पीढ़ी में इन मुजरिमों की सन्तान ऐसी शरीफ़ और इज़्ज़तदार बन गई, जैसे संसार के किसी भी देश के लोग होते हैं, और तब वे भी जेलें बना कर उनमें क़ैदियों को रखने लगे।

अमेरिका भी शुरू में इसी प्रकार बसाया गया था। अङ्गरेज़ लोग अपने क़ैदियों को वहाँ लाकर छोड़ देते थे। वहाँ पर उनको खेती-बाड़ी के लिए इच्छानुसार काफ़ी ज़मीन मिलती थी, जिससे वे कुछ ही दिनों में मालदार बन जाते थे और उसी प्रकार इज़्ज़तदार आदमियों के ढङ्ग से रहने लगते थे जैसे संसार के दूसरे देशों के लोग रहते हैं। पर जब इङ्गलैण्ड के बड़े लोगों ने देखा कि अमेरिका में लोग बहुत मालदार बनते चले जाते हैं, तो उन्होंने वहाँ जाकर तमाम ज़मीन और खानों पर क़ब्ज़ा कर लिया और बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ क़ायम कर दीं। तब अमेरिका में भी उसी प्रकार मुजरिम पैदा होने लगे, जैसे इङ्गलैण्ड में पाए जाते थे। इसका कारण यह नहीं था कि लोग फिर से बुरे बन गए थे, वरन् यह था कि लोगों से ज़मीन छीन ली गई थी।

तुम लोगों में से कुछ लोग देहात में रहे होंगे। वह जगह शहरों से अधिक सुन्दर होती है। अगर वहाँ पर तुमने कभी खेतों पर काम किया है, तो तुमको मालूम होगा कि अगर कुछ पशुओं को किसी ऐसे बाड़े में बन्द कर दिया जाय, जहाँ चरने को काफ़ी घास न हो तो वे पशु उछल-कूद मचाएँगे और दीवार को फाँद कर बाहर निकलना चाहेंगे। पर अगर उन्हीं पशुओं को ऐसे खेत में रक्खा जाय, जहाँ पर सबके लिए काफ़ी खाने को हो तो वे सदा बड़ी शान्ति के साथ रहेंगे और कोई काम क़ायदे के ख़िलाफ़ न करेंगे। यह मनुष्य रूपी पशु भी दूसरे पशुओं के समान ही है, केवल यह उछल-कूद कुछ ज़्यादा मचाता है। ये दोनों प्रकार के प्राणी एक ही प्राकृतिक नियम में बँधे हुए काम करते हैं।

हर एक मनुष्य की यह इच्छा रहती है कि वह ऐसे रास्ते से अपना गुज़ारा करे, जिसमें कम से कम मिहनत और झञ्झट हो। कोई अक़्लमन्द आदमी, जो शुरू में किसी नए देश में पहुँचता है, तो उसे मालूम होता है कि वहाँ पर बहुत सी ज़मीन बेकार पड़ी है। मिसाल के लिए जो आदमी पचास-सौ साल पहले बम्बई, कलकत्ता जैसे किसी बड़े शहर में पहुँचे, उनमें से कुछ समझदार लोगों ने देखा कि वहाँ पर बहुत सी ज़मीन बेकार पड़ी है, और अगर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया जाय तो कुछ समय बाद उससे बहुत फ़ायदा हो सकता है। यह सोच कर वे बहुत सी ज़मीन के मालिक बन बैठे। अब अगर तुम भी उसी प्रकार ज़मीन के मालिक बनना चाहो तो वैसा नहीं कर सकते, क्योंकि अब कुछ भी ज़मीन ख़ाली नहीं बची है। इसलिए तुमको लाचार होकर कोई दूसरा पेशा करना पड़ता है। बहुत से मुक़ामों में तमाम ज़मीन ज़मींदारों के क़ब्ज़े में है और सब लोग वहाँ पर उनकी शर्तों के अनुसार ही रह सकते हैं। ये ज़मींदार दूसरे लोगों को ख़ूब सताते और लूटते हैं, जिससे उन ग़रीब लोगों का जीवन बड़ी कङ्गाली और दुःख में कटता है। पर मनुष्य का स्वभाव है कि वह जहाँ तक सम्भव हो, आराम के साथ रहने की कोशिश करता है और इसलिए लोग चोरी, डकैती, जेब काटना वग़ैरह नए-नए रोज़गार तलाश कर लेते हैं।

आजकल मनुष्य धनी बनने के लिए सब प्रकार के उपायों से काम लेते हैं। यह आदत भी दूसरी बीमारियों की तरह एक बीमारी है। लोग जब देखते हैं कि कुछ आदमी धनी बन रहे हैं, बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ क़ायम कर रहे हैं, और उनके द्वारा लाखों रुपए कमा रहे हैं, तो उनको भी यह बीमारी लग जाती है और वे भी उनकी नक़ल करने लगते हैं। जिस प्रकार चेचक और प्लेग की छूत दूसरे लोगों को लग जाती है, उसी प्रकार लोग इस धनी बनने की बीमारी में भी ख़ुद बख़ुद फँस जाते हैं। इसलिए उन लोगों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि दुनिया में हवा ही ऐसी चल रही है। तुम देखते हो कि बहुत से आदमी अपनी ताक़त से ज़्यादा सट्टा खेलते हैं, अपना सर्वस्व जुए में लगा देते हैं, और अन्त में बर्बाद हो जाते हैं। ये सब लोग धनवान बनने के लिए पागल हो रहे हैं। ये सब बीमारी के लक्षण हैं और इस प्रकार की आदत को सिवाय बीमारी के और कुछ नहीं कह सकते। इस बीमारी का असर सब लोगों पर पड़ता है, पर इसमें कामयाबी उन्हीं को होती है, जोकि ज़मीन-जायदाद के स्वामी बने हुए हैं।

अगर तुम क़ानून की जाँच करोगे तो तुमको पता लगेगा कि जब कुछ लोग बहुत सी ज़मीन-जायदाद इकट्ठी कर लेते हैं तो वे क़ानून बनाते हैं। क़ानूनों का उद्देश्य लोगों की रक्षा करना नहीं होता, और न अदालतें न्याय करने के लिए बनाई जाती हैं। जब तुम्हारा मुक़दमा अदालत में पेश हो तो इस बात का बहुत कम असर पड़ता है कि तुम दोषी हो या निर्दोष।

वहाँ पर सब से ज़रूरी बात यह है कि तुम्हारी तरफ़ से कोई बहुत होशियार वकील पैरवी करता हो। पर होशियार वकील बिना पैसे के मिल नहीं सकता, इसलिए अदालतों का सारा दारमदार पैसे पर रहता है।

जिन लोगों के पास ज़मीन-जायदाद होती है, वे ही क़ानून-रचना करते हैं, जिससे उसकी सहायता से अपनी सम्पत्ति की रक्षा कर सकें। वे अपनी जायदाद के चारों तरफ़ क़ानून का एक बाड़ा या घेरा-सा बना देते हैं, जिससे और लोग उसमें दख़ल न दे सकें। वास्तव में क़ानून उन्हीं लोगों की रक्षा के लिए तैयार किए जाते हैं, जोकि दुनिया पर हुकूमत करते हैं। उनका उद्देश्य कभी न्याय की स्थापना करना नहीं होता। आजकल संसार में इन्साफ़ करने का एक भी साधन मौजूद नहीं है।

इस बात के समझाने के लिए मैं एक मिसाल देता हूँ। अगर समाज में सबके साथ न्याय करने की व्यवस्था हो तो ग़रीब से ग़रीब आदमी को भी वैसा ही होशियार वकील मिलना चाहिए, जैसा बड़े से बड़ा अमीर अपने मुक़दमे में खड़ा करता है। इसके बिना न्याय कैसे हो सकता है? पच्चीस रुपया फ़ीस वाला वकील पाँच सौ रुपए वाले वकील की दलीलों का जवाब कैसे दे सकता है? इसके सिवाय अदालत में ग़रीब आदमी का मुक़दमा भी उतना ही काफ़ी समय लगा कर और उसी प्रकार सफ़ाई के साथ किया जाना चाहिए जैसा कि एक बहुत बड़े अमीर का। यह न हो कि ग़रीब आदमी का मुक़दमा पन्द्रह मिनट में ही ख़तम कर दिया जाय और अमीर आदमी के मुक़दमे में पन्द्रह दिन का समय लगाया जाय।

इतना ही नहीं, अगर तुम अमीर हो और संयोगवश अदालत ने तुम्हारे ख़िलाफ़ फ़ैसला कर भी दिया तो तुम जज के यहाँ अपील करके उस फ़ैसले को रद् करा सकते हो। पर ग़रीब आदमी अपना मुक़दमा जज की अदालत में नहीं ले जा सकता, क्योंकि उसके पास उतना पैसा नहीं होता। अमीर आदमी अगर जज की अदालत में भी हार जाय तो हाईकोर्ट में जा सकता है, और वहाँ हारने पर भी प्रिवी काउन्सिल में अपील कर सकता है। यह भी सम्भव है कि इस प्रकार उसका मुक़दमा इतने दिनों तक चलता रहे कि वह बूढ़ा होकर मर जाय, और उसे दोषी होते हुए भी जेल न जाना पड़े।

पर अगर तुम ग़रीब हो तो तुम्हारा फ़ैसला फ़ौरन हो जाता है। तुमको पहले से ही दोषी समझ लिया जाता है। सरकारी वकील कहेगा कि अगर तुम दोषी नहीं हो तो पुलिस तुमको पकड़ती ही क्यों? यह सच है कि अगर उस मनुष्य को रहने के लिए संसार में कोई जगह होती तो उसे अदालत में आने की ज़रूरत न पड़ती। हाकिमों को ऐसे लोगों के मुक़दमों पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिलता। और न समाज के बड़े लोगों के पास, जो बड़ी-बड़ी कोठियाँ और बैङ्क चलाते हैं, मन्दिर और मठ बनवाते हैं, जेलों और अदालतों के लिए बड़े-बड़े मकान तैयार कराते हैं, इन ग़रीबों के लिए इतना रुपया होता है कि साल भर में दो-चार हज़ार क़ैदियों के दोषी या निर्दोषी होने की अच्छी तरह जाँच कर सकें। अगर वर्तमान अदालतों की स्थापना न्याय की रक्षा के लिए की जाती, तो समाज इन तमाम क़ैदियों के लिए किसी ऐसे ही होशियार वकील को नियत करता, जितना होशियार सरकारी वकील होता है। क़ैदियों के लिए भी उसी तरह के और उतने ही होशियार जासूस, नायब वकील, सलाहकार दिए जाते जितने सरकार की तरफ़ मुक़दमा चलाने में लगाए जाते हैं; क़ैदियों की तरफ़ से भी मुक़दमें में उतना ही रुपया ख़र्च किया जाता जितना कि सरकार की तरफ़ से मुक़दमा चलाने में ख़र्च होता है। जब दोनों पक्षों के पास इस तरह समान शक्ति और साधन मौजूद हों, तब न्याय की भी कुछ आशा की जा सकती है। पर आजकल ग़रीबों के मुक़दमे में सब बातें इससे उलटी होती हैं। सरकारी वकील सदा बहुत होशियार आदमी रक्खा जाता है, और उसकी मदद के लिए जासूस, पुलिस वाले, सहायक वकील, सब हर तरह के सामान के साथ तैयार रहते हैं, जज भी उसकी बातों को बहुत ज़्यादा ध्यान से सुनते हैं। फिर भी ग़रीब आदमी जेल न भेजा जाय तो क्या हो?

आजकल ज़्यादातर क़ानून जायदाद-सम्बन्धी जुर्मों के लिए बनाए जाते हैं। ज़्यादातर लोग इसीलिए जेल भेजे जाते हैं कि उन्होंने किसी की जायदाद के ख़िलाफ़ कुछ क़ुसूर किया है। यदि सौ दो सौ निर्दोष आदमी जेल चले जायँ तो इस बात की ज़रा सी भी परवा नहीं की जाती। मुख्य बात यही समझी जाती है कि किसी तरह जायदाद की रक्षा हो। क्योंकि आजकल दुनिया में जायदाद ही सब से ज़्यादा महत्व की चीज़ है।

इन बातों का कारण क्या है? आजकल प्रचलित सब क़ानून और क़ायदे जायदाद वालों ने अपने फ़ायदे के लिए बनाए हैं। इसलिए आजकल जब कोई मनुष्य क़ानून के अनुसार 'मुजरिम' बतलाया जाय तो उससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि उसने कोई ऐसा काम किया है जो नीति या चरित्र की दृष्टि से ख़राब समझा जाय। इसके विपरीत जो लोग क़ानून के मुताबिक़ 'मुजरिम' नहीं समझे जाते और जेलों से बाहर शान के साथ रहते हैं, वे प्रायः दण्ड के योग्य काम करते रहते हैं। मिसाल के लिए कितनी ही बार बड़े-बड़े व्यापारी करोड़ों मन अनाज को गोदाम में बन्द करके उसका दाम चढ़ा देते हैं, जिसके फल से हज़ारों बच्चों और बूढ़ों को भूखा मर जाना पड़ता है, हज़ारों लोगों को भिखारी बनना पड़ता है, हज़ारों को जेल जाना पड़ता है। इसी प्रकार ये बड़े लोग करोड़ों मन रूई और ऊन को गोदामों में भर कर जाड़ों में लाखों ग़रीब स्त्री-पुरुषों को ठण्ढ से मरने के लिए लाचार करते हैं। इन कारणों से हर साल हज़ारों-लाखों मनुष्य प्राण त्याग देते हैं, पर इन बड़े लोगों पर कोई हत्या का मुक़दमा नहीं चलाता। ऐसा क्यों होता है? इसीलिए कि क़ानून बनाने वाले मालदार और जायदाद वाले लोग होते हैं और वे इस प्रकार मनुष्य-जीवन की आवश्यक वस्तुओं को ताले में बन्द कर रखना न्यायानुकूल बतलाते हैं। अगर क़ानून बनाने का अधिकार हमारे-तुम्हारे हाथों में होता तो हम सब से पहले उन्हीं लोगों को दण्ड देते जो तमाम ज़मीन-जायदाद के मालिक बने बैठे हैं। प्रकृति ने अनाज, रूई, लकड़ी, पत्थर वग़ैरह चीज़ें सब के लिए पैदा की हैं, पर ये थोड़े से लोग सबको उनसे वञ्चित रखते हैं।

यह बात अच्छी तरह साबित की जा चुकी है कि जिन जुर्मों के लिए लोगों को जेल भेजा जाता है वे प्रायः जायदाद-सम्बन्धी होते हैं। कुछ जुर्म शरीर-सम्बन्धी भी होते हैं, जैसे हत्या, बलात्कार आदि, पर उनकी संख्या बहुत कम होती है। ज़्यादातर जुर्म धन के लिए ही किए जाते हैं। पर तो भी जो लोग इन जुर्मों को करते हैं और उनके लिए सज़ा भोगते हैं, उनके पास कभी ज़्यादा धन देखने में नहीं आता। इसके विपरीत जो लोग बड़े-बड़े महलों में रहते हैं और किसी प्रकार का 'क़ानूनी जुर्म' नहीं करते, उनके पास इतनी सम्पत्ति रहती है कि वे यह भी नहीं समझ सकते कि उसका क्या करें। इसलिए सच्ची बात यह है कि जिन उपायों से ये बड़े लोग रुपया कमाते हैं, उनको उन्होंने क़ानून के मुताबिक़ ठहरा दिया है और जिन उपायों से तुम जेल में रहने वाले ग़रीब लोग रुपया कमाते हो उनको क़ानून के ख़िलाफ़!

मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मुझे दुनिया की किसी जेल में से पाँच सौ बुरे से बुरे मुजरिम और किसी बड़े शहर की गन्दी गलियों में से निर्लज्ज से निर्लज्ज पाँच सौ वेश्याएँ छाँट कर दे दो। और एक ऐसी जगह दे दो, जहाँ पर उन सबको रहने तथा खेती-बाड़ी के लिए काफ़ी ज़मीन हो। थोड़े ही समय बाद आप देखेंगे कि वे ही निकृष्टतम समझे जाने वाले लोग, उसी तरह के सभ्य और सज्जन बन जायँगे, जैसे कि दुनिया के साधारण लोग होते हैं।

इन सब बुराइयों के सुधार का केवल एक उपाय है। पर या तो संसार ने उसे कभी जाना ही नहीं, और यदि जाना भी तो उस पर अमल करने की कोशिश नहीं की। तुम चाहे ऐसा क़ानून बना दो कि चोरी करने वाले हर एक आदमी को फाँसी की सज़ा दी जायगी, पर तो भी इससे चोरी मिट नहीं सकती। किसी समय इङ्गलैण्ड का क़ानून ऐसा था कि वहाँ क़रीब एक सौ तरह के जुर्मों के लिए मौत की सज़ा दी जाती थी, पर तो भी वहाँ काफ़ी जुर्म होते थे। इसके विपरीत आजकल वहाँ क़ैदियों को सख़्त सज़ा बहुत कम दी जाती है, और मौत का दण्ड बहुत कम मुक़दमों में दिया जाता है, इतने पर भी अब वहाँ पहले ज़माने की अपेक्षा बहुत कम जुर्म होते हैं। लोगों को फाँसी देने से हत्याओं का होना नहीं रुकता, वरन् इससे नए हत्यारे पैदा होते हैं!!

यह समझ सकना सहज है कि इन बातों को, जिन्हें हम 'जुर्म' कहते हैं, कैसे मिटाया जा सकता है। पर उस उपाय को कार्यरूप में परिणत कर सकना सहज नहीं है। वह उपाय यही है कि बड़े लोगों के विशेष अधिकारों को नष्ट कर दिया जाय, जिससे सर्व-साधारण को जीवन-निर्वाह का मौक़ा मिल सके। जब तक ये बड़े 'मुजरिम' खेतों और खानों के मालिक बने बैठे हैं, म्युनिसिपैलिटियों पर क़ब्ज़ा किए हुए हैं, रास्तों के ठेकेदार बने हुए हैं, तब तक हज़ारों ग़रीब लोगों को जुर्म करके जेल जाना ही पड़ेगा!!

इसलिए दुनिया से जुर्म और मुजरिमों (अपराध और अपराधियों) को दूर करने का रास्ता सिर्फ़ यही है कि अमीर और ग़रीबों का भेद ही मिटा दिया जाय। सब लोग आराम के साथ ज़िन्दगी बिता सकें, सबको रोज़ी कमाने का मौक़ा दिया जाय, ज़मींदारी, जागीरदारी की प्रथाएँ मिटा दी जायँ, एकाधिकार जाता रहे, पैदावार में सब लोगों का हिस्सा हो, अच्छी चीज़ों से सब समान रूप से आनन्द उठा सकें। जब लोग सहज में ही सुख के साथ जीवन व्यतीत कर सकेंगे तो कोई चोरी नहीं करेगा। जिस आदमी का घर भरा हुआ होगा, वह दूसरे घर से माल चुराने न जायगा। जब घर में ही आराम के साथ रहने का साधन मिलेगा तो कोई स्त्री बाज़ार में जाकर बैठना पसन्द नहीं करेगी। हमारे समाज के ये दोष समानताद्वारा ही सुधर सकते हैं। जब ऐसा हो जायगा तब जेलों की ज़रूरत ही न रहेगी। जेलें कभी उस उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकतीं, जिसके लिए वे बनाई जाती हैं। अगर आज सब जेलों को उखाड़ फेंका जाय, तो उससे अपराधों का होना बढ़ नहीं जायगा। जेलों से कोई आदमी नहीं डरता। जेलें मनुष्य-जाति की सभ्यता के लिए कलङ्क की चीज़ हैं और उनसे यही प्रकट होता है कि जेलों से बाहर रहने वाले लोग बड़े अनुदार और स्वार्थी हैं और वे अपने लालच के कारण ग़रीब लोगों को उनमें बन्द कर रखते हैं।

* * *

राष्ट्रीय महायज्ञ में महिलाओं का बलिदान

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

वर्तमान आन्दोलन की आधार-भूत शक्ति देश की महिलाओं की जाग्रति है। देश के बड़े-बड़े घरानों की महिलाएँ प्राचीन रूढ़ियों को तोड़ कर स्वराज्य-संग्राम में अपनी आहुति दे रही हैं। लाठियों के प्रहार और जेल की यन्त्रणाएँ भी उन्हें अपने आत्म-विश्वास से पीछे नहीं हटा सकी हैं। महिलाओं के योग ने सत्याग्रह-आन्दोलन में जीवन डाल दिया है। उनका आत्म-त्याग, सहनशक्ति, दृढ़ता भारतवर्ष के भावी इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायँगी। वे जब अपने झण्डे की रक्षा के लिए हज़ारों के जन-समुदाय में सिंह की तरह घुस जाती हैं, तब मालूम होता है कि सामाजिक रूढ़ियों में कितना परिवर्तन हो गया है।

सहनशक्ति, बलिदान और त्याग महिलाओं के प्राकृतिक गुण हैं, वे कठिन से कठिन परिस्थिति का धैर्य के साथ मुक़ाबला कर सकती हैं और भीरु होने पर भी यदि एक बार एक बात से उनका भय निकल जाता है तो वे अत्यन्त अदम्य-साहस का कार्य भी कर सकती हैं। उनमें वे सभी गुण हैं, जो भारतवर्ष के वर्त्तमान आन्दोलन में उन्हें पुरुषों से अधिक उपयोगी साबित कर सकते हैं। उनमें वह व्यापारिक प्रवृत्ति नहीं है, जो एक पुरुष को बार-बार इस आन्दोलन से दूर खींच सकती है। उनमें वह उतावलापन भी नहीं है, जो शीघ्र ही सफलता न मिलने पर पुरुषों के जोश को ठण्डा कर देता है।

महिलाओं में एक पूर्ण सत्याग्रही बनने के सब गुण मौजूद थे, परन्तु फिर भी आज से आठ-नौ माह पहले किसको आशा थी कि महिलाएँ इस राष्ट्रीय महायज्ञ की आधार-भूत शक्ति ही बन जायँगी। जिस समय महात्मा गाँधी आश्रम से अपनी प्रसिद्ध रण-यात्रा के लिए चले थे और महिलाओं के कोमल हाथों ने उनका रण-गीत से आह्वान करके उनके भाल पर लाल टीका लगाया था, उस समय उन्होंने भी न सोचा होगा कि ये कोमल हाथ कुछ ही महीनों में इतने शक्तिशाली हो जायँगे कि उनमें राष्ट्रीय झण्डा भी अचल और सुरक्षित हो जायगा।

इन आठ-नौ महीनों में महिला-संसार में एक अद्भुत क्रान्ति हो गई है, ऐसी क्रान्ति जिसने शताब्दियों की रूढ़ियों और बन्धनों को जड़ से हिला दिया है। सन् १९२१ का असहयोग आन्दोलन प्रायः पुरुषों और नगरों का आन्दोलन था, अनेक पुरुष अपनी पत्नियों के कारण आन्दोलन में योग देने और जेल जाने से वञ्चित रह जाते थे, परन्तु सन् १९३० में स्थिति क्या है? महिलाएँ इस आन्दोलन की उन मुख्य प्रेरणा-शक्तियों में से हैं, जो पुरुषों को बलिदान के मार्ग की ओर खींचे हुए लिए जा रही हैं। यदि पुरुष उनके मार्ग में बाधक न होते तो आज जितनी स्त्रियाँ रणक्षेत्र में कार्य कर रही हैं, वहाँ उनसे चौगुनी दिखलाई पड़तीं। बम्बई के मोर्चे पर तो महिलाओं ने कमाल कर दिया है, हज़ारों स्त्रियों के जुलूस, प्रभात-फेरियाँ, पिकेटिङ्ग और दर्जनों गिरफ़्तार होना तो प्रति दिन की साधारण सी घटना हो गई है। और यह स्त्रियाँ भी कौन हैं? इनमें बड़े-बड़े मिल-मालिकों, कारख़ानों, फ़र्मों और सरकारी अफ़सरों की भी स्त्रियाँ हैं, इनमें बी० ए० हैं, एम० ए० हैं, वकील हैं और डॉक्टर भी हैं। इनके अतिरिक्त वे स्त्रियाँ भी हैं, जो पहले कभी घर से बाहर नहीं निकलती थीं, बहुत कम पैदल निकलती थीं और अपने जीवन में शायद कभी फ़र्लाङ्ग दो फ़र्लाङ्ग पैदल चली हों।

महिलाओं के एक जुलूस को देखो, इसमें छोटी-छोटी लड़कियों के अतिरिक्त साठ-साठ वर्ष की बूढ़ी स्त्रियाँ भी सम्मिलित रहती हैं। फिर उनकी मुखाकृति को देखो और उनके भावों की दृढ़ता का अनुभव करो। उनके मुँह से राष्ट्रीय गायन के शब्द आप ही आप निकलते जाते हैं। एक-एक शब्द के पीछे उनके भावों की अतुल शक्ति है। गीत में अलङ्कार नहीं है। कुछ रस भी नहीं है, कोई सौन्दर्य भी नहीं है और न कोई अनोखे भाव ही हैं, सीधी-सादी तुकबन्दियाँ हैं, फिर भी दर्शक सुनते हैं और उनका हृदय हिल जाता है, शरीर का प्रत्येक अणु उत्तेजित हो उठता है। बड़े-बड़े कायरों के दिल भी उमड़ उठते हैं। जुलूस आगे बढ़ता है, पुलिस-शक्ति का प्रदर्शन होता है। घोड़े की टापों और 'हटो, भागो' 'मारो-मारो' की कर्कश आवाज़ें सुनाई देती हैं। लाठियाँ चलने लगती हैं, परन्तु वे कोमल हृदय, नाज़ुक शरीर टस से मस नहीं होते। वे स्वयंसेवकों को चारों ओर से घेर कर खड़ी हो जाती हैं; क्योंकि "देश की आज़ादी के लिए भाइयों से पहले बहिनें मार खायँगी।"

बम्बई! जो कुछ ही मास पहले शृङ्गाररस-पूर्ण थी, वह आज वीररस-पूर्ण है। आज वहाँ पाउडर और कोस्मेटिकस की उपासिकाओं का जमघट समालोचना का विषय नहीं है, आज उनकी चर्चा है जो सरल सौन्दर्य की मूर्ति हैं और बड़ी-बड़ी क़ीमती विलायती साड़ियों और ब्लाउज़ों की जगह चन्द्र-धवल खादी में दिखलाई देती हैं। आज उनका सारा दृष्टि-कोण ही बदल गया है। देश में जब आग लगी है तो वस्त्राभूषण कैसे?

महिलाओं ने राष्ट्रीय ध्वजा को अपने हाथ में लेकर उसे सुरक्षित कर दिया है। प्रतिदिन झण्डाभिवादन के लिए जाने वाली बीसियों टोलियों को देखो, एक के बाद एक आती है, अपना झण्डा आरोपण करती है और बड़ी निष्ठा के साथ उसका अभिवादन करती है। पुलिस लाठी चलाती है, पर वे अपना कार्य समाप्त करके ही हटती हैं। इसके उपरान्त एक के बाद दूसरी टोली का ताँता लग जाता है, पुलिस के ग़रीब सिपाहियों के हाथ लाठी चलाते-चलाते थक जाते हैं। गोरे सार्जेण्ट उनके हाथ से झण्डा छीनने की कोशिश करते हैं। कल तक जो एक पुरुष से बात करने में तीन बल लेती थीं, आज वही झण्डे की रक्षा के लिए सिंहनी की तरह गोरे सार्जेण्टों को चीरती हुई भीड़ में घुस जाती हैं। "इन भारतीय स्त्रियों को, जो कल तक पर्दे में रहती थीं, आज क्या हो गया है? इस तरह भयानक जन-समूह में घुस जाने और लाठियों के प्रहार के सामने निधड़क बढ़ने का साहस तो एक अङ्गरेज़ महिला को भी न होगा।" एक अङ्गरेज़ दर्शक कहते हैं—"मुझे आश्चर्य होता है कि कल तक मेरी बच्ची, जिसे पाँच मिनट बात करने पर माथे में दर्द होने लगता था, आज एक दूकान के सामने धूप में घण्टों पिकेटिङ्ग करती खड़ी रहती है, परन्तु माथे में एक शिकन भी नहीं पड़ती।" एक दूसरे गुजराती मित्र कहते हैं—"यही नहीं, उनके आत्म-विश्वास को देख कर तो और आश्चर्य होता है।"

"आप इस तरह जन-समूह में घुस जाती हैं, आपको भय नहीं मालूम होता। यदि कोई गुण्डा आपके व्यक्तित्व पर आक्रमण कर दे तब?"

"हम सरकार की सब पाशविक शक्तियों के आगे अपना सर झुकाने को तैयार हैं, परन्तु यदि हमारे धर्म पर तनिक भी आक्रमण होगा तो हमारे हाथ उसकी रक्षा के लिए पर्याप्त सबल हैं। हमें तो विश्वास है कि हमारा पुरुष-समाज ही हम पर ऐसे किए गए अत्याचारों को कभी सहन नहीं करेगा, परन्तु यदि वे नपुंसक हो जायँ तब भी आज हमारा सङ्गठन ऐसा है कि किसी भी गुण्डे को हमारी ओर बुरी दृष्टि करने का साहस नहीं हो सकता। यदि ऐसा हो तो एक क्षण में हज़ारों रणचण्डियों का प्रबल प्रहार उसको वहीं यमलोक पहुँचा देगा!"—जलती हुई आँखों से एक महिला ने उत्तर दिया।

"तब अहिंसा का क्या होगा?"

"हमें विश्वास है, ऐसी स्थिति में हमसे कोई भी अहिंसात्मक रहने के लिए न कहेगा और स्वयं महात्मा जी भी हमारे कार्य का समर्थन करेंगे।"

"फिर भी क्या आपकी स्त्री-सहज लज्जा और भीरु प्रकृति इस बात का तक़ाज़ा नहीं करती कि आप ऐसे झगड़ों से पृथक् रहें?"

"अब भारतीय स्त्रियाँ छुईमुई नहीं रही हैं। गत आठ-नौ मास ने उन्हें कम से कम पचास वर्ष आगे बढ़ा दिया है। वे अब समझ गई हैं कि वे खेलने और दिखाने की चीज़ नहीं हैं, मानव-सृष्टि की वे भी सबल और आवश्यक अङ्ग हैं।"

ब्रिटिश सत्ता के 'शासन और व्यवस्था' का इतना मख़ौल कभी नहीं हुआ, जितना इन आठ-नौ महीनों में। पुरुषों की क्या, साठ-साठ वर्ष की स्त्रियाँ और दस-दस वर्ष की लड़कियाँ भी अङ्गरेज़ी क़ानून को ठुकराती हुई हर्ष के साथ जेल चली गई हैं। इनमें भी अधिक आश्चर्य उन नवयौवनाओं का है, जिनकी आकांक्षाओं और इच्छाओं का हृदय-सागर अभी लबालब भरा हुआ है, परन्तु उन्हें वे जेल के कर्कश स्वर, कठिन भूमि, तसले और कम्बल में उड़ेलने के लिए आगे बढ़ गई हैं। जेल में कुछ बहिनें तो ऐसी हैं, जिनकी गोदी में एक-एक महीने के बच्चे हैं, और उनकी संख्या थोड़ी नहीं है, जो अपने नन्हें-नन्हें बच्चों को लेकर जेल के सीकचों से टकरा रही हैं।

"यदि आपको अपना भय न सही, तो क्या अपने इस छोटे नन्हें बच्चे का भी ख़्याल नहीं है?"

"इस समय तो हमारी परीक्षा है। इस महायज्ञ में हम जितनी ही अधिक बहुमूल्य आहुतियाँ दे सकें, उतना ही अच्छा है और इस निर्बोध बच्चे के लिए जेल-जीवन अन्त में हानिकर ही क्या हो सकता है? क्या वहाँ के कष्ट अभी से उसमें उस शक्ति को जाग्रत नहीं कर देंगे, जो बहुत से सुख में पले हुए लोगों में अन्त तक सुप्त पड़ी रहती है? क्या वहाँ की स्मृतियाँ उसके जीवन में अनेक वह धारा नहीं बहाती रहेंगी, जो एक सच्चे देशभक्त के लिए सदैव आवश्यक है?"—महिला ने तन कर उत्तर दिया।

बम्बई में तो सत्याग्रह-युद्ध का कोई भी ऐसा विभाग नहीं है, जिसमें महिलाओं का मुख्य भाग न हो। बम्बई प्रान्त के 'डिक्टेटर' का पद तो प्रायः महिलाओं ने अपने लिए सुरक्षित सा ही कर लिया है। इसके अतिरिक्त दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, कलकत्ता, आगरा आदि नगरों में भी कई मुख्य विभागों की अधिष्ठाता स्त्रियाँ ही हैं। मध्य-प्रदेश की डिक्टेटर भी कई स्त्रियाँ हो चुकी हैं। एक केवल पञ्जाब में ही स्त्रियों ने इतना काम

किया है, जिसे देख कर आश्चर्य होता है और सिन्ध की महिलाएँ भी पीछे नहीं रही हैं।

* * *

संयुक्त-प्रान्त उन प्रान्तों में से एक प्रान्त है, जहाँ पर्दे की नाशकारी प्रथा स्त्री-जीवन को जर्जरित कर रही है और यह स्त्री-शिक्षा में भी बम्बई, बङ्गाल और पञ्जाब से पिछड़ा हुआ है; परन्तु यहाँ की महिलाएँ इस युद्ध में योग देने में किसी प्रान्त से पीछे नहीं रही हैं। प्रान्त के प्रायः सब ही मुख्य नगरों में महिलाओं ने सैकड़ों की संख्या में अपने घरों से निकल कर योग दिया है। जब कितनी ही जगहों से जुलूस रोकने, डण्डे और गोली चलाने की ख़बरें आ रही थीं, तब भी इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ और आगरा में हज़ारों स्त्रियों के जुलूस निकले हैं, ऐसे जुलूस जो भारतवर्ष के इतिहास में बिलकुल एक नई बात हैं। प्रयाग और कानपुर के दस-दस हज़ार के जुलूस महिलाओं के अथाह उमड़े हुए महासागर के सिवाय क्या थे?

संयुक्त प्रान्त को विदेशी कपड़े और ब्रिटिश माल के बहिष्कार में पर्याप्त सफलता मिली है, परन्तु इसका अधिकांश श्रेय महिला कार्यकर्त्ता और देश-सेविकाओं को है। मैंने स्वयं देखा है कि जहाँ पुरुष-स्वयंसेवकों का पिकेटिङ्ग दिनों और हफ़्तों असफल रहा है, वहाँ महिलाओं ने उस मोर्चे को कुछ ही घण्टों में सफल कर लिया है। स्वयं मुझे कई बार स्वयंसेवकों को देश-सेविकाओं के साथ इसलिए भेजना पड़ा कि वे जाकर उनसे सीखें कि पिकेटिङ्ग किस तरह किया जाता है। इस तरह सीखे हुए स्वयंसेवक अन्य स्वयंसेवकों से अधिक योग्य प्रमाणित हुए हैं। आगरा में विदेशी माल बेचने वाले बज़ाज़ों के ऊपर जब विजय प्राप्त करके मैं अपने कुछ स्वयंसेवकों और स्वयंसेविकाओं को लेकर हाथरस गया तो चौबीस घण्टे के भीतर सौ से ऊपर बज़ाज़ कॉङ्ग्रेस की आज्ञा स्वीकार करने के लिए तैयार हो गए। इन स्त्री-स्वयंसेविकाओं का पिकेटिङ्ग इतना प्रभावशाली था कि कट्टर से कट्टर विरोधी बज़ाज़ों के हृदय हिल गए। तीन दिन में कई लाख रुपए के माल पर मुहर लगा दी गई।

मथुरा का दृश्य तो बड़ा कल्याणजनक था और इस बात को अच्छी तरह प्रकट करता था कि इन स्वयंसेविकाओं में अपने कार्य में विश्वास किस हद तक पहुँच चुका है। एक सरकार के पिट्ठू रायबहादुर बज़ाज़ ने इनसे टक्कर लेनी चाही, वह भी अड़ गईं। दो सुकोमल कुमारियों ने प्रतिज्ञा की कि जब तक बज़ाज़ महाशय कॉङ्ग्रेस की आज्ञा न मानेंगे, तब तक वे न तो अन्न ग्रहण करेंगी और न जल और न वहाँ से हटेंगी। जून का महीना, दोपहर का समय, नीचे ज़मीन तप रही थी और ऊपर से सूर्य भगवान अपनी प्रलयङ्करी रश्मियाँ फेंक रहे थे। उनको ऊपर से लगाने के लिए छाता दिया गया, पर उन्होंने उसे फेंक दिया और साथ ही पैर की चट्टियाँ भी उतार दीं। कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्त्ता भी घबड़ा गए, लेखक की भी बात टाल दी गई, तब तो कितने ही लोग और भी उसी तरह तपस्या करने के लिए बैठ गए। घण्टा बीता, दो घण्टे बीते, तीन घण्टे बीते, अन्त में बज़ाज़ महाशय का पाषाण-हृदय भी पिघल गया। उन सुकोमल कुमारियों की विजय हुई। ऐसे ही महिलाओं के आत्म-विश्वास और कष्ट-सहन के उदाहरण लेखक को इस आन्दोलन में कितनी ही बार मिले हैं।

आगरा से कई उच्च घरों की महिलाएँ अपने नन्हें-नन्हें बच्चों को लेकर जेल गई हैं। एक बार एक मोर्चा जमा हुआ था, और पुलिस ने उसे चारों ओर से घेर लिया था। गिरफ़्तारियों की भी सम्भावना थी। इस समय तक कोई स्त्री गिरफ़्तार न हुई थी, इसलिए इस अवसर पर महिलाओं की गिरफ़्तारी की बात सोच कर लेखक का रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होने लगा। लेखक ने श्रीमती पार्वती देवी से, जो अब जेल में हैं और जिन्हें इस ज़िले में महिलाओं का सङ्गठन करने का श्रेय प्राप्त है, कहा—"स्थिति भयङ्कर है, गिरफ़्तारियाँ होना अनिवार्य है, यदि तनिक भी कमज़ोरी हो तो आप अपनी देश-सेविकाओं को लेकर हट जायँ।"

यह बात उन्हें बहुत बुरी लगी। उन्होंने कहा—"आप चिन्ता न करें, स्त्रियाँ अब पुरुषों से बहुत आगे बढ़ गई हैं। आज एक जत्था क्या, यदि आवश्यकता होगी तो हम दस जत्थे बलिदान कर देंगी।" और इसमें कुछ बनावट नहीं थी। हर एक स्वयंसेविका पहले जत्थे में गिरफ़्तार होने को उत्सुक थी और जो चुन ली जाती थी, उसका मुख-कमल हर्ष से खिल जाता था। ऐसी आठ नवयुवतियाँ चुनी गईं, उन्हें गगनभेदी नाद और जय-जयकार में फूल की मालाएँ पहिनाई गईं। इस घटना के बाद ही महिलाओं की संख्या दुगुनी हो गई।

अभी उस दिन की बात है आगरा ज़िले में 'लगानबन्दी' का श्रीगणेश हो रहा था, ज़िले के 'बरोदा' और 'मिजावरी' गाँव बारदोली के आदर्श पर लगानबन्दी का कार्य करने के लिए आ रहे थे, इसलिए वे आगरा के लोगों के तीर्थ-स्थान बन गए थे। २१ दिसम्बर 'बरोदा' की तीर्थ-यात्रा का दिवस रक्खा गया, उस दिन वहाँ गीता-पाठ की पूर्णाहुति दी गई। आगरे के सरकारी कर्मचारियों ने शहर से 'बरोदा' जाने के रास्ते रोक दिए और बरोदा के चारों तरफ़ पुलिस-घुड़सवार, पैदल सिपाही और सार्जेण्ट तैनात कर दिए। हज़ारों स्त्री और पुरुषों का जनसमूह बरोदा की ओर उमड़ रहा था। स्त्रियों का भी एक जत्था आगरे से इक्के में चला। इनमें वृद्धाएँ भी थीं और छोटी-छोटी बच्चियाँ भी थीं। शहर से निकलते ही उनके इक्के रोक दिए गए और उनसे कहा गया कि "वापस लौट जाओ, इक्के आगे नहीं जा सकते।"

"यदि तुम अपने ग़ैर-क़ानूनी क़ानून से इक्कों को नहीं जाने देते, तब भी हम रुक नहीं सकतीं, हम पैदल ही बरोदा गाँव जायँगी।"

"आप जानती हैं, यहाँ से बरोदा कितनी दूर है? बारह मील! क्या आप बारह मील पैदल चल सकेंगी?"

"केवल बारह मील! बारह मील क्या, यदि हमारे हृदय में विश्वास है, तो हम एक सौ बीस मील भी चल कर वहाँ पहुँचेंगी।"

महिलाओं का यह जत्था न माना। पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल ने कहा, तब भी न माना, और बरोदा तक बढ़ता हुआ चला गया। यहाँ हज़ारों की संख्या में जनता चारों ओर से बरोदा की ओर बढ़ रही थी, पुलिस के घुड़सवार और गोरे सार्जण्टों के प्रहार से निरीह जनता का तप्त रक्त रणचण्डी के खप्पर को भर रहा था। पर पुलिस को सब से कठिन था इस महिला-शक्ति की प्रगति को रोकना। वे लाठी के प्रहारों में भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ रही थीं। इस प्रकार कितनी ही बार स्त्रियों ने अपने बल की परीक्षा दी है।

देश की यह महिला-शक्ति न केवल राजनैतिक समस्याओं को हल करने में समर्थ होगी, अपितु उनकी इस जाग्रति से वे सामाजिक रूढ़ियाँ भी नष्ट हो जायँगी जो शताब्दियों से हमारे समाज में घुन की तरह लगी हुई हैं। राजनैतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो जाने के बाद देश की इस नवीन शक्ति का प्रवाह निश्चय ही सामाजिक क्षेत्र में बाढ़ उत्पन्न कर देगा।

* * *

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल० बी०]

(गताङ्क से आगे)

५

वाहरी तक़दीर ! मुझे ज़नानी पोशाक में देख कर ससुर जी ख़ुद ही शर्मा गए, मुझे ज़्यादा झेंपने की ज़रूरत ही न पड़ी।

उस पर बारातियों ने जो उन्हें बनाना शुरू किया तो वह यह समझे, जैसा कि बाद को उन्होंने लोगों से बताया कि यह सरासर बारातियों का पाजीपन है। वे ही उन्हें बेवक़ूफ़ बनाने के लिए मुझे सोते में पेशवाज़ पहना कर उनके सामने पकड़ ले गए। ख़ैर, उन्होंने जो कुछ भी समझा बहुत अच्छा समझा; क्योंकि इससे मेरी आबरू बच गई और वह मुझसे कुछ भी न बोले। हाँ, बारातियों और जनातियों में अलबत्ता रात भर ख़ूब तुर्की-बतुर्की होती रही। मैं था बारातियों में, इसलिए मेरी वजह से बाराती लोग मेहरा बनाए जाते थे और ससुर जी थे जनातियों में, इसलिए यह बला उनके सर मढ़ कर यह लोग कहते थे कि वाह हज़रत, वाह! आप लोगों की रिश्तेदारी तक में यह असर है तो फिर आप लोगों का क्या कहना है। बस मालूम हो गया। ईश्वर के लिए ज़रा दूर ही रहिए। कहीं हवा न लग जाए। इस भँड़ैती में सभी शरीक थे। सिर्फ़ दो ही आदमी इससे अलग रहे। एक ससुर जी और दूसरा मैं। वह झेंप के मारे और बन्दा शराफ़त के मारे। क्योंकि मुझे इस क़िस्म की हँसी-दिल्लगी पसन्द नहीं और उस वक़्त तबियत भी ज़रा ख़राब थी।

एक घड़ी रात बाक़ी थी तभी ससुर जी मकान जाने के लिए तैयार हो गए और मुझे भी अपने साथ चलने को कहा। कहने लगे—झटपट तैयार हो जाओ और चलो। मुझे आज ही बच्ची को बिदा करना है।

मेरी बाछें खिल गईं और बड़ी उतावली से मैंने पूछा—सचमुच ?

ससुर जी—हाँ, हाँ, तुम्हारे पिता का तार आया है। बच्ची की वहाँ बड़ी सख़्त ज़रूरत है।

बात अपने मतलब की थी, इसलिए बड़े ज़ोरों से सर गिरगिट की तरह हिलाता हुआ मैं बोल उठा—जी हाँ! होनी ही चाहिए।

ससुर जी—मैं भी दो ही चार दिन में मुबारकबादी देने ख़ुद आने वाला हूँ।

मैंने बिना कुछ समझे-बूझे कह दिया—ज़रूर! ज़रूर !

ससुर जी—मगर तुम्हारे पिता भी अजब मसख़रे हैं। उनके लड़का पैदा हुआ है तो सीधे-सादे इस ख़ुशख़बरी को यों लिखते कि मेरे लड़का हुआ है, बहू को फ़ौरन भेज दीजिए। मगर वह तो तार में भी मसख़रापन कर बैठे। हज़रत लिखते हैं कि इत्तिफ़ाक़ से मेरी बुढ़ौती में इस वक़्त एकाएक एक लड़का पैदा हो गया। वाह वाह! यह इत्तिफ़ाक़ और एकाएक की एक ही रही।

लाहौल बिलाक़ूवत ! कॉन्सीशियन कम्बख़्त को मेरी श्रीमती जी को बुलाने के लिए कोई और बहाना नहीं सूझा था जो उसने यह बे-सरोपैर की बात गढ़ी ? भला पिता जी के कानों तक यह ख़बर पहुँचेगी तब क्या होगा ? उस पर मैंने भी कैसी ग़लती की कि ससुर जी से कह दिया कि हाँ-हाँ, आप मुबारकबादी देने के लिए ज़रूर आइएगा। मैं क्या जानता था कि उस बेवक़ूफ़ ने तार में यह ऊटपटाँग बात लिखी होगी।

दो ही घण्टे मुझे ससुराल में रहना पड़ा। मगर इतनी ही देर में सास, महराजिन, नौकरानी और मुहल्ले की बाहरी औरतों ने अपने बेहूदे मसख़रापन से मेरी माँ की जैसी मिट्टी पलीद की कि मेरा ही दिल जानता है। "ओ हो-हो! समधिन का क्या कहना! बुढ़ापे में फिर जवान हो गईं। क्यों नहीं, मिर्चा जितना ही सूखता है, उतना ही कड़ुआ होता है।" यह सब सुन-सुन के मैं मन ही मन कॉन्सीशियन को हज़ारों गालियाँ दे रहा था। मगर जब मेरे साथ मेरी श्रीमती जी सचमुच बिदा कर दी गईं, तब अपने मित्र की बुद्धि की थाह पाई और दिल खोल कर उसकी तारीफ़ की। क्योंकि और किसी बहाने में इतना जल्द असर कब मुमकिन था ? इससे मेरे ससुराल वालों ने भी जाना कि ज़च्चेख़ाने में समधिन साहबा की देख-रेख के लिए बच्ची का फ़ौरन वहाँ पहुँचना बहुत ज़रूरी है। इसीलिए मैं वहाँ रोका भी नहीं गया और मज़े में मेरा काम भी बन गया। और सब से बड़ी बात यह हुई कि इस ख़ुशख़बरी की ख़ुशियाली में वहाँ किसी ने मेरी बीती बातों पर किसी प्रकार की आलोचना तक नहीं की। और बातें तो अलग रहीं, ससुर जी ने मेरी बारात की दुर्गत पर भी कुछ ज़बान नहीं हिलाई। बल्कि स्टेशन पर हम लोगों को ख़ुद पहुँचाने आए और चलते वक़्त मुझे रास्ते में पढ़ने के लिए एक मासिक पत्र दिया, जिसमें उनका "विवाहोच्छेद" के समर्थन में एक महत्वपूर्ण लेख था, और वह भी ख़ुश होकर कहा कि—"बेटा, ख़ूब जी लगा कर वकालत करना। क्योंकि तुम्हारी जायदाद में एक और भी हक़दार पैदा हो गया।"

ख़ैर, यह सब बातें तो उन्होंने अक़्लमन्दी और भलमनसाहत की कीं। मगर आख़िर एक बौड़मपन कर ही गए। वह क्या ? यही कि मुझे बिठाया 'सेकण्ड क्लास' में और मेरी श्रीमती जी को अलग ज़नानी गाड़ी 'इण्टर' में। बस, ऐसी जगहों पर तो हिन्दुस्तानी जीचड़पन बुरी तरह खलता है। आप ही बताइए, हमारी वह अर्धाङ्गिनी ठहरीं। दोनों का रुतबा बराबर। बल्कि उनका मुझसे भी ऊँचा। क्योंकि वह मुलायम और ख़ूबसूरत अङ्ग है, जिसे Fair-sex कहते हैं। फिर यह ना-इन्साफ़ी कैसी ? उस पर मैं मुद्दतों से उनके दर्शनों का प्यासा था। ससुराल में दो घण्टे रहा, मगर उनकी झलक तक नसीब नहीं हुई थी। सोचे हुए था कि गाड़ी में इसकी कसर निकाल लूँगा। मगर ससुर जी की इस हिन्दुस्तानियत ने मेरा सारा प्रोग्राम ही उलट दिया। आख़िर टिकट बदला कर श्रीमती जी को अपनी गाड़ी में लाने के लिए मुझे दूसरे ही स्टेशन पर उतर जाना पड़ा।

उस वक़्त 'इण्टर' की ज़नानी गाड़ी में अकेली वही कोने में दुबकी हुई थीं। मगर कपड़ों का पहनाव बेहद गँवाराना था। उस पर तीन हाथ का घूँघट! घर से डोली में आई थीं और चद्दर की आड़ करके गाड़ी में बिठाली गई थीं। इसलिए उनका यह भद्दा ठाठ-बाट मैं पहले देख ही नहीं सका था। वरना मैं ससुर जी के सामने ही इस पोशाक पर एतराज़ कर बैठता, मानता थोड़े ही।

मैंने ज़नानी गाड़ी के पास आकर उनसे कहा—अख़्ख़ाह! आप तो आज ख़ूब लिल्ली घोड़ी बनी हुई हैं। देखिए हम आप दोनों अब बुड्ढे हो गए। और अब भी इतना लम्बा-चौड़ा घूँघट ? अजी इस नहूसत को हटाइए। बरसों क्या, जनम भर का प्यासा हूँ। ज़रा चाँद सा मुखड़ा दिखाइए, ताकि कुछ कहने के पहले आपको फ़र्शी सलाम तो कर लूँ।

वह कुछ न बोलीं। बल्कि झिझक कर और सिमट गईं।

मैं बेताब होकर फिर कहने लगा—अरे! ईश्वर के लिए ज़रा ज़बान ही हिलाइए, कुछ तो ढाढ़स हो। ख़त में तो आप ख़ूब-ख़ूब बातें लिखती हैं और इस वक़्त ऐसी गोबरगनेश बन गईं गोया बोलना जानतीं ही नहीं। अच्छा आइए, इस डिब्बे से उतर चलिए और चल कर मेरे साथ बैठिए।

एक आदमी मुझे ज़नानी गाड़ी की खिड़की पर डटा हुआ देख कर गाड़ी से धम से प्लेटफ़ॉर्म पर कूद पड़ा। और जैसे ही मैं दरवाज़ा खोल कर अपनी श्रीमती जी को उतारने के लिए अन्दर जा रहा था, वैसे ही उस कम्बख़्त ने मेरा हाथ पकड़ कर बाहर खींच लिया और आँखें लाल कर मुझसे बोला—बस! ख़बरदार! बहुत हो चुका। अब जो ज़्यादे हाथ-पैर बढ़ाओगे तो चेहरा बिगाड़ दूँगा।

मैं चकरा कर उसका मुँह देखने लगा—"अबे तुझे यहाँ किसने बुलाया ? आख़िर तू है कौन बला ?"

वह—यह शरीफ़ों का क़ायदा नहीं है कि दूसरों की बहू-बेटी की इज़्ज़त में बट्टा लगाता फिरे।

मैं—अररररर ! अपनी जोरू दूसरों की बहू-बेटी नहीं तब क्या अपनी बहू-बेटी होती है ? उल्लू कहीं का, चला है हमीं को उल्लू बनाने।

वह—ज़रा ज़बान सँभाल के बात करो।

मैं—अबे क्या नशे में है ? हम अपनी जोरू से बातें करते हैं, तेरे बाप का क्या बिगड़ता है ? क्या ससुर जी ने तुझे चौकीदार बना के साथ कर दिया है ?

वह—वाह वे जोरू वाले! कभी तेरे बाप ने भी जोरू देखी थी ? हम अपने माल के चौकीदार न होंगे तब क्या तू होगा ?

गाड़ी ने सीटी दी। हम दोनों लड़ते हुए पास के तीसरे दर्जे में घुसे। बात बढ़ चली। गाली-गलौज के बाद हाथा-पाई की नौबत आई। चलिए जूतियाँ चलने लगीं। ख़ूब चाँद गर्म हुई। मेरी खोपड़ी में जो गर्माहट पहुँची तो ख़्यालात ने अजब रङ्ग पकड़े। मैं सोचने लगा कि बारात में मेरी वजह से ससुर जी की भद हुई थी। कहीं उसी की कसर निकालने के लिए तो उन्होंने दूसरे की बीबी नहीं साथ कर दी है। नाराज़ तो मुझसे पहिले ही से थे। इसीलिए मैं ससुराल नहीं जाता था। इस नाराज़गी पर मेरे ही कारण उनकी दुर्गत बनी। फिर भी वह मुझसे कुछ न बोले। इसीलिए तो, क्योंकि वह मज़ाक़ का बदला मज़ाक़ से देना चाहते थे। तभी वह भीगी बिल्ली बने हुए थे। मगर भाड़ में गई उनकी यह दिल्लगी। यहाँ खोपड़ी पिलपिली हो गई, और जान अलग मुसीबत में पड़ी। फिर ख़्याल आया कि शायद उन्होंने मेरी श्रीमती जी की दूसरी शादी न कर दी हो। 'विवाहोच्छेद' के पक्षपाती हैं ही। यह उनके लेख ही से मालूम होता है। उसमें 'नेतागीरी' प्राप्त करने के लिए इसका गणेशायनमः अपने ही यहाँ किया हो। कौन ठीक ? कुछ लालची गँवारों ने लड़कियों की शादी का रोज़गार बना ही रक्खा है। और रुपया ले-लेकर कई जगह लड़कियों के पाँव चुपके से पुज आते हैं, जैसा अक्सर रख़्सती के मुक़द्दमों में पता चलता है। मुमकिन है, ससुर जी ने भी अपने 'विवाहोच्छेद प्रस्ताव' की बुनियाद डालने के लिए इसी तरकीब

का सहारा लिया हो। और अपने दामादों को आपस में कट मरने के लिए यों छोड़ कर आप अलग हो गए। वरना श्रीमती जी को इतने पर्दे में लाकर गाड़ी में चढ़ाने की क्या ज़रूरत थी? मुझे अपना लेख पढ़ने को क्यों दिया? चलते वक्त यह क्यों कहा कि—"तुम्हारी जायदाद का एक और हक़दार पैदा हो गया?" और यह भी साला मेरी श्रीमती जी को "माल" ही कह रहा है। और अपना। बस-बस, यही बात है। तभी श्रीमती जी मुझसे हमेशा भड़कती आईं। और मैं उनकी मुहब्बत में सदा उल्लू बनता रहा। हँसना-बोलना या मिलना कैसा, कभी अपने क़रीब तक मुझे फटकने का मौक़ा भी नहीं दिया। मिलें कैसे? दूसरे की बीवी होकर मुझसे परहेज़ किया ही चाहें। उफ़! ओ! इसका भेद आज खुला। यह सोचते ही मैं आग-बबूला हो गया। बात ही ऐसी थी। ज्यों-ज्यों खोपड़ी भिन्नाती थी, त्यों-त्यों मेरा गुस्सा ससुर जी पर बराबर चढ़ता ही जाता था।

स्टेशन पर गाड़ी रुकते ही मेरी जायदाद का नया हक़दार यानी श्रीमती जी का दूसरा मर्द लखनऊ रेलवे-पुलिस को तार देने की धमकी देता हुआ स्टेशन को लपका। मगर मैंने उससे पहले दौड़ कर दन से ससुर जी को यह तार दे दिया—

"Your daughter has two husbands, wire which is the real one to station master Lucknow. Life in danger."

यानी—"आपकी लड़की के दो मर्द पैदा हो गए। लखनऊ स्टेशन-मास्टर को फ़ौरन तार दीजिए कि कौन असली है। जान ख़तरे में है।"

इसके सिवाय श्रीमती जी की बचत का उपाय ही क्या था? क्योंकि मुझे लखनऊ में गाड़ी बदलनी थी और वह साला वहीं उतरने वाला था। मज़े से पुलिस की मदद से उन्हें अपने साथ ले जाता और मैं मुँह देखता ही रह जाता। बचा चाल तो अच्छी चले थे, मगर मैं उनका भी चचा था। कैसी किश्त लगाई है कि हज़रत अब बिना मात खाए बचते नहीं हैं। ससुर जी को ख़्वामख़्वाह मेरे हक़ में तार देना पड़ेगा। क्योंकि मेरी शादी डङ्का बजा कर हुई थी। और इस पाजी की गुपचुप हुई होगी। यहाँ तक कि मुझे भी ख़बर नहीं। ऐसे वक्त इस कम्बख़्त का पक्ष लेने की कभी उनकी हिम्मत नहीं पड़ सकती। अगर हयादार होंगे तो। जिस वक्त स्टेशन-मास्टर पुलिस वालों को मेरे तार का जवाब दिखाएँगे तभी इस बदमाश की अक़्ल ठिकाने होगी। और इसे उलटे लेने के देने पड़ जाएँगे।

मैं अब दूनी हिम्मत से उससे लड़ता हुआ स्टेशन से निकला। और किसी तरह फिर हम दोनों एक ही गाड़ी में बैठे। ज़नानी गाड़ी के पास न मैं ख़ुद गया और न उसी को जाने दिया। हम कोई कुली-कबाड़ी या दिहाती तो थे नहीं कि उस बेहूदे की तरह मार-पीट में थकना न जानते हों? इसलिए शरीफ़ों का जितना हाथ चल सकता है, उतना ही चला पाता था। ख़ैर, यह इतमीनान तो है कि इसकी कमी मेरी ज़बान से ख़ूब पूरी होती थी। अङ्गरेज़ी, फ़ारसी, हिन्दी, उर्दू और संस्कृत, सभी में मैं गालियाँ देता था। और शायद इन्हीं रङ्ग-बिरङ्गी गालियों को सुनने के लिए ही हम दोनों को किसी ने छुड़ाया भी नहीं। रास्ते भर यह मार-पीट और गाली-गलौज जारी ही रही। मुसाफ़िरों को इसमें कुछ ऐसा मज़ा आया कि उन लोगों ने हम दोनों में किसी को भी लखनऊ तक उतरने नहीं दिया। यही मैं चाहता भी था। और इसीलिए खोपड़ी भिन्नाती थी बला से, मगर मैं अपनी गाली-गलौज का ताव ठण्डा नहीं पड़ने देता था। यहाँ तक कि लखनऊ जब एक स्टेशन रह गया और "एञ्जिन" बिगड़ गया, जिसके मारे गाड़ी पूरे डेढ़ घण्टे तक रुकी रही, तो भी मजाल है कि मेरी ज़बान एक मिनट के लिए भी रुकी हो। उस वक्त तो मैं और भी जोश के साथ गालियाँ देता था, ताकि उस पाजी का ध्यान मार-पीट में लगा रहे और यों उसे उतरने का मौक़ा न मिले।

आख़िर मेरी गाड़ी लखनऊ डेढ़ घण्टे 'लेट' पहुँची। प्लेटफ़ॉर्म पर मेरे चारों तरफ़ एक ख़ासी भीड़ लगी हुई थी और बीच में मैं अपनी बीवी के हक़दार की कमर पकड़े हुए छटपटा रहा था। वह हर तरह से मुझसे अपने को छुड़ाना चाहता था, मगर मैं भी उसे किचकिचा कर ऐसा जकड़े हुए था कि एक क़दम भी उसे ज़नानी गाड़ी की तरफ़ नहीं बढ़ने देता था। जब रेल के कर्मचारियों को मालूम हुआ कि एक ही मुर्ग़ी के लिए यह दोनों मुर्ग़े लड़ रहे हैं, तो उन लोगों ने कहा कि यह बात है तो दर्बे से मुर्ग़ी को भी निकालना चाहिए। देखें वह किसकी तरफ़ लपकती है। मैंने चिल्ला कर कहा—"बहुत ठीक। तीन गाड़ियों के बाद जो ज़नाना इण्टर है, उसी में मेरी श्रीमती जी अकेली बैठी हुई हैं। उतार लाइए और उन्हीं से पूछिए कौन उनका असली मर्द है। मगर इसकी ज़िम्मेदारी आपको लेनी होगी कि यह साला उनको अपने साथ ले जाने न पावे। और स्टेशन-मास्टर को भी बुला लाइए।"

मगर अररररर! ज़नाने इण्टर से एक के बदले दो औरतों को उतरते देख मेरे हाथ से उस पाजी की कमर छूट गई। हाय! हाय! अब जाना कि वह घूँघट वाली सचमुच उसी की औरत है और मेरी श्रीमती जी तो निहायत फ़ैन्सी साड़ी पहने हुए उसके पीछे ठुमकती हुई आ रही हैं। मगर यह उस वक्त कहाँ थीं, जब मैं उस घूँघट वाली को अपनी बीवी समझ कर उतरने के लिए कह रहा था। इसका जवाब उसका मर्द उससे बातें करके ख़ुद ही बताने लगा—"देखी-देखी आप लोगों ने इसकी? मेरी बीबी भी कहती है कि जैसे ही वह औरत (मेरी श्रीमती जी को बता कर) गुसलख़ाने के भीतर गई, वैसे ही तो यह कम्बख़्त मौक़ा देख कर इससे (अपनी जोरू की तरफ़ इशारा करके) हाथा-पाई करने पहुँचा था। ऐसी चालाकी? वह तो ख़ैरियत हो गई कि मैं फट पड़ा। पकड़े गए तो लगे कहने मेरी बीबी है, मेरी बीबी। पाजी कहीं का! ज़रा आजकल के बदमाशों की हिम्मत तो देखिए। बाप रे बाप! अब ज़नानी गाड़ी में औरतों को छोड़ने लायक़ नहीं है।"

लाहौल बिलाक़ूवत! तब तो सचमुच बड़ी ग़लती हो गई। हात तेरे 'पर्दा सिस्टम' की! जिन औरतों को घूँघट निकाल कर सफ़र करना हो उनको चाहिए कि रेल के बाबुओं की तरह लेबिलदार टोपियाँ भी पहना करें, जिन पर उनके मर्दों के नाम मोटे-मोटे हर्फ़ों में लिखे हों। वरना मेरी तरह न जाने कितने भलेमानसों की खोपड़ी की ख़ैर नहीं है। श्रीमती जी को क्या कहूँ। वक्त पर छिप गईं और बोलीं भी नहीं। महज़ Bad training (बुरी शिक्षा)। ख़ैर, यह बातें तो गईं भाड़ में, यहाँ मेरी जान अब यह सोच कर और सपले में पड़ गई कि हाय! जोशलाइट में मैं ससुर जी को कैसा बेहूदा तार दे बैठा। इतने में एक तरफ़ कोई ज़ोर से बोल उठा—"अरख़्वाह आप यहाँ? आपको तो उन्नाव स्टेशन पर देखा था!"

दूसरा हाँफता हुआ कहने लगा—जी हाँ, अभी-अभी मोटर से आ रहा हूँ। तीस-बत्तीस ही मील तो है।

यह तो ससुर जी की आवाज़ थी। घूम कर देखा तो हाय! ग़ज़ब! सचमुच वही भीड़ चीरते हुए मेरी तरफ़ आ रहे थे। बस हवास गुम हो गए, मुँह दिखाने की हिम्मत न पड़ी। श्रीमती जी को वहीं छोड़ मैं सर पर पाँव रख कर भागा। पीछे मुड़ कर एक बार भी नहीं देखा। दूसरे 'प्लेटफ़ॉर्म' पर न जाने कहाँ की गाड़ी उसी वक्त छूटी थी। मैं झट से उसी में कूद कर घुस गया। लीजिए, श्रीमती जी फिर हाथ से निकल गईं। आह!

क़िस्मत को देखिए कि कहाँ टूटी जा कमन्द।
दो-चार हाथ जबकि लबे बाम रह गया॥

हाँ-हाँ, सिर्फ़ दो ही चार हाथ। यही तो अफ़सोस है।

(क्रमशः)

* * *

क्या मधुमक्खियों को समय का ज्ञान होता है?

हाँ, मधुमक्खियों को समय का ज्ञान होता है, इसका पता जर्मनी के डॉ० कार्लफ़िश ने लगाया है। वे एक तश्तरी में नियत समय पर थोड़ा मधु रख देते थे। उसे खाने के लिए जो मधुमक्खी आती थी, उसे पकड़ कर उसके शरीर पर एक निशान लगा देते थे! इसी प्रकार कई दिन करने के बाद उन्होंने देखा कि नियत समय पर निशान लगाई हुई मक्खियाँ स्वयं भोजन के लिए उपस्थित होने लगीं। समय से पहले घण्टों मधु रक्खे रहने पर भी निशान लगी हुई एक भी मधुमक्खी नहीं आती थी। नियत समय के बाद भी उनका दर्शन दुश्वार था। इस परीक्षा से यह पता लगता है कि मधुमक्खियों को समय का ज्ञान होता है।

पृथ्वी के सभी हिस्सों में किसी वस्तु का क्या एक ही वज़न होता है?

वज़न या तौल क्या है? यह वह शक्ति है जिसे हमें पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध किसी वस्तु को हटाने में लगानी पड़ती है। हलके पदार्थ को पृथ्वी से उठाने में कम शक्ति लगती है, किन्तु भारी वस्तु में अधिक शक्ति की आवश्यकता होती है। पृथ्वी के सभी हिस्सों में गुरुत्वाकर्षण एक नहीं है। पहाड़ या किसी ऊँचे स्थान में समुद्र-सतह से गुरुत्वाकर्षण कम होता है। इसलिए ऊँचे स्थानों में वस्तु तौल में हलकी होती है।

समुद्र की सब से अधिक गहराई कितनी है?

प्रशान्त महासागर सब से अधिक गहरा है। इसमें एक स्थान ५,१५५ फ़ैदम गहरा है। एक 'फ़ैदम' छः फ़ीट या दो गज़ का होता है। इसमें यदि एवेरेस्ट पहाड़ डाल दिया जाय तो वह डूब तो जायगा ही और उसकी सब से ऊँची चोटी के ऊपर प्रायः एक हज़ार फ़ीट पानी लहराने लगेगा।

दूध खट्टा क्यों हो जाता है?

एक प्रकार के सूक्ष्म कीड़े दूध को खट्टा बनाया करते हैं। ये कीड़े दूध के शक्कर को एक अम्ल पदार्थ में परिणत कर देते हैं। जिसे लैक्टिक ऐसिड कहते हैं। यह बड़ा खट्टा होता है।

* * *

हास्यकला का चमत्कार !

हास्योपन्यासों का लक्कड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

छप रहा है !

की

छप रहा है !!

हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !

लतखोरी लाल

छः खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा का छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है, कहीं एक से एक रहस्यमय गुप्त लीलाओं का इतना सच्चा, स्वाभाविक और रोचक भण्डाफोड़ है कि सैकड़ों बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं भी ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामों को एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं, तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २)

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका वर्णन इसमें बहुत ही रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा। मूल्य ॥)

Registered No. A—2085

सर्वश्रेष्ठ राजनैतिक एवं सामाजिक (Socio-Political) पत्रिका

हिन्दी-संस्करण :
वार्षिक चन्दा ... ६॥) रु०
छः माही चन्दा ... ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य ॥=)

उर्दू-संस्करण :
वार्षिक चन्दा ... ६॥) रु०
छः माही चन्दा ... ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य ॥=)

के ग्राहक बनिए

हिन्दी-संस्करण के सम्पादक :—श्री० रामरखसिंह सहगल, सम्पादक 'भविष्य'
उर्दू-संस्करण के सम्पादक :—मुन्शी कन्हैयालाल, एम० ए०, एल्-एल्० बी०

नवीन विशेषताएँ

(१) नवम्बर से 'चाँद' में सामाजिक सुधार सम्बन्धी लेखों के अतिरिक्त गम्भीर राजनीति का भी समावेश हो जाने से 'चाँद' में चार चाँद लग गए हैं।
(२) ख़ास मैकेनिकल कागज़ का प्रबन्ध हो जाने से लगभग प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया जाता है। इस प्रकार सैकड़ों चित्र आपको 'चाँद' में मिलेंगे।
(३) तिरङ्गा अथवा रङ्गीन चित्र एक के बजाय दो कर दिए गए हैं।
(४) चुटीले सामयिक कार्टूनों का भी विशेष प्रबन्ध किया गया है।
(५) इतना सब होते हुए भी—केवल प्रचार की दृष्टि से फ़ी कॉपी का मूल्य बारह आने से घटा कर दस आने, इसलिए कर दिया गया है, ताकि जो लोग एक मुश्त चन्दा देने में असमर्थ हों, वे हमारे एजेएटों अथवा मेसर्स ए० एच० व्हीलर कम्पनी के विभिन्न बुक-स्टॉलों से प्रत्येक मास एक कॉपी ख़रीद कर लाभ उठा सकें।

कुछ चुनी हुई सम्मतियाँ

आज—इस पत्र ने निर्भयता और योग्यता के साथ समाज-सेवा किया है। 'चाँद' ने बहुत घाटा उठाया है। हमें आशा है, स्वतन्त्र विचार के पक्षपाती हिन्दू सज्जन यथाशक्ति उसकी सहायता करेंगे।

मारवाड़ी-अग्रवाल—पत्रिका में यह पढ़ कर हमें अत्यन्त वेदना हुई कि इस विद्वान युगल जोड़ी को अब तक लगभग ८,०००) का घाटा सहना पड़ा है। भारत में अब भी ऐसे-ऐसे देश-भक्त और समाज-सेवी धनी-मानी व्यक्ति हैं, जो चाहें तो इस देशोपकारी पत्रिका के सञ्चालकों का बोझ सहज ही में उतार सकते हैं। हम उनका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए मारवाड़ी अग्रवाल के प्रत्येक पाठक से अनुरोध करते हैं कि वे 'चाँद' के ग्राहक स्वयं बनें तथा अपने इष्ट-मित्रों को बनाकर इसे आर्थिक कष्ट से मुक्त करें......।

आर्यमित्र—'चाँद' स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी, हिन्दी का सुप्रसिद्ध मासिक पत्र है। चित्र और लेख सब भावपूर्ण रहते हैं। वे समाज के भीषण अत्याचार का दुर्दृश्य हृदय-पट पर अङ्कित कर देते हैं।

माधुरी—ऐसे सुसम्पादित और सुसञ्चालित पत्र को भी घाटा उठाना पड़ रहा है, यह बात हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए लज्जाजनक है। स्त्री-शिक्षा के पक्षपाती हिन्दी-प्रेमियों से हमारा अनुरोध है कि वे अपनी माँ, बेटी-बहू और बहिनों के लिए 'चाँद' अवश्य ख़रीदें।

मतवाला—सरस्वती, मनोरमा और 'चाँद' के विशेषाङ्क इस समय हमारे सामने हैं। प्रयाग के इन तीनों मासिक पत्रों के विशेषाङ्क बड़े सुन्दर हुए हैं, सच पूछिए तो तीनों में पहिला नम्बर 'चाँद' का है। नाम भी प्यार के क़ाबिल, रूप भी वैसा ही; गुण भी उतना ही।

वर्तमान—प्रयाग के प्रियदर्शक सहयोगी 'चाँद' का गौरव और विमल छटा उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

अर्जुन—सहयोगी 'चाँद' दिनोंदिन उन्नति कर रहा है। सहयोगी के रङ्ग-रूप ने "सरस्वती" और "माधुरी" के दिल में हलचल पैदा कर दी है; हमें हर्ष इस बात का है कि सहयोगी सुधार का पक्षपाती है और उन्नतिशील विचार को रखता है!

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

सम्पादक :—

श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ... ६) रु०

छः माही चन्दा ... ५) रु०

तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०

एक प्रति का मूल्य ... ≡)

Annas Three Per Copy

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—

'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; २९ जनवरी, १९३१ | संख्या ६, पूर्ण संख्या १८

शोलापुर-काण्ड में फाँसी पाने वाले चार अभागे नवयुवक

सारे देश के विरोध करने पर भी जिन्हें यरवदा जेल में लटका दिया गया
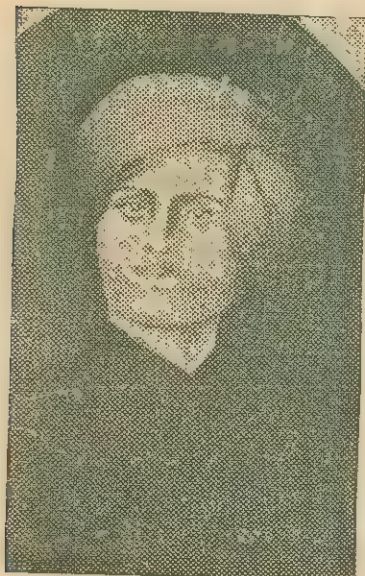
नवयुवक-सङ्घ (Youth League) के नेता—श्री० जगन्नाथ शिन्धे (आयु २३ वर्ष)

इस गुलामी में हमें तो न ख़ुशी आई नज़र,
ख़ुश रहो अहले-वतन हम तो सफ़र करते हैं।

ये चार अभागे युवक शोलापुर मार्शल लॉ के दिनों में पुलिस कर्मचारियों की हत्या करने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे। इनका मुक़दमा साधारण अदालतों में नहीं, वरन् फ़ौजी अदालत में चलाया गया था, जहाँ इनको फाँसी की सज़ा दी गई। हाई-कोर्ट में अपील करने पर दो में से एक जज ने इनमें से तीन को निर्दोषी ठहराया। मामला तीसरे जज के पास निरीक्षणार्थ भेजा गया था, पर उन्होंने फाँसी की सज़ा बहाल रक्खी।

बम्बई के गवर्नर तथा वायसराय के पास भारतवर्ष की सभी जातियों, सभी दलों की ओर से इन अभागों को प्राणदान देने की याचना की गई; पर फल वही हुआ, जिसकी आशा थी ! १२ जनवरी को यरवदा-मन्दिर में ये चारों अभागे नवयुवक लटका ही दिए गए !

फाँसी का समाचार देश के कोने-कोने में बिजली की भाँति फैल गया। अपमानित जनता ने उन्हें "शोलापुर के शहीदों" के नाम से पुकारा। जुलूस निकले, हड़तालें हुईं। पुलिस ने भी अपनी पाशविक शक्ति का पूर्ण परिचय दिया। इस कशमकश में कहा नहीं जाता कौन जीता, कौन हारा? परन्तु इसके फल-स्वरूप चारों अमर अवश्य हो गए।

अपने देशवासियों के लिए इनका अन्तिम सन्देश यह था—"हम अज्ञात व्यक्ति थे, अन्धकार में छिपे हुए थे, किन्तु इस अनीतिपूर्ण प्राणदण्ड से हमें अमर-पद प्राप्त होगा। हमारे देश-भाइयों से कहना कि हम प्रसन्नता और निर्भयतापूर्वक मृत्यु को गले लगावेंगे। हम निर्दोष हैं, हमें इस बात का शोक नहीं है, कि हमें मरना पड़ रहा है। इस मृत्यु को हम बीस वर्ष तक जेल के सींकचों के अन्दर अपराधी-जीवन व्यतीत करने से श्रेयस्कर समझते हैं। यह परमात्मा की इच्छा है, कि हम काल के गाल में जायँ। और यदि हमारी मौतें सरकार के प्रति राष्ट्र के निश्चय को कुछ भी दृढ़ बनाएँगी, जिससे कि हमारे सदृश अनीतिपूर्ण मामलों का होना असम्भव हो जाय, तो हमारी मृत्यु व्यर्थ नहीं होगी।"

मज़दूर-दल के नवयुवक नेता—श्री० क़ुर्बान हुसेन (आयु २२ वर्ष)

मारवाड़ी नेता—श्री० किशनलाल शारदा (आयु २८ वर्ष)

लिङ्गयात-नेता—श्री० मालप्पा धानशेटी (आयु २८ वर्ष)

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—२९ जनवरी, १९३१ | संख्या ६, पूर्ण संख्या १८

कुन्दनपूर (लाहौर) में गश्ती पुलिस-कॉन्सटेबिल की हत्या

बिहार के १०,००० लोगों ने सशस्त्र पुलिस पर हमला किया !

मजिस्ट्रेट, दो दारोग़ा और ३२ सिपाही घायल :: जनता पर गोलियों की वर्षा

श्री० सुभाषचन्द्र बोस पर लाठी प्रहार :: वे फिर पकड़ लिए गए !!

श्री० हरिकृष्ण को फाँसी :: बम्बई में फिर लाठी चली

(२९ वीं जनवरी के प्रातःकाल तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—कुन्दनपुर (लाहौर) ग्राम में, जबकि राम-भरोस नामक एक पुलिस-कान्स्टेबिल अपनी वर्दी पहने हुए गश्त लगा रहा था, किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा मार डाला गया। हत्याकारी का अभी तक पता नहीं लग सका है।

—२६ जनवरी को अजमेर, कटनी, झरिया, शाहपुर, वर्धा, मालकपुर इत्यादि स्थानों में बड़ी धूम-धाम से स्वतन्त्रता-दिवस मनाया गया। सब जगह राष्ट्रीय झण्डाभिवादन हुआ। शाम को राष्ट्रीय झण्डों से सुसज्जित जुलूस निकाला गया और सभा की गई। सभा में लाहौर कॉङ्ग्रेस का "पूर्ण स्वाधीनता" वाला प्रस्ताव पढ़ा गया।

—बम्बई की २८वीं जनवरी की ख़बर है कि श्री० एस० के० पटेल तथा प्रोफ़ेसर जी० आर० घरपुरे १२४ वीं धारा के अनुसार आज सवेरे गिरफ़्तार किए गए। श्री० पटेल ११वीं जनवरी को मद्य मद्यपानी बहिष्कार के सम्बन्ध में एक व्याख्यान देने के अभियोग में, तथा श्री० घरपुरे १ली जनवरी के अपने भाषण के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। दोनों २९वीं जनवरी तक हिरासत में रक्खे जायँगे।

—२८ जनवरी को नागपुर के बङ्गाल नागपूर-रेलवे में काम करने वाले मज़दूरों ने श्रीयुत गिरी अध्यक्षता में एक सभा की, जिसमें उन्होंने अब्दुल्लाभाई द्वारा असेम्बली में रक्खे हुए मज़दूरों के वेतन घटाने के प्रस्ताव का घोर विरोध किया और भारतीय सरकार को चेतावनी दी; कि वे इसे स्वीकार न करें ! इसी सभा में उन्होंने भारतीय सरकार से मेरठ-षड्यन्त्र के अभियुक्तों को रिहा करने के लिए अनुरोध किया और मौलाना मोहम्मद अली की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया।

—२८ तारीख़ को मद्रास में शिव स्वामी ऐय्यर की अध्यक्षता में सरवेन्ट्स ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी का अधिवेशन हुआ। इसमें व्याख्यान देते हुए श्री० सी० पी० रमास्वामी ऐय्यर ने, जो कि गोलमेज़ परिषद के सदस्य थे, कहा कि कॉङ्ग्रेस को चाहिए कि वह गोलमेज़ परिषद को सफल बनाने की चेष्टा करे। गोलमेज़ परिषद ने बहुत कुछ दिखाया है; उसे चाहिए कि वह उसके शेष कार्य को पूर्ण करे और औपनिवेशि स्वराज्य प्राप्त करने के लिए आन्दोलन उठावे। उन्होंने कहा, कि मेरे मत में भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए कॉङ्ग्रेस के नेताओं को चाहिए वे सब एक होकर औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए लड़ें। इस समय एकता बहुत ज़रूरी है।

श्री० सुभाषचन्द्र बोस घायल और गिरफ़्तार

कलकत्ते का २६वीं जनवरी का समाचार है कि बङ्गाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष तथा कलकत्ता कॉर्पोरेसन के मेयर श्री० सुभाषचन्द्र बोस, स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर जुलूस के साथ जाते समय गिरफ़्तार कर लिए गए। कलकत्ते के कलेक्टर ने स्वतन्त्रता-दिवस के सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही में भाग न लेने के लिए आप पर नोटिस जारी किया था किन्तु उस आज्ञा की अवहेलना कर आप जुलूस में शामिल हुए थे। पुलिस के घुड़सवार-दल ने जुलूस पर लाठियों का प्रहार किया। श्रीयुत बोस को तथा कुछ अन्य नेताओं को भी लाठी की चोट आई। श्रीयुत बोस को शिर में चोट आई है। यदि कुछ स्वयंसेवकों ने उनके ऊपर किए गए लाठी के प्रहार को अपने ऊपर न ले लिया होता तो, उन्हें गहरी चोट आती। कहा जाता है कि ५० से अधिक मनुष्य घायल हुए हैं। क़रीब ५० महिलाएँ तथा कुछ पुरुष स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। महिलाएँ पीछे छोड़ दी गईं।

कलकत्ता कॉरपोरेशन के मेयर—श्री० सुभाषचन्द्र बोस

—मसुली पट्टम के दो व्यक्तियों को जो कि स्वतन्त्रता-दिवस मनाने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे २८ जनवरी को ६ मास का कठिन कारावास का दण्ड सुना दिया गया।

—बिहार-सरकार की एक सूचना से पता चलता है कि उत्तर मुङ्गेर में बेगूसराय नामक स्थान में २६वीं जनवरी को एक भीषण दङ्गा हो गया। कहा जाता है, कि स्वतन्त्रता-दिवस के जुलूस से कुछ नेताओं को गिरफ़्तार कर पुलिस लिए जा रही, इसी समय क़रीब दस हज़ार लोगों ने पुलिस पर आक्रमण किया। सब-डिविज़नल अफ़सर, दो सब-इन्स्पेक्टर, तथा ६ कॉन्स्टेबिलों को सिर में गहरी चोटें आईं, २६ अन्य पुलिस अफ़सरों को भी चोटें आईं। पुलिस ने फ़ायरें शुरू कीं, जिसके फल-स्वरूप ५ मनुष्य मरे तथा एक को ख़तरनाक चोट आई है। ७ अन्य मनुष्यों को हल्की चोटें आई हैं। वे अस्पताल में हैं। इसके अतिरिक्त भी कुछ लोगों को साधारण चोटें आई हैं।

—कराची का समाचार है कि गत सोमवार की रात को कॉङ्ग्रेस की कार्य-कारिणी समिति के सदस्य श्री० जयरामदास दौलतराम छोड़ दिए गए। फ़्री प्रेस के प्रतिनिधि से उन्होंने कहा है कि प्रधान मन्त्री के भाषण के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करने से वे अभी असमर्थ हैं। किन्तु यदि भारत को आर्थिक और राजनैतिक स्वतन्त्रता न दी गई तो युद्ध जारी रहेगा, जब तक कि उद्देश्य सिद्ध न जाय।

—बम्बई का समाचार है वहाँ पिकेटिङ्ग जारी है। मेमन मुहल्ले में पिकेटिङ्ग के कारण फिर सनसनी फैल रही है। वहाँ क़रीब ६ पिकेटिङ्ग के विरोधियों ने, पिकेटिङ्ग करने वाले ८ स्वयंसेवकों को पीटा, जिसके फल-स्वरूप एक को सख़्त चोट आई है औरों को हल्की चोट आई है। किन्तु तो भी पिकेटिङ्ग जारी रखी गई। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर मनोरमा शिन्दे को गिरफ़्तार किया। इस विषय में सनसनी फैली हुई है।

—बम्बई का एक समाचार है कि, एक यहूदी व्यापारी ने पुलिस इन्स्पेक्टर के पास यह शिकायत किया कि प्रिन्सेज़ स्ट्रीट पर कुछ स्वयंसेवक, उसे अपनी मोटर लॉरी पर विदेशी वस्त्र की गाँठों को नहीं रखने देते हैं। इस पर इन्स्पेक्टर १० पुलिस के साथ घटनास्थल पर पहुँचे और लॉरी पर विदेशी वस्त्र लाद कर ले जाने में व्यापारी को उन्होंने सहायता पहुँचाई। स्वयंसेवकों ने माल लादने में बाधा पहुँचाई, और अन्त में वे लॉरी के सामने लेट गए। पुलिस ने स्वयंसेवकों को ऊपर उठा लिया। किन्तु फिर भी अन्य स्वयंसेवक लॉरी के सामने जा लेटे। इसी समय घटनास्थल पर भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ पर लाठी का हल्का प्रहार किया गया। स्वयंसेवकों के कुछ चोटें आईं। वे गिरफ़्तार नहीं किए गए।

"शोलापुर-दिवस" की वेदी पर

श्रीयुत रामभागवत को, जिन्हें कि बम्बई के "शोलापुर-दिवस" के रोज़ पुलिस की ११ गोलियाँ लगी थीं, २१ जनवरी को स्वर्गवास हो गया !

—कानपूर ज़िले के अम्बापूर ग्राम के नेता श्रीयुत बाबूलाल को चार महीने की सख़्त सज़ा दी गई है। आपके १७ और साथियों को १ मास से ३ मास तक की सज़ा दी गई है।

—तारीख़ २१ जनवरी को कानपूर में श्रीयुत ज्ञानसिंह, हृदयनारायन तथा होरीलाल फूलबाग़ झण्डा-सत्याग्रह के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—प्रसिद्ध नेपाली युवक खड्गबहादुरसिंह को दिल्ली में ५ मास की कड़ी सज़ा तथा २००) जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है। जुर्माना न देने पर आपको डेढ़ मास की कड़ी सज़ा और भुगतनी पड़ेगी।

—लखनऊ के पण्डित जैदयाल की धर्मपत्नी श्रीमती कान्ति अवस्थी को २० जनवरी को ६ माह की सादी सज़ा तथा २००) रुपए का जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है। जुर्माना न देने पर आपको १ मास की सज़ा और भुगतनी पड़ेगी। आप "बी" दर्जे में रक्खी गई हैं।

—कलकत्ते में २० जनवरी को बलवीरसिंह और सरदारसिंह को २०) रुपए का जुर्माना और जुर्माना न देने पर एक सप्ताह की सादी सज़ा का हुक्म सुनाया गया। ये महिला सत्याग्रहियों की गिरफ़्तारी के समय में राष्ट्रीय गान गाने तथा रास्ता रोकने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे।

—दिल्ली के ११ कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक एक मोटर वाले की दूकान पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है कि यह दूकानदार एक शराब की दूकान का भी मालिक है।

—१६ जनवरी को बम्बई के छात्र-सङ्घ के दफ़्तर की पुलिस ने तलाशी ली और छात्र-सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत यूसुफ़ को गिरफ़्तार किया।

—सीतापूर से ख़बर आई है कि १६ जनवरी को श्रीयुत अम्बिकाप्रसाद, श्रीयुत भगवानदीन, मल्लार, माधोसिंह तथा हेमसिंह को एक वर्ष की सादी सज़ा दी गई है।

श्रीयुत रामनाथ तथा श्रीयुत मूलचन्द को ६ महीने की सादी सज़ा दी गई है।

श्रीमती निरञ्जनी देवी नमक बनाने के अपराध में गिरफ़्तार की गई हैं।

—इलाहाबाद ज़िले के फूलपुर थाने के अन्तर्गत विरोली ग्राम में पण्डित केशवदेव मालवीय गिरफ़्तार किए गए। आप हाल ही में जेल से छूट कर आए थे।

—श्रीयुत पोचला, नागपुर सत्याग्रही सेना के सहायक सेनापति तथा श्रीयुत अभिमन्यु तथा ३ और स्वयंसेवक २० जनवरी को गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है, कि इन्होंने पुलिस के कुछ अधिकारियों को मारा है।

—आगरे से ख़बर आई है, कि २० जनवरी को कलकत्ते की कुमारी इन्दिरादास को चार महीने की सादी सज़ा दी गई। आप "ए" दर्जे में रक्खी गई हैं।

आगरे की फ़तेहाबाद तहसील में लगानबन्दी के सम्बन्ध में १६ तारीख़ को ८ सत्याग्रही, १७ को १०, तारीख़ १८ को ५ और १९ को भी ५ सत्याग्रही गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मर्दुमशुमारी का बहिष्कार करने के सम्बन्ध में अहमदाबाद की गुजरात नाई-सभा के मन्त्री श्रीयुत शिवराम शर्मा २२ जनवरी को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—२१ जनवरी को सागर के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत प्रभाशङ्कर शास्त्री गिरफ़्तार किए गए

—रायबरेली से ख़बर आई है कि लगानबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में रायबरेली ज़िले में १५ दिन के अन्दर ५३ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

—बड़ा बाज़ार में धरना देने के सम्बन्ध में २१ जनवरी को कलकत्ते के सात स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—नागपुर से ख़बर आई है, कि २१ जनवरी को श्रीयुत पन्धारी पाँडे प्रेज़िडेण्ट सी० पी० युद्ध-समिति, श्रीयुत गुप्त मन्त्री तथा श्रीयुत सखाराम वामन जोशी सम्पादक 'कॉङ्ग्रेस बुलेटीन' गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। श्रीयुत सखाराम वामन जोशी को ६ मास की कड़ी सज़ा तथा २००) रुपए जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है।

—अलीगढ़ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत डॉक्टर जगदम्बाप्रसाद को १ साल की कड़ी सज़ा दी गई है। इसके अतिरिक्त श्रीयुत गोविन्दप्रसाद, मोहम्मद-अली, पन्नालाल तथा बचान को ६ मास की कड़ी सज़ा दी गई है। ५ और स्वयंसेवकों को ६ मास की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है

—२२ जनवरी को बम्बई की पुलिस ने बाज़ार गेट स्थित कॉङ्ग्रेस के दफ़्तर की तलाशी ली और १३ मनुष्यों को गिरफ़्तार किया।

—बम्बई युद्ध-समिति के मन्त्री श्रीयुत आबिद अली तथा स्वयंसेवकों के कप्तान श्रीयुत नारायन ऐय्यर को २२ जनवरी को ६ मास की कड़ी सज़ा तथा १५०) रुपए जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है। जुर्माना न देने पर इनको ६ हफ़्ते की सज़ा और भुगतनी पड़ेगी।

—बम्बई की डेलिसली रोड की शराब की दूकानों पर धरना देने के अपराध में २२ जनवरी को ५ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बङ्गाल युवक-सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत शैलेन्द्रनाथ राय २३ जनवरी को कलकत्ते में गिरफ़्तार किए गए।

—बम्बई के प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस नेता श्री० जमनादास द्वारकादास २२ जनवरी को राजविद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। २३ जनवरी को आपका मुक़दमा हुआ, जिसमें आपको ३ माह की कड़ी सज़ा दी गई।

—इलाहाबाद के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्रीयुत वेङ्कटेशनारायण तिवारी को लगानबन्दी तथा कई अन्य अपराधों के सम्बन्ध में २३ जनवरी को एक साल की कड़ी सज़ा दी गई। सज़ा के साथ ही साथ आपको १००) जुर्माना देना पड़ेगा। जुर्माना न देने पर आपको दो महीने की कड़ी सज़ा और भुगतनी पड़ेगी।

—कलकत्ते से ख़बर आई है, कि २३ जनवरी को श्रीयुत कृष्णदास के मकान की तलाशी ली गई। आप महात्मा गाँधी के सेक्रेटरी रह चुके हैं। तलाशी के बाद रामसुन्दर सिंह नामक एक व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए।

—अहमदाबाद से ख़बर आई है, कि २३ जनवरी को कैरा ज़िले के बोरसद ताल्लुक़ा ने "स्त्री-दिवस" मनाया। इस सम्बन्ध में बोरसद में कई गाँवों की महिलाएँ इकट्ठी हुईं। परन्तु पुलिस ने उन्हें सभा से हटा दिया और कैरा की डिक्टेटर श्रीमती भक्तिलक्ष्मी गोपालदास देसाई को गिरफ़्तार कर लिया।

—दिल्ली ज़िले के १०वें डिक्टेटर लाला रामकुमार को, २२ जनवरी को ६ महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

—कराची के प्रसिद्ध कार्यकर्ता आचार्य पविन्नम् को ग़ैर-क़ानूनी जुलूस निकालने के अपराध में २३ जनवरी को १ साल की सादी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है।

एक और कार्यकर्ता जगजीवन, जोकि कराची छात्र-सङ्घ के डिक्टेटर थे, २३ जनवरी को गिरफ़्तार किए गए।

—पेशावर से ख़बर आई है कि चारसद्दा के ३१ स्वयंसेवकों को, जो कि धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, २४ जनवरी को ३-३ मास की कड़ी सज़ा दी गई।

—मैनपुरी के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्रीयुत वंशीधर, ठाकुर लोचनसिंह, कुँवर गयासिंह तथा सेठ गोविन्दराम २० जनवरी को गिरफ़्तार किए गए।

—सहारनपुर से ख़बर आई है कि चौधरी मङ्गतसिंह के भतीजे श्रीयुत पृथ्वीसिंह लगानबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। चौधरी साहब स्वतः इसी अपराध के लिए जेल भुगत रहे हैं।

—कानपूर से ख़बर आई है कि नवाबगञ्ज कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत गोकरन तथा रामऔतार लगानबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए। एक और कार्यकर्ता उमाशङ्कर वाजपेयी भी २१ जनवरी को गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मर्दुमशुमारी बहिष्कार सम्बन्धी नोटिस छापने के सम्बन्ध में कलकत्ते के बैजनाथ शुक्ल को चार महीने की सख़्त क़ैद का हुक्म सुनाया गया है।

—२२ जनवरी को दिल्ली में श्रीयुत मुन्शीसिंह का मुक़दमा हुआ। आपको दण्ड-विधान की १७ वीं धारा के अनुसार छः महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

—सीमा-प्रान्त कॉङ्ग्रेस कमिटी के उप-सभापति सरदार अमरसिंह दण्ड-विधान की १७वीं धारा के अनुसार २२ जनवरी को पेशावर में गिरफ़्तार किए गए।

—उज्जैन के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत सरदारसिंह, उनकी धर्मपत्नी, श्रीमती सजनकुमारी तथा भतीजी श्रीमती बाई कलकत्ते में विदेशी वस्त्रों की दूकान पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—मुरादाबाद से ख़बर आई है कि संयुक्त प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत श्रीराम को, जो कि काशी-विद्यापीठ के आचार्य भी थे, २० जनवरी को छः महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

—२० जनवरी को अमृतसर में श्रीयुत किशोरचन्द को जलियाँवाले बाग़ में एक राष्ट्रीय गान गाने के अपराध में दो मास की कड़ी सज़ा दी गई।

—२० जनवरी को मद्रास के ५ स्वयंसेवक तथा २ महिला स्वयंसेविकाओं को धरना देने के अपराध में ६ मास की सज़ा का हुक्म सुनाया गया। महिलाओं को सादी सज़ा दी गई है और शेष स्वयंसेवकों को सख़्त क़ैद भुगतनी पड़ेगी।

—इलाहाबाद ज़िले की सोराम तहसील के डिक्टेटर श्रीयुत शिवशङ्कर भार्गव, २० जनवरी को शिवगढ़ में गिरफ़्तार किए गए।

—दिनाजपूर (बङ्गाल) के पलीटोला कॉङ्ग्रेस-कमिटी के मन्त्री श्रीयुत विनयभूषण सरकार, २० जनवरी को गिरफ़्तार किए गए।

—अमृतसर में २० जनवरी को वहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत स्वामी गनेश्वरानन्द तथा श्रीयुत फ़िरोज़दीन मन्सूर दण्ड-विधान की १७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए।

—कालीकट से ख़बर आई है कि वहाँ रोज़ धड़ाधड़ गिरफ़्तारियाँ होने पर भी विदेशी कपड़ों की दूकानों पर बड़े उत्साह से धरना दिया जा रहा है। स्वयंसेवक गिरफ़्तारी होने के समय तक दूकानों के सामने अनशन ... २३ जनवरी को भी ५ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—२१ जनवरी को कलकत्ते में श्रीयुत जनानन्द नियोगी तथा अन्य दो स्वयंसेवक राजविद्रोहात्मक पर्चे बाँटने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—दिल्ली की 'वीनस' बीमा कम्पनी के डाइरेक्टर श्रीयुत नारीशाम २३ जनवरी को कॉङ्ग्रेस को सहायता देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—२२ जनवरी को अमृतसर की एक प्रमुख महिला श्रीमती जमना देवी को, जो कि लगानबन्दी के सम्बन्ध में एक कविता पढ़ने के अपराध में गिरफ़्तार की गई थीं, दो महीने की सज़ा दी गई। एक और कॉङ्ग्रेस के उत्साहपूर्ण कार्यकर्ता श्रीयुत गुजरमल को राजविद्रोह के अपराध में १ महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

—अजमेर में मर्दुमशुमारी-बहिष्कार के सम्बन्ध में २२ जनवरी को ५ स्वयंसेवक तथा दो महिलाएँ गिरफ़्तार की गईं। इन दोनों महिलाओं के पति भी जेल ही में हैं। इनमें से एक के दो बच्चे भी हैं।

—२२ जनवरी को झाँसी के प्रमुख कार्यकर्ता पण्डित भागवतनारायन भार्गव, श्रीयुत कुञ्जबिहारी लाल शिवानी, श्रीयुत रुस्तमजी तथा पण्डित कृष्णचन्द्र शर्मा का मुक़दमा हुआ। सबको ६ मास की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ। इसके अतिरिक्त प्रथम दो सज्जनों को ३००) रुपए जुर्माना का और शेष दो सज्जनों को ५०) रुपए जुर्माने का दण्ड दिया गया।

—नागपूर से ख़बर आई है कि २६ जनवरी को उमरेड तहसील के २१ स्वयंसेवक २५ ताड़ी के पेड़ काटने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—२४ जनवरी को विरमगाँव (अहमदाबाद) में नमक-दिवस मनाया गया। सत्याग्रही नमक बेचने के लिए एक दूकान खोली गई। क़रीब दस बजे दिन को काठियावाड़ से कुछ स्वयंसेवक नमक लेकर आए। पुलिस ने उनसे ज़बर्दस्ती नमक छुड़ा लिया और ७ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

—बम्बई में स्वतन्त्रता-दिवस बड़े ज़ोर-शोर से मनाया गया, एक ही समय, ८ वार्डों में झण्डा फहराया गया। अनेक स्थानों पर पुलिस वाले मौजूद नहीं थे, किन्तु परेल में क़रीब ६०-६५ पुलिसवाले, जिनमें कुछ हथियारबन्द भी थे, उपस्थित थे। उन लोगों ने झण्डा-समारोह में भाग लेने वालों को वहाँ से हटा दिया। परेल के 'डिक्टेटर' १२ अन्य स्वयंसेवकों के साथ गिरफ़्तार हो जाने पर, लोगों ने दूसरी जगह झण्डा फहराया।

—पटने में स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर अनेक गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने स्वयं राष्ट्रीय झण्डा फहराया।

कहा जाता है कि पुलिस ने स्वतन्त्रता-दिवस की सूचना देने वाले एक ढोलिए और एक इक्के वाले को गिरफ़्तार किया है। पुलिस ने कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस की तलाशी ली, वह वहाँ और उसने वहाँ की चल-सम्पत्ति उठा ले गई और कई लोगों को गिरफ़्तार किया।

—मुङ्गेर का २६ वीं जनवरी का समाचार है, कि स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर वहाँ २८ गिरफ़्तारियाँ हुईं। स्वतन्त्रता-दिवस की सूचना देने वाला स्वयंसेवक और इक्कावाला भी गिरफ़्तार किया गया। किन्तु इक्का वाला पीछे छोड़ दिया गया।

वहाँ तीन जुलूस निकाले गए। तिलक मैदान में स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पढ़ा गया।

—गुन्टूर का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर तीन गिरफ़्तारियाँ हुईं।

* * *

वायसराय की घोषणा

दिल्ली का २५वीं जनवरी का समाचार है, कि लॉर्ड इर्विन ने महात्मा गाँधी की रिहाई के सम्बन्ध में आदेश देते हुए, निम्न-लिखित घोषणा की है :—

"प्रान्तीय सरकारों से सलाह लेकर, भारत-सरकार ने, अखिल भारतीय कॉङ्ग्रेस कमिटी की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को छोड़ देने का विचार किया है, ताकि वे, प्रधान-मन्त्री की घोषणा पर अपने विचार प्रकट कर सकें। इसी निर्णय के अनुसार, तथा इस विचार से, कि उन्हें इस सम्बन्ध में सभाएँ करने में किसी प्रकार का रोक-टोक न हो, वह क़ानून, जिसके द्वारा कॉङ्ग्रेस कमिटियों को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया गया था, सभी प्रान्तीय सरकारों द्वारा हटा लिया जायगा। महात्मा गाँधी को तथा उन लोगों को, जो कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं, अथवा १ली जनवरी १९३० से जिन लोगों ने इस हैसियत से कार्य किया है, वे छोड़ दिए जायँगे। इन लोगों को रिहाई के सम्बन्ध में किसी प्रकार की शर्त का बन्धन नहीं रक्खा जायगा, क्योंकि सरकार का यह विश्वास है, कि पूर्ण शान्ति-स्थापन के लिए उन्हें बिना किसी शर्त के रिहा कर दिया जाय।"

कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के नाम नीचे दिए जाते हैं, जो भिन्न-भिन्न जेलों से बिना किसी शर्त के छोड़ दिए गए हैं :—

पं॰ जवाहरलाल नेहरू, सेठ जमनालाल बजाज, श्री॰ शिवप्रसाद गुप्त, महात्मा गाँधी, मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद, श्री॰ जयरामदास दौलतराम, सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर, श्री॰ सी॰ राजगोपालाचारी, सरदार वल्लभभाई पटेल, श्री॰ जे॰ एम॰ सेन गुप्ता, डॉ॰ पट्टाभी सीतारामय्या, डॉ॰ सत्यपाल, श्री॰ श्रीप्रकाश, डॉ॰ सय्यद महमूद, पं॰ मोतीलाल नेहरू।

वायसराय की घोषणा के पहले अन्तिम तीन को छोड़ कर, सभी जेलों में थे।

नीचे उन सदस्यों का नाम दिया जाता है जो, भिन्न-भिन्न समयों पर कॉङ्ग्रेस की कार्य-कारिणी समिति के सदस्य निर्वाचित किए गए हैं :—

डॉ॰ एम॰ ए॰ अनसारी, श्री॰ मथुरादास त्रिकम जी, मुफ़्ती किफ़ायतुल्ला, सय्यद अब्दुल्ला ब्रेल्वी, पं॰ गोविन्द मालवीय, श्री॰ महादेव देसाई, श्री॰ कृष्णराव चौधरी, अफ़ज़लहक़, श्री॰ सुन्दरलाल, श्री॰ कमला नेहरू, डॉ॰ एन॰ एस॰ हार्डिकर, सरदार मङ्गलसिंह, लाला दुनीचन्द, श्री॰ मोहनलाल सक्सेना (ये लोग वायसराय की घोषणा के समय जेलों में थे), चौधरी ख़लीकुज़्ज़माँ, बाबू राजेन्द्रप्रसाद श्री॰ वेलजी लाखमसी नप्पू, श्री॰ हंसा मेहता श्री॰ अब्बास तय्यब जी श्री॰ दीपनारायणसिंह, श्री॰ के॰ वी॰ आर॰ स्वामी, श्री॰ टी॰ ए॰ के॰ शेरवानी, श्री॰ मुहम्मद अब्दुल्लाहिल बक़ी। श्री॰ इस्माइल ग़ज़नवी, श्री॰ के॰ एम॰ मुन्शी, बाबू भगवानदास, बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, सरदार विट्ठलभाई पटेल, श्री॰ हरकरननाथ मिश्र, पं॰ मदनमोहन मालवीय, श्री॰ एस॰ बी॰ कौजलगी, डॉ॰ बी॰ सी॰ राय, श्री॰ सरतचन्द्र बोस, श्री॰ के॰ एफ़॰ नॉरिमन, श्री॰ आसफ़अली, श्री॰ अब्दुल क़ादिर कसूरी, श्री॰ अब्दुलबारी, श्रीमती पेरीन कैप्टेन, श्री॰ गङ्गाधर राव देश पाण्डे, श्री॰ रफ़ी अहमद किदवई और श्री॰ नागेश्वर राव।

महात्मा गाँधी के विचार

बम्बई के लिए रवाने होते समय, छिन्दवाड़ा स्टेशन पर महात्मा जी ने, एसोशिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि से कहा—"मेरे विचार उदार हैं, मुझे किसी से शत्रुता नहीं है। मैं प्रत्येक विचार-बिन्दु से परिस्थिति का पूर्णतया अध्ययन करना चाहता हूँ। सर तेजबहादुर सप्रू तथा गोलमेज़ परिषद् के अन्य सदस्यों के लौटने पर मैं प्रधान-मन्त्री की घोषणा के सम्बन्ध में उन लोगों के साथ विचार करूँगा। लन्दन से कुछ सदस्यों के तार भेजने पर मैं अपना यह वक्तव्य देता हूँ।" यह पूछे जाने पर कि प्रधान-मन्त्री के भाषण के सम्बन्ध में उन्हें क्या कहना है, महात्मा जी ने कहा कि, उन्होंने प्रधान-मन्त्री के भाषण को विचारपूर्वक पढ़ा है, किन्तु विशेषकर श्री॰ सप्रू के कहने से वे अभी उस पर अपना विचार प्रकट करने के लिए तैयार नहीं हैं।

इसके बाद, यह पूछे जाने पर, कि निकट-भविष्य में वे अब क्या करना चाहते हैं, उन्होंने कहा कि "इस विषय में कोई योजना मेरे पास नहीं है। मैं अपने कुछ मित्रों से मिलने बम्बई जा रहा हूँ। मैं नहीं कह सकता कि बम्बई से कहाँ जाऊँगा।

रायबरेली के किसानों ने लगान देना बन्द कर दिया

रायबरेली ज़िले के अनचहार, कन्दरवान, कैथवाल, कटरा बहादुरगञ्ज, मनाई, बिकाई, गञ्जरा, गञ्जोली, कुटियाचन्न, रोहिनिया, धुरहेरा, उमरेना और ऊमरान गाँवों ने लगान देना बन्द कर दिया है, इसलिए सपरिषद् गवर्नर ने यह सूचना युक्तप्रान्तीय गज़ट में प्रकाशित की है :—

"चूँकि रायबरेली ज़िले के सालोन परगने के अन्तर्गत (उक्त) गाँवों ने लगान देने से इन्कार कर दिया है, इसलिए सन्, १८८६ के 'अवध-रेण्ट एक्ट' की १२-ए धारा के अनुसार दिए गए अधिकारों के मुताबिक़, सपरिषद् गवर्नर यह सूचित करते हैं कि ऐसे लगान भूमि-कर की तरह वसूल किए जा सकते हैं।"

धरना देने वालों पर लाठी-प्रहार

मद्रास का २१वीं जनवरी का समाचार है, कि ५ स्वयंसेवकों ने गोडाउन स्ट्रीट पर धरना जारी कर दिया है। कहा जाता है, कि घटनास्थल पर एक भीड़ इकट्ठी हो गई, और पुलिस वालों ने स्वयंसेवकों से, वहाँ से हट जाने के लिए कहा। स्वयंसेवकों के वहाँ से हटने से इन्कार करने पर, पुलिस ने लाठी-प्रहार किया, जिसके फलस्वरूप दो स्वयंसेवक घायल हुए हैं।

—युक्तप्रान्तीय गज़ट के अनुसार, सपरिषद् गवर्नर ने, कानपुर म्युनिसिपैलिटी और छावनी के मनुष्यों का, १९२४ के हथियार-क़ानून के अनुसार दिए गए अधिकार

के मुताबिक़, तलवार, बर्छा, बल्लम, कुल्हाड़ी, छुरा और कटारी—इन हथियारों के रखने का अधिकार रद कर दिया है।

१०१ मनुष्य पुलिस की गोलियों से मरे :: ४२७ घायल !

असेम्बली में श्री० सन्तसिंह के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, जेम्स क्रेरा ने कहा है, कि दिसम्बर १९३० तक लगानबन्दी के सम्बन्ध में ५४,०४६ मनुष्य गिरफ़्तार किए गए हैं। दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह तक २३,५०३ मनुष्य इस सम्बन्ध में क़ैद काट रहे थे। इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रान्तों में गिरफ़्तारियों की संख्या क्रम से इस प्रकार है :—

प्रान्त		अब तक पकड़े हुए		दिसम्बर के अन्त तक पकड़े हुए
मद्रास	...	३,९९८	...	२,११०
बम्बई	...	६,७३२	...	३,८०३
बङ्गाल	...	११,४६३	...	२,९७३
यू० पी०	...	७,६०६	...	४,५५५
पञ्जाब	...	३,९६१	...	१,२४६
बिहार-उड़ीसा		१०,८६६	...	४,६८०
सी० पी०	...	३,८६१	...	२,१२६
आसाम	...	१,०८६	...	२६१
सीमा-प्रान्त	...	७६१	...	३३७
कूर्ग	...	६	...	४
दिल्ली	...	१,०७३	...	६५३

अप्रैल, मई, जून और जुलाई, इन चार महीनों में १०१ मनुष्य पुलिस की गोलियों से मरे तथा ४२७ घायल हुए।

प्रधान-मन्त्री के पास देशी राज्यों की प्रजा का तार

बम्बई का समाचार है कि देशी राज्य-प्रजा-परिषद, राजपूताना प्रजा कॉन्फ्रेन्स, पञ्जाब स्टेट कॉन्फ्रेन्स, हैदराबाद स्टेट कॉन्फ्रेन्स, मध्यभारत स्टेट कॉन्फ्रेन्स तथा भरतपुर स्टेट कॉन्फ्रेन्स के प्रतिनिधियों ने, प्रधान-मन्त्री दीवानबहादुर एम० रामचन्द्र राव और श्रीनिवास शास्त्री के नाम एक तार भेजा है। तार में कहा गया है कि, "जामनगर, पटियाला, अलवर, बीकानेर आदि ४८ रियासतों की प्रजा ने हमें यह निवेदन करने का अधिकार दिया है कि किसी भी अखिल भारतीय फ़ेडरेशन विधान में यदि देशी राज्यों की प्रजा के हक़ों की उपेक्षा की जायगी तो उन्हें वह विधान पूर्णतया अस्वीकार होगा। जिस तरह अन्य फ़ेडरेल प्रान्तों में चुनाव और शासन का विधान रहे उसी तरह देशी राज्यों में भी रहना चाहिए, नहीं तो फ़ेडरेशन एक धोखा मात्र होगा देशी राज्यों की प्रजा अब अपने अधिकारों के लिए जाग्रत हो गई, और उन्हें प्राप्त करने के लिए वह बराबर लड़ेगी। जनसत्तात्मक प्रणाली के अनुसार अखिल भारतीय फ़ेडरेशन की बुनियाद ऐसी होनी चाहिए कि नागरिकों के अधिकारों की घोषणा हो जाय; और इन नागरिकों में देशी राज्यों की प्रजा भी है।"

—नई दिल्ली २७ जनवरी—असेम्बली के नेशनलिस्ट पार्टी की ओर से श्री० रङ्गाचारियर ने निम्न-लिखित आशय का तार पं० जवाहरलाल के पास भेजा है :—

"मेरे दल की कार्यकारिणी समिति ने बड़े दुःख के साथ, आपके माननीय पिता जी की चिन्ताजनक अवस्था के विषय में सुना है। सबों को इस विषय में प्रगाढ़ चिन्ता है, और सभी उनके शीघ्र अच्छे हो जाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।"

"कॉङ्ग्रेस-राज्य" स्थापित करने की व्यापक आयोजना

अभियुक्तों पर हिंसात्मक-क्रान्ति के लिए षड्यन्त्र रचने का अभियोग

बम्बई में "कॉङ्ग्रेस वादियों" का ज़बर्दस्त सङ्गठन :: गाँव वालों को हथियार बाँटने का निश्चय

बम्बई २० जनवरी—आज प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सामने श्री० मूलराज कुर्सनदास, श्री० मेहरअली, श्री० के० के० मेनन तथा २१ अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं के विरुद्ध, 'क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट' की १७ (१), १७ (२) धारा के अनुसार अभियोग उपस्थित किया गया। प्रॉसिक्यूटर ने इन अभियुक्तों के विरुद्ध, आश्चर्यजनक अभियोग उपस्थित किया है।

कहा जाता है कि अभियुक्तों ने, गवर्नमेण्ट हाउस के समीप एक मकान में, एक षड्यन्त्र रचा था। बम्बई में कॉङ्ग्रेस तथा उससे सम्बन्ध रखने वाली अन्य संस्थाओं के ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिए जाने के बाद से ये अभियुक्त गुप्त-रूप से कार्य करते रहे थे। वास्तव में शहर में आन्दोलन के प्राण ये ही लोग थे। युद्ध-समिति के सदस्य इनके हाथों के पुतले थे।

सरकारी वकील ने कहा, कि अभियुक्त अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शहर के भिन्न-भिन्न भागों में, गुप्त-रूप से सभाएँ करते थे, गवर्नमेण्ट हाउस के समीप कृष्ण-भवन में भी ये मिलते थे। इन लोगों का सङ्गठन बहुत ज़बर्दस्त था। कमेटियाँ, सब-कमिटियाँ तथा ५-६ अन्य दफ़्तर इन लोगों ने क़ायम कर रक्खे थे। इन सबों के सिवा ११ अन्य विभाग भी इनके नियन्त्रण में थे। भिन्न-भिन्न विभागों के हाथ में भिन्न-भिन्न प्रकार का कार्य था। इनमें कुछ का नाम 'प्रचार-विभाग', 'सभा-सङ्गठन-विभाग', 'मज़दूर-सङ्गठन-विभाग', 'समाचार-विभाग' आदि रक्खा गया था। प्रॉसिक्यूटर ने कहा कि 'समाचार-विभाग' एक प्रकार से कॉङ्ग्रेस का ख़ुफ़िया-विभाग है।

अभियुक्तों के कार्य के विषय में सरकारी वकील ने कहा, कि इन लोगों ने यह कार्यक्रम बनाया था, कि लोगों से सरकारी हुण्डी ख़रीदने के लिए कहा जाय, और वे किसी ऐन मौक़े पर हुण्डी का रुपया सरकार से माँगें। इसके बाद फिर हुण्डी नहीं ख़रीदी जाय। इस प्रकार ये लोग सरकार को आर्थिक कठिनाइयों में डालना चाहते थे। इन लोगों की गिरफ़्तारी के समय पुलिस को जो काग़ज़-पत्र मिले थे, उनमें से एक में ग्राम्य-आयोजन के विषय में कुछ बातें थीं। इससे पता चलता है, कि इसका उद्देश्य था साधारण क्रान्ति करना। इस आयोजन में यह बताया गया है, कि प्रत्येक गाँव में दो स्वयंसेवकों का एक दल भेजा जाय और प्रत्येक दल भिन्न-भिन्न समयों पर बारह बार गाँवों में भ्रमण करे। उनके भ्रमण का उद्देश्य है सब से पहले स्वदेशी का प्रचार करना और तब गाँवों के उन लोगों को भर्ती करना, जो अपने गाँवों में ही कार्य करें। इनके सिवा अन्य भ्रमणों का उद्देश्य रक्खा गया था, गुप्त सभाओं के लिए स्थानों को चुनना, गाँव वालों को हथियार देना, तथा उन्हें उन हथियारों का प्रयोग सिखाना। इसका उद्देश्य था साधारण क्रान्ति करना, जिसमें तारों का काटना तथा पुलिस वालों को मारना भी शामिल था। सरकारी वकील ने कहा, कि इस आयोजन के सम्बन्ध का काग़ज़-पत्र श्री० के० के० मेनन के पास पाया गया था। इसी सम्बन्ध के ५०० अन्य काग़ज़-पत्र भी पुलिस के हाथ में हैं, जिन्हें पुलिस ने अभियुक्तों के मकानों तथा सभा-स्थानों में उनकी गिरफ़्तारी के समय पाया है।

इसके बाद सबूत पक्ष के गवाहों के बयान लिए गए। मामला चल रहा है।

—मद्रास का २६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ स्वतन्त्रता दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। ४ बजे सन्ध्या समय अनेक स्थानों पर सभाएँ की गईं और झण्डे फहराए गए। ट्रिप्लिकेन में श्रीमती माधवराव की अध्यक्षता में एक विशाल सभा की गई, जिसमें स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पढ़ा गया।

शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई थी। पुलिस लाठियों के साथ गश्त लगा रही थी। पचइअप्पा कॉलेज के समीप पुलिस ने लाठियाँ भी चलाईं जिससे दो व्यक्ति घायल हुए। नेताओं ने घटना स्थल पर पहुँच कर भीड़ हटा कर मामला शान्त किया।

शहर में अनेक जुलूस भी निकाले गए थे।

—नई दिल्ली का २६वीं जनवरी का समाचार है है श्री० जे० एम० सेनगुप्त दिल्ली जेल से छोड़ दिए गए। वे इलाहाबाद होते हुए कलकत्ता जाएँगे।

—ख़बर है कि श्री० आर० एस० पण्डित को इलाहाबाद के कमिश्नर ने अपनी ज़बावदेही पर छोड़ दिया है।

—ख़बर है कि पण्डित मोतीलाल नेहरू ने, अभी वायसराय की घोषणा पर अपनी सम्मति प्रकट करना अस्वीकार किया है। कहा जाता है कि महात्मा जी, तथा श्री० जवाहरलाल-नेहरू से मिल कर वे अपनी सम्मति प्रकट करेंगे।

इस समय इनकी अवस्था चिन्ताजनक है। डॉ० विधानचन्द्र राय तथा अन्य दो डॉक्टरों की देख-भाल में आप हैं। डॉ० बनर्जी का कहना है कि पण्डित जी दिन-ब-दिन कमज़ोर हुए जा रहे हैं। खाँसी और साँस लेने में तकलीफ़ की वजह से, आपको रात में नींद नहीं आती है। उनका चेहरा कुछ सूज भी गया है।

इन सब पीड़ाओं के होते हुए भी, पण्डित जी प्रसन्न-वदन मालूम पड़ते हैं। २७वीं जनवरी की बुलेटिन में डाक्टरों का कहना है कि गत रात्रि को पण्डित जी कुछ अच्छे थे। यद्यपि उनकी दशा चिन्ताजनक है, तो भी उनमें काफ़ी शक्ति है।

डॉ० जीवराज मेहता पण्डित जी को देखने के लिए आने वाले हैं। डॉ० अनसारी भी गुजरात जेल से छूट कर पण्डित जी को देखने आए हैं।

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

मराठों में षड्यन्त्र का बीज बोने का प्रयत्न किया गया !

गुप्त सभाएँ :: पुलिस अफ़सरों की हत्याओं का भयंकर आयोजन

यूनिवर्सिटी षड्यन्त्र केस के 'अभियुक्त' का सनसनीपूर्ण बयान !

चाँदपुर षड्यन्त्र का फ़ैसला :: एक को फाँसी दूसरे को कालापानी

चटगाँव में क्रान्तिकारियों का आतङ्क :: हथियार नष्ट कर दिए गए !

बम्बई का षड्यन्त्र केस :: हरिकृष्ण को फाँसी की सज़ा :: अमृतसर का षड्यन्त्र केस

यूनीवर्सिटी हॉल षड्यन्त्र केस

लाहौर में २२वीं जनवरी को पञ्जाब-गवर्नर पर गोली चलाने वाले अभियुक्त हरिकिशन का केस फिर से प्रारम्भ हुआ। प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट मि० एस० एम० महमूद की गवाही प्रारम्भ होते ही अभियुक्त के वकील मि० आसफ़अली ने उसका विरोध किया। मैजिस्ट्रेट से अदालत छोड़ देने के लिए कहा गया। मि० आसफ़-अली ने कहा कि उन्होंने बयान पढ़े थे और वे यह सबूत कर सकते हैं कि ये बिलकुल ग़लत हैं। अभियुक्त ने अपराध भले ही स्वीकार कर लिया हो, परन्तु वह स्वीकृति इस अदालत में उस समय तक पेश नहीं की जा सकती, जब तक वह अदालत-जाँच में पेश न की जा चुकी हो।

वादी की कार्यवाही से यह स्पष्ट मालूम होता है कि अपराध की स्वीकृति १ली जनवरी को दर्ज की गई है और चार्ज लगाने की कार्यवाही ३री जनवरी को हुई है। ऐसी स्थिति में वह स्वीकृति जाँच-मैजिस्ट्रेट के सम्मुख पेश क्यों नहीं की गई। और यदि वह वहाँ पेश नहीं की गई, तो वह इस अदालत की फ़ाइल में नहीं रक्खी जा सकती। वह पुलिस के पास से प्राप्त की गई है। क्या सरकारी वकील इस बात की शपथ खाने के लिए तैयार हैं, कि वह स्वीकृति मि० महमूद मैजिस्ट्रेट के पास से प्राप्त की गई है? यदि वह उनके पास से प्राप्त नहीं की गई तो मि० महमूद कर्त्तव्यच्युत हुए हैं। ख़ाँ साहब कलन्दरअली ख़ाँ ने कहा, कि बयान १६४वीं धारा के अनुसार एक योग्य मैजिस्ट्रेट के द्वारा लिए गए थे और उनके ऊपर कोई विरोध नहीं उठाया जा सकता। अदालत ने कहा कि अपराधी की स्वीकृति जायज़ है, इसके बाद गवाहियाँ प्रारम्भ हुईं।

मैजिस्ट्रेट का बयान

मि० महमूद ने बयान में कहा कि अभियुक्त ने १ली जनवरी को अपना अपराध स्वीकार किया था। अभियुक्त ने इस प्रकार का कोई बयान नहीं दिया, कि पुलिस ने उससे ज़बर्दस्ती अपराध स्वीकृत करवाया है। बयान देते समय अभियुक्त का स्वास्थ्य अच्छा था और ऐसे कोई चिन्ह नहीं दिखाई देते थे, जिससे यह मालूम हो कि उसे कष्ट देकर अपराध स्वीकृत कराया गया हो? जाँच में मैजिस्ट्रेट ने कहा कि उन्होंने उन लोगों के शरीरों की कभी जाँच नहीं की, जो उनके सामने अपराध स्वीकार कराने के लाए जाते थे। उन्होंने अभियुक्त से यह नहीं पूछा कि बयान देने के लिए उससे ज़बर्दस्ती की गई है या नहीं। अभियुक्त से यह भी नहीं पूछा गया कि उसने कोई क़ानूनी सहायता या कुटुम्बियों की सलाह ली है। उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं, कि अभियुक्त कब तक पुलिस की हवालात में रहा और न इसका ही पता है कि वह जुडीशियल हवालात से लाया गया है या पुलिस की हवालात से?

अभियुक्त का वक्तव्य

मैजिस्ट्रेट की गवाही के उपरान्त अभियुक्त की स्वीकृति का वक्तव्य पढ़ा गया। उसमें लिखा था कि उसके गाँव का साथी चमनलाल नौजवान भारत-सभा का सदस्य था। उसके विचार क्रान्तिकारी थे। अभियुक्त का उससे सम्बन्ध था और वह पत्रों में लाहौर षड्यन्त्र केस की कार्यवाही पढ़ा करता था। जिससे भगतसिंह और उसकी पार्टी के लिए उसके हृदय में स्नेह का अङ्कुर उत्पन्न हो गया। उसका भाई भगतराम कॉङ्ग्रेस आन्दोलन में गिरफ़्तार कर लिया गया, और इससे वह बहुत ग़ुस्सा हो गया था। उसकी सम्मति से अहिंसात्मक आन्दोलन को सफलता मिलना असम्भव था। चमनलाल लाहौर कॉङ्ग्रेस में आया था, और लौटते समय उसने कहा था, कि उसने अपना सम्बन्ध पञ्जाब के क्रान्तिकारी-दल के साथ स्थापित कर लिया है। इसके १५-१६ दिन बाद अभियुक्त ने शाह मुहम्मद से ६५) रुपया में एक रिवॉल्वर ख़रीदी और उसने वह चमनलाल को दिखलाई। चमनलाल ने कहा कि कोई कार्य करने के पहले क्रान्तिकारी-दल की सम्मति ले लेना उचित है। चमनलाल एक बार फिर लाहौर आया, और उसने अभियुक्त से कहा कि पञ्जाब में दमन का दौरा तेज़ हो रहा है, और इसके लिए गवर्नर उत्तरदायी है। और इसलिए पार्टी ने यह निश्चय किया कि गवर्नर पर उपाधि-वितरण उत्सव के समय आक्रमण करना चाहिए।

यूनीवर्सिटी हॉल काण्ड के कुछ दिन पहले चमनलाल और अभियुक्त रणवीरसिंह से मिलने 'मिलाप' ऑफ़िस गए थे। और वहाँ अभियुक्त की चमनलाल ने रणवीरसिंह से मुलाक़ात करवाई थी। रणवीरसिंह की सलाह से घटना के दिन तक अभियुक्त वासवन्ध राम के मकान पर रक्खा गया था। २२वीं दिसम्बर को रणवीरसिंह अभियुक्त को म्यूज़ियम के सामने ले गए और वहीं से उन्होंने उसे यूनीवर्सिटी हॉल दिखला दिया। उन्होंने यह भी कहा कि यूनीवर्सिटी हॉल के अन्दर प्रवेश करने के लिए उसे टिकिट दिया जायगा। वासवन्ध राम टिकिट लेकर उसे दे गया। २३वीं दिसम्बर को अभियुक्त एक ताँगा में यूनीवर्सिटी हॉल गया और टिकिट के सहारे आसानी से अन्दर चला गया। 'स्वीकृति-पत्र' के अन्त में गवर्नर को गोली मारने का बयान था।

डॉक्टर का वक्तव्य

डॉक्टर गौशनलाल ने अपने बयानों में कहा कि उन्होंने चननसिंह की जाँच की थी। उनके शरीर में दो गोलियाँ निकली थीं। उन्होंने इन्स्पेक्टर बधावन की जाँच की थी। इसके बाद मेयो अस्पताल के हाउस-सर्जन डॉ० मुहम्मद यूसुफ़, पुलिस के असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० आर० एफ़० नील और सब-इन्स्पेक्टर दीवानचन्द की जो यूनिवर्सिटी हॉल में उपस्थित थे, गवाहियाँ ली गईं।

२६वीं जनवरी को फिर कार्यवाही प्रारम्भ हुई। अभियुक्त का वक्तव्य उसे पढ़ कर सुनाया गया। उसने उसे स्वीकार कर लिया।

प्रश्न—क्या तुमने गवर्नर के ऊपर गोली चलाई थी?

उत्तर—हाँ।

प्र०—क्या 'पगड़ी और कुल्ला' तुम्हारे हैं? और क्या तुम उन्हें उस समय पहने हुए थे।

उ०—हाँ।

प्र०—तुमने कितनी गोलियाँ छोड़ीं?

उ०—छः

प्र०—क्या तुम घटना के बाद ही वरण्डे में गिरफ़्तार कर लिए गए थे?

उ०—हाँ।

प्र०—क्या तुम्हारे पास रिवॉल्वर पाई गई थी?

उ०—हाँ, वह मेरे हाथ में थी।

प्र०—क्या तुम १ली जनवरी को मि० महमूद के सामने पेश किए गए थे।

उ०—नहीं।

प्र०—स्वीकृति पर दो स्थानों पर जो दस्तख़त हैं क्या वे तुम्हारे हैं?

उ०—हाँ, पुलिस ने मेरे दस्तख़त दो कोरे काग़ज़ों पर इस बहाने ले लिए थे, कि उनका मिलान करना है।

प्र०—तुम और कुछ कहना चाहते हो?

उ०—मैंने अपना लिखित वक्तव्य पेश कर दिया है।

प्र०—क्या तुम अपनी रक्षा करना चाहते हो?

उ०—नहीं?

बम्बई षड्यन्त्र केस

'मरहठों को भड़काने का प्रयत्न'

बम्बई का २६ वीं जनवरी का समाचार है कि गत वर्ष ६वीं अक्टूबर को लेमिङ्गटन पुलिस-स्टेशन में मि० टेलर की हत्या के प्रयत्न में जो सात आदमी गिरफ़्तार हुए थे, उनके मामले के प्रारम्भिक भाषण में पुलिस के वकील मि० मन्कर ने कहा, कि "लेमिङ्गटन रोड का गोली-काण्ड कोई मामूली और साधारण घटना नहीं है, वरन वह घटना उस भयङ्कर षड्यन्त्र की एक चिनगारी है, जिसकी नींव बहुत गहरी पहुँच चुकी है और जिसका उद्देश्य मरहठों के हृदयों में हिंसा के भाव भर देना है। इस प्रकार उन्हें अपने दल में सम्मिलित कर षड्यन्त्रकारियों का उद्देश्य गवर्नमेण्ट के अफ़सरों, विशेषकर पुलिस के अफ़सरों को मार कर गवर्नमेण्ट को उखाड़ फेंकना है।" मि० मन्कर ने यह भी कहा कि वर्तमान षड्यन्त्र की आयोजना का आधार सन्, १९१०-११ का नासिक-षड्यन्त्र केस है और उसका भारत के उत्तरीय क्रान्तिकारी दल से घनिष्ट सम्बन्ध है। अभियुक्तों पर दण्ड-विधान की १२० वीं, ३०७ और ११०वीं धाराओं के अनुसार गवर्नमेण्ट के सभी ऑफ़िसरों और विशेषकर पुलिस के ऑफ़िसरों की हत्या का अभियोग लगाया गया है। मुक़दमे के अभियुक्त श्री० गणेश वैशम्पायन, प्रमुख लेफ़्टनेण्ट—मुख़बिर बन गया है। मुक़दमे की कार्यवाही चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट की अदालत में हो रही है।

सार्जेण्ट टेलर पर किए गए आक्रमण की घटना बयान करने के उपरान्त वकील ने कहा, कि घटना के उपरान्त इन्स्पेक्टर खाँवन ने आसपास तलाशी ली और उन्हें वहाँ दो गोलियाँ और एक कारतूसों की ख़ाली पेटी मिली। गोलियाँ चलाने के बाद दो अभियुक्त मोटर में अन्धेरी की ओर भागे थे और पुलिस को सन्तोषजनक उत्तर न देने के कारण उनमें से शङ्कर जयराम शिन्दे गिरफ़्तार कर लिया गया था। बाद में उसके मकान की तलाशी लेने पर तीन कारतूस की पेटियाँ, दो पिस्तौल और भगतसिंह और दत्त की फ़ोटो पाई गईं। श्री० शिन्दे ने जो वक्तव्य दिया था, उसके अनुसार देवीदास गिरफ़्तार किया गया था। पुलिस को मुख़बिर मोघे के घर में भी एक बर्छी और दो भाले प्राप्त हुए। बाद में वैशम्पायन, उपाध्याय और वापट गिरफ़्तार किए गए। तलाशी में अभियुक्तों के घरों से जो काग़ज़ प्राप्त हुए हैं, उनसे यह स्पष्ट मालूम होता है, कि इस आक्रमण की योजना केवल मि० टेलर तक ही परिमित नहीं थी। वह तो वृहत् षड्यन्त्र का एक अङ्ग था। इसके बाद मि० मन्कर ने उस पार्टी का 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी' के साथ सम्बन्ध साबित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने कहा, कि फ़रवरी में दो प्रस्ताव पास किए गए थे, जिनमें से एक भगतसिंह और दत्त को छुड़ाने के सम्बन्ध में था और दूसरा बङ्गाल और महाराष्ट्र का सम्बन्ध केन्द्रीय सभा के साथ स्थापित करने के सम्बन्ध में था। इस प्रस्ताव के अनुसार वैशम्पायन केन्द्रीय सभा का सदस्य चुना गया था और वह प्रचार के लिए महाराष्ट्र भेजा गया था। इसी उद्देश्य से 'स्वतन्त्रता का युद्ध' नामक एक पुस्तक छाप कर बेची गई थी और उसकी आमदनी में से दादर से दो सौ रुपया क्रान्तिकारी दल के मुखिया धन्वन्तरी के 'पोस्ट-बक्स' कृष्णदास को भेजे गए थे।

बाद में मि० मन्कर ने उनकी स्थानीय कार्यवाहियों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा, कि फ़रवरी, सन् १९३० में वैशम्पायन प्रभात-फेरी में इस उद्देश्य से सम्मिलित हुए थे, कि उसे क्रान्तिकारी बना दिया जाय। इस कार्य में वापट और मोघे उसके सहायक थे। आगे अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए पत्र निकालने की योजना की गई और उसके लिए एक साइक्लोस्टाइल प्रेस ख़रीदा गया, परन्तु ज़ब्त कर लिया गया। नवयुवकों को क्रान्ति की शिक्षा देने के लिए गीता क्लासें भी खोली गई थीं और शस्त्र-शिक्षा के लिए दरवाज़े को 'टार्गेट' (निशाने की जगह) बनाया जाता था।

अन्त में मि० मन्कर ने कहा, कि दुर्घटना की रात्रि को अभियुक्त पुलिस-कमिश्नर की हत्या के निमित्त वैशम्पायन, वापट और सारदा मलाबार-हिल गए थे, और बर्वे, देवधर और मोघे से, जो अब मुख़बिर हो गए हैं, वहाँ बाद में पहुँचने के लिए कहा गया था। परन्तु वे अपने कार्य में असफल रहे और उपाध्याय के घर लौट आए। लौटते समय उन्होंने लेमिङ्गटन रोड पर पुलिस-ऑफ़िसरों की मोटर देख कर उस पर गोलियाँ चलाईं।

यूनिवर्सिटी हॉल षड्यन्त्र केस

हरिकिशन को फाँसी

लाहौर में २६वीं जनवरी को सेशन्स जज ने 'गवर्नर गोलीकाण्ड' के मुक़दमे का फ़ैसला सुना दिया। फ़ैसला सुनाने के पहले सेशन्स जज मि० हेण्डरसन ने जूरी के सम्मुख मुक़दमे की ज्ञातव्य बातें रक्खीं और अभियुक्तों के लिखे हुए बयानों में आवश्यक अंश पढ़े। मुख्य प्रश्न यह कि चन्ननसिंह जो गोली से मारा गया था और गवर्नर और इन्स्पेक्टर बधावनसिंह पर, जो घायल हुए थे, अभियुक्त गोली चलाया या नहीं। उसके सम्बन्ध उनके पास स्पष्ट गवाही है कि अभियुक्त अभ्यागतों की गैलरी में खड़ा था और वहीं गोलियाँ चला रहा था। इसके साथ ही अभियुक्त ने यह क़बूल कर लिया है कि उसने छै गोलियाँ चलाईं। यह बात कही गई है कि अभियुक्त के साथ एक और आदमी गिरफ़्तार किया गया था और शायद गोली उसीने चलाई हो। उसके सम्बन्ध में वाल्टरलॉक कम्पनी के मैनेजर मि० लुईस ने जो गवाही दी है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जो गोलियाँ छोड़ी गई थी वे उसी रिवॉल्वर से छोड़ी जा सकती थीं जो अभियुक्त के पास प्राप्त हुई है। ऐसी कोई गवाही नहीं है जिससे यह मालूम हो कि अभियुक्त के अतिरिक्त और किसी व्यक्ति ने भी गोली चलाई होगी।

चन्ननसिंह का वक्तव्य

चन्ननसिंह ने मरते समय सूरतसिंह को जो बयान दिया है उससे मालूम होता है कि वह अभियुक्त की गोलियों से घायल हुआ है। अभियुक्त के गवाह का कहना है कि चन्ननसिंह के इस वक्तव्य का अर्थ यह भी हो सकता है कि दोनों के सम्मिलित आक्रमण से घायल हुआ है। यह बात जूरी के देखने की है कि वकील का यह वक्तव्य ठीक है या नहीं। जज ने आगे कहा कि मि० महमूद मैजिस्ट्रेट के सम्मुख अभियुक्त ने जो स्वीकृति के बयान दिए हैं उन्हें उसके साथ इन्कार कर दिया है। कहना है कि दस्तख़त उससे कोरे काग़ज़ पर लिए गए थे और पुलिस ने ही उनका मनमाना उपयोग किया है! यदि अभियुक्त का कहना सत्य है तो एक बड़ी भारी समस्या उपस्थित हो जायगी। चन्ननसिंह की मृत्यु के सम्बन्ध में डॉ० कर्नल बरूचा और डॉ० गेशन की गवाही से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी मृत्यु गोली से हुई है।

क्या पुलिस ने गोली चलाई थी

इस सम्बन्ध में कि पुलिस ने गोली चलाई थी या नहीं, जज ने कहा कि इसमें सन्देह नहीं कि पुलिस ऑफ़िसरों के पास शस्त्र थे, परन्तु ऐसी कोई गवाही नहीं मिलती जिससे यह मालूम हो कि किसी पुलिस ऑफ़िसर ने पिस्तौल खींची हो।

इसके बाद जज ने अभियोग पढ़ा। अभियुक्त पर दण्ड-विधान की ३०२री धारा के अनुसार चन्ननसिंह की हत्या का, और ३०७वीं धारा के अनुसार गवर्नर और इन्स्पेक्टर बधावन के हत्या के प्रयत्न के अलग-अलग अभियोग लगाए गए थे। अन्त में उन्होंने जूरी से कहा कि उन्हें अभियुक्त की इच्छा और उसके कार्य के स्वाभाविक परिणाम पर ध्यान देना चाहिए।

जूरी का फ़ैसला

जूरी ने सब की सम्मिलित सम्मति के अनुसार अभियुक्त को तीनों अभियोगों में अपराधी क़रार दिया। परन्तु उन्होंने अदालत से यह सिफ़ारिश की कि नवयुवक होने के कारण उस पर दया दिखाना चाहिए।

फ़ैसला

इसके उपरान्त सेशन्स जज ने फ़ैसला सुनाया। उन्होंने जूरी की प्रार्थना अस्वीकार की और अभियुक्त पहले अपराध में फांसी की सज़ा तथा अन्य दो अपराधों में से हर एक में आजन्म-काले पानी की सज़ा दी।

चाँदपुर-हत्याकाण्ड का फ़ैसला

एक को फाँसी, दूसरे को आजन्म कालापानी

चाँदपुर के इन्स्पेक्टर-हत्याकाण्ड का फ़ैसला स्पेशल ट्रिब्यूनल ने २४वीं जनवरी को सुना दिया। इस मुक़दमे में दो अभियुक्त थे। एक श्री० रामकृष्ण विश्वास और दूसरा श्री० कालीपद चक्रवर्ती। इनमें से पहले को फाँसी की सज़ा दी गई और दूसरे को आजन्म कालेपानी की। फ़ैसला सुनाने के लिए ट्रिब्यूनल के कमिश्नरों ने ठीक ४॥ बजे अदालत में प्रवेश किया। अदालत का कमरा मनुष्यों की भीड़ से खचाखच भरा था। और किसी अनिष्ट आशङ्का के भय से सभी चुप और उद्विग्न थे। परन्तु अभियुक्त बिलकुल बेपरवाह थे। उनके लिए जैसे कुछ हुआ ही न हो। उनके चेहरों पर भय का लेश न था। ट्रिब्यूनल के प्रेज़िडेण्ट मि० गार्लिक ने फ़ैसला सुनाया। अभियुक्तों का चित्त प्रसन्न था। उसके बाद जज ने सरकारी वकील के मार्फ़त रामकृष्ण से कहा, कि उसे सात दिन के अन्दर हाईकोर्ट में अपील करने का अधिकार है। रामकृष्ण खड़ा हुआ और उसने केवल हँस भर दिया। दरख़्वास्त देने पर कमिश्नरों ने कालीपद चक्रवर्ती को द्वितीय श्रेणी में रक्खा।

हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज रायबहादुर एन० के० बोस, जो ट्रिब्यूनल के कमिश्नर थे, का मत अन्य जजों से विरुद्ध था। उन्होंने एक अलग फ़ैसले में लिखा, कि अभियुक्त रामकृष्ण को फाँसी की सज़ा देने में उसकी युवावस्था का विचार करना अत्यन्तावश्यक है। साथ ही गवाही से पता चलता है, कि दोनों ही अभियुक्तों ने इन्स्पेक्टर पर गोली चलाई थी, और यह पता लगाना आसान नहीं है कि किस की गोली से इन्स्पेक्टर की मृत्यु हुई। इसी अवस्था में अभियुक्तों को अलग-अलग सज़ा देना बिलकुल अनुपयुक्त प्रतीत होता है। उन्होंने रामकृष्ण विश्वास को भी आजन्म कालेपानी की सज़ा दी।

अमृतसर षड्यन्त्र केस

अमृतसर का २१वीं जनवरी का समाचार है, कि लाहौर के तीन विद्यार्थियों—श्री० देवराज, वात्स्यायन, और केवलकृष्ण—पर शस्त्र-विधान की २० वीं धारा के अनुसार दायमगञ्ज में कुछ रिवॉल्वर प्राप्त होने के कारण जो केस चलाया जा रहा था, उसके सम्बन्ध में प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट पं० लक्ष्मीदत्त की अदालत में सरकारी गवाहों की जाँच हुई। ग़ुलाम मुहम्मद ने कहा कि अभियुक्त ने दायमगञ्ज में उसका मकान १२) माहवार के हिसाब से किराए पर लिया था। शस्त्र-विधान के अन्य केस के अभियुक्त ग़ुलाम मुहम्मद तुर्क ने उनके लिए

मकान किराए पर लिया था। अभियुक्त ने गवाह के साथ मस्जिद में निमाज़ पढ़ी थी। कुछ दिनों बाद पुलिस आई और उसने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। उनके पास तीन रिवॉल्वर और कुछ कारतूस प्राप्त हुए थे। ग़ुलाम हुसैन ने भी पहले गवाह की नाईं ही अपनी गवाही दी।

चटगाँव षड्यन्त्र केस

सब-इन्सपेक्टर का बयान

१४वीं जनवरी को स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने हाथाज़ारी के पुलिस सब-इन्सपेक्टर अब्दुलग़फ़ूर से जिरह की गई। उन्होंने विद्रोहियों का पता लगाने का तर्ज़ बताया। विद्रोही पहाड़ियों में घुस कर ग़ायब हो गए थे, वहीं पुलिस और सेना ने उन्हें घेर लिया, और वहाँ से विद्रोहियों ने खोजने वाले जत्थों पर गोलियों की वर्षा की!

गवाह ने बयान में कहा, कि समाचार मिलने पर वे २१ अप्रैल को विद्रोहियों की खोज में फ़तेहाबाद की पहाड़ियों में गए। एक पहाड़ी पर चढ़ते समय उन्हें एक मोज़ा मिला, जिस पर ख़ून के धब्बे मालूम होते थे, दो बैग भी मिले, जिनमें से एक के ऊपर कॉङ्ग्रेस का तिरङ्गा झण्डा बना था। पहाड़ी के ऊपर की घास चलने से दबी हुई जान पड़ती थी। यह पहाड़ी चटगाँव पुलिस लाइन की पहाड़ियों की क़तार में थी। पहाड़ी से नीचे आते हुए गवाह को बैज़ुद्दीन ने बतलाया, कि उसने पहाड़ी के नीचे ७० पुरुष बन्दूकों सहित देखे हैं। उस ओर देखने से उन्हें दो-तीन आदमी चलते-फिरते दिखाई दिए। फिर उन्होंने पहली ट्रेन से चटगाँव नगर पहुँच कर, पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट और डी० आई० जी० को विद्रोहियों का पता दिया।

विद्रोहियों का पीछा

अगले दिन सबेरे ही पुलिस और सेना ने कर्नल डगलस स्मिथ की अध्यक्षता में पहाड़ियों की खोज की, किन्तु कोई दिखाई नहीं दिया। उन्हें कुछ गोलियाँ बैज़ुद्दीन के दिखाए हुए स्थान पर मिलीं। तीसरे पहर सारी सेना के दो विभाग कर दिए गए, और पहाड़ियों को दो दिशाओं में खोला गया। खोजते समय गवाह वाली पार्टी ने पहाड़ियों से गोली चलने का शब्द सुना। वे एक टीले के पीछे छिप कर लेट गए। बहुत समय तक गोलियाँ चलती रहीं। हम लोगों ने उस समय बिलकुल गोली नहीं चलाई। फिर हम झरझरिया लौट आए। वहाँ उन्हें दूसरी पार्टी मिली। कुछ गाँव वालों से पहाड़ी के ऊपर जाने और वहाँ की दशा का पता लगाने के लिए कह कर गवाह ने वह स्थान छोड़ दिया।

अगले दिन सबेरे वे साथियों सहित पहाड़ी की चोटी पर गए, और उन्हें १० मनुष्य मृतक, और दो घायल पड़े हुए मिले। वहाँ कई गोलियाँ भी मिलीं। श्री० शिरीश बोस द्वारा जिरह किए जाने पर, गवाह ने कहा, कि उन्होंने असिस्टेण्ट सब-इन्सपेक्टर, एक चौकीदार और एक गुप्तचर को सन्दिग्ध विद्रोहियों की चाल पर दृष्टि रखने के लिए छोड़ दिया था।

ग्रामवासी गुप्तचरों के गवाह अहमद अली डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने, जिन्होंने श्री० लालमोहन सेन नामक अभियुक्त का बयान लिखा था, कहा कि उन्होंने श्री० लालमोहन का बयान तीन दिन में लिखा था। गवाह ने बतलाया, कि उन्होंने स्वीकृति की सत्यता का निश्चय अभियुक्त के साथ नगर में कई स्थानों पर घूम कर किया था। वह अभियुक्त के साथ 'धूम' स्टेशन भी गए, जहाँ से अभियुक्त के सहचर Fish-plates और Dogspikes रेलवे लाइन से निकाल लाए थे। और जहाँ १८ अप्रैल की रात को तार काटे गए थे। फिर गवाह ने दो सन्देहजनक व्यक्तियों की शनाख़्त परेड की। ये लोग लालमोहन के कथनानुसार गिरफ़्तार किए गए थे, और लालमोहन ने दोनों को अपने साथ रेल की पटरी हटाने में शरीक बतलाया था।

१२वीं जनवरी को चिटगाँव के सब-डिविज़नल ऑफ़िसर सुरेन्द्रनाथ ने गवाही दी। वे आक्रमण वाली रात (अप्रैल १८) को कई स्थानों पर गए थे और उन्होंने चार अभियुक्तों की स्वीकृति के बयान लिखे थे। सरकारी वकील द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा, कि वे उस रात्रि को हेडक्वार्टर्स में थे। उन्हें घटना की सूचना कलेक्टर के चपरासी के द्वारा प्राप्त हुई, और वे तुरन्त एक मोटर में बैठ कर चले गए। उन्होंने मिस्टर विल्किन्सन के बारे में एक कॉन्स्टेबिल से कुछ पूछा, और बँगले के अस्पताल के भीतर गए, परन्तु वहाँ उन्हें कलेक्टर मि० विल्किन्सन नहीं मिले।

गोली चली

दो एङ्ग्लो इण्डियन लोगों से ऐसा सुन कर, और कलेक्टर के ख़तरे में होने की सूचना पाकर, वे कोतवाली गए और मिस्टर अब्दुल हक़ लोवासी के स्थान पर पहुँचे, जहाँ से उन्हें कुछ बन्दूकें और गोलियाँ प्राप्त हुईं।

गवाह फिर कुछ समाचार पाकर अस्पताल में गए और वहाँ उन्होंने एक मोटर ड्राइवर को देखा जिसका मुँह बहुत अधिक सूजा हुआ था। इस समय सबेरे के तीन बजे थे। गवाह ने उस मनुष्य का बयान लिख लिया, और अस्पताल वाली पहाड़ी से नीचे उतरते हुए उन्होंने एक कॉन्स्टेबिल को एक डोली पर पीड़ा से कराहते हुए देखा। उसे पुलिस लाइन्स में गोली मारी गई थी।

बन्दूकें भस्म

इसी सम्बन्ध में गवाह ने कहा कि यहाँ से पुलिस इन्स्पेक्टर हेराम्ब घोष सहित पुलिस लाइन्स में गए और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट से मिले। वहाँ पर कुछ बन्दूकें अभी तक जल रही थीं। कुछ मोटरें, एक मोटर में कुछ बन्दूकें और कई छोटे-छोटे सूट केस भी दिखाई दिए। फिर वह अकेले ही वालण्टियरों के केन्द्रस्थान पर गए और वहाँ मि० विल्किन्सन से मिले, जिनके द्वारा उन्हें नुक़सान का हाल ज्ञात हुआ। कमिश्नर को सूचित करने के पश्चात वे घर लौट आए।

घायलों की सेवा

अगले दिन सबेरे वे वालण्टियरों के केन्द्रस्थान पर फिर पहुँचे और कुछ मृतक शरीरों को देखा। इनमें दो यूरोपियन थे, जिनके सम्बन्ध में गवाह ने कुछ पूछ-ताछ की।

इसके पश्चात वे अस्पताल में गए, जहाँ उन्होंने ग़ुलाम जीलानी का बयान लिखा। उसको स्वयंसेवकों के केन्द्रस्थल पर गोली मारी गई थी। उसकी छाती और पीठ के ऊपर वाले घाव गोली के वारों के समान दिखाई पड़ते थे। उन्होंने अभियुक्त फ़क़ीरचन्द्र सेन, सहाय रामदास, सुबोधचन्द्र चौधरी और अनिलबन्धु दास के बयान लिखे थे, और इन्हें लिखने से पहिले इन लोगों को साधारण चेतावनी दे दी थी, और उन्हें खुल कर वर्णन करने को कह दिया था। जिस समय गवाह स्वीकृति के बयान दे रहा था उस समय कोई उपस्थित नहीं था। गवाह ने यह भी कहा कि स्वीकृतियाँ इच्छापूर्वक दी गई थीं। गवाह ने इसके बाद वे सारे स्वीकृति पत्र पढ़े जो उसने लिखे थे। इसने हिमांशुविमल सेन का भी जो अस्पताल में घायल पड़े थे, बयान लिखा था।

१७वीं जनवरी को अहमद अली ने बयान किया कि स्वीकृतियों की जाँच करने के लिए वे सदरघाट ब्रिज, सदरघाट क्लब और मानगुप्ता के घर गए थे, क्योंकि इन स्थानों का स्वीकृति में उल्लेख था। उन्होंने सुना कि लालमोहन ने अपने बयान को वापस ले लिया है। इसके बाद मामला स्थगित कर दिया गया।

१६ वीं जनवरी को केस फिर से प्रारम्भ हुआ। लालमोहन सेन की स्वीकृति के बयानों पर सब डिपुटी-मैजिस्ट्रेट अहमदअली से फिर से जिरह हुई।

एस० डी० ओ० ने कहा कि वे २३ वीं अप्रैल को १०-११ बजे सवेरे जलालाबाद पहाड़ी पर गए थे। वहाँ उन्हें एक लड़का घायल मिला। उसने अपना नाम मतीलाल क़ानूनगो बतलाया था। लड़के ने उन्हें अपनी दुर्घटना का हाल लिखा दिया। इसके बाद गवाह ने जनरल अस्पताल में रात को १० बज कर २० मिनट पर अर्धेन्दु दस्तीदार के मृत्यु-शय्या पर बयान लिए। उस समय वह घाव की पीड़ा से कराह रहा था, परन्तु वह होश में था। गवाह ने उसके बयान का अङ्गरेज़ी अनुवाद पढ़ा। इसके बाद गवाह ने कॉन्स्टेबिल प्रसन्न बरुआ का बयान पढ़ा, जो उसने मरने के पहिले ६वीं मई की रात्रि को गवाह को दिया था। प्रसन्न बरुआ ने अपने बयानों में छै डाकुओं को पकड़ने का हाल बतलाया था। डाकुओं से उसका और उसके साथी कॉन्स्टेबिलों की ख़ूब हाथा-पाई हुई थी। इसी झगड़े में चार डाकू छूट कर भाग गए और केवल दो पकड़े जा सके। प्रसन्न बरुआ को इसीमें गोली लगी और वह ७वीं मई को मर गया।

प्रसन्न बरुआ के बयानों के बाद गवाह ने अहमद मियाँ मोटर ड्राइवर के बयान पढ़े, जो उसने जनरल अस्पताल में लिए थे। ड्राइवर ने अपने बयानों में कहा था कि एक बाबू ने उसनो टैक्सी तीन घण्टे के लिए तीन रुपए में किराए पर की थी। बाबू टैक्सी कोतवाली के पीछे एक मकान पर ले गए, वहाँ चार आदमी उस पर सवार हुए। टैक्सी उन लोगों की आज्ञा के अनुसार पहाड़तली गई और वहाँ से फ़ौजदार हाट। इस स्थान पर पेशाब करने के बहाने गाड़ी खड़ी कर दी गई और उनमें से दो व्यक्ति दोनों ओर पिस्तौलें तान कर टैक्सी छोड़ देने के लिए कहा। जब उसने उनकी आज्ञा न मानी, तब दो आदमियों ने उसे घसीट कर सड़क पर डाल दिया और रस्सी से कस दिया।

शनाख़्त परेड

इसके बाद गवाह ने मुख़बिर फ़क़ीरसेन की शनाख़्त परेड का हाल बयान किया मुख़बिर ने अपने वक्तव्य में जिन अभियुक्तों का नाम लिया था, उनकी शनाख़्त के लिए ३७ सन्देह-जनक अभियुक्त उन्हीं की उमर और ड्रेस के ६७ आदमियों में मिला दिए गए थे। फ़क़ीरचन्द्र शनाख़्त के लिए बुर्क़ा पहिना कर लाया गया था। मुख़बिर ने सुबोध चौधरी का नाम पुकारने के उपरान्त अपना बुर्क़ा फेंक दिया और चक्कर आ जाने के कारण वह गिर पड़ा और उसके बाद उसने चिल्ला कर कहा—"तुम्हारा यह डरपोक दोस्त तुम सबको फाँसी पर चढ़ाने की आयोजना कर रहा है।" इसके बाद वह एक खिड़की से टिक गया और फूट-फूट कर रोने लगा। शनाख़्त परेड के बाद जब गवाह मुख़बिर के बयान जेल में लिख रहा था, उस समय मुख़बिर ने कहा कि उसने उन्हें होश में नहीं पहचाना था। इसके बाद एक दूसरी शनाख़्त परेड हुई, जिसमें मुख़बिर ने कुछ अभियुक्तों को पहचाना था। उस दिन की कार्यवाही इसके बाद स्थगित कर दी गई।

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

२९ जनवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले—
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

१०००) रु० की ज़मानत

नए प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार २३ जनवरी को १ बजे यू० पी० गवर्नमेंट के चीफ़ सेक्रेटरी चौबे (कुँवर) जगदीशप्रसाद द्वारा हस्ताक्षरित एक नोटिस श्री० सहगल जी को मिला, जिसमें १०००) रु० की ज़मानत २ दिन के भीतर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के पास दाख़िल करने की आज्ञा उन्हें प्रेस (फ़ाइन आर्ट प्रिन्टिङ्ग कॉटेज) के 'कीपर' की हैसियत से—जिसमें 'भविष्य' मुद्रित होता है—दी गई थी। पुलिस का अफ़सर वास्तव में दो नोटिस लाया था—एक मुद्रक के नाम, दूसरा प्रकाशक के नाम—दोनों में एक-एक हज़ार की ज़मानतें माँगी गई थीं, किन्तु स्थानीय ज़िला मैजिस्ट्रेट के नाम चौबे जी की यह हिदायत थी, कि यदि मुद्रक और प्रकाशक एक ही व्यक्ति हो, तो एक ही ज़मानत—केवल प्रेस की "कीपर" की हैसियत से माँगी जावे।

इस बार इसी नोटिस के साथ पूरे २½ पृष्ठों का एक ख़रीता भी सहगल जी को मिला है जिसमें वे अंश बतलाने की कृपा की गई है, जिसके प्रकाशन को आपत्तिजनक समझ कर गवर्नमेंट को ज़मानत माँगने की ज़रूरत पड़ी। ये सारे अंश ८वीं जनवरी के 'भविष्य' (वर्ष १, खण्ड २, संख्या-१५) से लिए गए हैं; जिनका सार पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे दिया जाता है :—

१—पहिली आपत्ति उन चित्रों और कविता पर की गई है, जो इस अङ्क के कवर पर छपी थी।

२—दूसरी आपत्ति पुलिस की लाठियों द्वारा घायल व्यक्तियों के चित्र-प्रकाशन पर की गई है, जो इसी अङ्क के पृष्ठ २, ३ और ४ पर प्रकाशित हुए थे। ख़ासकर उस चित्र पर, जिसमें एक १४ वर्षीय घायल लड़का ज़ख़्मी दिखाया गया है।

३—तीसरी आपत्ति खुली अदालत में दिए गए उस बयान के प्रकाशन पर की गई है, जो इसी अङ्क के पृष्ठ १२ पर प्रकाशित हुआ है।

४—चौथी आपत्ति विलायती 'डेलीमेल' से लॉर्ड रथरमेयर के एक लेख को इसी अङ्क में उद्धृत करने पर की गई है, जो १४वें पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ है, इस लेख में जो हेडिङ्ग दिए गए हैं, उन पर बहुत एतराज़ किया गया है। (यद्यपि ये सारे हेडिङ्ग स्वयं लॉर्ड रथरमेयर के ही शब्द हैं)

५—पाँचवीं आपत्ति लन्दन से ख़ास 'भविष्य' के लिए आई हुई, डॉक्टर धनीराम जी 'प्रेम' की "मुख़बिर" शीर्षक कहानी के अन्तिम भाग पर की गई है, जो इसी अङ्क के १७वें पृष्ठ पर प्रकाशित हुई थी; और

६—छठी और अन्तिम आपत्ति "इतिहास के कुछ पृष्ठ" शीर्षक उस धारावाही लेख पर की गई है, जिसमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ज़माने में अङ्गरेज़ों द्वारा रचे गए षड्यन्त्रों की चर्चा की गई थी। यह "भारत में अङ्गरेज़ी राज्य" शीर्षक (ज़ब्त) पुस्तक का एक अध्याय बतलाया जाता है, यद्यपि यह भी स्वीकार किया गया है कि शैली, क्रम और भाषा में परिवर्तन कर दिया गया है।

'भविष्य' द्वारा होने वाली थोड़ी-बहुत सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए उसका बलिदान करना उचित न समझ कर, सहगल जी ने २५ तारीख़ को १,०००) रु० जमा कर दिया है और जब तक चल सके 'भविष्य' को चलाने का ही निश्चय किया गया है। यह ज़मानत विरोधपूर्वक (Under protest) दाख़िल की गई है। सहगल जी इस सम्बन्ध में चीफ़ सेक्रेटरी को एक पत्र शीघ्र ही लिखने वाले हैं, जिसकी चर्चा 'भविष्य' के आगामी अङ्क में की जायगी। उनका कहना है कि जितनी बातों पर आपत्ति प्रदर्शित की गई है, उनमें एक भी बात ऐसी नहीं है, जिसमें कुछ भी सार हो और न इनमें से कोई भी प्रकाशन क़ानूनी तौर से नाजायज़ क़रार दिया जा सकता है, यदि ऐसा नहीं था तो खुली अदालत में उन पर (सहगल जी) केस क्यों नहीं चलाया गया ?

* * *

भारतीय कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के कुछ प्रतिभाशाली सदस्य

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू

श्री० के० एफ़० नॉरिमन
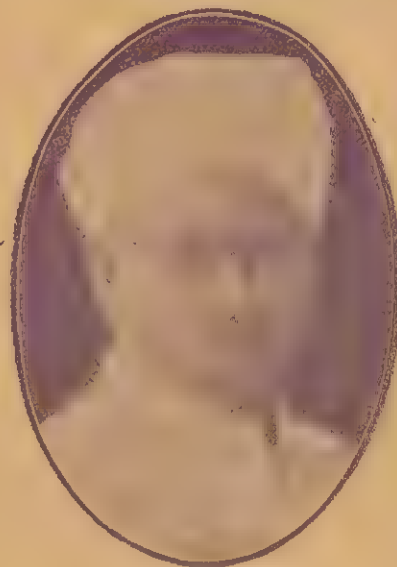
श्री० डॉक्टर सत्यपाल

श्री० अब्बास तय्यबजी

भारतीय कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के कुछ प्रतिभाशाली सदस्य

मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद

पं० मोतीलाल नेहरू

डॉक्टर अन्सारी

डॉक्टर सय्यद महमूद

श्री० सेठ जमनालाल बजाज

भारतीय कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के कुछ प्रतिभाशाली सदस्य

महात्मा गाँधी

सय्यद अब्दुल्ला ब्रेलवी

श्री० बाबू राजेन्द्रप्रसाद

श्रीमती हंसा मेहता

श्री० सरदार मङ्गलसिंह

श्रीमती देवी सरोजिनी नायडू

श्री० जे० एम० सेन गुप्ता

भारतीय कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के कुछ प्रतिभाशाली सदस्य

श्री० विट्ठलभाई पटेल
(यह आपका हाल ही का लिया हुआ चित्र है)

पं० मदनमोहन मालवीय

श्री० बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन

सरदार वल्लभभाई पटेल

बलिदान

[श्री० रतनचन्द जी जैन "रत्न"]

रात्रि के ग्यारह बज चुके थे। मेघमालाएँ पवन की गहरी थपकी खाकर घिरती आ रही थीं। मालूम नहीं पड़ता, एक के बाद दूसरी और कब तीसरी मिल कर घनी और विषादमय बन जातीं। किन्तु क्षणिक पवनदेव अपने आवेश को रोक कर शान्त हो ही पाए थे; इतने में समीर के लहराते हुए अञ्चल का हलका-सा झोंका मेघमालाओं को छू-सा गया, और वे बरस पड़ीं।

रात्रि इतनी अधिक गम्भीर और डरावनी थी कि रूस की प्राचीन राजधानी मास्को की प्रसिद्ध सड़कें उसके अङ्क में छिप-सी गईं।

सहसा किसी ने पुकारा—मारकुइस ! ओ ! मारकुइस !

उस अँधेरी रात्रि में किसी परिचित या अपरिचित का स्वर पहिचानना कोई कठिन बात न थी।

मारकुइस ने रूसी भाषा में कहा—ठहरो, खोलता हूँ।

क्षण भर में मारकुइस ने दरवाज़ा खोल दिया। आगन्तुक ने अन्दर प्रवेश किया। साथ ही एक लाल लिफ़ाफ़ा टेबिल पर रख दिया। और बिना कुछ कहे-सुने चला गया। लिफ़ाफ़े के अन्दर केवल एक स्लिप थी, जिसमें रूसी भाषा के इशारे मात्र अङ्कित थे। ज्योंही मारकुइस का बायाँ हाथ कमीज़ की जेब पर गया, त्यों ही दूसरा ड्रेसिङ्ग रूम के बिजली के बटन पर; क्षण भर में कमरा ज्योतिर्मय हो गया। अन्दर जाकर कपड़े पहिने, ताक से सर्चलाइट और वाटर-प्रूफ़ हाथ में लेकर तथा जूते पहिन कर वह बाहर आया। उस समय भी बूँदें टिपटिप कर रही थीं। मारकुइस ने शीघ्रता से अपने पैर बढ़ाए। परन्तु अब तक उसे दो लम्बी सड़कें और पार करनी थीं। उस समय मास्को नगर के विशाल प्रासाद अत्यन्त भयावह प्रतीत होते थे। जैसे-तैसे बेचारा मारकुइस आधे से ज़्यादा रास्ता समाप्त कर पाया था। ठण्ड इतनी ज़्यादा पड़ रही थी कि नाक और अँगुलियाँ सुन्न पड़ रही थीं। ऐसी भयानक ठण्ड की रात्रि में उस गली से होकर लोगों का आना-जाना बन्द सा हो गया था। जब कभी उस गली में एकाध मारकुइस जैसा माई का लाल अपने भाग्य का नमूना दिखाता आ रहा था। शीत अधिक होने के कारण बिलकुल सन्नाटा था। मकानों के दरवाज़े इस तौर से बन्द किए गए थे, कि उनके अन्दर पवन-देव का प्रवेश होना उतना ही मुश्किल था, जितना कि लोभी के हृदय में पुण्य का, स्वार्थी के हृदय में परमार्थ का और दुष्ट भूपति के हृदय में प्रजाहित-चिन्तन का। मारकुइस इन्हीं विचारों में मग्न, उस शून्य गली के सन्नाटे को अपने गुनगुनाने तथा बूट की ठोकरों से भङ्ग करता जा रहा था। समिति की विशाल इमारत थोड़ी ही दूर थी ; लेकिन उस समय निस्तब्धता की गोद में ख़ुमारी का मज़ा लूटते हुए मॉस्को नगर की किसी भी इमारत से यह आवाज़ न आई कि ऐसी अँधेरी रात्रि में इस समय जाने वाला कौन है? भूखा है कि प्यासा, चोर है या डाकू, पागल है या सज्जन, अमीर है या ग़रीब ? "हा दुर्दैव ! क्या मैं ही इस काम के लिए जन्मा था?" कहते हुए वह तेज़ी से चलने लगा। सहसा किसी ने पुकारा—"कौन है?"

मारकुइस बिना किसी सङ्कोच के आगे बढ़ा। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। पुनः आवाज़ आई—"खड़ा रह, यदि नहीं सुनता तो देखता हूँ।" लेकिन मारकुइस और भी तेज़ी से बढ़ने लगा।

तीसरी बार आवाज़ आई—पिस्तौल दाग़ो।

इतना सुन कर मारकुइस चौंक गया और तुरन्त खड़ा हो गया। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने नज़दीक आकर पूछा—तुम इतनी रात गए इस वक़्त कहाँ जा रहे हो?

मारकुइस ने दृढ़ता से जवाब दिया—मनुष्यता के पथ पर।

"इसके माने?"

"कुछ भी समझ लीजिए।"

"मैं जो पूछता हूँ उसका जवाब दीजिए। आप अभी जा कहाँ रहे हैं?"

"कहीं भी जा रहा होऊँ, इससे आपको कोई नुक़सान तो नहीं हुआ।"

"कैसे बोलता है?"—सुपरिण्टेण्डेण्ट ने त्योरी बदल कर कहा।

"जिस तरह आप बोलते हैं।"

"अच्छा देखता हूँ, खड़े रहो।" इतना कह कर उसने सीटी बजाई।

"खड़ा हूँ।"

फ़ौरन चार कॉन्स्टेबिल एक पुलिस-इन्सपेक्टर सहित आ धमके।

सुपरिण्टेण्डेण्ट ने हुक्म दिया—इसे पकड़ लो। राजद्रोही जान पड़ता है।

दृढ़ता से मारकुइस ने कहा—मेरे राजद्रोही होने का सुबूत?

"सुबूत-उबूत कुछ नहीं, कुछ दिन बाद तुम्हें ख़ुद पता चल जायगा।" बस, इसी नोक-झोंक पर सुपरिण्टेण्डेण्ट महोदय ने मारकुइस—अभागे मारकुइस को कठिन कारागार में ठूँस दिया।

२

उस समय ज़ारशाही के ख़ुफ़िया-विभाग के कुछ भेदियों ने मिल कर मारकुइस के घर तथा परिवार और उसके मित्रों के यहाँ पता लगाना आरम्भ कर दिया। ज़ार के भेदिए पता लगाने में एक ही थे। बस, उन्हीं के सहारे ज़ारशाही अपनी निरङ्कुशता की पराकाष्ठा तक पहुँची थी। अच्छे-अच्छे रईसों को मटियामेट कर देना उसके बाएँ हाथ का खेल था। कभी-कभी ज़ार की कोपाग्नि इतनी बढ़ जाती कि बेचारे निरपराधों को कठिन कारावास या मृत्यु-दण्ड दे दिया जाता था। यदि दुर्भाग्यवश कोई बच भी जाता तो पृथ्वी के विधाता ज़ार के सामने स्वयं उपस्थित किया जाता।

हाय! यह वही जगह है, जहाँ ज़ार की भीषण निरङ्कुशता बरस रही थी। कल यहाँ ज़ार की दुन्दुभी बजती थी, आज क्रान्ति का डङ्का बज रहा है। ज़ारशाही का भैरव-नृत्य समाप्त होने वाला है। पाप का घड़ा फूटने वाला है। लेकिन अभी बहुत देर है। क्रान्ति-चण्डी अभी और बलि चाहती है। चारों ओर हत्याकाण्ड की घटाएँ मँडरा रही हैं। क्या यह सब मिटने वाला है?

नहीं-नहीं, अनन्त सीमा के बाद। जगह-जगह लाल बादलों के टुकड़े ऐसे दीख पड़ते हैं, मानो क्रान्तिकारी सैनिकों के टुकड़े उनके ख़ून में नहला कर टाँग दिए गए हों। एक ओर घने, काले बादलों की पंक्ति सूर्य के लहू से तर बदन की ओर घूर रही थी। मानो कह रही थी कि यदि इतने पर भी ज़ारशाही अत्याचारों का अन्त न हुआ, तो जीते न बचोगे। बहुत जल चुके, बह चुके, भोली-भाली वसुन्धरा का रक्त-पान कर चुके। चारों ओर हाहाकार मचा है। कहीं-कहीं पर उस क्षुद्र आकाश में, दूर गगन में, दो-चार तारे ऐसे झिलमिल करते हैं, मानो विजयोपलक्ष में क्रान्तिकारियों ने अपनी रणचण्डी के घर में घी के दीपक जलाए हों। जब कभी कोई तारा लाल-हरा बन जाता है, तब ऐसा मालूम होता है, मानो विजय के पताके फहरा रहे हैं। सारा वायु मण्डल साँय-साँय कर रहा था, मानो ज़ार की श्मशान-भूमि हो। आकाश में पपीहे की टेंटें, गीदड़ का इधर-उधर डोलना, शृगाल का बोलना, सम्राट के शासन की पराकाष्ठा की सूचना दे रहे थे। रव करता हुआ पक्षी-दल अपने-अपने घोंसलों को छोड़ कर इधर-उधर भटक रहे थे मानो क्रान्ति के विपक्षी क्रान्ति से प्रेरित होकर भटकते फिरते हों। धीरे-धीरे प्रकृति शान्त हो चली थी, मानो अपना पतन जान, थक कर सो जाने की योजना कर रही हो। तो भी पस्त, तम रूस का निकट-हास्य सुनाई पड़ रहा था।

क्रूर ज़ार के हुक्म के अनुसार बेचारा मारकुइस लोहे के सींकचों में बन्द, ज़ञ्जीरों से जकड़ा हुआ लाया गया। उसका सिर नीचा था। चेहरा गम्भीर, एक प्रकार की मुस्कराहट के साथ शान्ति विराज रही थी। आह! मारकुइस तुम हँसते हो! निस्सन्देह माता के सच्चे सपूतों को बलिवेदी पर खड़े होकर, अपनी पवित्र आहुति कर देने में तनिक देर नहीं लगती।

मारकुइस से थोड़ी दूर हट कर सम्राट ज़ार अपने मन्त्री के साथ राज-सिंहासन पर बैठा था। उसके चारों ओर ३०-४० सशस्त्र सैनिक अपनी लाल आँखें तथा नुकीली मूँछें किए जल्लादों के सदृश खड़े थे। मानो यम के दूत ग़रीब मारकुइस को कच्चा निगल जायँगे।

ज़ार ने मारकुइस से पूछा—तू राजद्रोही है?

मारकुइस—"मैं आपके सम्मुख मनुष्य के सिवा और कुछ भी नहीं हूँ।" ऐसा निठल्ला जवाब सुन कर जी-हुज़ूरों के होश उड़ गए। एक ने मारकुइस की तरफ़ घृणा और अपमान भरे कटाक्ष कर कहा—"ग़रीब-परवर! अन्नदाता! यह आदमी बड़ा ढीठ और मुँहलगा जान पड़ता है!"

इन जी-हुज़ूरों ने ज़ार की क्रोधाग्नि को और भी प्रज्वलित कर दिया। इस बार वह कड़क कर बोला—मैं सवाल करता हूँ, तुम क्रान्तिकारी हो? तुम्हारा दल कहाँ है? उसमें कितने लोग हैं? और वे कितनी वयस के हैं?

मारकुइस ने दृढ़ता से उत्तर दिया—मैं इसका उत्तर देने में उतना ही असमर्थ हूँ, जितना आप मुझे छोड़ देने में।

इतने में किसी खर-दुर्लभ स्वर ने कहा—अवश्य क्रान्तिकारी है।

"इसमें क्या शक है। छिपा रहा है।"

तीसरे ने कहा—देखने में कितना सीधा जान पड़ता है; मगर है बड़ा खोटा।

ज़ार ने कहा—कितना ही खोटा क्यों न हो, मेरे

सामने किसी की कुछ नहीं चलती। देखो अभी बतलाता है, दो-चार कोड़े पड़ने दो।

इस बार मारकुइस ने कुछ जवाब न दिया।

ज़ार ने पुनः प्रश्न किया—देखिए जनाब! यदि आप चुपचाप क्रान्तिकारी दल का पता बता देंगे, तो आप अवश्य रिहा कर दिए जायँगे। साथ-साथ पुरस्कार दिया जायगा। नहीं तो सच कहता हूँ, अभी अपने सामने तुम्हें जीते जी कुत्तों से नुचवाऊँगा। बोलो, क्या चाहते हो? सुख या दुःख, दारिद्र्य या ऐश्वर्य, जीवन या मृत्यु, प्रेम या कोप?

मारकुइस इन बातों को सुन कर तिलमिला गया। उसने तीव्र स्वर में कहा—नीच कुत्ते! तू क्या ऐश्वर्य देगा। मृत्यु से डरना कायरों का काम है। अरे! डरपोक, तू मुझे प्राण-भिक्षा देना चाहता है। नरक के कीड़े, अभी कुछ दिन और इस नरक में सड़ ले; तब जीवन-दान माँगूँगा। नर-रक्त का पिपासु पशु, प्रेम क्या जाने? तू बलपूर्वक अपहरण करने वाला है। तू रासपुटिन, प्रेटियाफ़, अनेक मिल-मालिकों, पूँजीपति, ज़मींदार, मॉर्शल, सैनिक, प्रिफ़ेक्ट इत्यादि राक्षसों से दबता है। नीच! तेरे सामने क्या बोलूँ, जो करना हो सो कर।

अन्त में क्रोधित ज़ार ने दो-चार प्रश्न और किए। लेकिन उस नौनिहाल वीर ने एक का भी उत्तर न दिया। फिर क्या था? ज़ार क्रोधान्ध होकर अपनी शक्ति पर अभिमान करने लगा। ज़ार की पशु-प्रवृत्ति प्रज्वलित हो उठी। सैनिकों को आज्ञा हुई—"इसको क्रूस पर लटका दो। लेकिन ठहरो, इसके कुटुम्बी-जन कहाँ हैं?" क्षण भर में वृद्ध माता तथा सुकुमार पत्नी और दो बच्चे हथकड़ी बेड़ी सहित ज़ार के सामने लाए गए।

मारकुइस सिर नीचा किए खड़ा था। क्रूर ज़ार के प्रश्न पर प्रश्न हो रहे थे। अन्त में उसने वही 'शब्द' फिर दुहराए—"प्राण-दण्ड चाहते हो या जीवन-दान?" इस प्रश्न के दो मिनट बाद तक शान्ति रही। लेकिन किसी ने कुछ उत्तर न दिया।

ज़ार ने पुनः प्रश्न किया—तुम अपने परिवार से कुछ पूछना चाहते हो?

मारकुइस ने गम्भीरता से जवाब दिया—'हाँ!' मारकुइस ने अपने अभिन्न-हृदय की ओर देखा। अहा! प्रकृत सुन्दर मारकुइस उस समय और भी सुन्दर हो गया था। मानो मन ही मन स्वयं मुग्ध हो रहा हो। उस समय मारकुइस ऐसा जान पड़ता था, मानो कोई देवता खड़ा हो।

उसने कहा—मेरे प्यारे कुटुम्बियो!

सब लोग हाथ जोड़ कर बोले—कहिए!

"आप लोग मृत्यु से डरते हैं?"

एक आवाज़ आई—"नहीं।"

"मेरे प्यारे कुटुम्बी जन! यह क्यों?"

"आज़ादी के लिए मरना श्रेयस्कर है। अर्थात् दूसरों के हित के लिए मरना मोक्ष-प्राप्ति का उपाय है। आत्म-बलिदान में बड़ा भारी आनन्द और पुण्य है।"

सहसा एक बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ। देखते ही देखते वृद्ध माता और सुकुमार पत्नी, माता वसुन्धरा की छाती पर लोट गईं।

"अब भी क्षमा माँग ले।" उत्तर मिला—"हर्गिज़ नहीं। चुप रह, तुझको क्षमादान करने का क्या अधिकार है?"

ज़ार ने क्रोधित होकर कहा—अच्छा सँभल जा। तेरे अपराधों का दण्ड केवल मृत्यु है। अस्तु, मरने के लिए तैयार हो जा।

क्रूर ज़ार ने जल्लादों से पूछा—सब ठीक है?

"जी हाँ!"

"तो इस पापी को क्रूस पर लटका दो और मेरे सामने ही इस पापी के हाथ-पैरों में कीलें ठोंक दी जायँ।"

क्षण भर बाद मारकुइस क्रूस पर चढ़ा दिया गया। कील ठोंकने भर की देर थी। इतने में आवाज़ हुई—'ठहरो'। साथ ही दूसरी आवाज़ हुई—'प्रजातन्त्र की जय'। जय-घोष के साथ ही एक और धड़ाका हुआ। शीघ्र ही मारकुइस के हाथ-पैरों में कीलें जड़ दी गईं। अब बच्चों की बारी आई।

सम्राट ज़ार ने आगे बढ़ कर कहा—बच्चो! अभी बच सकते हो। तुमने यह सब देख ही लिया। बतलाओ, क्या चाहते हो!

दोनों का उत्तर एक ही था—"कुछ नहीं।"

उनकी ग़रीब आँखें किसी के देखने को छटपटा रही थीं। किन्तु वहाँ क्या था? माता नहीं थी। वह तो कुछ देर पहिले माता वसुन्धरा की गोद में सो चुकी। तो

क्या दादी को ढूँढ़ रहे थे? नहीं, वह उसके साथ ही मर चुकी थी। तब क्या ग़रीब मारकुइस को देखना चाहते थे? नहीं, वह भी न मिल सका। शायद कुछ ही पहिले क्रूर ज़ार के चरणों पर वह भी अर्पित किया जा चुका था। आह! पाशविक वृत्ति, तू सचमुच बड़ी भयानक होती है। तेरे कारण मनुष्य जिसे झूठ समझता है, वह झूठ है। नेत्रों के रहते हुए वह अन्धा और बुद्धि के रहते हुए घोर मूर्ख बन जाता है। ज्योंही समय आया, बच्चे सामने लाए गए। ज़ार ने कहा—बच्चो, क्षमा माँग लो, नहीं तो वह लौह-यन्त्र मँगाया जाता है।

बच्चों ने कहा—यदि आपके राज्य में राज-भक्ति पुण्य है और प्रजा-भक्ति पाप, तो हम किसी तरह भी क्षमा-याचना नहीं चाहते।

सम्राट—ख़ैर, मैं इस समय तुमसे बहस नहीं करना चाहता। बताओ, तुम क्षमा-प्रार्थना करने के लिए तैयार हो कि नहीं। यदि नहीं, तो लौह-यन्त्र चलाया जाता है। न्याय-रक्षा हेतु अन्तिम बार कहता हूँ—क्षमा-प्रार्थना कर लो। बस, तुम्हारा प्रायश्चित हो चुका।

बच्चों ने मुस्करा कर जवाब दिया—"तुम जो करना चाहो करो। हमसे क्षमा-प्रार्थना नहीं हो सकती, इसकी आशा व्यर्थ करते हो। यदि हम लोग तुम्हें सच्चा सम्राट मानते तो अवश्य ऐसा करते; किन्तु तुम जैसे पाशविक लुटेरों से क्षमा-याचना कैसी? सम्राट बलपूर्वक अपहरण कर सकता है, न्याय का गला घोंट सकता है, उसको किसी के रक्त चूसने की याद हो सकती है। किन्तु हम लोग ऐसे मनुष्यता के द्रोही को 'सम्राट' कह कर हर्गिज़ अपने को कलङ्कित नहीं कर सकते। मनुष्यता के नाम पर राक्षसी कार्य करने वाले के साथ क्षमा-याचना कैसी? तुम यन्त्र से हम लोगों का गला दबा दो, उसी में मङ्गल है। इसीसे तुमसे ईश्वर प्रसन्न रहेगा, पाप का घड़ा फूटेगा और साथ-साथ मुक्ति भी मिलेगी।

सम्राट ज़ार ने कहा—"यह लोग भले आदमी और सौजन्य के साथ मानने वाले नहीं हैं। लाओ यन्त्र और इन दोनों को अच्छी तरह कस दो।" उस समय बच्चों के मुख पर जननी जन्म-भूमि के प्रति समवेदना थी, दया थी और थी भीषण पवित्रता। बच्चे समझ रहे थे, अब लौह-यन्त्र चला और तब चला। सहसा चलने भी लगा। लोहे के काँटे चारों ओर से लपलपाती जीभें निकाल कर बच्चों के कुसुम-कोमल कलेवर से सट गए और उनका ख़ून पीने लगे। बेचारे बच्चे असहनीय वेदना से बेज़ार होने लगे। उन्होंने महसूस किया, क्षण भर बाद सारे लौह-कण्टक शरीर में धँस जाएँगे और प्राणान्त हो जायगा। दोनों के मुख पर अन्तिम लालिमा, प्रभात के उगते हुए सूर्य की नाईं, दौड़ गई। दुष्ट ज़ार ने एक बार फिर कहा—"अब भी प्राणदान माँग लो।"

"माँगेंगे, पर तुम्हारे नाश के लिए।"

बच्चों को इस समय असहनीय पीड़ा हो रही थी। काँटे सारे शरीर में धँस गए थे, फिर भी उन्होंने दृढ़ होकर कहा—परम पिता! क्षमा। साथ ही इस पिशाच को सुबुद्धि देना।

इस बार सम्राट ज़ार क्रोध से काँपने लगा। उसने गरज कर कहा—चलाओ, ख़ूब ज़ोर से चलाओ। इन मूर्खों की जीवन-लीला समाप्त कर अभी ज़मीन में गाड़ दो। ये हमारा नाश करेंगे।

यन्त्र के क्रूर लौह-कण्टकों ने भरपूर रक्तपान कर, अपनी प्यास अच्छी तरह बुझाई। उन नौनिहाल वीरों ने किसी तरह भी क्षमा-याचना न की।

देखते ही देखते दोनों बच्चों की वीर आत्मा माता वसुन्धरा के हेतु अर्पित हो गई। साथ ही उसका अञ्चल उन वीरों के उष्ण रक्त की धाराओं से रँग कर लपलपाने लगा।

दानवता के राक्षसों ने देशभक्तों का मरना स्पर्धापूर्ण हँसी हँस कर देखा। उस समय पृथ्वी में दया और करुणा नहीं के बराबर शेष रह गई थीं। वीर बच्चों ने छटपटा-छटपटा कर भले ही प्राण दे दिए थे, लेकिन वह ईश्वर, जिसे लोग मायावी कहते हैं, विमुख था। धरती माता ने अवश्य दो आँसू गिराए। उस समय भगवान भास्कर चमकीली चादर ओढ़े अस्ताचल की ओर तेज़ी से जा रहे थे। किञ्चित वे भी ठहर गए, उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि माता वसुन्धरा शहीदों के रक्त पर अवश्य आँसू गिरा रही हैं। वह जगह श्मशान की नाईं सायँ-सायँ कर रही थी।

*　　*　　*

यह गुलशन है हमारा!

[जनाब "शातिर" इलाहाबादी]

यह प्यारा हिन्द है मसकन[1] हमारा!
यह घर है यह नशेमन[2] है हमारा!
हम इसके गुल,[3] यह गुलशन[4] है हमारा!

यहाँ के फूल-पत्ते ख़ुशनुमा हैं!
जो रङ्गो-बू में आलम से जुदा हैं!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

निशात[5] अङ्गेज़ तेज़े नग़मा[6] ख़्वानी!
पपीहे और कोयल की ज़बानी!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

यह काली-काली सावन की घटाएँ!
घटा के साथ यह ठण्ढी हवाएँ!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

यह जुगनू का दमकना जङ्गलों में!
यह बिजली का चमकना बादलों में!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

यह गङ्गा का बड़े ज़ोरों में बहना!
यह जमना का लबे[7] साहिल से कहना!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

ज़माने के पहाड़ों से निराला!
हिमाला है, हिमाला है, हिमाला!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

हमारे लब पे चर्चा है इसी का!
हमारे सर में सौदा है इसी का!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

भुलाएगा कोई क्या इसको "शातिर"!
जिएँगे सब मरेंगे इसके ख़ातिर!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

१—घर, २—घोंसला, ३—फूल, ४—बाग़, ५—आनन्द देने वाली, ६—गाना, ७—किनारा।

सुप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिज्ञों के मुक़द्दमे

२—बाबू अरविन्द घोष : १६०८–१६०६

भारत में आज तक जितने राजनैतिक मुक़द्दमे हुए हैं, उनमें सब से अधिक सनसनीपूर्ण १६०८-६ का अलीपूर का मुक़द्दमा है। वह समय भारत में हिंसात्मक क्रान्ति का प्रारम्भिक काल था और उसी समय बम का आविर्भाव हुआ था। पहिले ही बम के धड़ाके ने दो निर्दोष यूरोपियन मेमों की हत्या कर डाली थी। उस समय इससे अधिक सनसनीपूर्ण दुर्घटना न घट सकती थी। इस सम्बन्ध में कलकत्ते के बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्तियों के घरों की तलाशियाँ ली गईं और बहुत से गिरफ़्तार कर लिए गए। मुक़द्दमे की पैरवी के समय इस भयङ्कर षड्यन्त्र के रहस्य का जो भण्डा-फोड़ हुआ था, उससे केवल उस समय की राजधानी कलकत्ता ही नहीं, वरन् समस्त भारत भय और आश्चर्य में डूब गया था। इस मुक़द्दमे में जो मुख़बिर हुआ था, वह मैजिस्ट्रेट के सम्मुख गवाही देने के उपरान्त, मुक़द्दमे के अलीपूर सेशन्स कोर्ट में पहुँचने के पहिले ही, अलीपूर जेल के अन्दर गोली से उड़ा दिया गया था। सरकार की ओर से कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रतिभाशाली वकील एर्डले नार्टन कई अन्य सहायकों के साथ खड़े हुए थे और श्री० अरविन्द घोष की ओर से पहिले तो श्री० बी० एम० चटर्जी और श्री० बी० चक्रवर्ती खड़े हुए थे, परन्तु बाद में श्री० सी० आर० दास ने मुक़द्दमा अपने हाथ में ले लिया था। ऐसे प्रतिभाशाली वकीलों की कार्यवाही ने मुक़द्दमे को और भी अधिक सनसनीपूर्ण बना दिया था।

२री मई सन् १६०८ को जिस समय बाबू अरविन्द घोष अपने स्कॉट्स लेन वाले घर में सोकर उठे, उस समय उन्हें मालूम हुआ कि उनका घर पुलिस वालों से घिरा हुआ है। थोड़ी देर के उपरान्त उन्हें एक वारण्ट दिखाया गया और उनके घर की तलाशी ली गई। उसके बाद पुलिस उन्हें पुलिस-कमिश्नर के पास ले गई और वे लाल बाज़ार की हवालात में बन्द कर दिए गए। उन्होंने कमिश्नर के सम्मुख अपना बयान देने से साफ़ इन्कार कर दिया। इस मुक़द्दमे में अभियुक्त तीन दलों में विभक्त कर दिए गए थे और अरविन्द बाबू तीसरे अभियुक्तों के उस दल में थे, जिसमें उनके छोटे भाई बीरेन्द्रकुमार घोष भी सम्मिलित थे।

अरविन्द बाबू का दल दूसरा था और उसकी पैरवी अलीपूर के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० बिर्ले के सम्मुख १८वीं मई को प्रारम्भ हुई थी। सरकारी वकील मि० नार्टन ने अपने प्रारम्भिक भाषण में अरविन्द बाबू की अद्वितीय प्रतिभा, उच्च शिक्षा, अनन्य देशभक्ति और आत्म-बलिदान के ख़ूब गुणगान किए और अन्त में यह कह कर कि वे ही बङ्गाल के क्रान्तिकारी आन्दोलन के निर्माता और सर्वस्व हैं, उसे समाप्त कर दिया। मुक़द्दमे की पैरवी केवल इसीलिए सनसनी फैलाने वाली नहीं थी कि उसमें भयङ्कर षड्यन्त्रों के रहस्यों का पता लगा था, बल्कि उसमें बीच-बीच में वकीलों में जो बहस होती थी, उसके कारण भी लोगों की उसमें बहुत दिलचस्पी बढ़ गई थी। और इसीलिए मुक़द्दमे की कार्यवाही भी प्रायः सभी पत्रों में अक्षरशः प्रकाशित होती जाती थी। ऐसी ही एक मनोरञ्जक घटना निम्न-प्रकार है :—

मि० नार्टन—मेरा ख़याल है कि अरविन्द घोष के फ़ोटो की बहुत सी प्रतियाँ बाँटने के लिए तैयार की गई होंगी।

मि० चटर्जी—आप यह कैसे जान सकते हैं कि वे बाँटने के लिए तैयार की गई थीं? आपको ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है।

मि० नार्टन—मुझे अनुमान करने का पूरा अधिकार है।

मि० चटर्जी—नहीं, आपको कोई अधिकार नहीं है।

तपस्वी अरविन्द घोष

मि० नार्टन—मुझे वक्तृता न दो। (दूसरी ओर मुँह फेर कर) इन्हीं नवयुवकों ने ही तो बङ्गाल के वकालत के पेशे को गन्दा कर दिया है। (उनकी इस युक्ति पर, वहाँ जितने आदमी उपस्थित थे, सभी खिलखिला कर हँस पड़े।)

मालूम होता है कि मि० नार्टन को क्रान्तिकारी दल के बहुत से पत्र मिले थे, जिनमें उन्हें जान से मार डालने की धमकी दी गई थी। एक दिन पैरवी के अन्त में उन्होंने कहा—"मैंने आप लोगों का क्या बिगाड़ा है, जो आप मेरी जान लेने पर तुले हैं।" उत्तर में अभियुक्तों ने कहा कि "तुमने हमें दोषी क़रार दिया है।" इस पर मि० नार्टन ने कहा कि "अभी तक तो मैंने दोषी क़रार नहीं दिया, परन्तु अब जितना जल्दी हो सकेगा, कर दूँगा।" एक अभियुक्त ने फिर क्रोधपूर्वक उत्तर दिया कि "उस समय के आने के पहिले ही आप रसातल भेज दिए जायँगे।" इस उत्तर से मि० नार्टन एक रूखी हँसी हँस कर एक ओर को चले गए।

सरकारी गवाहियों की भरमार के कारण पैरवी की प्रगति बहुत धीमी थी। केवल गवाहियाँ ही नहीं, बहुत सी किताबों, हस्त-लिपियों, चिट्ठियों और फ़ोटो के सबूतों से भी कुछ कम विलम्ब नहीं हुआ। अन्त में १८ वीं अगस्त, सन् १६०८ को मुक़द्दमा सेशन्स सुपुर्द कर दिया गया।

बाबू अरविन्द घोष पर भारतीय दण्ड-विधान की कई धाराओं के अभियोग लगाए गए थे, जिनमें से मुख्य १२१ और १२१ 'ए' मुख्य थीं, जिनके अनुसार वे क्रमशः राजविद्रोहात्मक षड्यन्त्र और सम्राट के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के अपराधी ठहराए गए थे। उनके ऊपर 'शस्त्र क़ानून' (Arms Act) के भी अभियोग लगाए गए थे। उनके भाई पर उपर्युक्त सभी अभियोगों के अतिरिक्त हत्या और हत्या करने के लिए दूसरे व्यक्तियों को भड़काने के भी अभियोग लगाए गए थे। श्री० बी० चक्रवर्ती, जो 'वन्देमातरम्' केस में, बाबू अरविन्द घोष की ओर से खड़े हुए थे, उनकी ओर से सेशन्स की पैरवी में भी खड़े हुए। इस मुक़द्दमे के ख़र्च के लिए बाबू अरविन्द घोष की ओर से उनकी भगिनी ने देश से अपील की और देश ने कुछ ही महीनों में छब्बीस हज़ार की थैली उनकी झोली में डाल दी।

सेशन्स की पैरवी ठीक १६वीं अक्टूबर, सन् १६०८ को अलीपूर के सेशन्स जज मि० बीचक्राफ़्ट आई० सी० एस० की अदालत में प्रारम्भ हो गई। दो बङ्गाली महाशय असेसर नियुक्त किए गए। मि० नार्टन ने २० तारीख़ को मुक़द्दमा प्रारम्भ कर दिया। जिस समय मुक़द्दमे की पैरवी हो रही थी, उसी समय अरविन्द बाबू के केम्ब्रिज के पुराने सहपाठी मि० फ़ैरर्स भारत-भ्रमण के लिए निकले थे। उन्होंने अदालत से आज्ञा लेकर श्री० अरविन्द से मुलाक़ात की और उनकी घण्टों बातें हुईं। अरविन्द बाबू के इस परिवर्तन से मि० फ़ैरर्स के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। क्योंकि इङ्गलैण्ड में अरविन्द घोष क्रान्ति के लिए नहीं, अपनी साहित्यिक प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध थे, और उस समय तक उनके पुराने मित्र उनकी प्रतिभा की प्रशंसा के गीत गाया करते थे।

सेशन्स कोर्ट की पैरवी में भी मनोरञ्जन का कुछ कम भाग न था और उसका बहुत-कुछ श्रेय मि० नार्टन को भी था। एक बार जब पैरवी में यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि मनीऑर्डर पर दस्तख़त किस प्रकार किए जाते हैं, तब मि० नार्टन ने कहा कि "मुझे अपने जीवन में कभी मनीऑर्डर नहीं मिला और न उस पर कभी दस्तख़त करने की ही आवश्यकता पड़ी। मैं अपने मवक़्क़िलों से सदैव पेशगी रुपया ले लिया करता हूँ।" इसी प्रकार जब प्रफुल्ल चाकी की फ़ोटो पेश की गई, जिन्होंने अपनी आत्म-हत्या कर ली थी, तब मि० नार्टन बच्चों का भोलापन दिखाते हुए बोले कि "फ़ोटो किसी मकान का है या घोड़े या ऊँट का।" उनके मुँह से ये शब्द निकलते ही अदालत में हँसी का फ़व्वारा फूट पड़ा।

अन्त में स्वर्गीय देशबन्धु दास ने मुक़द्दमे में हाथ लगाया और उनके सामने मि० नार्टन को लेने के देने पड़ गए। उनकी प्रतिभा के सामने उनका टिकना मुश्किल हो गया। उन दोनों के वाक्-युद्ध की खींचा-तानी और उसका मनोरञ्जन अपूर्व था। मि० नार्टन ने अरविन्द बाबू के पत्रों के उस 'आध्यात्मिक' भाव को, जिसमें एक रुपया में पन्द्रह आने दान करने का उल्लेख था, तोड़-मरोड़ कर उन्हें दुश्चरित्र साबित करने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु उनकी दाल नहीं गली।

पैरवी के अन्त में मि० नार्टन ने पूरे १७ दिनों तक अदालत के सम्मुख अपना भाषण दिया और उसके हर एक शब्द में उन्होंने अरविन्द बाबू को दोषी साबित करने का प्रयत्न किया। उनके विरुद्ध श्री० दास ने अपनी

(शेष मैटर १६वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

१९३० की लन्दन-नेवल कॉन्फ़्रेन्स

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च-स्कॉलर]

"अगर यूरोप में एक और युद्ध हुआ तो हमारी शताब्दियों की सभ्यता का, रोम की सभ्यता की भाँति, अन्त हो जावेगा।"

—बाल्डविन

१९२९ में इङ्गलैण्ड में मज़दूर-दल शासनारूढ़ हुआ और मिस्टर मैकडॉनल्ड इसके प्रधान-मन्त्री हुए। १९२७ की कूलिज कॉन्फ़्रेन्स (Coolidge Conference) के असफल होने के उपरान्त इङ्गलैण्ड और अमेरिका में मनमुटाव हो गया। इस मनमुटाव को दूर करने के हेतु तथा दोनों राष्ट्रों में सद्भाव उत्पन्न करने के लिए, मौक़ा पाते ही मि० मैकडॉनल्ड अमेरिका गए। वहाँ जाकर उन्होंने प्रेज़िडेण्ट हूवर (President Hoover) से परामर्श किया। इस परामर्श में हूवर साहब ने मि० मैकडॉनल्ड को पारस्परिक मनमुटाव का कारण बतलाया। उपरोक्त सज्जनों ने यह भी निर्णय किया कि आपस में समझौता करने के लिए वे लोग उन प्रश्नों पर विचार करेंगे।

२३वीं नवम्बर को अमेरिका के भूतपूर्व सेक्रेटरी आफ़ स्टेट्स मिस्टर केलॉग (Kellogg) लन्दन के पिलग्रिम्स क्लब (Pilgrims Club) के मेहमान थे। उस समय विसकाउण्ट सेसिल (Viscount Cecil) ने व्याख्यान देते हुए कहा था कि केलॉग इतिहास में शान्ति के सब से बड़े पुजारी लिखे जावेंगे। केलॉग पैक्ट ने बहुत कुछ कर दिखाया था। उसने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया था कि भविष्य में युद्ध-रूपी भूत से बचने के लिए ठोस काम और त्याग की आवश्यकता है। पाठकों को याद होगा कि महायुद्ध के बाद अमेरिका ने लीग तथा शान्ति-आन्दोलन से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था। पर केलॉग के मन्त्रित्व में अमेरिका पुनः पुराने पथ पर आ गया। सेसिल साहब ने यह भी घोषणा की कि नाविक प्रश्न पर बातचीत हो रही है। और दो महीने के अन्दर ही एक कॉन्फ़्रेन्स में इस विषय पर विचार होगा। मिस्टर केलॉग ने उत्तर देते हुए कहा कि पारस्परिक विश्वास के आधार पर ही संसार की शान्ति रूपी इमारत खड़ी की जा सकती है। आपने आपस के झगड़ों को शान्ति से तय करने पर विशेष ज़ोर दिया। अन्त में आपने पीस पैक्ट को सफल बनाने के लिए निम्न-लिखित विचार रक्खे :—

(१) संसार की जनता को शान्ति-आदर्शों में शिक्षित किया जावे। गिरजाघर, कॉलेज तथा व्यापारिक और नागरिक सङ्घ विशेषतः यह काम करें।

(२) आपस के झगड़ों को शान्ति से तय कर लिया जावे।

(३) शस्त्रों को परिमित करना। आपस में कोई भी ऐसी लाग-डाँट न होने देना, जो हमें युद्ध की ओर ले जावे।

यूरोप के राष्ट्र निशस्त्रीकरण (Disarmament) की नीति पर किस तरह अमल कर रहे हैं!

२१वीं जनवरी १९३० को लन्दन में नाविक कॉन्फ़्रेन्स का अधिवेशन हुआ। इसमें इङ्गलैण्ड, अमेरिका, फ़्रान्स, इटली तथा जापान राष्ट्र सम्मिलित थे। इसका उद्घाटन स्वयं बादशाह सलामत ने किया। आपने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए नाविक शस्त्रों को परिमित करने पर ज़ोर दिया। आपने अपने व्याख्यान के अन्त में कहा—"मुझे आशा है कि इस कॉन्फ़्रेन्स के परिणाम-स्वरूप शस्त्रों का भारी बोझ, जो इस समय संसार पर लदा है, शीघ्र ही घट जावेगा। लीग के निःशस्त्रीकरण कमीशन का काम सरल हो जावेगा, और वह दिन शीघ्र आवेगा, जब कि एक सर्वव्यापी निःशस्त्रीकरण कॉन्फ़्रेन्स इस समस्या को पूर्णतया हल करेगी।"

सर्वसम्मति से मिस्टर मैकडॉनल्ड इस कॉन्फ़्रेन्स के सभापति चुने गए। आपने भी अपने भाषण में शस्त्रों के बोझ की तरफ़ लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए पारस्परिक विश्वास पर ज़ोर दिया। और पारस्परिक लाग-डाँट को रोकने की अपील की। उन्होंने सन् १९१९ से शान्ति का इतिहास समझाया तथा बताया कि संसार ने शान्ति की समस्या को अभी हल नहीं कर पाया है। अमेरिका के प्रतिनिधियों के नेता स्टिमसन ने कहा कि गुप्त नीति को दूर करना, आपस की लाग-डाँट तथा जलन को मिटाना तथा प्रत्येक राष्ट्र को उसकी रक्षा के उतने ही उचित साधन देना, जितने से उसके पड़ोसी राष्ट्रों के हृदय में घबड़ाहट तथा अविश्वास पैदा न हो, यही इस कॉन्फ़्रेन्स का लक्ष्य है। भारतवर्ष की तरफ़ से सर अतुल चटर्जी ने आशा प्रकट की कि कॉन्फ़्रेन्स के उद्योग का परिणाम यह होगा कि संसार को शान्ति मिलेगी। आपने कहा—"मेरे देशवासियों को भारतवर्ष के इस ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय सभा में भाग लेने पर गर्व है।" फ़्रान्स, इटली और जापान की ओर से टारडिउ सिगनर ग्रायण्डी तथा मिस्टर वाकाट्सुकी (Wakatsuki) ने भी बारी-बारी से अपने-अपने विचार प्रकट किए।

कॉन्फ़्रेन्स की प्रारम्भिक बैठक में मि० स्टिमसन ने अमेरिका के प्रस्तावों का दिग्दर्शन कराया, जो अमेरिका तथा इङ्गलैण्ड के नाविक समता पर निर्धारित थे। टारडिउ साहब ने फ़्रान्स की भौगोलिक, आर्थिक तथा राजनैतिक समस्याओं का वर्णन किया। आपने कहा कि फ़्रान्स को व्यापार आदि सभी बाधाओं से रहित और सुरक्षित रहना चाहिए। आपने फ़्रान्स को सुरक्षित रखने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौते पर ज़ोर दिया। मिस्टर मैकडॉनल्ड ने निम्न-लिखित तीन बातें सामने रक्खीं।

१—चूँकि इङ्गलैण्ड चारों ओर समुद्रों से घिरा है, इसलिए उसके निवासी अन्न आदि आवश्यक खाद्य पदार्थों को पाने के लिए समुद्र पर अधिकार चाहते हैं।

२—जो अङ्गरेज़ी सेना समुद्र पर तैनात है, वह तीन टुकड़ों में विभाजित की जावे, ताकि समुद्र की वह रक्षा कर सके और शान्ति रख सके।

३—प्रत्येक अङ्गरेज़ के लिए समुद्र ही सर्वस्व है। अतएव इङ्गलैण्ड को अमन-अमान का आश्वासन मिलना चाहिए। सिगनर ग्रायण्डी ने इटली की भौगोलिक तथा आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि इटली शस्त्रों को किसी हद तक घटाने को तैयार है, पर यूरोप का कोई भी राष्ट्र उससे अधिक शस्त्र न रक्खे। मिस्टर वाकाट्सुकी ने वाशिङ्गटन समझौते (Washington Agreement) को महत्वपूर्ण बतलाया। मिस्टर स्टिमसन ने अमेरिका का मन्तव्य निम्न प्रकार प्रकट किया :—

१—क्रूज़रों तथा दूसरे विध्वंसी शस्त्रों में लाग-डाँट का अन्त करने के लिए पाँचों राष्ट्रों में समझौता किया जावे।

२—सबमेरीनों को उठा दिया जावे या उनकी संख्या कम से कम कर दी जावे। और वे व्यापारिक जहाज़ों पर हमला न करें, जैसा कि उन्होंने महायुद्ध में किया था।

३—युद्ध के जहाज़ों को घटाने में वाशिङ्गटन समझौते से आगे बढ़ा जावे।

उन्होंने यह भी कहा कि उपरोक्त बातों से अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव उत्पन्न होने के साथ ही साथ धन की भी बड़ी बचत होगी।

(१५वें पृष्ठ का शेषांश)

वक्तृता के लिए केवल दस दिन लिए और उसमें उन्होंने अरविन्द बाबू की प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए उन्हें एक उच्च-कोटि के साधु के रूप में चित्रित कर दिया और यह भी साबित कर दिया कि वे साधारण राजनीति से बिलकुल परे थे। उन्होंने हृदय-विदारक शब्दों में अदालत और असेसरों से इस बात पर विचार करने की अपील की, कि अरविन्द बाबू पर जिन-जिन अपराधों के अभियोग लगाए गए हैं, उनमें गवाहियाँ एक अपराध भी साबित करने में असमर्थ हैं। अन्त में उन्होंने कहा कि अरविन्द बाबू शान्ति के अवतार, देशभक्ति के साक्षात कवि, दयालु और अत्यन्त उच्च-कोटि के फ़िलॉसफ़र हैं।

असेसरों ने अपने निर्णय में उन्हें निर्दोष क़रार दिया और अदालत ने भी उन्हीं के निर्णय से अपनी सहमति प्रकट की। अरविन्द बाबू सभी अभियोगों से छोड़ दिए गए और उनके साथ उनके १७ साथी भी मुक्त किए गए। उनके भाई को पहले फाँसी की सज़ा दी गई, परन्तु बाद में वह आजन्म कालेपानी के दण्ड में परिवर्तित कर दी गई। अन्य अभियुक्तों को क़ैद की विभिन्न सज़ाएँ दी गईं।

* * *

कॉन्फ्रेन्स की तीसरी प्रारम्भिक बैठक में फ्रान्स, इङ्गलैण्ड तथा जापान ने अपने-अपने प्रस्तावों की सूचना दी।

अब कॉन्फ्रेन्स में दो रायें हो गईं। इङ्गलैण्ड, अमेरिका तथा जापान चाहते थे कि जहाज़ों को क्लास (Category) के अनुसार परिमित किया जावे। फ्रान्स और इटली उस योजना के पक्ष में थे, जिसे अङ्गरेज़ी में Globol toxnage कहते हैं। इस भेद को मिटाने के लिए फ्रान्स ने एक समझौता पेश किया, जिसका अभिप्राय यह था कि Globol toxnage के साथ ही साथ जहाज़ क्लासों में भी विभाजित कर दिए जायँ। और एक वर्ष की सूचना देने के उपरान्त एक क्लास से दूसरे में बदलने का अधिकार दिया जावे।

कॉन्फ्रेन्स की प्रथम बैठक में फ्रान्स के समझौते पर वादविवाद हुआ। इसी बीच में अङ्गरेज़ी सरकार ने घोषणा की कि :—

१—इङ्गलैण्ड ने १९२८ के प्रोग्राम के दस हज़ार टन वाले दो क्रूज़रों के ऑर्डर रद्द कर दिए। तथा

२—१९२९ का प्रोग्राम घटा दिया गया। दो क्रूज़र, चार डिस्ट्रायर्स तथा तीन पनडुब्बियाँ निकाल दी गईं।

प्रथम कमिटी में मैकडॉनल्ड ने पनडुब्बियों को पूर्णतया नष्ट करने का प्रस्ताव किया। पर फ्रान्स इस पर सहमत नहीं हुआ। उसने कहा—"किसी भी हालत में फ्रान्स पनडुब्बियों का नाम मिटा देने के लिए सहमत नहीं हो सकता।" जब यह सब हो रहा था, उस समय औरतों के एक डेपुटेशन ने, जिसमें चालीस देशों की प्रतिनिधि सम्मिलित थीं, कॉन्फ्रेन्स के डेलीगेटों से शस्त्रों को पूर्णतया घटाने की प्रार्थना की तथा युद्ध के विरुद्ध एक प्रार्थना-पत्र भी भेजा। मिस्टर स्टिमसन ने समझौते के लिए निम्न-लिखित प्रस्ताव रक्खे।

१—अमेरिका प्रत्येक भाँति के जहाज़ों में इङ्गलैण्ड की समता चाहता है। जहाज़ इस ढङ्ग से घटाए जावें कि १९३१ में दोनों बेड़े एक-दूसरे के बराबर हो जावें।

२—पनडुब्बियों का नाम मिटा देने से अमेरिका बड़ा प्रसन्न होगा। पर यदि यह सम्भव न हो, तो वह चाहता है कि उन पर व्यापारी जहाज़ों के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के वही नियम लागू हों, जो पानी के ऊपर चलने वाले जहाज़ों पर लागू हैं।

कॉन्फ्रेन्स की एक प्रारम्भिक बैठक में पनडुब्बियों के प्रयोग के बारे में पाँचों राष्ट्रों में एक मत हो गया। अतएव फ्रान्स के मिस्टर लेयनीज़ ने यह प्रस्ताव रक्खा कि समझौते के लिए एक कमिटी बनाई जावे, जो पनडुब्बियों पर वही नियम लागू करे, जो पानी के ऊपर चलने वाले जहाज़ों पर लागू हैं, या होंगे।

एक तरफ़ लन्दन में यह कार्यवाही हो रही थी, दूसरी तरफ़ फ्रान्स में चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ (Chamber of Deputies) में फ्रान्स गवर्नमेण्ट की हार हो गई। फ्रान्स की गवर्नमेण्ट की इस हार के कारण कॉन्फ्रेन्स का काम कुछ समय के लिए रुक गया। फ्रान्स में दूसरी गवर्नमेण्ट स्थापित हो जाने के बाद कॉन्फ्रेन्स का कार्य फिर प्रारम्भ हुआ। परन्तु अब कॉन्फ्रेन्स में बहुत सी कठिनाइयाँ पैदा हो गईं। फ्रान्स यह चाहता था कि सब मिल कर उसे यह गारण्टी दें कि वह सदा सुरक्षित रहेगा। इङ्गलैण्ड तथा अमेरिका इस गारण्टी के लिए राज़ी नहीं थे। इटली ने भी फ्रान्स से समता का दावा किया। फ्रान्स इसके लिए तैयार न था। इस खींचातानी के कारण पाँचों राष्ट्रों में समझौता होने की आशा जाती रही। अतएव तीन (इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान) राष्ट्रों में ही समझौता करने का प्रयत्न किया गया।

कॉन्फ्रेन्स की प्रथम कमिटी ने कमिटी की रिपोर्ट पर विचार किया। कमिटी ने पनडुब्बियों को एकदम नष्ट करने का तो तय नहीं किया। हाँ, उनके आकार और क्षेत्र आदि के प्रश्नों पर विचार कर एक मत से बहुत सी बातें तय कीं। इसके अलावा उन्हें कम हानिकारक बनाने के लिए निम्न-लिखित घोषणा की :—

१—व्यापारी जहाज़ों के बारे में पनडुब्बियों को अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के उन्हीं नियमों को मानना पड़ेगा, जिन्हें पानी के ऊपर चलने वाले जहाज़ मानते हैं।

२—आम तौर पर एक जङ्गी जहाज़ को, चाहे वह पानी के भीतर चलने वाला हो या ऊपर, यह अधिकार न होगा कि वह एक व्यापारी जहाज़ को डुबा दे या उसे बेकाम कर दे। जब तक कि उस जहाज़ पर के यात्री, या काम करने वाले, या पत्र आदि एक सुरक्षित स्थान पर न पहुँचा दिए जावें। जहाज़ पर की नावें सुरक्षित स्थान न समझी जावेंगी। सुरक्षित स्थान के माने भूमि या कोई अन्य जहाज़ होगा।

एक बार पुनः फ्रान्स और इटली के भेदों को मिटाने का प्रयत्न किया गया। पर कोई भी सफलता न हुई। अतएव तीन राष्ट्रों में ही समझौता किया गया। ये तीन राष्ट्र इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान थे। सन् १९३० के अप्रैल की २२वीं तारीख़ को इस सन्धि पर राष्ट्रों ने अपने-अपने हस्ताक्षर किए। यह सन्धि ३१ दिसम्बर, १९३६ तक लागू रहेगी।

यह सन्धि पाँच हिस्सों में विभाजित है। और कुल इसमें २६ आर्टिकिल हैं।

१—पहिले आठ आर्टिकिलों में उपरोक्त तीन राष्ट्रों की सन्धि है, जिस पर फ्रान्स और इटली के हस्ताक्षर नहीं हैं।

२—पाँच राष्ट्रों की सन्धि में, इन लोगों ने यह निर्णय किया कि १९३१ से लेकर १९३६ तक बड़े जहाज़ के अधिकार का प्रयोग न करेंगे। इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान ने यह भी निश्चय किया वे अपने कुछ बड़े जहाज़ घटा देंगे।

३—हवाई जहाज़ों के बारे में यह निश्चय हुआ कि ऐसा कोई भी १०,००० टन वाला हवाई जहाज़, जिसमें ६'१ इञ्च से बड़ी तोप लगी हो, न बनाया जावेगा और न किसी से लिया जावेगा।

४—पनडुब्बियों के बारे में यह तय हुआ कि कोई भी २,००० से अधिक टन वाला जहाज़,जिसमें ५'१ इञ्च वाली तोप लगी हो, न बनाया जावेगा और न लिया जावेगा। प्रत्येक राष्ट्र अधिक से अधिक तीन पनडुब्बियाँ रख सकता है, जो २,८०० टन से अधिक न हों, और जिनमें ६'१ इञ्च से अधिक वाली तोप न लगी हो।
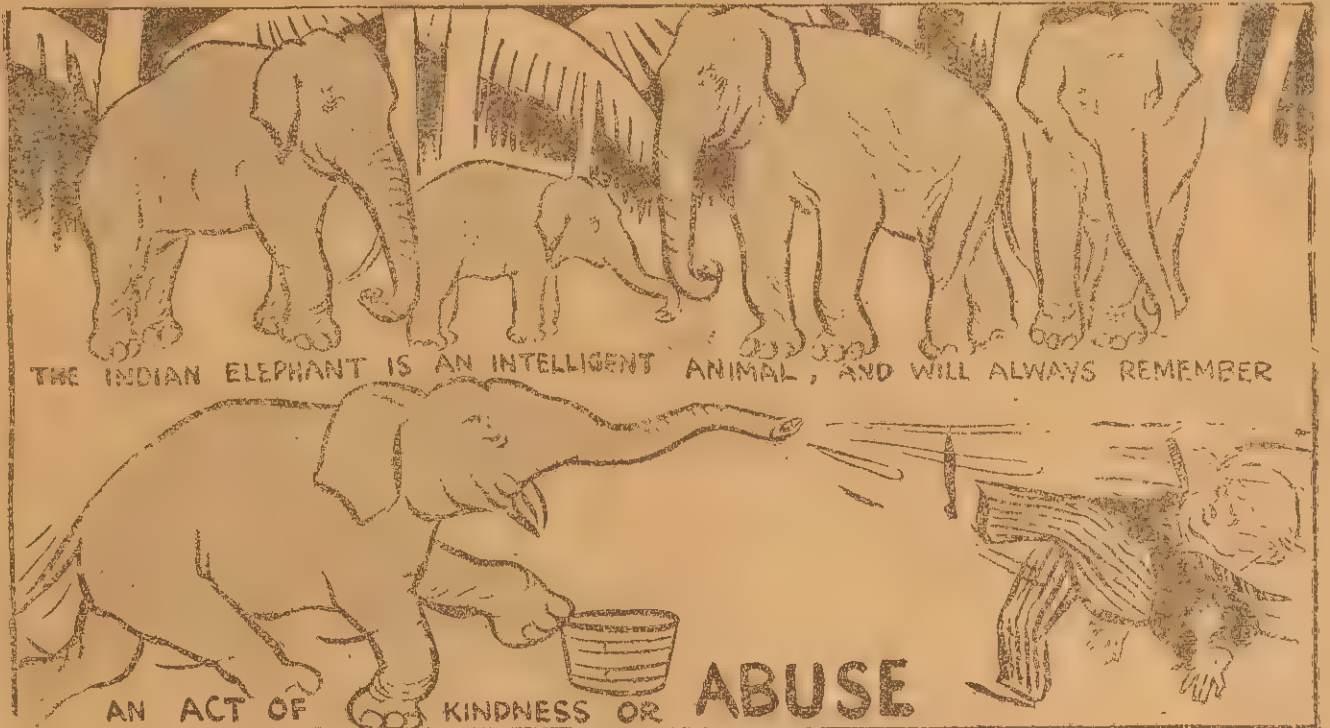
हिन्दोस्तानी हाथी बड़ा बुद्धिमान जानवर है

वह हमेशा मेहरबानियों और अपमानों को ख़ूब समझता है, वह बदला लेना भी जानता है

(यह कार्टून "डेली हेरेल्ड" नामक विलायती पत्र में प्रकाशित हुआ था)

५—सन्धि के तीसरे हिस्से में इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान के लिए युद्ध के सामुद्रिक जहाज़ों का वर्णन है।

६—अन्त में, क्रूज़रों को दो हिस्सों में बाँटा गया है। प्रथम वे जिसमें ६'१ इञ्च से अधिक वाली तोप लगी हों। द्वितीय वे जिसमें इससे छोटी तोप लगी हों। यह भी तय किया गया कि प्रत्येक राष्ट्र कुल मिला कर कितने टन के क्रूज़र, डिस्ट्रायर्स तथा पनडुब्बियाँ रख सकता है।

७—युद्ध के जहाज़ों को बदलने, रद्द करने, बेचने तथा पुराने की जगह नए बनाने के लिए नियम बना दिए गए हैं।

८—अन्त में यह भी तय हो गया है कि १९३५ में दूसरी कॉन्फ्रेन्स बैठे, जो एक नई सन्धि की रचना करे। पर यदि सब राष्ट्र चाहें तो उपरोक्त समय के पहिले ही कॉन्फ्रेन्स की जा सकती है।

* * *
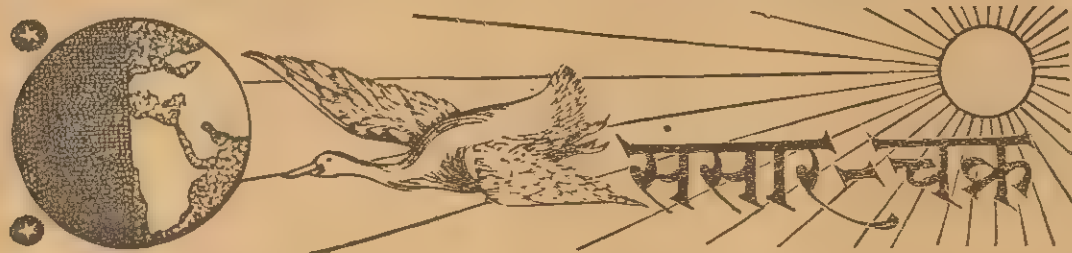
टर्की का प्रजातन्त्र

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

"हम टर्की को उसकी राजधानी (क़ुस्तुन्तुनिया) अथवा एशिया-माइनर (मेसोपोटामिया) और थ्रेस के प्रसिद्ध और समृद्धिशाली प्रदेशों से च्युत करने के लिए नहीं लड़ रहे हैं।"

"Nor are we fighting to deprive Turkey of its Capital or of the rich and renowned lands of Asia-Minor and Thrace." ५ जनवरी, सन् १९१८ की प्रसिद्ध घोषणा करते हुए ब्रिटिश महामन्त्री लॉयड जॉर्ज ने कहा—संसार और विशेषकर भारतवर्ष की मुस्लिम-जनता, जिसमें असन्तोष के चिन्ह प्रकट होने लगे थे, ब्रिटिश-न्याय और सत्य पर विश्वास करके शान्त हुई। परन्तु इस घोषणा के १० माह बाद ही जब ३० अक्टूबर, १९१८ को तुर्कों ने सन्धि की शर्तें निश्चित करने के लिए हथियार डाल दिए, दार्दनेल्स और बासफरस के क़िले मित्र-शक्तियों के हाथ में आ गए और आन्तरिक रक्षा के लिए आवश्यक सेना को छोड़ कर बाक़ी तुर्की सेना तोड़ दी गई। तब लॉयड जॉर्ज और मित्र-गण अपनी घोषणा को भूल गए और टर्की की ऐसी असहाय अवस्था में मित्र-शक्तियों के जङ्गी जहाज़ों ने क़ुस्तुन्तुनिया के बन्दरगाह में अड्डा जमा लिया। महात्मा गाँधी ने क़सरे-हिन्द मेडल लौटाते हुए वाइसराय लॉर्ड चेम्सफ़र्ड को लिखा :—

"Events that have passed during the past month have confirmed me in the opinion that the Imperial Government have acted in the *Khilafat* matter in an unscrupulous, immoral, and unjust manner and have been moving from wrong to wrong in order to defend their immorality. I can neither retain respect nor affection for such a Government."

अब यह अच्छी तरह मालूम हो गया कि क़ुस्तुन्तुनिया टर्की के हाथ से गया। अङ्गरेज़ राजनीतिज्ञ कहने लगे कि लॉयड जॉर्ज की घोषणा इसी आधार पर थी कि टर्की मित्र-शक्तियों से तुरन्त लड़ाई बन्द कर दे, परन्तु इस घोषणा के १० माह के बाद तक टर्की लड़ता रहा, और इसलिए उसने इस घोषणा का लाभ अपने हाथ से खो दिया। परन्तु वास्तव में बात यह थी कि मित्र-शक्तियाँ बहुत पहले ही मार्च सन् १९१५ में टर्की का बटवारा निश्चय कर चुकी थीं। और उसके अनुसार क़ुस्तुन्तुनिया और यूरोप का सारा टर्की का प्रदेश रूस को मिलना था और मेसोपोटामिया, ईराक़ वग़ैरा अङ्गरेज़ों के क़ब्ज़े में आने को थे। सन् १९१७ और १९१८ में रूस की बोल्शेविक सरकार ने इस समझौते के सब गुप्त काग़ज़ों को प्रकाशित करके इस षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ कर दिया और लॉयड जॉर्ज को, भारतीय मुसलमानों को भ्रम में डालने के लिए, उक्त घोषणा करनी पड़ी।

सदियों से टर्की को यूरोप से निकालने के लिए भिन्न-भिन्न षड्यन्त्र हो रहे थे, वे सफल होते दिखाई दिए। टर्की का रहन-सहन, विचार, प्रणाली यूरोप की अपेक्षा एशिया से अधिक मिलती थी और मुस्लिम राज्य होने के कारण यूरोप के ईसाई राज्य इससे मन ही मन जलते थे। मित्र-शक्तियों के हाथ में क़ुस्तुन्तुनिया आ तो गया, परन्तु कठिनाई यह थी कि मित्र-शक्तियों में से कौन सी शक्ति ऐसी विश्वासपात्र है, जिसके हाथ में उसे सौंपा जाय, जिससे सभी उससे लाभ उठा सकें। इङ्गलैण्ड मुँह बाए बैठा था, परन्तु अन्य शक्तियों को उसमें विश्वास नहीं था। मार्च, १९१५ के समझौते के अनुसार क़ुस्तुन्तुनिया पर वास्तविक अधिकार रूस का था, परन्तु रूस में बोल्शेविक सरकार होने से वह अपने सिद्धान्त के अनुसार न तो रूस ज़ार की की हुई सन्धियों से कोई लाभ उठाना चाहता था और न मित्र-शक्तियाँ ही क़ुस्तुन्तुनिया उसके क़ब्ज़े में तब तक देना चाहती थीं जब तक रूस में सोवियट सरकार की जगह 'पूँजीवाद' सरकार क़ायम न हो।

अब केवल यह आशा थी कि इसके निबटारे का भार अमेरिका पर छोड़ा जाय और उसकी जैसी सम्मति हो वैसा किया जाय। परन्तु अब अमेरिका यूरोप के झगड़ों से अलग रहना चाहता था, इसलिए उसने वार्सलीज़ की सन्धि पर दस्तख़त तक नहीं किए थे। ऐसी स्थिति में फ़्रान्स के वैदेशिक मन्त्री एम० पिचन ने एक ख़रीता तैयार किया, जिसमें उसने बड़ी योग्यता के साथ इस बात का समर्थन किया कि क़ुस्तुन्तुनिया सुलतान के अधिकार में ही रहने दिया जाय। परन्तु लॉयड जॉर्ज इसे स्वीकार नहीं करते थे। वह इस बात पर तुले हुए थे कि टर्की का नामोनिशान यूरोप में न रहे। फ़्रान्स के महामन्त्री एम० क्लेमेन्सो पहले तो लॉयड जॉर्ज के पक्ष में आ गए, परन्तु जब उन्होंने पिचन के तर्कों का पूरी तरह अध्ययन किया, तो उनका मत फिर पलट गया और वे अपनी पूरी शक्ति से इस बात का समर्थन करने लगे कि टर्की के क़ब्ज़े से क़ुस्तुन्तुनिया अलग न किया जाय। क्लेमेन्सो की दृढ़ता का परिणाम यह हुआ कि लॉयड जॉर्ज ने भी बाद को पार्लामेण्ट में उसके मत का समर्थन किया।

मित्र-शक्तियाँ परस्पर एक-दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखती थीं और अमेरिका इस झगड़े के बीच में आने को तैयार नहीं था, इसलिए अन्त में मित्र-शक्तियों को यही निश्चय करना पड़ा कि क़ुस्तुन्तुनिया टर्की के हाथ में ही रहने दिया जाय। परन्तु समझौते की अभी कितनी ही समस्याएँ बाक़ी थीं। मित्र-शक्तियों में टर्की के प्रश्नों पर बहुत मतभेद था, इसलिए टर्की को भी यह अवसर मिल गया कि वह अधिक न झुके। इङ्गलैण्ड टर्की की इस प्रवृत्ति को सहन न कर सका और तुर्कों को डर दिखलाने की नीयत से फ़रवरी १९२० में अपना जङ्गी बेड़ा और जनरल मिल्ने के अधिकार में बहुत सी मित्र-सेना क़ुस्तुन्तुनिया में भेजी गई। सुलतान की कमज़ोर सरकार में मित्र-शक्तियों का विरोध करने की शक्ति नहीं थी और इसलिए उसने उनकी इच्छानुसार १० अगस्त, १९२० को सन्धि-पत्र पर दस्तख़त कर दिए।

टर्की का इस समय पूरी तरह पतन हो चुका था, उसके साधन नष्ट हो चुके थे और उसके अस्त्र-शस्त्र तोड़ दिए गए थे। उसका साहस ग़ायब हो गया था और वह मित्र-शक्तियों के सामने पड़ा हुआ हाँफ रहा था। मित्र-शक्तियाँ वृद्ध टर्की के गले पर पैर रख चुकी थीं और उसका गला घुटने में अधिक देर नहीं थी। परन्तु ईश्वर की इच्छा और ही कुछ थी, मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने मित्र-शक्तियों के पैर को हटा कर संसार के इतिहास में वे नए पृष्ठ लिखे, जिससे यूरोप की राजनीति का प्रवाह एक बार ही फिर बदल गया।

जिस समय सन् १९१९ में सुलतान के मन्त्री पेरिस में अपनी गर्दनें झुकाए मित्र-मण्डल की लताड़ सह रहे थे और जब मित्र-शक्तियों के जङ्गी जहाज़ अपनी तोपों के मुँह क़ुस्तुन्तुनिया की ओर झुकाए हुए आग उगलने को तैयार थे, उस समय मुस्तफ़ा कमाल काले-सागर के तट पर अरज़रम में था। उसे प्रेरणा हुई कि अब समय आ गया है, जब उसे टर्की के हित के लिए उसकी बागडोर अपने हाथ में लेनी चाहिए।

टर्की की सैनिक शक्ति अब तक अनवर पाशा के हाथ में थी, परन्तु उसकी कमज़ोरी, जल्दबाज़ी और ग़लतियों से टर्की ठोकरों पर ठोकरें खा रहा था, इसलिए लड़ाई के अन्त होते ही उसकी ताक़त का भी अन्त होने लगा। उसका पतन और कमाल पाशा का उत्थान साथ ही साथ हुआ। कमाल पाशा ने सन् १९०० में क़ुस्तुन्तुनिया के उसी सैनिक स्कूल से डिग्री प्राप्त की थी, जिससे दो वर्ष पहले अनवर वह डिग्री प्राप्त कर चुका था। मुस्तफ़ा कमाल बालकान की लड़ाइयों और गल्लीपोली की रक्षा में काफ़ी यश प्राप्त कर चुके थे। लड़ाई के अन्त होने के कुछ ही दिन बाद अनवर तुर्किस्तान में किसी विद्रोह में मारा गया और वज़ीरे-आज़म ने कमाल-पाशा को जनरल मिल्ने के मना करने पर भी बयालीस तुर्की अफ़सरों का अध्यक्ष बना कर, एशिया-माइनर भेजा। इस समय कमाल पाशा तीसरी फ़ौज के इन्सपेक्टर जनरल थे।

इस समय टर्की की सारी शक्तियाँ बिखर चुकी थीं और टर्की साम्राज्य अत्यन्त अरक्षित स्थिति में था। ऐसी स्थिति से लाभ उठा कर ग्रीक और आरमीनियन राज्य की सरकारों ने काले-सागर के तुर्की प्रदेशों को आपस में बाँट लेने का गुप्त समझौता कर लिया।* स्मरना पर अपना अधिकार करने के लिए ग्रीक सेनाएँ मई में स्मरना में उतरीं और बराबर बिना किसी विरोध के आगे बढ़ने लगीं। एशियाई प्रदेशों में विदेशी सेनाओं के प्रवेश करने से मुसलमानों के भाव भड़क उठे। मुस्तफ़ा कमाल ने इस नवीन उत्तेजन का उपयोग करते हुए धार्मिक और अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों को अनातोलिया में इकट्ठा होने के लिए निमन्त्रण दिया। सितम्बर १९१९ में तुर्कों की कॉङ्ग्रेस हुई। कॉङ्ग्रेस ने सुलतान सरकार को एक लम्बा तार भेजा, जिसमें मित्र-शक्तियों को कोई भी तुर्की प्रदेश न छोड़ने का आदेश किया गया और सुलतान की सरकार की कमज़ोर नीति की निन्दा की गई।

सुलतान की कमज़ोर सरकार इसका उचित उत्तर ही क्या देती? जब कमाल पाशा को कोई सन्तोषप्रद उत्तर प्राप्त नहीं हुआ, तब उसने आज्ञा की कि पूर्वीय एशिया-माइनर के सारे प्रदेश में राष्ट्रीय धारा-सभा के लिए प्रतिनिधि भेजने के लिए चुनाव हो। तुर्की कर्मचारियों और सैनिकों ने इन चुनावों का प्रबन्ध किया, परन्तु ईसाई इस चुनाव से अलग रहे। इसी समय समाचार पहुँचा कि मित्र-शक्तियों की सेनाएँ क़ुस्तुन्तुनिया में उतर चुकी हैं और जनरल मिल्ने ने नगर पर फ़ौजी अधिकार होने की घोषणा कर दी है। इससे देशभक्त तुर्कों

* *Revue des Deux Mondes*, *Feb. 1922*, *p. 551*.

का मस्तिष्क और भी अधिक उत्तेजित हुआ। इन विचित्र स्थितियों में राष्ट्रीय धारा-सभा का चुनाव हुआ। १३ अप्रैल, १९२२ को अङ्गोरा नगर में, जो राजधानी नियत हुआ, धारा-सभा का प्रथम अधिवेशन प्रारम्भ हुआ।

अब राष्ट्रीय धारा-सभा (National Assembly) के सामने पहला काम एक सरकार क़ायम करना था, इसलिए एक केबिनेट बनाई गई और इसके अध्यक्ष मुस्तफ़ा कमाल चुने गए। एक ओर क़ुस्तुन्तुनिया की सरकार मित्र-शक्तियों की तलवार के बीच में अपनी घड़ियाँ गिन रही थी, दूसरी ओर पहाड़ियों के बीच में अङ्गोरा सरकार स्वतन्त्र और स्वच्छ वायु में अपनी शक्तियों का सङ्गठन कर रही थी। ग्रीक सेनाओं का सामना करने के लिए मुस्तफ़ा कमाल सैनिकों का सङ्गठन करने लगे। अभी तक उनके पास तुर्की सैनिकों की कुछ अव्यवस्थित टुकड़ियाँ थीं, उन्हीं के आधार पर उन्होंने धीरे-धीरे एक सुव्यवस्थित और सुशिक्षित सेना सङ्गठित कर ली। अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद यूरोप से ख़रीदा गया। अङ्गोरा सरकार को रुपए की कभी कमी नहीं हुई। इसलिए रूस के अतिरिक्त अन्य देशों से भी उन्हें जो लड़ाई का सामान चाहते थे, मिल जाता था।

१९२१ के प्रारम्भ में ही अङ्गोरा सरकार ने बाकिर-समीबे को अपना प्रतिनिधि बना कर लन्दन-परिषद् में भेजा, परन्तु मित्र-शक्तियों ने उसकी कोई बात नहीं सुनी। ग्रीक सेनाएँ यद्यपि इयूनू की सराय पर रोक दी गईं, परन्तु दूसरी तरफ़ वे अब भी आगे बढ़ती जाती थीं। अन्त में अङ्गोरा से २०० मील पर सक़रिया नदी के पास ग्रीक सेनाएँ रोक दी गईं और मुस्तफ़ा कमाल के सैनिक भी तोड़ कर लड़े। उधर ग्रीक सेना को गोला-बारूद की कमी अनुभव होने लगी थी।

अङ्गोरा से २०० मील पर जब यह घटनाएँ हो रही थीं, तब भी अङ्गोरा में सरकार के सङ्गठन का काम बड़ी तेज़ी से चल रहा था। राष्ट्रीय धारा-सभा के अधिवेशनों में उत्तेजना, जीवन और भावुकता की भरमार थी। जिस समय सभा-भवन में मुस्तफ़ा कमाल प्रवेश करते उस समय लोगों के उत्साह में बाढ़ आने लगती थी और जय-ध्वनि से भवन गूँज जाता था। मुस्तफ़ा कमाल पाशा का व्यक्तित्व तुर्कों के लिए बड़ा आकर्षक था। वे जब बोलने लगते थे तो लोग अपने को भूल जाते थे। वे धीरे-धीरे अपना जब भाषण शुरू करते तो सब कान उधर ही लग जाते थे। पर शीघ्र ही उनकी आवाज़ तेज़ होती जाती थी। एक शब्द के बाद दूसरा शब्द शीघ्रता से निकलने लगता था। उनकी भावुकता वाक्-धारा में हिलोरें पैदा करने लगती थी और सारे सभा-भवन में आग लग जाती थी। मुस्तफ़ा कमाल का एक-एक शब्द तुर्कों के लिए जादू का काम करता था।

अङ्गोरा में क़ुस्तुन्तुनिया सरकार के मुक़ाबिले में भिन्न-भिन्न भागों का सङ्गठन होने लगा, वैदेशिक कार्यालय, युद्ध-मन्त्रि-मण्डल, ख़ज़ाना, पब्लिक डेट ऑफ़िस, ओटोमन बैङ्क आदि विभाग उसी तरह बन गए, जिस तरह क़ुस्तुन्तुनिया में सुलतान की सरकार के थे। एशिया-माइनर में जो मालगुज़ारी इकट्ठी हुई, वह अङ्गोरा के ख़ज़ाने में दाख़िल कर दी गई, परन्तु उसका हिसाब क़ुस्तुन्तुनिया को भी भेज दिया। रूसी, बलगेरियन और जर्मन आदि विदेशी अफ़सर सेना में सङ्गठन करने के लिए नौकर रक्खे गए। भीतरी प्रदेश से रोज़ नए रँगरूट भरती होने के लिए आते थे। गलियाँ सैनिकों से भर गईं। चारों ओर उत्साह, आशा और देश-प्रेम के भाव तरङ्गें मारते हुए दिखाई देते थे।

अनातोलिया में तुर्कों की इस नवीन जाग्रति ने यूरोप की सारी शक्तियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। टर्की की जाग्रति से सब से अधिक चोट इङ्गलैण्ड को पहुँचती थी। टर्की के पुनर्जीवित हो जाने से तुर्क और रूस की शक्तियाँ मिल कर एशिया में ब्रिटिश हितों को बहुत धक्का पहुँचा सकती थीं, इसलिए इङ्गलैण्ड तुर्कों के इस नवीन जीवन को बड़ी सावधानी से देख रहा था। इङ्गलैण्ड, जर्मनी में फ़्रान्स की माँगों का साथ नहीं देता था, इसलिए फ़्रान्स दिल ही दिल में इङ्गलैण्ड से कुढ़ रहा था, और वह व्यर्थ ही अपने को टर्की के झगड़े में नहीं डालना चाहता था। इङ्गलैण्ड किसी बहाने से तुर्कों पर धावा बोल देता, परन्तु उसे भारतीय मुसलमानों का डर था, जिन्होंने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में ख़िलाफ़त की रक्षा के लिए भीषण आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था। अन्त को १३ अगस्त, १९२१ को इङ्गलैण्ड और फ़्रान्स ने इस ग्रीक-तुर्क युद्ध में तटस्थ होने की घोषणा कर दी, परन्तु इङ्गलैण्ड भीतर ही भीतर ग्रीक से सहानुभूति रखता था और फ़्रान्स का झुकाव टर्की की ओर था।

सन् १९२२ के प्रारम्भ होते ही ग्रीक सेनाओं का भी दुर्भाग्य प्रारम्भ हुआ। मित्र-शक्तियों ने ग्रीक और तुर्कों में समझौता कराने के लिए कितनी ही बार प्रयत्न किया, परन्तु स्मरना के प्रश्न पर समझौते की सब बातों का अन्त हो जाता था। २९ जुलाई को ग्रीक सरकार ने क़ुस्तुन्तुनिया पर क़ब्ज़ा करने की घोषणा कर दी और २५ हज़ार ग्रीक सेनाएँ मारमोरा सागर के उत्तरीय तट पर जुट गईं। अब मित्र-शक्तियों के लिए एक बड़ी समस्या उपस्थित हो गई। वे तटस्थ होने की घोषणा कर चुके थे और इस जीती मक्खी को नहीं निगल सकते थे कि अङ्गोरा-सेना को तो क़ुस्तुन्तुनिया में घुसने से रोकें और ग्रीक सैनिकों को घुस जाने दें। अन्त में उन्हें ग्रीक-सरकार को लिखना पड़ा और वहाँ से ग्रीक सेनाएँ हट गईं।

अगस्त सन् १९२२ में मुस्तफ़ा कमाल की राष्ट्रीय सेनाओं ने अफ़िम-कार हिस्सार के समीप ही ग्रीक सेनाओं पर आक्रमण किया। ग्रीक सेनाएँ पीछे हटने लगीं, एक मोर्चे के बाद दूसरा मोर्चा उनके हाथ से निकलता गया और पन्द्रह दिन में ही उनमें भयङ्कर गड़बड़ मच गई। अन्त में ग्रीक सैनिक मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए। यूरोप ने अपनी आँखें मलते हुए देखा कि ग्रीक पराजित हो चुके हैं और तुर्की सेनाएँ ग्रीक सैनिकों को खदेड़ती हुई क़ुस्तुन्तुनिया के सामने उस प्रदेश की ओर बढ़ी आ रही हैं, जहाँ यूरोपीय युद्ध की सन्धि के बाद सैनिक सङ्गठन का प्रवेश होना निषिद्ध था।

यूरोप के ऊपर महायुद्ध के बादल फिर जमा होते हुए दिखाई देने लगे। यद्यपि भारतीय आन्दोलन के प्रभाव से इङ्गलैण्ड बाहर से तटस्थ होने की चेष्टा कर रहा था, परन्तु जब ९ सितम्बर को तुर्की सेनाओं ने स्मरना में प्रवेश किया और गल्लीपोली के सामने चनक के समीपी प्रदेशों में, जो सेवरेस की सन्धि के अनुसार मित्र-शक्तियों के क़ब्ज़े में था, प्रवेश किया, तो ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि यदि तुर्की सेनाएँ तटस्थ सीमा को पार करेंगी तो लड़ाई अनिवार्य हो जायगी। १५ सितम्बर को तुर्की सेनाएँ चनक के बहुत ही समीप आ पहुँचीं और यह प्रतीत होने लगा कि यदि उन्होंने निश्चित की हुई तटस्थ सीमा को पार किया तो लड़ाई छिड़ जायगी, परन्तु फ़्रान्सीसी और इटली सरकार अब किसी नए झगड़े में पड़ना नहीं चाहती थीं।

महायुद्ध ने यूरोपीय महाशक्तियों की कमर तोड़ दी थी और नए-नए करों से वहाँ की प्रजा का दिवाला निकल रहा था। उनके बड़े-बड़े नेताओं ने घोषणा की थी कि अब एक शताब्दी तक कोई युद्ध नहीं होगा। ऐसी स्थिति में क्या उनके लिए इतना शीघ्र फिर एक नए युद्ध में सम्मिलित होना सम्भव था? दूसरी ओर तुर्की सेना ने ग्रीक सेना को बुरी तरह हरा कर यूरोप की शान किरकिरी कर दी थी और एशियाई राष्ट्रों में जो यूरोप का रोब ग़ालिब था, उसे बुरी तरह धक्का पहुँचा था। अगर तुर्कियों ने यूरोप की ताक़तों को ठुकरा कर उस प्रदेश में, जोकि टर्की से छीन कर सन्धि की शर्तों के अनुसार तटस्थ प्रदेश बना दिया गया था, बिना विरोध के प्रवेश कर लिया तो पूर्व में यूरोप का, विशेषकर इङ्गलैण्ड का सारा प्रभाव मिट्टी में मिल जायगा।

इङ्गलैण्ड एशिया के सम्बन्ध में बड़े-बड़े स्वप्न देख रहा था। टर्की की नई शक्ति से यह सब छिन्न-भिन्न होते हुए दिखाई दिए। दूसरी यूरोप की शक्तियाँ टर्की के सम्बन्ध में आगा-पीछा दिखा रही थीं, परन्तु लॉयड जॉर्ज अब चुप न रह सके। १६ सितम्बर को डाउनिङ्ग स्ट्रीट से घोषणा की गई कि ग्रेटब्रिटेन तटस्थ प्रदेश की रक्षा करने के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा और इसलिए मोर्चाबन्दी करने के लिए और ब्रिटिश सैनिक भेजे जायँगे।

"The British Government has given order to the Mediterranean Fleet to oppose by every means any infraction of these zones or any attempt on the part of Turks to cross to the European Shore."

इङ्गलैण्ड की तरफ़ से लड़ाई की तैयारियाँ होने लगीं। ब्रिटिश सरकार ने बालकान राज्यों और उपनिवेशों की सरकारों को भी इसमें योग देने के लिए लिखा। फ़्रान्स और इटली की सरकार इस पक्ष में नहीं थी कि तटस्थ प्रदेश में मोर्चाबन्दी करने के लिए और सेनाएँ भेजी जायँ। यही नहीं, वे आगे से टर्की के मामले में पूर्ण तटस्थ रहना चाहते थे। उन्होंने जो वहाँ उनकी सैनिकों की टुकड़ियाँ थीं, उन्हें भी वहाँ से उठा लिया। अब चनक में केवल अङ्गरेज़ सैनिक रह गए।

टर्की के मामले से फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड के भाव इतने तन गए थे कि यदि शीघ्र ही टर्की का मामला तय न होता तो फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड के सम्बन्ध टूट जाने की पूरी सम्भावना थी। दार्दनेल की खाड़ी में पड़ा हुआ ब्रिटिश जङ्गी बेड़ा इधर मुस्तफ़ा कमाल की फ़ौजों को रोकने की आशा कर सकता था। परन्तु चनक में ब्रिटिश सैनिकों की एक ही टुकड़ी थी और यदि कमाल के सैनिक उधर धावा बोल देते, तो वहाँ से एक भी ब्रिटिश सैनिक बच कर नहीं जाता।

२० सितम्बर की शाम को निकट-पूर्व के ब्रिटिश कमाण्डर-इन-चीफ़ हेरिङ्गटन ने तुर्की अफ़सरों को लिखा कि तटस्थ सीमा को पार करने की कोई भी चेष्टा की जायगी, तो वह अपनी जल और स्थल शक्ति से उसका पूरी तरह सामना करेगा। इसका उत्तर, क़ुस्तुन्तुनिया में अङ्गोरा सरकार के प्रतिनिधि हमीद बे ने भेजा—"राष्ट्रीय सरकार लड़ना नहीं चाहती, परन्तु शत्रु को थ्रेस से बाहर खदेड़ देने का दृढ़ निश्चय कर चुकी है।" जनरल हेरिङ्गटन ने अङ्गोरा सरकार के इस जवाब को लन्दन-सरकार के पास भेज दिया।

लॉर्ड कर्ज़न पेरिस भाग कर फ़्रान्स और इटली के प्रतिनिधियों से तुर्की की समस्या पर बातचीत करने के लिए आए। अन्त में इङ्गलैण्ड, फ़्रान्स और इटली के संयुक्त हस्ताक्षरों से ग्रीक और टर्की को शान्ति-सभा के लिए निमन्त्रित किया। इस निमन्त्रण में टर्की के अधिकार को थ्रेस के मारिज़ा और एड्रियानोपोल तक मान लिया गया और उससे निवेदन किया गया कि वह मित्र-शक्तियों द्वारा नियत तटस्थ प्रदेश में तुर्की सेनाओं को न भेजे। इस बार फिर इस बात का विश्वास दिलाया कि सन्धि होते ही क़ुस्तुन्तुनिया से मित्र-शक्तियों की फ़ौजें हट जायँगी।

तुर्की सेनाओं ने २३ सितम्बर को चनक की सीमा में प्रवेश किया। वे २४ तारीख़ को वापस चली गईं और फिर २५ तारीख़ को आ गईं। इस समय सीमा के

पास ही कमाल के ७०,००० वीर सैनिक डटे हुए थे। ब्रिटिश जनरल हेरिङ्गटन के पास केवल १०,००० अङ्गरेज़ सैनिक ही थे।

तुर्की अफ़सर और सैनिकों का जोश उमड़ रहा था, हाल की जीतों ने उन्हें आशावादी बना दिया था और वे युद्ध के पक्ष में थे। मुस्तफ़ा कमाल स्वयं एक बड़े सैनिक थे और विजय का लोभ उन्हें युद्ध की ओर आकर्षित कर रहा था, परन्तु फिर उनकी दूरदर्शिता ने भावुकता पर विजय प्राप्त की। संसार और टर्की का हित उन्हें शान्ति में ही दिखलाई दिया। उन्हें अभी आन्तरिक सङ्गठन का बहुत काम करना था, जो बिना शान्ति के हो नहीं सकता था। उन्होंने तुर्की सैनिकों को इस पक्ष में लाने के लिए अपने प्रभाव का पूरा उपयोग किया और मित्र-शक्तियों के निमन्त्रण को स्वीकृति भेज दी। इसका परिणाम यह हुआ कि पूर्व में ख़ून की नदियाँ बहते-बहते बच गईं।

३ अक्टूबर को मुडानिया में इटली, फ़्रान्स, इङ्गलैण्ड, टर्की और ग्रीस के प्रतिनिधि मिले और समझौते की शर्तें तय करने के लिए तोपों के मुँह बन्द कर दिए गए। ग्रीक सेनाओं ने थ्रेस ख़ाली कर दिया और टर्की ने यह स्वीकार कर लिया कि सन्धि होने तक वह तटस्थ प्रदेश में अपनी सेनाएँ नहीं भेजेगा।

इसके कुछ ही सप्ताह बाद, शान्ति-परिषद होने से पहले ही अङ्गोरा की महान धारा-सभा का अधिवेशन हुआ और १ नवम्बर, १९२२ के प्रस्तावानुसार सुलतान की सरकार का अन्त कर दिया गया। सुलतान ब्रिटिश जङ्गी जहाज़ में बैठ कर भागा और माल्टा में जाकर शरण ली। टर्की प्रजातन्त्र की घोषणा कर दी गई। एक पहले सुलतान अब्दुल अज़ीज़ के लड़के अब्दुल मजीद मुस्लिम-धार्मिक संसार के ख़लीफ़ा बना दिए गए, पर २७ फ़रवरी, १९२४ को धारा-सभा ने ख़िलाफ़त को बिलकुल उठा दिया। सन् १९१९ में ब्रिटिश सरकार जिस ख़िलाफ़त के भावों की रक्षा के लिए तुर्कों को कुस्तुन्तुनिया से निकालने का प्रस्ताव करने में डरती थी, तुर्कों ने उसी ख़िलाफ़त को एक दम में तोड़ कर अलग कर दिया।

२० नवम्बर, १९२२ को स्विटज़रलैण्ड के एक नगर लूसेन में सन्धि-परिषद का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। वहाँ तुर्की प्रतिनिधि इस्मतपाशा की दृढ़ता से टर्की की अधिकांश माँगें स्वीकार कर ली गईं। कमाल पाशा और कुछ तुर्की देश-भक्तों ने टर्की साम्राज्य को नष्ट होते-होते बचा लिया। यूरोपीय शक्तियाँ, जो कुस्तुन्तुनिया की ओर आँखें लगाए हुए थीं, हाथ मलती रह गईं। हेनरी केबट लोज ने अमेरिका के थियोडर रुज़वेल्ट को लिखाः—

"One of the chief objects of the war will be lost, if we do not finally expell the Turk from Europe and take possession of Constantinople as an international city, so that the straits may always be free."*

अर्थात्—"यदि हम तुर्कों को कुस्तुन्तुनिया से निकाल कर उसे अन्तर्राष्ट्रीय शहर न बना सके, तो महायुद्ध के सब से बड़े ध्येयों में से एक जाता रहेगा।" लॉयड जॉर्ज की ५ जनवरी, १९१८ वाली घोषणा और इसमें कितना महान अन्तर है। यूरोप की राजनीति के मदारियों के वाक्जाल का मूल्य क्या है, यह इससे भली प्रकार प्रकट होता है।

सन्धि की शर्तें तय करने के लिए स्विटज़रलैण्ड के एक नगर लूसेन में २० नवम्बर, १९२२ को एक परिषद प्रारम्भ हुई। जिस मुसलमानी सल्तनत को मिटाने के लिए ईसाई सरकारें बहुत दिनों तक षड्यन्त्र कर रही थीं, उसी मुसलमान धर्म के सभापति ने प्रारम्भिक भाषण में तारीफ़ करते हुए कहा—"The two great religions to which the two adversaries of yesterday owe their faith, and from which their civilization is nourished . . . have now met with the common aim of peace." इस परिषद में टर्की और ग्रीस के अतिरिक्त इङ्गलैण्ड, फ़्रान्स, जापान, संयुक्त-राज्य, अमेरिका, रूमानिया और जेकोस्लोवेकिया के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए थे।

टर्की प्रतिनिधि-मण्डल के अध्यक्ष श्री० इस्मत पाशा थे। इन्होंने बड़ी दृढ़ता और निर्भीकता से टर्की के पक्ष का प्रतिपादन किया। वर्सलीज़ की शान्ति-परिषद में मित्र-शक्तियों ने जर्मनी से मनमानी शर्तें क़बूल करा लीं, परन्तु लूसेन में मित्र-शक्तियों को पराजित जर्मनी के स्थान में विजित टर्की से पाला पड़ा था, जिसके राष्ट्रीय नेता अपने देश की प्रतिष्ठा की रक्षा पर तुले हुए थे। ३१ जनवरी, १९२३ को एक शर्तों का ख़रीता पेश किया गया, जिसके सम्बन्ध में लॉर्ड कर्ज़न ने कहाः—

डॉक्टर बी० के० दास, डी० एस-सी० (लन्दन)

आप कलकत्ता विश्वविद्यालय के ज़ूलोजी विषय के प्रतिभाशाली प्रोफ़ेसर हैं, जिन्हें विलायत से अपनी विशेष योग्यता के कारण कई स्वर्ण-पदक तथा अन्य वस्तुएँ भेंट की गई हैं।

"When we contrast the conditions of the Former Treaty of Sevres with those of the present instrument. I do not think any one will be found to complain of a lack of generosity or concession here. In fact we might be blamed for going too far. And this change has not been due simply to the fact that the Turks were victorious in the latest stage of the war with Greece, but to an increasing and sincere recognition of their own aspirations for national unity."

लॉर्ड कर्ज़न की उदारता (!) के लिए सहस्रों बधाई! पाठक देखेंगे कि जिन मित्र-शक्तियों ने जर्मनी की शर्तें लिखाने में इतनी कड़ाई से काम लिया था, जो टर्की के एक बड़े हिस्से को निगल चुकी थीं, वे ही तुर्की राष्ट्रवादियों द्वारा निगला हुआ उगलने को विवश किए जाने पर इस तरह की उदारता बघारें! यह कर्ज़न जैसे कूटवादियों के लिए ही सम्भव हो सकता था। इन शर्तों में टर्की की सीमा यूनान और कारागच के रेलवे-स्टेशन तक क़ायम की गई थी, मोसूल का झगड़ा लीग ऑफ़ नेशन्स के लिए छोड़ दिया गया था और खाड़ी व्यापार और कुछ जङ्गी जहाज़ों के आने-जाने के लिए स्वतन्त्र कर दी गई थी। टर्की में जो ग़ैर-मुस्लिम अल्प-मत जातियाँ थीं, उनके शासन की शर्तें लीग ऑफ़ नेशन्स पर छोड़ दी गई थीं। इस्मत-पाशा ने कुछ रद्दोबदल के बाद और सब शर्तें तो स्वीकार कर लीं, परन्तु कुछ न्याय और आर्थिक मामलातों में कोई समझौता न हो सका। इस समय लॉर्ड कर्ज़न ने घोषणा की कि टर्की के साथ अब अधिक रियायत करना असम्भव है। इस्मत पाशा को मित्र-शक्तियों ने भुलावे में डालने की बहुत चेष्टा की, परन्तु इस्मत इतने दृढ़ आचरण का आदमी प्रमाणित हुआ कि यूरोप के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों को अपना-सा मुँह लेकर रह जाना पड़ा। सन्धि-परिषद बिना कोई निश्चय किए हुए भङ्ग हो गई।

यूरोप में अशान्ति के बादल फिर इकट्ठा होते हुए दिखाई दिए। तुर्की राष्ट्रवादियों की दृढ़ता के सामने लॉर्ड कर्ज़न को नर्म होना पड़ा। २४ अप्रैल को लूसेन-परिषद फिर जुड़ी। इस बार एम० व्रोवस्की की अध्यक्षता में रूसी प्रतिनिधि-मण्डल भी तुर्कों को सहायता देने के लिए सम्मिलित हुआ, परन्तु होटल सिसिल में भोजन करते हुए एम० व्रोवस्की को किसी ने गोली मार दी।

पहले की तैयार की हुई शर्तों के अनुसार कारागच रेलवे-स्टेशन मारीट्ज़ा सरहद से परे था, और ग्रीस के क़ब्ज़े में आता था। यूनान-सरकार उसे देने को तैयार नहीं थी, और तुर्क उसके लिए बिना कोई शर्त नहीं करना चाहते थे। अन्त में तुर्कों की ही विजय हुई, कारागच उनके क़ब्ज़े में आ गया। अन्य आर्थिक मामलों में भी मित्र-शक्तियों को दबना पड़ा। तुर्कों से हर्जे की जो बड़ी-बड़ी रक़में माँगी जा रही थीं, वह मित्र-शक्तियों को छोड़नी पड़ीं, और भी अन्य आर्थिक मामलों में टर्की की ही विजय रही। यह भी निश्चय हुआ कि मेसेडोनिया के तुर्क एशिया-माइनर में चले जायँ, और एशिया माइनर के यूनानी मेसेडोनिया में आ जायँ। २४ जुलाई को इस्मत ने सन्धि की शर्तों पर दस्तख़त कर दिए।

लूसेन की सन्धि का परिणाम यह हुआ कि टर्की विदेशियों के सब अनुचित दबावों से रक्षित हो गया। उसका राष्ट्रीय क़र्ज़ बहुत कम हो गया। उसका शासन यूरोप के एक बड़े प्रदेश पर, जिसमें कई प्रसिद्ध नगर भी थे, मज़बूती से स्थापित हो गया, और कुस्तुन्तुनिया उसे वापस मिल गया। इसका श्रेय हम निम्न कारणों को दे सकते हैं:—

(१) कमाल पाशा, इस्मत पाशा आदि राष्ट्रवादियों का ज्वलन्त देश-प्रेम, सङ्गठन-शक्ति और दृढ़ता।

(२) तुर्कों की प्राचीन रूढ़ियों को दूर फेंक कर समय के अनुसार प्रवृत्ति होना।

(३) मित्र-शक्तियों का पारस्परिक ईर्षा और सन्देह का भाव और तुर्की प्रश्नों पर भयङ्कर मतभेद।

(४) यूनानी सरकार की निर्बलता।

इधर जब टर्की प्रजातन्त्र की विजय हो रही थी, उधर यूनानी प्रजा भी स्वेच्छाचारी शासकों के प्रति उग्र होती जा रही थी। जब टर्की का ख़लीफ़ा कुस्तुन्तुनिया छोड़ कर भागा, उसी समय एथिन्स में यूनान के बादशाह कन्स्टेनटाइन का भी सूर्य अस्त हो गया। सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और बादशाह को प्राण बचा कर भागना पड़ा। उसके मन्त्रियों और सलाहकारों पर मुक़दमा चला और ६ को उसी समय गोली से उड़ा दिया गया। उसका लड़का जॉर्ज द्वितीय सिंहासन पर बैठा, परन्तु वह भी अधिक दिन तक राज्य न कर सका। जनता प्रजातन्त्रवाद के स्थान में कोई और शासन नहीं चाहती थी, इसलिए जॉर्ज द्वितीय को भी शीघ्र ही रूमानिया में शरण लेनी पड़ी। दिसम्बर १९२३ में ही प्रजातन्त्र स्थापित हो गया और वेनीज़ुला प्रधान-सचिव बनाए गए।

* * *

* *Letters of Theodre Roosebelt and Henry Cabbot Lodge, (1925) II, 539.*

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

काशी के अमर-शहीद—स्वर्गीय श्री० कालीशङ्कर जी वाजपेयी—जो बम्बई में पुलिस की लाठी से आहत होकर मृत्यु को प्राप्त हुए थे। आपकी अस्थि काशी विसर्जनार्थ लाई गई थी।

काशी के सुप्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्ता—श्री० रामेश्वर सहाय सिंह जी—जिन्हें ३ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है। आप काशी म्यूनिसिपल बोर्ड के शिक्षा-ध्यक्ष थे। बोर्ड ने भी आपको पदच्युत कर दिया है!

१२ वर्षीय बालिका—कुमारी गुलाब बाई बाबूराव पारकर, जिन पर राष्ट्रीय झण्डा न देने के अपराध में बम्बई की पुलिस ने लाठी-प्रहार किया था, जिससे आप बुरी तरह घायल हो गई थीं।

काशी के केदार घाट का वह दृश्य, जिसमें अपार जन-समूह स्वर्गीय कालीशङ्कर वाजपेयी के अस्थि-विसर्जन के समय एकत्र हुआ था। कहा जाता है आपकी राख ले-लेकर उपस्थित जनता ने टीका लगा कर अपने को धन्य समझा था।

सूरत कॉङ्ग्रेस कमिटी की 'डिक्टेटर'—श्रीमती वसुमती ठाकोर—जो हाल ही में गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

कानपुर की वे महिलाएँ, जो नियमित रूप से घर-घर घूम कर चर्ख़ा तथा खादी का नित्य प्रचार करती हैं।

बड़ोच के देश-सेविका सङ्घ की प्रधाना—श्रीमती कुसुम बेन—जो हाल ही में गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

उर्दू पत्र-पत्रिकाओं के कुछ प्रतिभाशाली सम्पादक

श्री० रहमअली हाशिमी, सम्पादक 'हमदम'

श्री० मुर्तुज़ा अहमद ख़ाँ महम्मदज़ाई सम्पादक 'अफ़ग़ानिस्तान'

हकीम सय्यद शमसुल्लाह क़ादरी सम्पादक 'तारीख़'

श्री० जमील बेग मञ्जर स० सम्पादक 'जामे जहाँनुमा'

श्री० सञ्जर अज़ीमाबादी स० सम्पादक 'जामे जहाँनुमा'

श्री० मोहम्मद उद्दीन सम्पादक 'सूफ़ी'

श्री० ज़फ़र हाशमी, सम्पादक 'चमनिस्तान'

श्री० हादी क़ुरैशी, सम्पादक 'दिलफ़रेब'

श्री० जमाल साबिरी, सम्पादक 'अलीगढ़ पञ्च'

देश के प्रमुख स्त्री-पुरुषों की चित्रावली

श्रीमती के० के० जानकी अम्मा

जो त्रिवन्द्रम (मद्रास) के गर्ल्स हाई-स्कूल की प्रधान अध्यापिका थीं। आपने स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में ४० वर्षों तक कार्य करके हाल ही में विश्राम लिया है।

श्रीमती के० सी० दे

आप बङ्गाल ओलेम्पिक एसोसिएशन की कार्य-कारिणी सभा की सदस्या नियुक्त की गई हैं। भारतीय महिला का ऐसी महत्वपूर्ण सभा के सदस्य होने का यह पहिला ही अवसर है।

त्रावणकोर की महारानी सेतू पार्वती

आप स्त्री-कॉन्फ्रेन्स के मद्रास में होने वाले अधिवेशन की सभानेत्री चुनी गई थीं। कहा जाता है महिला कॉन्फ्रेन्स का यह अधिवेशन बहुत सफल रहा।

श्री० ए० वेङ्कटरमा अय्यर, बी० ए०, बी० एल

आप त्रावणकोर स्टेट के नए दीवान नियुक्त किए गए हैं। आपका शिक्षक जीवन बड़ा प्रतिभापूर्ण बतलाया जाता है।

बङ्गलोर के राव बहादुर डॉक्टर सी० बी० रामाराव के पोते—श्री० एस० सुब्बाराव, जिन्होंने हाल ही में आई० सी० एस० की परीक्षा पास की है।

मि० एस० आर० पाटनिस

आप प्रथम श्रेणी के पाँच स्काउटों में से एक हैं। आपको कोल्हापुर स्टेट का सर्व-श्रेष्ठ स्काउट होने का गौरव प्राप्त है।

केप्टेन दयालसिंह बेदी

आप मद्रास की स्टेटों के पोलिटिकल एजेण्ट के सहायक नियुक्त किए गए हैं।

वैद्यराज उमाशङ्कर पीताम्बर भट्ट

आपको अखिल भारतीय वैद्य-सम्मेलन की ओर से सर्वोत्तम औषधियों और उन पर वैज्ञानिक लेख लिखने के लिए सुवर्ण-पदक प्रदान किए गए हैं।

श्रीमती रोनियस

पुदुकोट्टा (मद्रास) के पुलिस-कमिश्नर श्री० एस० टी० रोनियस की धर्मपत्नी है—जो पुदुकोट्टा स्टेट की व्यवस्थापिका सभा की सदस्या नियुक्त हुई हैं।

देश के प्रमुख स्त्री-पुरुषों की चित्रावली

हाल ही में होने वाली आन्ध्र प्रान्तीय महिला-सम्मेलन की सभानेत्री—डॉक्टर के० लक्ष्मी देवी, एल० सी० पी० एस०

इलाहाबाद की कायस्थ महिला-सभा की सभानेत्री, स्त्री आर्य-समाज की प्रधाना, विधवा-आश्रम की उप-प्रधाना तथा आदर्श आर्य कन्या-पाठशाला की कार्यकारिणी सभा की सदस्या—श्रीमती कला देवी जी—आपने हाल ही में स्थानीय डी० ए० वी० हाई स्कूल को १०००) रु० दान दिए हैं।

विज़गापाटम (मद्रास) की म्यूनिसिपल कौन्सिलर श्रीमती पी० के० पङ्काजम—जो हाल ही में शिक्षा-समिति की सदस्या नियुक्त हुई हैं।

प्रयाग महिला-विद्यापीठ की परीक्षा में सम्मिलित होने वाली कानपूर की महिलाओं तथा बालिकाओं का ग्रुप
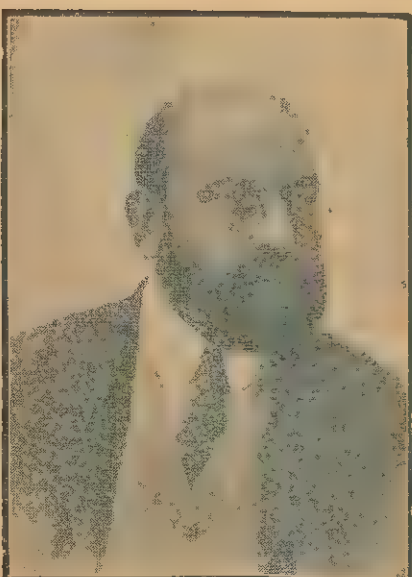
यू० पी० व्यवस्थापिका सभा के नए सदस्य—ख़ान बहादुर हाफ़िज़ मोहम्मद हलीम—आप कानपूर के प्रसिद्ध एवं धनवान चमड़े के व्यापारी हैं।

बम्बई के मेयर और भारतीय व्यापार-सङ्घ के प्रधान—श्री० एच० ए० लाल जी—जिन्हें गवर्नमेण्ट ने १९३१ में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-सभा के १५वें अधिवेशन के लिए भारतीय प्रतिनिधि चुना है!

हाल ही में विश्राम लेने वाला रङ्गून कॉरपोरेशन के मेयर—श्री० आर० बी० रशल, एम० बी० ई०। आप शीघ्र ही विलायत पधारेंगे।

सर अगर है सर, तो फिर सौदा भी सर में चाहिए !
दिल नहीं कहते उसे, जिस दिल में दर्दे-दिल नहीं !!
दिल जभी तक दिल है; जब तक, है सरापा आरज़ू !
आरज़ू दिल से अगर निकली, तो दिल भी दिल नहीं !!

इख़्तिलाफ़े[1] रङ्ग से, वह रौनक़े-महफ़िल नहीं,
दिल तो है पहलू में सब के, एक सब का दिल नहीं !
बज़्मे-हस्ती[2] में ठहर कर, हमने देखा हर तरह,
और तो सब कुछ है, लेकिन, इम्बिसाते[3] दिल नहीं !
बात बन-बन कर बिगड़ती है, तो है इसमें यह बात,
डालते थे जो असर दिल पर, वह अहले-दिल नहीं !
एक के दम से जहाँ में, दूसरे की है नमूद,[4]
दिल नहीं तो हम नहीं, हसरत नहीं, तो दिल नहीं !
खींचिए आकर ज़रा पहलू से, तो खुल जाय राज़,
आप कहते हैं, कि मेरा तीर जुज़्बे[5] दिल नहीं !
अपनी हाजत पर करे, औरों की हाजत का लेहाज़,
यों हमारा, यों तुम्हारा, यों किसी का दिल नहीं !
आपके ग़मज़ों को भी, आते हैं क्या-क्या तोड़-जोड़,
दिल नहीं पहलू में, लेकिन फिर भी मैं बेदिल नहीं !
—"नूह" नारवी

मानता हूँ मैं, यह तेरा काम ऐ क़ातिल नहीं,
क्या हुआ पहलू से दिल, पहलू में फिर क्यों दिल नहीं ?
कीजिए इसरार,[6] लेकिन इससे कुछ हासिल नहीं,
मुफ़्त कोई आपको दिल दे दे, वह शै दिल नहीं !
तुमसे क़ातिल के लिए, तुमसे सितमगर के लिए,
दिल नहीं, हाँ दिल नहीं, हाँ दिल नहीं, हाँ दिल नहीं !
ग़मज़ा[7] कहता है मुझे दो, नाज़ कहता है मुझे,
क्या करूँ मैं एक दिल है, और कोई दिल नहीं !
तर्क रस्मे-इश्क़ पर इन्साफ़ करना चाहिए,
बेमुरव्वत आप ही हैं, बेमुरौवत दिल नहीं !
—"आज़ाद" सहसरामी

सर्दमेहरी की शिकायत से, कोई हासिल नहीं,
उनकी वह पहली मुहब्बत, वह नज़र, वह दिल नहीं !
—"अदीब" कडपोई

सर में तेरे ज़ुल्फ़ का सौदा, कब ऐ क़ातिल नहीं ?
कब गिरफ़्तारे सलासिल,[8] यह हमारा दिल नहीं !
—"अख़गर" दीनाजपूरी

दिल न होता तो हमेशा, सहते क्यों दर्दे-फ़िराक़ ?
हैं वही आराम से पहलू में जिनके दिल नहीं !
किस तरह मुझसे उठे, अब नाज़े-बेजा आपका ?
अब तबीयत वह नहीं है, अब वह मेरा दिल नहीं !
—"अतहर" गुरबारी

क्या हुई अगली मुहब्बत, क्या हुआ अगला मिलाप ?
या तो अब वह हम नहीं, या आपका वह दिल नहीं !
आप छेड़ेंगे इसे, तो छेड़ कर पछताएँगे,
एक छाला है मेरे पहलू में, मेरा दिल नहीं !
तिर्छी नज़रों पर, इसे क़ुर्बान रहना चाहिए,
तुम जो "बाँके" हो तो क्यों बाँका तुम्हारा दिल नहीं ?
—"बाँके" देहरादूनी

असल उलफ़त की निगाहों में, किसी क़ाबिल नहीं,
उसको पत्थर जानिए, जो दर्द वाला दिल नहीं !
इस तरफ़ कुछ और सूरत, उस तरफ़ कुछ और हाल,
एक-दिल का लुत्फ़ क्या, हम तुम अगर इक-दिल नहीं !
रोज़ोशब इसको, तड़पने, लोटने से काम है !
"बर्क़" मिसले बर्क़,[9] क़ाबू में हमारा दिल नहीं !!
—"बर्क़" बयापूरी

शिकवए-ग़म पर हमारे, हँस रहे हैं दोस्त भी,
हो गया मालूम, अब दुनिया में अहले-दिल नहीं !
सैकड़ों मिलते, तो करता इनको भी तुम पर निसार,
एक दिल है और उस दिल के अलावा दिल नहीं !
—"मदनी" कलकत्वी

अब नहीं वह सर, कि सौदा हो तुम्हारी ज़ुल्फ़ का,
बे-नतीजा जो फ़िदा तुम पर हो, ऐसा दिल नहीं,
—"ख़लिश" गयावी

इन्तिहाँ गाहेजुनूँ में, काम दिल वालों का है,
आए क्या उस बज़्म[10] में, पहलू में जिसके दिल नहीं !
—"रयाज़" अवगुलवी

है यह सच, वे एक-दिली के; क्या नतीजा ज़ीस्त[11] का,
लेकिन अपने हम-वतन, इस पर भी तो एक-दिल नहीं !
—"सेहर" बयापूरी

कौन कहता है, कि यह मुज़्तर[12] नहीं, बिस्मिल नहीं ?
बन्दापरवर कुछ हमारा दिल तुम्हारा, दिल नहीं !!
—"सरीर" कावरी

हालते-दिल क्या कहूँ, इज़हार के क़ाबिल नहीं !
सख़्त मुश्किल है, कि अब क़ाबू में अपना दिल नहीं !
—"क़ाज़ी" दौलतपूरी

काम होना चाहिए, वादों से कुछ हासिल नहीं,
अब मेरी उम्मीद भी वजहे सुकूने[13] दिल नहीं।
"सीमाब" अकबराबादी

हम वही हैं, देख लो ! दिल भी हमारा है वही;
तुम वही हो देख लो, अब वह तुम्हारा दिल नहीं !
ख़ुद ही गुम हूँ, क्या बताऊँ मैं तुझे ऐ बेख़ुदी !
ढूँढ़ कर तू ही बता, पहलू में है, या दिल नहीं ?
दिल सितानी[14] हो चुकी, अच्छा दिल-आज़ारी[15] सही,
दर्द ही तेरा रहे, पहलू में जिसके दिल नहीं !
—"शफ़क़" अमादपूरी

दिल लगा कर, तुमसे हमने किस क़दर सदमे सहे !
क्या कहें अब हाले-दिल, क़ाबू में अपना दिल नहीं !
—"क़मर" बनारसी

कोई कहदे क्या करेंगे, यह निकम्मे हाथ-पाँव,
सर भी अब वह सर नहीं है, दिल भी अब वह दिल नहीं !
—"वजद" अज़ीमाबाद

ले उड़ी शायद, निगाहे यार-जाना[16] ले उड़ी
देखते हैं हम, तो पहलू में हमारा दिल नहीं !
—"ऐश" बयापूरी

तुम हमें भूलो, मगर हम याद से ग़ाफ़िल नहीं,
जिस तरह का दिल तुम्हारा है, हमारा दिल नहीं !
—"शौक़" सहसरामी

थे किसी क़ाबिल कभी हम, अब किसी क़ाबिल नहीं
वह जवानी, वह उमङ्गें, वह जिगर, वह दिल नहीं !
—"हामिद" अज़ीमाबादी

उनका यह आलम, कि देखा भी नहीं अब तक इधर,
मेरी यह हालत, कि क़ाबू में अभी से दिल नहीं !
—"ख़लीक़" फ़ैज़ाबादी

हैं बहुत नादिम[17] ज़माने पर, भरोसा करके हम
अब खुला, हर यक के सीने में हमारा दिल नहीं !
—"नातिक़" गुलावठी

सर अगर है सर, तो फिर सौदा भी सर में चाहिये,
दिल नहीं कहते उसे, जिस दिल में दर्दे-दिल नहीं !
—"बशीर" मलकापूरी

दिल जभी तक दिल है; जब तक है सरापा आरज़ू !
आरज़ू दिल से अगर निकली, तो दिल भी दिल नहीं !
--"ख़लील" नयाज़ी

हो कशिश दिल में, तो आ जाते हैं खिंच कर इस तरह,
गर न हो जज़्बे-मुहब्बत दिल में, तो कुछ दिल नहीं !
—"जरीह" अमरावती

बेवफ़ा से मिलके, यह भी बेवफ़ा हो जायगा,
यह ख़बर होती, तो करते ऐतबारे दिल नहीं !
—"अख़तर" नागपूरी

ख़ून की लहरों में, रह-रह कर चमक उठता है कुछ,
एक बिजली है मेरे सीने में, शायद दिल नहीं !
—"आग़ाज़" बिरारी

अब वह ज़ौक़े शायरी, "अहसाँ" न वह लुत्फ़े-ग़ज़ल,
मिट गए सब वलवले, वह हम नहीं वह दिल नहीं !
—"अहसाँ" बाँदवी

तर्क उलफ़त की हमें, देता है क्यों नासेह[18] सलाह ?
जानता है जब कि क़ब्ज़े में, हमारा दिल नहीं !
—"तालिब" मिदनापूरी

बन्दापरवर ! हमने माना हम किसी क़ाबिल नहीं !
लेकिन इतने ज़ुल्म सहना भी पसन्दे-दिल नहीं !
—"कामिल" अज़ीमाबादी

जो कहें वह कर दिखाएँ, इसके हम आमिल[19] नहीं,
दो ज़बानें क्यों नहीं, किस वास्ते दो दिल नहीं ?
हो जो इसतक़लाल[20] तो, कुछ काम शायद हो सके,
एक सूरत, एक पहलू पर, हमारा दिल नहीं !
दिल से निकले, लब तक आए, लब से पहुँचे अर्श[21] तक,
दिल ही दिल में जो रहे, घुट कर वह आहे-दिल नहीं !
क्या करूँ ऐ ख़ञ्जरे-ग़म, क्या करूँ ऐ तीरे-इश्क़ !
हैं तो दो पहलू, मगर दोनों में एक एक दिल नहीं !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१—फ़र्क़, २—संसार, ३—आनन्द, ४—प्रकट, ५—हिरना ६—हठ, ७—भाव, ८—ज़ञ्जीर ९—बिजली,

१०—सभा, ११—ज़िन्दगी, १२—बेचैन, १३—धीरज, १४—दिल लेना, १५—दुख देना, १६—प्रेमिका,

१७—लज्जित, १८—नसीहत करने वाला, १९—अमल करने वाला, २०—धीरज, २१—आकाश

तकली

[श्री० परशुराम जी मेहरोत्रा, एम० ए०]

किशोरी—भाभी, तुम तो दो महीने पहले दिन भर क्रोशिया चलाया करती थीं, ऊनी और सूती मोज़ों के लिए भैया की जान खाए रहती थीं, खाना पड़ा फुँकता रहता था, परन्तु तुम अपनी सलाइयाँ हाथ से न छोड़ती थीं—परन्तु भाभी, आजकल क्यों उससे नफ़रत हो गई है ?

भाभी—क्या करूँ किशोरी, तुम्हारे भाई सूत लाकर ही नहीं देते, ऊनी मोज़े ऊलन मिल के होने के कारण आधे विलायती हैं, मोज़ा आधा बना पड़ा है। सलाई को घिस कर पैसे के मध्य बिन्दु में छेद करके तुम्हारे भाई ने तकली बना ली है।

किशोरी—वाह री भाभी वाह ! तुमने भी ख़ूब सुनाई।

भाभी—उन्होंने तकली को अपनाया है ! वह उनके सामने नाचा करती है, उसे वे रूमाल के स्थान पर जेब में आसन देते हैं, उसे कभी मेज़ पर रख कर और कभी खड़े-खड़े घुमाते हैं। पोनी के पास उनकी चुटकी रहती है और सदा उसी पर निगाह। दफ़्तर से आते ही उसे लेकर बैठ जाते हैं, जल-पान की याद भी नहीं रहती, परन्तु तकली की तलाश तुरन्त की जाती है—सोने के समय भी तकली रानी का मुखड़ा निहारा करते हैं।

किशोरी—तो यों कहो, उन्होंने तकली को पाणि में ग्रहण किया है।

भाभी—बहिन किशोरी, कुछ न पूछो, नाक में दम है। लेकिन जैसे कतरने वाली चीज़ का नाम कतरनी और अटेरने वाली चीज़ का नाम अटेरनी, उसी तरह कातने वाली चीज़ का नाम कतनी होना चाहिए था, सो तकली कौन से हिसाब से नाम पड़ा ?

किशोरी—नाक में दम कैसा ? तुम चर्ख़ा कातो, वे तकली चलावें। भाभी, देखो उसका नाम तकली तीन कारणों से पड़ा—एक तो उसमें तकलीफ़ कम होती है, दूसरे तकले से छोटी चीज़ तकली न कही जाएगी तो क्या कही जावेगी, और तीसरे यह कि इसने भारत-माता की स्वतन्त्रता तक ली है।

भाभी—हूँ-हूँ—फ़ुरसत कहाँ जो चर्ख़ा चलाऊँ, तू तो शास्त्री-जैसी बातें करती है। क्रोशिया भी बड़ी मुश्किल से चला पाती थी, वह भी समय बचा कर ! सो उन्होंने उसकी तकली बना डाली। उस दिन मैं "हिन्दी-नवजीवन" पढ़ रही थी। उसके किसी पिछले अङ्क में यह लिखा था कि बाँस की डण्डी छील कर चिकनी बना ली जाए और एक ओर से क्रमशः ढालू रखते हुए दूसरे सिरे पर स्लेट, गोरैया या पक्के खपड़े को गोल घिस कर उसके बीचों-बीच छेद करके, उस चिप्पड़ को सीधा जमा लेने से तकली बन जाती है। न उसमें पैसे का ख़र्च और न किसी की चीज़ को जबरन छीनने की ज़रूरत। क्यों न किशोरी ?

किशोरी—फ़क़त चाक़ू की ज़रूरत पड़ती है, सो तरकारी की डलिया से उठा लिया या लड़कों के क़लम-दान से निकाल लिया !

भाभी—इस मुई का नाच भी मुझे नहीं सुहाता, क्योंकि इसकी दुनिया न्यारी है। भारी बदन वाली भी अगर नाचे तो जल्द थकेगी और नाच भी बिगड़ेगा, छरेरे बदन वाली अगर नाचे तो उत्तम नाचेगी और देर तक नाच सकती है, मगर तकली जितनी भारी होती है उतनी ही तेज़ नाचती है। हलकी तकली नाचते-नाचते जल्दी थकती है, नाच में भी स्थिर नहीं रहती और किशोरी, उसकी सूरत भी बड़ी अनोखी होती है—देखो न, पैर कितने भारी और गर्दन कितनी पतली। और कमर कितनी लम्बी, और फिर वह गूँगी होती है; तोतला अच्छा, मगर गूँगा अच्छा नहीं।

किशोरी—भाभी, तुमने तो कमाल कर दिया। मालूम होता है तुमने प्रेमी-कतैए नहीं देखे हैं। जब तकली से महीन सूत निकालने वाले उसकी ओर देखते हैं तो अपना आपा तक भूल जाते हैं। दूध जैसी धार निकालते हैं और उसके नख़रे हाथों पर लिए रहते हैं। वह तुनक-मिज़ाज होती है, कोमलाङ्गी होती है।
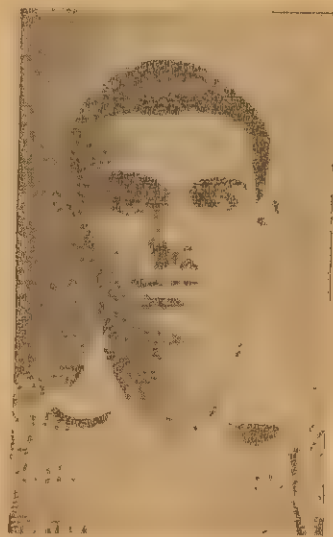
श्री० फ़िरोज़ पी० नाज़िर

आप जी० आई० पी० रेलवे के बिजली के इञ्जीनियर हैं। हाल ही में आपको कराची ऐरो क्लब से वायुयान चलाने का 'ए' श्रेणी का लाइसेन्स मिला है।

भाभी—मुझे तो ऐसी तकली तनिक भी नहीं सुहाती। जब देखो तब कच्चे धागे से लटकी रहती है, छूते ही गिर पड़ती है, इधर-उधर देखने से उलटी चलने लगती है। पोनी बासी इस्तेमाल करने से रूठ जाती है और रस्सी जैसा सूत उगलने लगती है या अड़ियल घोड़ी बन जाती है। कोमल इतनी होती है कि ज़मीन पर गिरते ही लँगड़ी हो जाती है; कभी-कभी ऐसा चुभती है कि ख़ून निकाल देती और प्राण तक हर लेती है। यह निगोड़ी कई रकम की होती है। बाँस की खपच्चियों को आड़ी-बेड़ी रख कर धन के चिन्ह जैसा बना लो, अधन्ने से या मिट्टी की चिप्पड़ से बना लो। सुपारी से बना लो, काठ की बना लो। हड्डी, सींग, लोहा, पीतल, हाथी-दाँत और दफ़्ती तक की बनी देखी है। सबकी शकलें जुदा-जुदा होती हैं—कोई चौड़ी-चकली, कोई दुबली-पतली, कोई गोरी, कोई काली, कोई भारी, कोई हलकी।

किशोरी—हाँ भाभी, तकली कई तरह की चलती देखी है, परन्तु मैं तो तुम्हारे लिए भैया जो मलाई लाते हैं, उसका सकोरा लूँगी और उसकी पेंदी घिस कर, उसकी तकली बना कर भैया को दूँगी। एक बार उनकी तकली को ख़ुद भी चलाऊँगी। परन्तु सुना है कि उसके चलाने में पाँच नियमों का एक साथ पालन आवश्यक है—बाएँ हाथ की चुटकी में पोनी पर दाब एक सा रखना तथा चावल भर पोनी निकली हुई रखना, दाहिने हाथ की चुटकी पोली और नरम रख कर पाँच इञ्च की दूरी से तार खींचना, सूत का डण्डी की जड़ में ठस लपेटना और डण्डी के सिरे पर दो फेरे देकर अटकाना तथा तकली को कभी उलटी न चलने देना। और भैया तो उसे ऐसे घुमाते हैं जैसे रुपया खनकाते हों। उनका अँगूठा व उसके पास वाली उँगली हलके झटके से काम लेती है, तकली देर तक नाचती रहती है।

भाभी—कल से एक बला घर में और आई है, वह है—'तुक-तुक तायँ-तायँ' करने वाली महागन्दी और टेढ़ी-मेढ़ी धुनकी।

किशोरी—भाभी, वह तो तकली की सखी-सहेली है। इसकी मदद से सूत गोल, एक-सा, मज़बूत और तेज़ी से निकलता है, पैसे बचते हैं और दूसरे का मुँह नहीं ताकना पड़ता है।

भाभी—मैं रोटी करने जा रही थी, वह मुई खूँटी पर टँगी थी—धोती का पल्ला लग गया, फिर से नहाना पड़ा। आजकल चिल्ले के जाड़ों में नहाना सहज नहीं।

किशोरी—तो भाभी नहाने की क्या ज़रूरत थी ?

भाभी—क्या ? क्या ताँत आँतों की नहीं बनती ? आँत क्या पवित्र चीज़ है ? कल्यानी की माँ कहती थी कि रेशम की डोरी या मूँज छोटे बाबू जी क्यों नहीं लगाते ?

किशोरी—भाभी, ताँत टिकती ज़्यादा है, काम भी अच्छा निकालती है। बात की बात में रूई को मक्खन की तरह फुला देती है, रूई को मैल, धूल में से उठा लाती है। रूई के रेशे खोलती, फैलाती, फेंकती, काटती और गेंद की तरह उछालती है। इसी ताँत में गाँधी महात्मा तो सङ्गीत बताते हैं और तुम उसे छूना तक पसन्द नहीं करतीं। अरे मोरे राम !

भाभी—ना बाबा, धुनकी में बीसों खटराग होते हैं, मेरे तो हाथ दो ही मिनट में थक जाते हैं।

किशोरी—तो तुम्हें क़ायदे से धुनना न आता होगा, अच्छा अगले इतवार को मैं आऊँगी और धुनना सिखाऊँगी। मुझे आता है।

भाभी—अच्छा किशोरी, अगर मैं भी कातूँ तो कितना कपड़ा बनेगा ?

किशोरी—एक घण्टे में लगभग १०० गज़ सूत निकलना तकली से कठिन नहीं। वर्धा-आश्रम के बालक तो इससे दुगुना सूत फ़ी घण्टा कात लेते हैं, इस प्रकार सौ गज़ सूत रोज़ जमा करते जाने से १ गज़ लम्बा और १ गज़ चौड़ा कपड़ा महीने के अन्त में मिलेगा। आजकल रूई तीन सेर की है और सेर भर में पाँच गज़ खद्दर तैयार होता है, तो मानो एक आना गज़ लागत पड़ेगी (बुनाई अलग), लेकिन इसमें १० मिनट छोटी धुनकी से धुनना भी शामिल है। गाँधी महात्मा तक रोज़ धुनते व कातते हैं ! देखो भाभी, अगर इतना न कात सको, तो ४० गज़ ही रोज़ काता करो, भैया की जेब के रूमाल ही निकल आया करेंगे ! बाँजे छाँटने और निंदा-गाथा में भाग लेने के बजाय अगर यही किया करो तो कपड़ा का कपड़ा मिले, उससे प्रेम भी बढ़े, स्वभाव भी शुद्ध हो।

भाभी—अच्छी बात है, रखूँगी और ज़रूर सीखूँगी। मगर सूत बुनवा कर कौन देगा ? हलकी धुनकी कहाँ से मिलेगी ?

किशोरी—सत्याग्रह-आश्रम साबरमती, नवयुवक चर्ख़ा-मण्डल कानपुर, खादी-भण्डार कलकत्ता—की धुनकियाँ उत्तम होती हैं। खद्दर बुनने में कोरी सिद्ध-हस्त होते हैं।

* * *

स्त्रियों का ओज

राजपूतनी की राख

[लेखक—???]

"रणथम्भोर का दुर्जय दुर्ग उस दैत्य ने विजय कर लिया। सामन्त हम्मीर ने १ वर्ष वीरता से युद्ध किया और अन्त में वह मारा गया। वहाँ एक भी मर्द जीवित नहीं है। लाशें गली-कूँचे में सड़ रही हैं और २४ हज़ार स्त्रियों ने जौहर-व्रत से अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा की है। वह बड़ा भयानक, बड़ा ख़ूनी, बड़ा निर्दयी, बड़ा पतित नर-पशु है, अब वह अन्धाधुन्ध चित्तौर पर चढ़ा आ रहा है।"

"स्वामिन्, आप अधिक भयभीत प्रतीत होते हैं।"

"महारानी, मैंने राजपूतनी का दूध पिया है, और मैं राजपूत के वीर्य से उत्पन्न हूँ। भय क्या होता है, मैंने नहीं जाना। पर उस नीच का उद्देश्य अत्यन्त कुत्सित है।"

"वह चित्तौर पर दाँत रखता है न? चित्तौर रणथम्भोर तो नहीं। क्या आपके पास रजपूतों का अभाव है?"

"नहीं प्रिये!"

'क्या उन्हें प्राण प्यारे हो गए हैं?"

"नहीं-नहीं प्रिये, चित्तौर के सीसोदिया बाहरी के जाए असल नाहर हैं!"

"फिर चिन्ता क्या है स्वामिन्?"

"वह चित्तौर-विजय के लिए नहीं आ रहा है"

"फिर किस लिए आ रहा है?"

"वह बात कहने योग्य नहीं"

"फिर भी कहिए तो"

"वह तुम्हारे लिए आ रहा है"

"उसका ऐसा साहस?"

"उसने गुजरात के राजा कर्ण को मार कर उसकी रानी और बेटी को ज़बर्दस्ती अपने घर में डाल लिया है।"

"पर पद्मिनी गुजरात की रानी नहीं, सीसोदिया-वंश की कुलवधू है।"

"पर प्रिये, उसका प्रस्ताव अद्भुत है"

"वह क्या है—सुनूँ'

"वह केवल एक बार अपनी आँखों से तुम्हारा रूप निहार कर लौट जाना चाहता है; वह भी प्रत्यक्ष नहीं, शीशे की परछाईं में।"

"पर चित्तौर के धोबी भी अपनी स्त्री की यह अप्रतिष्ठा सहन न करेंगे।"

"पर प्रिये, सहस्रों प्राणों के वारे-न्यारे का प्रश्न है, कदाचित इस चित्तौर का भी।"

"क्या महाराजा उसके नीच प्रस्ताव से सहमत हैं?"

"नहीं, मैं सिंहल-कुमारी की प्रतिष्ठा के लिए प्राण देने को अनायास ही तैयार हूँ, यह साधारण बात है, और सीसोदिया भी नामर्द नहीं—पर क्या अपनी स्त्री की रक्षा के लिए मैं हज़ारों बेटियों-बहुओं को विधवा बनाऊँ? चित्तौर के दुर्ग को खण्डहर होने दूँ? इस तूफ़ान से योंही टक्कर ले लूँ! प्रिये, राजपूत के लिए युद्ध में प्राण त्यागना उसका सौभाग्य है, पर राजा के लिए राजनीति ही सर्वोपरि है।"

"तब आपकी राजनीति कहती है कि इस अपमान का घूँट पी लिया जाय, पद्मिनी की मुख-छवि म्लेच्छ को दिखा दी जाय, और चित्तौर का सङ्कट बिना रक्त-पात के टाल दिया जाय?"

"हाँ रानी, राजनीति यही कहती है"

"तब मैं यह सोच देखूँ कि प्राण दूँ या प्रतिष्ठा?"

"नहीं, यह सोच देखो कि प्रतिष्ठा दूँ, या सहस्रों सीसोदियों का रक्तपात बचाऊँ, चित्तौर का सर्वनाश बचाऊँ, सहस्रों कुल-बहुओं को विधवा होने और आग में जल मरने से बचाऊँ?"

"सोच लिया स्वामिन्, विलम्ब का काम नहीं। मैं अपनी प्रतिष्ठा का बलिदान दूँगी, चित्तौर को नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। राजपूत बालाओं के माथे का सौभाग्य-सिन्दूर अचल रहे। पद्मिनी के लिए उनके पति और पुत्रों का एक बूँद रक्त भी न गिरने पावेगा। जाओ कह दो उस ख़ूनी पशु से, उस घृणित म्लेच्छ से, वह आकर अच्छी तरह इस कलङ्किनी का मुख देख जाय।"

"रानी, मैंने उससे एक प्रस्ताव किया था।"

"क्या स्वामिन्?"

"यह कि यदि मैं उसे आत्म-समर्पण कर दूँ, तो क्या वह सन्तुष्ट होगा?"

"नहीं स्वामी, आपके प्राणों को वह क्या करेगा। उसे चाहिए मेरा रूप-दर्शन। जाइए दिखा दीजिए। और सुनिए—"

"क्या रानी"

"क़िले को और अपने आपको सर्वथा सुरक्षित रखिए। वह शत्रु निरस्त्र और एकाकी आवे।"

"ऐसा ही होगा रानी"

२

"महाराज, देख लिया। आप बड़े ख़ुशक़िस्मत हैं, ऐसी ख़ूबसूरत रानी आपने पाई। वाह! क्या कहने हैं, जैसे सोने की मूर्ति हो।"

"सुलतान, व्यर्थ रक्तपात से बचने और आपकी मित्रता के वचन पर भरोसा करके मैंने यह अपमान-जनक काम किया है, जो सीसोदिया वंश के किसी अदने व्यक्ति ने भी न किया होगा।"

"महाराज, आप हमारी दोस्ती का भरोसा रखिए। ताज़िन्दगी यह क़ायम रहेगी। हम अब पगड़ी बदल भाई हुए। लीजिए हमारी पगड़ी और दीजिए हमें अपनी।"

"सुलतान, मैं आपका विश्वास करता हूँ। यदि इस अप्रतिष्ठा के बदले दिल्ली के तख़्त की दोस्ती चित्तौर को मिल जाय तो मैं समझूँ कि मुझे मेरी अप्रतिष्ठा का बदला मिल गया।"

"ओह, आप इसे बेइज़्ज़ती क्यों कहते हैं, जब हम भाई-भाई हुए। अरे! फाटक आ गया। महाराज, अब आप क्यों तकलीफ़ करते हैं? अरे, इतनी दूर आपको आना पड़ा, अब आप कहाँ तक चले आयेंगे?"

"सुलतान, और ज़रा दूर सही, आप हमारे अतिथि हैं। अतिथि-सत्कार हमारा कुल-धर्म है। फिर आप दिल्ली के सुलतान हैं।"

"आपकी शराफ़त और तवाज़ा का मैं बहुत ही क़ायल हूँ। आप वाक़ई दोस्ती के क़ाबिल हैं। और अच्छा, अब मैं जल्द ही छावनी उठा लूँगा। आपकी क्या राय है, अरे, आप फाटक से बहुत दूर आ गए, (इधर-उधर देख कर) कोई है?"

(एकदम झाड़ियों से सशस्त्र यवनों का निकल कर राणा को देखते-देखते क़ैद कर लेना, और घोड़े पर बाँध कर तीर की भाँति सुलतान का भाग जाना। क़िले में हलचल मच जाना)

३

"काकी रानी, अब क्या करना?"

"बेटा बादल, घबराओ नहीं, मैं महाराणा को लाऊँगी।"

"काकी, हम लोग युद्ध के लिए प्रस्तुत हैं"

"नहीं बेटे, यह युद्ध का अवसर नहीं, काँटे से काँटा निकाला जायगा। गोरा को बुला लो।"

'जुहार, काकी रानी"

"गोरा और बादल, सुनो पुत्रो—तुम अल्पायु हो, पर मुझे तुम्हारी ही आवश्यकता है, कहो तुम्हारी भुजा में कितना बल है?"

'यथेष्ट है, काकी रानी"

"अच्छी बात है, सुनो। सुलतान को लिख दो कि रानी अपनी सहेलियों सहित आपकी सेवा में आती हैं, युद्ध करने की आवश्यकता नहीं। महाराज को छोड़ दिया जाय।"

"यह क्या काकी......... ?"

"सुनो, सात सौ डोलियाँ इस समय क़िले में तैयार हैं। उन सब में प्रत्येक में दो-दो सशस्त्र योद्धा बैठा दो। ऊपर परदा डाल दो। ये सात सौ मेरी सहेलियाँ होंगी।"

भारतवासियों के प्रति

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

(१)

करते स्वदेश का हो तुम अपमान यदि
पूजा करते हो उसके न प्रति कन की,
जो लगाते देश-हित में उसे नहीं हो तुम
करते हो दुर्दशा बड़ी स्वकीय धन की,
देश पर बलिदान करते उसे नहीं जो
मिट्टी में मिलाते महिमा हो निज तन की
वह मन-संज्ञा-योग्य ही कभी नहीं है, और
देश-सेवा के हुई न गति जिस मन की।

(२)

दमन तुम्हारा प्रति क्षण हो रहा है हाय,
भीति तुमको है एक बार के दमन की,
छोड़ते स्वदेश-हित-हेतु हा नहीं हो उसे
छिन सकती जो किसी क्षण राशि धन की,
अगणित तन धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं
ममता है एक बार कुछ कोटि तन की,
क्षति बार-बार सहते हो, एक बार नहीं
गति न समझ पड़ती तुम्हारे मन की!

(३)

आज भी तुम्हारे चरणों पर पड़ी है बड़ी
जग की सकल राशियों से राशि धन की,
प्रकृति ने अगणित तुमको बना दिया है
हो न सकती है तुमको तो कमी जन की,
है विचित्र बात और समय की घात जो कि
तुमको भी रहती है भीति यों दमन की,
मुट्ठी भर जनों* के मनों का देखो समुत्साह
और ज़रा देखो दशा अपने भी मन की।

* अङ्गरेज़ों

"यह कैसी सहेलियाँ ?"

"और सुनो। प्रत्येक डोली में चार-चार सावन्त कहार बन कर लगे चलेंगे। ये सब सशस्त्र होंगे और ऊपर वस्त्र से हथियारों को ढक रक्खेंगे।"

"मैं समझ गया काकी"

"मैं भी समझ गया"

"ठहरो गोरा, तुम्हारा गोरा नाम क्यों है, जानते हो? तुम चित्तौर में सब से गोरे और सुन्दर बालक हो। तुम काकी रानी के डोले में अपनी ढाल-तलवार लेकर जा डटो।"

"जय रानी की, हम सूर्यास्त से प्रथम ही महाराज को ले आवेंगे।"

"वहाँ पहुँच कर तुम एकान्त में क़नात के पर्दे में डोलियाँ ले जाना। और एक बार महाराज से एकान्त में मुलाक़ात करके बन्धन-मुक्त कर देना और म्लेच्छों पर टूट पड़ना। आगे तुम्हारा भुज-बल रहा।

"काकी, हम सूर्यास्त से प्रथम ही लौट आवेंगे, आप निश्चिन्त रहें।"

"अभी पत्र लिख दो और तैयारी करो, सभी योद्धा चुने हुए हों।"

"ऐसा ही होगा, काकी रानी।"

४

"पहरेदार! यह कोलाहल कैसा है?"

"आपकी रानी साहिबा, सुलतान की ख़िदमत में आई हैं। बाप रे—कितनी डोलियाँ हैं। शायद तमाम फ़ौज के सिपाहियों को बाँदी बनेंगी, जनाब उसी की ख़ुशी में जश्न हो रहा है।"

"यह तू क्या बकता है—पाजी"

"जनाब महाराज—ज़बान सँभालिए, यह आपका क़िला नहीं, यहाँ पाजी कोई नहीं—बन्दा पठान है।"

"क्या यह सच है?"

"नहीं तो नाच, गाना और शराब योंही उड़ रही है?"

"रानी कहाँ है?"

"सुलतान की बग़ल में होंगी"

"हरामज़ादे, क्या तूने देखा है?"

"हज़रत दुपहर से डोलों का ताँता बँधा है, क्या हमारी आँखें फूट गई हैं। सभी को मालूम है।"

(एक सैनिक)

"महाराज, रानी साहिबा आपसे मुलाक़ात करने आई हैं। डोला हाज़िर है।"

"मुलाक़ात की ज़रूरत नहीं—उसे मेरे सामने से हटाओ।"

"मैं सुलतान का हुक्म बजा लाता हूँ, आपका नहीं—बन्दा रुख़सत होता है। पहरेदार, तुम भी हट जाओ। सुलतान का हुक्म है कि मुलाक़ात अकेले में होगी। महाराज! सिर्फ़ आधा घण्टा।"

(प्रस्थान—डोली आती है, महाराणा अग्निमय नेत्रों से देखते हैं। भीतर से गोरा निकलता है।)

"यह क्या?"

"चुप, लीजिए हथियार पहनिए। ठाकरों, तुम महाराज की बेड़ियाँ काट दो। रेती है?"

"है"

"गोरा!"

"महाराणा, सात सौ डोलियों में १४ सौ योद्धा हैं। ढाई हज़ार कहार के वेश में हैं। आइए म्लेच्छों पर टूट पड़ें।"

"लाओ मेरी तलवार, क्या शत्रु बेसुध हैं?"

"सब शराब और नाच-तमाशे में मस्त हैं।"

"चलो"

"चलो"

"जय एकलिङ्ग"

"जय एकलिङ्ग" (प्रचण्ड घोष)

"मारो"

"काटो"

"पाजी"

"म्लेच्छ"

"हाय-हाय"

"तोबा-तोबा"

"ले दुष्ट, वह मारा"

"आह! मरा"

"पानी-पानी"

"मारो-मारो"

"जय एकलिङ्ग की"

"जय महाराणा की"

"अरे भागो"

"भागो-भागो"

बधाई

सुप्रसिद्ध समाज-सेवी—मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव लिखते हैं :—

'भविष्य' बड़ा ही सुन्दर निकल रहा है। उसका सुन्दर सम्पादन आपकी सम्पादकीय योग्यता का परिचायक है। मेरी बेवक़ूफ़ियाँ छोड़ कर, बाक़ी जितने लेख निकले हैं, सभी पठनीय और सामयिक हैं। चित्रों के लिहाज़ से भी 'भविष्य' हिन्दी का अद्वितीय पत्र है। परन्तु मुझे सब से अधिक पसन्द है, श्री० चतुरसेन शास्त्री की 'तरलाग्नि'। वास्तव में शास्त्री जी कमाल करते हैं। 'दुबे जी की चिट्ठी' का क्या कहना है! हज़रत पुराने घाघ हैं; ख़ूब पते की कह जाते हैं। मेरी तो राय है कि इस सम्बन्ध में वह जगद्गुरु के भी गुरु हैं! सप्ताह भर के समाचारों का संग्रह और उनका विभाग भी बड़ी सुन्दरता से हो रहा है।

"गोरा?"

"राणा!"

"तुम कहाँ हो?"

"महाराज, बादल मारे गए, आप धीरे-धीरे क़िले की ओर बढ़िए। पहुँचने का सङ्केत कर दें।"

"तुम पीछे हटते जाओ गोरा, तुम बालक हो, म्लेच्छों से मैं निबट लूँगा।"

"अन्नदाता, यह तो असली युद्ध नहीं, जाइए चित्तौर की रक्षा कीजिए।"

"गोरा, बेटा, सावधान—मैं नई सेना भेजता हूँ।"

"महाराणा, काका जुहार, निर्भय जाइए। क़िले में पहुँच कर सङ्केत कर दीजिए।"

५

"महारानी, अब दुर्ग की रक्षा असम्भव है, मैंने सेना को विसर्जन कर दिया है। केसर के कड़ाह चढ़ गए हैं, जिसे मरना हो केसरिया धारण करे, प्यारी अब तुम भी अपनी तैयारी करो।"

"स्वामी, इतना शोक न करो; हम तैयार हैं। हमारे लिए स्थान कौन सा नियत किया है?"

"क़िले की गुप्त सुरङ्ग में। यथासम्भव ज्वलनशील पदार्थ इकट्ठे कर दिए हैं। पूर्वी द्वार का लौह-फाटक बन्द कर दिया गया है। आग दे दी गई है। तुम सब कितनी हो?"

"कुल १४ हज़ार"

"आज चित्तौर को यह दिन देखना पड़ा प्रिये! हम शीघ्र मिलेंगे।"

"स्वामिन् इस भाँति मरने में तो मुझे गर्व है, पर शोक यही है कि चित्तौर का विध्वंस मेरे लिए हुआ। मैं प्रतिष्ठा बेच कर, छल करके भी उसे न बचा सकी। मैं सीसोदिया वंश की राहु बनी।"

"ऐसा न कहो प्रिये—आह! यह कौन है? राजदुलारी! उसे मेरे सामने न आने दो—जाओ ले जाओ। रानी, अब समय नहीं है।"

(लड़की का प्रवेश)

"माँ, यह इतनी आग कैसी है?"

"चलो बेटी, हमें वहीं चलना है"

"माँ, मुझे भय लगता है, मैं जल जाऊँगी"

"चलो बेटी, क्षत्रिय पुत्री भय नहीं किया करतीं"

(बहुत सी स्त्रियों का प्रवेश)

"जय महारानी, हम प्रस्तुत हैं"

"और राजपूत बालाओ, गले मिल लो, जिससे स्वर्ग में हम फिर मिलें।"

"अरे तुम रोती हो?"

"और तू? प्यारी बच्ची"

"अरी माता, तुझे इस आयु में भी भय है"

"बहू, मेरा हाथ दृढ़ता से पकड़—आज अग्निदेव से हमारा ब्याह होगा।"

"जय अग्निदेव"

"जय मा वसुन्धरे"

"जय पद्मिनी रानी"

"जय सीसोदिया वंश"

"जय चित्तौर—जय चित्तौर—जय—जय—जय!"

*　　*　　*

"वीरो, तुम कितने हो?"

"महाराणा तीन सौ दस"

"तलवारें तो सब पर हैं न"

"हाँ अन्नदाता"

"जिसे प्राण प्यारे हों, वह अवश्य चला जाय"

"जय चित्तौर की—हम आज अमर होंगे"

"सरदारो, तुम्हारा नाम सदा जागता रहेगा"

"जय सीसोदिया वंश की"

"देखो, राजमहल भस्म हो गया—वह लपटें उठ रही हैं, हमारी पुत्रियाँ, बधुएँ, माताएँ, सब स्वर्ग में पहुँच चुकीं, चलो अब हम चलें।"

"चलो दरबार"

"जय एकलिङ्ग! फाटक खोल दो"

"जय एकलिङ्ग"

"मारो"

"मारो"

"मारो"

"वह काटा"

"वह मारा"

"हाय-हाय"

"जय एकलिङ्ग"

"जय चित्तौर"

"जय सीसोदिया वंश, जय—जय—जय!"

*　　*　　*

"गाँधी का जेल में रहना ब्रिटिश शासन पर कलङ्क है"

"हर एक शिक्षित भारतीय अपने देश में ही एक ज़बरदस्त क़ैदी है"

"एक विचारवान और निष्पक्ष व्यक्ति की सम्मति के अनुसार भारत की वर्तमान आसन्न परिस्थिति के विरोध में इससे अधिक सङ्गत और युक्तिपूर्ण बात नहीं कही जा सकती, कि भारतीयों का सर्वस्व गाँधी, और उसके साथ अन्य प्रतिभाशाली, योग्य और सच्चे देशभक्त भारतीय, हिंसात्मक अपराधों के कारण नहीं, बल्कि केवल राजनैतिक क़ैदियों की हैसियत से जेलों में बन्द हैं। भारत का वर्तमान वायु-मण्डल इतना दूषित हो गया है, कि उसके कारण हर एक शिक्षित भारतीय अपने देश में एक ज़बरदस्त क़ैदी बन गया है। वह स्वतन्त्रता, जिसे भारत संग्राम के बघेले और भयङ्कर अस्त्रों से कभी प्राप्त न कर सकता, सत्याग्रह के नए आविष्कृत अस्त्र के उपयोग से उसकी ओर प्रबल वेग से दौड़ी जा रही है। जेलें लबालब भर चुकी हैं और अब उनमें और ठूँसठाँस करना उनकी परिमित शक्ति के बाहर है।"

श्री० डब्ल्यू नॉर्मन ब्राउन नामक सुप्रसिद्ध विद्वान ने वर्तमान भारतीय आन्दोलन तथा इसके प्रवर्तक महात्मा गाँधी के सम्बन्ध में, 'जापान टाइम्स' में एक लेख प्रकाशित कराया है। उसका आशय पाठकों के मनोरञ्जनार्थ यहाँ दिया जाता है:—

भारतवासियों के सब से प्यारे नेता, जिन्हें उन्होंने 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया है, इस समय जेल में बन्द हैं। वे अनिश्चित समय के लिए जेल में रक्खे गए हैं और उनका छूटना ब्रिटिश शासकों की इच्छा के अधीन है। अदालत में अपने मामले की जाँच के लिए दबाव डालने का भी उन्हें कोई अधिकार नहीं है!

इस महापुरुष का अपराध क्या है? क्या उनके आत्म-चरित से इसका कोई आभास मिल सकता है? वे कहते हैं:—

"मेरे अनुभवों ने मेरे हृदय में यह विश्वास दृढ़ कर दिया है कि 'सत्य' ही ईश्वर है। और यदि मेरी इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय और प्रत्येक पन्ने से यह स्पष्ट न हो कि 'सत्य' की प्राप्ति के लिए अहिंसा ही एकमात्र उपाय है, तो मेरा इस पुस्तक का लिखना व्यर्थ है।"

यह निश्चित है कि इस सिद्धान्त से किसी को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँच सकती, क्योंकि यहाँ प्रत्येक कार्य का आधार अहिंसा है। इस सिद्धान्त का उपासक एक गाल पर चपत खाने पर दूसरा गाल भी फेर देना उचित समझता है। यह वह सिद्धान्त है, जो दूसरे व्यक्ति के लिए, चाहे वह परिचित हो या अपरिचित, आत्म-त्याग करने और उसके लिए अपनी जान तक दे देने का आदेश करता है।

एक अन्य स्थान पर यही महापुरुष कहता है, कि "उस 'सत्य' का विश्वव्यापी अस्तित्व जानने के लिए, मनुष्य में संसार के छोटे से छोटे जीव पर भी उसी प्रकार प्रेम करने की शक्ति होनी चाहिए, जिस प्रकार वह स्वयं अपने वास्ते करता है। जो मनुष्य उस पथ की ओर अग्रसर होता है, वह अपने जीवन को सङ्कुचित नहीं रख सकता, उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ता है। सत्य की यही अनन्य उपासना मुझे राजनैतिक क्षेत्र में भी खींच लाई है, और बिना किसी सङ्कोच के मैं यह कह सकता हूँ, कि जो लोग राजनीति को धर्म से विभिन्न बतलाते हैं, वे वास्तव में धर्म के सच्चे स्वरूप को नहीं जानते।"

महात्मा की परीक्षा

अब यह बिलकुल स्पष्ट हो गया कि यह महापुरुष जेल में क्यों आए। अपने धार्मिक विचारों को केवल आध्यात्मिक विषयों तक मर्यादित न कर, उन्होंने उनका अपने देशवासियों के सामाजिक और आर्थिक उद्धार में भी व्यावहारिक उपयोग किया, और इस प्रकार राजनैतिक संग्राम में भाग लेने से वे अपने को न बचा सके। अनेक बातों में वे सरकार के विरोधी नहीं हैं। उदाहरणार्थ, उन अभागे अछूतों के सामाजिक उत्थान में, जिनकी उच्च कहलाने वाले हिन्दुओं पर छाया मात्र पड़ जाने से उन्हें गङ्गा-स्नान करना पड़ता है, सरकार के साथ उनकी पूर्ण सहानुभूति है। किन्तु अन्य बातों में वे सरकार के कट्टर विरोधी भी हैं। इस विरोध के लिए उन्हें अनेक बार गालियाँ, धमकियाँ और सज़ाएँ भोगनी पड़ी हैं। जिस समय उन्होंने दक्षिण अफ़्रिका में भारतीय मज़दूरों के लिए मनुष्यत्व के साधारण अधिकारों के लिए आन्दोलन खड़ा किया था; जिस समय चम्पारन में उन्होंने उस विधान के विरुद्ध युद्ध किया था, जिसमें किसान अपनी नील की खेती का $\frac{३}{२०}$वाँ भाग खेतों के मालिकों को देने के लिए बाध्य किए गए थे; जिस समय उन्होंने १९१९ में पञ्जाब में होने वाले अत्याचारों से पीड़ित जनता को शान्त करने का प्रयत्न किया था; जब खेड़ा में लगान की मुआफ़ी के लिए उन्होंने आन्दोलन का नेतृत्व ग्रहण किया था, उन अवसरों पर उन्हें कम मुसीबतें नहीं उठानी पड़ी थीं। और फिर जब उन्होंने लङ्काशायर की छाती पर घूँसा मार कर भारत में खद्दर का प्रचार आरम्भ किया, या जिस समय असहयोग आन्दोलन के अन्त में, इस 'शैतान' गवर्नमेण्ट की अवज्ञा के आन्दोलन का श्रीगणेश करना चाहा (किन्तु अपने अनुयायियों के हिंसात्मक रुख़ के कारण वैसा नहीं कर सके), और सन् १९३० में, जब उन्होंने नमक-क़ानून को भङ्ग किया और भद्र-अवज्ञा आन्दोलन फिर से प्रारम्भ किया, उस समय भी उन्हें धमकियों और गिरफ़्तारियों का कम सामना नहीं करना पड़ा।

किसी देश पर विदेशी शासन जितना असह्य प्रतीत होता है, उतना देशी शासन नहीं। और उस समय तो यह विदेशी शासन बिलकुल ही असह्य प्रतीत होने लगता है, जब एक साम्राज्यवादी और स्वेच्छाचारी गवर्नमेण्ट थोड़ी सी अशान्ति में ही पूर्ण नृशंसतापूर्वक उसे कुचलने पर तुल जाती है। इसी नीति के कारण भारत में रहने वाले कुछ सङ्कुचित विचारों के यूरोपियन गाँधी के विरुद्ध अपना राग अलापा करते हैं और इसी नीति के कारण साम्राज्य के मोरचा-रक्षक उनके सिद्धान्तों पर सदैव कुठाराघात करते रहते हैं!

आज इस घोर संग्राम के समय हम गाँधी के महत्व को पूर्णरूप से नहीं समझ सकते। हाँ, ५० वर्ष बाद उनका जीवनी-लेखक, उनके पूर्ण महत्व को संसार के सम्मुख अवश्य रख सकेगा। इस समय हमारा ध्यान विशेषतया उनके कार्यों की ओर खिंचता है। उनका जीवन भी बड़ा रहस्यपूर्ण है। उनके जीवनी-लेखक को उनके पूर्व और पश्चात जीवन में एक गूढ़ सम्बन्ध मिलेगा। उनके पूर्व के दाम्पत्य जीवन, उनकी छोटी-छोटी भूलों, उनके हृदय के छोटे-छोटे कुसंस्कारों, और फिर पश्चात जीवन के ब्रह्मचर्यव्रत, आत्म-दमन, विषय-वासनाओं के त्याग आदि में मानस-शास्त्र सम्बन्धी अनेक प्रश्न मिलेंगे। उस लेखक को गाँधी के जीवन के युवावस्था के अनुभवों में, जब गोरों के दर्पपूर्ण दुर्व्यवहारों से उनकी आत्मा पर गहरी ठेस लगी थी और उनके वर्तमान जीवन में, जहाँ ब्रिटिश अफ़सरों से समझौता होना टेढ़ी खीर मालूम होती है, एक विचित्र सम्बन्ध मिलेगा। उनके जीवन की कुछ विरोधात्मक घटनाएँ, जैसे गत महायुद्ध के समय ब्रिटिश सेना में सिपाहियों का भरती कराना, और फिर बाद में अहिंसा पर इतना अधिक ज़ोर देना, सदैव पहेलियाँ रहेंगी।

हम पश्चिम के रहने वाले सब से पहले जो बात जानना चाहते हैं, वह है गाँधी का सन्देश, जिसने भारतीयों के हृदयों पर जादू फेर दिया है। दूसरी जानने योग्य बात ब्रिटिश सरकार के साथ उनके युद्ध का औचित्य और अनौचित्य है। तीसरी बात यह है, कि ब्रिटिश सरकार के भारतीय शासनाधिकार पर उनके प्रयत्नों का क्या प्रभाव पड़ेगा और उससे साम्राज्य में कितनी उथल-पुथल मचेगी—इन प्रश्नों पर इतिहास और राजनीति के निष्पक्ष विद्वान के विचार करने की आवश्यकता है।

गाँधी के सिद्धान्त, भारत की प्राचीन सभ्यता के सिद्धान्तों से मिलते-जुलते हैं। यदि यह बात न होती, तो आज इतने आदमी इस प्रकार बिना सोचे-विचारे, उनकी बातों पर चलने के लिए तैयार न होते।

गाँधी की सम्मति में भारत से समझौता करने के लिए अङ्गरेज़ों का भारत पर से अपना शासन हटा लेना अनिवार्य है। एक निष्पक्ष और विचारवान व्यक्ति की सम्मति के अनुसार भारत की वर्तमान अशान्त परिस्थिति के विरोध में इससे अधिक सङ्गत और युक्तिपूर्ण बात नहीं कही जा सकती, कि भारतीयों का सर्वस्व गाँधी और उसके साथ अन्य प्रतिभाशाली, योग्य और सच्चे देशभक्त भारतीय हिंसात्मक अपराधों के कारण नहीं, बल्कि केवल राजनैतिक क़ैदियों की हैसियत से जेलों में बन्द हैं। भारत स्वतन्त्र होने के लिए व्यग्र है। वहाँ का प्रत्येक शिक्षित मनुष्य सचमुच में एक क़ैदी बन गया है। यद्यपि सारे भारत में पूर्णतया अहिंसा-व्रत का पालन नहीं किया जा रहा है, तो भी शासक जाति, जिसमें केवल तलवार ही का सामना करने की शक्ति है—इस समय बिलकुल निराश हो गई है। उसे इस अहिंसात्मक क्रान्ति को कुचलने के लिए कोई यन्त्र नज़र नहीं आता!

(शेष मैटर ३१वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

राष्ट्रीयता और साम्राज्यवाद की मुठभेड़

(अखिल साम्राज्य-परिषद में ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की दाल न गली)

'न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम'

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्या" एम० ए०, पी० एच-डी० (बर्लिन)]

भारतीय गोलमेज़ परिषद होने के पहिले लन्दन में अखिल साम्राज्य परिषद की बैठक हुई थी, जिसमें यह घोषणा की गई थी कि इसका उद्देश्य साम्राज्य की आर्थिक दशा का उत्थान करना तथा साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों को सुदृढ़ बनाना है। परन्तु वास्तव में बात और ही थी। इङ्गलैण्ड की आर्थिक अवस्था इस समय बहुत ही ख़राब है। एक तो ऐसे ही संसार-व्यापी औद्योगिक शिथिलता के कारण उसका व्यापार बहुत घट गया है, फिर भारतीय बहिष्कार आन्दोलन ने तो उसके सारे व्यापार को मटियामेट ही कर दिया है। बेकारी की संख्या २२ लाख से ऊपर पहुँच गई है। ऐसे समय में ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने सोचा कि एक बार अपने उपनिवेशों को बुला कर, उन्हें फुसला कर, उनसे इस विषय में कुछ सहायता क्यों न ली जावे। वे हमारे उपनिवेश हैं, अभी कुछ दिन पूर्व ही वे हमारे माल के अच्छे ग्राहक थे। उन दिनों हम उनकी आर्थिक नीति को चलाते थे, पर जब से वे स्वतन्त्र हुए हैं, वे स्वदेशी का प्रचार कर रहे हैं और अपना माल उन देशों से ख़रीदते हैं, जहाँ वह सस्ता और अच्छा मिलता है। उनसे इस आर्थिक सङ्कट के समय में किसी तरह से फिर हमारे माल को ख़रीदने का वचन क्यों न लिया जाय। अखिल साम्राज्य-सभा करने में ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का यह उद्देश्य था, परन्तु वे अपनी चाल में सफल न हुए।

साम्राज्य-सभा की बैठक आरम्भ हुई। बड़े-बड़े भाषण हुए। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि हमें चाहिए कि हम एक होकर इस साम्राज्य की उन्नति का प्रयत्न करें। इसी उद्देश्य से हम यहाँ एकत्रित हुए हैं। इस समय ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने एक और चाल ढूँढ निकाली। उन्होंने सोचा कि इन उपनिवेशों से लाभप्रद सन्धि करने का केवल एक उपाय है। और वह यह कि हम उन्हें कुछ और राजनैतिक अधिकार दे दें और उनके बदले में उनसे अपने माल की खपत करने का वचन ले लें। इसी आशा से उन्होंने उपनिवेशों को और कई छोटे-छोटे अधिकार दे दिए। अभी तक पार्लामेण्ट उपनिवेशों के उन क़ानूनों को, जो कि साम्राज्य की भलाई के दृष्टि से ठीक न थे, रद्द कर सकती थी। इसके अतिरिक्त और कई छोटे-छोटे विषयों में वह उपनिवेशों के शासन में हस्तक्षेप कर सकती थी। साम्राज्य-परिषद में पार्लामेण्ट का यह अधिकार हटा लिया गया और उपनिवेशों को अपने शासन में पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गया। इस तरह इङ्गलैण्ड और उसके उपनिवेशों में समता का व्यवहार स्थापित हो गया। इस व्यवहार की घोषणा करने के उद्देश्य से दक्षिण अफ़्रिका के प्रधान-मन्त्री जनरल हर्टज़ोग तो यह चाहते थे कि साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों को "उपनिवेशों" के स्थान में "राज्य" का नाम दिया जावे। जिससे यह साफ़-साफ़ प्रकट हो जाय कि वे किसी प्रकार इङ्गलैण्ड के अधीन नहीं हैं, पर उनकी यह इच्छा पूर्ण न हुई। तब भी उपनिवेशों को जो कुछ अधिकार मिले, वे कुछ कम न थे।

यहाँ तक तो कोई कठिनाई नहीं पड़ी। इङ्गलैण्ड ने अपना नियन्त्रण छोड़ना शीघ्र ही स्वीकार कर लिया। उपनिवेशों ने भी सहर्ष इन अधिकारों को ग्रहण किया। अब व्यापार सम्बन्धी प्रश्न उठे। इङ्गलैण्ड यह चाहता था कि उसके उपनिवेश व्यापार में और देशों की अपेक्षा उसे विशेष सुविधाएँ दें और उसके माल के ग्राहक बनें। परन्तु ये दोनों बातें उपनिवेशों की उन्नति की दृष्टि से ठीक न थीं। इङ्गलैण्ड चाहता था कि साम्राज्यवाद के पर्दे की आड़ में मैं धनी बन सकूँ। उसके नेता चाहते थे कि साम्राज्यवाद की प्रशंसा करके उसके जाल में उपनिवेशों के प्रतिनिधियों को फँसा कर अपने देश के व्यापार तथा उद्योग की उन्नति की जावे। परन्तु उपनिवेश इस चक्कर में क्यों आने लगे। वे ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की कूटनीति को ख़ूब समझते थे। वे जानते थे कि साम्राज्य की आड़ में इङ्गलैण्ड स्वतः धनी होना चाहता है। उन्हें यह मालूम था कि इङ्गलैण्ड की दोनों माँगें उनके राष्ट्र-प्रेम के विरुद्ध हैं। यदि वे अङ्गरेज़ी माल के व्यापार को प्रोत्साहित करते हैं, तो उनके देश के कारख़ाने, जो अभी बाल्यावस्था में ही हैं, नाश हो जायँगे। और इस तरह उनके देश के उद्योग-धन्धों का विनाश हो जायगा। दूसरी तरफ़ यदि वे सस्ते विदेशी माल के बजाय अङ्गरेज़ी माल को ख़रीदने का वचन देते हैं, तो उसमें भी उनके देश का नुक़सान होता है। इस प्रकार साम्राज्यवाद और राष्ट्रीयता की ख़ूब मुठभेड़ हुई। उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने देशों का साथ दिया। उन्होंने कहा कि साम्राज्य की उन्नति से हमें सहानुभूति अवश्य है। इङ्गलैण्ड हमारी पूर्व मातृ-भूमि होने के कारण हमें प्रिय अवश्य है, परन्तु हमारा देश हमें उससे कहीं अधिक प्रिय है। उसकी उन्नति करना हमारा सर्व-प्रथम धर्म है। इसलिए हम इङ्गलैण्ड तथा साम्राज्य के अन्य भागों से वही माल ख़रीद सकते हैं, जो कि हमारे उद्योग-धन्धों को नुक़सान न पहुँचावेगा। इसी सिद्धान्त का अनुकरण करते हुए उन्होंने कहा कि हम इङ्गलैण्ड से मैशीन तथा कुछ और माल, जो कि अभी हमारे देश में नहीं बनता है, ख़रीदने को तैयार हैं। यह माल भी केवल हम उस समय तक लेंगे, जब तक हम इसे ख़ुद अपने देश में तैयार नहीं कर सकते। जब हम यह माल अपने देश में तैयार करने लगेंगे तब हम अङ्गरेज़ी माल ख़रीदना बन्द कर देंगे। इन चीज़ों में हम इङ्गलैण्ड को कुछ दिनों तक विशेष सुविधाएँ दे सकते हैं, परन्तु इसके बदले में इङ्गलैण्ड को भी हमारे कच्चे माल के व्यापार में हमें विशेष सुविधाएँ देनी पड़ेंगी और अपने स्वतन्त्र व्यापार का नियम तोड़ना पड़ेगा। यह सुन कर ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। उन्होंने सोचा था कि इनका धूमधाम से स्वागत करके और इन्हें कुछ राजनैतिक अधिकार देकर ख़ुश कर लेंगे और इनसे अङ्गरेज़ी माल ख़रीदने का वचन ले लेंगे, परन्तु इसमें इनकी दाल न गली। उपनिवेश के प्रतिनिधियों ने उनकी सारी कलई खोल दी। ब्रिटिश-नेताओं को इससे बहुत खेद हुआ। कन्सरवेटिव दल वाले तो इस विषय में इतने परेशान थे कि वे जो कुछ मिल रहा था, वही लेने को तैयार हो गए। इसके कई कारण थे। उनमें से सब से मुख्य तो यह था कि भारत के विषय में वे दमन-नीति के समर्थक थे। वे चाहते थे कि किसी तरह से हम यह दिखा सकें कि भारत के बहिष्कार आन्दोलन से हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता। वे भारत की जनता को दिखाना चाहते थे, कि उनके नेता उन्हें ग़लत रास्ते पर ले जा रहे हैं। परन्तु इङ्गलैण्ड के मज़दूर तथा उदार दल वालों ने उपनिवेशों की शर्तों को स्वीकार करने से साफ़ इन्कार कर दिया। इस तरह पूर्ण निराशा के अन्धकार में ब्रिटिश साम्राज्य-सभा का अन्त हुआ।

परन्तु इस परिषद के बाद होने वाली गोलमेज़ परिषद में उनकी सारी चालें सफल हुई हैं। भारत के हिन्दू-मुस्लिम प्रतिनिधियों ने आपस में ख़ूब नोचा-खसोटी की। जी-हुज़ूरों को ब्रिटिश सरकार ने जो कुछ दिया, उसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने उलट-फेर कर इनसे साइमन साहब की रिपोर्ट का सारांश स्वीकार करा लिया। भारत की आर्थिक व्यवस्था पर अब भी ब्रिटिश सरकार का पूरा अधिकार रहेगा। सेना, विदेशी नीति इत्यादि भी ज्यों की त्यों है और यदि वाइसराय और गवर्नरों के अधिकार कुछ बढ़ा दिए जावें तो इसमें कुछ आश्चर्य न होगा। अन्य उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने अपने देश का साथ दिया और साम्राज्यवाद के जाल में फँसने से इन्कार किया। परन्तु भारत के स्वयंभू प्रतिनिधियों ने जान-बूझ कर ब्रिटिश नेताओं की सारी शर्तें स्वीकार कर लीं। पर इससे ब्रिटेन की आशा सफल नहीं हो सकती। ब्रिटिश नेताओं को हरदम यह स्मरण रखना चाहिए कि भारत में देशभक्तों की कमी नहीं है और वे अपने देश को साम्राज्यवाद के पञ्जों से छुड़ाने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देंगे। भारत की जनता भी अब उनकी चालों को ख़ूब समझ गई है, वह भी अपने देश को पराधीनता के बन्धन से मुक्त करने के लिए, अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए तैयार है। गोलमेज़ परिषद की बैठक से उन्हें ख़ुशी अवश्य हुई है, परन्तु जब वास्तविक सन्धि-परिषद की बैठक होगी, तब वहाँ भी साम्राज्य-परिषद की तरह उन्हें निराश होना पड़ेगा। वहाँ भी उनके साम्राज्यवादी जाल को काट कर राष्ट्रीयता के सूर्य का उदय होगा।

* * *

(३०वें पृष्ठ का शेषांश)

स्वतन्त्रता, जिसकी प्राप्ति भारत के लिए हिंसात्मक क्रान्ति के द्वारा असम्भव थी, इस नए अस्त्र के द्वारा प्रबल वेग से दौड़ी आ रही है। निरस्त्रों पर अस्त्रों का वार करना आसान नहीं है। और जेलों का भी तो हद है! उनमें अब और अधिक ठूस-ठाँस करना उनकी परिमित शक्ति के बिलकुल बाहर है। इस समय भारत के साथ मित्रता स्थापित करके ही, उसे साम्राज्य के अन्तर्गत रक्खा जा सकता है। साइमन कमीशन के प्रस्तावों द्वारा भारत की माँगें पूरी नहीं हो सकतीं। इस समय भारत-वासियों की मानसिक प्रगति की ओर ध्यान देना अतीव आवश्यक है।

यह हिन्दू-महात्मा निश्चय ही इस समय संसार का सब से अधिक प्रभावशाली शान्ति-स्थापक है। यही नहीं, संसार में आज तक जितने महापुरुष हुए हैं और होंगे, उनमें गाँधी का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। उनके अहिंसा-वाद पर अमेरिका को विचार करना चाहिए !!

* * *

वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता ? सन् १८५७ के स्वातन्त्र-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए ; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीत, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं ; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं ; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं ; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

"दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी ॥"

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र।

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥) स्थायी ग्राहकों से ॥-); नवीन संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

आख़िरश बेचारे ठाकुर जी महाराज को भी लोगों ने 'गाँधी की आँधी' में घसीट कर ही छोड़ा! सुनते हैं, उस दिन सनातनधर्मावलम्बियों की एक 'खचाखच' भरी हुई सभा ने त्रिवेणी-तट पर प्रस्ताव पास कर डाला है कि आइन्दा से मन्दिरों में केवल 'खादी' का ही व्यवहार किया जाय। अब बताइए, हमारे कमनीय-कलेवर ठाकुर जी कैसे जिएँगे? हाय-हाय! बेचारे की सारी शौक़ीनी पर पानी फिर जायगा!

❀

यही नहीं, देव-दर्शन के लिए मन्दिरों में जाने वाले 'भगतों' और 'भगतिनों' के लिए भी यही क़ानून लागू होगा। मैञ्चेस्टर के रेशमी 'उपरना' वाले पुजारी जी महाराज से भी अनुरोध किया गया है कि शुद्ध स्वदेशी वस्त्रों का ही प्रयोग करें! भला बताइए, इसे 'मेंढकी को ज़ुक़ाम' न कहें तो क्या कहें? पीताम्बर और नीलाम्बर पहनने वाली चन्दन-चर्चित देह भला खुरखुरी खादी कैसे सहन कर सकेगी?

❀

ख़ैरियत यही समझिए कि महन्तों, पण्डों, पुरोहितों और महामहोपाध्यायों के लिए इस तरह का कोई प्रस्ताव उस 'खचाखच' सभा ने स्वीकृत नहीं किया है. नहीं तो सारा सनातन-धर्म ही आज ख़तरे में पड़ जाता। झुर्रियाँ पड़ी हुई बुढ़ौती की देह भला महामोटी खादी कैसे बर्दाश्त कर सकती? गड़ जाती जनाब, सारे शरीर में बेंतबाज़ी की सज़ा पाए अपराधी की तरह साटें उखड़ जातीं और मनों हल्दी-तेल मलने पर भी कोई फल न होता

❀

फलतः जो बीतेगी वह पत्थर के ठाकुर जी पर ही बीतेगी; मोटी तोंदों के लिए कोई चिन्ता की बात नहीं। इसलिए श्रीजगद्गुरु की ओर से सनातनियों की 'खचाखच सभा' को भूरि-भूरि धन्यवाद है। उसे चाहिए कि ऐसे मामलों में बेचारे महन्तों, पण्डों और पुरोहितों को घीसीटने की ग़लती कदापि न किया करे। क्योंकि येही तो हमारे सनातन-धर्म की शोभा हैं और इनकी शोभा की वृद्धि होती है, रेशमी वस्त्रों और सुर्मा-मलाई से! खादी और स्वदेशी से इनसे क्या वास्ता? भगवत-भक्ति, भगत-भगतिन-भक्ति और 'माले मुफ़्त दिले बेरहम' से बेचारों को फ़ुर्सत ही कहाँ है, जो खादी और स्वदेशी पहन कर देश-भक्ति के पचड़े में फँसें?

❀

मगर एक बात बहुत बुरी सुनने में आई है। अख़बारों में ख़बर छपी है, कि पद्दुकोटा राज्य की व्यवस्थापिका सभा ने देवदासी-प्रथा को क़ानूनन् नाजायज़ क़रार दे दिया है! इसे बेचारे ठाकुर जी पर दूसरी आफ़त समझिए। दिन भर के थके-माँदे, भक्तों के कामों से फ़ुर्सत पाने पर, घण्टे दो घण्टे देवदासियों का नृत्य-गीत सुन कर ज़रा जी बहला लिया करते थे, उस पर भी इस दर्द-मारी पद्दुकोटा की व्यवस्थापिका ने पानी फेर दिया!

❀

बेचारे ठाकुर जी न थिएटर देखें और न सिनेमा जावँ, न मदारी से मतलब, न आतशबाज़ी देखने का शौक़! इत्ते कि आजकल के 'स्कूली छोकरों' की तरह फ़ुटबाल या क्रिकेट खेलने के लिए कभी 'पार्क' की ओर भी नहीं जाते। अब न तो वे द्वापर के दिन रहे और न रास रचाने वाली 'कोई साँवर कोई गोरी' गोपियाँ ही रह गईं! उनकी थोड़ी सी, बिलकुल धुँधली, स्मृति इन्हीं देवदासियों के नृत्य में रह गई थी। मगर 'क़िस्मत की बदनसीबी' को क्या कहा जाय कि बेचारे देवता का यह थोड़ा सा सुख भी लोगों की आँखों का शहतीर हो रहा है

❀

एक वे भक्त हैं,—ईश्वर उन्हें वैकुण्ठ बख़्शे!—जो अपने 'कलेजे के टुकड़े-सी' कन्याओं को देवता की सेवा के लिए अर्पण कर अक्षय पुण्य के भागी बनते हैं और एक ये हैं, कमबख़्त क़ानून बनाने वाले नास्तिक—काफ़िर, जिन्हें न दीन की ख़बर न दुनिया की! ज़रा सी 'एबी-सिडी गिट्-पिट्' सीख लिया और बन गए तीस मार ख़ाँ! लगे सुधार के कुधार से धर्म-ध्वंस करने! इसलिए, बाबा जल्दी से 'वर्णाश्रम-स्वराज' की स्थापना करो, नहीं तो ये पापी सुधारक एक दिन क़ानून बना कर ठाकुर जी को अण्डमन या पोर्ट-ब्लेयर भेज दें तो कोई आश्चर्य नहीं!

❀

आह! इन कलियुगी कपूतों ने पवित्र सती-प्रथा की रीढ़ मारी, त्रिवेणी में 'आत्म-विसर्जन' को आत्म-हत्या बताने की धृष्टता की, गङ्गासागर की तरल तरङ्गों में सन्तानोत्सर्ग करने वालों को नृशंस और हत्याकारी कहा। धर्म की नाक की रक्षा करने के लिए बाल-विवाह बच गया था, सो उसे भी 'सारदा-बिल' के साँप ने डँस लिया! अब हाथ धोकर ये अभागे पड़े हैं देवदासी-प्रथा के पीछे, सम्पादक जी, आप इन धर्म-ध्वंसियों की ख़बर क्यों नहीं लेते? किस दिन-रात के लिए है, आपका 'भविष्य' और आपकी लेखनी! कोंचिए कमबख़्तों को! भगवान आपका भला करेगा और भारत-धर्म-महामण्डल से 'धर्मधुरन्धर' की पदवी भी मिल जायगी।

❀

श्रीजगद्गुरु की यह शास्त्रीय सम्मति है कि सनातन-धर्मावलम्बियों को इस मामले में चुप नहीं रहना चाहिए और जिस तरह उन्होंने साल-साल भर के बच्चे-बच्चियों को दूल्हा-दुल्हिन बना कर बाल-विवाह-निषेध विधान की जन्मते ही कमर तोड़ दी है, उसी तरह एक बार समस्त देश के देवमन्दिरों को देवदासियों से भर दें। ताकि एक बार फिर जगमगा उठे देश सनातन-धर्म की ज्योति से और ठाकुर जी भी रास रचा कर कलियुग में द्वापर के मज़े लूट लें। नहीं तो इन सुधारवादियों के मारे बेचारे का जीना दूभर ही समझए।

❀

ख़ैरियत हुई, जान बची! अपने राम को इस बात की बड़ी भारी चिन्ता थी, कि वर्तमान काँङ्ग्रेसी आन्दोलन के कारण हमारी सुशीला सखी नौकरशाही को निरा घाटा ही घाटा हो रहा है। मगर नहीं, ख़ुदा के फ़ज़्ल से एक तरफ़ कुछ नुक़सान होता है, तो दूसरी तरफ़ 'बाप मरा घर बेटा हुआ' की तरह लाभ भी काफ़ी हो रहा है। क्योंकि गत १९३० के अक्टूबर के अन्त तक मध्य-प्रान्त और बरार में सत्याग्रहियों पर जो जुर्माना हुआ है, उसकी तादाद बफ़ज़्लहू अल्लाहताला, एक लाख चवालीस हज़ार है! अगर कमोबेश जुर्माने से इतनी ही आय अन्यान्य प्रान्तों से भी मान ली जाय तो मजाल नहीं किसी की जो इस रोज़गार को बुरा कह दे? फलतः सखी की ओर से अल्लाहताला की ख़िदमते फ़ैज़दरजत में क्यों न दुआ की जाय कि यह 'ज़रख़ेज़' आन्दोलन ता-क़यामत चलता रहे! आमीन! एवमस्तु!!

❀

परन्तु अपनी कम-अक़्ली के मारे यह न समझ लीजिएगा, कि इस लाभ की सीमा यहीं तक है। जनाब, पैसे भी प्राप्त हो रहे हैं और सत्याग्रहियों की खोपड़ियों से जो रक्त निकलता है, उससे साम्राज्य की नींव भी पुष्ट होती जा रही है। लेहाज़ा, अब इस बात में सन्देह की ज़रा भी गुञ्जाइश नहीं रह जाती कि 'ख़ुदा देता है तो छप्पर फाड़ के देता है।'

❀

सखी नौकरशाही की तरह ही 'तक़दीर के साँड़' कोंपर कॉन्फ़्रेन्स के मुँहफोड़ प्रतिनिधि भी हैं। लन्दन जाकर ऐसी धुआँधार स्पीचें झाड़ीं कि महामहिम मुग्धानल देव पसीज कर पानी-पानी हो गए और अन्त में 'स्वराज' देते ही बना। न हर्रे लगी न फिटकिरी ख़र्च हुई। 'आम का आम और गुठलियों का दाम' की तरह विलायत की सैर हुई और स्वराज भी मिल गया। यही नहीं, भारत की ग़ुलामी के इतिहास के पृष्ठों पर नाम भी अमिट अक्षरों में लिख गया! भई, वाह! ख़ुदा अक़्ल दे तो ऐसी दे।

❀

लन्दनी कॉन्फ़्रेन्स में हमारे प्रतिनिधियों ने वक्तृता-बाज़ी के सिवा भिक्षा, आत्म-कलह, साम्प्रदायिक सङ्कीर्णता और प्रभु-भक्ति का भी ख़ासा परिचय दिया है। इसलिए श्रीजगद्गुरु की राय है कि भारत लौटने पर, एक महती सभा करके उन्हें 'सर्वगुणालङ्कृत' और 'सर्वोपमायोग्य' की पदवी से अवश्य विभूषित किया जाय और कहीं किसी ऊँचे स्थान पर वाशिङ्गटन की भाँति उनकी एक अटल स्मृति भी स्थापित कर दी जाय, ताकि भावी भारत-सन्तान उसे देखे और समझे कि यही उन महापुरुषों की पाक यादगार है, जिनके वाक्जाल में फँस कर एक दिन सारा इङ्गलैण्ड फड़फड़ा उठा था और अन्त में झख मार कर भारत को आज़ाद कर देना पड़ा था।

❀

ख़ैर, दादा मुग्धानल देव ने अपनी 'ढाईगज़ी' वक्तृता के गाढ़े आवरण में लपेट कर जो देव-दुर्लभ 'अधिकार' हमारे प्रतिनिधियों को प्रदान किया है, उसमें से स्वराज, स्वतन्त्रता या औपनिवेशिक स्वराज के दाने चुन कर निकाल लेने का काम तो 'भविष्य' के सम्पादक महाशय का है। [illegible] सम्पादक लोग भूसी फटकने में बड़े पटु होते हैं और ऐसे कामों के लिए उनके पास समय भी काफ़ी रहता है। परन्तु अपने राम ने तो भँगघोटने से टटोल कर जो तथ्य उसमें से संग्रह किया है, वह यह है कि वह 'फ़ेडरल' नाम-धेय भावी शासन-तन्त्र द्वैत-शासन का एक नवीन संस्करण मात्र होगा। शासन-प्रणाली के सारे लुत्फ़ ज्यों के त्यों रहेंगे, बक़ौल उस उर्दू शायर के, जिसने आहे-सर्द खींच कर कहा था:—

दुनिया के जो मज़े हैं, हर्गिज़ वह कम न होंगे!
जलसे यही रहेंगे, अफ़सोस! हम न होंगे!!

उसी तरह धूमधाम से बड़े लाट और छोटे लाटों की सवारियाँ निकलेंगी, उसी तरह भारत के फल-पुष्प-भाराक्रान्त वनों, उपवनों, उजाड़ जङ्गलों और जनाकीर्ण नगरों में 'सिविल सर्विस' की तूती बोलेगी, उसी तरह गौराङ्ग देवों के मजबूत श्रीचरणों से कालों की तिल्लियाँ फटेंगी, उसी तरह गोरे प्रभु और काले ग़ुलाम रहेंगे, उसी तरह अमेरिका और यूरोप के होटलों में कालों के लिए स्थानाभाव (!!!) बना रहेगा। महज़ नौकरशाही का उच्चासन मियाँ 'फ़ेडरल' को मिल जाएगा और इस बुढ़ौती में अकिञ्चन जगद्गुरु के दिलबहलाव का सामान लुट जायगा! बेचारा भङ्ग की तरङ्ग में जब इन गुलगुल्फ़ दिनों की याद करेगा तो कफ़े-अफ़सोस मल कर चीख़ उठेगा—

माजराए नौजवानी अहदे-पीरी में न पूछ,
शर्म आती है अब उस क़िस्से को दुहराते हुए!

❀

मज़ाक़ भाड़ में गया। अब ज़रा सीधे-सादे शब्दों में मियाँ 'फ़ेडरल' की तस्वीर मुलाहज़ा हो,—वर्तमान समय का चारों ओर फैला हुआ द्वैत शासन-जाल केन्द्रीय सरकार के शरीर की शोभा बढ़ाएगा। एक भारतीय व्यवस्था परिषद् बनेगी और उसमें देशी राज्यों के प्रतिनिधियों के साथ ब्रिटिश-भारत के विभिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि रहेंगे। अन्त में इसी 'ग़ुलाम-घण्ट' को मथ कर थोड़ा सा 'नवनीत' निकलेगा, जिसका नाम होगा—'मन्त्रि-मण्डल!'

❀

इस मन्त्रि-मण्डल की नकेल बड़े लाट-साहब के हाथ में रहेगी। रुपया-पैसा, सेना-पुलिस, सिविलियनी नौकरियाँ, अन्तर्राष्ट्रीय विषय समूह 'सुरक्षित विषय' होंगे, और बाक़ी विषय कालों के विभिन्न दलों के मुँहचुथौव्वल के लिए छोड़ दिए जायँगे। परन्तु अगर इस मुँहचुथौव्वल का परिणाम बड़े लाट को पसन्द न आएगा तो उस पर पानी फेर देने का उन्हें मौरूसी हक़ हासिल होगा, जैसे श्रीमती जगद्गुरुआनी जी को हासिल है कि गुरुजी के भँगघोटने को दीवाल के सहारे खड़ा करके रक्खें या ज़मीन पर लुढ़का कर!

❀

इसके बाद जो 'पुए पर चीनी' की तरह सुस्वाद और श्रुति-मधुर वस्तु दादा सुधानन्द देव ने प्रदान किया है वह है, मॉडरेट-वाञ्छित 'प्रॉविन्शियल ऑटोनोमी' उर्फ़ प्रादेशिक स्वराज। प्रति तीसरे साल महीने-दो महीने के लिए सारे देश में होली-सी चहल-पहल मचेगी। 'वोट-भिक्षा' की झोली लिए कौड़ाने-क़ौम गलियों में फेरी लगाएँगे। 'अररर कबीर' की तो नहीं, परन्तु 'वोट मुझे दीजिए' के गगनभेदी चीत्कार के मारे भले आदमियों की नींद हराम हो जाएगी। 'एम० एल० सी०' के लिए कहीं कल्लू मेहतर झाड़ू लेकर 'खड़े' होंगे और कहीं बैसाख नन्दन रूदभाई नत्थू धोबी! आश्चर्य नहीं कि धुल.ई महँगी हो जाय!

❀

ख़ैर जनाब, इस 'ऑटोनोमी' का सञ्चालन होगा, एक दो किश्ती की सवारी वाले मन्त्रि-मण्डल द्वारा और स्वयंभू शिव-लिङ्ग की तरह सबके ऊपर सिविलियन-दल विराजमान रहेगा। श्रीमान छोटे लाट बहादुर एक हाथ में 'विशेष अधिकार' और दूसरे में 'अनुग्रह' लेकर भारत की ग़ुलामी का मज़ाक़ उड़ाएँगे। इसी लिए, शाश्वत और सनातन छोटे लाट और बड़े लाट के अप्रतिहत अधिकार और प्रताप को बरक़रार रख कर श्रीमान वज़ीर-आज़म बहादुर ने स्नेह-स्निग्ध स्वर में फ़र्माया है—"भारत को पराधीन रखने की इच्छा अङ्गरेज़ों की नहीं है!" दरीं चे शक! कौन कहता है, कि आपकी इच्छा भारत को पराधीन रखने की है। बेवक़ूफ़ रहा होगा वह कवि, जिसने कहा है कि—"करतूती कहि देत आप कहिए नहिं साईं!"

❀

परन्तु इन कालों की एहसान-फ़रामोशी तो देखिए! दादा जी ने अपनी सारी उदारता ख़र्च की, परन्तु यहाँ किसी कमबख़्त के फूटे मुँह से धन्यवाद का एक शब्द भी न निकला! स्वराज्य-प्राप्ति की ख़ुशी में बी छम्मी-जान का मुजरा कराना तो दरकिनार, किसी ने एक दिन दीवाली भी न मनाई! इनसे पूछो कि बच्चू, आख़िर तुम चाहते क्या हो? तुम्हारे सैकड़ों प्रतिनिधि कौन्सिलों में धुँआधार तक़रीरें करेंगे तुममें से दर्जनों मन्त्री बन जाएँगे, और हज़ारों को 'वोट' देने का अधिकार मिल जायगा। बस, और चाहिए क्या? यही तो स्वराज्य है, या उसके कोई दुम होती है?

❀

बस, अब श्री० लॉयड जॉर्ज के उपदेशानुसार, चीखना-चिल्लाना, बावेला मचाना, आन्दोलन करना और श्रीमती बी ब्रिटानिया को बुरा-भला कहना छोड़ कर कानों में कड़वा तेल डाल लो और दोनों आँखें मूँद कर सुशील बालक की तरह सो रहो। नहीं तो जो कुछ देने को कहा गया है, उससे भी हाथ धो लेना पड़ेगा, और फिर जन्म भर चिल्लाते रह जाओगे तो भी कुछ प्राप्त नहीं होगा। क्योंकि इस उदारता का नशा उतरते कुछ देर नहीं लगती।

❀

ग़ुलाम भारत के कृती सन्तान और 'एडिनबरा का स्वतन्त्र रईस' (नागरिक?) राइट ऑनरेबुल मिस्टर श्रीनिवास शास्त्री साहब केवल वचनवागीश ही और 'प्रार्थना-पण्डित' नहीं, हिसाब-शास्त्र के भी उद्भट ज्ञाता मालूम होते हैं! आपके गुरु स्वर्गवासी गोपालकृष्ण गोखले महाशय विख्यात गणितज्ञ थे और यह गुण मालूम होता है, शास्त्री जी को उन्हीं से मीरास में प्राप्त हुआ है। ख़ास कर के जब कहीं दावत होती है तो भूरि-भोजन के पश्चात यह 'गणितज्ञता' आप पर ख़ुदाई रहमत की तरह फट पड़ती है और साफ़ मालूम होने लगता है कि लड़कपन में पढ़ा हुआ 'मेण्टल-अर्थमेटिक' आपको अभी तक कण्ठस्थ है!

❀

अभी हाल ही में, एक बार नहीं, लगातार दो बार आपने अपने इस अलौकिक गुण का परिचय दिया है। एक दिन 'गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स' का स्तोत्र पाठ करते-करते आपने फ़रमा डाला कि "भारत और ब्रिटेन का लम्बा झगड़ा 'चन्द' गिरफ़्तारियों और 'चन्द' लाठी की चोटों के बाद ख़ुशी-ख़ुशी ख़तम हो गया!" दूसरी बार एक भोज-सभा में भारत के राजनीतिक क़ैदियों को छोड़ने के लिए गौराङ्ग देवों से प्रार्थना करते हुए बोले—"तीस (!!!) हज़ार भारतवासी जेलों में बन्द हैं!" हमें तो विश्वास है कि इस समय अगर पौराणिक युग के महान गणितज्ञ राजा नल होते, तो अवश्य ही शास्त्री जी का मुँह चूम लेते!

❀

भई, बड़ों की बातें बड़ी होती हैं। पुराणों में लिखा है कि देवताओं के दिन मनुष्यों के वर्षों से भी बड़े होते हैं। फलतः शास्त्री जी महाराज का 'चन्द' अगर तीस हज़ार के बराबर होता हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? एक तो भूरि भोजन के पश्चात का अलसाया हुआ मिज़ाज, दूसरे राजनीतिक क़ैदियों को जल्द से जल्द मुक्त कराने की धुन और ऊपर से चढ़ा हुआ, ख़ुदा झूठ न बुलवाए, सोडा-वाटर मिला हुआ 'शराबाबा' का पैग! "ग्रह-ग्रसित पुनि बात रस" की दशा! ऐसी हालत में राजनीतिक क़ैदियों का और लाठियों के चोटों से फूटे हुए मूँड़ों का ठीक-ठीक हिसाब कैसे मालूम हो? बेचारे को ख़बर ही क्या कि इस समय देश में क्या हो रहा है?

❀

अस्तु, श्री० शास्त्री और श्री० सप्रू की प्रार्थना से दादा सुधानन्द देव ऐसे पसीजे, जैसे भगवान् श्रीकृष्ण के गोलोक धाम की एक सखी एक बार पसीज कर नदी हो गई थी! आपने फ़ौरन आज्ञा दी कि अगर कॉङ्ग्रेस वाले आन्दोलन बन्द कर दें तो केवल छोड़ ही नहीं दिए जाएँगे, वरन् भविष्य की बैठकों में निमन्त्रण भी पाएँगे। ओहो, इतनी उदारता! अरे यार, अब क्या चाहते हो? 'फ़ेडरल' मिला, क़ैद से छुट्टी मिली, निमन्त्रण मिलेगा और अगर कहोगे तो 'डिनर पार्टी' में भरपेट 'लेह्य-पेय' की भी व्यवस्था हो जायगी? भई, वाह! मालूम होता है, भारत की तक़दीर के सारे पर्दे एक साथ ही हट गए हैं!

❀

हमारे श्रद्धेय दादा श्रीसनातन-धर्म की बुढ़ौती के लाठी 'श्रीप्रभुजी' अर्थात् अलवरेन्द्र बहादुर आजकल लन्दन महातीर्थ में निवास कर रहे हैं। 'इङ्गलिश मैन' में ख़बर छपी है, कि गत १८ जनवरी को आपके यहाँ एक प्रीतिभोज था और श्रीमती महारानी साहबा भी उसमें शरीक थीं। प्रभुजी और महारानी जी चूँकि कट्टर सनातन-धर्मावलम्बी और पर्दे के परम पक्षपाती हैं, इसलिए भोज-सभा में श्रीमती जी के विराजने के लिए एक सात सीढ़ियों का सिंहासन रक्खा गया था और उसके सामने लटक रहा था, 'मसलिन' (आबेरवाँ?) का नफ़ीस परदा!!! भोजन की रकाबियाँ श्रीमती की ख़ास दासियाँ ही आप तक पहुँचाती थीं। भारतीय आमन्त्रितों को 'प्राच्यवेश' में पधारने का अनुरोध पहले से ही कर दिया गया था। निमन्त्रितों की कुल संख्या ३३० थी। यद्यपि सम्वाददाता ने यह नहीं लिखा है कि 'काँटे छुरी' की भी व्यवस्था थी या नहीं, परन्तु भोजन सनातन-धर्मानुकूल निरामिष रहा होगा, इसमें तो सन्देह की ज़रा भी गुञ्जाइश नहीं हो सकती।

❀

इस तरह जनाब, परदे की भी रक्षा हुई और मेहमानों को 'झाँकी' भी नसीब हो गई! पाश्चात्य एटीकेट भी जीता रहा और प्राच्य सभ्यता की भी जान बच गई! 'साँप भी मरा और लाठी भी न टूटी!' बल्कि सीधे-सादे शब्दों में यों समझिए कि 'नाच भी हुआ और घूँघट भी रह गया!' फलतः इस बुद्धिमत्तापूर्ण 'गङ्गा-जमुनी' व्यवस्था के लिए श्रीप्रभु जी और महारानी साहबा को श्रीसनातन-धर्म की ओर से, हिज़ होलीनेस का आन्तरिक धन्यवाद है। महाराज का परदा-प्रेम और भारतीयता पर अटूट अनुग्रह देख कर अवश्य ही गोरे और गोरियों ने दाँतों अँगुली दबाया होगा—दङ्ग रह गए होंगे, यह अद्भुत दृश्य देख कर!

❀

इस कॉङ्ग्रेसी आन्दोलन की बदौलत न्याय के नग्न-नृत्य तो एक से एक अनोखे दृष्टि-गोचर हुए, परन्तु हाल में श्री० सुभाषचन्द्र बोस महाशय के साथ जो 'न्याय तुलौअल' हुई है, उससे तो क़सम भगवती विजया की, हिज़ होलीनेस की बुढ़ौती सार्थक हो गई है! 'चट मँगनी और पट ब्याह' की तरह रेल के डब्बे में गिरफ़्तारी और प्लेटफ़ॉर्म पर विचार! ख़ैरियत इतनी हुई कि उस समय बोस महाशय पाख़ाने में न थे, नहीं तो विचारक महोदय को वहीं टेबिल-कुर्सी लेकर इजलास आरम्भ कर देना पड़ता और उस वक़्त यह विचार-प्रहसन शायद इससे भी बढ़ कर मनोरञ्जक होता!

❀

लाहौल बिलाक़ूवत

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

(गताङ्क से आगे)

६

लॉजीशियन की ज़बानी मेरे सभी यार-दोस्तों को पहिले ही मालूम हो चुका था, कि मैं बारात से लौटते समय श्रीमती जी को लाने के लिए ससुराल भी जाऊँगा। इसलिए मकान पर मेरे पहुँचने की ख़बर पाते ही यह लोग गिद्ध की तरह मुझ पर टूट पड़े और आते ही लगे पूछने कि क्यों भई, ससुराल गए थे। बहाना करते-करते नाक में दम आ गया। आख़िर सचाई को निबाहते हुए मैंने यह शेर पढ़ कर बला टालने की कोशिश की—

नहीं जाते तो यह दिल चैन से रहने नहीं देता।
मगर जब हम वहाँ जाते हैं दर्द एक और लाते हैं।

इसको सुनते ही यार लोग लगे मेरा बदन टटोलने। बलिहारी है उनकी अक़्ल की कि "दर्द एक और लाने" का मतलब यह समझे कि ससुराल में इस दफ़े मैं फिर मारा गया। वाह-वाह! "भैंस के आगे बीन बजाए और वह बैठी पगुराए" इसी को कहते हैं। ख़ैर! मैंने इन लोगों की बेवक़ूफ़ी पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। मगर अब देखा कि दो ही तीन दिनों में यह ख़बर सारे शहर में आँधी की तरह फैल गई, तब तो मेरे कान खड़े हुए। इसलिए इतवार के दिन जल्दी से खाना खाकर मैं नौ ही बजे दिन को अपने दफ़्तर में इतमीनान से इस बदनामी को दूर करने का उपाय सोचने के लिए चला आया। मेरा दफ़्तर मेरे घर से अलग, एक किराए के मकान में था, जहाँ सुबह को बैठ कर मुवक्किलों का मैं इन्तज़ार करता था और शाम को कुर से लौट कर यार-दोस्त अड्डा जमाते थे। पिता जी भी वकील थे। और दो आदमियों का एक ही घर में वकालत करना ठीक नहीं होता। इसीलिए मुझे अपना दफ़्तर अलग रखना पड़ा।

मगर जिस इतमीनान के लिए इस वक़्त यहाँ आया, वह मुझे नसीब नहीं हुआ। क्योंकि छुट्टी के दिन होने के कारण दिमाग़ चाटने वाले मुवक्किल एक-एक करके टपकने लगे। उस दिन दोपहर ही को मेरे कुछ दोस्त लॉजीशियन के साथ आगए, जिनको देख कर इन बेकार के झाँय-झाँय करने वालों ने अपना बस्ता समेटा और मेरी जान छोड़ी। ख़ैर, इस परेशानी में भी मैंने अपनी बदनामी मिटाने के लिए यह राय तय कर ली थी कि दोस्तों से अपना सच्चा-सच्चा हाल कह डालूँ, तभी इन लोगों का ससुराल में मेरे मारे जाने का भ्रम दूर हो सकता है। आख़िर मेरा ख़्याल सही निकला; क्योंकि मेरी मुसीबतें सुनने के बाद सभों ने एकमत होकर सारा दोष मेरी श्रीमती जी ही को दिया, जिसकी मैंने भी दिल खोल कर ताईद की। अन्त में लॉजीशियन ने बहुत-कुछ सोच-साच कर पूछा—"भला अब तुम्हारी श्रीमती जी की उम्र क्या होगी?"

मैं—"शादी तो हुए मुद्दतें हो गईं, मगर देखने में अभी वह बिलकुल वैसी ही हैं। अपने सर की क़सम। क्या लाजवाब भोलापन है कि याद आते ही......"

लॉजीशियन—"मैं पूछता हूँ उम्र और आप लगे भोलापन बयान करने। तुम्हारा यही तो बेतुकापन अच्छा नहीं मालूम होता। जब देखो तब बेवक़्त की शहनाई बजाने लगते हो।"

मुझे हिसाब लगा कर बताना पड़ा—"यही कोई बाइस-तेइस बरस की होंगी।"

लॉजीशियन—"ओहोहो! बीस बरस के ऊपर हो चुकीं, तब भला वह तुम्हारा मुँह देखना कैसे गवारा कर सकती हैं? उहुँह, ग़ैर-मुमकिन है। इसीलिए तो वह तुम्हारे साथ रवाना होकर भी तुमसे पीछा छोड़ाने की तरकीब कर बैठीं।"

मेरे साथ और लोग भी चक पड़े—"क्यों? क्यों?"

लॉजीशियन ने बड़े इतमीनान से जवाब दिया—"अब तो वह पतिवर्ता हो गई होंगी।"

सब लोग हँस पड़े। मगर मेरे बदन में आग लग गई; क्योंकि इससे हमारी श्रीमती जी के पूर्व-चरित्र पर कलङ्क लगता था। मगर जब तक मैं लॉजीशियन को कुछ कहता, तब तक उल्टे वही बिगड़ बैठा—"वाह जनाब! आप लोग हँसते क्या हैं? बीस बरस के बाद स्त्रियों को पतिवर्ता हो ही जाना चाहिए। इसमें झूठ क्या है? शास्त्र की बात है।"

अब तो मुझसे नहीं रहा गया, झुँझला कर कह बैठा—"तो क्या मेरी श्रीमती जी पहले पतिवर्ता नहीं थीं?"

श्यामाचरण बीच ही में बोल उठे—"मगर यह तो इनके लिए और भी अच्छी बात है। क्योंकि यही तो उनके पति हैं भाई।"

लॉजीशियन—"हुआ करें। जहाँ कोई स्त्री पतिवर्ता हुई तहाँ उसे पुरुष-जाति से घृणा हो गई। फिर एक नहीं, इनके ऐसे उनके अगर बावन पति हों तो क्या? आख़िर पति तो पुरुष-जाति ही का होता है। मगर क्या आप लोग पतिवर्ता के मानी कहीं पति को पूजने वाली तो नहीं समझते हैं?"

जदुनाथ—"तब क्या इसके मानी कुछ और हैं?"

लॉजीशियन ने बड़े ज़ोर से हँस कर कहा—"आहा-हाहा! यह कहिए, तभी आप लोग भड़क रहे हैं। अजी इसके यह मानी नहीं हैं। यह तो कुछ स्वार्थी पतियों ने अपनी भोली-भाली स्त्रियों से अपने आपको ज़बरदस्ती पुजवाने के लिए इस शब्द का यह रूप देकर इसके मानी में यह ढोंग रच रक्खा है। सच पूछिए तो असल में यह शब्द है पतिभर्ता, जो बिगड़ते-बिगड़ते इन्हीं लोगों की बदौलत अब पतिवर्ता हो गया है।"

श्यामाचरण—"पतिभर्ता? अच्छा तो इसके क्या मानी हुए?"

लॉजीशियन—"मानी शब्द ही से ज़ाहिर है। पतिभर्ता यानी पति का भर्ता बनाने वाली या कचूमर निकालने वाली।"

जदुनाथ—"ओहो! तभी पतियों की अपनी जोरुओं के आगे दुम दबी रहती है। यार ठीक कहते हो। मान गया। इसके ज़रूर यही मानी होंगे।"

श्यामाचरण—"अब तो मिस्टर सैक्सन को बुरा मानने की कोई वजह नहीं मालूम होती।"

मैंने ठण्डी साँस लेकर शान्त भाव से कहा—"नहीं भाई, अब तो मैं भी यही कहूँगा कि हमारी श्रीमती जी सचमुच पतिवर्ता हो गई हैं। आज से नहीं, बल्कि उसी दिन से, जिस दिन शादी हुई। उफ़! ओ! मुझे तड़पा-तड़पा कर मेरे दिल का जैसा उन्होंने कचूमर निकाला है, उसे मैं ही जानता हूँ।"

श्यामाचरण—"और जो कहीं साथ रहने पातीं तो तुम्हारा अचार ही निकल गया होता।"

जदुनाथ—"इसमें क्या शक है। पतिवर्ताओं से ईश्वर तक दबते हैं। मगर भाई लॉजीशियन, तुम यह बड़ी दूर की कौड़ी लाए। क्योंकि यह बारीकी आजकल कोई समझता नहीं।"

लॉजीशियन—"यह 'स्त्री-शास्त्र' की बातें हैं। इन्हें लोग क्या जानें?"

कामशास्त्र, रतिशास्त्र, कोकशास्त्र के नाम तो सुने थे। बल्कि शादी के दो बरस पहिले से दो बरस बाद तक गीता की तरह रोज़ ही उनका पाठ करता रहा, जैसा अब कॉलेज के लगभग सभी नौजवान करते हैं, मगर स्त्री-शास्त्र आज तक देखने को भी नसीब नहीं हुआ था। मिलता तो इसे भी मैं ज़रूर बरज़बान रट डालता। मुमकिन है, श्रीमती जी के लक्षण पहचानने में यही मुझे कोई ठीक ज्ञान बताता, जिससे मेरी मुश्किल आसान होती। इसलिए उसका नाम सुनते ही मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा—"यह मिलता कहाँ है?"

लॉजीशियन—"मिलेगा कहाँ? यह क्या कामसूत्र, रसविज्ञान, या बदमाशी-शास्त्र की तरह पुरुषों का थोड़े ही बनाया हुआ है। इसकी रचना स्वयं महाराज शैतान देव ने की है। और वह भी सामुद्रिक भाषा में, जिसका आज तक टाइप ही नहीं बन सका। जैसे ईश्वर ने भाग्य-शास्त्र को मनुष्यों की हथेलियों पर लिख रक्खा है, उसी तरह शैतान देव ने अपने स्त्री-शास्त्र को स्त्रियों की खोपड़ी पर, बालों की जड़ों के नीचे रच रक्खा है। उस पर मुश्किल यह है कि मर्दों की तरह औरतें कभी मुण्डी नहीं होतीं। इसीसे इस शास्त्र का पता नहीं चलता। क्योंकि जब तक स्त्रियों की खोपड़ी के बाल आप से आप गिर नहीं जाते, तब तक उनकी असलियत नहीं खुलती। वह तो न जाने किस देश की एक मुण्डी स्त्री हमारे नाना जान को मिल गई थी, जिससे उन्हें इस गुप्त शास्त्र की थोड़ी-बहुत झलक मिली थी।"

श्यामाचरण—"ओहो! तब तो यह कोई बेढब शास्त्र मालूम होता है। इसमें ज़रूर बड़े सच्चे ज्ञान की बातें होंगी।"

लॉजीशियन—"क्यों नहीं? मगर अफ़सोस तो यह है कि हमारे नाना जान इसका सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं

वीर बहिनें

[श्री० चतुर्भुज जी माहेश्वरी "चतुर"]

पाली गईं सुख से सदैव सुकुमारियाँ जो,
आईं कँकरीले-पथ में हैं दुख सहने।
ठाट-बाट राजसी समग्र जिनके थे सदा,
देश-हेतु जेलख़ानों में गई हैं रहने।
हीरे-मोतियों के गहने थे कभी भार जिन्हें,
देखो वे ही पहने हैं बेड़ियों के गहने!
प्राण से पवित्र निज प्रण पालती हैं आज,
बलिदान हो रही हैं वीर-माएँ-बहने!

* * *

कर सके। बीच ही में वह स्त्री उन्हें मारने दौड़ी और क़सम खिला कर बोली कि ख़बरदार, इस ज्ञान को किसी को बताना नहीं। और अगर बताना भी तो उसी को, जो साल भर तक अपनी स्त्री से न बोलने की क़सम खा ले। वरना सुनने वाले के लिए इसका असर एकदम उल्टा होगा।"

श्यामाचरण रँडुआ थे, जदुनाथ का अभी गवना नहीं हुआ था, और मुझे श्रीमती जी से मिलने की कोई उम्मीद ही नहीं थी। इसलिए हम तीनों ने बेधड़क क़सम खाकर कह दिया कि इस शास्त्र का कुछ ज्ञान सुनाओ। मगर लॉजीशियन को शायद मेरी क़सम पर कुछ शक था। और वह आनाकानी करने लगा। इसलिए उसको अच्छी तरह विश्वास दिलाने के लिए मैंने दुबारा कड़ी से कड़ी क़सम खाई कि साल भर क्या, मैं दो साल तक श्रीमती जी से न बोलूँगा। क्योंकि मुझी को इस शास्त्र की सब से ज़्यादा ज़रूरत थी।

बड़ी मुश्किलों से हज़ार नख़रों के बाद क़समों पर क़सम खाता हुआ लॉजीशियन इस अनोखे शास्त्र को सुनाने के लिए राज़ी हुआ। और उसने यों कहना शुरू किया—"अच्छा भाई, नहीं मानते तो कहता हूँ। मगर मुझे सारा ज्ञान की कुछ बातें तो याद नहीं हैं। एकाध जो भूली-भटकी दिमाग़ में पड़ी हैं, उन्हीं को कहूँगा। ख़ैर, सुनो—जैसे दिन के साथ रात, रोशनी के साथ परछाईं होती है, वैसे ही परम-पिता परमेश्वर के साथ श्री० महाराज शैतानदेव भी लगे रहते हैं।"

जदुनाथ—"हाँ-हाँ, यह तो मानी हुई बात है। बाइबिल में लिखा है।"

लॉजीशियन—"ईश्वर जब पृथ्वी बना कर उस पर सृष्टि की रचना करने लगे, तो अपनी परम योग्यता का नमूना दिखाने के लिए पुरुष-जाति को बनाया। उनका विचार था कि इसकी उत्पत्ति का ढङ्ग पेड़-पालों के नियम पर किया जाय। ताकि जाति बिना अन्य किसी की सहायता के आप से आप उपजा करे। वैसे ही शैतान देव हाथ जोड़ कर बोले—महाराज, यह आप क्या अनर्थ कर रहे हैं। पुरुष-जाति की बुद्धि भ्रष्ट करते रहने का आप कोई उपाय न करेंगे, तो यह अपनी योग्यता से जीवित ही अवस्था में देव-लोक पहुँच कर स्वर्ग पर अधिकार जमा लेगी। इसका ज्ञान इतना बढ़ जाएगा कि अपने आगे आपके ईश्वरत्व को भी कुछ नहीं समझेगी। नर्क में उल्लू बोलेंगे। वहाँ चालान करने के लिए हमें एक भी पापी न मिलेगा। हम बैठे ख़ाली मक्खियाँ मारेंगे। क्योंकि जब तक इसका ज्ञान भ्रष्ट नहीं होगा, तब तक यह जाति पाप की तरफ़ कैसे झुकेगी?

"ईश्वर चकराए और घबड़ा कर बोले—हाँ, यह तो है। मगर अब क्या करें?

"शैतानोवाच—बस आप इसकी दुम में कोई ऐसा उपद्रवी, अनर्थकारी और पाखण्डी जानवर बाँध दीजिए कि जिसे देखते ही इसका ज्ञान भ्रष्ट हो जाया करे। जिसके पीछे यह सारी ज़िन्दगी तबाह रहे। जिसकी ख़ातिर यह कोई भी पाप करने के लिए न हिचके; जो बाप-बेटों में, भाई-भाई में ख़ून करा सके, हर वक़्त इसे सत्यानाशी की तरफ़ ढकेल सके, इसकी बुद्धि को कभी अधिक बढ़ने न दे, और जिसके बिना इसका काम भी चल न सके......।

"इतने ही गुणों की तारीफ़ में ईश्वर के होश उड़ गए, कानों पर हाथ धर कर बोले—ना बाबा, यह हमारे मान का नहीं है। ऐसे भयङ्कर जानवर की कल्पना करना शैतान ही का काम हो सकता है।

"फिर क्या था? इतना इशारा पाते ही शैतान बाबा ने पुरुष-जाति के गले मढ़ने के लिए झट ख़ुद ही स्त्री-जाति का नमूना बना कर ईश्वर को दिखा दिया और उसके सहयोग से मनुष्य जाति की सृष्टि करने का उपाय भी सुझा दिया। इति स्त्री-शास्त्रे भूमिका खण्डे।"

श्यामाचरण—"यार यह तो सही मालूम होता है। देखो संसार में जितने झगड़े-बखेड़े होते हैं, वह ज़्यादेतर स्त्रियों की ही बदौलत।"

जदुनाथ—"हाँ-हाँ, जिस जाति की रचना स्वयं शैतान के बनाए हुए नमूने के अनुसार हो, वह जो न उपद्रव कर दे वही थोड़ा है।"

मेरे दिल में भी बात पैठ गई और मैंने सभों से ज़्यादा चिल्ला कर कहा—"अजी नमूने से क्या होता है, मैं तो यहाँ तक कहने को तैयार हूँ कि इस जाति की

पत्र-सम्पादक—हाय मेरे भौजा! क्या लिखूँ, क्या न लिखूँ?

आजकल बदला हुआ मज़मून है!
नुक़्ते-नुक़्ते के लिए क़ानून है!

रचना भी शैतान ही ने की होगी, वरना मेरी श्रीमती जी भला सारी ज़िन्दगी मुझे इस तरह उल्लू बना सकती थीं? हरगिज़ नहीं।"

लॉजीशियन—"हाँ-हाँ, इतना मत चिल्लाओ। नहीं कोई स्त्री सुन लेगी तो अपने साथ हम लोगों को भी पिटवाओगे क्या?"

अब चाहे कोई बुरा माने या भला। मगर सच्ची बात दिल में घुस कर अपनी सच्चाई उगलवा ही लेती है, और जले हुए दिल से तो हमेशा सच्ची ही बात निकलती है। अच्छा पाठिका महारानी, आप ही न्याय कीजिए। मेरी जीवनी शुरू से आख़ीर तक एक साँस में सिलसिलेवार पढ़ कर बताइए कि शैतान ने हमको बनाया है या हमारी श्रीमती जी को। हाँ, ईमान-धर्म से पक्षपात छोड़ कर बस मेरी झुठाई-सचाई आप ही खुल जायगी। मगर ईश्वर के लिए आप न बुरा मानिएगा। क्योंकि आप तो देवी जाति की हैं। यह मैं पहिले ही कहे देता हूँ, ताकि आपके इन्साफ़ में गड़बड़ी न हो।

लॉजीशियन ने सभों के आग्रह पर फिर कहना शुरू किया—"ईश्वर स्त्री जाति का नमूना देख कर फड़क उठे। मुग्ध होकर बोले—आहाहाहा! कैसी मनमोहनी चीज़ आपने बनाई है। देखने में कितनी सुन्दर, कैसी मुलायम और सीधी है कि वाह! वाह!

"शैतानोवाच—जी हाँ, तभी तो पुरुषों की बुद्धि भ्रष्ट होगी। मगर यह मुलायमियत बस देखने ही भर के लिए है। क्योंकि इसमें जैसी कठोरता और टेढ़ापन है, वह न आपके वज्र में है और न रेखागणित के किसी कोण में।"

मैं—"अरे! उस ज़माने में रेखागणित कहाँ?"

लॉजीशियन—"क्यों? इसकी विद्या मनुष्यों को चाहे बाद को मालूम हुई हो, मगर थी तो ईश्वर के दिमाग़ में, वरना वह चाँद-सूर्य की गोलाई, किरणों की सिधाई, पदार्थों के भिन्न-भिन्न आकार कैसे बनाते?"

श्यामाचरण—"हाँ जी, वह ईश्वर ही ठहरे। सब चीज़ों के जानने वाले। यह ऐसे ही खुरपेंच लगाया करते हैं। आप कहिए।"

लॉजीशियन—"अच्छा सुनिए, परम-पिता ईश्वर कहते भए—"

जदुनाथ—"आहाहा! कहने का ढङ्ग तो देखो।" 'कहते भए।' बिलकुल शास्त्र है। अब भी जो इसे शास्त्र न समझे तो वह महा घोंघा है।"

लॉजीशियन—"ईश्वर बोलते भए, हे शैतान देवता इस मनमोहनी जन्तु के अब गुणों का बखान कीजिए! शैतानोवाच—अच्छा महाराज, सुनिए! इसके गुणों का हाल कहने के पहिले इसके जातीय भेदों का बताना उचित होगा। पुरुष जाति तो अपनी अज्ञानता से इसका विभाग पद्मिनी, चित्रनी, सङ्खिनी और हस्तिनी में करेगी। मगर सच पूछिए तो इसकी जाति अपनी जातीयता में समान होगी, अर्थात् जीवन में स्त्री-स्त्री एक ही होगी। हाँ, भेद केवल ऊपरी बातों में—जैसे रूप, विद्या, बुद्धि, सुकुमारता इत्यादि में हुआ करेगा। मगर यह व्यक्तिगत भेद हैं, जातीय नहीं कहे जा सकते। इसलिए इसका जातीय विभाग इसकी अवस्था के अनुसार होना चाहिए, जो तीन हैं। अर्थात्—(१) गर्विता (२) पतिभर्ता—यह शब्द बाद को पुरुषों की चालाकी से पतिव्रता के नाम से प्रचलित होगा और (३) अनुग्रहाता। स्त्री की जातीयता पन्द्रह बरस से शुरू होगी, और पन्द्रह बरस से बीस बरस तक यह गर्विता रहेगी। यानी इस पर सुन्दरता का नशा ऐसा चढ़ा रहेगा कि यद्यपि पुरुषों से इसका हँसने-बोलने का बड़ा जी चाहेगा, तथापि मारे घमण्ड के किसी से भी सीधे मुँह बात न करेगी। और बीस बरस के बाद चालीस बरस तक के लिए इसका दूसरा भेद चलेगा। इस अवस्था में इसे बच्चे खिलाने और हुकूमत जताने की रुचि हो जाएगी, जिसके आगे इसको पुरुष जाति की चाहत दब जाएगी। इसलिए यह पतिभर्ता या पतिव्रता कहलाएगी। परन्तु चालीस बरस के उपरान्त यानी तृतीय अवस्था में यह अपनी असलियत पर आएगी। इस समय अलबत्ता यह पुरुष जाति के बोलने का अनुग्रह मान सकती है। इसलिए इसका नाम अनुग्रहीता होगा। इसीलिए बुद्धिमान को चाहिए कि गर्विताओं और पतिभर्ताओं को दूर ही से प्रणाम करे और अपनी कुशलता चाहे तो भूल कर भी इनसे प्रेम करने का साहस न करे। इति स्त्री-शास्त्रे भेद-विधान खण्डे। बोलो भाई श्रीशैतान जी की जै।"

(क्रमशः)

(*Copyright*)

* * *

भारतीय कॉङ्ग्रेस के साथ मि० चर्चिल की वफ़ादारी !!

"भारत के दस वर्षों के सुधारों का इतिहास उसकी अवनति का इतिहास है"

"भारत के सम्बन्ध-विच्छेद से ब्रिटिश साम्राज्य धूल में मिल जायगा"

"गोलमेज़ का निर्णय पार्लामेण्ट पर बाध्य नहीं है"

"हम उस अमूल्य हीरे को, जिसके सहारे ब्रिटिश साम्राज्य का बल है, शान है, मान है, उखाड़ कर फेंकना नहीं चाहते। भारतवर्ष का अलग होना ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त है, उसके सम्बन्ध-विच्छेद से यह विशाल साम्राज्य धूल में मिल कर केवल इतिहास के पृष्ठों में रह जायगा।........हमारी साम्यवादी सरकार ने यदि समझौता करने के लिए भारतवासियों को अधिकार देने का वचन दे दिया, तो भविष्य में भारत की क्रान्तिकारी शक्तियाँ और भी प्रबल हो उठेंगी। और क्रान्तिकारी शक्तियों के प्रबल होने पर हमारे वफ़ादार लोग भी विमुख हो जायँगे।"

"मैं अपने भारतवासी भाइयों को चेतावनी देता हूँ कि वे इस ढोंगबाज़ी से धोखा न खाएँ। पाश्चात्य राजनीति तथा गोलमेज़ परिषद् की शेख़ियों के भीतर ही भीतर, भारतवर्ष पर कठोरता से शासन करने की आयोजना की जा रही है।"

कैननस्ट्रीट होटल लन्दन में व्यापारियों की एक सभा में भाषण देते हुए मि० चर्चिल ने कहा—"भारतवर्ष के सम्बन्ध में, पिछले बारह मास में जिस प्रकार से गप हाँकने से काम लिया जा रहा है, उसकी देश के सामने पोल खोलना अपना कर्त्तव्य समझ कर हम लोग आज इस स्थान पर एकत्रित हुए हैं।

"बहुत से लोगों का कहना है, कि भारतवर्ष के राजनैतिक विचार बड़ी शीघ्रता से उन्नति कर रहे हैं, गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में नर्म दल के प्रतिनिधि तक औपनिवेशिक स्वराज्य, ब्रिटेन से सम्बन्ध तोड़ने का अधिकार, तथा शासन-प्रणाली पर पूरा क़ब्ज़ा कर लेने के लिए आफ़त मचा रहे हैं। गर्म दल वालों का तो कहना ही क्या? उनका ध्येय तो अब पूर्ण स्वराज्य हो चुका है। वह लोग उस सुखमय भविष्य के स्वप्न देख रहे हैं, जब समस्त भारतवर्ष में पूर्णतया उनका राज्य होगा, जब इङ्गलैण्ड उनके लिए यूरोप के अन्य देशों की नाईं एक दूरस्थित विदेश हो जायगा, जब हम लोग भारतवर्ष में सिर झुका कर रहेंगे, जब भारतवर्ष का सारा क़र्ज़ा देने से इन्कार कर दिया जावेगा, तथा सफ़ेद चमड़ी के चौकीदारों की एक फ़ौज, जिसके अफ़सर शायद जर्मनी से भाड़े पर लाए जाएँगे, हिन्दू राज्य की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहेगी।

झूठी आशाएँ

"यह सब झूठी और भयानक आशाएँ हैं, जिनका उचित उत्तर न देकर ब्रिटिश सरकार ने, भारत में और यहाँ पर, केवल प्यार व दिलासे से काम लिया है। "पूर्ण औपनिवेशिक स्वराज्य" "भारतवर्ष संसार की एक महान शक्ति" इत्यादि कई निरर्थक तथा निकम्मे शब्द वायुमण्डल में नित्य प्रति गूँजते हैं। भारतवर्ष के ब्रिटिश पत्र भी इसी निर्णय की ओर खिंचे चले आ रहे हैं, कि यदि भारतवासी इङ्गलैण्ड से सम्बन्ध तोड़ने का विचार त्याग दें, तो जो कुछ भी वह मिल कर माँगेंगे, पार्लामेण्ट चुपचाप उनके हाथ पर धर देगी। गोलमेज़ परिषद के खुले अधिवेशन में पाँच दिन तक जो बकवाद होता रहा है, उससे ऐसा प्रतीत होता है, कि मानो भारतवर्ष को बहुत से अधिकार दिए जाने वाले हैं, केवल छोटी-छोटी बातों का निर्णय करना शेष रह गया है, ताकि भारतवर्ष की अल्प-संख्यक जातियों की रक्षा का प्रबन्ध हो जाय

"इन्हीं कारणों से यह आवश्यक प्रतीत होता है, कि अन्त में निराशा से बचने के लिए सारी स्थिति का इस समय निरीक्षण कर लिया जाए। हमारा ऐसा विश्वास है, कि इङ्गलैण्ड की भारतवर्ष पर अपना क़ब्ज़ा ढीला करने की कोई इच्छा नहीं। गोलमेज़ परिषद को भारतवर्ष के लिए शासन-पद्धति बनाने का कोई अधिकार नहीं। कॉन्फ़्रेन्स का निर्णय, पार्लामेण्ट किसी प्रकार भी मानने के लिए बाध्य नहीं है। गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया एक्ट बनाने के लिए कॉन्फ़्रेन्स के किसी निश्चय की आवश्यकता नहीं। भारतवर्ष की शासन-पद्धति के सुधार का भार पार्लामेण्ट पर है। वर्तमान में भी, जब कि इङ्गलैण्ड में अल्प संख्यक मज़दूर सरकार का शासन है, ऐसे व्यक्तियों की संख्या पार्लामेण्ट में कम नहीं है, जो कि भारतवर्ष को निकट भविष्य में औपनिवेशिक स्वराज्य देने का कोई विचार नहीं रखते और यह भी निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है, कि जब तक भारतवर्ष के लिए शासन-सुधार-बिल पेश करने का समय आवेगा, पार्लामेण्ट का दूसरा चुनाव हो चुका होगा, जिसके फल-स्वरूप वहाँ पर राष्ट्रीय विचारों के लोग अधिक संख्या में उपस्थित होंगे। वास्तविक स्थिति तथा सत्य की ओर से आँखें मूँद कर, जो झूठी आशाएँ दिखाई जा रही हैं, इसके परिणाम-स्वरूप भविष्य में रक्त की नदियाँ बहने वाली हैं।

भारतवर्ष की स्थिति

यह तो हुआ इङ्गलैण्ड का हाल, अब भारतवर्ष को लीजिए। हमको बताया जाता है कि भारतवर्ष के राजनैतिक विचारों में अन्तर आ गया है, परन्तु वास्तव में भारतवर्ष की अवस्था में कोई भी अन्तर नहीं है। भारतवर्ष के जनसमुद्र में राजनीति के शौकीन केवल मुट्ठी भर हैं। जिन पाश्चात्य विचारों को वह अपनाना चाहते हैं, उनका भारतवर्ष के आचार-व्यवहार से कोई सम्बन्ध नहीं। भारतवर्ष में कम से कम ७० भिन्न-भिन्न जातियाँ तथा इससे भी अधिक मत हैं, जो कि एक-दूसरे के विरोधी हैं। सर राण्डल्फ़ चर्चिल का कहना है कि "भारतवर्ष में हमारा राज्य एक मोमी कपड़े की नाईं वहाँ के जन-समुद्र पर बिछा हुआ है, जो भयङ्कर आँधियों से उनकी रक्षा करता है। यदि अङ्गरेज़ भारतवर्ष से चले जाएँ तो वहाँ हिन्दुओं की मनमानी चलेगी अथवा घरेलू झगड़ों के मारे भारतवर्ष में फिर वही गड़बड़ मचेगी, जो वहाँ पर अङ्गरेज़ी राज्य से पहले १००० साल तक रही थी। कौन जानता है, हमारे चले जाने के पश्चात भारतवासी चीनियों की नाईं दुःख-जञ्जाल में नहीं डूब जायँगे।

पराजयवाद

"इस पर भी हमको बताया जाता है, कि भारतवर्ष के राजनैतिक विचारों में अन्तर आ गया है। भारतवर्ष को अपनी मुक्ति का पथ दिखाई दे गया है। भिन्न-भिन्न जातियाँ तथा मत अपने झगड़े समेट कर अङ्गरेज़ों से अपने सम्बन्ध का अन्त करना चाहते हैं। परन्तु इसका कारण क्या है? इसमें बेचारे भारतवासियों का रत्ती भर दोष नहीं है। यह हमारी राजनीति के ओछेपन का चिह्न है। भिन्न-भिन्न प्रकार से भारतवर्ष में इस विचार का प्रचार किया गया है, कि भारत में अङ्गरेज़ी राज्य का अन्त होने वाला है, तथा एक नए राज्य का उदय अब समीप है। एक ओर तो है बढ़ती हुई माँग, और दूसरी ओर हैं मीठे-मीठे दिलासे।

"हमारे पराजयवादी राजनीतिज्ञ कहते हैं, कि देखो अब तो देशी राजाओं ने भी, जो अब तक हमारे साथ थे, पैंतरा बदल दिया है। वह भारत की शासन-प्रणाली में अन्तर चाहते हैं। इसका कारण सहज है। जिस समय भारतवासियों को यह विश्वास दिलाया जाता है, कि शीघ्र ही ब्रिटिश सरकार अपना बोरिया-बिस्तर गोल करने वाली है, तो वह लोग, जो आज तक हमारे वफ़ादार थे, नए प्रभुओं का मुँह देखते हैं, भविष्य में आने वाली सरकार के साथ अपना नाता जोड़ने का प्रयत्न करते हैं। इन लोगों का नए प्रभुओं के साथ कम से कम पुराने प्रभुओं के बराबर घनिष्ट सम्बन्ध स्थापन करने की योजना करना साधारण बात है।

विचारों में क्रान्ति

"भारतवर्ष में राजनैतिक विचारों की क्रान्ति का कारण क्या है? क्या भारतवर्ष की स्थिति में अन्तर आ गया है? नहीं, इसका कारण है हमारे प्रतिनिधियों का ओछापन। मैं अपने भारतवासी भाइयों को चेतावनी देता हूँ, कि वे इस ढोंगबाज़ी से धोखा न खाएँ। पाश्चात्य राजनीति तथा गोलमेज़ परिषद् की शेख़ियों के भीतर ही भीतर, भारतवर्ष पर कठोरता से शासन करने की आयोजना की जा रही है। भारतवर्ष के चौबीस हज़ार राजनीतिज्ञ तथा उनके मूर्ख भक्त आज जेल की हवा खा रहे हैं। सभी स्थानों पर उत्पात को दबाया जा रहा है। गाँधी की लहर, जिसने भारत-सरकार को

चुनौती देने का साहस किया है, ईश्वर का धन्यवाद है, कि सीमा-प्रान्त के सिवाय सारे भारतवर्ष में बिना रक्त बहाए शान्त हो गई है।

"यदि इङ्गलैण्ड तथा भारत-सरकार स्थिति को ठीक-ठीक समझ सकी होती, तो आज भारतवर्ष में जितनी गड़बड़ है, उसकी एक चौथाई भी न होती। यदि भारतवासियों को झूठी आशाएँ दिलाने के स्थान पर उनकी आर्थिक दशा पर ध्यान दिया जाता, यदि लाहौर काँग्रेस, जिसमें कि हमारे यूनियन जैक को जलाया गया था, क़ानून विरुद्ध ठहरा कर उसके नेताओं को देश से बाहर निकाल दिया होता, यदि गाँधी को उसी समय गिरफ़्तार कर लिया होता, जिस समय उसने नमक-क़ानून तोड़ा था, यदि साहस के साथ शासन किया जाता, तो आज इन ऑर्डिनेन्सों तथा नित नए क़ानून की आवश्यकता न पड़ती।

"आज भी यदि ब्रिटिश पार्लामेण्ट भारतवर्ष के शासन का पक्का निश्चय कर ले, तो कुछ ही समय में यह सारी गड़बड़ शान्त हो जाएगी। अब हमारी स्थिति क्या है? सम्राट के वचन अटल हैं। हमने भारतवासियों को धीरे-धीरे भारतवर्ष का शासन उनके हाथों में सौंपने का वचन दिया है। सन् १६२० का एक्ट एक ऐसी चट्टान है, जिसको उखाड़ कर फेंका नहीं जा सकता। उस एक्ट के अनुसार हमने कई अधिकार भारतवासियों को दिए हैं। ब्रिटिश साम्राज्य में रह कर उन्नति करने में भारतवर्ष के लिए कोई बाधा नहीं। परन्तु उसी एक्ट के अनुसार हमारा अधिकार है, जब चाहें अधिकार दे दें, जब चाहें छीन लें। भारत को इङ्गलैण्ड ने अपने बाहुबल से जीता है, और उसका भारतवर्ष के साथ केवल एक ही सम्बन्ध है, जो कि मैंने आपको बताया है। मि० मॉण्टेगू ने भारतवर्ष को जो अधिकार दिए थे वही काफ़ी से अधिक थे। उन अधिकारों का दुरुपयोग किया गया। पिछले दस वर्ष का इतिहास भारतवर्ष की अवनति का इतिहास है।

"हम भारतवर्ष के भाग्य के विधाता हैं, और हमारे इस अधिकार को कोई छीन नहीं सकता। हम भारतवासियों को भारत-शासन-पद्धति में दीक्षा देने का वचन दे चुके हैं। परन्तु जब तक पार्लामेण्ट सच्चे मन से उद्देश्य-पूर्ति का प्रयत्न करती है, उसको सर्वाधिकार प्राप्त हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमने जो भारतवर्ष के लिए शासन-पद्धति गढ़ने के प्रयत्न किए हैं, वे सब भ्रान्तिपूर्ण हैं। यह हमारा कर्तव्य भले ही हो, कि हम भारतवर्ष को थोड़े से अधिकार दे दें, परन्तु पाश्चात्य विचारानुसार जो हवाई क़िले बनाए जा रहे हैं, वह सर्वथा झूठ हैं।

"यहाँ पर मैं आपको एक चेतावनी देना चाहता हूँ। भारतवर्ष के स्त्री-पुरुष जो आज गोलमेज़ परिषद के लिए इकट्ठे हुए हैं, भारतवर्ष के किसी भी प्रकार प्रतिनिधि नहीं माने जा सकते। यह सच है कि लहर की लपेट में आकर उनमें से कुछ लोग गर्म दल वालों की माँगें पेश कर रहे हैं, परन्तु इनमें से किसी को भी काँग्रेस की ओर से वचन देने का अधिकार नहीं है। हमारी साम्यवादी सरकार ने यदि समझौता करने के लिए भारतवासियों को अधिकार देने का वचन दे दिया तो भविष्य में भारत की क्रान्तिकारी शक्तियाँ और भी प्रबल हो उठेंगी। क्रान्तिकारी शक्तियों के प्रबल होने पर हमारे वफ़ादार लोग भी विमुख हो जायँगे। सच तो यह है, गाँधीवाद और इसकी माँगों को एक बार ही जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए। शेर को बिल्ली का गोश्त देकर बेवकूफ़ नहीं बनाया जा सकता। जितना शीघ्र इस बात का अनुभव कर लिया जाएगा, उतना कम उत्पात का भय रहेगा।

"सब से बड़ी बात यह है, कि यह खोल कर बता दिया जाए कि ब्रिटिश सरकार भारत के सर्व-साधारण के हितार्थ अपने अधिकारों का दिखावा नहीं खोलना चाहती। हम उस अमूल्य हीरे को, जिसके सहारे ब्रिटिश साम्राज्य का बल है, शान है, मान है, उखाड़ कर फेंकना नहीं चाहते। भारतवर्ष का अलग होना ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त है। उसके सम्बन्ध विच्छेद से यह विशाल साम्राज्य धूल में मिलकर केवल इतिहास के पृष्ठों में रह जाएगा। इस भयङ्कर स्थिति से फिर कोई बचाव न रहेगा।"

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

क्षमा कीजिएगा, इस बार चिट्ठी भेजने में कुछ विलम्ब हो गया। इसका कारण मेरी सुस्ती या आलस्य नहीं है। बात यह थी कि मैं म्युनिसिपल-चुनाव की चपेट में आ गया था। यद्यपि इस बार मैंने यह निश्चय कर लिया था कि इस बला से बचा रहूँगा—न किसी का समर्थन करूँगा, न किसी का विरोध; परन्तु यार लोगों को यह कब सहन हो सकता था, वे ऐसे पञ्जे झाड़ के पीछे पड़े कि पिण्ड छुड़ाना असम्भव हो गया। भाई, कहने को चुनाव जनता के वोट पर होता है; पर जनता सच्चे और शुद्ध हृदय से किसे वोट देती है, इसका पता लगाना घास के गट्ठे में से सूई ढूँढ़ निकालने के समान है। ओफ़ ओह ! कितनी धाँधली होती है, कितना अनुचित ढङ्ग अख़्तियार किया जाता है कि मैं बयान नहीं कर सकता। आपने राजनैतिक नेता, धार्मिक नेता इत्यादि का नाम तो सुना होगा, पर अब कुछ दिनों से १००८ वोटयुक्त (वोट-श्री) श्रीमान् चुनाव-नेता का प्रादुर्भाव हुआ है। यह चुनाव-नेता वे लोग हैं, जिनकी दाल राजनीति में नहीं गलती, जो अन्य किसी बात के नेता बनने की योग्यता नहीं रखते—या फिर जिन्हें केवल उन लोगों को चुनवाना होता है, जो उनके मित्र हैं और उनसे वादा करा लेते हैं कि वह अमुक पार्टी की नीति के अनुसार काम करेंगे। ऐसे नेताओं का नेतापन केवल चुनाव के समय में चमकता है। कुछ लोग ऐसे हैं, जो केवल इसलिए चुनाव-नेता बनने का प्रयत्न करते हैं, जिसमें उम्मीदवार उनकी ख़ुशामद करें—उनके यहाँ ज़रा चहल-पहल रहे—चार आदमी आते-जाते रहें। लोग समझें कि हाँ, यह भी कोई आदमी हैं। और क्या, यह ठाठ हैं। ये लोग ठेके पर चुनाव लड़ते हैं। कैसा ही उम्मीदवार हो, किसी भी योग्यता का हो—किसी चुनाव-नेता को ठेका मिल जाय, बस समझ लीजिए कि वह रुपए में बारह आने भर हो गया। कुछ लोग चुनाव के कार्य के विशेषज्ञ समझे जाते हैं और इस कार्य के लिए दूर-दूर तक बुलाए जाते हैं। इन लोगों ने चुनाव लड़ना भी एक कला बना रक्खा है। जी ! मामूली बात नहीं है। कुछ दिनों में कदाचित इस कला पर पुस्तकें भी लिख जायँ ! यद्यपि यह बात विशेषज्ञों के लिए कुछ हानिकारक होगी; क्योंकि उनके रहस्यों का उद्घाटन होगा।

अब ये विशेषज्ञ लोग किस प्रकार चुनाव लड़ते हैं, इसका भी कुछ वर्णन सुन लीजिए। यद्यपि मैं इन लोगों के पूरे हथकण्डे नहीं समझ पाया हूँ, परन्तु जहाँ तक मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ है, उतना बताता हूँ। सब से पहले चुनाव-नेता की दृष्टि चेयरमैन के चुनाव पर जाती है। इस बार कौन चेयरमैन होना चाहिए। जिस व्यक्ति को वह अपने अथवा अपनी प्रिय पार्टी के अनुकूल समझते हैं, उसी को चेयरमैन बनाना स्थिर करते हैं। इसके पश्चात् इस बात का सिंहावलोकन होता है कि जितने उम्मीदवार खड़े होने वाले हैं, उनमें से कौन-कौन अमुक व्यक्ति की चेयरमैनी के पक्ष में वोट देगा। जो व्यक्ति पक्ष में होते हैं, उनको छोड़ कर और अन्य सब उम्मीदवार रद्दी कर दिए जाते हैं। इन रद्दी किए हुए उम्मीदवारों के विपक्ष में चुनाव-नेता ऐसा उम्मीदवार खड़ा करता है, जो उनके सोचे हुए चेयरमैन के पक्ष में वोट दे। यह उम्मीदवार किस योग्यता का है, इस बात की परवा कम की जाती है। योग्यता का कोई प्रश्न नहीं। क्योंकि योग्यताहीन व्यक्ति में भी चुनाव-नेता दो-चार योग्यताएँ ऐसी उत्पन्न कर देते हैं, जिनका जवाब चिराग़ लेकर ढूँढ़ने पर भी मिलना असम्भव हो जाता है। और अपने विपक्षी योग्य से योग्य व्यक्ति में भी दो-चार बातें ऐसी ढूँढ़ निकालते हैं कि उनसे अधिक बुरी बात की मिसाल

Prof. B. L. Atreya, M.A., D. Litt. of tha Hindu University Benares writes :

Kindly excuse me for a little delay in expressing my thanks to you for the trouble you took in showing me the *Chand* Press and the *Matri Mandir*. My visit to Allahabad has really become sanctified by my pilgrimage, to these two places, from where I have brought a good deal of inspiration. In the person of Mr. Saigal I have discovered a really great man of both thought and action, whose name will go to the posterity as one of the builders of free India. Political freedom is only an external expression of intellectual, moral and religious freedom, to bring about which the CHAND has been striving so long. I wish I could partake in this *Mahayajna* which is being performed by you for awakening the soul of India which is even now dreaming the dreams of superstition, ignorance social injustice, slavery and persecution of the fair sex-dreams from which other nations have already freed themselves, I pray to the Almighty to give you more and more power to continue the work you have undertaken.

***

ढूँढ़ निकालना टेढ़ी खीर हो जाती है। उम्मीदवार स्थिर हो जाने पर उनके पक्ष में जनता की सहानुभूति प्राप्त करने और विपक्षी उम्मीदवार के प्रति जनता के हृदय में विरोध-भाव उत्पन्न करने की चेष्टा की जाती है। इस कार्य में ही सारी कला अन्तर्हित है। पक्ष के उम्मीदवारों के समस्त पुण्य-कार्य ढूँढ़-ढूँढ़ कर निकाले जाते हैं और उन्हें जनता के सम्मुख रक्खा जाता है, और विपक्षी उम्मीदवार के सारी आयु के पापों की सूची तैयार की जाती है और उन्हें जनता के कानों तक पहुँचाया जाता है। ये बातें जैसी की तैसी नहीं, वरन् यथेष्ट वृहदाकार (Enlarged) बना कर रक्खी जाती हैं। इस प्रकार चुनाव, जनता का चुनाव नहीं, वरन् चुनाव-नेताओं का चुनाव बन जाता है। जनता बेचारी चुनाव-नेताओं के अनुसार कार्य करने पर मजबूर की जाती है। "All is fair in love and war" की अङ्गरेज़ी कहावत के अनुसार चुनाव-नेता कार्य करते हैं। झूठे वादे करना, सुबह जो कहा है, शाम को उसके प्रतिकूल हो जाना, किसी से कुछ कहना और किसी से कुछ, अन्त तक लोगों को भ्रम में डाले रहना, झूठा प्रचार करना, उम्मीदवारों को बदनाम करना, उम्मीदवारों के पक्ष अथवा विपक्ष में नाजायज़ दबाव डलवाना इत्यादि कोई ऐसा काम नहीं है, जो ये नेता लोग न करते हों। कोई वोटर श्याम को अच्छा आदमी समझता है और उसको वोट देना चाहता है, परन्तु चुनाव-नेता राम के पक्ष में हैं, तो उक्त वोटर को श्याम के पापों की गाथा सुनाई जाती है और राम के पुण्यों का हिसाब-किताब। यदि वोटर महाशय इससे राह पर आ गए तब तो ठीक, अन्यथा इस बात का पता लगाया जाता है कि उक्त वोटर पर किसका दबाव है। इस बात का पता लग जाने पर उस व्यक्ति को क़ाबू में लाकर उक्त वोटर पर दबाव डलवाया जाता है। इस प्रकार ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाती है कि चुनाव का दिन आने तक बेचारा वोटर अपनी सारी अक़्ल और समझ खो बैठता है, उसे अपनी बुद्धि और समझ पर विश्वास नहीं रहता और वह चुनाव-नेता की नीति के अनुसार काम करने पर विवश हो जाता है। यदि कोई वोटर कहता है कि हम तो अमुक व्यक्ति को वोट देने का वादा कर चुके हैं, तो चुनाव-नेता या उनका कोई अनुचर उस वोटर को यह सुझाता है कि ऐसे वादे का पूरा करना आवश्यक नहीं है। चुनाव में वादों और वचनों का कोई मूल्य नहीं। यदि किसी के वचन या वादे का मूल्य है तो वह केवल चुनाव-नेता या उनके पक्ष वालों का। उनके वादे—यदि उनका पूरा करना ठीक समझा जाता है—पत्थर की लीक हैं। वे कैसे टाले जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि कोई वचन देता है तो वह उसी प्रकार मूल्यहीन है, जिस प्रकार कि एक बच्चे की बातें होती हैं।

किसी बात को उलट-पलट कर देना चुनाव-नेता के बाएँ हाथ का खेल है। कल शाम तक जो उम्मीदवार बड़ा अच्छा था, वह यदि चुनाव-नेता चाहता है, तो दूसरे दिन सुबह से ही बड़ा ख़राब आदमी बन जाता है !

कल तक जिसकी प्रशंसा के पुल बाँधे जाते थे, आज उसकी बुराइयों के खाते खोले जा रहे हैं। कल शाम तक जिसने समस्त आयु अच्छे ही अच्छे काम किए, आज उसने अपनी उम्र में एक भी शुभ कार्य नहीं किया। अथवा कल तक जो बड़ा ख़राब आदमी था, आज वह भलाई की मूर्ति हो जाता है। ये सब कार्य ज़बानी प्रचार-कार्य अथवा नोटिसों और पर्चों के द्वारा होते हैं। और आनन्द यह है कि गन्दी बातों से श्रीमान् नेता जी महाराज अलग रहते हैं। कल तक एक आदमी जिसकी प्रशंसा कर रहा था, वह चुप कर दिया जाता है और एक दूसरा आदमी खड़ा कर दिया जाता है, जो उस आदमी की बुराइयों का बखान करना आरम्भ कर देता है। जनता बेचारी कल तक जिसकी तारीफ़ें सुन रही थी, आज उसकी बुराइयाँ सुन कर अपनी बुद्धि खो बैठती है। चुनाव की भाषा में इसका नाम हवा बाँधना और हवा बिगाड़ना है ! तारीफ़ें करके हवा बाँधना, बुराइयाँ करके हवा बिगाड़ना, यही इसका अर्थ है। जनता अधिकतर भेड़ियाधसान की प्रकृति की होती है। दस आदमी जिसे अच्छा कहने लगे उसे वह भी अच्छा समझने पर मजबूर होती है, और बुरा कहते हैं तो बुरा। इस कार्य के लिए ऐसे-ऐसे गन्दे और अश्लील नोटिस निकाले जाते हैं कि देख कर घृणा होती है। और तारीफ़ यह है कि चुनाव-नेता महोदय इस गन्दगी के मध्य में उसी प्रकार रहते हैं,

जिस प्रकार जल में कमल! क्या मजाल जो उनकी ओर कोई उँगली उठा दे। यदि कोई कहता भी है कि अमुक नोटिस बड़ा गन्दा निकला तो नेता महाशय मुँह बना कर कहते हैं—"वाक़ई बड़ा गन्दा निकला। क्या करें, अमुक व्यक्ति यह सब कर रहा है, हमारे समझाने से मानता नहीं।" बलिए, नेता महोदय तो दूध के धोए बन कर अलग हो गए। हालाँकि होता सब उन्हीं के इशारे पर है।

वोट पड़ने के दिन भी इन नेताओं की कला देखने योग्य होती है। जिस व्यक्ति को मरे वर्ष भर हो चुका है, उसका वोट डलवा देना इनके बाएँ हाथ का खेल है। एक ही व्यक्ति से तीन-तीन, चार-चार बार वोट डलवा देना इनके लिए साधारण बात है। अपने ही किसी गुर्गे द्वारा विपक्षी के पक्ष में जाली वोट डलवा कर उसे पकड़वा देना और इस प्रकार विपक्षी को बदनाम कर देना अथवा चुनाव-भाषा में 'हवा बिगाड़ देना' इनकी कला का एक बहुत छोटा नमूना है। कहाँ तक कहूँ—इन लोगों की महिमा अपरम्पार है। यदि इनका खड़ा किया हुआ उम्मीदवार जीत गया तब तो उसका सारा श्रेय नेता साहब को मिलता है और जो हार गया तो कार्यकर्त्ताओं के मत्थे जाती है। अमुक ने अमुक कार्य नहीं किया, अमुक ने सुस्ती की, अमुक ने यह ग़लती की—इस प्रकार कह कर उस मामले को रफ़ा-दफ़ा कर दिया जाता है और नेता महाशय सर्वथा निर्दोष तथा निर्विकार सिद्ध हो जाते हैं। जीते हुए विपक्षी उम्मीदवार से नेता महाशय एकान्त में मिल कर कहते हैं—"भई, कुछ कारणों से मैं प्रकट में तुम्हारा विरोध करता रहा, पर भीतर से मैंने तुम्हारे लिए ही चेष्टा की।" इस प्रकार से उसे भी उल्लू बना कर अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया जाता है। कोई हारे या कोई जीते, नेता महोदय की हर तरह चाँदी है। चित भी उन्हीं की और पट भी उन्हीं की। इन सब कार्यों में नेताओं की एक कौड़ी भी ख़र्च नहीं होती, उल्टे यदि वह चाहते हैं तो उनको और उनके अनुचरों को कुछ लाभ हो जाता है।

लोग समझते हैं कि जनता ने चुना; परन्तु दरअसल वे चुने हुए होते हैं नेता महोदय के। जनता बेचारी मुफ़्त में बेवक़ूफ़ बना कर छोड़ दी जाती है।

सम्पादक जी! कहाँ तक लिखूँ। इन नेताओं के हथकण्डे लिखने में एक पुस्तक तैयार हो सकती है।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

रज-कण

[संग्रहकर्ता—श्री० काशीनाथ जी त्रिवेदी]

कीचड़ में पैदा होना एक आकस्मिक बात है, उसमें महत्ता भी नहीं, और लघुता भी नहीं। पर उसमें से कमल बनने में सच्ची ख़ूबी है।

मनुष्य चाहे जो काम करे, राज का, कारीगर का या कलाकार का, पर जिस काम से उसके हृदय को आनन्द नहीं होता, वैसा प्रत्येक काम उसे मनुष्यत्व से नीचे गिराता है।

❀

जो मनुष्य अपने बारे में कभी भी विचार नहीं करता, वह वर्षों ज़िन्दा रह कर भी कुछ नहीं करता।

बहुतेरे मनुष्य सारा दिन काम करते हैं, बहुत उद्योगी होते हैं, पर उनका उद्योग आलस्य को दिखावटी सुन्दरता का रूप देने जैसा होता है। ऐसे उद्योग की अपेक्षा निरुद्योगी का एकान्त चिन्तन अधिक अच्छा। जिसे कुछ जानने की इच्छा हो, वह सब से पहले अपना जीवन देखे। सब प्रकार के ज्ञान का वहाँ से आरम्भ होता है।

❀

An Appreciation

Sjt. Bhola Lal Das, B.A., LL.B., Laharia-Sarai, writes to say :

I have been watching all-along the whirlwind of political dangers which you and your press has been thrown into. It is also a great relief to me to learn that you have been facing all these troubles with an undaunted courage and perseverance . . . About BHAVISHYA, I should only say that it has really surpassed all the Indian weeklies and has rightly found its way into all the nooks and corners of the country. To tell you the truth, I find my own thoughts much below its high standard and hence I do not attempt to write further . . .

***

जिसने कभी परिस्थिति-विशेष में पड़ कर अपने नैतिक बल की आवश्यक जाँच नहीं की है, वह मनुष्य न नीतिमान है, न अनीतिमान; उसमें अनीति का न होना कोई सद्गुण नहीं; बल्कि अज्ञान का दुर्गुण है। जो नैतिक बल कसौटी पर कसा नहीं गया है, वह नैतिक बल नहीं, यन्त्र की-सी जड़ अवस्था है। यह कभी बचा लेता है, पर अकसर तो डुबाता ही है।

❀

जो विशुद्ध आनन्द अपने को मिला है, उसे दूसरों के लिए भी सुलभ बना देना कलाकार का धर्म है।

❀

यही सत्य है, दूसरा सत्य नहीं; इस कथन में ही असत्य का अंश है।

❀

स्वभाव से यह मानने वाला मनुष्य, कि मुझमें दोष नहीं है, चाहे जितना विद्वान क्यों न हो, अपढ़ ही है। जब कि अपना सिर्फ़ एक ही दोष देख कर उसे दूर करने का प्रयत्न करने वाला मनुष्य अपढ़ होते हुए भी विद्वान है।

❀

जिस वाचन से विचार को प्रेरणा नहीं मिलती, और जो वाचन विचार या चिन्तन के लिए नहीं होता वह वाचन शराब, बीड़ी या तम्बाकू के व्यसन की भाँति निरुद्योगी का व्यसन है। बहुतेरे मनुष्यों को पढ़ने का व्यसन ही होता है।

❀

हृदय-दौर्बल्य से उत्पन्न सन्तोष मनुष्य को तृप्ति का आनन्द नहीं पहुँचाता, हाँ अज्ञानपूर्ण दारिद्र्य की ओर जड़तापूर्ण श्रद्धा अवश्य पैदा करता है। सन्तोष मनुष्य का परम मित्र है, पर इसके समान भयङ्कर शत्रु भी दूसरा कोई नहीं है।

❀

जो मनुष्य संस्कारवान बनने का प्रयत्न कर रहा है, वही सच्ची विद्या का उपासक है।

❀

कसौटी पर कसे जाने पर जो सौ टञ्च साबित हो वह संस्कार है। बहुतेरे मनुष्य पढ़े-लिखे प्रतीत होते हैं। कई विद्वत्ता को देश का साधन मानते हैं, कुछ के लिए यह यश-प्राप्ति का साधन है। आजीविका के लिए भी इसका उपयोग हो सकता है। पर अक्सर एक दस वर्ष का हाज़िर-जवाब बालक जितना संस्कारवान होता है उतना सौ वर्षों का अनुभवार्थी या विद्वान नहीं बन सकता। संस्कार के बीज के लिए कल्पना के क्षेत्र की, प्रेरणा के जल की और कठिनाइयों से पूर्ण मैदान की आवश्यकता होती है।

❀

शक्य हो या अशक्य, पर जो सत्य है, वही ध्येय रहना चाहिए; अशक्यता की इन महान चट्टानों के साथ टकरा कर जो सत्य चकनाचूर हो जाता है, उसी से मनोरम सृष्टि की रचना होती है।

❀

अशक्यता की चट्टान पर सत्य के लिए चकनाचूर हो जाना ही पुरुषार्थ है, जीवन है, मनुष्यत्व है।

* * *

Registered No. A—2085

हास्यकला का चमत्कार ! हास्योपन्यासों का लकड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

की

हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !

छः खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा का छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

मूल-लेखक—
महात्मा काउण्ट टॉल्सटॉय

पुनर्जीवन

अनुवादक—
प्रोफ़ेसर रुद्रनारायण जी अग्रवाल, बी० ए०

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपनी आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है; और किस प्रकार अन्त में वह वेश्यावृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, उसकी ऐसी अवस्था देख कर उसे अपने किए पर अनुताप होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एकमात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित भी करना चाहिए—सब एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं, और वह प्रायश्चित का कठोर निर्दय-स्वरूप, वह धार्मिक भावनाओं का प्रबल उद्रेक, वह निर्धनों के जीवन के साथ अपना जीवन मिला देने की उत्कट इच्छा, जो उसे साइबेरिया तक खींच कर ले गई थी। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। इसमें दिखाया गया है कि उस समय रूस में त्याग के नाम पर किस प्रकार मनुष्य-जाति पर अत्याचार किया जाता था। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ५) स्थायी ग्राहकों से ३॥)

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad

सम्पादक :—
श्री [illegible]

[illegible]

वार्षिक चन्दा ... ... ६) रु०
छः माही चन्दा ... ५) रु०
तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य ... ≈)
Annas Three Per Copy

भविष्य

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
भविष्य [illegible]

[illegible]

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

[illegible] | इलाहाबाद—[illegible]वार ; ८ जनवरी, १९३१ | [illegible]

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम की कुछ महत्वपूर्ण कुर्बानियाँ

जननो जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
हुब्बुल वतन मिनल इमान

—मोहम्मद साहब

कालीकट कॉङ्ग्रेस की सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री—श्रीमती [illegible] मेनन—जो हाल ही में जेल गई हैं।

नीमार (सी० पी०) ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिक्टेटर' वयोवृद्ध—श्री० बाबू तोताराम जी सुखदाने—जिन्हें जङ्गल-क़ानून तोड़ने के अपराध में ३ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

कालीकट कॉङ्ग्रेस की सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री—श्रीमती [illegible]—जो हाल ही में जेल गई हैं।

धारवाड़ और हुबली कॉङ्ग्रेस कमिटियों के 'डिक्टेटर'—श्री० गुरुराज उदयपिथर—जिन्हें ६ मास का कठिन कारावास-दण्ड मिला है।

धारवाड़ के सुप्रसिद्ध चित्रकार—श्री० नारायण राव हम्पासागर—जिन्हें ३ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

छप गई !

प्रकाशित हो गई !!

व्यङ्ग-चित्रावली

यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाज़ा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं वेदना से हृदय तड़पने लगेगा; मनुष्यता की याद आने लगेगी; परम्परा से चली आई रूढ़ियों, पाखण्डों और अन्ध-विश्वासों को देख कर हृदय में क्रान्ति के विचार प्रबल हो उठेंगे; घण्टों तक विचार-सागर में आप डूब जायँगे। पछता-पछता कर आप सामाजिक सुधार करने को बाध्य होंगे!

प्रत्येक चित्रों के नीचे बहुत ही सुन्दर एवं मनोहर पद्यमय पंक्तियों में उनका भाव तथा परिचय अङ्कित किया गया है। इसके प्रकाशित होते ही समाज में हलचल मच गई। प्रशंसा-पत्रों एवं सम्मतियों का ढेर लग गया। अधिक प्रशंसा न कर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी चित्रावली आज तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

इकरङ्गे, दुरङ्गे, और तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, फिर भी मूल्य

?

लागत मात्र केवल ४); स्थायी तथा 'चाँद' के ग्राहकों से ३)

अब अधिक सोच-विचार न करके आज ही आँख मींचकर ऑर्डर दे डालिए !!

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; यह वह मालिका नहीं, जो दो-एक दिन में सूख जायगी; यह वह मालिका है, जिसकी ताज़गी सदैव बनी रहेगी। इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी, दिमाग़ ताज़ा हो जायगा, हृदय की प्यास बुझ जायगी, आप मस्ती में झूमने लगेंगे। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है, तड़पते हुए दिल की जीती-जागती तसवीर है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर, तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४) स्थायी ग्राहकों से ३)

पाक-चन्द्रिका

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रकार के अन्न तथा मसालों के गुण-अवगुण बतलाने के अलावा पाक-सम्बन्धी शायद ही कोई चीज़ ऐसी रह गई हो, जिसका सविस्तार वर्णन इस बृहत् पुस्तक में न दिया गया हो। प्रत्येक चीज़ के बनाने की विधि इतनी सविस्तार और सरल भाषा में दी गई है कि थोड़ी पढ़ी-लिखी कन्याएँ भी इससे भरपूर लाभ उठा सकती हैं। चाहे जो पदार्थ बनाना हो, पुस्तक सामने रख कर आसानी से तैयार किया जा सकता है। प्रत्येक तरह के मसालों का अन्दाज़ साफ़ तौर से लिखा गया है। ८३६ प्रकार की खाद्य चीज़ों का बनाना सिखाने की यह अनोखी पुस्तक है। दाल, चावल, रोटी, पुलाव, मीठे और नमकीन चावल, पुलाव, भाँति-भाँति की स्वादिष्ट सब्ज़ियाँ, सब प्रकार की मिठाइयाँ, नमकीन, बङ्गला मिठाई, पकवान, सैकड़ों तरह की चटनी, अचार, रायते और मुरब्बे आदि बनाने की विधि इस पुस्तक में विस्तृत रूप से वर्णन की गई है। मूल्य ४) रु० स्थायी ग्राहकों से ३) रु० मात्र! चौथा संस्करण प्रेस में है।

समाज की चिनगारियाँ

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-परम्पराएँ, अन्धविश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ, भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है! 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि इसे देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; फिर भी मूल्य केवल ३) रक्खा गया है। 'चाँद' तथा स्थायी ग्राहकों से २) रु०!

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—५ फ़रवरी, १९३१ | संख्या ७, पूर्ण संख्या १९

बोरसद में पुलिस द्वारा माँ-बहिनों का घोर अपमान !

देवियाँ बन्दूक़ के कुन्दों, जूतों और लाठियों से अपमानित की गईं !!

इलाहाबाद के कलेक्टर की विचित्र आज्ञा :: 'फ़ौज को सलाम करो !'

मेरठ-षड्यन्त्र केस में अब तक क़रीब ७॥ लाख व्यय हो चुके हैं !

"जब तक स्वराज्य न मिलेगा, मैं अहमदाबाद न लौटूँगा" —महात्मा गाँधी

पं० मोतीलाल नेहरू का सन्दिग्ध जीवन :: सपरिवार लखनऊ की यात्रा

(५ वीं फ़रवरी के प्रातःकाल तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—कलकत्ते का समाचार है, कि काँदाबिला सत्याग्रह आन्दोलन के नेता श्री० विजयकृष्ण राय गिरफ़्तार कर, पुलिस की हिरासत में रक्खे गए हैं। यह नहीं मालूम, कि वे किस अभियोग पर गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कलकत्ते का समाचार है, कि बङ्गाल-प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व सेक्रेटरी श्री० किरणशङ्कर रॉय, श्री० पूर्णचन्द्र दास, श्री० मनमोहन भट्टाचार्य, श्री० पुरुषोत्तम राय और किरणचन्द्र दास पर बङ्गाल-सरकार की ओर से एक नोटिस जारी की गई है, जिसमें बङ्गाल-प्रान्तीय सत्याग्रह-समिति को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया गया है। एक दूसरी नोटिस के द्वारा उन्हें इन संस्थाओं में भाग न लेने की आज्ञा दी गई है।

—अहमदाबाद का समाचार है कि गुजरात-विद्यापीठ के अध्यापक जे० कुमारप्पा को वहाँ के अतिरिक्त ज़िला-मैजिस्ट्रेट ने एक नोटिस दी है, जिसमें उन्हें २०वीं फ़रवरी को अदालत में हाज़िर होकर इसका कारण दिखाने के लिए कहा गया है कि 'यङ्ग-इण्डिया' में विद्रोहात्मक लेख निकालने के कारण, १ साल के लिए उनसे ५००) रुपए का मुचलका क्यों नहीं लिया जाय ? पुलिस ने उनके मकान की तथा विद्यापीठ की तलाशियाँ लीं और वह कुछ काग़ज़ उठा ले गई।

—अहमदाबाद का समाचार है कि धरासना नामक सत्याग्रह के नेता—सेठ रणछोड़लाल जेल से छूट कर वहाँ आ गए। उन्होंने महात्मा जी के पास एक तार भेज कर पूछा है कि "आप अहमदाबाद कब तक आएँगे ?" महात्मा जी ने उत्तर दिया है—"स्वराज्य मिलने ही पर वहाँ आऊँगा।"

—कलकत्ते का समाचार है कि श्री० देवेन्द्रनाथ चक्रवर्ती की—जो श्री० सेनगुप्त के कलकत्ता पहुँचने के समय, हावड़ा स्टेशन पर आकस्मिक घटना के कारण घायल हो गए थे, मृत्यु हो गई। उनके मृत-शरीर के साथ एक जुलूस निकाला गया।

—कलकत्ते की ख़बर है कि दो महिलाओं ने, जिन्हें पिकेटिङ्ग के अभियोग में ५०)-५०) रुपए ज़ुर्माने अथवा ३ सप्ताह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है, अपने मामले की अपील की है।

—लन्दन से ख़बर आई है कि मिस्टर जिन्ना, जो कि गोलमेज़ परिषद् के सदस्य बन कर विलायत गए थे, हिन्दुस्तान वापस न लौटेंगे। हाल की यह ख़बर थी कि विलायत में रह कर वे वहाँ की पार्लामेण्ट के सदस्य बनने का विचार कर रहे हैं। इस विषय में उनका मत जानने के उद्देश्य से फ़्री प्रेस का सम्वाददाता उनसे मिला था। मिस्टर जिन्ना ने कहा कि—"यह ख़बर बिल्कुल ठीक है, मेरा इरादा इङ्गलैण्ड में रह कर प्रिवी कौन्सिल में वकालत करने का है। इसके पश्चात् मैं पार्लामेण्ट का सदस्य बनने का प्रयत्न करूँगा; क्योंकि आगामी वर्ष के लगभग भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई पार्लामेण्ट में लड़नी पड़ेगी। इस समय मैं यह नहीं बता सकता, कि मैं इङ्गलैण्ड के किस राजनैतिक दल में सम्मिलित होऊँगा।"

—मि० हरिराजस्वरूप के एक प्रश्न के उत्तर में होम मेम्बर सर जेम्स क्रेरार ने कहा है, कि मेरठ षड्यन्त्र केस में सन् १९३० के अन्त तक ७,३२,०००) रुपया ख़र्च हो चुका है।

—अहमदाबाद का समाचार है कि एक साधारण सभा में वहाँ के नागरिकों ने बोरसद में किए गए, महिलाओं पर लाठी-प्रहार की घोर निन्दा की।

महात्मा गाँधी का लॉर्ड इर्विन को पत्र

कहा जाता है, कि प्रधान-मन्त्री की घोषणा पर शान्त और असम्भ्रान्त-भाव से विचार करने के पहिले महात्मा गाँधी गवर्नमेण्ट से हृदय परिवर्तन का प्रमाण चाहते हैं, और इसी उद्देश्य से उन्होंने लॉर्ड इर्विन को एक पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने उनसे परीक्षा के लिए, पुलिस की ज़्यादतियों के लगभग आधे दर्जन मामलों की, जिनका उन्होंने उसमें उल्लेख किया है, सरकारी जाँच करने की प्रार्थना की है। यदि वायसराय इस प्रकार की जाँच की आज्ञा दे देंगे तो, कहा जाता है, कि महात्मा गाँधी उसे सन्धि का एक बड़ा चिन्ह मानेंगे और प्रधान-मन्त्री की घोषणा से लाभ उठाने के लिए कॉङ्ग्रेस से प्रार्थना करेंगे !

'भविष्य' के विशेष सम्वाददाता की जाँच से पता लगा है, कि पं० मोतीलाल नेहरू का शरीर इस समय जीवन और मृत्यु के बीच में अवस्थित है ! उनका स्वास्थ्य विशेष चिन्ताजनक होने के कारण उन्हें परिवार के लोग इलाज के लिए लखनऊ ले गए हैं। उनके साथ सारा परिवार गया है और गए हैं समस्त भारत के नेतागण, जिनके चिन्ता की कोई सीमा नहीं है—महात्मा जी भी आपके साथ हैं। परमात्मा आपको इस आपत्ति-काल में देश के सर पर सलामत रक्खें—'भविष्य'-परिवार की ओर से हमारी यही प्रार्थना है।

अनेक महत्वपूर्ण समाचार नहीं जा सके !

हमें आशा थी, कि प्रधान-मन्त्री के वक्तव्य प्रकाशित होने के बाद तथा कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के सदस्यों की रिहाई के बाद—दमन-चक्र का वेग बहुत-कुछ कम हो जायगा; पर यह हमारा भ्रम-मात्र सिद्ध हुआ। जितनी गिरफ़्तारियाँ तथा दमन के समाचार समस्त भारत से इस सप्ताह हमारे पास आए हैं, उतने कभी नहीं आए थे। फलतः इस अङ्क में "आहुतियाँ" शीर्षक स्तम्भ में आधी भी गिरफ़्तारियों के समाचार नहीं छप सके। "देश के प्राङ्गण" शीर्षक स्तम्भ के भी कई पृष्ठ कम्पोज़ रहने पर भी स्थानाभाव के कारण नहीं जा सके। "हिंसात्मक क्रान्ति की लहर" शीर्षक स्तम्भ के भी लगभग २ पृष्ठ स्थानाभाव के कारण नहीं जा सके हैं। इनके अतिरिक्त अनेक ब्लाक—जिनका प्रकाशन आवश्यक था—नहीं जा सके ! हमें इस बात का अत्यन्त खेद है, पर पाठकगण इसका कारण दृष्टि में रखते हुए, आशा है, हमें क्षमा करेंगे। ये सारे समाचार आगामी अङ्क में मिल जायँगे, पाठकगण इस बात का इतमीनान रक्खें।

—स० 'भविष्य'

—चटगाँव का २८ वीं जनवरी का समाचार है, कि राष्ट्रीय झण्डा फहराने के अपराध में, श्री० सितॉशुदास और श्री० अघोरदास नामक दो नवयुवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

यहाँ १४४ वीं धारा ९ वीं मार्च तक के लिए जारी की गई है।

—नदियाद का २४ वीं जनवरी का समाचार है, कि आनन्द के दो स्वयंसेवक, विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय गिरफ़्तार कर लिए गए।

—सिलहट की २६वीं जनवरी की ख़बर है, कि वहाँ की पुलिस ने कॉङ्ग्रेस सङ्घ पर छापा मारा और श्री० सच्चिदानन्द दास, श्री० ब्रजेन्द्रनन्दन दास तथा ६ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया। ये स्वयंसेवक पीछे छोड़ दिए गए।

पुलिस ने विद्याश्रम तथा कॉङ्ग्रेस सङ्घ के अध्यक्ष श्री० क्षीरोदचन्द्र देव के मकान की भी तलाशी ली। किन्तु कुछ नहीं मिला।

—नोआखाली का २८ वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० चन्द्रकान्त भट्टाचार्य, श्री० लुत्फ़ुर्रहमान और श्री० अखिलचन्द्र सील, शराब की दूकान पर धरना देने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए। वे अभी हिरासत में रक्खे गए हैं।

—दिनाजपुर का २७ वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के कॉङ्ग्रेस-ऑफ़िस की तलाशी ली गई और पुलिस अनेक काग़ज़-पत्र, राष्ट्रीय झण्डे तथा अन्य कुछ वस्तुएँ उठा कर ले गई।

शहर के भिन्न-भिन्न भागों में ९ मकानों की तलाशियाँ ली गईं और ५ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए। इन पर भारतीय दण्ड विधान की ११७ वीं धारा के अनुसार अभियोग लगाया गया। इनमें २ छोड़ दिए गए हैं। १ को ज़मानत पर छोड़ा गया है।

—बालुरघाट कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० नलिनीकान्त अधिकारी भी, जो दिनाजपुर आए थे, भारतीय दण्ड-विधान की ११७ वीं और १२० वीं धाराओं के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। कहा जाता है कि वे ज़मानत पर छोड़े गए हैं।

—बालुरघाट का २७ वीं जनवरी का समाचार है, वहाँ, कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० नलिनी कान्त अधिकारी, सेक्रेटरी श्री० सुरेन्द्र चन्द्र बागची, डॉ० सुशील रञ्जन चटर्जी, श्री० सरोज रञ्जन चटर्जी और श्री० रामाकान्त समाजदार के मकानों की तलाशियाँ एक ही समय में ली गईं। पुलिस कुछ काग़ज़ पत्र उठा कर ले गई तथा अनुपस्थित होने के कारण नलिनीकान्त अधिकारी को छोड़ कर सभी गिरफ़्तार किए गए।

—जेसोर का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि पुलिस ने ख़ूब सबेरे वहाँ के कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस के मकान को घेर लिया, और ५ कार्यकर्त्ताओं को गिरफ़्तार किया, जिनमें श्री० हरिपद भट्टाचार्य, एम० ए० तथा उपेन्द्रनाथ घोष भी हैं।

—मुज़फ़्फ़रपुर का २८ वीं जनवरी का समाचार है, कि श्रीमती सुनीति देवी चक सिकंदर नामक स्थान को जाते समय गिरफ़्तार कर ली गईं। इस ज़िले में महिला की गिरफ़्तारी का यह पहला ही मौक़ा है। आप एक प्रमुख कार्यकर्त्ता की पत्नी हैं, जो पटना कैम्प जेल में सज़ा भोग रहे हैं।

—फ़ीरोज़पुर का २७ वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर एक जुलूस निकाला गया। पुलिस ने जुलूस को रोका और लोगों को हट जाने के लिए कहा। लोगों ने ऐसा करने से इन्कार किया। तब पुलिस ने ११ मनुष्यों को, जिनमें सतीश घोष वकील तथा डॉ० परेश घोष आदि प्रमुख सज्जन भी हैं, गिरफ़्तार कर लिया।

—मिदनापुर का २६ वीं जनवरी का समाचार है, कि स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर जुलूस निकालने के सम्बन्ध में ७ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—भीमवरम् का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि स्वतन्त्रता-दिवस मनाने के सम्बन्ध में, के० सत्यनारायण और टी० वेङ्कट चेल्लापति नामक दो सत्याग्रही नवयुवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बहबपुर का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत सुसेन कुमार मुखर्जी को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया है। आपके मकान की तलाशी ली गई, किन्तु कोई सन्देहजनक वस्तु नहीं पाई गई।

—बेतिया का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के सब-इन्स्पेक्टर ने, झण्डा-अभिवादन के समय उपस्थित एक को छोड़ सभी सज्जनों को गिरफ़्तार कर लिया है। ६ अन्य सज्जन भी स्वतन्त्रता-दिवस के सम्बन्ध में होने वाली सभा में उपस्थित होने के कारण गिरफ़्तार किए गए हैं।

—छपरे का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि दिघवारा के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता बाबू हीरालाल सर्राफ़ अन्य तीन कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं के साथ १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—ख़बर है कि खड़गपुर (मुङ्गेर) के बड़हिया थाना में सार्दूलसिंह नामक एक स्वयंसेवक, स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर, १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया गया है।

—छपरा का २८वीं जनवरी की ख़बर है कि रघुनाथपुर के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता पं० रामदास पाण्डेय अन्य तीन स्वयंसेवकों के साथ १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए।

—पेशावर का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि चारसदा के ४ व्यक्ति 'इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद' चिल्लाने के कारण गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बम्बई का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि गुजराती पत्र 'हम' के सम्पादक श्री० वनमालीदास व्यास अपने मकान पर, प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। इसके पहले, प्रेस की तलाशी भी ली गई थी और ऑफ़िस के एक कर्मचारी जैनुल्लाबदीन गिरफ़्तार किए गए थे।

—कलकत्ते का २री फ़रवरी का समाचार है कि 'आनन्द-बाज़ार पत्रिका' के सम्पादक श्री० बङ्किमचन्द्र सेन तथा 'लोकमान्य' के सम्पादक श्री० रमाशङ्कर त्रिपाठी को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० त्रिपाठी को नमक-क़ानून के लिए उकसाने के अभियोग में ३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—भटकल का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ की वानर सेना के नायक श्री० दत्तात्रेय मञ्जेस भट्ट और बाबाभट्टा नामक एक ११वर्षीय बालक १७ (१) धारा के अनुसार मर्दुमशुमारी के नम्बर मिटाने तथा ऐसा करने के लिए दूसरों को उकसाने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—अमृतसर का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ, सरदार कृपालसिंह, लाला तेजराम और सरदार पूरनसिंह, स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में, १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए।

लाहौर का जलालुद्दीन नामक एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता भी गिरफ़्तार किया गया है।

—अहमदाबाद का ३१ वीं जनवरी का समाचार है कि पत्रमुराल के डिक्टेटर डॉ० मानिकलाल को १ माह की सादी क़ैद की सज़ा और १००) रुपए जुर्माने अथवा १ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अम्बाला का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि पुलिस ने वहाँ ११ मनुष्यों को १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार किया है। इनका अपराध यही था, कि नेताओं की रिहाई की ख़बर पाकर, ये राष्ट्रीय झण्डा लेकर सड़कों पर राष्ट्रीय गान गाते हुए और नारे लगाते हुए फिर रहे थे।

—नवग्राम (हुगली) का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि डॉ० राधाकृष्णपाल, श्री० अवनिपति सेन गुप्त, डॉ० गोवर्द्ध दे, खुदीराम दे और देवेन्द्रनाथ मल्लिक १०७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए।

श्री० सुभाषचन्द्र बोस को ६ माह की सज़ा

कलकत्ते का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने श्री० सुभाषचन्द्र बोस को, दङ्गा करने तथा ग़ैर-क़ानूनी जमाव में सम्मिलित होने के अभियोग में ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। श्री० बोस ने अदालत की कार्यवाही में कोई भाग नहीं लिया। उन्होंने अदालत में इस बात की शिकायत की, कि हिरासत में वे अभी तक भूखे रक्खे गए हैं। स्नान आदि का भी कोई प्रबन्ध अभी तक नहीं किया गया है। अपने ज़ख़्मों के लिए बार-बार डॉक्टरी सहायता माँगने पर भी उन्हें केवल टिंक्चर-आयोडिन दिया गया। मैजिस्ट्रेट ने आपसे अपनी शिकायतों को लिख कर देने के लिए कहा। किन्तु आपने ऐसा करने से अपनी असमर्थता प्रकट की, क्योंकि उनकी बाँह में भी चोट आई थी। आप लाल बाज़ार के हवालात में रक्खे गए हैं। आपने कहा है कि "पृथ्वी पर यदि कोई नरक है, तो वह लाल बाज़ार का हवालात है।"

—कलकत्ते का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने, पुलिस कमिश्नर की आज्ञा के विरुद्ध राष्ट्रीय झण्डा फहराने के अभियोग में श्री० अविनाश चन्द्र भट्टाचार्य को १ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

—कानपुर का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ श्री० मन्नालाल पाण्डे, श्री० लालताप्रसाद, श्री० मन्नीलाल, श्री० गङ्गाचरण, श्री० शिवभजन, श्री० सरजूप्रसाद और श्री० मिट्ठूलाल को ४-४ माह की तथा श्री० रामावतार, श्री० गोकरणनाथ शुक्ल और श्री० बन्दीदीन को ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० चन्द्रमौलि मिश्र को ३ माह की सख़्त क़ैद और ५०) रुपया जुर्माना अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा, तथा श्री० मथुरा और श्री० लक्ष्मीनारायण को ३-३ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—हरदोई का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के वाइस प्रेज़िडेण्ट सेठ रमेशुरनाथ तथा अन्य १३ व्यक्तियों को, जो कुछ दिन पहले गिरफ़्तार किए गए थे, ६-६ माह की कड़ी क़ैद और १५) से २०) रुपए तक के जुर्माने की सज़ा दी गई है।

—तामलुक का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ स्वतन्त्रता-दिवस के समारोह में भाग लेने के कारण ८७ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। इनमें २१ को भिन्न-भिन्न अवधि की सज़ाएँ दी गई हैं।

—मुन्शीगञ्ज (ढाका) का २८वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० सन्तोषचन्द्र पाल तथा अन्य कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवकों को, जो गत १४वीं जनवरी को धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, भारतीय दण्ड-विधान की १२१वीं धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अहमदाबाद का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि कैरा ज़िले की 'डिक्टेटर' श्रीमती भक्ति लक्ष्मी गोपालदास देसाई को अपने एक भाषण के सम्बन्ध में, ६ माह की क़ैद और २००) रुपए जुर्माना अथवा ३॥ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। आप साबरमती जेल में 'ए' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

—इटावा का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट ने पं० रामकुँवर त्रिपाठी को, ११वें ऑर्डिनेन्स की ३री धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और २०) रु० जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है। श्री० त्रिपाठी ने मैजिस्ट्रेट को इसके लिए धन्यवाद दिया। विचाराधीन क़ैदी की हैसियत में जेल में रहते हुए उनका वज़न १४ पौण्ड घट गया है।

—कलकत्ते का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि बङ्कशाल अदालत के अतिरिक्त प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने ४ बङ्गाली युवकों को अक्टरलोनी स्मारक के समीप दङ्गा करने के अपराध में जुर्माने की सज़ाएँ दी हैं।

युवकों ने कहा कि, उन लोगों ने केवल राष्ट्रीय झण्डा फहराया था, कोई गोलमाल उन्होंने नहीं किया था। इतना कहने के अतिरिक्त उन्होंने अदालत की और किसी कार्यवाही में भाग नहीं लिया।

—कलकत्ते का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि जोड़ाबगान के चतुर्थ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने श्री० विजयचन्द्र मण्डल को, एक कुली को विदेशी वस्त्र की गाँठों को ले जाने में बाधा पहुँचाने के अपराध में २००) रुपया जुर्माना अथवा ४ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

७ स्वयंसेवकों को, जिनमें एक महिला भी है, पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में पुलिस की आज्ञा न मानने के अपराध में ४०)-४०) रुपए का जुर्माना हुआ है।

—कलकत्ते का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के तीसरे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने तीन व्यक्तियों को बड़ा बाज़ार में पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में १-१ सप्ताह की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

तीन अन्य व्यक्तियों को हड़ताल सम्बन्धी पर्चे बाँटने और रखने के अभियोग में प्रेस-एक्ट के अनुसार १-१ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में पुलिस की आज्ञा न मानने के अभियोग में और तीन मनुष्यों को भी २०)-२०) रुपए जुर्माना अथवा एक माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का २७वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० दुर्गाचरण दत्त नामक एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता को हड़ताल सम्बन्धी पर्चे बाँटने के अभियोग में १ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बारीसाल का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० सुकुमार सेन गुप्त को वहाँ के पुलिस मैजिस्ट्रेट ने प्रेस-एक्ट के अनुसार तीन माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

—बजबज के श्री० कार्तिकचन्द्र घोष को 'स्वाधीनता-दिवस' नामक पर्चा बाँटने के अभियोग में ३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का एक समाचार है कि श्री० गुलाबचन्द्र भन्सारी को, जो स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर गिरफ़्तार किए गए थे, जोड़ाबगान के चतुर्थ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने ४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

—सुजनगा का २८वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० अशीमकृष्ण घोष को १२७वीं धारा के अनुसार ६ सप्ताह की क़ैद और १००) रुपया जुर्माना अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बाँकुरा का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि १४४वीं धारा के अनुसार एक आज्ञापत्र ७ दिन के लिए वहाँ जारी किया गया है। स्वतन्त्रता-दिवस के जुलूस के सम्बन्ध में दो व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं।

—फ़रीदपुर का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ की ज़िला भद्र अवज्ञा-समिति के अध्यक्ष श्री० विजयकृष्ण बैनर्जी को, जो गत १६वीं नवम्बर को जवाहर-दिवस के सम्बन्ध में दण्ड-विधान की १०८वीं धारा के अनुसार बीमारी की अवस्था में ही गिरफ़्तार किए गए थे, ६ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई।

—कलकत्ते का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि 'बङ्गवाणी' के सम्पादक श्री० गोपाललाल सन्याल को अलीपुर के पुलिस मैजिस्ट्रेट ने, स्वतन्त्रता-दिवस के समारोह में भाग लेने के अभियोग में तीन माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। श्री० सन्याल ने अदालत की कार्यवाही में कोई भाग नहीं लिया।

—मुज़फ़्फ़रपुर का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता बाबू अवधेश्वरप्रसाद सिंह को, जो सोनपुर से पटना जाते समय गिरफ़्तार किए गए थे, १७ (१) धारा के अनुसार ६ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है।

अब्दुलग़फ़्फ़ार ख़ाँ के लेफ़्टेनेण्ट गिरफ़्तार

पेशावर का ३०वीं जनवरी का समाचार है, १४४वीं धारा को भङ्ग कर, अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ की रिहाई के सम्बन्ध में एक सभा करने के अभियोग में ख़ाँ अब्बास ख़ाँ, जो अब्दुल ग़फ़्फ़ार के लेफ़्टीनेण्ट कहे जाते हैं तथा कुछ अन्य लोग गिरफ़्तार किए गए हैं।

—कलकत्ते का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि पुलिस कमिश्नर की आज्ञा के विरुद्ध स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर जुलूस निकालने के अपराध में, श्री० गोपाल भन्सारी को ४ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—मछलीपट्टम का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० वी० रामब्रह्मम् और श्री० वी० रामब्रह्मम् को स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—पेशावर का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि टङ्क के अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट ने, डेरा-इस्माइल ख़ाँ के लाला मोहनलाल और लाला चेलाराम को राजद्रोह के अपराध में प्रत्येक को ३-३ वर्ष की कड़ी क़ैद, और क्रमशः २,०००) और ५००) रुपए के जुर्माने की सज़ा दी है। दोनों ने अपने मामले की फिर से जाँच किए जाने का प्रार्थना-पत्र जुडिशियल कमिश्नर के पास दिया है।

—बम्बई का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि बम्बई सत्याग्रह समिति के भूतपूर्व सेक्रेटरी श्री० एस० के० पटेल को, जो प्रो० बापुरे के साथ २८वीं जनवरी को गिरफ़्तार किए गए थे, १ साल की कड़ी क़ैद और ४००) रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ माह की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

—आरामबाग़ का ३०वीं जनवरी का समाचार है कि दण्ड-विधान की १४४वीं धारा के विरोध में, स्वाधीनता दिवस मनाने तथा उसके सम्बन्ध में जुलूस निकालने के सम्बन्ध में वहाँ ३० से अधिक व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं। कहा जाता है कि पुरसुरा में, राष्ट्रीय नारे लगाते हुए स्वयंसेवक थाने तक में घुस गए थे।

—कलकत्ते का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० शचीन्द्रनाथ बोस तथा कुछ अन्य अभियुक्तों को कलकत्ता पुलिस-एक्ट की ६२ (ए) धारा के अनुसार १००)-१००) रुपए जुर्माना हुआ है। जुर्माना न देने पर दो माह की सादी क़ैद भुगतनी पड़ेगी।

—अमनौर (सारन) का १ली फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती रामस्वरूपा देवी को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया है। इनके पति बाबू हरमाधो सिंह भी, जो अमनौर के एक भारी ज़मींदार हैं—हज़ारीबाग़ जेल में सज़ा भुगत रहे हैं।

—कराची का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कराची सत्याग्रह समिति के भूतपूर्व डिक्टेटर सेठ हरिदासलाल जी को वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और २००) रुपए जुर्माने की सज़ा दी है।

—मद्रास का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० वाई० ए० सुन्दरम् राजद्रोह के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

लगानबन्दी आन्दोलन

अहमदाबाद का ३१ वीं जनवरी का समाचार है कि हलाल तालुक़े के महालकारी ने किसानों के कर न देने के कारण, उन पर यह आज्ञा जारी की है कि वे अपने खेतों से अनाज काट कर न ले जायँ। वहाँ के ४ गाँवों ने इस सम्बन्ध में सत्याग्रह करने का विचार किया, और वे दल बाँध कर, खेतों से अनाज उठा लाए। कहा जाता है कि इस सम्बन्ध में ३ मनुष्य गिरफ़्तार किए गए हैं।

९ महिलाओं को सज़ाएँ

कलकत्ते का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि जोड़ाबगान के ४थे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने, पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में पुलिस की आज्ञा के विरुद्ध कार्य करने के अभियोग में एक महिला को ५०) जुर्माने अथवा १ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है। ८ अन्य महिलाओं को, जिनमें एक के गोद में बच्चा है, भारतीय दण्ड-विधान की २८३ वीं धारा के अनुसार १००)-१००) रुपया जुर्माने अथवा २ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

वहाँ के ३रे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने २ स्वयंसेवकों को ६०)-६०) रुपए जुर्माने अथवा १ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है तथा एक स्वयंसेवक से १००) रु० का मुचलका माँगा गया है।

—कानपुर का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि विदेशी वस्त्र की गाँठों को नेशनल बैङ्क से हटाए जाने से रोकने के अपराध में श्री० रामचरण और श्री० जयनारायण नामक दो व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मुज़फ़्फ़रपुर का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ की थाना कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० सुखदेवप्रसाद क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बम्बई का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि दो स्वयंसेवकों को १७ (१) धारा के अनुसार, विदेशी वस्त्र की गाँठों को हटाए जाने में बाधा पहुँचाने के अभियोग में ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बम्बई का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि पाण्डरे नामक एक १२ वर्षीय बालक, जो विलेपारले की वानर-सेना का उपाध्यक्ष है, अन्य २ स्वयंसेवकों के साथ, मर्दुमशुमारी के नम्बर मिटाने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिया गया। वहाँ के उन होटलों की तलाशियाँ भी ली गईं जहाँ वे स्वयंसेवक रहते थे।

* * *

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

बम्बई में एक स्त्री ने पुलिस वालों पर गोलियाँ चलाई थीं!

सिम्सन षड्यन्त्र के दिनेश गुप्ता को फाँसी की सज़ा

क्रान्तिवाद का प्रचार कैसे किया गया :: बम्बई षड्यन्त्र केस का सनसनीपूर्ण उद्घाटन

लाहौर में बम-फ़ैक्टरी पकड़ी गई :: तीन क्रान्तिकारी गिरफ़्तार

बम्बई षड्यन्त्र केस

बम्बई का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि आज षड्यन्त्र केस के निम्न-लिखित अभियुक्तों को श्री० एच० पी० एच० दस्तूर, चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। (१) श्री० गणेश रघुनाथ वैशम्पायन (२) श्री० जनार्दन बापट (३) श्री० पुरुषोत्तम बरवे (४) श्री० शिवराम देवधर (५) श्री० सदाशिव के० उपाध्याय (६) श्री० विष्णु जी धामनकर तथा (७) श्री० शङ्कर जेशिन्दे। इस मामले में निम्न-लिखित अभियुक्त अभी तक फ़रार हैं। श्री० सुखदेवराज उर्फ़ बुद्धिमान उर्फ़ अर्जुन, श्रीमती दुर्गादेवी उर्फ़ शारदा, श्री० स्वामी राव उर्फ़ एस० एम० राव उर्फ़ नाना साहब। श्री० विश्वनाथ राव वैशम्पायन, पुरुषोत्तम सुत्तर। सरकारी वकील ने इक़बाली गवाह के कुछ गीत आरम्भ में कचहरी में पेश किए। इन गीतों द्वारा क्रान्तिवाद का प्रचार किया गया था।

इक़बाली गवाह का बयान

इक़बाली गवाह ने अपने बयान में कहा, कि सन् १९२५ में वह दादर-मण्डल का मन्त्री था। सन् १९२६ तक वह इस पद पर रहा, जब श्रीयुत बरवे मण्डल के उपमन्त्री नियुक्त हुए। गवाह ने कहा कि श्रीयुत वैशम्पायन ने मेरी लड़की के ब्याह में वर ढूँढने में मेरी बड़ी सहायता की थी।

श्रीयुत वैशम्पायन उन दिनों वज़ीरस्तान में काम करते थे। बम्बई वह केवल ब्याह में सम्मिलित होने के लिए ही आए थे। श्री० वैशम्पायन ने जब यह सुना कि मैं मण्डल का मन्त्री नियुक्त हो गया हूँ, तो उन्होंने मुझे बधाई दी। उन्होंने मुझे यह भी कहा कि व्यायामशाला में मैं अपने प्रभाव द्वारा लोगों में शस्त्र परिचालन की रुचि पैदा करूँ।

वकील-सफ़ाई ने कहा कि व्यायामशाला को बम्बई कॉरोपरेशन १,००० रुपया वार्षिक की सहायता देता है।

गवाह ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि श्री० वैशम्पायन के आदेशानुसार मैंने व्यायामशाला में 'गणपति-उत्सव' मनाने की आयोजना की। इस उत्सव में क्रान्तिकारी गीत गाए गए थे। व्यायामशाला के दूसरे सञ्चालक श्रीयुत काले थे, क्योंकि मेरी उनके साथ नहीं पटती थी। इस कारण मुझे अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा।

सन् १९३० में श्रीयुत वैशम्पायन की बम्बई में तबदीली हो गई। और वह पहले-पहल अपने एक मित्र के पास ठहरे, फिर वह दादर में एक मकान किराए पर लेकर रहने लगे। मैं प्रायः उनके घर पर आया-जाया करता था। मुझे उन्होंने बताया, कि उन्होंने फ़ौज में रह कर सारी सैनिक शिक्षा प्राप्त कर ली है और उन्होंने यह भी बताया, कि देहली में 'नौजवान भारत-सभा' के कुछ सदस्यों से उनकी भेंट हुई थी। नौजवान भारत-सभा के कुल ७० सदस्य थे और श्रीयुत सरदार भगतसिंह उस सभा के मन्त्री थे। श्री० वैशम्पायन ने मुझे यह बताया, कि वह सरदार भगतसिंह से एसेम्बली में बम फेंके जाने के दो दिन पहले मिला था।

"मैजिस्ट्रेट को थप्पड़"

अप्रैल १९३० में मैं श्रीयुत वैशम्पायन के मकान पर उनसे मिलने गया। उन्होंने मुझे कहा, कि कोई दो व्यक्ति ऐसे बताओ जो हमारी आज्ञानुसार काम करने को तैयार हों। मुझे श्रीयुत बापट का ध्यान आया, मैंने उसका नाम ले दिया। श्री० बापट चार-पाँच वर्ष तक फ़ौज में काम कर चुका था। श्री० वैशम्पायन के कहने पर मैंने उनकी श्री० बापट से भेंट करा दी।

इन्हीं दिनों बान्द्रा के मैजिस्ट्रेट मि० फ़रनैन्स ने मि० खैर को दो वर्ष का कड़ा कारावास-दण्ड दिया था। श्रीयुत वैशम्पायन ने श्रीयुत बापट से कहा कि यह मैजिस्ट्रेट बड़ा दुष्ट है, तुम जाकर आज उसके मुँह पर दो थप्पड़ रसीद कर दो। उन्होंने कहा कि यदि तुम यह काम कर आए तो तुम्हें परीक्षा में उत्तीर्ण समझा जाएगा और भविष्य में तुम्हें अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने को दिए जाएँगे, परन्तु श्री० बापट इस परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सका।

एक दिन श्रीयुत वैशम्पायन ने मुझसे पूछा कि तुम्हारा प्रभात-फेरियों के विषय में क्या विचार है। मैंने कहा कि बिना काम चिल्लाना व्यर्थ है। हमें कुछ ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो पुलिस की लाठियों को, जिनसे कि वह अत्याचार करते हैं, छीन लावें।

क्रान्तिवाद का प्रचार

श्रीयुत वैशम्पायन ने कहा कि मैं सभाओं तथा प्रभात-फेरियों में उपदेशों तथा गीतों द्वारा क्रान्तिवाद का प्रचार करूँ। मैंने उनके आदेशानुसार कई सभाएँ कीं, जिनमें श्रीयुत वैशम्पायन ने व्याख्यान दिए। श्रीयुत वैशम्पायन ने अखाड़ों तथा व्यायामशालाओं में, सर्वसाधारण में सैनिक भाव "मिल्टरी स्पिरिट" उत्पन्न करने का प्रस्ताव किया तथा एक ऐसा बुलेटिन निकालने का विचार किया, जिसके द्वारा लोगों में क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया जा सके।

एक दिन श्रीयुत वैशम्पायन ने मुझे श्रीयुत सावरकर की लिखी एक पुस्तक, जिसका नाम "वार ऑफ़ इण्डिपेण्डेन्स" दिखाई और मुझे बताया कि यह किताब लाहौर में छपवाई गई है और इसका मूल्य ५) रुपए रक्खा गया है। इस पुस्तक की १०० प्रतियाँ श्रीयुत वैशम्पायन ने मँगवाई थीं। उन्होंने यह भी कहा कि जो लाभ होगा वह श्रीयुत सरदार भगतसिंह को छुड़ाने के प्रयत्न में व्यय किया जाएगा। मैंने उन प्रतियों को बेचने का वचन दिया।

२९वीं जनवरी को इक़बाली गवाह ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि एक दिन श्रीयुत गणेश दामोदर सावरकर का माली मेरे पास आया। उसने मुझे एक चिट्ठी दी, जिसमें श्रीयुत सावरकर ने मुझसे १९ प्रतियाँ "वार ऑफ़ इण्डिपेण्डेन्स" की माँगी थीं।

वक़ील-सफ़ाई ने एतराज़ किया कि जिन बातों का मामले के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, उनका वर्णन नहीं होना चाहिए।

इक़बाली गवाह ने आगे बयान देते हुए कहा कि श्रीयुत वैशम्पायन ने मुझे एक 'गीता-क्लास' खोलने के लिए कहा। इस गीता-क्लास में श्रीयुत वैशम्पायन भगवद्गीता की व्याख्या किया करते थे। यह क्लास सितम्बर १९३० में शुरू की गई थी।

क्रान्तिवाद के प्रचार के लिए श्रीयुत वैशम्पायन ने गणपति-उत्सव के समय 'परेल ट्रैम्वे यूनियन' की एक सभा में व्याख्यान दिया और वह विद्यार्थियों के साथ मिल कर वादाविवाद भी किया करते थे।

अगस्त; १९३० के आरम्भ में श्रीयुत वैशम्पायन ने अपनी धर्मपत्नी को भावनगर में डॉ० काणे के पास भेज दिया। श्रीमती वैशम्पायन की अनुपस्थिति में एक व्यक्ति जिसको 'स्वामी' कहा जाता था, दो अन्य व्यक्तियों के साथ श्रीयुत वैशम्पायन के पास रहने लगा।

मैं श्रीयुत वैशम्पायन के घर पर एक गुजराती महिला को, जिसकी आयु लगभग २६ वर्ष होगी, तथा उसके एक पुत्र को जिसकी आयु लगभग आठ वर्ष होगी प्रायः देखा करता था। एक दिन जब मैं उनके घर पर गया तो मैंने देखा कि सब दरवाज़े बन्द हैं। मैंने अन्दर जाकर देखा, कि एक व्यक्ति, जिसने अपना नाम खरे बताया, अपने एक साथी के साथ बातें कर रहा था। श्रीयुत खरे को मराठी नहीं आती थी।

क्रान्तिकारी दल का एक बालक

मैंने खरे को उस बच्चे के साथ खेलते हुए देखा। बालक के सिर पर लम्बे-लम्बे सुन्दर बाल थे। कुछ दिनों के बाद मुझे श्रीयुत वैशम्पायन ने बताया कि श्रीमती शारदा अपने बालक के साथ भावनगर चली गई हैं।

चार-पाँच दिन के पश्चात श्रीमती शारदा अपने बालक सहित वापस लौट आईं। क्योंकि श्रीमती वैशम्पायन अभी तक भावनगर से न लौटी थीं। इसलिए श्रीमती शारदा घर का खाना बनाया करती थीं; कभी-कभी 'सूर्य' भोजनालय से भी खाना आता था।

श्रीयुत वैशम्पायन ने मुझे Telegraph Co-operative Society से १,००० रुपया उधार लेने को कहा। पूछने पर उसने बताया, कि उसने अपनी आय का बहुत सा अंश श्रीयुत सरदार भगतसिंह को छुड़ाने के प्रयत्न में ख़र्च किया है। क्योंकि अब श्रीयुत बापट के लिए एक मोटरकार ख़रीदने का विचार था, इसलिए उन्हें

रुपए की आवश्यकता हुई। मुझे यह भी बताया गया कि यह मोटरकार समय-समय पर "अपने काम" में लाई जाएगी।

पाँच अक्टूबर को मेरे घर पर एक सभा हुई। श्रीयुत वैशम्पायन के साथ श्रीयुत शिन्दे भी आए। श्रीयुत वैशम्पायन ने हम दोनों का परिचय कराया। उन्होंने कहा कि श्रीयुत शिन्दे के पास मोटरकार है, जो हमको समय पड़ने पर "देश के काम" के लिए मिल सकती है। श्रीयुत शिन्दे ने कहा—"मोटर सदा आपकी सेवा में उपस्थित है।"

ख़ाँ साहब सैयद आदिल साहब डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस सी० आई० डी० लाहौर ने गवाही देते हुए कहा, कि मैं लाहौर षड्यन्त्र-केस की जाँच करता रहा हूँ। जिसमें कि श्रीयुत सरदार भगतसिंह, श्रीयुत राजगुरु तथा श्रीयुत सुखदेव को फाँसी-दण्ड मिला था। उसमें एक अभियुक्त श्रीयुत यतीन्द्रनाथ दास का अनशन के कारण जेल में देहान्त हो गया। इस मामले की जाँच के लिए एक स्पेशल ट्रिब्यूनल बनाया गया था। इस मामले में निम्न-लिखित पाँच अभियुक्त फ़रार थे। श्रीयुत चन्द्रशेखर आज़ाद उर्फ़ पण्डित जी, श्रीयुत भगवतीचरण उर्फ़ अर्जुन, श्रीयुत कैलाशपती उर्फ़ कालीचरण तथा दो और थे। गवाह ने कहा कि लाहौर में एक बम-फ़ैक्टरी में तीन अभियुक्त पकड़े गए थे।

मैजिस्ट्रेट—इन बातों का इस मामले से क्या सम्बन्ध है? तुम्हारा कहना है कि अभियुक्तों ने सरकार को उलटने के लिए सन् १९३० में षड्यन्त्र रचा। जो घटनाएँ सन् १९२९ में हुई हैं, उनका सन् १९३० के षड्यन्त्र से क्या सम्बन्ध हो सकता है?

सरकारी वकील ने बताया, कि श्रीमती दुर्गादेवी तथा एक और अभियुक्त, जो इस मामले में अभी तक फ़रार हैं, लाहौर षड्यन्त्र-केस से भी सम्बन्ध रखते हैं।

मैजिस्ट्रेट—मैं यह जानना चाहता हूँ, कि क्या अभियुक्तों ने सम्राट के विरुद्ध युद्ध की योजना की थी?

सरकारी वकील—हमारे पास इस बात को सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण नहीं है।

इस बीच ख़ाँ साहब को बाहर भेज दिया गया था। मैजिस्ट्रेट ने उन्हें फिर बुलाया और गवाही लेनी शुरू की।

गवाह ने कहा कि मैंने श्रीयुत भगवतीचरण के घर की लाहौर षड्यन्त्र-केस के सम्बन्ध में तलाशी ली। वहाँ पर मैंने उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गादेवी को देखा।

सरकारी वकील—तुम तलाशी लेने क्यों गए थे?

सफ़ाई के वकील ने एतराज़ किया कि इन बातों का वर्तमान मामले से कोई सम्बन्ध नहीं है। क्या पुलिस यह साबित करना चाहती है, कि यदि एक मनुष्य क्रान्तिकारी है तो उसकी पत्नी भी क्रान्तिकारिणी होगी? जो गवाही अभी तक दी गई है, उसका वर्तमान केस के साथ रत्ती भर भी सम्बन्ध नहीं है।

सरकारी वकील ने उत्तर दिया कि हम यह प्रमाणित करना चाहते हैं कि श्रीयुत सुखदेव, जो इस वर्तमान केस में फ़रार है—बम्बई में रुपया इकट्ठा करने के लिए आया। यह रुपया श्रीयुत सरदार भगतसिंह को ले जाने वाली जेल की लॉरी पर बम फेंक कर उनको छुड़ाने की योजना में व्यय होना था।

लाहौर में बम के धड़ाके के बाद श्रीमती दुर्गादेवी लापता हो गईं। तब से आज तक पुलिस के अथक परिश्रम करने पर भी उनका कोई पता नहीं चला।

पुलिस श्रीमती जी की तलाश लाहौर षड्यन्त्र-केस के सम्बन्ध में भी कर रही है।

वैद्य विला सैण्टाक्रूज़ में एक फ़ोटो मिली थी, गवाह ने उसे शनाख़्त किया कि यह फ़ोटो बुद्धिमान की है। गवाह ने कहा कि मैंने श्रीयुत सुखदेवराज को सन् १९-२९ में गिरफ़्तार किया था।

मैजिस्ट्रेट—फिर वह ग़ायब कैसे हो गया?

सरकारी वकील—उसके विरुद्ध मुक़दमा वापस ले लिया गया था।

वकील-सफ़ाई—श्रीमान, इस बात को नोट कर लें।

गवाह को "वार ऑफ़ इण्डिपेण्डेन्स" नामक पुस्तक की कुछ प्रतियाँ दिखाई गईं। गवाह ने कहा कि यह पुस्तक लाहौर के क्रान्तिकारियों ने छपवा कर बाँटी थी।

३०वीं जनवरी को इक़बाली गवाह ने बयान देते हुए कहा, कि ६ अक्टूबर को मैं श्रीयुत वैशम्पायन से मिला तो उसने मुझे कहा कि श्रीयुत सरदार भगतसिंह जैसे युवक फाँसी पर लटकाए जा रहे हैं, पर महाराष्ट्र अभी तक चुपचाप है। समय आ गया है कि कुछ ठोस काम किया जाय। लाहौर षड्यन्त्र के अभियुक्त बम्बई की ओर आशापूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं, भगतसिंह के बदले की गूँज सारे महाराष्ट्र में सुनाई देनी चाहिए।

श्रीयुत वैशम्पायन ने मुझे श्रीयुत देवधर के पास मोटर का प्रबन्ध करने के लिए भेजा। देवधर ने श्री० शिन्दे की सहायता से मोटरकार का प्रबन्ध कर दिया। जब मैं वापस लौटा तो श्रीयुत वैशम्पायन के घर पर श्रीयुत बुद्धिमान, बापट, स्वामी तथा श्रीमती शारदा बड़ी गम्भीरता से बातचीत कर रहे थे; इसलिए मैंने अन्दर आना उचित न समझा। इतने में श्रीयुत शिन्दे मोटरकार भी ले आया। श्री० बापट ने मोटरकार की परीक्षा की और कहा कि यह काम लायक़ है।

कुछ समय पश्चात् श्रीयुत बुद्धिमान तथा श्रीमती शारदा, अपने पुत्र हरी के साथ, मोटर में चढ़ कर कहीं चले गए। मुझे श्रीयुत बर्वे, शिन्दे तथा बाल के साथ मालाबार हिल पर देख-रेख करने के लिए श्रीयुत वैशम्पायन ने भेजा। हम रात के १२ बजे तक वहीं रहे। परन्तु कोई विशेष घटना न होने से वापस लौट आए। थोड़ी देर बाद श्री० बापट मेरे घर पर आया। उसके साथ श्रीयुत स्वामी भी था। श्री० बापट ने मुझे बताया कि इन्होंने लेमिङ्गटन रोड के थाने को "ठाँ" "ठाँ" करके (रिवॉल्वर से) जड़ से हिला दिया है। श्री० स्वामी ने श्री० बापट को चुप रहने के लिए कहा, परन्तु मेरे आग्रह करने पर उसने मुझे स्वयं ही बताया कि हम पिछले तीन दिन से पुलिस-कमिश्नर की तलाश में थे। यदि हमारे पास कल मोटरकार होती तो कमिश्नर आज जीवित न होता। स्वामी ने बताया, कि पहले वह मालाबार हिल, पुलिस कमिश्नर की तलाश में गए, परन्तु कड़ा बन्दोबस्त होने के कारण वे कुछ न कर पाए। आख़िरकार बहुत से पुलिस के थानों का चक्कर काटते हुए हम लेमिङ्गटन रोड पुलिस-स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ पर हमने अपनी मोटर खड़ी कर दी। थोड़े ही समय के बाद एक और मोटर थाने के सामने आकर खड़ी हो गई। उसमें से एक यूरोपियन अफ़सर और एक अङ्गरेज़ महिला उतरे। श्री० बुद्धिमान को गोली चलाने की आज्ञा दी गई, किन्तु वह एक क्षण के लिए झिझका। इसी बीच में श्रीमती शारदा ने फ़ायर आरम्भ कर दिए। फिर श्री० बुद्धिमान और श्री० बापट ने भी गोलियाँ चलाईं। एक गोली मोटर के टायर में लगी! उसके पश्चात् हम लोग वहाँ से मोटर में भाग आए।

श्री० स्वामी ने यह भी कहा कि हमने आज सरदार भगतसिंह का बदला ले लिया है। हमें अब एक परचा छपवा कर बाँटना चाहिए। गवाह ने कचहरी में एक परचा शनाख़्त किया, जो कि श्री० स्वामी ने छपवाने के लिए लिखा था।

गवाह ने बयान जारी रखते हुए कहा, कि इतने में श्रीयुत वैशम्पायन भी मेरे घर पहुँच गया। उसने कहा कि आज का काम उचित नहीं हुआ, सब बच्चों का खेल ही रहा।

* * *

लाहौर षड्यन्त्र केस

लाहौर, २९वीं जनवरी का समाचार है, कि आज षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों को ठीक दस बजे कचहरी में लाया गया। अभियुक्तों ने आते ही 'इनक़िलाब ज़िन्दाबाद' 'भगतसिंह ज़िन्दाबाद' इत्यादि क्रान्तिकारी नारे लगाए।

इन्द्रपाल का बयान

इक़बाली गवाह इन्द्रपाल ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा कि रात्रि के समय श्री० भगवतीचरण, यशपाल, आट, तथा मैंने जाकर रेलवे लाइन के नीचे बम गाड़ दिए। हम घर से दस बजे गए थे और प्रातःकाल ४ बजे हम सारे काम से निश्चिन्त होकर लौटे। उस रात को बहुत ठण्ड पड़ रही थी। इसलिए कोई मनुष्य उस समय उस स्थान पर नहीं आता-जाता था। हम बहुत से तारों के गुच्छे साथ ले गए थे। इनकी लम्बाई लगभग ३०० फ़ीट होगी। कुहरे के मारे कुछ सूझ नहीं पड़ता था। ज्यूँ-त्यूँ करके हमने बमों को दबा दिया और तार का एक सिरा उनके साथ जोड़ दिया। तार का दूसरा सिरा हमने कुएँ की मेंड़ के पास लाकर छोड़ दिया, और तार महीन घास इत्यादि से ढाँप दिया। यह सब हमने २१-२२ की रात को किया। जब हम मकान पर वापस आए तो हंसराज तथा अमीरचन्द वहाँ पर उपस्थित थे।

मि० सलीम (जज)—आपके पहले बयान में लिखा है कि अमीरचन्द अभियुक्त सवेरे नौ बजे आया।

इन्द्रपाल—यह मेरा बयान नहीं है, यह पुलिस ने स्वयं जोड़ दिया होगा।

गवाह ने कहा कि २२ दिसम्बर को हंसराज ने स्विच फ़िट किए। हंसराज बाज़ार से एक दर्जन बैटरियाँ मोल ले आया था। वह बैटरियाँ एक बक्स में लगा कर तार के साथ एक स्विच से फ़िट कर दी गईं। हम बक्स लेकर रेलवे लाइन पर गए, और सारा बन्दोबस्त फिर से निरीक्षण किया। रात के नौ बजे हम नई देहली में वापस लौटे। वहाँ अमीरचन्द इत्यादि सब सामान बाँध कर सोए थे।

उसी रात को एक व्यक्ति आसफ़ नामी आया और यशपाल से बातें करके चला गया। जब हम रात को बातें कर रहे थे तो हंसराज ने शीशी निकाल कर दिखाई और कहा कि आक्रमण करने के समय यदि कोई देख ले तो इस शीशी को खोल देना। सब बेहोश हो जाएँगे। मुझे पता नहीं कि आक्रमण के लिए कौन चुना गया था, परन्तु मेरा अनुभव है कि यशपाल को यह काम सौंपा गया था।

वाइसराय पर आक्रमण

२२ दिसम्बर को मैं और हंसराज लाहौर वापस लौट आए। दूसरे दिन हमने समाचार-पत्रों में पढ़ा कि वाइसराय की गाड़ी को बम से उड़ा दिया गया है, परन्तु वाइसराय बच निकला।

इन्हीं दिनों मेरी भेंट सरनदास अभियुक्त से हुई। उसकी बातचीत से मुझे पता चला कि वह क्रान्तिकारी विचारों का है। उसने मुझे ऐसी पुस्तकें मोल लेने को कहा, जिनमें क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया गया हो। मैंने 'बन्दी-जीवन' 'विजया' आदि पुस्तकें मोल ले लीं।

२८ दिसम्बर को श्रीमती दुर्गावती ने मुझे एक पत्र दिया। वह पत्र अमीरचन्द के लिए था, परन्तु बहुत ढूँढने पर भी वह मुझे न मिला। मैंने इसे फाड़ कर पढ़ा। इसमें साईकल के सम्बन्ध में कुछ लिखा था। कुछ दिन के पश्चात अमीरचन्द मुझे मिला तो मैंने उसे पत्र के सम्बन्ध में सब कुछ बता दिया।

२ जनवरी को मैंने पञ्जाब प्रिन्टिङ्ग प्रेस के पीछे एक मकान ले लिया। इस मकान में मैं अपने छोटे भाइयों

के साथ रहा करता था। पण्डित रूपचन्द ग्वालमण्डी वाली बैठक ही में रहने लगा।

श्रीमती दुर्गा का पत्र

एक दिन धर्मपाल अभियुक्त श्रीमती दुर्गावती का पत्र लेकर मेरे पास आया। उसमें लिखा था कि सनातन-धर्म कॉलेज के सामने सन्ध्या के समय एक मनुष्य मुझे मिलेगा। मैं इस आज्ञानुसार नियत स्थान पर पहुँच गया। वहाँ मेरी श्रीयुत भगवतीचरण जी से भेंट हुई। श्री० भगवतीचरण ने मुझे बताया कि यशपाल को पञ्जाब प्रान्त का सञ्चालक बना दिया गया। इस कारण से वह पञ्जाब में मेरे पास ठहर कर काम करेगा। मैंने उसको अपने पास आश्रय देना स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात मैं तथा हंसराज वहाँ से लौट आए। श्री० भगवतीचरण, यशपाल, जाट तथा अमीरचन्द मेरे मकान पर ही रहे।

इन्हीं दिनों यशपाल ने मुझे बताया कि वाइसराय पर आक्रमण के लिए उसको क्यों चुना गया था। श्री० भगवतीचरण, चूँकि सारे दल के सञ्चालक थे, इस कारण यह काम यशपाल को, जो केवल प्रान्तीय सञ्चालक था, सौंपा गया था। दूसरे वह फ़ौजी वर्दी, जो कि आक्रमण के समय काम में लाई जाने वाली थी, यशपाल के अतिरिक्त किसी दूसरे को पूरी न आती थी।

श्रीयुत भगवतीचरण तथा यशपाल इन दिनों मेरे मकान पर रहा करते थे। इन्हीं दिनों श्रीयुत चन्द्रशेखर भी मेरे पास आए और दूसरे क्रान्तिकारियों से मिले। मुझे श्रीयुत भगवतीचरण ने बहुत सी हिदायतें कीं, कि काम किस प्रकार से करना चाहिए।

तीसरी जनवरी को इक़बाली गवाह ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि श्रीयुत भगवतीचरण के साथ बातचीत करने के बाद मैंने श्री० यशपाल को ठहराना स्वीकार कर लिया। २ जनवरी को श्रीमती दुर्गादेवी ने श्री० धर्मपाल के द्वारा मुझे अपने मकान पर बुलाया और कहा कि सन्ध्या के छः बजे एक व्यक्ति रेशमी रूमाल हाथ में लिए गोलबाग़ में तुम्हें मिलेगा। उसका नाम शिव होगा। वह जो कुछ पूछे बता देना। मैं सन्ध्या को नियत स्थान पर पहुँचा। कुछ काल तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् एक व्यक्ति हाथ में रेशमी रूमाल लिए हुए आया। उसने मुझसे श्रीयुत भगवतीचरण तथा श्रीयुत यशपाल का पता पूछा, मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हें दो-तीन दिन में इनका पता बताऊँगा।

कुछ दिन पश्चात् श्री० यशपाल लाहौर आया तो मैंने उसे श्री० शिव की बाबत बताया, परन्तु मुझे पता चला कि वह उससे पहले ही मिल चुका है।

विप्लव-दल का सङ्गठन

श्री० यशपाल ने मुझे बताया कि जब कोई घोषणा "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी" की ओर से की जाती है, तो उसके नीचे बलराज के हस्ताक्षर रहते हैं। यदि कोई घोषणा "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन" की ओर से की जाती है, तो उसके नीचे प्रेज़िडेण्ट "कर्तारसिंह" के हस्ताक्षर रहते हैं। 'बलराज' को कमाण्डर-इन-चीफ़ और 'कर्तार सिंह' को प्रेज़िडेण्ट लिखा जाता है। रिपब्लिकन एसोसिएशन का काम क्रान्तिवाद का प्रचार करना है। 'रिपब्लिकन आर्मी' का काम 'एक्शन' करना है। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट एसोसिएशन का मेम्बर हिन्दुस्तान आर्मी का मेम्बर भी हो सकता है। मेम्बर बनने के तीन स्टेज होते हैं। पहली स्टेज में व्यक्ति सहायक होता है, फिर धीरे-धीरे उसको 'सदस्य' होने के पूर्ण अधिकार दिए जाते हैं।

"फ़िलॉसोफ़ी ऑफ़ बॉम"

श्रीयुत यशपाल अपने साथ बहुत से परचे पञ्जाब में बाँटने के लिए लाया था। जिनका शीर्षक "फ़िलॉसोफ़ी ऑफ़ बॉम" था। मैंने यशपाल से पूछा कि इतने परचे तुमने कहाँ से लिए हैं। उसने कहा कि पार्टी का एक प्रेस कलकत्ता में है, वहाँ पर एक पुस्तक भी छप रही है, जिसका नाम "वार ऑफ़ इण्डिपेण्डेन्स" है। वह पुस्तक सरकार द्वारा ज़ब्त थी।

कुछ दिन के पश्चात् मैं और श्री० यशपाल रावलपिण्डी गए और वहाँ पर "फ़िलॉसोफ़ी ऑफ़ बॉम" नामक परचे बाँट दिए। वहाँ पर हमारी भेंट श्रीयुत सरनदास, श्रीयुत हरीराम पहलवान तथा श्रीयुत गोपालकृष्ण से हुई।

लाहौर में फिर बम का सामान मिला

एक दर्जन नवयुवक गिरफ़्तार

लाहौर ३१वीं जनवरी का समाचार है, कि कल रात को दस बजे लाहौर पुलिस ने मि० हार्डिङ्ग सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस की अध्यक्षता में शीशा मोती बाज़ार में एक दुकान की तलाशी ली और कुछ नवयुवकों को, जो दुकान के अन्दर बैठे थे, गिरफ़्तार कर लिया। दुकान की तलाशी लेने पर एक सेर के लगभग मन्सल पुटाश इत्यादि विस्फोटक पदार्थ, तथा कुछ नारियल के खोल और एक नली मिली।

यह भी पता चला है कि पुलिस ने श्रीयुत बिहारीलाल तथा श्रीयुत दिवानचन्द रङ्गरेज़ों की दुकानों की तलाशियाँ लीं। श्रीयुत बिहारीलाल की दुकान से पुलिस को मन्सल और पुटाश मिला। पुलिस ने और भी कई जगह तलाशी ली, पर कोई सन्देहजनक वस्तु नहीं मिली।

गिरफ़्तार हुए व्यक्ति में से निम्न-लिखित व्यक्तियों के नाम विदित हो सके हैं। श्री० कृष्णगोपाल, श्री० बिहारीलाल, श्री० दिवानचन्द, श्री० कँवरसेन। कँवरसेन का भाई, जो उन्हें मिलने आया हुआ था, पुलिस उसे भी पकड़ ले गई।

देहली षड्यन्त्र केस

देहली का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत धन्वन्तरि के वकील श्रीयुत बी० बी० लवकले ने उनकी ज़मानत के लिए एक आवेदन-पत्र दिया है, जिसकी सुनाई तीसरी फ़रवरी को सिटी मैजिस्ट्रेट के सामने होगी।

भुसावल बम-केस

जलगाँव का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि भुसावल बम-केस में उस केस के अभियुक्त भगवानदास को मुख़बिर जयगोपाल की हत्या के प्रयत्न के अभियोग में आजन्म कालेपानी की सज़ा दी गई है।

सिम्सन-हत्याकाण्ड

दिनेशचन्द्र गुप्त का बयान और फाँसी

२८वीं जनवरी को अलीपुर में मामले की कार्यवाही फिर से प्रारम्भ हुई। दिनेश गुप्त पर दण्ड-विधान की ३०२ री धारा के अनुसार हत्या का और ३०७वीं की धारा के अनुसार हत्या के प्रयत्न के अभियोग लगाए गए हैं। दिनेश गुप्त ने अपने बयानों में अपने उस समय के वक्तव्य को, जो उसने अस्वस्थावस्था में मेडिकल कॉलेज अस्पताल में प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट को दिया था, ठीक बतलाया और अपने को निर्दोष क़रार दिया। उसका वक्तव्य अदालत में पढ़ा गया था और उससे पता लगता है कि दिनेश गुप्त जमालपुर (मैमनसिंह) के पोस्ट-मास्टर का तीसरा लड़का है। उसने पिकेटिङ्ग आन्दोलन में ढाका यूनिवर्सिटी की बी० ए० फ़ाइनल कक्षा से अपना अध्ययन छोड़ दिया था। उसके बाद वह आसाम के कई स्थानों में घूमता रहा और इसी सिलसिले में मिदनापुर भी गया, जहाँ उसका भाई वकालत करता है। वह ८वीं दिसम्बर को यूरोपियन वेष में कलकत्ते आया और हावड़ा स्टेशन से ज़ूलोजिकल गार्डेन गया, परन्तु उस समय वहाँ के दरवाज़े बन्द थे।

वहाँ से वह डलहाउज़ी स्क्वॉयर आया और कौतूहलवश सेक्रेट्रियट में घुस गया। उसे इस बात का पता नहीं था कि उस इमारत में कौन सा ऑफ़िस है। उस शहर में भी वह दो तीन बार से अधिक नहीं आया और यही कारण उसकी इमारत-सम्बन्धी अनभिज्ञता का है। जब वह ऊपर गया तो उसने किसी चीज़ का भयङ्कर धड़ाका सुना। इस आवाज़ से डर कर वह भागा, और भागने के साथ ही किसी यूरोपियन ने उसकी ओर गोली छोड़ी। दिनेश रक्षा के लिए एक कमरे में घुस गया, परन्तु कमरे में प्रवेश करने के पहले ही उसे गर्दन में गोली लग चुकी थी। गोली खाकर दिनेश बेहोश हो गया और बहुत देर बाद उसे अस्पताल में होश आया। उसने गोली मारने वाले को पहचान नहीं पाया,

स्वर्गीय लेफ़्टेनेण्ट-कर्नल एन० एस० सिम्पसन, आई० एम० एस०

न तो उसके पास कोई सूट-केस था और न उसके साथ कोई साथी था। उसके पास दस रुपए थे और वह जमालपुर अपने पिता के पास जाना चाहता था। वह हरिकुमार गुप्त को पहचानता था।

इसके बाद दिनेश की ओर से ट्रिब्यूनल के सम्मुख एक दरख़्वास्त पेश की गई, जिसमें सरकार की ओर से बङ्गाल गवनमेण्ट के जुडीशियल सेक्रेटरी मि० जे० डब्ल्यू० नेल्सन की गवाही इङ्गलैण्ड में एक कमीशन द्वारा ली जाने की प्रार्थना की गई थी। दरख़्वास्त पर ऑर्डर लिख दिया गया था, परन्तु वह उसे सुनाया नहीं गया।

२री फ़रवरी का समाचार है कि स्पेशल ट्रिब्यूनल ने अभियुक्त दिनेश गुप्त को फाँसी की सज़ा दे दी !!

लाहौर में बम फ़ैक्टरी

लाहौर का ३१वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ की पुलिस ने तीन हिन्दू नवयुवकों को सूर्योदय के पहले बम बनाने के अभियोग में गिरफ़्तार किया है। कहा जाता है, कि उनके पास बम बनाने के विस्फोटक पदार्थ बहुत बड़ी मात्रा में प्राप्त हुए हैं। अभियुक्त चौदह दिन के लिए पुलिस-हवालात में भेज दिए गए हैं।

रामचरन शर्मा पाण्डिचेरी में गिरफ़्तार

मद्रास का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि पाण्डिचेरी-स्थित एक ब्रिटिश ख़ुफ़िया पुलिस के मि० अब्दुल सलाम ने आगरे के रामचरन शर्मा को गिरफ़्तार किया है, जो पाण्डिचेरी में दस वर्ष से ऊपर से रह रहा है। उसका सम्बन्ध मेरठ षड्यन्त्र-केस और अन्य बहुत से षड्यन्त्रों से बतलाया जाता है और उनके सम्बन्ध में उस पर बहुत से गिरफ़्तारी के वारण्ट भी निकाले गए हैं। वह विल्लुपुरम से मद्रास आते समय २८वीं जनवरी को रास्ते में गिरफ़्तार कर लिया गया।

* * *

—मिदनापुर का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि पुलिस ने मिदना बार-एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री० उपेन्द्रनाथ मैती के घर को सवेरे घेर लिया, और उस पर अपना अधिकार जमा लिया। इस मकान के साथ-साथ कुछ अन्य मकान भी, ग़ैर-क़ानूनी संस्थाओं के स्थान क़रार दिए गए हैं। श्री० मैती के घर में ताला लगा दिया गया है, और उनसे अपने परिवार के साथ दूसरी जगह चले जाने के लिए कहा गया है।

दोपहर में, पुलिस ने श्री० उमेशचन्द्र बेरा के मकान पर भी अधिकार जमा लिया।

—कलकत्ते का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि बङ्गाल कॉङ्ग्रेस सत्याग्रह समिति, नारी सत्याग्रह समिति बड़ा बाज़ार-कॉङ्ग्रेस कमिटी तथा बङ्गाल-भद्र-अवज्ञा-समिति ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई हैं।

नाडियाद २५वीं जनवरी—'बॉम्बे क्रॉनिकल' का एक सम्वाददाता लिखता है कि नाडियाद के मामलतदार लगान की वसूली के लिए गाँव-गाँव घूम रहे हैं। गत २१वीं जनवरी को वे मितराल में गए, और वहाँ के कर्सनदास नरोत्तम को मालगुज़ारी देने के लिए बुलाया। किन्तु उनकी अनुपस्थिति में उनकी पुत्री ने कहा कि "हम एक पाई भी न देंगे।"

३४ पटेलों ने इस्तीफ़ा दे दिया

'बॉम्बे क्रॉनिकल' का एक सम्वाददाता २६वीं जनवरी को भारवार से समाचार देता है, कि गत सप्ताह में अनकोला तालुक़े के ३४ पटेलों ने इस्तीफ़ा दे दिया है। ७ पटेल पहले ही इस्तीफ़ा दाख़िल कर चुके हैं। इस प्रकार वहाँ के ६३ पटेलों में कुल २२ रह गए हैं।

—कलकत्ते का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ 'एडवान्स' के दफ़्तरों की तलाशियाँ ली गईं। कहा जाता है कि ये तलाशियाँ, श्री० राजेन्द्र देव के, युद्ध-समिति के अध्यक्ष चुने जाने के सम्बन्ध में समाचार छापने के सम्बन्ध में ली गई हैं। पुलिस इस सम्बन्ध में कुछ काग़ज़-पत्र उठा ले गई है।

—मद्रास का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि गोडाउन स्ट्रीट पर विदेशी वस्त्र की दूकानों पर धरना देते समय श्री० के० भाष्यम् और श्री० सुन्दरम् गिरफ़्तार किए गए, किन्तु घटनास्थल से थोड़ी दूर ले जाकर छोड़ दिए गए। कहा जाता है कि श्री० भाष्यम् पीटे भी गए थे। स्वयंसेवकों को बलपूर्वक घटनास्थल से हटाया गया।

—नई दिल्ली का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि कुछ स्वयंसेवक, विदेशी वस्त्र की गाँठों को ले जाने से रोकते समय व्यापारियों द्वारा पीटे गए।

कहा जाता है कि कुछ व्यापारी विदेशी कपड़े की गाँठों को स्टेशन से लिए जा रहे थे। रास्ते में स्वयंसेवकों ने उन्हें रोका। कहा जाता है कि इस पर व्यापारियों ने उन्हें पीटा। इसी बीच किसी ने उन गाँठों पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी। पर पुलिस तुरत घटना-स्थल पर पहुँच गई, और आग बुझा डाली गई। इस सम्बन्ध में १७ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए, किन्तु सभी पीछे छोड़ दिए गए।

—पेशावर का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के चीफ़ कमिश्नर ने, दो महीने के लिए वहाँ 'ठक-साव ऑर्डिनेन्स' जारी किया है।

—कृष्णगढ़ का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि पुलिस ने कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० प्रफुल्लकुमार भट्टाचार्य, श्री० सरोजित बनर्जी, श्री० धीरेन्द्रनाथ सरकार के मकानों की तथा नवीन प्रेस और नदिया ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी की तलाशियाँ लीं। पुलिस कुछ काग़ज़-पत्र ले गई। कहा जाता है कि ये तलाशियाँ स्वतन्त्रता-दिवस के पर्चे के सम्बन्ध में ली गई हैं।

महात्मा जी की ११ शर्तें

१—शराब की बिक्री बिल्कुल बन्द कर दी जाय।

२—विनिमय की दर को घटा कर १ शि० ४ पे० कर दिया जाय।

३—मालगुज़ारी कम से कम आधी कर दी जाय और उस पर धारा-सभा का नियन्त्रण रख दिया जाय।

४—नमक-कर उठा लिया जाय।

५—शुरुआत में फ़ौजी ख़र्च कम से कम आधा कर दिया जाय।

६—घटी हुई मालगुज़ारी के अनुसार उच्च कर्मचारियों का वेतन आधा या उससे भी कम कर दिया जाय।

७—विदेशी कपड़े पर इतनी चुङ्गी लगाई जाय कि वह न आ सके।

८—भारतीय जहाज़ों के लिए समुद्र-तट सुरक्षित करने का क़ानून पास किया जाय।

९—जो लोग साधारण न्यायालय द्वारा हत्या या हत्या करने की चेष्टा के दोषी ठहराए गए हैं, उनके सिवा और सब राजनैतिक क़ैदियों को छोड़ दिया जाय। सब राजनैतिक मुक़द्दमे वापस ले लिए जायँ; १२४ (अ) की धारा और १८१८ का रेगुलेशन तथा इस प्रकार के और दूसरे क़ानून रद्द कर दिए जाएँ और सभी भारतीय निर्वासितों को स्वदेश लौटने की आज्ञा दी जाय।

१०—ख़ुफ़िया पुलिस का महकमा या तो उठा दिया जाय या वह जनता के अधीन कर दिया जाय।

११—जनता के नियन्त्रण में आत्म-रक्षा के लिए हथियार रखने के पर्वाने दिए जाएँ।

—बम्बई का २७वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ सन्ध्या समय आज़ाद मैदान में, महात्मा गाँधी के भाषण के लिए एक सभा की आयोजना की गई। सभा में भीड़ इतनी ज़्यादे थी कि एक ६० वर्ष की वृद्धा की, दम घुट जाने के कारण मृत्यु हो गई, और क़रीब ३१ मनुष्य घायल हो गए।

—बर्दवान के ज़िला मैजिस्ट्रेट ने दण्ड-विधान की १४४वीं धारा के अनुसार एक आज्ञा-पत्र निकाल कर श्री० सरोजकुँवर मुखर्जी को वहाँ दो महीने तक भाषण न देने की आज्ञा दी है।

—कानपुर का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ 'लाल इमली' के माल की नीलामी के समय धरना देने वाले स्वयंसेवकों पर लाठी और जूते तक चलाए गए। फल-स्वरूप वानर-सेना के ४ बालकों को चोट आई है।

मद्रास-कौन्सिल में सरकार की हार

"लाठी-वर्षा नहीं रोकी जायगी तो परिणाम भीषण होगा"

मद्रास का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ की कौन्सिल में श्री० भाष्यम् और श्री० सुन्दरम् पर लाठी-वर्षा करने के सम्बन्ध में प्रश्न किए गए। होम-मेम्बर ने इस विषय में अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। इस पर पूछा गया कि 'क्या सरकार जाँच कमिटी नियुक्त करेगी?' उत्तर में कहा गया कि जाँच की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रतिवाद में कहा गया कि भविष्य में इस प्रकार की कार्रवाई नहीं रोकी जायगी तो परिणाम भीषण होगा। श्री० वेङ्कटाचलम चेट्टी ने जाँच के सम्बन्ध में प्रस्ताव किया और ६१ पक्ष में तथा २७ विपक्ष में होने के कारण वह पास हो गया। १०० कपड़े के व्यापारियों के हस्ताक्षर-युक्त एक अर्ज़ी भी पेश की गई, जिसमें लाठी-वर्षा की निन्दा की गई थी। श्री० चेट्टी ने अपने आवेशपूर्ण भाषण में कहा कि जो पुलिस के अफ़सर इस लाठी-वर्षा के ज़िम्मेदार हैं, उन पर मुक़द्दमा चलाने की आज्ञा दी जाय। श्री० सुब्बरायन ने कहा कि इस प्रकार ज़मीन पर गिरे हुए मनुष्य पर लाठी चलाना अमानुषिकता है। अङ्गरेज़ी न्याय किसी गिरे हुए आदमी पर लाठी चलाने की आज्ञा नहीं देता।

"फ़ौज को सलाम करो"

कहा जाता है कि इलाहाबाद के ज़िला बोर्ड की शिक्षा-समिति के चेयरमैन को, ग्राम्य-पाठशालाओं के शिक्षकों के प्रति इस सम्बन्ध में आज्ञा देने के लिए, स्थानीय ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० एच० बमफ़ोर्ड ने निम्न-लिखित पत्र लिखा है :—

"मैं समझता हूँ कि यह आवश्यक है कि नई पीढ़ी के लोग फ़ौज को देखें और उसके प्रति उचित सम्मान प्रदर्शित करें। इसलिए मेरा यह विचार है कि पाठशालाओं के शिक्षकों के प्रति यह आज्ञा जारी की जाय कि सेना के उस ओर से जाते समय, वे अपने विद्यार्थियों को सड़कों पर ले आवें, और उनसे फ़ौज को सलाम करने के लिए कहें।"

महात्मा जी का 'डेली हेरल्ड' को तार

"प्रधान-मन्त्री की घोषणा अपर्याप्त है"

महात्मा जी ने लन्दन के एक पत्र 'डेली हेरल्ड' के पास एक तार भेजा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि "प्रधान-मन्त्री की घोषणा अपर्याप्त है। किन्तु अन्य कॉङ्ग्रेस नेताओं के साथ मैं उस पर खुले दिल से विचार करने को तैयार हूँ। सर सप्रू आदि के अनुरोध के अनुसार मैंने घोषणा पर अपना अन्तिम फ़ैसला स्थगित कर दिया है। मैं प्रतिष्ठापूर्ण शान्ति की खोज में हूँ। शान्तिपूर्ण वातावरण के लिए ये बातें आवश्यक हैं :—

(१) सभी कॉङ्ग्रेस दल के क़ैदियों को रिहा कर दिया जाय।

(२) दमनकारी ऑर्डिनेन्सों को वापस ले लिया जाय।

(३) ज़ब्तशुदा जायदादें लौटा दी जावें।"

प्रधान-मन्त्री की घोषणा पर महात्मा जी ने पहली बार अपनी यह सम्मति प्रकाशित की है।

—कलकत्ते का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १६वीं धारा के अनुसार एक नोटिस के द्वारा वहाँ के ४० व्यक्तियों को, जिनमें महिलाएँ भी शामिल हैं, जिन-जिन संस्थाओं को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया गया है, उनमें भाग न लेने की आज्ञा दी गई है।

महिलाओं पर पुलिस के नृशंस अत्याचार

महिलाएँ लाठियां, बन्दूकों की मूठों और जूतों की ठोकरों से आहत की गईं

'स्त्री-सितम दिन' पर पुलिस की नृशंस लीला

श्रीमती गाँधी तथा अन्य दो महिलाओं का वक्तव्य

श्रीमती कस्तूरीबाई गाँधी ने २१ वीं जनवरी को 'स्त्री-सितम दिन' के अवसर पर, बोरसद में होने वाले पुलिस के अत्याचारों का जो मार्मिक वर्णन किया था, उसका सारांश नीचे दिया जाता है :—

"स्त्रियों पर लाठी-प्रहार करने में पुलिस ने वास्तव में बड़ी निर्दयता से काम लिया है। पुलिस ने लाठियों की जो गहरी चोटें उनकी छाती, कमर, पीठ और अन्य अङ्गों पर की हैं और उनके सिर के बाल पकड़ कर उनके साथ जो दुर्व्यवहार किया गया है, उसकी भर्त्सना हिन्दी-शब्दों में नहीं की जा सकती। मैंने उन स्त्रियों से, जो जुलूसों में सम्मिलित हुई थीं और जिन्होंने लाठियाँ खाई थीं, पूछा कि क्या वे इसी प्रकार के अत्याचार सहने के लिए फिर ऐसे जुलूसों में भाग लेंगी? उत्तर में उन्होंने उत्साहपूर्वक अपनी सहमति प्रकट की। इस घटना से इस बात का पता लग जाता है कि वर्तमान गवर्नमेण्ट के अत्याचारों से वे गुजरात की महिलाएँ कितनी रुष्ट हो गई हैं। बोरसद की पुलिस के पास इन लज्जाहीन और निर्दय आघातों के लिए कोई उत्तर नहीं है। क्या ताल्लुक़े की स्त्रियों को अपनी बहिनों पर होने वाले पुलिस के इन नृशंस अत्याचारों का विरोध करने का अधिकार नहीं है? पूछ-ताछ करने पर मुझे मालूम हुआ है कि पुलिस ने जुलूस में सम्मिलित होने वाले स्त्री-पुरुषों को इस प्रकार का कोई नोटिस या चेतावनी नहीं दी कि यदि जुलूस बन्द नहीं किया जायगा तो उस पर लाठी-प्रहार किया जायगा। पुलिस के अत्याचारों की यह सीमा है। मैंने अपने जीवन में पुलिस के ऐसे अत्याचार न तो देखे हैं और न सुने हैं।"

श्रीमती कस्तूरीबाई गाँधी

लेडी विद्यागौरी तथा लेडी सुलोचना चिनू भाई का वक्तव्य

उसी 'स्त्री-सितम दिन' के अवसर पर लेडी विद्यागौरी रमन भाई और लेडी सुलोचना चिनू भाई ने भी अपनी जाँच के अनुभवों का वर्णन इस प्रकार किया था :—

"२१वीं जनवरी को बोरसद में स्त्रियों के जुलूस पर लाठी-प्रहार का हाल सुन कर हम अहमदाबाद से वहाँ जाँच के लिए गईं। बोरसद से भद्रान जाते समय रास्ते में हमें मालूम हुआ कि जुलूस श्रीमती लीलावती पर होने वाले पुलिस के नृशंस व्यवहार के विरोध में निकाला गया था। २१वीं जनवरी को जुलूस न निकालने का कोई ऑर्डर नहीं निकाला गया था। सत्याग्रह आश्रम और बोरसद ताल्लुक़े की उन महिलाओं को देखने से, जो पुलिस के प्रहारों से आहत होकर भद्रान अस्पताल में पड़ी थीं; यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी चोटों की पीड़ा असह्य है। उसके बाद हम जोशीपुरा गाँव के पास के मँड़वों में गईं। वहाँ हमने तीस स्त्रियों को लाठियों, बन्दूक़ों की मूठों और जूतों की ठोकरों से आहत देखा। ज़रोला गाँव के पास के मंड़वों में एक बूढ़ी स्त्री और एक बच्ची लाठियों के प्रहारों से पीड़ित मिली। पुलिस के इन नृशंस अत्याचारों के समय उन महिलाओं ने जो सत्याग्रही भाव दिखाया है, उसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। इन महिलाओं के सगे-सम्बन्धियों ने अपनी माँ-बहिनों और स्त्रियों पर होने वाली इन नृशंसताओं को अपनी आँखों से देखा, परन्तु उन्होंने चूँ तक नहीं की; उनकी भी हम प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकतीं। इतना होने पर भी पुलिस का उस दिन का व्यवहार अत्यन्त हीन और लज्जाजनक था! जिन ऑफ़िसरों ने कोमल नारी-जाति पर यह भयङ्कर अत्याचार करने की आज्ञा दी है, उनकी भर्त्सना के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। यदि हमने अपनी आँखों से साक्षात् इन अत्याचारों की लीला न देखी होती, तो हमें उन रिपोर्टों पर, जो हमने पत्रों में पढ़ी थीं, अवश्य सन्देह होता। परन्तु हमें अब पूरा विश्वास हो गया है कि इन नृशंस अत्याचारों के लिए केवल पुलिस ज़िम्मेदार है। स्त्रियों के सिवाय उस रोज़ पुरुष भी लाठियों से बुरी तरह पीटे गए थे।"

* * *

बर्मा में विद्रोहियों का आतंक

मिशन स्कूल जला डाला गया

रङ्गून का समाचार है, कि थारावड्डी में विद्रोहियों का उत्पात अभी जारी है। वे अकेले-दुकेले गाँव वालों की हत्या कर डालते हैं, घरों में आग लगा देते हैं तथा नाना प्रकार के उपद्रव मचाते हैं। ऐसी घटनाएँ वहाँ रोज़ हो रही हैं। किन्तु तो भी परिस्थिति पहले की अपेक्षा शान्त बतलाई जाती है। कहा जाता है कि विद्रोहियों का पहले के समान सङ्गठन अब नहीं रहा।

कहा जाता है, ४ मनुष्य एक गाड़ी पर धान लाद कर मिनला बाज़ार बेचने के लिए लिए जा रहे थे, विद्रोहियों ने उन्हें मार डाला और अनाज लूट लिया। इसी प्रकार एक गाँव के मुखिए के घर में, जिसने एक विद्रोही को गिरफ़्तार करने में पुलिस की सहायता की थी, आग लगा दी गई। पेयावेयो के अमेरिकन मिशन स्कूल में भी विद्रोहियों ने आग लगा दी। बर्मा के गवर्नर स्वयं थारावड्डी आए थे। गवर्नमेण्ट का ऐसा ख़्याल है, कि इन विद्रोहियों के दमन के लिए उसे फ़ौज की सहायता लेने की विशेष आवश्यकता न पड़ेगी। इस कार्य के लिए पुलिस ही काफ़ी समझी जाती है। कहा जाता है कि भिन्न-भिन्न स्थानों पर अस्थायी पुलिस-स्टेशन क़ायम किए जायँगे, और उसमें बड़ी तादाद में पुलिस रक्खी जायगी, जो समय पर गाँव वालों को सहायता दे सके। सर जेम्स क्रेरार ने श्री० गयाप्रसाद सिंह के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा है कि बर्मा-विद्रोह में २,६०० मनुष्यों के भाग लेने का अन्दाज़ा लगाया गया है। विद्रोहियों की ओर के लगभग ३०० मनुष्य मारे गए, १३० घायल हुए और १,२५० पकड़े गए।

पुलिस की ओर के ३ मनुष्य मारे गए और ७ घायल हुए, इसके अतिरिक्त १ जङ्गल विभाग के इञ्जीनियर, १० गाँव के मुखिए और सरकारी कर्मचारी मारे गए।

आगामी कॉङ्ग्रेस के सभापति सरदार पटेल चुने गए

एक स्थानीय समाचार है कि आनन्दभवन में, कार्यकारिणी समिति की एक बैठक में गत १ली फ़रवरी को निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया गया है—"देश की वर्तमान नाज़ुक अवस्था को देखते हुए कार्यकारिणी समिति अपने विशेष अधिकारों के द्वारा श्री० सरदार पटेल को, कराची में होने वाली कॉङ्ग्रेस के लिए सभापति चुनती है।

"वर्तमान अखिल भारतीय कॉङ्ग्रेस कमिटी, जब तक नए चुनाव का प्रबन्ध न हो जाय, तब तक काम करती रहेगी।

"कार्यकारिणी समिति की अगामी बैठक १३वीं फ़रवरी को, अध्यक्ष द्वारा निर्धारित स्थान पर होगी।"

—दिल्ली का २८वीं जनवरी का समाचार है, कि पुलिस ने निमि प्रेस की तलाशी ली, और महमूदुल नामक मौलवी की 'फ़तवा' नामक पुस्तक को उठा ले गई।

—लाहौर का ३०वीं जनवरी का समाचार है, कि पुलिस ने ज़ब्त पुस्तक 'वतन का राज' के सम्बन्ध में, पुस्तक-विक्रेता नारायणदत्त एण्ड सन्स की दूकान की तलाशी ली। कहा जाता है कि उक्त पुस्तक की २७० प्रतियाँ वहाँ पाई गईं।

* * *

बंगाली नेताओं का सिंहनाद

'बिना हिंसात्मक और अहिंसात्मक क़ैदियों को छोड़े समझौता नहीं हो सकता'

श्री० सेन गुप्त की गर्जना

नई दिल्ली का २८ वीं जनवरी का समाचार है, कि श्री० जे० एम० सेन गुप्त ने जेल से छूटने पर इलाहाबाद रवाना होने के पहले एसोशिएटेड प्रेस' को निम्न वक्तव्य दिया है :—

"कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी के सदस्य की हैसियत से मैं उसका निर्णय पालन करने के लिए बाध्य हूँ और इसलिए जब तक हम लोग सर तेजबहादुर सप्रू, श्री० शास्त्री और श्री० जयकर से मुलाक़ात न कर लेंगे, मैं प्रधान-मन्त्री की घोषणा पर अपनी कोई सम्मति प्रकट नहीं कर सकता।

श्री० जे० एम० सेन गुप्त

"परन्तु मैं इतना अवश्य कह सकता हूँ कि एक ओर वायसराय महोदय घोषणा पर साम्य भाव से विचार करने की अपील करते हैं और दूसरी ओर वे अभी भी राजनैतिक क़ैदियों से जेलें भरते जा रहे हैं। उसी रोज़, जिस रोज़ वायसराय ने अपनी अपील प्रकाशित की है, और नेता जेलों से मुक्त किए गए हैं ; कलकत्ते में जो काण्ड हुआ है उससे यह प्रतीत नहीं होता कि उनका उद्देश्य शान्ति की स्थापना है। चाहे प्रधान-मन्त्री की योजनाओं से हमारे उद्देश्य की सिद्धि हो या न हो, परन्तु यदि आप (वायसराय) समझते हैं कि उन योजनाओं से हमारा उद्देश्य सिद्ध नहीं हो सकता और यदि आप कॉङ्ग्रेस की माँगों के अनुसार उसके उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए तैयार नहीं हैं तो हमें जेल से मुक्त करने पर भी उस उद्देश्य की सिद्धि होना आसान नहीं है। और यदि आप कॉङ्ग्रेस की माँगों की पूर्ति करने के लिए तैयार हैं तो सब राजनैतिक क़ैदियों को मुक्त करो, ऑर्डिनेन्सों को रद्द करो और सभी विचारों के राजनैतिज्ञों के साथ अपनी व्यावहारिक नीति बदल दो।

राजनैतिक क़ैदियों का छुटकारा

"मेरा बहुत दिनों से यही विचार रहा है कि जब राजनैतिक समझौते या राजनैतिक क़ैदियों को छुटकारा देने की समस्या सामने आवे, उस समय हिंसात्मक और अहिंसात्मक राजनैतिक क़ैदियों में कोई भेद-भाव नहीं हो सकता। यदि इङ्गलैण्ड और भारत में सच्चा समझौता होना है—यदि भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता देने की योजना हो रही है—तो सब हिंसात्मक और अहिंसात्मक राजनैतिक क़ैदियों का छुटकारा नितान्त आवश्यक है। यद्यपि हम दोनों के स्वतन्त्रता-प्राप्ति के मार्ग भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु उनके और हमारे उद्देश्य में कोई अन्तर नहीं है। क्या सन्धि के समय इङ्गलैण्ड आयर्लैण्ड से यह कह सकता था कि यद्यपि दो देशों में समझौता हो रहा है, परन्तु वह उन राजनैतिक क़ैदियों को मुक्त करने के लिए तैयार नहीं है जो युद्ध के समय हिंसात्मक अपराधों के अपराधी थे ? इसके विपरीत वे ही आयरिश नेता, जो यदि स्वतन्त्रता के युद्ध के समय ज़िन्दा गिरफ़्तार कर लिए जाते तो अङ्गरेज़ों के द्वारा फाँसी पर लटका दिए गए होते, युद्ध समाप्त होने पर सन्धि करने के लिए अङ्गरेज़ों के साथ एक ही टेबिल के आस-पास बैठे थे।

ऑर्डिनेन्स को रद्द करो

"बङ्गाल के तीन चार-सौ व्यक्ति बिना किसी अभियोग और अदालती कार्यवाही के केवल इसलिए जेलों में ठूँस दिए हैं कि पुलिस को उन पर हिंसात्मक होने का सन्देह है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उनमें से अधिकांश सच्चे कॉङ्ग्रेसवादी हैं। उनमें से कुछ माननीय व्यक्ति हैं और कुछ कॉङ्ग्रेस संस्थाओं के पदाधिकारी रह चुके हैं। ऐसी परिस्थिति में जब तक वे सब राजनैतिक क़ैदी जो हिंसात्मक या अहिंसात्मक अपराधों के अभियोगों में अदालती कार्यवाही द्वारा या बिना कार्यवाही के जेलों में सड़ रहे हैं, मुक्त न कर दिए जायँगे; जब तक हिंसात्मक या अहिंसात्मक अपराधियों की अदालती कार्यवाही बन्द न कर दी जायगी और जब तक सब ऑर्डिनेन्स और वे क़ानून जिनके अनुसार लोग बिना किसी कार्यवाही के जेल में बन्द कर दिए जा सकते हैं ; किसी प्रकार की सन्धि-योजना पर विचार नहीं किया जा सकता।"

'प्रधान मन्त्री का 'स्वराज्य' बंगाल को अस्वीकार है'

हिंसात्मक और अहिंसात्मक राजनैतिक क़ैदी छोड़े जायँ,

श्री० सुभाषचन्द्र बोस की गर्जना

श्री० सुभाष बोस ने एक सप्ताह की सज़ा के बाद जेल से छूट कर प्रधान मन्त्री मि० मैकडॉनल्ड की घोषणा के विषय में अपनी सम्मति निम्न प्रकार दी है :—

"प्रधान मन्त्री ने ब्रिटिश सरकार की ओर से जो घोषणा की है, वह ऐसी नहीं है कि भारतीय उस पर प्रसन्न हो सकें। उनकी इस घोषणा में सच्ची स्वाधीनता देने की झलक नहीं है। यदि मैं बङ्गाल के भाव को ठीक-ठीक समझता हूँ, तो मैं कहूँगा कि ऐसी अपर्याप्त और असन्तोषजनक घोषणा बङ्गाल को स्वीकार नहीं हो सकती। और मुझे विश्वास है कि अन्य प्रान्त भी बङ्गाल से सहमत होंगे। मेरा सदा से यह विश्वास रहा है कि पूर्ण स्वाधीनता केवल भारतीयों के लिए ही नहीं, बल्कि इङ्गलैण्ड और सारे विश्व की शान्ति के लिए भी अत्यन्त अनिवार्य है। अङ्गरेज़ों को जो अधिकार इङ्गलैण्ड में प्राप्त हैं, वही अधिकार भारतीयों को भारत में प्राप्त हो जाने पर भारत और इङ्गलैण्ड दोस्त हो सकते हैं और हो जायँगे। परन्तु जब तक स्वराज्य की स्थापना नहीं होती, तब तक संसार के वायुमण्डल पर अशान्ति की घटाएँ मँडराती रहेंगी।

"मैं सम्मानपूर्ण समझौते के विषय में नहीं हूँ, परन्तु समझौते की बातचीत प्रारम्भ होने के पहले यथार्थ में सद्भाव का प्रमाण मिलना चाहिए। सन्धि प्रारम्भ होने साथ ही हिंसात्मक और अहिंसात्मक सभी प्रकार के क़ैदियों की मुक्ति हृदय-परिवर्तन का ख़ासा प्रमाण है। हिंसा की हम चाहे जितनी निन्दा करें, पर इस बात की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि जिन लोगों ने दुर्भाग्य से हिंसा के मार्ग का अनुसरण किया है, उन्होंने अपनी बुद्धि में देश-सेवा के विश्वास से ही इसे पकड़ा है। मैं इतना और कह देना चाहता हूँ कि क़ैदियों को छोड़ने के साथ ही देश के कई स्थानों के षड्यन्त्र के मामले भी उठा लिए जाने चाहिए। मुझे एक आशङ्का यह भी है कि कहीं राजनैतिक क़ैदियों

कलकत्ता कॉरपोरेशन के मेयर—श्री० सुभाषचन्द्र बोस

की मुक्ति के समय मज़दूर कार्यकर्त्ताओं की उपेक्षा न कर दी जाय। इसलिए मैं उनकी ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अन्य मामलों के साथ मेरठ षड्यन्त्र का मामला भी उठा लिया जाना चाहिए। यदि क़ैदियों की मुक्ति का प्रश्न समुचित रीति से हल न किया गया, तो मुझे सन्धि की सफलता में पूर्ण सन्देह है।

* * *

सुप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिज्ञों के मुक़द्दमे

३—लाला लाजपतराय १९२१–१९२२

जिस प्रकार सन् १९२०-२१ के असहयोग-आन्दोलन के समय से भारत के राजनैतिक क्षेत्र में परिवर्तन हुआ है, उसी प्रकार राजनैतिक मुक़द्दमों की कार्यवाही में भी परिवर्तन हो गया है। बाबू विपिनचन्द्र पाल के मुक़द्दमे को छोड़ कर, जिसमें उन्हें सन् १९०७ के वन्देमातरम्-केस के सम्बन्ध में गवाही देने से इनकार करने पर छः माह की सादी क़ैद की सज़ा हुई थी, असहयोग आन्दोलन के पहले जितने राजनैतिक मुक़द्दमे हुए हैं, उनमें से प्रायः सभी में अभियुक्तों पर राज-विद्रोह और हिंसा के बड़े-बड़े अभियोग लगाए गए थे, जिनमें अभियुक्तों के प्राण तक जाने का भय था। परन्तु जब से देश के राजनैतिक वायु-मण्डल में अहिंसा का प्रवेश हुआ है, तब से राजनैतिक मुक़द्दमे ने भी अपना रङ्ग बदल दिया है और कुछ को छोड़ कर प्रायः सभी मुक़द्दमों में उन पर कोई न कोई क़ानून भङ्ग करने का अभियोग लगाया गया है। ये मुक़द्दमे इसीलिए और भी अधिक उपयोगी हैं कि उनमें से कई में भारत के प्रसिद्ध देशभक्त नेताओं पर इसी प्रकार के अभियोग लगाए गए हैं और उन्हें सज़ा भी दी गई है। लाला लाजपतराय का मुक़द्दमा इसी श्रेणी का है।

सन् १९२१ की २री दिसम्बर को लाहौर के डिपुटी कमिश्नर मेजर फ़ैरार ने पञ्जाब प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी के पास इस आशय का एक लम्बा पत्र भेजा कि उन्हें एक समाचार से मालूम हुआ है कि उपर्युक्त संस्था की एक सभा अगले दिन होने वाली है, और चूँकि उसके सम्बन्ध में उनके पास कोई नोटिस नहीं पहुँचा, इसलिए ऐसी सार्वजनिक सभा 'राजविद्रोहात्मक सभा एक्ट' के अन्दर आ जाती है। डिपुटी कमिश्नर ने उस पत्र में सेक्रेटरी से सभा का कार्यक्रम और साथ ही यह वचन भी माँगा था कि सभा में कार्यक्रम के अतिरिक्त और किसी विषय पर विचार न किया जायगा। कॉङ्ग्रेस के सेक्रेटरी पण्डित के० सन्तानम् ने उत्तर में लिखा कि उपर्युक्त एक्ट उनकी सभा पर लागू नहीं होता, क्योंकि वह सभा सार्वजनिक नहीं, वरन् पञ्जाब कॉङ्ग्रेस के कुछ चुने हुए प्रतिनिधियों की है और उन्हें उस सम्बन्ध में व्यक्तिगत नोटिस भेजा गया है। प्रत्युत्तर में डिपुटी कमिश्नर ने फिर लिखा कि मेरी इच्छा न तो सभा पर उपर्युक्त एक्ट लगाने की है और न सभा रोकने की, मैं सिर्फ़ यह वचन चाहता हूँ कि सभा में ऐसी कोई कार्यवाही न हो, जिससे जनता में असन्तोष फैले। पण्डित जी ने फिर उत्तर दिया कि यद्यपि क़ानून के अनुसार डिपुटी कमिश्नर को सभा का कार्यक्रम पूछने का कोई अधिकार नहीं है, परन्तु मुझे कार्यक्रम बतलाने में कोई सङ्कोच नहीं है। उन्होंने लिखा कि सभा में उस नई परिस्थिति पर विचार होगा, जो पञ्जाब के कई ज़िलों में 'विद्रोहात्मक सभा एक्ट' प्रचलित होने से उत्पन्न हो गई है। सभा में क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट' सम्बन्धी विज्ञप्ति पर भी विचार होगा और इन दोनों के सम्बन्ध में पञ्जाब प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी अपना कर्तव्य-पथ भी निर्धारित करेगी।

३री दिसम्बर को २ बजे लाला लाजपतराय के सभापतित्व में सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। सभा में पण्डित सन्तानम्, डॉ० गोपीचन्द और श्री० मलिक लाल ख़ाँ भी उपस्थित थे। मेजर फ़ैरार, पुलिस के डिस्ट्रिक्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट और कुछ यूरोपियन कॉन्स्टेबिलों के साथ सभा-स्थल पर गए और उसे सार्वजनिक सभा कह कर ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया। साथ ही उन्होंने सदस्यों से भी सभा बरख़ास्त करने के लिए कहा। लाला जी ने सभा के सभापति की हैसियत से, यह कह कर कि सभा सार्वजनिक नहीं है, उनके ऑर्डर का विरोध किया और सभा बरख़ास्त करने से भी साफ़ इनकार कर दिया। इस पर मेजर फ़ैरार ने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट को उन्हें गिरफ़्तार करने का ऑर्डर दिया और वे तुरन्त गिरफ़्तार कर लिए गए। अन्य तीन सदस्य भी गिरफ़्तार कर हवालात भेज दिए गए।

७ वीं दिसम्बर को चारों अभियुक्त लाहौर के एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० कैफ़ के सम्मुख पेश किए गए और उनके मुक़द्दमे के लिए १२ तारीख़ निश्चित कर दी गई। १० वीं दिसम्बर को पुलिस ने लाहौर में लाला जी के घर, पञ्जाब प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के दफ़्तर और कई प्रेसों की तलाशियाँ लीं, परन्तु उसे कोई विद्रोहात्मक चीज़ न मिल सकी। मुक़द्दमे की कार्यवाही १२ वीं दिसम्बर को प्रारम्भ हुई। लाला जी और उनके सहयोगियों पर 'विद्रोहात्मक सभा एक्ट' की ६वीं धारा और दण्ड-विधान की १४५वीं धारा का अभियोग लगाया गया था। सब से पहले सरकारी गवाह मेजर फ़ैरार थे। उन्होंने अपनी गवाही में सभा की आयोजना, उसे बरख़ास्त करने से इनकार करने और उनकी गिरफ़्तारी का सब हाल आदि से अन्त तक कह सुनाया। पहली गवाही हो जाने के उपरान्त अदालत ने पहले अभियुक्त लाला जी पर 'विद्रोहात्मक सभा एक्ट' भङ्ग करने के कारण उसकी ६वीं धारा का अभियोग लगाया। लाला जी ने अपने बयानों में कहा कि वे न तो गवर्नमेण्ट की अदालतों को मानते हैं और न उसकी कार्यवाही में भाग लेने के लिए तैयार हैं। इसके बाद उन्होंने गवर्नमेण्ट के शासन-विधान की पोल खोलना प्रारम्भ कर दिया, परन्तु अदालत ने उन्हें बीच ही में रोक दिया और विरोध-स्वरूप उन्होंने अपना वक्तव्य बन्द कर दिया। बैठने के पहले सभा के सम्बन्ध में उन्होंने निम्न बातें कहीं—"सभा में मेरे सिवाय किसी ने भाषण नहीं दिया। सभा के सभापति की हैसियत से उसकी सम्पूर्ण कार्यवाही के लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ।" उन्हीं की नाईं अन्य तीन अभियुक्तों ने भी अदालत की कार्यवाही में भाग लेने से इनकार कर दिया। पहला अभियोग लगा कर मुक़द्दमा उस दिन के लिए स्थगित कर दिया गया और दूसरे अभियोग पर विचार करने के लिए १९ तारीख़ निश्चित कर दी गई।

१९वीं दिसम्बर को मुक़द्दमे की कार्यवाही लाहौर सेण्ट्रल जेल में एक बन्द कमरे में प्रारम्भ हुई। सरकारी वकील, एक अन्य अज्ञात वकील, दो पत्र-प्रतिनिधियों और अभियुक्तों के सिवाय किसी को अन्दर प्रवेश करने की आज्ञा न थी। लाला जी ने इस एकान्त कार्यवाही का घोर विरोध किया। लाहौर पुलिस के सीनियर सुपरिण्टेण्डेण्ट कर्नल ग्रेसन की गवाही हो जाने के उपरान्त एक कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी लाला त्रिलोकचन्द कपूर गवाही के लिए कटघरे में खड़े कर दिए गए और उनसे कुछ प्रश्न किए गए। परन्तु उन्होंने उन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के दिल्ली अधिवेशन के सविनय आज्ञा-भङ्ग सम्बन्धी प्रस्ताव के अनुसार वे उन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दे सकते। इस पर अदालत ने उन्हें अदालत के अपमान का अभियोग लगाने की धमकी दी। परन्तु इस धमकी का उन पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने उत्तर देने से साफ़ इनकार कर दिया। अदालत ने उन पर अभियोग लगा दिया और ज़मानत पर छोड़ने की आज्ञा निकाली, परन्तु ज़मानत देने से उन्होंने इनकार कर दिया और वे हवालात भेज दिए गए। इसके बाद कुछ अन्य गवाहियों के बाद मामला १९ वीं दिसम्बर के लिए स्थगित कर दिया गया।

इसी बीच में हाईकोर्ट के वकीलों ने एक सभा की जिसमें उन्होंने जेल के अन्दर दरवाज़े बन्द कर कार्यवाही करने का घोर विरोध किया। इसी समय 'हाउस ऑफ़ कॉमन्स' में कर्नल वैजवुड ने यह प्रश्न किया कि लाला लाजपतराय जैसे राजनैतिक क़ैदियों के साथ विशेष व्यवहार किया जाता है या उन्हें जेल में साधारण क़ैदियों की नाईं ही रक्खा जाता है। उत्तर में उस समय के भारत-मन्त्री मि० माण्टेगू ने कहा कि वे भारतीय सरकार से इस सम्बन्ध में लिखा-पढ़ी कर रहे हैं और शायद इसी के परिणाम-स्वरूप लाला जी और उनके साथियों के साथ विशेष व्यवहार करने की आज्ञा निकाली गई थी। इस बीच में लाला त्रिलोकचन्द कपूर को अदालत के अपमान के दो अभियोगों में अलग-अलग तीन-तीन माह की क़ैद और तीन सौ रुपए जुर्माने की सज़ा दे दी गई।

लाला जी और उनके साथियों का मुक़द्दमा फिर २२वीं दिसम्बर को स्थगित कर दिया गया, और जब उस दिन मामला प्रारम्भ हुआ तब कुछ शर्तों पर जनता को अदालत में जाने की आज्ञा दे दी गई। ६० आदमी अन्दर गए। अदालत ने लाला जी से कुछ प्रश्न किए, परन्तु उन्होंने उत्तर देने में अपनी असमर्थता प्रकट की। अपनी इस प्रवृत्ति के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि "इसका अर्थ अदालत का अपमान करना नहीं है। मैं वही कर रहा हूँ जो भारत भर के असहयोगियों ने किया है। जो वक्तव्य मैं पेश कर रहा हूँ उससे मुक़द्दमे सम्बन्धी सभी बातें स्पष्ट हो जायँगी।" इसके बाद उन्होंने अपना लिखित बयान मैजिस्ट्रेट को दे दिया। अन्य अभियुक्तों ने भी कार्यवाही में भाग लेने से इनकार कर दिया। अभियोग लगा देने के उपरान्त अदालत ने मि० स्लीम बैरिस्टर को अभियुक्तों की ओर से क़ानूनी बहस के लिए नियुक्त किया, परन्तु अभियुक्तों ने इसका विरोध किया। कार्यवाही समाप्त कर फ़ैसले के लिए सन् १९२२ के जनवरी मास की ७वीं तारीख़ निश्चित कर दी गई।

लाला लाजपतराय और पण्डित के० सन्तानम् को पहिले अभियोग में छै-छै माह की सादी क़ैद और पाँच-पाँच सौ रुपए जुर्माने की सज़ा और दूसरे अभियोग में एक-एक साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई। फ़ैसले के अनुसार दूसरे अभियोग की सज़ा अभियुक्तों को पहले भोगनी थी। डॉक्टर गोपीचन्द और मि० मलिक लाल ख़ाँ को पहले अभियोग में चार-चार माह की सादी क़ैद और तीन-तीन सौ रुपए जुर्माने की सज़ा, और दूसरे अभियोग में एक साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई। इन्हें भी दूसरे अभियोग की सज़ा पहले काटने की आज्ञा निकाली गई थी।

* * *

ज़मानत लौटाओ या केस चलाओ

यू० पी० गवर्नमेण्ट के चीफ़ सेक्रेटरी (चौबे जी) को सहगल जी की चुनौती

"सरकारी-रिपोर्टर ने लेखों को यहाँ-वहाँ शरारतन तोड़-मरोड़ डाला है"

'भविष्य' का कोई प्रकाशन किसी भी क़ानून के शिकञ्जे में नहीं आता

पाठकों को स्मरण होगा, हाल ही में 'भविष्य' से—बिना किसी अपराध के—१,०००) रु० की ज़मानत माँगी गई थी, जो केवल 'भविष्य' द्वारा होने वाली थोड़ी-बहुत सेवाओं को दृष्टि में रख कर जमा कर दी गई थी, जिसकी चर्चा 'भविष्य' के गताङ्क में की जा चुकी है। यू० पी० गवर्नमेण्ट के चीफ़ सेक्रेटरी की इस अवाञ्छनीय आज्ञा से विक्षिप्त होकर सहगल जी ने १ली फ़रवरी को जो पत्र चीफ़ सेक्रेटरी के नाम भेजा है, उसका अनुवाद 'भविष्य'-परिवार की जानकारी के लिए नीचे दिया जाता है। इस पत्र की नक़ल यू० पी० के (सपरिषद) गवर्नर तथा (सपरिषद) वायसराय को भी सूचनार्थ भेजी गई है। सहगल जी का पत्र इस प्रकार है :—

महोदय,

मुझे 'फ़ाइन आर्ट प्रिन्टिङ्ग कॉटेज' के 'कीपर' की हैसियत से, जहाँ से 'भविष्य' प्रकाशित होता है, सन् १९३० के 'भारतीय प्रेस और अनधिकृत इश्तहार तथा समाचार-पत्र ऑर्डिनेन्स' के अनुसार एक नोटिस आपकी ओर से दिया गया है। इस नोटिस के साथ मुझे २१ पृष्ठों का एक ख़रीता भी प्राप्त हुआ है, जिसमें वे अंश उद्धृत किए गए हैं, जिनके आधार पर, मेरे ख़याल से, ज़मानत माँगी गई है।

मेरा ख़याल है कि ऑर्डर पास करने के पहले, न तो उन अंशों के सम्बन्ध में 'लीगल रिमेम्बरेन्सर' ही की सम्मति ली गई है और न आपने ही उनकी अच्छी तरह जाँच की है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है, कि गवर्नमेण्ट रिपोर्टर ने मेरे साथ बड़ा अन्याय किया है और कहीं-कहीं तो उन अंशों को शरारतन तोड़-मरोड़ भी डाला गया है—जैसा कि निम्न-लिखित पंक्तियों से आपको स्पष्ट-रूप से मालूम हो जायगा। मुझे आशा है उन पर समुचित विचार किया जायगा।

(१) यह कहा गया है, कि जो कविता उन पाँच महिलाओं के सम्बन्ध में लिखी गई है, जिन्हें हाल ही में कारावास का दण्ड दिया गया है, वह आपत्तिजनक है। यद्यपि मैं रिपोर्टर के अङ्गरेज़ी अनुवाद से सहमत हूँ, परन्तु मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि यदि आप उसका विचारपूर्वक मनन करेंगे तो आप उसे उन्हीं कविताओं की नाईं दोष-रहित पाएँगे, जैसी नौ ऑर्डिनेन्सों के शासन-काल में भी भारतीय पत्रों में निर्विघ्न प्रकाशित होती रही हैं। मैं आपको अदालत में उन्हें दोषपूर्ण प्रमाणित करने का चैलेञ्ज देता हूँ।

(२) दूसरा विरोध उन आहत व्यक्तियों के चित्रों के प्रकाशन पर किया गया है, जो बम्बई में लाठी-प्रहार से घायल हुए हैं और व्रणपूर्ण अङ्गों में पट्टियाँ बाँधे हुए हैं। इनमें से भी सब से अधिक विरोध एक चौदह वर्ष के आहत बालक के चित्र के प्रकाशित होने पर किया गया है। इस सम्बन्ध में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ, कि चित्रों के प्रकाशन पर, वे चाहे जैसे सनसनी-पूर्ण हों, उस समय तक आपत्ति नहीं की जा सकती, जब तक उनकी प्रवृत्ति हिंसात्मक न हो। मैं इस सिलसिले में अपने 'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य' पुस्तक के मुक़द्दमे के निर्णय का उल्लेख करना चाहता हूँ। गवर्नमेण्ट एडवोकेट ने अपने वक्तव्य में इस बात पर बहुत ज़ोर दिया था, कि उक्त पुस्तक के कुछ चित्र बहुत सनसनी फैलाने वाले थे। उदाहरणार्थ वह चित्र, जिसमें ब्रिटिश सिपाही कानपुर के आसपास के गाँवों में आग लगाते और उनके निर्दोष निवासियों पर अत्याचार करते हुए चित्रित किए गए हैं, बहुत आपत्तिजनक थे; परन्तु बैञ्च के तीनों जजों की सम्मति के अनुसार उस पुस्तक का कोई चित्र धारा १२४-अ के अन्दर न आता था; और तत्सम्बन्धी विरोध बिलकुल निराधार सिद्ध कर दिया गया था। इसलिए यह मेरी समझ में नहीं आता, कि उन अभागे व्यक्तियों के—चाहे वे बूढ़े हों या बच्चे हों—चित्रों के प्रकाशन में, जो लाठियों के निर्मम आघात से आहत हुए हैं और जिनकी सत्यता के प्रमाण-स्वरूप बम्बई गवर्नमेण्ट के वक्तव्य गवर्नमेण्ट गज़ट में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं, क्या विरोध हो सकता है? जब तक लाठी-प्रहार का होना असत्य या चित्र झूठा प्रमाणित न कर दिया जाय, तब तक क़ानून की दृष्टि से कोई मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

(३) तीसरे, मैं सरकारी रिपोर्टर के उस वक्तव्य का, जिसमें उसने कहा है, कि पत्र ने 'सदा की भाँति' बहुत से सनसनीपूर्ण और आपत्तिजनक शीर्षक दिए हैं, घोर विरोध करता हूँ। उदाहरणार्थ उसने कहा है कि रावलपिण्डी जेल में मुक़द्दमे के सिलसिले में गवाहों ने जो वक्तव्य दिया है, उनके शीर्षक पत्र में निम्न-प्रकार दिए गए हैं :—

"यह जेल पृथ्वी पर नर्क के समान है" (आपकी जानकारी के लिए मैं यह कह देना चाहता हूँ, कि वह मेरा रचा हुआ शीर्षक नहीं है, बल्कि गवर्नमेण्ट-डॉक्टर का वक्तव्य था, जो उसने खुली अदालत में अपनी गवाही के सिलसिले में दिया था।) "राजनैतिक क़ैदियों के लिए पशुओं का सा भोजन" और "डॉक्टर किचलू के लिए पाख़ाना रसोईघर बनाया गया"। ये मेरे रचे हुए शीर्षक नहीं हैं, वरन् क़ैदियों के खुली अदालत के बयान हैं। परन्तु उनसे उस गवर्नमेण्ट का सम्मान नहीं बढ़ सकता, जिसके आप प्रतिनिधि हैं। मेरे सम्पादकीय अधिकारों पर इस प्रकार आक्षेप करना निरी मूर्खता है। यदि सच कहा जाय, तो मैंने शीर्षकों में उन वक्तव्यों का उल्लेख करने के सिवाय, जो मुक़द्दमे के समय खुली अदालत में दिए गए हैं, और कुछ नहीं किया है।

इस सम्बन्ध में मेरा प्रमाण यह है कि (इलाहाबाद हाईकोर्ट की भी) हाल की नज़ीरों के अनुसार खुली अदालत का वक्तव्य 'सार्वजनिक वक्तव्य' मान लिया गया है। यदि दुर्भाग्यवश आप इन नज़ीरों से अनभिज्ञ हैं, तो आपके लिए मैं उनको खोज सकता हूँ। अस्तु, मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि उन शीर्षकों में मेरा एक अक्षर भी नहीं है और यदि आप ध्यानपूर्वक सम्पूर्ण लेख का मनन करेंगे, तो आपको इसका शीघ्र ही पता लग जायगा, कि वे खुली अदालत में दिए गए वक्तव्यों की पुनरावृत्ति मात्र हैं।

(४) चौथा और बहुत ही लज्जाजनक विरोध उन शीर्षकों पर किया गया है, जो लन्दन के 'डेलीमेल' में प्रकाशित लॉर्ड रॉथरमियर के लेख में दिए गए हैं। इस सम्बन्ध में भी मैं आपको यह विश्वास दिला देना चाहता हूँ कि उनमें लॉर्ड रॉथरमियर के वक्तव्य के सिवा कुछ नहीं है। इसके विपरीत इस लेख के पहले शीर्षक में, जो हिन्दी में प्राप्य सब से बड़े टाइप में दिया गया है, मैंने लिखा है, "भारत के 'सब से बड़े मित्र' का प्रलाप" और आपका रिपोर्टर भी इसे स्वीकार करता है। उस शीर्षक में मैंने अन्य शीर्षकों पर आक्षेप करने का प्रयत्न किया है और उसका स्पष्ट अर्थ यह है कि 'लॉर्ड रॉथरमियर मूर्खता से भरी बातें कह रहा है। और उसकी वे मूर्खतापूर्ण बातें निम्न-प्रकार हैं :—

"पेशावर का विशाल क़िला कई दिनों तक विद्रोहियों के क़ब्ज़े में रह चुका है!" "अङ्गरेज़ी झण्डा लातों से कुचला जा रहा है।" परन्तु आपका रिपोर्टर किसी बुरे अभिप्राय से 'कोट करना' भूल गया है। और उससे ऐसा प्रतीत होने लगा है कि वह शीर्षक सम्पादक की निज की रचना है।

"यदि भारत हमारे क़ब्ज़े से निकल गया, तो हमारा सारा साम्राज्य मिट्टी में मिल जायगा" शीर्षक भी उन्हीं लॉर्ड रॉथरमियर का ही वक्तव्य है, जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद की रीढ़ की हड्डी हैं। इस वक्तव्य के स्पष्टीकरण के लिए मैं आपसे सम्पूर्ण लेख का मनन करने की प्रार्थना करता हूँ। यदि आप उस लेख को अङ्गरेज़ी में पढ़ना चाहते हैं और यदि आपके पुस्तकालय में वह पत्र न पहुँचता हो, तो मैं प्रसन्नतापूर्वक पत्र का वह अङ्क, जिसमें वह लेख प्रकाशित हुआ था, आपकी सेवा में भेज दूँगा।

(५) पाँचवाँ विरोध डॉक्टर धनीराम (लन्दन) की उस कहानी पर किया गया है, जिसका प्लॉट रूसी राज्यक्रान्ति से सम्बन्ध रखता है और जिसका न तो भारत की कार्यवाहियों से ही कोई सम्बन्ध है और न तो भारत के प्रचलित क़ानून की किसी धारा के अन्तर्गत ही आती है। यदि वह क़ानून के अन्तर्गत आती है तो क्या

(शेष मैटर बारहवें पृष्ठ के दूसरे और तीसरे कॉलम में देखिए)

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०-किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

५ फ़रवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-

ज़ार देख कर !

मतलब निकाल लीजिए

अख़बार देख कर !!

(११वें पृष्ठ का शेषांश)

आप उसकी वह धारा मुझे बतलाने की कृपा करेंगे, जिससे मैं अपनी भूल सुधार लूँ ?

(६) छठवाँ और अन्तिम विरोध मेरे 'इतिहास के कुछ पृष्ठ' शीर्षक लेख के प्रकाशन पर उठाया गया है, जिसमें 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' के शासन-काल के उन षड्यन्त्रों का उल्लेख किया गया है, जो ब्रिटिश लोगों ने मरहठा चीफ़ों के विरुद्ध रचे थे। आपके रिपोर्टर ने यह मान लिया है कि "लेख की भाषा और रचना में कुछ उलट-फेर कर दिए गए हैं", परन्तु उसकी सम्मति से 'उसकी सामग्री में कोई भिन्नता नहीं है।"

सब से पहले, आपके मारफ़त, मैं आपके रिपोर्टर को यह सूचित कर देना चाहता हूँ कि इस अध्याय का उस अभागी पुस्तक 'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य' के अध्याय से कोई सम्बन्ध नहीं है, और वह बिलकुल स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित किया गया है। दूसरे मैं यह भी सूचित करना चाहता हूँ कि यह लेख 'भविष्य' में पहले ही प्रकाशित नहीं हुआ है, बल्कि वह 'चाँद' से उद्धृत मात्र किया गया है। यदि आप इस लेख को ढूँढ़ने का कष्ट उठावेंगे तो आप उसे धारावाही रूप में 'चाँद' के दिसम्बर सन् १९२९ के (पृष्ठ ४९० से ५२६ तक), जनवरी सन् १९३० के (पृष्ठ ५७२ से ५७६ तक) और फ़रवरी सन् १९३० के (पृष्ठ ६९६ से ७०३ तक) अङ्कों में पाएँगे और मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि उसके प्रकाशन में आपने या आपकी गवर्नमेण्ट ने कभी आपत्ति नहीं की। और यदि यह मान भी लिया जाय, कि वह लेख किसी ज़ब्त पुस्तक में से प्रकाशित किया गया है, तो भी उसके प्रकाशन पर उस समय तक कोई आपत्ति नहीं की जा सकती जब तक यह प्रमाणित न हो जाय कि उसकी प्रवृत्ति ब्रिटिश भारत की क़ानून से स्थापित गवर्नमेण्ट के विरुद्ध असन्तोष फैलाने की थी। 'भारत में अङ्ग्रेज़ी राज्य' में सैकड़ों उद्धरण उद्धृत किए गए हैं ; बहुत सी कहानियों, नाटकों आदि और साधु-सन्यासियों का उल्लेख किया गया है, परन्तु उसका यह अर्थ कदापि नहीं है, कि उस पुस्तक में प्रकाशित सभी बातें ऐसी आपत्तिजनक हैं कि वे पुनः प्रकाशित ही नहीं की जा सकतीं।

यदि आपको केस की कार्यवाही याद हो और यदि आप हाईकोर्ट की स्पेशल बेञ्च के निर्णय का अध्ययन करने का कष्ट उठावें तो आपको शीघ्र ही इस बात का पता लग जायगा कि इस मुक़द्दमे में (जो इस सम्बन्ध में भारत का सब से ताज़ा मुक़द्दमा है) पुस्तक के विशेष अंशों पर एकाएक आक्षेप करना जजों के लिए भी मुश्किल हो गया था और अन्त में कई दिनों की बहस के बाद विद्वान जज इस निर्णय पर पहुँचे थे, कि किसी ऑफ़िसर के अत्याचारों का निदर्शन—चाहे वह व्यक्तिगत हैसियत से हो या 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' की ओर से—धारा १२४-अ के अन्तर्गत नहीं आता, (यह भी सिद्ध किया गया था, कि उन दिनों वर्तमान गवर्नमेण्ट क़ानून द्वारा ब्रिटिश भारत में स्थापित ही नहीं हुई थी) परन्तु उन जजों ने पुस्तक के 'निचोड़' को आपत्तिजनक बतलाया था। बहस में यह भी कहा गया था कि पुस्तक में विषय की एकाङ्गी विवेचना की गई थी और दूसरी ओर की जान-बूझ कर उपेक्षा कर दी गई थी। विद्वान जजों ने पुस्तक के अन्त के उन चार-पाँच पृष्ठों को आपत्तिजनक बतलाया था जिनमें पुस्तक के विद्वान रचयिता ने पाठकों से वर्तमान गवर्नमेण्ट से पूर्ण असहयोग करने की प्रार्थना की थी। जजों ने समय-समय पर यह भी कहा था कि 'डङ्क पूँछ में था।'

ऐसी परिस्थिति में मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आप एक क्षण हृदय पर हाथ रख उपर्युक्त विवेचना के मनन करने का कष्ट उठावेंगे और अपने निर्णय पर फिर से विचार करेंगे। परन्तु यदि आप मेरे प्रमाणों से सन्तुष्ट न हों तो मैं सादर परन्तु दृढ़तापूर्वक अधिकारियों को खुली अदालत में अपने विरुद्ध मुक़द्दमा चलाने का चैलेञ्ज देता हूँ। जिससे मुझे यह प्रमाणित करने का अवसर प्राप्त हो कि इस प्रान्त में प्रेस-ऑर्डिनेन्स की धाराओं का, जिनका मैं सदैव शिकार रहा हूँ, कितनी असावधानी से सञ्चालन किया जाता है।

मैं उत्सुकतापूर्वक इस बात की बाट जोहूँगा कि या तो मेरी ज़मानत वापस कर दी जाय या मुझ पर मुक़द्दमा चलाया जाय।'

भवदीय,

(हस्ताक्षर) आर० सहगल

कीपर

फ़ाइन आर्ट प्रिन्टिङ्ग कॉटेज

* * *

वह दिन

[श्रीयुत त्रिवेणीप्रसाद जी, बी० ए०]

आधी रात का समय था। पूर्णचन्द्र अपनी सुधा-रश्मियों से वसुन्धरा के वक्षस्थल को सींच रहे थे। वासन्ती वायु रह-रह कर कुसुम-कलिकाओं की सुन्दर सुवास चुरा लाती, और निशापति के सामने बिखेर देती थी। चारों ओर नीरवता का साम्राज्य था। हाँ, जब चकवी चन्द्रमा की ओर देख कर, फिर नीचे बिखरी हुई अनन्त शोभा-राशि को देख,विरह-वेदना से विकल होकर, अपने प्रियतम को याद करती, उस समय, सन्त हृदय की एक करुण आह सुनाई पड़ती थी। जब मलय-वायु के कोमल स्पर्श से पीड़ित होकर, दिव्य ज्ञान के समागम से भ्रष्ट पाप-वासना की तरह, वृक्षों की सूखी पत्तियाँ नीचे गिर पड़तीं, उस समय उनके कराहने का शब्द चारों दिशाओं में गूँज उठता था। और कभी-कभी वन्य-पशुओं का भयङ्कर नाद, विरक्त हृदय में काम की तरह, सुप्त संसार की शान्ति को भङ्ग कर देता था। पर भयङ्कर कोलाहल के बाद जो शान्ति छा जाती है, वह पूर्वापेक्षा अधिक गम्भीर प्रतीत होती है। इस समय वसुन्धरा की गोद में, शान्ति इसी प्रकार उसासें लेती हुई निशानाथ की ओर निहार रही थी।

वृक्षों के एक सघन कुञ्ज में, उपगुप्त की पर्णकुटी, उस निर्जन स्थान में सजीवता का सञ्चार कर रही थी। उपगुप्त इस समय सो रहे थे। राजर्षियों के समान तेजस्वी भिक्षु उपगुप्त कुश की चटाई पर निद्रामग्न थे। पास ही एक काठ का कमण्डलु रक्खा हुआ था। सिरहाने की ओर कुछ हस्त-लिखित पुरानी पुस्तकें पड़ी हुई थीं। बस, यही भिक्षु की ऐहिक सम्पत्ति थी।

सहसा प्रशान्त वायु-मण्डल को चीर कर एक मधुर कण्ठ-ध्वनि प्रसारित हो उठी। चन्द्र-किरणों की धवल चादर से परिवेष्टित निशादेवी के हृदय को चलायमान करने वाली, वह विहाग की तान, भिक्षु की पर्णकुटी की मलय-वायु को प्रकम्पित करने लगी। नैश-शान्ति के गम्भीर हृदय में एक बार ही करुणा और उत्सुकता का सञ्चार हो आया।

उपगुप्त उठ बैठे। इतनी रात गए यह कौन गा रहा है? किसी पुरुष का कण्ठ-स्वर तो इतना मधुर नहीं हो सकता! तब क्या कोई स्त्री गा रही है? इस जन-शून्य स्थान में स्त्री!! ज़रा देखना तो चाहिए क्या बात है।

उपगुप्त कुटी के बाहर आए। चन्द्रमा के आलोक में उनका दिव्य शरीर उद्भासित हो उठा। साथ ही सङ्गीत-ध्वनि भी बन्द हो गई। उनके विस्मय का ठिकाना न रहा। नाना प्रकार के तर्क-वितर्क उनके मन में उठने लगे। वे कुटी में लौट आए। किन्तु फिर लौटे। सोचा, ज़रा आगे बढ़ कर देखूँ तो कौन है? ओह! वही मधुर झङ्कार, वही सुरीली तान फिर सुनाई पड़ रही है! ओह! कितना करुण है! हृदय का एक-एक कोना द्रवीभूत हो उठता है! परन्तु मेरे बाहर आते ही वह करुण-ध्वनि बन्द क्यों हो गई? बड़े आश्चर्य की बात है! सङ्गीत-ध्वनि इसी दिशा से तो आ रही थी? ज़रा इस ओर चल कर देखूँ तो क्या माजरा है?

जिस दिशा से सङ्गीत-ध्वनि आ रही थी, उपगुप्त उसी ओर चले। कुछ ही दूर गए होंगे कि सहसा एक चम्पक-वृक्ष के नीचे ठिठक गए। चाँदनी की शुभ्र ज्योति से ओत-प्रोत चम्पक-कलियों को मन्द-मन्द वासन्ती वायु के साथ क्रीड़ा करते देख, उन्हें उतना आश्चर्य नहीं हुआ, जितना कि उन्हीं कलियों के समान एक नव-यौवना रमणी को, विरह-विधुरा चक्रवाकी की तरह, वहाँ अकेली खड़ी देख कर हुआ।

उपगुप्त को देख कर भी वह रमणी निश्चल बनी रही। उन्होंने पूछा—भद्रे! तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है? इतनी रात गए यहाँ क्या करती हो?

वह कुछ न बोली। हरिणी की आँखों के समान उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से आँसुओं की धारा भूमि को भिगोने लगी। कभी वह अपने हाथ में पड़ी चम्पक-कली की ओर देखती और कभी भूमि की ओर। पैर के अँगूठे से मिट्टी खुरचने से, नूपुरों से मन्द किन्तु मनोहर ध्वनि निकल रही थी।

उपगुप्त ज़रा और समीप चले गए। रमणी की निद्रा मानो भङ्ग हो गई। उसने अपना मुख उठा कर उनकी ओर देखा। ओह! उसमें कितनी मादकता थी! कितना सौन्दर्य था! मानो विलासिता और कम-नीयता के सुन्दर सम्मिश्रण से विधाता ने इसका निर्माण किया था!
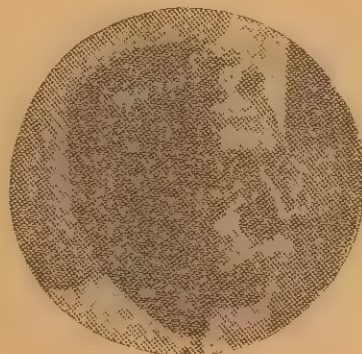
बम्बई के सुप्रसिद्ध चित्रकार—श्री० डी० के० म्हात्रे
जिनका स्वर्गवास विगत २२ वीं दिसम्बर को हो गया!

उपगुप्त विस्मयातिरेक से दो-तीन पग पीछे हट गए। फिर बोल उठे—कौन, वासवदत्ता?

रमणी ने नीचे की ओर देख कर कहा—हाँ, महाराज!

"इतनी रात गए, यहाँ, इस एकान्त स्थान में क्या करने आई हो?"

"आप ही के दर्शनों के लिए तो......।"

"क्यों, मुझसे क्या काम है?"

रमणी ने मस्तक ऊपर उठा कर एक तीव्र दृष्टि से भिक्षु की ओर देखा। जान पड़ता था, मानो वह अधीर हो उठी हो। फिर ज़रा उत्तेजित स्वर से कहने लगी—महाराज, उस दिन की प्रतीक्षा में मैंने एक-एक कर न जाने कितने दिन बिता दिए। जिस दिन से मैंने इन देवोपम पुरुष-श्रेष्ठ को देखा है, उसकी मूर्त्ति ने मेरे हृदय में घर कर लिया है। यह बात आप से छिपी नहीं है। फिर आप ऐसे प्रश्न क्यों करते हैं? मैं अपनी अतुल धन-सम्पत्ति, यह अनुपम रूप-यौवन, आपके चरणों पर निछावर करने के लिए ही आई हूँ। भगवन! क्या आज्ञा होती है?

उपगुप्त ने गम्भीरतापूर्वक कहा—भद्रे! अभी वह समय नहीं आया है।

रमणी का रहा-सहा धीरज भी छूट गया। वह कम्पित स्वर से बोली—यह उत्तर तो मैं न जाने कितनी बार सुन चुकी हूँ! वह समय कब आवेगा?

"अब आना ही चाहता है।"

"सच?"

"उपगुप्त कभी झूठ नहीं बोलता।"

सुन्दरी ने हर्ष के मारे अपनी आँखें मूँद लीं। परन्तु थोड़ी देर के बाद आँखें खोलने पर देखा तो उपगुप्त वहाँ पर नहीं थे।

२

वासवदत्ता नगर की एक धनी वेश्या है। केवल धन ही नहीं, रूप और यौवन में भी वह अद्वितीया है। उसकी ख्याति सुन कर दूर-दूर से, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकार उसके दर्शनों के लिए आते हैं। जिसके साथ वह बातें कर लेती है, जिसकी ओर ज़रा बाँकी चितवन से निहार लेती है, वह अपने को धन्य समझता है। उसकी एक बार की मुस्कराहट पर, बड़े-बड़े राजे-महाराजे, तन, मन और धन निछावर करने के लिए तैयार हो जाते हैं। धन्य है, सौन्दर्य तेरी महिमा!

रात आधी से अधिक बीत चुकी थी। किन्तु वासव-दत्ता की आँखों में नींद का नाम नहीं! वह पलँग पर एक तकिए के सहारे बैठी हुई थी। मुख-मण्डल गम्भीर मुद्रा धारण किए था। टेढ़ी भौंहें चिन्ता की सूचना दे रही थीं।

इसी समय दासी ने आकर सूचना दी—"वैशाली के दुर्गाध्यक्ष आना चाहते हैं।" वासवदत्ता की ध्यान-मुद्रा भङ्ग न हुई। दासी ने फिर उसी बात को दुहराया। वासवदत्ता चौंक कर बोली—"वैशाली के अध्यक्ष?"

"हाँ, श्रीमती जी!"

"जा बुला ला।"

कुछ ही क्षणों के बाद, एक गौरवर्ण, दृढ़काय मनुष्य ने कमरे में प्रवेश किया। वासवदत्ता आगे बढ़ कर, एक मन्द मुस्कान के साथ बोली—वैशाली के अध्यक्ष का अभिवादन करती हूँ।

अध्यक्ष—कहो, अच्छी तो हो?

वासवदत्ता, ज़रा चितवन टेढ़ी कर, लज्जा का नाट्य करती हुई बोली—"श्रीमान के वियोग में भला मैं अच्छी कैसे रह सकती हूँ? आज बहुत दिनों के बाद श्रीमान के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह क्या बात है? ठीक है, अन्तःपुर की रूपसियों के सामने, श्रीमान मुझे क्यों पूछने लगे!" अन्तिम वाक्य वासव-दत्ता ने एक दीर्घ निश्वास लेकर कहा।

अध्यक्ष ने रमणी के कोमल कर-पल्लवों को अपने हाथों में लेकर कहा—नहीं प्रिये, ऐसा मत कहो। अन्तःपुर की एक क्या, सौ रानियाँ भी मुझे तुमसे अलग नहीं कर सकतीं। मेरा तन, मन और धन सभी तुम पर निछावर है। वासवदत्ते! जानती हो, तुम्हारे विरह में संसार मुझे सूना दीखता है। प्रिये, मेरा ऐश्वर्य, मेरी प्रभुता और मेरा जीवन, सभी तुम्हारा है। प्रिये, तुम्हारे एक सङ्केत से ही......।

इसी समय किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी। वासवदत्ता ने चौंक कर देखा, तो एक सुन्दर युवा उसकी ओर क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखता हुआ खड़ा था। वासवदत्ता अध्यक्ष के हाथों से अपना हाथ छुड़ा कर कुछ पीछे हट गई। अध्यक्ष के आने से पहले चिन्ता की जो छाया उसके मुख मण्डल को मलिन किए थी, वह सहसा एक बार फिर दौड़ गई। उसकी प्रफुल्लता क्षण भर में विलीन हो गई। चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। वह गर्ज कर बोली—तुम्हें यहाँ आने के लिए किसने कहा, मूर्ख?

वह पुरुष, जो अभी तक मानो क्रोध-मिश्रित विस्मय की निद्रा में सो रहा था, रमणी का उत्तेजित स्वर सुन कर चौंक उठा। उसे सहसा सूझ नहीं पड़ा कि क्या जवाब दूँ। वासवदत्ता फिर पूर्ववत् गर्ज कर बोली—यदि भला चाहता है तो अभी यहाँ से निकल जा।

आगन्तुक से अब और सहन नहीं हो सका। क्रोध से उसकी भौंहें टेढ़ी हो गईं। चेहरा तमतमा उठा। वह बोला—दुष्टे! आज मैं तुझे पहचान गया। मैं नहीं जानता था कि फूलों की ढेर के नीचे भयङ्कर विषधर छिपा हुआ है। तुझे याद नहीं, कि तूने उस दिन मेरे साथ क्या प्रतिज्ञा की थी? और आज तेरा यह आचरण!! धिक्कार है तेरे प्रेम को! पापिष्टे! दुष्टे! यदि तुझे यही करना था, तो मुझे लोभ देकर नरक के द्वार तक क्यों घसीट लाई?

वासवदत्ता लड़खड़ाती ज़बान से बोली—झूठ! सब झूठ!! नरक के कुत्ते! बस, अभी यहाँ से चला जा!!

"अच्छा जाता हूँ, किन्तु इसका फल तुझे शीघ्र भोगना पड़ेगा।"—यह कह कर वह युवक तेज़ी से बाहर चला गया।

बम्बई इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट के नए चेयरमैन—श्री० जाफ़र भाई ए० लाल जी

वासवदत्ता अपनी घबराहट छिपाती हुई अध्यक्ष से बोली—"श्रीमन्, रात अधिक हो गई है। मेरी तबियत भी आज कुछ ठीक नहीं है। यदि आज्ञा हो तो मैं विश्राम करने जाऊँ।" इतना कह, बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए, अभिवादन कर वह चली गई। अध्यक्ष अवाक् थे।

वासवदत्ता सीधे एक कमरे में चली गई। वहाँ जाकर उसने उत्तेजित कण्ठ से पुकारा—"रेवती!!" कुछ ही क्षणों के बाद एक दासी आ पहुँची। वासवदत्ता ने उसे समीप खींच कर उसके कानों में कुछ कहा। दासी तुरत चली गई और थोड़ी देर बाद फिर लौट कर बोली—"वह आया है, बुला लाऊँ?" वासवदत्ता ने केवल सिर हिला दिया।

एक भयानक डील-डौल वाला मनुष्य तुरत आ पहुँचा। वासवदत्ता कुछ देर तक उससे धीमे स्वर में बातें करती रही। फिर कुछ मुहरें उसके सामने निकाल कर उसने रख दिया। वह मनुष्य मुहरें लेकर, हँसता हुआ चला गया। वासवदत्ता ने एक दीर्घ-निश्वास छोड़ कर कहा—वीरभद्र, कल का संसार तुम्हारे लिए सूना है।

३

वासवदत्ता विचारपति के सामने खड़ी है। जो सुन्दरी कभी राजे-महाराजों को उँगलियों पर नचाया करती थी, आज एक सामान्य मनुष्य के आगे भी काँप रही है! उसका वह अतुल रूप-यौवन, वह भ्रू-सञ्चालन, वह हाव-भाव, और उसकी वह कमनीयता, जो कभी एक सम्राट को भी सिंहासन से खींच कर, माया-विवश मानव की तरह नाच नचा सकती थी, आज व्यर्थ है!

विचारपति ने कहा—वासवदत्ते, तुम्हारे ऊपर हत्या का अभियोग लगाया गया है।

वासवदत्ता ने, मानो कुछ चकित होकर कहा—हत्या? कैसी हत्या? किसकी हत्या? किसने अभियोग लगाया है धर्मावतार?

विचारपति—वीरभद्र की हत्या तुमने की है?

वासवदत्ता काँप उठी। अपने को सँभाल कर बोली—नहीं तो।

विचारपति—किसी के द्वारा उसकी हत्या कराई है?

वासवदत्ता के कम्पित कण्ठ से निकल पड़ा—हाँ... उहूँ .....नहीं, नहीं मैं तो......।

विचारपति ने कहा—बस अब आगे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

४

आधी रात का समय है। पूर्णिमा की चाँदनी छिटकी हुई है। वसन्त का सौरभ चारों ओर छा रहा है। और वासवदत्ता—हाँ वासवदत्ता!!—श्मशान में बालू पर पड़ी तड़प रही है।

जिन कोमल हाथों से न जाने उसने कितनी बार विलास-क्रीड़ाएँ की होंगी, न जाने कितनों का घर नाश किया होगा, वे जल्लाद के भयङ्कर कुल्हाड़े का शिकार बन चुके हैं। जिन पैरों पर कभी राजे-महाराजों का मस्तक नत होता था, धन-कुबेर जिनकी सेवा किया करते थे, वे निर्दयतापूर्वक काट डाले गए हैं। जो वासवदत्ता कभी संसार के लिए एक अनुपम वस्तु थी, वह आज श्मशान में इस प्रकार विकृतावस्था में, मृत्यु की घड़ियाँ गिन रही है!! इस निर्जन स्थान में कोई उसका साथी नहीं, कोई उससे सहानुभूति दिखाने वाला नहीं! अपने पापों का फल उसे इस तरह भोगना पड़ा!!

पीड़ा के कारण वह अर्द्ध-मूर्च्छितावस्था में पड़ी हुई है। कोई पानी देने वाला तक नहीं है। सामने गङ्गा बह रही है। पतित-पावनी गङ्गा के किनारे न जाने कितनों को शान्ति मिल चुकी है, किन्तु वासवदत्ता—"प्यास-प्यास—पानी-पानी!!!" चिल्ला रही है, परन्तु कोई सुनने वाला नहीं।

प्यास से व्याकुल अभागिनी, गङ्गा की धारा की ओर बढ़ने का प्रयत्न करने लगी। किन्तु कुछ ही दूर तक लुढ़कने के बाद वह बेहोश हो गई। हा दैव! जिसे कभी दास-दासियाँ, नहीं-नहीं, बड़े-बड़े देश-शासक अपने हाथों से, सुवासित मदिरा की घूँट पिलाया करते थे, उसे आज एक चुल्लू पानी भी नसीब नहीं हो रहा है!

वासवदत्ता को मूर्च्छितावस्था में ऐसा जान पड़ा, मानो कोई महात्मा उसके मुख में अपने कमण्डलु से गङ्गा-जल डाल रहे हैं। उसे ऐसा मालूम पड़ा, मानो किसी महापुरुष के कर-स्पर्श से उसकी सारी व्यथा दूर हो गई हो। उसने आँखें खोलीं, देखा कि एक दिव्य कान्ति महात्मा सामने खड़े हैं। उस निर्मल चाँदनी में उन्हें देख कर वासवदत्ता को एक साल पहले की बात याद हो आई। उसे वह रात्रि याद हो आई, जब उसने ऐसी ही निर्मल चाँदनी में, चम्पक वृक्ष के नीचे उपगुप्त से बातें की थीं। फिर अपने पश्चात जीवन की एक-एक बात चित्र के समान उसकी नज़रों के सामने दौड़ गई। वह चौंक कर बोल उठी—"कौन, महाराज उपगुप्त?" महात्मा ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया—"हाँ वासवदत्ते, मैं ही हूँ!" वासवदत्ता के आश्चर्य की सीमा न रही। कुछ क्षणों के लिए वह अपनी व्यथा भूल गई। फिर बोली—"महाराज!" इससे आगे वह कुछ न बोल सकी। लज्जा और ग्लानि, भय और पश्चात्ताप, इस समय शारीरिक पीड़ा से कहीं अधिक ताप उसे पहुँचा रहे थे। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली! फिर, चित्त कुछ शान्त होने पर वह बोली—"महाराज! अब वह दिन......।" बस कुछ अधिक न कह सकी।

उपगुप्त ने मुस्करा कर कहा—बहिन! वह दिन आज आया है। आज मेरी प्रतिज्ञा पूरी होने का समय आया है। बहिन! यही वह समय है, जिसके लिए तू इतनी उत्कण्ठित थी। उस समय तेरे हृदय में वासना थी। तेरा हृदय भीषण श्मशान बना था। उस समय तू दानवी थी। किन्तु आज पाश्चात्ताप की अग्नि से तेरा

इलाहाबाद में होने वाली अखिल भारतवर्षीय अछूतोद्धार कॉन्फ्रेन्स की स्वागतकारिणी समिति के प्रधान—श्री० मानकचन्द दास्य

हृदय विशुद्ध हो रहा है। आज तू देवी है। अब मेरी बहिन होने के योग्य है। बहिन, बुद्ध की शरण जा, वह तुझे क्षमा करेंगे।

वासवदत्ता बोली—भगवन्, सचमुच मैं बड़ी पापिनी हूँ। पाप-मार्ग में ही चल कर यहाँ तक पहुँची हूँ। दयामय, मेरा उद्धार कीजिए!

उपगुप्त ने वासवदत्ता के क्षत-शरीर पर हाथ फेरते हुए कहा—"बहिन, बुद्ध की शरण जाओ, वही तुम्हें शान्ति प्रदान करेंगे। एक बार कह तो दो—'बुद्धं शरणं गच्छामि!'"

वासवदत्ता की आँखों से आँसू की अविरल धारा बह चली। जान पड़ता था, मानो आँसुओं के साथ उसके हृदय की मैल भी बह गई। उसका मुख-मण्डल एक अपूर्व तेज से देदीप्यमान हो उठा। उसका सारा शरीर रोमाञ्चित हो आया। काँपते हुए स्वर में उसके मुख से निकल पड़ा—'बुद्धं......शरणं......गच्छा......मि!

* * *

कनाडा ब्रिटिश-साम्राज्यवाद के जाल में

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्या", एम० ए०, पी० एच-डी०]

लगभग तीन वर्ष पहले स्विट्ज़रलैण्ड के स्वतन्त्रता-सङ्घ (Leauge of Independence) ने एक चित्र प्रकाशित किया था। उसके चित्रकार ने उसमें यह दिखलाने का प्रयत्न किया था कि ब्रिटिश साम्राज्य एशिया के निर्बल देशों को किस तरह पराधीनता के बन्धन में जकड़े हुए है। उस चित्र में एशिया का एक नक़्शा बना हुआ था, जिसमें भारत में एक सूर्य चमक रहा था और उसकी किरणें समस्त एशिया पर पड़ रही थीं। यह सूर्य भारत में स्थापित किए हुए विशाल तथा बलिष्ठ ब्रिटिश सेना का सूर्य है, जो भारत के पैसे से पल रहा है। यह देदीप्यमान सूर्य अपनी किरणों द्वारा एशिया के अन्य देशों में ब्रिटिश साम्राज्य की सत्ता फैला रहा है। इस चित्र में प्रदर्शित भाव सर्वथा सत्य है।

एशिया के देश आज यह अनुभव कर रहे हैं कि भारत की पराधीनता ही एक तरह से हमारी पराधीनता का कारण है। बहुत से भारतवासियों को याद होगा कि जब मौलाना मुहम्मदअली ने अरब में जाकर वहाँ के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने की इच्छा प्रकट की थी, तब वहाँ के मुसलमानों ने उन्हें लिख भेजा था कि आप भारत के आन्दोलन में भाग लीजिए। यदि भारत स्वतन्त्र हो गया तो फिर हम लोगों को भी शीघ्र ही स्वतन्त्रता प्राप्त हो जावेगी। भारत में आज एक लाख हिन्दुस्तानी तथा ५६,००० ब्रिटिश सैनिक मौजूद हैं, जो कि हर वक़्त काम में लाए जा सकते हैं। आज यदि एशिया का कोई भी देश ब्रिटिशों की सत्ता को हटाने का प्रयत्न करे, तो भारत की बलिष्ठ सेना फ़ौरन उस पर जा धमकेगी। प्रयाग-निवासियों को अभी भी वह घटना याद होगी कि जब सन् १९२६ में, ब्रिटिश सरकार तथा चीन में कुछ झपट हो गई थी और प्रयाग-स्थित सेना ब्रिटिश सत्ता की रक्षा करने के लिए चीन भेजी गई थी। गत महायुद्ध में भारत की सेना ने जो कार्य किया है, वह संसार के इतिहास में रक्ताक्षरों में लिखा हुआ है। भारत और जर्मनी के बीच कोई भी झगड़ा न था, पर उसे जर्मनी के विरुद्ध लड़ना पड़ा। इस युद्ध में भारत के करोड़ों रुपए स्वाहा हुए और लाखों युवकों की जानें गईं। जब तक भारतवर्ष ब्रिटिशों के क़ब्ज़े में है, तब तक इङ्गलैण्ड के हाथ में एक अत्यन्त मज़बूत हथियार मौजूद है, जिसे वह अपने साम्राज्य को वश में रखने के तथा अन्य देशों को अपने क़ब्ज़े में करने के काम में ला सकता है। भारत के राष्ट्रीय नेता कहते हैं कि भारत की रक्षा के लिए हमें इतनी बड़ी सेना की आवश्यकता नहीं है। हम न तो किसी देश से युद्ध छेड़ना चाहते हैं और न अन्य देशों को क़ाबू में लाना चाहते हैं। फिर भारत ऐसा ग़रीब देश अपनी सेना पर प्रति वर्ष ५७ करोड़ रुपए क्यों ख़र्च करे? परन्तु इसका कोई ठीक-ठीक उत्तर नहीं दिया जाता। उत्तर दिया भी नहीं जा सकता। भला ब्रिटिश सरकार अपनी कूटनीति क्यों प्रकट करने लगी। भला वह यह क्यों कहे कि यह सेना केवल भारत की रक्षा करने के लिए नहीं, वरन् अन्यान्य देशों पर इङ्गलैण्ड की सत्ता क़ायम रखने के लिए रक्खी गई है।

इसी नीति का अनुसरण करते हुए साम्राज्यवादी आज कनाडा को भी अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे कहते हैं कि कनाडा साम्राज्य की रक्षा में ज़रा भी हाथ नहीं बटा रहा है। वह साम्राज्य की सारी सुविधाओं से फ़ायदा उठा रहा है, परन्तु उसकी रक्षा के ख़र्च में एक पाई भी नहीं देता। इसलिए उसे चाहिए कि या तो अपनी सेना और जङ्गी जहाज़ों की संख्या बढ़ावे या इङ्गलैण्ड को प्रति वर्ष एक निश्चित रक़म दिया करे, जिससे वह साम्राज्य की रक्षा का भार वहन कर सके।

कनाडा के अधिकतर निवासी इन दोनों शर्तों में से किसी को भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। कनाडा के कुल सेना की संख्या ३,७०० है। वह अपनी सारी सेना पर और इस सेना के ऑफ़िसरों की शिक्षा पर प्रतिवर्ष क़रीब एक करोड़ डॉलर ख़र्च करता है। उसके कुल चार जङ्गी जहाज़ हैं। हवाई जहाज़ों के विभाग में भी कुल ८७ अधिकारी तथा ५८१ नौकर हैं। इसके अतिरिक्त कनाडा ब्रिटिश सेना के ख़र्च में एक पाई की भी सहायता नहीं देता। कनाडा की इस अवस्था को देख कर यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह संसार की शान्ति-रक्षा का पूर्णतया समर्थन करता है। उसने निःशस्त्रीकरण के सिद्धान्तों को पहिले ही से कार्यरूप दे दिया है। आज संसार में इतना बड़ा और कोई देश नहीं है, जो अपने सैनिक बल पर इतना कम ख़र्च करता हो, या जिसके सैनिकों की संख्या इतनी कम हो। डेनमार्क, जो कि अपनी शान्ति-प्रिय नीति के लिए प्रसिद्ध है, वह भी सेना-विभाग पर कनाडा से कहीं ज़्यादा ख़र्च करता है। डेनमार्क की मनुष्य-संख्या कनाडा की मनुष्य-संख्या की केवल एक तिहाई मात्र है, परन्तु वहाँ की सेना की संख्या १२,००० है।

भला साम्राज्यवादी इस अवस्था से कैसे सन्तुष्ट रह सकते हैं। सैनिक बल को बढ़ाना, युद्धास्त्रों की उन्नति करना और उनके द्वारा अन्य देशों को अपने वश में करना, यही तो उनकी कूटनीति का मुख्योद्देश्य है। इसीलिए वे कहते हैं कि कनाडा आज साम्राज्य के सैनिक बल से फ़ायदा उठा रहा है, परन्तु इसके ख़र्च में ज़रा भी भाग नहीं लेता। इसके उत्तर में कनाडा के राष्ट्रीय नेता कहते हैं कि जो अङ्गरेज़ यह ख़याल करते हैं कि कनाडा अपनी रक्षा नहीं कर सकता या इङ्गलैण्ड उसकी रक्षा कर रहा है, वे कनाडा की वास्तविक परिस्थिति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कनाडा को अपनी रक्षा के लिए इङ्गलैण्ड से सहायता लेने की आवश्यकता नहीं है। और यदि सहायता लेने का अवसर भी आए तो ब्रिटिश सैनिक-बल उसके किसी काम का नहीं है। क्योंकि वह किसी भी तरह से कनाडा की रक्षा नहीं कर सकता। इस युक्ति के समर्थन में वे कई प्रमाण उपस्थित करते हैं। उनमें से पहला यह है कि कनाडा ने आज तक अपनी इच्छा से किसी भी देश से युद्ध नहीं छेड़ा है। उसकी नीति सर्वथा शान्ति-प्रिय रही है, इसलिए भविष्य में भी सम्भावना नहीं है कि वह किसी देश से युद्ध छेड़ेगा। अभी तक कनाडा को अगर युद्धों में भाग लेना पड़ा है, तो केवल इसलिए कि वह इङ्गलैण्ड का उपनिवेश है। इसलिए उसे अधिक सैनिक-बल की आवश्यकता नहीं है। फिर यदि दूसरा देश उस पर आक्रमण करे भी तो ब्रिटिश सेना उसे कोई सहायता नहीं दे सकती। संसार में आज केवल एक ही ऐसा देश है, जो कभी कनाडा पर आक्रमण करने का विचार कर सकता है। वह है, अमेरिका। परन्तु कनाडा और अमेरिका के संयुक्त राज्य के बीच में सदा से मित्रता का व्यवहार रहा है। ऐसी दशा में इस बात की सम्भावना कम है कि वह कनाडा पर आक्रमण करेगा। और अगर करे भी तो ब्रिटिश सैनिक-बल उससे उसकी रक्षा नहीं कर सकता। क्योंकि ब्रिटिश सेना की वास्तविक शक्ति उसके जङ्गी जहाज़ों में है, जिसकी कनाडा और अमेरिका के भावी संग्राम में कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ सकती। संयुक्त राज्य का आक्रमण दक्षिण की ओर से हो सकता है; जहाँ समुद्र है ही नहीं। रही स्थल-सेना की बात, सो इङ्गलैण्ड के पास तो उसकी इतनी संख्या ही नहीं कि वह उसके द्वारा कनाडा की सारी दक्षिणी सीमा की रक्षा कर सके। एक और सम्भावना है, यदि गत महायुद्ध की तरह कोई युद्ध छिड़ जाय और संसार के सारे देश उसमें भाग लें, तो उस समय ब्रिटिश सेना अपनी रक्षा करेगी या कनाडा की? इसलिए इङ्गलैण्ड चाहे अपने युद्ध-बल को कितना ही बढ़ावे, कनाडा को उससे कोई भी लाभ नहीं पहुँच सकता। ऐसी दशा में कनाडा इस सेना के ख़र्च का भार क्यों बटावे?

ब्रिटिश साम्राज्यवादी जब यह देखते हैं कि इन युक्तियों से काम न चलेगा, तो वे एक और जाल फेंक कर कनाडा को फँसाना चाहते हैं। वे कहते हैं कि कनाडा को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि इङ्गलैण्ड उनकी मातृ-भूमि (Mother Country) है। जब कनाडा के व्यापार तथा औद्योगिक शक्ति की पूर्ण उन्नति नहीं हुई थी, तब इङ्गलैण्ड ने उसकी रक्षा की थी; उसे विदेशी आक्रमणकारियों से बचाया था। आज कनाडा धनी, शक्तिमान और समृद्धिशाली है। उसे चाहिए कि वह अपनी मातृ-भूमि के उस ऋण को चुकाने का प्रयत्न करे। यह काम ब्रिटिश सरकार की सेना के भार को बटाने से बड़ी सरलता से हो सकता है। परन्तु कनाडा के सच्चे राष्ट्र-प्रेमी कहते हैं कि इङ्गलैण्ड ने हमें और देशों के युद्धों से बचाने के बजाय हरदम हमें अपने युद्धों में फँसाया है। इङ्गलैण्ड ने जितने युद्ध छेड़े हैं, उन सब में कनाडा को भाग लेना पड़ा है। इङ्गलैण्ड के कारण कनाडा को बहुत बड़ी क्षति उठानी पड़ी है। सन् १७७६-७८ में, जब संयुक्त राज्य ने हम पर आक्रमण किया था, तो उसका कारण संयुक्त राज्य तथा इङ्गलैण्ड का युद्ध था। इसके बाद भी कनाडा पर कई बार आक्रमण हुए और उसे युद्ध में भाग लेना पड़ा। उन सबका कारण यही था कि कनाडा इङ्गलैण्ड के सार्वभौमत्व को स्वीकार करता है। गत महायुद्ध में भी कनाडा को इसीलिए भाग लेना पड़ा। कनाडा को इङ्गलैण्ड की विदेशी नीति के नियन्त्रण का अधिकार नहीं है। वह उसके विदेशी सम्बन्धों में किसी तरह भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता। इस विषय में इङ्गलैण्ड उसकी सलाह भी मानने को तैयार न होगा, तब फिर कनाडा हर वक़्त क्यों उसकी विदेशी नीति का समर्थन करे? यदि ब्रिटिश सरकार अपनी मूर्खता से युद्ध मोल ले, तो कनाडा उस युद्ध में भाग लेने के लिए क्यों बाध्य हो? साम्राज्य के सैनिक-बल का भार सहन करना तो दूर रहा, अब कनाडा कहता है कि हम इङ्गलैण्ड की मूर्खता से आरम्भ हुए युद्धों में कदापि भाग न लेंगे। हम साम्राज्यवाद के जाल में न फँसेंगे।

परन्तु भारत की दशा दूसरी ही है। साम्राज्यवाद आज उसे जकड़े हुए है। उसे इन सब बातों की चर्चा करने का भी अधिकार नहीं है। उसका भाग्य तो इङ्गलैण्ड के भाग्य के साथ बँधा हुआ है। वह इङ्गलैण्ड का दास है। दास को बोलने का अधिकार नहीं। उसका तो काम है केवल अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना। भारत आज एक लाख हिन्दुस्तानी तथा ५६,००० अङ्गरेज़ी सैनिक पाल रहा है। भारत-सरकार की कुल वार्षिक आय क़रीब १२७ करोड़ है। इसमें से क़रीब ५७ करोड़ रुपया सेना पर ख़र्च किया जाता है। भारत के निन्नानबे फ़ीसदी मनुष्य निरक्षर

(शेष मैटर १८वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

१९१७ और १९३० !

[प्रोफ़ेसर अवनीन्द्रकुमार जी विद्यालङ्कार

सन् १९२९ के नवम्बर मास से ही भारत में गोलमेज़ परिषद् की चर्चा हो रही है; और अब तक तो विशेष रूप से शिक्षित भारतवासियों का ध्यान सेण्ट जेम्स पैलेस की ओर ही खिंचा हुआ था। लाठियों की बौछार, गोलियों का धुँआ और एक लाख बन्दियों की तपस्या की ओर हम जिस उत्सुकता और आशा से नहीं देखते, उससे ज़्यादा सेण्ट जेम्स पैलेस से निकलने वाले शब्दों को सुनने के लिए हमारे कान लगे रहते थे। परन्तु वहाँ की आशा की घटा को बिना बरसे ही तितर-बितर होते देख कर, हमारे मानसिक आकाश की भी वही दशा हो रही है, जोकि सायङ्कालीन आकाश की होती है। इसका कारण यह है कि इस गोलमेज़ परिषद् की तुलना १० अक्टूबर १९२१ को १०, डाउनिङ्ग स्ट्रीट में लन्दन में बैठी गोलमेज़ परिषद से की गई थी और अब भी कहीं-कहीं की जा रही है। जिसमें विजयी आयरिश सिनफ़िन नेताओं ने मनचाही सन्धि की शर्तें उस समय के ब्रिटिश लङ्गा-जमुनी मन्त्रि-मण्डल से मञ्ज़ूर करवाई थीं। इसी तुलना के कारण इस गोलमेज़ परिषद से सम्पर्क न रखने वाले और इसका खुले-आम बहिष्कार करने वाले कुछ भारतीयों के दिलों में भी एक छिपी आशा मौजूद थी, जो अख़बारों के आशाजनक शीर्षक देख कर जाग उठती थी। परन्तु इन दोनों परिषदों में महीने की समता को छोड़ कर और कोई समता नहीं है। १९२१ की गोलमेज़ परिषद से पहिले ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री मि० लॉयड जॉर्ज ने, आयरिश रिपब्लिक के प्रथम राष्ट्रपति मि० डि वेलरा को २० जून को सन्धि के लिए बातचीत करने के लिए निमन्त्रित किया और क्षणिक सन्धि की दोनों ओर से घोषणा की गई। इसके साथ किन शर्तों पर ब्रिटेन समझौता करने के लिए तैयार है, वे शर्तें भी साथ भेज दी गई थीं, जिसमें औपनिवेशिक स्वराज्य, पूर्ण-आर्थिक स्वतन्त्रता, आयरिश अदालतों की स्वतन्त्रता और परिपूर्णता, तथा आयलैंण्ड की रक्षा के लिए सेना रखने का अधिकार स्वीकार कर लिया गया था। पर आयरिश रिपब्लिक के प्रेज़िडेण्ट डि वेलरा इसे आयरिश राष्ट्र के लिए अपमानजनक समझते थे। वे सम्राट के प्रति राजनिष्ठा रखने की बात स्वप्न में भी नहीं सोच सके थे। अन्ततोगत्वा आयरिश प्रतिनिधि इस शर्त पर गए थे कि—

How the association at Ireland with the community of nations known as the British Empire can best be reconciled with Irish national aspirations.

१९२१ की गोलमेज़ परिषद आयरिश राष्ट्र की आकांक्षाओं की पूर्ति करते हुए, ब्रिटिश साम्राज्य और आयलैंण्ड का सम्बन्ध किस तरह स्थिर रह सकता है, इसका रास्ता ढूँढने के लिए हुई थी। दूसरे शब्दों में ब्रिटिश साम्राज्य से सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा करने वाले आयलैंण्ड को, ब्रिटिश साम्राज्य में रहने के लिए मनाने के लिए हुई थी। यह मि० लॉयड जॉर्ज के २६ अगस्त के पत्र से, जो कि उन्होंने मन्त्रि-मण्डल की ओर से मि० डि वेलरा को लिखा था, जिसमें अपना अभिप्राय प्रेज़िडेण्ट लिङ्कन के इन शब्दों को उद्धृत किया था :—

Physically speaking we can not separate. We cannot remove our respective sections from each other, nor build an impossible wall between them.... It is impossible, then, to make that intercourse more advantageous and more satisfactory after separation than before... Suppose you go to war, you cannot fight always and when, after much loss on both sides and no gain on either, you cease fighting, the identical old questions as to terms of intercourse are again upon you.

मि० लॉयड जॉर्ज द्वारा उद्धृत प्रेज़िडेण्ट लिङ्कन के शब्दों में ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल की व्याकुलता और चिन्ता साफ़ झलक रही है, और जिस प्रेरणा से गोलमेज़ परिषद् बुलाई गई थी—यद्यपि वह नाम नहीं था—स्पष्ट है। वहाँ १९३० की बुलाई गई गोलमेज़ परिषद अधिकाधिक सम्मत मार्ग को सुझाने के लिए बैठी थी, इसी लिए इसमें १५० से ऊपर प्रतिनिधि बुलाए गए थे। पर १९२१ में १० प्रतिनिधियों की ही कॉन्फ़्रेन्स बैठी थी, जिसमें ६ लङ्गा-जमुनी मन्त्रि-मण्डल के और बाक़ी चार आयरिश रिपब्लिक के प्रतिनिधि थे। आयरिश रिपब्लिक के चार प्रतिनिधियों में से एक मि० माइकेल कॉलिन्स थे, जिनके सिर के लिए ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने १०,००० पौण्ड इनाम देने की घोषणा की थी। इसके अलावा मि० ग्रिफ़िथ और डमन ३० जून १९२१ को जेलख़ाने से छूट कर आए थे। इस कॉन्फ़्रेन्स द्वारा तय की गई सन्धि पर दोनों देश के पार्लामेण्टों की मुहर की आवश्यकता थी। वहाँ भारतीय गोलमेज़ परिषद के सर्व-सम्मत निर्णयों पर यदि ब्रिटिश पार्लामेण्ट अपनी मुहर लगाएगी, तो वे कार्य में परिणत हो सकेंगे। भारत की इच्छा और अनिच्छा का उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। इतना विस्पष्ट अन्तर होते हुए दोनों की तुलना कर आयलैंण्ड के विजय-गौरव को धूल में मिलाना है। मि० लॉयड जॉर्ज के २०जून के पत्र को 'आयरिश क्रान्ति' (The Revolution in Ireland) के लेखक मि० एलिसन फ़िलिप ने केवल ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल के आत्म-समर्पण (Surrender) के नाम से ही नहीं स्मरण किया है, वरन् पार्लामेण्ट द्वारा सन्धि की स्वीकृति को भी ब्रिटिश पार्लामेण्ट के लिए अपमानजनक बताया है। वह लिखता है :—

"It was a humiliation for the Imperial Parliament, there can be no question."

सन्धि को स्वीकृत करने के लिए होने वाली पार्लामेण्ट के उद्घाटन पर टिप्पणी करता हुआ लेखक लिखता है :—

"On the 14th December, 1921 the K ng proceded in full state to open the special session of Parliament whose sole business was to register the terms of surrender."

मि० फ़िलिप ही इस कार्य को आत्म-समर्पण की शर्तों को निगलना बताते हैं, पर पार्लामेण्ट में बोलते हुए लॉर्ड कार्सन ने कहा था :—

"They were passed with a revolver pointed at your head, you know it, and you know you passed it because you were beaten, because you had failed that the Sinn Fein army in Ireland had beaten you. Why don't you say so? Your Press says so?"

लॉर्ड बकमास्टर ने चकित होकर गवर्नमेण्ट से पूछा था :—

"If the change in view is really an act of wisdom, an act of union, an act of healing differences between the nations, why was it not ntroduced in 1918 after the Armistice?"

इसका उत्तर ब्रिटिश सरकार के माथे पर तनी आयरिश रिपब्लिक की पिस्तौल दे रही थी। इससे साफ़ है कि १९३० की कॉन्फ़्रेन्स की तुलना १९२१ की कॉन्फ़्रेन्स से किसी तरह नहीं की जा सकती।

२

इतिहास की घटनाएँ कुछ हेर-फेर से, समय-समय पर अपने आपको दोहराती हुई प्रतीत होती हैं, इसलिए १९३० की गोलमेज़ परिषद् के समकक्ष घटना के लिए कोई दूसरी घटना खोजने का यत्न करना अस्वाभाविक न होगा। यदि किसी प्रकार से १९३० की गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स की तुलना ११ अक्टूबर, १९१७ के आयरिश कन्वेन्शन से की जा सकती है, जिसमें १०१ प्रतिनिधि भिन्न-भिन्न संस्थाओं के बुलाए गए थे, जिनमें १५ ब्रिटिश सरकार द्वारा चुने गए थे। २१ मई को इस कन्वेन्शन की घोषणा करते हुए मि० लॉयड जॉर्ज ने पार्लामेण्ट में कहा था कि—"If the convention reached substantial agreement, the Government would give legislative effect to its decisions.

इसमें Substan ia agreement शब्द नोट करने लायक़ है। यह Largest amount of argeement के बदले में है। यह कन्वेन्शन ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के सिर पर रिवॉल्वर तान कर नहीं हो रही थी। इसका फल भी वही हुआ, जो स्वाभाविक था। ५ अप्रैल १९१८ को कन्वेन्शन ने बहुमत से पास किया, कि सारे आयलैंण्ड के लिए एक पार्लामेण्ट और कार्यकारिणी समिति बना जाय, जो पार्लामेण्ट के समक्ष उत्तरदायी हो। पर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की सर्वोच्च शक्ति और अधिकार को अक्षुण्ण रक्खा गया था। सेना, नव-सेना, विदेशी शक्तियों से सम्बन्ध, तथा सन्धि और युद्ध की घोषणा का अधिकार, साम्राज्य के रक्षित विषय रक्खे गए थे। पर यह 'फ़ेल' हो गई। इस कन्वेन्शन का सिनफ़िन पार्टी ने बहिष्कार किया था, जिस प्रकार कॉङ्ग्रेस ने गोलमेज़ परिषद् का बहिष्कार कर दिया है।

जिस प्रकार से भारत का नरम दल वैध आन्दोलन में विश्वास करता है, उसी तरह आयलैंण्ड की नेशनलिस्ट पार्टी भी वैध आन्दोलन में विश्वास रखती थी। देखना चाहिए, कि एक ही तरीक़े में विश्वास करने वाले दो देशों के नरम दल के व्यक्तियों ने अपने-अपने देशों की स्वाधीनता के लिए क्या कार्य किया है और उनकी उस समय अपने दूसरे साथियों के प्रति क्या मनोवृत्ति थी। १४ जनवरी से भारतीय व्यवस्थापिका सभा तथा अन्य प्रान्तीय धारा-सभाओं के अधिवेशन भी इसी मास में आरम्भ हुए हैं। इसलिए और भी आवश्यक है, कि हम अपने देश के नरम दल के नेताओं के कार्य की समीक्षा दूसरे देशों के इन्हीं के विचार वाले नेताओं के कार्य से करें।

३

'कन्वेन्शन' की उत्पत्ति जानने के लिए आयलैंण्ड के इतिहास के कुछ पीछे के पन्ने पलटने की ज़रूरत है। प्रधान-मन्त्री मि० एसक्विथ द्वारा प्रस्तुत आयलैंण्ड विषयक होमरूल-बिल संसार-व्यापी यूरोपियन महायुद्ध

के छिड़ जाने से, स्वीकृत हो जाने पर भी, अलस्टर के विरोध करने के कारण महायुद्ध की समाप्ति तक के लिए स्थगित कर दिया गया था। पर आयर्लैंण्ड का सिनफ़िन दल इससे सन्तुष्ट न था। जहाँ अलस्टर ने अपने हथियार साम्राज्य की रक्षा के लिए उठा लिए थे, और नेशनलिस्ट लोग युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की सहायता देने का प्रण कर चुके थे और आयरिश नवयुवकों को सेना में भरती होने की प्रेरणा कर रहे थे, सिनफ़िन-दल जर्मनी की सहायता से अपनी दासता की बेड़ियों के काटने में संलग्न था। वे खुल्लमखुल्ला सेना में भरती होने से आयरिश लोगों को रोकते थे। चोरी-चोरी जर्मनी और अमेरिका द्वारा शस्त्र मँगा कर लड़ाई की तैयारी कर रहे थे। २७ अप्रैल को उन्होंने 'सामयिक रिपब्लिक' की घोषणा की और इसी दिन आयलैंण्ड में विद्रोह का दावानल धधक उठा। यह विद्रोह इस्टर के विद्रोह के नाम से मशहूर है। इसको शान्त करने में ब्रिटिश सरकार के ४५० आदमी मारे गए और २,६१४ आदमी घायल हुए। आयर्लैण्ड के ३,४३० पुरुष और ७१ स्त्रियाँ पकड़ी गईं। जिनमें जाँच के बाद १,४२४ आदमी और ७३ स्त्रियाँ छोड़ दी गईं। १६६ आदमियों का मुक़दमा कोर्ट-मार्शल (फ़ौजी अदालत) द्वारा हुआ। शेष १,८३६ आदमियों और ५ स्त्रियों को इङ्गलैण्ड में ले जाकर नज़रबन्द कर दिया गया। फ़ौजी अदालत ने १५ को फाँसी का दण्ड दिया, जिनमें से सात आयरिश रिपब्लिक की घोषणा करने वाले थे।

४

इस विद्रोह की योजना यदि सफल हो जाती तो १९१६ में ही 'आयरिश रिपब्लिक' का उदय हो गया होता, और उस समय ब्रिटेन को युद्ध में किस विकट कठिनाई का सामना करना पड़ता, यह इसी से जाना जा सकता है, कि इस विद्रोह को शान्त करने ही के लिए युद्ध की नाज़ुक और विकट घड़ी में पश्चिमीय युद्ध-क्षेत्र से ब्रिटिश सेना को बुला लेना पड़ा था। जर्मनी उस समय यही चाहता था और उसकी इच्छा कई अंशों में पूरी हुई। आयरिश नेशनलिस्ट लीडर जॉन रेडमॉण्ड के कहने से अधिकांश ब्रिटिश फ़ौज आयर्लैंण्ड से हटा ली गई। फ़ौजी अदालत द्वारा फाँसी की सज़ा का लिबरल दल के विशप डॉ० ओड्वायर ने खुले-आम विरोध किया। इनकी फाँसी के विरोध में हाउस ऑफ़ कॉमन्स को स्थगित करने के लिए मि० जॉन रेडमॉण्ड के साथी मि० जॉन डिलन ने ११ मई को प्रस्ताव पेश किया। उस पर बोलते हुए मि० डिलन ने कहा कि ब्रिटिश सरकार और और ब्रिटिश-फ़ौज नेशनलिस्ट पार्टी के कार्य को ख़ून के समुद्र में बहा रही है। इसी अवसर पर जॉन डिलन ने कहा, मुझे उन विद्रोहियों का गर्व है। इसका उत्तर देते हुए प्रधान-मन्त्री एसक्विथ ने कहा, कि मैं स्वयं अपनी आँखों से आयर्लैंण्ड की अवस्था देखने के लिए जा रहा हूँ। इस घोषणा के अनन्तर मि० एसक्विथ १२ मई को आयर्लैंण्ड गए।

इस प्रसङ्ग में यह याद रखना चाहिए, कि इस विद्रोह से पहिले सिनफ़िन-दल और नेशनलिस्ट पार्टी के बीच मनमुटाव हो चुका था। दोनों में मुठभेड़ भी हो चुकी थी। इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध और नेशनलिस्ट दल की मनोवृत्ति का इस उद्धरण से अच्छी तरह पता चल जायगा। टाइरोन के कैरिकमोर हॉल में सिनफ़िन-दल के 'कनसर्ट' करने के प्रयत्न का वर्णन 'आयरिश टाइम्स' के २६ जनवरी १९१६ के अङ्क में इस प्रकार प्रकाशित हुआ था—"हॉल के अन्दर और बाहर हाथा-पाई आरम्भ हुई। पर अधिकांश समय सिनफ़िन-दल के हाथ स्कूल रहा और नेशनलिस्ट बाहर रहे। सिनफ़िन क़ैसर की जय बोल रहे थे, और 'कारसन' को धिक्कार रहे थे। नेशनलिस्ट मित्र-दल और पुलिस को जयकार मना रहे थे। नेशनलिस्टों ने अपनी सारी शक्ति फिर इकट्ठा कर स्कूल के छत, दरवाज़े और खिड़कियों पर चढ़ाई की। अनिर्वचनीय और रोमाञ्चकारी नज़ारा नज़र आने लगा। सिनफ़िन-दल से क़ैसर की जय की ध्वनि आ रही थी। इसके प्रतिकूल नेशनलिस्ट-दल से मित्र-दल और सम्राट् जॉर्ज को जयनाद सुनाई पड़ रहा था। साढ़े नौ बजे तक लड़ाई जारी रही। सिनफ़िन-दल कनसर्ट छोड़ घर को वापस हुए। पुलिस उनके पीछे-पीछे थी।"

दोनों दलों के बीच में इतना अन्तर और झगड़ा होते हुए भी मि० जॉन डिलन ने सिनफ़िनों की फाँसी के विरोध में आवाज़ उठाई और उनके विद्रोह पर गर्व ज़ाहिर किया। हमारे लिबरल नेता ऑर्डिनेन्स के द्वारा बनी अदालत द्वारा सरदार भगतसिंह और राजगुरु तथा शोलापुर के अभियुक्तों को दी गई, फाँसी की सज़ा का विरोध करेंगे, इसकी आशा हम उनसे न करते थे। पर यह हरएक भारतवासी समझता था, कि हमारे स्वयंभू, प्रतिभू ये लिबरल नेता गोलमेज़ परिषद में तब तक शरीक न होंगे, जब तक सब असहयोगी जेलों से बाहर न आ जायँगे, और सब ऑर्डिनेन्स रद्द न हो जायँगे, पर वह आशा भी विफल हुई, और उनके बारे में कहना पड़ता है :—

शूरोऽसि कृत विद्योऽसि दर्शनीयोऽसि पुत्रक।
यस्मिन कुले च मुत्पन्नः भजस्तना न हन्यते॥

५

आयर्लैंण्ड में मि० एसक्विथ गए, सब विचार के लोगों से मिले, गिरफ़्तार क़ैदियों से भी खुली बातचीत की। इसके बाद मि० लॉयड जॉर्ज को सन्धि की चर्चा चलाने का भार सौंपा गया। पर वह प्रयत्न फ़ेल हुआ। शिशिर पार्लमेण्ट में Millitary Service Act को आयर्लैंण्ड में जारी करने का प्रश्न छिड़ा। इसके द्वारा आयर्लैंण्ड के हरेक बालिग़ को सेना में भर्ती होना पड़ता। नेशनलिस्ट दल के नेता रेडमॉण्ड ने इसका बलपूर्वक विरोध किया। मि० रोर्ड रुकेफ्रिङ्टन और उनके दो साथियों के शूट पर विचार करने के लिए रॉयल कमीशन बैठा था। इसकी रिपोर्ट प्रकाशित होने के दो दिन बाद मि० जॉन रेडमॉण्ड ने १८ ता० को इस आशय का प्रस्ताव पेश किया, कि जनरल मैक्सवेल को वापस बुला लिया जाय, मॉर्शल-लॉ हटा दिया जाय, ६०० क़ैदी छोड़ दिए जायँ, जिन पर मुक़दमा नहीं चलाया गया है, और क़ैदियों के साथ लड़ाई में गिरफ़्तार क़ैदियों के समान व्यवहार किया जाय। अन्त में कहा गया था कि होम-रूल-बिल को तुरन्त जारी कर दिया जाय। मि० जॉन रेडमॉण्ड ने गवर्नमेण्ट पर यह दोष लगाया, कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट जिन सिद्धान्तों के लिए लड़ रही है, उनके विरोधी सिद्धान्तों के अनुसार आयर्लैंण्ड में राज्य कर रही है। इसके फल-स्वरूप २ नवम्बर को मैक्सवेल को बुला लिया गया, इस तरह रहा-सहा मार्शल-लॉ भी हटा लिया गया।

इस समय भारतीय धारा-सभा की बैठकें हो रही हैं। क्या हमारे नेता ऑर्डिनेन्सों को रद्द कराने, पौन लाख क़ैदियों को मुक्त कराने, गोली-काण्डों, लाठी-प्रहारों की जाँच कराने और जेल में बन्द राजनैतिक क़ैदियों से लड़ाई में गिरफ़्तार व्यक्तियों के समान व्यवहार करने के लिए आन्दोलन करेंगे?

नेशनलिस्ट दल ईस्टर-विद्रोह के गिरफ़्तार व्यक्तियों के छुड़ाने की निरन्तर कोशिश करता रहा और इसके साथ-साथ सेना में आयरिश युवकों के भरती होने का भी विरोध करता रहा। यह विरोध फल लाया और २२ दिसम्बर, १९१६ को मि० ड्यूक ने घोषणा की, कि ६०० विद्रोही क़ैदी बिना शर्त के जेल्स से छोड़ दिए जायँगे, और ६०० राज-विद्रोही छोड़ दिए गए।

६

६ अप्रैल, १९१७ को अमेरिका महायुद्ध में शामिल हुआ, इससे आयरिश समस्या का महत्व और भी बढ़ गया। १६ मई को प्रधान-मन्त्री मि० लॉयड जॉर्ज ने मि० जॉन रेडमॉण्ड को एक पत्र लिखा, जिसके द्वारा सूचित किया, कि गवर्नमेण्ट १९१४ के होमरूल बिल को इस सुधार के साथ, कि अलस्टर पर पाँच साल तक यह लागू न हो, तुरन्त जारी करने के लिए तैयार है। दूसरे यह कि गवर्नमेण्ट कन्वेन्शन बैठाना चाहती है, जिसमें सब दलों के प्रतिनिधि हों, जो आयरिश स्वराज्य का मसविदा बनाएँ। मि० जॉन रेडमॉण्ड पहिला प्रस्ताव स्वीकार कर ही नहीं सकते थे, जिसके द्वारा राष्ट्र दो भागों में बट जाय। दूसरा प्रस्ताव मि० रेडमॉण्ड ने मान लिया, इसके अनुसार २१ मई को पार्लामेण्ट में कन्वेन्शन बुलाने की घोषणा की गई। कन्वेन्शन शान्ति के वातावरण में बैठे, इसको ध्यान में रख कर मि० बानरला ने १५ जून को घोषणा की, कि गवर्नमेण्ट ने सब क़ैदियों को छोड़ देने का निश्चय किया है। इन सबने १९१६ के विद्रोह में भाग लिया था, इस कारण वे गिरफ़्तार हुए थे और इनको सज़ा दी गई थी। इनकी मुक्ति बिना किसी प्रतिबन्ध और शर्त के हुई थी।

यदि तुलना करने की बहुत ही इच्छा हो तो गोल-मेज़ परिषद की तुलना इस कन्वेन्शन से कर सकते हैं, जोकि स्वराज्य का मसविदा बनाने के लिए ही बैठा था। यदि लॉर्ड इरविन यही विश्वास महात्मा जी और नेहरू जी को २१ दिसम्बर १९२९ को करा देते तो इस सत्याग्रह आन्दोलन का जन्म ही न होता और इस गोलमेज़ परिषद में कॉङ्ग्रेस भी बैठी होती। आयरिश कन्वेन्शन डबलिन में बैठा था। इसमें ब्रिटिश मन्त्री-मण्डल के मेम्बर नहीं थे। भारतीय गोलमेज़ परिषद तब बैठी थी, जब १२ ऑर्डिनेन्स सिर पर लटक रहे हैं, लाठियाँ सिरों पर पड़ रही हैं, एक बङ्कड़ के पड़ते ही गोली की बौछार शुरू हो जाती है, जेलों में एक लाख बन्दी सड़ रहे हैं। पर यह सब कुछ मि० श्रीनिवास शास्त्री की दृष्टि में कुछ लोगों के जेल जाने और कुछ के लाठी खाने से ही ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास में वह आश्चर्यजनक पृष्ठ लिखा जा रहा है, जो कल्पनातीत है। पर इसका फल क्या हुआ है, रोगी को डॉक्टर ने लूची दी है। इस शर्त पर खाने के लिए, कि इसकी ऊपर की परत छोड़ कर फेंक दो और सूँघो, फिर दूसरी परत भी फेंक दो। रोगी सोचता था, खाने को क्या मिला, केवल हवा क्या? वही हालत हमारी है। गोलमेज़ परिषद में भारतीय शासन-विधान, केन्द्रीय शासन-विधान में भारतीयों को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन दिया गया है, पर इतने अगर और मगर के साथ, कि कुछ भी बाक़ी नहीं रहता है, सेना—नौ, जल, स्थल—फ़ाइनैन्स का ⅘, व्यापार-व्यवसाय, मुद्रानीति, सन्धि-विग्रह, ये सब महकमे वायसराय—सम्राट—के अधीन रहेंगे, मन्त्रि-मण्डल के सदस्यों की लोक-सभा के मेम्बरों के सामने ज़िम्मेवारी न के बराबर है; क्योंकि लोक-सभा का कब उन पर विश्वास नहीं रहा, इसका निर्णय भी उन्हीं को करना है। पर इतने पर भी लॉर्ड रीडिङ्ग, सैनेकी और मि० मैकडॉनल्ड के प्रशंसा के गीत गाए जा रहे हैं और उनकी जय-जयकार से हमारे वैध आन्दोलन के नेता सेयद जेम्स पैलेस को गुँजा कर लौट रहे हैं! यदि आयरिश स्वतन्त्रता के पृष्ठों पर एक दृष्टिपात भी करेंगे और वहाँ के नेशनलिस्ट लोगों का भी अनुसरण करेंगे, तो भारत का नाम जग में हँसाने की अपेक्षा, इसका गौरव बढ़ाने में अपने तरीक़ों से भी इस समय से अधिक सहायक होंगे।

* * *

पोलैण्ड तथा यूरोप के अन्य छोटे-छोटे प्रजातन्त्र

[श्री० देवकीनन्दन जी 'विभव', एम० ए०]

यूरोप में शताब्दियों से एक राजनीतिक क्रम चल रहा था ! बड़े-बड़े राष्ट्र छोटे-छोटे देशों को हड़प कर अपने साम्राज्य और शक्ति का विस्तार करते आ रहे थे। इन छोटे देशों को विजय करने के बाद विजेता उन्हें अपने देश में मिला लेते थे और संसार के राजनीतिक मान-चित्र में उनका कोई पृथक अस्तित्व नहीं रहता था। महायुद्ध का परिणाम यह हुआ कि वर्सेलीज़ की सन् १९१९ की सन्धि के बाद इस क्रम में प्रतिक्रिया शुरू हुई और विशेषकर जर्मनी तथा उसकी सहयोगी शक्तियों की सीमा और जन-संख्या में अनेक स्वतन्त्र राज्यों का जन्म हो गया।

जिन साम्राज्यों ने अपना विस्तार जातीय आधार पर किया था—जैसे इटली और जर्मनी आदि—वे महान, शक्तिशाली और स्थायी बन गए थे। परन्तु जिन्होंने जातीय भावों के विरुद्ध तलवार के बल पर निर्बल राष्ट्रों को हड़प कर अपना राज्य बढ़ाया था, उनकी नींव दो विरोधी भावों पर स्थापित की गई थी और ज्योंही सरकार ज़रा निर्बल होती थी, ये दलित राष्ट्र अपने पृथक अस्तित्व को प्राप्त करने की चेष्टा करने लगते थे। ऑस्ट्रिया और रूस साम्राज्य भी इसी निर्बल आधार पर बना था। यह बात मित्र-शक्तियों से छिपी नहीं थी। उन्होंने युद्ध में ऑस्ट्रिया की शक्ति को निर्बल करने के लिए उसके छोटे-छोटे देशों को भड़काना शुरू किया और वहाँ के राष्ट्रवादियों को हर तरह से सहायता दी। रूस में बोल्शेविक शासन की स्थापना से वहाँ नए भावों का जन्म हुआ और वहाँ के नेताओं ने घोषणा की कि एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र पर शासन करने या उस देश के लोकमत के विरुद्ध कोई शासन-प्रणाली स्थापित करने का कोई अधिकार नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र को अपना निर्णय स्वयं आप करने का अधिकार प्राप्त है। रूस की सोवियट सरकार का यह आदर्श केवल कहने मात्र को नहीं था, बल्कि रूस साम्राज्य ने अपने अनेक छोटे-छोटे राष्ट्रों को अपना भाग्य-निर्णय आप करने की स्वतन्त्रता दे दी। रूस की ज़ारशाही ने जिन देशों को शताब्दियों में हड़प कर

सर्वेन्ट ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी के प्रतिभाशाली सदस्य और उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक

पं० कृष्णप्रसाद जी कौल

(पाठकों को स्मरण होगा 'चाँद' के उर्दू संस्करण में "मजज़ूब की बड़" तथा 'भविष्य' के पहिले अङ्क में प्रकाशित "पागल का प्रलाप" शीर्षक रचनाएँ आप ही की लेखनी का चमत्कार था।)

अपने साम्राज्य में मिलाया था, उसे रूस के उदार सिद्धान्तवादियों ने एक वर्ष में ही खो दिया। इस नीति के पालन के लिए रूस को जर्मनी से द्विगुणित प्रदेश अपने से पृथक करना पड़ा। इन सब नवीन क्रान्तियों का परिणाम यह हुआ कि मध्य यूरोप का मान-चित्र बिलकुल बदल गया और ऑस्ट्रिया-हङ्गरी, रूस और जर्मनी की सीमाओं में से टूट कर नए छः प्रजातन्त्रों का जन्म हुआ।

रूस में सोवियट शासन के स्थापित होते ही दिसम्बर १९१७ में फ़िनलैण्ड ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। सन् १८०९ में रूस को फ़िनलैण्ड स्वीडन से प्राप्त हुआ था और तब से रूस-सरकार के अधीन एक पृथक राज्य बन गया था। परन्तु फ़िन लोगों की एक पृथक 'सीनेट' थी और रूस उनके शासन में अधिक हस्तक्षेप नहीं करता था। स्वतन्त्रता की घोषणा करने के बाद वह महायुद्ध में भी तटस्थ हो गया; क्योंकि वहाँ भी इस समय बोल्शेविक दल शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने की चेष्टा कर रहा था और वहाँ की नवीन प्रजातन्त्र-वादी सरकार को इस गृह-कलह से भी बचना था। जर्मनी ने फ़िनलैण्ड में बोल्शेविकों को दबाने के लिए अपनी सेनाएँ भेजीं और वहाँ की प्रजातन्त्र सरकार से कई व्यापार सम्बन्धी समझौते किए। जर्मन षड्यन्त्रकारियों ने फ़िनलैण्ड की सरकार पर यहाँ तक प्रभाव डाला कि वह जर्मन क़ैसर के साले प्रिन्स फ़्रेडरिक चार्ल्स को फ़िनलैण्ड की गद्दी पर बैठाने के लिए तैयारी हो गई। परन्तु शीघ्र ही जर्मनी की हार शुरू हुई, इसलिए यह योजना भी धूल में मिल गई।

३ मार्च सन् १९१८ को रूस और जर्मनी में एक सन्धि हुई, जिसके अनुसार कोरलैण्ड, लिथूनिया और पोलैण्ड रूस-साम्राज्य से पृथक कर दिए गए। रूस तो अपनी नीति के अनुसार इनको स्वाधीन करने के लिए विवश था, परन्तु जर्मनी इनको इसलिए पृथक करना चाहता था कि वह इन प्रदेशों को जर्मन साम्राज्य में किसी तरह ले आवे। उसने कई तरह की योजनाओं से जर्मन राजघराने के लोगों को इन प्रदेशों के तख़्तों पर बिठाने की चेष्टा की। परन्तु महायुद्ध की पराजय के साथ ही उसके वे सब स्वप्न भी विलीन हो गए।

११ नवम्बर, १९१८ के जर्मनी और मित्र-शक्तियों के समझौते के अनुसार जर्मनी को सारी बाल्टिक रियासतों से कुल सेना हटा लेनी पड़ी और इस तरह उसकी बाल्टिक साम्राज्य स्थापित करने की आकांक्षा का भी अन्त हो गया।

रूस और जर्मनी के दबाव से स्वतन्त्र हो जाने के बाद उसकी प्रजातन्त्र सरकार शीघ्र ही शक्तिशाली होने लगी। उसके सामने इस समय दो समस्याएँ थीं। एक आलैण्ड द्वीप, जिसका सम्बन्ध स्वीडन से था और दूसरी रूस से अपनी सीमाओं को निश्चित करना। फ़िनलैण्ड की तरह आलैण्ड भी सन् १८०९ से रूस-साम्राज्य में चला आता था। स्वीडन अब चाहता था कि आलैण्ड, जहाँ के अधिकांश निवासी स्वीडिस जाति के हैं और स्वीडिस भाषा बोलते हैं, फिर उसे मिल जाय। जून, १९२० में यह प्रश्न लीग ऑफ़ नेशन्स के सामने आया, उसने इसकी जाँच करने के लिए एक कमिटी नियुक्त की और अन्त में एक वर्ष बाद आलैण्ड द्वीप पर फ़िनलैण्ड का अधिकार मान लिया गया। फ़िनलैण्ड ने इसके बदले में यह स्वीकार कर लिया कि वहाँ सेना नहीं रक्खी जायगी और युद्ध के समय में द्वीप और चारों ओर का स्थल भाग तटस्थ रहेगा। इसके अतिरिक्त फ़िनलैण्ड की सरकार ने आलैण्ड द्वीप-वासियों के राजनीतिक अधिकार स्वरक्षित रखने की घोषणा की। आलैण्ड द्वीप की शिक्षा की भाषा स्वीडिस स्वीकार कर ली गई और उन्हें आन्तरिक शासन की स्वतन्त्रता दे दी गई।

आलैण्ड-निवासी जिनकी संख्या २,००० है, फ़िनलैण्ड से स्वभाग्य-निर्णय (Self-determination) के सिद्धान्त के अनुसार पृथक होना चाहते थे, परन्तु लीग

(१५वें पृष्ठ का शेषांश)

हैं। प्रति वर्ष लाखों मनुष्य हैज़ा और प्लेग से मर जाते हैं। लाखों को एक वक़्त भी पूरा भोजन नसीब नहीं होता। परन्तु इससे क्या ? भारत के पास सेना तो है ! लखनऊ के नवाबों का सा क़िस्सा है, घर में चाहे चूहे दण्ड पेल रहे हों, पर नवाब तो हैं !

यह महती सेना भारत के ख़ून से पल रही है। भारत की मुख्य आय ज़मीन के लगान से है। जिस तरह लगान लिया जाता है, उसकी वसूली में जो-जो क्रूरताएँ की जाती हैं, उसका सजीव चित्र बारडोली है, जो आज प्रत्येक भारतवासी की आँखों के सामने है। भारत के नमक पर टैक्स है, जिसका भार एक भिखारी तक को वहन करना पड़ता है। इस तरह की गाढ़ी कमाई के पैसे से यह सेना पाली जा रही है। परन्तु फिर भी आज इस पर भारतवासियों का कोई अधिकार नहीं है ! वे इसे किसी भी काम में नहीं ला सकते। यह दासता की शोचनीय सीमा नहीं तो क्या है ? और जो कुछ हो, एक बात तय है कि जब तक भारत साम्राज्यवाद के जाल में फँसा है, जब तक उसे अपने देश का शासन करने का अधिकार नहीं मिला है, तब तक न तो वह कनाडा की तरह अपनी सेना घटा कर अपनी शान्ति-प्रियता को कार्यरूप में परिणत कर सकता है और न अपने देश का सुधार कर सकता है।

* * *

ऑफ़ नेशन्स ने जो अन्तर्राष्ट्रीय कमिटी नियत की, उसने इसे अस्वीकार कर दिया और स्व-निर्णय के माँग की निन्दा करते हुए लिखा :—

"To concede to minorities, either of language or religion, or to any fractions of a population the right of withdrawing from the community to which they belong because it is their wish or their good pleasure, would be to destroy order and stability within state and to inaugurate anarchy in international life."

फ़िनलैंड श्वेत-सागर (White Sea) के एक बन्दरगाह पर अपना अधिकार चाहता था। इस पर कुछ दिनों तक रूस और फ़िनलैण्ड में बहुत झगड़ा रहा। परन्तु अन्त में रूस की उदार सरकार ने डोरवट की सन्धि द्वारा १४ अक्टूबर, १९२० को फ़िनलैण्ड से सन्धि कर ली और पेलचङ्गा की भूमि और बेरा खाड़ी के एक बन्दरगाह पर उसका अधिकार मान लिया। परन्तु फ़िनलैंड को यह स्वीकार करना पड़ा कि वह वहाँ कोई जङ्गी बेड़े का अड्डा नहीं बनाएगा और ४०० टन से बड़ा जङ्गी जहाज़ नहीं रक्खेगा। इस तरह तैंतीस लाख फ़िनलैंड वासियों ने अपना स्वतन्त्र प्रजातन्त्र स्थापित कर लिया।

रूसी सीमा-स्थित राज्यों में फ़िनलैण्ड के बाद दूसरा नाम इस्थोनिया का है। सन् १९१८ में यह प्रदेश जर्मन सेनाओं के अधिकार में था और क़ैसर विलियम उसे किसी तरह जर्मन साम्राज्य में मिला लेने की चिन्ता में थे, परन्तु महायुद्ध के समझौते के बाद फ़िनलैण्ड की तरह यह भी जर्मन सेनाओं को ख़ाली कर देना पड़ा। बहुत दिन पहले से ही इस्थोनिया-निवासी अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का आन्दोलन कर रहे थे और उन्होंने जर्मन सेनाओं के जाने से पहले ही एक 'प्रॉविज़नल' सरकार का सङ्गठन कर लिया था। जर्मनी-सेनाओं के बाद देश का शासन इस पूर्व-सङ्गठित परिषद के हाथ में आ गया, परन्तु नवीन प्रजातन्त्र को अभी बोल्शेविकों, जर्मन सेनाओं के पक्षपातियों और व्यक्तिगत आकांक्षावादियों से झगड़ कर अपने अस्तित्व को स्थायी करना था। एक वर्ष से अधिक सारे इस्थोनिया प्रदेश में भयङ्कर अशान्ति रही। इङ्गलैण्ड की सरकार सोवियट रूस से इस समय अत्यन्त भयभीत थी और वह नहीं चाहती थी कि इस्थोनिया में भी सोवियट शासन स्थापित हो जाय, इसलिए उसने इस्थोनिया में अपनी सेनाएँ और शस्त्र भेजे। रूस प्रत्येक को अपना निर्णय आप करने के लिए स्वतन्त्रता की घोषणा कर चुका था, इसलिए उसने इस्थोनिया की भी स्वतन्त्रता मान ली। दिसम्बर और जनवरी, १९१९-२० में रूस और इस्थोनिया के प्रतिनिधियों की एक परिषद् हुई और २री फ़रवरी को दोनों देशों में एक समझौते पर हस्ताक्षर हो गए। रूस की ओर नार्वा नदी और पीपस झील तक इस्थोनिया की सीमा मान ली गई।

इस्थोनिया के बाद दक्षिण की ओर तीसरा स्थान लटाविया का है। इसकी राजधानी प्रसिद्ध रीगा नगर है। रूस की ११ अगस्त, १९२० की सन्धि द्वारा लटाविया स्वतन्त्र प्रदेश मान लिया गया, परन्तु उसकी सीमाएँ दृढ़ न होने के कारण उसका अस्तित्व बहुत-कुछ अन्य पड़ोसी प्रजातन्त्रों के सहयोग तथा लीग ऑफ़ नेशन्स की रक्षा पर निर्भर है।

लिथूनिया सन् १३८६ तक एक शक्तिशाली स्वतन्त्र प्रदेश था। इस समय यहाँ के राजकुमार का विवाह पोलैण्ड की महारानी जदविगा के साथ हुआ और तब से वह पोलैण्ड से संयुक्त हो गया। पोलैण्ड के प्रभाव से लिथूनिया के जातीय भाव छिप गए और शताब्दियों तक लिथूनिया की शिक्षित जनता तक अपने को 'पोलिस' कहने में अपना गौरव समझती रही। सन् १८८३ में लिथूनिया में राष्ट्रीय भावों की जागृति हुई और तब से फिर लिथूनिया-वासी अपनी स्वतन्त्र सरकार स्थापित करने के लिए आन्दोलन करने लगे। महायुद्ध में जर्मनी फ़ौजों ने लिथूनिया पर क़ब्ज़ा कर लिया और वहाँ जर्मन फ़ौजी शासन क़ायम हो गया। ११ नवम्बर, १९१८ की जर्मन-रूस सन्धि के अनुसार लिथूनिया प्रदेश रूस की सीमा से पृथक हो गया। जर्मनी लिथूनिया को किसी तरह अपने प्रदेश में लाने की चेष्टा ही में था कि महायुद्ध में जर्मनी की हार होने लगी और उसे ११ नवम्बर, १९१८ के समझौते के अनुसार लिथूनिया प्रदेश ख़ाली कर देना पड़ा। यह आश्चर्य की बात है कि जर्मन सेनाएँ जिस समय सब से अधिक मित्र-देशों की भूमि पर क़ब्ज़ा करने में समर्थ हुईं, उस समय एकाएक उसका अधःपतन हुआ और उसे एक प्रकार से मित्र-शक्तियों के हाथों समर्पण कर देना पड़ा। इसका एकमात्र कारण युद्ध-क्षेत्र में अमेरिका का आगमन था। कुछ भी हो, यदि जर्मनी इस महायुद्ध में जीत गया होता तो रूसी सीमा के ब्रहों प्रजातन्त्र स्वतन्त्र राज्य होने के स्थान में जर्मनी साम्राज्य के अन्तर्गत प्रदेश होते।

लिथूनिया के राष्ट्रवादी चुपचाप न थे। रूस की महाक्रान्ति के बाद जब लिथूनिया जर्मन फ़ौजों के क़ब्ज़े में था, तभी उन्होंने एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना कर ली और उसकी राजधानी विएना में रखना निश्चय हुआ। जर्मनी की सेना के हटते ही रूसी सेना ने लिथूनियनों को विएना से निकाल दिया, परन्तु फिर शीघ्र ही पोलैण्ड की सेना ने रूसियों को वहाँ से निकाल दिया। इस समय पोलैण्ड के राजनीति-विशारद पेडरवस्की ने लिथूनियनों के सामने लिथूनिया और पोलैण्ड का एक संयुक्त सङ्घ स्थापित करने की योजना पेश की। परन्तु लिथूनिया-वासियों ने अपने देश में पोलैण्ड का किसी तरह का भी हस्तक्षेप स्वीकार नहीं किया। और विएना के समीप ही लिथूनिया और पोलैण्ड की सेनाओं में मुठभेड़ हो गई। उधर पोलैण्ड और रूसी सेनाओं में भी छिड़ी हुई थी।

जुलाई, १९२० में लाल सेनाओं ने पोलैण्ड के मोर्चों को तोड़ कर विल्ना पर क़ब्ज़ा कर लिया और वारसा नगर तक पहुँच गईं, परन्तु फिर 'मार्ने' में बोल्शेविक सेनाएँ बुरी तरह पिटीं और उन्हें पोलैण्ड ख़ाली कर देना पड़ा। विल्ना के पास फिर लिथूनिया और पोलैण्ड में छिड़ी। स्थिति भयङ्कर देख कर लीग ऑफ़ नेशन्स ने सारे मामले की जाँच करने के लिए एक कमीशन नियुक्त किया। उसके निर्णयानुसार स्वाल्की में ७ अक्टूबर, १९२० को समझौता हो गया। पोलैण्ड की सीमा विल्ना के २९ मील दक्षिण की ओर निश्चित कर ली गई, परन्तु इस समझौते के होते ही पुलिस-जनरल जेली-गोवस्की ने फ़ौज की एक टुकड़ी लेकर बिना अपनी सरकार की आज्ञा के ही निश्चित सीमा को पार किया और विल्ना पर क़ब्ज़ा कर लिया। इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में एक भयङ्कर समस्या उपस्थित हो गई। लीग ऑफ़ नेशन्स ने एक कमीशन भेजा और विल्ना पर अधिकार करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सेना भेजना चाहा परन्तु स्विट्ज़रलैण्ड की सरकार ने उसे अपने प्रदेश में होकर जाने से रोक दिया। इससे सेना भेजने का विचार छोड़ दिया गया। लीग ऑफ़ नेशन्स के कमिश्नर मिस्टर हीमेन चाहते थे कि विल्ना लिथूनिया को दे दिया जाय। परन्तु उसे पोलैण्ड के साथ इस तरह संयुक्त कर दिया जाय, जिसमें लिथूनिया के सभी आन्तरिक अधिकार स्वरक्षित रहें। परन्तु पोलैण्ड और लिथूनिया दोनों में से किसी ने भी इसको स्वीकार नहीं किया। अन्त में लीग ऑफ़ नेशन्स यह कह कर कि जिस तरह वे चाहें, स्वयं अपना फ़ैसला कर लें, हाथ झाड़ कर अलग खड़ी हो गई।

जनवरी १९२२ में विल्ना ज़िले में एक व्यवस्थापक परिषद का चुनाव हुआ और इसने निश्चय किया कि विल्ना पोलैण्ड के प्रजातन्त्र में ही संयुक्त रहे। अन्त में अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी विल्ना पर पोलिस प्रजातन्त्र का अधिकार मान लिया गया और लिथूनिया को अपनी राजधानी कोनवो में हटा लेनी पड़ी।

पोलैण्ड सत्रहवीं शताब्दी तक एक स्वतन्त्र राष्ट्र था और सन् १६८३ में तुर्कों को हरा कर उसने यूरोप में अपनी अच्छी धाक जमा ली थी। परन्तु फिर वहाँ के सरदारों और रईसों की स्वार्थ-साधना के कारण गृह-कलहों से उसकी शक्ति कमज़ोर होती जाती थी। पोलैण्ड में बहुत दिनों से राजा के चुनाव होने की प्रथा थी, परन्तु चुनाव की असली शक्ति प्रजा के हाथ में नहीं, सरदार लोग जिसे चाहते थे वही राजा चुन लिया जाता था। हम बिना किसी अत्युक्ति के यह कह सकते हैं कि राजा के स्थान में शासन की बागडोर सरदारों के हाथों में थी। ये प्रजा पर मनमाने अत्याचार करते थे और ग़रीबों और किसानों को ख़ूब पीसा जाता था, जिससे वे ऐसे शासन से उकता गए थे।

इस असन्तोष का लाभ उठा कर रूस ने अपना पञ्जा पोलैण्ड में बढ़ाना शुरू किया। राजा आगस्टस तृतीय की मृत्यु के बाद ही रूस को अपनी आकांक्षा पूरी करने का अवसर मिला और उसने अपने कृपा-पात्र स्टेनलास को पोलैण्ड का राजा चुनवा दिया। इस तरह पोलैण्ड पर एक प्रकार से रूस का ही अधिकार हो गया। पोलैण्ड के बँटवारे में ऑस्ट्रिया भी सम्मिलित होना चाहता था। रूस और तुर्की में युद्ध छिड़ते ही उसे भी अवसर मिल गया और उसने पोलैण्ड की बहुत सी ज़मीन दबा ली। अन्त में रूस में और ऑस्ट्रिया में समझौता हो गया और रूस ने पोलैण्ड का कुछ भाग ऑस्ट्रिया को देकर बाक़ी आप हड़प लिया। इस तरह पोलैण्ड-वासियों की स्वतन्त्रता पर पहला प्रहार हुआ।

जिस जगह साहब मिलें, बस बन्दगी कर लीजिए !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

चलते-फिरते क़द्र अच्छे वक़्त की कर लीजिए !
कोई डिगरी लेके, फ़ौरन नौकरी कर लीजिए !!
चार दिन की ज़िन्दगी में, आपको है अख़्तियार !
दोस्ती कर लीजिए, या दुश्मनी कर लीजिए !!
क़स्द होता है यही, हालाते-आलम देख कर !
खा के कुछ सो जाइए, या ख़ुद कुशी कर लीजिए !!
ख़ल्क़ में बेकार रहने का नतीजा कुछ नहीं,
लीडरी का है ज़माना, लीडरी कर लीजिए !
कोर्ट, स्टेशन, कलब, सरकस की है तख़सीस क्या !
जिस जगह साहब मिलें, बस बन्दगी कर लीजिए !
हज़रते "बिस्मिल" न होंगी दोनों बातें एक साथ !
नौकरी कर लीजिए, या शायरी कर लीजिए !!

* * *

पोलैण्ड में पराधीन होने पर भी, स्वाधीनता के भाव नष्ट न हुए थे। सन् १७८७ में रूस और तुर्कों में फिर लड़ाई शुरू हुई और पोलों को अपनी स्वाधीनता की घोषणा करने का अवसर मिला। उन्होंने रूस के आधिपत्य का जुआ उतार फेंका और प्रशा से सन्धि कर ली। अपनी आन्तरिक शासन-प्रणाली में बहुत-कुछ सुधार किए और सरदारों की निरङ्कुशता भी कम कर दी। परन्तु साथ ही स्थायी राजतन्त्र की स्थापना स्वीकार कर ली गई। रूस, तुर्की-युद्ध से मौक़ा पाते ही फिर पोलैण्ड पर टूट पड़ा और प्रशा भी पोलैण्ड की सहायता करने के स्थान में रूस के साथ हो गया। पोलैण्ड के नए शासकों को फिर आत्म-समर्पण करना पड़ा। और अब की बार फिर पोलैण्ड को रूस और प्रशा ने आपस में बाँट लिया।

इस तरह पराजित होने पर भी पोलैण्ड के देशभक्त हताश न हुए और उन्होंने कोसिस्को के अधीन फिर एक राष्ट्रीय दल तैयार किया। रूस और प्रशा की सम्मिलित शक्ति के आगे इस दल का सफल होना अत्यन्त कठिन था। वारसा नगर में वीरतापूर्वक लड़ कर राष्ट्रीय दल ने हार स्वीकार की और कोसिस्को गिरफ़्तार कर लिया गया। सन् १७९५ में पोलैण्ड का तीसरा बटवारा हुआ और इसमें रूस, ऑस्ट्रिया और प्रशा हिस्सेदार हुए। इस तरह पोलैण्ड की स्वाधीनता बहुत समय के लिए छिन गई।

पोलैण्ड का तीन चौथाई भाग रूस के अधिकार में आ गया था, परन्तु उस समय पोल जाति के भावों का विचार करते हुए रूस ने उन्हें राजनीतिक अधिकार दिए और वहाँ वैध शासन स्थापित किया। पर यह क्रम अधिक दिन तक न चला और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही ज़ार ने पोल लोगों की स्वतन्त्रता पर आघात करना प्रारम्भ कर दिया। उसने समाचार-पत्र और पुस्तकों पर रोक लगाने के लिए नए क़ानून बना दिए और स्वतन्त्र आलोचना के दण्ड-स्वरूप कई पत्रों को बन्द कर दिया। ज्यों-ज्यों निरङ्कुशता का शासन बढ़ता गया, पोलों में असन्तोष की आग भीतर ही भीतर धधकने लगी। गुप्त समितियाँ बनीं और सरकार को उलट देने का प्रयत्न किया गया। सन् १८३० की फ़्रान्स की राज्य-क्रान्ति से पोलों में राष्ट्रीय भावों का प्रवाह और भी ज़ोरों से बहने लगा और स्वातन्त्र्य आन्दोलन का चक्र भी ज़ोरों से चलने लगा। इसी समय शासकों ने फ़्रान्स के क्रान्तिकारियों के विरुद्ध पोल सेना को भेजने का निश्चय किया। उनका दूसरा मतलब यह भी था कि पोल सेना के देश से बाहर चले जाने पर राष्ट्रीय आन्दोलन को सहज ही कुचला जा सकेगा। पोलों ने इसका घोर प्रतिवाद किया। २९ नवम्बर, १८३० को राजधानी में विद्रोह की आग भड़क उठी। पोलैण्ड का राज-प्रतिनिधि शहर से भाग गया। विद्रोहियों ने वारसा पर क़ब्ज़ा कर लिया और चारों ओर उनकी शक्ति बढ़ने लगी।

इधर ज़ार ने विद्रोहियों से समझौता करने की बात-चीत शुरू की और दूसरी ओर अपनी सेना की तैयारी में भी लगा रहा। विप्लववादियों में इस समय पूर्ण एकता की बड़ी आवश्यकता थी, पर समझौते के विषय को लेकर उनमें घोर मतभेद पैदा हो गया। पुराने रूढ़ियों के भक्त—सरदार और उमरा लोग शासन में केवल कुछ सुधार चाहते थे, परन्तु नवीन युवकों का दल देश को ग़ुलामी से बिलकुल स्वतन्त्र करना चाहता था। ज़ार ने दोनों दलों के मतभेद का पूरा फ़ायदा उठाया और स्वतन्त्रतावादियों ने उन पर आक्रमण करके उन्हें हरा दिया। साथ-साथ व्यवस्थापिका सभा और अन्य जो भी सुधार मिले हुए थे, वे वापस कर लिए गए। विद्रोह का बड़ी कड़ाई के साथ दमन किया गया, देश-भक्त कार्यकर्ता चुन-चुन कर साइबेरिया में जलावतन कर दिए गए, राष्ट्रीय सेना तोड़ दी गई और बड़े-बड़े पदों पर पोलों के स्थान पर रूसी कर्मचारी नियुक्त किए गए।

इसके बाद कुछ वर्षों तक शान्ति रही। पर घोर दमन के बाद भी पोलों की राष्ट्रीय भावनाएँ नष्ट न हुईं। ऊपर से आन्दोलन की प्रगति में रुकावट पड़ने से वह अब भीतर ही भीतर काम करने लगी। शीघ्र ही एक "ख़ूनी दल" स्थापित हो गया और उसने कई राज्य-कर्मचारियों को मार डाला और वायसराय पर भी आक्रमण किया! इससे शासकों ने कुपित होकर बहुत सी गिरफ़्तारियाँ कीं, अनेक लोग जङ्गलों में भाग गए और वहाँ अपना दल सङ्गठित करके सरकार के प्रति विद्रोह करने लगे। वे अवसर पाने पर सरकारी ख़ज़ाने को लूट लेते और जङ्गलों में छिप जाते। पर यह आन्दोलन अधिक दिन तक न चला।

शताब्दियों की पराधीनता और दमन भी पोल जाति के स्वातन्त्र्य भावों को नहीं कुचल सकी। रूस ने उन्हें अपनी राष्ट्रीयता में ढालने और उनकी भाषा की जगह अपनी भाषा प्रचलित करने का भरपूर प्रयत्न किया, परन्तु अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए भी उन्होंने अपनी भाषा की रक्षा की और रूसी संस्कृति को कभी स्वीकार नहीं किया। उनमें राष्ट्रीय भाव इतने उग्र रूप से घर किए हुए हैं कि जब महायुद्ध के बाद उनकी स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली गई, तो उन्होंने प्रत्येक रूसी चिह्न को अपने देश से नष्ट कर दिया। रूस ने अपने शासन-काल में वारसा में एक विशाल और सुन्दर महल बनवाया था। सार्वजनिक मत इस बात के विरुद्ध था कि पोल की परतन्त्रता का यह चिन्ह रहने दिया जाय, इसलिए पोल सरकार ने सन् १९१४ में उसको गिरा कर चौरस बना दिया और पहले की तरह वह भूमि सेनाओं की क़वायद के लिए नियत कर दी।

बधाई

साहित्याचार्य पं० गयाप्रसाद जी, शास्त्री "श्री हरिः" लिखते हैं :—

आपका "भविष्य" नियमपूर्वक बराबर आ रहा है। मैं भी अपने इष्ट-मित्रों में तथा मरीज़ों में आपके "भविष्य" का बड़े प्रेम से प्रचार कर रहा हूँ। इसके सिवाय मैं और आपकी सेवा ही क्या कर सकता हूँ। वास्तव में आपने "भविष्य" निकाल कर पत्रकारों के लिए सफल सम्पादन-कला का एक जीता-जागता आदर्श संसार के सामने रख दिया है। जो कुछ भी हो, आपकी सम्पादन-कला-कुशलता तथा दूरदर्शिता की प्रशंसा तो आपके विपक्षियों को भी करनी पड़ती है। आपकी इस अपूर्व प्रतिभा के लिए बधाई!

* * *

सन् १९१४ में यूरोप में महायुद्ध का अग्नि-काण्ड प्रारम्भ हुआ। रूस ने पोलैण्ड को महायुद्ध के बाद एक स्वतन्त्र राज्य बनाने की घोषणा करते हुए कहा :—

"पोलो! अब समय आ गया है, कि तुम्हारे पूर्वजों का पवित्र स्वप्न पूर्ण हो। डेढ़ सौ वर्ष पहले उसका मांस नोचा गया था, परन्तु उसकी आत्मा अब तक जीवित रही है। अब उन सीमाओं ने, जिन्होंने पोलैण्ड राष्ट्र को विभक्त कर रक्खा है, नष्ट हो जाना चाहिए, और रूसी सम्राट की संरक्षता में एक संयुक्त राष्ट्र की स्थापना होनी चाहिए।"

पोलैण्ड ने मित्र-शक्तियों का साथ दिया पर महायुद्ध के समाप्त होने से पहले ही रूस उससे पृथक हो गया और उसने जर्मनी से एक पृथक सन्धि कर ली। यदि तराज़ू का रुख़ न पलटता और विजय-मुकुट जर्मनी के माथे रहता तो इसमें सन्देह नहीं कि रूस की जगह पोलैण्ड पर जर्मनी का आधिपत्य हो जाता। जर्मनी पराजित हुआ और रूस में सोवियट सरकार की स्थापना हुई, जो यूरोप की सारी शासन-प्रणाली के विरुद्ध थी। इङ्गलैण्ड और फ़्रान्स पोलैण्ड से बहुत दूर थे। इसलिए पोलैण्ड में उनके अधिकार की सम्भावना हो नहीं सकती थी। फलतः सन् १९१९ की सन्धि द्वारा पोलैण्ड के प्रजातन्त्र का अस्तित्व मान लिया गया। इस तरह डेढ़ करोड़ पोलों ने दो शताब्दी की ग़ुलामी के बाद फिर स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली।

पोलैण्ड में प्रजातन्त्र की स्थापना तो हो गई, परन्तु उसे अभी कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना था। उसके सामने पहला प्रश्न उसकी सीमाओं का निर्धारित करना था और इस प्रश्न पर अभी उसकी रूस से छिड़ी हुई थी। अगस्त, १९२० में रूसी सेनाओं ने आगे बढ़ कर वारसा पर क़ब्ज़ा कर लिया, परन्तु क्रान्ति के कारण उसका सैनिक सङ्गठन इस समय बहुत बिगड़ा हुआ था, इसलिए फिर शीघ्र ही पीछे हटना पड़ा। १८ मार्च, १९२१ को रूस और पोलैण्ड में अन्तिम समझौता हो गया। पोलैण्ड ने उक्रेन और ह्वाइट रुथेनिया की स्वाधीनता स्वीकार कर ली और उक्रेन के पश्चिमी ओर पोलैण्ड की सीमा भी नियत हो गई। रूस ने पोलैण्ड को तीन करोड़ रूबल दिए तथा पोलैण्ड ने किसी तरह का हस्तक्षेप न करने या कोई प्रचार न करने का वादा किया।

सन् १९१९ से १९२३ तक पोलैण्ड की प्रजातन्त्र सरकार अपनी सीमाएँ निर्धारित कराने और अन्य सरकारों से समझौते द्वारा अपने अन्य अधिकारों के स्वरक्षित कराने में लगी रही। इसमें उसे पूरी सफलता मिली। लिथूनिया से उसे विल्ना नगर और पूर्वीय ग्लेसिया मिल गया और पूर्व और पश्चिम प्रशा के बीच का प्रदेश, जहाँ उसके समुद्र का निकास है, जर्मनी से प्राप्त कर लिया। मार्च, १९२१ में उसने रूमानिया से भी सन्धि कर ली, जिसमें दोनों ने निश्चय किया कि अगर कोई तीसरी शक्ति उनमें से किसी पर भी आक्रमण करेगी, तो वे एक दूसरे की मदद करेंगे।* फ़्रान्स के साथ भी फ़रवरी, १९२१ को एक समझौता हुआ कि दोनों सरकारें वैदेशिक नीति के सम्बन्ध में एक-दूसरे से सलाह-मशविरा कर लिया करें। सम्भवतः फ़्रान्स और पोलैण्ड में कोई सेना सम्बन्धी समझौता भी हुआ, पर वह प्रकाशित नहीं हुआ।

इस तरह पोलैण्ड का प्रजातन्त्र यूरोप में अपना अच्छा महत्व रखता है। महायुद्ध के परिणाम-स्वरूप जर्मनी को ४० लाख मनुष्यों से बसे हुए प्रदेश से हाथ धोना पड़ा और ऑस्ट्रिया तो एक तरह से नष्ट ही हो गया। उससे ३ करोड़ ६० लाख मनुष्यों से बसे हुए प्रदेशों से हाथ धोना पड़ा। विधाता की इच्छा!

* *League of Nations, Treaty Series, Vol. vii, p. 78.*

* * *

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

श्रीमती अम्बालाल साराबाई

आप गुजरात कॉङ्ग्रेस कमिटी की 'डिक्टेटर' हैं। आपको हाल ही में एक हज़ार रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई थी।

कुमारी पेड्डा कामेश्वरमा, बी० ए०

आप पूर्वीय गोदावरी कॉङ्ग्रेस कमिटी की प्रेज़िडेण्ट निर्वाचित हुई हैं।

मुज़फ़्फ़रपुर के प्रसिद्ध वकील बाबू अमरनाथ खन्ना के १८ वर्षीय भतीजे—श्री० सुन्दर लाल खन्ना जो हाल ही में पुलिस के डण्डों से आहत होकर बेहोश तक हो गए थे।

श्रीमती कीकीबेन लवीलदास

आप कराची 'युद्ध-समिति' की 'डिक्टेटर' थीं, जो हाल में गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

पं० हरीकृष्ण गौड़

आप देहरादून के उत्साही कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता हैं। हाल ही में आपको तीन मास की क़ैद की सज़ा दी गई है।

बम्बई के कॉङ्ग्रेस फ़्री अस्पताल के उत्साही डॉक्टरों, नर्सों और वालण्टियरों का ग्रूप; जो सत्याग्रह-संग्राम में देश की अपरिमित सेवा कर रहे हैं।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

कुमारी रुद्राणी अम्मा

आप आर्य-वंशोद्धारिणी महासभा की महा-मन्त्रिणी हैं। आप हाल ही में ट्रावङ्कोर एसेम्बली की सदस्या भी चुनी गई हैं।

कुँवरानी महाराजसिंह साहिबा

आप इलाहाबाद डिवीज़न के सुविख्यात कमिश्नर कुँवर महाराजसिंह जी की धर्मपत्नी हैं। आप हाल ही में इलाहाबाद विश्व-विद्यालय-कोर्ट की सदस्या नियुक्त हुई हैं।

श्रीमती कमला बाई किबे

आप इन्दौर के रायबहादुर एम॰ वी॰ किबे की धर्मपत्नी हैं, जो ऐतिहासिक रेकॉर्ड कमीशन की सदस्या नियुक्त हुई हैं।

भारत के कुछ सुप्रसिद्ध सङ्गीताचार्यों का ग्रूप

(जो हाल ही में होने वाले प्रयाग विश्वविद्यालय के सङ्गीत कॉन्फ्रेन्स में आमन्त्रित किए गए थे)

कुर्सी पर बैठे हुए बाईं ओर से—श्री॰ वी॰ एन॰ ठाकर, श्री॰ शिवप्रसाद, श्री॰ बीरू मिश्र, श्री॰ रियाज़उद्दीन, श्री॰ नसीरउद्दीन, श्री॰ सख़ावत ख़ाँ, श्री॰ सखाराम और श्री॰ आर॰ के॰ पटवर्द्धन।

सामने बैठे हुए—ग्वालियर के सुप्रसिद्ध गायक मास्टर केशवराव खक्खी।

खड़े हुए, बाईं ओर से तीसरे—'चाँद' के 'सङ्गीत सौरभ' शीर्षक स्तम्भ के सम्पादक और युक्त-प्रान्त के सुप्रसिद्ध सङ्गीताचार्य—श्री॰ किरणकुमार मुखोपाध्याय (नीलू बाबू)

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रमुख भाग लेने वाली और जेल जाने वाली नागपुर की सर्व-प्रथम मारवाड़ी-ब्राह्मण महिला—श्रीमती गङ्गाबाई चौबे—जिन्होंने दो बार लगभग १२ हज़ार जन-समूह का नेतृत्व ग्रहण करके, नागपुर ज़िले में दो बार जङ्गल-क़ानून तोड़ा है। इस समय आप जेल में हैं। आपके साथ अन्य सात महिलाएँ भी पकड़ी गई थीं।

पञ्जाब के सुप्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता और 'कीरती' नामक सुप्रसिद्ध पत्र के भूतपूर्व सम्पादक—सर्दार अर्जुनसिंह जी गड़गज—जो अब तक चार बार अपने राजनैतिक सिद्धान्तों के लिए जेल-यात्रा कर चुके हैं।

कैरा ज़िले की 'वार-कौन्सिल' की सर्व-प्रथम महिला 'डिक्टेटर'—श्रीमती भक्तिलक्ष्मी गोपालदास—जो इस समय जेल में हैं। आपको छः मास का कारावास-दण्ड और २००) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर १½ मास की सज़ा और भुगतनी पड़ेगी।

बङ्गाल के सुप्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध सिक्ख नेता—बाबा गुरुदत्तसिंह जी—जिन्हें अपने राजनैतिक सिद्धान्त के लिए अपने जीवन का अधिकांश भाग जेल में ही व्यतीत करना पड़ा है; इस समय भी आप जेल ही में हैं।

खड़े हुए—करेला के उत्साही राजनैतिक कार्यकर्ता—श्री० एस० वी० रामकृष्ण, बी० ए०—जिन्होंने वकालत की पढ़ाई छोड़ कर, करेला ज़िले में केवल स्वदेशी और खद्दर-प्रचार का व्रत लिया है।

बैठे हुए—कालीकट से प्रकाशित होने वाले "स्वाभिमानी" नामक पत्र के सम्पादक—श्री० ए० के० कुन्नी कृष्णानम्बियर—जिन्हें दफ़ा १४४ की उपेक्षा करने के कारण ६ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

फ़र्रुख़ाबाद काँग्रेस कमिटी के उप-सभापति और ज़िला काँग्रेस कमिटी के उप-मन्त्री—पं० भजनलाल जी पाण्डेय, विशारद—जिन्हें नमक-क़ानून तोड़ने के अपराध में ६ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया था। आप हाल ही में फ़ैज़ाबाद जेल से छूट कर आए हैं।

उम्र सारी तो कटी इश्क़े-बुताँ में 'मोमिन' !
आख़िरी वक़्त में क्या ख़ाक मुसल्माँ होंगे !
बुतकदे से यह भला जायँगे मस्जिद की तरफ़ !
होके हिन्दू कभी 'बिस्मिल' न मुसल्माँ होंगे !

तू कहाँ जाएगी, कुछ अपना ठिकाना कर ले,
हम तो, कल ख़्वाबे[1]-अदम में, शबे[2] हिजराँ होंगे।
एक हम हैं, कि हुए ऐसे पशेमान[3] कि बस,
एक वह हैं, कि जिन्हें चाह के अरमाँ होंगे !
हम निकालेंगे, सुन ऐ मौजे-हवा ! बल तेरा,
उनकी ज़ुल्फ़ों के, अगर बाल परेशाँ होंगे।
फिर बहार आई, वही दश्त[4] नवरदी होगी,
फिर वही पाँव, वही ख़ारे मुग़ीलाँ[5] होंगे
उम्र सारी तो कटी, इश्क़े बुताँ में 'मोमिन' !
आख़िरी वक़्त में, क्या ख़ाक मुसल्माँ होंगे !

—"मोमिन" देहलवी

अपने ही जलवे से, ख़ुद सर ब-गरेबाँ[6] होंगे,
तोड़ कर शीशए-दिल, वह भी पशेमाँ होंगे !
अपनी क़ूव्वत का है, एहसास[7] जिन्हें आलम[8] में,
फिर वह क्यों ग़ैर के, शरमिन्दए-एहसाँ होंगे ?
देख ऐ क़ूव्वते-दिल, ज़ौक़े[9] नज़र पैदा कर,
परदए-बर्क़[10] से, वह आज नुमायाँ[11] होंगे !
नूर[12] ही नूर है, हर सिम्त[13] जहाँ में "अख़गर",
और क्या दाग़े-जिगर तेरे फ़रोज़ाँ[14] होंगे ?

—"अख़गर" लखनवी

किससे परदा है यह, और किस लिए परदा है यह
जलवे पिनहाँ[15] न हुए, और न पिनहाँ होंगे।
आज निकले दिले-वीराँ[16] से तुम्हारे "अरमान"
अब ख़ुदा जाने, कहाँ जा के यह मेहमाँ होंगे !

—"अरमान" कानपुरी

जलवए हुस्ने-अज़ल,[17] आप तस्सवर[18] में अगर
गोशए[19] दिल में, मचलते हुए अरमाँ होंगे !

—"आफ़ताब" पानीपती

किस तरह हिज्र में, पूरे मेरे अरमाँ होंगे,
वह तो जब पूछिए, कह देते हैं, "हाँ-हाँ होंगे।"
कूचए ज़ुल्फ़ में, जाते तो हैं "आशुफ़्ता" जिगर
याद रक्खें ; कहे देते हैं, परेशाँ होंगे !

—"आशुफ़्ता" अकबराबादी

बाद मरने के भी, जाएगा न यह जोशे-जुनूँ,
ख़ाक में दफ़्न, मेरे दिल के न अरमाँ होंगे !
दाग़े-दिल, लाल ओ गुल, बन के ज़मीं पर रह जाएँ
आसमाँ पर यह मगर, अख़्तरे[20] ताबाँ होंगे।

—"इन्द्र" माथुरवी

अपने वहशी को, न छेड़ो कि अभी सोता है,
जाग उट्ठेगा, तो फिर हश्र के सामाँ होंगे !

—"बह्र" मुज़फ़्फ़रनगरी

१—मौत की नींद, २—विरह की रात, ३—लज्जा, ४—जङ्गल में फिरना, ५—बबूल के काँटे, ६—ग़ौर करने वाले, ७—ख़्याल, ८—संसार, ९—मज़ा, १०—बिजली, ११—रोशन, १२—ज्योति, १३—तरफ़, १४—रोशन, १५—छुपा हुआ, १६—बरबाद, १७—आदि, १८—ध्यान, १९—कोना, २०—तारा, २१—रोशन, २२—प्रलय,

निगहे-नाज़ के, होंगे तो यह एहसाँ होंगे,
दिल के टुकड़े कहीं होंगे, कहीं पैकाँ[23] होंगे !
अश्क[24] आँखों में, न दिल में मेरे अरमाँ होंगे,
जिन घरों पर है मुझे नाज़, वह वीराँ होंगे !
रञ्जो-ग़म क्यों मेरे घर आए हैं, क्या अर्ज़ करूँ ?
मेज़बाँ[25] होंगे, ख़ुदा जाने, कि मेहमाँ होंगे !
नींद कुछ मौत नहीं है, जो न आएगी हमें,
हम कोई ख़्वाब नहीं हैं, जो परेशाँ होंगे !

—"जोया" बरेलवी

काम हम सब्रो तहम्मुल[26] से, लिए जायँगे,
शिकवए[27] और[28] न लब पर, किसी उनवाँ[29] होंगे !

—"शाकिर" ग्वालियरी

आप के तीरे-नज़र, दिल में जो मेहमाँ होंगे,
दर्दे-दिल के लिए, मेरे वही दरमाँ[30] होंगे।

—"शमशाद" देहलवी

छुप नहीं सकते कभी सोज़े[31] निहाँ के शोले,
ख़ुदबख़ुद दाग़ मेरे, दिल के नुमायाँ होंगे !

—"सिद्दीक़" देहलवी

क्या ख़बर थी, कि मुहब्बत में यह सामाँ होंगे,
दिल में रह कर, वह मेरी जान के ख़्वाहाँ[32] होंगे !
जब वफ़ाकेश,[33] दिखा देंगे उन्हें शाने वफ़ा,
वह सितमगर[34] ही सही, फिर भी पशेमाँ होंगे !
यह हैं उस दुश्मने उश्शाक़[35] के गेसू[36] "फ़रहाद",
जिस क़दर आप सँवारेंगे, परेशाँ होंगे।

—"फ़रहाद" शाहजहाँपुरी

२३—तीर या बरछी की भाल, २४—आँसू, २५—जिसके घर मेहमान रहे, २६—सन्तोष, २७—गिला, २८—जुर्म, २९—तरह, ३०—दवा, ३१—छुपी हुई आग, ३२—गाहक, ३३—वफ़ा करने वाला, ३४—ज़ालिम, ३५—चाहने वाले ३६—बाल,

हम हैं ख़ामोश, मगर दिल से सदा[37] उठती है,
देके दिल आपको, हम दिल में पशेमाँ होंगे !

—"क़ौमपरस्त" देहलवी

फ़र्क़ परवानों में, और हममें नुमायाँ होंगे,
वह जले आग में, हम आप पे क़ुर्बां होंगे !
तुम सलामत रहो, वादों के भुलाने वाले,
सैकड़ों मरतबा यह अह्द,[38] यह पैमाँ[39] होंगे !
आज पीते हैं, घटा आई है घिर कर ज़ाहिद,[40]
कल किसी वक़्त खुलेगा तो मुसल्माँ होंगे !

—"शौकत" थानवी

दिल लरज़ जायगा, बाल उनके परेशाँ होंगे,
इश्क़ में यूँ भी, मेरी मौत के सामाँ होंगे !
आपके तीर, जो पैवस्ते[41] रगे-जाँ होंगे,
वही हसरत कभी होंगे, कभी अरमाँ होंगे !
और क्या इसके अलावा, हमें अरमाँ होंगे,
तेरे सदक़े[42] कभी होंगे, कभी क़ुर्बां होंगे !
कुछ उजाला, कुछ अँधेरा नज़र आएगा हमें,
चाँदनी रात में, बाल उनके परेशाँ होंगे !
सामने आयगी, जज़बाते[43] वफ़ा की तस्वीर,
जब असीराने[44] क़फ़स मह्वे[45] गुलिस्ताँ[46] होंगे !
चैन उलफ़त में, मुझे मरके भी आने का नहीं,
यह घने बाल तुम्हारे जो परेशाँ होंगे !
दिल से थम-थम के, ज़रा खींचने वाले खींचे,
एक-एक तीर में, लिपटे हुए अरमाँ होंगे !
आइना सामने रक्खा है, खुली हैं ज़ुल्फ़ें,
देख कर हम उन्हें, हैरानो-परेशाँ होंगे !
बुत्कदे[47] से यह भला जायँगे मसजिद की तरफ़,
होके हिन्दू, कभी "बिस्मिल" न मुसल्माँ होंगे !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

३७—आवाज़, ३८—इक़रार, ३९—वादा, ४०—परहेज़गार, ४१—मिलना, ४२—निछावर, ४३—ऊँचे भाव, ४४—क़ैदी, ४५—मस्त, ४६—बाग़, ४७—मन्दिर,

फ़ारस के वर्तमान शासक रज़ाशाह के आदर्श

"विदेशी विनियन्त्रण से तो बोलशेविज़्म भी बेहतर है"

[हाल ही में रोज़िटाफ़ॉरबीज़ नामक एक प्रसिद्ध लेखक ने फ़ारस के शाह से भेंट की थी। उसमें उन्होंने शाह से जो बातचीत की थी, उसका कुछ महत्वपूर्ण अंश पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे दिया जाता है। —सं० 'भविष्य']

कुछ दिन हुए मैंने फ़ारस के वर्तमान शासक रज़ाशाह से भेंट की थी। वे उस समय अपने ग्रीष्म-काल के महल में थे, जिसका नाम "सादाबाद" है। शाह एक कुरसी पर बैठे हुए थे। सामने एक बहुत सुन्दर मेज़ रक्खी हुई थी, जिस पर हाथी-दाँत और सीप का बारीक काम किया हुआ था। वे महल के जिस कमरे में मुझसे मिले, उसमें भी रङ्गीन लकड़ी का बहुत ही ख़ूबसूरत काम बना हुआ था। फ़ारस की यह कारीगरी तो बहुत प्रसिद्ध है। और देशों में ऐसा नफ़ीस और ख़ूबसूरत काम बहुत कम पाया जाता है। फ़ारस के विषय में शाह ने मुझसे जो सब से पहिली बात कही, वह यह थी कि—"फ़ारस के निवासियों को चाहिए कि अब वे विदेशियों की सहायता लिए बिना अपना काम चलाना सीखें। मैं आशा करता हूँ कि मैं यह कार्य शीघ्र ही कर सकूँगा। प्रायः पाँच वर्षों में मैं फ़ारस-निवासियों को उस हद तक पहुँचा दूँगा, जब कि उन्हें राज-कार्य चलाने के लिए विदेशी पदाधिकारियों की आवश्यकता न पड़ेगी। उस समय तक मैं देश के भिन्न-भिन्न विभागों में काम करने वाले सब विदेशी अधिकारियों को भी हटा सकूँगा।" आजकल कई जर्मन, बेलजियन तथा अङ्गरेज़ शाह के विभिन्न विभागों में कार्य कर रहे हैं। रज़ाशाह यह प्रयत्न कर रहे हैं कि यह कार्य फ़ारस-निवासी ख़ुद कर सकें। इसके लिए उन्हें इन विभागों में शिक्षा दी जा रही है। शीघ्र ही वे अपने देश का काम ख़ुद कर सकेंगे। फिर विदेशियों को नौकर रखने की कोई ज़रूरत न रहेगी। कुछ सोच कर शाह फिर बोले—"फिर भी हमें ख़ास-ख़ास काम के लिए तो विदेशी विद्वानों की आवश्यकता पड़ेगी ही। कृषि, विज्ञान, उद्योग तथा अन्य राष्ट्रोन्नति के कार्यों में तो हमें दक्ष पुरुषों से सहायता लेनी ही पड़ेगी। परन्तु मैं यह प्रयत्न कर रहा हूँ कि जहाँ तक हो सके, फ़ारस के निवासी अपना काम ख़ुद ही चला सकें। फ़ारस-निवासियों को इस विषय में काफ़ी अनुभव भी है। एक समय ऐसा था, जब कि वे एक महान साम्राज्य का शासन करते थे।"

मैंने शाह से पूछा—क्या इस देश में बोलशेविज़्म फैलने का डर है?

शाह ने बड़ी उत्सुकता से उत्तर दिया—नहीं-नहीं, बोलशेविज़्म का तो हमें ज़रा भी भय नहीं है। यहाँ के कई लोग बाकू तक जा चुके हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि साम्यवादी सरकार के शासन में रूस की आर्थिक अवस्था कितनी ख़राब हो गई है। वे यह कभी न चाहेंगे कि हमारी वर्तमान सरकार की जगह साम्यवादी सरकार स्थापित की जावे। फिर फ़ारस-निवासी स्वभाव से ही शान्त-चित्त होते हैं। उन्हें सामाजिक क्रान्ति पसन्द नहीं है। वे साम्यवाद के सिद्धान्तों से सहमत भी नहीं हैं। वे अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा करना चाहते हैं।

मैं बीच में बोल उठा—कुछ दिनों पहिले चीन का भी तो यही हाल था। पर आज चीन का क्या हाल है?

शाह बोले—"चीन और फ़ारस में बहुत अन्तर है। चीन तो धीरे-धीरे विदेशियों के पञ्जे में पड़ रहा था। इस विदेशी विनियन्त्रण के भूत से बचने के लिए इसे केवल एक ही मार्ग था और वह था, बोलशेविज़्म। परन्तु फ़ारस को विदेशी विनियन्त्रण का कोई भय नहीं है।" यह कह कर शाह चुप हो गए। ये बातें उन्होंने बड़ी उत्सुकता से की थीं। थोड़ी देर बाद वे फिर बोले—"संसार में दो सब से बड़े रोग हैं, जिनसे देशों को हरदम बचने का प्रयत्न करना चाहिए। उनमें से पहला है, विदेशी शासन या विनियन्त्रण, और दूसरा साम्यवाद। इनमें भी विदेशी शासन साम्यवाद से भी

वर्तमान ईरान के विधाता रिज़ाअली-पहेलवी

बुरा है। और यदि फ़ारस को इन दो मार्गों में से एक किसी को स्वीकार करना पड़ा, तो मैं तो साम्यवाद को बेहतर समझूँगा।"

इसके बाद वे मुझसे कृषि के विषय में बातचीत करते रहे। वे इस विषय पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। वे बोले—"हमारे यहाँ एक कृषि-विद्यालय है, जहाँ हम लोग कृषि-सम्बन्धी प्रयोग कर रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि कुछ दिनों में मैं कृषि के ऐसे विद्वान तैयार कर सकूँगा, जो इस देश के प्रत्येक भाग में दौरा करके लोगों को कृषि-सम्बन्धी उपयोगी बातें बता सकेंगे।

"मैं उद्योग की भी हर प्रकार से उन्नति करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। मैं जल्दी ही कई नए कारख़ाने स्थापित करने वाला हूँ। मैं उनका वर्णन करके आपका समय नहीं नष्ट करना चाहता। परन्तु मेरा विचार है कि मैं स्वदेशी वस्त्र, बनाने के उद्देश्य से इस कार्य सम्बन्धी सब कारख़ाने निर्माण करूँगा। जिससे आज़र बैजान के खेतों से रुई निकालने से लेकर वस्त्र तैयार होने तक की सारी विधियाँ फ़ारस में ही हो सकेंगी। इस वक़्त मैं जो यह ख़ाकी वस्त्र पहिने हुए हूँ, यह फ़ारस का ही बना है। और यदि अगले साल आप यहाँ आए तो यह बहुत ही सम्भव है कि आप मुझे देश के सब से बड़े कारख़ाने में पाएँ। क्योंकि मैंने फ़ारस की औद्योगिक उत्पत्ति की उन्नति करने की ठान ली है। मैं यह चाहता हूँ कि फ़ारस अपनी सारी माँगों को ख़ुद पूरा करे।

"फ़ारस के लोग बहुत आरामतलब हैं, मैं चाहता हूँ कि मैं इन्हें कार्यशीलता का पाठ पढ़ाऊँ। वे अब दूसरों पर काफ़ी दिन निर्भर रह चुके हैं। मैं चाहता हूँ कि वे अब अपने पैरों पर खड़े होना सीखें। मैं उन्हें हर तरह की शिक्षा देने का प्रयत्न कर रहा हूँ। बेहतर तो यह होता कि मैं यह सब शिक्षा यहीं दे सकता, पर इसका पूर्ण प्रबन्ध न होने के कारण मुझे उन्हें यूरोप के विभिन्न देशों में भेजना पड़ता है। पर मैं आशा करता हूँ कि ये लोग यह कभी न भूलेंगे कि प्रत्येक देश की संस्कृति अलग-अलग होती है। यूरोप के देशों की नक़ल करना बेवक़ूफ़ी है। फ़ारस की संस्कृति बहुत पुरानी है। मैं चाहता हूँ कि वे अपने देश की संस्कृति का अनुकरण करते हुए हर प्रकार से अपने देश की उन्नति करने का प्रयत्न करें। इसके लिए उन्हें किसी दूसरे देश की नक़ल करने की आवश्यकता नहीं है। मैं चाहता हूँ, वे अपने ढङ्ग के निराले ही हों और अपने देश से प्रेम करते हों।"

मैंने शाह को उनके उत्साहपूर्ण कार्य के लिए बधाई दी। इस पर वे बोले—"मैंने अभी तक जो कार्य किया है, उससे मुझे ज़रा भी सन्तोष नहीं है। मुझे अभी इतना काम करना है कि मैं उन्हें जल्दी-जल्दी नहीं कर पाता हूँ। मैंने सेना का सुधार सब से पहले किया है। इस तरह मैंने नवीन फ़ारस की नींव डाली है।"

इसके बाद मैंने शाह से बिदा ली। रज़ाशाह साधारण मनुष्य नहीं हैं। अपनी अपूर्व मानसिक शक्ति तथा उद्योगशीलता द्वारा वह फ़ारस में जो सुधार कर रहे हैं, वे फ़ारस को संसार का एक बलिष्ठ राज्य बना देंगे। उनका केवल एक उद्देश्य है और वह है, फ़ारस की उन्नति। इसी उद्देश्य से वे फ़ारस की तमाम जातियों को तथा विभिन्न धर्मावलम्बियों को एकत्र कर इस महान आदर्श की ओर बढ़ा रहे हैं।

* * *

कलामे-गुलज़ार

[श्री० देवीप्रसाद गुप्त "गुलज़ार" बी०ए०, एल्-एल्०बी०]

पूछते हो रोज़ क्यों जाता हूँ बँगलों की तरफ़,
क्या नहीं समझे हो, अब तक पॉलिसी सरकार की?
साल भर से दे रहा हूँ उनको अपनों की ख़बर,
क्यों न देखूँ मैं ख़बर फिर पॉनियर अख़बार की!
शायद उन्हें भी भेज दिया हो, ख़ुदा ने ताज,
ऑनर का 'रोल' देखते हैं शेख़ जी भी आज!
जब ख़ुशामद की सनद उनको अता करने लगे,
हँस के साहब ने कहा, तुम 'रायसाहब' हो गया!!

* * *

धर्म-व्यवसाइयों का नाश

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

बुद्धिमान भाइयो, मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या धर्म भी व्यवसाय की वस्तु है? क्या धर्म बेचा और ख़रीदा जा सकता है? क्या यह भण्ड-पाखण्ड नहीं, कि धर्म को एक आदमी पुण्य समझे और दूसरा उसे पैसा पैदा करने का ज़रिया?

आप सारे हिन्दुस्तान में घूम जाइए, धर्म के व्यवसाइयों की सर्वत्र भरमार है। इन व्यवसाइयों की करोड़ों की आय को देख कर आप कलेजा थाम कर बैठ जायँगे। चाहे और किसी रोज़गार में नफ़ा हो या नुक़सान, पर इसमें नफ़ा ही नफ़ा है। अमीर और ग़रीब लोग, अन्धों और कुढ़ों की भाँति अपनी गाढ़ी कमाई धर्मखाते लगाते हैं। हज़ारों मन्दिर, हज़ारों क्षेत्र और हज़ारों ठाकुरद्वारे—न जाने कितनी और ऐसी ही संस्थाएँ—इस खाते में खोली गई हैं, और उनका करोड़ों रुपयों का अबाध व्यापार चल रहा है!

आप जाइए प्रयाग के गङ्गा-सङ्गम पर। फूल-बताशे वाला कहता है, एक पैसे के फूल चढ़ा कर पुण्य लूटो। दूध वाला कहेगा, एक पैसे का दूध चढ़ा कर पुण्य लूटो। पर ये लोग स्वयं न एक फूल, न एक बूँद दूध ही चढ़ाते हैं। या तो इन्हें पुण्य लूटने की अपेक्षा पैसा लूटना अधिक प्रिय है और या ये जानते हैं कि इसमें पुण्य-उण्य कुछ नहीं, कोरा ढकोसला है।

हम त्रिवेणी-स्नान को गए। ये लोग डाकुओं और शिकारी कुत्तों की भाँति पीछे पड़ गए। दूध चढ़ाइए गङ्गा माई पर, फूल-बताशे चढ़ाइए जजमान। एक दूध वाला गङ्गा में घुस कर हमारे पास ही आ गया और स्नान में बाधा डाल कर बोला—दूध चढ़ाइए, महाराज!

हमने ग़ुस्सा पीकर कहा—इससे क्या होगा?

"पुण्य होगा—गङ्गा में दूध चढ़ाना हिन्दू-धर्म है।"

हमने कहा—चढ़ा दो।

उसने ज़रा सी लुटिया में दूध उलट कर कहा—कितना, जजमान!

हमने कहा—उसमें है ही कितना, सब चढ़ा दो।

"दो सेर है बाबू!"

"सब उलट दो।"

बदनसीब ने सारा दूध गङ्गा में बहा दिया। और निश्चिन्त हो घाट पर बैठ, हमारे स्नान की प्रतीक्षा करने लगा। जब हम निवृत्त होकर चलने लगे तो बोला—पैसे दीजिए जजमान?

"पैसे कैसे?"

"दूध चढ़ाया था न।"

"फिर बुरा क्या किया था?"

"तब पैसे दीजिए।"

"पैसे क्यों दें?"

"आपके कहने से दूध चढ़ाया था।"

"हमारे कहने से पुण्य ही तो किया? हर्ज क्या है?"

"परन्तु आपके नाम का चढ़ाया गया था।"

"अपने नाम का तुमने क्यों नहीं चढ़ाया? क्या तुम हिन्दू नहीं हो?"

"मैं ब्राह्मण हूँ।"

"यदि तुम चढ़ाओ तो पुण्य नहीं होगा?"

"होगा क्यों नहीं।"

"फिर पुण्य लूटो। पैसे क्या करोगे? क्या पैसे पुण्य से भी बढ़ कर हैं?"

हम चल दिए और वह घबरा कर पीछे दौड़ा, बोला—महाराज, पुण्य आप लीजिए, मुझे तो पैसे दीजिए।

"क्यों, क्या पुण्य से तुम्हारा पेट भर गया है?"

हम और आगे बढ़ गए, तब उसने रास्ता रोका। अन्त में पुलिसमैन को बुला कर हमने उसका विरोध किया।

आप कहेंगे, चार पैसे के लिए ग़रीब को ठग लिया। पर ये जो पीढ़ियों से चार-चार पैसे ठगते चले आ रहे हैं, इसका क्या जवाब है?

प्रयाग में जाइए—काशी, अयोध्या—जी चाहे जहाँ जाइए। उत्तर, दक्षिण में जहाँ भी तीर्थ हैं, धर्म-व्यवसाइयों को अतिशय दुष्ट, निर्लज्ज, बेईमान, धूर्त, पाखण्डी और गुण्डे पावेंगे।

यदि आपने काशी और गया के पण्डों की गुण्डागिरी देखी है, तो आप समझ जाइए।

तमाम भारतवर्ष में मिला कर १,५०० से ऊपर प्रसिद्ध तीर्थ हैं, जिनमें अनगिनत मन्दिर और बेशुमार देवता बैठे-बैठे यात्रियों की प्रतीक्षा करते रहते हैं। इन तीर्थों में प्रति वर्ष लगभग ५ करोड़ यात्री पहुँचते हैं और डेढ़ अरब से ऊपर धन जनता का इस मध्ये ख़र्च होता है, जिसमें से ६० करोड़ के लगभग मन्दिरों, महन्तों, और पुजारियों के पेट में जाता है!

इनमें बहुत से पुजारी और महन्त राजा की तरह वैभव से रहते हैं। उनके हाथी-घोड़े, महल, ठाठ-बाट सब है। बहुतों को राजा के अधिकार तक मिले हुए हैं। इनकी आमदनी अबाध है। ये सोलह आने उस धन के स्वामी हैं, जो देवता को चढ़ाया जाता है। ये लोग बहुधा वेश्यागामी, पर-स्त्रीगामी, लुच्चे-पाखण्डी और कुपढ़ हैं। दक्षिण के मन्दिरों में देवदासियों की घटना जिसने सुनी है, वह इस बात पर बिना अफ़सोस किए नहीं रह सकता कि धर्म के नाम पर व्यभिचार का समर्थन कितना गर्हित है! और भी बहुतेरे मन्दिर और सम्प्रदाय व्यभिचार की प्रवृत्ति को प्रश्रय देते हैं। वाममार्ग और चार्वाक सम्प्रदाय के सिद्धान्त जगत-व्यापक हैं। वल्लभ सम्प्रदाय का बहुत सा भण्डाफोड़ स्वामी ब्लाकटानन्द और बम्बई में चलाए हुए महाराज लाइबिल केस में बहुत कुछ हो गया है।

वल्लभ सम्प्रदाय में शिष्य को यह उचित है कि अपनी प्रत्येक भोग्य वस्तु को गुरु के समर्पण करे। इस सम्प्रदाय के ६ भाव प्रसिद्ध हैं। सुनिए, कैसे मज़ेदार हैं:—

१—सब तरह केवल गुरु का आसरा पकड़ना।

२—श्रीगुरु की भक्ति से ही मुक्ति मिल सकती है।

३—लोक-लाज तथा वेद-शास्त्र की आज्ञा तज, गुरु की शरण आना।

४—देव और गुरु के सम्मुख नम्र रहना।

५—मैं पुरुष नहीं हूँ, किन्तु वृन्दावन की गोपी हूँ, यह समझना।

६—नित्य गुसाईं जी के गुण गाना।

७—गुसाईं जी के नाम का महत्व बढ़ाना।

८—गुसाईं जी जो कहें या करें, उसी पर विश्वास करना।

९—वैष्णवों का समागम और सेवा करना।

इन नौ नियमों में जो गुप्त भेद हैं, वह तो विचारशील पाठक समझ सकते हैं। पर दिमाग़ को ग़ुलाम करने के लिए इस सम्प्रदाय की पुस्तकों में और भी विचित्र बातें लिखी गई हैं। जैसे—

"तन, मन, धन गुरु जी के अर्पण!"

"जो कोई गुरु और भगवान में भेद रक्खे, वह पक्षी बने!"

"जो गुरु की बात ज़ाहिर करे, वह तीन जन्म तक कुत्ता बने!"

पाठक सोचें कि उपरोक्त नियम स्त्री शिष्याओं के लिए कैसे भयानक हैं!!

व्यभिचार के समर्थन में सुनिए क्या लिखा है:—

"........इसलिए ईश्वर और गुरु की सेवा अवश्य करनी चाहिए। ....पराई वस्तु भोगने का दोष तो सृष्टि को लगता है। ईश्वर के लिए तो कुछ पराया है ही नहीं। इसलिए व्यभिचार का दोष ईश्वर ने सृष्टि को ही दिया है। अज्ञानी (?) कहते हैं कि कोई पुत्र-पुत्री पिता से कहे कि मैं तुम्हारी स्त्री हूँ, इसमें कितनी अनीति है। इसलिए ईश्वर के साथ जार-भाव की प्रीति रखने वाले भी अधर्मी हैं। इसमें यह बात सोचने के योग्य है, कि गोपियों ने जो कृष्ण के साथ जार-भाव की प्रीति की थी, तो क्या उन्होंने अधर्माचरण किया था?........."

इस सम्प्रदाय की और भी गन्दी आज्ञा का नमूना सुनिए:—

"श्री० स्वामी जी ने अपने शरीर से करोड़ों सखी प्रकट कीं। जिनके नाम ललिता, विशाखा आदि हुए। जो सुन्दर जार-कर्म में अत्यन्त चतुर थीं, उन्हें ललिता कहते थे और जो उल्टे आसन (!!!) से जार-कर्म कराने में चतुर थीं उन्हें विशाखा.........!!!"

एक बार 'भारत-सुदशा-प्रवर्तक' नामक मासिक पत्र में स्वामी ब्लाकटानन्द ने एक पत्र-व्यवहार छपाया था। पाठकों के ज्ञानार्थ उसका मनोरञ्जक उद्धरण हम यहाँ देते हैं:—

"जानना चाहिए कि वल्लभ सम्प्रदाय के महापुरुषों ने भारतवर्ष के देशोद्धार का एक महामन्त्र निर्धारण किया था। हमारे पूज्यपाद गुरुवरों ने उस मन्त्र का जप सिखाया था और हज़ारों पुरुष ही नहीं, बल्कि इस देश की स्त्रियाँ भी दीक्षित बन थीं। उस पवित्र मन्त्र में जो अद्भुत शक्ति थी, उससे लाखों कुलाङ्गनाओं का उद्धार होता था और हो रहा है। मन्त्र का शुद्ध पाठ इस प्रकार है—'तन मन धन श्री० गोसाईं जी के अर्पण!' मुझे भी गुरुभक्ति के अनुरोध से अपने गोलोकवासी स्वामियों की महिमा प्रकाश करने का उत्तेजन हुआ और मेरी वह भक्ति इतनी दृढ़ होती गई कि मैंने तीन पुस्तकें तैयार कीं—(१) वल्लभ-कुल-चरित्र-दर्पण (२) वल्लभ-कुल-दम्भ-दर्पण, और (३) वल्लभ-कुल छल-कपट दर्पण नाटक। इनका गोला उड़ने से 'कान फूकागद' में आग लग गई और गद्दी पर श्री १०५ गोवर्धनलाल जी महाराज ने अपने भण्डारी को भेजा। उसने यहाँ आकर एक चिट्ठी हमारे पास अपने नौकर के हाथ भेजी, जिसका अविकल उद्धरण यहाँ प्रकाशित करते हैं। (सही) ब्लाकटानन्द।"

"स्वस्ति श्री० सर्वोपमा स्वामी ब्लाकटानन्द जी जोग लिखी इलाहाबाद से भण्डारी हरबिलास राय का भगवत स्मरण बाँचना। आगे मैं यहाँ ख़ास तुम्हारे साथ मिलने के लिए आया हूँ और यहाँ पर गोवर्धननाथ के मन्दिर में उतरा हूँ। श्री टिकैत १०८ श्री० गोवर्धनलाल जी महाराज ने मुझे भेजा है कि तुमने ये जो तीनों पुस्तकें छापी हैं—(१) वल्लभ-कुल-चरित्र-दर्पण (२) वल्लभ-कुल-दम्भ दर्पण, (३) वल्लभ कुल-छल-कपट-दर्पण—सो इन कुल बातों का गुप्त भेद हमारे महाराज और अन्य स्वरूपों का तुम्हें किसने बताया? धर्म से कहो, क्योंकि तुम हमारे मित्र हो। यदि फ़र्ज़ कर लिया जाय

कि ये बातें सच्ची भी हैं, तो भी ये गुरु के घर की बातें तुम्हें लिखनी उचित नहीं थीं। ख़ैर, आदमी से भूल हो जाती है, अब आप कृपा करके उन लोगों का नाम लिखो, जिन्होंने इस गुप्त चरित्र का भेद दिया है और अब यह भी लिखो कि आपकी मन्शा क्या है। हम सब तरह तैयार हैं। हमारे महाराज की यही आज्ञा है। मिती मगशिर, सुदी ४।१९६४।

द० भण्डारी हरविलास"

"भण्डारी जी ने जिस काम की प्रेरणा की है, उसमें हमारी सम्मति है।

द० मथुराप्रसाद पुजारी"

इस पत्र का रजिस्टर्ड उत्तर ता० १७।१२।०७ ई० को १०८ महाराजाधिराज श्री० गोस्वामी जी को दिया गया, जिसका आशय यह था :—

"आप तथा वल्लभ-कुल के समस्त भूषण स्वरूप नीचे लिखी चार बातों को मानने की प्रतिज्ञा करो, तो मैं अपनी बनाई समस्त पुस्तकों को मिट्टी का तेल डाल कर भस्म कर दूँ अथवा आप स्वयं जिस रीति से चाहो उसी रीति से अपने सामने उन्हें जला दो। आपके लाखों चेले भारत में हैं, वे भले ही इन बातों को धर्म समझते हों, परन्तु न्याय-दृष्टि से ये बातें सर्व-साधारण के विरुद्ध हैं।

(१) चेलियों को पुत्री समान समझो......धर्म-व्यवहार रक्खो।

(२) विवाह में वेश्या-नाच बन्द कराओ—क्योंकि यह नीच कर्म शूद्रों ने निकाला है। यह कर्म गोवध की सहायता करता है।

(३) स्त्री-पुरुषों को मर्यादा में रक्खो। अर्थात् एक-दूसरे के हाथ का छुआ न खाय। परस्पर सहभोज बन्द कराना चाहिए।

(४) शिष्य तथा सेवकों को जूठा भोजन देना वाम-मार्ग का अनुकरण है, जो वैष्णव धर्म के सर्वथा विरुद्ध है.........."

इस पत्र-व्यवहार से पाठक बहुत-कुछ समझ गए होंगे। इस सम्प्रदाय के बम्बई के मन्दिर के गुसाईं जी के सम्बन्ध में एक बार एक बम्बई के पत्र 'टाइम्स' ने लिखा था कि—

"महाराजों की करतूत निन्द्य है और इसीलिए वे प्रकाश्य में नहीं आते। यदि वे कोर्ट में साक्षी देने को खड़े हों, तो उन पर उनके नीच कर्म के लिए पब्लिक की फटकार बिना पड़े न रहे। और इससे उनकी अज्ञानी शिष्य-मण्डली में कमी हो जाय......।"

'आप अख़्तियार' नाम का एक अख़बार लिखता है :—

"हिन्दुओं के महाराज का मन्दिर एक छिनालख़ाना, उनकी बैठक एक बेआबरू कुटनी का घर, उनकी दृष्टि वेश्यागमन, उनका अङ्ग नीच हविस का घर, और उनके शरीर का सब ठाठ-बाट अपवित्रता, मैलापन और नीचतायुक्त है। उन्हें ईश्वरावतार की जगह राक्षस का अवतार कहना चाहिए!"

लोगों में मूर्खता यहाँ तक फैल गई है कि बहुत लोग तीर्थों में अपनी स्त्रियों तक को दान कर देते हैं और फिर कुछ रुपयों में मोल ले लेते हैं। यह बात स्त्रियों के लिए तो घोर अपमान की है ही, साथ ही इस मूर्खता का कभी-कभी मज़ेदार परिणाम निकलता है। पण्डे दान की हुई स्त्री को वापस देने से इन्कार कर देते हैं और बड़ा फ़ज़ीता होता है।

जिस देश में ४० वर्ष के भीतर १७ अकाल पड़ें और उसमें डेढ़ करोड़ आदमी भूख से तड़प-तड़प कर मर जायँ; जिस देश में प्रति वर्ष १० लाख, प्रति मास ८६ हज़ार, प्रति दिन २,८८०, प्रति घण्टे १२० और प्रति मिनिट २ मनुष्य 'हाय अन्न! हाय अन्न!!' करते मर रहे हों; जहाँ ४० लाख भिखारी टुकड़ा माँगते फिरें; जहाँ १० करोड़ किसान एक पेट खाएँ, वहाँ ये मुस्टण्डे धर्म-व्यवसायी, जिनसे देश को कुछ भी लाभ नहीं हो रहा है, प्रजा की गाढ़ी कमाई का ६० करोड़ रुपया प्रति वर्ष खा जायँ, जिनका सिर्फ़ सूद ही १० वर्ष में पहाड़ के समान हो जाता है। क्या देश इस पर विचार न करेगा?

उदयपुर रियासत में नाथद्वारा एक स्थान है। वहाँ आप जाइए। देख कर अक़्ल हैरान हो जायगी। उस ऊजड़ और बीहड़ प्रान्त में कोई वस्तु दुष्प्राप्य नहीं। एक से एक बढ़िया खाद्य द्रव्य वहाँ आपको प्रस्तुत मिलते हैं। वह सब श्रीठाकुर जी की भोग के बदौलत। चार पैसे में ऐसा दूध लीजिए, जैसी रबड़ी—केसर, कस्तूरी, मेवा मिला हुआ। वहाँ केसर-कस्तूरी चक्कियों में पिसती है। गुजरात और दक्षिण के भक्तजन टूट पड़ते हैं। स्त्रियों की भक्ति की क्या कही जाय! ठाकुर जी के भोग की कथा सुनिएगा? एक बार किसी राजा ने एक बहुमूल्य मोती मूर्ति पर चढ़ाया—उसे पीस कर उसका चूना बना कर ठाकुर जी को भोग लगा दिया गया। सवा लाख रुपयों का भोग लगना साधारण है। बीस मन दूध का भोग लगता है, फिर यह सब अनावश्यक खाद्य पदार्थ पण्डे लोग बाज़ार में बेचते हैं और इस प्रकार यहाँ सदैव ही 'टके सेर भाजी टके सेर खाजा' का मामला बना रहता है। यहाँ पुजारी जी को अपनी राज्यसत्ता प्राप्त है।

भारत का नाम जपिए, उसे उबारिए

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

सदय स्वभक्त के हृदय में प्रकट होके,
बोले राम, "आप कुछ सोचिए-विचारिए।
छोड़ काम-धाम सब मेरा नाम जप कर,
मुफ़्त पर यों न तन-मन, धन वारिए॥
भूल बात क्लेश-भार खोने मुक्त होने की भी,
दीन जनों की दशा तनिक उर धारिए।
राम नाम जपने के योग्य ही नहीं हैं आप,
भारत का नाम जपिए, उसे उबारिए!!"

* * *

काशी के और गया के पण्डों और पुरोहितों का क्या कहना है? करोड़ों की सम्पदा के वे स्वामी बने हुए हैं।

जगद्गुरु शङ्कराचार्य की सम्पत्ति भी असाधारण है! हरद्वार, ऋषिकेश में भी लाखों के स्वामी अनेक धर्म-व्यवसायी हैं। ग़रज़ भारत का कोई कोना ऐसा नहीं बचा, जो इन धर्म-व्यवसायियों से ख़ाली हो।

मैं एक बहुत साधारण उदाहरण आपके सामने रखना चाहता हूँ। यहाँ नई दिल्ली में, जहाँ मैं रहता हूँ, नई दिल्ली आबाद होने से प्रथम एक रद्दी-सा पुराना हनुमान जी का मन्दिर था। नई दिल्ली की बस्ती होते ही इसकी तक़दीर चेत गई। गर्मियों में तो साधारण ही दशा रहती है, मगर सर्दियों में ज्योंही शिमला उतर आता है, मङ्गलवार को हज़ारों आदमियों का ठठ जम जाता है। मारे मिठाई का ढेर लग जाता है। इनमें बड़े-बड़े पढ़े-लिखे ऊँचे दर्जे के ऑफ़ीसर लोग ही रहते हैं। स्त्रियों का दल-बल सब से अधिक रहता है। यह अभी प्रारम्भ है, मैं समझता हूँ कि अति शीघ्र वह दिन आएगा, जब यह मन्दिर एक बड़ी भारी जागीर बन जाएगा। मैंने इसके पुजारी को भी देखा है, जो अति साधारण आदमी है।

यह डेढ़ अरब धन का प्रति वर्ष अपव्यय देश के लिए कितना घातक है और इसके सदुपयोग की कितनी आवश्यकता है, यह विचारना चाहिए। आर्य-समाज ने गुरुकुलों को खोल और उनके वार्षिकोत्सवों को धार्मिक मेले का रूप देकर हमारे सामने एक नई स्कीम रक्खी है। आज भारत के लगभग ७० लाख विद्यार्थियों को, जो इस समय स्कूल, कॉलेजों में पढ़ते हैं, नई-नई विद्या सीखने के लिए इन डेढ़ अरब रुपयों का सच्चा सद्व्यय हो सकता है। स्कूलों और कॉलेजों में बच्चे किस महँगे ढङ्ग पर पढ़ते हैं और ग़रीब बच्चों का पढ़ना कितना कठिन है। क्या किसी मन्दिर के पुजारी या महन्त ने कभी किसी होनहार युवक को स्कॉलरशिप देकर किसी उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करने में सहायता दी है?

हम यह मानते हैं कि कुछ महन्तों ने कुछ धर्मार्थ संस्थाएँ खोल रक्खी हैं। जैसे बाबा काली कमलीवाले के औषधालय और क्षेत्र, इसी प्रकार और अनेक मन्दिरों में पाठशाला आदि। पर वास्तव में ये सब सेवाएँ नगण्य हैं। बहुत करके तो धोखे की टट्टी हैं, इन्हीं जालों पर कबूतर चुगते हैं और मुर्ग़ियाँ फँसती हैं।

जिन्होंने कलकत्ते के मारवाड़ियों का धर्म-अड्डा गोविन्द-भवन का हाल सुना है, वे समझ सकते हैं कि इन धर्म-व्यवसायियों के जो भेद न खुलें वही अच्छे हैं।

हम ऐसे महन्तों को जानते हैं, जो यहाँ, दिल्ली से लड़कियाँ ख़रीद कर ले जाते हैं और उन्हें रखेली बनाते हैं। वेश्यागमन तो उनकी प्रसिद्ध बातें हैं। हम ऐसे महन्तों को भी जानते हैं, जिनकी २-२ धर्म-रखेलियाँ हैं।

क्या इन मन्दिरों, महन्तों, धर्म-व्यवसायियों से किसी को शरीर या आत्मा को लाभ होना सम्भव है? आपके घर बैठ कर एक आदमी पूजा-पाठ, जप कर जाय और आप उसकी मज़दूरी दे दें, तो क्या उसका पुण्य आपको मिल जायगा? एक तो यही बात घोर सन्देहास्पद है कि ऐसे पूजा-पाठों में कुछ पुण्य है या नहीं। फिर हो भी तो वह करने वाले को मिलेगा या कुछ पैसे देकर आपको। क्या आपने काशी के दशाश्वमेध पर गोदान नहीं देखा, कि किस भाँति उसी ब्राह्मण की बछिया की पूँछ को छू-छूकर उसी को पैसा देने से लोग गोदान का पुण्य लूट लेते हैं। धर्म और भगवान को इस प्रकार ठगना वास्तव में आश्चर्य का विषय है, नीच कर्म भी है।

एक समय था कि ईसाई लोग पादरियों के पास क्षमा कराते और स्वर्ग के लिए हुण्डी भेजा करते थे। भारतवर्ष में भी मरे हुए इष्ट-मित्रों को आश्विन में खाना पहुँचाया जाता है, पर हम यह पूछते हैं कि सभ्य भारत में भी क्या ये ढकोसले जीवित रहने चाहिए? इनका नाश न होना चाहिए?

हम कहते हैं कि इन धर्म-व्यवसायियों का बिना नाश किए हिन्दू बच्चों की दिमाग़ी ग़ुलामी कभी दूर नहीं होगी। श्रद्धा और भक्ति एक बड़ी चीज़ ज़रूर है, परन्तु उसमें विवेक और विचार-स्वातन्त्र्य होना परमावश्यक है, अन्ध-विश्वास और मूढ़ता के कारण आत्मा के विरुद्ध केवल दिमाग़ी ग़ुलामी से बचने के लिए आवश्यक है। हम धर्म के पुराने ढकोसलों को दृढ़पूर्वक नष्ट कर दें। धर्म, गङ्गा में फूल और दूध चढ़ाना नहीं, महन्तों और गुसाइयों की सेवा करना नहीं, घण्टा-घड़ियाल हिलाना नहीं, घण्टों मूढ़ की भाँति आँख बन्द करके बैठना भी नहीं।

धर्म है—दया, विश्वप्रेम, लोकहित और आत्म-बलिदान।

("तब, अब, क्यों, और, फिर ??" नामक अप्रकाशित ग्रन्थ से, जो शीघ्र ही इस संस्था द्वारा प्रकाशित होने वाला है)

* * *

स्त्रियों का ओज

धाय

[लेखक—???]

"प्रण कीजिए महाराज, आप तेजस्वी पृथ्वीराज के औरस पुत्र हैं।"

"क्या प्रण कराओगे सरदारो ?"

"हम राणा विक्रमादित्य का अत्याचार नहीं सहन कर सकते।"

"यह तो ठीक ही है, वे बड़े उद्धत हो गए हैं।"

"कल उन्होंने सालूँबा सरदार की तलवार छीन कर दरबार से निकाल दिया।"

"राम-राम, ऐसे वृद्ध सरदार का ऐसा अपमान ?"

"उस दिन उन्होंने चूँणावत सरदार की पाग सिर से उतार ली।"

"और चित्तौर के रक्षक सरदार की ?"

"महाराज, हम राणा का यह अपमान नहीं सह सकते।"

"सो तो होना ही चाहिए।"

"हम प्राण देकर गद्दी की प्रतिष्ठा की रक्षा वंश-परम्परा से करते रहे हैं, सो क्या इसलिए ?"

"नहीं, नहीं, इसलिए नहीं।"

"तब महाराज ?"

"तब क्या सरदारो ?"

"हमने निश्चय किया है।"

क्या निश्चय किया है ?"

"हम उन्हें......"

"हाँ, तुम उन्हें......?"

"गद्दी से उतार देंगे।"

"बिलकुल ठीक है, उतार दो।"

"और......"

"हाँ, और......?"

"हम आपको राज्याधिकार देना चाहते हैं।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है।"

"पर आपको एक प्रतिज्ञा करनी होगी।"

"कौन सी प्रतिज्ञा ?"

"कि आप राणा की रक्षा करेंगे।"

"यह तो साधारण बात है, और ?"

"स्वर्गवासी साँगा के कनिष्ठ पुत्र उदयसिंह के संरक्षक बन कर शासन करेंगे। उनके वयस्क होने पर गद्दी उन्हें सौंप देंगे।"

"सो तो करेंगे ही, और ?"

"बस, और कुछ नहीं।"

"फिर शुभस्यशीघ्रम्, आज ही कर डालो। देखो, हमारी माता चाहे भी जो कोई हो, पर हम हैं मेवाड़ के प्रतापी राणा पृथ्वीराज के वीर पुत्र।"

"हाँ महाराज, यह तो है ही; तो आप प्रण करते हैं ?"

"हाँ-हाँ, सौ-सौ बार !"

"तब अच्छी बात है, आप आज से चित्तौर के दुर्ग-रक्षक और शासक हुए।"

"बहुत ख़ूब, और राणा बन्दी, क्यों ?"

"नहीं, महाराज, वे महल में नज़रबन्द रहेंगे।"

"क्या हानि है, पर हम उन पर दृष्टि कड़ी रक्खेंगे ?"

"आप अब अधिकारी हुए, जो ठीक समझें सो करें।"

"बहुत ठीक, बहुत अच्छा।"

२

"जग्गू ?"

"अन्नदाता !"

"क्या सोता है ?"

"नहीं, स्वामी, क्या आज्ञा है ?"

"शोर न कर, मेरे साथ आ।"

"जो आज्ञा प्रभु !"

"तलवार है ?"

"है।"

"उसे ले-ले, पर चुपचाप, चलने का शब्द न हो।"

"जो आज्ञा।"

"यही तो महल का गुप्त-द्वार है ?"

"जी हाँ, प्रभु !"

"देख, पहरे पर कौन है ?"

"धीरसिंह है अन्नदाता।"

"अच्छा आगे बढ़ो, धीरसिंह !"

"घणी खम्मा अन्नदाता मुजरा।"

"तुम ख़ूब मुस्तैद हो, शाबास, अच्छा कहो तो राणा किस कमरे में सोते हैं ?"

धर्म्म के व्यवसायी

त्यागो, त्यागो दीन दशा यह, दूर हिन्दुओं से भागो !
ईसा के चरणों में आओ, इस कुरु निद्रा से जागो !!

"बाहरी दालान में स्वामी, मैं स्वयं कई बार देख आता हूँ।"

"अच्छा, अच्छा, वे तुम्हें ख़ुश तो रखते हैं ?"

"सेवक को सब तरह सन्तोष है।"

"अच्छा है, अच्छा लो। यह कण्ठा तुम्हें इनाम। समझे, स्वामि-भक्ति के पुरस्कार-स्वरूप। मैं महाराणा को देखूँगा।"

"महाराज की जय हो। मैं राणा जी को सावधान कर दूँ ?"

"अरे नहीं, बस एक बार सब प्रबन्ध देख कर लौट जाऊँगा। जगाने की आवश्यकता नहीं।"

"जो आज्ञा महाराज !"

"जग्गू ?"

"अन्नदाता !"

"आगे-आगे चलो।"

"जो आज्ञा।"

"यहीं न राणा सोते हैं ?"

"जी........"

"चुप, तलवार मुझे दो।"

"म-म........"

"चुप-चुप, तलवार दो।"

(जग्गू की तलवार ले खट से राणा का सिर काट लेता है। जग्गू हक्का-बक्का हो जाता है)

"अन्नदाता, यह क्या अधर्म.........!!!"

"चुप रह, यह ले (मुहरों से भरी थैली देता है) किसी को कानों-कान ख़बर न हो। समझा ?"

"जी......ई........"

"सुन, अभी और एक काम करना है, समझता है ?"

"जी...ई......"

"क्या तुझे मालूम है, कुमार उदयवीर कहाँ सोता है ?"

"अन्नदाता, क्षमा......"

"अभी तेरा सिर काट लूँगा, पाजी, बता कहाँ है ? यह ले हीरे की कलँगी। देखता है, निहाल हो गया।"

"महाराज, इस ओर चलें।"

"चल।"

"यही द्वार है स्वामी !"

"यहाँ कौन है ?........"

"अकेली पन्ना धाय है।"

"क्या वह जागती होगी ?"

"क्या जाने महाराज, चिल्ला न पड़े।"

"तब तू चुपचाप देख आ।"

"जो आज्ञा।"

"सुन, क्या वह तुझे जानती है ?"

"अच्छी तरह।"

"तलवार ले ; मौक़ा पाते ही मार डाल।"

"अन्नदाता, मुझसे यह........"

"एक हज़ार मुहरें मिलेंगी।"

"जैसी आज्ञा, तलवार दीजिए।"

"ले, बच्चे के लिए कटार काफ़ी है।"

३

"कौन ?"

"चुप, मैं जग्गू हूँ !"

"जगन भाई, इस वक्त यहाँ कैसे ? कुशल तो है ?"

"कुशल कहाँ, राणा मारे गए ! दासी-पुत्र बनवीर ने उन्हें मार डाला !"

"हाय-हाय ! यह क्या हुआ ?"

"जो होना था हुआ, होनहार को रोको।"

"अब और क्या होना है ?"

"वह पापी कुमार को मारने अभी यहाँ आ रहा है ?"

"हाय ! जग्गू, कुमार की रक्षा करो।"

"इसीलिए आया हूँ, पर पन्ना, कैसे ? उपाय जल्दी करो; वह आ ही रहा है !"

"ठहरो, तुम पुराने कपड़ों में लपेट कर कुमार को ले जाओ, मैं अपने पुत्र को उनके स्थान पर सुलाए देती हूँ !"

"पन्ना, क्या पुत्र का प्राणदान दोगी ?"

"जगन, अब और क्या उपाय है ? कुँवर मेवाड़ का स्वामी है।"

"धन्य हो पन्ना, लाओ कुँवर को दो, देखो, जाग न जाय।"

"जगन, यदि कुँवर का बाल बाँका हुआ, तो देखना......"

"पन्ना, प्राण रहते नहीं। कुँवर को कहाँ पहुँचाना होगा?"

"सोमनाथ महाराज के पास, महावीर के मन्दिर में। सोमनाथ जी से तुम सब भेद कह देना। मैं प्रभात में तुमसे आ मिलूँगी।"

"मैं चला, पन्ना तुम्हारा भला हो!"

"जगन, ईश्वर तुम्हारी सहायता करें।"

४

"कह, क्या हुआ? क्या वह जागती है?"

"हाँ महाराज!"

"क्या तूने उसे मार डाला?"

"नहीं स्वामी, वह राज़ी हो गई, वह मुँह बन्द रक्खेगी। वह हीरे की कलँगी उसे दे दी है। महाराज, तुच्छ दासी को मार कर क्या मिलता है?"

"कुछ परवा नहीं, तुझे और रत्न मिलेंगे। तलवार ला, तेरे पास क्या है?"

"कुछ वस्त्र, पन्ना ने दे दिए, सन्देह न हो इसलिए ले आया।"

"तू यहीं खड़ा रह।"

"जो आज्ञा स्वामी!"

* * *

"बता, कुँवर कहाँ है?"

(पन्ना अँगुली से सङ्केत अपने सोते हुए निर्दोष पुत्र की ओर करती है! बनवीर कटार उसके कलेजे में भोंक देता है। बच्चा एक बार तड़प कर ठण्डा हो जाता है। पन्ना मूर्च्छित होकर गिर पड़ती है, बनवीर रक्त भरे हाथों को लिए भाग जाता है!)

५

"यह असम्भव है? आपके पास क्या प्रमाण है? आप राज्य के पुरोहित और प्राचीन शुभचिन्तक हैं। आप महाराणा साँगा के समकालीन एवं हमारे पूज्य हैं। परन्तु महाराज सोमनाथ जी, आज से ११ वर्ष पूर्व नमकहराम जग्गू ने राणा का और पन्ना ने कुँवर का वध किया था। दोनों के शव पाए गए थे और उक्त दोनों हत्यारे भाग गए थे। अब आप इस बालक को कुँवर उदयसिंह कह कर परिचय देते हैं, यह कैसे सम्भव हो सकता है?"

"सरदारगण, क्या आपके पास इस बात का भी कोई प्रमाण है कि यह दोनों वध पन्ना और जग्गन ने किए थे?"

"उनका भाग जाना ही इसका प्रमाण है?"

"सरदारो, अपनी-अपनी तलवारें नङ्गी कर लीजिए; अपराधी अभी आपके सामने उपस्थित किया जायगा। बीरसिंह?"

"महाराज, कहिए मैं हाज़िर हूँ।"

"जिस दिन तुम पहरे पर थे, उसी दिन दोनों ख़ून हुए थे? उस दिन की घटना तुम्हें याद है?"

"ख़ूब याद है महाराज!"

"कह जाओ।"

"आधी रात के बाद महाराज बनवीर सिंह और जग्गू महल के द्वार पर आए थे।"

"महाराज ने तुम्हें कुछ इनाम दिया था?"

"एक कण्ठा दिया था।"

"फिर क्या देखा?"

"जगन अकेला बाहर गया।"

"उसके हाथ में क्या था?"

"कुछ कपड़े थे।"

"महाराज बनवीर कब निकले?"

"घड़ी भर बाद।"

"उनके हाथ में क्या था?"

"नङ्गी तलवार!"

"उन्होंने कुछ पूछा था?"

"पूछा था, क्या जग्गन बाहर गया है?"

"अच्छा जाओ, जग्गन नक़ाब उलट दो।"

"बहुत अच्छा महाराज!"

"उस दिन तुम महाराज के साथ महल में गए थे?"

"हाँ महाराज!"

"महाराज ने महल में जाकर क्या किया?"

"मेरे हाथ से तलवार लेकर सोते हुए महाराणा का सिर काट लिया!"

"तुम्हें उनका इरादा मालूम था?"

"नहीं, मैंने समझा था, पहरे की जाँच कर रहे हैं।"

"तुम्हें कुछ इनाम दिया था?"

"जी हाँ, एक हीरे की कलँगी और एक थैली मुहर। एक हज़ार मुहर देने का और वचन दिया था।"

"महाराणा को मार कर महाराज ने क्या किया?"

"मुझसे कुँवर का स्थान पूछा।"

"फिर?"

"मेरे इधर-उधर करने पर भय और लालच दिया।"

"तुमने क्या किया?"

"मैंने पन्ना को जाकर सचेत कर दिया, फिर उसकी सलाह से कुँवर को कपड़ों में छिपा कर क़िले के बाहर हो, आपके पास आ गया।"

"अच्छी बात है, जाओ। पन्ना, तुम भी घूँघट हटा दो। आगे आओ!"

"बहुत अच्छा महाराज!"

"उस दिन क्या हुआ था—कह जाओ।"

"जग्गू का आना सुन कर मैं जग गई और सब हाल सुन कर मैंने कुँवर को बचाने के लिए उसे कपड़ों में लपेट कर जगन के हवाले कर दिया तथा आपके पास रातोंरात पहुँचाने को कह दिया था।"

"इसके बाद क्या हुआ था?"

"बनवीर महाराज ने पहुँच कर कहा—बता कुँवर कहाँ है। मैंने पहले ही कुँवर के स्थान पर अपने पुत्र को सुला दिया था। उसी को मैंने कुँवर बता दिया। महाराज ने उसकी छाती में कटार भोंक दी और भाग गए। प्रातःकाल मैं भी भाग कर आपके पास आ गई।"

"अच्छा जाओ! सरदारो, अब मेरा बयान सुनिए। कुँवर, जग्गू नाई और पन्ना धाय को लेकर मैं तीर्थ-यात्रा को निकल पड़ा। यहाँ की दशा जैसी थी, उसे देखते मुझे यहाँ कुँवर के प्राणों का सदैव भय रहता। १० वर्ष हम दक्षिण में अज्ञात भाव से रहे। हम लोगों ने जैसे बना, कुँवर की रक्षा की। पर मैं दरिद्र ब्राह्मण और ये लोग साधारण सेवक राजपुत्र को उतनी अच्छी तरह नहीं रख सके। हम लोगों से जैसे बना, अपना कर्तव्य पालन किया है। अब कुँवर १२ वर्ष के हो गए हैं। महाराज बनवीर अपराधी हैं, आप सरदार कुँवर को अपनी रक्षा में लीजिए और हमें कर्तव्य से उऋण कीजिए।"

सब सरदार चिल्ला उठे—महाराणा उदयसिंह की जय!

"पन्ना माँ की जय!"

"जग्गू सरदार की जय!"

"सोमनाथ महाराज की जय!"

इसके बाद ही सरदारों ने तलवारें सूत कर हत्यारे बनवीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाला! और उसीके रक्त से पन्ना ने कुँवर का राजतिलक किया।

* * *

थोड़े जीवन-सूत्र

[महात्मा टॉल्सटाय]

मनुष्य-जीवन का आधार अत्याचार पर नहीं, प्रेम पर है।

❀

ईश्वर शान्ति ही चाहता है, और ईश्वर की इच्छा के अधीन रहना, यह प्रथम कर्त्तव्य है।

❀

ईश्वरेच्छा का अनुसरण = सरलता।

❀

ईश्वर के कार्यों पर हम अपनी राय नहीं दे सकते; वह हमारे विवेक या विचार के अनुसार नहीं, अपनी इच्छानुसार निश्चय करता है।

❀

ईश्वर अर्थात् प्रेम; जो प्यार नहीं करता वह ईश्वर को नहीं जानता।

❀

जैसे-जैसे मनुष्य की ईश्वर विषयक कल्पनाएँ उच्चतर बनती जायँ, वैसे-वैसे वह उसे अधिक पहचाने; उसके अधिक निकट रहे और उसकी दया, भलाई और मानव-प्रेम का अनुकरण करे।

❀

दूसरे किन मन्दिरों में महासागर के समान कुण्ड और आकाश के समान गुम्बद हैं? सूर्य, चन्द्र और तारों के समान दीपमालिका, और जीते-जागते प्यार करते। परस्पर सहायता करते हुए मनुष्यों के समान मण्डल-प्रतिमाएँ हैं? ईश्वर के उपकार को समझने के लिए प्राणिमात्र के सुखार्थ सृष्टि भर में फैले हुए असंख्य साधनों के सिवा और किस ज़रिए से अधिक जाना जा सकता है? और अन्तःकरण में से प्रकट होने वाले नियमों की अपेक्षा सुन्दर नियमावली किस जगह लिखी गई है? वे कौन से विशिष्ट बलिदान हैं जो प्रेम से छलकती हुई मनुष्य-जाति के पारस्परिक बलिदानों से बढ़ कर हों? और भले मनुष्यों के हृदयों की अपेक्षा और दूसरी कौन सी यज्ञ-वेदी हो सकती है, जहाँ परमेश्वर बलिदान स्वीकार कर सकता है?

❀

सारे विश्व में व्याप्त परमात्मा का जिन्हें ख़याल है; उन्हें भगवान सूर्य नारायण की एकाध किरण रूप देवता की आराधना करने वाले मनुष्यों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

❀

सर्वत्र एक ही आत्मा है; एक मनुष्य की आत्मा समूची आत्मा का विभाग है। इस विभाग को वह स्वयं ही अच्छा या बुरा बना सकता है। दूसरी आत्माओं के साथ के भेद-भाव को घटाने से और उन्हें अपने समान मान कर चाहने से मनुष्य स्वयं अच्छा बनता है जब कि दूसरे के जीवन-सुखों को हानि पहुँचाने से वह अपना नुक़सान करता है।

❀

आत्मा स्थल और काल से अबोधित है। उसका नाश करने की सामर्थ्य किसी में नहीं! फिर भले ही वह किसी दूसरी देह में क्यों न हो।

❀

ईश्वरेच्छा के अधीन रहने के लिए बस इतना ही आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य अन्तिम साँस तक दूसरों से प्रेम करे और उनका भला करे।

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आज मन में कुछ देश की चर्चा करने की लहर उठी है, इसलिए आज जो कुछ लिखूँगा, देश पर ही लिखूँगा। देखिए, इस समय देश में क्या-क्या गुल खिल रहे हैं। जिसे देखिए, अपनी डफ़ली अलग पीट रहा है। वह जो कहावत है कि अधिक जोगियों से मढ़ी उजाड़ हो जाती है, वैसी ही बात है। अङ्गरेज़ी में एक कहावत है, जिसका आशय यह है, कि जहाँ अनेक बावर्ची होते हैं, वहाँ खाना ख़राब ही हो जाता है। जी हाँ, कोई कहता है नमक कम है और डालो, कोई कहता है कि रहने दो, ज़्यादा हो जायगा। कोई मिर्चें झोंके देता है और कोई मसाला घुसेड़े देता है—सब अपनी-अपनी योग्यता ख़र्च करते हैं। नतीजा यह होता है, कि खाना साला सत्यानाश हो जाता है। यही दशा आजकल भारत की है। आजकल यहाँ सब नेता ही नेता हैं। नेताओं का काम दूसरों को सबक़ देना और पाठ पढ़ाना है—नेता लोग स्वयम् किसी से कैसे सबक़ लें—किसी की बात कैसे मानें ? यदि नेता लोग ऐसा करने लगें, तो बस फिर नेता ही काहे के ? नेता की तो परिभाषा यही है कि—अपनी कहो, दूसरे की न सुनो। संसार भर में अपने ही को बुद्धिमान समझो और शेष सारे संसार को वज्र मूर्ख। क्यों सम्पादक जी, कैसी कही ?

भई, अब मेरा भी जी चाहता है कि मैं भी नेतापन पर कमर बाँध लूँ। अवसर अच्छा है—ऐसी धाँधली में भी जो नेता न बना, उसका मुख सवेरे उठ कर देखना पाप है। बस मैं नेता और मेरा बाप नेता, और जो मुझे नेता न माने उसको हिन्दुस्तान से निकाल दो। वह देश-द्रोही है। मैं भी अपनी एक पार्टी बनाने वाला हूँ। इसके लिए मैं देश भर में बैलगाड़ी पर दौरा लगाऊँगा और लोगों को गहरी छनवा कर अपनी पार्टी में मिलाऊँगा। मैं प्रत्येक नगर में घूम-घूम कर लोगों से कहूँगा—भाइयो, सारा झगड़ा इस हिन्दुस्तान के पीछे है—इस भारत-भूमि के पीछे है, तो क्यों न इसे छोड़ दिया जाय ? चलो कहीं और चल कर डेरा जमावें। संसार में बहुत सी ज़मीन ख़ाली पड़ी है, चलो सब लोग वहीं चल कर बसें। और क्या—न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। चलिए सारा झगड़ा समाप्त होता है। यह बात आज तक किसी भी नेता को न सूझी होगी। सूझे कैसे, सूझे तो तब जब गहरी छानें। हाँ, एक बात और है—हमारी इस पार्टी में वही सम्मिलित हो सकेगा, जो हमारे क्रीड पर हस्ताक्षर कर देगा। हमारा 'क्रीड' क्या है, वह भी सुन लीजिए :—

(१) दोनों वक़ गहरी छानना।

(२) अपने आगे किसी की कुछ न सुनना, अधिक बड़बड़ाए तो ठोंक देना।

(३) हिन्दुस्तान के बाहर जाने के लिए रेल और जहाज़ का किराया इकट्ठा करना।

(४) बात-बात में अपने को नेता कहना।

(५) अपनी पार्टी में नित्य एक दिन जूता-लात कर लेना।

(६) किसी बात पर कभी जमे न रहना। कभी कुछ कहना और कभी कुछ।

सब से बेहतर वतन पे मरना है !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

हम को दफ़्तर में काम करना है,
किसी सूरत से, पेट भरना है !
अपने मरने का ग़म हमें क्यों हो,
एक न एक रोज़ सब को मरना है !
इस तमन्ना[1] में लोग मिलते हैं।
मिल के साहब से, नाम करना है !
बह्रे-ग़म[2] में, न ग़र्क़[3] हम हों कहीं,
कुछ समझ-सोच कर उभरना है !
हसरते कूचए तरक़्क़ी में,
दिल को पैवन्दे ख़ाक करना है !
क्यों न पैवन्दे ख़ाक हो जाऊँ,
ख़ाक में मिल के तो सँवरना है !
आप सच कह रहे हैं ऐ "बिस्मिल"
सब से बेहतर वतन पे मरना है !

* * *

१—इच्छा ; २—समन्दर ; ३—डूबना।

(७) जनता को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए रोज़ नए-नए स्वाँग लाना। जैसे थिएटर-बायस्कोप वाले रोज़ नया तमाशा दिखाते हैं।

फ़िलहाल अभी यही सात क्रीड हैं—आवश्यकता पड़ेगी तो आगे और बढ़ा लिए जायँगे। मेरी इस पार्टी का नाम होगा—'भारतवर्ष छोड़ कर सारे झगड़े-तोड़क पार्टी।' इस पार्टी का एक टेम्परेरी अधिवेशन भी मैंने कर डाला है। उसमें तय हुआ, कि इस पार्टी का प्रत्येक सदस्य यह प्रयत्न करे कि भविष्य में जब भारतवर्ष का इतिहास लिखा जाय तो उसमें केवल उसी का नाम भारतवासियों के उद्धारकर्त्ता में रहे, किसी दूसरे के नाम की झलक भी न आने पावे। प्रत्येक सदस्य इस बात की चेष्टा करे कि जिस दृष्टि-कोण से वह संसार को देखता है, उसी दृष्टि-कोण से भारत का प्रत्येक आदमी देखे। न देखे तो उसे ज़बरदस्ती दिखलाओ। सिर पकड़ कर उसी ओर घुमा दो—झख मारेगा देखेगा। अधिक मीन-मेख करे तो चपतिया दो। इस पर भी न माने तो सङ्खिया खिला दो। और क्या, ऐसों का मर जाना ही अच्छा है ! ब्रिटिश सरकार से कह दो कि—'लो भाई, हम हिन्दुस्तान ही छोड़ देते हैं—तुम आनन्द से यहाँ डण्ड पेलो और लोट लगाओ।' सम्पादक जी, इसकी तह में बड़ा गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है। मैं आपसे बताए देता हूँ, मगर उस्ताद किसी से कहना नहीं। तुम सम्पादक लोग पेट के बड़े हल्के होते हो। जहाँ कोई बात सुनी, झट अख़बार में छाप दी। यह निरा लौंडापन है। गम्भीरता तो तुम लोगों में छू नहीं गई। बात का पचाना सीखा ही नहीं। अरे म्याँ, यह गुर हमसे सीखो ! हम लोग इतने गम्भीर हैं कि बात क्या, आदमी निगल जायँ और डकार तक न लें। सो भाई साहब, ऐसे ही आप भी बनने का प्रयत्न कीजिए। हाँ, तो वह गूढ़ रहस्य सुन लीजिए। जब सारे हिन्दुस्तानी इस हिन्दुस्तान को छोड़ कर चले जायँगे, तो अङ्गरेज़ लोग इतने बड़े मुल्क में अकेले १०० बरस भी नहीं टिक सकेंगे। ऊब कर मर जायँगे। हमारे पुराणों में लिखा है कि निर्जन स्थान में भूत-प्रेतों का वास हो जाता है। सो जनाब, ज्योंही हम लोगों ने यह देश छोड़ा, त्यों ही भूत-प्रेतों ने यहाँ अड्डा जमाया। वे ही भूत-प्रेत सबको मार डालेंगे। बस जब मैदान साफ़ हो जायगा तो हम लोग फिर यहीं लौट आवेंगे। फिर क्या—स्वराज्य ही स्वराज्य है। कहिए, कैसी अच्छी तरकीब है ! अब तो आपको विश्वास हो गया होगा कि मेरी पार्टी द्वारा ही भारत को स्वराज्य मिलेगा। बस, अब आप चुपचाप हमारे क्रीड पर अपने हस्ताक्षर बना कर मेरे पास भेज दीजिए। मैं एक छकड़ा ख़रीद चुका हूँ—एक काना बैल भी ले लिया है, दूसरा भी शीघ्र ही ख़रीद लूँगा। बस जहाँ यह तैयारी हो गई, मैं दौरे पर निकलूँगा और सारे हिन्दुस्तान में घूम-घूम कर लोगों को अपनी पार्टी में मिला लूँगा। यह काम सरल नहीं है—बड़ा परिश्रम पड़ेगा, बड़ी लात-जूती करनी पड़ेगी। परन्तु मुझे कुछ परवा नहीं, देश के लिए मेरे प्राण भी चले जायँ तो कोई चिन्ता नहीं। मैं भारत को स्वराज्य दिला कर छोड़ूँगा। एक काम आप और कीजिए कि भारत का इतिहास लिखना आरम्भ कर दीजिए। उसमें भारत को स्वराज्य दिलाने वालों में सब से प्रथम मेरा नाम स्वर्णाक्षरों में लिख दीजिएगा। अपने परिश्रम का मैं केवल इतना ही पुरस्कार चाहता हूँ।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

(शेषांश)

सारा कमरा जय-जयकार के कोलाहल से गूँज उठा। मगर मेरा मुँह ख़ाली खुल कर रह गया—आवाज़ न निकली। क्योंकि मेरा तो होश उड़ा हुआ था।

श्यामाचरण—"क्यों मिस्टर सैक्सन, आप चुप क्यों हैं? क्या आप इन बातों को झूठ समझते हैं?"

मैं—"नहीं भाई। मैं तो घुनते हुए हूँ। मेरे बराबर भला दूसरा कौन इन्हें सच समझ सकता है? अभी तो मैं सोच रहा हूँ कि श्रीमती जी के अनुग्रहीता होने में अभी सत्तरह-अट्ठारह बरस बाक़ी हैं। इतने दिनों तक कैसे सब्र कर सकूँगा?"

जदुनाथ—"अपनी सलामती चाहते हो तो सब्र करना ही पड़ेगा। नहीं जैसे बात खाते अब तक बीते हैं वैसे ही बीतेंगे। भई बुरा न मानना। साफ़-साफ़ कहना अच्छा होता है।"

मैं—"मगर-मगर-हाँ मेरी श्रीमती जी के तो अभी कोई बच्चा ही नहीं है। इसलिए मेरे लिए उनके दिल में जगह अभी ज़रूर ख़ाली रहनी चाहिए।"

लॉजीशियन—"जी, इस मनसूबे में न रहिएगा। बच्चा न हो न सही। होने का मौसम तो उनके सर पर सवार हो गया। जिसमें उनकी रुचि का बदल जाना ज़रूरी है। जैसे जाड़ा पड़ते ही सबको सर्दी लगती है, चाहे किसी के पास लड़ावर हो या न हो, वैसे ही इसको भी समझ लो। सारा खेल उम्र का है भाई।"

लीजिए मेरी रही-सही उम्मीद भी जाती रही।

श्यामाचरण—"अगर पतिव्रताओं को पुरुष जाति की चाहत नहीं रहती तो यह लोग अपने पतियों को निकाल बाहर क्यों नहीं कर देतीं?"

लॉजीशियन—"यह अच्छी कही। निकाल दें तो यह हुकूमत किस पर जतावें? नौकर एक ही फटकार में भाग खड़ा होता है। और किसी में इतनी डाँट-डपट सुनने का दम कहाँ? यह पति ही लोगों में इतना जीवट है कि रात भर अपनी बीबियों की फटकार गुटुर-गुटुर सुना करते हैं, और सुबह को मूँछों पर ताव देकर फिर ज्यों के त्यों हो जाते हैं। ऐसे अड़ियल टट्टू को पाकर भला कौन स्त्री निकालना पसन्द कर सकती है, जिसको न दाना देना पड़े, न घास, उल्टे वही कमा-कमा कर खिलावे, और रातो-दिन झिड़कियाँ सुने घाते में?"

जदुनाथ—"धन्य हो महाराज। बलिहारी है आपकी! ख़ूब कहा। मालूम होता है चचा शैतान स्वयं आपकी खोपड़ी पर इस समय विराजमान हैं, वरना इतने मुश्किल सवाल का ठीक-ठीक जवाब देना ग़ैर-मुमकिन था।"

अब तो मुझमें कुछ थोड़ी सी जान फिर आ गई। मुमकिन है श्रीमती जी भी अपने अड़ियल टट्टू को अपने पास बुलाने की कभी ज़रूरत समझें।

लॉजीशियन ने अपना शास्त्र फिर शुरू किया—"ईश्वर इस भेद-विधान से सन्तुष्ट होकर बोले—अच्छा इस मनमोहिनी जीव के लक्षणों का भी कुछ हाल सुनाइए।"

शैतानोवाच—"हे जगत्पति! यों तो इसके लक्षण बहुतेरे हैं, परन्तु मुख्य तीन ही माने जाएँगे। जिनके अनुसार यह निम्न तीन विशेषणों की अधिकारिणी होंगी—(१) पाखण्डी (२) बकवादिनी (३) कङ्कालिनी—यह तीनों ही गुण इसकी प्रत्येक अवस्थाओं में पाए जायँगे, परन्तु इनमें कोई न कोई किसी न किसी अवस्था में विशेष अवश्य रहेगा। जैसे गर्विता में पाखण्ड गुण बलवान होगा। कहने को रात तो वह कहेंगी दिन। पूछिए ज़मीन की तो बताएँगी आस्मान की। बस इतने ही में पुरुष-जाति की अक़्ल गुम हो जायगी। इसी तरह पतिव्रता में बकवास लक्षण प्रधान हो जाएगा। पहुँचते ही दिमाग़ चाट लेंगी। हुकूमत, फटकार, शिकायत, कोसना, मुँह फुलाना, माँगना सभी की ऐसी झड़ी लग जाएगी कि पति जी साँस भी न ले सकेंगे और उनके दिमाग़ का अच्छी तरह भर्ता बन जाएगा। अब रहा तीसरा लक्षण वह अपना चमत्कार विशेषकर तीसरी अवस्था में दिखाएगा। इसलिए अनुग्रहीता सब से अधिक कङ्कालिनी होंगी। राह चलते हवा तक से लड़ेंगी। सीधी बात में भी ऐसी बेढब चिनगारियाँ निकलेंगी कि घर का घर झुलस उठेगा। क्योंकि इनका हृदय तो स्वयं इस बात से सदा जला ही करेगा कि हा! पुरुष-जाति कितनी मूर्ख है कि वह गर्विताओं और पतिव्रताओं के फेर में पड़ी हुई है। इति स्त्री-शास्त्रे लक्षण बखान खण्डे। बोलो शैतान काका की जय।"

काका की धूम मच गई। तालियाँ बजा-बजा कर उनके नाम पर बधाइयाँ दी जाने लगीं। मगर लॉजीशियन ने सब को मना करके कहा—"ईश्वर के लिए इतने ज़ोर से नहीं भाई, वरना इस शास्त्र का जहाँ एक शब्द भी किसी स्त्री के कान में पड़ा तहाँ सब गुड़ गोबर हो जाएगा। अच्छा भाई इससे आगे भी झटपट सुन लो। ईश्वर ने जब इसकी प्रकृति के विषय में पूछा तब शैतान देवता एक पैर पर खड़ा होकर बोले—हे करुणानिधान! इसका हाल न पूछिए। यह इतनी विकट, इतनी अथाह, इतनी रहस्य और भ्रमपूर्ण है कि बस इसीको बनाने में तो हमारी सारी शैतानी ख़र्च हो गई है। इसको ठीक-ठीक समझने के लिए संसार में न कोई ज्ञान होगा न विद्या और न बुद्धि। ईश्वर ने कहा कि जब इसकी प्रकृति इतनी कठिन और दुर्गम्य रक्खी जाएगी तो पुरुष-जाति इसे जान कैसे सकेगी?"

शैतानोवाच—"यही तो हमारी शैतानी है भगवन! कि पुरुष-जाति इसकी कभी थाह ही न पावे, तभी तो बड़े-बड़े पण्डितों, बुद्धिमानों और ज्ञानियों का भी गर्व चूर हो सकेगा और अपने कर्मों पर हाथ धर के कहेंगे—त्रियाचरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्याः।"

ईश्वर बोले—"इसके रहस्यों का हाल कुछ सुनाइए तो।"

शैतान ने उत्तर दिया—"अच्छा जगत्पति बताता हूँ, परन्तु पुरुष-जाति से यह भेद गुप्त रखिएगा नहीं तो वह सावधान हो जाएगी और तब इसकी ही नहीं, बल्कि संसार की भी रोचकता नष्ट हो जाएगी। अस्तु सुनिए। सब से पहिले नमूने के तौर पर स्त्री-जाति के कुछ शब्दों और वाक्यों के जो असली अर्थ होंगे, कहता हूँ:—

शब्द तथा वाक्य	असली अर्थ
नहीं	हाँ
उहुँक	अच्छा
चलो हटो	और पास आओ
ख़बरदार	बहुत ख़ूब
हमसे मत बोलो	ख़ाली बोलो ही नहीं, बल्कि हाथा-पाई भी करो।
गाली	धन्यवाद
(चुम्बन के बाद)	
यही तो नहीं अच्छा मालूम होता। तुम बड़े ख़राब हो। ...	बलिहारी! एक दफ़े और।
प्यारे	उल्लू
प्राणनाथ.........	महामूर्खाधिराज
तुम्हारे दर्शनों की प्यासी हूँ ...	तुमसे मेरी कोई ग़रज़ अटकी है?
मैं तुम्हें प्यार करती हूँ ...	तुम्हें उल्लू बना कर मैं तुमसे कुछ ऐंठना चाहती हूँ।

इतना सुनते ही ईश्वर विचलित होकर बोल उठे—"यह क्या ऊट-पटाङ्ग बकने लगे। बस-बस इस भ्रमकोष को बन्द कीजिए।"

शैतानोवाच—"भगवन, इस जीव के प्रेम के मानी-मतलब ही होंगे तो मैं क्या करूँ? हाँ, पुरुषों के प्रेम का मानी अलबत्ता गधापन होगा। तभी तो वह प्रेमिका को उल्लू की तरह आँखें फाड़-फाड़ कर घूरेंगे और प्रेमिका सदैव तिर्छी नज़रों से नीचे ताकेगी। ताकि इसकी दृष्टि ठौर पर रहे, अलग न बहकने पाए। मगर उसके मूर्खाधिराज जी अर्थात् प्रेमी महोदय यह समझ कर कि शर्म से आँख नहीं मिलाती और उल्लू बना करेंगे। इसी तरह पुरुष-जाति मूर्खतावश समझेगी कि उसकी पहन-पोशाक को स्त्री जाति पसन्द करती है इसलिए वह इसके आगे छैला बनने की कोशिश करेगी। परन्तु यह उसकी और मूर्खता होगी। क्योंकि स्त्री-जाति सिवाय अपने दूसरे किसी का भी बनाव-चुनाव नहीं देख सकेगी। तभी तो सड़कों पर लम्बी धोती और अच्छी पोशाक वाले पुरुषों को पाते ही घृणा से घूँघट निकाल कर मुँह फेर लेगी और कच्छड़ चढ़ाए गँवारों के आगे मुँह खोले रहेगी। लँगोटी वाले साधुओं और नंगे बाबाओं को पूजेगी। इति स्त्री-शास्त्रे पाखण्डे। बोलो शैतान बाबा की जय।"

श्यामाचरण और जदुनाथ वाह-वाह करके उछल पड़े और मैं भी इस शास्त्र की अनोखी बातों पर फड़क उठा और अपनी बहुत सी ग़ल्तियों को समझ गया।

मैं—"सचमुच दोस्तो, इस बेढब शास्त्र की बातें बहुत सही मालूम होती हैं। अफ़सोस है कि मैं इसे पहिले से नहीं जानता था। उफ़ ओह! इतनी ज़िन्दगी नाहक़ गधापन में बीती।"

श्यामाचरण—"अजी यह शैतानी शास्त्र है, कोई ठट्ठा थोड़े है। इसकी सच्चाई पर भला कौन शक कर सकता है? बस समझने वाला चाहिए।"

लॉजीशियन—"क्यों नहीं, इसकी सच्चाई ईश्वर तक को माननी पड़ी। वह समझ गए कि पुरुषों के भयङ्कर दिमाग़ को ठिकाने रखने के लिए शैतान बाबा की सलाह सोलहो आने कील-काँटे से दुरुस्त है। तभी तो वह उनके इस नमूने को अपनाने के लिए मजबूर हुए। हाँ, अपने सन्तोष के लिए और संसार में अपने ईश्वरत्व का परिचय देने के लिए इसके गुणों में अपने ईश्वरीय शील-स्वभाव और सुलक्षणों से रद्दोबदल कर कुछ आदर्श रमणियों की भी रचना कर दी। मगर बहुत थोड़ी सी। इसीलिए इनसे यह शास्त्र कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखता।"

श्यामाचरण—"तो हमें इनके बारे में जानने की कुछ ज़रूरत भी नहीं है। हमें तो बस शैतानी कारख़ाने की स्त्रियों के हाल से सरोकार है, जिनसे हम लोगों को पाला पड़ा है। क्यों मिस्टर सैम्सन ?"

मैं और ही धुन में था। इसलिए गड़बड़ा कर बोल उठा—"मगर इस शास्त्र में चुम्बन पर कोई अध्याय नहीं है।"

लॉजीशियन—"वाह ! है क्यों नहीं ? इसमें कौन सी बात नहीं है ? यह तो इतनी अथाह है कि कभी समाप्त ही नहीं हो सकता। आप ही लोग बीच में पूछ-पाछ करने लगे इसी से बहुत सी बातें छूट गईं। सुनिए, इसके विषय में हमारे शैतान बाबा कहते हैं कि चुम्बन पाने का तो स्त्री का स्वाभाविक हक़ होगा जिसकी रक्षा वह अपनी सभी कलाओं द्वारा करती रहेगी। मगर वह चोरी और छीना-झपटी से लेने की चीज़ है। जो कोई इसे प्रार्थनापूर्वक माँग कर लेना चाहेगा उससे वह ऐसी बिगड़ उठेगी कि फिर उसका कभी मुँह देखना पसन्द न करेगी। मगर यह कार्रवाई हमेशा आँख बचा कर करनी चाहिए। क्योंकि—

"When no tell tale spy is near us,
Eye not sees, nor ear can hear us,
Who would not be kissed ?"

"यानी जहाँ कोई झाँकने ताकने, ताड़ने या सुनने वाला न हो वहाँ भला कौन ऐसी स्त्री है जो चुम्बन न चाहे ? ऐसे सुअवसर में भी पुरुष चूके तो वह स्त्री की दृष्टि में महा वामन होगा और अगर स्त्री परहेज़ करे तो फ़ौरन समझना चाहिए कि उसके ओठों में फुन्सी निकली है या उसके गालों पर नक़ली रङ्ग चढ़ा है जिसकी क़लई खुल जाने का डर है या वह मूली, लहसुन प्याज़ की तरह पर कोई बदबूदार चीज़ खाए हुए है, जिसकी दुर्गन्ध वह छिपाना चाहती है। इति स्त्री-शास्त्रे चूमाचाटी खण्डे।"

यदुनाथ—"वाह रे बच्चा शैतान क्यों न हो। एक-एक बात लाख-लाख रुपए की कही है। क्या कहना है ! देखिए छीना-झपटी की सलाह कितनी अच्छी और कितनी सच्ची है। कवियों ने भी इसका लोहा माना है" :—

" The girl shall please me best that
No for "Yea" can say ;
And every wanton kiss can season
with a Nay."

श्यामाचरण—"और ओठों पर फुन्सी की बात कितने मार्के की है। इसकी ताईद ज्ञानियों ने भी की है। देखिए :—

" Kisses are women's birth-right and the girl who does not want them has either got a sore lip or desires to hide the awful truth that she has been eating onions."

अब तो चुम्बन के प्रसङ्ग पर मेरे मुँह से राल टपक पड़ी। बड़े ज़ोरों से आह खींच कर मैं बिलबिलाने लगा—" काहे को नौ मन तेल होगा और काहे को राधा नाचेंगी ? यहाँ श्रीमती जी से मिलना ही नहीं तक़दीर में लिखा है, चुम्बन की नौबत हाय ! कैसे आवे ?"

लॉजीशियन—"क्यों ? क्यों ? क्या अभी उनसे भेंट नहीं हुई ? आज ही तो आई हैं। इसी दोपहर की गाड़ी से। क्योंकि मैं तुम्हें ढूँढने के लिए पहिले तुम्हारे मकान पर गया था। वहाँ दरवाज़े पर एक किराए की गाड़ी पर से तुम्हारे ससुर जी के साथ एक ज़नानी सवारी उतरते देखी थी। पता लगाने पर मालूम हुआ कि तुम्हारी श्रीमती जी आई हैं।"

मैंने बेताब होकर पूछा—"सच कहो। तुम्हें मेरी क़सम ! हाय ! हाय ! आज नौ ही बजे से दफ़्तर में हूँ। और शाम हो गई अभी तक घर जाने का मौक़ा भी नहीं मिला।"

श्रीमती जी के देखने का नशा मुझ पर एकाएक बड़े ज़ोरों से चढ़ बैठा और मैं बदहवास होकर मकान जाने के लिए कमरे से गिरता-पड़ता निकला। वैसे ही लपक कर लॉजीशियन ने मेरा हाथ पकड़ लिया।

मैं—"ईश्वर के लिए भाई मुझे जाने दो।"

लॉजीशियन—"मगर क़सम याद रखना। कहीं भूल न जाना। नहीं ग़ज़ब हो जाएगा।"

मैं—"कैसी क़सम ?"

लॉजीशियन—"स्त्री-शास्त्र सुनने के पहिले तुमने साल भर के बदले दो साल तक अपनी श्रीमती जी से न बोलने की जो क़सम खाई थी। क्या अभी से भूलने लगे ? मेरा क्या, तुम्हीं भुगतोगे भाई।"

"लाहौल बिलाक़ूवत !!"

यह कह कर दोनों हाथों से मैंने अपना सर पीट लिया।

[शेष हाल "लतखोरीलाल" नामक पुस्तक में देखिए]

* * *

शौक़े-आज़ादी

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

बला से कुछ न मिले, ग़म नहीं; चमन मिल जाय !
वतन के हम हैं ; हमारा हमें वतन मिल जाय !!

अज़ल[1] से शग़्ल रहा, शुक्रे-ग़म अदा करना,
अलावा इसके, ज़माने में काम क्या करना ?
न जानते थे कभी, शिकवा-जौर[2] का करना,
हमें वही, अदबे शेवए[3] वफ़ा करना !
वफ़ाशआर[4] से भी, अपने बेवफ़ाई की !
बदल गई है नज़र, इसलिए ख़ुदाई को !!

हर एक साँस पे हम, आह-आह करते हैं,
मगर कहाँ वह करम की, निगाह करते हैं !
बिगड़ कर और ज़यादा तबाह करते हैं,
न घर नज़र में, न दिल ही में, राह करते हैं !
फ़लक[5] उलटने को, फ़रियाद लब तक आई है !
सबब यही है, जो इल्ज़ामे-बेवफ़ाई है !!

हम अपना हाल कहें क्या, कि कह नहीं सकते,
वह अपने दिल पे, ज़रा जब्र सह नहीं सकते !
सरिश्क[6] आँखों से, बेकार बह नहीं सकते;
बग़ैर रङ्ग कोई लाए, रह नहीं सकते !
क़रीना[7] कहता है, कौनो-मकाँ की ख़ैर नहीं !
ज़मीं की ख़ैर नहीं, आस्माँ की ख़ैर नहीं !!

पयामे[8] पेश, हवाए-बहार लाई है,
ख़िज़ाँ के चेहरे पे, पज़मुर्दगी[9]-सी छाई है !
तरह-तरह की, कलेजे ने चोट खाई है,
बहुत दिनों में, मुबारक यह सायत आई है,
क़यामत उट्ठे, जो सरगर्म हों फ़ुग़ाँ[10] के लिए !
क़फ़स[11]-नसीब, तड़पते हैं आशियाँ[12] के लिए !!

उठा ले हाथ, जफ़ाओं[13] से बदगुमाँ[14] सय्याद !
कभी तो सुन ले, असीरों[15] की दास्ताँ सय्याद !!

१—आदि, २—ज़ुल्म, ३—ख़ैरख़्वाही का ध्यान, ४—ख़ैरख़्वाह, ५—आकाश, ६—आँसू, ७—ढङ्ग, ८—सन्देशा ९—मुर्दनी, १०—आह करना, ११—पिंजड़े में रहने वाले, १२—घोंसला, १३—ज़ुल्म, १४—बुरे ख़्याल वाला, १५—क़ैदी,

दहन[16] में बन्द, अभी तक रही ज़बाँ सय्याद !
यह खुलने वाली है, लेने को इम्तहाँ सय्याद !
बनेगी बन के, दुलहन ग़ैरते-परी डाली !
कुछ और निखरेगी, एक-एक हरी-भरी डाली !!

जो अह्द कर चुके हैं, उसको साफ़ कहना है,
कि हर तरीक़ से, आज़ाद होके रहना है !
निजात[17] के लिए, ज़ञ्जीरो तौक़ गहना है,
यहाँ तो खेल, ग़रज़ हर सितम[18] का सहना है !
बला से कुछ न मिले, ग़म नहीं, चमन मिल जाय
वतन के हम हैं; हमारा हमें वतन मिल जाय !!

हुआ है हुक्म, न ले कोई नामे-आज़ादी !
पहुँचने पाए, न हरगिज़ पयामे-आज़ादी !
रहें ग़ुलाम, न हो शाद कामे-आज़ादी !
न आए दौर में, भूले से जामे[19] आज़ादी !
असीरे दाम[20] रहें हम, असीरे दाम रहें !
इसी अज़ाब में, दिन रात, सुब्हो शाम रहें !!

चमन के सारे फ़िदाई, चमन पे मरते हैं !
हज़ार जान से, तौक़ीरे[21]-मुल्क करते हैं !
कलेजा काँप उठे, यों आह सर्द भरते हैं !
जो काम ज़ब्त से लें, तो कहें, कि डरते हैं !
क़फ़स को ले उड़ें, क़ूव्वत है ऐसी बाज़ू में !
किसी ख़्याल से, लेकिन हैं अपने क़ाबू में !!

वफ़ूरे[22] ग़म से, बुरा हाल है ख़ुदाई[23] का,
हर एक शख़्स को, रोना है बेवफ़ाई का !
ख़याल जी में, न आए किसी बुराई का !
मिले नसीब से, मौक़ा अगर सफ़ाई का !
बस उठते-बैठते, हसरत है और क्या दिल की !
वह जल्द पूरी हो, जो आरज़ू हो 'बिस्मिल' की !!

१६—मुँह, १७—आज़ादी, १८—ज़ुल्म, १९—प्याला २०—जाल, २१—आदर, २२—बहुत, २३—जनता।

* * *

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

इङ्गलैण्ड का वह वज़ीरे-आज़म मि०मैकडॉनल्ड माशा-अल्लाह, 'पोलिटीशियन' है या 'पॉलिटिक्स' का जीता-जागता पुतला ! ऐसा 'दिल्ली का लड्डू' दिखाया कि ख़ुदा की क़सम, अपने राम के मुँह में तो अभी तक पानी भर-भर आता है ! यही हालत बेचारे मॉडरेट अख़बारों की है। इसके साथ ही कुछ मुसलमानी अख़बार (ख़ासकर छोटे भाई साहब का 'ख़िलाफ़त') तो इतने ख़ुश हुए, कि उनकी, मौ० मोहम्मदअली के ग़म में नम आँखें तक सूख कर सहारा की मरुभूमि बन गई हैं !

❀

'बस, मार लिया ! पौ-बारह है !' जो चाहते थे वही मिल गया ! कसर सिर्फ़ इतनी ही है, कि समस्त राजनीतिक क़ैदी छोड़ दिए जाएँ, ताकि कॉङ्ग्रेस भी इन्हीं लोगों के स्वर में स्वर मिला कर ब्रिटिश-गुणगान आरम्भ कर दे ! दुहाई सरकार की, इतनी मेहरबानी और कर दीजिए तो सारा काम बन जाय। फिर तो आप भी जन्म-जन्मान्तर तक निश्चिन्ततापूर्वक भारत की छाती पर मूँग दलते रहिए और बन्दा भी आपके जाहो-जलाल की ख़ैर मनाता हुआ दोवक़्त दूधिया छानता रहे ! भगवान आपका भला करें, मगर 'फ़ेडरल' दीजिएगा तो, हें, हें, बूटी भी कुछ ज़रूर सस्ती कर दीजिएगा।

❀

तङ्ग आ गए थे, सरकार ! इन कॉङ्ग्रेसी पिकेटरों के मारे ! जान आफ़त में थी। सच मानिए, इनके मारे भँगघोटना लेकर घर से बाहर निकलना मुश्किल था। देखते ही चारों ओर से घेर लेते थे और दाँत निपोर कर कहने लगते थे,—"गुरू जी, बूटी छानना छोड़ दीजिए, विलायती कपड़े पहनना छोड़ दीजिए, विलायती सिगरेट छोड़ दीजिए—यहाँ तक कि सखी नौकरशाही का 'टोस्ट' खाना भी तर्क कर दीजिए !!!" उफ़ ! नाकों दम था।

❀

मगर 'दूधों नहाय और पूतों फलें' हमारे मन्त्री महोदय, जिन्होंने कृपा करके यह नायाब तोहफ़ा प्रदान करके भारत की डूबती हुई नैया को हाथोंहाथ बचा लिया है, नहीं तो बेचारे मॉडरेटों की दशा तो उस ग़रीब मशालची सी हो गई थी, जो तेली का तेल जलता देख कर आफ़त में फँस गया था !

❀

मगर ये बङ्गाल के नौजवान लीडर श्री० सुभाषचन्द्र बोस तो अजीब उलटी खोपड़ी के आदमी मालूम पड़ते हैं। बीच ही में छींक के शगुन बिगाड़ दिया ! कहते हैं—"कॉङ्ग्रेस की 'वर्किङ्ग कमिटी' को समझौते की बातों पर विचार करने का कोई अधिकार ही नहीं है, उसका तो काम है, 'कर्मण्ये वाधिकारेषु !' सुलह या जङ्ग का निर्णय तो बस, कॉङ्ग्रेस स्वयं कर सकती है।" बताइए, ऐसे मौक़े पर उन्हें ऐसी बात कहनी चाहिए ?

❀

उधर चचा चर्चिल भी 'दाल-भात में मूसरचन्द' बन रहे हैं। हमारा ख़याल था, कि जब सुरूर आता है तभी कुछ बहक जाते हैं, मगर लक्षणों से मालूम होता है कि वे हमारी बूढ़ी कॉङ्ग्रेस के सगी सौत हो रहे हैं। बेचारी को फूटी आँख देखना भी उन्हें पसन्द नहीं। उनकी व्याकुलता देख कर मालूम होता है कि अगर कहीं दादा मुग्धानल देव भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दे दें तो चचा (अफ़सोस ! स्त्री न हुए, नहीं तो 'मौसी' शब्द सार्थक हो जाता !) ज़हर खाकर सो रहें !

❀

चचा की राय है कि बस, मारो और चबा-चबा कर ऐसा चूसो कि सिट्ठी भी बाक़ी न रह जाय और अगर कोई चूँ करे तो फ़ौरन गोलाबारी शुरू कर दो। बात चचा ने बावन तोले पाव रत्ती की कही है। हमारी तो राय है कि विलायत वाले एक तोप देकर चचा को फ़ौरन यहाँ भेज दें, नहीं तो बेचारे इस सोने की चिड़िया के हाथ से निकल जाने के ग़म में घुल-घुल कर मर जाएँगे।

❀

ख़ैर, यह तो अच्छा हुआ कि एक साथ ही आधी दर्जन दफ़ाएँ लगा कर कलकत्ता के मजिस्टर बहादुर ने सुभाष बाबू को छः महीने के लिए जेल भेज दिया ! अब ज़रूरत इस बात की है कि कहीं बम बरसा कर दो-चार गाँव उड़ा दिए जायँ, या कॉङ्ग्रेस को तोपदम कर दिया जाय, ताकि चचा-चर्चिल की भी चिन्ता दूर हो जाय, नहीं तो इनकी चें-चें बन्द न होगी।

❀

बूढ़े बाबा का यह हाल, कि जेल से निकले तो बिलकुल 'पक्षपातहीन' होकर, मगर लगे वही ग्यारह शर्तों वाला आमोख़्ता दुहराने ! अजी हज़रत ! जब नमक-कर उठ जाएगा और इस देश के ग़रीबों को बिना पैसे-कौड़ी के नमक मिलेगा, तो ब्रिटिश साम्राज्य की नाक कैसे रहेगी ?

❀

आप कहते हैं—"ग्रेट ब्रिटेन और भारत में हज़ार सद्भाव हो जाय, परन्तु भारतवासियों से यह कैसे कहा जायगा कि विलायती कपड़े पहनो, ख़ूब बोतल पर बोतल चट किए जाओ, ताकि श्रीमती नौकरशाही की आमदनी दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती जाय ?" तो जनाब, अगर यह नहीं होगा तो फिर 'फ़ेडरल' भी नसीब न होगा ! जब यह पुरानी मुर्ग़ी सोने के अण्डे ही न देगी, तो इसे पाल कर क्या होगा ?

❀

जो हो जनाब, लक्षण अच्छे नहीं दिखाई देते ! मालूम होता है, कॉपर-कॉन्फ़्रेन्स में हमारे वचन-वागीशों ने जो लम्बी-लम्बी स्पीचें झाड़ी हैं, वे बिलकुल बेफ़ायदा हो जायँगी। महाप्रभु गौराङ्ग देव ने जो महामधुर 'फ़ेडरल' प्रदान किया है, उसका स्वाद चखने को न मिलेगा और न यह हमारी बूटी ही सस्ती होगी ! किसी ने सच कहा है, कि 'भाग्यम् फलति सर्वत्रम् न विद्या न च पौरुषम् !'

❀

ख़ैर, अब ज़रा दादा सनातनधर्म की विपत्ति का हाल सुनिए। दादा अभी जीते ही हैं और पञ्जाबियों ने 'ज़ात-पाँत मुर्दाबाद' और 'इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद' के नारे लगाना आरम्भ कर दिया ! उस दिन लाहौर में 'छत्तीसो क़ौम के' आदमियों ने एक साथ ही खाना खाकर बेचारे धर्म का जीते जी श्राद्ध कर डाला ! नाई, धोबी, चमार, कहार, ब्राह्मण और बनिया—कहाँ तक गिनाएँ ? हमें तो भय है कि अगर यह अधर्म-काण्ड इसी तरह बढ़ता गया तो 'कलकत्ता इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट' की तरह यमपुर की म्युनिसिपैलिटी को भी एक 'नरक इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट' स्थापित करने की आवश्यकता पड़ जायगी। आख़िर इतने जाति-पाँति-तोड़क पापियों को रौरव और कुम्भीपाक में स्थान कहाँ मिलेगा ??

❀

फलतः आश्चर्य नहीं कि इन 'जाति-पाँति-तोड़कों' के मारे यमपुर का मकान-भाड़ा बढ़ जाय और बेचारे धर्मात्माओं के लिए बछिया की पूँछ पकड़ कर वैतरणी पार करना कठिन हो जाय ! इसके साथ ही स्वर्ग में सन्नाटा हो जाने की भी सवा सोलह आने सम्भावना है, क्योंकि 'जाति-पाँति-तोड़क' नारकीयों की संख्या बढ़ती जाती है। इसलिए सनातन-धर्मावलम्बियों को चाहिए कि मसलहतन इस समय स्वर्गधाम जाने का किराया (?) कुछ कम कर दें, नहीं तो भगवान विष्णु की राजधानी की रौनक़ ज़रूर फीकी पड़ जायगी।

❀

श्री० अमृतलाल ठक्कर की कृपा से बोरसद (सूरत) की पुलिस की बहादुरी का विशद वर्णन अख़बारों में पढ़ कर श्री० १०,००८ जगद्गुरु जी महाराज ऐसे मगन हुए जैसे 'मगन होइ गुड़ खाइ, मूक स्वाद किमि कहि सकै !' बात यह हुई, कि बोरसद की महिलाओं ने एक बड़ा सा जुलूस निकाल कर सखी नौकरशाही का सारा सौभाग्य-सिन्दूर ही धो डालने का आयोजन कर डाला था ! इस समय, अगर पुलिस वहाँ पहुँच कर सैकड़ों महिलाओं का सिर न फोड़ डालती तो ख़ुदा जाने, ब्रिटिश साम्राज्य आज रसातल में होता या तलातल में ! इसलिए हमारी राय है कि स्वराष्ट्र-सचिव श्रीमान क़ेसर बहादुर शीघ्र ही एक रोज़ बोरसद पुलिस के 'टोस्ट-पान' का अयोजन कर डालें और एक 'स्पेशल केबिल' द्वारा यह सुसम्वाद चचा-चर्चिल को भी भेज दें, ताकि वे भी अपना शोकाश्रु पोंछ कर बाल्डविन कमिटी से इस्तीफ़ा वापस ले लें !

❀

बोरसद की पुलिस ने बच्चों को बेतों से पीटा, स्त्रियों को बाल पकड़ कर घसीटा, उनकी छातियों में घूँसे मारे, 'भठियारख़ानवी' ज़बान में उन्हें चुनी हुई गालियाँ दीं और सिर, कमर तथा पीठ का विचार किए बिना, उन पर लाठियों की स्निग्ध-शीतल वर्षा करके 'सार्वभौमिकता' की भी नाक रख दी। बतलाइए, इससे बढ़ कर बहादुरी का काम और क्या हो सकता है ? फलतः बोरसद की पुलिस की कृपा से सखी नौकरशाही की बड़ी भारी बला, बात की बात में टल गई। बस, अब 'बाल न बाँका करि सके जो जग बैरी होय !'

❀

'पॉयोनियर' ने सुना है, कि बलिया आदि ज़िलों की तरह इलाहाबाद ज़िले में भी फ़ौजी सिपाहियों की टोलियाँ घुमाई जायगी। यही नहीं, इलाहाबाद के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट साहब के आदेशानुसार देहाती पाठशालाओं के शिक्षक अपने छात्रों के साथ सेना के प्रति सम्मान प्रदर्शन करने के लिए रास्तों पर हाज़िर रहेंगे और जब फ़ौज के सिपाही 'लेफ़्ट-राइट ! लेफ़्ट-राइट !' करते हुए उधर से निकलेंगे, तो लड़के उन्हें झुक कर सलाम करेंगे ! व्यवस्था बुरी नहीं जनाब, जिनके द्वारा जानो-माल की रक्षा होती है, जिनके 'चब्य-चूस्य' तथा 'लेह्य पेय' के लिए दरिद्र भारत को अपनी गाढ़ी कमाई का सब से बड़ा हिस्सा अर्पण कर देना पड़ता है और

चचा तुरज़्ज़ई की आफ़त से जिन्होंने भारत को बाल-बाल बचा लिया है, उनके प्रति सम्मान प्रदर्शन करना तो भारतवासियों का धर्म ही ठहरा !

❀

श्रीजगद्गुरु की राय है, कि जिस समय अपने सबूट चरणों की 'मचर-मचर' ध्वनि से दिगन्त को मुखरित करती हुई यह सेना किसी स्कूल के पास गुज़रे, उस समय लड़के 'दण्डवत्' ज़मीन पर लेट जायँ और उसकी चरण-रज लेकर माथों पर लगा लें तथा थोड़ी सी अपने अभिभावकों के लिए भी बटोर लें ! क्योंकि, आख़िर उन बेचारों को भी स्वर्ग-यात्रा के लिए कुछ सम्बल चाहिए या नहीं ! लम्बे सफ़र का मामला ठहरा, चुटकी भर साथ रहेगी तो बड़ा काम देगी। फिर तो मजाल नहीं अल्लाह मियाँ की, जो विहिश्त में जगह न दें।

❀

कोमल मति ग्रामीण बच्चों के निर्विकार हृदयों पर अभी से गुलामी की अमिट मुहर लगा देने की निहायत अच्छी युक्ति सोची है इलाहाबाद के मैजिस्ट्रेट श्री० बमफोर्ड (Mr. Bomford) महोदय ने ! ईश्वर आपको दीर्घायु करे ! ऐसे विलक्षण बुद्धिशाली मैजिस्ट्रेट तमाम ज़िलों पर तैनात कर दिए जायँ तो माशा अल्लाह, बात की बात में सारी क़बाहत दूर हो जाय और भारत में अङ्गरेज़ी राज्य महाप्रलय के बाद तक के लिए अटल-अचल हो जाय !

❀

क्या कहें, दइमारे जगदीश्वर को ! जगद्गुरुत्व के जाल में ऐसा जकड़ दिया कि स्वर्ग-प्राप्ति के सुलभ साधन अर्थात् वंशवृद्धि से सोलह आने महरूम रह जाना पड़ गया, नहीं तो अपने वंशधर श्री को फ़ौरन इलाहाबाद के किसी देहाती स्कूल में ब्रिटिश सेना को सलाम करने के लिए भेज देता और फिर इनदनाता हुआ पहुँच जाता अल्लाह मियाँ के पायतख़्त तक ! थी किसी की मजाल जो रास्ते में रोक लेता ?

❀

भई, यों तो एक से एक बढ़ कर तक़दीर के साँड इस देश में मौजूद हैं, परन्तु जैसी तक़दीर हमारे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की है, वैसी किसी की नहीं ! झगड़ा, विवाद, मतभेद और दलबन्दी तो इसकी दुम के पीछे ऐसे लगे रहते हैं, जैसे ग़रीब की गोली के पीछे गोबरौरे ! कहावत है, कि 'जहँ-जहँ चरन पड़ें सन्तन के तहँ-तहँ बन्टाधार !' हज़रत गोरखपुर गए तो 'तू-तू मैं-मैं' साथ गई ! मुज़फ़्फ़रपुर पहुँचे तो लट्ठबाज़ी को हमराह लेते गए ! अब की कलकत्ता तशरीफ़ ले गए हैं, तो सुनते हैं वहाँ भी जूतोंबाज़ी की तैयारियाँ हो रही हैं ; मर्दे-मैदान हथियार थाम कर अखाड़े में उतर पड़े हैं। किसी के हाथ में हज़रत की दुम है तो किसी के हाथ में कलेजा ! ठीक उस अभागे दो बीवियों वाले शौहर की दशा है, जिसे 'छोटी बीवी' चोटी पकड़ कर ऊपर खींचती थी और 'बड़ी' टाँग पकड़ कर नीचे !

❀

बतलाइए, ऐसी कशमकश में पड़ा हुआ कोई पुरुष कितने दिन जी सकता है ? यहाँ आर्थिक अवस्था ऐसा स्वच्छन्द (?) कि चूहे दिन-रात दण्ड-पेल रहे हैं ! पुराने बिहीख़्वाहों को सच्ची नौकरशाही की नाज़बरदारी से ही फ़ुर्सत नहीं ! और तो और, 'इन बहूरानियों को सीख' देने वाले प्रधान-मन्त्री जी भी किसी 'कृष्ण-भवन' में 'सी' क्लास या 'बी' क्लास के मज़े ले रहे हैं ! ऐसी दशा में अगर तबेले में 'चासलेटी' लतिहाउन न होती तो क्या नाक कट जाती ?

❀

स्वतन्त्रता ही केवल स्वतन्त्रता के युद्ध का अन्त कर सकती है

साहस, निर्भीकता, त्याग और सहनशीलता के पूर्ण विकास का नाम ही स्वतन्त्रता है

भारतवासियों को चेतावनी

स्वतन्त्रता के अतिरिक्त, कोई वस्तु स्वतन्त्रता के युद्ध का अन्त नहीं करेगी।

भारतीय संग्राम की वास्तविकता तथा उद्देश्य स्पष्ट है।

शान्तिमय संग्राम हमारा साधन है, पूर्ण-स्वराज्य हमारा ध्येय है।

स्वतन्त्रता—भारत तथा इङ्गलैण्ड में सम्मानयुक्त समझौते तथा पूर्ण-स्वराज्य के ध्येय में बाधक नहीं होती।

भारतवासियों की स्वतन्त्रता पर कोई रुकावट, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा मानसिक अधिकारों में कोई बाधा, पूर्ण-स्वराज्य के ध्येय के विरुद्ध है।

महात्मा गाँधी तथा देश के अन्य नेताओं की रिहाई, स्वतन्त्रता-संग्राम की गति-विधि तथा ध्येय को बदल नहीं सकती।

यह छुटकारा न नेताओं की और न देश की माँग के फल-स्वरूप है।

यह रिहाई हमारे शासकों के हृदय-परिवर्तन तथा नीति-परिवर्तन को सूचित नहीं करती।

एक ओर यरवदा जेल के किवाड़ खोल कर देश के नेताओं को छोड़ा जाता है, दूसरी ओर सुभाष इत्यादि अनेकों वीर और वीराङ्गनाओं को, जिनका अपराध केवल राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की लगन है, जेलों में ठूँसा जा रहा है।

परन्तु आज देश की वर्तमान परिस्थिति क्या बतलाती है ? करेला में स्वयंसेविकाओं को एक-एक वर्ष की कड़ी क़ैद, कलकत्ते में लाठी-प्रहार तथा मद्रास में गिरफ़्तारियाँ इत्यादि समाचार भारतवर्ष के कोने-कोने से आ रहे हैं, इन सबका आशय प्रत्यक्ष है।

स्वतन्त्रता का संग्राम तब तक जारी रहेगा, जब तक हम स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं कर लेंगे।

स्वतन्त्रता कोई ऐसा प्रसाद नहीं है, जोकि पार्लामेण्ट, मैकडॉनल्ड, अथवा इर्विन हमारे सदाचार से प्रसन्न होकर हमारे हाथ पर धर देंगे।

साहस, निर्भीकता त्याग और सहनशीलता के पूर्ण विकास का नाम ही स्वतन्त्रता है।

भारतवर्ष स्वतन्त्रता के लिए उतना ही अग्रसर होगा, जितना कि भारतवासी इन गुणों को अपने व्यक्तिगत तथा जातीय जीवन में अपनाएँगे।

स्वतन्त्रता का मार्ग बहुत लम्बा है, हमारा ध्येय दूर है।

सन्देह के लिए कोई स्थान नहीं, जेल से लौटे हुए नेताओं का स्वागत आज स्वतन्त्र भारत नहीं कर रहा है और न नवागत नेता स्वयं स्वतन्त्र हैं। गुलाम देश के गुलाम नेता राष्ट्रीय अखाड़े में फिर से काम करने के लिए आज उपस्थित हुए हैं।

यह समय ख़ुशी का नहीं, आज अपना हिसाब-किताब परखना होगा। २६ जनवरी, १९३० से लेकर,

---

कानपुर के यमुना कूले वाले 'मनचुखा' जी पूछते हैं—......"घर का काम सँभालें, या कॉङ्ग्रेस कमिटी की बलिवेदी पर जीवन को भेंट चढ़ावें। जो कहिए, सो करें !!" बस, जो करते आए हैं, वही करते रहिए। 'वर्तमान' बन्द हो जाय तो 'मनचुखा' निकालिए, 'मनचुखा' बन्द हो 'वर्तमान' निकालिए। 'इस कोठिले का धान उस कोठिले' में भरते रहिए ! 'बेकार न रह कुछ किया कर, गुदड़ी उधेड़ कर सिया कर !'

❀

कॉङ्ग्रेस कमिटी के झगड़े में पड़ना भले आदमी का काम नहीं। सुनते हैं, वहाँ नमक-चूरी का बिलकुल इन्तज़ाम नहीं और खाने को बाजरे और ज्वार की मोटी रोटियाँ मिलती हैं। बक़ौल आपके वहाँ न 'ए० बी० रोड का ख़ोनचा' है, न मङ्गली हलवाई की कचौड़ियाँ ! इसीलिए तो अभी तक यह मसला ज़ेरे तजवीज़ ही पड़ा हुआ है कि 'छात्रों को राजनीति में भाग लेना चाहिए या नहीं ?' अपने राम की भी देश के नौजवानों को यही नेक सलाह है कि भई, माता-पिता की नाज़ो-नेमत से पाली हुई देह इसलिए नहीं है कि उसे देश-सेवा की ज़हमत में डाल दिया जाय !!

❀

जब कि पूर्ण-स्वराज्य की घोषणा की गई थी—आज तक पूरे एक वर्ष में हमारे लाभ तथा हानियों की मात्रा क्या है ?

मैकडॉनल्ड की शर्तों पर सोच-विचार करने का प्रश्न तब उठेगा, जब भारतवासी स्वतन्त्रतापूर्वक आपस में बैठ कर परामर्श कर सकेंगे, जब देश अपने त्याग द्वारा इतना अधिकार प्राप्त कर लेगा कि उसके राजनैतिक क़ैदियों को सरकार दया-भाव से नहीं, अपितु उसका अधिकार मान कर छोड़ने पर बाधित हो जाएगी। यह समय तब आवेगा, जब गुजरात के वीर किसानों, सीमा-प्रान्त के बहादुर पठानों, शोलापुर के अभागे युवकों तथा भारतवर्ष के स्त्री-पुरुषों, जिन्होंने कि लाठी-प्रहार, 'कारावास, अपमान तथा दूसरी विपत्तियों का सामना इस राष्ट्रीय संग्राम में किया है, उन सबका पूर्ण रूप से बदला चुका लिया जावेगा।

महात्मा जी तथा पं० जवाहरलाल इत्यादि नेता अपने ध्येय—पूर्ण स्वराज्य—की प्राप्ति के लिए स्वातन्त्र्य युद्ध का नेतृत्व करने के लिए उपस्थित हुए हैं। यदि मैकडॉनल्ड तथा इर्विन शुद्ध-हृदय हैं, तो उन्हें भारतीय नेताओं से उचित रूप में मिल कर ऐसा समझौता करने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसे कि भारत तथा इङ्गलैण्ड दोनों सम्मानपूर्ण समझें।

चाहे मैकडॉनल्ड तथा इर्विन सच्चे हों या झूठे, प्रत्येक भारतवासी का धर्म है कि वह स्वतन्त्रता-संग्राम के ध्येय—पूर्ण स्वराज्य—पर दृढ़ रहे।

देश को याद दिलाने के लिए हम लाहौर-कॉङ्ग्रेस के प्रस्ताव का मुख्य अंश दुहराते हैं :—

"हम ऐसे शासन के, जिसके फल-स्वरूप हमारा आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पतन हुआ है, अधीन रहना ईश्वर तथा मनुष्य के प्रति अपराध समझते हैं। इसलिए हम पूर्ण-स्वराज्य की प्राप्ति के लिए समय-समय पर कॉङ्ग्रेस की आज्ञाओं का पालन करने का निश्चय करते हैं।"

और कॉङ्ग्रेस का आदेश है कि युद्ध जारी रक्खो ! भारतवासियों का कर्त्तव्य स्पष्ट है।

—"फ़्री प्रेस जर्नल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

अब केवल बातों से काम न चलेगा

'राउण्डटेबिल तमाशे' के अन्त में मिस्टर रैमज़े मैकडॉनल्ड का जो भाषण हुआ है, उससे यह नहीं मालूम होता कि प्रधान-मन्त्री किसी गिरजे में उपदेश दे रहे हैं या भारत के प्रतिनिधियों से कुछ कह रहे हैं। मालूम होता है कि उन्हें यह मालूम हो गया है कि ये भारत के स्वयंभू नेता भारत के असली प्रतिनिधि नहीं हैं और इसलिए इन्हें वे केवल अपने साथ एक ही मेज़ पर खाना खिला कर तथा थोड़ा सा स्वागत करके ख़ुश कर सकते हैं। इसमें परिषद की सफलता के विषय में तो उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। परिषद में दो दल मिले, उन्होंने वाद-विवाद किया और दुआ-सलाम के बाद अपने-अपने घर को रवाना हुए। अब वे परिषद के कार्य को अपने देशवासियों को समझाएँगे और विपक्षियों के आक्षेपों से बचावेंगे। इस कार्य में भारत के सदस्यों को तो बहुत कठिनता पड़ेगी। भारतीयों ने प्रधान सचिव की गोल-गोल बातों का ख़ूब अध्ययन कर लिया है। उसके अध्ययन से तो उन्हें यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि इङ्गलैण्ड की मज़दूर-सरकार भारत को स्वराज्य का तो नाम-मात्र देना चाहती है। यह स्वराज्य ऐसा होगा जिसमें अङ्गरेज़ों के स्वार्थ की रक्षा को मुख्य स्थान दिया जावेगा और उसके बाद भारतीयों को अधिकार देने की बात सोची जावेगी। केन्द्रीय शासन में भारतीयों को जो अधिकार दिए जा रहे हैं, उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य का कोई भी उपनिवेश, एक क्षण के लिए भी स्वीकार न करेगा। ये अधिकार चारों ओर से बँधे हुए हैं और इसके अतिरिक्त सेना तथा विदेशी सम्बन्ध इत्यादि प्रमुख विषयों पर भारतीयों का कुछ अधिकार ही नहीं रक्खा गया है। क्या कनाडा या दक्षिण अफ़्रिका ऐसे देश इस शासन-प्रणाली को स्वीकार कर सकते हैं ? फिर भारत ही इसे क्यों स्वीकार करे ?

मिस्टर मैकडॉनल्ड की एक बात से और रोष उत्पन्न होता है। वे कहते हैं कि इङ्गलैण्ड ने तो भारत को स्वराज्य देने का वचन दिया है। भारत-निवासी अब इतने मूर्ख नहीं रहे कि वे केवल वचनों को पाकर ख़ुश हो जावेंगे। इङ्गलैण्ड ने कितनी बार भारत को स्वराज्य देने का वचन दिया है, और कितनी बार उसे तोड़ा है। इस बार उसकी दाल न गलेगी, केवल स्वराज्य-घोषणा से काम न चलेगा। उन्होंने भारत के युवकों को, जो शान्ति तथा क्षमता का उपदेश दिया है, उससे भी उनका कुछ मतलब हल न होगा। शान्ति तथा क्षमता की वास्तविक शिक्षा तो उन्हें यहाँ महात्मा गाँधी से मिल रही है। अहिंसात्मक सत्याग्रह-संग्राम में उन्होंने इसे कार्यरूप भी दिया है। मिस्टर मैकडॉनल्ड शान्ति के उपासक बनने का ढोंग करते हैं, परन्तु अपने कार्यों द्वारा वे संसार के दो देशों के बीच में कलह तथा घृणा का बीज बो रहे हैं। वे भारत को स्वराज्य देने का ढोंग करते हैं, परन्तु उसमें यह निश्चय कर लेते हैं कि इस 'स्वराज्य' में भारत का असली मालिक कौन रहेगा; भारत या इङ्गलैण्ड ? प्रधान-मन्त्री ने भारत के लिए जिस शासन-प्रणाली की रचना की है, उसमें भारत का असली शासक इङ्गलैण्ड ही रहेगा। फिर क्या वे भारतीयों को इतना मूर्ख समझते हैं कि वे इसे स्वीकार कर लेंगे।

—"बॉम्बे क्रॉनिकल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

गोलमेज़ का निर्णय

"हिन्दुस्तान कभी ऐसी योजना को स्वीकार नहीं कर सकता। वह तो आज़ादी के लिए तड़प रहा है। उसी की बलिवेदी पर वह सब कुछ अर्पण कर चुका है और कर रहा है। उसी के लिए वह लाठियाँ खा रहा है, जायदाद नीलाम कर रहा है, जेलों को भर रहा है, गालियों और अपमान का शिकार बन रहा है तथा तरह-तरह का निर्यातन सह रहा है। यदि इतने ही पर उसे राज़ी होना था तो ऐसी-ऐसी तकलीफ़ें क्यों उठाता ? इतने के लिए ही वह घर-बार क्यों नष्ट कराता, डण्डे क्यों सहता, गोलियों के सामने छाती क्यों तानता, गालियाँ क्यों सुनता, अपमानों को क्यों सहता ? इतना तो ज़ुबान खोलते ही मिल जाता। इसलिए लन्दन में जो कुछ भी हुआ हो और उसके कारण चाहे क्यों न हमारे चन्द भाई फूले अङ्ग न समाते हों, पर हिन्दुस्तान को उसमें ख़ुश होने की कुछ भी वजह नहीं है। उसकी दिली मुराद इससे पूरी नहीं हो सकती और जब तक मुराद हासिल न हो तब तक उसे विराम कहाँ, आराम कहाँ, सुख-चैन कहाँ ? उसे अपनी चेष्टा, अपना प्रयत्न अभी जारी रखना है और यदि वह कुछ दिनों तक अपने मनसूबों पर डटा रहा तो आज़ादी अवश्य उसकी लौंडी बन कर ही रहेगी।"

—"देश" पटना

* * *

गाँधी टोपियों की होली

"हमारी इस ख़बर की पुष्टि कई भारतीय पत्र करते हैं कि भुवनेश्वर फ़ायर ब्रिगेड के पास गाँधी टोपियों की होली जलाई गई। यह बात बिलकुल स्पष्ट है, सार्जन्टों ने लोगों से गाँधी टोपियाँ छीनीं। बहिष्कार करने वाले स्वयंसेवक अगर विलायती टोपियाँ छीनते तो उनको जेल जाना पड़ता। शायद उन पर हमला करने का, डाका डालने का, चोरी करने का और इसके सिवाय ग़ैरक़ानूनी संस्था को सहायता देने का अपराध लगाया जाता। पर सार्जन्टों का वीर कृत्य दूसरी प्रकार का है और हम यह जानना चाहते हैं कि डाइरेक्टर ऑफ़ इन्फ़ारमेशन क्या कहते हैं। शायद वे चुप्पी का बुद्धिमानी मार्ग ही स्वीकार करेंगे। पर यह जानना बड़ा ही उपयोगी होगा कि सड़कों पर छोटी-छोटी होलियाँ जलाने की आज्ञा है अथवा नहीं, या ये सब बातें जलाने वाली वस्तु और जलाने वाले व्यक्तियों पर ही निर्भर रहती हैं।

—"बॉम्बे क्रॉनिकल" (अङ्गरेज़ी)

* * *
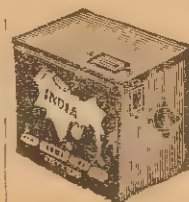
वैज्ञानिक उन्नति तथा भावी युद्ध

[राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी]

बहुधा लोग यह कहते हैं कि आजकल की वैज्ञानिक उन्नति ही हमारे युद्धों का कारण है। वे यह भी कहते हैं कि उसमें होने वाले असह्य कष्ट भी उसीके फल हैं। पर यह मत सर्वथा असत्य है, विज्ञान स्वतः युद्ध का कारण नहीं है। मनुष्यों के प्राण लेने वाली किरण का आविष्कार करने वाले वैज्ञानिक का युद्ध से वही सम्बन्ध है, जो कि चाक़ू बनाने वाले लुहार का एक हत्या से। यदि इसी चाक़ू से एक हत्यारा किसी के प्राण ले लेवे तो उसके लिए लुहार ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। इसी तरह !इन सब युद्धों के लिए आविष्कार करने वाला वैज्ञानिक ज़िम्मेदार नहीं है। वह तो अधिकतर मनुष्योपयोगी आविष्कार ढूँढने में लगा रहता है, और युद्ध सम्बन्धी चीज़ों में अपनी शक्ति नहीं लगाता। परन्तु राष्ट्र के राजनैतिक नेता और शासक इन कामों में राष्ट्र का तमाम रुपया ख़र्च करते हैं, और वैज्ञानिकों को वेतन देकर उनसे ये काम करवाते हैं। बहुधा ऐसा भी होता है कि मनुष्योपयोगी आविष्कार करते समय वैज्ञानिकों को बहुत सी ऐसी बातें मिल जाती हैं, जो कि युद्ध में भी काम आ सकती हैं। देश के शासक उसका उपयोग करते हैं, अपने फ़ौजी कारख़ानों में उसे काम में लाते हैं। ये कारख़ाने राष्ट्र के रुपयों से चलते हैं, जो कि टैक्स द्वारा इकट्ठा किया जाता है। इस तरह राष्ट्र की सारी प्रजा इन सब दुरुपयोगों के लिए ज़िम्मेदार है।

वैज्ञानिक बहुधा शान्ति-प्रिय होते हैं। गत महायुद्ध में काम करने वाले वैज्ञानिकों में से शायद ही कोई ऐसा होगा, जो कि उपयोगी आविष्कारों को छोड़ कर युद्ध के काम को पसन्द करता। गत महायुद्ध तो यदि नवीन आविष्कार न भी होते तब भी वह अवश्य होता। और ज़हरीली गैस, फ़्लेम थ्रोअर इत्यादि आविष्कार तो महायुद्ध शुरू हो जाने के बाद हुए हैं।

इन हथियारों के न होने पर भी युद्ध अवश्य होता। इसमें सन्देह नहीं कि हम लोग फिर भी लड़े बग़ैर न रहते, क्योंकि चोटें पहुँचाने में घूँसे, भाले, तलवार इत्यादि बन्दूक़ या बम से कुछ कम सफलता न पाएँगे। फ़र्क़ बस इतना ही है कि उनका काम धीरे-धीरे होता है और बम इत्यादि का जल्दी। इसीलिए जैसा कि हमें इतिहास से मालूम होता है, वैज्ञानिक आविष्कार के पहले १०० बरस तक चलने वाले युद्ध हुआ करते थे। उस समय चार साल का युद्ध तो केवल एक मामूली झगड़ा समझा जाता; पर आज चार साल के युद्ध ने सारे संसार को हिला दिया है।

युद्ध को रोकने के लिए वैज्ञानिकों का नहीं, वरन् राजनीतिज्ञों का विरोध करने की आवश्यकता है। राजनैतिक नेता तथा उनके साथी धनी पुरुष ही राजवैभव के मद से चूर होकर देशों को युद्ध में डालते हैं।

युद्ध में लगे हुए वैज्ञानिक गत युद्ध के बाद शीघ्र ही उद्योग-धन्धों के कामों में लग गए। क्या यह विज्ञान का दोष है कि हवाई जहाज़ों की उन्नति करने की रक़म युद्ध के हवाई जहाज़ों में आग लगा दी गई? क्या युद्ध-काल के रेडियो तथा एक्सरे के आविष्कार आज हज़ारों मनुष्यों को सुख और शान्ति नहीं पहुँचा रहे हैं?

कुछ लोग वैज्ञानिकों का इसलिए विरोध करते हैं कि उन्होंने युद्ध को अति भयानक बना दिया है। वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण युद्ध भयानक अवश्य हो गया है, पर संसार में और बहुत सी सुख तथा सुविधा की चीज़ें भी बन गई हैं। विज्ञान ने चाहे युद्ध को भयानक बना दिया हो, पर विज्ञान के बिना युद्ध की दशा और भी शोचनीय होती। बम से आहत पुरुष की दशा भाले से मारे गए व्यक्ति से चाहे ज़्यादा ख़राब हो, पर वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण अब पहिले से बहुत कम घायल मरते हैं। वैज्ञानिक आविष्कार द्वारा निकाला हुआ हथियार चाहे दुरुपयोग में पड़ कर हज़ारों को मारता हो तब भी विज्ञान इससे बीस गुना ज़्यादा मनुष्यों को अच्छा करता है। कीड़े मारने वाले आविष्कारों से संसार में जितने लोगों के प्राण बचे हैं उनकी संख्या गत शताब्दी के युद्धों में मरे हुए लोगों से कहीं ज़्यादा है।

विज्ञान तो युद्ध कराने के बजाय उसका अन्त कर सकेगा। धार्मिक झगड़े ज़्यादातर वैज्ञानिक उन्नति से ही कम हुए हैं। सस्ते सामान ढोने की सुविधाओं का आविष्कार होने के कारण व्यापार बढ़ रहा है और उन्नतिशील देशों में अकाल तो अब कहीं नज़र ही नहीं आता।

रेलगाड़ी तथा हवाई जहाज़ों के आविष्कार से अब संसार की सारी जातियाँ एक-दूसरे से मिल सकती हैं; एक-दूसरे के रस्म-रिवाजों को समझ सकती हैं। इस तरह उनमें मित्रता बढ़ सकती है। ये आविष्कार मनुष्यों में उदारता तथा प्रेम-भाव उत्पन्न कर सकते हैं। जो व्यक्ति विज्ञान के छोटे-छोटे दोषों को देखते हैं, उन्हें चाहिए कि वे पहले उसके अद्भुत गुणों का निरीक्षण करें। यह मत सच ज़रूर है कि विज्ञान का सदुपयोग तो हो ही रहा है, परन्तु उसका दुरुपयोग भी हो सकता है। परन्तु यह भी सच है कि इसके लिए विज्ञान ज़िम्मेदार नहीं है। इन सामाजिक त्रुटियों को दूर करने के लिए मनुष्य जाति की उन्नति करने की आवश्यकता है। इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि विज्ञान का नाश कर दिया जावे।

* * *

Registered No. A—2085

१,५००) रु० का आदर्श गुप्त दान

१,००० निर्धन स्त्री-पुरुषों को 'चाँद' ६॥) रु० की जगह ५) रु० में साल भर दिया जायगा

५०० निर्धन स्त्री-पुरुषों को 'भविष्य' ९) रु० की जगह ७) रु० में साल भर दिया जायगा

[illegible] केवल निर्धन स्त्री-पुरुष ही इस रियायत से लाभ उठावें

एक सुप्रसिद्ध दानी सज्जन ने, जिन्हें इस संस्था से अपार प्रेम है, हमारे पास १,५००) रु० इसलिए भेजे हैं, कि इनसे ऐसे व्यक्तियों को 'चाँद' तथा 'भविष्य' रियायती मूल्य पर दिए जावें, जो इच्छा रखते हुए भी, अपनी निर्धनता के कारण पूरा चन्दा नहीं दे सकते। इस दान से प्रोत्साहित होकर संस्था ने भी—केवल प्रचार की दृष्टि से, इस मद में १,०००) रु० की रियायत करना निश्चय किया है, अतएव १,००० निर्धन स्त्री-पुरुषों को ६॥) रु० के स्थान पर ५) रु० में ही साल भर तक (छः मास के लिए 'चाँद' रियायती मूल्य पर जारी नहीं किया जायगा, इसे स्मरण रक्खें) 'चाँद' जारी कर दिया जायगा।

इसी प्रकार ९) रु० के स्थान पर ७) रु० में ही ५०० निर्धन ग्राहकों के नाम साल भर तक 'भविष्य' भी जारी करने का निश्चय किया गया है (जो लोग छः मास के लिए मँगाना चाहें, उन्हें ४) रु० देना होगा, इसे स्मरण रक्खें)

देशवासियों से प्रार्थना है, कि परमात्मा को साक्षी देकर इस दान से केवल ऐसे भाई-बहिन ही लाभ उठावें, जो वास्तव में पूरा चन्दा देने में असमर्थ हों, नहीं तो अनेक निर्धन व्यक्तियों की हक़तलफ़ी होगी, एकमात्र जिनके लिए यह त्याग किया गया है।

रियायती मूल्य में 'चाँद' अथवा 'भविष्य' मँगाने वालों को अपना चन्दा मनीऑर्डर द्वारा भेजना चाहिए

वी० पी० नहीं भेजी जायगी

—व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage, 28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ...	... ६) रु०
छः माही चन्दा	... ५) रु०
तिमाही चन्दा ...	... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य	... ≡)

Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा की कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने से पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; १२ फ़रवरी, १९३१ | संख्या ८, पूर्ण संख्या २०

अब तो कोई तुम्हें मलाल नहीं ? अब तो खुश हो, कि मर गया कोई !!

जो न करना था, कर गया कोई !
वक़् से पहिले मर गया कोई !
इश्क़ में नाम कर गया कोई !
आ गई मौत, मर गया कोई !!
अब तो कोई तुम्हें मलाल नहीं ?
अब तो ख़ुश हो, कि मर गया कोई !
जी उठा कोई देख कर तुमको !
देख कर तुमको मर गया कोई !

पूछते हैं वह, किस तग़ाफ़ुल से
हम यह सुनते हैं, मर गया कोई !!

—"बिस्मिल"
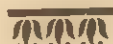
थे स्वदेश-सीपी के द्युतिमय—
मोती, थे लालों में लाल,
भरतखण्ड के गहन सिन्धु के—
थे तुम एक रत्न सुविशाल,
तुम नीतिज्ञों के गौरव थे,
राजनीति पटु जन की आन,
भोग-त्याग दोनों की सीमा,
जीवित सरल आत्म-सम्मान !

कारागार-यन्त्रणा पाकर
हुए देश पर तुम बलिदान !

—आ० प्र० श्री०

राजा साहब कालाकाँकर के लखनऊ का राजमहल—
जहाँ स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू की मृत्यु उन्हें बर्बस खींच कर ले गई थी

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—१२ फ़रवरी, १९३१ | संख्या ८, पूर्ण संख्या २०

लॉर्ड इर्विन पुलिस के नृशंस अत्याचारों की जाँच नहीं करेंगे !

नेहरू जी के श्राद्ध के दिन भारतवासियों को क्या करना चाहिए ?

"बर्मा-विद्रोह में क्रान्तिकारियों का भी हाथ था"

लाहौर षड्यन्त्रकारियों की प्राण-रक्षा का विशाल आयोजन

क्या वास्तव में प्रधान-सचिव भारतीय नेताओं से मिलने आ रहे हैं ?

बनारस में विलायती कपड़ा बेचने वाले एक मुसलमान का ख़ून

—लाहौर का समाचार है कि वहाँ के प्रमुख नागरिकों, नवजवान भारत-सभा, कॉङ्ग्रेस और अन्य संस्थाओं ने मिल कर 'भगतसिंह कमिटी' की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य लाहौर षड्यन्त्र केस के तीन अभियुक्तों—भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव की फाँसी की सज़ा रद्द करवाने की आयोजना करना है। उनकी फाँसी की सज़ा रद्द करवाने के दो कारण हैं। एक तो यह कि संसार फाँसी की सज़ा को घृणा की दृष्टि से देखने लगा है और वह बर्बरता का चिह्न समझता है और दूसरा यह कि देश में जो सन्धि-चर्चा चल रही है, उसकी सफलता के लिए उनकी मुक्ति अतीव आवश्यक है।

—'हिन्दुस्तान-टाइम्स' के एक विशेष प्रतिनिधि को पता चला है कि इस बात की गर्म अफ़वाह है कि सेक्रेटरी ऑफ़ इण्डिया के कॉङ्ग्रेस-नेताओं से मिलने के सम्बन्ध में, बहुत शीघ्र ही एक सरकारी घोषणा निकाली जायगी। इस अफ़वाह की पुष्टि मि० बेन के, हाउस ऑफ़ कॉमन्स के समक्ष इस कथन से भी होती है कि, गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के कार्यों के विषय में सरकार कुछ दिनों के भीतर ही अपनी नीति प्रकाशित करेगी।

—'हिन्दुस्तान-टाइम्स' के लाहौर के एक सम्वाददाता को विश्वस्तसूत्र से पता चला है कि लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्री० जयदेव कपूर और महावीरसिंह, जिन्हें भगतसिंह के साथ ही सज़ा की आज्ञा सुना दी गई है, ९वीं या १०वीं जनवरी की रात को मुलतान सेण्ट्रल जेल से हटा कर किसी अज्ञात स्थान में भेज दिए गए हैं।

इसी प्रकार न्यू सेण्ट्रल जेल से भी, श्री० विजयकुमार सिंह, श्री० किशोरीलाल, श्री० शिव वर्मा और डॉ० गयाप्रसाद, इन अभियुक्तों में से तीन व्यक्ति हटा कर किसी अज्ञात स्थान में भेज दिए गए हैं। पुराने सेण्ट्रल जेल में केवल कमलनाथ तिवारी ही रह गए हैं।

—आगरे का समाचार है, कि रतौली (फ़िरोज़ाबाद) के ज़मींदार श्री० नारायणसिंह और श्री० महीपालसिंह ने अपनी रैयतों को लगान के लिए सताने अथवा स्वयं सरकारी कर देने के बजाय, घर छोड़ देना ही मुनासिब समझा है। पण्डित एस० के० दत्त पालीवाल की पत्नी श्रीमती सुखदेवी पालीवाल ने भी सरकारी कर नहीं दिया, जिसके फल-स्वरूप पण्डित जी के भाई पं० ईश्वरीप्रसाद की जायदाद ज़ब्त कर ली गई है। लोगों का विश्वास है कि सरकार अब स्वयं किसानों से कर वसूल करेगी।

इतमादपुर तहसील के शेरूपुरा नामक गाँव के किसानों ने एक पाई भी कर न देने का निश्चय कर लिया है। उनका कहना है कि बिना कॉङ्ग्रेस के कहे कर न देंगे।

—धारवाड़ का का समाचार है, कि अनकोला तालुके के ६ अन्य पटेलों ने भी इस्तीफ़ा दे दिया है। जिन पटेलों ने अभी तक इस्तीफ़ा दाख़िल नहीं किया है, उनका सामाजिक बहिष्कार किया जा रहा है। गाँवों में मर्दुमशुमारी का पूर्णरूप से बहिष्कार किया गया है। कहा जाता है, कि सरकार लगान न देने वालों की जायदाद की ज़ब्ती का विचार कर रही है।

लाखों मोती हैं, मगर उस आब का मोती नहीं !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

काम करने वाले उससे काम करना सीख जाएँ,
पाँव मैदाने-सियासत में वह धरना सीख जाएँ !
यूँ निडर होकर, किसी से भी न डरना सीख जाएँ,
देश पर मरना किसे कहते हैं, मरना सीख जाएँ !
जानते हैं अच्छे-अच्छे काम मोतीलाल का
रहती दुनिया तक रहेगा नाम मोतीलाल का !

बाँकपन के साथ थी हर आन मोतीलाल की,
थी समुन्दर पार भी क्या शान मोतीलाल की !
दौलते-दुनिया रही मेहमान मोतीलाल की,
देश-सेवा के लिए थी जान मोतीलाल की !
यूँ तो दुनिया के समुन्दर में कमी होती नहीं !
लाखों मोती हैं मगर उस आब का मोती नहीं !!

एक स्पेशल सब-इन्स्पेक्टर ३० पुलिस के जवानों के साथ अनकोला में डेरा डाले हुए है। अब तक केवल एक कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किया गया है।

—वायसराय ने महात्मा जी के पत्र का जो उत्तर दिया है, उससे नेताओं में निराशा फैल रही है; यद्यपि पत्र अभी गुप्त है तो भी पता चला है कि वायसराय के उत्तर ने सारा गुड़ गोबर कर दिया है। उन्होंने पुलिस के अत्याचारों के सम्बन्ध में जाँच करने से साफ़ इन्कार कर दिया है। कॉङ्ग्रेस के एक जवाबदेह व्यक्ति का कहना है कि "वायसराय के उत्तर ने सारा खेल बिगाड़ दिया है।" कहा जाता है कि महात्मा जी इस उत्तर से बड़े असन्तुष्ट हुए हैं।

—बम्बई में कुछ पत्रकारों के समक्ष, सभी सत्याग्रही क़ैदियों के छोड़ दिए जाने के सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट करते हुए महात्मा जी ने कहा है कि, "सरकार यह नहीं देख रही है, कि वर्तमान आन्दोलन का प्रभाव साधारण जनता पर इतने ज़ोरों से पड़ा है, कि किसी भी नेता का—चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो—उनके लिए एक विशेष कार्यक्रम तैयार करना कठिन है। मेरी समझ में साधारण सत्याग्रही क़ैदियों की रिहाई के बिना, केवल नेताओं की रिहाई बेकार है; और यदि दमन-चक्र को न रोका गया, तो इन साधारण सत्याग्रही क़ैदियों को भी छोड़ने से कोई लाभ नहीं।" भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध में आपने कहा कि, "मैं यह साफ़-साफ़ कह देना चाहता हूँ, कि गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में गए हुए अपने मित्रों से सलाह लेने पर, यदि इस बात का निश्चय भी हो जाय, कि कॉङ्ग्रेस प्रधान-मन्त्री की घोषणा के आधार पर सरकार के साथ समझौता कर सकती है, तो भी धरना देने के तथा नमक बनाने के अधिकारों को नहीं छोड़ा जा सकता है। दो देशों में, विशेषकर ग्रेट ब्रिटेन और भारत में, कितना ही मेल क्यों न हो, यह सहानुभूति, मादक द्रव्यों का व्यवहार करने के लिए, विदेशी वस्त्र पहनने के लिए, तथा नमक बनाना छोड़ देने के लिए जनता को प्रेरित नहीं कर सकती।"

समझौते के विषय में आपने कहा कि, "यदि सम्मानपूर्वक समझौता हो सके तो मैं समझौते के लिए बहुत उत्सुक हूँ। मैं उस समझौते से अलग रहूँगा, जिसमें (ऊपर कहे गए) तीनों प्रश्नों को हल नहीं किया जायगा। इसलिए मैं गोलमेज़ परिषद् रूपी वृक्ष की पहचान फल से करूँगा। मैं वास्तविक स्वतन्त्रता चाहता हूँ, उसकी छाया-मात्र नहीं चाहता। और जिस प्रकार डॉक्टर, रोग की अच्छी तरह पहचान करने के बाद तब उसका नाम बताता है, उसी प्रकार, गोलमेज़-परिषद् रूपी वृक्ष के फल की, अपनी साधारण ११ शर्तों के प्रकाश में जाँच करने पर, उसके सम्बन्ध में कुछ कहूँगा।"

—काशी का तार है, कि विलायती कपड़ा बेचने वाले श्री० मोहम्मद जान ख़ाँनगा नामक एक पठान को घर जाते समय गोली मार दी गई। उसने अपने मरणासन्न वक्तव्य में एक कॉङ्ग्रेस वालण्टियर को दोषी बतलाया, फल-स्वरूप वालण्टियरों के कप्तान गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। ठीक पता नहीं चला है।

—सूरत का समाचार है कि सूरत के ६ ठे डिक्टेटर श्री० छगनलाल कावेरी, एक सभा में डिक्टेटर चुने जाने के बाद ही गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बालासोर का समाचार है कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर, भाषण देने के अभियोग में श्री० घनश्याम महन्ती गिरफ़्तार कर लिए गए।

—उत्कल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व सेक्रेटरी श्री० नवकृष्ण चक्रवर्ती को १७ (१) के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—जगदीशपुर (शाहाबाद) का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर वहाँ ८ कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मुज़फ़्फ़रपुर का समाचार है कि मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में ४ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—आरा का समाचार है, कि वहाँ के प्रमुख कार्यकर्त्ता बाबू रामायणप्रसाद और बाबू विन्ध्याचलप्रसाद जो हाल ही में जेल से छूट कर आए हैं, स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में फिर गिरफ़्तार किए गए हैं।

—चाँदनी चौक (कटक) का समाचार है, कि वहाँ की अफ़ीम की दूकान पर धरना देते समय २८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—नौगाँव का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर, राष्ट्रीय झण्डा फहराने तथा अन्य प्रकार से समारोह करने के अपराध में ५० स्वयंसेवकों पर लाठी की वर्षा की गई, जिसके फल-स्वरूप अनेक स्वयंसेवक घायल हुए। ७० कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए, जिनमें ९ महिलाएँ भी शामिल हैं। श्रीमती हबीबुन्निसा भी, जिस समय राष्ट्रीय पताका फहराने का प्रयत्न कर रही थीं, गिरफ़्तार कर ली गईं!

—सूरत का समाचार है, कि वहाँ के चौथे सञ्चालक श्री० ईश्वरलाल देसाई गिरफ़्तार कर लिए गए। उनकी गिरफ़्तारी पर श्री० चन्दूलाल कान्तलीवाला ५वें सञ्चालक बनाए गए। किन्तु वे भी ३६ घण्टे के अन्दर ही गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कहवा (बर्दवान) का समाचार है, कि स्वतन्त्रता-दिवस सम्बन्धी एक जुलूस में नारे लगाने के अपराध में दो व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं।

—दिल्ली का समाचार है, कि वहाँ के बरला मोटर वर्क्स पर पिकेटिङ्ग करते समय ५ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए।

—कलकत्ते का समाचार है, कि श्याम बाज़ार के बाबू देवकुमार गुप्त, बाबू सुधीरकुमार घोष तथा श्रीमान धीरेन्द्र नाथ ठाकुर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बोलपुर का समाचार है कि गत २८वीं जनवरी को पुलिस ने श्री० निशापति कानजी के मकान को, जो रवीन्द्र आश्रम से सटा हुआ है, घेर लिया और श्री० सुरेन्द्रचन्द्र मुकर्जी को गिरफ़्तार कर लिया। गिरफ़्तारी का कारण अविदित है।

—कुमिल्ला का समाचार है, कि वहाँ, श्री० सुभाष बोस की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में सभा होने की घोषणा करते समय ३ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए।

—झाँसी ज़िले के 'डिक्टेटर' पं० भगवतनारायण भार्गव, श्री० कुञ्जबिहारीलाल वकील, श्री० रुस्तम जी और श्री० कृष्णचन्द्र जी को उकसाहट ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। प्रथम दो पर ३००)-३००) रुपया और दूसरे दो पर ५०)-५०) रुपया जुर्माना भी हुआ है।

ख़बर है कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान-मन्त्री बा० विश्वम्भरदयाल भी गिरफ़्तार कर लिए गए। इनके अतिरिक्त ७ अन्य व्यक्ति भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मद्रास का समाचार है, कि श्री० रामचन्द्र शर्मा की मृत्यु जनरल हॉस्पिटल में हो गई। वे गत १० वर्षों से पाण्डिचेरी में रहते थे। आप मद्रास जाते समय विल्लुपुरम् में पञ्जाब-षड्यन्त्र सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे।

—मद्रास का समाचार है, कि गोडाउन स्ट्रीट पर १० स्वयंसेवकों ने धरना दिया। कहा जाता है कि पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर उन स्वयंसेवकों को बलपूर्वक हटाया। दो स्वयंसेवकों को चोट आई। वे अस्पताल भेजे गए।

—बाबरपुर (इटावा) के कार्यकर्त्ता श्री० गौरीशङ्कर और श्री० काशीप्रसाद गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

फिर भी उनकी बड़ी ज़रूरत थी

[नाख़ुदाए सुख़न हज़रत "नूह" नारवी]

इस जगह भी निशान उनका था,
दिल हमारा मकान उनका था!
प्यारी-प्यारी ज़बान उनकी थी,
साफ़-सुथरा ब्यान उनका था!
थे वह पीराना साल कहने को,
दिल मगर नौजवान उनका था!
दोनों आलम से था निराला रङ्ग,
तीसरा एक जहान उनका था!
उनको एक-एक से ब्बत थी,
उनकी एक-एक को मुरौवत थी!
सारे आलम में, सारी दुनिया में,
उनका शोहरा था, उनकी शोहरत थी!
रह चुके ख़ल्क़ में वह मुद्दत तक,
फिर भी उनकी बड़ी ज़रूरत थी!

* * *

—मेरठ का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि ग़ैर-क़ानूनी संस्था को सहायता पहुँचाने के अभियोग में वहाँ के १६ व्यक्तियों को ६६ माह की कड़ी क़ैद और २०) से २५) रुपए तक जुर्माने की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० देवराज खन्ना तथा श्री० जमुना को विदेशी वस्त्र की गाँठें रोकने के अपराध में १००)-१००) रुपए जुर्माने या ४-४ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। [illegible]० राम पाल को बिना प्रकाशक तथा मुद्रक के नाम के पर्चे बाँटने के अभियोग में १ माह की क़ैद की सज़ा हुई है।

—मद्रास का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि मद्रास-सरकार ने "लाठी का मुक़ाबिला कैसे किया जाता है" (How to face lathi charge) नामक एक पुस्तिका को तथा उसके अनुवादों को ज़ब्त कर लिया है।

—सूरत का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि भद्र अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में, बारडोली के कुछ व्यक्तियों को १ से ३ माह तक की सज़ाएँ दी गई हैं। इसके अतिरिक्त सिकर के १, स्याद्धला के ३, सेजवाला के ३ तथा माणिकपुर के ६ व्यक्तियों को भी भद्र अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में सज़ाएँ दी गई हैं।

डॉ० हार्डिकर के लेफ़्टिनेण्ट को १०॥ माह की सज़ा

सूरत का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० एकाम्बर अय्यर को, जो हिन्दुस्तानी सेवा-दल के सर्वेस्व डॉ० हार्डिकर के लेफ़्टिनेण्ट कहे जाते हैं, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) तथा १७ (२) अभियोगों के अनुसार पृथक-पृथक सज़ाएँ दी गई हैं।

१७ (१) के अनुसार आपको ६ माह की सादी क़ैद और १००) रुपए जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त सज़ा, और १७ (२) के अनुसार ६ माह की सादी क़ैद और ३००) रुपए जुर्माने अथवा ३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। दोनों सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी। इस प्रकार जुर्माना न देने पर आपको १०॥ मास तक सज़ा भुगतनी पड़ेगी। इस समय आप बीमार हैं, और ये सज़ाएँ बीमारी की हालत में ही दी गई हैं।

—उलुबरिया (बङ्गाल) का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए वहाँ के ९ स्वयंसेवकों को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सजा दी गई है।

—एटा का २री फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट ने सोरन के मामले का फ़ैसला कर दिया। महीनों पहले वहाँ की एक अमन-सभा में कुछ लोगों ने धरना दिया था। उसके सम्बन्ध में पुलिस ने गोलियाँ चलाई थीं, जिससे ५ मरे थे और लगभग २० घायल हुए थे। उस दङ्गे के सम्बन्ध में जो लोग गिरफ़्तार किए गए थे, ५ महीने तक उनका मामला चलता रहा और अन्त में गत ३०वीं जनवरी को उनका फ़ैसला सुना दिया गया है।

श्री० सुरेन्द्रसिंह पचौरी और श्री० बल्लभ मिश्र को ३-३ वर्ष की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) रुपए जुर्माने अथवा ३-३ माह की अतिरिक्त कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। ९ व्यक्तियों को २-२ वर्ष की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) रुपए जुर्माने अथवा ३-३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

२ मनुष्यों को, जिनमें एक १४ वर्ष का बालक है, ६-६ माह की कड़ी क़ैद, और बाबू पुरुषोत्तमलाल एम० ए० की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती देवी को ६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। बाक़ी ५ छोड़ दिए गए हैं।

—मद्रास का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती लक्ष्मी अम्मल और श्रीमती कमला बाई नाम की दो स्वयंसेविका महिलाओं को १२१ वीं धारा के अनुसार ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—लखीमपुर (खीरी) का २री फ़रवरी का समाचार है, कि उन १४ मनुष्यों में से, जो गत ६ ठीं जनवरी को, दण्ड-विधान की १४३वीं और ३४वीं धाराओं के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, ८ मनुष्यों को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) जुर्माने अथवा १-१ माह की अतिरिक्त-क़ैद की सज़ा दी गई।

—अमृतसर का ४ थी फ़रवरी का समाचार है, कि सरदार पूरनसिंह, सरदार कृपालसिंह और कॉमरेड तेजराम को १७ (२) धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—मुज़फ़्फ़रनगर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि बाबू महावीरप्रसाद को उकसाव-ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और २५) रुपए जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का ५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ४ महिलाओं को १७ (१) धारा के अनुसार २-२ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

ज़मानत देने की अपेक्षा जेल स्वीकार

लाहौर का ४ थी फ़रवरी का समाचार है, कि ज़ुतशी-बहिनों को तथा मिस शकुन्तला, मिस अविनाश कुमारी, श्रीमती शकुन्तला चावला और श्री० रामविलास शर्मा को वहाँ के प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट ने, दण्ड-विधान की १०७वीं धारा के अनुसार १०००)-१०००) रुपए की ज़मानत अदा करने की आज्ञा दी। ज़मानत १ वर्ष तक शान्तिपूर्वक रहने के लिए माँगी गई थी। किन्तु अभियुक्तों ने ज़मानत न देकर, जेल ही जाना अच्छा समझा।

प्रत्येक को १-१ साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। सभी महिलाएँ 'ए' श्रेणी में रक्खी गई हैं, पर शर्मा जी को 'बी' श्रेणी में रक्खे जाने की सिफ़ारिश की गई है।

—चाँदपुर का समाचार है, कि वहाँ के डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने, कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता डॉ० रसिकचन्द्र दे, श्री० हरेन्द्र राउत और श्री० इदरिस मियाँ को, एक शराब की दूकान के सामने, शराब का बोतल फोड़ने के अभियोग में ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। अभियुक्त इदरिस मियाँ को एक अलग अभियोग में २ माह की और सज़ा दी गई है। दोनों सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी।

—आगरे का १ली फ़रवरी का समाचार है, कि पं० रेवतीशरण शर्मा को, जो जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, दण्ड-विधान की १०८वीं धारा के अनुसार १ साल की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'सी' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—बालासोर का समाचार है, कि उत्कल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व सेक्रेटरी श्री० नवकृष्ण चक्रवर्ती को १७ (१) धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि सत्याग्रह समिति के डिक्टेटर श्री० नागेन्द्रनाथ मुखर्जी को जोड़ाबगान के ४थे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने प्रेस-एक्ट की १२वीं धारा के अनुसार उन्हें ३ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

—कानपुर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि बिलहौर तहसील के श्री० गङ्गाधर और फ़तहचन्द, तहसील अकबरपुर के श्री० रघुवीरसिंह, श्री० पुत्तूसिंह और श्री० लालसिंह उकसाव-ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कानपुर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, श्रीमती सरला देवी को, जिन्हें हाल ही में जेल में बच्चा उत्पन्न हुआ था, जो वहीं मर गया, फिर ३ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

—कानपुर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि डॉ० धीरेन्द्रनाथ बनर्जी को १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा और १००) रुपए जुर्माने अथवा २ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

श्री० रामप्रसाद, श्री० सूरजबली शर्मा, श्री० जगदीशप्रसाद तिवारी, श्री० उमाशङ्कर और श्री० द्वारकानाथ टण्डन को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) रुपए जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

५ व्यक्तियों को केवल ३ माह की कड़ी क़ैद, और १३ व्यक्तियों को ३-३ माह की कड़ी क़ैद और १००)-१००) रुपए जुर्माने की सज़ा अथवा ४-४ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—राजकोट का ५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० प्रभादास अम्बावीदास, श्री० चीनूभाई आत्माराम और श्री० शान्तिलाल मीखाभाई को ६-६ माह की तथा श्री० जेठालाल पुरुषोत्तम, श्री० घनश्याम शुक्ल और श्री० बाबूलाल वेनचन्द को ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

जेल में तकली छीन ली गई

—हलाल (पञ्चमहाल) का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि हलाल तालुक़ा कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० पन्नालाल मानिकलाल पारिख डिकवा के भद्र-अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में, आधी-रात के समय गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है, कि जिस समय यह आन्दोलन वहाँ शुरू हुआ उस समय आप कहीं दूसरे स्थान को गए हुए थे।

पञ्चमहाल के दूसरे डिक्टेटर श्री० चुन्नीलाल सी० पारिख धनखेड़ा में; लगानबन्दी के विषय में कार्यवाही करते हुए गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तारी के बाद आप हलाल की हिरासत में लाए गए। आप हिरासत में दिन भर तकली कातते रहे। कहा जाता है कि इससे सख़्त नाराज़ होकर सुपरिण्टेण्डेण्ट ने एक कॉन्स्टेबिल को उनसे तकली छीन लेने की आज्ञा दी।

—हलाल तालुक़े का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि 'भील-सेवा मण्डल' के एक प्रमुख सदस्य श्री० अम्बालाल पुरुषोत्तम व्यास डिकवा में आधीरात के समय गिरफ़्तार कर लिए गए। कहा जाता है, कि आपने वहाँ के सत्याग्रह में किसी प्रकार का भाग नहीं लिया है, तो भी आप १४१वीं धारा तोड़ने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—धारवाड़ ४थी फ़रवरी—"बॉम्बे क्रॉनिकल" के एक सम्वाददाता का कहना है, कि धारवाड़ के एक महाराष्ट्री नेता श्री० नृसिंह नारायण भिसे को ५ महीने पहले, एक विद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध में ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—सूरत का ५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि नमक-क़ानून भङ्ग करने के सम्बन्ध में जलालाबाद के बोदाली नामक एक गाँव का श्री० रामभाई पञ्चाभाई नामक एक किसान गिरफ़्तार किया गया है।

—नागपुर का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि उमरेर के २४ स्वयंसेवकों को ताड़ के वृक्ष काटने के अपराध में ६ महीने से लेकर २½ वर्ष तक की भिन्न-भिन्न अवधि की सज़ाएँ दी गई हैं।

—गत २७वीं जनवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि सोराम तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० शिवशङ्कर प्रसाद भारतीय तथा अन्य ५ व्यक्तियों के मामले का फ़ैसला कर दिया गया। श्री० भारतीय और श्री० बृजमोहन को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई। रामअवतार नामक एक व्यक्ति को २५) रु० जुर्माना अथवा ६ सप्ताह की क़ैद की सज़ा दी गई। अन्य सभी छोड़ दिए गए।

—कराची का समाचार है, कि कराची सत्याग्रह-समिति के भूतपूर्व डिक्टेटर सेठ हरिदास लालजी को वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और ५००) रुपया जुर्माने की सज़ा दी है।

—झाँसी ज़िले के डिक्टेटर पं० भगवतनारायण भार्गव, श्री० कुञ्जविहारीलाल वकील, श्री० रुस्तम जी और श्री० कृष्णचन्द्र जी को उकसाहट ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। प्रथम दो पर ३००)-३००) रुपए और दूसरे दो पर ५०)-५०) रुपया जुर्माना हुआ है।

—आगरे का समाचार है, कि खुर्जा कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष बाबू बालमुकुन्द को ६ माह की सादी क़ैद और ५०) रुपया जुर्माना तथा चौधरी बलवन्तसिंह, पं० लालचन्द, श्री० मुकुटलाल, ठा० भोलासिंह तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और १०)-१०) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है।

२७३ गिरफ़्तारियाँ

किशनगञ्ज (पूर्णिया) का एक समाचार है, कि जनवरी के अन्तिम सप्ताहों में वहाँ, २७३ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। ये सभी गिरफ़्तारियाँ लगरा मेले के सम्बन्ध में हुई हैं। इनमें २१७ व्यक्ति क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—अहमदाबाद का समाचार है, कि पञ्चमहाल के डिक्टेटर डॉ० मानिकलाल को १ माह की सादी क़ैद की सज़ा और १००) रुपए जुर्माने अथवा १ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बम्बई का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ १० स्वयंसेवकों को विदेशी वस्त्र ढोने वाली लॉरी को रोकने के अपराध में ६-६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—गत २८वीं जनवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि ग़ैर-क़ानूनी उकसाव के अभियोग में ३ लड़के, जिनकी आयु १३-१४ वर्ष की होगी, मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। इन लोगों पर सोराम पुलिस-स्टेशन के समीप एक सभा में किसानों को उकसाने का अभियोग लगाया गया था।

अभियोग के सम्बन्ध में अदालत के पूछने पर रामखेलावन नामक एक लड़के ने कहा कि, "मैंने सभा में कहा है कि लगान नहीं देना चाहिए। मैं कॉङ्ग्रेस का स्वयंसेवक हूँ, और मेरा विश्वास है कि सरकार को आर्थिक कठिनाइयों में डाल कर स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है।"

आगे उसने कहा कि वह सरकार की आज्ञा मानने के लिए तैयार नहीं है, और क़ानून के विरुद्ध उसने जो कुछ किया है, वह जान-बूझ कर किया है। अन्य लड़कों ने भी यही कहा। मैजिस्ट्रेट ने उनकी अवस्था का विचार कर, केवल अदालत भङ्ग होने तक के लिए, सादी क़ैद की सज़ा दी।

—सोनमगञ्ज का समाचार है, कि वहाँ के सत्याग्रही कार्यकर्त्ता श्री० कृष्णदास दत्त और रमेशरञ्जन दत्त को १७वीं धारा के अनुसार कॉङ्ग्रेस के लिए चन्दे वसूल करने के अपराध में क्रमशः ३ माह और २ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

मैजिस्ट्रेट से कॉङ्ग्रेस के लिए चन्दा माँगने के अपराध में हरकुमार राय नामक एक स्वयंसेवक भी गिरफ़्तार किया गया है।

—आरा का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में वहाँ अनेक गिरफ़्तारियाँ की गईं। डॉ० रघुवरदयाल और श्री० देवराज उपाध्याय गत २६वीं जनवरी को गिरफ़्तार किए गए। डॉ० रघुवरदयाल के मकान की तलाशी भी ली गई। इसके अतिरिक्त बाबू विन्ध्याचल प्रसाद के मकान की तथा कॉङ्ग्रेस-शिविर और बाल-हिन्दी पुस्तकालय की भी तलाशियाँ ली गईं।

श्री० केदारनाथ वर्मा, श्री० कैलाशपति पाण्डे, श्री० उदयाचलराम, श्री० बच्चालाल और श्री० जगन्नाथसिंह को १७ (१) के अनुसार ४-४ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है।

अस्पताल से ज़बर्दस्ती एक राजनैतिक क़ैदी के मृत शरीर को ले जाने के अभियोग में, बाबू शिवशङ्कर लाल अग्रवाल, बाबू नन्दलाल गुप्त, मौलवी मुहम्मद हसन तथा १२ अन्य व्यक्तियों को १४७वीं धारा के अनुसार १ साल की तथा ४५४वीं धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को २५) रुपया जुर्माना भी हुआ है, जिसके न देने पर १ माह की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

१४ वर्षीय बालक को २ माह की कड़ी क़ैद

अहमदाबाद ६ठी फ़रवरी—'बॉम्बे क्रॉनिकल' का एक सम्वाददाता लिखता है, श्री० चन्द्रवदन चिम्मनलाल नामक एक १४ वर्षीय बालक को, जो 'सत्याग्रह समाचार' बेचने के अभियोग में गिरफ़्तार किया गया था, १० वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार २ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

सर माधवराव की पोती गिरफ़्तार

मद्रास का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि रत्नबाज़ार की विदेशी कपड़े की दूकानों पर ८ स्वयंसेवकों ने सदा की भाँति धरना दिया। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर ४ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया। जिनमें श्रीमती लक्ष्मणराव और स्वर्गीय सर माधवराव की पौत्री श्रीमती हरिराव भी शामिल हैं। अन्य स्वयंसेवकों को बलपूर्वक हटाया गया।

—अहमदाबाद का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि शराब की दूकानों पर धरना देते समय ६ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए।

—मोतिहारी का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्वतन्त्रता-दिवस के सम्बन्ध में श्री० विश्वनाथप्रसाद, चन्द्रिकाप्रसाद, मधुसूदनप्रसाद, हरिनन्दनप्रसाद, विद्यानन्द, रामिखाप्रसाद, मथुरोप्रसाद, जमनाप्रसाद, ठाकुरप्रसाद, सरजूप्रसाद, बलीराम, लक्ष्मीप्रसाद, ब्रह्मदेवप्रसाद, मोहनप्रसाद, कामताप्रसाद राय, जगतपति, कृष्णदेवप्रसाद और बेनीमाधव को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। शुकदेवप्रसाद, मिश्रीप्रसाद और बलदेवप्रसाद को ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कानपुर का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० कुञ्जबिहारीलाल अग्रवाल, श्री० माखनलाल, श्री० अजयकुमार घोष और श्री० राधामोहन वाजपेयी को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

श्री० कालिकाप्रसाद और श्री० कल्लनसिंह को पिकेटिङ्ग के लिए ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—छपरे का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि थाना कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी पं० रघुनाथ आचारी, श्री० राजारामसिंह, श्री० मथुरासिंह तथा सात अन्य स्वयंसेवकों को, जो स्वतन्त्रता-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, १६ (१) धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—नई दिल्ली का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि हिन्दी दैनिक 'अर्जुन' के सम्पादक श्री० रामगोपाल को १२४ 'ए' धारा के अनुसार ६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—पेशावर का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एक सभा में ख़ुफ़िया पुलिस के एक रिपोर्टर को पीटने के अभियोग में ११ व्यक्तियों को १-१ वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—फ़रीदपुर का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि द्विजेन्द्रनाथ बनर्जी नामक एक कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक, जो हाल ही में ६ माह की क़ैद काट कर छूटे थे, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—सिलहट का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि दक्षिणी सिलहट कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० हेमन्तकुमार गुप्त गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। पुलिस ने मौलवी बाज़ार में उनके घर की तलाशी ली। कोई सन्देहजनक वस्तु नहीं पाई गई।

—बर्दवान का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० नृपेन्द्रभूषण भट्टाचार्य, एक आबकारी की दूकान जल जाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

आश्रम जला दिया गया

मोतिहारी का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के ६ठे 'डिक्टेटर' बाबू मुकुटधारी सिंह को ८ माह की, श्री० रामवचनसिंह, श्री० गोपाल जी मिश्र, श्री० रामाश्रयी देव, श्री० रघुनाथ सिंह, श्री० महाराजसिंह, श्री० नागेश्वरप्रसाद को ६-६ माह की तथा श्री० चुन्नी साह को २ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। सबों को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार सज़ाएँ दी गई हैं। कहा जाता है कि रघुनाथपुर आश्रम (सुगौली) जला डाला गया है।

—कलकत्ते का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'नायक' के सम्पादक श्री० सुरेन्द्रनाथ सिंह और मुद्रक श्री० के० शोरेन्द्रलाल दत्त को एक लेख के सम्बन्ध में १-१ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—वैद्यपुर (बर्दवान) का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वैद्यपुर यूनियन कॉङ्ग्रेस कमिटी के कार्यकर्ता श्री० तुलसीचरण बनर्जी और शशिभूषण दास, दण्ड-विधान की ४३६ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं। ये मादक द्रव्यों की दूकानों पर धरना देने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बम्बई का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पीठा स्ट्रीट पर धरना देते समय, रामचन्द्र राघवेन्द्र देसाई और शिवप्पा पावडप्पा नामक दो कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। इन लोगों ने दो पियक्कड़ों की आदत छुड़ाने की कोशिश की थी। इन्हें १७ (१) धारा के अनुसार ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बम्बई का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि उर्दू दैनिक 'हिलाल' के मुद्रक, प्रकाशक और सम्पादक श्री० गुलाम अहमद 'आरज़ू' को, जो २३वीं जनवरी को गिरफ़्तार किए गए थे, राजद्रोह के अभियोग में ३॥ वर्ष की कड़ी क़ैद और ६००) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है।

आपने अपने पत्र में 'बरबादी की आग' और 'सहनशीलता का अन्त' नामक दो लेख निकाले थे।

आपने अपने बयान में कहा, कि उन लेखों में, जो राजद्रोहात्मक बताए जाते हैं, उन्होंने केवल सच्ची बातों का बयान किया है। देश में दमन जारी है और पुलिस भारत के कोने-कोने में लाठी का प्रहार कर रही है, इस सम्बन्ध में उन्होंने दो मुसलमान स्वयंसेवकों का उदाहरण दिया, जो बाबू गेनू के शव के जुलूस में पीटे गए थे और जो अस्पताल में मर गए।

—जलगाँव का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ श्री० अन्ना साहब दस्ता ने, श्री० मुरली धरवन्त दस्ता ने और भुसावल के एक वकील श्री० गोगाले, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कराची का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'कराची कॉङ्ग्रेस बुलेटिन' के सम्पादक श्री० कुमार लालचन्द को, जो एक सप्ताह पहले गिरफ़्तार किए गए थे, ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—ढोलका का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि अहमदाबाद ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० नवनीतलाल छोकशी, ढोलेरा सत्याग्रह-समिति के १४वें 'डिक्टेटर' श्री० गोकुलदास गोवर्धनदास, भारतीय दण्ड-विधान की ११७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। ढोलका ताल्लुका समिति ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई है, और पुलिस ने उस पर क़ब्ज़ा कर लिया है।

—लखनऊ का समाचार है, कि पण्डित जयदयाल अवस्थी की धर्मपत्नी श्रीमती कान्ति अवस्थी को ६ माह की सादी क़ैद और २००) रुपए जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

लगानबन्दी के लिए मैजिस्ट्रेट गिरफ़्तार

पेशावर का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि चारसदा के अन्तर्गत तुद्दाघराम नामक गाँव के जेलदार और ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, ख़ाँ साहब अब्दुल्लाशाह, भूमि-कर न देने के कारण गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बैरीसाल का ६ ठी फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीयुत पुलिनबिहारी सेन के घर पर पुलिस ने धावा किया। कहा जाता है कि तलाशी के बाद, पुलिस ने उन्हें बङ्गाल-ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया है।

—अहमदाबाद का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ ३ व्यक्तियों को १०वें ऑर्डिनेन्स की १८वीं धारा के अनुसार ४-४ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है। इनमें से एक को १००) रुपया जुर्माना भी किया गया है, जिसके न देने पर १ माह की अतिरिक्त सज़ा उसे भुगतनी पड़ेगी।

—मद्रास का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती हीराराव और श्रीमती कमला बाई को जो, पहले ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट थीं, ग़ैर-क़ानूनी संस्थाओं की सदस्या होने के अपराध में ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० सुन्दरम् को ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अलीगढ़ का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कोरियागञ्ज में विदेशी वस्त्र की दूकानों पर धरना देते समय २८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं। जेल में ही इनके मामले का फ़ैसला किया जायगा।

—कानपुर का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीयुत गौरीशङ्कर, श्री० शिवविलास, श्री० गयाप्रसाद और श्री० जानकीप्रसाद को ३-३ माह की कड़ी क़ैद और २०)-२०) रुपए जुर्माने अथवा १-१ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० रामभरोसे और श्री० परशुराम को ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कानपुर का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० सरदारसिंह, श्री० अशर्फ़ीलाल, श्री० मन्नालाल और श्री० छेदीलाल, बिल्हौर तहसील में, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। इस एक्ट के अनुसार १९३१ में अब तक वहाँ ४८ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

कानपुर का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि डेरापुर में गोली चलने के सम्बन्ध में, होरीलाल, कन्हैयालाल, बद्रीप्रसाद, चन्द्रिकाप्रसाद, रामाधार, गुलजारीलाल, मदारीलाल, केदारनाथ, छेदीलाल, घसीटे और बाउ को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

कानपुर, ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० सोहनलाल, जगत नारायण, अर्जुन, रामेश्वर, बच्चू, लल्लू, रामभरोसे, और हरप्रसाद, बिल्हौर तहसील के सहबासू नामक गाँव में, झण्डा सत्याग्रह के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बम्बई का समाचार है, कि प्रोफ़ेसर श्री० आर० चरपुरे को, जो २८वीं जनवरी को १२४-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, प्रत्येक अभियोग के लिए ६ माह की कड़ी क़ैद और ३००) रुपए जुर्माने अथवा ३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा, उनके दो भाषणों के सम्बन्ध में दी गई है। दोनों सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी।

—बेतिया का समाचार है, कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी बाबू प्यारेलाल को १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर वहाँ २२ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं, जिनमें दो छोटे-छोटे लड़के भी हैं।

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

षड्यन्त्रकारियों को गोली से उड़ाने की विकट योजना

पुलिस वालों ने ज़बर्दस्ती शनाख़्त कराने की चेष्टा की

इक़बाली-गवाह की स्त्री गवाहों के कटहरे में

"यदि मैं शनाख़्त न करता, तो पुलिस वाले मार-मार कर मेरा कचूमर निकाल देते !!"

—इन्द्रपाल

श्रीयुत सज्जनसिंह को फाँसी-दण्ड : : "मैं अपील नहीं करना चाहता"

लाहौर षड्यन्त्र-केस

लाहौर २री फ़रवरी का समाचार है, कि आज सेण्ट्रल जेल में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने नए षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों को पेश किया गया। अभियुक्तों ने कचहरी में आकर राष्ट्रीय गीत गाए और क्रान्तिकारी नारे लगाए।

श्री० इन्द्रपाल का बयान

इक़बाली गवाह इन्द्रपाल ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि जब श्रीयुत यशपाल कराची से वापस आया तो वह मुझे श्रीयुत गुलाबसिंह की बैठक पर मिला। उसके पास एक सूट-केस था, जिसमें बहुत सी शीशियाँ थीं। मुझे श्रीयुत यशपाल ने बताया, कि यह सामान इस्लामिया कॉलेज से चुराया गया है।

कुछ समय के बाद श्रीयुत यशपाल, श्रीयुत अमीरचन्द तथा एक और नवयुवक एक मोटर-साइकल लाए। श्रीयुत यशपाल ने कहा कि इस मोटर-साइकल को मरम्मत करवाना है। श्री० अमीरचन्द वह मोटर साइकल मरम्मत के लिए मिस्त्री को दे आया।

फ़रवरी के अन्त में श्री० यशपाल ने मुझे लायलपुर भेजा। मैं वहाँ जाकर पुरानी सराय में ठहरा। रात के समय मुझसे श्री० हंसराज मिलने आया।

मैंने एक बण्डल, जो श्री० यशपाल ने मुझे दिया था, श्री० हंसराज को दे दिया। मैंने श्री० हंसराज को यह भी बताया कि श्री० यशपाल ने गैस बनाने वाली दवाई का प्रबन्ध कर लिया है। श्री० हंसराज के साथ एक और नवयुवक भी मुझे मिला था, परन्तु वह इस समय अभियुक्तों के कटहरे में नहीं है। मैं जब पुलिस की हिरासत में था तो पुलिस वालों ने मुझे श्री० धर्मवीर अभियुक्त को शनाख़्त करने को कहा था। तब मैंने पुलिस के डर से वैसा ही किया।

जज—क्या तुम्हें कहा गया था, कि श्री० धर्मवीर की शनाख़्त करो?

गवाह—हाँ, मुझे पुलिस अफ़सरों ने कहा था, कि इसकी शनाख़्त करनी है।

जज—आपने ऐसा क्यों किया!

गवाह—मुझे वादा-मुआफ़ी का लालच दिया गया था। इसलिए मैंने ऐसा किया।

मैंने इक़बाली गवाह बनना, इसलिए स्वीकार नहीं किया था, कि मैं झूठी गवाही देकर निर्दोष नवयुवकों का ख़ून कराऊँ। परन्तु उस समय यदि मैं शनाख़्त न करता तो मेरी शामत आ जाती। पुलिस वाले मार-मार कर मेरा कचूमर निकाल देते।

जज—क्या आपने गिरफ़्तारी से पहले कभी श्री० धर्मवीर अभियुक्त को देखा था?

गवाह—नहीं।

जज—आपने श्री० धर्मवीर अभियुक्त को कब देखा?

गवाह—पहले-पहल मुझे श्री० धर्मवीर क़िलाशाही में बड़ी दूर से दिखाया गया। वहाँ से मैं उसे अच्छी तरह से नहीं देख सका। इसलिए मैंने पुलिस-अफ़सरों को कहा कि इसे मेरे पास लाया जाए। चुनाँचे पुलिस वाले उसे मेरे पास ले आए। और मैंने उसे सहज ही में शनाख़्त कर लिया।

जज—क्या आपने तकलीफ़ों से डर कर यह बयान दिया था?

गवाह—मैंने तकलीफ़ों से डर कर बयान नहीं दिया था, बल्कि मेरे साथ वादामुआफ़ी की प्रतिज्ञा की गई थी, इसलिए मैंने ठीक-ठीक बयान दे दिया था। मुझे यह कदापि ज्ञात नहीं था, कि प्रतिज्ञा करने पर भी मुझे झूठ बोलने को विवश किया जाएगा।

वकील सफ़ाई—अभियुक्त श्री० धर्मवीर का बयान भी ले लिया जाय। जिससे यह सिद्ध हो सके, कि वहाँ पर अभियुक्त को इक़बाली गवाह को दिखाया गया था।

सरकारी वकील—इस समय अभियुक्त का बयान लेना उचित नहीं। इक़बाली-गवाह पर जिरह करके यह सिद्ध किया जा सकता है कि उसने अभियुक्त श्री० धर्मवीर को देखा था।

श्री० धर्मवीर का बयान

इक़बाली गवाह को कचहरी से बाहर भेज दिया गया और अभियुक्त श्री० धर्मवीर का बयान आरम्भ हुआ।

अभियुक्त ने कहा कि मैं वह स्थान दिखा सकता हूँ, जहाँ पर मुझे इक़बाली गवाह को दिखाया गया था। क़िले में एक बेरी का वृक्ष है, पास ही एक घर है, जहाँ पर लोग निमाज़ पढ़ते हैं। उसके दाहिनी ओर शौचालय है। मुझे सैयद अहमदशाह, हथकड़ी लगा कर ले गया था।

इक़बाली गवाह ने अभियुक्त के इस बयान का समर्थन किया। अपना बयान जारी रखते हुए गवाह ने कहा—श्री० प्रेमनाथ फ़रार अभियुक्त मेरे मकान पर आया करता था। वह प्रायः वैज्ञानिक यन्त्र तथा दवाइयाँ ख़रीद कर लाया करता था। कई बार गैस बनाने का उद्योग किया गया, परन्तु सफलता नहीं हुई।

एक दिन एक व्यक्ति, जिसका पार्टी-नाम 'आसफ़' था, मेरे मकान पर आया। आसफ़ का असली नाम मुझे विदित नहीं। श्रीयुत भगवतीचरण तथा हंसराज उस समय मेरे मकान पर थे। आसफ़ को एक सप्ताह पहले मैंने अपनी बैठक पर देखा था। वह व्यक्ति मुसलमान नहीं था। क्योंकि मैंने कभी उसे अल्लाह का नाम लेते नहीं सुना था। इसकी आयु २४, २५ वर्ष के लगभग थी। वह पञ्जाबी और उर्दू अच्छी तरह नहीं बोल सकता था, अङ्गरेज़ी बहुत तेज़ी से बोलता था। वह श्री० यशपाल के लिए चाय पीने के बर्तन लाया था।

३री फ़रवरी को इक़बाली गवाह ने बयान जारी रखते हुए कहा, कि मार्च के अन्तिम सप्ताह में यशपाल मुझे लायलपुर ले गया। वहाँ पर हम हंसराज से मिले। हंसराज ने हमको एक गुलदस्ता दिखाया और बताया, कि इस गुलदस्ते का ऊपर का भाग काट कर नीचे के भाग से बम का खोल बनाया जायगा। इस खोल को सात भागों में विभाजित किया जायगा। जब बम चलेंगे तो इसके सात टुकड़े हो जायँगे। हमने गुलदस्ते की स्कीम को पसन्द किया और दूसरे दिन लाहौर वापस आ गए।

सरदार भगतसिंह को छुड़ाने का उद्योग

इन दिनों भी यशपाल मेरे ही साथ रहता था। एक दिन यशपाल ने मुझे कहा कि पार्टी ने जेल-एक्शन करने की आयोजना की है। जेल-एक्शन का अर्थ यशपाल ने मुझे बताया, कि सरदार भगतसिंह, श्रीयुत दत्त और इनके अन्य साथियों को छुड़ाना है। इस एक्शन के लिए एक ऐसी गैस तैयार करनी थी, जिससे सारे पहरेदार, सिपाही और जज लोग बेहोश हो जायँ। अभियुक्तों को दूसरी गैस सुँघा कर होश में रखने का विचार था।

"गोली से उड़ाया जायगा"

यशपाल ने मुझे बताया, कि उन अभियुक्तों को, जिन्होंने लाहौर षड्यन्त्र केस में इक़बाली बयान दिए हैं या किसी दूसरे प्रकार से पुलिस की तफ़तीश में सहायता की है, उनको गोली से उड़ा दिया जायगा। जिन अभियुक्तों को प्राण-दण्ड दिया जाना था, उनमें श्रीयुत सुखदेव, जिनको फाँसी का दण्ड मिला है, उनका नाम उल्लेखनीय है। अमीरचन्द अभियुक्त को कचहरी का निरीक्षण करने के लिए, कई बार भेजा गया। मैं भी प्रायः उसके साथ जाया करता था। हमने कचहरी का एक नक़्शा तैयार किया। परन्तु गैस बनाने में असफलता हुई। इसलिए जेल-एक्शन कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया। गवाह ने कहा कि निम्न-लिखित अभियुक्तों को छुड़ाने का निश्चय था। सरदार भगतसिंह

उर्फ़ रणजीत, श्री० प्रतापसिंह अर्फ़ कुन्दनलाल, श्री० डॉक्टर गयाप्रसाद, श्री० कमलनाथ तिवारी, श्री० जितेन्द्रनाथ सान्याल, श्री० अजय कुमार घोष, मास्टर आज्ञाराम, श्री० विजय कुमार सिन्हा, श्री० किशोरीलाल, श्री० प्रेमदत्त, श्री० महावीर सिंह, श्री० राजगुरु, श्री० बटुकेश्वर दत्त। बाक़ी अभियुक्तों को गोलियों से उड़ाने का निश्चय किया गया था।

एक दिन श्री० हंसराज मेरे पास आया और उसने कहा कि यशपाल मुझ पर कुछ नाराज़ है। इसलिए मुझे किसी सीनियर मेम्बर से मिलाओ। मैंने उसे श्री० भगवतीचरण से मिला दिया। यशपाल मुझ पर बहुत नाराज़ हुआ और मुझे गोली से उड़ा देने की धमकी दी।

सरदार भगतसिंह को विप्लव-दल का वचन

श्री० भगवतीचरण ने हमें एक दिन बताया, कि जब श्री० सरदार भगतसिंह तथा श्री० बटुकेश्वर दत्त को एसेम्बली में एक्शन के लिए भेजा था तो उनसे कहा गया था, कि तुमको बलपूर्वक पुलिस के क़ब्ज़े से निकाल लिया जायगा। पार्टी जो वचन दे चुकी है, उसे पूरा करने का विचार कर रही है। इसलिए यह कार्य शीघ्र ही किया जायगा।

४थी फ़रवरी को इक़बाली गवाह ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि मेरे मकान पर श्री० भगवतीचरण, यशपाल, शिव तथा मेरा छोटा भाई दीनानाथ रहते थे। कभी-कभी श्री० दुर्गादेवी, श्री० धनवन्तरी तथा सिराजउद्दौला आया करते थे। सिराजउद्दौला श्री० सुखदेवराज का पार्टी-नाम था। श्री० प्रेमनाथ भी कभी-कभी वहाँ आया करता था। मैंने उस मकान पर आना-जाना बन्द कर दिया, क्योंकि वहाँ सारा दिन साइकलों का ताँता लगा रहता था।

एक दिन मैंने उस मकान पर एक लड़की को देखा। यशपाल ने कहा, इस लड़की को बहुत छुपा कर लाहौर के बाहर कहीं रक्खा जायगा। मैं प्रेम के साथ रावलपिण्डी लड़की का प्रबन्ध करने गया, परन्तु सफल न हुआ। एक दिन मैंने एक और अपरिचित लड़का, जिसकी आयु १६-१७ वर्ष की होगी, मकान पर देखा। उसको "लॉर्ड" के नाम से पुकारा जाता था। यह लड़का श्री० सुखदेवराज के साथ आया था। कुछ दिनों, बाद श्री० भगवतीचरण के आदेशानुसार मैं लायलपुर श्री० हंसराज से बम के खोल लेने के लिए गया। श्री० हंसराज, श्री० अमीरचन्द और मैं तीन बक्सों में सामान बन्द करके लाहौर आए। उस समय मकान पर श्री० भगवतीचरण तथा अन्य मेम्बर उपस्थित थे। सब ने बम के खोल देखे और पसन्द किए।

९वीं फ़रवरी को ट्रिब्यूनल के सम्मुख लाहौर षड्यन्त्र-केस की कार्यवाही प्रारम्भ होने पर इन्द्रपाल ने कहा, कि हंसराज ने मुझसे कहा, कि मुझे चन्द्रशेखर आज़ाद और भगवतीचरण ने पञ्जाब का सञ्चालक नियुक्त किया है।

पुलिस ने अभियुक्तों के बयान लिखे

कुछ दिनों के बाद हरिराम और कृष्णगोपाल अभियुक्त लाहौर आए और मुझसे मिले। मैंने जो यह बयान दिया था, कि वे पार्टी सम्बन्धी कार्य से लाहौर आए थे, ग़लत है। बात यह थी, कि पुलिस ने बयान लिखे थे और मैंने वे ही मैजिस्ट्रेट के सामने दुहरा दिए थे।

मि० सलीम—क्या तुम्हारा मतलब यह है कि कृष्णगोपाल, हरिराम, जहाँगीरीलाल और महराजकिशन पार्टी के मेम्बर नहीं थे?

मुख़बिर ने कहा कि बाद में जहाँगीरीलाल पार्टी में सम्मिलित हो गए थे। मैं महराजकिशन को नहीं जानता। हरिराम और कृष्णगोपाल पार्टी के सदस्य नहीं थे। क्योंकि वे पार्टी के नियमों के अनुसार उसमें सम्मिलित नहीं किए जा सकते थे।

प्र०—फिर वे गिरफ़्तार क्यों किए गए थे?

उ०—पुलिस ने ऐसे ही एक व्यक्ति को अपने जाल में फँसाने की कोशिश की थी, जिसका थोड़ा भी सम्बन्ध पार्टी के किसी सदस्य से था।

मि० सलीम—पुलिस ने तुम्हारे और रूपचन्द के भाई को क्यों गिरफ़्तार नहीं किया?

उ०—मेरा भाई सरकारी गवाह बना लिया गया था और इस प्रकार वह पुलिस का मतलब सिद्ध कर सकता था। रूपचन्द का भाई उम्र में बहुत छोटा था।

प्र०—तुम यह किस प्रकार कहते हो कि हरिराम और कृष्णगोपाल पार्टी के सदस्य नहीं बनाए जा सकते थे?

उ०—पार्टी में सम्मिलित होने के लिए सदस्य की आयु १८ और २५ वर्ष के अन्दर होनी चाहिए, परन्तु हरिराम की उमर उससे ज़्यादा थी। एक नियम यह भी था कि कोई सरकारी नौकर पार्टी में सम्मिलित नहीं किया जा सकता था। कृष्णगोपाल सरकारी नौकर था और इसलिए वह पार्टी में सम्मिलित नहीं किया जा सकता था।

इसके बाद मुख़बिर ने कहा, कि कोई भी सदस्य पार्टी में ३५ वर्ष की आयु तक रह सकता था। नियम प्रकाशित नहीं किए गए थे, सञ्चालक के पास रहते थे। लाहौर षड्यन्त्र-केस के बाद नियमों में परिवर्तन किया गया था और उन परिवर्तित नियमों के अनुसार कोई भी सदस्य उन्हीं बातों के सम्बन्ध में जान सकता था, जिनका उससे ख़ास सम्बन्ध था। यह नियम इसलिए बनाया गया था कि यदि कोई सदस्य गिरफ़्तार हो जाय तो वह पार्टी के अन्य सदस्यों की कार्यवाही का भण्डा न फोड़ सके, जैसा कि पहले षड्यन्त्र केस में हंसराज और फणीन्द्रनाथ मुख़बिरों ने किया था। नियम बड़ी सख़्ती से पाले जाते थे।

इसके बाद मुख़बिर ने कहा कि शिव, जो लापता है, मेरे पास आया, मुझसे बम और रिवॉल्वर लाने के लिए कहा। मैं जहाँगीरीलाल के घर गया और मैंने एक ट्रङ्क में एक रिवॉल्वर और आठ बम बन्द कर, वह शिव को दे दिया। २८ वीं मई को जब मैं एस० डी० स्कूल अपने भाई को देखने जा रहा था, तब शिव रास्ते में मुझसे मिला और उसने मुझसे कहा कि भगवतीचरण, सुखदेवराज और शिव के साथ रावी के तट पर एक बम की परीक्षा करने गया था। बम भगवतीचरण के हाथों में ही फट पड़ा था और वह उससे सख़्त घायल हो गया था। सुखदेव को भी चोट पहुँची थी। मैं शिव के साथ रावी के उस पार ६७ नम्बर के पत्थर (सीमा) के पास गया और वहाँ भगवतीचरण को हाथ में एक पिस्तौल लिए घायल पड़ा देखा। भगवतीचरण ने अपने चङ्गे होने की निराशा प्रकट की। मैं शिव की बाईसिकल पर भगवतीचरण के लिए दवाई और रुई लेने शहर आया। मैंने अपनी आत्म-रक्षा के लिए शिव से एक रिवॉल्वर भी ले ली थी। गुलाबसिंह, हंसराज और अन्य व्यक्ति बैठक में थे और शिव से घटना का हाल सुन चुके थे। आवश्यक सामान लेकर मैं गुलाबसिंह और रूपचन्द के साथ वापस गया। हंसराज पार्टी का सञ्चालक था और इसलिए वह मेरे साथ नहीं गया।

जलपान के पश्चात् अपना बयान प्रारम्भ करते हुए इन्द्रपाल ने कहा, कि एक दिन मैंने दो ऑफ़िसरों को हरिराम के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए सुना। एक ऑफ़िसर ने कहा कि हरिराम हिन्दू-मुस्लिम दङ्गे में बच गया था, उसे इस मामले में अब अवश्य फँसाना चाहिए। फिर उसने उपर्युक्त घटना के सम्बन्ध में कहा, कि मेरे साथी भूल कर मिण्टो-पार्क में चले गए। जब मैं वहाँ पहुँचा तब एक कॉन्स्टेबिल ने उनसे उनके वहाँ बैठने का कारण पूछा। मैंने उसे एक सिगरेट देकर वहाँ से हटा दिया। सवेरे शिव मेरे पास आया और उसने कहा, कि मेरे आने के एक घण्टे बाद भगवतीचरण की मृत्यु हो गई। शिव ने यह भी कहा कि उसका शव जङ्गल में दफ़ना दिया गया है। उसने यह भी कहा कि भगवतीचरण के साथ सुखदेव रावी गए थे और दोनों ने अपनी साइकिलें मल्लाह के पास छोड़ दी थीं। सुखदेवराज का नाम सुनने का यह मेरा पहला अवसर था। शिव ने मुझसे मल्लाह के पास से साइकिलें लाने और उसे कुछ इनाम देने के लिए कहा। मैंने साइकिलें लाकर सुखदेव को दे दीं। मैं जहाँगीरीलाल के यहाँ गया और उसे भगवतीचरण की मृत्यु का सारा हाल सुना दिया।

इसके बाद केस स्थगित कर दिया गया।

* * *

श्री० सज्जनसिंह को फाँसी की सज़ा

लाहौर का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज मि० गोरडन वाकर, सेशन्स जज ने श्री० सज्जनसिंह को मिसेज़ कर्टिस की हत्या के अपराध में फाँसी की सज़ा सुना दी।

अभियुक्त को कहा गया, कि यदि वह चाहे तो हाईकोर्ट में एक सप्ताह के भीतर अपील कर सकता है। परन्तु अभियुक्त ने मुस्कुराते हुए कहा, कि वह अपील करना नहीं चाहता।

पाठकों को याद होगा, कि गत १२ जनवरी को अभियुक्त ने दो बजे दोपहर के कैप्टन कर्टिस के बँगले में घुस कर मिसेज़ कर्टिस तथा उसके दो बच्चों पर तलवार से आक्रमण किया था। सुना गया है, कि अभियुक्त ने बँगले में घुस कर कहा था कि मैं 'कॉङ्ग्रेस वाला' हूँ और मैं जनरल की हत्या करने को आया हूँ। आक्रमण के फल-स्वरूप मिसेज़ कर्टिस का तो देहान्त हो गया, परन्तु उनके दोनों बच्चे बच गए। कैप्टन कर्टिस अपने बच्चों सहित इङ्गलैण्ड को रवाना हो गए हैं।

* * *

"हमने हारना नहीं सीखा"

सरदार टहलसिंह को सात वर्ष की कड़ी सज़ा

लाहौर का समाचार है, कि सरदार टहलसिंह को पुलिस ऑफ़िसर की हत्या के प्रयत्न के अभियोग में एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० ई० एस० लुईस ने सात वर्ष का कठिन कारावास का दण्ड दिया है। घटना का सार इस प्रकार है: ४थी नवम्बर को पुलिस को इस बात की इत्तिला मिली कि धरमपुर गाँव में कुछ षड्यन्त्रकारी ठहरे हुए हैं। यह समाचार पाकर पुलिस के बहुत से कॉन्स्टेबिलों और ऑफ़िसरों ने गाँव को घेर लिया। गाँव में उस समय विश्वेश्वरनाथ और सरदार टहलसिंह थे, जिन्हें गवर्नमेण्ट षड्यन्त्रकारी दल का समझती थी। विश्वेश्वरनाथ की गिरफ़्तारी के लिए गवर्नमेण्ट ने पाँच सौ रुपयों के पुरस्कार की घोषणा की थी और सरदार टहलसिंह को वह नए षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार करना चाहती थी। दोनों अपने हाथों में पिस्तौल और चाक़ू लेकर बाहर निकल आए और जब उनसे अपने आपको पुलिस के हवाले करने के लिए कहा गया, तब टहलसिंह ने उत्तर दिया कि 'हमने हारना नहीं सीखा'। यह उत्तर सुन कर पुलिस ने गोली चला दी और विश्वेश्वरनाथ की वहीं मृत्यु हो गई और सरदार टहलसिंह घायल हो गए। उन पर हत्या के प्रयत्न और बिना लाइसेन्स के अस्त्र रखने के अभियोग लगाए गए थे और उन्हीं के अनुसार उन्हें उपर्युक्त दण्ड दिया गया है।

* * *

बम्बई षड्यन्त्र-केस

बम्बई ३१वीं जनवरी का समाचार है, कि आज षड्यन्त्र-केस के निम्न-लिखित अभियुक्तों को श्री० एच० पी० एच० दस्तूर चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। (१) श्री० गणेश रघुनाथ वैशम्पायन, (२) श्री० जनार्दन बापट, (३) श्री० पुरुषोत्तम बरवे, (४) श्री० शिवराम देवधर, (५) श्री० सदाशिव के० उपाध्याय, (६) श्री० विष्णु जी धामनकर तथा (७) श्री० शङ्कर जेशिन्दे। इस मामले में निम्न-लिखित अभियुक्त अभी तक फ़रार हैं (१) श्री० सुखदेवराज उर्फ़ बुद्धिमान उर्फ़ अर्जुन, (२) श्रीमती दुर्गादेवी उर्फ़ शारदा, (३) श्री० स्वामी राव उर्फ़ एस० एम० राव उर्फ़ नाना साहब, (४) श्री० विश्वनाथ राव वैशम्पायन, और (५) श्री० पुरुषोत्तम सुत्तर !

मि० गर्वे ने गवाही देते हुए कहा, कि मैं फ़ोर्ट-विभाग का Excise Inspector हूँ। मुझे याद है, कि ९ वीं अक्टूबर १९३० की रात को लमिङ्गटन रोड की पुलिस-चौकी पर गोली चली थी। मैं सिनेमा के अन्तिम खेल से लौट रहा था। १२ बजे आधी रात का समय था। मैं फ़ुट-पाथ पर चल रहा था कि एक मोटर मेरे पास से गुज़री। उसके पीछे मि० टेलर बैठा हुआ था। मोटर पुलिस-स्टेशन के सामने रुकी। सार्जेण्ट टेलर मोटर से उतरा और मोटर में बैठी हुई महिलाओं को उतरने में सहायता करने लगा कि इतने में फ़ायर की आवाज़ हुई। मैंने देखा कि सार्जेण्ट की कार के सामने, सड़क के दूसरी ओर एक और कार खड़ी है। मैं आक्रमणकारियों की मोटर से गोली चलने के समय सात-आठ फ़ीट के फ़ासले पर था। आक्रमणकारियों की मोटर का मुँह जेकब-सरकस की ओर था। मैंने देखा कि आक्रमणकारियों की मोटर में तीन व्यक्ति और एक ड्राइवर है। दो पिछली सीट पर थे और एक ड्राइवर के पास बैठा था। गोली चला कर आक्रमणकारियों की कार वहाँ से रफ़ूचक्कर हुई। मैं उसके पीछे भागा और देखा कि उसका नं० X 813 है।

"लम्बे बालों वाला व्यक्ति"

मैंने देखा कि पिछली सीट पर एक व्यक्ति बैठा है, जिसके बड़े लम्बे-लम्बे बाल हैं। उस व्यक्ति को एक काला कपड़ा सिर पर ओढ़ते हुए, मैंने देखा। फिर मैं पुलिस-स्टेशन में गया और वहाँ पर मि० और मिसेज़ टेलर को ख़ून में लथपथ देखा। मैंने पुलिस वालों को मोटरकार का नम्बर बता दिया। जो नोट कर लिया गया।

दूसरी फ़रवरी को कल्याण रेलवे-स्टेशन के क्लर्क मि० राजकिशोर त्रिवेदी ने गवाही देते हुए कहा कि ११ अक्टूबर को कल्याण से चालीसगाँव तक की ढाई टिकटें एक सज्जन ने ख़रीदी थीं, क्योंकि इण्टर का टिकट जो उसने माँगा, वहाँ न मिलता था। कल्याण स्टेशन के दो क़ुलियों ने गवाही देते हुए कहा, कि एक दिन एक व्यक्ति जिसने कि यूरोपियन ढङ्ग के कपड़े पहिने हुए थे, एक महिला तथा एक बालक के साथ रेलवे-स्टेशन पर टैक्सी में आए। हमने उनका सामान सेकेण्ड क्लास वेटिङ्ग रूम में रख दिया। साहब ने कहा था कि हम नागपुर मेल से जायँगे। परन्तु वह गए पञ्जाब मेल से।

मोटर ड्राइवर की गवाही

जोज़फ़ पिण्टो मोटर-ड्राइवर ने गवाही देते हुए कहा, कि किसी महीने की ११ तारीख़ को (महीना ठीक याद नहीं है) उसकी टैक्सी एक सज्जन ने किराए पर ली। थोड़ी दूर चल कर एक व्यक्ति एक महिला तथा एक बालक के साथ मिले। फिर वह सान्ताक्रुज़ गए। जिस सज्जन ने मोटर किराए पर ली थी, वह खार ही उतर गया। नवागत व्यक्ति ने सान्ताक्रुज़ से कुछ सामान लिया। सामान लेकर दादर लौटे। वहाँ उस व्यक्ति ने एक लड़के से कुछ बातें कीं। इसके बाद उन्होंने बाज़ार से कुछ चीज़ें ख़रीदीं और फिर टैक्सी में ही कल्याण स्टेशन गए। गवाह ने उस व्यक्ति की फ़ोटो शनाख़्त की।

इक़बाली गवाह की स्त्री कटहरे में

श्री० खण्डुबाल ने गवाही देते हुए कहा, कि मैं मि० जोज़फ़ पिण्टो की मोटर का क्लीनर हूँ। बुद्धिमान तथा श्रीमती शारदा को हम कल्याण स्टेशन पर छोड़ कर आए थे। गवाह ने जोज़फ़ पिण्टो की गवाही का समर्थन किया।

श्रीमती मोघे ने गवाही देते हुए कहा, कि श्री० वैशम्पायन से हमारा परिचय बहुत पुराना है। वे हमारी लड़की के ब्याह पर भी आए थे। गिरफ़्तारी से एक दिन पहिले श्री० वैशम्पायन हमारे घर आए थे और मेरे पति से बहुत देर तक बातें करते रहे थे। मैंने उन्हें चाय पिलाई थी।

दूसरे दिन मेरा पति गिरफ़्तार हो गया। दोपहर के समय मेरा पुत्र एक छोटे से बालक को लाया। एक घण्टा बाद एक और व्यक्ति आया, जो उस बालक को अपने साथ लेता गया। (क्रमशः)

* * *

"बर्मा-विद्रोह में क्रान्तिकारियों का भी हाथ था"

बर्मा-विद्रोह का संक्षिप्त इतिहास

जेम्स क्रेरर का वक्तव्य

श्री० गयाप्रसाद सिंह के प्रश्न करने पर सर जेम्स क्रेरर ने असेम्बली में बर्मा-विद्रोह के विषय में निम्न-लिखित बयान पेश किया है :—

गत २२वीं दिसम्बर, १९३० को यह विद्रोह थारावड्डी से दक्षिण-पूर्व की ओर एकाएक उठ खड़ा हुआ। इसके पहले इसकी कोई आशङ्का नहीं की जाती थी। उस समय विद्रोहियों में काफ़ी सङ्गठन था। इन लोगों ने रात के समय दो गाँवों पर धावा किया, दो मुखियों को तथा एक फ़ॉरेस्ट-रेञ्जर को मार डाला और ५ बन्दूक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया। उसी दिन पुलिस के एक छोटे दल के साथ क़रीब ४००-५०० विद्रोहियों का मुक़ाबला हुआ। २३वीं तारीख़ को सन्ध्या समय यह ख़बर मिली कि थारावड्डी के समीप ही इनसीन ज़िले में, विद्रोहियों ने दो गाँवों पर धावा किया है और कुछ बन्दूक़ों को लूट लिया है। उसी रात को क़रीब ६०-७० विद्रोहियों ने इनीवा गाँव तथा वहाँ के स्टेशन पर धावा किया, तार के यन्त्रों को तोड़-फोड़ डाला, स्टेशन-मास्टर को पीटा तथा गाँव में आग लगा दी। उन लोगों ने वहाँ के दो दूकानदारों को मार डाला।

२५वीं तारीख़ को उन लोगों ने जङ्गल-विभाग के इञ्जीनियर मि० फ़ील्ड्स क्लार्क को मार डाला। उसी दिन मिलिटरी-पुलिस के एक दल का विद्रोहियों से सामना हुआ, जिसके फल-स्वरूप अनेक विद्रोही मरे और घायल हुए। उसी दिन रात्रि के समय कई सौ विद्रोहियों ने ५० मिलिटरी-पुलिस के एक पोस्ट पर हमला किया, जिसमें सिविल-पुलिस के एक सब-डिविज़नल अफ़सर मारे गए। इस अवस्था में मिलिटरी की सहायता अनिवार्य हो गई और मिलिटरी के आ जाने से विद्रोहियों पर उसका अच्छा असर हुआ; किन्तु प्राकृतिक अड़चनों के कारण इनके लिए, विद्रोहियों की एक बड़ी संख्या को खोज निकालना कठिन हो गया, क्योंकि ये प्रायः रात्रि में ही निकलते थे और बन्दूक़ तथा अन्य प्रकार के सामान लूटा करते थे। २९वीं तारीख़ को पञ्जाबियों के एक दल से २०० बलवाइयों का उदकवीन के समीप सामना हुआ। दूसरे दिन विद्रोहियों ने ओखन के फ़ॉरेस्ट कैम्प पर धावा किया तथा पञ्जाबियों के एक दल ने सिरकवीन के समीप, विद्रोहियों पर आक्रमण किया। ३०वीं तारीख़ को विद्रोहियों ने इनीवा के रेलवे पुल को उड़ा देने का असफल-प्रयास किया। ३१वीं को, विद्रोहियों के तीन दलों के साथ सेना का सामना हुआ। विद्रोहियों की संख्या ५०० के लगभग थी। विद्रोहियों को बहुत क्षति पहुँची। उसी दिन बर्मा राइफ़िल ने अलान्तुङ्ग के हेडक्वॉर्टर पर धावा मारा और मकान को जला डाला। इस बार भी अनेकों विद्रोही मारे गए। हेड-क्वॉर्टर पर सेना का अधिकार हो जाने से अनेकों विद्रोहियों पर इसका प्रभाव बहुत अधिक पड़ा। ये गाँवों को लौटने लगे। किन्तु तो भी विद्रोहियों का छोटा-छोटा दल उत्पात मचाता रहा। २री जनवरी को ५० विद्रोहियों के एक दल का पञ्जाबियों से सामना हुआ, जिसमें विद्रोहियों को अधिक क्षति पहुँची। ३री जनवरी की रात में लगभग १०० विद्रोहियों ने एक गाँव पर धावा किया, किन्तु सिविल-पुलिस ने उन्हें हटा दिया।

इसी समय थामेथिन ज़िले में एक नया विद्रोह उठ खड़ा हुआ। यहाँ ४०-५० विद्रोहियों ने, अनेकों गाँवों पर धावा किया। इन लोगों ने एक मुखिया और एक पुलिस कॉन्स्टेबिल को मार डाला, दो बन्दूक़ लूट लीं और घरों में आग लगा दी। किन्तु इन विद्रोहियों ने, अपने नेता के साथ शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर दिया, और इस प्रकार यह झगड़ा शान्त हो गया।

७वीं जनवरी को प्यापोन ज़िले में भी एक विद्रोह हुआ। पुलिस का क़रीब ६०० विद्रोहियों के साथ सामना हुआ। विद्रोही अपने झण्डे फहराते हुए पुलिस वालों से भिड़े, किन्तु वे हार कर भाग गए।

वर्तमान परिस्थिति के विषय में, मालूम पड़ता है कि विद्रोही अनेक छोटे-छोटे दलों में विभक्त हो गए हैं, किन्तु तो भी, थारावड्डी ज़िले में खुल्लमखुल्ला उत्पात कर रहे हैं। विद्रोह को दमन करने का प्रयत्न किया जा रहा है, किन्तु भय है कि, यह विद्रोह, अन्य ज़िलों में भी कहीं न फैल जाय।

इस विद्रोह में, बर्मा के पुराने विद्रोहों की छाप मौजूद है। किन्तु पहले विद्रोहों की अपेक्षा इसका सङ्गठन बहुत विस्तृत रहा है। इस विद्रोह का उद्देश्य वर्तमान सरकार को उलट देना है। पता चलता है, कि इसके लिए बहुत दिनों से गुप्त तैयारियाँ हो रही थीं। इस विद्रोह का सम्बन्ध सारे प्रदेश से था। विद्रोही बर्मा के कोने-कोने में, इसी प्रकार का सङ्गठन करना चाहते थे। ऐसा विश्वास करने का कारण मौजूद है, कि क्रान्तिकारी दल का भी इसमें हाथ है। क़रीब २,६०० मनुष्यों ने इस विद्रोह में भाग लिया था। विद्रोहियों की ओर के ३०० या इससे अधिक व्यक्ति मारे गए, १३० घायल हुए तथा १,१५० अथवा १,२५० व्यक्ति पकड़े गए। पुलिस और सेना के ३ मारे गए और ७ घायल हुए। इसके अतिरिक्त १ जङ्गल विभाग के इञ्जीनियर तथा १० मुखिए और सरकारी मुलाज़िम मारे गए। इस विद्रोह में अधिकतर मिलिटरी पुलिस से काम लिया गया है, किन्तु सेना की भी आवश्यकता बराबर बनी रही है।

—अहमदाबाद का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ढोलका ताल्लुक़ा कॉङ्ग्रेस कमिटी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई है।

—अहमदाबाद का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वीरमगाँव की ताल्लुक़ा कॉङ्ग्रेस कमिटी, सत्याग्रह कैम्प के साथ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई है। पुलिस ने इन ऑफ़िसों पर क़ब्ज़ा कर लिया है।

—बम्बई का ४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ मादक द्रव्यों की दूकानों पर पिकेटिङ्ग ज़ोरों से जारी है। लगभग ४०० स्वयंसेवक पिकेटिङ्ग में भाग ले रहे हैं।

—हैदराबाद (सिन्ध) का ५ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय स्वयंसेवकों को उन दूकानों के मालिकों ने पीटा। इसके फल-स्वरूप लगभग १२ स्वयंसेवक घायल हुए।

—सूरत का ४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि जलालपुर के अनेक गाँवों में नमक-सत्याग्रह फिर शुरू हो गया है। कराड़ी नामक गाँव में, जहाँ महात्मा जी ठहरे थे, प्रायः नित्य ही नमक-क़ानून भङ्ग किया जा रहा है। कहा जाता है कि १ली फ़रवरी को कराड़ी और मतवाद के क़रीब ५०० लोग, जिनमें स्त्री और बच्चे भी शामिल थे, लागन नामक स्थान पर गए और उन लोगों ने क़रीब ५० मन नमक इकट्ठा किया। घटनास्थल पर पुलिस मौजूद थी, किन्तु उसने किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया। २८वीं जनवरी से १ली फ़रवरी तक इन लोगों ने क़रीब २०० मन गैर-क़ानूनी नमक इकट्ठा किया।

—सूरत का ४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि जलालपुर ताल्लुक़े में अधिकारीवर्ग लगान वसूल करने की फ़िक्र में हैं। वे दिन भर गाँव-गाँव घूमते हैं, पर बहुत ही कम वसूल कर पाते हैं। कहा जाता है कि सिरोदा के तलाती ने लगान न देने के कारण दो किसानों को बन्द कर रक्खा। उसने उन्हें बहुत डराया-धमकाया, पर वे एक पाई भी देने को तैयार न हुए। अन्त में वे छोड़ दिए गए।

—कानपुर का ४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि रात के समय गश्त लगाते हुए एक स्वयंसेवक की दृष्टि एक विदेशी कपड़े की गाँठ पर पड़ी। स्वयंसेवक ने उसके हटाए जाने में बाधा पहुँचाई। बुरी तरह पीटे जाने पर भी स्वयंसेवक टस से मस नहीं हुआ। किन्तु उसके विरोधी अधिक संख्या में थे, इसलिए उन लोगों ने इसे क़ाबू में कर लिया और इस प्रकार वह गाँठ बलपूर्वक हटाई गई।

—काशीपुर का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ 'प्यूनिटिव' पुलिस-टैक्स वसूल किया जा रहा है। अनेक लोगों ने यह टैक्स नहीं दिया है, इस कारण उनके विरुद्ध वारण्ट निकाले गए हैं। वहाँ के एक प्रसिद्ध ज़मींदार पं० लक्ष्मणदत्त भट्ट की एक रिस्टवाच और १ फ़ाउन्टेन पेन इसी सम्बन्ध में ज़ब्त कर ली गई है।

—कराची का ६ठीं फ़रवरी का समाचार है, कि कुछ सत्याग्रहियों ने विदेशी वस्त्र की गाँठों को मालगोदाम से स्टेशन पर ले जाने में बाधा पहुँचाई। पुलिस ने उन्हें हटाने के लिए लाठी का व्यवहार न कर, बेंत का व्यवहार किया।

नागपुर में कॉङ्ग्रेस कार्य

नागपुर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि शराब की दूकान पर धरना देते समय ३ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

कहा जाता है कि जबलपुर में विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय, स्वयंसेवकों को दूकानदारों ने बुरी तरह पीटा। एक स्वयंसेवक बेहोश हो गया, वह अस्पताल पहुँचाया गया।

डॉ० के० सी० बाघल ने सरकारी नौकरी छोड़ कर कॉङ्ग्रेस कार्य में भाग लेना आरम्भ किया है। आप रायपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिक्टेटर' चुने गए हैं।

१४४वीं धारा जारी की गई

धारवाड़ का ४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बेलगाँव ज़िले के बाड़कुन्दरी नामक एक गाँव में दण्ड-विधान की १४४वीं धारा जारी की गई है। इसके अनुसार वहाँ के वार्षिक मेले में, सभाएँ करने, धरना देने आदि कार्यों की मनाही की गई है। इस धारा की अवहेलना की जा रही है, और इस सम्बन्ध में अब तक ४ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं।

'भारतीय क्रान्ति की विशेषता'

डॉ० रवीन्द्रनाथ ठाकुर ३०वीं जनवरी को बम्बई आ गए। आपने प्रेस-प्रतिनिधि से कहा है कि, "भारत ने संसार का ध्यान अपने स्वातन्त्र्य-युद्ध के द्वारा नहीं, बल्कि उन नैतिक उपायों के द्वारा, जिन्हें वह अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त कर रहा है, अपनी ओर आकर्षित किया है। क्रान्ति के इतिहास में भारत ने एक नई विशेषता उत्पन्न कर दी है; और यह विशेषता देश की आध्यात्मिक परम्परा के अनुकूल ही है।"

—१ली फ़रवरी को हेतसिंह और गिरन्दसिंह शमशाबाद में गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है, उन्हें बेंत लगाए गए और बेड़ियाँ पहना दी गईं। जिन लोगों ने उन्हें हार पहनाया था, कहा जाता है, उनकी भी बेंतों से ख़बर ली गई। इनमें एक बुरी तरह घायल हो गया है।

—मोतिहारी का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि चौकीदारी टैक्स न देने के कारण श्री० लालीसाह नामक एक व्यक्ति का बैल, जिसका दाम ३६) के लगभग था, नीलामी पर चढ़ा दिया गया और ६) पर बेंचा गया।

मुसाफ़िर मियाँ की एक बैलगाड़ी, बाबू अलीमर्दन प्रसाद का एक बैल और बाबू गजाधर पाण्डे का १ जोड़ी बैल चौकीदारी टैक्स न देने के कारण ज़ब्त कर लिया गया है।

—ढाके का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ढाका सदर के सब-डिविज़नल-अफ़सर ने बरनाखाली यूनियन में १४४वीं धारा जारी की है। ३ अन्य यूनियनों के लिए भी यह धारा जारी की गई है।

—आगरे का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सहयोगी 'सैनिक' से ४,०००) रुपए की ज़मानत माँगी गई है। २०००) पत्र के लिए, और २०००) प्रेस के लिए। विरोध-स्वरूप पत्र का प्रकाशन स्थगित कर दिया गया है।

राजनैतिक क़ैदियों के साथ दुर्व्यवहार

कानपुर २८वीं जनवरी—हरदोई जेल से एक राजनैतिक क़ैदी लिखता है कि वहाँ 'सी' श्रेणी के राजनैतिक क़ैदियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं हो रहा है। कहा जाता है, कि श्री० बाक़रअली को एक वार्डर ने पीटा। इससे सभी राजनैतिक क़ैदियों में ज़ोरों की सनसनी फैली। उन सबों की ओर से स्वामी ब्रह्मानन्द ने जेल के अधिकारियों से इस बात की शिकायत की। किन्तु उनकी शिकायतों को दूर करने के बदले, सभी क़ैदियों को अपने-अपने बैरकों में बन्द किए जाने की आज्ञा दी गई। क़ैदियों ने इस बात का विरोध किया। कहा जाता है, इस पर वे घसीटे और पीटे गए। अनेकों को, जिनमें कुछ लड़के भी हैं, गहरी चोट आई है।

मैजिस्ट्रेट पर जूता चलाया गया

बम्बई का ४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एस्प्लेनेड पुलिस कोर्ट में, एक मुसलमान विचाराधीन क़ैदी ने मैजिस्ट्रेट मि० आस्कर ब्राउन पर जूता चला दिया। किन्तु जूता मैजिस्ट्रेट को न लगा। वह बाल-बाल बच गए।

वह मनुष्य पुलिसवालों से घिरा था। उसने किस समय जूता निकाला, यह किसी ने नहीं देखा। पुलिस किंकर्तव्य-विमूढ़वत् खड़ी रही। जूता फेंके जाने के बाद अभियुक्त हिरासत भेज दिया गया।

(४थे पृष्ठ का शेषांश)

—कलकत्ते का ६ठी फ़रवरी का समाचार है कि ईस्ट इण्डियन जूट एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री० एच० पी० बागरिया गिरफ़्तार किए गए हैं। आपने, महिला पिकेटरों के प्रति पुलिस के व्यवहार के सम्बन्ध में, टाउन हॉल में एक भाषण दिया था। इसी भाषण के सम्बन्ध में १२४-ए धारा के अनुसार आप गिरफ़्तार किए गए हैं। बीमार होने के कारण आप ज़मानत पर छोड़े गए हैं। १३वीं फ़रवरी से आपका मामला चलेगा।

—अलीगढ़ का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर वहाँ २८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। इनमें २१ क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ड एक्ट की १७ वीं धारा के अनुसार दोषी पाए गए और उन्हें ३-३ माह की कड़ी क़ैद और २५)-२५) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई। ७ व्यक्ति प्रमाण न मिलने के कारण छोड़ दिए गए।

—मदुरा का एक समाचार है कि श्री० आर० श्रीनिवासवरध ऐयङ्गर नामक एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता को १२४-ए धारा के अनुसार गत जून और सितम्बर के उनके दो भाषणों के सम्बन्ध में प्रत्येक अभियोग के लिए डेढ़-डेढ़ वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। इस प्रकार उन्हें ३ वर्ष तक सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

—किशोरगञ्ज का समाचार है कि वहाँ के डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने श्री० बवेन्द्रदत्त मजुमदार नामक एक एम० ए० के विद्यार्थी को ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० ग्राहम के सामने बन्देमातरम् चिल्लाने के अपराध में दण्डविधान की ५०४ वीं धारा के अनुसार ४ मास की कड़ी क़ैद और २००) रुपए जुर्माने अथवा २ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—हावड़ा का एक समाचार है कि वहाँ के डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने श्री० ज्ञान और श्री० शरत को गैर-क़ानूनी संस्था के सदस्य होने के अभियोग में ६०)-६०) रुपए जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

कुछ अन्य व्यक्तियों को भी इसी अभियोग में २५)-२५) जुर्माने अथवा २ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

देश पर भयङ्कर वज्रपात !

त्यागमूर्ति पण्डित मोतीलाल नेहरू का स्वर्गवास !!

गत ६ठीं फ़रवरी को प्रातःकाल ६॥ बजे पण्डित मोतीलाल नेहरू का लखनऊ में, राजा कालाकाँकर की कोठी में, स्वर्गवास हो गया। पाठकों को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि कुछ दिनों से पण्डित जी का स्वास्थ्य बहुत ख़राब हो गया था। आनन्द भवन में उनके स्वास्थ्य की जाँच के लिए जो डॉक्टर एकत्रित हुए थे उन्होंने यह निश्चय किया था कि एक्स-रे परीक्षा के लिए उन्हें फिर कलकत्ता ले जाया जाय। परन्तु स्वास्थ्य अधिक चिन्ताजनक हो जाने के कारण डॉक्टरों को अपना निश्चय बदलना पड़ा और वे उन्हें कलकत्ते न ले जाकर एक्स-रे परीक्षा के लिए लखनऊ ले गए। इस निश्चय के अनुसार आप ४थी फ़रवरी को प्रयाग से ३॥ बजे मोटर द्वारा लखनऊ रवाना हुए। आपके साथ महात्मा गाँधी, डॉक्टर विधानचन्द्र राय और सारा नेहरू-परिवार भी अन्य मोटरों में लखनऊ गया। लखनऊ में वे राजा साहब कालाकाँकर की कोठी में ठहरे। वहाँ उनकी दशा अन्य दिनों से अधिक चिन्ताजनक हो गई और एक्स-रे परीक्षा होने के पहले ही उनका ६ठीं फ़रवरी को ६॥ बजे प्रातःकाल देहावसान हो गया।

"मैं मोतीलाल नेहरू को खोकर विधवा से भी अधिक असहाय हो गया हूँ।"

—महात्मा गाँधी

"यदि पण्डित मोतीलाल नेहरू गवर्नमेण्ट के दुश्मन थे, किन्तु वे उन दुश्मनों में से थे, जिन्हें वह आदर और सम्मान की दृष्टि से देखती है।"

—"डेली हेरल्ड"

उनकी मृत्यु का समाचार क्षण भर में बिजली की नाईं शहर भर में फैल गया। अपने मनोनीत नेता के अन्तिम दर्शनों के लिए जनता व्याकुल हो उठी और थोड़े ही समय में राजा कालाकाँकर की कोठी के सामने जन-समुद्र उमड़ पड़ा। मृत्यु के उपरान्त पण्डित जी का शव कोठी के केन्द्रीय हॉल में रख दिया गया था। वहीं शहर के सम्माननीय व्यक्ति और दर्शकों ने पण्डित जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। ११ बजे शव राष्ट्रीय पताका में लपेट कर मोटर में क़ैसर बाग़ और शहर के मुख्य-मुख्य रास्तों में घुमाया गया। मोटर के साथ हज़ारों व्यक्तियों की भीड़ थी जो शव पर पुष्प-वर्षा कर अपनी अन्तिम श्रद्धाञ्जलि भेंट कर रही थी। इस भीड़ के अतिरिक्त घरों के बरण्डों और छतों पर से स्त्रियाँ और बच्चे शव पर पुष्प-वर्षा कर रहे थे। पण्डित जी के शव के साथ पण्डित जवाहरलाल और मोहनलाल सक्सेना थे और उनके दामाद श्री० आर० एस० पण्डित आगे बैठे हुए थे। उनकी मोटर के पीछे साथ ही एक मोटर में महात्मा गाँधी, श्रीमती स्वरूप-रानी नेहरू और मीराबेन थीं। उनके पीछे मोटरों का एक ताँता लगा हुआ था। उनमें से बहुत सी मोटरें तो इलाहाबाद तक शव के साथ उसकी अन्त्येष्टि क्रिया के लिए आईं।

इलाहाबाद में जैसे ही पण्डित जी की मृत्यु के समाचार पहुँचे सारी जनता उन्मत्त सी हो उठी। शहर भर में अपने आप हड़ताल हो गई और आनन्द भवन के सामने क्षण भर में हज़ारों की भीड़ एकत्रित हो गई। कुछ देर बाद यह ख़बर आई कि पण्डित जी का शव २ बजे मोटर से प्रयाग आएगा। दोपहर से ही भीड़ बढ़ चली थी और चार बजे तक ६० हज़ार से अधिक स्त्री-पुरुष और बच्चे आनन्द भवन के सामने एकत्रित हो गए और सभी बड़ी उत्सुकता से उनके शव की प्रतीक्षा करने लगे। अन्त में उन्हें वह सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग ४॥ बजे इस जन-समुद्र के बीच से मन्द गति से एक मोटर निकली; उसमें राष्ट्रीय झण्डे में लिपटा हुआ पण्डित जी का शव था। मोटर में भी सामने एक राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहा था। शव के सिरहाने राष्ट्रपति जवाहरलाल बैठे थे। शव आते ही 'पण्डित मोतीलाल की जय' के घोष से आकाश गूँज उठा। जिस समय शव अन्दर ले जाने के लिए आनन्द भवन के फाटक खोले गए उस समय मोटर के साथ अन्दर जाने के लिए लोग इतने वेग से आगे बढ़े कि तीन लड़के दब कर बेहोश हो गए। अपनी अन्तिम श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए हाईकोर्ट के सब वकील, सर सुलेमान, मि० जस्टिस मुकर्जी, मि० जस्टिस बनर्जी, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर, कुछ यूरोपियन स्त्रियाँ, एक अमेरिकन पत्रकार और शहर के अन्य गण्य-मान्य सज्जन अन्दर उपस्थित थे। कुछ क्रियाएँ हो चुकने के उपरान्त शव ६ बजे अन्त्येष्टि क्रिया के लिए बाहर निकाला। शव बाहर निकलते ही उस पर चारों ओर से पुष्प-वृष्टि होने लगी। और लोग हाथ लगाने के लिए उसकी ओर टूट पड़े। इसके कारण उसका फाटक से आगे बढ़ना ही कठिन हो गया। इस कठिनाई के लिए शव मोटर पर रख दिया गया। पहले शव को कटरा, जानसनगञ्ज और बहादुरगञ्ज होते हुए सङ्गम पर ले जाने की योजना की गई थी, परन्तु भीड़ अधिक होने के कारण यह विचार बदल देना पड़ा और आनन्द भवन से शव फ़ोर्ट रोड से सीधा सङ्गम पहुँचाया गया। बाँध के उस पार शव के साथ जो जन-समूह था वह माघ मेले की भीड़ की नाईं प्रतीत होता था। शव सङ्गम पर पहुँचते ही लोगों ने 'इन्क़लाब-ज़िन्दाबाद' और पण्डित मोतीलाल के जय-घोष से आकाश गुँजा दिया। कुछ धार्मिक क्रियाओं के बाद शव चिता पर रख दिया गया। महात्मा गाँधी ने स्वयं चिता पर कुछ लकड़ियाँ जमाई थीं।

महात्मा गाँधी का भाषण

चिता में अग्नि-दान के उपरान्त महात्मा गाँधी ने एक अत्यन्त मार्मिक वक्तृता दी। उस क्षीणकाय तपस्वी ने कहा—"पण्डित जी त्याग की मूर्त्ति थे। स्वाधीनता के महायज्ञ में उन्होंने अपने सारे धन, वैभव, सारे ऐश्वर्य, यहाँ तक कि अपनी पुत्रियों, पुत्र-वधू, दामाद और अपने एक मात्र पुत्र की भी आहुति दे दी। आज स्वाधीनता के संग्राम में अपना शरीर त्याग कर उन्होंने इस महायज्ञ में पूर्णाहुति दी है। संसार में आज ऐसे भाग्यशाली मनुष्य कितने हुए हैं जिन्होंने पण्डित जी की तरह स्वाधीनता की वेदी पर अपना सर्वस्व अर्पण किया हो।" उनके बाद मालवीय जी की भी मार्मिक वक्तृता हुई। बाद में अपना भारी हृदय लेकर लोग वहाँ से अपने-अपने घर वापस गए।

* * *

स्वनामधन्य मोतीलाल नेहरू

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

थे स्वदेश-सीपी के द्युतिमय
मोती, थे लालों में लाल,
भरतखण्ड के गहन सिन्धु के—
थे तुम एक रत्न सुविशाल,
तुम नीतिज्ञों के गौरव थे,
राजनीति-पटु जन की आन,
भोग-त्याग दोनों की सीमा,
जीवित सरल आत्म-सम्मान !

मनोयोग के परम पुजारी,
जनक जवाहिर के द्युतिमान,
और कहें क्या तुमको, तुम थे
मूर्तिमान भारत की शान,
तुम गाँधी के दक्षिण कर थे,
भारतीय जन के अभिमान,
कारागार यन्त्रणा पाकर
हुए देश पर तुम बलिदान।

भारत-माता के प्यारे, अग-
णित आँखों के तारे तुम !
हाय, छोड़ कर साथ हमारा
क्यों किस लोक सिधारे तुम ?

लालच क्या थी तुम्हें स्वर्ग की;
भवन तुम्हारा तो था स्वर्ग,
भारत के हित से बढ़ कर तुम—
नहीं समझते थे अपवर्ग,

फिर क्यों जाना हुआ तुम्हारा
भारत की विपत्ति के काल,
कौन समझ सकता है जग में
महज्जनों के मन का हाल,

करना था क्या तुम्हें स्वर्ग में—
जाकर प्रजातन्त्र स्थापन,
पर इस कारण से भी भारत
त्याग न सकता था तव मन !

भारत के गुरु प्रजातन्त्र के
अधिपति का भावी शुभस्थान
कितना शोभित होता तुमसे—
तुम थे, सभी गुणों की खान।

चले गए तुम हाय छोड़ कर
रोता भारत जन-समुदाय,
नाता हमसे सभी तोड़ कर
बहु विधि से करके निरुपाय।

कौन करावेगा भारत में
शुभातङ्क से न्याय-विधान ?
कौन करेगा अब स्वतन्त्र-
भारत का शासन-विधि-निर्माण ?

हुआ भाग्य का जो निर्णय था,
कुटिल काल की गति का रोध,
किसके लिए हुआ, उसका तो
हो सकता न प्रथम है बोध !

* * *

गोलमेज़ के बादल और गाँधी की आँधी

"जिस शासन-प्रणाली को कॉङ्ग्रेस स्वीकार न करेगी, वह भारत में किसी तरह भी नहीं टिक सकती × × × भारत का वास्तविक इतिहास सेण्ट जेम्स के महल में नहीं, बल्कि भारत की जेलों में बन रहा है।"

—फ़ेनर ब्रॉकवे

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के समर्थक श्रीयुत फ़ेनर ब्रॉकवे ने "न्यू लीडर" में निम्न-लिखित लेख दिया है। इसके पढ़ने से यह साफ़ मालूम हो जावेगा कि ब्रिटिश नेता महात्मा गाँधी को अपनी-अपनी ओर खींचने के लिए क्यों उत्सुक हो रहे हैं।

"गोलमेज़ परिषद के सामने आज बड़ी महत्वपूर्ण समस्याएँ उपस्थित हैं। थोड़े ही दिनों में लोगों को मालूम हो जावेगा कि ब्रिटिश तथा भारतीय नेताओं में किसी तरह की सुलह होने की सम्भावना है या नहीं। हम यहाँ पर केवल उस कार्य की समालोचना करने का प्रयत्न करेंगे, जो इस समय तक समाप्त हो चुका है। परिषद के आरम्भ में प्रमुख भारतीय नेताओं के भाषण हुए। इनको सुन कर ब्रिटिश जनता तथा भारतनिवासी दोनों को बहुत आश्चर्य हुआ। ब्रिटिश जनता को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि यह भारत का नरम दल होने पर भी स्वराज्य के लिए इतना उतावला हो रहा है! इस बात की मानो उन्हें ख़बर ही न थी। भारतनिवासियों को भी उनकी दृढ़ता से कुछ आश्चर्य अवश्य हुआ। क्योंकि वे उन्हें देशद्रोही समझते थे।

"इन भाषणों के उत्तर में ब्रिटिश नेताओं ने भी गोल-मटोल बातें कहीं। प्रधान-मन्त्री मि० मैकडॉनल्ड ने कोई बात साफ़ न कही। लॉर्ड पील तथा लॉर्ड रीडिङ्ग ने भी अधिकतर स्वराज्य की माँग का विरोध ही किया। इसी झमेले में बिना कुछ निश्चय हुए परिषद का कार्य छोटी-छोटी उपसमितियों को सौंप दिया गया। केवल एक बात निश्चित थी कि भारत की भावी शासन-प्रणाली विभाजन-सिद्धान्त (Federal principle) पर निर्धारित होगी।

"अभी तक इन उपसमितियों में से केवल एक की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। वह प्रान्तीय शासन के सम्बन्ध में है। परन्तु इसमें भी कोई बात निश्चित रूप से तय नहीं हो पाई है। अधिकतर ब्रिटिश नेता चाहते हैं कि प्रान्तीय गवर्नरों के विशेष अधिकार ज्यों के त्यों रहें, शान्ति-रक्षा का भार अङ्गरेज़ों के हाथ में रहे और शासन-सभा (Cabinet) में केवल सरकारी सदस्य ही रहें। एक बात अवश्य तय हो चुकी है और वह यह है कि ब्रह्मदेश भारत से अलग कर दिया जाय।

"ऊपर से तो बस केवल इन्हीं बातों का पता चलता है। परन्तु जिन सज्जनों का परिषद के कार्य से सम्बन्ध है, वे और बहुत सी बातें बता सकेंगे। पहिली बात तो यह है कि हिन्दू-मुस्लिम समस्या ज़रा भी हल नहीं हो पाई है। दूसरी यह कि भारतीय नेताओं ने यह प्रयत्न किया कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों को केन्द्रीय शासन की ज़िम्मेदारी देने का वचन दे। परन्तु वे इस कार्य में सफल न हुए। इस विषय में अधिकतर ब्रिटिश नेता भारतीय प्रतिनिधियों से ज़रा भी सहमत न हुए। इसलिए ब्रिटिश नेताओं में भी इस विषय में आपस में मतभेद हो गया। कन्ज़रवेटिव दल के नेता चाहते थे कि भारत की सेना, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजनैतिक कार्य तथा आर्थिक नीति पर ब्रिटिशों का पूर्ण अधिकार रहे। मज़दूर-दल वाले आर्थिक नीति में भारतीयों को कुछ अधिकार देने को तैयार थे। लिबरल-दल के कुछ नेता मज़दूर-दल का साथ दे रहे थे और कुछ कन्ज़रवेटिव दल की बातों का समर्थन कर रहे थे। भारत के सब नेता एक होकर यह कह रहे थे कि इन सब विषयों के शासन का भार भारतीयों को दिया जाय।

"आशा है कि इस लेख के प्रकाशित होने के पूर्व कुछ समझौता अवश्य हो जावेगा। सम्भव है, ब्रिटिश नेता भारतीयों को केन्द्रीय शासन की सारी ज़िम्मेदारी देने का सिद्धान्त स्वीकार कर लें, परन्तु इस समय तो वे केवल आर्थिक नीति में भारतीयों को थोड़ा सा अधिकार देने के अतिरिक्त और कुछ न देंगे। इससे अधिकतर भारतीय नेता बहुत असन्तुष्ट हैं। यदि इन बातों पर किसी तरह का समझौता न हो सका, तो यह तय है कि भारत और इङ्गलैण्ड में और भी भेद-भाव उत्पन्न हो जायगा। क्योंकि समझौता न होने पर यह भी सम्भव है कि बहुत से निराश नेता महात्मा गाँधी तथा राष्ट्रवादी कॉङ्ग्रेस से जा मिलें। यद्यपि इससे कॉङ्ग्रेस को विशेष लाभ न होगा, क्योंकि भारत में इनके अनुयायियों की संख्या बहुत थोड़ी है। तथापि इससे उसकी प्रतिष्ठा अवश्य बढ़ जायगी।

"यदि इन नरम दल के नेताओं ने ब्रिटिश नेताओं से समझौता कर भी लिया, तो इस समय हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल नहीं हो सकती। यह सम्भव है कि बाद में इस सम्बन्ध में कुछ निश्चय हो सके, परन्तु जब तक स्वराज्य का प्रश्न हल नहीं हो जाता, तब तक इस सम्बन्ध में कोई ठीक समझौता होने की सम्भावना नहीं है। यदि भारत को "स्वतन्त्रता का सार" दिया गया, तो यह निश्चय है कि भारत के हिन्दू हर तरह से मुसलमानों की शर्तों को पूरा करने का प्रयत्न करेंगे। परन्तु केवल कुछ अधिकार मात्र के लिए वे आत्म-बलिदान करने को तैयार न होंगे।

"इसमें सन्देह नहीं कि यदि मुख्य प्रश्न पर कुछ ठीक-ठीक समझौता न हो सका, तो ब्रिटिश नेता इस परिषद की असफलता का सारा दोष हिन्दू-मुस्लिम समस्या के मत्थे मढ़ देंगे। वे कहेंगे कि हम क्या करें, हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे से मेल करने को तैयार नहीं हैं; ऐसी दशा में स्वराज्य कैसे दिया जा सकता है? परन्तु यह बात बिल्कुल ग़लत है। इस परिषद की बैठक होने के पहिले ही से यह साफ़ मालूम हो गया था कि इसको सफल बनाने का केवल यही एक साधन है कि ब्रिटिश सरकार भारत को स्वराज्य देने की घोषणा कर दे और उसे कार्यरूप में परिणत करने में अपनी सारी शक्ति लगा दे। यदि ब्रिटिश सरकार यह करने को तैयार होती तो हिन्दू-मुस्लिम समस्या बड़ी आसानी से हल हो जाती। जब तक यह वचन नहीं दिया जाता कि यह परिषद एक स्वाधीन भारत की शासन-प्रणाली का निर्माण करने के उद्देश्य से की गई है, भारत के सदस्य इस विषय में अपनी पूरी शक्ति न लगावेंगे। ब्रिटिश सरकार इस मामले में एकदम चुप है। तिस पर विरोधी दल के नेता उनकी माँगों का विरोध कर रहे हैं। ऐसी दशा में उनका सारा उत्साह ठण्डा क्यों न हो जावे?

"इसके अतिरिक्त भी ब्रिटिश नेताओं को एक बात का ध्यान सदैव रखना चाहिए कि जिस शासन-प्रणाली को कॉङ्ग्रेस स्वीकार नहीं करेगी, वह भारत में किसी तरह भी टिक न सकेगी। गोलमेज़ परिषद के सारे सदस्यों के हस्ताक्षर होने पर भी, यदि वह कॉङ्ग्रेस को स्वीकार न हुई, तो भारतीयों के किसी भी काम की न होगी। फिर इस परिषद से यह साफ़ प्रकट होता है कि भारत की स्वराज्य की माँग पूरी न होगी। इसलिए यह तय है कि कॉङ्ग्रेस इसका विरोध अवश्य करेगी। ऐसी दशा में बिना कॉङ्ग्रेस की सहायता के भारत का प्रश्न किसी तरह भी हल नहीं हो सकता।

"गोलमेज़ परिषद के आरम्भ होने के पूर्व ही महात्मा गाँधी तथा नेहरू पण्डितों ने ब्रिटिश सरकार के सामने अपनी शर्तें पेश की थीं। वे चाहते थे कि केन्द्रीय सरकार में सेना, विदेशी सम्बन्ध, देशी रियासतों का सम्बन्ध तथा आर्थिक नीति का भार हिन्दुस्तानियों को दिया जावे। इसके अतिरिक्त भारत के राष्ट्रीय क़र्ज़ की समस्याएँ भी एक निष्पक्ष दल के सामने रक्खी जावें। परन्तु इसका यह मतलब न था कि वे यह चाहते थे कि ये सभी कार्य एकदम उनके हाथों में सौंप दिए जायँ। वास्तविक बात तो यह थी कि वे चाहते थे कि कनाडा, दक्षिण अफ़्रिका तथा ऑस्ट्रेलिया की तरह उन्हें भी 'स्वतन्त्रता का सार' प्राप्त हो जावे। परन्तु ब्रिटिश सरकार ने ये शर्तें क़बूल न की और इसीलिए कॉङ्ग्रेस के नेताओं ने भी गोलमेज़ परिषद में भाग लेने से इनकार कर दिया।

"ऐसी दशा में यदि लन्दन में समझौता हो भी गया, तब भी हमें वास्तविक भारतीय नेताओं से फिर समझौता करना पड़ेगा और वही वास्तविक सन्धि होगी। भारतीय राजनैतिक क्षेत्र की सारी महत्वपूर्ण तथा क्रियात्मक शक्ति आज कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन में लगी हुई है। हिन्दू-मुस्लिम समस्या लन्दन में इतनी विकट मालूम हो रही है, परन्तु कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन में उसका नाम तक नहीं है। वहाँ राष्ट्रीयता की लहर सारी जातियों तथा धर्मों को अपने पवित्र अञ्चल से ढक रही है। लन्दन में आए हुए हिन्दू तथा मुस्लिम नेताओं के अनुयायियों की अपेक्षा कॉङ्ग्रेस के हिन्दू तथा मुस्लिम नेताओं के अनुयायियों की संख्या कहीं बड़ी है। अस्तु—

"लन्दन के झगड़ों से अलग होकर हम जब भारत की ओर दृष्टि फेरते हैं, तब कुछ दूसरा ही दृश्य दिखाई पड़ता है। लन्दन में केवल बहस हो रही है, पर भारत में स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़ा हुआ है, जिसमें हिन्दू और मुसलमान एक होकर लड़ रहे हैं। भारत के ६०,००० पुरुष तथा स्त्रियाँ अहिंसात्मक सत्याग्रह करने के अपराध में जेलों में पड़ी हैं। वहाँ सभाएँ रोकी जा रही हैं, सम्पादकों पर मुक़द्दमे चल रहे हैं, धरना देना अपराध ठहराया गया है, कॉङ्ग्रेस ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई है और उसकी इमारतें तथा सामान ज़ब्त कर लिया गया है। भारत का वास्तविक इतिहास सेण्ट जेम्स के महल में नहीं, वरन् भारत की जेलों में बन रहा है।"

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ७ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व, सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

१२ फ़रवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले—
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

स्वर्गीय पण्डित जी की स्मृति में क्या-क्या करना चाहिए

महात्मा गाँधी की सम्मति

महात्मा जी ने अपनी निम्न-लिखित सम्मति प्रकाशित की है :—

"आगामी रविवार (१५वीं फ़रवरी) पण्डित मोतीलाल नेहरू के श्राद्ध का पहला दिन है। मेरा विचार है कि पण्डित जी की स्मृति के चिह्न-स्वरूप, तथा देश के प्रति उनके अपूर्व त्याग की यादगारी के लिए, उस दिन सभी कार्य स्थगित रक्खे जायँ। जिन्हें उपवास में विश्वास है वे सारा दिन उपवास करें और सन्ध्या-समय उपवास भङ्ग करें।

सारे देश में इस कार्यक्रम का अनुसरण किया जाय :—

१—देश में सर्वत्र, ३ बजे के लगभग सभाएँ की जायँ, जिससे किसान लोग ठीक समय पर अपने घर पहुँच सकें।

२—सभाओं में, मूक जुलूस के रूप में लोग प्रवेश करें। जुलूस में राष्ट्रीय झण्डे भी हों।

३—सभाओं में पूर्णरूप से शान्ति रक्खी जाय।

सभाओं में निम्न-लिखित घोषणा पढ़ कर सुनाई जाय, और श्रोतागण भी सभापति के साथ-साथ घोषणा के शब्दों का उच्चारण करें—

"हम लोग—जो इस सभा में स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल नेहरू के महान त्याग की स्मृति में इकट्ठे हुए हैं—गम्भीरता-पूर्वक पहले की अपेक्षा अधिक उत्साह से अपने को देश के लिए उत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा करते हैं, जिससे हमें शीघ्र पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति हो।"

निम्न-लिखित उपायों द्वारा उत्सर्ग किया जा सकता है :—

(अ) मादक द्रव्यों का व्यवहार स्वयं छोड़ कर तथा दूसरों से छुड़वा कर।

(ब) मादक द्रव्यों का उस समय तक शान्तिपूर्वक, पिकेटिङ्ग करना जब तक कि इनका व्यवहार पूर्णरूप से बन्द न हो जाय।

(स) विदेशी वस्त्र के सम्बन्ध में भी (अ) और (ब) के नियमों का पालन।

(द) कम से कम परिमाण में भी, नित्य सूत कातने की प्रतिज्ञा।

(क) शुद्ध खादी पहनने की प्रतिज्ञा।

(ख) स्मारक दिवसों में शुद्ध खादी का ख़रीदना और बेचना।

(ग) राष्ट्रीय कार्यों के लिए अपनी हैसियत के अनुसार अथवा दिन भर की कमाई का, दान देना।

अन्य किसी प्रकार का राष्ट्रीय कार्य अथवा उत्सर्ग करना, जो उपर्युक्त कार्यक्रम में शामिल नहीं है।

नोट—(१) यह सब से अधिक महत्वपूर्ण है, कि कार्यों का स्थगित रखना तथा अन्य सभी कार्य, बिना किसी दबाव के, अपनी इच्छा से किए जायँ।

(२) प्रदर्शनों को प्रभावशाली बनाने के लिए, पूर्णरूप से शान्ति रखनी चाहिए।

(३) मर्द, औरत और बच्चों को हज़ारों की संख्या में प्रदर्शनों में भाग लेना चाहिए।

(४) यदि लोग चाहें तो स्मारक दिवस में विदेशी वस्त्रों का सम्पूर्णतया बहिष्कार हो सकता है। यह सब से महान स्मृति-मन्दिर होगा, जिसे जनता एक दिन में, उस देशभक्त के लिए उठा सकती है, जो एक समय स्वयं विदेशी रङ्ग में रँगा हुआ था, किन्तु जब उसे कर्तव्य का ज्ञान हुआ तो उसने अपने बहुमूल्य विदेशी वस्त्रों को ठीक उसी भाँति जला दिया जिस प्रकार हम अपने पुराने कपड़े फेंक देते हैं।

(५) जहाँ तक सम्भव हो, प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत रूप से अपने उत्सर्ग और अपनी व्यक्तिगत प्रतिज्ञा की सूचना, सभा को तथा अपने ताल्लुक़े की कॉङ्ग्रेस कमिटी या सब-कमिटी को दे। हेड क्वार्टरों में सबों का सार भेजा जाय।

* * *

स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल नेहरू

जो न करना था, कर गया कोई ! वक़्त से पहिले मर गया कोई !!

"इस समय देश की समस्या हल करने की कुञ्जी ग्रेट-ब्रिटेन के हाथों में है और उसे भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देने का तथा भारत को उसे स्वीकार करने का अवसर आ गया है। यदि ग्रेट-ब्रिटेन इस अवसर से लाभ उठा कर शीघ्र ही समस्या का निरूपण न करेगा, तो वह दिन दूर नहीं है, जब समस्या की कुञ्जी भारत के हाथों में आ जायगी और वह ग्रेट-ब्रिटेन के हाथों से अपनी स्वतन्त्रता ज़बर्दस्ती छीन लेगा (१९२८) ।××× मैं सदैव सम्मानपूर्वक सन्धि करने के लिए तैयार हूँ; परन्तु जब तक किसी जीवित बच्चे में नेहरू-रक्त की एक भी बूँद रहेगी, तब तक वह पराजय स्वीकार नहीं कर सकता (मृत्यु के कुछ दिन पहले)।"

—पं० मोतीलाल नेहरू

इस अभागे देश ने जब-जब स्वतन्त्रता के लिए संग्राम छेड़ा है, तब-तब उसे भीषण क्षति उठानी पड़ी है। ऐसे ही विकट समय में इसने महामना गोखले को खोया, ऐसी ही विकट परिस्थिति में लोकमान्य तिलक के नेतृत्व से वञ्चित होना पड़ा, ऐसे ही सङ्कट में उसे देशबन्धु दास और पञ्जाब-केसरी से हाथ धोना पड़ा और वैसी ही, वरन् उससे भी विकटतम अवस्था में उसे अपने महान सेनापति पण्डित मोतीलाल नेहरू के अनन्य सहयोग और अद्वितीय परामर्श से वञ्चित होना पड़ा है। परन्तु इन महान पथ-प्रदर्शकों की मृत्यु से देश की राजनैतिक प्रगति में क्या रुकावटें आई हैं? उनमें से हर एक के जीवन का एक कार्य निश्चित था और उसे पूर्ण करने के उपरान्त ही उन्होंने संसार से कूच किया है। महामना गोखले ने मिण्टो-मॉर्ले सुधारों की जड़ उखाड़ कर कूच किया था, लोकमान्य तिलक ने भारत के कोने-कोने में 'स्वराज्य के जन्म-सिद्ध अधिकारों' का मन्त्र फूँक कर विदा ली, श्री० देशबन्धु दास ने मॉन्टेगू चेम्सफ़र्ड-सुधार और उसके द्वैध शासन पर कुठाराघात कर अपनी राह ली, और पञ्जाब-केसरी लाला लाजपतराय ने साइमन के आकाश-महल को ढाकर अपना कार्य पूरा किया। उन्हीं की नाईं पण्डित मोतीलाल भी भारत के भावी शासन-विधान की नींव स्थापित कर संसार से कूच कर गए। उन नेताओं में और पण्डित मोतीलाल में अन्तर केवल इतना ही था, कि वे अपने लगाए हुए पौधों को पल्लवित नहीं देख सके; और पण्डित जी ने उन्हें पल्लवित देख लिया है। जिस शासन-विधान की उन्होंने नींव डाली थी, उसे वे थोड़े समय जीवित और रहते तो, भारत में स्थापित देख लेते। देश के वर्तमान संग्राम के वे प्रमुख जनरल थे और ऐसी विकट अवस्था में उनकी मृत्यु से देश की भीषण क्षति हुई है। उन्होंने अपने जीवन में जिस प्रकार जीवन और मृत्यु से युद्ध किया है, उससे सदियों तक भारत की सन्तान को शिक्षा मिलेगी।

पण्डित मोतीलाल नेहरू ने अपना जीवन राजाओं की नाईं व्यतीत किया है और उनकी मृत्यु भी राजा की नाईं ही हुई है। पण्डित मोतीलाल के पास जो सात्विक और मूल्यवान निधियाँ थीं, वैसी निधियाँ किस राजा या महाराजा को नसीब हुई हैं? पवित्रता और साधुता, सौन्दर्य और शील, कविता और सङ्गीत, स्नेह और प्रेम मूर्तिमान होकर उनके सम्मुख उपस्थित रहे हैं; और मृत्यु के समय उन्होंने भारत को उस सत्य की प्राप्ति के लिए दृढ़तापूर्वक युद्ध करते अपनी आँखों से देख लिया है, जो उसकी सदैव थाती रही है। उन्होंने मृत्यु के समय जिस नवीन-

एसेम्बली की पोशाक में

स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू

प्राचीन भारत के दर्शन किए हैं, उसका न तो कोई चित्रकार चित्र ही चित्रित कर सकता और न कोई कवि उस काव्यमय भारत पर अपनी लेखनी उठा सकता है।

पण्डित मोतीलाल जी का जन्म सन् १८६१ के मई में हुआ था। अतएव मृत्यु के समय उनकी आयु लगभग ७० वर्ष की थी। आपके जन्म के चार महीने पूर्व आपके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। आपके पिता दिल्ली के शहर-कोतवाल थे। पिता की मृत्यु के बाद आपके लालन-पालन तथा शिक्षा का भार आपके ज्येष्ठ भ्राता पण्डित नन्दलाल नेहरू ने लिया। घर पर अरबी तथा फ़ारसी की शिक्षा पाने के बाद आपने कानपुर के गवर्नमेण्ट हाई-स्कूल से मेट्रिक्युलेशन की परीक्षा पास की। इसके पश्चात् आप प्रयाग के म्योर कॉलेज में भरती हुए और यहाँ उन्होंने चार साल तक शिक्षा प्राप्त की, परन्तु कई अनिवार्य कारणों से आप परीक्षा में न बैठ सके। इसके बाद आपने हाईकोर्ट की वकालत की परीक्षा के लिए तैयारी की और उसमें आप सर्व-प्रथम उत्तीर्ण हुए।

परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद आपने कानपुर में वकालत आरम्भ की और तीन वर्ष के बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत करने की इच्छा से आप इलाहाबाद में आकर रहने लगे। थोड़े दिनों में ही पण्डित नन्दलाल जी की मृत्यु हो गई। आप भी हाईकोर्ट के वकील थे। अभी तक पण्डित मोतीलाल को इनसे बहुत सहायता मिला करती थी, परन्तु इनकी मृत्यु के बाद गृहस्थी का सारा भार इन्हीं के सिर पर आ पड़ा। थोड़े दिनों में ही पण्डित जी ने अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया। आपकी गणना हाईकोर्ट के सर्व-श्रेष्ठ वकीलों में की जाने लगी। अपनी अद्वितीय वक्तृत्व-शक्ति तथा अपूर्व बुद्धिमत्ता से वे अपने विरोधी वकील को चकित कर देते थे। आप में मानसिक कार्य करने की शक्ति अपार थी। अपनी बहस में वे हज़ारों पुराने मुक़द्दमों को उदाहरणार्थ उपस्थित करते थे। इस विषय में आपकी मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस सर ग्रिमवुड मियर्स ने कहा था कि "आप लोगों में से बहुतों को वह दिन याद होगा, जब उन्होंने इटावा के मुक़द्दमे में रानी किशोरी की ओर से बहस की थी। संसार में कोई ऐसा वकील नहीं है, जो इस मुक़द्दमे में पं० मोतीलाल से अधिक बुद्धिमत्ता प्रदर्शित कर सकता।"

परन्तु आप अपना सारा समय वकालत ही में नहीं लगाते थे। आरम्भ से ही उन्होंने राजनैतिक कार्यों में दिलचस्पी दिखाई थी। उस समय राष्ट्रीयता का स्रोत बहुत मन्द गति से बहता था, और

भारत का एक आदर्श परिवार

तुम सलामत रहो हज़ार बरस ! हर बरस के हों दिन पचास हज़ार !!

स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू की आदर्श धर्मपत्नी और राष्ट्रपति की जननी—श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की सौभाग्यशालिनी धर्मपत्नी—श्रीमती कमला नेहरू

अपनी .कुर्बानी से है
मशहूर नेहरू ख़ानदान

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू

शम्आ-महफ़िल देख ले !
यह घर का घर परवाना है !!
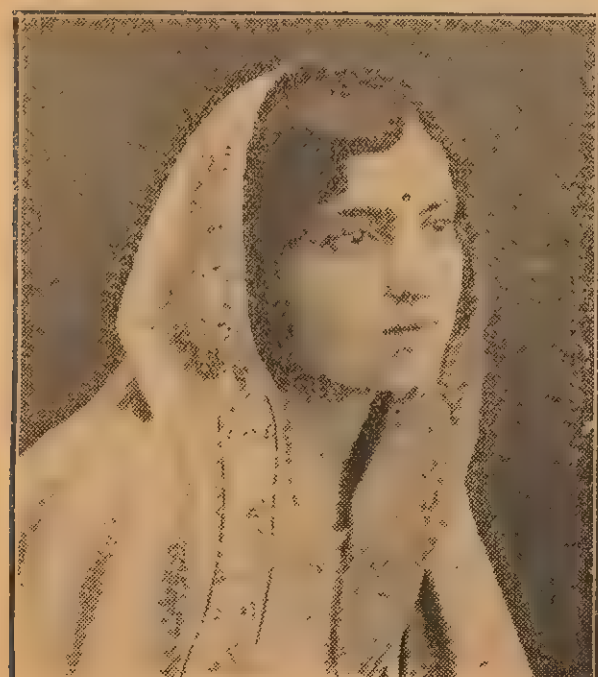
दो आदर्श बहिनें

स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू की ज्येष्ठ कन्या और राष्ट्रपति की सहोदरा—श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित

स्वतन्त्रता की दीवानी, राष्ट्रपति की कनिष्ठ सहोदरा—कुमारी कृष्णा नेहरू

भारतीयों को अपनी पराधीनता का पूर्ण बोध न हुआ था। जैसे-जैसे राष्ट्रीय संग्राम ने विशाल रूप धारण किया, वैसे-वैसे पण्डित जी भी उसकी ओर अधिक आकर्षित हुए और अन्त में उन्होंने अपना अमूल्य जीवन राष्ट्रीय संग्राम की वेदी पर चढ़ा दिया।

सन् १९०९ से सन् १९२० तक बराबर आप यू० पी० कौन्सिल के प्रतिनिधि चुने गए। सन् १९२० में असहयोग आन्दोलन के सम्बन्ध में आपने कौन्सिल से त्याग-पत्र दिया था। असहयोग आन्दोलन के स्थगित होने के पश्चात् आप भारतीय एसेम्बली के सदस्य चुने गए। आपने वहाँ स्वर्गीय सी० आर० दास के साथ स्वराज्य-पार्टी की स्थापना की थी।

आपका राजनैतिक जीवन तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। आरम्भ में आप बड़े राजभक्तों में से थे। आपको ब्रिटिश सरकार तथा ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की बातों पर बहुत विश्वास था। परन्तु जैसे-जैसे आप राजनैतिक क्षेत्र में बढ़े, वैसे ही वैसे आपको ब्रिटिश सरकार की कूटनीति का परिचय मिला और अन्त में आप भारत को ब्रिटिश सत्ता के कट्टर दुश्मन बन गए। आपको यह पूर्ण विश्वास हो गया, कि स्वराज्य माँगने से न मिलेगा—स्वराज्य के लिए युद्ध करना पड़ेगा। आत्म-समर्पण के बिना स्वराज्य प्राप्त न होगा।

सन् १९०७ में आप संयुक्त प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् के सभापति चुने गए। उस समय आपको ब्रिटिश लोगों की बातों पर पूर्ण विश्वास था। आपने अपने वक्तव्य में कहा था कि—"मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इङ्गलैण्ड भारत का सब से बड़ा शुभेच्छु है। वह यहाँ का राज्य किसी बुरी कामना से कदापि नहीं चला रहा है।" धीरे-धीरे ब्रिटिश-सरकार ने अपना रङ्ग दिखाया; बङ्ग-भङ्ग की समस्या उपस्थित हुई। स्वराज्य का आन्दोलन आरम्भ हुआ, स्वदेशी का आन्दोलन बढ़ा और उसके साथ दमन ने भी जोर पकड़ा। स्वदेशी आन्दोलन के नेताओं ने विदेशी माल के बहिष्कार का आन्दोलन उठाया, परन्तु पण्डित मोतीलाल जी इससे सहमत न थे। वे स्वदेशी के विरोधी न थे, परन्तु वे नाशकारी नीति द्वारा इङ्गलैण्ड को अप्रसन्न नहीं करना चाहते थे। वे राजनैतिक सत्ता का विरोध नहीं करना चाहते थे और राजक्रान्ति से उन्हें बड़ी घृणा थी।

युद्ध के समय पण्डित जी ने सरकार को भरपूर सहायता दी। संयुक्त प्रान्त में 'इण्डियन डिफ़ेन्स फ़ोर्स' स्थापित करने का सब श्रेय पण्डित जी को ही है। परन्तु ब्रिटिश सरकार की दमन-नीति ने उनके शुद्ध हृदय में अविश्वास का बीज बो दिया। "होमरूल" आन्दोलन की नेत्री श्रीमती बेसेण्ट को कारावास दिया गया और हर तरह से जनता के राष्ट्रीय भावों का दमन करने का प्रयत्न किया जाने लगा। यह पण्डित जी के लिए असह्य था। आप भारत-सरकार के पक्के विरोधी बन गए, परन्तु इस समय भी आप ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की शुभ कामना पर विश्वास करते रहे। सन् १९१७ की प्रान्तीय परिषद् की बैठक में आपने लखनऊ में कहा था, कि मैं भारत की सरकार पर ज़रा भी विश्वास नहीं करता, वह भारत की राष्ट्रीय कामनाओं का दमन कर रही है, परन्तु फिर भी मैं ब्रिटिश जाति की और ब्रिटिश नेताओं की न्याय-प्रियता पर विश्वास करता हूँ। मुझे आशा है कि ब्रिटिश सरकार हमारी सारी समस्याओं को न्यायोचित रूप से हल करेगी।

परन्तु धीरे-धीरे उन्हें ब्रिटिश नेताओं की भी कूटनीति साफ़ नज़र आने लगी। वे समझ गए कि ब्रिटिश सरकार सदा अपने अधिकारियों का साथ देगी, सदा उनके कार्यों की प्रशंसा करेगी, चाहे वे कितने ही नृशंस तथा घृणित क्यों न हों। पञ्जाब के घोर दमन तथा जलियाँवाला बाग़ की पाशविक घटनाओं से उनकी आँखें खुल गईं। वे समझ गए कि ब्रिटिश नेताओं की वाह्य सहानु-

शोकोद्गार

[श्री० चन्द्रनाथ जी मालवीय "वारीश"]

काल ! काल ! रे क्रूर काल ! रे नीच नारकी काल !
क्या करने को तू आया था, बन कर भीषण व्याल ?
हुआ न था सचमुच सूर्योदय, था वह प्रातःकाल,
हाय ! छीन ले गया किधर तू मोती-सा मणि-माल??
वृद्धावस्था में भारत-माता के एक सहारे !
कहाँ गए ! तुम छोड़ हमें हा ! मोतीलाल हमारे !!

चारों ओर घटा छाई है, आई विपदा आज !
इस भूतल पर गिरी गगन से कैसी यह गुरु-गाज !
जिसके दुख से दुखी हो रहा है यह सकल समाज !
जाता चला अभूतपूर्व वह भूतपूर्व सरताज !!
कहाँ गया ! हा ! कहाँ गया है ? वह अपूर्व अवतारी !
जो मरते दम तक था भारत का सच्चा हितकारी !!

रोते हैं क्यों मान्य मालवी, गाँधी हुए अधीर !
सपरिवार हा ! धीर खो चुके धीर जवाहर वीर !
सब नेतागण के नयनों से निकल रहा है नीर !
फूट-फूट कर भारत माँ है रही हृदय को चीर !!
विह्वल बेसुध हाय ! हो गए भारतवासी सारे !
कहाँ गए ! हा ! कहाँ गए ? प्यारे नयनों के तारे !!

हाय ! अचानक लगा दिया है किसने भीषण आग !
नाच रहा है आज आँख में किस त्यागी का त्याग ?
फूटा कैसे हाय ! अभागे भारत-भू का भाग।
उठ जा सोते हुए सिंह ! हा ! जाग ! जाग ! फिर जाग !!
जननी के उद्धार हेतु जिसने जीवन था धारा।
कहाँ गया ! हा ! कहाँ गया ? वह नेता पूज्य हमारा ??

देख न सकता था जी कर वह और अधिक अपमान !
देश-हेतु मर मिट जाने को जिसने जाना मान।
तन-मन-धन-जन जिसने सब कुछ, दिया देश को दान !
जीवन व्यर्थ जान, कर डाला जीवन का बलिदान !
भारत को स्वतन्त्र करने की जिसने ज्योति जगाई।
कौन छीन ले गया उसे रे काल दुष्ट दुखदाई ??

कहाँ गए ? कमला के प्रिय-पति के भी हे प्रिय प्राण !
विजय-लक्ष्मि के जनक ! कहाँ हो ? जवाहिरों की खान !
मोती-लाल-रत्न भारत के हाय ! सुनोगे क्या न ?
चले गए ? तुम चले गए ! कर भारत को वीरान !!
ढह जाएगी स्वयम् शीघ्र यह सत्ता ही सरकारी !
लौट पड़ो ? हाँ ! लौट पड़ो न ? स्वराज्य-भवन अधिकारी

हे मणि-माल देश के, हे माता के उन्नत भाल !
निधना-दीना-हीना की गुदड़ी के मोती-लाल !
काल तुल्य स्वयमेव शत्रुओं को थे तुम सब काल !
तब फिर तुमको कैसे कवलित कर सकता था काल !!
लड़े ! लड़े ! हा ! लड़े ! अन्त तक उसे जीत कर हारे !!
पदक-प्राप्ति के हेतु हाय ! क्या तुम हो स्वर्ग सिधारे !

अन्धकारमय दुर्गम पथ के हे अन्धी के दीप !
जगमग सजग जवाहिर से हे नर-रत्नों के सीप !
लोकमान्य ! गोखले ! लाजपत ! किसके हाय ! समीप ?
कहाँ गए ? हा ! कहाँ गए ? तुम मोतीलाल महीप ??
हाय ! तुम्हारे ही बल पर गाँधी ने हिम्मत बाँधी !
कैसी चुप्पी साधी तुमने, देख अचानक आँधी !!

दीन देश के देव ! अरे ! ओ ! विकट साहसी शूर !
ओजमयी-वाणी में थी वह शक्ति भरी भरपूर !
सिंहनाद से कर देते थे अरिमद चकनाचूर !
कहाँ गए ? हा ! कहाँ गए ? हा ! हमसे कितनी दूर !!
जाग्रत-भारत हो स्वतन्त्र तब सारी जगती जाने !
मर कर जीते रहते हैं आज़ादी के दीवाने !!

रोते ही रोते कितनी सदियाँ हैं हुईं व्यतीत !
फल फलने ही वाला था मनचीता, आशातीत !
जब सुख से गाने वाले थे हम गौरव के गीत !
क्रूर-काल ने छेड़ा कैसा प्रलयङ्कर सङ्गीत !!
भाग्य बराबर भाग्यहीन इस हीन-हिन्द का फूटा !
रोते ही रोते रहते, रोने का तार न टूटा !!

तीस कोटि का कुलिश-कलेजा टूक-टूक है टूक !
भारतवासी मन्त्र-मुग्ध से हाय ! हुए हैं मूक !
हाय ! हाय ! यह हाय ! हृदय में आग रही है फूक !
भूल नहीं सकते हम तेरे आह ! ख़ून के थूक !!!
अरे काल ! याचना अगर हमसे पहले कर लेते !
कटा-कटा अपने-अपने सिर तीस कोटि धर देते !!

स्वतन्त्रता के सच्चे सैनिक ! हे स्वदेश-सरदार !
हे भारत के रत्न ! देश-नौका के खेवनहार !
कहाँ गए ! तुम इसे छोड़ कर, यह तो है मँझधार !
कर देते इस पार इसे, या कर देते उस पार !!
रत्नाकर में रह न गया है मूल्यवान अब मोती !
भारत-माँ के मुकुट ! कि जिससे समता तेरी होती !

भूल गए ? हा ! करुण-कथाएँ, मान भूल औ चूक !
भूल गए ? हम जान-जान कर उनका बुरा सलूक !
भूल गए ? कितनी घटनाएँ बन कर बिलकुल मूक !
भूल गए ? कितने बच्चों की कोयल की सी कूक !!
आज अचानक आग हृदय में फूक रही है फूक !
भूल नहीं सकते ! लाठी के दाग़ ! ख़ून के थूक !!!

सोज़े-उल्फ़त ने जला कर ख़ाक कर डाला मुझे !
मैं नहीं मिलने का अब, ढूँढ़ा करे दुनिया मुझे !!

—'बिस्मिल'

"आनन्द-भवन" के नाम से विख्यात—स्वर्गीय पण्डित जी का राजमहल

अपनी वकालत प्रारम्भ करने के समय स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू का चित्र

सन् १९१२ का लिया हुआ स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू का चित्र

सङ्गम के पुनीत तट पर स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू के दाह-संस्कार का रोमाञ्चकारी दृश्य

बैठे हुए—पं० जवाहरलाल नेहरू—खड़ी हुई—श्रीमती सरोजिनी नायडू तथा ६ठी फ़रवरी को प्रातःकाल ६३ बजे विधवा होने वाली, देवी स्वरूपरानी

भूति एक जाल-मात्र है। सन् १९१९ के सितम्बर में इलाहाबाद की जनता के सामने भाषण देते हुए आपने कहा था कि—"ब्रिटिश जनता को सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि संसार की कोई जाति अपने अत्याचारियों से बदला लिए बिना चुप नहीं रह सकती। इस विषय में हम अभी बदला नहीं चाहते, हम चाहते हैं कि हमारे साथ न्याय किया जावे। हम चाहते हैं कि हमें अपने ऊपर किए गए अत्याचारों का इज़हार करने का मौक़ा दिया जाय और इन अत्याचारों को दूर करने का साधन ढूँढ़ निकाला जाय। इन अत्याचारों की पूर्ति केवल धन से नहीं हो सकती, न केवल कुछ अधिकारों के देने से हो सकती है। इस महान क्षति की पूर्ति के लिए सम्पूर्ण शासन-प्रणाली को बदलने की आवश्यकता है, जिससे भविष्य में ऐसे अत्याचार न हो सकें। यह कार्य तो केवल स्वराज्य प्राप्त करने परही सिद्ध हो सकता है।"

इन शब्दों से पण्डित जी के आन्तरिक परिवर्तन का पूर्ण परिचय मिलता है। उन्होंने स्वतः जलियाँवाले बाग़ के सम्बन्ध में तहक़ीक़ात की थी। उस महान दुर्घटना के सम्बन्ध में उन्होंने जो पाशविक तथा क्रूर कृत्यों की कथा सुनी थी, उससे उनका हृदय बिल्कुल बदल गया और दुर्घटना के समय से वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कट्टर शत्रु बन गए।

एक पुराना पारिवारिक-चित्र

खड़े हुए—स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू। बैठे हुए—राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू (उनकी गोद में श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित) और उनकी माता (उनकी गोद में कुमारी कृष्णा नेहरू)

जलियाँवाले बाग़ के भयङ्कर हत्या-काण्ड के बाद अमृतसर में कॉङ्ग्रेस का जो अधिवेशन हुआ था, उसके सभापति पण्डित मोतीलाल नेहरू ही हुए थे और उसी में महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन की नींव डाली गई थी। इसी समय से पण्डित मोतीलाल महात्मा गाँधी के कट्टर अनुयायी और उनके ज़बर्दस्त जनरल बन गए।

देश में असहयोग का तुमुल संग्राम छिड़ा। कौन्सिलों, अदालतों और सरकारी स्कूलों तथा कॉलेजों का बहिष्कार हुआ। मालूम होता था, कि यह युद्ध भारतीय स्वतन्त्रता का अन्तिम युद्ध होगा। परन्तु, कहा जाता है, जनता महात्मा गाँधी के अहिंसा के आदर्श पर टिकी न रह सकी और उन्हें आन्दोलन बन्द कर देना पड़ा। यह सार्वजनिक संग्राम बन्द होने पर भी पण्डित मोतीलाल का संग्राम बन्द न हुआ। वे ज़बर्दस्त योद्धा थे और चैन से बैठना उनके लिए असम्भव था। असहयोग आन्दोलन स्थगित होने पर उन्होंने वर्तमान शासन-प्रणाली की जड़ काटने के अन्य उपाय सोचे। उन्होंने और श्री० देशबन्धु दास ने कौन्सिलों पर अधिकार जमा कर गवर्नमेण्ट का आन्तरिक बहिष्कार करने की ठानी और इसी उद्देश्य से दोनों ने मिल कर स्वराज्य-पार्टी की स्थापना की। श्री० देशबन्धु दास और पण्डित जी स्वराज्य-पार्टी के नेता बने और उनके साथ असहयोग आन्दोलन के समय के कई प्रधान नेताओं ने एसेम्बली तथा कौन्सिलों में प्रवेश कर उन पर अपना आतङ्क छा दिया। और इसके फल-स्वरूप गवर्नमेण्ट को रह-रह कर मुँह की खानी पड़ी। परन्तु भारत के भूतपूर्व सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट्स मि० मॉण्टेगू के इण्डिया ऑफ़िस छोड़ते ही हिन्दू-मुसलमानों का वैमनस्य बढ़ने लगा और देश में जगह-जगह हिन्दू-मुसलमानों के झगड़ों का सूत्रपात्र हो गया। इन झगड़ों के कारण महासभा और तबलीग़ तथा तन्ज़ीम आन्दोलन की उत्पत्ति हुई और फलतः स्वराज्य पार्टी का प्रभाव कम होने लगा। इसी अवसर पर जनता के घोर विरोध करने पर भी साइमन कमीशन की नियुक्ति हुई। कमीशन की नियुक्ति से देश भर में आग लग गई। गवर्नमेण्ट के हाथों न्याय पाने की उसे बिल्कुल ही आशा न रह गई और भारतीय राष्ट्रीयता और गवर्नमेण्ट के बीच में भेद-भाव का ज्वार-भाटा उमड़ पड़ा। लॉर्ड इर्विन ने सन् १९२९ की ३१वीं अक्टूबर की घोषणा से इस ज्वार-भाटे को शान्त करने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह केवल बाढ़ को तिनके से रोकने का प्रयत्न था। वह घोषणा जनता को सन्तुष्ट न कर सकी। इसके फल-स्वरूप कलकत्ता कॉङ्ग्रेस ने, जो पण्डित जी के सभापतित्व में ही हुई थी; इस बात की घोषणा कर दी कि यदि एक साल के अन्दर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य की स्थापना न करेगी तो वह पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर देगी। गवर्नमेण्ट इस समय भी जाग्रत सिंह की शक्ति का अन्दाज़ न लगा सकी और उसने कॉङ्ग्रेस की इस चेतावनी को गीदड़भभकी मात्र समझा। कॉङ्ग्रेस के लाहौर के अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी गई और उसमें महात्मा गाँधी को सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ करने का सम्पूर्ण अधिकार दे दिया गया। लाहौर कॉङ्ग्रेस के बाद देश ने जैसी करवट बदली है, उसे लिखने की आवश्यकता नहीं है। १२वीं मार्च भारत के इतिहास में सुवर्ण-अक्षरों से लिखी जायगी। इसी दिन महात्मा गाँधी ने डाँडी के लिए अपनी यात्रा प्रारम्भ की थी। ६ठीं अप्रैल नमक-क़ानून भङ्ग करने के लिए निश्चित की गई थी। वास्तव में भारत के वर्तमान विराट आन्दोलन का श्रीगणेश उसी दिन हुआ था। उस दिन से भारत में राजनैतिक असन्तोष की जो भयङ्कर लहर आई, उसे गवर्नमेण्ट न दबा सकी। उसने भारत के साठ हज़ार से ऊपर नर-नारियों को जेलों में ठूँस कर उसे दबाने का प्रयत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सकी। पण्डित मोतीलाल भी इसी संग्राम में जेल भेजे गए थे। और बीमार होकर उन्होंने जो चारपाई वहाँ पकड़ी उसे वे मृत्यु के पहले न छोड़ सके। लोगों का कहना है, कि यदि वे जेल न जाते तो शायद उनकी मृत्यु इतनी जल्दी न होती।

पण्डित मोतीलाल सिद्धान्तवादी न थे; वे एक दक्ष, दूरदर्शी और व्यवहार-चतुर राजनीतिज्ञ थे; और उनकी इस व्यावहारिक प्रतिभा का आभास 'नेहरू कमिटी रिपोर्ट' से मिलता है। हिन्दू-मुस्लिम एकता के वे बड़े पक्षपाती थे; और यदि वे दोनों को ऐक्य-सूत्र में बाँधने में सफल नहीं हुए तो उसका दोष उन्हें नहीं दिया जा सकता। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम भाग में देश की स्वतन्त्रता पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। देश के लिए उन्होंने अपने राजाओं के से सुख-भोग और हज़ारों रुपए माहवार की आमदनी पर लात मार दी। वे एक प्रतिभाशाली वकील, अनन्य देशभक्त, ज़बर्दस्त सङ्गठनकर्ता और कुशल राजनीतिज्ञ थे। उनकी मृत्यु से इस सङ्कटापन्न समय में देश को जो भयानक क्षति पहुँची है, उसकी पूर्ति निकट-भविष्य में असम्भव है। वह सर्व-शक्तिमान परम-पिता उनकी आत्मा को अक्षय शान्ति और परिवार के लोगों को धैर्य प्रदान करें—'भविष्य' परिवार की ओर से यही हमारी प्रार्थना है।

* * *

साम्यवादी रूस और पूँजीवादी यूरोप

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

आज हम लोगों में से बहुत कम यह जानते हैं कि हमारी वर्तमान सामाजिक तथा राजनैतिक बुराइयों का पूँजीवाद से कितना घनिष्ट सम्बन्ध है। संसार में पूर्ण शान्ति स्थापित करने के लिए यह परमावश्यक है कि संसार से पूँजीवाद का अन्त ही कर दिया जावे। जब तक संसार में प्रजातन्त्र की स्थापना नहीं हुई थी, शान्ति के उपासक यह समझते थे कि संसार के राजनैतिक झगड़ों तथा युद्धों के लिए संसार के राजा या महाराजा ज़िम्मेदार हैं। धीरे-धीरे यूरोप में प्रजातन्त्र स्थापित हुआ। राजाओं का पुराना वैभव तथा ऐश्वर्य, उनकी पुरानी सत्ता का अन्त हुआ और राज्य के शासन का भार प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में आया। परन्तु इसी काल में पूँजीवाद की भी नींव पड़ी। थोड़े दिनों में ही यूरोप के देशों में विशाल कारख़ाने तथा खदानों की स्थापना हुई। देश की अधिकतर जनता बड़े-बड़े पूँजीपतियों के यहाँ मज़दूरी करके अपना भरण-पोषण करने लगी, उनकी स्वच्छन्दता तथा स्वतन्त्रता के दिन जाते रहे।

अब उन्हें जीवन-निर्वाह का केवल एक साधन रह गया और वह था पूँजीपतियों के कारख़ानों में नौकरी करना। देश की सारी जनता मुट्ठी भर पूँजीपतियों की नौकरी करके अपनी उदर-पूर्ति करने लगी। पूँजीपतियों ने अपने आर्थिक प्रभुत्व द्वारा अन्य क्षेत्रों में भी जनता पर अपनी सत्ता क़ायम की। अपने वैभव तथा ऐश्वर्य के कारण समाज में प्रथम गिने जाने लगे। राजनैतिक क्षेत्र में भी सारी सत्ता उन्हीं के हाथ में आ गई। उन्होंने इस सत्ता का उपयोग अपने अधिकारों को बढ़ाने तथा पूँजीवाद को दृढ़ बनाने के लिए किया। अपने देश में उन्होंने हर तरह से जनता को दासता के बन्धन में कसा और अपनी विदेशी नीति में उन्होंने निर्बल तथा छोटे देशों को अपने क़ब्ज़े में किया और उन्हें पराधीनता की शृङ्खला में कसा। यह उनकी उन्नति के लिए अति आवश्यक था। देश के कारख़ानों में कम मज़दूरी पर धड़ाधड़ माल बन रहा था। इस माल की खपत के लिए ग्राहकों की आवश्यकता थी। इस कमी को पूरी करने के उद्देश से उन्होंने निर्बल देशों को अपने वश में किया और अपनी आर्थिक नीति द्वारा उनके उद्योग-धन्धों का नाश करके उन्हें अपने माल का ग्राहक बनाया। कई देश ऐसे थे जो वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारों का उपयोग करके अपने देश में कारख़ानों की स्थापना कर रहे थे। पर इन पूँजीवादी बलिष्ठ देशों के पञ्जे में पड़ते ही उनकी अवनति का आरम्भ हुआ। बलिष्ठ विदेशी सरकार द्वारा प्रोत्साहित विदेशी माल ने उनके सारे उद्योग-धन्धों का विनाश किया। केवल यही नहीं, इस विषय में पूँजीवादी देशों में आपस में प्रतिस्पर्धा होने लगी और इन निर्बल देशों को अपने-अपने क़ब्ज़े में करने के उद्देश्य से ये आपस में युद्ध करने लगे। यदि गत महायुद्ध के मूल कारणों पर ध्यान दिया जावे तो इस मत की सत्यता स्पष्टतया प्रकट हो जावेगी। सन् १७७० के पहिले जर्मनी में वर्तमान उद्योग तथा कला का विकास भी नहीं हुआ था। परन्तु कुछ दिनों बाद ही उसने इस विषय में आश्चर्यजनक उन्नति कर दिखाई। जर्मनी में लोहा तथा कोयला बहुतायत से पाया जाता है। वह देशी लोहे से बहुत सस्ता फ़ौलादी तथा अन्य माल तैयार करने लगा। धीरे-धीरे और देश जर्मनी के सस्ते तथा मज़बूत माल को ख़रीदने लगे। इङ्गलैण्ड के पूँजीपति भला यह कब देख सकते थे। उन्होंने जर्मनी के विरुद्ध आन्दोलन उठाना आरम्भ किया। जर्मनी की छोटी-छोटी ग़लतियों को विशाल रूप दिया जाने लगा। धीरे-धीरे एक और पूँजीवादी देश आगे बढ़ा। फ़्रान्स तथा जर्मनी में पुराना वैर चला आता है। उसने इङ्गलैण्ड का साथ दिया। यही गत संसार-व्यापी महायुद्ध का मूल कारण हुआ।

आज यूरोप के पूँजीपतियों ने एक नवीन देश की ओर अपनी आँख फेरी है। साम्यवादी रूस उनका कट्टर शत्रु है। वह संसार के सारे देशों की स्वतन्त्रता का समर्थक है। इसके अतिरिक्त अपनी अपूर्व उन्नति द्वारा वह हर तरह से अपनी उत्पत्ति को बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। एक तो यूरोप के पूँजीपति साम्यवादी आन्दोलन से यों ही रुष्ट हैं, फिर रूस की वर्तमान औद्योगिक उन्नति ने उनके जेब को भी कुछ क्षति पहुँचाई है। पूँजीपतियों के लिए यह सब असह्य हो रहा है। इसलिए फ़्रान्स तथा इङ्गलैण्ड के पूँजीपति यह कह रहे हैं

कुमारी पावबाई थेकरसी

जो बेलगाँव की उत्साही कॉङ्ग्रेस प्रचारिका हैं और जिन्हें हाल ही में ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

कि रूस अपने देश में उत्पन्न हुए गेहूँ को अन्य देशों में सस्ते भाव से बेच कर हमारे देशी कृषि के उद्योग का नाश करने का प्रयत्न कर रहा है। अभी तक उन्होंने रूस की शासन-प्रणाली की निन्दा की थी। उन्होंने अपने पत्रों में रूस विरोधी लेखों को सर्व-प्रथम स्थान दिया था। उन्होंने अपने देश के मज़दूरों से कहा था, "कि रूस में आज दासता तथा दरिद्रता का राज्य है। थोड़े दिनों में साम्यवादी सरकार का दिवाला निकल जाएगा और रूस को फिर से पूँजीवाद स्वीकार करना पड़ेगा।" परन्तु आज उन्होंने एक नवीन आन्दोलन उठाया है। यह रूस को बदनाम करने की एक नवीन योजना मात्र है। फ़्रान्स कहता है कि रूस अपना गेहूँ सस्ता बेचकर पूँजीवादी देशों के व्यापार का नाश करना चाहता है, परन्तु फ़्रान्स की गेहूँ की ख़रीद देखने से मालूम होता है कि रूसी गेहूँ उसकी सारी ख़रीद का केवल $\frac{1}{100}$ भाग है। क्या रूसी गेहूँ जो केवल $\frac{1}{100}$ है, फ़्रान्स के सारे व्यापार को उलट सकता है? फ़्रान्स के बाद इङ्गलैण्ड का नाम आता है। इङ्गलैण्ड के पूँजीपति चिल्ला रहे हैं कि रूसी गेहूँ अवश्य रोका जाना चाहिए। रूस हमारे कृषिकों को बहुत कष्ट पहुँचा रहा है। ये सब बातें केवल एक ढोंग मात्र हैं। यूरोप के पूँजीवादी देश, जिनमें इङ्गलैण्ड तथा फ़्रान्स सर्व प्रथम हैं, साम्यवादी रूस से बहुत रुष्ट हैं। वे यह जानते हैं कि यदि रूस अपने महान कार्य में सफल हुआ तो साम्यवाद का तूफ़ान सारे संसार में फैल जावेगा और पूँजीवाद का कहीं पता भी न चलेगा। इसलिए वे रूसी सरकार के विरुद्ध हर तरह से आन्दोलन उठा रहे हैं। संसार के गेहूँ के व्यापार में रूस का हिस्सा केवल दो फ़ी सदी है। ऐसी दशा में कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति इसमें विश्वास नहीं कर सकता कि रूस संसार के व्यापार को क्षति पहुँचा सकता है।

वास्तविक बात तो यह है कि गत महायुद्ध से पहिले रूस संसार में सब से ज़्यादा गेहूँ पैदा करता तथा बेचता था। परन्तु साम्यवादी राजक्रान्ति के झगड़ों से उसकी उत्पत्ति बहुत घट गई थी। इस बीच में इस कमी को पूरी करने के लिए और कई देश अधिक गेहूँ पैदा करने लगे थे। अब हाल में जब रूस की उत्पत्ति फिर बढ़ी, तो लोग यह समझने लगे कि रूस अपना गेहूँ दाम घटा कर बेच रहा है और इस तरह उनके व्यापार का नाश कर रहा

परन्तु गेहूँ का तो एक बहाना मात्र है। यूरोप के पूँजीपति आज यह देख रहे हैं कि साम्यवादी शासन में रूस ने अपूर्व उन्नति कर दिखाई है। सारे देश में कारख़ाने बन रहे हैं। रूस में खनिज पदार्थ बहुतायत से पाए जाते हैं। उसकी ज़मीन उपजाऊ है और उसके निवासी भी परिश्रमी हैं। ऐसी दशा में बहुत सम्भव है कि कुछ दिनों में रूस संसार में उद्योग का एक महान केन्द्र हो जावे और अपनी सारी चीज़ें अपने देश में बना सके। रूस संसार के $\frac{1}{6}$ भाग में फैला हुआ है। यूरोप के पूँजीपति यह देख घबरा रहे हैं कि इतनी बड़ी सोने की चिड़िया हाथ से निकली जा रही है। यही नहीं, उन्हें यह डर है कि रूस अपने सस्ते माल को बेच कर एशिया के सारे देशों में इनके व्यापार का नाश कर देगा। किसी समय जर्मनी ने भी यही किया था। उसने विशेष कर भारत तथा चीन में अपना सिक्का पूरा-पूरा जमा लिया था। अङ्गरेज़ी माल की अपेक्षा इन देशों के निवासियों को जर्मनी का माल कहीं ज़्यादा पसन्द था। यह देख कर ब्रिटिश पूँजीपतियों को प्रतिस्पर्धा हुई। उन्होंने किसी तरह जर्मनी के विरुद्ध आन्दोलन उठाया। उसे छेड़ना आरम्भ किया। जर्मनी भी अपने नवीन गौरव से फूला नहीं समाता था। वह अपने को संसार का सब से बलिष्ठ राष्ट्र समझता था। वह इङ्गलैण्ड के जाल में आ फँसा और युद्ध के अन्त में उसे एक ऐसे सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े कि जिससे उसके स्वाभिमान, विश्वव्यापी व्यापार तथा साम्राज्य को अपार हानि पहुँची। कुछ लोग कहते हैं कि यूरोप के पूँजीपति रूस के साथ भी वही चाल चल रहे हैं। वे चाहते हैं, किसी तरह रूस के साथ युद्ध छिड़ जावे। रूस के पास इतना धन नहीं है कि वह युद्ध में सफल हो सकेगा। इस तरह साम्यवादी आन्दोलन का नाश होगा, उसकी वर्तमान सरकार बदनाम होगी और अपने साम्यवादी प्रयत्न में असफल होगी। इसी मतलब को हल करने के उद्देश्य से वे रूस को बार-बार छेड़ रहे हैं। परन्तु रूस और जर्मनी में बहुत अन्तर है। वर्तमान रूस शान्ति का सच्चा उपासक है, प्रजातन्त्र का सच्चा प्रेमी है और साम्राज्यवादी पूँजीपति की कूटनीति को ख़ूब समझता है। उसके महान नेताओं ने एक उच्च आदर्श की वेदी पर अपना जीवन तथा सर्वस्व समर्पण कर दिया है। वे संसार को शान्ति, समता तथा स्वतन्त्रता की ओर खींचने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे पूँजीवादियों की छोटी-छोटी बातों से उत्तेजित न होंगे और न इनकी इस चाल में फँस कर शान्ति के सिद्धान्त को छोड़ेंगे।

[श्री० जगदीश]

अट्ठारहवीं शताब्दी का अन्त था। पूर्वीय यूरोप तथा मध्य एशिया में ज़ारशाही की तूती बोलती थी। उस समय माताओं को रोते हुए बालकों को डरा कर चुप कराने के लिए केवल ज़ार का नाम लेना ही यथेष्ट था। उस समय रूस का सम्राट था, ज़ार पॉल प्रथम—एक सनकी तथा हृदयहीन पुरुष, जिसको यदि आधा पागल कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी।

सम्राट की सवारी जा रही थी, उसकी आज्ञा थी कि जिस समय सवारी निकले, उस समय कोई पुरुष, स्त्री या बालक कहीं दृष्टि-गोचर न हो और राजपथ के सभी घरों के द्वार तथा खिड़कियाँ बन्द रहें। सम्राट की किसी भी आज्ञा की किञ्चितमात्र अवहेलना का परिणाम था, मृत्यु! इसलिए ज्योंही सम्राट के घुड़सवार उसके आगमन की घोषणा करते हुए निकले, त्योंही सड़कें सूनी हो गईं। चारों ओर के द्वार तथा खिड़कियाँ बन्द हो गईं। परन्तु अभाग्यवश काउण्ट ऑस्टरमैन को, जो अभी तक अपनी लाइब्रेरी में थे, सम्राट के आगमन की सूचना का पता न था। वे कार्यवश अपने ड्राइङ्ग रूम में, जो राजपथ के ऊपर ही था, आए और खिड़की खोल कर बाहर झाँकने लगे। "बैङ्ग!" शब्द हुआ और दूसरे ही क्षण ऑस्टरमैन प्राणों के लिए छटपटाने लगे। यह था, ज़ारशाही की नृशंसता का एक नमूना!

२

राजभवन की सीढ़ियों पर चढ़ कर सम्राट ने सिंहद्वार में प्रवेश किया। वहाँ से सभा-भवन तक सैनिकों की पंक्ति खड़ी थी। प्रत्येक सैनिक को सन्देह-भरी तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए सम्राट ने सभा-भवन में प्रवेश किया। सरदारों ने उठ कर ससम्भ्रम अभिवादन किया। सम्राट राजसिंहासन पर जा विराजे और काउण्ट पैहलिन को याद किया। पैहलिन सम्राट का दाहिना हाथ थे। संसार में यदि वह किसी को अपना मित्र समझता था तो पैहलिन को। यदि उसे किसी का विश्वास था तो पैहलिन का। शेष सारा संसार उसके विचारानुसार उसका शत्रु था।

इस समय काउण्ट पैहलिन सभा-भवन में उपस्थित न थे। इसलिए सम्राट बहुत रुष्ट हुए और कहा—"जब वह आएगा तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा।" पर इस समय क्रोध किस पर उतारा जाए? सम्राट उठा और सभा-भवन के प्रधान द्वार-रक्षक स्टीवेन्सन के समीप पहुँचा। तीक्ष्ण दृष्टि से ऊपर से नीचे तक देखा। एक पैर आगे उठवा कर ब्रीचेज़ के बटन गिने। एक, दो, तीन चार......बारह! फिर बोला—"मेरी आज्ञा तो शायद १३ बटनों की है?"

"सम्राट की आज्ञा १२ बटनों की है।"—स्टीवेन्सन ने विनम्र भाव से उत्तर दिया। बस, इतना ही यथेष्ट था। सम्राट ने अपनी छड़ी की चाँदी की मूठ से स्टीवेन्सन के मुँह पर अगणित चोटें कीं। जब मुँह तथा दाँतों से निकले हुए रुधिर से उसकी सारी श्वेत वर्दी लाल हो गई तो वह सिंहासन की ओर लौट पड़ा, एक आज्ञा लिखी। इतने में काउण्ट पैहलिन ने सभा-भवन में प्रवेश किया। उसे देख कर सम्राट का रुष्ट वदन प्रफुल्लित हो गया। आज्ञा-पत्र पैहलिन को दिया और स्वयं भीतर चला गया।

पैहलिन ने आज्ञा-पत्र पढ़ा—

"मेरी आज्ञा है कि द्वार-रक्षक स्टीवेन्सन के तेरह दिनों तक प्रति दिन ५० कोड़े लगाए जावें।—पॉल प्रथम।"

पैहलिन ने स्टीवेन्सन को बुलाया और आज्ञापत्र दिखा कर पूछा—"क्या तुम इस अत्याचार के कारण अपने सम्राट से घृणा नहीं करते?"

"मैं ज़ार को घोरतम घृणा की दृष्टि से देखता हूँ।" रुद्ध कण्ठ से स्टीवेन्सन ने उत्तर दिया।

पैहलिन ने आज्ञा-पत्र फाड़ डाला और कहा—"स्टीवेन्सन! आज से तुम मेरे निजी सेवक हुए। द्वार-रक्षक दूसरा नियत होगा।"

३

ज़ार के अत्याचारों से प्रजा की दुर्दशा पराकाष्ठा तक पहुँच चुकी थी। सारी सेना तथा सामन्त उसके विरुद्ध थे। केवल भुस में चिन्गारी पड़ने भर की देर थी और वह चिन्गारी काउण्ट पैहलिन के वक्षस्थल में छिपी हुई थी। परन्तु अब समय आ गया था कि अग्नि प्रदीप्त कर दी जाए। पैहलिन के नेतृत्व में सामन्तों की गुप्त सभा हो रही थी। काउण्टगण एकमत थे कि साम्राज्य के हित के लिए पॉल प्रथम का अन्त आवश्यक है। प्रजा की भावी आशा थे ज़ार के इकलौते पुत्र युवराज एलेक्ज़ेण्डर। ज़ार जितना हृदयहीन और अत्याचारी था, युवराज उतने ही सहृदय और दयालु थे। पैहलिन का प्रस्ताव था कि ज़ार के अन्त के लिए अगले दिवस की रात के एक बजे का समय उपयुक्त होगा, क्योंकि उस समय राजभवन पर उन्हीं की सेना का पहरा होगा। परन्तु यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि ज़ार के अन्त के पूर्व युवराज की अनुमति ले ली जाए कि वे सम्राट का स्थान ग्रहण करने के लिए तैयार हैं या नहीं। इस काम का भार भी पैहलिन ने अपने ऊपर लिया और सभा विसर्जन के बाद युवराज के महल में पहुँचा। यथारीति अभिवादन के बाद पैहलिन ने कहा—क्या युवराज अपनी प्रजा की पीड़ा से अनभिज्ञ हैं?

युवराज ने उत्तर दिया—"काउण्ट पैहलिन, मैं प्रजा के ऊपर किए गए अत्याचारों से भली भाँति परिचित और दुःखित हूँ।"

"क्या युवराज का यह कर्तव्य नहीं है कि वे अपनी प्रजा का दुःख निवारण करें?"—पैहलिन ने फिर पूछा।

"क्यों नहीं काउण्ट, क्या तुम नहीं जानते कि मैंने रातों जाग-जाग कर इस प्रश्न को हल करना चाहा है? परन्तु मुझे कोई उपाय नहीं दृष्टि-गोचर होता।"

"उपाय तो बिलकुल सरल है युवराज!"

"क्या?"—युवराज ने आशान्वित होकर पूछा!

"अर्थात् युवराज सम्राट का पद ग्रहण कर लें।"—पैहलिन ने गम्भीर भाव से उत्तर दिया।

थोड़ी देर तक तो युवराज इस कथन का अभिप्राय ही नहीं समझ सके। परन्तु ज्यों ही समझ में आया त्यों ही उनका मुख रोषमय हो गया। उत्तेजित होकर बोले—

"काउण्ट पैहलिन! क्या तुम भी राजद्रोही हो? परन्तु तुम्हें मालूम होना चाहिए कि राजद्रोहियों के लिए मेरे भवन में स्थान नहीं है।" यह कह कर उन्होंने द्वार खोल दिया। परन्तु जब काउण्ट बाहर जाने लगा तो उसी स्वर में युवराज ने फिर कहा—"भविष्य में इसका ध्यान रखना कि तुमने युवराज से क्या कहा है।" और द्वार बन्द कर लिया।

परन्तु पैहलिन अपने निश्चय से विचलित होने वाले न थे। उन्होंने उसी रात में सारी राज्य-सेना तथा सब सामन्तों को सूचना भिजवा दी कि आगामी रात्रि के एक बजे के बाद रूस-साम्राज्य के सम्राट ज़ार एलेक्ज़ेण्डर होंगे।

४

आज सम्राट के महल में प्रातःकाल से ही बड़ी चहल-पहल थी। राजभवन के सिंहद्वार पर कई गाड़ियाँ खड़ी थीं, जिनमें बक्स के ऊपर बक्स लादे जा रहे थे। पैहलिन सम्राट की आज्ञा लेने के लिए जब वहाँ पहुँचे तो द्वार-रक्षक ने उन्हें रोक दिया और कहा—"सम्राट की आज्ञा नहीं है।" जब काउण्ट ने इस चहल-पहल और इस अनोखी आज्ञा का कारण पूछा तो उत्तर मिला—"सम्राट आज अपनी प्रेमिका के साथ भ्रमणार्थ दक्षिण की ओर प्रस्थान करने वाले हैं।"

काउण्ट स्तम्भित रह गए। अपने सारे प्रयत्नों को इस एक ही झटके में सहसा विफल होते देख उनकी आँखों के आगे क्षण-मात्र के लिए अँधेरा छा गया। परन्तु केवल क्षण-मात्र के ही लिए। दूसरे ही क्षण कर्तव्य-वीर काउण्ट फिर अपने निश्चय पर दृढ़ हो गए। द्वार-रक्षक की अनुनय-विनय की परवा न कर वे सीधे सम्राट के कमरे में घुस गए। उस समय सम्राट ओवरकोट पहनने का प्रयत्न कर रहा था। काउण्ट को देख कर उसने ओवरकोट उनके हाथों में दे दिया और पहनाने का इशारा किया। काउण्ट ने ओवरकोट लेकर एक ओर रख दिया तथा राजाज्ञा के लिए बहुत से काग़ज़-पत्र सम्राट के सामने रख कर प्रार्थना की कि यदि सम्राट आज प्रस्थान न करके कल करें तो प्रजा अत्यन्त अनुगृहीत होगी। कुछ पत्रों पर आज ही विचार हो जाना परमावश्यक है।

सम्राट पहले तो सहमत हो गया। परन्तु प्रेमिका की एक फटकार पड़ते ही उसने फिर ओवरकोट उठा लिया। काउण्ट ने बहुतेरा प्रयत्न किया कि आज प्रस्थान न हो, किन्तु सब व्यर्थ। इतने पर भी उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा। सम्राट की प्रणयिनी उस समय गाड़ी में पहुँच चुकी थी। सम्राट भी चलने ही वाला था कि उसे अपनी सुँघनी की डिबिया, जो मेज़ पर रक्खी थी, याद आ गई। उसने मेज़ पर रक्खे हुए सारे राजकीय पत्रों को इधर-उधर कर डाले, परन्तु डिबिया न मिली। मिलती भी कैसे? वह तो काउण्ट की भीतरी जेब में पहुँच चुकी थी। सुयोग पाकर काउण्ट ने कहा—"यदि सम्राट चाहें तो मेरी डिबिया ले सकते हैं।"

माँगने पर काउण्ट ने अपनी डिबिया निकाल कर दे दी। सुँघनी सूँघने के पश्चात् सम्राट की दृष्टि डिबिया के ऊपर लगे हुए चित्र पर पड़ी। वह एक अतीव सुन्दर स्त्री का चित्र था। कामलोलुप सम्राट ने पूछा—"यह किस का चित्र है?"

सङ्कोच के साथ काउण्ट ने उत्तर दिया—"सम्राट! यह मेरी प्रेमिका का चित्र है। यदि आज्ञा हो तो आज शाम को हम तीनों साथ ही भोजन करें।"

ज़ार को और क्या चाहिए था? आज्ञा दे दी। प्रस्थान का विचार स्थगित हो गया। गाड़ी में बैठी हुई प्रणयिनी को आज्ञा हुई कि वह अपने महल को चली जाए। काउण्ट का कौशल काम कर गया।

५

काउण्ट पैहलिन अपने कमरे में बैठे हुए अपनी प्रेमिका से वार्तालाप कर रहे थे। उनकी प्रेमिका परलोकगत काउण्ट ऑस्टरमैन की विधवा काउण्टेस ऑस्टरमैन थी। पैहलिन और काउण्टेस में लड़कपन की दोस्ती थी। कुछ समय के लिए पैहलिन को विदेश जाना पड़ा था और इसी बीच में काउण्ट ऑस्टरमैन ने उनकी प्रणयिनी पर डोरे डाल कर उसे अपना लिया था। परन्तु ऑस्टरमैन की मृत्यु के बाद फिर दोनों पुराने प्रेमी मिल गए। इस समय पैहलिन अपनी प्रेमिका को आज सायङ्काल सम्राट के साथ भोजन करने का निमन्त्रण दे रहे थे, इतने में स्टीवेन्सन ने एक गुप्त पत्र लाकर उन्हें दिया। पैहलिन ने अलग जाकर उसे पढ़ा और फिर अपनी जेब में रख लिया। स्त्री-हृदय स्वभावतः ही कुतूहल-प्रिय होता है। काउण्टेस के हृदय में कुतूहल उत्पन्न हुआ। उसने पूछा—"क्या कोई गुप्त पत्र है?"

"हाँ।"—काउण्ट ने केवल एक शब्द में उत्तर दिया।

"इतना गुप्त कि मुझे भी नहीं दिखाया जा सकता?"—काउण्टेस ने फिर आग्रह किया।

"इससे भी अधिक प्रिये!"

काउण्टेस का कुतूहल सन्देह में परिणत हो गया। वह चुप हो गई।

पैहलिन रात भर के जागे हुए थे। थोड़ी देर के बाद कुर्सी पर बैठे-बैठे उनकी आँख लग गई। काउण्टेस ने सुयोग पाकर वह गुप्त पत्र उनकी जेब से निकाल लिया और पढ़ा। उसमें लिखा था—"आपके आज्ञानुसार सेना को ख़ूब समझा दिया गया है। ठीक समय पर राजभवन के चारों ओर पहरा रहेगा। पक्षी निकल नहीं सकता। अन्त आपके अधीन है।"

काउण्टेस समझ गई, कि यह पक्षी पॉल प्रथम के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। उसने यह भी अनुमान कर लिया कि इस षड्यन्त्र का प्रधान नायक उसका प्रेमिक काउण्ट पैहलिन है। काउण्टेस ने पत्र को धीरे से यथास्थान रख दिया।

६

रात के आठ बजे थे। राजभवन में भोज हो रहा था। मेज़ की एक ओर ज़ार और काउण्टेस तथा दूसरी ओर पैहलिन बैठे भोजन कर रहे थे। भोजन कर लेने पर पैहलिन आवश्यक कार्यवश बाहर चले गए, परन्तु काउण्टेस को आज्ञा न मिली। पैहलिन के चले जाने पर ज़ार काउण्टेस को अपना सुसज्जित राजभवन दिखलाने के बहाने अपने शयन-गृह में ले गया और द्वार बन्द कर लिया। काउण्टेस ने अपने को बचाने की ख़ूब चेष्टा की, परन्तु कोई फल न हुआ। अन्त में कोई चारा न देख कर उसने कहा—"सम्राट! काउण्टेस पैहलिन मुझे लेने आते होंगे।"

ज़ार ने उत्तर दिया—"प्रिये! तुम भूलती हो, पैहलिन जान-बूझ कर चला गया है। वह जानता है कि उसे अभी नहीं आना चाहिए। प्रमाण-स्वरूप यह डिबिया देखो और पहचानो कि किसकी है और इस पर किसका चित्र है?"

इस प्रकार काउण्टेस के हृदय में पैहलिन के प्रति घृणा का बीज बोकर ज़ार ने अपनी कुचेष्टाएँ सफल होने की आशा की। परन्तु यद्यपि काउण्टेस को ज़ार की बातों का विश्वास हो गया और फल-स्वरूप पैहलिन से उसे बड़ी घृणा हो गई, तथापि वह ज़ार के पञ्जे में न आई। ज़ार मदिरा के नशे में चूर था। अन्त में थक कर सो गया। पापी के हृदय में भी कभी-कभी ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। कोई घण्टे भर बाद आँख खुली तो मदिरा का नशा उतर चुका था। काउण्टेस कठघरे में बन्द भयभीता हरिणी के समान एक कोने में बैठी हुई थी। ज़ार ने उठ कर द्वार खोल दिया और क्षमा माँगते हुए उसे जाने की आज्ञा दे दी। काउण्टेस के द्वार पर पहुँचते ही ज़ार ने कहा—"पैहलिन को अभी मेरे पास भेज दो। आज न जाने क्यों मुझे बड़ा भय लग रहा है।"

"क्या काउण्ट के समीप होने पर सम्राट को भय नहीं लगेगा?"—काउण्टेस ने पूछा।

"नहीं। संसार में केवल वही मेरा मित्र है। उसके निकट रहते मुझे कोई भय नहीं है।"

ज़ार का उत्तर सुन कर काउण्टेस को उस गुप्त पत्र का ध्यान आ गया। उसे यह भी ख़्याल आया कि जिस पर ज़ार का इतना विश्वास है वही पैहलिन राजद्रोहियों का नेता और ज़ार के प्राणों का भूखा है। उसे पैहलिन के कपट-व्यवहार पर भी घृणा हुई। मृत्यु के निकट पहुँचे हुए ज़ार के प्रति दया और पैहलिन के प्रति घृणा ने मिल कर काउण्टेस का मुँह खोल दिया। वह बोली—"सम्राट के हित के लिए यह आवश्यक है कि वे काउण्ट पैहलिन पर विश्वास न करें।"

"पैहलिन विश्वास न करूँ?" ज़ार हँस पड़ा। काउण्टेस द्वार से दो क़दम आगे पहुँच चुकी थी। ज़ार को इस प्रकार हँसते देख उससे न रहा गया। उसने लौट कर कहा—"मैं निश्चय रूप से जानती हूँ कि जिस काउण्ट के ऊपर सम्राट का इतना विश्वास है वह उनके प्राणों का भूखा है।" इस बार ज़ार को काउण्टेस के कथन पर विश्वास हो गया। वह क्षण भर के लिए स्तम्भित होकर वहीं खड़ा रहा। फिर दौड़ कर आगे बढ़ा और काउण्टेस को भीतर पकड़ लाया। इसके बाद द्वार बन्द करके उसने पूछा—"तुम्हारी बातों का प्रमाण?" काउण्टेस ने उस गुप्त पत्र का सविस्तार हाल ज़ार को सुना दिया और उसके पूछने पर परामर्श दिया कि काउण्ट पैहलिन को शीघ्र बन्दी कर लिया जाय।

७

पैहलिन अपने कमरे में बैठे हुए आवश्यक काग़ज़-पत्र देख रहे थे। इतने में स्टीवेन्सन ने आकर सूचना दी कि सम्राट् की सेना ने मकान घेर लिया है और आपको बन्दी करने के लिए फ़ौजी अफ़सर अन्दर आ रहे हैं। यह सुनते ही पैहलिन अपने गुप्त द्वार से बाहर निकल गया। अफ़सरों ने सारा भवन खोज डाला। अन्त में हताश होकर लौट पड़े। उधर पैहलिन धीर भाव से राजभवन में प्रवेश कर रहा था। ज़ार के शयन-गृह के द्वार पर पहुँच कर उसने द्वार-रक्षक को आज्ञा दी—"सम्राट की आज्ञा है कि युवराज सैनिक वेश में तुरन्त सम्राट के सामने उपस्थित हों।"

इसके बाद उसने अन्दर प्रवेश किया। उसे एकाएक अपने सामने खड़ा देख ज़ार चौंक पड़ा। फिर सँभल कर पूछा—"पैहलिन! क्या यह सत्य है कि तुम राजद्रोहियों के दल में सम्मिलित हो?"

"सत्य है, सम्राट!"—पैहलिन ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया। ज़ार ने पिस्तौल निकाल कर पैहलिन के सीने के सामने कर दिया। अविचल भाव से मुस्कराता हुआ पैहलिन बोला—"सम्राट की रक्षा के लिए यह आवश्यक था कि मैं राजद्रोहियों के दल में सम्मिलित होऊँ।"

ज़ार का पिस्तौल नीचा हो गया। अविश्वास दूर हो गया। वह काउण्ट के पैरों पर गिर कर बच्चों की भाँति रोने लगा।

"पैहलिन! पैहलिन!! मुझे बचाओ! इन राजद्रोहियों से मेरी रक्षा करो।" पैहलिन ने सान्त्वना देते हुए ज़ार को उठाया। काउण्टेस ने, जो अभी तक वहीं थी, पूछा—"पैहलिन! क्या तुम सचमुच सम्राट की रक्षा करोगे?"

काउण्ट ने उत्तर दिया—"मुझे सम्राट का जीवन अपने जीवन से भी अधिक प्रिय है। मैं ईश्वर को साक्षी करके सम्राट के प्राणों के साथ अपने प्राणों को सम्बद्ध करता हूँ। मैं सम्राट की रक्षा के लिए यहाँ हूँ। तुम अब घर जा सकती हो।"

काउण्टेस के चले जाने पर ज़ार ने पूछा—"पैहलिन! राजद्रोहियों का नेता कौन है?"

"युवराज एलेक्ज़ेण्डर।"—पैहलिन ने उत्तर दिया।

"इसका प्रमाण?"

पैहलिन ने उठ कर द्वार खोल दिया। सामने सैनिक वेश में युवराज चले आ रहे थे। भयभीत ज़ार ने स्वयं दौड़ कर द्वार बन्द कर दिया और फिर, पैहलिन के पैरों पर गिर कर बोला—"पैहलिन, भाई पैहलिन! मेरी रक्षा करो।"

पैहलिन ने जेब से दो पत्र निकाल कर ज़ार के सामने रख दिए और कहा—"सम्राट् इन पर हस्ताक्षर कर दें।"

ज़ार ने उन्हें आद्योपान्त पढ़े। कुछ हिचकिचाया। फिर हस्ताक्षर कर दिए। पैहलिन ने दोनों पत्र उठा लिए और कहा—"सम्राट अब निश्चिन्त होकर सोवें।" इसके बाद पैहलिन राजभवन के बाहर निकल गए।

८

रात के ११ बजे चुके थे। पैट्रोग्रेड की हिम से ढकी हुई सड़कें चन्द्रमा के प्रकाश में चमक रही थीं। किन्तु कारागार की कोठरियों के भीतर निविड़ अन्धकार था। ऐसी ही एक कोठरी के एक कोने में भूमि-शय्या पर बैठे हुए, राजाज्ञा से बन्दी किए गए युवराज एलेक्ज़ेण्डर अपनी दशा पर विचार कर रहे थे। अभी आध घण्टा पहले वह रूस के युवराज—संसार के महान साम्राज्य के भावी सम्राट थे और अब एक साधारण क़ैदी हैं। परन्तु उनका अपराध? बस, यहीं युवराज का मस्तिष्क चक्कर खा जाता था। वे इन्हीं विचारों में निमग्न थे कि एकाएक खटके का शब्द हुआ और कोठरी का द्वार खुला। अपना टोप आँखों तक ढके हुए एक व्यक्ति ने अन्दर प्रवेश किया और युवराज को मूक अभिवादन करके एक पत्र उनके हाथ में दे दिया। युवराज ने काँपते हाथों से पत्र ले लिया और आगन्तुक के लाए हुए दीपक के प्रकाश में पढ़ा—

"मेरी आज्ञा है कि बन्दी ज़ारविच एलेक्ज़ेण्डर को २४ घण्टे के भीतर साइबेरिया में जन्म भर के लिए निर्वासित कर दिया जाए।—पॉल प्रथम।"

देश-द्रोहियों के प्रति—

[श्री० "अम्बिकेश" राजकवि, रीवाँ]

जिस पर जन्म ले, पला है जिसकी कि गोद,
जिसके पवन से रगों में भरा दम है।
जिसका नमक, पानी विधा अङ्ग-अङ्ग में है
जिसने दिया है शक्ति, शौर्यता अगम है।
जिसके ही रज से है रञ्जित शरीर सारा,
शीश में उदारता का भार भी न कम है।
होकर कृतघ्न यदि उसको भुलाया फिर
उस-सा न और कोई दूसरा अधम है।

मिट्टी से भी अधिक हुआ है गया बीता वह,
सुन्दर मनुष्य चाहे होवे भी कनक का।
बना अपने को धनवान, शक्तिवान रहे,
मूल्य में छदाम का, न कौड़ी का, तनक का।
पशु भी तो रखते हैं थान ही का ध्यान सदा
कैसे हैं मनुष्य वह अपनी सनक का।
जननी के दूध ही की लाज जो न रक्खा फिर
लग सका उसके ठिकाना क्या जनक का।

युवराज पर मानो वज्रपात हुआ। आज्ञा-पत्र हाथों से छूट पड़ा। जिस भयङ्कर हिमाच्छादित स्थान का नाम सुन कर बड़े-बड़े कठोर हृदय भी दहल जाते थे, उस साइबेरिया प्रान्त में कोमल हृदय एलेक्ज़ेण्डर का, पूर्णतया निर्दोष होने पर भी, आजन्म निर्वासन! युवराज अपने को अधिक न सँभाल सके। उनकी आँखों के सामने अन्धकार छा गया। वे ज़मीन पर गिरने लगे। आगन्तुक ने अपना टोप ऊँचा कर लिया और युवराज को सँभाला। युवराज को जब होश हुआ तो देखा कि वे काउण्ट पैहलिन के हाथों में थे। युवराज काउण्ट की शक्ति से भलीभाँति परिचित थे। बोले—काउण्ट पैहलिन! मैं सर्वथा निर्दोष हूँ। क्या आप मुझे इस भीषण दण्ड से नहीं बचा सकते?

"अवश्य, युवराज! किन्तु एक शर्त पर।"

"बतलाइए।"

"युवराज सम्राट का पद ग्रहण कर लें।"—पैहलिन ने अविचल भाव से उत्तर दिया।

युवराज सोच में पड़ गए। एक ओर था विशाल रूस साम्राज्य और दूसरी ओर साइबेरिया के भीषण जङ्गल। एक ओर था, पितृद्रोह और राजद्रोह तथा दूसरी ओर बीस कोटि प्राणियों के ऊपर अगणित अत्याचार। काउण्ट भी चुप न रहा। उसने युवराज के सामने उन अभागों के कष्टों का वर्णन किया जो प्रति वर्ष कई सहस्र की संख्या में कोड़ों की मार खाते हुए साइबेरिया-यात्रा करते थे। उसने उन बेचारों का ज़िक्र किया जो पैट्रोग्राड के मैदान में प्रति दिन तुच्छ अपराधों के लिए गोलियों का शिकार बना दिए जाते थे। यही नहीं, उसने ज़ारशाही के भयङ्कर अत्याचारों के कितने ही रोमाञ्चकारी उदाहरण युवराज के सामने रक्खे। युवराज ने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। उठ खड़े हुए और बोले—"काउण्ट! मैं पितृद्रोही हो सकता हूँ, परन्तु प्रजाद्रोही नहीं हो सकता। मैं ज़ार बनने को तैयार हूँ।"

काउण्ट ने घुटने टेक कर एलेक्ज़ेण्डर के दाहिने हाथ का यथारीति चुम्बन किया और कहा—"सम्राट आज ही रात को एक बजे के बाद अपने भवन की खिड़की से अपनी प्रजा को दर्शन दें।"

इसके उपरान्त युवराज को कारागार से बाहर निकाल कर उनके भवन तक पहुँचा दिया।

९

टन्‌न्‌न्‌न्! उस विचित्र रात का एक बजा। सम्राट के शयन-गृह के द्वार खुल गए। काउण्टों ने प्रवेश किया। आगे-आगे एक हाथ में एक पत्र लिए काउण्ट पैहलिन थे। सम्राट जाग उठे और आँख मल कर बैठ गए। फिर भयभीत होकर चिल्ला उठे—"पैहलिन! तुम मुझे बचाने की शपथ खा चुके हो। मुझे इन लोगों से बचाओ।"

पैहलिन ने शान्त भाव से पत्र खोल कर सम्राट के सामने रख दिया और कहा—"यदि आप इस पर हस्ताक्षर कर दें तो आपका बाल भी बाँका नहीं हो सकता।"

सम्राट ने पत्र को आद्योपान्त पढ़ा। फिर क्षण भर सोचने के बाद उठ खड़ा हुआ। पत्र को टुकड़े-टुकड़े कर डाला और दृढ़ स्वर में कहा—"नहीं, यह कदापि नहीं हो सकता कि मैं जीते जी सिंहासन छोड़ दूँ। मैं रूस का सम्राट हूँ और चाहे आज मरूँ या कुछ वर्ष बाद, पर सम्राट ही रह कर मरूँगा।" इसके बाद वह एक गुप्त-द्वार से बाहर निकल गया। अभी कुछ ही दूर अग्रसर हुआ होगा कि सामने से सैकड़ों सैनिक सङ्गीनों की नोकें आगे किए आगे बढ़ते हुए दिखाई दिए। सम्राट दूसरी ओर मुड़ा, परन्तु उधर भी वही दृश्य! इसी प्रकार वह जिस ओर भागता था, उसी ओर से चन्द्रमा के प्रकाश में चमकती हुई सङ्गीनों की क़तार उसकी ओर बढ़ती दिखाई देती थी। अन्त में वह चारों ओर से घिर गया। पास ही सभा-भवन था। वह दौड़ कर उसमें घुसा और सिंहासन पर बैठ गया। इतने में काउण्ट गण भी पीछा करते हुए आ पहुँचे, परन्तु सिंहासन के समीप पहुँच कर रुक गए। इस समय पैहलिन उनके साथ न थे। ज़ार ने भीषण हँसी हँस कर कहा—"देखूँ अब कौन रूस-साम्राज्य के सिंहासन पर बैठे हुए ज़ार की ओर पिस्तौल उठा सकता है!!"

सचमुच सबके पिस्तौल नीचे हो गए। सब जहाँ के तहाँ खड़े रह गए। इतने में पीछे से काउण्टों को ठेलता हुआ एक सुडौल पुरुष आगे आया। यह वही स्टीवेन्सन था, जिसने ज़ार के प्रति प्रतिहिंसा की प्रबल इच्छा को आज तक दबाए रक्खा था। स्टीवेन्सन सीधा सिंहासन पर पहुँच गया। उसने दोनों हाथों से ज़ार की गर्दन पकड़ ली और सिंहासन से नीचे घसीट लाया। पञ्जे कस गए और कुछ ही क्षण के उपरान्त अत्याचारी पॉल प्रथम का शरीर निर्जीव हो गया। सभा-भवन का द्वार खुला और नङ्गे सिर काउण्ट पैहलिन ने प्रवेश किया। मृत ज़ार के प्रति आदर दिखलाने के लिए सब काउण्टों ने अपने-अपने टोप उतार लिए। सभा-भवन में बिल्कुल सन्नाटा था।

१०

आलोकमयी रजनी की नीरवता को भङ्ग करते हुए शब्द हुआ—"सम्राट एलेक्ज़ेण्डर की जय!" सहस्रों कण्ठ से एक साथ विराट ध्वनि हुई—"सम्राट एलेक्ज़ेण्डर की जय!" महलों की दीवारों से प्रतिध्वनि गूँज उठी—"सम्राट् एलेक्ज़ेण्डर की जय!"

काउण्ट पैहलिन ने अपने कमरे की खिड़की खोल कर देखा, सम्राट एलेक्ज़ेण्डर अपने महल की खिड़की में राजवेश से भूषित खड़े थे और नीचे राजपथ पर एकत्रित थी अगणित जनता। तोप का शब्द हुआ और फिर निस्तब्धता छा गई। सम्राट ने प्रतिज्ञा की—

"मैं, एलेक्ज़ेण्डर आज अपने पूर्वजों के सिंहासन पर आरूढ़ होता हूँ और ईश्वर को साक्षी देकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि आजन्म अपनी प्रजा के प्रति सच्चा शुभ-चिन्तक रहूँगा।"

तदनन्तर फिर वही जय-ध्वनि गूँजने लगी। काउण्ट ने खिड़की बन्द कर ली और अपनी कुर्सी पर आ बैठे। सामने दूसरी कुर्सी पर बैठा हुआ था, उनका सेवक स्टीवेन्सन। दोनों के मध्य में एक छोटी मेज़ थी। काउण्ट ने जेब से एक पिस्तौल निकाल कर मेज़ पर रख दिया और सामने टँगी हुई घड़ी की ओर सङ्केत किया। स्टीवेन्सन ने घड़ी की ओर देखा, दो बजने में तीन मिनट शेष थे।

काउण्ट ने कहा—"स्टीवेन्सन! केवल तीन मिनट शेष हैं। अपनी प्रतिज्ञा का पालन करो।" काउण्ट वक्षस्थल खोल कर खड़ा हो गया। स्टीवेन्सन ने काँपते हाथों से पिस्तौल उठा लिया।

उधर काउण्टेस ने अपने कमरे में बैठे-बैठे जयध्वनि सुना था। वह समझ गई कि काउण्ट ने अपने सम्राट के प्रति विश्वासघात किया है। उसने अपना पिस्तौल उठा लिया और अपने प्रेमी पैहलिन का प्राण हरने के लिए उसके कमरे की ओर बढ़ी। परन्तु ज्योंही उसने काउण्ट के कमरे का द्वार खोला, त्योंही घड़ी से शब्द हुआ, "टन्......टन्......!" और उसके साथ ही हुआ पिस्तौल का शब्द। काउण्टेस के हाथ से पिस्तौल छूट कर ज़मीन पर गिर पड़ी। वह गिरते हुए पैहलिन को अपनी भुजाओं पर लेकर बोली—"प्यारे! प्यारे पैहलिन!!!"

मरणासन्न काउण्ट के शुष्क होठों पर मुस्कराहट की एक धीमी रेखा दौड़ गई। काउण्ट पैहलिन के अन्तिम शब्द थे—"प्रिये! मैं जानता हूँ कि मैं विश्वासघाती, मित्र-द्रोही तथा हृदयहीन प्रेमिक हूँ। परन्तु मैंने देशभक्त बनने का प्रयत्न अवश्य किया है! मैं..............!"*

* 'पेट्रियट' नाम के एक अमेरिकन फ़िल्म के आधार पर।

* * *

खीज

"आक्खाह, लाला जी हैं!"

"जै सियाराम की, बाबू-साब!"

"सब कार-बार ठीक-ठाक चला जा रहा है न?"

"अजी बाबू-साब, कारबार कैसो, जे गान्धी की आँधी ने नास कर दीन्हो! अठे कारबार की कें पूँछे हैं!"

❀

"लाला जी, घबड़ाइए नहीं। महात्मा गाँधी तो छूट गए!"

"अरे बाबू-साब, कें मसकरी करे हे! जे धरणो तुसुरो तो जारी ही हे!!"

"धरना भी उठ जायगा, लाला जी, सरकार ने तो राज़ीनामा करने के लिए कॉङ्ग्रेसी नेताओं को छोड़ा है!"

"अजी बाबू साब, अठे तो प्रान सूख रह्यो है! राजीनामो तुसुरो न जाने कब ताईं होइयो!"

❀

"अब जल्द ही कपड़े का बाज़ार खुल जायगा! म० गान्धी कुछ न कुछ इन्तज़ाम करेंगे ही!"

"इन्तज़ाम का करेंगो! एक गाँठ की निकासी माँग तो २२१) को जुर्मानो लै लीन्हो! अन्धेर तो देखो जे कॉङ्ग्रेस ने मचाय रक्खो है!"

❀

"तो फिर लाला जी, आपने भी तो सील-मोहर हटा कर गाँठ बेच ली थी।"

"तो कॉङ्ग्रेस के बाप को के बेंच लीन्हों—आपणो ही माल दीन्हों ना!"

"हाँ-हाँ, मगर, पहिले सील-मोहर......!"

"ऐ जी बाबू साब, केसी बात करो हे,-म्हारी खुसी सों सील-मोहर कीन्ही थी के?"

❀

"ख़ैर, अब धीरज रखिए, कुछ न कुछ फ़ैसला होने ही वाला है!"

"फैसलो, अठें फैसलो तुसुरो तो हो ही गयो! अब कारबार तो सारो चौपट हे—जैसो फैसलो भयो, वैसो ना भयो!!"

"नहीं-नहीं, बाज़ार खुलेगा ज़रूर!"

"खुल के ही का कर लेइगो! बाबा, थारे मुँह के लगने कूँ! थेंइ तो अठें भी वाह-वाह, उठें भी वाह-वाह!"

❀

"लाला जी, माल खुलते ही सब मुश्किलें आसान हो जायँगी!"

"अरे बाबा जा अठे ते, रार काईं करे हे! आसान तुसुरो लेकर जाइयो! कॉङ्ग्रेसवालो लङ्क की हुण्डी भर जाइयो के!"

"लाला जी, एक ख़ुश-ख़बरी सुनाता हूँ!"

"माफ़ करो जी बाबू-साब, आपणे को बदख़बरी से तीं बचाइयो—खुस-खबरी तुसुरी के कर जायगी!"

❀

"लाला जी, स्वराज्य मिलने ही वाला है!"

"जे कॉङ्ग्रेस वालो सूराज तो सौ जनम ना होइ, तेंई भलो! कॉङ्ग्रेस तो अपणो ही घर भरणो जाने हे! मुलक कूँ कङ्गाल बनाय दीन्हों—अब सूराज कूँ का ओढ़ेगो या बिछाएगो! जा बाबा, अपनी राह जा!!

—"मनसुखा"

* * *

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

अजमेर की पर्दा-नशीन महिलाओं का वह ग्रूप, जिसने पर्दे की कुप्रथा के मस्तक पर पाद-प्रहार करके जगन्नियन्ता की रहस्यपूर्ण सृष्टि का अवलोकन करने की प्रतिज्ञा कर ली है। महिलाओं का यह ग्रूप उस समय का है, जब ये सारी देवियाँ—अजमेर के विख्यात राजनैतिक कार्यकर्ता—पं० गौरीशङ्कर भार्गव की धर्मपत्नी श्रीमती गोमती देवी भार्गव और उनकी पुत्री कुमारी प्रेमलता देवी का स्वागत करने के लिए एकत्र हुई थीं, जो हाल ही में जेल से मुक्त होकर आई थीं। इन देवियों ने इन माँ-बेटियों को एक चाँदी की तकली भेंट की थी। बीच में माला पहिने माँ-बेटियाँ बैठी हैं।

बरौंदा (आगरा) के उन किसानों का परिवार, जिन्होंने टैक्स न देकर घर-बार का त्याग कर दिया है और जो जङ्गलों में निवास कर रहे हैं।

पटना के डिप्टी-कलेक्टर और ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट रायसाहब देवीदयाल के पुत्र-रत्न—श्री० सत्यपाल धवले, जिन्होंने देश-सेवा का व्रत लिया है और इसी अपराध के लिए परिवार से सर्वथा त्यक्त कर दिए गए हैं। आप ४ मास का कठिन-कारावास दण्ड भोग कर हाल ही में आए हैं।
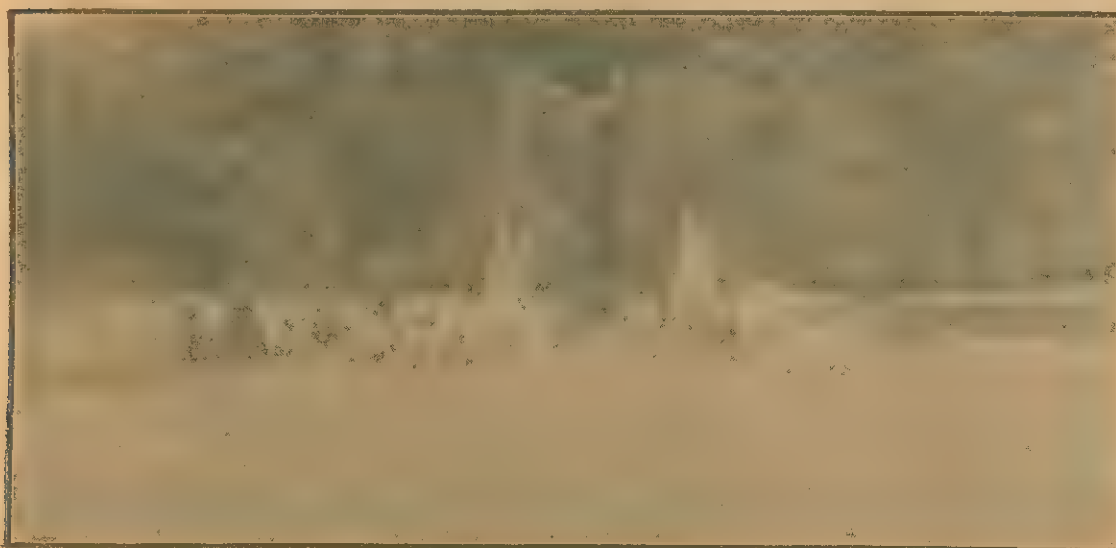
बरौंदा (आगरा) के किसानों का ग्रूप—जिन्होंने पुलिस के दुर्व्यवहारों से खीज कर घर-बार त्याग कर जङ्गलों में रहने की ठान ली है।

अपने परिवार सहित अजमेर के सुविख्यात राष्ट्रीय कार्यकर्ता—पं० गौरीशङ्कर भार्गव। आप, आपकी स्त्री, कन्या और भाई सभी—हाल ही में जेल से मुक्त हुए हैं।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

इस उन्नति और विकास के युग में भारतीय महिलाएँ क्या समुचित लाभ नहीं उठा रही हैं ?

लाहौर में होने वाले अखिल भारतवर्षीय महिला कॉन्फ्रेन्स की कार्यकारिणी समिति का ग्रूप। बीच में कॉन्फ्रेन्स की सभानेत्री—मद्रास व्यवस्थापिका सभा की भूतपूर्व उप-प्रधाना—श्रीमती मुथु लक्ष्मी रेड्डी बैठी हैं।

अखिल भारतवर्षीय महिला कॉन्फ्रेन्स में सम्मिलित होने वाली विभिन्न प्रान्तों की प्रतिनिधियों का ग्रूप

(प्रतिनिधियों का दूसरा ग्रूप अन्यत्र प्रकाशित हुआ है)

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

नागपुर विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर—रेवरेण्ड डॉक्टर जे० एफ़० मेकफ़ाइडन।

मद्रास के सङ्गीत-परिषद (Madras Musical Acadamy) से वॉयलिन बजाने में प्रथम पुरस्कार पाने वाली ११ वर्षीय बालिका—कुमारी वी० एन० तुलसी।

कलकत्ते के नए शेरिफ़—श्री० प्रफुल्लनाथ टैगोर—जो हाल ही में सन् १९३१ के लिए निर्वाचित हुए हैं।

कलकत्ते में होने वाली अखिल भारतवर्षीय शिक्षा-सम्मेलन (All-India Educational Conference) के सभापति—प्रोफ़ेसर राधाकृष्णन

कलकत्ते के भारतीय व्यापार-सङ्घ (Indian Chambers of Commerce) के मन्त्री—श्री० एम० पी० गाँधी, एम० ए०। आप जनेवा में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-परिषद् के सलाहकार भी चुने गए हैं।

अखिल भारतवर्षीय महिला कॉन्फ़्रेन्स में सम्मिलित होने वाली विभिन्न प्रान्तों की प्रतिनिधियों का ग्रूप (दूसरा ग्रूप अन्यत्र देखिए)

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

संयुक्त प्रान्तीय एङ्लो-इण्डियन एसोसिएशन के प्रधान—श्री० एच० सी० देसाँगे—जो एङ्लो-इण्डियनों की ओर से व्यवस्थापिका सभा (यू० पी०) के प्रतिनिधि चुने गए हैं।

कलकत्ता कॉरपोरेशन के स्पेशल ऑफ़िसर—श्री० बी० एन० दे।

लखनऊ अवध चीफ़ कोर्ट के जज—श्री० माननीय जस्टिस पुलन, आई० सी० एस०—जो इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज नियुक्त किए गए हैं।

भारत-सरकार के प्रधान इन्जीनियर—श्री० ए० एम० राऊज़।

मैसूर-स्टेट के चीफ़ जज—दीवान बहादुर श्री० राजा धर्म-प्रवीण—जिन्होंने हाल ही में अपनी स्त्री की स्मृति में बङ्गलोर के नए शिशु-रक्षिणी समिति के अस्पताल को २०,००० रुपयों का दान दिया है। आपकी धर्मपत्नी बङ्गलोर सेवा-समाज की संस्थापिका थीं।

मैसूर-स्टेट के चीफ़ इन्जीनियर—श्री० के० श्रीनिवास अयङ्गर—जिन्होंने हाल ही में पेन्शन ली है।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर—लेफ़्टेनेंट-कर्नल सुहरावर्दी—जिनकी 'देशभक्ति-पूर्ण' सेवाओं से प्रसन्न होकर बङ्गाल-गवर्नर ने आपको 'क़ैसरे-हिन्द' का पदक प्रदान किया है।

हाल ही में ट्रावङ्कोर (मद्रास) की बड़ी व्यवस्थापिका सभा की सदस्या नियुक्त होने वाली—कुमारी पेनीरी मोज़ेज़

भोपाल के सुप्रसिद्ध राजभक्त—श्री० राय बहादुर राजा अवधनारायण बिसरिया—जो नवाब-साहब की अनुपस्थिति में 'राज्य-सञ्चालन केबिनेट' के सदस्य चुने गए थे।

गले में तौक़, दोनों पाँव में ज़ंजीर देखेंगे,
वह मेरे आलमे-वहशत की जब तस्वीर देखेंगे !!
मैं कहता हूँ, कि सीना चाक करने से नतीजा क्या ?
वह कहते हैं, कि सीने में तेरे हम तीर देखेंगे !

यह तोहफ़ा कौन सा भेजा गया है, अहले[1] ज़िन्दाँ को,
उलट जाएगा दिल, जब आपकी तस्वीर देखेंगे ।
अभी समझे हैं वीराँ[2], तबक़ए[3] गोरे[4] ग़रीबाँ को,
यही हर चौखटे में, एक नई तस्वीर देखेंगे ।
—"अज़ीज़" लखनवी

यही है हुस्न का जादू, यही है हुस्न का अफ़सूँ[5],
जिसे भी आप देखेंगे, उसे तस्वीर देखेंगे ।
—"अरमान" कानपुरी

असर आहों का, और नालों की, हम तासीर देखेंगे,
वह चुप कब तक रहेंगे, सूरते-तस्वीर देखेंगे ।
—"आज़ाद" देहलवी

न जा मसजिद में, क्या रक्खा है, चल ऐ शेख़ मन्दिर में,
वहाँ गर कुछ नहीं तो, यार की तस्वीर देखेंगे ।
—"इक़्बाल" मेरठी

मेरे नालों की, घर बैठे वह यह तासीर देखेंगे,
नज़र में घूमती-फिरती, मेरी तस्वीर देखेंगे ।
कहीं जो सामने अपने, वह ख़ुश होकर चले आएँ,
तो हम हैरत से, उनकी चाँद-सी तस्वीर देखेंगे ।
—"जौहर" मथरावी

गेरबाँ[6] गीर देखेंगे, न दामन[7] गीर देखेंगे,
कि हम महशर[8] में, उनको सूरते तस्वीर देखेंगे ।
—"जोया" बरेलवी

न ख़ुद आएगा तू ज़ालिम ! न तस्वीर अपनी भेजेगा,
तो हम आईनए-दिल में, तेरी तस्वीर देखेंगे ।
—"शाकिर" ग्वालियारी

करेंगे तेज़गामी[9] से, जो तै राहे तरक़्क़ी को,
तो मुस्तक़बिल[10] को वह पेशे नज़र तस्वीर देखेंगे ।
—"शाकिर" रोहतकी

सरे बालीने[11] बीमारे अजल,[12] वह आके यों बोले,
हम इस नाकाम की, मिटती हुई तस्वीर देखेंगे ।
—"शैदा" अमरोही

हथेली पर जिगर[13], और पाँव में ज़ंजीर देखेंगे,
वह फ़स्ले[14] गुल में, यों खिंचते मेरी तस्वीर देखेंगे !
यह क़ैदी कह रहे हैं, वह अगर ज़िन्दाँ में आएगा,
कभी उसको, कभी उस बुत की, हम तस्वीर देखेंगे ।
—"मज़्हर" जारचोई

क़फ़स[15] वाले भी, तेरे मुन्तज़िर हैं क़तरए शबनम !
चमन के नौ शिगुफ़्ता[16] फूल की तस्वीर देखेंगे
—"जमाल" इटावी

हमें यह देखना है, फ़र्क़ अस्लो नक़्ल में क्या है,
तुम्हें देखेंगे पहले, फिर तेरी तस्वीर देखेंगे ।
—"नश्तर" मेरठी

नहीं है ताबे-नज़्ज़ारा[17] हमारी चश्मे[18] तरियाँ को,
कलेजा हाथ में लेकर, तेरी तस्वीर देखेंगे ।
—"रौशन" पानीपती

१—क़ैदी, २—उजड़ा हुआ, ३—टुकड़ा, ४—क़ब्रिस्तान ५—जादू, ६—गरीबाँ पकड़ने वाला, ७—दामन पकड़ने वाला, ८—प्रलय, ९—तेज़ चलना, १०—भविष्य, ११—सिरहाना, १२—मौत, १३—कलेजा, १४—बहार का ज़माना, १५—पिंजड़ा, १६—खिला हुआ, १७—देखने की ताक़त, १८—आँखें,

ज़माना जानता है, यह कि नाकामे तमन्ना हैं,
भला हम, और हँसती-बोलती तस्वीर देखेंगे ।
सुकूँ[19] हो जायगा दिल को, क़रार आ जायगा दिलको,
शबे[20] फ़ुरक़त तेरी, जब चाँद सी तस्वीर देखेंगे ।
दिखाएगी तमाशा, दीदए[21] हक़्बीं हमें "ज़ाहिद",
कि हर ज़र्रे में, क़ुदरत[22] की नई तस्वीर देखेंगे ।
—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

गले में तौक़[23], दोनों पाँव में ज़ंजीर देखेंगे,
वह मेरे आलमे[24] वहशत की, जब तस्वीर देखेंगे ।
नज़र करते हैं, मेरे दिल की जानिब तो यह मतलब है,
मुहब्बत की, वह जीती-जागती तस्वीर देखेंगे ।
शबीहे[25] हज़रते यूसुफ़[26] की, शोहरत है ज़माने में,
मिला कर हम तेरी तस्वीर से, तस्वीर देखेंगे ।
मँगा ली उसने अब, तस्वीर अपनी हज़रते "बिस्मिल"
जो दिल घबराएगा, तो कौन सी तस्वीर देखेंगे ।
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

बहुत दुशवार[27] होगा, गोश्त से नाख़ुन जुदा करना,
हम अपने दिल को देखेंगे, कि उनका तीर देखेंगे ।
—"अज़ीज़" लखनवी

अगर कुछ जज़्ब[28] है दिल में, कशिश है कुछ अगर दिल में,
कहाँ जाते हैं बच-बच कर तुम्हारे तीर देखेंगे ।
किसी दिन चीर कर जब वह दिले नख़्चीर[29] देखेंगे,
तो पिनहाँ[30] इसमें, एक टूटा हुआ सा तीर देखेंगे ।
—"आज़ाद" देहलवी

दिले-बेताब को है, हाजते सामाने[31] आराइश,
तेरी गुलकारियाँ,[32] हम आज नोके तीर देखेंगे ।
—"कामिल" माछोबाड़ी

मैं कहता हूँ, कि सीना चाक करने से नतीजा क्या ?
वह कहते हैं, कि सीने में तेरे हम तीर देखेंगे !
—"नश्तर" मेरठी

निगाहें फेर कर, जब जानिबे नख़्चीर देखेंगे,
मेरे पहलू में, एक टूटा हुआ वह तीर देखेंगे ।
—"रौशन" पानीपती

दिले-उश्शाक़[33] में, ले दे के है भरमार तीरों की,
हज़ारों तीर हैं, अब आप कितने तीर देखेंगे ?

१९—चैन, २०—विरह की रात, २१—ज्ञान-चक्षु, २२—प्रकृति २३—हँसुली, २४—दीवानगी, २५—तस्वीर, २६—पैग़म्बर का नाम है जो बहुत ख़ूबसूरत थे, २७—कठिन, २८—शिकार, २९—आकर्षण, ३०—छुपा हुआ, ३१—बनाव-सिंगार, ३२—रङ्ग लाना, ३३—प्रेमियों.

बनाए घर जो चल फिर कर, जिगर में, दिल में, पहलू में,
न ऐसा तीर देखा है, न ऐसा तीर देखेंगे ।
—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

उन्हें चुन-चुन के रक्खेंगे, जिगर में, दिले में, पहलू में,
जो अच्छे सब से तरकश में, तुम्हारे तीर देखेंगे !
तेरे तरकश से, एक दिन लज़्ज़ते आज़ार[34] की ख़ातिर,
चुभो कर, हम भी अपने दिल में कोई तीर देखेंगे ।
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

किसी की चारासाज़ी[35] से, मुक़द्दर[36] बन नहीं सकता,
जो क़िस्मत में लिखा है, वह बहर तक़दीर देखेंगे !
—"अज़ीज़" लखनवी

सताएगा कहाँ तक, आस्माने पीर देखेंगे,
यूँ ही कब तक रहेगी, गरदिशे तक़दीर देखेंगे,
—"शाकिर" ग्वालियारी

उड़ाया सहने गुलशन से, छुड़ाया आशियाँ[37] मेरा !
तेरा अन्जाम हम भी, शूमिए[38] तक़दीर देखेंगे ।
—"गुमनाम" सिकन्दराबादी

गले पर उनका ख़ञ्जर, या जिगर में तीर देखेंगे,
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे तक़दीर देखेंगे !
—"मज़्हर" जारचई

अबस[39] है शिकवए ज़ुल्मो सितम, जौरो जफ़ाए दिल !
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे, तक़दीर-देखेंगे !
—"ग़ाफ़िल" अकबराबादी

परे परवाज़[40] टूटे, आशियाँ उजड़ा, चमन छूटा,
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे तक़दीर देखेंगे !
—"शैदा" अमरोही

भला हो, या बुरा हो, नेक हो, या बद हो ऐ "आजिज़"
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे तक़दीर देखेंगे ।
—"आजिज़" देहलवी

तेरे दर से, तेरे कूचे से, उठना ग़ैर मुमकिन है,
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे-तक़दीर देखेंगे ।
यही तो दोस्तों का, मशग़लाए चारागर होगा,
तेरी तदबीर देखेंगे, मेरी तक़दीर देखेंगे ।
किसी तदबीर से, हम जान देकर राहे उलफ़त में,
लिखा तक़दीर का, ए कातिबे[41] तक़दीर देखेंगे ।
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

३४—कष्ट ३५—तदबीरें, ३६—भाग्य, ३७—घोंसला, ३८—ख़राब, ३९—बेकार, ४०—उड़ना, ४१—भाग्य-लेखक ।

इटली में प्रजातन्त्रवाद

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

Italia ! by the passion of the pain
That bent and rent thy chain
Italia ! by the breaking of the bonds,
The shaking of the lands ;
Beloved, O men's mother, O men's Queen,
Arise, appear, be seen

—*Swinburne*

फ्रान्स की राजक्रान्ति के अग्नि-कुण्ड में प्राचीन रूढ़ियाँ धायँ-धायँ कर जल रही थीं और उन्हीं के साथ जल रहे थे 'एक तन्त्रवाद' और उसकी सहचरी स्वेच्छाचारिता। इस महायज्ञ से निकली हुई चिनगारियाँ यूरोप के सभी देशों में पहुँच गई थीं और वहाँ के शासक प्रजासत्ता के इस रौद्र रूप को देख कर काँप रहे थे। बाहुबल की शक्ति बाहुबल को रोक सकती है, परन्तु बाहुबल विचार-धारा को रोकने में सदा असमर्थ रहा है। जब-जब संसार में विचारों की उत्ताल तरङ्गें उठी हैं, तब-तब बाहुबल को पराजित कर अपने विजय का डङ्का बजाने में समर्थ हुई हैं। बुद्ध का अहिंसावाद उठा और उसने एशिया को भिन्न रूप में परिवर्तित करके यूरोप तक अपना डङ्का बजाया, ईसा के 'प्रेम और भक्ति' ने फिर संसार को और ही रङ्ग में रँग दिया। और इसके बाद धार्मिक 'जहाद' की मतवाली मुस्लिम तलवारों ने संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियों का मद चूर्ण कर उन्हें अपने सामने मस्तिष्क झुकाने के लिए विवश किया। वह धार्मिक युग था। उस समय राजनीति धर्म का एक अङ्ग मात्र थी, पर फिर लोगों का ध्यान एक अज्ञात ध्येय के अतिरिक्त प्रत्यक्ष ध्येय की ओर अधिक आकर्षित होने लगा। प्रति दिन की आवश्यक समस्याएँ उनके मस्तिष्क में अधिक घर करने लगीं। अब की बार विचार-धारा का बाँध राजनीतिक क्षेत्र में टूटा। अमेरिका और फ्रान्स में शासन सम्बन्धी नए सिद्धान्तों का जन्म हुआ और शीघ्र ही उन सिद्धान्तों ने सारे संसार का रूप ही बदल दिया।

किसी समय यूरोप में रोम साम्राज्य की तूती बोलती थी, वह धूल से उठ कर उच्चतम पर्वत की श्रेणी तक पहुँच गया। परन्तु अन्त में जहाँ से उठा था फिर वहीं आकर विलीन हो गया। यदि उसका कुछ अंश बाक़ी रह गया तो महान सभ्यता, उच्च धर्म, विशाल राज्य-व्यवस्था, पूर्ण विकसित विद्या और कला की स्मृतियाँ मात्र। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में रोम के भग्नावशेषों के आधार पर ही वर्तमान यूरोप के क़ानून, सङ्गठन, व्यवस्था, धर्म आदि के बड़े-बड़े महल स्थापित किए गए, परन्तु उन शताब्दियों में स्वयं रोम-साम्राज्य की हालत बहुत ख़राब थी। वह अनेक रियासतों में खण्ड-खण्ड होकर यूरोप की शक्तियों का क्रीत-दास बन गया था। उत्तर टस्कनी, परमा, मोडेना आदि प्रदेशों में ऑस्ट्रिया का शासन था, दक्षिण नेपिल्स और सिसली में बोर्बन वंश का, और कुछ प्रदेश पोप के अधिकार में थे। उस समय पारस्परिक कलहाग्नि में इटली जल रहा था, और विदेशी इससे पूरा लाभ उठा रहे थे। ऑस्ट्रियन गवर्नर मेटरनिच ने इटली के विषय में लिखा था—"इटली में प्रान्त प्रान्त के, नगर नगर के, कुटुम्ब कुटुम्ब के तथा मनुष्य मनुष्य के विरुद्ध है।"

नेपोलियन ने ऑस्ट्रियन और बोर्बन वंशियों को इटली से निकाल कर तथा पोप का राज्य छीन कर, अपने अधीन एक व्यवस्था में सङ्गठित कर लिया। नेपोलियन के सेण्ट हेलेना में क़ैद होते ही उसके साम्राज्य का भी अन्त हो गया और इटली फिर पूर्ववत् कई टुकड़ों में विभक्त कर दिया गया। परन्तु इस क्षणिक प्रकाश से इटली के देशभक्तों की आँखें खुल गई थीं, वे फिर संयुक्त इटली का स्वप्न देखने लगे। वे इस बात का प्रचार करने लगे कि भिन्न-भिन्न रियासतों को मिला कर फिर स्वतन्त्र इटली की स्थापना होनी चाहिए।

ऑस्ट्रिया ने इटली के नवीन भावों को बुरी तरह कुचलना चाहा। अत्याचार और दमन के समाचार प्रति दिन आने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वतन्त्रता के भाव तो नहीं दबे, पर उलटे अब जनता में कुछ क्रियात्मक कार्य करने की व्याकुलता पैदा हो गई। सारे देश में षड्यन्त्र होने लगे और गुप्त समितियों की स्थापना हुई, इनमें 'कारबोनारी संस्था' मुख्य थी।

सन् १८१० में वीर और शक्तिशाली रोमागनोली जाति ने शासकों के प्रति नेपिल्स में विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। इस पर वहाँ के शासकों ने ऑस्ट्रिया से सहायता माँगी और विद्रोह दबा दिया गया। ऑस्ट्रियनों की शक्ति और भी बढ़ गई। सैकड़ों देशभक्त पकड़-पकड़ कर स्पीलबर्ग के नरक में बन्द कर दिए गए।

इटली की स्वाधीनता में मेज़िनी का विशेष स्थान है। इसका जन्म २२ जून, १८०५ को जिनोआ में हुआ। इसके पिता डॉक्टर जिआकोमो मेज़िनी युनिवर्सिटी के एक प्रोफ़ेसर थे। जब मेज़िनी सोलह ही वर्ष का था, तभी उसके विचारों में क्रान्ति का जन्म हो गया। जिनोआ में १८२१ वाले विद्रोह में भाग लेने वाले निर्वासितों की भीड़ जब वह देखता और उनकी यातना और कष्ट का विचार करता तो उसका हृदय टुकड़े-टुकड़े हो जाता था और उसमें विदेशियों के लिए घृणा के भाव उत्पन्न होने लगते थे। सन् १८२७ में उसने वकालत पास की और फिर इटली के उद्धार के कार्य में लग गया। वह शीघ्र ही निर्वासित कर मार्सेलीज़ में भेजा गया। उस समय मार्सेलीज़ और स्वीटज़रलैण्ड में हज़ारों निर्वासित देशभक्त इकट्ठे हो गए थे। मेज़िनी ने यहाँ 'तरुण इटली' नामक संस्था की स्थापना की! 'तरुण इटली' के सदस्य तेज़ी से बढ़ने लगे और शीघ्र ही उनकी संख्या हज़ारों पर पहुँच गई। मेज़िनी शीघ्र ही सर्वप्रिय नेता हो गया। उसने युवकों का सङ्गठन किया। क्योंकि उसे विश्वास था कि देश के नवयुवक ही उसकी शृङ्खलाएँ तोड़ने में समर्थ हो सकते हैं। मेज़िनी की इच्छा इटली में 'प्रजातन्त्र' स्थापित करने की थी। क्योंकि वह किसी भी निरङ्कुश शासन का विरोधी था। मेज़िनी ही पहला व्यक्ति था, जिसने लोगों के हृदय में इटली को संयुक्त-राष्ट्र बनाने के भावों को सब से आगे लाकर रख दिया था। उसने कहा—"जब तक अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नैतिक शक्ति लगाने का तुम्हारे लिए मार्ग खुला है, तब तक बल-प्रयोग मत करो, परन्तु जब नैतिक शक्ति व्यर्थ हो जाय, जब अत्याचार इतना उग्र रूप धारण कर ले कि तुम अपनी उचित माँगों को प्रकट भी न कर सको, जब शस्त्र-बल तुम्हारे विचारों को दबाने की चेष्टा करे तो उस समय तुम अपने हाथ बाँध लो और जेलख़ाने या फाँसी पर जाकर अपनी सत्यता प्रकट करो। जब तक तुम्हारी संख्या कम हो और तुम्हें अपनी विजय की आशा न हो, तब तक यही करो। परन्तु जब तुम्हारी संख्या यथेष्ट हो जाय तो बल-प्रयोग से अत्याचार का अन्त कर दो।" मेज़िनी का दल शुद्ध राष्ट्रवादियों का दल था। उसके सिद्धान्त उच्च थे और उसकी संस्था के अधिकांश सदस्य नवयुवक थे।

इनके अतिरिक्त दो और दल थे। एक पोप के अनुयायियों का और दूसरा सार्डिनिया के राज्य-वंश के पक्षपातियों का। सन् १८४६ में पियोनोनो पोप हुआ। वह उदार हृदय था और ऑस्ट्रियनों को इटली से निकालना चाहता था। उसने राजनीतिक अपराधियों को छोड़ दिया और कौन्सिल और चुङ्गियों की स्थापना की। उसके इन उदार कार्यों से उसका एक दल बन गया, जो इटली की सब रियासतें संयुक्त करके पोप के अधीन एक सङ्घ बनाना चाहता था।

दूसरा दल पिडमोण्ट के राजा के नेतृत्व में इटली में वैध शासन की स्थापना करना चाहता था। सन् १८३१ में चार्ल्स एलबर्ट गद्दी पर बैठा। वह बड़ा देशभक्त था और इटली को ऑस्ट्रियनों की परतन्त्रता से छुड़ाने के लिए व्यग्र था। इसलिए बहुत से देशभक्त उसके भी पक्ष में हो गए थे।

मेज़िनी और उसका 'तरुण इटली' दल एक महान विप्लव की तैयारी कर रहा था। अप्रैल, १८३३ तक इस योजना में पूर्ण सफलता आती हुई मालूम हुई। इटली के बन्दरगाहों में होकर अस्त्र-शस्त्र गुप्त रीति से इकट्ठे किए गए और प्रत्येक प्रान्त में भावी विप्लव के लिए सङ्गठन आरम्भ हुआ। 'इटली एक आज़ाद और स्वतन्त्र' विप्लवादियों का नारा निश्चित हुआ। विप्लव का पहला उद्देश्य तो यह था कि देश में से ऑस्ट्रिया के शासन का अन्त किया जाय, और दूसरा देश में प्रजातन्त्र शासन स्थापित किया जाय। राजा चार्ल्स एलबर्ट को इस आन्दोलन का नेता बनाया जाय और यदि वह स्वीकार न करे तो उसे सीमा प्रान्त में ले जाकर देश से बाहर निकाल दिया जाय।

इस विप्लव के सङ्गठन और साधन को देखते हुए इसमें सन्देह नहीं कि उसके सफल होने की पर्याप्त सम्भावना थी। परन्तु जिनोआ में मार्सेलीज़ से भेजा हुआ एक बक्स पकड़ा गया। इसमें गुप्त पत्र-व्यवहार करने का कोड और उसकी कुञ्जी थी। पीडमोण्ट की पुलिस ने उसकी नक़ल कर ली और शीघ्र ही चार्ल्स एलबर्ट को इस षड्यन्त्र का भेद मालूम हो गया। वह क्रोध से पागल हो उठा।

दूसरे दिन विप्लव का प्रारम्भ था, परन्तु रात को पीडमोण्ट के तमाम प्रान्तों में सैकड़ों देशभक्त गिरफ़्तार कर लिए गए। २२ मई से २२ जुलाई तक बारह नवयुवकों को सब भेद बतलाने के लिए असह्य यन्त्रणाएँ दी गईं, परन्तु उन वीरों ने कुछ भी बतलाना स्वीकार न किया। इसी अपराध में वे गोली से उड़ा दिए गए। पर चार्ल्स एलबर्ट की आत्मा इतने से सन्तुष्ट नहीं हुई। उसने लेफ़्टीनेण्ट ऐफ़ीसोटोला को, जिसके पास केवल

'विद्रोहात्मक' पुस्तक पाई गई, गोली से उड़वा दिया। जेल और क़िले क़ैदियों से भर गए। सारे देश के वायुमण्डल को भय और निराशा के भावों ने आच्छादित कर लिया।

जब इटली में इस तरह गिरफ़्तारियाँ प्रारम्भ हुईं तो विप्लववादियों के एक नेता जेकोयो रुफ़ियानी ने चारों ओर सन्देश भेजे कि सब विप्लववादी फ़्रान्स या स्विट्ज़रलैण्ड में जाकर शरण लें। उसके आदेश पर बहुत से देशभक्त इटली से बाहर हो गए, परन्तु स्वयं रुफ़ियानी नहीं भागा। उसने कहा कि "मुझे, जिसके हाथ में क्रान्ति की पताका है, उसे ऊँचे रखना चाहिए अथवा उसको पकड़े हुए ही मर जाना चाहिए।" मई में रुफ़ियानी गिरफ़्तार कर लिया गया और उसे क्रान्ति का सारा भेद खोलने के लिए यन्त्रणा दी जाने लगी। परन्तु जब शासकों को इसमें सफलता न मिली, तो उन्होंने मेज़िनी के हस्ताक्षरों की एक नक़ली चिट्ठी दिखाई, जिसमें उन बहुत से देशभक्तों के नाम लिखे हुए थे, जिन पर अभी तक कोई सन्देह नहीं किया जाता था। रुफ़ियानी ने समझा कि उसके प्रिय मित्र मेज़िनी ने भी उसे धोखा दिया। उसने जवाब दिया—"इसका उत्तर मैं कल दूँगा।" दूसरे दिन जेल में रुफ़ियानी की लाश ख़ून में तरबतर पाई गई और दीवार पर ख़ून से लिखा था—'यही मेरा उत्तर है!'

मार्सलीज़ में जिन देशभक्तों ने आश्रय लिया था, उन्हें फ़्रान्स-सरकार ने अपनी सीमा से बाहर निकाल दिया। अनेक देशभक्तों ने तब अमेरिका में शरण ली। और मेज़िनी लन्दन चला गया। इस तरह सन् १८३३ की क्रान्ति की योजना का अन्त हुआ।

क्रान्तिवादियों का सङ्गठन छिन्न-भिन्न हो गया था, हज़ारों जेल में पड़े थे और हज़ारों ही विदेशों में आर्थिक कठिनाइयों और मानसिक पीड़ाओं से टक्कर ले रहे थे। परन्तु फिर भी मेज़िनी और उसका 'तरुण इटली' अपने सङ्गठन के ताने-बाने को बटोरने में जुटे थे। सन् १८३३ के भयङ्कर दमन ने 'तरुण इटली' की कमर तोड़ दी थी, परन्तु उसके रक्त ने इटली की ज़मीन में स्वतन्त्रता का बीज वपन कर दिया था और नवीन सन्तति के मस्तिष्क में "संयुक्त और स्वतन्त्र" इटली के भाव अच्छी तरह भर गए थे। सिसली और केलबेरिया के प्रान्तों में क्रान्ति और आन्दोलन उग्र रूप धारण कर रहे थे और शासकों को शान्ति स्थापित रखने के लिए बार-बार फ़ौज और सैनिकों के उपयोग की आवश्यकता पड़ती थी।

ऐटीलो बेण्डियरा और ऐमीलो बेण्डियरा, दोनों भाई थे। उनका पिता ऑस्ट्रिया के जहाज़ी-विभाग का एक उच्च अफ़सर था, और उसके प्रभाव के कारण वे भी उसी विभाग में अच्छे पद पर नियुक्त हो गए थे। परन्तु उनका तरुण हृदय 'संयुक्त इटली' के भावों से पूरित हो चुका था और देशभक्तों की यन्त्रणा और कष्ट देख कर उनमें भीतर ही भीतर एक ज्वाला धधका करती थी। उन्होंने लन्दन में मेज़िनी से पत्र-व्यवहार करना प्रारम्भ किया। इसमें ऐड्रिरो जहाज़ का नवयुवक अफ़सर मोरो भी सम्मिलित हो गया।

इस समय सारा मध्य इटली क्रान्ति के भावों से ओत-प्रोत हो रहा था और ऑस्ट्रियनों को देश से बाहर करके अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहता था। मेज़िनी की सम्मति से निकोला फ़ेब्रिज़ी नामक एक देशभक्त अस्त्र-शस्त्र इकट्ठा कर रहा था। बेण्डियरा बन्धु फ़ेब्रिज़ा से मिले और रोमाञ्जना और केलावरिया प्रान्तों में सशस्त्र विप्लव की योजना करने का निश्चय हुआ। परन्तु आर्थिक और अन्य दूसरी कठिनाइयों ने उनके मार्ग में अनेक बाधाएँ उत्पन्न कर दीं। इसके अतिरिक्त उनसे बार-बार 'फूँक-फूँक' कर पैर बढ़ाने के लिए आदेश किया जाता था, इसलिए निश्चित क्रान्ति की घड़ी बहुत दिनों तक नहीं आई।

इस समय सारा इटली ख़ुफ़िया-विभाग के कर्मचारियों से पटा पड़ा था और यह विश्वास किया जाता था कि शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसमें एक ख़ुफ़िया-विभाग का आदमी न हो। इसलिए उस समय भाई भाई से भी शङ्काशील रहता था। एक अन्य जहाज़ के कर्मचारी को ऐमीलो ने स्वयं क्रान्तिकारी दल का सदस्य बनाया और उसे उसमें इतना विश्वास था कि सारी योजना उसके सामने प्रकट कर दी। इस कर्मचारी ने ऐमीलो के साथ विश्वासघात किया। और स्मरना और क़ुस्तुन्तुनिया में ऑस्ट्रियन अफ़सरों को सारा भेद बता दिया। परन्तु बेण्डियरा-बन्धुओं को इसका पता लग गया और वे इटली से भाग गए।

इधर लन्दन में मेज़िनी की डाक बराबर गुप्त रूप से खोली जाती थी और आवश्यक बातों की सूचना लन्दन-स्थित ऑस्ट्रियन दूत को दे दी जाती थी। आगे चल कर मेज़िनी की डाक में हस्तक्षेप करने की बात सर जेम्स ग्राहम ने भी स्वीकार की। इस विश्वासघात ने मेज़िनी के हृदय में अङ्गरेज़ सरकार के प्रति भावों में बिलकुल परिवर्तन कर दिया और जनता सर ग्राहम पोल को 'इटली के देशभक्तों का हत्यारा' कहने लगी।

बेण्डियरा-बन्धु सीरिया में बड़े आर्थिक कष्ट में जीवन व्यतीत कर रहे थे, परन्तु क्रान्ति की आग से अब भी उनका हृदय जल रहा था। इटली में बढ़ते हुए असन्तोष के समाचार जब उन्हें मिले तो वे एक महान क्रान्ति को कार्य-रूप में लाने के लिए व्यग्र हो उठे। वे अनेक क्रान्तिकारी नेताओं के 'फूँक-फूँक कर पैर' रखने और समय टालने की नीति के विरुद्ध थे। और इस सम्बन्ध में उन्होंने मेज़िनी को भी कड़ी भाषा में पत्र लिखे, परन्तु मेज़िनी ने अब भी उपर्युक्त अवसर आने का आदेश किया और इसलिए 'केलावरिया' सम्बन्धी योजना कुछ दिन तक योंही पड़ी रही।

बेण्डियरा-बन्धु इस ढीली नीति से दुखी थे कि इसी समय कर्फ़ू सागर में एक जहाज़ रुपया, शस्त्र और बारूद लादे हुए आया और उसके कप्तानों ने कहा कि कोसेञ्ज़ा, सिगलियानो और सेवग्यूवानी के पहाड़ों में अनगिनती सशस्त्र क्रान्तिकारी इकट्ठा हो गए हैं और उनके पास पर्याप्त रसद भी है। सब कुछ निश्चित हो चुका है। अब केवल आवश्यकता कुछ प्रभावशाली मनुष्यों की है, जो उनका नेतृत्व कर सकें। बेण्डियरा-बन्धु युवक थे। उनका हृदय क्रान्ति के लिए व्याकुल हो रहा था। उन्होंने इन बातों पर विश्वास कर लिया और ११ जून को अपने अट्ठारह साथियों के साथ केलेबेरिया प्रान्त में कोट्रोन नामक स्थान पर उतरे और इटली की भूमि को चूमते हुए कहा—"तूने हमें जीवन दिया है, हम अपना जीवन तुझे देते हैं।" इन देशभक्तों में ऑस्ट्रिया सरकार का एक गुप्त दूत बाशेल्पाई भी था। उसने इनके आगमन की सूचना कोट्रेण्टो के गवर्नर को दे दी।

बेण्डियरा-बन्धुओं को सूचना के अनुसार कोई भी सशस्त्र क्रान्तिकारी दल न मिला, इसलिए वे फिर जहाज़ में चढ़ने के लिए समुद्र के किनारे आए। पर जहाज़ पहले ही चला जा चुका था। इधर सेना की एक टुकड़ी ने उन पर आक्रमण किया। देशभक्त आत्म-रक्षा के लिए जान पर खेल कर लड़े, परन्तु अन्त में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनका मुक़द्दमा फ़ौजी न्यायालय के सामने पेश हुआ। बेण्डियरा-बन्धुओं ने वीरता से अपनी रक्षा के लिए वकील नियत करना अस्वीकार किया।

अट्ठारहों वीर देशभक्तों को मौत की सज़ा दी गई। २५ जुलाई, १८४४ को ऐमीलो बेण्डियरा अपने सात साथियों सहित काले वुर्क़ों से ढक कर खुले मैदान में लाया गया, वे ज़ोर-ज़ोर से कहते जाते थे *chi per la patria muoro vissuto ha assai* (स्वदेश के लिए शहीद होने वाला अमर है।) जब उनके मरने का समय आया तो उन्होंने एक-दूसरे को बड़े प्रेम से चुम्बन किया। जो सैनिक गोली दाग़ने के लिए नियुक्त थे, उनकी आँखों से अनवरत अश्रु की लड़ियाँ निकल रही थीं। चारों ओर इकट्ठी जनता साक्षात् करुणा की मूर्ति बनी खड़ी थी और सरकार को खुल्लमखुल्ला कोस रही थी। सैनिकों ने गोली छोड़ी, पर उनके हृदय ने हाथों का साथ नहीं दिया, गोलियाँ निशाने पर न लगीं। देशभक्तों में से एक ने चिल्ला कर कहा—"साहस करो! अपना कर्त्तव्य पालन करो, हम भी सैनिक हैं।" गोलियों की दूसरी बाढ़ छूटी! अनेक देशभक्त पृथ्वी पर गिर कर समाप्त हो गए! ऐटीलो बेण्डियरा घायल होकर पृथ्वी पर तड़प रहा था। परन्तु मरते-मरते भी उनमें से हर एक मुँह से निकला—*Viva l'Italia!* 'इटली अमर हो!' ऐमीलो ने फ़ेब्रिज़ी को अपने एक पत्र में लिखा था—"यदि हम मारे जायँ तो क्या चिन्ता है? इटली तब तक कभी जीवित नहीं रह सकता, जब तक इटलीवासी मरना न सीख लें।" इस तरह अपने साथियों सहित वीर बेण्डियरा-बन्धुओं ने अपने देश के लिए हँसते-हँसते अपने प्राण दे दिए। इस घटना के सोलह वर्ष बाद नेपिल्स और सिसली को आज़ाद करके गेरीबाल्डी अपने सैनिकों सहित यहाँ आया और सेण्ट अगस्टनो के गिर्जे में घुटने टेक कर मृत आत्माओं के लिए शान्ति की प्रार्थना की।

इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट में मेज़िनी की डाक में हस्तक्षेप करने की निन्दा करते हुए डनकोम्ब ने कहा कि जब इटली स्वतन्त्र होगा और वहाँ बेण्डियरा-बन्धु और उनके सहयोगियों की यादगार बनाई जायगी, तो उसके नीचे लिखा होगा—"वे उस समय की ब्रिटिश सरकार के धोखा देने के कारण अपने देश के लिए मर गए!"

१६ जून, १८४६ को कारडिनल मस्ताई फेरेटी नवें पायस के नाम से गद्दी पर बैठा। इसने गद्दी पर बैठने के समय इटली के आन्दोलन के साथ बड़ी सहानुभूति प्रकट की और गद्दी पर बैठने के समय *Dio benedici l'Italia* "हे ईश्वर! अपनी इटली पर कृपा-दृष्टि डाल!" शब्दों का उच्चारण किया। उसने प्रजा को उसके स्वत्व देने की प्रतिज्ञा की, इससे शीघ्र ही इटली के सब जगहों में उसकी धाक जम गई।

Viva l'Italia 'इटली अमर हो' *morte all' Austria* 'ऑस्ट्रिया का क्षय हो' *Viva i Bandiera* 'बेण्डियरा-बन्धुओं की जय हो' 'सम्राट भर ज.वे' आदि नारे चारों तरफ़ सुनाई पड़ते थे। धर-पकड़ की भरमार थी। नेपिल्स का राजा बड़ा निर्दयी था, और रूस और ऑस्ट्रिया से उसकी घनिष्ठता थी। उसने अपने जेलख़ाने देशभक्तों से भर दिए और आन्दोलन को दबाने के लिए ऑस्ट्रिया से सेना की सहायता माँगी, जिसने आकर प्रजा पर मनमाने अत्याचार किए। ऑस्ट्रिया की नीति ही यह थी कि इटली के जो प्रदेश उसके अधिकार में थे, उनमें वह अपनी उदारता दिखाने के लिए स्वयं इतनी अधिक कड़ाई से काम नहीं लेता था, जितना कि अन्य पड़ोसी राजाओं को उकसा कर कराता था, और अवसर आने पर वहाँ आन्दोलन को कुचलने के लिए स्वयं अपनी सेनाएँ भेज देता था। इन सब राजाओं में पीडमोण्ट का राजा कुछ देशभक्त था, और अपने देश में अधिक कड़ाई से काम नहीं लेता था। इसलिए इटली के लोगों की आँखें पोप और पीडमोण्ट-नरेश की ओर थीं, कि यदि वे मिल जावें तो देश का बहुत-कुछ उपकार कर सकते हैं।

सन् १८४७ में मिलन के निवासियों ने 'अमेरिका की क्रान्ति' के 'चाय-बहिष्कार' नीति का अनुकरण करते हुए तम्बाकू और स्टेट लॉटरी का बहिष्कार कर दिया।

ऑस्ट्रिया को तम्बाकू से ८० लाख लीरा* और चाँदी से इससे भी अधिक आय होती थी। और इस बहिष्कार से उसे बहुत बड़ा धक्का पहुँचने की सम्भावना थी। इटली के लोग सिगार पीने के बड़े शौक़ीन थे, और उन्हें एकदम इस आदत को छोड़ने में बहुत कष्ट मालूम हुआ, परन्तु देश के लिए वे बड़े से बड़े आराम को छोड़ने के लिए तैयार थे। इस पर सरकार का क्रोध बहुत बढ़ गया। उसने जेल से बहुत से बदमाशों को छोड़ दिया और उन्हें तथा फ़ौजी सिपाहियों को बहुत से सिगार बाँट दिए। वे सड़कों पर उनका धुआँ उड़ाते फिरते थे, और किसी इटलीय महिला को देखने पर अपने मुँह का धुँआ उसके मुँह पर छोड़ देते थे। इस तरह बड़े-बड़े घरों की महिलाओं को अपमानित किया जाता था। कभी-कभी तो ऊँची श्रेणी के सरकारी कर्मचारी भी यह असभ्य व्यवहार करते देखे जाते थे। इस व्यवहार से इटली-निवासियों के हृदय जल रहे थे, और वे इसका बदला लेने का कोई बहाना ढूँढ़ रहे थे। दूसरी जनवरी सन् १८४८ को ऑस्ट्रियन घुड़सवारों ने निहत्थी जनता पर आक्रमण किया, जिससे ६७ मनुष्य मारे गए और बहुत से घायल हुए। इस घटना से लोगों में आग लग गई।

इस समय सिसली की जनता बड़े कष्ट में थी, सरकार की आर्थिक नीति ने उन्हें बिल्कुल कङ्गाल कर दिया था, टैक्स की भरमारों से वे पिसे जाते थे। इस पर भी उन्हें घूँस और भेंटों के रूप में बहुत-कुछ देना पड़ता था। क़िले और जेल राजनीतिक क़ैदियों और सन्देह में गिरफ़्तार लोगों से भर गए थे। सन् १८४७ के विद्रोह के दब जाने के बाद स्वयं राजा फ़र्डीनेण्ड ने अपने सामने सैंतालीस देशभक्तों को बेड़ियाँ डलवा कर मरवा डाला!

दूसरी जनवरी को, जब यह हत्याकाण्ड हुआ तो पलेरमो के नागरिकों ने राजा फ़र्डीनेण्ड को अल्टीमेटम दिया कि १२ तारीख़ तक उन्हें वही सार्वजनिक अधिकार दे दिए जायँ, जो उन्हें १८१७ में प्राप्त थे। १२ जनवरी को पलेरमो की स्त्रियाँ काली पोशाक में राजा के पास इसका उत्तर लेने गईं। अन्त में राजा के नाहीं करते ही विद्रोह की घोषणा कर दी गई। उस रात को एक भी आदमी भी न सोया। पुरुष और स्त्रियाँ तिरङ्गे झण्डे और अस्त्र-शस्त्र बनाने और ठीक करने में व्यस्त थीं।

दूसरे दिन राजा के जन्म-दिवस के उपलक्ष में केस्टलमारे से ज्योंही तोप छूटी, त्योंही उसका जवाब देने के लिए गिर्जों में घण्टे बजने लगे। जनता पत्थर, हँसिया और फावड़े लेकर गश्त करने वाले सैनिकों पर टूट पड़ी और उन्हें भगा दिया। दूसरे दिन हज़ारों गाँवों के लोग इकट्ठा हो गए और सरकारी सैनिकों पर आक्रमण करके २०,००० ड्यूकट†, जो सैनिकों के वेतन के लिए जा रहा था, छीन लिया।

तीसरे दिन राजा के भाई की अध्यक्षता में एक ज़बर्दस्त जङ्गी बेड़ा और पाँच हज़ार सैनिक भेजे गए। जहाज़ों से पलेरमो को उड़ा देने के लिए गोलाबारी की गई और सैनिकों ने ऐसे-ऐसे अत्याचार किए कि वहाँ की जनता ईश्वर से मौत देने की प्रार्थना करने लगी। अङ्गरेज़ कप्तान लियोनस, जिसने यह सब अत्याचार देखे थे, लॉर्ड नेपियर को लिखा कि "ग़रीब और अमीर, रईस और फ़क़ीर, कारीगर और किसान, सबने घोषणा की है कि ऐसी सरकार के शासन में रहने से मरना अच्छा है और पलेरमो अगर ख़ाक में भी मिल जाय तो भी वे इस सरकार के सामने पराजय स्वीकार करने के स्थान में उसमें ही दफ़न हो जायँगे।‡"

इस आन्दोलन में महिलाओं ने अनुकरणीय वीरता और साहस का प्रदर्शन किया। रणक्षेत्र और अस्पताल, दोनों में उनकी सेवाएँ महान थीं। जब राजा फ़र्डीनेण्ड ने आन्दोलन को किसी तरह दबते न देखा, तो सुधार देने की घोषणा की, पर क्रान्तिकारियों ने कहा—"सिसली अपनी सार्वजनिक पार्लामेण्ट द्वारा समय के अनुसार आवश्यक शासन-प्रणाली का निश्चय कर लेगी।" अन्त में गवर्नर डी मेजो भागा, जनता ने उसके महल पर क़ब्ज़ा कर लिया और ख़ज़ाने के बीस लाख लीरा लूट लिए, परन्तु घायल सरकारी सैनिकों को, जिन्हें मेजो असहाय अवस्था में छोड़ गया था, जनता ने कोई कष्ट नहीं दिया।

अन्त में सरकार ने क्रान्तिकारियों को दबाने के लिए जेल के फाटक खोल कर पाँच-छः हज़ार डाकू और लुटेरों को जनता पर छोड़ दिया। इस तरह अट्ठारह दिनों तक सिसली में महाक्रान्ति का अग्निकुण्ड धधकता रहा। अन्त में क्रान्तिकारियों की विजय हुई और बोर्बन राजवंश का सदा के लिए अन्त हो गया।

मेज़िनी ने जब यह समाचार सुना, तो उसे अत्यन्त हर्ष हुआ। परन्तु भय उसे यह था कि सिसली की विजय कहीं प्रान्तिकता में परिवर्तित न हो जाय और लोग 'संयुक्त इटली' की बात भूल जावें। उसने सिसली-वासियों को बधाई देते हुए लिखा :—

" You have taught us the power of will ; teach us that union is strength ; teach us the religion of unity which alone can restore to Italy her glory, her initiative and her mission for the third time in Europe."

मेज़िनी की आँखें प्रारम्भ से ही संयुक्त और प्रजातन्त्र इटली की ओर लगी हुई थीं। वह सदैव इटली की भिन्न-भिन्न रियासतों के लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित करता रहता था कि इटली के सभी महान पुरुषों—अर्नाल्ड से लेकर मकियावेली तक तथा डाँटे से लेकर नेपोलियन तक—का ध्येय इटली की राजनीतिक ऐक्यता की ओर रहा है। इसलिए हमें भी ढाई करोड़ इटलीवासियों के संयुक्त और सङ्गठित राष्ट्र के निर्माण करने का ध्येय अपने सामने रखना चाहिए।

१८ मार्च, १८४८ को मिलन-वासियों ने ऑस्ट्रिया सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। निहत्थी जनता ने सरकार पर आक्रमण किया। इस समय यहाँ ऑस्ट्रियन सेनापति रेडेट्ज़की के अधीन १८,००० हज़ार सैनिक थे और उनके पास बहुत सी तोपें और गोला-बारूद था, पर राष्ट्रीयता के भावों से प्रेरित जनता की वीरता और साहस ने ऑस्ट्रियन सैनिकों को बाज़ार से निकाल बाहर किया और बहुत से अस्त्र-शस्त्र भी छीन लिए। फिर तो जनता की शक्ति और साहस और भी बढ़ गया और शीघ्र ही उन्होंने महलों, पुलिस की चौकियों और क़िले में से सिपाहियों को भगा कर अपना क़ब्ज़ा कर लिया। ऑस्ट्रियन सेनापति जान छुड़ा कर भागा। जनता ने यह सब कुछ अपने बल पर केवल पाँच ही दिन में कर दिखाया। मिलन में जनता की प्रॉविज़नल सरकार क़ायम हो गई।

पोप और पीडमोण्ट का राजा ऑस्ट्रियनों से जलते थे और हृदय से उन्हें देश से बाहर निकाल देना चाहते थे। वे इटली में प्रजातन्त्र स्थापित होने के उतने ही विरोधी थे, जितने ऑस्ट्रियन शासक। परन्तु वे जनता के ऑस्ट्रिया-विरोधी भावों का उपयोग करने का अवसर भी नहीं जाने देना चाहते थे। क्योंकि उनकी सहायता से ही वे ऑस्ट्रिया को निकालने और अपना प्रभुत्व जमाने में समर्थ हो सकते थे। जब मिलन से ऑस्ट्रियन सैनिक निकाले जा चुके तब, २६ मार्च को, चार्ल्स एलबर्ट ने मिलन-वासियों के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाते हुए घोषणा की कि वह मिलन की सेना का नेतृत्व करने और उन्हें हर तरह से सहायता पहुँचाने को तैयार हैं।

इस समय मेज़िनी भी अपनी मातृभूमि में लौट आया था। मिलन में उसका बड़े ही उत्साह से स्वागत किया गया। नागरिकों की बड़ी-बड़ी टोलियाँ तिरङ्गे झण्डे लिए हुए, जिन पर लिखा था, 'राष्ट्र गिरधी मेज़िनी के लिए' उसके स्वागत के लिए गईं। मेज़िनी ने उन्हें इस विजय के लिए बधाई दी और जब तक कुल इटली देश से विदेशी न निकाल न दिए जायँ, ऐक्यता के साथ लड़ते रहने का परामर्श दिया।

देश से बाहर जितने निर्वासित देशभक्त थे, उनको शीघ्र ही स्वतन्त्रता की लड़ाई में आकर भाग लेने के लिए लिखा गया। मेज़िनी एक राष्ट्रीय सेना का निर्माण करना चाहता था। परन्तु प्रॉविज़नल सरकार में अधिकांश धनी श्रेणी के लोग थे, जिन्होंने सन् १८१४ में ऑस्ट्रिया का इस देश में आने पर स्वागत किया था। हज़ारों वीर इटली सैनिकों ने, जो फ़्रान्स और अमेरिका में प्रजातन्त्र की स्थापना के लिए लड़ चुके थे, अपनी सेवाएँ अपनी मातृभूमि के लिए देना चाहीं। परन्तु प्रॉविज़नल सरकार ने निश्चय किया कि ऑस्ट्रियनों को देश से निकालने के लिए चार्ल्स एलबर्ट और उसकी सैनिक शक्ति ही पर्याप्त है और नए सैनिक भरती करने से इन्कार कर दिया। इस नीति का मूल कारण यह भी था कि रईस और ऊँचे घराने के लोग इन सैनिकों के उग्र प्रजातन्त्र भावों से डरते थे और उनको कोई प्रोत्साहन नहीं देना चाहते थे। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ कि प्रॉविज़नल सरकार में, जिसका केन्द्र लम्बार्डी में था, पीडमोण्ट सरकार का प्रभुत्व बढ़ने लगा और थोड़े ही दिनों में जनता में दो दल हो गए; एक रईस और सरदार घराने के लोगों का जो लम्बार्डी को पीडमोण्ट राज्य में मिला देना चाहते थे, और दूसरा मध्य-श्रेणी के लोगों का, जो प्रजातन्त्र स्थापित करना चाहते थे।

२१ मार्च को टिकिनो नदी को पार करके मोण्टे चियारो में चार्ल्स एलबर्ट ने ऑस्ट्रियनों पर आक्रमण करके उन्हें भगा दिया। इस समय पीडमोण्ट सेनाओं को ऑस्ट्रियन सैनिकों के स्वरक्षित स्थान में पहुँचने से पहले ही कुछ करना चाहिए था। परन्तु वे अपने मेण्टुआ और वेरोना के क़िलों में पहुँच गए और चार्ल्स एलबर्ट उनके मार्ग में बाधा डालने के लिए कुछ भी न कर सका। इससे लम्बार्डी की जनता में बहुत असन्तोष फैला।

अब तक की सफलताओं से प्रॉविज़नल सरकार निश्चिन्त हो गई थी और उसने सैनिक सङ्गठन का काम बहुत ढीला कर दिया था। सब लोगों में यह विश्वास जम गया था कि ऑस्ट्रिया की शक्ति अब टूट गई। उसकी सेना अब उनके प्रदेश में प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकती और उत्तरीय इटली में पीडमोण्ट, जिनोआ, लम्बार्डी, वेनिस, पर्मा और मोडेना प्रान्तों की एक संयुक्त सरकार का स्थापित होना अब एक निश्चयात्मक बात है। मेज़िनी ने चेतावनी की कि यह प्रवृत्ति राष्ट्र के लिए अत्यन्त हानिकर है और दुश्मन का सामना करने के लिए हमें अपनी सारी शक्ति सङ्गठन में लगा देनी चाहिए। परन्तु उनकी सम्मति की अवहेलना की गई।

उधर रेडेट्ज़की पराजित होकर अपनी बिखरी शक्तियों का सङ्गठन करने और अस्त्र-शस्त्र जुटाने में लगा हुआ था, इधर चार्ल्स एलबर्ट और उसके सहयोगी जीते हुए प्रदेशों को अपने राज्य में सम्मिलित करने की धुन में लगे हुए थे। इसी समय एक घटना और हुई, जिससे राष्ट्रवादियों को बहुत धक्का पहुँचा। अब तक पोप को देश की आकांक्षाओं का समर्थक समझा जाता

(शेष मैटर ३१वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

* ऑस्ट्रिया का सिक्का।

† *Ducats* सिक्का

‡ *The birth of modern Italy, pp. 141.*

सोवियट रूस की नवीन शिक्षा-प्रणाली

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०; रिसर्च स्कॉलर]

नवीन रूस संसार के लिए एक अनोखी वस्तु है। सारे संसार की आँखें आज उसकी ओर लगी हुई हैं। बड़े-बड़े विद्वानों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। विशेषज्ञों का कहना है कि दस-बीस वर्षों के अन्दर ही रूस संसार का नेता बनेगा। सोवियट रूस की चर्चा शिक्षित समाज में प्रतिदिन होती है। उसके राजनैतिक तथा आर्थिक प्रश्नों पर हम बहुधा लिखा-पढ़ा करते हैं। पर आज मैं 'भविष्य' के पाठकों के सामने उसके एक उस पहलू को रखना चाहता हूँ, जिसके बारे में हम लोग बहुत कम जानते हैं। वह है, रूस की नवीन शिक्षा-प्रणाली। संसार ने रूस से बहुत सी बातें सीखी हैं। पर सब से आवश्यक बात जो हमें आज उससे सीखना है, वह उसकी शिक्षा-प्रणाली ही है।

यह शिक्षा-प्रणाली रूस के लिए भी अभी बिल्कुल नई वस्तु है। इसका श्रीगणेश १९२१ या १९२२ से होता है। दो ही वर्षों में रूस ने इसमें इतनी उन्नति कर ली थी कि १९२४ में हो 'ब्रिटिश ट्रेड यूनियन डेलीगेशन' ने अपने रिपोर्ट के १९८ वें पन्ने में लिखा है, कि किसी भी विषय में, विचारों में इतनी क्रान्ति नहीं हुई है, जितनी कि सोवियट रूस की नवीन शिक्षा-प्रणाली में। इसके भी पूर्व, १९२१ में, ब्रेल्सफ़र्ड ने लिखा था कि सोवियट यूनियन अपने शिक्षा के महान उद्योग द्वारा रूस की तमाम जनता को शक्तिशाली तथा ज़िम्मेदार बना रहा है।

पर इस नवीन शिक्षा-प्रणाली का दिग्दर्शन करने से पहले, आइए हम रूस की पुरानी शिक्षा-प्रणाली को भी देख लें। बीसवीं सदी के आरम्भ में, जहाँ तक शिक्षा का सम्बन्ध था, रूस यूरोप के और देशों से बहुत पीछे था। रूस के बहुत थोड़े पुरुष लिख-पढ़ सकते थे। यदि हम यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों की सेनाओं के रँगरूटों की शिक्षा की तुलना करें, तो हमें उस समय के रूस की शिक्षा का पता लग जावे। बेलजियम की सेना में सौ पीछे ९२ रँगरूट पढ़े-लिखे थे, फ़्रान्स की सेना में सौ पीछे ९९ लिख पढ़-सकते थे, इङ्गलैण्ड की सेना में ९९ प्रति सैकड़ा शिक्षित थे और जर्मनी की सेना में १,००० रँगरूट पीछे १,९९९ रँगरूट पढ़े-लिखे थे, पर रूस के रँगरूटों में सौ पीछे केवल ४२ शिक्षित थे।

जनता को अशिक्षित रखना रूस के ज़ारों की नीति थी। उन्हें शिक्षित बनाने का उद्योग करने की कौन कहे ज़ारों की सरकारें उल्टा शिक्षा के मार्ग में रोड़े अटकाती थीं। केवल अमीरों के लड़के शिक्षा पा सकते थे। किसान और मज़दूरों के लड़के यदि ऊँची शिक्षा पाना चाहते थे, तो उन्हें महान कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। ज़ार अलेक्ज़ण्डर के चौथे शिक्षा-मन्त्री शिशकोव (Shishkov) ने शिक्षा और नमक की तुलना करते हुए कहा था कि जैसे नमक जब थोड़ा खाया जाता है तब फ़ायदा पहुँचाता है, वैसे ही शिक्षा भी थोड़ी ही लाभजनक होती है, और जैसे अधिक नमक का प्रयोग हानि पहुँचाता है, वैसे ही अधिक शिक्षा भी हानि पहुँचाती है। अतएव तमाम जनता को शिक्षित बनाने से लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी।

उस समय रूस के मदरसों में बहुत थोड़े लड़के पढ़ते थे। निम्नाङ्कित विवरण से पता चलता है कि १९०४ में किस देश में कुल आबादी का प्रतिशत कितना हिस्सा मदरसों में पढ़ता था—

देश का नाम	कुल आबादी का प्रतिशत
अमेरिका	२३
जर्मन साम्राज्य ...	१९
इङ्गलैण्ड	१६
फ़्रान्स	१५
रूस	३·३

रूस की सरकार ने इन स्कूलों पर पूरा अधिकार जमाया था। वही तय करती थी कि मदरसों में क्या-क्या पढ़ाया जावे। सरकारी निरीक्षक अध्यापकों पर अपनी लगाम कसे थे। शिक्षकों का वेतन भी बहुत थोड़ा था। जो थोड़े से विद्यार्थी ऊँची शिक्षा प्राप्त करते थे, उन्हें 'डिसिप्लिन' के कड़े नियमों का पालन करना पड़ता था। उनकी प्रत्येक बात पर नियम लगा दिए गए थे। वे लोग किसी को मानपत्र न दे सकते थे। और न अपना डेपुटेशन कहीं भेज सकते थे। विश्वविद्यालय में या उनके हाते के अन्दर ऐसी कोई भी बात न कर सकते थे, जिसका शिक्षा से सम्बन्ध न हो। उन्हें कोई सभा आदि करने का अधिकार न था और जनता में व्याख्यान न दे सकते थे। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने इन कठोर नियमों के विरुद्ध अनेक बार आन्दोलन किया, परन्तु कोई फल न हुआ।

अन्त में ज़ारशाही का अन्त हुआ। रूस में भीषण क्रान्ति हुई। पुरानी रूढ़ियों का अन्त हुआ। रूस ने नवीन उत्साह से नए मार्ग पर क़दम रक्खा। प्रत्येक क्षेत्र में उत्साह से धैर्यपूर्वक परिवर्तन किया गया। पुरानी अशिक्षा को दूर करने के लिए तथा जनता को शिक्षित बनाने के लिए लोगों ने जी-तोड़ परिश्रम किया।

१९१८ में अखिल रूस का शिक्षा-सम्मेलन मास्को में हुआ। रूस के नेताओं ने जनता में शिक्षा का प्रचार करने के लिए योजनाएँ बनाईं। पर उन योजनाओं को सफल बनाने के लिए साधनों की कमी थी। सब से बड़ी अड़चन धन का अभाव था। १९२१ में सोवियट रूस ने अपनी आर्थिक नींव दृढ़ की और धन का अभाव दूर किया। तभी से रूस में शिक्षा के नवीन युग का श्रीगणेश हुआ।

रूस की नवीन सरकार ने सब से पहिले धार्मिक शिक्षालयों का प्रश्न अपने हाथ में लिया। शिक्षालय गिरजाघरों से अलग कर दिए गए। धर्म का शिक्षा से कोई सम्बन्ध न रह गया। सरकारी पाठशालाओं से धार्मिक विषयों का अध्ययन उठा दिया गया।

सोवियट-यूनियन में शिक्षा का प्रश्न प्रत्येक प्रजातन्त्र को सौंप दिया गया है। प्रत्येक प्रजातन्त्र तथा प्रत्येक शहर में एक शिक्षा-विभाग है। प्रत्येक शहर, प्रत्येक ज़िला तथा प्रत्येक प्रान्त में शिक्षा-विभाग है और वहाँ के निवासी अपने शिक्षा-विषयक प्रश्न को अपने ढङ्ग से हल करते हैं। पर इसका अर्थ यह न समझना चाहिए कि 'अपनी-अपनी डफ़ली और अपना-अपना राग' की कहावत चरितार्थ हो रही है। देश भर के शिक्षा का प्रश्न एक सूत्र में बँधा हुआ है और सबका एक ही ध्येय तथा उद्देश्य है। ट्रेड-यूनियन, कम्यूनिस्ट पार्टी आदि देश-व्यापी संस्थाओं ने शिक्षा की समस्या को एक बना रक्खा है। हाँ, एक ही स्थान से देश भर की शिक्षा का सञ्चालन नहीं होता।

सोवियट यूनियन में चार बड़े-बड़े प्रजातन्त्र हैं। जिनके नाम हैं—रशन प्रजातन्त्र, यूकरेन, व्हाइट रशा तथा ट्रान्सकाकेशिया। प्रत्येक प्रजातन्त्र में एक शिक्षा-मन्त्री तथा एक शिक्षा-विभाग होता है। शिक्षा-विभाग के और भी कई उपविभाग होते हैं। रूस के एक प्रजातन्त्र के शिक्षा-विभाग की निम्नाङ्कित शाखाएँ हैं :—

(१) सङ्गठन-विभाग, (२) सामाजिक शिक्षा-विभाग, (३) औद्योगिक शिक्षा-विभाग, (४) राजनैतिक शिक्षा, कमिटी (इस कमिटी में ट्रेड-यूनियन, कम्यूनिस्ट पार्टी आदि के प्रतिनिधि शामिल हैं), (५) वैज्ञानिक शिक्षा-विभाग, (६) साहित्य तथा सम्पादन-कला-निरीक्षण विभाग और (७) वैज्ञानिक स्टेट कौन्सिल।

शिक्षा-विभाग के निरीक्षण में निम्न लिखित काम किए जाते हैं :—

१—सरकारी प्रकाशन
२—सरकारी सिनेमा
३—सरकारी थिएटर

प्रजातन्त्र के सभी शिक्षा-विभागों का सञ्चालन उपर्युक्त ढङ्ग से किया जाता है। प्रजातन्त्र के प्रत्येक छोटे से बड़े हिस्से में स्थानीय शिक्षा-विभाग है, जिसमें उसे पूरी स्वतन्त्रता है। परन्तु प्रजातन्त्र के दो शहरों—मास्को तथा लेनिनग्राड—में शिक्षा का ढङ्ग अलग-अलग है। सिद्धान्त एक है, केवल कार्य-शैली भिन्न है।

रूस के सामने मुख्य दो प्रश्न हैं। एक तो तमाम नई पीढ़ी के लोगों को पढ़ाना और दूसरा उन बड़े-बूढ़ों को पढ़ाना, जो ज़ार के काल में पढ़ न पाए थे और तब से अशिक्षित चले आ रहे हैं। इस तरह मानो ज़ार के पापों का प्रायश्चित्त रूस को अब करना पड़ रहा है।

रूस में शिक्षा का विस्तृत जाल फैला है। जैसे ही बालक तीन वर्ष का होता है, उसके भावी शिक्षा की नींव रख दी जाती है। तीन वर्ष से छोटे बालक 'स्वास्थ्य बोर्ड' के अधीन रहते हैं। वही उनकी देख-भाल करता है। जब बालक आठ वर्ष का होता है। तो उसे पढ़ने के लिए बाध्य किया जाता है। पर तीन वर्ष से लेकर आठ वर्ष के बीच के पाँच वर्ष भी व्यर्थ नहीं जाते। उसे इन वर्षों में सरल मनोरञ्जन के साथ उपयोगी बातें सिखाई जाती हैं। खेलना, क़िस्से-कहानी कहना, क़रीब के स्थानों की सैर करना आदि बातें बालकों को सिखाई जाती हैं, और उन्हें भविष्य के लिए तैयार किया जाता है। आठ वर्ष से १५ वर्ष तक प्रत्येक बालक को मदरसा जाना पड़ता है। इन सात वर्षों में उसे शिक्षित किया जाता है। इस शिक्षा-काल के दो हिस्से हैं। पहिला हिस्सा आठ वर्ष से १२ वर्ष तक है। १२वें वर्ष इस शिक्षा की पहिली मञ्ज़िल समाप्त हो जाती है। दूसरी मञ्ज़िल १२वें वर्ष से १५वें वर्ष तक है और कहीं-कहीं तक १७वें वर्ष तक। यह शिक्षा अधिकतर गाँवों में दी जाती है। १९२४ के जनवरी महीने में रूस भर में ऐसे ९२,८९७ मदरसे थे। इनमें से ८१,३०६ यानी ८१·५ प्रति सैकड़ा गाँवों में थे।

जब एक बालक १५ वर्ष का हो जाता है, तब उसे

(२९वें पृष्ठ का शेषांश)

यों और मिलन-क्रान्ति के सुप्रसिद्ध 'पाँच दिनों में' *Viva Pio IX e la liberta* 'स्वातन्त्र्य के उपासक पोप की जय हो' के नारे प्रति क्षण सुनाई देते थे और ऑस्ट्रिया-वासी भी उसे विद्रोहियों का प्रबल समर्थक समझते थे, परन्तु स्थिति शीघ्र ही बदल गई। पोप ने घोषणा की कि ऑस्ट्रिया से विद्रोह करना पाप है और अपनी प्रजा को आज्ञा दी कि कोई विद्रोह में भाग न ले। अनेक सैनिक रणक्षेत्र से पृथक हो गए और केवल वे ही रह गए, जिनके हृदय की प्रबल देशभक्ति की आग धार्मिक छींटों से नहीं बुझ सकती थी।

(अगले अङ्क में समाप्त)

* * *

उद्योग-धन्धे की शिक्षा दी जाती है। जो १८ या १९ वर्ष तक जारी रहती है। ऐसे मदरसे तीन भाँति के हैं—(१) किसानों के मदरसे, जो देहातों तथा गाँवों में हैं। इन मदरसों में देहाती उद्योग-धन्धों की शिक्षा दी जाती है। (२) शहर के शिक्षालय, जिनमें तिजारत, व्यापार आदि की शिक्षा दी जाती है। (३) फ़ैक्टरी-स्कूल—ये मदरसे किसी उद्योग-धन्धे से सम्बन्ध रखते हैं। जो लोग इस धन्धे में पहले-पहल आते हैं, वे इन्हीं शिक्षालयों में पढ़ते हैं। प्रतिदिन चार घण्टे फ़ैक्टरी में काम करते हैं तथा चार घण्टे उसी फ़ैक्टरी-स्कूल में पढ़ते हैं। १९२४ के जनवरी माह में ३,१७,८४२ लड़के इन मदरसों में पढ़ते थे।

जब बालक १९ वर्ष का हो लेता है और प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करके आगे पढ़ने की योग्यता तथा इच्छा रखता है, तो उसके लिए ऊँची शिक्षा का प्रबन्ध है। १९२४ में ऊँची शिक्षा देने वाले ९१२ शिक्षालय थे, जिनमें १,२९,१७६ विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे। ऐसे शिक्षालय ६ भाँति के हैं—१९२४ में दवाई के ६६, कृषि के १५२, उद्योग-धन्धे के २१९, अर्थशास्त्र के ५३, सङ्गीत-विद्या के ६२ शिक्षालय थे।

नोट कर लीजिए !

पत्र-व्यवहार करते समय जो ग्राहक अपना ग्राहक-नम्बर नहीं लिखेंगे, उनके पत्रों अथवा आदेशों पर ध्यान नहीं दिया जायगा; और उनकी आज्ञा-पालन में देरी होने के लिए संस्था ज़िम्मेदार न होगी। पाठक स्वयं समझ सकते हैं, इतनी विशाल ग्राहक-संख्या में किसी व्यक्ति-विशेष का पता लगाना तब तक कठिन है, जब तक उनका ग्राहक-नम्बर पत्र में लिखा न हो। ग्राहक-नम्बर प्रत्येक लिफ़ाफ़े अथवा रैपर पर लिखा होता है। पाठकों को स्मरण रखना चाहिए Regd. No. A. 1154 अथवा A. 2085 पत्रों के नम्बर हैं, ग्राहकों के नहीं। ग्राहक-नम्बर नाम के पहिले छपा अथवा लिखा होता है, इसे नोट कर लीजिए। इसके द्वारा आपको तथा हमारी—दोनों की परेशानियाँ कम हो सकती हैं।

—व्यवस्थापक

सोवियट यूनियन में विश्वविद्यालय भी हैं। मास्को के प्रथम विश्वविद्यालय में ६,००० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इन विद्यार्थियों में से ४५ प्रति सैकड़ा विद्यार्थी आर्थिक सहायता पाते हैं। मास्को में एक और विश्वविद्यालय है, जिसमें कम्यूनिस्ट पार्टी का काम करने के लिए लोग तैयार किए जाते हैं।

अन्त में, रूस के आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक नेताओं के सुभीते के लिए, कॉलेज और यूनिवर्सिटी के अध्यापकों के शिक्षा के लिए तथा नई-नई खोज तथा आविष्कार के लिए अनेक संस्थाओं का प्रबन्ध है।

रूस की उपर्युक्त शिक्षा-प्रणाली मनन करने योग्य है। जिस ढङ्ग से रूस शिक्षा के प्रश्न को हल कर रहा है, उससे तो यही मालूम पड़ता है कि भविष्य में संसार के विद्यार्थी अपनी शिक्षा के लिए इङ्गलैण्ड आदि न जाकर रूस आया करेंगे, और रूस संसार की शिक्षा का केन्द्र बन जावेगा।

* * *

भारतीय बहिष्कार का भयंकर प्रभाव

दूसरे देशों में व्यापार फैलाने का अनवरत प्रयत्न

भारत, चीन और मिश्र में ब्रिटिश माल का बहिष्कार हो जाने के कारण, उसकी खपत का कोई साधन नहीं रह गया है, क्योंकि केवल ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत अन्य देशों में इतने माल की खपत होना मुश्किल है। अङ्गरेज़ अपने दूसरे अधीन देशों में किस प्रकार माल खपाने की कोशिश कर रहे हैं, इसके कुछ नमूने यहाँ दिए जाते हैं।

मोटर के, कपड़े के तथा अन्य माल के ब्रिटिश व्यापारी, ब्रिटिश ट्रिनिडाड तथा वेस्ट इण्डीज़ में अपने माल की खपत के लिए जो प्रयत्न कर रहे हैं, 'ब्रिटिश एक्सपोर्ट ग़ज़ट' ने उसका बड़ा ही मनोरञ्जक वृत्तान्त प्रकाशित किया है। ब्रिटिश ट्रिनिडाड की जन-संख्या सन् १९२१ में ३,८५,०६१ थी, जिसमें ३३ प्रतिशत ईस्ट इण्डियन थे। वहाँ बाहर से प्रति वर्ष ५० लाख पौण्ड का माल आता है, जिसमें ब्रिटेन का भाग २८ प्रतिशत और अमेरिका का भाग २२ प्रतिशत है। ट्रिनिडाड अपनी झीलों के लिए प्रसिद्ध है। व्यापार की महत्वपूर्ण चीज़ें वहाँ चीनी, नारियल, शराब, गुड़ और लकड़ी आदि हैं। इन चीज़ों को वह अमेरिका और यूरोप के देशों में भेजता है। पहले यह द्वीप स्पेन के अधीन था, किन्तु एमिएँ की सन्धि के अनुसार १८०२ में यह अङ्गरेज़ों को मिल गया।

अधिकारियों का दवाव

ट्रिनिडाड की सरकार ने वहाँ के सरकारी नौकरों को मोटरें ख़रीदने के लिए उधार रुपए देना इस शर्त पर स्वीकार किया है कि वे केवल इङ्गलैण्ड की बनी मोटरें ख़रीदें। इसका महत्व उससे कहीं अधिक है, जितना कि समझा जाता है। इससे यह आशा की जाती है कि ब्रिटिश माल की बिक्री बढ़ जायगी, क्योंकि वे लोग भी, जिन्हें आर्थिक सहायता की आवश्यकता नहीं है, सरकार की आन्तरिक किन्तु अप्रकट इच्छा को जान कर इन चीज़ों को ख़रीदेंगे। इसका प्रभाव ब्रिटिश वस्तुओं की बिक्री पर क्या होगा, यह विचारणीय है। आज प्रतियोगिता के ज़माने में भी, यह सर्वथा सिद्ध हो चुका है कि ट्रिनिडाड और वेस्ट इण्डीज़ के निवासी भी केवल उन्हीं चीज़ों को ख़रीदेंगे जो टिकाऊ और देखने में सुन्दर होंगी। पोर्ट ऑफ़ स्पेन (यहाँ की राजधानी) के उत्साही व्यापारियों को वहाँ की सरकार और सरकारी ऑफ़िसरों की पूरी सहानुभूति प्राप्त होगी और इस प्रकार जनता पर भी वे अच्छा प्रभाव डाल सकेंगे। तब वहाँ की जनता का ध्यान विदेशी वस्त्रों तथा अन्य माल की ओर आकर्षित करने का अच्छा साधन मिल जायगा। इन चीज़ों का व्यापार यहाँ घटता जा रहा है, पर इन उपायों से फिर वृद्धि की आशा है। उपर्युक्त विवेचन से हमारा तात्पर्य यह है कि इस नीति के अवलम्बन होने से १९२९ में ब्रिटिश व्यापार को जो ३ प्रतिशत का घाटा उठाना पड़ा है, उसकी इस वृद्धि से पूर्ति हो जायगी।

फ़िजी द्वीपों में भी, जहाँ की जन-संख्या १,७७,००० है, ब्रिटिश वस्त्रों की खपत के लिए इन्हीं उपायों से काम लिया जा रहा है। इन फ़िजी-निवासियों में ४० प्रतिशत हमारे ही देशवासी हैं। वहाँ की सामाजिक रीतियों को ऐसा बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है, जिसमें विलायती कपड़ों की माँग बढ़े। इस विषय में 'ग़ज़ट' लिखता है कि नर्म वस्त्रों की माँग बढ़ने की आशा की जा सकती है। सुवा (एक मुख्य व्यापारिक केन्द्र) के व्यापारियों को यह याद रखना चाहिए कि वहाँ के निवासी पाश्चात्य ढङ्ग के वस्त्र अधिक पसन्द करने लगे हैं। फ़िजी-निवासी सस्ता और थोड़ा कपड़ा इस्तेमाल करते हैं। और यह सम्भव है कि वे अपनी पोशाक को न बदलें। परन्तु ईस्ट इण्डियनों से यह आशा की जाती है कि वे अधिक परिमाण में वस्त्र ख़रीदेंगे। व्यापार की दूसरी चीज़ें—बर्त्तन, कल, हल, लोहे का अन्य सामान, भोज्य पदार्थ, तम्बाकू और सिगरेट आदि हैं। ब्रिटिश माल को वहाँ उच्च स्थान दिया जाता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि फ़िजी में १९२९ में ८७·७१ प्रतिशत माल ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत देशों से आया है।

पत्र में ईथोपिया के साथ व्यापारिक सम्बन्ध जोड़ने की चर्चा भी की गई है—"वहाँ के सम्राट अपने देश को पाश्चात्य सभ्यता के रङ्ग में रँगना चाहते हैं। इस सभ्यता की उन्नति के साथ वहाँ यूरोपीय वस्तुओं की माँग भी बढ़ेगी। इस बात का पता तब लगता है, जब हमें इस बात का ज्ञान होता है कि सन् १९२८ के पहले छः महीनों में वहाँ ब्रिटेन का केवल ६,४९५ पौण्ड का माल गया था, परन्तु सन् १९२९ के उन्हीं महीनों में वहाँ १०,७८४ पौण्ड का, और सन् १९३० में जनवरी से जून तक १४,०९६ पौण्ड का माल भेजा गया।"

इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्रिटिश अख़बारों ने ईथोपिया के बादशाह रासतफ़ारी के सिंहासनासीन होते समय अपना प्रेम किस लिए जताया था। ग़ज़ट आगे लिखता है कि—"वह समय बहुत दूर नहीं है, जब वहाँ ब्रिटिश माल का आयात इससे १० गुना अधिक हो जाय; और जब विलायती समाचार-पत्र रासतफ़ारी के सिंहासनासीन होने के अवसर के वैभव के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करें, उस समय उनके देश के साथ विलायती व्यापार का सम्बन्ध जोड़ने के विषय में भी कुछ विचार प्रकट करें।"

दूसरे देशों में

इसी प्रकार के दूसरे उदाहरण ब्रिटिश सोमालीलैण्ड, पनामा और ज़ञ्जीबार हैं।

सोमालीलैण्ड में विलायती कपड़े और चीनी का प्रचार बड़ी तेज़ी से किया जा रहा है। वहाँ से तेल, कोयला और अभरक विलायत को भेजा जाता है। पनामा के विषय में पत्र लिखता है कि "यहाँ 'पनामा कार्पोरेशन' के द्वारा विलायत की भलाई की आशा की जाती है। यहाँ केना और बाराक्स (Baraquas) में खान की खुदाई का काम होता है। कॉफ़ी की उत्पत्ति का काम भी उन्नति कर रहा है। यहाँ की लकड़ियों की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। लकड़ियों के यहाँ बड़े-बड़े जङ्गल हैं, जिनमें महगेनी तथा अन्य मूल्यवान लकड़ी बहुत पाई जाती है। इन व्यापारों के सिवा ऐसे अनेक नए व्यापार हैं, जिनमें पूँजी लगाई जा सकती है। मछली और फल का भी अच्छा व्यापार हो सकता है।"

* * *

ब्रिटिश नेताओं की आँखें खुल गईं !

पार्लामेण्ट में भारत-सम्बन्धी वाद-विवाद

"यदि हमने भारत को राजनैतिक अधिकार न दिए तो उसका क्या परिणाम होगा ? फिर तो केवल दमन के अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय शेष न रहेगा। और यह दमन भी साधारण दमन नहीं है, यह एक ऐसा दमन है, जिससे हमारी आत्मा को ख़ुद ही कष्ट होता है। यह ऐसा दमन है, जिससे हमें न सफलता प्राप्त होगी, न नेकनामी ही हासिल होगी। इसमें हमें भारत की सारी जनता का दमन करना पड़ेगा, जिसमें स्त्रियाँ तथा बच्चे भी शामिल होंगे। इसमें हमें केवल किसी सङ्गठन-विशेष या सङ्घ-विशेष का दमन नहीं, वरन भारत के समस्त जन-समुदाय का दमन करना पड़ेगा। हम भारत को अधिकार देना चाहते हैं, यदि आप भारत में हिमालय से कन्याकुमारी तक अपनी सेनाएँ घुमाने के लिए तैयार हैं, तो हमारे कार्य में बाधा डालिए; यदि आप अपने पशुबल द्वारा केवल मनुष्यों का नहीं, वरन सामयिक मनोवृत्तियों का भी दमन करना चाहते हैं तो हमें आगे बढ़ने से रोकिए।" —रैमज़े मैकडॉनल्ड

भारत को राजनैतिक अधिकार देने के सम्बन्ध में ब्रिटिश पार्लामेण्ट में जो वाद-विवाद हुआ था, उसका कुछ भाग हम पाठकों के लाभार्थ नीचे देते हैं। भारत-सम्बन्धी प्रश्नोत्तरों के बाद प्रधान-मन्त्री ने गोलमेज़ परिषद् के सम्बन्ध में वाद-विवाद आरम्भ किया। उन्होंने कहा :—

"मैं सब से पहिले इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि भारत को अधिकार देने की बात कोई नई नहीं है। भारत को कई बार थोड़े-थोड़े अधिकार दिए जा चुके हैं और इस तरह उसकी शासन-प्रणाली आज इस दशा को पहुँची है। २ नवम्बर, सन् १९०८ के दरबार में भारत के वाइसराय ने सम्राट की घोषणा पढ़ी थी। उसमें निम्न-लिखित वाक्य थे। हम चाहते हैं कि ब्रिटिश पार्लामेण्ट ने भारत को जो स्वराज्य देने का वचन दिया है, वह शीघ्र ही कार्य-रूप धारण करे और भारत को भी अन्य उपनिवेशों की सूची में स्थान दिया जावे।" इस तरह प्रधान-मन्त्री ने और कई घोषणाओं का स्मरण दिलाया, जिसमें इङ्गलैण्ड ने भारत को स्वराज्य देने का वचन दिया था। उसके बाद वे बोले—

"ब्रिटिश सरकार ने जो भारत को अधिकार देने के वचन दिए थे, उन्हीं के अनुसार गोलमेज़ परिषद की बैठक हुई। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ विशेष कारणों से हमें परिषद् के कार्यक्रम में परिवर्तन करना पड़ा। परन्तु इस परिषद् की सफलता के लिए ये अति आवश्यक थे। इस परिषद् के सम्बन्ध में हमने जो बातें निश्चय कीं, उनके परिवर्तन करने के कई कारण थे। भारत में ऐसा आन्दोलन उठ रहा था और उसकी राजनैतिक दशा में इतना परिवर्तन हो रहा था कि हमें अपना कार्यक्रम भी बदलना पड़ा।

"आगे बढ़ने के पहिले मैं यह कहना चाहूँगा कि आज इङ्गलैण्ड के सब दलों के नेता भारत के उन स्त्री तथा पुरुषों के आभारी हैं, जोकि परिषद् के कार्य में भाग लेने के लिए आए थे। इस परिषद की बैठक भारत की भावी शासन-प्रणाली के मूल सिद्धान्तों का निर्णय करने के उद्देश्य से की गई थी। और इस थोड़े से समय में हमने लगभग सारी बातें तय कर ली हैं। इस परिषद में हमें सब से पहिले केन्द्रीय शासन में अधिकार देने की समस्या का सामना करना पड़ा। परिषद् की पहली ही बैठक के बाद मैं समझ गया कि यदि भारत की रियासतें भी भारत का साथ छोड़ दें, तब भी हमें केन्द्रीय शासन में भारतीयों को अधिकार देने पड़ेंगे। इसके बिना कोई भी काम सिद्ध नहीं हो सकता था। और इसीलिए हम लोगों ने इस विषय में कुछ अधिकार देना निश्चय किया है।

* * *

"हम लोगों ने (इस परिषद् में) मूल सिद्धान्त निश्चित कर लिए हैं और इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप लोगों की स्वीकृति से मैं इन सिद्धान्तों पर भारत की भावी शासन-प्रणाली का निर्माण करूँ।

"यदि हमने भारत को राजनैतिक अधिकार न दिए, तो उसका क्या परिणाम होगा। फिर तो दमन के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय शेष न रहेगा। और यह दमन भी साधारण दमन नहीं है। यह एक ऐसा दमन है, जिससे हमारी आत्मा को ख़ुद ही कष्ट होता है। यह ऐसा है, जिससे हमें न सफलता प्राप्त होगी, न नेकनामी ही हासिल होगी। इसमें हमें भारत की सारी जनता पर दमन करना पड़ेगा, जिसमें स्त्रियाँ और बच्चे भी शामिल होंगे। हम भारत को अधिकार देना चाहते हैं। यदि आप भारत में हिमालय से कन्याकुमारी तक अपनी सेनाएं घुमाने के लिए तैयार हैं, तो हमारे कार्य में बाधा डालिए, यदि आप अपने पशुबल द्वारा केवल मनुष्यों का नहीं, वरन सामयिक मनोवृत्तियों का भी दमन करना चाहते हैं, तो हमें आगे बढ़ने से रोकिए।"

इसके बाद और दल के नेताओं ने इस वाद-विवाद में भाग लिया। लिबरल दल की ओर से मिस्टर आइज़कफ़ूट ने तथा कन्ज़रवेटिव दल की ओर से मिस्टर बाल्डविन ने अपने वक्तव्य दिए, जिसमें उन्होंने गोलमेज़ परिषद् के कार्य की सहायता करने का वचन दिया। इसी बीच में भारतीय स्वराज्य की माँग के कट्टर शत्रु मिस्टर विन्स्टन चर्चिल ने अपना भाषण दिया। उसमें उन्होंने कहा कि गत १८ महीनों में भारत के सम्बन्ध में जो सुलह की नीति का अनुसरण किया गया है, उसके लिए इङ्गलैण्ड को बाद में बहुत पछताना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मज़दूर सरकार ने साइमन रिपोर्ट ताक में रखदी और भारत के विद्रोहियों को ख़ुश करने की आशा से साइमन कमीशन के सदस्यों को गोलमेज़ परिषद में सम्मिलित नहीं किया। इसके बाद गोलमेज़ परिषद की बैठक हुई, जिसमें उन्होंने ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार कर लिया जिसकी साल भर पहिले हम सबने कभी कल्पना भी न की थी।

इसके उत्तर में भारत-मन्त्री मिस्टर वेजवुड बेन ने अपना भाषण दिया। उन्होंने कहा :—

"मैंने मि० चर्चिल के भाषण को बहुत दत्त-चित्त होकर सुना और उत्तर देने के उद्देश्य से नोट भी लिए हैं। उनके आज के भाषण का सार यह है। वे कहते हैं कि भारत की भावी शासन-प्रणाली में हिन्दुस्तानियों को केन्द्रीय शासन का अधिकार न दिया जावे। इसके विरुद्ध में सब से पहिली युक्ति तो यह है कि यदि हम भारतवासियों को यह अधिकार न देंगे, तो अपने बार-बार दिए हुए वचनों को तोड़ेंगे। भारतीयों को केन्द्रीय शासन का अधिकार देने का दूसरा कारण यह है कि इस साल भारत में जो आन्दोलन उठा है, उसमें पशुबल से काम नहीं लिया गया है। पशुबल या सत्ता का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। सत्ता तथा शक्ति की हमारे पास कभी कमी नहीं थी। हमारे पास पुलिस तथा सेना हैं। भारतीय आन्दोलन का उद्देश्य भारत की जनता की सहानुभूति को अपनी ओर खींचने का है। जनता की सहानुभूति के बिना कोई भी सत्ता क़ायम नहीं रह सकती। सैनिक शक्ति से तो उलटा ही असर पड़ता है। जनता की इच्छा के विरुद्ध जितना ही पशुबल लगाया जावेगा, उतनी ही सरकार के प्रति घृणा पैदा होगी। इसके विरोध में मिस्टर चर्चिल कहेंगे कि भारत की अधिकतर जनता राजभक्त तथा सन्तुष्ट है। इस आन्दोलन में केवल मुट्ठी भर शिक्षित हिन्दुस्तानी सम्मिलित हैं। यह कहाँ तक सच है ? ५० वर्ष पूर्व यह सच हो सकता था। परन्तु आज क्या हम इस आन्दोलन का तिरस्कार कर सकते हैं ? क्या हम यह भूल सकते हैं कि वह प्रतिदिन प्रचण्ड रूप धारण कर रहा है ? जो मनुष्य भारत के विषय में ज़रा भी ज्ञान रखते हैं, वे जानते हैं कि भारत के युवकों की राष्ट्रीय आन्दोलन से बहुत सहानुभूति है। भारत की भावी जनता की माताएँ इस आन्दोलन की सहायता कर रही हैं। जो राजनीतिज्ञ इस भावी सन्तान की ख़्याल नहीं करता है, वह बहुत बड़ी अदूरदर्शिता का परिचय देता है। इस आन्दोलन में एक और ख़ास बात यह है कि भारत के व्यापारी तथा धनपति इसमें बड़े उत्साह से भाग ले रहे हैं। सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि भारत की महिलाएँ भारत के इस आन्दोलन में बहुत बड़ा भाग ले रही हैं। इनमें से बहुत सी तो आज जेल में हैं। भारत में रहने वाली यूरोपियन जनता का भी यह मत है कि यह केवल मुट्ठी भर बाग़ियों का आन्दोलन नहीं है। इस आन्दोलन ने अपनी विशाल लहर से भारत की सारी जातियों को ढँक दिया है। भारत का आन्दोलन आज बहुत आश्चर्यजनक गति से बढ़ रहा है। यहाँ तक कि गोलमेज़-परिषद का प्रत्येक सदस्य यह कहता था कि "हमें हिन्दुस्तान छोड़े १० सप्ताह हो गए हैं और इस समय हम यह ठीक नहीं कह सकते कि भारत की वास्तविक दशा क्या है।

"इसलिए हमें भविष्य में दो बातों का ख़्याल रखना चाहिए। इनमें से एक तो सचाई है और दूसरी शीघ्रता। गोलमेज़ द्वारा हमने भारत तथा इङ्गलैण्ड के बीच में विश्वास तथा प्रेम का बीज बोया है। गोलमेज़-परिषद् के कार्य को सफल बना कर हम इस नवाङ्कुरित पौधे को सुदृढ़ बनावेंगे। इसके लिए शीघ्रता की आवश्यकता है। देर करने से क्या लाभ हो सकता है ? यदि हमें भारत को स्वराज्य देने के योग्य बनाना है, तो यह कार्य जितनी शीघ्रता से हो, पूर्ण करना चाहिए। देर करके ही गए वर्षों में हमने बहुत हानि उठाई है। ३० वर्ष पहिले जो व्यक्ति हमारे सबसे बड़े मित्र, थे वही आज हमारे सबसे बड़े विरोधियों में हैं। दक्षिण अफ़्रिका के युद्ध में गाँधी ने घायलों की सेवा की थी और धन तथा मनुष्यों द्वारा हमें सहायता पहुँचाई थी। परन्तु देर करके हम लोगों को आज कितनी हानि उठानी पड़ रही है। इसलिए इस विषय में सचाई के अतिरिक्त शीघ्रता की आवश्यकता है।"

भारत-मन्त्री के भाषण के बाद वाद-विवाद का अन्त हुआ।

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

कहिए, कैसे मिज़ाज हैं ? आख़िर ज़मानत देनी ही पड़ी न ? और न लिखो मुख्य लेख और टिप्पणियाँ ! आप समझते थे कि इनका बॉयकॉट कर देने से ज़मानत आपसे असहयोग किए रहेगी। परन्तु यह पता नहीं था कि ज़मानत माँगने वाले आपके भी उस्ताद हैं। ज़मानत के लिए वह बीस तरह के स्वाँग ला सकते हैं। लोग तो रुपए आठ आने के लिए पचासों तरह के स्वाँग लाते हैं, फिर जहाँ सैकड़ों का मामला हो वहाँ कौन चूक सकता है ? और कुछ नहीं मिला तो सत्याग्रहियों के फ़ोटो ही की बात ढूँढ़ निकाली। क़ुर्बान जाऊँ इस सूझ के ! वाक़ई ख़ूब सूझी ! सत्याग्रहियों के फ़ोटो छापना और सनसनीदार शीर्षक देना तो बहुत ही बड़ी भारी बुरी बात है ! इससे लोगों में स्पर्धा का भाव कुम्भकर्ण की भाँति जाग्रत हो उठता है। सत्याग्रहियों के फ़ोटो देख कर कई बार अपने राम के भी जी में आया कि यदि हम भी कोई ऐसा ही काम करते तो हमारा भी फ़ोटो छपता। यह इच्छा इतनी प्रबल हो उठी थी कि एक दिन रात को यह निश्चय कर लिया था कि कल सवेरे से कोई न कोई उत्पात अवश्य आरम्भ करेंगे—चला से परिणाम चाहे जो हो, परन्तु फ़ोटो तो छप जायगा। ग़नीमत इतनी ही हुई कि निश्चय विजया भवानी की गोद में लेट कर किया था, इससे सवेरा होते ही रात की सब बातें भूल गईं—अन्यथा भगवान जाने क्या कर बैठते ! सो जनाब, अपने राम की तरह सब लोग विजया के उपासक नहीं हैं, जो सवेरा होते ही रात की बातें भूल जायँ। अतएव अधिकांश लोग तो फ़ोटो छपाने के लिए सब कुछ करने को तैयार हो सकते हैं। इसलिए फ़ोटो छापना मानो बग़ावत फैलाना है व लोगों को इस बात का निमन्त्रण देना है कि—"भाइयो, तुम भी कुछ ऐसा ही काम करो तो तुम्हारा भी फ़ोटो छापा जाय।" ओफ़ ! ओह ! कितना बड़ा प्रलोभन है। उस पर सनसनीपूर्ण शीर्षक तो और भी ग़ज़ब ढाते हैं। उनके पढ़ने से पाठकों को यह भ्रम होता है कि देश भर में आग लगी हुई है। हालाँकि कि कहीं कुछ नहीं है। सब ओर शान्ति का साम्राज्य है।

सम्पादक जी, मेरी सलाह तो यह है कि आप सत्याग्रह, गिरफ़्तारी, गोली तथा लाठी-काण्ड के समाचार छापना ही बन्द कर दीजिए। आप जब छापिए तब यही छापिए कि—"अमुकों ने माफ़ी माँग ली, अमुक स्थान पर लोगों ने विदेशी वस्त्र बेचना आरम्भ कर दिया, अमुक स्थान के लोग स्वराज्य नहीं माँग रहे हैं—जो माँग भी रहे हैं, वे बेवक़ूफ़ हैं, अमुक स्थान पर पुलिस ने बड़ी सभ्यता की, हालाँकि गोली चलाना आवश्यक था, परन्तु उसने केवल लाठी चलाई।" यदि आप ऐसा करने लगें तो थोड़े ही दिनों में "ज़मानत प्रूफ़" हो जाएँगे। सरकार के विरुद्ध जो बात हो, उस पर कभी विश्वास ही न कीजिए। अपनी आँखों से भी देख लीजिए, तब भी विश्वास न कीजिए ! क्योंकि वह सब माया का खेल है, उसमें कुछ भी सार नहीं है। अनित्य और असार वस्तु पर विश्वास करना अज्ञानियों का काम है। नित्य तथा सारयुक्त केवल वे बातें हैं, जो सरकार के लाभ की हैं। उन पर बिना सोचे-समझे, आँखें बन्द करके विश्वास कर लीजिए। क्यों, है न सलाह की बात ! जो माया में फँसता है, वही दुख उठाता है। इस बात को मत भूलिए—यह ज्ञानियों का वाक्य है।

अच्छा ख़ैर, जो हुआ सो हुआ ; अब यह बताइए कि प्रधान-मन्त्री मि० मैकडॉनल्ड की स्पीच की बाबत आपकी क्या राय है ? भई, कोई चाहे माने या न माने, परन्तु अपने राम तो बिना यह कहे नहीं रह सकते कि प्रधान-मन्त्री साहब हैं बड़े बुद्धिमान ! वल्लाह, क्या आसानी से मामले को सुलझाया है। वह जो कहावत है कि—"भइया घर द्वार तुम्हारा, परन्तु कोठी-कोठले को हाथ मत लगाना।" आख़िर प्रधान-मन्त्री ठहरे—ऐसे न होते तो प्रधान-मन्त्रित्व कैसे प्राप्त होता। अब गोलमेज़ के प्रतिनिधि वहीं से पुकारते हुए चले आ रहे हैं कि "भाइयो, अभी कोई राय क़ायम न करना, पहले हमें आ जाने दो, हमसे भली-भाँति समझ-बूझ लो तब कुछ कहना।" वह जो समझावेंगे वह अपने राम पहले ही समझे बैठे हैं। वह यही कहेंगे कि "जो कुछ मिलता हो ले लो, आगे चल कर देखा जायगा। इतना भी बड़ी मुसीबतों से मिला है। बड़ा परिश्रम पड़ा है। बड़ी बहसें कीं, बड़ा प्रोपेगेण्डा किया, तब जाकर इतने पर मामला तय हो रहा है। अतएव अब हमारा परिश्रम व्यर्थ न करो।" अपने राम की भी यही राय है, कि इन लोगों का परिश्रम बिल्कुल भी व्यर्थ न किया जाय, जो कुछ बेचारे माँग-जाँच और रो-धोकर लाए हैं, उसे स्वीकार कर लिया जाय। यद्यपि ऐसा होना कठिन दिखलाई पड़ रहा है ; क्योंकि बिना महात्मा जी की ग्यारह शर्तें पूरी हुए, समझौता होना कठिन है। उधर नौकरशाही भी इस बात की सरतोड़ चेष्टा कर रही है कि यह मामला लीडरों की लपझपी तक ही परिमित रहे—आगे न बढ़े। यदि ऐसी बात न होती तो जनाब, यह कदापि न होता कि एक ओर तो प्रधान-मन्त्री महोदय मेल-मिलाप की बातें करें और दूसरी ओर नौकरशाही गिरफ़्तारियों और लाठीकाण्ड की मशीन चलाती रहे। बेचारे लॉर्ड इर्विन भी परेशान होंगे कि अच्छी झीछालेदर में फँसे। न जाने किस पाप-ग्रह की दशा लगी हुई है। किसी तरह इससे शीघ्र छुटकारा मिले। सो जनाब, उनकी ग्रह-दशा तो समाप्त हो रही है—अब यह देखना है कि नए वायसराय महोदय क्या रङ्ग लाते हैं। हालाँकि मशहूर तो ऐसा है कि नौकरशाही नमक की खान है—इसमें जो आता है, नमक ही बन जाता है। बेचारे लॉर्ड इर्विन इतने सीधे, इतने सज्जन हैं कि जब मुँह खोलते हैं, तो हिन्दुस्तान की भलाई का ही स्वर निकलता है, परन्तु नौकरशाही ने उन्हें भी ऐसा खराद पर चढ़ाया कि उनके हृदय और कार्य में छत्तीस का योग पड़ गया। हृदय कुछ कहता है, परन्तु करना कुछ पड़ता है। ख़ैर जी, पहुँचने तो दो ज़रा होम में, सारी कसर निकालेंगे। हालाँकि नौकरशाही वह मस्त हाथी है कि कोई कुछ बके, कुछ भूँके, परन्तु यह अपनी मस्तानी चाल नहीं छोड़ती। किसी ने ख़ूब कहा है कि "Viceroys may come and Viceroys may go, but beaurocracy goes on for ever." इस नौकरशाही से छुटकारा मिले तभी असली स्वराज्य स्थापित हो सकता है। सम्पादक जी, आप चाहे मानें या न मानें, परन्तु अपने राम का तो यह विश्वास है कि जहाँ तक हो सकेगा, नौकरशाही यही कोशिश करेगी कि कोई समझौता न हो। इङ्गलैण्ड में तो मि० चर्चिल की मिट्टी पलीद हो ही गई। वह भी बहुत रोड़े अटका रहे थे। फ़र्माते थे कि हिन्दुस्तान को कुछ न दिया जाय, परन्तु वह तो टायँ-टायँ फ़िश हो गए। आपस ही में मतभेद हो गया। पता नहीं, यह मतभेद सच्चा है या यह भी कोई मिली-भक्ति की पॉलिसी है। हालाँकि पॉलिसी होने का कोई स्पष्ट चिन्ह नहीं है, परन्तु मायावियों से डर ही लगता है, न जाने कब काशी-करवट ले जायँ। फ़िलहाल तो दयालु से हो रहे हैं। मि० बाल्डविन भी हिन्दुस्तान की जय मना रहे हैं—मि० मैकडॉनल्ड भी नेकनीयती दिखला रहे हैं। मि० बेन भी हिन्दुस्तान के लिए लड़ मरने को तैयार हैं। परन्तु वर्किङ्ग-कमिटी की शर्तें पेश होने पर भी यह नेकनीयती क़ायम रहे तब तो ठीक है, अन्यथा वही छः टके का बैल रह जायगा। इधर रुपया माँगा जा रहा है, उधर से चवन्नी-छिदन्नी दिखाई जा रही है। ऐसी दशा में मामला तय हो जाना एक सन्देह की बात मालूम होती है। ख़ैर, इतना भी क्या थोड़ा है। दिमाग़ कुछ ठिकाने तो आया। पहले तो पुट्ठे पर हाथ ही नहीं धरने देते थे। जब तबेले में से मि० चर्चिल जैसे लतियल रस्सियाँ तुड़ा कर निकल गए, तो अब बचे हुए थान के टर्रे कहाँ तक दुलत्तियाँ फटकारेंगे—कुछ अगाड़ी-पिछाड़ी का और कुछ अपने रातिब का ध्यान तो होगा ही। ख़ैर—आगे-आगे देखिए होता है क्या ?

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* ■ ■

आर्यमित्र

पिछले तीन महीनों से 'भविष्य' नामक सचित्र साप्ताहिक समाचार-पत्र बड़ी उत्तमता से प्रकाशित हो रहा है। इसमें प्रति सप्ताह लगभग २० चित्र और कितने ही गद्य-पद्यात्मक लेख रहते हैं। कथा-कहानी और विनोद की मात्रा भी उचित मात्रा में दी जाती हैं। देश-विदेश के प्रायः समस्त समाचारों का सुन्दर और सुव्यवस्थित संग्रह देख कर तबियत ख़ुश हो जाती है। 'भविष्य' की प्रत्येक प्रति सिली और कटी हुई होती है। छपाई और काग़ज़ भी अच्छे हैं। हिन्दी में 'भविष्य' अपने ढङ्ग का निराला है। ऐसा अच्छा पत्र प्रकाशित करने पर सहगल साहब हिन्दी-जगत् के बधाई-पात्र हैं। 'भविष्य' में उर्दू कविता को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है, उर्दू कवियों के चित्र भी ख़ूब दिए जाते हैं, यह अच्छी बात है, हिन्दी पाठकों को उर्दू शायरों से भी वाक़फ़ियत हो जायगी। परन्तु उर्दू के आवेश में हिन्दी कविता और हिन्दी कवियों को गौण स्थान देने की आवश्यकता नहीं है, इस पर सम्पादक जी का पूरा ध्यान रहना चाहिए। 'भविष्य' का वार्षिक चन्दा ५) कुछ अधिक नहीं है, क्योंकि इसको उपयोगी और अच्छा बनाने में व्यय भी बहुत करना पड़ता है। हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि 'भविष्य' का भविष्य उज्ज्वल हो और वह उत्तरोत्तर उन्नति करता जाय।

इस्लाम का प्रारम्भिक इतिहास

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

सन् ५७१ ईस्वी की गर्मी के दिनों में शहर बसरा में ऊँटों पर सवार एक क़ाफ़िला आया। वह मक्का से आया था और सुखी अरब के दक्खिन प्रदेश की पैदा हुई वस्तुओं से लदा हुआ था। इस क़ाफ़िले का सरदार अबूतालिब और उसका १२ वर्ष का भतीजा था। बसरे के नेस्टर धर्मावलम्बी मठ की ओर से उनका आतिथ्य किया गया।

मठ के संन्यासियों को जब मालूम हुआ कि उनका १२ वर्ष का बालक अतिथि अरब के प्रसिद्ध पवित्र मन्दिर काबा के रक्षक का भतीजा है, तो उन्होंने अपने धर्म की प्रशंसा और मूर्त्ति-पूजा की निन्दा उस बालक के हृदय में प्रवेश कराई। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि बालक असाधारण बुद्धिमान और नवीन ज्ञान का उत्सुक है। ख़ास कर धर्म-सम्बन्धी विवाद में उसका बहुत मन लगता है।

इस बालक का नाम मुहम्मद था। महामक्का में उस समय एक काला पत्थर पूजा जाता था, जो उल्कोद्भव था। वह काबा में रक्खा हुआ था और उसके साथ ३६० अन्य मूर्त्तियाँ थीं, जो वर्ष भर के दिनों की सूचक थीं। क्योंकि उस समय साल के दिन योंही गिने जाते थे।

यह वह समय था, जब कि ईसाई धार्मिक समूह अपने पादरियों की दुष्टता और ऐश्वर्य-तृष्णा के कारण अराजकता की दशा को पहुँच चुका था। पश्चिमी देशों के पोप लोग धन, विलास और शक्ति के ऐसे प्रलोभन देते थे कि विशप लोगों के चुनाव में भयङ्कर वध करने पड़ते थे। पूर्वीय देशों में क़ुस्तुन्तुनिया इन धर्मान्ध झगड़ों का केन्द्र था, जहाँ अनेक पन्थ और दल बन गए थे।

ये लोग परस्पर अत्यन्त घृणा-भाव रखते थे। अरब उन दिनों स्वतन्त्रता की अपरिचित भूमि थी, जो भारत-सागर से लेकर शाम देश के मरुस्थल तक फैली हुई थी। यह इन भगोड़ों और झगड़ालू ईसाइयों का आश्रय-स्थल हो रहा था। अरब के मरुस्थल ईसाई संन्यासियों से भर गए थे और वहाँ के बहुतेरे लोगों ने उनके पन्थ को स्वीकार कर लिया था। हबश देश के ईसाई राजे, जो नेस्टर धर्म को मानते थे, अरब के दक्षिणी प्रान्त यमन पर अधिकार रखते थे।

अरब एशिया के दक्षिण-पश्चिम कोण पर एक मरुस्थल है। इसकी लम्बाई १,४०० मील और चौड़ाई ७०० मील है। जन-संख्या ५० लाख के लगभग है। देश भर में पहाड़-पहाड़ी, ऊजड़-जङ्गल और रेत के टीले हैं। जल का भारी अभाव है। खजूर ही इस देश की न्यामत है। अधिकांश अरबवासी, जिन्हें ख़ानाबदोश कहते हैं, किसी पहाड़ी नाले के पास ठहर जाते हैं और जब चारा-पानी का सहारा नहीं रहता तो अन्यत्र चल देते हैं। इस देश में गर्मी इतनी पड़ती है कि दोपहर के समय हिरन अन्धा हो जाता है। आँधियाँ ऐसी आती हैं कि बालू के टीले के टीले इधर से उधर उड़ जाते हैं। यदि यात्रियों का कोई समूह इनके चपेट में आ गया तो उसकी ख़ैर नहीं। कहीं-कहीं सर्दी भी बड़े कड़ाके की पड़ती है। सर्दी में वर्षा भी होती है। यही वर्षा का जल नालों और गड्ढों में सञ्चित करके पिया जाता है।

अरब के घोड़े संसार में प्रख्यात हैं। यह पशु पथरीले स्थान पर बड़ा काम आता है, पर रेतीले भागों के काम की चीज़ तो ऊँट है। यह न केवल सवारी के काम आता है, प्रत्युत इसका मांस और दूध भी बहुतायत से काम में लाया जाता है। लोग खजूर का गूदा स्वयं खाते और गुठली ऊँटों को खिलाते हैं। अधिकांश लोग लूट-मार पर जीवन व्यतीत करते हैं। अब उनकी दशा में कुछ परिवर्तन हो गया है।

बसरा नगर के नेस्टर मठ के महन्त वहीरा ने मुहम्मद को नेस्टर मत के सिद्धान्त सिखाए। इस विद्वान संन्यासी के सदुपदेश से मुहम्मद के मन में मूर्त्ति-पूजा से घोर घृणा हो गई।

जब मुहम्मद मक्का लौटा, तो वह उन्हीं ईसाई संन्यासियों की भाँति जङ्गल में कुटी बना कर रहने को, हीरा नामक पहाड़ी की एक गुफ़ा में, जो मक्का से कुछ मीलों के अन्तर पर थी, चला गया और ध्यान तथा प्रार्थना में लग गया। उस एकान्त विचार से उसने एक सिद्धान्त निकाला, अर्थात् ईश्वर की अद्वैतता। एक खजूर के वृक्ष की पीठ से टिक कर उसने इस विषय के विचार अपने मित्रों और पड़ोसियों को सुनाए और यह भी कह दिया कि इसी सिद्धान्त के प्रचार में मैं अपना सारा जीवन दूँगा। उस समय से मृत्यु तक उसने अपनी उँगली में एक अँगूठी पहनी, जिस पर ख़ुदा था—'मुहम्मद ईश्वर का दूत।' बहुत दिनों तक उपवास और एकान्त-वास करने तथा मानसिक चिन्ता से अवश्य मतिभ्रम हो जाता है। यह वैद्य लोग भली-भाँति जानते हैं। मुहम्मद को प्रायः अन्तरिक्ष वाणियाँ सुनाई पड़ती थीं। फ़िरिश्ते उसके सामने आते थे। एक दिन स्वप्न में जिबराइल नाम का फ़िरिश्ता उसे अपने साथ आकाश पर ले गया, जहाँ मुहम्मद निर्भय उस भयङ्कर घटा में चला गया, जो सदैव सर्व-शक्तिमान ईश्वर को छिपाए रहती है। ईश्वर का ठण्डा हाथ उसके कन्धे पर छू जाने से उसका चित्त काँपा।

शुरू में उसके उपदेश का बहुत विरोध हुआ और उसे कुछ भी सफलता न हुई। मूर्त्ति-पूजकों ने उसे मक्का से निकाल दिया। तब उसने मदीने में, जहाँ बहुत से यहूदी और नेस्टर पन्थ वाले रहते थे, शरण ली। नेस्टर पन्थी तुरन्त उसके मतावलम्बी हो गए। ६ वर्षों में उसने केवल १,५०० चेले बनाए। परन्तु तीन छोटी लड़ाइयों में उसने जान लिया कि उसका अत्यन्त विश्वासप्रद तर्क उसकी तलवार है। यह तीनों छोटी लड़ाइयाँ पीछे से बीदर, ओहूद, और नशाम्स के बड़े युद्ध प्रख्यात किए गए। उसके बाद मुहम्मद बहुधा कहा करता था कि 'बिहिश्त तलवार के साए के नीचे पाया जायगा।'

कई एक उत्तम आक्रमणों द्वारा उसने अपने शत्रुओं को पूर्ण रूप से पराजित किया। अरब की मूर्त्ति-पूजा जड़ से नष्ट हो गई और यह भी मान लिया गया कि वह ईश्वर का दूत है।

जब वह शक्ति और ख्याति की पराकाष्ठा को पहुँचा, तब वह अन्तिम बार मक्का से मदीना की ओर गया। उसके साथ एक लाख, चौदह हज़ार भक्त फूलों और गजरों से सजे हुए ऊँटों पर फहराते झण्डे लिए हुए चले। जब वह नगर के निकट पहुँचा तब उसने यह शब्द कहे—"हे ईश्वर! मैं यहाँ तेरी सेवा के लिए हाज़िर हूँ। तेरे बराबर कोई दूसरा नहीं, केवल तू ही पूजने योग्य है। केवल तू ही सबका राजा है; उसमें तेरा कोई साझी नहीं।"

अपने हाथों से उसने ऊँटों का बलिदान किया, काबा के व्याख्यान-पीठ से उच्च स्वर से कहा—"श्रोतागण, मैं केवल तुम्हारे ही समान एक मनुष्य हूँ।" एक मनुष्य से, जो डरते-डरते उसके पास आया, कहा—"तुम किस बात से डरते हो, मैं कोई अलौकिक नहीं हूँ। मैं एक अरब-निवासी स्त्री का पुत्र हूँ, जो धूप में सुखाया हुआ मांस खाती थी।"

वह मदीने में मरा। मृत्यु-कष्ट के समय उसका सिर आयशा की गोद में था। वह बार-बार पानी के बर्तन में अपने हाथ डुबोता था और अपने चेहरे को तर करता था। अन्त में उसका दम टूटा। उसने आकाश की ओर टकटकी लगाए हुए टूटे-फूटे शब्दों में कहा—"हे ईश्वर, मेरे पाप क्षमा कर। एवमस्तु। मैं आता हूँ।"

मृत्यु के समय उसकी आयु ६३ वर्ष की थी। उसने अपने अन्तिम दस वर्षों में २४ युद्ध स्वयं सेनापतित्व में तथा ५-६ दूसरों की अधीनता में कराए। तथा कुल १ लाख, १४ हज़ार स्त्री-पुरुषों को मुसलमान बनाया। मृत्यु के समय उसके सम्बन्धियों में ४ पुत्रियाँ, ४ पुत्र, ८ बाँदियाँ, १८ स्त्रियाँ, २ दाइयाँ, ५ भाई, २ बहिन, ६ फूफियाँ, १२ चचा, ४० लेखक, ५८ दास, १६ सेविकाएँ, २७ सेवक, ८ द्वारपाल, ८ वकील, १५ बाँगी, ४ कविता करने वाली स्त्रियाँ और १३६ कवि थे।

सम्पत्ति में १ सिंहासन, अनेक लाठियाँ, २ पताकाएँ, ६ धनुष, ४ भाले, ३ ढालें, ३ किरीट, ७ कवच, १० तलवारें, अनेक वस्त्र, ७ भेड़ें, २१ ऊँटनियाँ, ३ गधे, ६ ख़च्चर, २० उम्दा घोड़े, ७ प्याले, १ सिंगार का डब्बा और १ तकिया थी।

मृत्यु के समय वह सीरिया और फ़ारस के विजय की तैयारी कर चुका था। उसके मरने पर आयशा का पिता अबूबकर उसका उत्तराधिकारी चुना गया। वह पहला ख़लीफ़ा स्वीकार किया गया। उसने ख़लीफ़ा होते ही ये आज्ञाएँ प्रचलित कीं:—

"अत्यन्त कृपालु ईश्वर के नाम से प्रारम्भ करता हूँ। अबूबकर शेष सब मुसलमानों को तन्दुरुस्ती और ख़ुशी की दुआ देता है। ईश्वर तुम पर दया करे और तुम्हें आनन्द में रक्खे। मैं ईश्वर की प्रशंसा करता हूँ। इस राजाज्ञा द्वारा तुमको सूचना दी जाती है कि मैं सच्चे मुसलमानों को सीरिया देश में भेजना चाहता हूँ कि वे जाकर उसे काफ़िरों के हाथ से छीन लें, और मैं जानना चाहता हूँ कि धर्म के वास्ते लड़ना मानो ईश्वरीय आज्ञा मानना है।"

सेनापति ख़लीद इब्न ने सीरिया को फ़तह किया। मूर्तिपूजकों के प्रति अति उग्र क्रोध उसके मन में था। वह कहा करता था—"मैं उस ईश्वर-निन्दक मूर्तिपूजकों की खोपड़ी चीर डालूँगा, जो ऐसा कहता है कि अत्यन्त पवित्र सर्व-शक्तिमान ईश्वर ने पुत्र उत्पन्न किया है।"

उसने १० हज़ार योद्धाओं को साथ लेकर 'हीरा' नगर पर आक्रमण किया और वहाँ के ईसाई बादशाह को मार गिराया। बादशाह के मरने पर नगर-वासियों ने

७० हज़ार मुहरें वार्षिक कर मुसलमानों को देना स्वीकार किया। इस नगर पर अधिकार कर, उसने फ़िरात नदी पर छावनी डाली और ईरान के बादशाह को लिखा कि या तो मुहम्मदी कलमा पढ़ो या 'जज़िया' दो। परन्तु सेनापति यज़ीद ने उसे तत्काल बसरे की चढ़ाई में योग देने को बुला भेजा। क्योंकि शाम देश का बादशाह हैरीक्यूलस ने मुक़ाबिले के लिए भारी सेना का संग्रह किया था। यह फ़ौरन १,५०० चुने हुए सवार लेकर पहुँचा, उधर ख़लीफ़ा ने कई हज़ार योद्धा और भेज दिए; बसरे पर धावा बोल दिया गया।

बसरा उन दिनों रोम साम्राज्य का एक दुर्ग था। इसी नगर के सामने मुसलमानी सेना ने छावनी डाली। क़िला बहुत ही मज़बूत था और रक्षक सेना भी बलवान थी। पर उसका अध्यक्ष रोमेनस विश्वासघात करके मुसलमानों से मिल गया और क़िले का फाटक खोल दिया। एक व्याख्यान में उसने अपने भाइयों से कहा :—

"मैं तुम्हारा साथ छोड़ता हूँ। इस लोक के लिए और परलोक के लिए भी। मैं उसको नहीं मानता, जो सूली पर चढ़ाया गया था और उनको भी नहीं मानता जो उसको पूजते हैं। मैं ईश्वर को अपना मालिक बनाता हूँ और इस्लाम को अपना धर्म, मक्का को अपना धर्म-मन्दिर, मुसलमानों को अपना भाई और मुहम्मद को पैग़म्बर मानता हूँ।"

यह रोमेनस उन हज़ारों विश्वासघातियों में से एक था, जिन्होंने क़ाफ़िरों की विजयों में अपना धर्म खो दिया था !!

बसरा से सीरिया की राजधानी दमिश्क ७० मील थी। यह शहर बड़ा धनाढ्य, बड़ा गुलज़ार और व्यापार का केन्द्र था। यहाँ का रेशम और गुलाब का इत्र दुनिया भर में प्रसिद्ध था। ख़लीद अपने १,५०० सवारों को लेकर दमिश्क की तरफ़ चला। उसने शरजील तथा अबूअबीदा को, जिन्हें वह फ़रात नदी के निकट छोड़ आया था, चुपचाप लिखा कि वे तत्काल अपनी पूरी फ़ौज लेकर दमिश्क को घेर लें। उन्होंने ३,७०० फ़ौज लेकर कूच किया और नगर को घेर लिया। उन्होंने नगर-वासियों को सूचना दी कि तत्काल मुसलमान हो जाओ या धन-दण्ड दो ; अन्यथा युद्ध करो। बादशाह हैरीक्यूलस वहाँ से १२० मील दूर एण्टीऑक के महल में था। उसने ख़लीद के १,५०० सवारों का आक्रमण समझ कर ५ हज़ार सेना भेज दी। उसका सरदार जनरल केलूस था। उसका नगर के शासक अज़राईल से मतभेद था। जब उसने ४० हज़ार सेना के प्रचण्ड बल को देखा, तो वह भयभीत हो गया और विश्वासघात करके ख़लीद से कहला भेजा कि अज़राईल को मारते ही नगर पर क़ब्ज़ा हो जायगा। अज़राईल यद्यपि वृद्ध था, पर मैदान में डट गया और वीरता से लड़ा। पर ख़लीद ने दोनों को पकड़ कर क़ैद कर लिया और मुसलमान होने को कहा। अन्त में इन्कार करने पर उन्हें क़त्ल कर दिया।

इस घटना से नगर में हलचल मच गई। नगर के फाटक बन्द कर लिए गए। बादशाह ने ख़बर पाकर एक लाख सेना भेजी। परन्तु ख़लीद ने मार्ग ही में छल-बल से उसे छिन्न-भिन्न करके परास्त कर दिया और सारी युद्ध-सामग्री छीन ली। इस सेना के दो ईसाई नायक पीटर और पॉल वीरता से लड़े और बहुत से मुहम्मदी सैनिकों को काट डाला। पीछे पॉल गिरफ़्तार कर लिया गया और पीटर भाले से छेद कर मार डाला गया। पॉल से मुसलमान होने को कहा गया तो उसने कहा कि मैं 'लुटेरों और ख़ूनियों के धर्म को स्वीकार न करूँगा।' इस पर उसका सिर काट लिया गया।

बादशाह ने फिर ७० हज़ार-फ़ौज भेजी, जो जनरल वार्डन की अधीनता में थी। पर ये सब नए रँगरूट थे। जनरल वार्डन ने ख़लीद के मारने का एक षड्यन्त्र रचा और एक पादरी को सन्धि-चर्चा के लिए भेजा। पादरी ने भण्डाफोड़ कर दिया कि अमुक स्थान पर १० सिपाही तुम्हारे वध के लिए खड़े रहेंगे, जो दरबान के भेष में होंगे। ख़लीद ने कौशल से दसों सिपाहियों को रात ही में चुपचाप मरवा डाला और बेधड़क सन्धि-स्थल पर पहुँच गया। वार्डन को कुछ पता न लगा। उसके निकट जाकर ख़लीद ने वार्डन की गर्दन पकड़ ली और उसी समय उसका सिर काट कर उसकी सेना में फेंक दिया। यह देख कर ईसाई लोग भयभीत हो गए। इसी बीच में मुसलमान सेना ने धावा बोल कर सारी सेना को तहस-नहस कर दिया और उनका सर्वस्व लूट लिया। इस लूट में बेतोल धन मिला और उसके लालच से असंख्य अरबों ने युद्ध में सम्मिलित होने की तैयारी की।

इसके बाद दमिश्क-वासी टॉमस को सेनापति बना कर लड़ने लगे। यह बड़ा भारी तीरन्दाज़ था। वीर भी था। ख़ूब लड़ा। अब्बास इब्ने ज़ैद उसके तीर से मारा गया। इस पर अब्बास की स्त्री ने मैदान में आकर टॉमस की आँख अपने तीर से फोड़ दी। फिर भी वह लड़ता रहा और ७० दिन तक दमिश्क पर क़ब्ज़ा न होने दिया।

अन्त में ७० दिन के बाद उसकी इच्छा के विपरीत नगर के १०० प्रतिष्ठित आदमियों और पादरियों ने ख़लीद से सन्धि कर ली और नगर मुसलमानों को सौंप दिया। यह भी निश्चय हो गया कि जो नागरिक बाहर जाना चाहें, मय अपने सामान के जा सकते हैं, परन्तु जो रहेंगे उन्हें जज़िया देना होगा। एक पादरी विश्वासघात करके मुसलमानों को गुप्त मार्ग से नगर में बुला लाया। उन्होंने फाटक खोल दिए। सारी सेना नगर में घुस आई और क़त्लेआम मच गया। अन्त में ख़लीद ने अपना काले गिद्ध का झण्डा दमिश्क के क़िले पर फहरा दिया।

जिन लोगों ने इस्लाम धर्म न स्वीकार किया था, वे नगर छोड़ कर बाहर चले गए। टॉमस उनके साथ था। ख़लीद ने ४ हज़ार सवार उनके पीछे लगा दिए और जब ये बेचारे आफ़त के मारे एक नदी किनारे विश्राम कर रहे थे, स्त्रियाँ भोजन बना रही थीं, बच्चे खेल रहे थे, इन पर वे सैनिक टूट पड़े और उन्हें लूट कर क़त्ल कर डाला। इनमें से सिर्फ़ १ आदमी बच कर भाग सका। बादशाह की पुत्री भी इसी झुण्ड में थी, उसे ख़लीद ने यह कह कर छोड़ दिया कि जा और अपने बाप से कह कि मुसलमानी धर्म ग्रहण करे, वरना मैं शीघ्र ही उसका सिर उतारने आता हूँ।

इस तमाम लूट का पाँचवाँ भाग ख़लीफ़ा के पास भेज कर शेष उसने आपस में बाँट लिया। परन्तु माल पहुँचने के पूर्व ही ख़लीफ़ा की मृत्यु हो गई।

(क्रमशः)

* * *

भारत की दशा

———

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

आपदा का सिन्धु लहरा रहा जो सामने है,
उसका तो देख पड़ता हो नहीं तीर है,
त्रिंश कोटि पार जाने वाले हैं, जहाज़ नहीं,
किसका हृदय हो रहा नहीं अधीर है ?
छोटी-छोटी नाव इस ओर, उस ओर पड़ीं,
उनमें से एक पर भी न माँझी वीर है,
भूरि भाग्यशाली जो कभी था, उस भारत के
भरता इसी से भव्य नयनों में नीर है।

*

दुर्दशा स्वदेश की विशेष हो गई है आज,
मानो वह एक पिंजरे में बध्य कीर है,
तन में है श्रान्ति, मन में अशान्ति व्याप्त हुई
उसका तो रोम-रोम हो रहा अधीर है,
टेढ़ा समुद्धार का उपाय, भार जीवन है,
ऐसी बढ़ी घोर परतन्त्रता की पीर है
भूरि भाग्यशाली जो कभी था, उस भारत के
भर रहा आज भव्य नयनों में नीर है।

*

पेट भर अन्न नहीं पाते बहु कोटि जन,
वेश से न तन ढक सकने की पीर है,
चल रहा उनको कँपाता-तड़पाता हुआ
उस पर घोर अत्याचार का समीर है,
अपने जनों का रिपुओं से मिल जाना हाय !
ऊपर से करता उसे महा अधीर है,
भूरि भाग्यशाली जो कभी था, उस भारत के
बह रहा आज भव्य नयनों से नीर है !

जर्मनी में फ़ेसिज़्म का भय

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्या," एम० ए०, पी० एच-डी०]

जब गत महायुद्ध की भयानक चक्की में यूरोप के सारे राष्ट्र पिस रहे थे, यूरोप के बहुत से लेखक तथा विद्वान एक ऐसी सामाजिक सूचना का आविष्कार करने में लगे हुए थे, जिसमें युद्ध ऐसी भयानक संस्था का नाम न हो। वे यह कहते थे कि हमारे आधुनिक समाज में अवश्य कोई बड़ी भारी भूल है। हमें उसे सुधारना चाहिए। यूरोप की युद्ध-पीड़ित जनता तथा कोमल हृदय युवक इनके अनुयायियों में से थे। वे एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे, जहाँ समता, शान्ति व सुख का राज्य हो। जहाँ संसार की सारी मनुष्य-जाति आपस में भ्रातृ-भाव से रहे। गत युद्ध से जर्मनी ने बहुत हानि उठाई। जर्मनी की सारी आर्थिक तथा शारीरिक शक्ति का इस युद्ध में नाश हो गया। उद्योग तथा व्यापार को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। इस सब से जर्मनी की जनता एकदम बेचैन हो उठी। वहाँ पर इस सामाजिक सुधार के आन्दोलन ने बहुत ज़ोर पकड़ा। जर्मनी की प्रजा एक नए सुख-स्वप्न की राह देखने लगी। युद्ध के बाद जर्मनी की अवस्था और भी ख़राब हो गई। वरसाइल की सन्धि के अनुसार उसे बहुत सी ऐसी शर्तों को मानना पड़ा कि जिससे उसके राजनैतिक गौरव तथा आर्थिक अवस्था को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। इस सन्धि से जर्मनी को क्रूर आक्रमणकारियों के सामने अपनी गर्दन झुकानी पड़ी। फिर आन्तरिक शासन-प्रणाली में भी सन्तोषदायक परिवर्तन न हुआ। राज्य-तन्त्र अवश्य हट गया और उसके साथ देश के हर एक मनुष्य को वोट का अधिकार भी मिल गया; अपना मत प्रकट करने की स्वतन्त्रता तथा अन्य सामाजिक सुधार भी हुए; परन्तु तब भी जर्मनी की कई पुरानी संस्थाएँ जो प्रजातन्त्र की विरोधी हैं, ज्यों की त्यों क़ायम रहीं। पुराने क़ानून रद्द नहीं किए गए। क़ैसर के राज्य-काल के न्यायालय तथा राज्य-प्रबन्ध सम्बन्धी अन्य संस्थाओं में भी कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। इन बातों को देखते हुए इस नए प्रजातन्त्र में और उस पुराने राज्य-तन्त्र में बहुत कम भेद मालूम पड़ता है। सेना भी पुराने अधिकारियों के हाथ में रक्खी गई। वीमर के नवीन राष्ट्रीय शासन-विधान के अनुसार जर्मनी एक प्रजातन्त्र राज्य है। परन्तु राष्ट्रीय सभा के प्रेज़िडेण्ट के हाथ में इतना ज़्यादा अधिकार दे दिया गया है, कि वह अवसर पड़ने पर देश की शासन-प्रणाली को रद्द कर सकता है। सेना का सर्व-श्रेष्ठ अधिकारी भी वही है।

इस नवीन शासन-प्रणाली के स्थापित हो जाने के बाद जर्मनी की राष्ट्रीय सभा में दो मुख्य दल हो गए। एक दल वाले युद्ध के बाद स्थापित हुई शासन-प्रणाली के समर्थक थे, दूसरे दल वाले पूर्ण प्रजातन्त्र के समर्थक थे। पहिला दल, जिसमें प्रेज़िडेण्ट स्वतः शामिल था, यह चाहता था कि राज्य की सारी सत्ता केवल थोड़े से अधिकारियों के हाथ में रहे। दूसरा दल राज्य का प्रबन्ध प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में रखना चाहता था, मज़दूर लोगों के कष्टों को दूर करना चाहता था और साम्यवाद के कुछ सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणत करना चाहता था। पर आरम्भ से ही इस दल के अनुयायियों की संख्या कम रही है इससे वह और दलों से मिल कर धीरे-धीरे सुधार करता रहा है। जब कभी देश की रक्षा तथा अन्य ऐसे प्रश्न उठते हैं, तब वह प्रेज़िडेण्ट की अन्यायपूर्ण सत्ता तक का समर्थन करने को तैयार हो जाता है। इस नीति के अनुसरण करने में बहुधा उसे मज़दूरों की भलाई, उनकी शिक्षा तथा आर्थिक सुधार के प्रस्तावों तक को पीछे खींच लेना पड़ता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि इतने साल प्रजातन्त्र रहने के बाद भी जर्मनी के मज़दूरों को और देशों की अपेक्षा सब से ज़्यादा टैक्स देना पड़ता है और इसी देश के पूँजी-पति तथा धनी लोग राष्ट्र के कई टैक्सों से बचे हुए हैं। इसलिए पूँजीपतियों के अतिरिक्त देश की अन्य जातियों में इस नीति से बहुत असन्तोष फैल गया है। लोग प्रजातन्त्र वाले दल तथा प्रेज़िडेण्ट ह्निडेनबर्ग के दल दोनों से घृणा करने लगे हैं। इस अवसर का लाभ एक तीसरे दल ने उठाया है। उसका नेता एडोल्फ़ हिल्टर है। वह दल फेसिज़्म के सिद्धान्तों का अनुयायी है। इस दल की सफलता का मुख्य कारण जनता का असन्तोष है। कहते हैं कि इस दल के चलाने के लिए कुछ बड़े-बड़े पूँजीपति भी रुपया देते हैं। वे प्रजातन्त्र वाले पुराने दल को तोड़ना चाहते हैं, क्योंकि वह हरदम उनकी सत्ता घटाने का प्रयत्न करता रहता है। यह भी कहा जाता है कि भूतपूर्व क़ैसर तथा इटली का सत्ताधारी मुसोलिनी भी इस संस्था को आर्थिक सहायता देता है। वे सब चाहते हैं कि यह दल बलवान हो जावे तथा और दलों को दबा देवे। वे यह भी जानते हैं कि यह दल जनता का कल्याण नहीं कर सकता, इससे शीघ्र ही बदनाम हो जावेगा और राज्यतन्त्र वालों को फिर मौक़ा मिलेगा।

इस नई राज्यक्रान्ति से बचने का अब एकमात्र साधन यह है कि प्रजातन्त्र का समर्थक साम्यवादी दल प्रेज़िडेण्ट के दल का साथ छोड़ दे। परन्तु इस दल के नेता यह देखते हैं कि यदि उन्होंने ऐसा किया तो राज्या-धिकार इस नई पार्टी के हाथ में आ जायगा। इसलिए वह दल प्रेज़िडेण्ट की नीति का ही समर्थन कर रहा है। राज्य की सारी सत्ता प्रेज़िडेण्ट ह्निडेनबर्ग के हाथ में है। परन्तु वह अपने कार्यों की सारी ज़िम्मेदारी प्रजा-तन्त्र दल व राष्ट्रीय सभा पर रखता है। जर्मनी के प्रजातन्त्र की स्थिरता में विघ्न डालने वाली यही दो बातें हैं। पहिली प्रेज़िडेण्ट ह्निडेनबर्ग की चालाकी, जो कि प्रजातन्त्र दल को बदनाम कर रही है। दूसरा फ़ेसिस्ट दल, जो प्रजातन्त्र दल की बदनामी तथा मज़दूरों व अन्य कई जातियों की असन्तुष्टता का फ़ायदा उठा रहा है। इस समय प्रजातन्त्र दल को चाहिए कि वह और बातों का ध्यान छोड़ कर अपने सिद्धान्तों पर चलने का प्रयत्न करे व प्रेज़िडेण्ट ह्निडेनबर्ग का साथ छोड़ कर मज़दूरों की भलाई करने का दृढ़ निश्चय करे। इस तरह वह जन-सामान्य के श्रद्धा तथा विश्वास को फिर से पा सकता है। अन्यथा फ़ेसिस्ट दल थोड़े ही दिनों में जर्मनी की सारी सत्ता को समेट लेगा। युद्ध के समय में लोगों ने जो बातें सोची थीं, उन्हें वे कार्यरूप देना चाहते हैं—अपना सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक सुधार करना चाहते हैं। जो दल यह कार्य करने को तैयार होगा, जनता उसी का साथ देगी। प्रजातन्त्र वाले दल ने इन स्वप्नों को अभी तक कार्यरूप नहीं दिया है। फ़ेसिस्ट दल, जिसका कि नेता एडोल्फ़ हिल्टर है, कहता है कि वह ये सुधार शीघ्र ही कर दिखावेगा। इस आशा से प्रोत्साहित होकर जनता फ़ेसिस्ट दल तथा उसके नेता हिल्टर का साथ देने को तैयार है।

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्त्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

प्रभाती तारे के पीछे प्रकाश में मैंने देखा—वाटिका की समस्त विकसित कलिकाओं के मुखों पर आँसू बिखर रहे थे।

❀

हँसो अवश्य; लेकिन कहीं तुम्हारी हँसी दूसरे को रुलावे न।

❀

वासनाओं के पीछे मत दौड़। ये स्वयं तरुण रह कर तुझे बुड्ढा बना देंगी।

❀

जल के कोमल प्रवाह में असीम शक्ति छिपी है। रमणी का कोमल हृदय अपनी गोद में साहस और धैर्य छिपाए है।

❀

सुगन्धित पुष्प की शोभा डाल पर है, न कि माली के हाथों में।

❀

कुल्हाड़ी चन्दन के वृक्ष को काटने की चेष्टा करती है। चन्दन अपनी सुगन्धि कुल्हाड़ी में बसा देता है।

❀

केवल आशीर्वाद से कोई जीवित नहीं रहता।

❀

स्वतन्त्र पक्षी कहता है—पिञ्जरे में तो मैं अपने पङ्खों को भी न फैला सकूँगा।

पिञ्जर-बद्ध कीर कहता है—आकाश में क्षण-मात्र दम लेने को भी आधार नहीं है।

❀

आशा मद है, निराशा मद का उतार।

❀

हे मेरे मित्र, जीवन के अनुभव का दान करके मुझे लज्जित मत कर। मुझे स्वयं अपने जीवन का निर्माता बनने दे।

❀

विपत्ति अनुभव सिखाने का अद्वितीय विद्यालय है।

❀

सांसारिक यातनाएँ मनुष्य को इस असार संसार का भली-भाँति ज्ञान करा देती हैं।

❀

फूल ने फल से पूछा—तुम्हारा वास कहाँ है?

फल ने उत्तर दिया—तुम्हारे हृदय में।

❀

भविष्य की कल्पना करके मैं कभी-कभी आनन्द से विह्वल हो जाता हूँ।

❀

सरिता स्वयं जल नहीं पीती; वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते। सज्जनों की विभूतियाँ परोपकार के लिए ही होती हैं।

❀

मनुष्य जितना त्याग तृष्णा की पूर्ति के लिए करते हैं, उतने त्याग के सदुपयोग से महान पद प्राप्त हो सकता है।

❀

मृत्यु के पश्चात राजा और रङ्क में कोई अन्तर नहीं।

❀

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

आजकल हिज़ होलीनेस श्री० जगद्गुरु को मि० जिन्ना की परेशानी ने विशेष चिन्तित कर दिया है। "अहीर की बिटिया को न नैहरे चैन न ससुरे सुख!" बेचारे ने लाख इण्डियन कॉङ्ग्रेस का द्वार खटखटाया, सर्वदल सम्मेलन के सामने ज़ोरदार स्पीचें दीं और अन्त में राउण्डटेबिल के चारों ओर चक्कर मारा! मगर हाय री क़िस्मत! किसी के—

"फूटे मुँह से यह न निकला, लेते जाना शाह जी!"

❀

बड़ी आशा थी कि दादा मुञ्जानन्द देव पसीज जायँगे और पूरी चौदह नहीं तो कम से कम साढ़े तेरह ही शर्तें मञ्ज़ूर करके 'भावी इक़बाली हिन्दोस्तान' की बुनियाद क़ायम कर देंगे। इसीलिए 'प्योर नेशनलिस्ट' होने पर आपको थोड़ी देर के लिए साम्प्रदायिकता का बुर्क़ा ओढ़ लेना पड़ा था। मगर दादा ऐसे कञ्जूस निकले कि साढ़े तेरह तो क्या पौने तेरह पर भी राज़ी न हुए!

❀

हाय रे, तो क्या 'मुस्लिम भारत' का वह सुख-स्वप्न महज़ स्वप्न ही रह जायगा, अल्लाह मियाँ! या कोई सूरत निकालोगे? नहीं जी, 'ट्राई-ट्राई अगेन!' 'हिम्मते मरदाँ मददे ख़ुदा!' एक बार फिर कॉङ्ग्रेस वालों को घेरना चाहिए। बच्चू जायँगे कहाँ? सर्वदल सम्मेलन ने तो बहुत-कुछ स्वीकार ही कर लिया है। बस, अब 'बात रही थोड़ी, ज़ीन लगाम घोड़ी!' एक बार जहाँ मचले कि काम बना।

❀

इसीसे जिन्ना साहब, साम्प्रदायिकता की बालू की दीवार पर खड़े-खड़े देशवासियों को लन्दन से ही ललकार रहे हैं कि बाबा सावधान! ब्रिटिश पार्लामेण्ट मक्खी-चूसों का अड्डा है। कमबख़्त सख़ावत और दरिया-दिली का नाम तक नहीं जानते; वे कुछ देने-दिलाने वाले नहीं हैं, इसलिए आपस में ही निबट लो। सबसे पहले हिन्दू-मुस्लिम समस्या का समाधान हो जाना चाहिए, नहीं तो सारा गुड़ गोबर हो जायगा!

❀

मगर अफ़सोस की बात तो यह है कि इस्तेमारी कॉङ्ग्रेस पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा के साथ ही 'नेहरू रिपोर्ट' को भी रावी में डुबो चुकी है, इसलिए श्रीजगद्गुरु की राय है कि अगर दादा मुञ्जानन्द देव की पार्लामेण्टरी स्पीच के कारण जनाब जिन्ना साहब दाम इक़बालहू को 'ब्रिटिश डिप्लोमेसी' का असली रूप दिखाई पड़ गया है तो बहरे ख़ुदा साम्प्रदायिकता को ज़िन्दा दर गोर कर दें या नेहरू रिपोर्ट के पुनरुद्धार के लिए फ़ौरन ग़ोताख़ोरी का अभ्यास आरम्भ कर दें। माशा अल्लाह, दोनों रास्ते साफ़ हैं।

❀

बस, इतना ही लिख पाया था कि एक हज़रत आ धमके और फ़र्राटे के साथ फ़रमाने लगे—"क्यों गुरु जी, साम्प्रदायिक अधिकारों के लिए हमारे 'हिन्दू-मुस्लिम-हितैषियों' ने जैसा बालकोचित अभिनय राउण्ड-टेबिल के सामने लन्दन में किया है, वैसा ही अगर एक बार यहाँ भी हो तो क्या बुरा है? फिर वही पुराना शग़ल शुरू हो, दाढ़ी-चोटी का गँठबन्धन देखने को मिले? क्यों? आपकी क्या राय है?"

❀

"हाँ जी, बुरा क्या है!" श्रीजगद्गुरु बोले—"ख़ासी चहल-पहल रहेगी। भठियारख़ाने का मज़ा मिलेगा। जिन्ना साहब और हिमालय की चोटी पर इस्लामी पताका फहराने की इच्छा रखने वाले उनके साथी मुसलमान और चाहते क्या हैं? कॉङ्ग्रेस को चाहिए कि भारत के जन्म-सिद्ध अधिकारों के लिए ब्रिटिश सरकार से अहिंसात्मक लड़ाई लड़ती रहे और मुसलमानों के लिए आधा हिन्दोस्तान छोड़ दे। आख़िर उन्हें भी तो स्वतन्त्रता चाहिए। अगर सारा हिन्दोस्तान नहीं तो उसकी थोड़ी सी दुम ही सही—'भागे भूत की लँगोटी ही सही!'

❀

मगर दुःख की बात यह है, कि जिन्ना साहब भारत से विरक्त होकर लन्दन में वानप्रस्थ ग्रहण करने वाले हैं। एक फ़िरङ्गी अख़बार को ख़बर मिली है कि अब आप वहीं प्रिवी कौन्सिल में पैरवी करेंगे और ब्रिटिश पार्लामेण्ट में घुस कर अपने चिरवाञ्छित 'चौदह रत्नों' की तलाश करेंगे। क्या करें, बेचारे सन् १९१६ से कह रहे हैं कि बाबा, मुसलमानों की १४ शर्तें स्वीकार कर उन्हें प्रसन्न कर लो। घर के देवता माने रहेंगे तो बाहर के भी मान जायँगे, मगर कोई सुनने ही वाला नहीं है। ऐसी हालत में बेचारे किस भरोसे पर इस देश में रहें?

❀

पञ्जाब की सरकार ने निश्चय किया है कि गत १ली जनवरी से जो कर्मचारी भर्ती किए जायँ, उन्हें तनख़्वाह पन्द्रह फ़ी सदी कम दी जाय। इस पर श्रीजगद्गुरु का यह छोटा-सा इज़ाफ़ा है कि इस १५ फ़ी सदी की कमी से जो बचत हो, वह नई दिल्ली के उद्घाटन-समारोह में ख़र्च की जाय। क्योंकि उस रक़म के सद्व्यय का ऐसा सुन्दर साधन दूसरा नहीं हो सकता।

❀

मगर अफ़सोस की बात है कि नई दिल्ली के उद्घाटन-समारोह का जो प्रोग्राम अख़बारों में छपा है, उसमें न भङ्ग-बूटी की व्यवस्था का ज़िक्र है, न दम लगाने की व्यवस्था का! सप्ताह भर जलसे होंगे, भोज होंगे, तरह-तरह के खेल-तमाशे होंगे, मोटरों की दौड़ होगी और लाखों रुपए स्वाहा होंगे, पर वही फीका-फीका! भला, बिना नशापानी के भी कोई जलसा अच्छा लगता है? कोई लाट साहब को जाकर याद क्यों नहीं दिला देता कि ऐसे शुभ अवसर बार-बार नहीं आते। जब सब कुछ हो रहा है, तो थोड़ी सी विजया का इन्तज़ाम भी हो जाना चाहिए।

❀

जहाँ लाखों रुपए आतिशबाज़ी और टूर्नामेण्ट वग़ैरह में ख़र्च होंगे, वहाँ सौ दो सौ अगर भङ्ग-बूटी में ख़र्च हो जाते तो क्या बुरा था? शादी-ब्याह और गृह-प्रवेश—यही तो धन सार्थक करने के अवसर हैं। उचित तो था कि इस शुभ अवसर पर श्रीसत्यनारायण की कथा होती। बी लतीफ़न का छुम् छनन्न् होता। "तोरी बाँकी सी चवन तिरछे नैना!" की ध्वनि से महफ़िल गूँज उठती और लोग "वाह वा! मरहबा और सुभान अल्लाह" के नारे लगाते! रुपए का मसला तो 'नमक-कर' की तरह एक 'हवा-कर' लगा देने से ही हल हो जाता

❀

ख़ैर, दिल्ली में भङ्ग-बूटी की व्यवस्था न हुई तो न सही। अल्लाह करे, मेरठ का षड्यन्त्र-केस इसी तरह साल दो साल तक चलता रहे, ताकि बेचारे वकीलों की छनती रहे। मगर आफ़त तो यह है कि एसेम्बली से यह ख़बर आते ही कि अब तक इस अत्यावश्यक मुक़दमे के लिए सरकार को केवल सात लाख, तैंतीस हज़ार ख़र्च करने पड़े हैं, लोगों ने चिल्ल-पों मचा कर आसमान सर पर उठा लिया है! कमबख़्तों को यह नहीं सूझता कि इस मुक़दमे के कारण सरकार के सर से कितनी बड़ी बला टल गई है!

❀

इसलिए, श्रीमती सुशीला सरकार की सेवा में हिज़ होलीनेस का विनम्र निवेदन है कि मेरठ षड्यन्त्र-केस की दुम में कोई भारी-सा नमदा बाँध दिया जाय, ताकि वह कच्छपी चाल से जन्म-जन्मान्तर तक चलता रहे और बेचारे वकील-बैरिस्टरों के लिए जो 'दान-क्षेत्र' खुला है, वह खुला रहे! ऐसा मशहूर मामला अगर दस-बीस वर्ष भी न चला तो क्या चला? बला से दो-चार करोड़ ख़र्च हो जायँगे। रुपया-पैसा तो हाथ की मैल है, एक तरफ़ से आया और दूसरी तरफ़ से गया! फिर भारत जैसी स्वर्णप्रसू भूमि जब तक हाथ में है, तब तक करोड़-दो करोड़ की चिन्ता ही क्या है? एसेम्बली और कौन्सिलें अपने हाथ में हैं, कोई नया कर लगा कर इन काले-कलूटों से कुछ ऐंठ लेने में कितनी देर लगती है?

❀

उस दिन किशोरगञ्ज (बङ्गाल) के मजिस्टर साहब मोटर पर सवार होकर एक गाँव के पास से जा रहे थे तो एक एम० ए० का विद्यार्थी बड़े ज़ोर से वन्देमातरम् चिल्ला उठा। बस, फिर क्या था, साहब के मान का कँगूरा उर्दू शायरों के 'शीशए-दिल' की तरह चूर-चूर हो गया! मगर ख़ुदा भला करे किशोरगञ्ज के डिप्टी मजिस्टर का कि उन्होंने उक्त छात्र को चार महीने की सख़्त सज़ा (!) देकर मजिस्टर बहादुर के मान की मरम्मत कर दी। नहीं तो साहब की जो दशा होती उसे सोच कर, क़सम ख़ुश्तुल हवासी की, अपने राम का दिल हवा का झोंका खाए हुए पीपल के पत्ते की तरह काँप उठता है!

❀

उफ़ रे उफ़! कहाँ साहब के "हुज़ूर, धर्मावतार, सर और योर ऑनर" की मधुर ध्वनि सुनने के आदी कोमल कर्ण-कुहर और कहाँ वह कनखजूरे सा खुर-खुरा 'वन्देमातरम्!' इधर 'कुलिसहु चाहि कठोर यह' और उधर वह 'कोमल कुसुमहु चाहि!' ऐसे गुस्ताख़ लड़के को तो कम से कम सात बार फाँसी की सज़ा देने की आवश्यकता थी। मगर मालूम होता है, पूर्व प्रशंसित डिप्टी साहब न्याय और दया की साक्षात् 'गङ्गा-जमुनी' मूर्ति हैं, इसीसे उन्होंने इतना बड़ा अपराध कर डालने पर भी उक्त विद्यार्थी को महज़ मामूली सज़ा देकर ही छोड़ दिया है!

❀

अरे जनाब, आप विश्वास न करेंगे, परन्तु बिल्कुल सच्चा वाक़या है। हमारे चुन्नी-चचा को करैले से चिढ़ थी। एक दिन बाज़ार से घर की ओर जा रहे थे। लड़के पीछे पड़ गए और ताली बजा-बजा कर 'चचा करैला लोगे? 'चचा करैला लोगे?' कहने लगे। चचा ने पहले तो उनकी सात पुश्त की ख़बर ली। ऐसे नालायक़ लड़के पैदा करने के लिए उनके माँ-बाप को बुरा-भला कहा,

फिर रास्ते से कङ्कड़-पत्थर उठा कर उनकी ओर फेंका, और इसके बाद दोनों हाथों से अपना मुँह पीटने लगे! परन्तु वे शरारत के पुतले कब मानने वाले थे? उन्होंने और भी ज़ोर-ज़ोर से 'करला-करैला' चिल्लाना शुरू कर दिया। बस, आख़िरी नतीजा यह हुआ जनाब, कि चचा भागने लगे और ठोकर खाकर औंधे मुँह एक गन्दे नाबदान में जा गिरे! बताइए, हमारे साहब बहादुर की भी अगर यही दशा होती तो क्या होता?

❀

ठिलिया भर सिंकियाखोर बूटी छान करके घण्टों माथापच्ची करने पर भी श्रीजगद्गुरु की समझ में यह बात न आई कि आख़िर यह गलितचर्म और पलित केश सनातन-धर्म ने सर हरिसिंह गौड़ का क्या बिगाड़ लिया है, कि वे दिन-रात बेचारे के पीछे पड़े रहते हैं! सुनते हैं, आपने एक "सिविल मैरेज बिल" नाम का महा भयङ्कर और धर्म-ध्वंसी बिल एसेम्बली में पेश कर दिया था। आप चाहते हैं कि कोई एक से अधिक बीबी न करने पाए, पति के मरने पर स्त्रियाँ उसकी जायदाद की मालकिनें बनें, स्त्रियों को पति-त्याग का अधिकार प्राप्त हो जाय, विवाहों की रजिस्ट्री हुआ करें और जो चाहे जिस 'जाति' की लड़की को अपनी बीबी बना ले! बताइए, यह धर्म और समाज को जीते जी ज़हर देना नहीं तो क्या है?

❀

मगर जनाब, एसेम्बली के धर्मवीरों ने वह पैंतरेबाज़ी दिखाई, ऐसे वाक्य-बाण प्रहार किए, ऐसी अनूठी युक्तियाँ पेश कीं कि धर्म को इस आफ़ते-नागहानी से बचा कर ही दम लिया। राजा बहादुर कृष्णमाचारियर ने कहा, कि इस बिल को इतनी बड़ी लाठी से मारना चाहिए कि वह सिर न उठा सके। मौ० मुहम्मद याक़ूब साहब ने सर हरिसिंह को देश से निकल जाने की आज्ञा दी। एक कोई मियाँ साहब ने फ़रमाया कि हमारा धर्म बहु-विवाह का समर्थन नहीं करता, परन्तु अवस्था विशेष में, 'अल्लाह के फ़ज़ल से चार बीबी करना फ़र्ज़ है!' भला ऐसी-ऐसी मुँहतोड़ युक्तियों के सामने बिल कैसे ठहर सकता है? फ़ौरन कटे हुए पेड़की तरह भहरा पड़ा और बेचारे गौड़ महाशय दिल थाम कर कहते रह गए कि "मेरा बिल है, मेरा बिल है!!"

❀

अन्त में, जब राजा बहादुर अपने कथन के उपसंहार पर आए तो फ़रमाया कि 'हमारे पूर्व-पुरुषों ने जो प्रथा प्रचलित कर रक्खी है, वह बहुत ही अच्छी है।' इसमें क्या शक! बीबी की बीबी मिलती है और उसके साथ ख़ासी रक़म दहेज में मिल जाती है! बहत्तर साले बूढ़ों को वैतरणी पार कराने के लिए षोडशी मिल जाती है। और क्या? चाहिए तो मरने के बाद भी दो-चार शादियाँ कर लीजिए। एक बीबी नापसन्द हो तो फ़ौरन दूसरी, तीसरी, चौथी—दर्जन पार कर दीजिए, कोई पूछने वाला नहीं। अल्लाह करे, यह प्रथा युगयुगान्तर तक जारी रहे। आमीन!

❀

और सुनिए, राजा बहादुर की राय है कि वह हिन्दू हिन्दू ही नहीं हो सकता, जो किसी लड़की के बारे में कहे कि मेरा उससे प्रेम हो गया है, इसलिए मैं उससे विवाह करूँगा। शिव! शिव!! ऐसा लाञ्छन अगर कोई कमबख़्त किसी हिन्दू पर लगाए तो उसे कच्चा ही चबा जाइए। इन बेचारे धर्मात्माओं से प्रेम से क्या वास्ता! किसी एक से प्रेम हो जाय तो फिर हर साल नई बीबी लाने का मज़ा ही जाता रहे! और फिर बीबी भी क्या कोई प्रेम करने की चीज़ है? ऐसे प्रेम के पचड़े में पड़िए तो फिर जूती से भी प्रेम करना पड़े। किसी से प्रेम करना और फिर उसी से शादी भी कर लेना, यह पापियों का काम है, न कि धर्मपरायण हिन्दुओं का।

❀

और फिर, प्रेम, सतीत्व, पतिव्रत और लज्जाशीलता आदि स्त्रियों के लिए हैं या मर्दों के लिए? उन्हें तो चिता तक पहुँचते-पहुँचते भी दो-चार विवाह कर डालना चाहिए। वह कमबख़्त हिन्दू ही क्या, जो मरने पर दो-चार विधवाएँ न छोड़ जाय। आख़िर कोई नाम को रोने वाला भी चाहिए या नहीं?

❀

भारत की भूतपूर्व राजधानी कलकत्ता से ख़बर आई है कि गत वर्ष वहाँ मोटरों की ठोकर से १४२ आदमी मर कर सीधे स्वर्ग पहुँचे और २,१४४ ने घायल होकर अस्पतालों की शोभा-वृद्धि की! हमारी राय है कि कोई क़ानून बना कर इन २,१४४ अस्पतालियों को कठिन कारागार की सज़ा दी जाय, क्योंकि इन्होंने भव-बन्धन से विमुक्त होने का ऐसा सुवर्ण सुयोग छोड़ कर बड़ी भारी ग़लती की है।

❀

हवड़ा के एक बङ्गाली युवक ने श्री० जे० एम० सेन गुप्त के स्वागत में प्राण विसर्जन कर दिया। उसके शोक में एक सभा हुई और कुछ नवयुवक जुलूस बना कर उसमें सम्मिलित होने चले। यह सुनते ही पुलिस के कान खड़े हो गए! वह 'आज लीन्ह विधि एकहि बारा' कह कर भूखे सम्पाती की तरह जुलूस पर टूट पड़ी और लाठियों की चोट से दर्जनों जुलूसियों की खोपड़ियों का फ़ालतू ख़ून बाहर कर दिया। लोग श्रीमती पुलिस का यह अकाण्ड-ताण्डव देख कर हैरान रह गए! परन्तु श्री० जगद्गुरु तो बुद्धिमान आदमी ठहरे। फूँक-फूँक कर खोपड़ी पर ज़रा ज़ोर देते ही समझ गए कि बी भैंस को इससे क्या मतलब कि वस्त्र रेशमी है या सूती? उनका तो स्वभाव है रङ्ग देख कर भड़कना। फलतः ब्रिटिश राज्य की पुलिस को भी यह विचार करने की आवश्यकता नहीं कि जुलूस शादी का है या ग़मी का।

❀

इसके सिवा सुनते हैं, बी ब्रितानियाँ की नीयत अच्छी है और वह सुलह तथा शान्ति के लिए पथ प्रशस्त करने में जी-जान से जुट गई हैं, फलतः पुलिस का काम है कि वह उस पथ को भारत के नौ-जवानों की खोपड़ियों के उष्ण रक्त से सींच कर ठीक कर दे, ताकि धूल-धक्कड़ और गर्दोग़ुब्बार का कहीं नाम न रह जाय। इसीलिए कुछ नेता छोड़ दिए गए हैं, परन्तु धर-पकड़ भी जारी है। इससे शान्ति भी स्थापित हो जायगी और जेलख़ानों की रौनक़ भी क़ायम रह जायगी। इसलिए 'साँसति करि पुनि करहिं पसाऊ' वाली नीति कुछ बुरी नहीं!

❀

विलायत के प्रसिद्ध विद्वान सर फ़िलिप हार्टोग ने अपने एक व्याख्यान में कहा है कि भारत-सरकार उन स्कूलों को सहायता देना बन्द कर दे, जहाँ दलितों और अछूतों के लड़के नहीं पढ़ने पाते। लाहौल बिलाक़ूवत! हमारी सुशीला सरकार भला, ऐसा गर्हित कार्य करके अपने परम प्रिय 'छूतों' को क्यों नाराज़ करने लगी? ऐसा करके क्या वह अपना इहकाल और परकाल बिगड़वाएगी?

❀

Registered No. A—2085

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad

श्री० रामरखसिंह सहगल

वार्षिक चन्दा ...	... ६) रु०
छः माही चन्दा	... ५) रु०
तिमाही चन्दा ...	... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य	... ≡)

Annas Three Per Copy

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

'भविष्य' इलाहाबाद

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

मी-मेक्डानल्ड का कन्या-विद्यालय तथा उनकी तीन निपुण छात्राएं

An All-round Appreciation

Hindi Edition :	
Annual	Rs. 6/8
Half-yearly	,, 3/8
Single Copy	As. /10/

The 'CHAND'

(Urdu Edition)

Heavily Complimented

Urdu Edition :	
Annual	Rs. 6/8
Half-yearly	,, 3/8
Single Copy	As. /10/

Editor : Munshi Kanhaiya Lal, M.A., LL.B., Advocate

Aligarh University Magazine :

To publish such a voluminous magazine requires the skill of Atlas. It is the first example in the history of literary achievement. This issue of the CHAND is an encyclopedia, wherein we come across, not only the beautifully written articles, but by Editors of different papers. For the last many years attempts have been made to publish special numbers, but I assure you that your CHAND surpases all of them in beauty and splendour. Please accept my congratulations.

***

Prof. Amarnath Jha, M. A., Head of the English Deptt. Allahabad University :

I congratulate you on the new issue of the Urdu CHAND. It must be one of the most sumptous numbers of Urdu Journals.

***

Khan Bahadur Nasir Ali. Editor, "Salai-Am", Delhi :

The special number is admirable.

***

Prof. Zia-I-Ahmad, M. A., Muslim University, Aligarh :

It is undoubtedly a great success and I congratulate you on it.

***

Munshi Mahraj Bahadur Barq, B. A., Supdt., D. A. G., Posts and Telegraphs, Delhi :

It is surely an excellent and exhaustive collection of standard contributions from the pen of Editors and affords a very interesting reading. In the Urdu literature this is a novel idea indeed and you are to be congratulated on its issue.

Gwalior :

The special number of the CHAND has a very attractive and illuminating appearance. The Editor has to be congratulated upon his selection of the writings of the best and illustrious Urdu Editors, who have left no stone unturned in vying with each other in displaying the linguistic art, and diction of the language. The get-up of the number is exceptionally good. As a constant reader of the CHAND I can say that it is the best Urdu periodical issued under the supervision of an eminent editor like Munshi Kanhaiya Lal, M.A., LL.B., Advocate, who has taken special care, not only to prove to the world at large the pristine beauty of the Urdu language, but also to travel in the domain of social reforms with long, but steady steps for general good. I wish it a still more promising career in future.

***

Dy. Collector, Rae Bareilly :

Your enterprise has been very successful and I offer my congratulations.

***

The PIONEER :

In its Editors' Number, the Urdu monthly, CHAND of Allahabad has brought out an interesting production. It contains about 500 pages of reading matter, special articles by a large number of journalists, numerous half-tone blocks, cartoons and tri-coloured pictures. The contributors have been drawn from divergent groups and they have covered a wide range of subjects ; among those that have written for the Number are men like Mr. Gandhi, Maharaja Sir Kishen Prasad, Sir Abdul Qadir, Khwaja Hasan Nizami and others expatiating on high metaphysics or providing amusing reading. The first edition of the Number is stated quickly to have sold out and in view of the demand for it, efforts are being made to bring out a further edition of the issue.

The STAR says :

The Special Editor Number of the monthly Urdu Magazine the CHAND which combines its November and December issues, is full of interesting and well written articles on various aspects of literature and topics of general interest. No less than 175 eminent journalists have contributed their best efforts to this issue which is 500 pages of prose and poetry, with 135 photo blocks of these contributors, 16 cartoons and 4 tri-coloured pictures. The enthusiastic editor of the CHAND deserves the highest appreciation of all lovers of Urdu for collecting this interesting anthology of journalists of the time and induced a fairly busy, but nevertheless the most eminently fit class of writers to write for this special number. Men like Mahatma Gandhi, His Excellency Maharaja Sir Kishen Prasad, Hon'ble Justice Sir Abdul Qadir, Maulvi Abdul Haq, Maulana Niaz Fatehpuri, Hazrat Aziz, Lisan-ul-Qaum Safi, Maulvi Mahbub Alam, Khwaja Hasan Nizami, Mr. J. R. Roy, Maulana Hasrat Mohani and Dr. A. Siddiqi figure as contributors to the issue besides others of equal or lesser lights and the variety of subjects covers most of the problems before the literary and journalistic world. . .

The Editor, Mr. Kanhaiya Lal, Advocate, and the management of the CHAND deserve every congratulation on this proud result of their efforts.

***

چاند ہندی کا ماہانہ رسالہ تھا - گذشتہ سال سے منشی کنہیا لال کے ادبی ذوق کی بدولت اردو میں بھی شائع ہونے لگا ہے - اس میں شک نہیں جیسا کہ اشتہار میں درج ہے کہ یہ چاند بہ اعتبار مضامین ضخامت تصاویر وغیرہ ہندوستان کا سب سے اعلی رسالہ ہے یہ رسالہ کیا ہے خاصی کتاب ہے - مضامین - معلومات نیز دلچسپی اور لطف کے لحاظ سے بہت اچھے ہیں - لکھنے والے بھی قابل ملے ہیں - سنجیدہ مباحث فسانے ' نظمیں مختلف دلچسپ معلومات کے مضامین تصویریں بکثرت درج ہوتی ہیں - منشی صاحب نے اس کی ترتیب واشاعت میں خاص اہتمام کیا ہے اور اس کی کامیابی پر ہم ان کو مبارکباد دیتے ہیں - عنقریب وہ اس کا ایڈیٹر نمبر شائع کرنے والے ہیں - جس میں اردو رسالوں کے قابل ایڈیٹروں کے مضامین ہونگے - یہ جدت - منشی صاحب کے دماغ کا نتیجہ ہے - امید ہے کہ یہ نمبر بہت پرلطف ہوگا -

(اردو بابت اکتوبر سنہ ۱۹۳۰ع جو ابھی شائع ہوا ہے)

The Manager, "CHAND" (Urdu), Chandralok, Allahabad

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—१९ फ़रवरी, १९३१ | संख्या ९, पूर्ण संख्या २१

देहली में महा० गाँधी का आतङ्क !

समस्त सरकारी दफ़रों पर सशस्त्र सन्तरियों का पहरा !!

केहला (परतावगढ़ ज़िले) में पुलिस ने गोलियों की वर्षा की

२ मरे, २४ घायल हुए :: इलाहाबाद में मृतकों का जुलूस पृष्ठ १२

सरदार भगतसिंह आदि को फाँसी की आज्ञा कौन देगा ?

क़ानूनी अड़चनें उपस्थित की गईं :: लाहौर में वकीलों का नया आन्दोलन

बहिष्कार का भयङ्कर प्रभाव :: ब्रिटिश-व्यापार में ४०० करोड़ का घाटा :: रेलवे को ७।। करोड़ का घाटा

—लाहौर १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि यहाँ के तीन वकीलों ने—मलिक जीवनलाल कपूर, लाला शामलाल तथा श्री० बलजीत सिंह—पञ्जाब गवर्नमेण्ट को एक तार इस आशय का दिया है, कि श्री० सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव की फाँसी को रोक दिया जाय, क्योंकि जिस ट्रिब्यूनल ने उनके अभियोग का निर्णय किया था, वह अब विद्यमान नहीं है। फाँसी की तारीख़, समय तथा स्थान का निश्चय करने का अधिकार केवल निर्णय करने वाले ट्रिब्यूनल को ही प्राप्त था। उस ट्रिब्यूनल की अनुपस्थिति में कोई दूसरा अधिकारी, ज़ब्ता फ़ौजदारी की धारा ३८१, और ४०० तथा वारण्ट-नम्बर ३९ के अनुसार उनके फाँसी के वारण्ट पर हस्ताक्षर नहीं कर सकता। अतएव उनको फाँसी पर लटका देना क़ानून-विरुद्ध होगा।

शीघ्र ही एक प्रार्थना-पत्र अभियुक्तों की ओर से "हेबियस कोर्पस" के अनुसार हाईकोर्ट में दिया जावेगा।

—बम्बई का समाचार है, कि असेम्बली के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट श्री० विट्ठल भाई पटेल 'अक्वीलिया' नामक जहाज़ से २४वीं फ़रवरी को यूरोप के लिए रवाने हो जायँगे।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' के एक विशेष सम्वाददाता का कहना है, कि इङ्गलैण्ड से ब्रिटिश प्रतिनिधियों का एक दल भारत आ रहा है। उसमें मि० वेजवुड बेन, लॉर्ड पील, सर सैमुएल होर्स, मि० आइज़ाक फ़ूट, लॉर्ड लोथियन और मि० थॉमस ये ६ व्यक्ति हैं। ये आगामी १९वीं मार्च को भारत के लिए रवाना होंगे और अप्रैल के मध्य तक लॉर्ड विलिङ्गडन (नए वायसराय) के आने के पहले ही अपना कार्य आरम्भ कर देंगे।

—नई दिल्ली का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज २।। बजे से महात्मा जी की बातचीत वायसराय के साथ शुरू हुई। क़रीब ६ बजे तक बातचीत होती रही। वॉयसराय के यहाँ से आने पर महात्मा जी प्रसन्न वदन दिखाई पड़ते थे। लोगों का अनुमान है, कि महात्मा गाँधी के वायसराय के साथ इस मुलाक़ात का नतीजा अच्छा होगा।

१८वीं तारीख़ की रात में 'भविष्य' के ख़ास तार द्वारा मालूम हुआ है, कि ठीक पौने दो बजे महात्मा गाँधी लॉर्ड इर्विन से मिलने दूसरी बार गए, आपके साथ सेठ जमनालाल बजाज तथा श्री० घनश्यामदास बिड़ला भी थे। दर्शनाभिलाषी नर-नारियों की भीड़ ने महात्मा जी को घेर लिया। उपस्थित जन-समूह को महात्मा जी ने विदेशी वस्त्र के बहिष्कार का आदेश देते हुए पूछा, कि जो भी स्वदेशी-व्रत लेना चाहे, हाथ उठावे। भीड़ में उपस्थित लगभग सभी व्यक्तियों ने हाथ उठाकर महात्मा जी की आज्ञा पालन करने का आश्वासन दिलाया। महात्मा जी ने मुस्कराते हुए कहा—"घर जाओ और चर्ख़ा चलाओ।"

'भविष्य' का यह भी विशेष तार है, कि सर्दार वल्लभ भाई पटेल, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू तथा काँङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के लगभग सभी मेम्बर शीघ्र ही देहली पहुँचने वाले हैं। महात्मा गाँधी शुक्रवार को देहली की सार्वजनिक सभा में व्याख्यान देंगे।

'भविष्य' के ख़ास तार का यह भी कहना है, कि इस अवसर पर किसी अज्ञात कारण से समस्त सरकारी दफ़्तरों पर तथा डाकख़ाने और तार-घर पर सशस्त्र सन्तरियों का बड़ा कड़ा पहरा नियुक्त किया गया है।

'भविष्य' का ख़ास तार है कि अहमदाबाद में मर्दुमशुमारी के अफ़सरों ने बड़ा उत्पात मचा रक्खा है। उनको देखते ही लोग घरों के दर्वाज़े बन्द कर लेते हैं, गलियों के द्वार भी बन्द कर लिए जाते हैं, किन्तु अब नौबत यहाँ तक पहुँच गई है, कि पुलिस की सहायता से उन्होंने दर्वाज़े तोड़कर घरों में घुसना प्रारम्भ कर दिया है। सैकड़ों लोगों में, कहीं एक व्यक्ति इन अफ़सरों के प्रश्नों का उत्तर देता है। बाद का समाचार है कि कालूपुर में घर तोड़ने के हथियारों और औज़ारों से भर कर एक पूरी लॉरी वहाँ लाई गई है। कई गिरफ़्तारियाँ भी हो चुकी हैं।

बनारस में भयङ्कर दङ्गा

२० मुसलमान और ६ हिन्दू मरे

गत ११वीं फ़रवरी का बनारस का समाचार है, कि विलायती कपड़े के व्यापारी, मुहम्मद जान ख़ाँ आग़ा के जनाज़े के साथ जाते हुए, मुसलमानों के दल ने हिन्दुओं की दूकानों को लूटा। इस प्रकार वहाँ दङ्गा शुरू हो गया, जिसमें अनेकों व्यक्ति घायल हुए।

इस मामले को शान्त करने के लिए हिन्दू और मुसलमानों का एक सम्मिलित जुलूस निकाला गया। पुलिस वालों ने लोगों से जुलूस भङ्ग करने को कहा। लोगों के बार-बार यह कहने पर भी कि यह जुलूस शान्तिमय जुलूस है, पुलिस ने फ़ायरें कर ही दीं, जिसके फल-स्वरूप कुछ लोग घायल हो गए।

१९वीं फ़रवरी का समाचार है कि हनूमान फाटक के समीप के २० मकान लूट लिए गए और जला दिए गए।

१७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि अब चारों ओर शान्ति है। दूकानें क़रीब-क़रीब खुल गई हैं।

अधिकारियों के कथनानुसार इस दङ्गे में २० मुसलमान और ६ हिन्दू मारे गए हैं। १७ मुसलमान और २० हिन्दू बुरी तरह घायल हुए हैं। ६६ मुसलमान और १०७ हिन्दुओं की दवा अस्पतालों में की गई है, और वे घर भेज दिए गए हैं। कुल मिला कर २३६ व्यक्ति घायल हुए बतलाए जाते हैं।

—कलकत्ते का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर पुलिस की लाठी से घायल होने के कारण श्री० सुभाषचन्द्र बोस का दाहना हाथ बेकाम हो गया है। वे उस हाथ से आज तक कोई काम नहीं कर सकते। पहुँचा भी सूज गया है। ख़बर है कि उनकी एक्स-रे द्वारा परीक्षा की जायगी।

—एसेम्बली के सामने सर जॉर्ज रेनी ने जो रेलवे एस्टिमेट पेश किया है, उससे पता चलता है, कि १९३०-३१ में रेलवे को ७।। करोड़ रुपयों का घाटा लगा है।

बम्बई—

—अहमदाबाद का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० लालशङ्कर, जिनके यहाँ वह साइक्लोस्टाइल मैशीन मिली थी, जिसमें 'यङ्ग इण्डिया' छपती थी, अन्य दो अभियुक्तों के साथ मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। मैजिस्ट्रेट ने तीनों को १६३० के १० वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार दोषी ठहराया, और तीनों को ५-५ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दे दी। श्री० लालशङ्कर को क़ैद के अतिरिक्त १००) रुपए का जुर्माना भी हुआ है, जिसके न देने पर उन्हें १ माह की अतिरिक्त-क़ैद की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

—धारवार का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बेलगाँव ज़िले के अन्तर्गत हुक्केरी के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्री० एम० पी० पटेल, श्रीनिवासराव देशपाण्डेय और बल्लालसप्पा गन्धा, १४४वीं धारा के विरुद्ध कार्य करने अर्थात् सभाएँ करने और धरना देने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

श्रीमती ताराबेन मोदी को ६ माह की सादी क़ैद और ५०) रु० जुर्माने अथवा ११ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। श्रीमती अम्बाबेन पटेल को ५०) रु० जुर्माना अथवा २ माह की सादी क़ैद और श्रीमती मीठीबेन पटेल और श्रीमती कुबेरबेन पटेल को ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

कराची का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्थानीय सत्याग्रह-समिति के ४वें डिक्टेटर श्री० हीरालाल गनात्रा गिरफ़्तार कर लिए गए। स्वयंसेवकों का नायक भी गिरफ़्तार कर लिया गया है।

—बम्बई का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि विदेशी वस्त्रों से लदी हुई एक लॉरी को रोकते समय ६ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—सूरत का १०वीं फ़रवरी का समाचार है कि बारडोली के रेज़िडेण्ट मैजिस्ट्रेट ने, सूरत ज़िले के एक प्रमुख कार्यकर्ता श्री० जगतराम दवे तथा एक दूसरे कार्यकर्ता श्री० लालूभाई को, १७ (१) धारा के अनुसार ३-३ माह की तथा १७ (२) धारा के अनुसार भी ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। दोनों सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी। वसन जी नामक एक व्यक्ति को १ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।
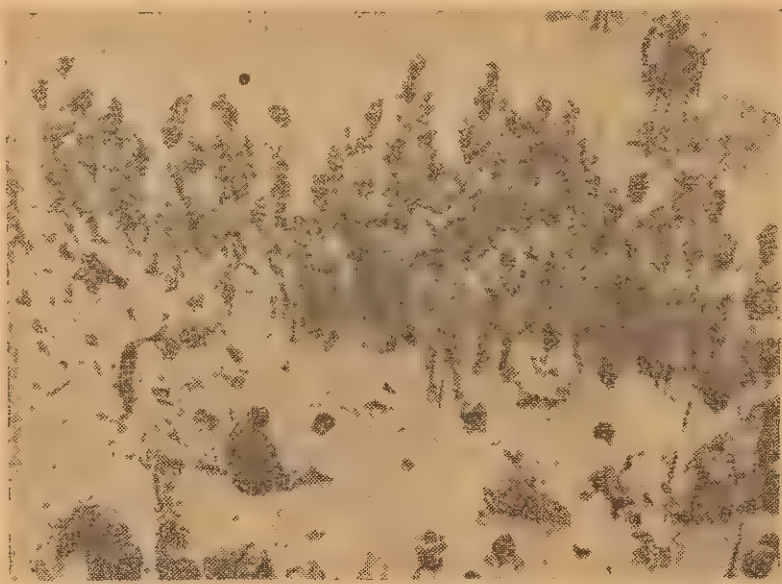
कराची में विगत ११ जनवरी को निकलने वाले कॉङ्ग्रेस के उस जुलूस का एक दृश्य, जो लाठी-प्रहार का शिकार हुआ था। इस चित्र में पाठक लाठी-प्रहार से ज़रा भी विचलित न होकर स्त्री-पुरुषों को सत्याग्रह करते हुए देखेंगे।

—अहमदाबाद का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि खेतों से अनाज हटाने के सम्बन्ध में मैजिस्ट्रेट की निषेधाज्ञा न मानने के अपराध में पञ्चमहाल ज़िले के ३ किसानों को भारतीय दण्ड-विधान की १८८वीं धारा के अनुसार १-१ माह की क़ैद और २०)-२०) रुपए जुर्माने अथवा १-१ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—धारवाड़ का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कर्नाटक के एक प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री० जी० जी० कारखानीस, जिन्हें साधारणतया लोग 'काका' कहते हैं, १०८वीं धारा के अनुसार अवकोला के समीप गिरफ़्तार कर लिए गए। इनका अपराध यही था, कि पुलिस के पूछने पर इन्होंने अपना नाम बतलाना अस्वीकार कर दिया था।

—बेलगाँव का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बेलगाँव के सिटी मैजिस्ट्रेट ने उस मामले का फ़ैसला कर दिया, जिसमें १८ महिलाओं पर १४४वीं धारा के अनुसार अभियोग लगाया गया था। ८ महिलाएँ छोड़ दी गई, १० महिलाओं को १००)-१००) रुपए जुर्माने अथवा ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। वे 'सी' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

—सूरत का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि उदच और केलवाड़ा कैम्प की ४ महिलाओं को सज़ाएँ दे दी गई हैं।

—बम्बई का १० वीं फ़रवरी का समाचार है, कि दो स्वयंसेवकों को जो लोगों को मर्दुमशुमारी बहिष्कार के लिए उकसाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, ११७ और १७ (१) धाराओं के अनुसार सज़ा दे दी गई। इनमें एक को ६ माह की तथा दूसरे को ४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बम्बई का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कालबा देवी रोड पर, प्रभात-फेरी वालों के एक जुलूस को, पुलिस ने बल-प्रयोग द्वारा हटाया। पुलिस ने इन लोगों से राष्ट्रीय झण्डा छीन लिया, और विट्ठलदास कपाडिया नामक एक स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिया गया। मैजिस्ट्रेट ने इन्हें २५) रुपए जुर्माना किया है।

—हलाल का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पञ्चमहाल के द्वितीय 'डिक्टेटर' श्री० चुन्नीलाल पारिख को ११७ और १४३ धाराओं के अनुसार प्रत्येक के लिए क्रमशः ४ माह और ३ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है। दोनों सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी। निषेधाज्ञा भङ्ग करने के एक दूसरे अपराध में, ज़िला मैजिस्ट्रेट के यहाँ अलग मामला चलेगा।

—धारवार का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि यल्लापुर का एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता भारतीय दण्ड-विधान की ११७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया गया है।

—बम्बई का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के तृतीय प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने केशवगोविन्द और तुलसीलाल दुल्लाव जी नामक दो कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवकों को, कॉङ्ग्रेस बुलेटिन बेचने के अभियोग में ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। मुहम्मद ज़हूर नामक एक अन्य स्वयंसेवक को भी इसी अपराध में ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—सूरत का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने, मर्दुमशुमारी के नम्बर मिटाने के अभियोग में दो युवकों को ५५)-५५) रुपए जुर्माने अथवा ६-६ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। सूरत में यह अपने ढङ्ग का पहला ही मामला है। दो व्यक्तियों को सत्याग्रह पत्रिकाएँ बेचने के अपराध में ७५)-७५) रुपए जुर्माने अथवा ६-६ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

धीरूभाई नामक एक व्यक्ति को, कलेक्टर की १४४वीं धारा के अनुसार एक आज्ञा की अवहेलना करने के अपराध में ३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—हैदराबाद (सिन्ध) का १४ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि शिकारपुर के २ स्वयंसेवकों को पिकेटिङ्ग के अभियोग में २-२ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कराची का १३ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'कॉङ्ग्रेस-पत्रिका' बेचने के अपराध में मीरदोस्त नामक एक मकरानी को वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

—भड़ोंच का १३ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के ५वें 'डिक्टेटर' श्री० रविशङ्कर भट्ट को ४ माह की कड़ी क़ैद और २००) रुपए जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—हलाल का १३ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि भील सेना-मण्डल के एक कार्यकर्त्ता श्री० मङ्गलदास आर्य, जिन्होंने छिकवा में एक पाठशाला खोल रक्खी है, उसी पाठशाले के दो और कार्यकर्त्ताओं के साथ ११वें ऑर्डिनेन्स की ३री धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

श्री० कन्हैयालाल पटेल और श्री० रामकान्त माल-कृष्ण भी इसी धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—हलाल का १३ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कलाल तालुक़े के डिक्टेटर डॉ० भोगीलाल एच० वैद्य स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कारवार का ११ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० वेङ्कटेश हनुमन्त यादव को, सरकारी आज्ञा न मानने के अपराध में १ माह की कड़ी क़ैद और ५०) जुर्माने अथवा १ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—सूरत का १४वीं फ़रवरी का समाचार है कि बारडोली तालुक़ा के बदद डिविज़न से स्वयंसेवकों का एक दल, मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के लिए भेजा गया। पुलिस ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। इसके बाद फिर दूसरा और तीसरा दल भी भेजा गया। वे दोनों भी गिरफ़्तार कर लिए गए। अब कई दल भेजने का प्रबन्ध किया जा रहा है।

—सूरत का १६वीं फ़रवरी का समाचार है कि सूरत कॉङ्ग्रेस कमिटी के ७वें डिक्टेटर पं० मोतीलाल के श्राद्ध के सम्बन्ध में एक जुलूस के साथ जाते समय गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

बिहार—

—मोतिहारी का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० खेखनसिंह को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (२) धारा के अनुसार १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० कालिदास प्रसाद, श्री० विश्वनाथ प्रसाद, श्री० रुद्रदेव शर्म्मा, श्री० मङ्गल शर्मा, और श्री० भारतसिंह को उसी धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—छपरे का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि गाँजे की दूकान पर धरना देते समय श्री० यतीन्द्रनाथ सूर और श्री० जगन्नाथ मिश्र गिरफ़्तार कर लिए गए। इसके बाद, अदालत से, वकीलों का एक जुलूस निकला। यह जुलूस कलक्टर की अदालत के सामने रोक लिया गया। पुलिस जुलूस के लोगों को थाने पर ले गई। वहाँ ३ वकील, जिन्होंने अपने को गिरफ़्तारी के लिए पेश किया, गिरफ़्तार कर हिरासत में भेज दिए गए।

ज़मीन्दार की पत्नी को ६ माह की क़ैद

छपरे का १४वीं फ़रवरी का समाचार है कि बाबू हीरालाल सर्राफ़ को, जो दीघवारा स्टेशन पर १७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए थे, ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'ए' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

अमनौर के एक भारी ज़मीन्दार, श्री० हरसुहवा सिंह (जो इस समय जेल में हैं) की पत्नी श्रीमती बहुरिया जी को १७वीं धारा के अनुसार ६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्रीमती जी 'बी' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

—छपरे का १३वीं फ़रवरी का समाचार है कि चैनपूर का १ स्वयंसेवक तथा महाराजगञ्ज कॉङ्ग्रेस कमिटी के २ स्वयंसेवकों को, जो स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर सिवान में गिरफ़्तार किए गए थे, ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—छपरे का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि भगवाना कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी और अध्यक्ष को अन्य व्यक्तियों के साथ, जो कई महीने पहले, लगानबन्दी के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, १७ (१) धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—छपरे का १३वीं फ़रवरी का समाचार है कि स्थानीय थाना कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी पं० रघुनाथ आचारी तथा अन्य लोगों को, जो स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, १७ (१) धारा के अनुसार ६-६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—देवघर का १०वीं फ़रवरी का समाचार है कि कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी पं० शिवराम झा, और डिक्टेटर श्री० इन्द्रनारायण झा को, जो स्वाधीनता दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, २-२ साल की क़ैद की सज़ा दी गई है। स्थानीय राष्ट्रीय पाठशाला के हेड-पण्डित को भी २ साल की सज़ा दी गई है।

—मुज़फ़्फ़रपुर का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सरैयागञ्ज में विदेशी वस्त्र की दूकानों पर धरना देते समय १८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। ये हिरासत में रक्खे गए हैं।

छपरे में महिलाओं की गिरफ़्तारी

छपरे का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पं० रामनिरीक्षण ओझा (जो इस समय जेल में हैं) की पत्नी श्रीमती शान्ति देवी और श्रीमती जानकी किशोरी, छपरा कचहरी रेलवे-स्टेशन पर गिरफ़्तार कर ली गईं। दोनों महिलाएँ एक सभा में व्याख्यान देने के लिए परसा जा रही थीं।

—पटने का ११वीं फ़रवरी का समाचार है कि वहाँ के स्वयंसेवकों के नायक बाबू मोतीलाल, जैसवाल को भी १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—पटने का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि २०००) रुपए की ज़मानत माँगी जाने के कारण 'सर्चलाइट' का प्रकाशन बन्द कर दिया गया है।

—मोतिहारी का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पं० राधा पाण्डे और श्री० भागवतप्रसाद क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—ब्रह्मपुर का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पुलिस ने वहाँ के कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस पर धावा किया और २१ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया। ये स्वयंसेवक बक्सर के सेण्ट्रल जेल में भेज दिए गए हैं।

बङ्गाल—

—कलकत्ते का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के तीसरे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने श्रीमती सरला देवी, श्रीमती कुन्दबाला देवी और श्रीमती विनोदिनी सरकार को, पिकेटिङ्ग के अभियोग में १००)-१००) रुपए जुर्माने अथवा २-२ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

—गोहाटी का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० गोविन्दकुमार सिंह, श्री० महावीरप्रसाद सिंह, श्री० फणि अगस्ती, श्री० विनयकुमार सरकार, श्री० ज्योति महन्त और श्री० महादेवदास को गत २६वीं जनवरी के स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'श्रमिक-मण्डल' के एक सदस्य श्री० ईश्वर हड़ताल सम्बन्धी पर्चे बाँटते समय गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कलकत्ते का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'स्वाधीनता' नामक पर्चा बाँटने के अपराध में श्री० श्यामेन्द्र चौधरी को प्रेस-एक्ट के अनुसार १ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बड़े बाज़ार में कुलियों को विदेशी वस्त्र की गाँठों के ले जाने में बाधा पहुँचाने के अपराध में श्रीमती नलिनी देवी और श्रीमती सुशीला देवी को १००)-१००) रुपए जुर्माने अथवा २-२ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

विगत ११ वीं जनवरी को कराची में निकलने वाला कॉङ्ग्रेस के जुलूस का वह दृश्य, जिसमें शान्त जनता पर पुलिस ने लाठियों की वर्षा कर उनके धैर्य एवं सहनशीलता की परीक्षा लेने का निश्चय किया था। इस चित्र में पाठक देखेंगे, बिल्कुल शान्त बैठी हुई जनता को पुलिस वाले लाठियाँ चुभा रहे हैं!

—कलकत्ते का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि विदेशी वस्त्र की दूकानों पर धरना देते समय बड़े बाज़ार में श्रीमती मालिनी देवी और श्रीमती सावित्री देवी, ३ अन्य स्वयंसेवकों के साथ गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

—कलकत्ते का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पुलिस ने एक मेस में २६ व्यक्तियों को, जिन्होंने अपने को कॉङ्ग्रेस-स्वयंसेवक बतलाया, १२८वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया है।

—खुलना का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० सुधीरकुमार घोष तथा अन्य ५ व्यक्तियों से, जो १०६वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, ५०)-५०) रुपए का मुचलका माँगा गया। मुचलका देने से इन्कार करने पर उन्हें ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—नटोर का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के, श्री० धीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती और मुहम्मद अब्दुल कलिक मियाँ नामक दो स्वयंसेवकों को, जो मौलाना मुहम्मद अली की मृत्यु के शोक में मनाई जाने वाली हड़ताल के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, ३४१वीं धारा के अनुसार १-१ सप्ताह की सादी क़ैद और १०६ठी धारा के अनुसार ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि जोड़ाबगान के तीसरे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने श्री० रवीन्द्रकुमार चक्रवर्ती, श्री० गौरीसिंह, श्री० अलीलाल और श्री० त्रिलोकी शुक्ल को पुलिस की आज्ञा न मानने के अभियोग में २०)-२०) रुपए जुर्माने अथवा १-१ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है। ३ अन्य स्वयंसेवकों को भी, पिकेटिङ्ग के अभियोग में यही सज़ा दी गई है।

—टाँगाइल का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के स्वयंसेवक, श्री० रामरतन और श्री० हरकुमार को ६-६ माह की, तथा श्री० गिरिजा, श्री० महादेव और श्री० हेमन्त को ४-४ माह की १२८वीं धारा के अनुसार क़ैद की सज़ा दी गई है।

—विष्णुपुर का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के कार्यकर्ता श्री० यतीन्द्रनाथ दास को १०७वीं धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—आरामबाग़ का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० राधाकृष्ण पॉल, कविराज अवनिपति सेन गुप्त, श्री० प्राणकृष्ण मित्र, श्री० देवेन्द्रनाथ मल्लिक और श्री० महेन्द्रनाथ घोष को, जो स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

पञ्जाब—

—अमृतसर का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, विदेशी वस्त्र की दूकानों पर धरना देने के अभियोग में १६ व्यक्ति, जिनमें ४ महिलाएँ भी शामिल हैं; गिरफ़्तार किए गए हैं। केवल दो दिनों में वहाँ इस सम्बन्ध में ३६ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

बीमार पुत्र को छोड़ कर माता जेल में :: पुत्र को देखने के लिए भी ज़मानत नहीं दी

अमृतसर का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के अतिरिक्त-ज़िला मैजिस्ट्रेट ने श्रीमती कन्सो देवी को, अपने राजद्रोहात्मक भाषणों के कारण, ४ माह के लिए ५००) रुपए का मुचलका देने की आज्ञा दी। श्रीमती जी ने मुचलका देना अस्वीकार किया। ४ माह के लिए जेल ही जाना उन्होंने उचित समझा। आपने मैजिस्ट्रेट से इस बात की प्रार्थना की, कि उनका पुत्र बीमार है, इस कारण उन्हें एक सप्ताह तक अमृतसर के जेल में रक्खा जाय। मैजिस्ट्रेट ने इस मामले में हस्तक्षेप करना अस्वीकार किया, और श्रीमती जी को ८ दिन के लिए ज़मानत देकर जाने की आज्ञा दी। किन्तु उन्होंने ज़मानत देने से साफ़ इन्कार कर दिया।

—दिल्ली का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सरदार अमरसिंह को, गत अक्टूबर माह में गाँधी-दिवस के अवसर पर व्याख्यान देने के सम्बन्ध में ४ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अमृतसर का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि भारतीय दण्ड-विधान की ३४१वीं धारा के अनुसार जो लोग गिरफ़्तार किए गए थे, उनमें से ६ महिलाओं और ५ स्वयंसेवकों को १-१ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अमृतसर का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ, एक विदेशी वस्त्र की दूकान पर धरना देते समय २० स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। इनमें बच्चे और महिलाएँ भी शामिल हैं। ४ दिनों के अन्दर इस स्थान से ७० गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—लाहौर का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'कॉमरेड' के सम्पादक श्री० रामलाल को, राजद्रोहात्मक लेख लिखने के कारण १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अमृतसर का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के एक प्रसिद्ध डॉक्टर श्री० चुन्नीलाल भाटिया, जो हाल ही में दो माह की सज़ा भुगत कर लौटे हैं, १७(२) धारा के अनुसार फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं !

—अमृतसर का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एक व्यापारी के विषय में यह पता चलने पर, कि वह विदेशी कपड़े बेंच रहा है, बॉयकॉट कमिटी ने उसकी दूकान पर धरना जारी कर दिया। पुलिस ने वहाँ पहुँच कर एक स्वयंसेवक को गिरफ़्तार कर लिया। इसके बाद पुलिस ने इस सम्बन्ध में ४ महिलाओं और ३ बच्चों को भी गिरफ़्तार किया है। गिरफ़्तार होने वाली महिलाओं में, वहाँ के प्रसिद्ध बैरिस्टर और म्युनिसिपल कमिश्नर श्री० दिवानचन्द भण्डारी की वृद्धा माता—श्रीमती प्रेमकौर भी शामिल हैं।

युक्त प्रान्त—

—कानपुर का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वीरसिन्धपुर के श्री० रामरूप शुक्ल, उकसाव ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—आगरे का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि राष्ट्रीय पत्र 'सैनिक' तथा आदर्श प्रेस से, जहाँ 'सैनिक' छपता था, प्रत्येक से २०००)-२०००) रुपए की ज़मानत माँगी गई। इसके फल-स्वरूप पत्र और प्रेस दोनों बन्द कर दिए गए हैं।

३ महिलाएँ गिरफ़्तार

बनारस का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि मैदागिन में विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय श्रीमती गिरिबाला देवी, श्रीमती सुवरणा देवी तथा श्रीमती शान्ति नायिका, १२ स्वयंसेवकों के साथ गिरफ़्तार कर ली गईं। स्वयंसेवकों में ३ छोटे-छोटे बच्चे भी थे, जो छोड़ दिए गए हैं।

—अलीगढ़ का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि अतरौली के २१ व्यक्तियों पर धरना देने के सम्बन्ध में, अलीगढ़ जेल में, भारतीय दण्ड-विधान की १४७, और ५०६वीं धाराओं के अनुसार जो मामला चल रहा था, उसका फ़ैसला कर दिया गया। इनमें ११ व्यक्तियों को, ६-६ माह की कड़ी क़ैद और २५)-२५) जुर्माने अथवा ६-६ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—मुरादाबाद का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पुलिस ने वहाँ के काँग्रेस ऑफ़िस पर धावा किया, और १० मनुष्यों को गिरफ़्तार किया। कहा जाता है कि पुलिस वहाँ की कुछ चीज़ें उठा कर ले गई है।

—इटावे का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ज़िला काँग्रेस कमिटी के डिक्टेटर स्वामी स्वराजप्रकाश और पं० रघुनाथसहाय शुक्ल, गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

कित्तूर (बेलगाँव) का एक अभागा सत्याग्रही—श्री० वीरभद्र चनप्पा—जो १२ जनवरी को पुलिस की डण्डेबाज़ी से बुरी तरह घायल हुआ था।

—लखनऊ का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि अमीनाबाद में, एक विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देते समय श्री० कपूर अपनी स्त्री और बच्चों के साथ गिरफ़्तार कर लिए गए कहा जाता है, कि इस गिरफ़्तारी का दूकानदारों पर इतना असर पड़ा, कि उन्होंने विदेशी कपड़े की गाँठों पर काँग्रेस की मुहर करवा ली है।

—कानपुर का समाचार है, कि वहाँ ६ व्यक्ति उकसाव ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं। इस ऑर्डिनेन्स के अनुसार इस प्रकार, १९३१ में अब तक ४५ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

श्री० लल्लूसिंह को ६ माह की तथा ४ अन्य व्यक्तियों को ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—फ़ैज़ाबाद का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पं० मोतीलाल की मृत्यु के शोक-जुलूस के सम्बन्ध में १५ व्यक्ति पुलिस की आज्ञा न मानने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—लखनऊ का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि गुसाईंगञ्ज काँग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० मेंहीलाल उकसाव ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—आगरे का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीकृष्णदत्त पालीवाल १२४-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—हरदोई का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० विष्णुदत्त शास्त्री और श्री० जगदीश नारायण १२४ ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए।

—लखीमपुर-खीरी का १० वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के १३ कार्यकर्ताओं को दण्ड-विधान की १०६ वीं धारा के अनुसार १-१ वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

मध्य-प्रान्त—

—नागपुर का १२ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'महाराष्ट्र' के सम्पादक श्री० गोपाल अनन्त ओगेल, शोलापूर फाँसी विषयक अपने एक लेख के सम्बन्ध में १२४-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए, किन्तु बाद की एक ख़बर है, कि आप ५,०००) रुपए की ज़मानत पर छोड़े गए हैं।

—नागपुर का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ गिरफ़्तारी का बाज़ार गर्म है। कामठी में, शराब की दूकानों पर धरना देते समय १५ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। मायदा में भी कुछ लोग भाषण देते समय गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। विदेशी कपड़े की दूकानों पर महिलाओं की ज़बर्दस्त पिकेटिङ्ग जारी है।

—नागपुर का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि मध्य-प्रान्तीय मराठी युद्ध-समिति के सेक्रेटरी श्री० वकील, और एक मुख्य कार्यकर्ता श्री० बपासुन्दर, विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय गिरफ़्तार कर लिए गए। १ स्वयंसेवक तथा ६ महिला स्वयंसेविकाएँ भी इसी सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

—सागर का १२ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के ८वें डिक्टेटर श्री० प्रभाशङ्कर वैद्य को १०८वीं धारा के अनुसार १ वर्ष की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अकोला का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'सरस्वती-मन्दिर' का एक विद्यार्थी ११७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया गया है। बंशीलाल अग्रवाल को अन्य ४ कार्यकर्ताओं के साथ, ११७ वीं धारा के अनुसार छः माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दे दी गई है।

अन्य प्रान्त—

—पेशावर का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट किसनचन्द के पुत्र श्री० बिहारीलाल, १०७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—एलोर का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पश्चिमी गोदावरी काँग्रेस कमिटी की दो महिलाओं को १४४वीं धारा के अनुसार ४-४ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

* * *

बम्बई

—सूरत का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि चौरयासी तालुक़ा का एक मामलतदार, एक ऐसे व्यक्ति की खोज में जो पटेल का काम करे, बुदिया नामक स्थान को गया। किन्तु मामलतदार को निराश होना पड़ा। किसी व्यक्ति ने भी पटेल बनना स्वीकार नहीं किया। भूतपूर्व पटेल ने भी साफ़ इन्कार कर दिया।

पार्दी में लगानबन्दी आन्दोलन

सूरत १०वीं फ़रवरी—'बॉम्बे-क्रॉनिकल' के एक सम्वाददाता का कहना है, कि लगानबन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में पार्दी तालुक़ा दूसरा बारदोली हो रहा है। सरकार यहाँ के आन्दोलन को दबाने के लिए घोर प्रयास कर रही है। वहाँ के मुख्य-मुख्य कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। किसानों पर, चौथाई कर के लिए नोटिस जारी किया गया है।

—गत ६वीं फ़रवरी को पुलिस का एक दल, सत्याग्रहियों की जायदादों की ज़ब्ती के लिए बघछिप्रा नामक स्थान को गया। उन स्वयंसेवकों ने, जो पहरे पर तैनात किए गए थे, एक ऊँचे स्थान से, दूर ही से पुलिस वालों को आते देखा। उन्होंने झट गाँव वालों को नगाड़े की चोट से इस बात की सूचना दे दी। बात की बात में प्रत्येक घर का दरवाज़ा बन्द हो गया और पुलिस को ख़ाली हाथ लौटना पड़ा।

—पलासजा नामक एक गाँव में एक तलाती, एक पटेल के साथ श्री० जीवन के यहाँ कर वसूल करने के लिए गया। तलाती ने केवल कुछ रुपयों के लिए उनकी भैंस ज़ब्त कर ली। पटेल ने इस बात का विरोध किया, और तलाती से कहा कि "यदि इस ढङ्ग से ज़ब्ती की जायगी तो मैं इस्तीफ़ा दे दूँगा।" इस विरोध का फल यह हुआ, कि भैंस लौटा दी गई।

—सूरत का १०वीं फ़रवरी का समाचार [कि स्थानीय बानर-सेना दल के दो लड़के मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। मैजिस्ट्रेट ने उन्हें २५)-२५) रुपए जुर्माना करते हुए कहा कि "मुझे विश्वास नहीं है कि ये लड़के रिफ़ॉर्मेटरी (युवा अपराधियों का स्कूल) में सुधर सकेंगे। इसी से मैंने इन्हें जुर्माना किया है।

—बम्बई का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि इण्डियन मर्चेण्ट्स चेम्बर ने गत २१वीं जनवरी को, महिलाओं के एक जुलूस पर किए गए अत्याचारों के सम्बन्ध में, जाँच करने के लिए सरकार से जो प्रार्थना की थी, उसके सम्बन्ध में सरकार ने अपना निर्णय दे दिया है। 'इण्डियन डेलीमेल' को पता चला है, कि सरकार ने जाँच करना अस्वीकार कर दिया है।

बम्बई में मर्दुमशुमारी बहिष्कार

'बॉम्बे क्रॉनिकल' का एक सम्वाददाता विलापार्ले (बम्बई) से लिखता है, कि वहाँ मर्दुमशुमारी के अफ़सरों ने अपना कार्य शुरू कर दिया है। वे घर-घर घूमते हैं और घर वालों को अपना नाम बताने के लिए तङ्ग करते हैं। यदि घर वाले अपना नाम बताने से इन्कार करते हैं, तो उन्हें गिरफ़्तारी की धमकी दी जाती है। इन अफ़सरों के पीछे-पीछे कुछ स्वयंसेवक भी चलते हैं, जो लोगों से अपनी बात पर डटे रहने के लिए प्रार्थना करते हैं। १०वीं फ़रवरी को इस सम्बन्ध में ३ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए थे। इनमें से एक पीछे छोड़ दिया गया। मर्दुमशुमारी के अफ़सरों ने अब पुलिस से सहायता लेना शुरू किया है।

कर्नाटक में लगानबन्दी आन्दोलन

धारवाड़ का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कारवार ज़िले के अन्तर्गत पल्लापुर तालुक़े में, ९ गाँवों ने लगानबन्दी आन्दोलन शुरू कर दिया है।

—सूरत का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कराची के राष्ट्रीय विद्यालय पर, जहाँ महात्मा जी का पहला दल ठहरा था, पुलिस ने धावा किया। क़रीब १ सेर ग़ैर-क़ानूनी नमक, कुछ सत्याग्रह-पत्रिकाएँ, और कुछ साइकिलों को पुलिस ने ज़ब्त कर लिया है।

कपास की ज़ब्ती :: किसान पीटे जाते हैं

सूरत का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० भानभाई नाथूभाई के घर की सभी चीज़ें ज़ब्त कर ली गई हैं। सभी चीज़ें उन्हीं के घर में रक्खी गई हैं, और वहाँ एक पहरेदार बिठा दिया गया है। कहा जाता है, कि कपास के खेतों में किसान ज्योंही कपास तोड़ते हैं, वह ज़ब्त कर लिया जाता है। पुलिस औरत-मर्द, बच्चे-बूढ़े किसी को भी नहीं छोड़ती है। कहा जाता है, बहुधा ये किसान पीटे भी जाते हैं।

—सूरत का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि उन खेतों से, जो ज़ब्त नहीं किए गए थे, अनाज हटाने के सम्बन्ध की निषेधाज्ञा को सरकार ने वापिस ले लिया है। किन्तु उन खेतों में अब कुछ रह नहीं गया है। उनके अनाज या तो चोरी चले गए हैं, या नष्ट कर दिए गए हैं।

—सूरत का ६वीं फ़रवरी का समाचार है कि बारडोली तालुक़ा के केदफ़ क़स्बा के लोगों ने मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने और लगान न देने के लिए किसानों को उकसा कर, उकसाव ऑर्डिनेन्स को भङ्ग करने के लिए नित्य स्वयंसेवकों का एक दल भेजना निश्चित कर लिया है। अभी तक तीन दल गिरफ़्तार किए जा चुके हैं।

—बम्बई का १०वीं फ़रवरी का समाचार है कि कोलाबा ज़िले के अन्तर्गत मनगाँव तालुक़े के किसानों की ओर से रावबहादुर एस० के० बोले ने प्रधान-मन्त्री के पास निम्न-लिखित आशय का तार भेजा है:—

"मेरे सभापतित्व में मनगाँव तालुके के किसानों की एक सभा हुई, जिसमें प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री० अनन्तराव चित्रे के ऊपर, दो माह तक इस तालुक़े में भाषण न देने की मैजिस्ट्रेट की आज्ञा का विरोध किया गया। मैजिस्ट्रेट ने इस प्रकार की आज्ञा को जारी कर, किसानों के वैध आन्दोलन पर आघात किया है। आशा की जाती है कि मज़दूर सरकार उन सिद्धान्तों की रक्षा के लिए, जिन्हें उसने अपना ध्येय बना रक्खा है, इस विषय में हस्तक्षेप करेगी।"

डण्डी में नमक-सत्याग्रह

अहमदाबाद का ११वीं फ़रवरी का समाचार है कि डण्डी में, जहाँ से गत वर्ष महात्मा जी ने नमक-सत्याग्रह शुरू किया था, फिर यह आन्दोलन शुरू किया गया है।

—बम्बई का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि मेमन मुहल्ले में विदेशी वस्त्र की दूकानों पर धरना देते समय १४ स्वयंसेवकों को, काबुलियों ने बड़ी बेरहमी से पीटा। वे सभी अस्पताल भेजे गए। स्वयंसेवक दल के के नायक श्री० शेरमन को जब यह बात मालूम हुई, तो वे स्वयं घटनास्थल पर इस बात की जाँच करने गए। किन्तु वे भी पीटे गए, और उन्हें भी अस्पताल की शरण लेनी पड़ी। यह सब होने पर भी धरना ज़ोरों से जारी है। शराब की दूकानों पर भी धरना जारी है।

—सूरत का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ की वानर-सेना ने विलायती माल बेचने वाले व्यापारियों को सूचना दी थी, कि वे अपने मालों पर एक सप्ताह के भीतर मुहर करवा लें, अन्यथा उनकी दूकानों पर पिकेटिङ्ग जारी कर दी जायगी। सूचना में दी गई अवधि के समाप्त हो जाने पर, वानर-सेना के ४०० बालकों और बालिकाओं ने धरना देना आरम्भ कर दिया। कहा जाता है कि ३० व्यापारियों ने, अपने माल पर मुहर दिलवाना स्वीकार किया। पुलिस ने कुछ बालकों को रोका, किन्तु पिकेटिङ्ग जारी है।

—इलाल का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के असिस्टेण्ट-कलक्टर मि० लैड अन्य कर्मचारियों के साथ पलानपुर नामक एक गाँव में गए, और उन्होंने २५ खातेदारों की जायदादें, जिनमें नक़द रुपए भी थे, ज़ब्त कर लिया।

विदेशी कपड़े के व्यापारियों का बहिष्कार

बम्बई का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि मेमन मुहल्ले के क़ुलियों और ठेला वालों ने विदेशी वस्त्रों को ढोने तक से इन्कार कर दिया है। अब एक ज़मींदार ने भी उन्हें घर देने से इन्कार कर दिया है। कहा जाता है कि उसने अपने मकान में रहने वाले ३ विदेशी कपड़े के व्यापारियों को मकान छोड़ देने की आज्ञा दी है।

—अहमदाबाद का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि राजकोट स्टेट की शासन-समिति ने पिकेटिङ्ग के विरुद्ध एक ऑर्डिनेन्स जारी किया है। इस ऑर्डिनेन्स के अनुसार ३० स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए जा चुके हैं।

* * *

बङ्गाल

"मैं (गदहा) विदेशी वस्त्र ही पहनता हूँ"

पालघाट का ६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि लोगों ने एक गदहे को विदेशी वस्त्रों से ख़ूब सजा कर छोड़ दिया। उसके पीठ पर लिखा हुआ था—"मैं सदा केवल विदेशी वस्त्र ही पहनता हूँ।"

—कलकत्ते का १०वीं फ़रवरी का समाचार है कि मर्दुमशुमारी विभाग में काम करने से इन्कार करने के कारण श्री० मणिलाल मुखर्जी पर सम्मन जारी किया गया है। कलकत्ते में अपने ढङ्ग की यह पहली ही घटना है।

—कलकत्ते का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर, कलकत्ता कॉर्पोरेशन के मेयर (सुभाषचन्द्र बोस) तथा अन्य सदस्यों पर पुलिस के अत्याचारों के सम्बन्ध में जाँच करने के लिए, कॉर्पोरेशन ने एक जाँच-कमिटी नियुक्त की है, जिसमें १२ व्यक्ति रहेंगे। पुलिस के भी दो प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित किए गए हैं।

बङ्गाल कौन्सिल में सरकार की हार

राजनैतिक क़ैदी भारत के भावी शासक हैं !

कलकत्ते का ११वीं फ़रवरी का समाचार है कि बढ़े हुए क़ैदियों की संख्या के अनुसार, जेलों के ख़र्चे के लिए, एक प्रस्ताव पेश किए जाने पर, इस सम्बन्ध में सरकार को मुँह की खानी पड़ी। नेशनलिस्टों ने इसका विरोध किया, और १ वोट से उनकी जीत हुई। उनका कहना है, कि जब तक राजनैतिक क़ैदियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जावगा, तब तक वे इस प्रकार के ख़र्चे का विरोध करते रहेंगे।

श्री० शान्ति शेखरेश्वर राय ने कहा कि, जेल-शासन के सम्बन्ध में सरकार हृदय परिवर्त्तन कर दे, और यह अनुभव करे, कि ये राजनैतिक क़ैदी साधारण अभियुक्त नहीं, बल्कि भारत के भावी शासक हैं !

पञ्जाब—

जेल में बालू मिली हुई रोटी

दिल्ली का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज उन १३ गढ़वालियों का मामला मैजिस्ट्रेट की अदालत में पेश हुआ, जो १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे। क़ैदियों ने मैजिस्ट्रेट से इस बात की शिकायत की, कि उन्हें बालू मिली हुई रोटी खाने को दी जाती है। उनमें से एक ने मैजिस्ट्रेट के सामने जेल की रोटी का एक नमूना भी पेश किया। मैजिस्ट्रेट ने चख कर देखा, और उनकी शिकायत को सच पाया। मैजिस्ट्रेट ने जेलर को क़ैदियों की शिकायत की सूचना दे दी है।

मैजिस्ट्रेट की कुर्सी पर अभियुक्त

अदालत में 'इन्क़लाबी' मॉटो

लायलपुर का गत ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के अतिरिक्त-ज़िला मैजिस्ट्रेट चाननमल की अदालत में एक अतीव मनोरञ्जक घटना हो गई। स्थानीय ज़मींन्दार-सभा के प्रधान, सरदार धन्नासिंह पर उसी अदालत में मामला चल रहा था। उस दिन वे मैजिस्ट्रेट की कुर्सी पर जा बैठे। उसी समय ४ नवयुवक लाल कपड़े पहने हुए वहाँ आए। उनके हाथों में राष्ट्रीय झण्डे और 'इन्क़लाबी' मॉटो थे। उन्होंने अदालत में राष्ट्रीय झण्डा फहराया, और श्री० धन्नासिंह के सामने, चाननमल के विरुद्ध मामला दायर किया। उन्होंने कहा कि "वे देश-द्रोही हैं, उन्हें उचित दण्ड दिया जाय।"

श्री० धन्नासिंह ने ७ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा सुनाई। यह सारी घटना १० मिनट में हो गई। पुलिस ने पाँचों को गिरफ़्तार कर लिया है।

—अमृतसर का ११वीं फ़रवरी का समाचार है कि एक क़ैदी की हत्या करने के अभियोग में मॉण्टगुमरी जेल के कुछ कर्मचारी गिरफ़्तार किए गए हैं।

विदेशी कपड़े के व्यापारी को गोली मारी गई !

अमृतसर का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सोहनलाल नामक एक विदेशी कपड़े के व्यापारी को, जिस समय वह ताँगे पर घर लौटा आ रहा था, किसी अज्ञात व्यक्ति ने गोली मार दी। कहा जाता है, कि वह व्यक्ति साइकिल पर सवार था और उसका मुख ढका हुआ था। व्यापारी की जाँघ से गोली निकाल ली गई है और उसकी अवस्था अच्छी है। अपराधी अभी तक पकड़ा नहीं गया है।

पुलिस की संख्या बढ़ा दी गई

लाहौर का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पञ्जाब-सरकार ने रोहतक ज़िले के बुराना नामक गाँव में पुलिस की संख्या बढ़ा देने के विषय में एक घोषणा प्रकाशित की है। सरकार का ख़्याल है कि उक्त स्थान के अशान्तिमय और ख़तरनाक वातावरण के कारण वहाँ अतिरिक्त-पुलिस की सख़्त ज़रूरत है।

बहिष्कार आन्दोलन का ज़बरदस्त प्रभाव !

भारत के व्यापार में ब्रिटेन का भयानक धक्का !!

४०० करोड़ रुपए का भयङ्कर घाटा !!!

सभ्य संसार जानता है, कि भारत के इस बहिष्कार आन्दोलन ने ब्रिटेन को कितनी हानि पहुँचाई है। साम्राज्यवादी देश का प्राण विदेशी व्यापार ही है। यदि यह व्यापार शान्तिपूर्ण उपायों से नष्ट हो जाय तो वह साम्राज्यवादी राष्ट्र बहुत दिनों तक जीता नहीं रह सकता। निम्न तालिका से यह स्पष्ट हो जायगा, कि बहिष्कार आन्दोलन का प्रभाव इङ्गलैण्ड के भारतीय व्यापार पर कितना भयङ्कर पड़ा है।

भारत में आने वाली चीज़ों का नाम	१९३० (नवम्बर तक) मिलियन पौण्ड	१९२९ से कितना कम मिलियन पौण्ड
सूती कपड़ों के टुकड़े और सूते	८२·५८२	४२·६८६
ऊनी कपड़े और सूते तथा बटे हुए ऊनी सूत	३४·६६६	१४·६४६
अन्य प्रकार के कपड़े	१८·४१७	६·४६२
लोहे और इस्पात की चीज़ें	४८·३४७	१४·३४२
रासायनिक वस्तुएँ, रङ्ग आदि	२०·४४७	३·६०१
पोशाक	१८·७२५	५·१५२
कल-पुर्ज़े	४३·५६६	६·५५५
अन्य धातु की वस्तुएँ	८·७८	४·८०२
इङ्गलैण्ड से बाहर जाने वाली कुल चीज़ें	४१२·११२	११७·११६

सारांश में कहा जा सकता है कि ब्रिटेन को अपने एक्सपोर्ट व्यापार से १३६ मिलियन पौण्ड का धक्का लगा है। इम्पोर्ट पर तो उसे १६० मिलियन पौण्ड की घटी हुई है। इस प्रकार उसे ३०० मिलियन पौण्ड अर्थात् ४०० करोड़ रुपयों का घाटा सहना पड़ा है।

अन्य प्रान्त—

—गत १५वीं फ़रवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि फूलपुर तहसील के एक गाँव में एक जुलूस निकाला गया। कहा जाता है कि पुलिस ने उस पर लाठी चलाई, और ख़ाली फ़ायरें कीं। अभी निश्चित रूप से इस घटना के सम्बन्ध में कुछ नहीं मालूम हुआ है।

—पेशावर का १३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि क़िस्साख़ानी बाज़ार में धरना देते समय ३ 'ख़ुदाई खिदमतगार' गिरफ़्तार कर लिए गए।

बर्मा-विद्रोह

रङ्गून का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बर्मा में विद्रोहियों का उत्पात अभी जारी है। कहा जाता है कि ९वीं फ़रवरी को पुलिस का लगभग ६० विद्रोहियों से मुठभेड़ हुआ। विद्रोही घने जङ्गलों में छिपे थे। वे अन्धकार में ग़ायब हो गए। पुलिस ने दो विद्रोहियों को गिरफ़्तार किया।

११वीं फ़रवरी को बाग़ियों ने अपर-बर्मा के एक जङ्गल में अङ्गरेज़ों के एक कैम्प पर धावा किया। अङ्गरेज़ गाँवों में भाग गए। सरकार को मदद देने के कारण वे करेन लोगों की हत्या कर रहे हैं।

—बिहार-उड़ीसा कौन्सिल में बजट पेश करते हुए अर्थ-सचिव ने कहा है, कि भद्र अवज्ञा आन्दोलन तथा अनाज की सस्ती के कारण, इस वर्ष प्रान्तीय सरकार को ५० लाख रुपए का टोटा रहा है।

राजवन्दिनी महिला को पैदल चल कर मार्ग तै करना पड़ा !

मुज़फ़्फ़रपुर का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती सुनीतिदेवी, जिन्हें ६ माह की सज़ा दी गई है, और जो 'सी' श्रेणी में रक्खी गई हैं, हाजीपुर जेल से मुज़फ़्फ़रपुर ज़िला जेल में लाई गईं। कहा जाता है कि रेलवे-स्टेशन से जेल तक, जो २ मील की दूरी पर है। उन्हें अन्य क़ैदियों के साथ पैदल ही लाया गया।

—मद्रास का ९वीं फ़रवरी का समाचार है कि १२-१३ स्वयंसेवकों ने गोडाउन स्ट्रीट पर पिकेटिङ्ग शुरू किया, किन्तु पुलिस ने पहुँच कर, बलपूर्वक उन्हें हटा दिया। स्वयंसेवकों ने अपना कार्य जारी रखने की चेष्टा की, पर वे हटा दिए गए।

रतन बाज़ार में भी, स्वयंसेवकों ने धरना दिया। पुलिस ने पहुँच कर, कहा जाता है, पैर पकड़ कर उन्हें घसीटा। दो स्वयंसेवकों ने हटने से इन्कार किया, और वे वहीं बैठ गए। पुलिस ने लाठियों से उनकी ख़बर ली। अन्य स्वयंसेवकों को भी पुलिस ने टाँग पकड़ कर घसीटा और लाठियों से पीटा। तीन स्वयंसेवक बुरी तरह घायल हो गए। वे अस्पताल भेजे गए हैं।

—रङ्गून का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बर्मा की १२९ संस्थाएँ जिनमें 'जेनरल कौन्सिल ऑफ़ बर्मा एसोसिएशन' भी शामिल है, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट के अनुसार ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई हैं। सरकार की समझ में, बर्मा के वर्तमान विद्रोह से इनका घनिष्ट सम्बन्ध रहा है।

झण्डे पर आक्रमण

कानपुर का १०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के कलक्टर, डिप्टी कलक्टर और तहसीलदार—सभी बिल्हौर तहसील में भ्रमण करने निकले थे। कहा जाता है, कि जहाँ कहीं वे राष्ट्रीय झण्डा देखते, उसे तुरन्त हटा देने की आज्ञा देते थे। २७वीं जनवरी को उन्होंने अनेक स्थानों के राष्ट्रीय झण्डे को इकट्ठा कर टुकड़े-टुकड़े करवा डाला था।

कहा जाता है, कि तरबियतपुर में एक स्वयंसेवक को सब-इन्स्पेक्टर ने ख़ूब पीटा, जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया। इसी बदहोशी की हालत में उससे एक प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कराया गया, जिसमें लिखा था, कि 'हम भविष्य में कॉङ्ग्रेस-कार्यों में भाग न लेंगे।'

सहबासू में झण्डों पर स्वयंसेवकों का पहरा रहता था, कलक्टर साहब ने वहाँ पहुँच कर उन पहरा देने वाले स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया। उसके बाद झण्डे हटा लिए गए।

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

भगतसिंह की जीवन-भिक्षा के लिए भारतव्यापी आन्दोलन

नेहरू जी के शोक में 'षड्यन्त्रकारी' काले बैज लगा कर अदालत गए !

'आतिशी-चक्कर' के अद्भुत करश्मे :: षड्यन्त्रकारियों के तीन दल थे !

"मुझे दाढ़ी वाले पटेल और दूसरे पटेल की पहचान नहीं"—मुख़बिर वसौंधाराम

कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी से जनता की अपील :: लाहौर में विराट सभा !

यूनिवर्सिटी हॉल षड्यन्त्र-केस

मुख़बिर का सनसनीपूर्ण बयान

लाहौर में १२वीं फ़रवरी को यूनिवर्सिटी षड्यन्त्र-केस के अन्य तीन अभियुक्तों की कार्यवाही मि० रामनाथ लुथरा मैजिस्ट्रेट की अदालत में प्रारम्भ हुई। इन अभियुक्तों में लॉ-कॉलेज के दो विद्यार्थी श्री० रणवीरसिंह और श्री० दुर्गादास और मर्दान-निवासी श्री० चमनलाल सम्मिलित हैं। इन पर दण्ड-विधान की ३०२, ३०४ और १२०वीं धाराओं के अनुसार हत्या, हत्या के षड्यन्त्र और हत्या करने के लिए उकसाने के अभियोग लगाए गए हैं।

पाठकों को याद होगा, कि २३वीं दिसम्बर को पञ्जाब यूनिवर्सिटी के उपाधि-वितरण उत्सव समाप्त होने पर जब गवर्नर सर ज्योफ़्रे मान्टमोरेन्सी यूनिवर्सिटी हॉल से बाहर निकल रहे थे, तब उनकी हत्या करने के लिए छः गोलियाँ दाग़ी गई थीं, जिसके फल-स्वरूप पञ्जाब-गवर्नर और दो अन्य व्यक्ति घायल हुए थे तथा पुलिस का एक सब-इन्सपेक्टर मारा गया था। अभियुक्त हरिकिशन को, जो गोली चलाते हुए पकड़ा गया था, गत २६वीं जनवरी को सेशन्स जज द्वारा फाँसी की सज़ा दी जा चुकी है और उपर्युक्त तीन अभियुक्तों के विरुद्ध भी हाल ही में कार्यवाही प्रारम्भ की गई है। १२वीं फ़रवरी को कार्यवाही प्रारम्भ होने पर सनातनधर्म कॉलेज लाहौर के एक विद्यार्थी वासन्धराम ने, जो मुख़बिर हो गया है, अपना बयान दिया। अपने बयान में उसने कहा, कि मैंने गत वर्ष के प्रारम्भ में ब्रेडला हॉल में 'स्टूडेण्ट्स यूनियन' की बैठक में भाग लिया था। अभियुक्त दुर्गादास ने मुझसे कहा, कि केवल प्रस्ताव पास करने से कोई काम न चलेगा, हमें कुछ ठोस काम भी करना चाहिए। उसने कहा कि भगतसिंह और दत्त ने बिना किसी कार्य के देश की अपूर्व सेवा की है। उसने मुझसे यह भी कहा कि हर एक नवयुवक को उनके पथ का अवलम्बन करना चाहिए। हम दोनों ने एक-दूसरे के पते नोट किए। दुर्गादास ने मुझसे कहा कि महात्मा गाँधी का अहिंसात्मक आन्दोलन निरर्थक है और उसका ब्रिटिश लोगों पर कोई प्रभाव न होगा। इससे मेरी मनोवृत्तियाँ भड़क उठीं। कुछ दिनों के बाद दुर्गादास मुझसे फिर मिला और उसने कहा कि राष्ट्रीय कार्य करने के पहले मुझे कुछ अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। सन् १९३० के मार्च में 'स्टूडेण्ट्स यूनियन' की बैठक में दुर्गादास मुझसे फिर मिला और उसने वहाँ मेरी रणवीर सिंह अभियुक्त से मुलाक़ात करवाई। इसके बाद गत वर्ष गर्मियों की छुट्टी के अन्त में जब मेरी दुर्गादास से मुलाक़ात हुई, तब उसने मुझसे कहा, कि भगतसिंह और दत्त का क्रान्तिकारी दल अभी तक जीवित है और वह स्वयं उसका सदस्य हो गया है; उसने मुझसे भी उसका सदस्य होने के लिए कहा।

षड्यन्त्रकारियों के तीन दल

उसने मुझसे कहा कि षड्यन्त्रकारी दल तीन भागों में विभक्त किया गया है; पहले भाग में वे सदस्य हैं, जो देश के लिए अपना जीवन देने के लिए तैयार हो चुके हैं। दूसरे भाग में वे सदस्य सम्मिलित हैं, जिनकी पहले दल से सहानुभूति है और वे उनके कार्यों में सहायता पहुँचाया करते हैं। तीसरे दल के सदस्य क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया करते हैं। उसने कहा, कि इस दल का उद्देश्य विदेशी शासन का अन्त कर ऐसे स्वराज्य की स्थापना करना है, जिसमें ग़रीब-अमीर और छोटे-बड़े सभी लोगों के साथ सामान्य व्यवहार हो। इसके बाद दुर्गादास ने दल की कुछ अन्य बातों की चर्चा की। उसने कहा, कि दल के नियमों का पालन बड़ी सख़्ती से करना पड़ता है और दल के नेताओं की आज्ञा का पालन करना नितान्त आवश्यक है। दुर्गादास दल का पहली श्रेणी का सदस्य था। उसने मुझसे भी दल में सम्मिलित होने के लिए कहा। मैंने उत्तर में कहा, कि मेरी स्थिति ऐसी नहीं है, कि मैं दल में सम्मिलित हो सकूँ तिस पर भी मैंने उसमें सम्मिलित होने का तथा भरसक दल की सहायता का वचन दे दिया। दुर्गादास ने मुझसे सब बातें गुप्त रखने को कहा।

हरिकिशन से मुलाक़ात

वासन्धराम मुख़बिर ने कहा, कि १९वीं दिसम्बर को अभियुक्त दुर्गादास मेरे पास एक रिवॉल्वर, एक बम और कुछ कारतूस रख गया और उसने मुझसे अगले दिन दोपहर से सन्ध्या तक घर पर ही रहने के लिए कहा। २०वीं दिसम्बर को दोपहर के बाद दुर्गादास एक व्यक्ति के साथ मेरे घर पर आया और उसने मुझे उस व्यक्ति का नाम रामलाल बतलाया। परन्तु मुझे बाद में मालूम हो गया, कि वह हरिकिशन था। मुख़बिर ने मैजिस्ट्रेट के सम्मुख हरिकिशन को शनाख़्त-परेड में भी शनाख़्त किया था। उसने फिर कहना प्रारम्भ किया, कि २१वीं दिसम्बर को रणवीरसिंह और दुर्गादास मेरे घर आए थे। उस समय हरिकिशन मुझसे बातचीत कर रहा था। रणवीरसिंह ने कहा, कि विप्लव-दल ने पञ्जाब के दल को भड़काने और नवयुवकों में उत्साह और स्फूर्ति लाने के लिए एक बड़े षड्यन्त्र की योजना की है और यह निश्चय किया गया है, कि जब २३वीं दिसम्बर को पञ्जाब के गवर्नर यूनिवर्सिटी के उपाधि-वितरण के उत्सव के अवसर पर यूनिवर्सिटी-हॉल में जावें, तब वहाँ उन्हें जान से मार डाला जाय। उसने यह भी कहा कि दल ने बहुत सोच-विचार कर इस कार्य के लिए हरिकिशन को नियुक्त किया है। मुझसे यह भी कहा गया, कि यदि मैं इस गुप्त रहस्य को खोलूँगा तो दल के नियमों के अनुसार मुझे गोली से उड़ा दिया जायगा। रणवीरसिंह और दुर्गादास ने मुझसे अगले दिन सवेरे ७ बजे हरिकिशन से यूनीवर्सिटी हॉल के सामने मिलने के लिए कहा। उनके आदेशानुसार २२वीं दिसम्बर को मैं निश्चित स्थान पर पहुँच गया। रणवीर ज़मज़मा-तोप के पास हरिकिशन की बाट जोह रहे थे। हरिकिशन रणवीरसिंह के साथ यूनिवर्सिटी हॉल की ओर चला गया और मैं अपने घर वापस लौट आया। लौटने पर हरिकिशन ने मुझसे कहा कि रणवीर ने उसे यूनिवर्सिटी हॉल बतला दिया है। सन्ध्या-समय दुर्गादास ने मुझसे हरिकिशन के लिए बाज़ार से नए कपड़े बनवाने के लिए कहा और उसके लिए उसने मुझे कुछ रुपए भी दिए। कपड़ों की आवश्यकता २३वीं दिसम्बर के लिए थी। एक दिन पहले दुर्गादास ने हरिकिशन को मेरे सामने एक रिवॉल्वर और बारह कारतूस दिए। यूनिवर्सिटी हॉल हत्याकाण्ड में 'वेबले' (Webley) रिवॉल्वर का उपयोग किया गया था।

१४वीं फ़रवरी को वासन्धराम मुख़बिर ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि दोपहर के तीन बजे श्री० रणवीरसिंह एक कैमरा लेकर मेरे मकान पर आए। श्री० हरिकिशन उस समय मेरे मकान पर थे। रणवीरसिंह ने हरिकिशन के तीन-चार फ़ोटो उतारे।

रणवीरसिंह जब चला गया, तो मैं और हरिकिशन ताश खेलने लगे। सन्ध्या के समय दुर्गादास आया तो हरिकिशन ने कहा कि मुझे दस्ताने मँगवा दो, क्योंकि सवेरे सरदी बहुत पड़ती है, और काम करने में सुविधा न होगी। दुर्गादास ने मुझे दस्ताने ला देने को कहा। मैं साईकल लेकर बाज़ार गया और वहाँ से दस्ताने ख़रीद लाया और दरज़ी से कह भी दिया कि कपड़े जल्दी तैयार कर दे।

रात को हरिकिशन मेरे मकान पर ही रहा। दूसरे दिन बहुत सवेरे दुर्गादास आया और उसने अपनी जेब से कन्वोकेशन का एक टिकट निकाला। मैंने उस टिकट पर, दुर्गादास के आदेशानुसार, 'मुहम्मद यूसुफ़' लिख दिया। गवाह ने कचहरी में कार्ड पहचाना और कहा कि इस पर नाम मेरे हाथ का लिखा हुआ है।

हरिकिशन कपड़े पहन कर तैयार हो चुका था। उसने कार्ड अपनी जेब में डाला और पिस्तौल पुराने कोट

लाहौर-काण्ड में आजीवन कारावास-दण्ड पाने वाले

(जिनकी अपील प्रिवी कौन्सिल ने ११ फ़रवरी को नामञ्ज़ूर कर दी है)

श्री० गयाप्रसाद

श्री० महावीर सिंह
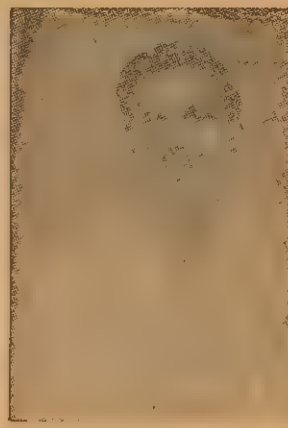
श्री० विजयकुमार सिनहा

श्री० कमलनाथ तिवारी

की जेब में से निकाल कर अपने पाजामे में छुपा लिया। कारतूस उसने जेब में भर लिए।

दुर्गादास ने हरिकृष्ण को कहा कि तुम साढ़े दस बजे यहाँ से चले आना। दुर्गादास ने कुछ पैसे हरिकृष्ण को ताँगे के लिए दिए। फिर मुझे कहा कि मैं भी हरिकृष्ण के चले जाने के बाद मकान छोड़ कर चला जाऊँ।

इसके पश्चात् दुर्गादास और हरिकृष्ण गले मिले। दुर्गादास ने कहा, कि यदि आज सफलता न भी प्राप्त हुई, तो भी तहलका मच जाएगा और दुनिया हैरान हो जाएगी।

इसके पश्चात् हरिकृष्ण और दुर्गादास चले गए। मैं रणवीरसिंह से 'मिलाप' के दफ़्तर में मिला और फिर मैं ताँवलियावाले चला गया। २८ दिसम्बर को पुलिस आई और मुझे गिरफ़्तार कर लिया गया। मैंने अपना बयान मैजिस्ट्रेट के सामने दिया और पुलिस ने मुझे इक़बाली गवाह बना कर क्षमा-प्रदान की।

इसके पश्चात् दुर्गादास के वकील लाला रघुनाथ-सहाय ने गवाह से जिरह की।

वकील—आप २९ तारीख़ को किस समय गिरफ़्तार हुए?

गवाह—२९ तारीख़ को ११ बजे।

वकील—आपका बाप क्या काम करता है?

गवाह—मेरा बाप कोई काम नहीं करता। दूकान पर ख़ाली बैठा रहता है।

वकील—दिसम्बर १९२९ में तुम कॉङ्ग्रेस देखने गए थे?

गवाह—मैं दर्शक बन कर पण्डाल में जाया करता था।

वकील—कॉङ्ग्रेस कैम्प में गए थे या पण्डाल में?

गवाह—मैं सब जगह जाया करता था। मैंने पटेल का लेक्चर सुना था।

'दाढ़ी वाला पटेल'

वकील—क्या महात्मा जी वहाँ पर थे?

गवाह—वह उस समय वहाँ पर नहीं थे। किसी दूसरे कैम्प में होंगे।

वकील—पटेल दाढ़ी वाला था या दूसरा?

गवाह—पटेल अवश्य था, परन्तु लेजिस्लेटिव एसेम्बली वाला नहीं था।

वकील—वक्ता के दाढ़ी थी या नहीं?

गवाह—मैं दूर खड़ा था, दाढ़ी को देख नहीं सका।

वकील—कॉङ्ग्रेस का लेक्चर सुनने जाते थे, उसके सम्बन्ध में तुम्हारे क्या विचार थे?

गवाह—मैं कॉङ्ग्रेस का भगत था। अब भी हूँ। परन्तु मैं प्रस्तावों को पसन्द नहीं करता।

वकील—इसलिए कि ठोस काम नहीं होता?

गवाह—इसलिए, कि लोग प्रस्तावों का अनुसरण नहीं करते।

वकील—आपको स्टूडेण्ट्स यूनियन का कब पता लगा?

गवाह—लाहौर में आने से पहले मुझे स्टूडेण्ट्स यूनियन का पता लग चुका था।

वकील—क्या आप यूनियन के प्रेज़िडेण्ट या मन्त्री को जानते थे?

गवाह—मुझे पता था कि मिस ज़ुत्शी प्रेज़िडेण्ट हैं।

वकील—कॉङ्ग्रेस के पण्डाल में कोई किताबें भी बिकती थीं?

गवाह—हाँ

वकील—तुमने कोई पुस्तक पढ़ने के लिए ख़रीदी?

गवाह—नहीं।

"हिंसात्मक और अहिंसात्मक कॉङ्ग्रेस"

वकील—कॉङ्ग्रेस-आन्दोलन के सम्बन्ध में तुमने कोई पुस्तक पढ़ी थी या नहीं?

गवाह—मैंने मूल्य ख़र्च करके कोई पुस्तक नहीं पढ़ी।

वकील—आज तक तुमने कॉङ्ग्रेस के सम्बन्ध में कोई पुस्तक पढ़ी है या नहीं?

गवाह—आप किस कॉङ्ग्रेस के सम्बन्ध में पूछ रहे हैं। हिंसात्मक कॉङ्ग्रेस अथवा अहिंसात्मक कॉङ्ग्रेस?

वकील—हिंसात्मक कॉङ्ग्रेस के सम्बन्ध में कोई पुस्तक पढ़ी है?

गवाह—'बन्दी-जीवन' पढ़ा है।

वकील—गाँधी वाली कॉङ्ग्रेस के सम्बन्ध में कोई पुस्तक पढ़ी है?

गवाह—नहीं।

"कच्चे और पक्के क्रान्तिकारी"

वकील—आप क्रान्तिकारी दल के मेम्बर कब बने?

गवाह—मैं नौकरी ढूँढने लाहौर आया था। वह अगस्त १९३० का महीना था। इस समय मैं क्रान्तिकारी दल का मेम्बर बना।

वकील—कच्चे क्रान्तिकारी कब थे?

गवाह—जब मैं दसवीं श्रेणी में पढ़ता था तो मैं कच्चा क्रान्तिकारी था।

वकील—आपको पता था, कि ख़ुफ़िया पुलिस वाले क्रान्तिकारियों की खोज में रहते हैं?

गवाह—हाँ।

वकील—आपको पता था, कि ऐसे गुप्तचर स्टूडेण्ट्स यूनियन में भी हैं?

गवाह—मैं यह नहीं जानता था, कि वह हमारे पास आकर बैठ जाते हैं। मैं तो यह समझता था कि 'फकीराँ दे भेस विच लगे वड़े फिरदे सान्। एताँ मैं न जानदा सी कि लड़कियाँ दे भेस विच भी लगे वड़े फिरदेहन।'

मामला स्थगित कर दिया गया।

* * *

"भगतसिंह की फाँसी की सज़ा रद्द करो"

कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी से अपील

लाहौर में विराट सभा

लाहौर का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ उस दिन 'भगतसिंह अपील कमिटी' की अध्यक्षता में एक विराट सभा हुई, जिसमें सर्दार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और श्री० सुखदेव की फाँसी की सज़ा रद्द करने के सम्बन्ध में निम्न प्रस्ताव पास हुए :—

"लाहौर के नागरिकों की यह सभा निश्चय करती है कि देश की वर्तमान परिस्थिति में, उस समय तक कोई सन्धि नहीं हो सकती, जब तक—(१) सन् १९१४-१९१५ से लेकर आज तक के हिंसात्मक तथा अहिंसात्मक—सभी क़ैदी युद्ध के क़ैदी समझ कर, छोड़ न दिए जायँ। (२) भारत भर के सब षड्यन्त्रों के मामले न उठा लिए जायँ। (३) दमन-नीति का अन्त न होगा और ऑर्डिनेन्स रद्द न किए जायँगे, और (४) जब तक सर्दार भगतसिंह, श्री० शिवराम राजगुरु, श्री० सुखदेव और अन्य अभियुक्तों की फाँसी की सज़ा रद्द न की जाय।" यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास हुआ। एक दूसरा प्रस्ताव इस आशय का भी पास हुआ :—

"यह भी निश्चय किया जाता है, कि उपर्युक्त प्रस्ताव की एक प्रति भारतीय कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी को भेजी जाय और उसके सदस्यों से प्रार्थना की जाय, कि जब तक उपर्युक्त शर्तें गवर्नमेण्ट मञ्ज़ूर न करे, तब तक कोई सन्धि-प्रस्ताव स्वीकार न किया जाय।" इस सम्बन्ध में वायसराय से भी प्रार्थना की गई है।

* * *

जीवन और मृत्यु के बीच में—

(जिनकी अपील प्रिवी-कौन्सिल ने ११ फ़रवरी को नामञ्ज़ूर कर दी)

श्री० राजगुरु

सरदार भगतसिंह

श्री० सुखदेव

सरदार भगतसिंह की अपील नामञ्ज़ूर

लन्दन का ११वीं फ़रवरी का समाचार है, कि लाहौर षड्यन्त्र-केस ट्रिब्यूनल द्वारा सन् १९३० की ७वीं अक्टूबर को किए गए १२ अभियुक्तों के फ़ैसले के विरुद्ध प्रिवी कौन्सिल में जो अपील की गई थी, वह रद कर दी गई। अपील में यह कारण दिखाया गया था, कि ट्रिब्यूनल का निर्माण तथा उसकी कार्यवाही 'गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया एक्ट' की ७२वीं धारा के विरुद्ध थी। उसमें यह भी बतलाया गया था कि इस मामले में ऐसी कोई विशेषता न थी, जिसके कारण ऑर्डिनेन्स लगाने की आवश्यकता प्रतीत हो और इसलिए इस मामले में ऑर्डिनेन्स लगाना गवर्नर-जनरल के अधिकार के बाहर था। दरख़्वास्त के सम्बन्ध में मि० के० सी० प्रिट का वक्तव्य समाप्त होने पर सरकारी वकील को बिना बुलाए ही प्रिवी कौन्सिल ने अपील रद कर दी। अपील का पूरा फ़ैसला भी उस समय नहीं सुनाया गया। इस मामले के १२ अभियुक्तों में से सर्दार भगतसिंह, श्री० सुखदेव, और श्री० राजगुरु को फाँसी की सज़ा, श्री० किशोरी लाल, महावीरसिंह, विजय कुमार सिनहा, शिव वर्मा, गयाप्रसाद,जयदेव और कमलनाथ तिवारी को आजन्म कालेपानी की सज़ा और कुन्दनलाल तथा प्रेमदत्त को क्रमशः सात और पाँच वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई थी।

"फाँसी की सज़ा रद करो"

नेताओं की अपील

महामना मालवीय जी का वायसराय को तार

मालूम हुआ है, कि १४वीं फ़रवरी को इलाहाबाद से पण्डित मदनमोहन मालवीय ने वायसराय को एक तार भेजा है, जिसमें उन्होंने सरदार भगतसिंह और श्री० राजगुरु की फाँसी की सज़ाएँ रद करने की अपील की है।

श्री० सेन गुप्ता का वक्तव्य

इलाहाबाद में १४वीं फ़रवरी को श्री० जे० एम० सेन गुप्ता ने एसोसिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि से मुलाक़ात में कहा है, कि चाहे महात्मा गाँधी और लॉर्ड इर्विन में सन्धि हो या न हो ; परन्तु जब कभी कॉङ्ग्रेस और गवर्नमेण्ट में सन्धि की आयोजना होगी, तभी पञ्जाब और बङ्गाल के क्रान्तिकारियों की फाँसी से उसमें भयङ्कर बाधा आएगी। और यद्यपि कॉङ्ग्रेस उनके हिंसात्मक सिद्धान्तों से सहमत नहीं है, तो भी सन्धि के योग्य शान्त वातावरण बनाने के लिए उनकी फाँसी की सज़ा रद कर देना अतीव आवश्यक है।

अमृतसर के १०,००० नागरिकों की प्रार्थना

अमृतसर का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'भगतसिंह अपील कमिटी' के सेक्रेटरी ने पत्रों को सूचित किया है कि वहाँ के १०,००० नागरिकों ने उस प्रार्थना-पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसमें वायसराय से सर्दार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और श्री० सुखदेव की फाँसी की सज़ा रद करने की प्रार्थना की गई है। सेक्रेटरी ने यह भी सूचित किया है, कि इस सम्बन्ध में वायसराय और राष्ट्रपति जवाहरलाल को यहाँ की बहुत सी संस्थाओं ने भी ७० से ऊपर तार भेजे हैं।

६ घण्टों में १५,००० व्यक्तियों के दस्तख़त

दिल्ली का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के १२,००० व्यक्तियों ने वायसराय से सर्दार भगतसिंह, श्री० सुखदेव और श्री० राजगुरु की फाँसी की सज़ा रद कर देने की प्रार्थना की है। इतने व्यक्तियों के दस्तख़त प्रार्थना-पत्र पर केवल छः घण्टे में लिए गए थे। दस्तख़त करने वालों में असेम्बली के मेम्बर, वकील, बैरिस्टर, म्युनिसिपैलिटी के सदस्य, विद्यार्थी और अन्य सभी श्रेणियों के लोग सम्मिलित हैं। मि० चमनलाल स्वयं प्रार्थना-पत्र वायसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी को देंगे। मालूम हुआ है कि १२,००० और व्यक्ति उस पर हस्ताक्षर करेंगे। मङ्गलवार को दिल्ली के नागरिकों की एक सभा हुई थी, जिसमें असेम्बली के कई सदस्यों ने इस बात की घोषणा की कि वे सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और सुखदेव की फाँसी की सज़ा रद करने पर असेम्बली में विशेष ज़ोर देंगे।

स० भगतसिंह से जेल में मुलाक़ात

वे प्रसन्न-चित्त हैं

लाहौर का १४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सरदार भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह और अन्य रिश्तेदार सेण्ट्रल जेल में भगतसिंह तथा सुखदेव से मिलने गए थे। दोनों व्यक्ति ख़ूब प्रसन्नचित्त थे। उन्होंने कहा कि उन्हें प्रिवी कौन्सिल से अपील रद होने के समाचार कल मिल चुके हैं। सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और श्री० सुखदेव अभी सेण्ट्रल जेल ही में हैं। यह ख़बर, कि सुखदेव मियाँवाली जेल में भेज दिए गए हैं, बिलकुल ग़लत है।

क्या सरदार भगतसिंह नए षड्यन्त्र केस के गवाह बनेंगे ?

१६वीं फ़रवरी को, मुख़बिर, इन्द्रपाल ने कहा—कि हंसराज के आदेश के अनुसार मैंने १२वीं तथा १३वीं जून को सात छोटे और बड़े बम तैयार किए। छोटे बम पुलिस को घरों में बुलाने के लिए और बड़े बम उन्हें घायल करने के लिए थे।

जलपान के अनन्तर अभियुक्तों के वकील मि० शामलाल ने ट्रिब्यूनल के सम्मुख इस आशय की एक दरख़्वास्त पेश की कि सॉण्डर्स हत्या-केस के अभियुक्त सरदार भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु की फाँसी की सज़ा स्थगित कर दी जाय क्योंकि उनकी गवाही की इस केस में बहुत आवश्यकता पड़ेगी। वकील ने यह भी कहा, कि चूँकि ट्रिब्यूनल को सज़ा स्थगित करने का अधिकार नहीं है, प्रान्तीय गवर्नमेण्ट को इस आशय की एक दरख़्वास्त दे दी गई है, कि ट्रिब्यूनल को इस केस में अभियुक्तों की गवाही लेने का अधिकार है और उन्हें अदालत के सम्मुख उपस्थित करने की यथासमय प्रार्थना की जायगी। यदि उन्हें फाँसी की सज़ा दे दी जायगी, तो इस केस के अभियुक्तों को अपनी रक्षा करना कठिन हो जायगा। ट्रिब्यूनल के प्रेज़िडेण्ट ने वकील से अगले दिन एक दरख़्वास्त देने के लिए कहा।

पहिले अभियुक्तों के वकील मि० शामलाल ने पञ्जाब गवर्नमेण्ट के होम-सेक्रेटरी और जेलों के इन्स्पेक्टर-जनरल को एक तार भेजा था, जिसमें उन्होंने यह लिखा है कि नए षड्यन्त्र-केस में निम्न बातों में सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव की गवाही की आवश्यकता पड़ेगी। वादी का कहना है (१) कि अभियुक्त उस षड्यन्त्रकारी-दल के सदस्य थे, जिसमें भगतसिंह और अन्य अभियुक्त सम्मिलित थे, (२) यह कि वायसराय

की स्पेशल ट्रेन को उलटने का प्रयत्न भगतसिंह की सलाह से किया गया था; और (३) यह कि भगतसिंह और दूसरे अभियुक्तों को बचाने का प्रयत्न उन्हीं के आदेश पर किया गया था और उन्होंने जेल की लॉरी पर से अपने छुड़ाने वालों को देखा भी था। अभियुक्त इन अभियोगों का विरोध करना चाहते हैं और यह उस समय तक सम्भव नहीं है, जब तक वे अदालत के सम्मुख पेश न किए जायँ। उनका अदालत में गवाही देना उस समय तक असम्भव है जब तक उनकी फाँसी की सज़ा स्थगित न कर दी जाय।

"क्या सरकार अपने हित के लिए भगतसिंह की फाँसी रोकेगी?"

"पूछी ज़मीन की, कही आस्मान की"

एसेम्बली में सर जेम्स का ऊटपटाङ्ग उत्तर

नई देहली का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज श्री० भगतरामपुरी ने प्रिवी कौन्सिल से सरदार भगतसिंह की अपील रद्द किए जाने के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो सर जेम्स क्रेरर सरकारी मेम्बर ने उत्तर दिया, कि ५ फ़रवरी को सर जॉर्ज रेनी ने सरकार की नीति की व्याख्या कर दी है। (पाठकों को स्मरण होगा, सर जॉर्ज रेनी ने ५वीं फ़रवरी को एसेम्बली में वक्तृता देते हुए कहा था, कि सरकार हिंसात्मक क्रान्ति के अभियुक्तों के साथ किसी प्रकार का समझौता करने को तैयार नहीं है—सम्पादक) सरकार को यदि कोई दया के लिए प्रार्थना-पत्र दिया गया तो उस पर विचार किया जाएगा।

श्री० कबीरुद्दीन अहमद—क्या सरकार वकीलों की उस राय का ध्यान रख कर, जिसमें यह कहा गया है कि फाँसी के हुक्म पर केवल निर्णय करने वाले ट्रिब्यूनल को ही हस्ताक्षर करने का अधिकार प्राप्त था, फाँसी रोकेगी?

कोई उत्तर नहीं दिया गया।

श्री० कबीरुद्दीन अहमद—क्या सरकार अपने हित का ध्यान रखते हुए फाँसी की सज़ा रोकेगी, क्योंकि अन्यथा इस कायदे का ज़िम्मा सरकार पर रहेगा, और क्या सरकार लॉ-मेम्बर तथा दूसरे क़ानूनज्ञों की इस विषय में सलाह लेगी?

सर जेम्स क्रेरर ने कहा कि मैंने जो उत्तर दिया है वही पर्याप्त है।

श्री० गयाप्रसाद सिंह—क्या सरकार यह बताएगी, कि फाँसी किस तारीख़ को दी जाएगी?

सर क्रेरर—मैं कुछ भी और बताने में असमर्थ हूँ।

श्री० बी० पी० सिंह—क्या अगिनत प्रार्थना-पत्रों का ध्यान रखते हुए सरकार फाँसी की सज़ा रोकेगी?

सर जेम्स क्रेरर—मुझे दुःख है कि मैं कुछ भी और कहने में असमर्थ हूँ।

* * *

मुक़द्दमे का संक्षिप्त इतिहास

मुक़द्दमे की कार्यवाही सन् १९२९ की १०वीं जुलाई को स्पेशल मैजिस्ट्रेट राय साहब पण्डित श्रीकृष्ण की अदालत में प्रारम्भ हुई थी। मुक़द्दमा २४ व्यक्तियों पर चलाया गया था, जिनमें से पाँच लापता थे। अभियुक्तों पर सन् १९२८ की १७वीं दिसम्बर को लाहौर में पुलिस के असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० सॉण्डर्स और हेड-कॉन्स्टेबिल चनन सिंह की हत्या, लाहौर और सहारनपुर में बम-फ़ैक्टरियाँ स्थापित करने, सन् १९२९ की ८वीं अप्रैल को असेम्बली में दो बम फेंकने और इसी प्रकार की कई अन्य षड्यन्त्रकारी कार्यवाहियों के अभियोग लगाए गए थे। इन अभियोगों को सबूत करने के लिए सरकार की ओर से ६०० गवाहों की लिस्ट पेश की गई थी।

इस मुक़द्दमे की कार्यवाही प्रारम्भ होने के पहिले ही श्री० बटुकेश्वर दत्त और सरदार भगतसिंह ने, जो इस मामले में अभियुक्त बनाए गए थे और जो उस समय असेम्बली बम-केस के निर्णय के अनुसार आजन्म कालेपानी की सज़ा भोग रहे थे, राजनैतिक क़ैदियों के साथ जेल में दुर्व्यवहार होने के कारण अनशन प्रारम्भ कर दिया। अन्य अभियुक्तों ने भी उन्हीं के साथ अनशन प्रारम्भ किया और उसके परिणाम-स्वरूप अभियुक्तों की निर्बलता के कारण सन् १९२९ की २६वीं जुलाई को मामला स्थगित कर देना पड़ा। इसी प्रकार २४वीं सितम्बर तक मामला स्थगित होता रहा।

मुक़द्दमे के अभियुक्तों के अनशन ने देश में अत्यन्त हलचल उत्पन्न कर दी; यहाँ तक कि गवर्नमेण्ट का सिंहासन भी हिल गया और उसने राजनैतिक क़ैदियों के साथ उत्तम व्यवहार करने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। बाद में गवर्नमेण्ट ने क़ैदियों के लिए जिन तीन श्रेणियों की घोषणा की थी, वह अभियुक्तों के इसी अनशन का फल था। इसी के कारण श्री० यतीन्द्रनाथ दास ने ६३ दिन तक निराहार घुल-घुल कर अपने प्राण दिए थे।

सन् १९३० की ४थी फ़रवरी को अधिकांश अभियुक्तों ने फिर अनशन प्रारम्भ कर दिया और इस कारण मामला फिर ८वीं फ़रवरी से ८वीं मार्च तक स्थगित कर दिया गया। उसके बाद उस दिन से लेकर अप्रैल के अन्त तक मुक़द्दमे की कार्यवाही नित्यप्रति होती रही है। इस कार्यवाही के बीच में वादी की ओर से कार्यवाही संक्षिप्त करने के लिए अपील भी की गई, परन्तु वह रद्द कर दी गई।

सन् १९३० की १ली मई को वायसराय महोदय ने '१९३० का तीसरा ऑर्डिनेन्स' निकाला, जिसके अनुसार मामले की कार्यवाही का अधिकार हाईकोर्ट के तीन जजों के एक ट्रिब्यूनल के हाथों में सौंप दिया गया। स्पेशल ट्रिब्यूनल में मि० जस्टिस हिल्टन, मि० जस्टिस टैप और जस्टिस सर अब्दुल क़ादिर सम्मिलित थे। अभियुक्तों ने मामले की कार्यवाही में भाग लेने से साफ़ इन्कार कर दिया। उन्होंने न तो सरकारी गवाहों से कोई जिरह की और न अपनी रक्षा के लिए ही कोई कार्यवाही की। कार्यवाही उनकी अनुपस्थिति में होती रही और सन् १९३० की ७वीं अक्टूबर को अभियुक्तों के भाग्य का फ़ैसला कर दिया गया। ट्रिब्यूनल ने उन्हें उपर्युक्त अभियोगों के अनुसार विभिन्न सज़ाएँ दीं, जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है।

* * *

नया लाहौर षड्यन्त्र-केस

बमों का सफल प्रयोग

पं० मोतीलाल के शोक में अभियुक्तों का काले 'बैज' लगा कर अदालत में प्रवेश

लाहौर में ११वीं फ़रवरी को, जब नए लाहौर षड्यन्त्र-केस की कार्यवाही स्पेशल ट्रिब्यूनल के सम्मुख पुनः प्रारम्भ हुई। उस दिन केस के सभी अभियुक्त पण्डित मोतीलाल की मृत्यु के शोक में अपनी बाँहों पर शोक-सूचक काला कपड़ा बाँध कर अदालत गए थे।

मुख़बिर इन्द्रपाल ने अपना बयान जारी करते हुए कहा, कि चन्द्रशेखर ने मुझसे हंसराज उर्फ़ 'वायरलैस' से जाकर यह कहने को कहा, कि निश्चित षड्यन्त्र की कार्यवाही पूर्ण हो जाने के बाद वे 'हिन्दुस्तान सोशियालिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' के नाम से इश्तहार न निकाला करें वरन्, पञ्जाब के दूसरे षड्यन्त्रकारी दल के नाम से निकाला करें। श्री० चन्द्रशेखर आज़ाद ने मुझसे हंसराज से उन सब सदस्यों के नाम भी बतला देने के लिए कहा, जो मेरे नीचे कार्य कर रहे थे; क्योंकि हंसराज पञ्जाब के दल का सञ्चालक था। सरनदास मुख़बिर और प्रेमनाथ मेरे नीचे कार्य करते थे। मैं इसके बाद बैठक में आया और मैंने गुलाबसिंह और अन्य अभियुक्तों को बहावलपुर रोड पर एक घर में बम फटने का समाचार दिया। मैं बहावलपुर रोड के घर पर गया और वहाँ देखा कि पुलिस तहक़ीकात कर रही थी। मैंने पुलिस के वहाँ पहुँचने की सूचना चन्द्रशेखर और यशपाल को दी।

"आतिशी चक्कर"

१ली जून को यशपाल 'दीदी' नाम की स्त्री के साथ मेरे घर आया और २री जून को चला गया। पुलिस की तहक़ीकात के समय मुझे मालूम हुआ, कि उसका नाम सुशीला है।

२री जून को जब मैं बैठक में गया, तब मैंने हंसराज, अमीरचन्द और रूपचन्द को वहाँ बैठा हुआ पाया। मैं हंसराज और आज़ाद को एक कोने में ले गया और वहाँ मैंने उससे चन्द्रशेखर का सन्देश कह सुनाया। सलाह हो जाने के पश्चात उन्होंने पार्टी का नाम "आतिशी चक्कर" रक्खा। हंसराज ने मुझसे कहा कि 'हिन्दुस्तान सोशियालिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' ने बड़े मार्के के कार्य किए हैं—उदाहरणार्थ वायसराय की गाड़ी पर बम फेंकना। परन्तु उसका पुलिस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, उसके दमन का बाज़ार गर्म है और वह अपनी जेलें खचाखच भरती जाती है। हंसराज ने यह भी कहा, कि मैं बम बना कर भिन्न-भिन्न शहरों के मकानों में रक्खूँगा। एक-एक घर में दो-दो बम रक्खे जायँगे। पहिले एक बम फोड़ा जायगा और जब पुलिस तहक़ीकात के समय दूसरे बम में हाथ लगाएगी तब वह उसी समय फट जायगा और उससे पुलिस-ऑफ़िसर घायल होंगे। उसने कहा कि बम बहुत ख़तरनाक न रहेंगे; परन्तु हाँ, उनसे मृत्यु हो जाने की सम्भावना अवश्य है। उन बमों में अधिक ख़तरनाक पदार्थों का उपयोग नहीं किया जायगा।

पार्टी का समाचार-पत्र

हंसराज ने यह भी कहा, कि दल की ओर से 'बग़ावत' नाम का एक पत्र प्रकाशित किया जायगा और उसे छापने के लिए एक प्रेस खोला जायगा। उसने कहा कि एक व्यक्ति ऐसा है, जिसे यदि इस बात का पता चल जाय कि षड्यन्त्रकारी दल में हंसराज भी सम्मिलित है, तो वह हर प्रकार की आर्थिक सहायता देने के लिए तैयार हो जायगा। परन्तु हंसराज ने मुझे उस व्यक्ति का नाम नहीं बतलाया। पुलिस ऑफ़िसरों को घायल करने के लिए बम छोटे-छोटे सन्दूक़ों में रक्खे गए थे, जो सन्दूक़ छूते ही फूट जाने वाले थे। हंसराज ने सन्दूक़ें बनाने का भार लिया था और मैंने पाउडर पीसने का। इसके उपरान्त हंसराज चला गया और मैंने उसके घर जाकर वह मज़मून तैयार किया, जो काग़ज़ में लिख कर बम के साथ सन्दूक़ में रक्खा जाने वाला था। मुख़बिर ने वह मज़मून अदालत में पढ़ा और उसने कहा कि मैंने वह हंसराज को दिखा दिया था और उसने उसे मन्ज़ूर भी कर लिया था। हंसराज ने यह भी कहा कि मैं वह मज़मून दल के दूसरे लोगों को भी दिखाऊँगा।

मन्दिर की यात्रा

मुख़बिर ने कहा, कि ५वीं जून को हंसराज और मैं मुख़बिर खैरातीलाल से मिलने शहदरा गए। वहाँ उसने कहा कि यदि हंसराज इस बात का विश्वास दिलावे कि वह षड्यन्त्रकारी दल में है तो मैं आर्थिक सहायता करने के लिए तैयार हूँ। खैरातीलाल को इस बात का विश्वास दिलाने के लिए हंसराज और मैं सत्यनारायण

के मन्दिर में कुछ ख़ाली बम ले गए और वहाँ उन्हें दिखा कर ख़ैरातीलाल को विश्वास दिलाया। मुख़बिर ख़ैरातीलाल ने रुपया देने का वचन दिया। हंसराज शहदरा में रह गया और मैं ख़ाली बम लेकर वापस चला आया। इसके बाद मैं जहाँगीरीलाल के घर एक ट्रङ्क में बम रखने गया। वहाँ से मैं उसकी बैठक में गया।

६ठी जून को जब मैं 'शेर ख़ालसा' के ऑफ़िस में कार्य कर रहा था, तब रूपचन्द मेरे पास आया और उसने मुझसे कहा कि कृष्णगोपाल (अभियुक्त) आ गया है। मैंने देखा कि कृष्णगोपाल के साथ सरनदास (मुख़बिर) भी आया है। मैं उन्हें अपनी बैठक में ले गया और वहाँ सरनदास ने अकेले में ले जाकर मुझसे कहा कि यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए बम तैयार कर सकता हूँ, परन्तु तुम्हें नमूने के लिए कुछ बमों के खोल देने पड़ेंगे। मैंने कहा कि मैं सञ्चालक से पूछ कर जवाब दूँगा। मैंने हंसराज से सब वृत्तान्त कह सुनाया और उसने मुझे सरनदास को एक बम-शैल देने की आज्ञा दी। उनकी आज्ञानुसार मैंने सरनदास को एक बम की खोल देकर विदा किया ; परन्तु कृष्णगोपाल नहीं गया।

७वीं जून को मैं बड़े सवेरे बैठक में गया। हंसराज वहाँ मौजूद थे। हम दोनों ने बम का प्रयोग करने का इरादा किया। हम दोनों बैठक से एक घी के कनस्टर में बम लेकर रावी के किनारे गए। वहाँ हमने बम एक झाड़ी के नीचे रख दिया और उसके साथ एक तार जोड़ कर हमने बैटरी द्वारा उसमें बिजली का करन्ट पहुँचाया, जिससे बम तुरन्त फूट पड़ा। इस प्रकार बम के उस प्रयोग में हम लोग सफल रहे।

सरनदास ने हमसे कहा कि रावलपिण्डी में बम फट जाने से हम वहाँ बम नहीं बना सके। जब मैंने उससे बम के खोल वापस माँगे, तब उसने कहा कि मुझे इस बात का सन्देह था कि ख़ुफ़िया पुलिस मेरा पीछा कर रही है, इसलिए मैं उसे अपने साथ नहीं लाया। वह रात्रि सरनदास ने मेरी ही बैठक में गुज़ारी। दूसरे दिन सवेरे वह हंसराज के पास गया। इसके बाद मामला दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दिया गया।

सरदार भगतसिंह से सहानुभूति-प्रदर्शन

१२वीं फ़रवरी को, जब लाहौर का नया षड्यन्त्र-केस फिर प्रारम्भ हुआ, तब अभियुक्तों ने अदालत से कहा कि प्रिवी-कौन्सिल से सरदार भगतसिंह की अपील रद्द होने के समाचार सुन कर उनका हृदय बिल्कुल विचलित हो गया है और ऐसी परिस्थिति में, न तो वे कार्यवाही में भाग ले सकते हैं और न अदालत में बैठ ही सकते हैं। इसलिए अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी जानी चाहिए। किन्तु कोर्ट के ऐसा करने से इनकार करने पर सारे "अभियुक्त" अदालत की ओर पीठ फेर कर खड़े होगए और उन्होंने कार्यवाही में किसी भी प्रकार का भाग लेने से इनकार कर दिया। अतएव अदालत को बाध्य होकर डेढ़ घण्टे के लिए कार्यवाही स्थगित कर देनी पड़ी।

* * *

बम्बई षड्यन्त्र-केस

लापता अभियुक्त श्रीमती दुर्गादेवी की खोज

१२वीं फ़रवरी को बम्बई षड्यन्त्र-केस की कार्यवाही फिर प्रारम्भ हुई और उस दिन लेमिङ्गटन रोड पुलिस-स्टेशन के सब-इन्स्पेक्टर गावड़े की गवाही ली गई। उन्होंने अपनी गवाही में कहा कि १४वीं अक्टूबर को इन्स्पेक्टर लायन्स ने मुझे कुछ टिकटों के नम्बर दिए और मुझसे कहा कि लेमिङ्गटन रोड गोली-काण्ड के कुछ लापता अभियुक्त कल्याण से चालीसगाँव गए हैं। बाद में उन्होंने मुझे चालीसगाँव जाकर अभियुक्तों का पता लगाने की आज्ञा दी। उनकी आज्ञानुसार मैं चालीसगाँव गया, परन्तु वहाँ पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि अभियुक्त कानपुर की ओर गए हैं। मैं भी उनके पीछे कानपुर गया। वहाँ मुझे लाहौर की ख़ुफ़िया पुलिस से यह मालूम हुआ, कि श्री० भगवतीचरण की स्त्री श्रीमती दुर्गादेवी की हुलिया शारदा से मिलती-जुलती है। वहाँ मुझे अजयकुमार घोष और विजयकुमार सिंह के नाम भी मालूम हुए, परन्तु दुर्गादेवी का कुछ पता न लग सका। २०वीं अक्टूबर को मैं बम्बई लौट आया, और २७वीं को फ़ोटो लेकर लाहौर गया। वहाँ से मैं कानपुर और दिल्ली गया। दिल्ली में मैंने दिल्ली बम-केस के अभियुक्त कैलाशपति को फ़ोटो दिखाए। उसने बुद्धिमान के फ़ोटो को श्री० सुखदेवराज का फ़ोटो बतलाया। शारदा और हरि के सम्बन्ध में, कैलाशपति ने कहा कि मरते समय श्री०भगवतीचरण ने उन्हें श्री० विश्वनाथ राव वैशम्पायन के सुपुर्द कर दिया था। गवाह ने कहा कि कैलाशपति ने मुझे यह भी कहा था, कि श्रीमती दुर्गादेवी और हरि उसके साथ दिल्ली की हिमालयन टायलेट फ़ैक्टरी, में ठहरे थे। उसने यह भी कहा कि १०वीं अगस्त को वे उसके पास से चले गए थे। मुझे दिल्ली की ख़ुफ़िया से यह भी मालूम हुआ था कि श्रीमती दुर्गादेवी और श्री० भगवतीचरण लाहौर के नए षड्यन्त्र-केस के अभियुक्त हैं। मैंने श्री० कैलाशपति को लाहौर की ख़ुफ़िया पुलिस का वह पत्र दिखाया जिसके अक्षर उससे मिलते-जुलते थे, जो पुलिस को तलाशी लेते समय विद्या विला (शान्ता क्रुज़) में प्राप्त हुआ था। मैं शीघ्र बम्बई लौटा आया और वहाँ मैंने कैलाशपति के वक्तव्य के अनुसार उन कपड़ों की जाँच की, जो पुलिस ने विद्या विला (शान्ता क्रुज़) की तलाशी लेते समय ज़ब्त किए थे। जाँच करने पर कपड़ों में दो पत्र मिले थे। कपड़े कैलाशपति की शनाख़्त के लिए दिल्ली भेज दिए गए थे। इसके बाद कार्यवाही स्थगित कर दी गई।

"हम सभी महात्मा जी के साथ एकमत हैं"

हाल ही में 'पायोनियर' में कॉङ्ग्रेस के नेताओं में मतभेद हो जाने की एक ख़बर निकली थी। 'लीडर' के सम्वाददाता के अनुसार श्रीमती सरोजनी नायडू ने इस बात का खण्डन किया है। आपने कहा है कि "हम सभी महात्मा जी के साथ एकमत हैं।" 'पायोनियर' के इस सम्वाद का, कि "मालवीय जी ने कॉङ्ग्रेस को वर्तमान नीति के हटा लिए जाने के पक्ष में अपनी सारी शक्ति लगा दी" तथा "डॉ० अनसारी और श्रीमती सरोजनी नायडू के अतिरिक्त अन्य लोगों ने भी इसका समर्थन किया" स्वयं मालवीय जी ने खण्डन किया है। मालवीय जी ने यह भी कहा है, कि कार्यकारिणी समिति के सदस्यों में अब तक कोई मतभेद नहीं हुआ है।

* * *

बरेली में बम

बरेली में ९वीं फ़रवरी को सिटी डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट रायबहादुर मदनमोहन लाल ने सब्ज़ी मण्डी के पास दो युवकों को गिरफ़्तार किया है, जिनके पास एक बम प्राप्त हुआ है। उनके घरों की भी तलाशी ली गई थी, परन्तु वहाँ कुछ प्राप्त नहीं हो सका।

कानपुर में लापता षड्यन्त्रकारी गिरफ़्तार

कानपुर का १२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ फ़ली-बाज़ार में एक गोरे रङ्ग का लड़का गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है, कि उसके पास एक रिवॉल्वर और कुछ कारतूस प्राप्त हुए हैं। यह भी कहा जाता है कि वह एक लापता षड्यन्त्रकारी है।

* * *

श्रद्धाञ्जलि

कामनवेल्थ ऑफ़ इण्डिया लीग

कॉमनवेल्थ ऑफ़ इण्डिया लीग ने ६ठी फ़रवरी को एक प्रस्ताव पास कर भारत के एक श्रेष्ठ पुरुष की मृत्यु पर शोक प्रदर्शित किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि भारतीय स्वतन्त्रता के युद्ध को नई स्फूर्ति से सञ्चालन करके ही उनकी सेवाओं का पुरस्कार दिया जा सकता है।

वायसराय का सहानुभूति-सूचक सन्देश

नई दिल्ली से ६ठी फ़रवरी को वायसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी ने श्रीमती नेहरू के पास निम्न सन्देश भेजा है :—

"आपके पति की मृत्यु पर वायसराय और लेडी इर्विन खेद प्रकट करती हैं और आपके तथा आपके कुटुम्ब के दुःख में अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती हैं।"

'रूटर' के प्रतिनिधि से मि० जिन्ना ने पण्डित मोतीलाल की मृत्यु के सम्बन्ध में अत्यन्त खेद प्रकट किया और कहा कि "पण्डित मोतीलाल भारतीय राजनीति के एक बड़े भारी स्तम्भ थे। यद्यपि हृदय से वे सच्चे शासन-विधायक थे, परन्तु गवर्नमेण्ट की नीति के कारण सन् १९२४ से उनका हृदय बिल्कुल बदल गया था। पण्डित मोतीलाल तथा अन्य व्यक्तियों की यह दृढ़ राय है कि जब तक ब्रिटिश नीति में परिवर्तन नहीं होगा, तब तक भारत में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।"

—मोहम्मद अली जिन्ना

"समस्त राष्ट्र अपने पिता की मृत्यु से पितृ-हीन हो गया है।"

—जे० एम० सेन गुप्त

"यदि गाँधी को भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन को जन्म देने का श्रेय है, तो पण्डित मोतीलाल को उसके सुचारु सञ्चालन का।"

—(डॉ०) सत्यपाल

"पण्डित मोतीलाल की मृत्यु से देश को जो भयङ्कर क्षति हुई है, उसकी कभी पूर्ति नहीं हो सकती।"

—श्रीनिवास आयङ्गर

"ब्रिटेन और भारत के बीच में सन्धि सञ्चालन के कार्य की उनमें अद्वितीय प्रतिभा थी। भारत के नए शासन-विधान की रचना के लिए उनकी अतीव आवश्यकता थी।"

—(सर) राम स्वामी अय्यर

"पण्डित मोतीलाल की मृत्यु से देश का सब से उज्ज्वल रत्न लुप्त हो गया। ऐसे सङ्कटापन्न समय में उनकी जितनी आवश्यकता है, उतनी और कभी नहीं हुई। यह अभागे भारतीयों के दुर्भाग्य की चरम सीमा है; और उनकी मृत्यु से महात्मा गाँधी की ज़िम्मेदारी कई गुना अधिक बढ़ गई है।"

—राजगोपालाचार्य

"अपने जीवन के पुराने सहचर का मृत्यु-समाचार सुन कर मेरे हृदय में गहरी चोट लगी है। उनकी मृत्यु ऐसे सङ्कटापन्न समय में हुई है जब देश को उनके पथ-प्रदर्शन की अत्यन्त आवश्यकता थी। पण्डित मोतीलाल भारतमाता के वीर पुत्र थे और उनकी मृत्यु देश के स्वातन्त्र्य संग्राम में हुई है।"

—मदनमोहन मालवीय

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व, सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाद-दाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

१९ फ़रवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले—
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

कहला (प्रतापगढ़ ज़िले) में पुलिस ने गोलियों की वर्षा की

२ मरे, २४ घायल हुए :: इलाहाबाद में मृतकों का जुलूस

—प्रतापगढ़ ज़िले में एक भयङ्कर गोली-काण्ड होने की ख़बर मिली है। कहा जाता है, कि १२वीं फ़रवरी को, पुलिस ने एक जन-साधारण सभा में गोली चला दी, जिसके फल-स्वरूप दो मरे और क़रीब २४ व्यक्ति घायल हुए हैं।

कहा जाता है, कि एक सप्ताह पहले—प्रतापगढ़ के डिप्टी कमिश्नर ने, १४४वीं धारा के अनुसार एक आज्ञा निकाली थी, जिसमें वर्तमान आन्दोलन सम्बन्धी सभाएँ करने की मनाही की गई थी। १२वीं फ़रवरी को, यह ख़बर पाकर कि कहला के लोगों ने एक सभा करने का विचार किया है, रानीगञ्ज पुलिस-स्टेशन से सब-इन्स्पेक्टर और सर्किल-इन्स्पेक्टर पुलिस और चौकीदारों के साथ घटनास्थल पर पहुँचे। क़रीब ४ बजे से सभा शुरू हुई। सभा में एक वेदी बनी थी, उसी पर खड़े होकर कुछ स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय गान आरम्भ किया। इसी समय पुलिस का सब-इन्स्पेक्टर वहाँ पहुँचा और स्वयंसेवकों को सर्किल-इन्स्पेक्टर के पास चलने को कहा। स्वयंसेवकों ने कहा, कि गाना समाप्त होने दो तो चलते हैं। उपस्थित लोगों का कहना है, कि इस पर सब-इन्स्पेक्टर ने चौकीदारों को बुलाया और वेदी के चारों ओर के राष्ट्रीय झण्डों को उखाड़ लेने की आज्ञा दी। फिर उसने एक स्वयंसेवक की गर्दन पकड़ कर उसे ढकेला और कहा कि यदि इन्स्पेक्टर के पास नहीं चलोगे तो गोली मार दूँगा।

स्वयंसेवक ने कहा, कि हम गोली खाने को तैयार हैं। सभा के लोगों ने भी खड़े होकर कहा, कि अगर तुम्हारी इच्छा हो तो हमें भी गोली मार दो। इसी समय सर्किल-इन्स्पेक्टर भी वेदी के समीप आ पहुँचा और उसने गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया। सब-इन्स्पेक्टर और हथियार-बन्द सिपाहियों ने भी गोली छोड़ना आरम्भ किया, और चौकीदारों तथा पुलिस के जवानों ने लाठियाँ चलानी शुरू कीं। लोगों को गिरते देख, पुलिस और चौकीदार वहाँ से रफ़ूचक्कर होगए। पुलिस का कहना है, कि इस अवसर पर सभा के लोगों ने भी लाठी और ईंटों से पुलिस पर आक्रमण किया था। जब बार-बार गोलियों की वर्षा करने पर भी लोग डटे रहे और पुलिस वालों के विरुद्ध बढ़ते ही गए तो सब-इन्स्पेक्टर, सर्किल-इन्स्पेक्टर और हथियार-बन्द सिपाहियों के दल ने भी अपनी जीवन-रक्षा के लिए मैदान छोड़ दिया।

अधिकारियों का कहना है, कि पुलिस-इन्स्पेक्टर ने पहले सभा वालों को चेतावनी दे दी थी, कि सभा ग़ैर-क़ानूनी है। किन्तु वहाँ पर उपस्थित लोगों ने इस बात का खण्डन किया है। इसके अतिरिक्त पुलिस वालों का कहना है, कि पहले सभा के लोगों ने ही, सब-इन्स्पेक्टर पर हमला किया था। घटनास्थल पर उपस्थित लोगों ने भी पुलिस के बयान का खण्डन किया है।

दूसरे दिन जब पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट घटनास्थल पर तहक़ीक़ात के लिए पहुँचे तो सभा की वेदी को उन्होंने ख़ून से रँगा हुआ पाया। १७ घायल व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। पुलिस ने सभी घायल व्यक्तियों को गिरफ़्तार करने का निश्चय किया है।

इस घटना की ख़बर पाकर प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन कॉङ्ग्रेस एम्बुलेन्स लेकर कहला गए और कॉङ्ग्रेस के डॉक्टरों ने अनेक घायलों की, जो गिरफ़्तार नहीं किए गए थे, मरहम-पट्टी की। लोगों का कहना है कि गोली लगने वालों के घावों पर गवर्नमेण्ट की ओर से मरहम-पट्टी तक का प्रबन्ध नहीं किया गया !

कहला गोली-काण्ड के शिकार दोनों अभागे मृतकों की लाशें मोटर लॉरी द्वारा शाम को यहाँ लाई गई थीं। यहाँ श्री० सुन्दरलाल जी के नेतृत्व में इन अभागों की लाश का एक जुलूस निकाला गया।

मरने वालों में एक कौलापूर निवासी श्री० मथुरा अहीर और दूसरा नाथपुरा निवासी श्री० रामदास उपाध्याय थे। दो अन्य व्यक्तियों की दशा भी विशेष चिन्ताजनक बतलाई जाती है। अभी भी गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं।

* * *

स्वर्गीय खुदीराम बोस

[श्री० 'भैरव']

यह कहना अत्युक्ति न होगी, कि बङ्गाल में विप्लव आन्दोलन का सूत्रपात भारत के तत्कालीन राजप्रतिनिधि लॉर्ड कर्ज़न की कृपा (?) से हुआ था। उन्होंने शासन-कार्य की सुविधा के लिए या बङ्गाल की सम्मिलित शक्ति को द्विधा विभक्त कर देने की इच्छा से बङ्गाल को दो भागों में विभक्त कर दिया। बङ्गालियों ने इसका घोर विरोध किया, परन्तु राज्याधिकारियों के कानों पर जूँ तक न रेंगी। इस आन्दोलन के प्रधान सूत्रधार स्वर्गवासी सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे। अन्त में अनुनय-विनय, प्रार्थना और प्रतिवाद से निराश होकर उन्होंने स्वदेशी का प्रचार और विलायती वस्तुओं का बहिष्कार आरम्भ किया। यह आन्दोलन बड़े ज़ोर-शोर से चला। साथ ही दमन भी होने लगा। सैकड़ों बङ्गाली नवयुवक सामान्य अपराधों के लिए जेलों में ठूँस दिए गए। फलतः कुछ नौजवानों ने अङ्गरेज़ों का तख़्ता उलट देने के लिए गुप्त समितियों की स्थापना की और इसका भण्डाफोड़ सब से प्रथम, सन् १६०७ में हुआ। बङ्गाल के छोटे लाट 'स्पेशल-ट्रेन' द्वारा मेदिनीपुर जा रहे थे। जाड़े के दिन, शायद दिसम्बर का महीना था। विप्लव-वादियों ने उनकी ट्रेन उलट देने का आयोजन किया। बङ्गाल-नागपुर रेलवे के नारायणगढ़ नामक स्टेशन के पास गाड़ी पहुँची तो हठात् धड़ाके का भयङ्कर शब्द हुआ और लाट साहब की ट्रेन की कई 'बोगियाँ' पथ-भ्रष्ट होकर लुढ़क गईं! परन्तु लाट साहब बच गए।
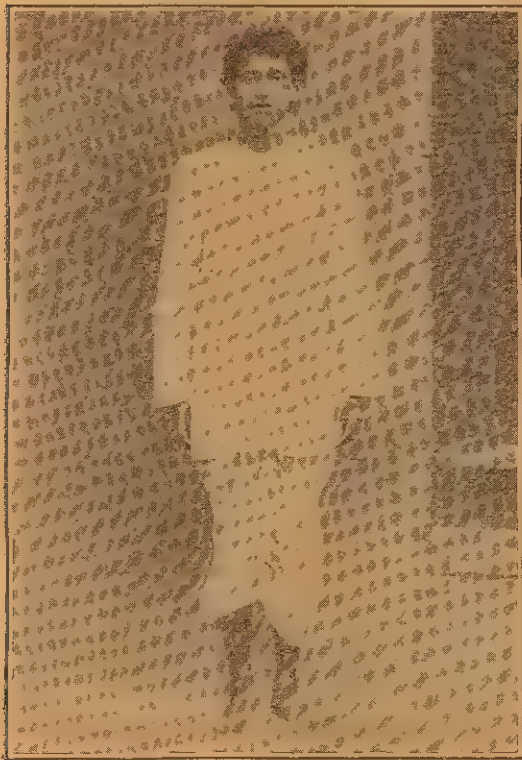
श्री० खुदीराम बोस

इसके कई दिन बाद (२३ दिसम्बर) ही ग्वालन्दो स्टेशन पर दूसरी घटना हुई। किसी विप्लववादी ने दिन-दहाड़े ढाका के मैजिस्ट्रेट पर पिस्तौल का वार कर दिया! बेचारे को गहरी चोट लगी, परन्तु बच गए। गोली चलाने वाले को पुलिस ने बहुत ढूँढ़ा, पर कोई पता न चला।

तीसरी घटना इसी साल बङ्गाल के कुश्टिया नामक स्थान में हुई। अङ्गरेज़ पादरी मि० हेवेन को किसी ने गोली मार दी। इसी साल के दिसम्बर में, बङ्गालियों ने चन्द्रनगर में एक महती स्वदेशी सभा का आयोजन किया था। परन्तु फ़्रान्स-सरकार ने उसे नहीं होने दिया। फल-स्वरूप, सन् १६०८ में चन्द्रनगर के मेयर की कोठी में एक बम फटा। परन्तु किसी को कोई चोट न लगी। मेयर बाल-बाल बच गया।

जिस समय बङ्गाल में स्वदेशी आन्दोलन ज़ोरों पर था, उस समय कलकत्ते में मि० किंग्सफ़ोर्ड नाम का एक अङ्गरेज़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट था। इसने सुशील सेन नाम के एक बङ्गाली बालक को, पुलिस के साथ झगड़ा करने के अपराध में बेत मारने की सज़ा दी थी। इसके सिवा और भी कई बङ्गाली नवयुवक उसके द्वारा दण्डित हुए थे, इसलिए वह विप्लववादियों की नज़रों पर चढ़ा हुआ था। परन्तु थोड़े दिन के बाद ही उसकी बदली कलकत्ता से मुज़फ़्फ़रपुर हो गई। विप्लववादी उसे मार डालने का निश्चय कर चुके थे, इसलिए श्री० खुदीराम बोस और श्री० प्रफुल्लचन्द्र चाकी नाम के दो विप्लवी नवयुवक मि० किंग्सफ़ोर्ड को मारने के लिए बम और पिस्तौल लेकर कलकत्ता से मुज़फ़्फ़रपुर आए। सन् १६०८ के अप्रैल का महीना था। दोनों नवयुवक स्टेशन के समीपवर्ती एक धर्मशाले में रह कर उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

मुज़फ़्फ़रपुर में अङ्गरेज़ों का एक क्लब है। शाम को अक्सर वहाँ बड़ी चहल-पहल रहती है। शहर भर के गोरे और गोरियाँ आमोद-प्रमोद के लिए वहाँ एकत्र हुआ करती हैं। विप्लववादियों ने इसी क्लब को अपना कार्यक्षेत्र निर्वाचित किया; क्योंकि मुज़फ़्फ़रपुर का नए ज़िला जज किंग्सफ़ोर्ड भी प्रतिदिन शाम को यहाँ आया करता था। श्री० खुदीराम और श्री० प्रफुल्ल ने निश्चय किया कि जब मि० किंग्सफ़ोर्ड क्लब से होकर अपने निवास-स्थान पर जाने लगे तभी उसके ऊपर बम का वार किया जाय।

मुज़फ़्फ़रपुर की पुलिस को इस षड्यन्त्र की ख़बर पहले ही लग चुकी थी। बोस और चाकी के मुज़फ़्फ़र-पुर आने से पहले ही कलकत्ते के पुलिस-कमिश्नर ने मि० किंग्सफ़ोर्ड की रक्षा का समुचित प्रबन्ध करने की ताकीद कर दी थी। इसलिए मुज़फ़्फ़रपुर की पुलिस ख़ूब सावधान थी और उसने दो सशस्त्र सिपाहियों को जज साहब की रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया था। शायद इसीसे उक्त दोनों विप्लववादियों को १०-१२ दिनों तक मुज़फ़्फ़रपुर में ठहरना पड़ा।

३० अप्रैल की शाम को दोनों विप्लवी क्लब के पास पेड़ों के झुरमुट में जाकर छिप गए। वे मि० किंग्सफ़ोर्ड की गाड़ी पहचानते थे। परन्तु उन्हें यह ख़बर न थी, कि ठीक इसी रङ्ग और ढङ्ग की गाड़ी मुज़फ़्फ़रपुर के अङ्ग-रेज़ वकील श्री० केनेडी की भी है। इसीसे वे धोखे में पड़ गए और रात के साढ़े आठ बजे, जब कुमारी केनेडी और श्रीमती केनेडी अपनी गाड़ी पर सवार होकर घर की ओर चलीं तो विप्लवियों ने उन पर एक भीषण बम निक्षेप किया। गाड़ी चूर-चूर हो गई। कोचवान बेहोश होकर गिर गया। कुमारी केनेडी तो उसी समय मर गईं, परन्तु श्रीमती केनेडी मरीं कई दिन बाद—२ मई को! मि० किंग्सफ़ोर्ड की तक़दीर अच्छी थी। उनकी गाड़ी ने उनके जीवन की रक्षा की।

उस दिन साहब की रक्षा का भार तहसीलदार ख़ाँ और फ़ैज़ुद्दीन नाम के सिपाहियों पर था। इन दोनों ने इस दुर्घटना के कई घण्टे पहले दोनों बङ्गाली युवकों को क्लब के सामने टहलते हुए देखा था और वहाँ से हट जाने की हिदायत भी की थी। इसके सिवा, जिस समय यह दुखदायी घटना सङ्घटित हुई थी, उस समय भी ये दोनों सिपाही पहरे पर मौजूद थे और दोनों बङ्गाली युवकों को भागते हुए देखा था। परन्तु दोनों घटनास्थल की ओर दौड़ गए, इसलिए उन्हें पकड़ने की कोई चेष्टा न कर सके।

जेल के कटघरे में खुदीराम बोस

थोड़ी देर के बाद ही इस भीषण दुर्घटना की ख़बर सारे शहर में फैल गई। पुलिस ने सारा मुज़फ़्फ़रपुर घेर लिया। रास्ता, घाट, गली-कूचा ढूँढ़ डाला गया, परन्तु विप्लवियों का कहीं पता न लगा। दोनों इससे पहले ही नौ दो ग्यारह हो चुके थे। श्री० खुदीराम रातोंरात चल कर २५ मील दूर, वैनी नामक गाँव में चला गया और श्री० प्रफुल्ल सवेरा होते-होते समस्तीपुर पहुँच गया।

पुलिस की ओर से इस घटना की ख़बर उसी समय चारों ओर भेज दी गई। बोस और चाकी की हुलिया भी आस-पास के थानों को बता दी गई थी और गिरफ़्तारी के लिए वारण्ट भी जारी कर दिया गया था। फलतः दूसरे दिन, १ली मई को वैनी में ही, एक मोदी की दूकान पर जल-पान करता हुआ खुदीराम पकड़ लिया गया। उस समय उसके पास दो पिस्तौल—एक भरा और एक ख़ाली तथा तीस कारतूस बरामद हुए। वैनी से वह रेल-द्वारा मुज़फ़्फ़रपुर लाया गया। उसे देखने के लिए सारा शहर मुज़फ़्फ़रपुर के रेलवे-स्टेशन पर उमड़ पड़ा था, और इस दुबले-पतले केवल सत्तरह-अठारह वर्ष के युवक का यह दुःसाहस देख कर लोग आश्चर्य में पड़ गए। उस समय उसके चेहरे पर प्रसन्नता थी; वह मुस्कुरा रहा था। मैजिस्ट्रेट के सामने उसने स्त्रियों की मृत्यु के लिए खेद प्रकट करते हुए बड़ी दिलेरी से स्वीकार किया था, कि 'बम मैंने स्वयं फेंका है, इस हत्याकाण्ड की सारी ज़िम्मेदारी मेरे ही ऊपर है।'

श्री० प्रफुल्लचन्द्र घटना के दूसरे रोज़ समस्तीपुर में पकड़ लिया गया। वह कलकत्ता जाने के लिए गाड़ी पर सवार हो चुका था। उसने अपने सारे कपड़े बदल दिए थे। इसीसे एक बङ्गाली पुलिस कर्मचारी को उस पर कुछ सन्देह हुआ। इसका नाम शिवचन्द्र बनर्जी था और

सिङ्घभूमि में पुलिस की सब-इन्स्पेक्टरी किया करता था। उसके नाना श्री० शिवचन्द्र चटर्जी मुज़फ़्फ़रपुर के वकील हैं। नन्दलाल छुट्टी लेकर बहुत दिनों से अपने नाना के यहाँ समस्तीपुर में ही था। उसकी छुट्टी पूरी हो चुकी थी और संयोगवश जिस गाड़ी से श्री० प्रफुल्ल कलकत्ते जाने वाला था, उसीसे नन्दलाल भी सिङ्घभूमि जा रहा था। नन्दलाल को मुज़फ़्फ़रपुर के बम-काण्ड की ख़बर मालूम थी, इसलिए गाड़ी में बिल्कुल नए कपड़े पहने हुए प्रफुल्ल को देख कर उसे कुछ सन्देह हुआ। उसने उससे बातचीत करने की चेष्टा की, परन्तु प्रफुल्ल उस डब्बे में से उतर कर दूसरे में चला गया, इससे उसका सन्देह और भी बढ़ गया! उसने उसकी हुलिया,

बन्दी वेश में खुदीराम बोस

तार द्वारा मुज़फ़्फ़रपुर को भेज दी। मोकामा में उसे मुज़फ़्फ़रपुर की पुलिस का तार मिला कि जिस बङ्गाली युवक के बारे में तुमने ख़बर दी है, उसे फ़ौरन गिरफ़्तार कर लो। तदनुसार नन्दलाल ने चाकी के पास जाकर कहा, कि मैं तुम्हें सन्देह पर गिरफ़्तार करना चाहता हूँ। चाकी ने इसका उत्तर पिस्तौल द्वारा दिया, परन्तु वार ख़ाली चला गया। इसलिए उसने दूसरा वार अपने ऊपर किया और अपना पार्थिव शरीर नन्दलाल के गिरफ़्तार करने के लिए छोड़ कर स्वयं उसने अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी।

इधर पुलिस ने ताज़ीरात हिन्द की ३०२ वीं धारा के अनुसार श्री० खुदीराम बोस का चालान किया। मैजिस्ट्रेट ने उसे सेशन्स सिपुर्द कर दिया। मि० कॉर्नफ़र्ड इस मामले का विचार करने के लिए स्पेशल सेशन्स जज नियुक्त हुए। तत्कालीन कलकत्ता हाईकोर्ट के नामी बैरिस्टर श्री० मानुक और वकील श्री० विनोदलाल मज़ुमदार सरकार की ओर से मामले की पैरवी करने के लिए बुलाए गए। खुदीराम की ओर से पहले तो कोई वकील खड़ा होने को तैयार ही न हुआ! परन्तु अन्त में श्री० कालीदास बोस नामक एक सज्जन ने हिम्मत की। न्यूनाधिक एक सप्ताह तक मामला चलने के बाद सेशन्स जज ने उसे फाँसी की सज़ा दी। मामला हाईकोर्ट गया, परन्तु सज़ा बहाल रही।

११ अगस्त, सन् १९०८ ई० को बङ्गाल के प्रथम विप्लववादी श्री० खुदीराम बोस के फाँसी का दिन था। उस समय वह प्रसन्न था। 'गीता' की पुस्तक उसके हाथ में थी। वह हँसते-हँसते फाँसी के तख़्ते पर जाकर खड़ा हो गया। जल्लाद ने फन्दा लगाया, रस्सी खींच दी। देखते-देखते उसकी अमर आत्मा अनन्त में मिल गई।

जेलख़ाने के बाहर दर्शकों की अपार भीड़ थी। लोग इस अनन्त पथ के यात्री की अन्तिम झाँकी प्राप्त करने के लिए उत्सुक थे। श्री० कालीदास बोस शव लेने के लिए आए थे। खुदीराम ने पहले ही अधिकारियों से कह रक्खा था, कि मृत्यु के बाद मेरा शव, अन्त्येष्टि क्रिया के लिए कालीबाबू को ही दे दिया जाय। मैजिस्ट्रेट ने इसे स्वीकार भी कर लिया था।

उसकी अन्त्येष्टि का दृश्य बड़ा ही हृदयग्राही था। एक फूलों की सुसज्जित शय्या पर उसका शव रख दिया गया था। अरथी फूल-मालाओं से सुसज्जित थी। माथे पर चन्दन का तिलक चमक रहा था। सिर के घुँघराले केश चेहरे पर लटक आए थे। अधखुले नेत्रों से अभी भी एक जाग्रत ज्योति निकल रही थी। होठों पर दृढ़ सङ्कल्प की रेखा दिखाई पड़ रही थी।

"राम नाम सत्य" तथा "बन्देमातरम्" के व्योम-व्यापी नारों के साथ अरथी उठी। चारों ओर नरमुण्डों का समुद्र उमड़ा हुआ था। हज़ारों आदमी इस शव-यात्रा में सम्मिलित थे। बृहद् जुलूस के साथ अरथी श्मशान-भूमि में पहुँचाई गई। चिता की रचना हुई। फूलों से आच्छादित शव लाकर उस पर रक्खा गया। कालीबाबू ने घृत, धूप, चन्दन, शालत्य और अन्यान्य सुगन्धित पदार्थों का आयोजन पहले से ही कर रक्खा था। चिता में आग लगा दी गई और एक बार फिर 'बन्देमातरम्' की तुमुल ध्वनि से वायु-मण्डल गूँज उठा।

अन्त में चिता-भस्म के लिए जनता का पारस्परिक छीना-झपटी वाला दृश्य भी कम हृदय-ग्राही न था। लोग उसकी चिता-भस्म लेने के लिए सोने और चाँदी की डिबिया लेकर गए थे। सबकी यही लालसा थी कि किसी तरह चुटकी भर भस्म मिल जाती।

उस समय अनेक अख़बारों ने उसकी निन्दा की थी और उसे 'हत्यारा' और आततायी कहा था। परन्तु बङ्गाल में घर-घर उसका ज़िक्र था। एक अन्धा भिखारी आज भी कलकत्ते की गलियों में गाता फिरता है :—

खुदीराम बोस यथा हासिते-हासिते
फाँसी ते करि लो प्रान शेष।
तुइ तो माँगो तादेर जननी
तुइ तो माँगो तादेर देश !*

* खुदीराम बोस ने जैसे हँसते-हँसते, फाँसी लटक कर अपने प्राण शेष किए थे, तू तो माता उन्हीं की—ऐसों ही की जननी है; ऐसों ही की देश-भूमि है!

* * *

सजीवन-मन्त्र

[श्री० देवीप्रसाद जी गुप्त, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

स्वर्ग-सौख्य-विधान है यह शब्द बन्देमातरम्,
विश्व का सम्मान है यह शब्द बन्देमातरम्!
शान्ति का आकार है, दुख-क्लेश का प्रतिकार है,
ओ३म् का उपमान है, यह शब्द बन्देमातरम्!
ओज-मय बल-कान्ति-मय हमको बनाने के लिए,
मति-प्रदायक ज्ञान है, यह शब्द बन्देमातरम्!
मातृभूमि-स्वतन्त्रता की वेदिका पर मोदमय,
स्वार्थ का बलिदान है, यह शब्द बन्देमातरम्!
है सजीवन-मन्त्र भी, यह विश्व-विजयी मन्त्र भी,
शक्ति का आह्वान है, यह शब्द बन्देमातरम्!
उष्ण शोणित से लिखो, वक्षस्थली को चीर कर,
वीर का अभिमान है, यह शब्द बन्देमातरम्!

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

जब मैं देखता हूँ कि तुम मेरे लिए सब कुछ करते हो और मैं तुम्हीं से मुँह मोड़ता हूँ, तब मैं लज्जा से नत शिर हो जाता हूँ; परन्तु जब मैं देखता हूँ कि तुम उसी अवस्था में मेरे पास आते हो और उलटा मुझी को मनाते हो तब........।

❀

स्त्रियों को ग़ुलाम बना कर स्वाधीन हो जाना अनहोनी बात है।

❀

परमात्मा का भय बुद्धिमत्ता का श्रीगणेश है; परन्तु जो मूर्ख हैं वे बुद्धि को तुच्छ समझते हैं।

❀

कोयल अपने बच्चों का पालन-पोषण कराने के लिए उन्हें दूसरे के नीड़ में रख आती है; कुछ दूसरी पक्षिणी को पुत्रवती बनाने के लिए नहीं।

❀

कायर विचार, मुझसे डर मत। मैं कवि हूँ।

❀

वह कौन सी वस्तु है, जिसे हम दूसरों को सरलतापूर्वक दे सकते हैं?

उपदेश।

❀

प्रकाश के चुम्बन से काले बादल स्वर्ग के पुष्प हो जाते हैं।

❀

अभिमान अपने साथ सङ्कट अवश्य लाता है।

❀

मचला हुआ बालक रोने के पश्चात इस आशा में बैठा रहता है कि कोई मनाने आवे तो घर चलूँ।

❀

यदि परस्पर लड़ना ही है, तो चञ्चल लहरों की भाँति लड़ो और फिर एक हो जाओ।

❀

अत्याचारी सब से अभागा है। विपद के समय उसका कोई नहीं होता।

❀

स्वावलम्बन ही स्वराज्य है।

❀

सङ्कट के दिनों में अपने मिलने वालों से दूर रह।
उस समय वे तुझे कदापि न पहचानेंगे।

❀

सुशील बालकों के सो जाने पर उनके होठों पर जो मुस्कान दमकने लगती है, क्या कोई बता सकता है वह कहाँ से आती है।

❀

सुपुत्र अपने पिता के हृदय की प्रसन्नता है।
कुपुत्र अपने परिवार की कालिमा।

❀

मृत्यु जन्म की भाँति जीवन से सम्बन्ध रखती है।
हम पैर उठा कर फिर उसे पृथिवी पर रखने ही से आगे चल सकते हैं।

❀

सङ्गठन, संसार की सर्वोपरि शक्ति का पर्यायवाची शब्द है।

* * *

सुप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिज्ञों के मुक़द्दमे

४—देशबन्धु चित्तरञ्जन दासः १६२१—२२

सन् १९२१ के दिसम्बर का महीना था। असहयोग आन्दोलन भारत के कोने-कोने में प्रचण्ड रूप धारण किए था। उसका प्रवाह रोकने के लिए भारत के बड़े-बड़े शहरों में क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट और राज-विद्रोहात्मक सभा एक्ट प्रचलित कर दिए गए थे और नित्य-प्रति सैकड़ों की संख्या में वालण्टियर गिरफ़्तार किए जाते थे।

युवराज ने उसी समय भारत में पदार्पण किया था और वे भारत के उत्तरीय भाग में भ्रमण कर रहे थे। कॉङ्ग्रेस ने एक आज्ञा-पत्र निकाल कर समस्त भारत में उनके स्वागत का बहिष्कार कर दिया। गवर्नमेण्ट इस अपमान से आग-बबूला हो गई और वह उसे नेस्त-नाबूद करने पर तुल गई। अभी तक उसने क़ानून के अन्दर ही साधारण रूप से आन्दोलन दबाने का प्रयत्न किया था और केवल वालण्टियरों को ही गिरफ़्तार कर रह जाती थी। परन्तु कॉङ्ग्रेस के इस नए आयोजन के बाद उसने अपनी नीति बदल दी और देश के बड़े-बड़े नेताओं को गिरफ़्तार करना और उन पर राजविद्रोहात्मक अभियोग लगाना प्रारम्भ कर दिया। कराची के राजनैतिक मामले की कार्यवाही उसी समय समाप्त हुई थी, जिसमें अली भाइयों को सज़ा दी गई थी; लाहौर में लाला लाजपतराय और उनके अनुयायियों पर मुक़द्दमा चलाया जा रहा था; यू० पी० में पण्डित मोतीलाल और जवाहरलाल गिरफ़्तार कर लिए गए थे और अब बङ्गाल के नेताओं की बारी आई थी।

बङ्गाल के बहुत से सुप्रसिद्ध व्यक्ति, जिनका सम्बन्ध आन्दोलन से था, गिरफ़्तार कर लिए गए। कलकत्ते ने उस समय आन्दोलन को सब से अधिक वालण्टियर दिए थे। देशबन्धु दास की धर्मपत्नी, उनकी भगिनी और उनका एक मात्र पुत्र चित्तरञ्जन दास उसी समय गिरफ़्तार किया गया था। उनमें से दोनों महिलाएँ तो चेतावनी देकर छोड़ दी गईं, परन्तु चित्तरञ्जन दास को छः माह की क़ैद की सज़ा दे दी गई।

समस्त कलकत्ते पर उस समय उन्माद छा रहा था। आन्दोलन ने लोगों के भावों में क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी और उनका दमन करने के लिए फ़ौज बुला भेजी गई थी। पुलिस और फ़ौज मिल कर घरों की तलाशियाँ ले रही थी। कलकत्ते के मुख्य-मुख्य केन्द्रों में फ़ौजी पहरेदार लीविस तोपों सहित नियुक्त कर दिए गए थे और यूरोपियन सार्जेण्ट सड़कों पर पहरा दे रहे थे।

इस सङ्कटापन्न परिस्थिति में बङ्गाल के गवर्नर लॉर्ड रोनाल्डशे ने बङ्गाल के आन्दोलन के प्रमुख और भारतीय कॉङ्ग्रेस के अहमदाबाद में होने वाले अधिवेशन के भावी प्रेज़िडेण्ट श्री० देशबन्धु दास से मिल कर समस्या को हल करने का प्रयत्न किया। दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों में इस सम्बन्ध में बड़ी गर्म बहस हुई, परन्तु उसका निष्कर्ष कुछ भी न निकला। इसके परिणाम-स्वरूप बङ्गाल गवर्नमेण्ट ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की, जिसमें इस बात की घोषणा की गई, कि चूँकि कॉङ्ग्रेस के नेताओं से कोई समझौता नहीं हो सका, उसे ऐसी कार्यवाही करने की आवश्यकता प्रतीत होती है, जिससे इस परिस्थिति का मुक़ाबला किया जा सके। बङ्गाल गवर्नर और श्री० देशबन्धु दास के बीच में जो बातचीत हुई, उसका सार वायसराय के पास भी भेजा गया; और इस सम्बन्ध में एक ऐसी झूठी अफ़वाह भी उड़ गई, कि श्री० देशबन्धु दास समझौते के लिए वायसराय से मुलाक़ात करने गए थे।

अन्त में बङ्गाल-गवर्नमेण्ट ने श्री० दास को गिरफ़्तार करने का निश्चय कर लिया और इस निश्चय के अनुसार श्री० दास के नाम गिरफ़्तारी का वारण्ट निकाला गया। उनके साथ छः निम्न व्यक्तियों के नाम भी वारण्ट निकाले गए थे, जिनमें मुख्य बङ्गाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० बी० एन० ससमल बैरिस्टर, और पब्लिसिटी ऑफ़िसर श्री० सुभाषचन्द्र बोस और बङ्गाल प्रान्तीय ख़िलाफ़त कमिटी के प्रेज़िडेण्ट अबुल कलाम आज़ाद थे।

ये सब नेता सन् १९२१ की १०वीं दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए थे। श्री० देशबन्धु दास, श्री० सुभाषचन्द्र बोस और बैरिस्टर ससमल पर क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट की १७वीं धारा के अनुसार एक ग़ैर-क़ानूनी सभा के सञ्चालन तथा उसके प्रबन्ध का अभियोग लगाया गया था और मौलाना आज़ाद पर १२४वीं 'ए' धारा के अनुसार राजविद्रोह का। जिस दिन उपर्युक्त नेता गिरफ़्तार हुए थे, उसी दिन लगभग सौ वालण्टियरों के साथ श्री० हीरालाल गाँधी भी बड़े बाज़ार में पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे। श्री० विपिनचन्द्र पाल के पुत्र भी उसी दिन गिरफ़्तार किए गए थे।

गिरफ़्तारी के अनन्तर श्री० दास तथा अन्य लोगों से ज़मानत माँगी गई; परन्तु उन्होंने ज़मानत देने से साफ़ इनकार किया; और इसलिए वे प्रेज़िडेन्सी जेल भेज दिए गए। अपनी गिरफ़्तारी के बाद ही श्री० दास ने अपने देशवासियों को जो सन्देश भेजा था, वह सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलन के लिए उतना सङ्गत नहीं था, जितना वह सन् १९३० के सत्याग्रह आन्दोलन लिए के है। उन्होंने कहा था—"भारत के स्त्री-पुरुषो, यह तुम्हें मेरा अन्तिम सन्देश है। यदि तुम कष्ट-सहिष्णुता द्वारा विजय प्राप्त करना चाहते हो तो वह तुम्हारी होकर रहेगी। हम इस समय उन्हीं आपत्तियों को झेल रहे हैं, जिनसे राष्ट्रों का जन्म होता है; परन्तु हमारे राष्ट्र का नव-निर्माण उसी समय हो सकता है जब तुम इन आपत्तियों को धैर्य, साहस और असम्भ्रान्तिपूर्वक सहन करोगे। यह सदैव याद रक्खो! कि जब तक तुम अहिंसात्मक पथ पर आरूढ़ रहोगे, तब तक नौकरशाही को मुँह की खानी पड़ेगी। परन्तु यदि तुम उस पथ पर से, जो महात्मा गाँधी ने तुम्हारे लिए निश्चित कर दिया है, तिलमात्र भी विचलित हुए तो नौकरशाही मोर्चा मार ले जायगी। स्वराज्य प्राप्त करना हमारा उद्देश्य है—वैसा स्वराज्य नहीं, जो क़िस्तबन्दियों में अदा किया जा सके। हमारा ध्येय तो पूर्ण स्वराज्य है। अब मेरे प्यारे देशवासियो! उस ध्येय की प्राप्ति करना, जिसके लिए हम अनवरत संग्राम कर रहे हैं, तुम्हारे हाथ में है।

"मैं अपने मॉडरेट भाइयों से केवल यह कहना चाहता हूँ। सृष्टि के आदि से इतिहास का अध्ययन कर डालो। क्या किसी राष्ट्र ने उस मार्ग से, जिसका आप अवलम्बन कर रहे हैं, कभी स्वतन्त्रता प्राप्त की है? अधिकार प्राप्त हो जाने पर उनके विस्तृत सञ्चालन में सन्धि हो सकती है, परन्तु क्या स्वतन्त्रता के साधारण और सारभूत अधिकारों में भी सन्धि हो सकती है? यहीं नौकरशाही में और हममें बड़ा भेद उत्पन्न हो जाता है।"

१२वीं दिसम्बर को प्रेज़िडेन्सी जेल में श्री० देशबन्धु दास और अन्य अभियुक्त चौथे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सम्मुख पेश किए गए, परन्तु उनका मामला २३ तारीख़ के लिए स्थगित कर दिया गया। २३ वीं दिसम्बर को फिर मामला सन् १९२२ की ५वीं जनवरी को स्थगित कर दिया गया। इसी बीच में कलकत्ते के 'दी सर्वेण्ट' पत्र के सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर चक्रवर्ती, जो श्री० दास की अनुपस्थिति में बङ्गाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रमुख नियुक्त किए गए थे, ख़िलाफ़त वालों के एक मामले में गवाही देने के लिए बुलाए गए, परन्तु वे गवाही देने नहीं गए। इस कारण उन पर एक गिरफ़्तारी वारण्ट निकाला गया और वे गिरफ़्तार कर अदालत के सम्मुख पेश किए गए। उनकी गवाही लेने के पहले उनसे शपथ लेने के लिए कहा गया, परन्तु उन्होंने शपथ लेने से साफ़ इनकार कर दिया। इस पर उन्हें दण्ड-विधान की १७८वीं धारा के अनुसार शपथ न लेने के अभियोग में ४थी जनवरी, सन् १९२२ को तीन माह की सादी क़ैद की सज़ा दे दी गई।

५वीं जनवरी को कलकत्ते के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सम्मुख श्री० दास का मुक़द्दमा फिर प्रारम्भ हुआ। मुक़द्दमे में वैसे तो कोई विशेष बात न थी; परन्तु उस मुक़द्दमे में श्री० दास जैसे बङ्गाल के सर्वश्रेष्ठ नेता और प्रतिष्ठित वकील और कॉङ्ग्रेस के भावी प्रेज़िडेण्ट के अभियुक्त होने से मुक़द्दमे ने केवल बङ्गाल में ही नहीं, वरन समस्त भारत में सनसनी फैला दी थी। श्री० दास ने असह-

(शेष मैटर सोलहवें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

कर्तव्य की वेदी पर

[श्री० हरिश्चन्द्र वर्मा, विशारद]

"बहू ?"

"माता जी।"

"देखो, अजात आज भी नहीं आया !"

"........।"

"कहीं मृत्यु के भय से छिप तो नहीं रहा ?"

"......परन्तु आपने उन्हें यह तो लिखा नहीं था कि देश पर शत्रु चढ़ आए हैं। उसकी रक्षा के लिए तुम्हारी आवश्यकता है।"

"हाँ, यह तो नहीं लिखा, परन्तु सम्भव है किसी से पता लग गया हो।"

"........।"

"तो अब क्या किया जावे ?"

"आज सन्ध्या तक उनकी प्रतीक्षा और कीजिए। इसके बाद जो हो।"

"अच्छी बात है।"

२

"स्वामी ?"

"..............।"

"कहिए, चुप कैसे हो गए !"

"मुझे विजया की याद आ गई, वीरसिंह !"

".........।"

"ओह ! आज पाँच वर्ष के बाद मेरा उससे मिलन होगा। कितना मधुर ! कैसा आनन्द-दायक !! उसकी प्रेममयी स्मृति मेरी नस-नस में माधुर्य का सञ्चार कर रही है। नगर अब कितनी दूर और होगा ?"

"बस, अधिक दूर नहीं है, सन्ध्या तक हम लोग घर पहुँच जायँगे। परन्तु......।"

"क्यों, रुक क्यों गए ? कहो।"

"माता जी ने हमें अचानक इस भाँति बुलाने का कारण क्यों न लिखा ?"

"मेरी समझ में भी कुछ नहीं आता। घर पहुँचने पर ही ज्ञात होगा।"

फिर कुछ देर दोनों चुप रहे। अकस्मात् घोड़े की गति को धीमी करते हुए अजात ने कहा—"वीरसिंह !"

"स्वामी !"

"मुझे तो कुछ दाल में काला दिखाई देता है। लक्षण शुभ नहीं हैं। मेरी बाईं आँख फड़क रही है।"

"भगवान सब कुशल रक्खेंगे।"

"देखो, वह शृगाल भी रास्ता काट गया !"

"..............।"

"वही तो सामने क़िले की दीवारें हैं न ? परन्तु आज यह इतनी श्रीहीन क्यों लगती हैं ? सिंह-द्वार की नौबत भी नहीं सुनाई देती !"

"भगवान जानें।"

"कहीं कोई शत्रु तो नहीं चढ़......। मेरी भुजा भी फड़क रही है।"

"............।"

३

"प्राणनाथ ! शीघ्रता कीजिए। सवेरा हो गया। रणभेरी बज रही है।"

"..............।"

"हैं ! आप मेरी ओर इस प्रकार क्यों देख रहे हैं ! नाथ ! यह समय प्रेम का नहीं, कर्तव्य का है। उठिए, जल्दी आपको रण के लिए सुसज्जित कर दूँ। अरे ! आप किस चिन्ता में हैं ?"

"चिन्ता, विजया ! तुम्हें छोड़ दूँ ? आह ! कितने दिनों से तुम्हारे मधुर मिलन का स्वप्न देख रहा था। आज तुमसे मिला, परन्तु भली प्रकार बातचीत भी न कर पाया। तुम्हारे मधुरालिङ्गन द्वारा अपने दग्ध हृदय को शान्ति भी न दे सका।"

"कोई चिन्ता नहीं। यदि मुझसे न मिल सके तो कोई हानि नहीं। देश इस समय सङ्कट में है, उसकी रक्षा कीजिए। उसके उपरान्त जब आप रण-विजयी होकर लौटेंगे, तो मेरा आपका प्रेम-मिलन होगा।"

"परन्तु विजये ! तुम्हारे प्रति भी तो मेरा कुछ कर्तव्य है।"

"परन्तु, स्वदेश के प्रति जो कर्तव्य है, वह उसके बराबर तो नहीं।"

"..........."

"जीवन-धन ! स्वदेश-रक्षा के लिए प्राण दे देना प्रत्येक देशवासी का प्रथम कर्तव्य है। इसके सम्मुख स्त्री-पुत्र तथा अन्य प्रिय परिजनों का विचार करना कायरता है; मातृभूमि के प्रति विश्वासघात है।"

"..........."

"प्राणेश ! प्रेम तथा कर्तव्य में अन्तर है। कर्तव्य के समय प्रेमालाप कापुरुषता है। कर्तव्य से आँख चुराना कर्तव्याघात है। उस........।"

"बस करो विजया, बस ! इतना ही बहुत है। तुमने आज मेरी आँखें खोल दीं। मुझे वास्तविक कर्तव्य का ज्ञान करा दिया। मैं अब तक मोह-जाल में जकड़ा हुआ था। आत्मानन्द से बढ़ कर संसार में मुझे और कोई वस्तु प्रिय न थी। परन्तु अब ऐसा नहीं है, मैं अभी समर-भूमि को जाना चाहता हूँ। मुझे शीघ्र ही सुसज्जित करो।"

आत्म-गौरव से विजया का स्वर्णमय मुख दमक उठा। जल्दी-जल्दी उसने पति को रण के लिए प्रस्तुत करना आरम्भ कर दिया। अजात अब पूर्णरूप से तैयार हो चुके थे। नङ्गी तलवार उनके हाथ में देते हुए विजया ने एक बार सिर से पैर तक उन्हें देखा। अजात से उसकी आँखें चार हो गईं। उन्होंने देखा, विजया का चेहरा उतरा हुआ था, नेत्र भर आए थे। साश्चर्य उसकी ओर देखते हुए उन्होंने पूछा—"प्रिये यह क्या ?"

"कुछ नहीं, यह हृदय की क्षणिक दुर्बलता है।"—और उसने आँसू पोंछ डाले।

"अच्छा विजया ! विदा दो, सूर्यदेव निकल आए।

"विदा ! प्राणेश विदा !! भगवान कुशल करें।"

(१५वें पृष्ठ का शेषांश)

योगियों के नियमों के अनुसार मुक़दमे की कार्यवाही में भाग लेने से इनकार कर दिया। सरकार की ओर से, देशबन्धु पर यह अभियोग साबित करने के लिए कि उनका बङ्गाल की काँङ्ग्रेस से घनिष्ट सम्बन्ध है और वे बङ्गाल गवर्नमेण्ट के प्रासङ्गिक क़ानूनों को भङ्ग करने के लिए वालण्टियरों का दल एकत्रित कर रहे हैं, गवाही ली गई; और चार गवाहों के बयान लेने के पश्चात् मामला १२वीं जनवरी को स्थगित कर दिया गया। १२ तारीख़ को जब कि मुक़दमे की कार्यवाही हो रही थी तब एक ऐसी घटना हो गई कि यदि उस समय पुलिस समुचित प्रबन्ध न करती तो बहुतों की जान जाने तक का भय था। अदालत के अहाते में लोगों की एक बड़ी भीड़ एकत्र हो गई थी और वह महात्मा गाँधी तथा श्री० चित्तरञ्जन दास के जयघोष से आकाश कँपा रही थी। उस भीड़ के पास बैलैन नामक एक एङ्गलो इण्डियन गार्ड खड़ा था, वह इस जयघोष से बहुत उत्तेजित हो गया और अपने पॉकेट से रिवॉल्वर निकाल कर भीड़ पर टूट पड़ा। इससे भीड़ में से बहुत से लोग उत्तेजित हो उठे और उसे मारने के लिए तैयार हो गए। परन्तु पुलिस के कुछ ऑफ़िसर शीघ्र ही बीच में आ गए और लोगों को शान्त कर के बैलैन को गिरफ़्तार करके ले गए।

१२वीं जनवरी को मामला फिर २०वीं जनवरी को स्थगित कर दिया गया। २०वीं जनवरी को श्री० दास पर क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७वीं धारा के १ले और २रे खन्डों का अभियोग लगा दिया गया। अभियोग लगा देने के बाद भी मामला कई पेशियों तक स्थगित होता रहा। २०वीं जनवरी के बाद २७वीं जनवरी और फिर ७वीं और १४वीं फ़रवरी को उनके मामले की पेशियाँ हुईं। इसी बीच में अन्य नेताओं की भी कार्यवाही होती रही। ७वीं फ़रवरी को श्री० सुभाषचन्द्र बोस को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७वीं धारा के १ले और २रे खण्डों के अभियोग में छः माह की सादी क़ैद की सजा दी गई और मौलाना अबुल कलाम आजाद को दण्ड-विधान की १२४वीं 'ए' धारा के अनुसार राजविद्रोह के अभियोग में एक साल की सख़्त क़ैद की सजा दी गई। १४वीं फ़रवरी को मुक़दमे की कार्यवाही पुनः प्रारम्भ होने पर श्री० चित्तरञ्जन दास और श्री० ससमल बैरिस्टर को भी क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७वीं धारा के अनुसार छः-छः माह की सादी क़ैद की सजा दी गई।

* * *

४

"माता जी ! विदा दीजिए।"

"आ गए अजात ! बड़ी देर लगाई बेटा !"

"..........."

"अच्छा अब जाओ। देर हो रही है। तुम्हारे मित्र तुम्हारी बाट जोह रहे होंगे।"

"........।"

"परन्तु ठहरो। आओ, तनिक तुम्हें छाती से लगा लूँ। देखो बेटा; मेरे दूध की लाज रखना !"

"अच्छा माँ, प्रणाम !"

"जाओ बेटा, भगवान एकलिङ्ग तुम्हारे सहायक हों।"

५

"तारा ?"

"बहिन !"

"कहो, आज का क्या समाचार है ?"

"आज का समाचार जितना सुखप्रद है उससे कहीं अधिक दुखप्रद।"

"कैसे ?"

"आज जब युद्ध आरम्भ हुआ तो विजयसिंह सेनापति बनाए गए। उन्होंने बड़ी वीरता से

मिल गई कुरसी तो हम समझे मिली एक सल्तनत !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

मग़रबी तहज़ीब की है वह घटा छाई हुई,
हिन्द की बिजली भी जिस पर दिल से शैदाई हुई !!
मिल गई कुरसी तो हम समझे मिली एक सल्तनत !
हो रहे हैं ख़ुश कि अपनी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई हुई !!
वक्त पर खिलने नहीं देती ज़माने की हवा !
देखता हूँ जिस कली को, वह है मुरझाई हुई !!
कल तो हम कहते थे जीती-जागती तस्वीर है !
आज अपनी क़ौम पर, है मुर्दनी छाई हुई !!
दोस्त अपने दिल में दुश्मन की तरह जलने लगे,
हज़रते "बिस्मिल" की ऐसी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई हुई !!

* * *

शत्रुओं का सामना किया। दोपहर तक सहस्रों शत्रुओं को रण-शय्या पर सुला दिया। परन्तु अन्त में शत्रुओं ने उन्हें मार गिराया। फिर अजात सेनापति बने। ओह ! कैसी वीरता से उन्होंने शत्रुओं का संहार किया ! उनके एक-एक प्रहार में तीन-तीन, चार-चार शिर कट कर पृथ्वी पर लोटने लगते थे। अन्त में शत्रु-दल को चीरते हुए अजात शत्रु सेनापति के सम्मुख जा पहुँचे और तलवार का ऐसा सधा हाथ मारा कि उसका सिर कट कर दस पग पर जा गिरा। परन्तु...।"

"उसके बाद ? उसके बाद क्या हुआ तारा ! बताओ, तुम रुक क्यों गईं ?"

"तुरन्त ही एक समीपवर्ती सिपाही ने अपने तीक्ष्ण भाले का ऐसा भरपूर हाथ मारा कि भाला उनके वक्षस्थल को छेद कर निकल गया। बस वह गिरे और "विजया ! मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया" कहते हुए अन्तिम निद्रा की गोद में सो गए !........।"

"क्यों ? क्यों ?? तारा, तुम रोने क्यों लगीं ?"

"...........।"

"आह ! तारा !! रोओ मत; यह समय रोने का नहीं, कर्तव्य का है। भला जब तुम्हीं इस प्रकार रोओगी तो मैं कैसे धैर्य धारण कर सकूँगी। तुम्हारा रुदन देख कर मेरी छाती विदीर्ण हो रही है।"

तारा ने आँसू पोंछे और एक बार विजया के विषादपूर्ण चेहरे की ओर देख कर मन में कहा—"वास्तव में विजया का हृदय बड़ा कठोर है !"

६

रात का एक बज चुका था। वीभत्स निर्जन श्मशान में एक चिता धू-धू कर जल रही थी। उसकी धूम्रालिङ्गित लोल लपटें दूर तक अपना रक्तिम प्रकाश फैला कर मानो उस स्थान को और भी भयानक बना रही थीं। चिता से निकली हुई चरचराहट हृदय-भेदी बाणों की तरह, उस स्थान की भीषण नीरवता का वक्षस्थल विदीर्ण कर रही थी।

चिता के समीप ही दो स्त्रियाँ बैठी हुई, टकटकी बाँधे उस जलते शव शरीर को देख रही थीं। उनके मुख पर विषाद की छाया थी, पर नेत्रों में अश्रु न थे। हृदय भग्न हो चुका था, परन्तु मुख पर आत्म-गौरव की आभा झलक रही थी।

मृत शरीर पूर्णरूप से भस्म हो चुका था। उसकी चरचराहट भी अब शान्त हो गई थी। लपटें धीमी पड़ गईं। अग्निदेव मानो अपना कर्तव्य-पालन कर चुके ! वृद्धा ने सिर उठाया और आकाश की ओर देख एक लम्बी साँस ली। तदुपरान्त खड़ी हुई और बोली—विजया, उठो। अब क्यों बैठी हो ? अभी हमें और भी बहुत सा काम करना है। तुम्हें ज्ञात है, तुम्हारे सम्मुख ही, इसी स्थान पर, एक दिन मैंने अपने हृदयेश्वर को स्वदेश की भेंट चढ़ाया था और आज अपने हृदय के टुकड़े अजात को भी यहीं पर छोड़े जाती हूँ। परन्तु अभी हमारी पूजा शेष नहीं हुई है। अभी हमें संसार को दिखलाना है कि क्षत्राणियाँ कर्तव्य के लिए क्या नहीं कर सकतीं ? उठो, चलो।

विजया उठ खड़ी हुई। उसका शोकाकुल मुख अन्तरात्मा की दिव्य कान्ति से आलोकित था। उसने दीर्घ-निश्वास के साथ एक बार फिर बुझती हुई चिता पर दृष्टि डाली और वृद्धा के पीछे-पीछे चल दी। उसकी दृष्टि में वेदना थी, कातरता थी, व्यथा थी; धैर्य था, तेज था—सब कुछ था।

७

दिन निकला। शनैः-शनैः सूर्य भगवान ने विश्व-मण्डल में प्रवेश किया। उनका आगमन देख तारिकाओं ने अपना मुख गगन के शुभ्र आँचल में छिपा लिया।

समस्त नगर में सन्नाटा छाया हुआ था। बड़े-बड़े राज-मार्गों से लेकर छोटी-छोटी गलियों तक आज सभी स्थान जन-शून्य थे। चारों ओर नैराश्य की घनघोर घटा घिरी हुई थी।

अकस्मात् भीषण शब्द के साथ एक विशाल भवन का द्वार खुला और दो स्त्रियाँ केसरिया वस्त्र पहने घोड़ों पर सवार बाहर निकलीं। वे सैनिक वेश में थीं। उनके हाथों में चमकती हुई नङ्गी तलवारें थीं।

बाहर निकल कर क्षण भर के लिए एक ने दूसरी की ओर देखा और एक ओर को रास फेर दी।

उनके मुख पर दिव्य आलोक था, हृदय में कर्तव्य-पालन की अलौकिक आकांक्षा थी।

* * *

अनेकों पदक-प्राप्त

हास्य रस के सफल लेखक

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०

जिनका "साहित्य का सपूत" शीर्षक हास्य-रस का नाटक 'भविष्य' के १वीं मार्च वाले अङ्क से धारावाही रूप में प्रकाशित होगा। पाठकों को नोट कर लेना चाहिए और अभी से 'भविष्य' की ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिए अथवा अपने यहाँ के स्थानीय एजेण्ट को ठीक कर लेना चाहिए। आपकी लिखी हास्य-रस की सर्व-श्रेष्ठ और रुचिर 'लतखोरीलाल' शीर्षक पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई है।

इटली में प्रजातन्त्रवाद

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

(शेषांश)

पर्मा, मोडेना, पिया सेञ्जा और रिगियो ऐमिलिया प्रदेशों ने प्रारम्भ में ही पीडमोण्ट राज्य में सम्मिलित होने की घोषणा कर दी थी और लम्बार्डी का एक दल भी इसके पक्ष में था। अन्त में लम्बार्डी की प्रॉविज़नल सरकार की एक मीटिङ्ग हुई, जहाँ बड़े उग्र वाद-विवाद के बाद लम्बार्डी प्रदेश को भी 'पीडमोण्ट राज्य' में मिला देने का प्रस्ताव पास हो गया। जनता को जब इसका पता लगा तो उसमें इसके विरुद्ध तीव्र असन्तोष के भाव फैल गए। चार्ल्स एलबर्ट की अनेक घोषणाओं में यह कहा गया था कि जनता ने अपने ही साहस से स्वतन्त्रता प्राप्त की है और इसलिए उसे अपनी शासन-प्रणाली स्वयं निश्चय करने का पूरा अधिकार है। परन्तु अब जिस नीति का अवलम्बन किया जा रहा था, उससे उनके इस अधिकार में अनुचित हस्तक्षेप होता था, परन्तु ऑस्ट्रिया का भय भी सिर पर था और प्रजा-पक्ष के नेता इस समय आपस में मतभेद पैदा करके शत्रु के पक्ष को सबल नहीं बनाना चाहते थे, इसलिए वे चुप हो गए। पर असन्तोष की ज्वाला भीतर ही भीतर काम करने लगी।

इस समय न्यूगेण्ट और रेडेट्ज़की की ऑस्ट्रियन सेनाएँ मिल गई थीं और उन्होंने पीडमोण्ट की सेना पर आक्रमण कर दिया था, पहले तो पीडमोण्ट की सेना उन्हें पीछे हटाने में समर्थ हुई, परन्तु फिर मोर्चा उनके हाथ से निकलने लगा और दुश्मनों ने विसञ्जा नगर अपने क़ब्ज़े में कर लिया। फिर तो बहुत सा प्रदेश दुश्मनों के अधिकार में चला गया। इधर चार्ल्स एलबर्ट की शक्ति लम्बार्डी को पीडमोण्ट राज्य में मिलाने की ओर लगी हुई थी।

इस समय इटली के भिन्न-भिन्न दलों में इतना मतभेद हो गया था कि राष्ट्र की बहुत सी शक्ति व्यर्थ ही नष्ट हो रही थी। एक राजधानी के प्रश्न को लेकर ही बड़ी 'तू-तू, मैं-मैं' हुई। ट्यूरिन और मिलन, दोनों नगर राजधानी बनने का दावा करते थे। मई सन् १८४८ के अन्त में मिलन में प्रजातन्त्रवाद के पक्ष में भारी सार्वजनिक प्रदर्शन हुए। चार्ल्स एलबर्ट सहित सब राजाओं को धोखेबाज और देशद्रोही कहा गया। पीडमोण्ट राज्य में मिलने की घोर अनिच्छा प्रकट की गई और प्रॉविज़नल सरकार को इस्तीफ़ा दे देने के लिए कहा गया। परन्तु यह आन्दोलन शीघ्र ही दब गया और बहुमत से लम्बार्डी को पीडमोण्ट राज्य में मिलाना निश्चय हो गया।

इस तरह इटली के बहुत से स्वतन्त्र प्रदेशों ने पीडमोण्ट राज्य में मिलने का निश्चय कर लिया। अब केवल वेनिस ही ऐसी जगह रह गई, जहाँ अब भी प्रजातन्त्र की पताका फहरा रही थी। परन्तु चार्ल्स एलबर्ट के एजेण्टों ने उसे भी पीडमोण्ट राज्य में मिलाने का आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था; और उन्हें सफलता भी मिली। अन्त में वेनिस ने भी पीडमोण्ट राज्य में मिलना निश्चय कर लिया। इसलिए वहाँ के देशभक्त शासन-प्रबन्ध से पृथक हो गए। पर इससे यह नहीं समझना चाहिए कि देश की अधिकांश जनता चार्ल्स एलबर्ट के पक्ष में थी। बात यह थी कि इन स्वतन्त्र हुए प्रदेशों की प्रॉविज़नल सरकारों में अमीर और धनी लोगों की संख्या अधिक थी। यद्यपि ऑस्ट्रिया की पाशविक नीति से दुखी होकर ये उसके प्रति विद्रोह करने को विवश हुए थे, परन्तु यह पूरे राजतन्त्रवाद के समर्थक थे। इन्हें प्रजातन्त्र सैनिकों के उग्र विचारों से भय लगा रहता था, इसलिए वे किसी भी उदार इटली-निवासी राजा के अधिकार में उत्तरीय इटली राज्य की स्थापना करना चाहते थे। इन्हें हम इटली के मॉडरेट कह सकते हैं। इनके अतिरिक्त जनता में एक बहुत बड़ा भाग उन लोगों का था, जो देश से ऑस्ट्रिया को तो निकालना चाहते थे, परन्तु अन्य मामलों में उदासीन थे। इसलिए सभ्यता के विचार से ये भी उक्त मॉडरेट दल के समर्थक हो जाते थे।

इस समय लॉर्ड पामरस्टन को मध्यस्थ करके ऑस्ट्रिया और चार्ल्स एलबर्ट में समझौते की बात चल पड़ी थी और ऑस्ट्रिया चार्ल्स एलबर्ट की माँगों को स्वीकार करने के लिए तैयार भी था। परन्तु रेडेट्ज़की ने लिखा कि उसकी स्थिति बहुत मज़बूत हो गई है और वह शीघ्र ही सारे उत्तरी इटली में विद्रोह को दबा कर सम्राट की पताका फहरा देगा। इसलिए कोई समझौता न हो सका।

सोमा-कम्पेगना में पीडमोण्ट सेना ने पहले तो वीरता से ऑस्ट्रियन सेना का मुक़ाबला किया, परन्तु अन्त में ऑस्ट्रियन सेना ने उन्हें बराबर पीछे खदेड़ना शुरू किया। मिलन में एक रक्षा-समिति बनाई गई और इसने तीन ही दिन में बहुत कुछ सङ्गठन कर लिया। क्या मिलन फिर ऑस्ट्रियन सेना के अधिकार में चला जायगा? इस प्रश्न के उठते ही मिलन-वासियों की आँखों में ख़ून उतर आया और वे अपने नगर की रक्षा करने के लिए जी-जान से तैयार हो गए। इतने में चार्ल्स एलबर्ट ने समाचार भेजा कि वह मिलन की रक्षा के लिए स्वयं आ रहा है और उसके साथ चालीस हज़ार सैनिक हैं।

चार्ल्स एलबर्ट आया, पर उसकी पीडमोण्ट सेना लम्बी यात्रा के कारण थक कर चूर हो रही थी, निराशा और बीमारी ने उनकी कमर तोड़ दी थी और रसद की कमी के कारण भूख से भी व्याकुल हो रही थी। सेना में लड़ने का तनिक भी साहस न था। ४ अगस्त को कई छोटी-मोटी लड़ाइयाँ हुईं, परन्तु ५ तारीख़ को ऑस्ट्रिया की तोपें बिल्कुल शान्त थीं। मिलन-वासियों को मालूम हुआ कि चार्ल्स एलबर्ट ने आत्म-समर्पण कर दिया है। जब राजा जाने की तैयारी कर रहा था तो जनता ने उसे घेर लिया और उसके सामने ही ज़ोर-ज़ोर चिल्लाने लगी कि "हमें धोखा दिया गया। चार्ल्स एलबर्ट मर जावे।" राजा ने भीड़ के नेताओं को बुला कर पूछा—"जनता क्या चाहती है?"

"मृत्यु अथवा युद्ध! यदि आप लड़ने से इनकार करेंगे तो हम में से कोई भी आपके जीवन की ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता।"

"परन्तु! गोला-बारूद तो निबट चुका है और जनरल जुची तथा सैनिक कमिश्नर कहते हैं कि रेडेट्ज़की की गोलाबारी के सामने नगर को दुश्मनों के हाथ सौंप देने के सिवा और कोई चारा नहीं है।"—राजा ने कहा।

"वे झूठ बोलते हैं!" जनता के प्रतिनिधि लिट्टा ने गर्ज कर कहा और एक सैनिक, जो पास ही खड़ा था, बोला—"जनता युद्ध की प्यासी है, सन् १८२१ का स्मरण रक्खो।"

चार्ल्स एलबर्ट ने चिल्ला कर कहा—"तब लड़ाई होने दो, मैं अपना रक्त तुम्हारे लिए बहाने को तैयार हूँ।" यह कह कर उसने अपना हाथ उस सैनिक की ओर बढ़ाया। सैनिक ने घुटने टेके और 'युद्ध! युद्ध!' कह कर राजा का हाथ चूम लिया। परन्तु उसी रात को कायर जनरल और दूसरे अफ़सर चार्ल्स एलबर्ट को भगा ले गए। रेडेट्ज़की ने नगर पर क़ब्ज़ा कर लिया।

जनता पोप के प्रति क्रुद्ध हो उठी थी। यदि वह इस कठिन परिस्थित में इटली को धोखा देकर ऑस्ट्रिया का साथ न देता तो क्या उसके हाथ से वह स्वतन्त्रता, जिसे उन्होंने अपना रक्त देकर प्राप्त की थी, इस तरह जाती हुई दिखाई देती? पोप-राज्य के टस्कनी प्रदेश में विप्लव की ज्वालाएँ धधक उठीं। जनता ने रोम में पोप के महामन्त्री को, गाड़ी में से उतरते हुए घेर लिया और मार डाला। परन्तु इस घटना पर वहाँ की व्यवस्थापिका सभा ने ध्यान तक न दिया, कोई गिरफ़्तारियाँ न हुईं और सेनाओं ने भी जनता को तितर-बितर करने से इनकार कर दिया। मन्त्रि-मण्डल ने इस्तीफ़ा दे दिया और नया मन्त्रि-मण्डल बनाने के लिए कोई भी तैयार न हुआ। अगर स्विस गार्ड पोप की रक्षा न करते तो क्रुद्ध जनता उसके भी प्राण लेकर ही छोड़ती। अन्त में पोप छिप कर भागा और बवेरिया पहुँच कर अपनी विद्रोही प्रजा से बदला लेने के लिए ऑस्ट्रिया, स्पेन और नेपिल्स के राजाओं को आमन्त्रित किया।

मेज़िनी और गेरीबाल्डी मिल कर इस समय इटली की रक्षा और प्रजातन्त्र की स्थापना के महान् कार्य में लग गए। वास्तव में यदि हम मेज़िनी को इटली-क्रान्ति का मस्तिष्क कहें तो गेरीबाल्डी ने इटली की स्वतन्त्रता में बाहुओं का काम किया है। १६ मार्च, १८४९ को रोम में प्रजातन्त्र के अधीन एक 'युद्ध-समिति' बनाई गई और निश्चय किया गया कि ४५,००० सैनिकों की एक सेना का तुरन्त सङ्गठन किया जाय और यदि पीडमोण्ट राज्य लड़ना स्वीकार करे तो उसकी सहायता के लिए दस हज़ार सैनिक और भेजे जायँ। यद्यपि चार्ल्स एलबर्ट ने रोम के प्रजातन्त्र के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया, तो भी वह रण-क्षेत्र में आने को तैयार हो गया। परन्तु शीघ्र ही कितनी ही जगह बुरी तरह पराजित होने के कारण वह अपने ज्येष्ठ पुत्र विक्टर एमानुएल को गद्दी पर छोड़ कर भाग गया। जनता चार्ल्स एलबर्ट की कमज़ोरियों को जानती थी, परन्तु यह भी जानती थी कि वह इटली से विदेशियों को निकालने के भावों से सदा प्रेरित रहा है, इसलिए उसके हृदय में उसके वंश की प्रतिष्ठा कम न हुई थी।

रोम में जब प्रजातन्त्र सरकार देश की रक्षा का प्रबन्ध करने में लगी हुई थी और गेरीबाल्डी नेपिल्स पर आक्रमण करके वहाँ प्रजातन्त्र स्थापित करने का विचार कर रहा था, उसी समय १०,००० हज़ार फ्रान्सीसी सैनिकों को लेकर ओडीनोट सिविटीवेलिया बन्दरगाह पर उतरा और घोषणा की कि वह रोम में पोप के अधिकारों की रक्षा तथा विद्रोहियों को दबाने के लिए आया है। उसने रोम पर आक्रमण किया, पर गेरीबाल्डी और उसके नवयुवक सैनिकों की वीरता के कारण उसे बुरी तरह मुँह की खानी पड़ी और फ्रान्स जब ऊपर से समझौते की बात कर रहा था तो भीतर से ओडीनोट दूसरा आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था। इसी बीच में नेपिल्स के राजा ने भी रोम के प्रजातन्त्र पर धावा बोल दिया, परन्तु गेरीबाल्डी ने उसे भी मार भगाया और यदि प्रजातन्त्र के दूसरे सेनापति रोसेली ज़रा ढिलाई न कर देता तो वह राजा फ़र्डीनेण्ड को भी गिरफ़्तार कर लेता।

ओडीनोट गेरीबाल्डी द्वारा पीछे खदेड़े जाने पर रोम के चारों ओर घेरा डालने की तैयारी करता रहा। यदि गेरीबाल्डी को सेना के पूरे अधिकार मिले होते तो वह अब भी प्रजातन्त्र की रक्षा कर सकता था, परन्तु अन्य फ़ौजी अफ़सरों से प्रायः उसका मतभेद हो जाता था, इसलिए उसकी योजनाएँ असफल हो जाती थीं। जब फ्रान्स-सरकार इटली प्रजातन्त्र से समझौते की बातचीत कर ही रही थी तो ओडीनोट ने, दूसरी और तीसरी जून की रात को, नगर के चारों ओर घेरा डाल दिया था, और जिन जगहों से गेरीबाल्डी ने उसे खदेड़ दिया था वे सहज में ही फिर फ्रान्सीसियों के अधिकार में चले गए। फ्रान्सीसी भयङ्कर गोलाबारी कर रहे थे। गेरीबाल्डी ने चौदह घण्टे तक भयङ्कर लोहा लिया। अन्त में वह और उसके वीर नवयुवक सैनिक तलवार लेकर शत्रु-दल में कूद पड़े और दो दफ़े फ्रान्सीसियों का मुँह मोड़ दिया, परन्तु इस समय फ्रान्सीसियों के हाथ में कई महत्वपूर्ण मोर्चे आ चुके थे। ३,४०० प्रजातन्त्रवादियों की लाशों से भूमि पट चुकी थी। उनकी विजय निश्चित थी। गेरीबाल्डी ने इस व्यर्थ नर-संहार को रोकने के लिए अपने वीर युवक सैनिकों के साथ से पीछे हटना शुरू किया। कई बार वह ऑस्ट्रियन और फ्रान्सीसी सेनाओं में घिर गया, परन्तु अपनी वीरता और साहस से वह और उसके सैनिक गिरते-पड़ते निकल गए। ऑस्ट्रियन अधिकारियों ने सारे प्रदेश में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई गेरीबाल्डी को किसी तरह की सहायता या आश्रय देगा वह फाँसी पर चढ़ा दिया जायगा। इस कठिन समय में गेरीबाल्डी की धर्मपत्नी अनिता ने अपने पति का साथ दिया था। पर थकान और परिश्रम से उसके जीवन-दीप की लौ मन्दी होने लगी, और अन्त में बुझ ही गई! गेरीबाल्डी गुप्त रूप से सारडिनिया पहुँचा। परन्तु वहाँ जहाज़ी अफ़सरों ने उससे पासपोर्ट दिखाने को कहा। और जब वह पासपोर्ट न दिखा सका तो उसे जेलख़ाने में बन्द कर दिया, जहाँ जेकोपो सफ़ियानी आत्महत्या करके मर गया था।

इधर मेज़िनी भी भागा। उसे इस पराजय से इतना दुःख हुआ कि खाना और सोना तक छोड़ दिया। ख़ैर, उसे एक अमेरिकन कौन्सिल ने संयुक्त-राज्य अमेरिका के लिए पासपोर्ट दे दिया। परन्तु बिना फ्रान्सीसी वीसा (Visa) के वह व्यर्थ था। मेज़िनी सिवाट वेशिया बन्दरगाह पर पहुँचा, वहाँ मार्सलीज़ जाने को एक जहाज़ तैयार था, उसने उसके कप्तान से जाकर कहा कि मैं मेज़िनी हूँ, मेरे पास पासपोर्ट नहीं है; क्या तुम मुझे ले जाने का साहस कर सकते हो? कप्तान ने स्वीकार कर लिया। एक जगह ऑस्ट्रियन कर्मचारियों ने जहाज़ की तलाशी भी ली, पर मेज़िनी तश्तरियाँ साफ़ करने के काम में लग गया। इसलिए कोई पहचान न सका।

पोप फिर रोम की गद्दी पर बिठाया गया। एक प्रजातन्त्रवादी सरकार ने ही अपने पड़ोस के उगते हुए प्रजातन्त्र शासन को कुचल डाला। फ्रान्स की राज्य-परिषद में वहाँ के एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ एमानुएल आर्गो ने रोम के प्रश्न पर भाषण देते हुए कहा—"लेकिन यह याद रक्खो कि पोप की ईश्वरीय शक्ति का अन्त अब होने ही वाला है। तुम उसे गिरते हुए सिंहासन से बाँध कर उसकी रक्षा नहीं कर सकते × × × सावधान! कहीं ऐसा न हो कि वह सिंहासन गिर कर फ्रान्स के विमल यश और वैभव को भी अपने नीचे दफ़न कर दे।" अन्त में उसने मन्त्रि-मण्डल को लक्ष्य करके कहा—"लेकिन आपको फ्रान्स के यश और प्रतिष्ठा की क्या चिन्ता है? आप तो धार्मिक कट्टरता और मूढ़ता द्वारा निर्धारित मार्ग पर चलते रहेंगे, वह मार्ग जो अनन्त अन्धकारमय है। ओह! × × × परन्तु तुम्हें इसका दण्ड मिलेगा! कि तुम जिन वीरों को Caluminate करते हो इतिहास उनको चमका देगा और उन पर किए गए अपमानों का तुमसे बदला लेगा। और फ्रान्स के प्रजातन्त्र के मन्त्रियो! तुम्हारा नाम उसके काले पृष्ठों में लिखा होगा जिसका शीर्षक होगा "विश्वासघात!" परन्तु न्यायप्रिय आर्गो की ये चेतावनियाँ व्यर्थ गईं। ४६९ मत रोम प्रजातन्त्र के विरुद्ध और १८० पक्ष में आए। जिन मनुष्यों ने अपने देश में प्रजातन्त्र स्थापित करने के लिए हज़ारों मनुष्यों का रक्त बहा दिया था वे ही धार्मिक अन्ध-विश्वास से प्रेरित होकर अपने सिद्धान्तों का हनन करने को तैयार हो गए!

अस्तु, मेज़िनी स्विट्ज़रलैण्ड पहुँचा और फिर वहाँ से इङ्गलैण्ड चला गया। अन्य बहुत से प्रजातन्त्रवादी भी इटली को छोड़ कर आस-पास के देशों में चले गए थे। उनकी करुण-स्थिति देख कर मेज़िनी का दुख दूना हो जाता था। निराशा की घटाएँ चारों ओर से घिर आई थीं। परन्तु मेज़िनी ने धीरज न छोड़ा। उसने इङ्गलैण्ड में आकर इटली राष्ट्रीय समिति बनाई, उसका उद्देश्य तमाम देश-भक्तों की कार्य-शक्ति का एक केन्द्र स्थापित करना था। पेरिस में जो निर्वासित इकट्ठे हुए थे, उन्हें फ्रान्स में एक नवीन क्रान्ति होने और उसके परिणाम-स्वरूप इटली से फ्रान्सीसी सेना वापस बुला लेने की आशा थी। मेज़िनी ने एक करोड़ लीरा का राष्ट्रीय क़र्ज़ा नोटों द्वारा एकत्रित किया। इटली में इन नोटों का ख़ूब स्वागत हुआ और देश-भक्तों में वे सिक्कों की तरह चलने लगे।

सन् १८५१ के अन्त और सन् १८५२-५३ में ऑस्ट्रिया की इटालियन प्रजा बराबर उसके क़ानूनों और आज्ञाओं को ठुकराती रही। सन् १८५१ के पहले छः महीनों में २,५५२ देश भक्तों को मृत्यु या आजन्म क़ैद का दण्ड मिल चुका था। और ऐन्टे के फ़ौजी न्यायालय द्वारा ११५ मौत के घाट उतारे जा चुके थे, परन्तु इतने पर भी लम्बार्डी और दूसरे स्थानों में क्रान्ति की तैयारियाँ ज़ोरों से हो रही थीं। मण्टुआ में १६ देश-भक्त विद्रोहपूर्ण पर्चे चिपकाने के अपराध में गोली से उड़ा दिए गए।

मिलन में जिस क्रान्ति की तैयारी की जा रही थी वह फ़रवरी, १८५३ को फूट पड़ी और पूर्ण असफल रही। कुछ देश-भक्त फाँसी पर टाँग दिए गए और हज़ारों जेल में ठूँसे गए। यह असफलता प्रजातन्त्रवादियों के लिए बड़ी मँहगी पड़ी और इस समय से उनका प्रभाव निरन्तर घटने लगा।

इधर दो-एक वर्ष पहले ही से पीडमोण्ट में राजतन्त्रवाद की शक्तियाँ सबल हो रही थीं। सन् १८५२ में काबूर महामन्त्री बना और मिलन के विद्रोह के बाद उसने मेज़िनी के दल को नष्ट कर देने में कोई कसर न छोड़ी। जिन मनुष्यों पर इस षड्यन्त्र में तनिक भी सहयोग देने का सन्देह हुआ, उन्हें सार्डिनिया के द्वीप में निर्वासित कर दिया। और प्रजातन्त्रवादी पत्रों पर मुक़दमे चलाए गए। जूरियों ने प्रायः सभी सम्पादकों को निर्दोष बताया, पर केवल एक *Italia del Popola* को छोड़ कर बाक़ी सब नष्ट कर दिए गए। काबूर प्रजातन्त्रवादियों का दुश्मन था। परन्तु साथ ही वह ऑस्ट्रियनों का भी शत्रु था। वह देश को ऑस्ट्रियनों की ग़ुलामी से मुक्त करके एक राजा के अधिकार में संयुक्त-राज्य स्थापित करना चाहता था। ऑस्ट्रिया ने काबूर को लिखा कि पीडमोण्ट में रहने वाले लम्बार्ड नागरिकों की जायदाद ज़ब्त कर ली जाय, परन्तु काबूर ने इसे स्वीकार नहीं किया। इससे पीडमोण्ट और ऑस्ट्रिया

का राजनीतिक सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। परन्तु फिर उसी ने स्विट्ज़रलैण्ड की सरकार को लिखा कि वह इटली से भागे हुए राजनीतिक लोगों को अपने देश से निकाल दें। स्विट्ज़रलैण्ड से निकाले जाने पर हज़ारों देश-भक्त इङ्गलैण्ड में इकट्ठा हो गए। इन भगोड़ों की आर्थिक स्थिति पर विचार करके हृदय काँप जाता है। इनमें से कितने ही पेट की ज्वाला से पीड़ित होकर संसार से कूच कर गए। मेज़िनी अब भी स्विट्ज़रलैण्ड में छिपा था और इनके लिए आर्थिक सहायता पहुँचाने की चेष्टा कर रहा था। इस समय कुछ ऐसे लोग थे जो मध्यम श्रेणी के थे। परन्तु देश की भावनाओं से प्रेरित होकर अपने साधनों का एक-एक करके होम कर रहे थे। परन्तु देश के अमीर और धनाढ्य लोगों से बहुत कम सहायता प्राप्त होती थी। मेज़िनी ने अपने एक मित्र को निर्वासित और आपत्ति-ग्रस्त देश-भक्तों की दुख-गाथा देश के अमीर लोगों तक पहुँचाने के लिए आदेश करते हुए लिखा था :—

"Our rich and selfish merchants and bankers ought to blush . . . seeing their own poor country-men dependent on the generosity of Englishmen."

मेज़िनी और उसके दल को अब भी विश्वास था कि इटली का उद्धार एक महाक्रान्ति द्वारा वर्तमान ऑस्ट्रिया और अन्य राज्य-सत्ताओं को उखाड़ फेंकने और प्रजातन्त्र के स्थापित होने में ही है। कई बार क्रान्ति की योजना की गई, परन्तु वह विफल हुई। वे रोम में प्रजातन्त्र स्थापित करने में सफल हुए, परन्तु फ़्रान्सीसी सेना के हस्तक्षेप ने उनकी सफलता को भी असफलता में परिणत कर दिया। देश का नवयुवक दल क्रान्ति के महायज्ञ में अपनी महान आहुतियाँ दे रहा था, परन्तु जब तक देश में सर्व-साधारण एक सामूहिक क्रान्ति के लिए न उठ खड़े हों तब तक उसमें वास्तविक सफलता नहीं मिल सकती। इसलिए बहुत से लोग इस मार्ग से निराश होते जा रहे थे। गेरीबाल्डी जैसे क्रान्तिकारी ने भी एक समय निराश होकर कहा था :—

"If a general rising of the people of Italy could be ensured, there would be no necessity to wait for kings or diplomacy, but, at this moment especially no one will stir hand or foot . . ."

इस समय इटली राष्ट्र एक और व्यक्ति द्वारा प्रभावित हो रहा था। वह था, पीडमोण्ट राज्य का महामन्त्री कावूर। हम कह आए हैं कि वह भी इटली को स्वतन्त्र और संयुक्त राष्ट्र बनाना चाहता था, परन्तु एक भिन्न ही मार्ग से। उसे विश्वास था कि मेज़िनी के क्रान्ति-मार्ग से इटली का उद्धार नहीं हो सकता इसलिए वह अन्य राष्ट्रों के सहयोग से इटली को ऑस्ट्रिया की अधीनता से मुक्त करना चाहता था। इसी समय टर्की को यूरोप से निकाल बाहर कर उसकी भूमि यूनान को दे देने के लिए क्रीमियन-युद्ध छिड़ा। कावूर ने इस विचार से कि इस युद्ध में ईसाई-शक्तियों के साथ सहयोग देने से उसे सन्धि-परिषद में इटली को स्वतन्त्र करने का अवसर मिल सकेगा, पीडमोण्ट की सेना को फ़्रान्स और दूसरे देशों के साथ लड़ने के लिए भेज दीं और जब पेरिस में सन्धि-परिषद हुई तो उसने इस बात पर बड़ा ज़ोर दिया कि इटली में ऑस्ट्रिया की सत्ता रहने से वहाँ अशान्ति और अराजकता फैली हुई है और जब तक ऑस्ट्रिया का पञ्जा वहाँ रहेगा तब तक शान्ति होने की कोई सम्भावना नहीं हो सकती। परन्तु मित्र-शक्तियों ने कावूर की सहायता के बदले कोरा धन्यवाद देने के अतिरिक्त किसी तरह की भी सहायता का वचन न दिया।*

इधर क्रीमिया युद्ध के समाप्त होते ही इटली का प्रजातन्त्रवादी दल फिर उठ खड़ा हुआ। मेज़िनी का मत था कि पीडमोण्ट तथा इटली की अन्य रियासतें देश की स्वतन्त्रता के प्रयत्न में सहायक हो सकती हैं, परन्तु वे कोई मार्ग उनके लिए निश्चित नहीं कर सकतीं। क्रान्ति और विप्लव अनिवार्य हैं। जनता इतनी दुखी है कि वह शान्त और आज्ञाकारिणी नहीं रह सकती। असफलताओं का होना अनिवार्य है। तीन सौ शताब्दियों से ग़ुलाम रहने वाले देश को स्वतन्त्र करने के लिए महान त्याग और विपुल बलिदान की आवश्यकता है और तभी हमारा देश, जो स्वेच्छाचारी शासकों के स्वार्थ के लिए पीसा जा रहा है, अपने ध्येय को प्राप्त कर सकेगा। सन् १८४८ और १८४९ की घटनाओं ने यह प्रमाणित कर दिया है कि सर्व-साधारण में इस ध्येय को प्राप्त करने की लगन मौजूद है। इन दो वर्षों की असफलता के कारण थे, ऑस्ट्रिया और फ़्रान्स के सम्मिलित हस्तक्षेप, इङ्गलैण्ड का पीडमोण्ट के राज-तन्त्र शासन को ही सहयोग देना और इटली-वासियों में सङ्गठन-शक्ति का अभाव होना। परन्तु उसके बाद स्थिति बिल्कुल बदल गई है। राष्ट्र में यह विश्वास जड़ पकड़ता जाता है कि "विदेशियों के निकाल बाहर करने, पोप की धार्मिक सत्ता को उखाड़ फेंकने और सब प्रान्तों को एक में संयुक्त कर देने से ही इटली का उद्धार हो सकता है। भावी शासन-प्रणाली की उन्हें चिन्ता नहीं है। एक बार स्वतन्त्र होने पर स्थिति के अनुसार वे उसका निर्णय कर लेंगे।

"क्या दो विदेशी सैनिक शक्तियों के रहते हुए और कावूर की क्रान्ति-विरोधी निश्चय के सम्मुख, विशेषकर जब कि अधिकांश पुराने नेता उसके हाथ में ही इटली के भाग्य का निर्णय छोड़ चुके हैं, किसी महान क्रान्ति की योजना और सङ्गठन करना सम्भव है ?

"लम्बार्डी चेष्टा करता रहेगा। × × × उस पर ज़ब्त जायदाद के वापस कर देने और राजनीतिक क़ैदियों को क्षमादान का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। शीघ्र ही या देर में मिलन में क्रान्ति सफल होगी, तब पीडमोण्ट बीच में कूद कर लम्बार्डी और वेनिस को अपने में मिला लेगा, परन्तु सारा इटली चुप नहीं बैठ रहेगा। नेपिल्स को ही देखो, वहाँ प्रायः प्रति दिन विप्लव की घटनाएँ होती हैं। सिसली सन् १८४८-४९ में पृथक रह कर बड़ा पश्चात्ताप कर रहा है। अपनी सरकार को ही देखो कि वह भी इस बात को स्वीकार करती है कि वर्तमान वायु-मण्डल में कार्य अधिक दिन तक नहीं चल सकता।"

शीघ्र ही इटली के क्रान्तिकारी दल ने सिसली-विप्लव की महान योजना की। जनरल फ़ान्सेज ने अपने एक क्रान्तिकारी मित्र को लिखा :—

"The south is ready for rising, but arms are wanted, Garibaldi is among the warmest supporters, ... but again, arms and money are indispensable."

इटली के क्रान्तिकारी फ़ेब्रिज़ी और पाइलो ने बड़ी ही होशियारी से इस आयोजना का सङ्गठन किया था और ८ दिसम्बर, १८५६ को शस्त्रों और सैनिकों से भरा हुआ एक छोटा जहाज़, जो क्रान्ति का दमन करने के लिए भेजा गया था, उड़ा दिया गया। पचास सैनिक मारे गए और बहुत से घायल हुए, राजघराने के लोग भय से 'किंकर्त्तव्य विमूढ़' हो गए। इतना होने पर भी जनता क्रान्ति में योग देने के लिए कोई चेष्टा करती हुई दिखलाई नहीं दी। परन्तु इस समय भी क्रान्तिकारियों को विश्वास था कि गेरीबाल्डी के नेतृत्व में एक आक्रमण कर देने से अवश्य सफलता मिलेगी, पर गेरीबाल्डी ने नेतृत्व करने से इनकार कर दिया।

अप्रैल सन् १८५७ में पिसकाने के नेतृत्व में क्रान्तिकारियों ने एक छोटे से जलयान द्वारा 'कगलियारी' नामक जहाज़ पर आक्रमण किया और उसे अपने अधिकार में करके 'पोंजा' नामक द्वीप पर टूट पड़े, वहाँ जो सरकारी सैनिक थे उन्हें अस्त्र डालने को विवश किया और वहाँ जितने राजनीतिक क़ैदी थे, उन्हें मुक्त कर दिया। इसके बाद वे वहाँ से चार तोपें, दो सौ बन्दूकें और बहुत सा गोला-बारूद अपने जहाज़ पर लाद कर चल दिए और 'सपरी' नामक गाँव में आकर लङ्गर डाल दिया। यहाँ जब वे अन्य क्रान्तिकारी नेताओं के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे तब सरकारी फ़ौजें उनका पता पाकर आ पहुँचीं। उनके साथ बहुत सी जनता भी थी जिन्हें समझाया गया था कि यह भागे हुए डाकुओं और ख़ूनियों का दल है और इनका गाँव में रहना अत्यन्त भयप्रद है। इन दोनों सम्मिलित शक्तियों के सामने क्रान्तिकारियों का जमना असम्भव था, इसलिए वे पीछे लौटने लगे। क्योंकि उन्हें आशा थी कि यदि वे पहाड़ों तक पहुँच गए तो फिर अपनी रक्षा करना कठिन न होगा। पर उनकी यह आशा सफल न हुई। शीघ्र ही तीन हज़ार आदमियों ने इन मुट्ठी भर देशभक्तों पर आक्रमण कर दिया और भयङ्कर हत्या-काण्ड प्रारम्भ हो गया। पैंसठ आदमी धराशायी हुए और उनमें से बचे हुए वीरतापूर्वक जब तक उनके पास गोला-बारूद रहा, दुश्मनों का सामना करते रहे। पिसकाने ने एक बार फिर क्रान्तिकारियों को पहाड़ों तक पहुँचने की आज्ञा दी, पर सरकारी सैनिकों की गोलियों की बाढ़ से एक सौ ग्यारह देश-भक्त और मारे गए। वीर पिसकाने भी धराशायी हुए। बाक़ी जो बचे वे गिरफ़्तार कर लिए गए। इनमें से ४ को आजन्म क़ैद की सज़ा हुई, ६५ 'फ़ेविगानामा'

(शेष मैटर २९वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

* *The Birth of modern Italy, pp. 260.*

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

डॉक्टर रामसरन दास

आपको इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से गत उपाधि-वितरण उत्सव में डी० एस-सी० (साइन्स के प्रवीण) की उपाधि प्राप्त हुई है।
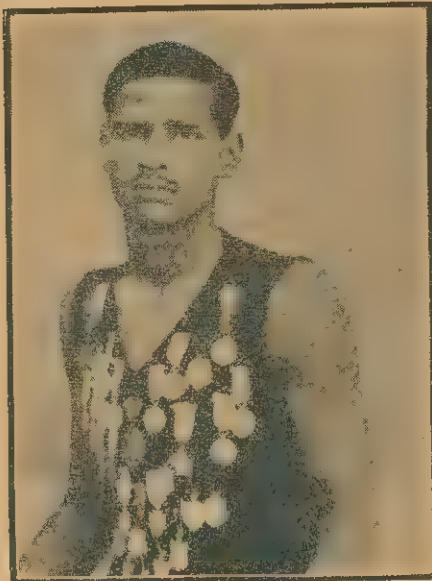
श्री० मुहम्मद हुसेन

आप इन्दौर हाई-स्कूल के एक प्रतिभाशाली छात्र हैं। खेल-कूद के क्षेत्र में आपने अभी से यश-सौरभ फैला कर देशवासियों को चकित कर दिया है। १०० गज़ की दौड़ में समस्त-भारत में आप अद्वितीय सिद्ध हुए हैं।

श्री० जयकिशन नन्द

आप फ़िल्म सम्बन्धी अध्ययन के लिए इङ्गलैण्ड गए हैं।

निज़ाम हैदराबाद स्टेट फ़ोर्स के कमाण्डर-इन-चीफ़ के पोते—श्री० मिर्ज़ा तुफ़ैल बेग—जिन्हें निज़ाम सरकार की ओर से विशेष छात्रवृत्ति देकर उच्च शिक्षा के लिए विलायत भेजा गया है।

भारतीय इन्जीनियरी-विभाग में सर्वोच्च प्रतिष्ठा पाने वाले—श्री० एस० सी० रे चौधरी—जिन्हें कलकत्ता कॉरपोरेशन ने अपना इमारत-सम्बन्धी प्रधान इन्जीनियर नियुक्त किया है।

निज़ाम हैदराबाद द्वारा पुरातत्व की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजे जाने वाले—श्री० मौलवी नसीरउद्दीन हाशमी—जो अपने ध्येय में सफलता प्राप्त कर हाल ही में विलायत से लौटे हैं।

'राम लक्ष्मण'

इन दो बालकों को बैक्षारी की शिशु-प्रदर्शिनी तथा वस्त्र-प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार दिया गया है।

लुनावाड़ा स्टेट के अधिपति

आपको हाल ही में राज्याधिकार सौंपा गया है।

विद्वान अविनव सरस्वती कृष्णमाचार्य स्वामी जिन्हें कामकोटि पीठ के शङ्कराचार्य ने 'उपचार पत्रिका' प्रदान की है और जो 'वङ्ग मुख रत्न कोष' की उपाधि से विभूषित किए गए हैं।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

हाल ही में लाहौर में होने वाली अखिल भारतवर्षीय सारस्वत कॉन्फ्रेन्स के सभापति—पं० काशीराम जी, एम० ए०, विद्यारत्न।

बनारस महिला कॉलेज की प्रतिभाशालिनी छात्रा—कुमारी सरला देसाई, जिन्हें हाल ही में इलाहाबाद विश्व-विद्यालय की ओर से होने वाली वक्तव्य प्रतियोगिता (Debate Competition) में स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया है।

स्यालकोट (पञ्जाब) के डिपुटी कमिश्नर—श्री० एच० एम० मलिक, आई० सी० एस०—जो हाल ही में लन्दन के सहकारी 'ट्रेड कमिश्नर' नियुक्त हुए हैं।

सुघड़ माताओं के भाग्यशाली लाल

खण्डवा (मध्य-प्रान्त) की शिशु-प्रदर्शिनी में इन्हीं चार बच्चों को उनके सुन्दर और स्वस्थ होने के लिए पुरस्कार दिए गए हैं।
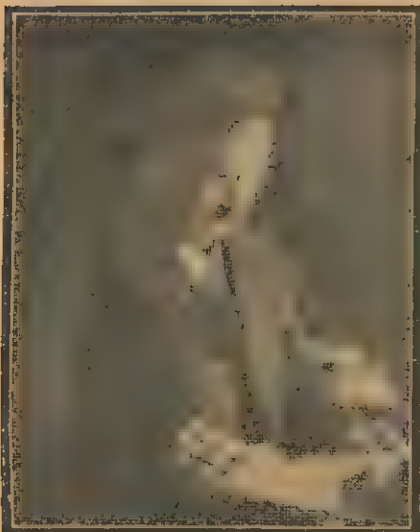
'सङ्गठित मुस्लिम राज्य' का स्वप्न देखने वाले—सर मुहम्मद इक़बाल, बार-एट-लॉ—आप उर्दू के सुप्रसिद्ध शायर भी हैं। कोई ज़माना था जब आपने "हिन्दोस्ताँ हमारा" शीर्षक सुप्रसिद्ध कविता की रचना की थी।

सेन्ट जोन्स कॉलेज, आगरा के प्रतिभाशाली छात्र—श्री० ई० टी० एस० राम—आप खेलों में अद्वितीय हैं और कई बार अपनी अलौकिक प्रतिभा के लिए पुरस्कृत हो चुके हैं।

विलायत में डेयरी तथा मुर्ग़ा-मुर्ग़ी पालने की सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले इन्दौर के—श्री० आनन्द पाल शाह—आप इस कला में प्रवीण होने वाले सर्व-प्रथम भारतीय हैं, जो विलायत में नेशनल पोल्ट्री का डिप्लोमा लेकर हाल ही में विलायत से लौटे हैं।

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

[illegible] कुल्हाड़ा लिए अन्य स्वयंसेवकों के साथ ताड़ के वृक्ष काटने के लिए जा रही हैं।

[illegible]

कानपूर से प्रकाशित होने वाले "प्रताप" के प्रतिभाशाली सम्पादक—श्री० गणेश शङ्कर विद्यार्थी (भूतपूर्व) एम० एल० सी०, जो आजकल जेल में अपनी देशभक्ति का मूल्य चुका रहे हैं।

लखनऊ की सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री, पं० जयदयाल अवस्थी की धर्मपत्नी—श्रीमती कान्ती अवस्थी—जो अपने निवास-स्थान (गणेशगञ्ज) पर दूसरी बार १० वीं जनवरी को गिरफ़्तार हुई हैं। यह आपकी गिरफ़्तारी का दृश्य है। राष्ट्रीय कार्य के सम्बन्ध में यू० पी० से जेल जाने वाली आप सर्व-प्रथम कान्यकुब्ज रमणी हैं।

दाग़ देगा तुझे, यह शौक़ ख़ुद-आराई[१] का,
देख आइना है दुश्मन, तेरी यकताई[२] का।
शौक़ ख़लवत[३] में भी है, अन्जुमन-आराई[४] का,
आइना-ख़ाना[५] है, गोशा मेरी तनहाई[६] का।
पाँव पर तेरे जो सर है, तेरे शैदाई[७] का,
बोसा मक़सूद[८] है, परदा है जबींसाई[९] का।
हम तेरे हुस्न के बाज़ार से, फिर जायँ कहाँ?
तूर[१०] ठेका हो जो, मूसा[११] से तमाशाई[१२] का।
ज़ार[१३] फूलों के उठा, जी न बुरा ऐ बुलबुल!
घर में सय्याद[१४] के है, मुहकमा[१५] गीराई का
आईना देख के आप हैं, मज़े में ऐसे,
ख़ुद वह मुँह चूमते हैं, अपने तमाशाई का।
ऐ अजल[१६]! जल्द ख़बर ले, कि डराता है मुझे,
देव बन-बन के अँधेरा, शबे-तनहाई[१७] का!
चीख़ उठा, लोट गया, तूने उठा दी जो नक़ाब,
आज जी छूट गया, तेरे तमाशाई का।
दश्त[१८] में लाला[१९] है, गुलज़ार में गुल, बज़्म[२०] में शम्[२१]आ[२२]
हर जगह रङ्ग नया है, मेरे हरजाई का।
तू भी आए तो न वह, आँख उठा कर देखे,
और ही रङ्ग है अब तेरे तमाशाई का।

—"अमीर" लखनवी

ऐ जुनूँ! दौर है, फ़ितरत[२३] की ख़ुद आराई का,
दीदनी[२४] है यह समाँ, लालए सहराई[२५] का
बढ़ता जाता है उधर, शौक़ ख़ुद आराई का,
हौसला पस्त है, याँ ज़ब्तो शिकेबाई[२६] का।
आपकी याद को, अल्लाह सलामत रक्खे,
मुझ पर एहसान है, इस मूनिसे[२७] तनहाई का
सब्ज़ बाग़, आप मेरे अश्के-रवाँ[२८] को न दिखाएँ,
मौज[२९] पर रङ्ग जमेगा, न कभी काई का।

—"अकबर" इलाहाबादी

जलवा[३०] दिखलाए जो वह, अपनी ख़ुद-आराई का,
नूर[३१] जल जाए अभी, चश्मे[३२] तमाशाई का
रङ्ग हर फूल में है, हुस्ने ख़ुद-आराई का,
चमने दह्र[३३] है महज़र,[३४] तेरी यकताई का।
अपने-मरकज़[३५] की तरफ़ मायले परवाज़[३६] है हुस्न,
भूलता ही नहीं आलम, तेरी अँगड़ाई का।
उफ़ तेरे हुस्ने जहाँ-सोज़[३७] की, पुरज़ोर[३८] कशिश
नूर सब खींच लिया चश्मे तमाशाई का,
देख कर नज़्मे[३९] दो आलम, मुझे कहना ही पड़ा,
यह सलीक़ा[४०] है किसे, अन्जुमन-आराई का।

—"अज़ीज़" लखनवी।

फिर वही शौक़ हुआ, तुमको ख़ुद-आराई का,
फिर बुरा हाल, न हो जाय तमाशाई का।
हाथ मलते हुए, बालीं[४१] से सब अहबाब उठे,
हाल देखा न गया आपके शैदाई का।

१—बनाव-सिंगार करना, २—एक होने का, ३—अकेले में, ४—सभा करना, ५—आईनाघर, ६—एकान्त, ७—चाहने वाला, ८—मतलब, ९—माथा घिसना, १०—एक पहाड़ का नाम है, ११—एक पैग़म्बर थे, जो तूर पहाड़ पर ईश्वर का दर्शन करने गए थे, १२—देखने वाला, १३—ज़ुल्म, १४—बहेलिया, १५—धर-पकड़, १६—मौत, १७—बिरह की रात, १८—जङ्गल १९—एक फूल का नाम है, जिसके सीने में दाग़ होता है, २०—बाग़, २१—सभा, २२—चिराग़, २३—प्रकृति, २४—देखने लायक़, २५—जङ्गली, २६—सन्तोष करने वाला, २७—साथी, २८—बहते हुए आँसू, २९—लहर, ३०—ज्योति, ३१—रोशनी, ३२—आँख, ३३—संसार, ३४—मुहर, ३५—मंज़िल, ३६—उड़ना चाहता है, ३७—संसार को जलाने वाला, ३८—ज़ोरदार, ३९—बन्दोबस्त, ४०—ढङ्ग, ४१—सिरहाना,

केसर की क्यारी

सब्ज़ बाग़ आप मेरे अश्के-रवाँ को न दिखाएँ, मौज पर रङ्ग जमेगा न कभी काई का!
मैं क़फ़स में हूँ गुलिस्ताँ में ख़िज़ाँ हो कि बहार, ज़िक्र मुझसे न करे, कोई 'गई' 'आई' का!

हर जगह तू है, हर एक शै में तेरा जलवा है।
अब न देखे कोई तो, ऐब है बीनाई[४२] का
उनके चेहरे से नक़ाब उठी, उधर थम-थम कर,
हाल इधर ग़ैर था, रह-रह के तमाशाई का।
मुझको हसरत है, तेरे कूचे में मर जाने की,
मुझको अरमाँ है, तेरे दर पे जबींसाई का।
आईना तुमको, दिखा देगा तुम्हारा सानी,
भूल कर नाम न लेना, कभी यकताई का।

याद आता है समाँ, मुझको ख़ुद-आराई का,
चाँदनी रात में, आलम तेरी अँगड़ाई का।
आईना आईना[४४] रूयों को, यह देता है सबक़,
कुछ समझ-बूझ के, दावा करो यकताई का।
जलने-मरने के लिए, आए पतिङ्गे सरे-बज़्म,
शम्आ अब शौक़ करे, अन्जुमन-आराई का।
और भी जोश बढ़ा, हो गईं मौजें बेताब[४५],
अक्स[४६] दरिया में पड़ा, जब तेरी अँगड़ाई का।

उर्दू-शायरी में अपना सानी न रखने वाले

कविवर 'बिस्मिल' इलाहाबादी—

जो ६ मार्च को प्रकाशित होने वाले 'भविष्य' के होली-अङ्क को अपनी चुटीली रचनाओं से सराबोर करने को अभी से तुले हुए हैं। पाठकों को इस अङ्क के लिए अभी से अपना ऑर्डर कार्यालय में अथवा स्थानीय एजेण्ट के पास रजिस्टर करा लेना चाहिए, नहीं तो कफ़े-दस्त मल-मल कर पछताना पड़ेगा।

मेरे दिल में,
मेरी आँखों में, हैं तेरी शक्लें,
ज़ेब देता नहीं,
दावा तुझे यकताई का।
दश्ते[४७] ग़ुर्बत[४८] में,
न साथी है न रहबर कोई,
बस वही मैं,
वही आलम मेरी तनहाई का।
दिल हुआ ज़ेरो-ज़बर,
आह भी हम कर न सके,
रह गए देख के
नक़शा, तेरी अँगड़ाई का।
शौक़ कहता है,
कि दो इश्क़ में तुम जान अपनी,
दिल यह कहता है,
रहे पास[५०] भी रुस्वाई का।
चश्मे मुश्ताक़ में,
रह-रह के खिंचा करता है
वही आलम, वही नक़शा,
तेरी अँगड़ाई का।
मैं क़फ़स[५१] में हूँ,
गुलिस्ताँ[५२] में ख़िज़ाँ हो कि बहार!
ज़िक्र मुझसे न करे,
कोई 'गई' 'आई' का!!
हाथ उठना था,
कि दुनिया में क़यामत उट्ठी,
बन गया एक फ़िसाना[५३],
तेरी अँगड़ाई का
जब से जलवा
सरे-दीवार, नज़र आया है,
आस्माँ पर है दमाग़,
उनके तमाशाई का।

चश्मे-पुर-शौक़ में क्यों बर्क़[४३] न कौंदे हरदम,
वह समाँ याद है, मुझको तेरी अँगड़ाई का।
वक्त-आख़िर, तू उसे देख ले आकर दम भर,
दम उखड़ता है, कोई लहज़े में शैदाई का।
क्यों फिरा करते हो, तुम चाक-गरेबाँ "शातिर"
कुछ तुम्हें ध्यान नहीं, इश्क़ की रुस्वाई[४४] का?

—"शातिर" इलाहाबादी

दिल की दुनिया, अभी हो जायगी दरहम[५४] बरहम,
क़हर[५५] ढा जायगा, आलम तेरी अँगड़ाई का।
हज़रते "नूह" के शागिर्द जो हम हैं "बिस्मिल",
क्यों हमें ध्यान न हो, मारका-आराई[५६] का।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

४२—देखने का, ४३—बिजली, ४४—बदनामी,

४५—अच्छी सूरत वाले, ४६—बेचैन, ४७—परछाईं, ४८—जङ्गल, ४९—परदेश, ५०—ध्यान, ५१—पिंजड़ा, ५२—बाग़, ५३—कहावत, ५४—उलट-पलट, ५५—ग़ज़ब, ५६—मुक़ाबला करना।

इस्लाम का प्रारम्भिक इतिहास

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

(गताङ्क से आगे)

इसके बाद उमर इब्ने ख़त्ताब ख़लीफ़ा हुआ। यह वही व्यक्ति था, जो २६ वर्ष की आयु में मुहम्मद साहब का सिर काटने को घर से निकला था। परन्तु अपनी बहिन के समझाने से कट्टर मुसलमान बन गया था। वह दाहिने हाथ से जितना काम कर सकता था, उतना ही बाएँ से भी कर सकता था। धार्मिक तर्कों का उत्तर वह तलवार की धार से देता था और तर्क करने वाले का उसी दम सिर काट डालता था। उसका डील-डौल भारी था। वह बैठा हुआ भी खड़े पुरुष की बराबर नाप का था। शरीर काला, आँखें लाल, और सिर बिल्कुल सफाचट। सदैव एक चमड़े का चाबुक हाथ में रखता था और बदमाशों तथा मुहम्मद के निन्दक कवियों को उससे पिटवाता था। उसने ख़लीफ़ा होने पर अपना नाम इमीरुल मौमनीन रक्खा, आगे चल कर पदवी के तौर पर यह नाम सभी ख़लीफ़ाओं के नामों के साथ जोड़ा जाने लगा।

इतना होने पर भी वह लूट-मार और ज़ुल्म को नापसन्द करता था। उसने ख़लीद के अत्याचारों की अति निन्दा की, और उसे मुख्य सेनापति के पद से हटा कर उसकी जगह अबू अबीदा को मुख्य सेनापति बनाने का हुक्म भेज दिया। अबू अबीदा ने, जो ख़लीद के अधीन अफ़सर था, यह पत्र छिपा लिया। दुबारा हुक्म आने पर वह मुख्य सेनापति बना तथा ख़लीद उसके अधीन होकर काम करने लगा।

अब उनकी सेना जारडन नदी के पूर्व की ओर बढ़ी और यह बात स्पष्ट थी कि एशिया माइनर पर हाथ लगाने से पहिले पैलेस्टाइन के मज़बूत और बड़े-बड़े नगर विजय कर लिए जायँ। पहले जेरोसलीम पर धावा बोला गया। वहाँ के निवासियों ने ख़ूब तैयारी की थी। पर चार महीने के घेरे के बाद नगर के मुखिया ने कोट की दीवार पर खड़े होकर आत्म-समर्पण की शर्तें पूछीं। उसने सब शर्तें स्वीकार करके एक यह शर्त पेश की कि आत्म-समर्पण ख़ुद ख़लीफ़ा के हाथ में होगा।

ख़लीफ़ा उमर इस काम के लिए मदीने से चला। उसने एक गठरी नाज, एक गठरी छुआरे, एक कठौती और एक मशक पानी एक लाल ऊँट पर लाद कर यह यात्रा की। इस विजेता ने एक ईसाई मुखिया के साथ उस पवित्र नगर में प्रवेश किया और बिना रक्तपात के वह नगर मुसलमानी धर्म का प्रतिनिधि नगर हो गया। सुलेमान के मन्दिर के स्थान पर एक मसजिद बनवाने की आज्ञा देकर ख़लीफ़ा मदीने को लौट गया।

दमिश्क से अबू अबीदा मुस्लिम सेना की कमान लेकर लिपैनस की बर्फ़ीली चोटियों को पार कर ओरेटाज़ नदी के किनारे उत्तर की ओर बढ़ा। उसने ख़लीद को अग्र भाग का सेनापति बना दिया। रास्ते में जायशा के हाकिम ने ४०० मोहर और बहुत से रेशमी थान देकर सन्धि कर ली। फिर उसने सीरिया की घाटी की राजधानी बालबक और मुख्य नगर एमीसा को घेर लिया। एमीसा का हाकिम तभी मरा था, अतः नागरिकों ने १० हज़ार मोहर और २०० रेशमी थान देकर अपना पिण्ड छुड़ाया। बालबक में सुलेमान का बनवाया सूर्य का एक बहुत सुन्दर मन्दिर था, उसे तोड़ दिया गया और नगर पर अधिकार कर लिया गया।

बालबक और एमीसा के निकल जाने से क्षुब्ध होकर बादशाह हैरीक्लिप्स ने १ लाख, ४० हज़ार सेना मेनुअल की अधीनता में भेजी। वहाँ थोड़ा युद्ध हुआ और मुसलमानी सेना का दक्षिण भाग टूट गया। पर सैनिकगण अपनी स्त्रियों के धर्मोन्मत्त धिक्कारों से फिर रण-भूमि को लौट चले। इधर एक ईसाई देशद्रोही मेनुअल को एक ऐसे स्थान पर ले गया, जहाँ कई मुसलमान ताक लगाए छिपे बैठे थे। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने मेनुअल को मार डाला। सेनापति के मरते ही सेना के पैर उखड़ गए, और वह भाग खड़ी हुई। बहुत-सी सेना नदी में डूब गई और कुछ जङ्गल में भटक गई। रोमन सेना पूर्ण रीति से पराजित हुई। ४० हज़ार मनुष्य क़ैद किए गए और बहुत से मार डाले गए। इसके बाद सारा देश विजयिनी मुसलमान सेना के अधीन हो गया।

ईसाइयों को इन शर्तों पर नगर में रहने दिया गया :—

१—ईसाई नए गिरजे न बनवावें।

२—गिरजों के दरवाज़े रात-दिन मुसलमानों के लिए खुले रहा करें।

३—गिरजों पर घण्टे न बजाए जावें।

४—सलीब न गिरजों पर लगाई जाय, न बाज़ार में दिखाई जाय।

५—अपने बच्चों को क़ुरान न पढ़ावें।

६—अपने धर्म का प्रचार न करें।

७—अपने किसी भाई को मुसलमान होने से न रोकें।

८—मुसलमानों के समान कपड़े, जूते और पगड़ी न पहनें।

९—कमर में पटका बाँधा करें।

१०—अरबी भाषा न बोलें।

११—मुसलमानों के आने पर खड़े हो जायँ और जब तक बैठने की आज्ञा न मिले, खड़े रहें।

१२—तीन दिन तक मुसलमान मुसाफ़िर को अपने घर में रक्खें।

१३—शराब न बेचें।

१४—घोड़े पर काठी न कसें।

१५—शस्त्र न धारण करें।

१६—किसी आदमी को, जो मुसलमान के यहाँ नौकर रह चुका हो, नौकर न रक्खें।

इसके बाद अबू अबीदा ने हलब पर धावा बोल दिया। रास्ते में अरस्ता का क़िला पड़ता था, उसके सरदार ने मुसलमान बनने या कर देने से साफ़ इन्कार कर दिया; इसलिए उससे सुलह करके २० सन्दूक़ बतौर अमानत के वहाँ रख दिए गए। उनमें सशस्त्र योद्धा थे। उन्होंने समय पाकर क़िले का फाटक खोल दिया और उस पर अधिकार जमा लिया।

हलब का क़िला सीरिया भर में सब से मज़बूत था। यहाँ धन और व्यापार की भी प्रचुरता थी। ५ मास तक क़िले पर घेरा रहा। अन्त में एक ईसाई के विश्वासघात से मुसलमान क़िले में घुस गए, और बहुत से आदमियों को काट डाला। बाक़ी लोगों ने डर कर कल्मा पढ़ लिया। क़िले के अधिपति का लड़का युकला भी कल्मा पढ़ कर अब्दुल्ला हो गया। उसने अपने चचा के बेटे थ्योडस को भी अपना साथी बनाना चाहा, जो एज़ाज के क़िले का स्वामी था। अब्दुल्ला सौ मुसलमानों को लेकर वहाँ पहुँचा। पर थ्योडस सावधान हो गया था। उसने उन सब को क़ैद कर लिया। परन्तु थ्योडस का बेटा युकला की लड़की पर मोहित था। उसने कहा कि यदि आप अपनी लड़की की शादी मेरे साथ कर दें तो मैं आपको साथियों सहित छुड़ा दूँ और स्वयं भी मुसलमान हो जाऊँ। युकला ने यह बात स्वीकार कर ली। अतः इस पितृ-द्रोही ने उन्हें छुड़ा कर हथियार भी दे दिए। क़िला अन्त में मुसलमानों के हाथ आ गया और थ्योडस के पुत्र ने अपने पिता को भी क़त्ल कर दिया।

अब सीरिया की राजधानी अन्ताकिया पर धावा बोलने का निश्चय हुआ और इसके लिए जाल यह रचा गया कि युकला अपने १०० साथियों समेत ईसाइयों के भेष में अन्ताकिया जा पहुँचा और बादशाह हैरिक्लियस से कहा कि मुसलमानों ने मुझे लूट लिया है। मैं जान बचा कर आपकी शरण आया हूँ। बादशाह ने कहा—"तुम तो मुसलमान हो गए थे?" उसने कहा—"यह सब जान बचाने के लिए झूठ-मूठ किया था।" बादशाह ने उस पर विश्वास कर १०० साथियों समेत उसे अपने पास रख लिया और अन्त में अपना मन्त्री बना लिया। इसके बाद कुछ और मुसलमान क़ैद करके क़िले में लाए गए। इस प्रकार जब काफ़ी मुसलमान क़िले में हो गए, तब अबू अबीदा ने हमला बोल दिया। बादशाह युकला की सम्मति से काम करता रहा। अन्त में, अवसर पाकर उसके साथियों ने फाटक खोल दिया। मुसलमान 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाते भीतर घुस आए। बादशाह सिर धुनता जहाज़ पर सवार हो, क़ुस्तुन्तुनिया भाग गया।

अब योहला ईसाई-वेश में साथियों समेत त्रिपुली जा पहुँचा। वहाँ के लोग उसके मुसलमान बनने और छल-कपट की बात नहीं जानते थे। उन्होंने इसे बादशाह का सेनापति समझ कर बड़ा सत्कार किया। अवसर पाकर उसने फाटक खोल कर तथा मुसलमानों को बुला कर क़िला फ़तह करा दिया। इसी प्रकार धोखे से उसने काहर को भी फ़तह कराया।

इसी बीच में देश में भयानक महामारी फैली और उसमें देश भर तबाह हो गया। सेनापति अबू अबीदा, इसके बड़े-बड़े योद्धा तथा २५ हज़ार सैनिक मर गए।

ख़लीद ने एक कवि को अपनी प्रशंसा करने के उपलक्ष में ३० हज़ार रुपए इनाम दे डाले थे। इस क़ुसूर में उसे ख़लीफ़ा ने उसी की पगड़ी से बाँध कर अपने सामने बुलवाया और उसे पद-भ्रष्ट करके अपने घर चले जाने का हुक्म दिया। मरते वक़्त उसके घर में सिर्फ़ एक घोड़ा और कुछ शस्त्र निकले थे।

इस प्रकार मुसलमानों ने निर्भय होकर सारे एशिया-माइनर को रौंद डाला। वह सीरिया देश, जिसे सीज़र के समतुल्य महान पाम्पी ने ७०० वर्ष पहले रोमन राज्य में मिलाया था; वह सीरिया, जो ईसाई-धर्म का जन्म-स्थान था; वह सीरिया, जो ईसाइयों का परम पवित्र स्थान था और जहाँ से सम्राट हिरेक्लिप्स ने एक बार फ़ारिस के आक्रमणकारी को परास्त किया था, मुसलमानों के हाथ में आ गया। सम्राट हिरेक्लिप्स जब क़ुस्तुन्तुनिया को भाग रहा था, तब जहाज़ पर बैठ कर उसने बड़े ध्यान से अदृष्ट होते हुए पहाड़ों पर उदास दृष्टि डाली और कहा—"सीरिया, मेरा प्रणाम ले, और यह प्रणाम सदैव के लिए है।"

इसके बाद टिपोली, टायर और कैसीरिया ले लिए गए। लेबेनस पहाड़ की लकड़ी और फुनेशिया के

मल्लाहों से एक ज़बर्दस्त बेड़ा तैयार किया गया, जिसने रोम के प्रतापी बेड़े को हेलेस-पायट में भगा दिया। साइप्रस, रोडस और साइक्लेडीज़ तबाह कर डाले गए। और वह पीतल की बड़ी मूर्त्ति, जो संसार के आश्चर्यों में में गिनी जाती थी, एक यहूदी को बेच दी गई, जिसने उसका पीतल ६०० ऊँटों पर लादा था। अब ख़लीफ़ा की सेनाएँ कृष्ण-समुद्र तक बढ़ आईं और क़ुस्तुन्तुनिया के मुक़ाबले में जा डटीं !!

इन विजयों ने मुसलमानों के राज्य को सिकन्दर और रोम के साम्राज्य से भी बड़ा बना दिया। टेसीफोन के घेरे जाने पर ख़ज़ाना सिलहख़ाना और बहुत सा लूट का माल मुसलमानों के हाथ लगा, और यही कारण है कि निहावन्द की विजय को वे लोग सब विजयों की विजय कहते हैं। एक ओर तो वे कैस्पियन सागर तक बढ़े और दूसरी ओर हिन्नारिस नदी के किनारे-किनारे परसी पोलीस तक दक्षिण की ओर फैले। केडीसिया की लड़ाई में फ़ारिस के भाग्य का भी निबटारा हो गया। फ़ारिस-नरेश उस नगर के स्तूपों और मूर्तियों को छोड़ कर, जो सिकन्दर के बड़े भोज की रात्रि से अब तक ऊजड़ पड़ा था, अपने प्राण बचाने को बसरे के रेगिस्तानों में भगा दिया। अन्त में अक्सस नदी के किनारे वह पकड़ कर मार डाला गया। उस नदी के पार का देश भी अधीन कर लिया गया और उस देश से कर-स्वरूप वार्षिक दो लाख अशर्फ़ियाँ बहुत दिनों तक मिलती रहीं। चीन के सम्राट ने मुसलमानों की मित्रता की और फल-स्वरूप सिन्ध नदी के किनारों तक इस्लामी झण्डा फहराने लगा।

जिन सेनापतियों ने सीरिया-विजय में नाम पाया था, उनमें अमरू इब्ने आरू नाम का एक जनरल था, जिसके भाग्य में मिश्र का विजेता होना लिखा था। वह पूर्व की विजयों से सन्तुष्ट न होकर पश्चिम को मुड़ा। उसके साथ ४ हज़ार सवारों का जत्था था। उसकी दृष्टि अफ़्रिका महाद्वीप पर थी। मिश्र उसका द्वार था। उसने मिश्र में पहुँचते ही वहाँ के ईसाइयों ने कहलाया कि हम यूनानियों के साथ इस लोक तथा परलोक का कोई सम्बन्ध रखना नहीं चाहते और सदैव के लिए रोम के अत्याचारी और उसकी कैल्सीडोन की सभा को सौगन्ध खाकर त्यागते हैं। उन्होंने ख़लीफ़ा को सड़कें और पुल बनवाने के लिए तथा सेना की रसद और ख़बरें पहुँचाने के लिए शीघ्र ही राज्य-कर देना स्वीकार कर लिया।

मेम्फ़िस नगर, जो प्राचीन फ़िरऊन के समय में राजनगरों में था, विश्वासघातियों की सहायता से शीघ्र जीत लिया गया, और सिकन्दरिया भी घेर लिया गया। बहुत से आक्रमण और धावे हुए। अन्त में २२ हज़ार सैनिकों के कट जाने पर १४ महीने के घेरे के बाद उस नगर का पतन हुआ। अमरू ने ख़लीफ़ा को इस बड़े नगर के विषय में लिखा था—"इसमें ४ हज़ार महल, ४ हज़ार स्नानागार, ४ सौ नाट्यशालाएँ, १२ हज़ार दुकानें केवल तरकारियों-भाजियों की और ४० हज़ार यहूदी साहूकार राज्य-कर देने वाले हैं।"

हिरेक्लिपस ने अपने क़ुस्तुन्तुनिया के राज-महल में यह दुखदायक ख़बर सुनी, तो इतना मर्माहत हुआ कि सिकन्दरिया के पतन के एक मास बाद ही मर गया।

इसी सिकन्दरिया में वह जगद्विख्यात पुस्तकालय था जिसमें पृथ्वी भर के विद्वानों की हस्तलिखित १० लाख पुस्तकें थीं। जब उमर ने ख़लीफ़ा से पूछा कि इन पुस्तकों का क्या किया जाय, तो तब ख़लीफ़ा ने लिखा कि यदि उनका विषय क़ुरान के अनुकूल न हो तो उनके रखने की आवश्यकता नहीं। अतएव उन्हें नष्ट कर दिया जाय। अमरू ने उन्हें ईंधन के तौर पर जलाने के लिए हम्मामों में बाँट दिया और उनसे ६ मास तक ४ हज़ार हम्माम गर्म होते रहे !!!

मिश्र-देश रोम-राज्य का अन्न-भण्डार था, इसी कारण इसे लौटा लेने की बड़ी-बड़ी कोशिशें की गईं। अमरू को दो बार फिर चढ़ाई करनी पड़ी। उसने जान लिया कि समुद्र की ओर से खुला रहने से उस पर बड़ी सुगमता से आक्रमण किए जा सकते हैं। उसने कहा—"ख़लीफ़ा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि यदि तीसरी बार आक्रमण किया जाय तो मैं सिकन्दरिया को ऐसा बना दूँगा कि वह प्रत्येक मनुष्य के लिए वेश्या के घर के समान हो जायगी।" उसने अपने कथन से बढ़ कर काम कर दिखाया और शहरपनाह ढहवा दी। इससे यह नगर बिलकुल उजाड़ हो गया।

वह बीस वर्ष बाद अक़्वानील नदी से एटलाण्टिक समुद्र तक बढ़ आया और अपने घोड़े को सागर-जल में हिला कर ज़ोर से कहा कि—"हे सर्वोपरि ईश्वर, यदि यह समुद्र मेरा रास्ता न रोकता तो मैं पश्चिम के अज्ञात राज्यों में चला जाता और तेरे पवित्र नाम तथा अद्वैतता का उपदेश देता, और उन विद्रोही जातियों को, जो तेरे सिवा अन्य देवताओं को पूजती हैं, तलवार के हवाले करता।"

अब साद के पास ६० हज़ार सवार थे। वह उन्हें लेकर मदाइन राजधानी की ओर बढ़ा। बादशाह यज़्दगुर्द घबरा गया। सरदारों में फूट पड़ गई। वह अपने रत्न और परिवार सहित वहाँ से भाग कर हल्दान पहुँचा। राजधानी में मुसलमान घुस पड़े और उसे लूट-खसोट कर तहस-नहस कर डाला।

जलूला नगर में फिर बादशाह की सेना से मुठभेड़ हुई। यह लड़ाई ६ मास चली। अन्त में जलूला और हल्दान मुसलमानों के हाथ में आ गए और बादशाह रै नगर को भाग गया।

इसी बीच में साद से नाराज़ होकर ख़लीफ़ा ने उसे पदच्युत कर दिया और उसका घर फूँक दिया। इस बीच में अवकाश पाकर ईरान के बादशाह ने डेढ़ लाख सेना फिर एकत्रित की। उधर नेमान की अधीनता में एक विशाल मुसलमानी सेना ने आकर नेहावन्द को घेर लिया। पारसी सेनापति बूढ़ा और कमज़ोर था, फिर भी उसने नेमान को मार डाला। पर उसके मरने पर हफ़ीज़ सेनापति बना और उसने सेनापति फ़ीरोज़ को मार डाला। पारसी सेना भाग गई। इस युद्ध में १ लाख पारसी मारे गए। और लूट में बादशाह यज़्दगुर्द का एक जवाहरात से भरा हुआ डब्बा मिला, जो ख़लीफ़ा के पास भेज दिया गया। उसे उसने यह कह कर लौटा दिया कि ये कङ्कड़-पत्थर हमारे काम के नहीं, इन्हें बेच कर मुसलमानों को बाँट दो। हफ़ीज़ ने उन्हें ३ अरब, २० करोड़ रुपयों में बेचा। उसके पास उस समय ४० हज़ार सिपाही थे, अतः प्रत्येक को ८०-८० हज़ार रुपए मिले। इसके बाद हमदान और रै को दख़ल करके लूट लिया गया और ख़ून की नदी बहा दी। फिर वे आज़ुरबाद जा पहुँचे और यहाँ का प्रसिद्ध मन्दिर ढा दिया। बादशाह की तीन बेटियाँ गिरफ़्तार करके ख़लीफ़ा के पास भेज दी गईं। जब वे ख़लीफ़ा के सामने पहुँचीं तो उसने एक मुसलमान को हुक्म दिया कि इनके ज़ेवर उतार लो। इस पर उन्होंने डाँट कर कहा—"ख़बरदार ! हाथ न लगाना, ज़ेवर हम उतारे देती हैं।" यह सुन कर ख़लीफ़ा की आँखों में ख़ून उतर आया और उसने उन्हें नङ्गी करके कोड़े मारने का हुक्म दिया। पीछे अली ने ख़लीफ़ा को समझा कर ठण्डा किया और उन अबलाओं की जान बचाई। इनमें से एक लड़की से अली ने अपने बेटे हसन के साथ विवाह किया, दूसरी बेटी अब्दुल रहमान इब्ने अबूबकर को और तीसरी अब्दुल्ला इब्ने उमर को दे दी गई।

ईरान मसीह के जन्म से कोई ४०० वर्ष पूर्व बड़ा शक्तिशाली राज्य था। इसकी सीमा पश्चिम में यूनान और पूर्व में हिन्दुस्तान तक फैली हुई थी। विश्व-विजयी सिकन्दर ने इस देश को मसीह से ३२८ वर्ष पूर्व छिन्न-भिन्न कर डाला था। रोमन्स ने भी इसकी शक्ति को क्षीण कर दिया था।

मुहम्मद साहब ने अपने जीवन-काल में ईरान के बादशाह ख़ुशरू से कहलाया था कि हमारा धर्म ग्रहण कर लो। इस पर उसने हुरमुज़ के अपने हाकिम को कहला भेजा था कि या तो मुहम्मद को क़त्ल कर दो या क़ैद कर लो, वह पागल है। मुहम्मद की मृत्यु के बाद ख़लीफ़ा अबूबकर ने ख़लीद इब्ने वली को ईरान पर चढ़ाई करने को तैयार किया, पर फिर उसे सीरिया भेज दिया। अब उमर ने अबू अबीदा को एक हज़ार सवार देकर ईरान भेजा। उस वक़्त वहाँ की गद्दी पर ख़ुशरो की दूसरी बेटी आरज़म दुख़्त थी। मुसलमानी सेना ने पहुँचते ही लूट-मार मचा दी। रानी ने ३० हज़ार सवार रुस्तम इब्न फ़र्रुख़ज़ाद के साथ भेज दिए। पीछे से वह मनसहदेव के साथ तीन हज़ार सवार और ३० जङ्गी हाथी रुस्तम की मदद को भेजे। जब अबू अबीदा अपनी सेना सहित फ़रात नदी पर पुल बाँध कर पार हो रहा था, रुस्तम के धनुष-धारियों ने बाण-वर्षा आरम्भ कर दी। इससे बहुत से मुसलमान मारे गए। अबू अबीदा घोड़े से गिर गया और हाथी से कुचला जाकर मर गया। इसके बाद सेना भाग निकली।

ख़लीफ़ा उमर ने यह सुन कर फिर एक बड़ी सेना मस्ना की अधीनता में भेजी। मस्ना ने ईरानी सेनापति को द्वन्द युद्ध में परास्त करके काट डाला और ईरानी सेना छिन्न-भिन्न हो गई। इसके बाद साद इब्ने अविविकास ६ हज़ार सवारों सहित मदीने से चला। और मार्ग में ही लूट और स्त्रियों के लालच से उसके पास ३० हज़ार सवार मस्ना तक पहुँचते-पहुँचते हो गए। इसी बीच में मस्ना मर गया और उसकी स्त्री को साद ने, जो ६० वर्ष का था, अपनी स्त्री बना लिया। इसके बाद रुस्तम से युद्ध हुआ। मुसलमानों को और भी सहायता मिल गई। भारी घमासान हुआ और रुस्तम का सिर काट लिया गया। ईरानियों की पराजय हुई। उनकी ३० हज़ार सेना कट गई। इस युद्ध में मुसलमान भी ७ हज़ार मारे गए। यह युद्ध क़ासदिया में हुआ था। इस विजय के उपलक्ष में फ़रात और दजला नदी के सङ्गम पर बसरा नगर ख़लीफ़ा उमर की आज्ञा से बसाया गया, जो एक मुसलमान को ग़ुलाम के तौर पर दिया गया था। एक दिन यज़्दगुर्द की लड़की ने खिड़की से उसे देख कर कहा—"तुम पर लानत है कि अपने मुल्क, बादशाह और धर्म के लिए कुछ नहीं कर सकते!" फ़िरोज़ को शाहज़ादी की बात चुभ गई। वह मौक़ा पाकर मसजिद में घुस गया। ख़लीफ़ा गर्दन झुकाए नमाज़ पढ़ रहा था। उसने उसकी गर्दन में छुरी घुसेड़ दी। बहुत से मुसलमान दौड़ पड़े। वह ६-७ को मार कर स्वयं भी मर गया। ख़लीफ़ा उन्हीं घावों से ७वें दिन मर गया। मृत्यु के समय उसकी आयु ६३ वर्ष की थी। उसके समय में सीरिया, मिश्र, पैलेस्टाइन और ईरान मुसलमानों के हाथ में आए। ३६ हज़ार नगर और क़िले छीने गए, ४० हज़ार मन्दिर और गिरजे ढाए गए और कई लाख ग़ैर-मुस्लिम क़त्ल किए गए।

(क्रमशः)

["तब अब फिर और क्यों" नामक अप्रकाशित ग्रन्थ के "क्यों" खण्ड से]

* * *

(२०वें पृष्ठ का शेषांश)

नामक द्वीप में निर्वासित हुए और वीर क्रान्तिकारी निकोतरा 'सान्ता कनेरीना' नामक गढ़ में निर्वासित कर दिया गया। वहाँ उसे एक अन्धी कोठरी मिली, जहाँ उसके सोने के लिए पत्थर की एक बेञ्च थी और खाने के लिए काली रोटी मिलती थी। यहाँ उसे निरन्तर बुख़ार रहने लगा और उसकी दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई। एक सरकारी कर्मचारी ने उसे बहुत दबाया कि वह सिसली के राजा फ़र्डीनेण्ड को एक प्रार्थना-पत्र भेजे और स्वयं उसने उसका एक मसविदा लिख कर भी निकोतर को दिया जिसके प्रारम्भ में लिखा था—"His Sacred Royal Majesty, Ferdinand, King of the Two Scilies' इसको काट कर निकोतर ने अपने बाएँ हाथ से लिखा To the wild beast Ferdinand not yet satiated with the blood of the human race."

मेजिनी और उसके प्रजातन्त्रवादी साथी क्रान्ति द्वारा संयुक्त और स्वतन्त्र प्रजातन्त्र शासन स्थापित करने में असफल रहे। बाहरी और भीतरी शक्तियों ने उनकी योजनाओं को प्रत्येक बार कुचल दिया। परन्तु उन्होंने अपनी विचार-धारा और सङ्गठन से देश में वह शक्ति पैदा कर दी थी, जिसने अन्त में इटली को संयुक्त और स्वतन्त्र करके ही छोड़ा। आगे चल कर राजा विक्टर एमानुएल, कावूर और गेरीबाल्डी की सम्मिलित शक्तियों ने इटली को ऑस्ट्रिया के बन्धन से मुक्त कर दिया, और वहाँ संयुक्त राजतन्त्र शासन की स्थापना हो गई। मेजिनी प्रत्यक्ष में देश में राजतन्त्र शासन की स्थापना से सहमत न था, परन्तु ऑस्ट्रिया को देश से निकालने में वह सदैव पीडमोण्ट राज्य और कावूर की सहायता करता रहा।

कावूर ने फ्रान्स के सम्राट लुई नेपोलियन से ऑस्ट्रिया को इटली से निकालने में, समझौता कर लिया। राजा विक्टर एमानुऐल की कन्या का विवाह युवराज नेपोलियन के साथ हो गया। इसके अतिरिक्त पीडमोण्ट राज्य ने बहुत सा रुपया भी उसे दिया और कावूर ने गुप्त रीति से सेवोय और नाइस प्रान्त की भूमि भी फ्रान्स को देने की प्रतिज्ञा की। इधर गेरीबाल्डी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्वयंसेवक सेना का सङ्गठन होने लगा। प्रजातन्त्रवादियों ने इटली की एकता के लिए अपने मतभेदों को छोड़ कर इसमें पूरा सहयोग दिया।

मेजिनी के प्रजातन्त्रवादी-दल ने देश में 'संयुक्त-इटली' के लिए जो शक्ति पैदा कर दी थी, उसने अन्त में इटली को स्वतन्त्र और संयुक्त करके ही छोड़ा, परन्तु मेजिनी की आकांक्षाएँ पूरी न हुईं। इटली में स्वतन्त्र होने पर भी प्रजातन्त्र शासन स्थापित न हो सका। इटली का सर्वश्रेष्ठ और महान पुरुष निर्वासन और महान कष्ट में मरा। उसकी अन्त्येष्टि क्रिया के लिए दो-एक मित्रों के अतिरिक्त कोई न था, परन्तु फिर भी आज इटली का एक-एक बच्चा मेजिनी को उस पूज्य दृष्टि से देखता है जो अन्य किसी भी इटालियन को प्राप्त नहीं है।

* * *

क़ानूनीमल की बहस

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अङ्क—१

दृश्य—१ यमपुरी

(क़ानूनीमल वकील को यमदूत गठरी में बाँधे हुए अपनी पीठ पर लाद कर लाता है)

यमदूत—उफ़ ओ! इस क़ानूनीमल वकील ने तो मेरा नाक में दम कर दिया। कमबख़्त ने मरने में भी घपलें लगा दिए। जब देखा कि यह किसी तरह अपनी ख़ुशी से संसार छोड़ने को राज़ी नहीं होता, बल्कि उलटे मुझ यमदूत को भी, जिसका काम ही प्राणियों को यमपुरी पहुँचाना रहता है, रास्ता बता रहा है, तब तो मुझसे नहीं रहा गया। चट हज़रत की मुश्कें बाँधीं और मृत्युलोक से ज़बर्दस्ती उठा कर यमपुरी में ले ही आया। थोड़ी देर में बाबू साहब अपने पापों का फल भोगेंगे और नरक को सिधारेंगे ही, मगर तब तक ज़रा इन्हें होश में लाकर मिज़ाजपुरसी तो कर लूँ। बहुत बकबकते थे।

(यमदूत क़ानूनीमल की मुश्कें खोल कर उन्हें होश में लाता है)

क़ानूनीमल—(आँखें मल कर अँगड़ाई लेता हुआ) बहुत सोया। (यमदूत को देख कर) अबे तू कौन है? धत तेरी की! इस वक़्त तुझे अपनी मनहूस सूरत मुझी को दिखानी थी? चल हट यहाँ से। कमबख़्त ने हमारा आज का दिन ही चौपट कर दिया। अब आज वकालत क्या ख़ाक चलेगी?

यमदूत—(अलग) अरे! इसमें तो अब भी वही ऐंठ है, (प्रकट) क्यों जी, क्या तुम अब भी मृत्युलोक का स्वप्न देख रहे हो?

क़ानूनीमल—पढ़ें फ़ारसी बेचें तेल! सूरत यह और बघारने को संस्कृत? सपना को स्वप्न कहने चला है। अबे ज़रा अपनी हैसियत देख कर बातें कर। जानता नहीं, मैं क़ानूनीमल वकील हूँ। तेरे ऐसों को मैं रोज़ ही जहन्नुम की हवा खिलाया करता हूँ।

यमदूत—मगर अब तो तुम मेरे असामी हो।

क़ानूनीमल—मैं और तेरा असामी? बकता क्या है?

यमदूत—सच कहता हूँ। तुम ज़िन्दा नहीं हो, तुम मर गए हो।

क़ानूनीमल—मर जाए तेरा बाप, मैं क्यों मरने लगा?

यमदूत—क्योंकि तुम्हारी ज़िन्दगी पूरी हो गई थी। मगर ख़बरदार! अब बहुत बढ़-बढ़ के मत बोलो।

क़ानूनीमल—(अलग) यह मामला क्या है? क्या मैं सचमुच मर गया?...मैं सात रोज़ से बीमार ज़रूर था। फिर भी मैं कचहरी किसी न किसी तरह जाता ही था। सातवें दिन घर आते ही मेरी हालत बहुत ख़राब हो गई। आँखों के सामने एकदम अँधेरा छा गया। उस अँधियारी में बस इसी कमबख़्त की सूरत दिखाई दी। उसके बाद कुछ ख़बर नहीं। अब जो आँख खुली है तो यह पाजी फिर मुझे दिखाई दे रहा है—जो मुझे मरा हुआ बताता है।

यमदूत—क्यों, क्या बुदबुदा रहे हो? क्या अपने पापों को सोच रहे हो?

क़ानूनीमल—पाप? कैसा पाप?

यमदूत—ख़ैर! नरक में ढकेले जाओगे तब ख़ुद ही मालूम हो जायगा।

क़ानूनीमल—मैं क्यों नरक में जाने लगा? नरक तुम ऐसे ख़ब्बीसों के लिए है, या मेरे लिए? देखूँ तो सही, मुझे नरक में कौन ढकेलता है?

यमदूत—मैं।

क़ानूनीमल—तू?

यमदूत—हाँ मैं?

क़ानूनीमल—क्यों?

यमदूत—ईश्वर की अदालत में तुम अव्वल नम्बर के पापी ठहराए गए हो।

क़ानूनीमल—बिना मुझसे कुछ पूछताछ किए हुए?

यमदूत—पूछताछ करने की क्या ज़रूरत? यहाँ तुम्हारी हर बात रत्ती-रत्ती मालूम है?

क़ानूनीमल—हुआ करे। इससे क्या? मैं क़ानूनीमल हूँ। मैं ऐसी एकतर्फ़ा कार्रवाई करने वाली अदालतों का फ़ैसला कभी मान सकता हूँ?

यमदूत—तुम्हारे मानने या न मानने से क्या होता है?

क़ानूनीमल—अच्छा देखा जायगा।

यमदूत—तो फिर जनाब चलिए इधर!

क़ानूनीमल—इधर क्या है?

यमदूत—नरक।

क़ानूनीमल—और उधर?

यमदूत—वैकुण्ठ।

क़ानूनीमल—(वैकुण्ठ की तरफ़ जाता है) अच्छा तो मैं उधर ही जाता हूँ।

यमदूत—अरे! उधर क्यों?

क़ानूनीमल—हमारी ख़ुशी!

यमदूत—वाह री आपकी ख़ुशी! यह दुनिया नहीं है। यहाँ ऐसी धाँधली नहीं चल सकती।

क़ानूनीमल—तो जनाब मैं भी कोई अनाड़ी नहीं हूँ, जिसके साथ आपकी औंधी अदालत की ऐसी धाँधली चल जाए।

यमदूत—धाँधली?

क़ानूनीमल—बेशक! बिल्कुल धाँधली। एकदम धाँधली। ऐसी तो हमारे यहाँ के 'अनाड़ी मजरैट' लोग भी नहीं करते।

यमदूत—तो क्या तुम अपने को पापी नहीं समझते?

क़ानूनीमल—पापी होंगे तेरे सात पुरखे। ज़रा ज़बान सँभाल के बातें करो, नहीं अभी इतकइज़्ज़ती का दावा कर दूँगा तो बस सारी हेंकड़ी निकल जायगी।

यमदूत—अरे! गालियाँ भी देते हो और ऊपर से डराते भी हो?

क़ानूनीमल—तो क्या बुरा करता हूँ? तुम हो ही इस क़ाबिल।

यमदूत—मैं इस क़ाबिल हूँ? क्यों?

क़ानूनीमल—एक तो तुम्हारी सूरत ऐसी है कि बस यही जी चाहता है कि तड़ाक से मुँह पर तमाचा मार दूँ। दूसरे तुम्हें भलेमानुसों से बात तक करने की तमीज़ नहीं। तीसरे तुम उचक्कों की तरह मुझे अपने बाप का माल समझ कर दुनिया से उठा लाए, जब मैं मनसूबों में

भरा हुआ दुनिया में सैकड़ों काम करने को सोचे हुए था। चौथे यहाँ लाकर तुम बताते हो कि मैं मर गया। पाँचवें मेरे कामों को अपनी उल्टी समझ से ख़ुद ही पाप समझ कर मुझे नरक में जाने के लिए कहते हो।

यमदूत—मैं क्या करूँ ? मैं तो हुक्मी बन्दा हूँ। ईश्वर के यहाँ से जैसा हुक्म आया वैसा किया।

क़ानूनीमल—ईश्वर के यहाँ कोई क़ायदा-क़ानून भी है कि उनके यहाँ अन्धेर ही अन्धेर है। ज़रा ले तो चलो मुझे उनके पास। देखूँ किस क़ानून की रू से मुझे उन्होंने पापी ठहराया है।

यमदूत—तुम वहाँ नहीं जा सकते।

क़ानूनीमल—क्यों, क्या वे पर्देनशीन हैं ?

यमदूत—नहीं। मगर वह केवल अपने भक्तों ही को दर्शन देते हैं—और किसी को नहीं।

क़ानूनीमल—भक्त क्या बला है ?

यमदूत—ईश्वर के भक्त वह कहलाते हैं, जो दिन-रात उनका भजन करते हैं और भजन में उन्हीं का गुण गाते। सोते, उठते, बैठते, उन्हीं का नाम जपते हैं।

क़ानूनीमल—रहने भी दे। साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहता कि भक्त के मानी ख़ुशामदी। धत् तेरे की ! यहाँ भी ख़ुशामदियों ही का बोल-बाला है। तब तो मेरी गुज़र यहाँ हो चुकी। चल बाबा, मुझे घर ही पहुँचा दे।

यमदूत—घर ?

क़ानूनीमल—और नहीं तो क्या ? न तू मुझे वैकुण्ठ में जाने देता है और न ईश्वर के पास। तब फिर घर न वापस जाऊँ तो जाऊँ कहाँ ?

यमदूत—वाह ! वाह ! फिर नरक में कौन जायगा ?

क़ानूनीमल—तू और तेरे बाप-दादे।

यमदूत—अरे ! तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मेरे बाप-दादों के भी नाम लो ?

क़ानूनीमल—और तुम्हारी इतनी मजाल कि तुम मुझे नरक में जाने को कहो ? मैं तुझसे किस बात में दबूँ ? जो कुछ करना था वह तू कर ही चुका। अब तू मेरा क्या कर सकता है ?

यमदूत—हाय ! हाय तुमने तो मेरा नाक में दम कर दिया। मरने के बाद जितने यहाँ आते हैं, वह बेचारे सभी अपने पापों को याद करके पछताते हैं, सर धुनते हैं, छाती पीटते हैं, माफ़ी पाने के लिए छटपटाते हैं और नाक रगड़ते हैं।

क़ानूनीमल—बस-बस, अपना लेक्चर अपने पापियों को डराने के लिए रख छोड़। मैं तेरी गीदड़भभकियों में आने वाला नहीं हूँ।

यमदूत—अरे भाई, मैं तुम्हारी भलाई के लिए कहता हूँ !

क़ानूनीमल—जब मैंने कोई पाप ही नहीं किया है, तो इन बातों को सुनने से फ़ायदा ?

यमदूत—मगर ईश्वर की अदालत में तो तुम पापी साबित हो चुके हो।

क़ानूनीमल—पीठ पीछे तो लोग लाट साहब को भी गाली देते हैं। इससे क्या ? मेरे सामने अगर कोई मुझे पापी कह दे तब जानूँ ? इसीलिए तो कहता हूँ कि ईश्वर के पास ले चलो।

यमदूत—पहले मुझसे तो निबट लो, तब ईश्वर के पास जाने के मनसूबे करना।

क़ानूनीमल—तुझसे क्या निबटूँ, तेरे तो अक़्ल ही नहीं है।

यमदूत—मेरे अक़्ल नहीं है ?

क़ानूनीमल—बेशक। अगर है तो बता पाप किसे कहते हैं ?

यमदूत—क्या तुम्हारे धर्म ने नहीं बताया ?

क़ानूनीमल—बस मालूम हो गया। किस धर्म को कहते हो ? दुनिया में तो हज़ारों धर्म हैं। अगर किसी काम को कोई मज़हब अच्छा कहता है तो दूसरा बुरा। ऐसी हालत में तुम उनकी मदद से भला किस तरह नेकी और बदी की जाँच कर सकते हो ?

यमदूत—क्या तुम अपने धर्म पर एतबार नहीं करते ?

क़ानूनीमल—मैं एतबार करता हूँ या नहीं, तुम्हारी बला से। तुम अपनी कहो।

यमदूत—मैं तो उन्हें ईश्वर-वाक्य समझता हूँ।

क़ानूनीमल—अरे ! बेवक़ूफ़ !! ईश्वर को क्यों पाखण्डी बनाता है ? अगर सभी मज़हब ईश्वर के वाक्य हैं तो वह किस तरह हर मज़हब में यह कह सकता था कि यह तो मेरा वाक्य है और बाक़ी सब कुफ़्र और पाखण्ड हैं। भला उन्हें इस तरह मज़हबी झगड़ों की बुनियाद डालने की क्या ग़रज़ थी, जिसमें पड़ कर करोड़ों जानें चली गईं और अभी करोड़ों और जायँगी ?

यमदूत—बात तो कुछ-कुछ तुक की मालूम होती है, मगर फिर ये मज़हब दुनिया में आए कहाँ से ?

लोग बिस्मिल से मुफ़्त जलते हैं

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

वह तसौवर में भी मचलते हैं,
दिल के अरमाँ कहाँ निकलते हैं !
उनको पहिचानता हूँ मैं भी ख़ूब,
नई चालें वह रोज़ चलते हैं !
वह हैं बहरोपाईए ज़माने के,
सैकड़ों रङ्ग जो बदलते हैं !
ख़ाक उन्हें कर न दे हसद की आग,
दिल ही दिल में जो मुझसे जलते हैं !
कोई रक्खे कहाँ तक इसका ध्यान,
रोज़ एक ऑरडर निकलते हैं !
नए फ़ैशन का ख़ूब साँचा है,
लोग दिन-रात इसमें ढलते हैं !
वह तो जलता नहीं किसी से भी,
लोग "बिस्मिल" से मुफ़्त जलते हैं !

* * *

क़ानूनीमल—जो लोग अपने ज़माने में सब से ज़्यादा अक़्लमन्द हुए और जिन्होंने ईश्वर को पहचाना और उसकी कुछ-कुछ बातें समझीं, उन्होंने अच्छाई के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने की तरकीबें निकालीं, बस वही मज़हब हो गया। मगर फिर भी वह आदमी ही की अक़्ल ठहरी। लाख बढ़ जाने पर भी ग़ुरूर की बू उसमें आ ही गई। इसीलिए हर मज़हब अपने को सच्चा और दूसरे को झूठा कहता है।

यमदूत—अब तो इस गड़बड़झाले में मेरी भी नीयत डगमगाने लगी।

क़ानूनीमल—ईश्वर एक है। सभी को पैदा करने वाला वही है। हिन्दू, बौद्ध, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, पारसी, ग़रज़ सारी दुनिया के लोग उसके लिए एक समान हैं, इसलिए अगर वह सचमुच कोई धर्म दुनिया में चलाता तो बस एक ही धर्म, जिसके क़ायदे सबके लिए एक ही होते। जब ऐसा धर्म दुनिया में कोई है ही नहीं, तब तुम मज़हब के भरोसे पाप-पुण्य की क्या ख़ाक तमीज़ कर सकते हो ? हम लोग अपनी-अपनी सफ़ाई में अपने-अपने धर्म की शरण अलबत्ता ले सकते हैं, क्योंकि हमारी अक़्ल छोटी है। और जिन बातों को, चाहे वह बुरी ही क्यों न हों, हमारे बड़ों ने अच्छा कह दिया है, उन्हें अच्छा समझने के लिए हम मजबूर हैं। मगर ईश्वर उनकी अक़्ल से हमें बुरा समझने के लिए काम नहीं ले सकते, इसके लिए उन्हें अपनी अक़्ल ख़र्च करनी चाहिए।

यमदूत—मगर दुनिया में लाखों ही तरह के आदमी हैं, सबके लिए एक ही तरह के क़ानून किस तरह बन सकते हैं ?

क़ानूनीमल—बन सकता है कि ईश्वर ने बना कर दिखला दिया है। आँखें हों तो खोल कर देख। उन्होंने तो ऐसे क़ानून बना दिए हैं, जो पेड़-पत्तों से लेकर दुनिया के तमाम जीव-जन्तु तक के लिए एक समान हैं। वह ऐसा निकम्मा कभी भी नहीं हो सकता, जैसा तू अपनी बेवक़ूफ़ी की बातों से दिखला रहा है। बस मैं समझ गया। तुम्हीं लोगों ने यहाँ भी धाँधली कर रक्खी है।

यमदूत—अहाहा ! भला ऐसे क़ानून किस ग्रन्थ में हैं, यह तो बताओ।

क़ानूनीमल—अरे अन्धे ! इनको किताब में नहीं, क़ुदरत के कारख़ाने में देख।

यमदूत—हाँ क़ानून-क़ुदरत तो वास्तव में अटल और सबके लिए एक समान है।

क़ानूनीमल—ईश्वर की अक़्ल की कुछ थाह लेनी है तो वहीं तू उसे पा सकता है। तू उसको मज़हब के शिकञ्जे में कस कर उसकी बेइज़्ज़ती क्यों करता है ? ईश्वर ने दुनिया के लोगों को राह बताने ही के लिए इस क़ानून को बनाया। जिसने इसको समझा, उसने ईश्वर को पहचाना। जिस मज़हब ने इसकी जितनी ही नक़ल की है, वह उतना ही ज़्यादा दुनिया के लिए सच्चा और अच्छा हुआ। जिस समाज ने इसको जितना ही अपनाया है उतनी ही उसकी भलाई हुई है। मगर अफ़सोस ! दुनिया इसे नहीं समझती।

यमदूत—ईश्वर करे दुनिया इसे हर्गिज़ न समझे, वरना मेरा नरक-धाम बिल्कुल उजड़ ही जायगा। क्योंकि अभी से तुम्हारी बातें मेरी अक़्ल को बौखला रही हैं। कहीं इस बौखलाहट में मैं तुम्हें धर्मात्मा न समझने लगूँ। इसी तरह मुझे औरों को भी समझना पड़ेगा, तब मैं भला नरक में किसे भेजूँगा। मगर नहीं, अब भी मेरी समझ कुछ-कुछ सही-सलामत है। हाँ, यह तो ज़रा बताओ कि मज़हबों में अगर ईश्वर का दख़ल नहीं है, तब उन सब में बहुत सी बातें क्यों मिलती-जुलती हैं।

क़ानूनीमल—वाह ! वाह ! सारा रामायण पढ़ गए फिर भी यह नहीं मालूम हुआ कि राम ने रावण को मारा या रावण ने राम को। अरे अक़्ल के दुश्मन ! सभी मज़हबों ने ईश्वर को उसकी क़ुदरत का कारख़ाना देख कर पहचाना है। इसलिए उसके क़ानून का बहुत-कुछ सहारा लेकर अपने क़ायदे बनाए हैं। ऐसे क़ायदे हर मज़हब में ज़रूर ही कुछ न कुछ मिलते-जुलते होंगे।

यमदूत—अब मार लिया ! अब तुम कहाँ मेरे चङ्गुल से निकल के जा सकते हो ? आख़िर आगए तुम उसी रास्ते पर, जहाँ से तुम भागना चाहते थे। जिन बातों को सभी धर्मों ने पाप कहा है, उनसे तुम कैसे बच सकते हो ? तुम ख़ुद ही कह चुके हो कि सब धर्मों की मिलती-जुलती बातों का दारमदार क़ानून-क़ुदरत है, यानी ख़ास ईश्वर का बनाया हुआ क़ानून। तुम उसके ख़िलाफ़ चले हो।

क़ानूनीमल—हर्गिज़ नहीं।

यमदूत—अगर मैं बता दूँ ?

क़ानूनीमल—तेरी समझ की भूल साबित कर दूँगा। बता तो सही।

यमदूत—सभी धर्म एक ज़बान से ईश्वर की पूजा करने को कहते हैं। मगर तूने कभी नहीं की।

क़ानूनीमल—बेशक नहीं की।

यमदूत—क्यों ?

क़ानूनीमल—क्योंकि न तो मैं कामचोर था न ख़ुशामदी, और न मुझे ईश्वर के मिज़ाज पर कलङ्क लगाना मञ्ज़ूर था।

यमदूत—इसका क्या मतलब?

क़ानूनीमल—तुम्हारी अक़्ल बहुत मोटी है। इसलिए तुम इसे इस तरह समझो। फ़र्ज़ करो तुमने एक नाटक-मण्डली खोली और तमाशा करने के लिए तुमने दस ऐक्टर तैनात किए। तुम उन ऐक्टरों से क्या आशा करोगे और उनसे तुम किस तरह ख़ुश होगे?

यमदूत—मैं उनसे यही आशा करूँगा कि वह लोग स्टेज पर निहायत ख़ूबी के साथ अपने-अपने पार्ट करें, और इसीमें मैं उनसे ख़ुश हूँगा।

क़ानूनीमल—अगर कोई ऐक्टर बजाय अपना पार्ट करने के स्टेज के एक कोने में बैठ कर तुम्हारा ही नाम इस नीयत से जपता रहे कि मैनेजर साहब अपनी तारीफ़ सुन कर मुझसे ख़ुश हो जायँ, ताकि वह मुझे बहुत सा इनाम दें, उसे तुम क्या समझोगे?

यमदूत—अव्वल नम्बर का कामचोर, ख़ुशामदी और मुझे दर्शकों की निगाहों में ख़ुशामद पसन्द साबित करके मुझे बदनाम करने वाला समझूँगा। उससे ख़ुश होने के बदले उस निकम्मे की गर्दन में हाथ डाल के निकाल दूँगा।

क़ानूनीमल—तो बस इसी मिसाल के क़ानून से ईश्वर की पूजा करने वालों को, दुनिया से भाग कर जङ्गलों में जाकर ईश्वर के नाम को जपने वालों को एक दम नरक में ढकेलो। क्योंकि यह सब लोग दुनिया के स्टेज पर अपना दुनियावी पार्ट करने के लिए भेजे गए थे। मगर इन सबों ने उनसे मुँह चुराया और अपना वक़्त इस तरह बरबाद किया।

यमदूत—मालूम होता है, तुम बिल्कुल सही कह रहे हो, फिर भी इसमें कहीं न कहीं है ग़लती ज़रूर। मगर इस वक़्त मेरी अक़्ल ऐसी चकरा गई है कि पता नहीं मिलता कि वह ग़लती कहाँ पर है।

क़ानूनीमल—सही तो है ही। इसीलिए तो मैं इस पाप से सदा दूर ही रहा।

यमदूत—ख़ैर! आगे चलो। सभी धर्म ब्रह्मचर्य की तारीफ़ करते हैं। मगर तुमने इसका पालन नहीं किया है।

क़ानूनीमल—मैं पहले ही कह चुका हूँ कि तुम मेरे सामने संस्कृत न बघारा करो। साफ़-साफ़ कहो कि ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं?

यमदूत—ब्रह्मचर्य से मतलब यह है कि मन को इस तरह सदा क़ाबू में रखना कि ख़ूबसूरत से भी ख़ूबसूरत औरत के सामने भी वह ज़रा न डगमगाए।

क़ानूनीमल—बस-बस, समझ गया। यह हीजड़ेपन की बातें अपने ही पास रख। धत् तेरी की! अरे! कोई अक़्ल की बात पूछ तो उसका जवाब दूँ।

यमदूत—अच्छा, तो लो मैं साफ़ ही साफ़ पूछता हूँ। देखूँ अब तुम किस तरह जवाब देने से भागते हो। तुम वेश्यागामी रहे हो।

क़ानूनीमल—रहे होंगे।

यमदूत—अरे! तो क्या यह पाप नहीं है, जो ऐसी लापरवाही दिखा रहे हो?

क़ानूनीमल—पाप? भला तू यह भी जानता है कि पाप है क्या?

यमदूत—जितने भी बुरे काम हैं, जिससे परलोक बिगड़े वह सभी पाप हैं।

क़ानूनीमल—परलोक और ढबरलोक की बात तो अलग रक्खो। इसीलिए मैंने धर्म को पहले ही दूर कर दिया है। कोई बात अगर बुरी है तो बताओ क्यों बुरी है? तब तो मैं मान सकता हूँ, वरना धर्म-वर्म के ख़्याल से मैं किसी भी बात को अन्धे की तरह मानने को तैयार नहीं हूँ।

यमदूत—उफ़ ओ! ईश्वर न करे तुम-ऐसे क़ानूनी से किसी का पाला पड़े। तुम बाल नहीं, बाल की खाल खींचते हो। तुम कहते हो कि धर्म ज़िन्दगी को अच्छाई और सचाई से बिताने का ढङ्ग बताते हैं, इसलिए यह उन्हीं कामों को बुरा कहते होंगे जिनसे दुनिया को किसी न किसी तरह से नुक़सान पहुँचा हो और जो ज़िन्दगी के लिए ख़राब हों।

क़ानूनीमल—इतनी देर में अगर तुमने कोई अक़्ल की बात कही है तो बस यही। वह भी सिर्फ़ मेरी सङ्गत की वजह से। देखो इसका असर? तुम्हारी औंधी खोपड़ी कुछ-कुछ सीधी होने लगी कि नहीं? अब तुम मानते हो कि पाप वह चीज़ है जो दुनिया के लिए, ज़िन्दगी के लिए या किसी के लिए भी नुक़सान पहुँचाने वाली हो, अगर न हो तो वह पाप नहीं है।

यमदूत—हाँ जब परलोक की बात अलग कर दी गई, तब तो यही मानना पड़ेगा।

क़ानूनीमल—अच्छी बात है। अब तुम बताओ कि तन्दुरुस्ती के लिए क़ुदरती ज़रूरियात को जबरन् रोकना अच्छा है या उन्हें पूरा करना?

यमदूत—पूरा करना।

क़ानूनीमल—जो काम तन्दुरुस्ती के लिए अच्छा हो उसे तुम पाप कहोगे या नहीं?

यमदूत—हर्गिज़ नहीं।

क़ानूनीमल—तब अगर किसी दिन रास्ते में किसी वजह से पेट ज़रा ज़ोरों से गड़बड़ा उठा तो बजाय अपने घर के पाख़ाने में जाने के बम्पुलिस में चला गया तो तेरे बाप का क्या बिगड़ा? बस इसी तरह वेश्या के यहाँ जाने की भी बात समझ ले।

यमदूत—क्या तुम सचमुच ठीक कह रहे हो या मेरी अक़्ल ही कुछ ख़राब हो गई है, जो इसे ठीक समझ रही है? ख़ैर, वेश्या ही तक यह बात होती, तो मैं इसे बाज़ारू सौदा जान कर चुप रह जाता; क्योंकि उसे तुम ख़रीदने की वजह से उस वक़्त अपना माल समझ सकते थे। मगर तुमने तो पराई स्त्रियों को भी ताका है।

क़ानूनीमल—तो क्या बुरा किया? यह तो मैंने ईश्वर की क़दरदानी की।

यमदूत—क़दरदानी?

क़ानूनीमल—हाँ क़दरदानी। और इसके लिए तू मुझे पापी समझता है? वाह! वाह! अरे! अपनी अक़्ल पर उलटी झाड़ू मार। सुन। फ़र्ज़ करो कि तुमने बड़ी मिहनत से एक फुलवाड़ी बनाई। उसमें तुमने एक से एक बढ़िया फूल लगाए और ख़ूबसूरत मूर्तियाँ तैयार करके रक्खीं! अब उसमें घूमने के लिए दो आदमी तुमने भेजे, जिनमें से एक तो अपना सर नीचा किए उस पार निकल गया। मगर दूसरा हर मूर्ति को घण्टों निहारता हुआ, हर फूल को मन लगा कर निरखता हुआ घूमा, तो तुम किससे ख़ुश होगे?

यमदूत—उसी से, जिसने मेरी चीज़ों की क़दर करके मेरी मिहनत सफल की।

क़ानूनीमल—तब लाओ हाथ। मुझे इनाम दिलवाओ। और उन लोगों को, जिन्होंने दुनिया में आकर ईश्वर की बनाई हुई ख़ूबसूरती से अपनी आँखें फेरी हैं, सीधे जहन्नुम में भेजो।

यमदूत—अरे! अब तो मेरी भी अक़्ल यही कहने लगी। मगर नहीं, तुमने तो उनमें से किसी-किसी से प्रेम भी किया।

क़ानूनीमल—बड़ा अच्छा किया।

यमदूत—अच्छा किया या बुरा किया? पराई स्त्री से प्रेम करना कौन सा क़ायदा और कौन सा क़ानून भला अच्छा कहेगा?

क़ानूनीमल—मगर वह पराई थी कब थीं।

यमदूत—क्या उनकी शादी दूसरों के साथ नहीं हुई थी?

क़ानूनीमल—हुई होगी। तो इससे क्या वे पराई हो गईं। समाज की नज़र में वह मेरे लिए पराई हों तो हों, मगर ईश्वर की दृष्टि में नहीं।

यमदूत—क्यों?

क़ानूनीमल—क्योंकि शादी-ब्याह का रिवाज समाज का निकाला हुआ है, ईश्वर का नहीं। ईश्वर ने तो दुनिया बसाने के लिए सिर्फ़ एक प्रेम का सम्बन्ध पैदा किया है। और यह रिश्ता बस उन्हीं दो औरत-मर्दों में पैदा हो सकता है, जिनको उन्होंने एक दूसरे के लिए असल में पैदा किया है, औरों के बीच में नहीं। इसीलिए उन्होंने हर मिज़ाज के मर्द के लिए उसी मिज़ाज की औरत भी बनाई है, ताकि सारी दुनिया एक ही के पीछे न पड़ जाय और दूसरों से बात न पूछे। अब अगर समाज बीच में कूद कर 'इधर की ईंट उधर का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा' की कहावत करे तो क्या ईश्वर का बनाया हुआ रिश्ता कहीं अपना असर डालने से चूक सकता है, या यह लग कर कहीं टूट सकता है?

यमदूत—उफ़ ओ! तुमने मेरी अक़्ल चक्कर में डाल दी। ज़रा और साफ़-साफ़ कहो।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

अफ़ग़ानिस्तान के अमीर ने झूठ बोलने के अपराध में अपने समर-सचिव का मुँह तार से सिलवा दिया !

शाहा दरबार में जाने के लिए तीन बड़े भारतीय नरेशों को कीचड़ में पैदल जाना पड़ा।

जोधपुर का राज-श्मशान :: दीवारों पर सतियों के पञ्जों का चिह्न ! मञ्चेस्टर के ड्यूक का भारत की सैर

लॉर्ड मिण्टो के ज़माने में मञ्चेस्टर के ड्यूक भारत की सैर करने आए थे। उन्होंने अपने भ्रमण-वृत्तान्त में कई मज़ेदार बातों का उल्लेख किया है। ड्यूक महोदय के साथ एक अमेरिकन धनवान भी अपनी नव-विवाहिता पत्नी को लेकर हिन्दोस्तान की सैर करने आए थे। कई देशी नरेशों ने आपको दावतें दी थीं। सब से पहले यह लोग जोधपुर-नरेश के अतिथि हुए थे। बम्बई में क्रिसमस के दिन व्यतीत कर अहमदाबाद आकर सुप्रसिद्ध जैन-मन्दिर देखा। इस विशाल मन्दिर के सम्बन्ध में ड्यूक ने लिखा है—"अहमदाबाद के बहुत से अमीर सौदागर जैनी हैं। जैनियों का धर्म-विश्वास बड़ा विचित्र है। वे एक मक्खी को भी, चाहे वह कितना ही कष्ट दे रही हो या क्षति पहुँचा रही हो, मारना या सताना अधर्म समझते हैं। जैनी मांस खाना बुरा समझते हैं और रास्ता चलने के समय आँखें नीची कर लेते हैं, जिसमें कोई जीव आकर मर न जाय।"

जोधपुर में ड्यूक ने महाराज के घोड़े देखे। उनकी प्रशंसा में लिखा है कि वे मूल्यवान और शिक्षित थे। वह लिखते हैं कि राजपूताना के नरेशों में यह दस्तूर है कि जब वे राजगद्दी पर बैठते हैं तो अपने लिए एक नया महल बनवाते हैं, पुराने महलों में नहीं रहते। इमारतों की वृद्धि के ख़याल से यह नियम अच्छा है, परन्तु इससे राजकोष का बहुत सा धन व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है।

राजसभा का उल्लेख करते हुए ड्यूक ने लिखा है कि जोधपुर-नरेश के अतिथि की हैसियत से मुझे साधारण राजसभा में भी सम्मिलित होने का अवसर मिला था। इस राज-दरबार में राजा और रेज़ीडेण्ट पास ही पास बैठ कर उपस्थित अभियोगों का विचार करते हैं। रेज़ीडेण्ट, यद्यपि एक बुद्धिमान व्यक्ति था, परन्तु मेरे सामने महाराज ने जो फ़ैसले किए उनमें विवेचना और न्याय की मात्रा यथेष्ट थी। वादी और प्रतिवादी दोनों ही इन निर्णयों से सन्तुष्ट दिखाई पड़े।

मृत्यु के पञ्जे

इसके बाद वह लिखते हैं—"एक दिन हम लोग पुराना राज-श्मशान देखने गए। यह भवन एक विशाल क़िले की भाँति है। इसके अन्दर पहुँचने के लिए हमें कई देवढ़ियाँ नाँघनी पड़ीं। रास्ते में हमें कितनी ही छिद्र वाली दीवारें दिखाई पड़ीं। पूछने पर मालूम हुआ कि प्राचीन काल में इन छिद्रों द्वारा जाति के शत्रुओं पर पिघला हुआ सीसा या खौलता हुआ तेल डाल दिया जाता था। इस श्मशान-महल के प्रत्येक द्वार पर ज़मीन से तीन-चार फ़ीट की ऊँचाई पर, छोटे-छोटे पञ्जे अङ्कित थे, जिनमें कई सुनहले, कई रुपहले, कई लाल और कई सफ़ेद थे। ये पञ्जे उन सतियों के हस्त-चिह्न हैं, जो जीते जी अपने पतियों की चिताओं में जल मरी थीं। श्मशान की ओर जाने के समय वे मृत राजाओं की रानियाँ अपने हाथों में मेंहदी लगा लिया करती थीं, और इन दीवारों पर अपने हाथों की छाप लगा देती थीं, जो फिर खोद कर सुनहले या रुपहले बना दिए जाते थे।"

अफ़ग़ानिस्तान के अमीर का शुभागमन

ड्यूक साहब लिखते हैं—"हम जिन दिनों हिन्दोस्तान में थे, उन दिनों अफ़ग़ानिस्तान के अमीर भी भारत में वायसराय के अतिथि थे। उनके स्वागत के लिए लॉर्ड मिण्टो ने आगरे में एक भारी दरबार किया। हमें भी निमन्त्रण मिला था। जब हम लोग आगरा पहुँचे तो सन्ध्या हो गई थी। पानी बरस जाने के कारण सर्दी बढ़ गई थी और रास्तों में कीचड़ भी बहुत हो गया था। हम लोग अपने कैम्प में पहुँचे तो मेरी स्त्री को भयङ्कर ज्वर चढ़ आया। परन्तु वहाँ कोई सामान नहीं! बड़ी मुश्किल से एक लालटेन मिली। मैंने उसे जलाया और उसकी धीमी रोशनी में किसी तरह बिस्तरा बिछा कर अपनी स्त्री को सुलाया। इसके बाद मैं बाज़ार की ओर चला और वहाँ जितने लैम्प मिले, ख़रीद लाया, तब कहीं जाकर हम रात्रि व्यतीत करने के योग्य हो सके। सवेरे लेडी मिण्टो की कृपा से हमें वायसराय के कैम्प में स्थान मिल गया।

अमीर से भेंट

"अमीर हद दर्जे के ख़शमिज़ाज आदमी थे। उनसे वार्तालाप करने में पहले तो बड़ी कठिनता हुई, क्योंकि वे केवल फ़ारसी और पश्तो बोल सकते थे और हम केवल अङ्गरेज़ी! ख़ैर, अन्त में एक दुभाषिए के आ जाने से यह कठिनाई दूर हो गई। थोड़ी ही देर में अमीर ने अङ्गरेज़ी के कई 'मोटे-मोटे' शब्द सीख लिए और मुझे भी कई पश्तो के शब्दों का अर्थ मालूम हो गया।

"दूसरे दिन अमीर के सम्मानार्थ एक फ़ौजी प्रदर्शन किया गया। तीन हज़ार सात सौ सैनिकों ने इसमें भाग लिया था। इन सैनिकों की क़वायद देख अमीर को बड़ा आश्चर्य हुआ और जब यह प्रदर्शन समाप्त हुआ तो उन्होंने अपने पार्श्वरक्षकों को तार-घर की ओर चलने की आज्ञा दी। रास्ते भर वह क्रोध से काँपते और अपनी अँगुलियों के नखों को दाँतों से काटते रहे। तार-घर पहुँच कर उन्होंने अपने मुन्शी को, जो भय से पीला पड़ गया था, तार का मज़मून लिखवाना शुरू किया। जब अङ्गरेज़ अफ़सरों ने पूछा कि तार कैसा है, तो उन्होंने कहा कि मैंने अपने समर-सचिव का मुँह तार से सी देने की आज्ञा दी है। इस पर फिर लोगों ने पूछा कि आख़िर उसे किस अपराध के लिए यह गुरु-दण्ड दिया जा रहा है, तो अमीर ने उत्तर दिया—"यह अपने बादशाह से झूठ बोलने की सज़ा है!" मैंने उसे हिन्दुस्तान में ब्रिटेन की सामरिक शक्ति की जाँच के लिए भेजा था तो उसने आकर मुझसे कहा कि ब्रिटिश सेना में तो इतने आदमी भी नहीं हैं, जो अफ़ग़ानी सेना की 'मशालबरदारी' कर सकें। परन्तु आज मैंने अपनी आँखों से देख लिया कि उसका कहना सरासर ग़लत है। इसलिए उसे यह सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए।

"इसी रात को शाही भोज था, जिसमें ग्वालियर-नरेश, महाराज सिन्धिया, महाराज जयपुर, महाराज बीकानेर आदि सम्मिलित थे। आमन्त्रितों में मेरे सिवा वायसराय ही एक ऐसे अङ्गरेज़ थे, जिन्हें महाराज जयपुर से बातचीत करने में अधिक कठिनाई नहीं पड़ी, क्योंकि महाराज बहुत कम अङ्गरेज़ी जानते थे।

"ब्रिटिश सरकार ने अमीर के मनोरञ्जनार्थ एक तमाशे का प्रबन्ध किया। इसमें देशी नरेशों से भी सहायता करने को कहा गया था और इन लोगों ने ख़ूब बढ़-चढ़ कर इसमें भाग लिया। एक सप्ताह में लाखों रुपए पर पानी फेर दिया। यह केवल इसलिए किया गया था कि अङ्गरेज़ सरकार प्रसन्न होकर इनके साथ नर्मी का बर्ताव करे।

कीचड़ में पैदल यात्रा

"अन्त में दरबार का दिन आ पहुँचा। वर्षा के कारण चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ दिखाई देता था। संयोगवश महाराज मैसोर की सुन्दर गाड़ी ही अतिथियों से बच गई थी, जो निवास-स्थान से दरबार तक सवारियाँ लाती और ले जाती थी। अभी कुछ अतिथि हमारे निवास-स्थान से दरबार में जाने ही को थे कि महाराज के एक सेवक ने आकर कहा कि क़िले में हिन्दुस्तानी गाड़ियों के जाने की मुमानियत कर दी गई है। हम लोग यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गए। अन्त में भारत के तीन बड़े देशी नरेशों को कीचड़ रौंदते हुए क़िले में, पैदल जाना पड़ा। राजाओं का यह अपमान देख कर मेरा तो ख़ून खौलने लगा। लॉर्ड मिण्टो ने भी जब यह हाल सुना तो सख़्त नाराज़ हुए।"

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आपकी चिट्ठियों के मारे आजकल बुरा हाल है। इधर आपका तकाज़ा और उधर लल्ला की महतारी का हल्ला ! न इधर चैन न उधर चैन ! जहाँ काग़ज़-क़लम लेकर कुछ लिखने बैठा कि लल्ला की महतारी खोपड़ी पर आ धमकीं ! "क्या लिख रहे हो ? क्यों लिख रहे हो ? सम्पादक जी तुम्हारे कौन होते हैं जो उन्हें रोज़ चिट्ठियाँ लिखा करते हो ?" आदि-आदि प्रश्नों की ऐसी झड़ी लगा देती हैं कि उसके सामने सावन की झड़ी की कोई हक़ीक़त ही नहीं। आज सोकर उठीं तो कहने लगीं—"आटा-दाल नहीं है।" मैंने कहा—"तो मैं क्या करूँ ? मेरे पास तो पैसे भी नहीं हैं। तुम्हारे पास हों तो लाओ दो, आटा-दाल ला दूँ। लाला करोड़ीमल की दूकान खुल गई होगी।"

बस, अभी इतना ही कह पाया था कि लल्ला की महतारी चीख़ उठीं। पहले तो मैंने समझा कि उन्हें बिच्छू ने डङ्क मार दिया है या घर में कहीं आग लग गई है। परन्तु थोड़ी देर के बाद ही मालूम हो गया कि मेरा अनुमान बिलकुल ग़लत है। न उन्हें बिच्छू ने डङ्क मारा है और न घर में कहीं आग लगी है। उनकी चिल्लाहट का कारण आटा-दाल है। और उसके न होने का अपराध मेरे ऊपर है। मानो मेरे ही अपराध से वे दोनों (आटा और दाल) बर्त्तन के क़िले की दीवार फाँद कर कहीं नौ-दो-ग्यारह हो गए हैं ! इसमें लल्ला की महतारी का ज़रा भी क़ुसूर नहीं।

ख़ैर, जब वह अच्छी तरह बरस चुकीं, उनके क्रोध का पारा 'नॉर्मल' के निकट पहुँचा और आँचल से मुँह का पसीना पोंछ कर सुस्ताने लगीं, तो मैंने हिम्मत करके पूछा—"आख़िर मुझ पर क्यों इतना बिगड़ रही हो ? मैं क्या करूँ ? आटा-दाल समाप्त हो गया है तो इसमें मेरा क्या अपराध है ?" उन्होंने अपनी कमान सी भौंहों को भृकुटी तक खींच कर कहा—"तुम्हारा नहीं तो क्या मेरा क़सूर है ? यह चिट्ठी-फिट्ठी लिखना छोड़ कर कोई रोज़गार-धन्धा क्यों नहीं करते ?"

"रोज़गार-धन्धा ?"

"हाँ-हाँ, रोज़गार-धन्धा।" उन्होंने दुबारा कमान चढ़ाई। सम्पादक जी, रङ्ग बेढब देख कर मेरे तो होश पैंतरा कर गए। सोचा, इस समय अगर कुछ बोलूँगा तो बात बढ़ जायगी, इसलिए, "अच्छा सोचूँगा" कह कर मैं फ़ौरन वहाँ से उठ कर बाहर चला गया और सोचने लगा × × ×

मालूम नहीं, आज लल्ला की महतारी को क्या हो गया है, जो इतना सख़्त नाराज़ हो रही हैं और इस बुढ़ौती में मुझे रोज़गार-धन्धा करने को कहती हैं। मैं ब्राह्मण-सन्तान भला रोज़गार-धन्धा क्या जानूँ ? ब्राह्मणों का तो रोज़गार है यजमानों से दक्षिणा लेकर उनके लिए परलोक का पथ प्रशस्त कर देना और उनके पिताओं के श्राद्ध आदि में भोजन का निमन्त्रण ग्रहण करके उन्हें सीधे वैकुण्ठधाम भेजना। मैं कोई बनिया-बक़्क़ाल थोड़े ही हूँ कि लल्ला की महतारी के कहने से लौंग-सुपारी की दूकान खोल कर बैठ जाऊँ ? कायस्थ होता तो कहीं 'मुन्शीगिरी' कर लेता या क्षत्रिय होता तो किसी बड़े आदमी के यहाँ दरबानी का काम करता, परन्तु मैं तो ब्राह्मण हूँ। ब्राह्मण को तो अगर भीख माँगने की नौबत आ जाय तो भी अपने धर्म के प्रतिकूल, दान-दक्षिणा लेना छोड़ कर, कोई दूसरा काम नहीं करना चाहिए। फिर जब तक दोनों जून पूरी-मलाई चभाने वाला सनातन हिन्दू-समाज मौजूद है, तब तक हम ब्राह्मणों को कोई रोज़गार-धन्धा करने की आवश्यकता ही क्या है ?

अभी मेरी विचार-धारा भादों की उमड़ी हुई नाली की तरह बही ही जा रही थी, कि उधर से मेरे लँगोटिया यार मुन्शी मदारीलाल आ धमके और मुझे देखते ही बेवक़्त की शहनाई की तरह बज उठे—"दुबे जी, पालागन !" मैंने आशीर्वाद दिया—"कल्याण हो, आयुष्मान !" इसके बाद "कहिए, क्या हो रहा है ?" कह कर मुन्शी जी मेरे पास बैठ गए। यद्यपि मेरी इच्छा इस समय किसी से बातचीत करने की न थी, परन्तु मुन्शी जी लड़कपन के साथी थे और कभी-कभी भाँग भी छनवाया करते थे, इसलिए मैंने भी इस मुरव्वत से ही काम लेना मुनासिब समझा और उनके "कहिए, क्या हो रहा है" के उत्तर में कहा—"कुछ नहीं, योंही कुछ सोच रहा हूँ।"

"क्या सोच रहे हैं ?" मुन्शी जी ने दूसरा प्रश्न किया और ईषत् मुँह बाकर उत्सुकतापूर्वक मेरे चेहरे की ओर देखने लगे। मैंने कहा—"कुछ रोज़गार-धन्धे की बात सोच रहा हूँ।"

"क्या कुछ करने का विचार है ?"

"हाँ, कुछ तो करना ही चाहिए, नहीं तो काम कैसे चलेगा ?"

"तो क्या करने का विचार है ?"

"यही तो सोच रहा हूँ।"

मुन्शी जी ख़ुश-मिज़ाज, परन्तु जहाँदीदा आदमी थे। मेरी बात सुन कर बोले—परन्तु, दुबे जी, आप तो ब्राह्मण हैं, दूसरे जवानी भी बिदा ले चुकी है। अब इस बुढ़ौती में कौन सा रोज़गार कीजिएगा। मेरी तो राय है कि ईश्वर से प्रार्थना कीजिए कि बारहो महीने 'पितरपख' रहा करे या कोई महामारी फैले, ताकि भोजन और दक्षिणा का डौल बना रहे।

मैंने ज़रा रुष्ट होकर कहा—मुन्शी जी, आप तो दिल्लगी कर रहे हैं।

मुन्शी जी बोले—दिल्लगी नहीं, महाराज, जब तक ईश्वर की कृपा से सनातन-धर्म जीवित है, तब तक रोज़गार की क्या कमी है ? जिससे कुछ न बन पड़े उसे धर्म का व्यवसाय करना चाहिए। हर्रे लगे न फिटकिरी और रङ्ग भी चोखा उतरे। न पूँजी की आवश्यकता, न व्यवसाय-शास्त्र (Commerce) पढ़ने की ज़रूरत।

मैंने आश्चर्य से मुन्शी जी के मुँह की ओर देखा। उन्होंने कहा—"इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है। गत महाकुम्भ के अवसर पर त्रिवेणी नहाने गया था तो देखा कि एक बाबा जी लोढ़े में सिन्दूर लपेट कर एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठे हैं। उसके पाँच-छः महीने बाद एक मित्र के साथ फिर इलाहाबाद गया तो देखा कि 'लोढ़ादेव' ने कुछ उन्नति की है। धूप-शीत से बचने के लिए भक्तों ने पीपल-वृक्ष के नीचे एक छोटी सी झोपड़ी डाल दी है और 'लोढ़ादेव' एक चौकी पर विराजमान हैं, फूल-अक्षत भी पहले की अपेक्षा अधिक चढ़े हैं। सङ्गम-स्नान से लौटी हुई पुण्यार्थिनियाँ प्रभुवर के भोगराग के लिए एक-एक पैसा चढ़ा कर अपने लिए श्रीवैकुण्ठ-धाम में 'सीट रिज़र्व' करा रही हैं। इसके बाद पूरे साल भर बीत गए। गत माघी का मेला आया। 'मुन्शियाइन' कहने लगीं, "चलो न त्रिवेणी नहा आवें ! महल्ले की सब स्त्रियाँ जा रही हैं।" मेरी इच्छा तो न थी। रुपए-पैसे का भी डौल न था। परन्तु वह ज़िद करने लगीं, इसलिए जाना ही पड़ा। स्टेशन पर रेलगाड़ी से उतरते ही 'बाबा लोढ़ादेव' की याद आई। हमारे पुश्तैनी पण्डा जी एक स्टेशन पहले से ही साथ थे। दूसरे रोज़ स्नान करने के बाद श्रीमती जी तो क़िले में अक्षयवट दर्शन करने गईं, जिसकी डाली में झूला लगा कर भगवान विष्णु ने प्रलय काल में अपनी रक्षा की थी और फिर जब ब्रह्मा जी की शाम को प्रलय-काल उपस्थित होगा तो उसी तरह, उसी वृक्ष में झूलेंगे, और मैं बाबा लोढ़ादेव की ओर बढ़ा। परन्तु यह क्या ? इस समय तो यहाँ कुछ और ही ठाट-बाट है। झोपड़ी की जगह पक्का मन्दिर बन गया है। प्रभुवर एक सुसज्जित सिंहासन पर विराज रहे हैं। दर्शनार्थी और दर्शनार्थिनियों की भीड़ का ठिकाना नहीं है। पूछने पर मालूम हुआ कि यह 'बाबा कामेश्वरनाथ' का मन्दिर है। बड़े जीते-जागते देवता हैं। आपकी कृपा से कितनी ही वन्ध्याएँ पुत्रवती हो गई हैं, कितने कुष्ठ-रोग ग्रस्तों ने कमनीय कलेवर लाभ किया है और कितने भक्तों तथा भक्तिनों की गुप्त से गुप्त मनोकामनाएँ पूरी हो गई हैं। इस मन्दिर के अधिष्ठाता बाबा महेन्द्रगिरि हैं। सिद्ध योगी हैं। बारह वर्ष तक हिमालय की गुफा में रह कर तप कर आए हैं। आपकी उमर पूरे ११५ वर्ष की है, परन्तु न अभी दाँत हिले हैं, न बाल सुफ़ेद हुए हैं। आपको देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि चालीस वर्ष से अधिक उमर के होंगे। यह सुन कर मेरा कौतूहल और भी बढ़ गया और लगे हाथ श्रीमहन्त जी महाराज के दर्शन की लालसा भी दिल में कुलाचें मारने लगी। बड़ी मुश्किल से झाँक कर दर्शन किया। बात यह थी कि बिना 'दर्शनी' के दर्शन दुर्लभ था। इसलिए झाँकी लेकर ही सन्तोष करना पड़ा। परन्तु—

ख़्वाब था जो कुछ कि देखा,
जो सुना अफ़साना था।

महन्त जी महाराज गुलगुले गद्दे पर तकिए के सहारे उठँगे हुए लटक पी रहे थे। चारों ओर भक्तिनों की भीड़ लगी थी। ऊढ़ा-नवोढ़ा, सधवा-विधवा और प्रौढ़ा-वृद्धा—सब मौजूद थीं और महाराज मन्द-मन्द मुस्काते और आशीर्वाद देते जाते थे। बिना मूलधन के ऐसे निखालिस स्वदेशी रोज़गार के रहते, दुबे जी, आप रोज़गार की चिन्ता में पड़े हैं, यह देख कर मैं तो आश्चर्य में पड़ गया हूँ। ज़रा खोपड़ी पर ज़ोर देकर सोचिए, हमारे देश में जितने तरह के रोग हैं उतने तरह के देवता मौजूद हैं। ज्वर के लिए ज्वरासुर, चेचक के लिए शीतला देवी, सर्पों के अधिष्ठाता नाग बाबा और नाना प्रकार के रोगों के लिए नाना प्रकार के भूत-प्रेत तथा देवता-उपदेवता मौजूद हैं। परन्तु आपके सौभाग्य से अभी "प्लेग" और इन्फ्लुएन्ज़ा' के किसी अधिष्ठाता का आविर्भाव नहीं हुआ है, इसलिए हमारी राय है कि आप किसी चतुर बढ़ई से चारपाई के पाए के ढङ्ग की काठ की एक मूर्ति गढ़वा लीजिए और उसे तेल और सिन्दूर से रँग कर, गङ्गा किनारे किसी पीपल के

(शेष मैटर ३६वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

अब कॉङ्ग्रेस को क्या करना चाहिए ?

उसे एक राष्ट्रीय शासन परिषद की स्थापना करना चाहिए

["एक बैठा-ठाला विनम्र राजनीतिज्ञ"]

लन्दन में गोलमेज परिषद की बैठक समाप्त हो चुकी। उसमें जाने वाले भारत के स्वयंभू प्रतिनिधि प्रायः वापस लौट कर आ गए हैं। इनमें से अधिकतर लोगों को यह विश्वास था, कि यदि हम लन्दन जाकर भारत की दशा का वर्णन करेंगे, यदि हम वहाँ भारत के अधिकारों का समर्थन करेंगे तथा भारत के विशाल आन्दोलन की कथा सुनावेंगे, तो ब्रिटिश सरकार हमें शीघ्र ही औपनिवेशिक स्वराज्य दे देगी। परन्तु इस विषय में वे शीघ्र ही निराश हुए। उन्होंने बहुत बड़े-बड़े भाषण दिए, भारत के महान आन्दोलन का क़िस्सा सुनाया और भारत की भीषण राष्ट्रीय ज्वाला का दिग्दर्शन कराया, पर इससे ब्रिटिशों पर कुछ विशेष असर न हुआ। ब्रिटिश नेताओं ने उनके भाषणों की बड़ी तारीफ़ की, परन्तु जब भारत को अधिकार देने का प्रश्न आया तब उन्हें औपनिवेशिक स्वराज्य क्या, उसकी छाया भी न दी गई।

कॉङ्ग्रेस के नेता यह बात पहिले ही से जानते थे। वे यह जानते थे, कि गोलमेज परिषद एक प्रहसन-मात्र है। इसीलिए उन्होंने इसमें भाग लेना अस्वीकार कर दिया था। लाहौर कॉङ्ग्रेस में पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास करने से पहिले ही उन्होंने इस विषय में वाइसराय से बातचीत की थी। यदि ब्रिटिश सरकार वास्तव में भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देना चाहती, यदि भारतीयों को अपने घर का मालिक बनाना चाहती तो इस देश के सब से प्रभावशाली तथा लोक-प्रिय दल को रुष्ट क्यों करती? पर यह तो निश्चित था कि वह भारत की माँग पूरी नहीं करना चाहती। इसी नीति का अनुसरण कर उसने सप्रू-जयकर की सन्धि में कॉङ्ग्रेस की शर्तें भी अस्वीकार कर दी थीं। उन दिनों भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन ब्रिटिश सरकार की नींव हिला रहा था। "इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद" के नारों से भारत का आसमान गूँज रहा था। भारत के कोने-कोने में काले क़ानूनों की धज्जियाँ उड़ाई जा रही थीं। ब्रिटिश सरकार चिन्ता से व्याकुल हो रही थी। यदि वह भारत को वास्तव में औपनिवेशिक स्वराज्य देना चाहती होती, तो क्या उस समय कॉङ्ग्रेस नेताओं से सन्धि करके आन्दोलन की आफ़त से न बच जाती? पर वह तो केवल सन्धि का एक ढोंग-मात्र रच रही थी। इसीलिए उसने प्रतिनिधि भी ख़ूब चुन-चुन कर बुलाए थे। दो-चार लिबरल नेताओं को छोड़, भारत के सारे जातीयता के समर्थक, धर्म-ढोंगी तथा 'जी-हुज़ूर पन्थी' इस कार्य के लिए नियुक्त किए गए और इन्होंने ब्रिटिश सरकार का उद्देश्य बड़ी ख़ूबी के साथ पूर्ण किया। इन जी-हुज़ूरियों ने, उनकी माँ-बाप सरकार ने जो कुछ दिया, उन्होंने बड़े हर्ष से ले लिया और गोलमेज़ के रङ्गमञ्च पर हिन्दू-मुस्लिम दङ्गे का नाटक खेल कर ब्रिटिश सरकार के निश्चित उद्देश्य की अच्छी तरह पूर्ति कर दी!

ब्रिटिश सरकार ने हाल में भारत के सम्बन्ध में जिस नीति का अवलम्बन किया है, उससे यह स्पष्टतया प्रकट होता है कि वह भारत की माँगों की ज़रा भी परवा नहीं करना चाहती। औपनिवेशिक स्वराज्य की घोषणा करने से इन्कार करना, कॉङ्ग्रेस-दल की शर्तों को पूरी न करना तथा उन्हें कॉन्फ्रेन्स में बुलाने के सम्बन्ध में अनिच्छा प्रकट करना आदि बातों से उसकी कूटनीति स्पष्टतया प्रकट होती है। परन्तु अब तो सारा भण्डा फूट गया है। जो महाशय लन्दन में औपनिवेशिक स्वराज्य लेने गए थे, उन्हें यदि अक़्ल होती तो समझ गए होते कि प्रधान-मन्त्री महोदय ने इस विषय को कैसे हज़म कर लिया है! प्रान्तीय शासन में भारतवासियों को ज़िम्मेदारी अवश्य दी गई है, परन्तु गवर्नर के अधिकार जैसे के तैसे ही बने हैं! अवसर पड़ने पर वह व्यवस्था-परिषद की बनाई सारी व्यवस्थाओं को एक कोने में रख कर, एकतन्त्र-शासन आरम्भ कर देगी। केन्द्रीय सरकार में भारतवासियों को जो अधिकार दिए जाने वाले हैं, उन्हें रद्द कर देने के लिए उधर वाइसराय के अधिकार भी बढ़ा दिए जावेंगे। इसके फल-स्वरूप जो कुछ लिया-दिया गया है, वह सब बराबर हो जायगा और घूम-फिर कर अन्त में साइमन साहब की विजय होगी। इसमें कॉङ्ग्रेस जो "स्वतन्त्रता का सार" माँग रही है, उसका तो नाम भी नहीं है!

अब सवाल यह है कि जब भारत में वह जी-हुज़ूरों द्वारा लाई हुई शासन-प्रणाली आरम्भ होगी, तब कॉङ्ग्रेस इसका जवाब किस तरह देगी? अधिकतर लोग कहेंगे कि 'वाह, इसमें सोचने की कौन सी बात है? हम उसका बहिष्कार करेंगे! उसके लिए मेहतर और चमार चुनेंगे।' परन्तु इसमें कोई नई बात न होगी। कॉङ्ग्रेस इस नीति का पहिले भी प्रयोग कर चुकी है। असहयोग आन्दोलन के समय में कॉङ्ग्रेस ने जो कौन्सिलों तथा एसेम्बली बहिष्कार का आन्दोलन उठाया था, उससे ब्रिटिश सरकार कुछ परेशान अवश्य हुई, परन्तु इससे उसकी शक्ति तिल भर भी नहीं घटी और न इस बहिष्कार के कारण उसे कौन्सिलों तथा एसेम्बली में कुछ सुधार करने की ही आवश्यकता पड़ी। इसके अतिरिक्त अब समय दूसरा ही है। अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस लाहौर में पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर चुकी है, इसलिए उसे चाहिए कि पुरानी अड़ङ्गा नीति को त्याग कर कुछ रचनात्मक कार्य करे।

कॉङ्ग्रेस ने 'पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा की है। वह कहती है, 'पूर्ण स्वतन्त्रता' भारतीयों का जन्म-सिद्ध अधिकार है? परन्तु केवल अधिकारों की घोषणा करने से, अधिकारों की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए हमें चाहिए कि अपने अधिकारों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए एक अखिल भारतवर्षीय शासन परिषद की स्थापना करें। इसके सदस्य जनता द्वारा चुने जावें। यह भारतवर्ष में पार्लामेण्ट का काम करे। यह परिषद हमारे प्रजातन्त्र का नमूना होगी। यह हमारे अधिकारों का समर्थन तथा एकतन्त्रवादी सरकारी कौन्सिलों का मुक़ाबला करेगी।

संसार के इतिहास में यह कोई नई बात न होगी। सन् १८७९ की राज-क्रान्ति में फ़्रान्स ने भी यही किया था। उसने एक शासन-परिषद (Constituent Assembly) की स्थापना की थी। इस परिषद को चाहिए कि वह भारत के स्वतन्त्र प्रजातन्त्र में रहने वाले पुरुषों के अधिकार तथा ज़िम्मेदारियों को निश्चित करे। यदि यह जनता की माँगों को पूर्ण करने की तथा उसके ऊपर होने वाले अन्यायों को हटाने की घोषणा करेगा तो जनता इसमें बड़े उत्साह से भाग लेगी और हर तरह से उसे सरकार के दमन से बचाने का प्रयत्न करेगी। इस शासन-परिषद का निर्माण करने के पहिले कॉङ्ग्रेस को उसके सम्बन्ध में गाँव-गाँव और घर-घर सूचना देने की आवश्यकता पड़ेगी। उसे निर्वाचन सभाएँ (Electoral Committees) बनानी पड़ेंगी। यह परिषद भारतीयों के हृदय की उमङ्गों का कार्य-रूप होगी। नौकरशाही की धूर्तता का यही समुचित उत्तर होगा।

* * *

(३५वें पृष्ठ का शेषांश)

पेड़ के नीचे स्थापित कर दीजिए और वहीं एक चटाई बिछा कर आप भी आसन जमा दीजिए। अगर साल भर में आप हज़ारों के मालिक न बन जायँ और आपकी तोंद घुटने के नीचे तक न लटक आए तो मेरा नाम नहीं। फिर तो आपके लल्ला की महतारी अगर साल में तीन-तीन बच्चे भी दिया करें तो आपके लिए कोई चिन्ता की बात नहीं। कहिए, कैसा बिना कौड़ी का रोज़गार बताया?"

मैंने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से मुन्शी जी की ओर देख कर कहा—भई, आज मेरी समझ में आगया कि लोग क्यों कायस्थ की खोपड़ी की इतनी प्रशंसा करते हैं।

मैंने मुन्शी जी का बताया हुआ यह रोज़गार अभी आरम्भ नहीं किया है, परन्तु शीघ्र ही करने वाला हूँ। बशर्ते कि लल्ला की महतारी कोई अड़ङ्गा न पेश कर दें। और सब हाल-चाल अच्छा है, अपना कुशल-समाचार सदैव लिखते रहिएगा।

भवदीय,
—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

संरक्षण-युक्त स्वराज्य बेपेंदी का लोटा है !

स्वराज्य आ रहा है—परन्तु संरक्षणों वाला ! संरक्षण किस लिए ? स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए नहीं, भारतवर्ष के हित के लिए नहीं—हमारी उन्नति के लिए नहीं, अपितु हमारी स्वतन्त्रता में बाधा तथा उन्नति में रुकावट डालने के लिए ।

संरक्षणों वाला स्वराज्य बेपेंदी का लोटा है । इसे कितना भी भरो, दूसरी ओर से ख़ाली हो जाता है । इसे भरने का यत्न व्यर्थ है । कॉङ्ग्रेस की कार्य-कारिणी समिति इस सप्ताह में इस प्रश्न की जाँच करेगी ।

स्वयं निर्धारित संरक्षण सह्य हो सकते हैं, किन्तु वे दूसरों द्वारा निर्धारित होने पर हमारे अधिकारों पर कुठाराघात करते हैं । राजनीतिक विकास में वे एक विघ्न हैं और राष्ट्रीय सम्मान पर भी अपना प्रभाव प्रदर्शित करते हैं । ब्रिटिश सहानुभूति की बातचीत राजनीतिक माँग को नहीं चुका सकती ।

भारतीय राष्ट्रीयता के भावों के साथ ब्रिटेन की सहानुभूति उसकी सच्चाई का कोई प्रमाण नहीं है, वह इसी तरह है जैसे कि कोई व्यक्ति स्वयं अच्छी स्थिति में न होने पर दूसरे के प्रति साधुता एवं सज्जनता का विचार प्रकट करे । इस समय सारा ब्रिटिश साम्राज्य अच्छी स्थिति में नहीं है । भारत में अङ्गरेज़ी राज्य की जड़ हिल गई है । ब्रिटेन सहानुभूति-मय हो रहा है । जब किसी का उल्लू सीधा हुआ तो सज्जनता ग़ायब हुई । क्या मतलब निकल जाने के बाद ब्रिटेन भारत की ओर से आँखें न फेर लेगा ?

इतिहास की साक्षी क्या है ? सन् १८५७ में ब्रिटेन पर सङ्कट पड़ा था, सन् १८५७ में सहानुभूति उत्पन्न हुई थी । मतलब निकल गया, सहानुभूति भी ग़ायब हुई । सन् १९१७ में फिर सङ्कट पड़ा, सन् १९१८ में सहानुभूति उत्पन्न हुई । शीघ्र ही आदर्श आँखों की ओट हो गए और सहानुभूति उड़ गई । १९३० में फिर सङ्कट पड़ा था । सहानुभूति फिर दिखाई दे रही है । १९३२ में क्या होगा ?

तिलस्मी कहानियों में हमने पढ़ा है, कि जब सुन्दर राजकुमारी अपने विवाह के पश्चात विदा होती है, तो उसकी माँ उसे जन्तर-मन्तर से उसकी रक्षा का प्रबन्ध करती है, परन्तु सौतेली माँ बिदा करते समय टोना कर देती है । ब्रिटेन का कहना है कि वह भारतीय राष्ट्रीयता की सगी माँ है । परन्तु इतिहास साक्षी है कि उसका व्यवहार सदा सौतेली माँ का सा रहा है ।

फिर भला भारतवर्ष उसके जादू-टोने पर कैसे विश्वास कर सकता है ?

—"फ़्री प्रेस जर्नल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

साम्प्रदायिक झगड़ों से शिक्षा

इस देश की जितनी हानि हिन्दू-मुस्लिम झगड़े से हुई है, उतनी और किसी कारण से नहीं हुई है । क्या फूट हिन्दुस्तान का मेवा है ? इसी वैमनस्य की बदौलत भारत को अपने गले में ग़ुलामी का तौक़ डालना पड़ा, और इसी वैमनस्य ने हमारी ग़ुलामी की ज़ञ्जीर को मज़बूत बना रक्खा है । भारत में विदेशी शासन की बुनियाद ही हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य पर क़ायम है । यदि किसी तरह आज वह वैमनस्य मिट जाय तो भारत फिर प्राचीन-काल की तरह—बल्कि उससे भी अधिक धन-धान्यपूर्ण हो सकता है । क्योंकि उस काल में तो केवल ईश्वर का ही भरोसा था, परन्तु आज मनुष्य विज्ञान की बदौलत भी अपनी उन्नति कर लेता है ।

हिन्दू-मुसलमानों का यह दुर्भाग्य है कि जिस समय भारत की ग़ुलामी की ज़ञ्जीर के टूटने की उम्मीद होती है, तभी वे कोई पारस्परिक झगड़ा खड़ा करके उस उम्मीद पर पानी फेर देते हैं और बना-बनाया खेल बिगड़ जाता है । सन् १९२१—२२ में राष्ट्रीय आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा था, लॉर्ड रीडिङ्ग की सरकार सुलह के लिए तैयार हो गई थी, परन्तु सन् १९२३ में कोहाट में हिन्दू-मुस्लिम दङ्गा हो गया, जिसकी संक्रामकता सारे देश में फैल गई और जगह-जगह पारस्परिक द्वन्द्व आरम्भ हो गए । जनता का ध्यान राजनीति से हट कर इन झगड़ों की ओर लग गया । हिन्दुओं ने मुसलमानों से अपनी रक्षा करने के लिए सङ्गठन आरम्भ किया और मुसलमानों ने हिन्दुओं से बचने के लिए तन्ज़ीम की । परन्तु हिन्दू-मुसलमानों ने किसी तीसरे से बचने के लिए न कोई सङ्गठन किया और न कोई तन्ज़ीम की । तुर्रा तो यह कि जहाँ कहीं हिन्दू-मुसलमानों में लड़ाई हुई, न कोई सङ्गठन काम आया और न तन्ज़ीम से कोई मदद मिली । कहीं हिन्दू पिट गए और कहीं मुसलमान ! अन्त में वह समय बीत गया । लोगों की समझ में आ गया कि सङ्गठन और तन्ज़ीम वास्तव में व्यर्थ की चीज़ें हैं । न इससे हिन्दुओं की रक्षा हो सकती है और न मुसलमानों की । हमारी राय में बेवाल (रावलपिण्डी) के झगड़े से हिन्दुओं को क्षुब्ध न होना चाहिए और शान्ति से काम लेना चाहिए । भारत जैसे विशाल देश में दो-एक जगह ऐसी घटनाओं का हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है । हिन्दू-मुसलमान दोनों का कर्तव्य है कि बुद्धिमानी से काम लें । यदि दोनों जातियों में कहीं कोई वैमनस्य उत्पन्न हो जाए तो उसका प्रतिकार कटुता अथवा बदला लेने के भावों से नहीं हो सकता है, वरन् शान्ति और सन्तोष से हो सकता है । यदि बेवाल के हिन्दू और सिक्ख, जिन पर आक्रमण करके मुसलमानों ने क्षति पहुँचाई है और उनके धार्मिक भावों को कुचला है, शान्ति और सन्तोष से काम लें और मुसलमानों से कह दें कि—

"सरे तसलीम ख़म है जो मिज़ाजे यार में आए !"

तो हमारा दावा है कि आस-पास के मुसलमान अपनी करतूत पर लज्जित होंगे ।

—"वतन" (उर्दू)

* * *

हिन्दू-समाज का अधःपतन !

हिन्दू-समाज पर चारों दिशाओं से ठोकरें पड़ रही हैं । देश तथा परदेश में इसकी दुर्दशा हो रही है । हिन्दुओं के बालक रोगी, अल्पायु और भीरु बन गए हैं । परन्तु बाप के कुएँ में डूब मरने का रिवाज छोड़ना नहीं चाहते ।

उठते-बैठते और खाते-पीते धर्म-पालन का ढोंग करने वाले सनातनी हिन्दू अपनी नज़रों के सामने युवती विधवाओं का भ्रष्ट होना, और पवित्र तीर्थ-स्थानों में जाकर गर्भपात कराना देख सकते हैं । विधवाओं के छिपे हुए पापों तथा मन्दिरों में पुजारियों के साथ इनके भ्रष्ट होते रहने की इन दम्भियों को ज़रा भी परवा नहीं है । कितनी ही विधवाएँ मुसलमान तथा ईसाई-धर्म में चली जाती हैं । कितनी ही यौवन-सुलभ चपलता के कारण बाज़ार की वेश्या बन जाती हैं और धर्म-ढोंगी उनकी जूतियाँ साफ़ करते हैं । परन्तु यदि कोई विधवा पुनर्विवाह कर अपनी आबरू की रक्षा करना चाहती है तो ये छाती पीटने लगते और सीता और सावित्री की दोहाई देने लगते हैं ।

अन्त्यज राम और कृष्ण की भक्ति करते हुए हिन्दू बने रहने में अपना गौरव समझते हैं और सनातनी उन्हें चाण्डाल कह कर उनसे घृणा करते हैं । परन्तु वही अन्त्यज जब ईसाई-वेश में साहब बन कर सामने आता है, तो ये उसे सलाम करते और बैठने के लिए कुर्सी रख देते हैं । वही डोमिन या मेहतरानी, जिन्हें ये अपने गाँवों में रहने देने में भी अपने धर्म की तौहीन समझते हैं, जब धर्म परिवर्तन कर 'मिस लोली' बन जाती है और हाथ में 'रिस्ट वाच' बाँध कर मटकती-चटकती आती है, तो ये अभागे उसके पैर का पानी चाटने को तैयार दिखाई देते हैं ! सनातनियो, अपना यह दम्भ कब तक चलाओगे ? ऐसे दम्भी और ढोंगी समाज का तो सत्यानाश हो जाना ही अच्छा है । स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि रूढ़ियों की ग़ुलामी ग़ुलामों की संख्या बढ़ाती है । स्वतन्त्रता की माँग देने वाले हिन्दू अपने पैरों तले की इस आग को कब तक नहीं देखेंगे ? कब उनकी आँखें खुलेंगी ? और कब वे इन पुरानी रूढ़ियों की ग़ुलामी से अपने को मुक्त करेंगे ?

—"देशमित्र" (गुजराती)

* * *

स्वदेशी और बहिष्कार

कई दिन पहले बम्बई के मिल वालों की समिति ने विदेशी वस्त्रों की आमदनी का जो विवरण प्रकाशित किया है, उसमें साफ़ तौर से कहा गया है कि विलायती वस्त्रों की आमदनी सैकड़ा ८० भाग कम होने का कारण बहिष्कार आन्दोलन है । इस विवरण में लिखा है कि आन्दोलन के कारण गत नवम्बर तक ४० करोड़ गज़ कपड़ा और ८० लाख पौण्ड सूत कम आया है । उन्होंने अनुमान किया है कि साल तमाम होने तक कपड़ों की आमदनी की कमी १०० करोड़ गज़ तक पहुँच जायगी । विदेशी वस्त्रों की आमदनी में इस प्रकार कमी हो जाने के कारण देशी मिलों को एक सुन्दर सुयोग प्राप्त हुआ

है। विदेशी वस्त्रों के अभाव के कारण बाज़ार में निश्चय ही देशी वस्त्रों की माँग बढ़ी है। बम्बई के मिलों में जो माल पड़ा था, उसकी खपत हो गई है।

बाज़ार की माँग पूरी करने के लिए कई कलवालों को अपना काम दूना बढ़ा देने की आवश्यकता पड़ी है। विलायती वस्त्र के बहिष्कार के कारण जापानी कपड़े और सूत की आमदनी भी नहीं बढ़ी है, इससे प्रतीत होता है कि देशवासियों का आग्रह शुद्ध स्वदेशी वस्तुओं की ओर अधिक है। यद्यपि यह साल किसानों के लिए अच्छा नहीं है, तथापि देशी मिलवालों के दिन-रात काम कराने की आवश्यकता पड़ रही है। देश का यह उत्साह अगर कुछ दिन और क़ायम रह गया तो मिलवाले अपने व्यापार की जड़ जमा लेंगे और भारत को विदेशी कपड़े की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। इसके बाद देशी व[illegible] और देशी सूत बाज़ार में सब जगह पहुँचाने [illegible] एक अड़चन रेल-भाड़ा और दलालों की [illegible] जाती है। परन्तु देशवासी और मिलवाले अगर चेष्टा करेंगे तो यह बाधा भी दूर हो जायगी।

बम्बई में जिस तरह एकबारगी विलायती कपड़े की बिक्री रुक गई है, वैसी कलकत्ता में नहीं हुई है। यहाँ अभी भी अवाध रूप से विलायती कपड़ा बेचा जाता है, और कुछ मूर्ख उसे ख़रीदते हैं। बड़े बाज़ार के विदेशी वस्त्र व्यवसायी नाना प्रकार के छल-छन्दों का आश्रय लेकर बाहर के व्यापारियों के पास माल चालान कर रहे हैं। इसलिए समाज के सब श्रेणी के लोगों को विलायती वस्त्र के प्रति घृणा और देशी के प्रति आग्रह के भावों का उद्रेक किए बिना अन्य किसी उपाय से इन व्यवसायियों की असाधु चेष्टा का निवारण नहीं हो सकता। जो देशी वस्त्र छोड़ कर विदेशी वस्त्र ख़रीदते और बेचते हैं, वे देश की दरिद्रता की वृद्धि कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में देश का जनमत अभी पूर्ण रूप से सचेत नहीं है, इसी से बाज़ार में विदेशी वस्त्र मौजूद है, इसमें सन्देह नहीं।

—"आनन्द बाज़ार पत्रिका" (बङ्गला)

* * *

विदेशी का व्यापार

सत्याग्रह आन्दोलन के सम्बन्ध में भारत-सरकार की साप्ताहिक रिपोर्ट का प्रकाशन अब बन्द हो गया है। परन्तु जब तक वह होता रहा तब तक हम उसमें देखते रहे कि सरकार विदेशी वस्त्र का व्यापार पुनः चेत उठने की रिपोर्ट देती रही। और यह रिपोर्ट किस हद तक सच है, इससे भी सचाई-पसन्द कोई व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता। "किसी हद तक सच है" हम इस कारण कहते हैं कि हमें प्रबल सन्देह है कि विदेशी वस्त्र का व्यापार आजकल "व्यापार" शब्द के सच्चे अर्थों में हो रहा है या नहीं। हम नित्य स्वयं देखते हैं, और हमारे पास स्थान-स्थान से रिपोर्ट भी यही आती है कि व्यापारियों ने माल चोरी से निकाला, पुलिस ने अपनी निगरानी में माल रेलवे-स्टेशन तक या व्यापारी के गोदाम तक पहुँचवा दिया। लोग रात को व्यापारी के घर जाकर चोरी से माल ख़रीद लाए और व्यापारी सिर्फ़ पुराना स्टॉक ख़ाली करने के लिए फेरी वालों को दे-देकर माल घरों में या गाँवों में बिकवाते हैं, इत्यादि। इस तरह चोरी से, या पुलिस की मदद से, या अपने ही देश-भाइयों से लड़ते-झगड़ते माल की ख़रीद-फ़रोख़्त व्यापार नहीं कहलाता। ये तरीक़े हमेशा नहीं चल सकते, न व्यापारी इन पर सदा अमल कर सकते हैं और न पुलिस इनमें व्यापारियों का सदा साथ दे सकती है। अगर पुलिस या सरकार इन्हीं तरीक़ों को जारी रखने पर हठ ही करने लगी और इनके मुक़ाबले में दूसरी तरफ़ सत्याग्रही वालण्टियर भी अड़ जायँगे तो यह निश्चित है कि बहुत शीघ्र देश में वह अवस्था आ जायगी, जो नवाब मीरक़ासिम और नवाब मीरजाफ़र के ज़माने में बङ्गाल में आ गई थी, जब कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के गुमाश्ते सरकारी फ़ौज की मदद से दिन-दहाड़े बङ्गाल के शहरों और गाँवों में भारतीय कारीगरी और व्यापारियों को मनमाना लूटते घूमा करते थे और जिसकी वजह से कम्पनी के तमाम कर्मचारियों में इतनी गिरावट आ गई थी कि ख़ुद कम्पनी के गवर्नर क्लाइव को डायरेक्टरों के पास लन्दन इस हालत की शिकायत भेजनी पड़ी थी। मतलब यह कि [illegible] जिन तरीक़ों से आजकल भारत में विदे[illegible] वस्त्र बिक रहा है, वे प्रथम तो देर तक [illegible] नहीं सकते और यदि इन्हें बलपूर्वक क़ायम रक्खा ही गया तो इनका नतीजा सरकार व व्यापारियों, दोनों के लिए आत्मघात होगा।

विदेशी वस्त्र के व्यापारियों और उनके सहायकों की इतनी आलोचना करने के बाद अब हम इस व्यापार के विरोधियों से भी दो शब्द कहने की आवश्यकता अनुभव करते हैं। विदेशी माल इधर से उधर आ-जा रहा है और व्यापारी आम पब्लिक की नज़रों में बुरे बन कर भी और चोरी व पुलिस की मदद के ख़र्चीले तथा दुःखदायक उपायों का अवलम्बन करके भी यह व्यापार कर रहे हैं। इसका एकमात्र अभिप्राय यह है कि देश में विदेशी वस्त्र की माँग अब भी मौजूद है। देशी रियासतें आदि अनेक स्थान अब भी

'भविष्य' के होली-अङ्क

के लिए आने वाली समस्त रचनाएँ २४ फ़रवरी की शाम तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिएँ। इससे देरी से आने वाली रचनाओं का इस अङ्क में प्रकाशित होना एक बार ही असम्भव है। हमें आशा है लेखक तथा कविगण हमारी इस प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देने की कृपा करेंगे, साथ ही इस अङ्क को यथाशक्ति सफल बनाने में हमारा हाथ बटावेंगे।

—स० 'भविष्य'

ऐसे हैं, जहाँ की जनता के कानों तक, चाहे कारण कुछ भी हो, स्वदेशी की आवाज़ नहीं पहुँची। 'अर्जुन' में इन्दौर, देवास, ख़ैरपुर आदि कई रियासतों का हाल प्रकाशित हो चुका है, जहाँ विदेशी वस्त्र की नई-नई दुकानें हाल में खुली हैं और खुल रही हैं। और इन्हीं के कारण वहाँ दुकानों के किराए तक बढ़ गए हैं। रियासतों के अलावा ब्रिटिश भारत में भी ऐसे स्थानों की कमी नहीं है, जहाँ बॉयकॉट आन्दोलन का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं है और वहाँ विदेशी-वस्त्र खुल्लमखुल्ला निर्विघ्न बिकता है। फिर जहाँ बॉयकॉट का प्रभाव है और विदेशी की बिक्री को रोकने वाले सत्याग्रही भी मौजूद हैं, वहाँ ऐसे ग्राहक बड़ी तादाद में विद्यमान हैं, जो मर-खप कर भी विदेशी ही ख़रीदने की क़सम खाए रहते हैं। जब तक विदेशी वस्त्र के व्यापार को बढ़ावा देने वाली ये परिस्थितियाँ नष्ट नहीं की जातीं, तब तक इस व्यापार के लिए केवल पुलिस या सरकार को दोष देना न्याय-सङ्गत नहीं ठहराया जा सकता। जो लोग आज विदेशी वस्त्र का व्यापार नष्ट करने के तीव्र उपायों में लगे हुए हैं, उन्होंने, नहीं मालूम, इस परिस्थिति पर भी कुछ विचार किया है या नहीं।

—"अर्जुन" (हिन्दी)

* * *

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

दिल्ली के 'रियासत' में वहीं के किसी उर्दू पत्र के सम्पादक जी की बुद्धिमानी का एक दिलचस्प क़िस्सा पढ़ कर श्रीजगद्गुरु ऐसे हँसे कि छत थर्रा उठी और श्रीमती हर होलीनेस आसन्न वैधव्य की आशङ्का से छाती पीटने लगीं। उन्होंने समझा, कहीं हँसते-हँसते इस बुड्ढे का कमज़ोर 'हार्ट' न 'फ़ेल' कर जाय! बात है भी ऐसी ही, सुनिए—

❀

क़िस्सा यह था कि टोंक रियासत में 'ताजपोशी का जलसा' था। ख़बर सुनते ही सम्पादक जी के मुँह में बँधना भर पानी भर आया। 'दस्तरख़ान' की लज़्ज़त याद आई तो फ़ौरन टोंक-राज के प्राइवेट सेक्रेटरी के नाम तार खटखटा दिया, कि अमुक ट्रेन से आता हूँ, सवारी और मेहमानख़ाने में ठहरने का इन्तज़ाम रखिए। इधर रियासत वालों का यह हाल, कि बेचारे 'साढ़े-साती सनीचर' से उतना नहीं डरते, जितना इन अख़बारों के एडीटरों से डरते हैं। दूसरे ये हज़रत अपने आप 'दाल-भात में मूसरचन्द' बनने के लिए तक़ाज़ा कर रहे थे! वास्तव में बड़ी कठिन समस्या थी जनाब!

❀

प्राइवेट सेक्रेटरी ने जवाब दिया कि जब तक पोलिटिकल सेक्रेटरी से लिखित आज्ञा-पत्र न मिल जाय, तब तक पधारने की कृपा न करें। परन्तु यहाँ तो 'मान न मान, मैं तेरा मेहमान!' एडीटर साहब ने सोचा, कि ताजपोशी के मौक़े पर न पहुँचे तो सारा मज़ा ही किरकिरा हो जायगा और विदाई की रक़म से भी हाथ धो लेना पड़ेगा! फलतः आपने स्वयं मर कर स्वर्ग देखने का विचार कर लिया और खट टिकिट कटा कर धड़ाम से टोंक पहुँच गए। बतलाइए, ताजपोशी के जलसे में शरीक होकर जीवन सार्थक कर लेने का ऐसा स्वर्ण-सुयोग कोई बुद्धिमान सम्पादक कैसे छोड़ सकता है?

❀

लीजिए, बेचारे प्राइवेट सेक्रेटरी साहब जिस आफ़ते-नागहानी से अपनी रियासत को बचाना चाहते थे, वह आ ही धमकी! उन्होंने आज्ञा दी कि जब तक ताजपोशी का जलसा समाप्त न हो ले और देशी रियासतों के गवर्नर-जनरल बहादुर सही-सलामत अजमेर वापस न चले जायँ, तब तक एडीटर साहब पुलिस की हवालात में 'मेहमानदारी' के मज़े लूटें और ताजपोशी के जलसे के मज़े का ख़याल कर होंठ चाटा करें!

❀

फलतः श्रीजगद्गुरु दोनों (एडीटर और सेक्रेटरी) महोदयों की अक़्ल को दाद देते हैं। एडीटर साहब को भी टोंक के मज़े मिल गए और सेक्रेटरी साहब ने भी ताजपोशी के जलसे को नज़र लगने से बचा लिया। दोनों ही इनाम के मुस्तहक़ हैं। मगर अफ़सोस है कि श्रीजगद्गुरु के फूटे तुकड़ पहले ही बँट चुके हैं और गाँधी बाबा के वलमटेरों के मारे अब उनका नाम-निशान भी नहीं रह गया है! बेचारों का दुर्भाग्य!!

❀

ब्रिटिश साम्राज्य को विपत्ति से बचाने के लिए 'भविष्य' की पहली संख्या की सब प्रतियाँ कुछ दिनों तक रोक कर 'बासी' कर दी गई थीं। उद्देश्य यह था कि इसके 'साम्राज्य नाशक' कीटाणु झड़झुड़ कर वहीं इलाहाबाद में ही रह जायँ; बाहर न फैलने पाएँ। बस, इसी बात पर श्री० सहगल जी एकदम जामे से बाहर हो गए और भारत-सचिव को १,०००) रु० हरजाना-स्वरूप भेज देने के लिए नोटिस दे दिया। मगर यह नहीं समझा कि 'भविष्य' के अक्षरों में चिपके हुए कीटाणु कहीं सर्वत्र फैल जाते तो बेचारे 'छुईमुई' साम्राज्य की क्या दशा होती?

❀

ख़ैर साहब, सखी नौकरशाही के पुराने लहँगे में भी एक से एक 'गुदड़ी के लाल' छिपे पड़े हैं। उन्होंने सोचा, 'मियाँ तुम टेढ़े तो हम तुमसे डेढ़े।' बाघ से बचे तो बचे, उसकी मौसी बिलाई से बच कर कहाँ जाओगे? बस, मौक़ा देख कर खैंचा दिया चार लाइन कि लाओ, रख दो, १,०००) रु०!! तुम्हारा क्या भरोसा बाबा, कहीं छोड़ दोगे कोई शिगूफ़ा तो पौने दो साल की सारी मेहनत पर पानी फिर जायगा और भारत कान-पूँछ समेत हाथ से निकल जायगा। उस वक़्त और न होगा तो ये १,०००) 'बटसारी' के ही काम आ जायँगे!

❀

एक बात और। मान लीजिए, अधिकारियों की लबड़-धोंधों भारत-सचिव की समझ में आगई (हालाँकि श्रीजगद्गुरु को इसकी रत्ती भर भी आशा नहीं) और उन्होंने १,०००) खनाखन सहगल जी के सामने गिन देने की आज्ञा दे दी अथवा अदालत के न्याय का पलड़ा ही इधर झुक गया और बाध्य होकर १,०००) दे देने पड़े तो उस वक़्त? तो उस वक़्त क्या? यही १,०००), जो न्यायानुमोदित (!!!) ढङ्ग से वसूल किए गए हैं, हाथ में रहेंगे। कम के कम, इस ठाले के ज़माने में घर से तो रक़म नहीं निकालनी पड़ेगी और वैद्य ही का चावल पथ्य का काम दे जायगा। क्यों, कैसी रही? हम तो कहते हैं, झख मारा करे, दूकानदारी-बुद्धि इस नौकरशाही-बुद्धि के सामने!

❀

अमाँ, देखते नहीं, चारों ओर ठाला ही ठाला नज़र आता है! आमदनी की कोई सूरत नहीं और ख़र्च 'भूत की लँगोटी छू गए ग़ल्ले के ढेर' की तरह दिन दूनी और रात चौगुनी गति से बढ़ रहा है। अतिरिक्त पुलिस का ख़र्च, नवीन जेलख़ानों का ख़र्च, 'ए' क्लास वालों के लिए बारह आने रोज़ का ख़र्च, तिस पर दईमारी गरमी आ रही है, शिमला, नैनीताल, दारजिलिङ्ग और राँची के 'सेनिटोरियम' की हवा खाए बिना काम ही चलने लायक़ नहीं। उधर बङ्गाल-सरकार को २० लाख का घाटा! पञ्जाब और यू० पी० की सरकारों का वही हाल! बेचारी बम्बई की सरकार की कमर तो बारडोली वालों ने पहले ही तोड़ दी है। ऐसी हालत में, बेटा जिए लॉर्ड इर्विन का, बेचारे अगर प्रेस-ऑर्डिनेन्स का मुजर्रब नुसख़ा न ढूँढ़ निकालते, तो देवढ़ी पर चूहे दण्ड पेलते दिखाई पड़ते!

❀

परन्तु वह भी तो सुनते हैं, विलायत जा रहे हैं! हाय-हाय! अब प्रति मास एक ऑर्डिनेन्स के अण्डे कौन देगा? हमारी तो राय है कि लॉर्ड इर्विन महोदय जाते-जाते दो-चार दर्जन और ऑर्डिनेन्स पास करते जाएँ नहीं तो सखी नौकरशाही की लम्बी-चौड़ी गृहस्थी का ख़र्च चलना मुश्किल हो जायगा। आप कहेंगे, इससे कौन सी आमदनी हो जाती है? अजी जनाब, इस नुसख़े की बदौलत अख़बार वालों से समय-समय पर हज़ार-दो हज़ार मिल जाते हैं, तो 'नून-तमाकू' का काम चल जाता है। इस 'मंदी' के ज़माने में इसे क्या आप कोई मामूली सहारा समझते हैं?

❀

लम्बे-चौड़े ख़र्च का हाल तो आप देख ही रहे हैं। अब ज़रा आमदनी पर ध्यान दीजिए। नमक-कर, भूमि-कर, आय-कर और 'कोंपर'-कर—चौबीसो घण्टे की 'कर-कर' के बाद तो कुल १७५ करोड़ 'रुपल्लियाँ' वसूल होती हैं। जिनमें से ५५ करोड़ सेना के ख़र्च के लिए निकल जाते हैं, रेलवे तथा 'घर-ख़र्च' के लिए जो क़र्ज़ लिया गया है, उसके ब्याज के लिए ३७ करोड़ दे देने पड़ते हैं, ७-८ करोड़ पुराने गोरे-काले कर्मचारियों को पेन्शन देने में चले जाते हैं, दस करोड़ के लगभग वर्तमान कर्मचारियों के वेतन और भत्ते में ख़र्च हो जाते हैं। बाक़ी ८५-८६ करोड़ में सैर-सपाटा, शैल-विहार और अन्यान्य नाना प्रकार के ख़र्च भला कैसे चल सकते हैं? कौन गृहस्थिन इतनी थोड़ी रक़म में इतनी बड़ी गृहस्थी का काम चला सकती है?

❀

अब इस पर ज़रा श्रीजगद्गुरु जी का फ़तवा सुनिए, वही कहावत हुई कि 'माँगें भीख और चुकावें गाँव की जमा!' आपकी राय है कि सेना, ब्याज और पेन्शन में जो लगता है, उसका अधिकांश भाग तो 'श्वेतोदर' में में ही जाता है, उसके लिए तो बस, यह समझ लेने की ज़रूरत है कि 'घी गिरा भी तो दाल में!' हाँ, फ़ज़ूल जो रक़म जाती है, वह इन कालों की शिक्षा और स्वास्थ्य-रक्षा में! लेहाज़ा इसे तो आँख मूँद कर फ़ौरन से भी पेश्तर ही बन्द कर देना चाहिए। जो 'पढ़ेगा आपको, माई को न बाप को!' और स्वस्थ रह कर क्या ये हमारी सरकार को पिण्डा-पानी दे देंगे? या उसकी चिता के ईंधन बनेंगे? फिर इनके पढ़ने और मुटाने के लिए सरकार क्यों पैसे ख़र्च करे?

❀

श्रीजगद्गुरु को तो इस बात की ख़ुशी है कि सरकार ने साढ़े पाँच सैकड़े के ब्याज पर १ करोड़, ८० लाख पौण्ड और क़र्ज़ लेकर इनके मूँड़ पर लाद दिया है। क्या करती? ये कमबख़्त नया कर लगाने नहीं देते, नमक-कर उठा देने के लिए दिन-रात दिमाग़ चाट रहे हैं, शराब की आमदनी का तो एकदम 'बण्टाढार' ही कर दिया। तिस पर तुर्रा यह कि 'राजस्व' की आमदनी पर भी कुठाराघात करने को तैयार हैं! फलतः सरकार के लिए तो हिज़ होलीनेस की यही पवित्र सलाह है कि इन कालों को योंही चीख़ने-चिल्लाने दीजिए और—

चना-चबेना गङ्ग-जल जौ पुरवैं करतार।
भारतवर्ष न छाँड़िए जब लौं मिले उधार।

❀

श्रीमान महाराजा बीकानेर की भी राय है कि हम गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स से 'बड़ी ठोस' चीज़ लाए हैं। इसमें क्या शक जनाब, ऐसी ठोस कि मारिए तो चोंच टूट जाए, पर गूदा न निकले! मगर महाराज के लिए कोई चिन्ता की बात नहीं है, क्योंकि आप नामी शिकारी हैं और सम्भवतः लन्दन से 'आर्टिफ़िशल' दाँत भी लगवा आए हैं। लेहाज़ा उस 'ठोस वस्तु' का छिलका अगर बेल की तरह कड़ा और कटहल की तरह खुरखुरा हो तो भी महाराजा बहादुर उसमें से 'कोए' निकाल ही लेंगे! दुःख तो इस बेचारे भक्कड़ को है, जो अपने बत्तीसो दाँत

बी-जवानी के चरणों पर निसार कर चुका है और कभी-कभी आहे-सर्द खींच कर चीख़ उठता है—

"हाय बुढ़ापा तोरे मारे अब तो हम नकिआइ गइन!"

❀

महाराजा बहादुर का इरशाद है कि भारत के भावी मैकडानल्डी संयुक्त राष्ट्र में देशी नरेश पूर्ण उत्साह से योग देंगे। परन्तु यदि बी ब्रितानिया की गुदगुदी गोद से बूढ़े भारत को वञ्चित करने की चेष्टा की जायगी तो देशी नरेश भारत के स्वतन्त्रता-वादियों से प्राणों की बाज़ी लगा कर भिड़ जाएँगे। अहा! कैसा साधु सङ्कल्प है! इतने पर भी महामहिमान्वित आशुतोष भगवान गौराङ्ग देव न पसीजे तो—

"डूब मर रो-रो के तू ऐ 'चापलूसी' आब में!"

❀

आगे चल कर तो महाराजा साहब ने बेचारी राजनीति की माँग धोकर रख दिया है। आपकी भविष्य-द्वाणी है,कि 'भावी ब्रिटिश भारत की राष्ट्र-व्यवस्था परिषद में देशी राज्यों के प्रतिनिधि मूसरचन्द की तरह डटे रहेंगे और देशी राज्यों के बारे में कोई चीं-चपड़ करेगा तो उसका एक-एक बाल नोंच लेंगे, परन्तु परिषद को देशी नरेशों की नादिरशाही में हस्तक्षेप करने का कोई हक़ न होगा।' कहिए, राजनीति का यह गूढ़ रहस्य कुछ आया आपकी समझ में? अजी हज़रत, ऐसी-ऐसी पहेलियों का अर्थ समझना हो तो कुछ दिन चण्डूख़ाने में जाकर 'अपरेंटिसी' कीजिए या घर में ही दोवक़्ता ध्यान कर समझ को परिमार्जित कर लीजिए। समझे न?

❀

मतलब यह कि गोलमेज़ की मुर्ग़ी का अण्डा जब फूट कर संयुक्त राष्ट्र के 'चूज़े' के रूप में फुदकने लगेगा तो महाराजा साहब और दीगर महाराजा साहबान के प्रतिनिधि आकर उस पर चढ़ बैठेंगे, जैसे अलिफ़लैला के सिन्धबाद की गर्दन पर वह लम्बी टाँगों-वाला बुड्ढा शैतान चढ़ बैठा था। परन्तु अगर प्रभु गौराङ्ग देव प्रसन्न हो जायँ तो यह कुछ मुश्किल भी नहीं है, इसलिए अपने राम ने महाराजा साहब की इस मनोकामना की पूर्ति के लिए बाबा शाह-मदार की मज़ार पर पूरे सवा छटाँक की शीरीनी चढ़ाने का मानता मान दिया है!

❀

कलकत्ता विश्व-विद्यालय की सिण्डीकेट की सभा में किसी प्रभु-भक्त जीव ने प्रस्ताव किया था कि जिन अध्यापकों ने जेलख़ाने से लौटे हुए श्रीयुत सेनगुप्त की वक्तृता सुनी थी, उनसे जवाब तलब किया जायगा कि उन्होंने क्यों ऐसा किया? केवल जवाब ही तलब करने से काम नहीं चलेगा, जनाब, हमारी तो राय है कि ऐसे महापापी अध्यापकों के कानों में सीसा गला कर छोड़ दिया जाय। बाप रे बाप, राजनीतिक वक्तृता और वह भी तुरन्त ही जेलख़ाने से लौटे हुए मनुष्य की ज़बानी! मालूम होता है, कलकत्ता की युनिवर्सिटी कौवे का मांस खा गई है। नहीं तो जिस युनिवर्सिटी से ऐसे दोज़ख़ी अध्यापकों का सम्बन्ध है, उसे तो दिन-दहाड़े महरा पड़ना चाहिए।

❀

मगर किसी भले आदमी के उन्नति के मार्ग में रोड़े डालने वाले विभीषण तो सब जगह मौजूद रहते हैं। एक गोरे सदस्य ने उठ कर इस महा समीचीन प्रस्ताव का विरोध कर दिया और बेचारे प्रभुभक्त काले को 'हा हतोस्मि!' कह कर बैठ जाना पड़ा। यही नहीं, हज़रत ने यहाँ तक कह डाला, कि यह प्रस्ताव सिण्डीकेट के लिए घोर अपमानजनक है! बताइए, इस पागलपने का कोई ठिकाना है? ख़ैरियत इतनी ही समझिए कि स्कूल के लड़कों को पलटन के प्यादों के सामने सिर झुकाने की आज्ञा प्रदान करने वाले हमारे इलाहाबाद के मैजिस्ट्रेट 'बमफ़ोर्ड' साहब की तरह तेजस्वी और दूरन्देश अङ्गरेज़ वहाँ कोई न था, वरना ऐसे श्रद्धा-भक्ति-विमण्डित प्रस्ताव का विरोध करने वाले गोरे मियाँ को छट्टी का दूध याद आ जाता।

❀

इधर जब से श्रीजगद्गुरु ने यह समाचार एक अख़बार में पढ़ा है, तब से मारे क्रोध के लँगोटी से बाहर हुए जा रहे हैं, बेचारे अल्लाह मियाँ को पानी पी-पी कर कोस रहे हैं और कभी-कभी तो तैश में भँगघोटना लेकर आसमान की ओर दौड़ जाने की चेष्टा करते हैं। कहते हैं, सृष्टि करते-करते हज़रत बूढ़े हो गए, मगर अभी तक पैसा भर भी शऊर न आया। उन्हें चाहिए था कि ऐसे प्रभु-भक्त जीव के पीछे एक बित्ते भर की दुम लगा देते। किसी-किसी जीव के पीछे तो निरर्थक ही चार हाथ की लम्बी दुम लगा दी और जहाँ उसकी नितान्त ज़रूरत वहाँ एक इञ्च की भी नहीं! बताइए, यह मूर्खता नहीं तो क्या है? किसी ने ठीक कहा है कि—

"नाम चतुरानन, पै चूकते चला गयो!"

❀

"भविष्य" को रजिस्ट्री-नोटिस

५वीं मार्च को प्रकाशित होने वाले 'भविष्य' के होली वाले अङ्क में कम से कम चार पृष्ठ अभी से सुरक्षित रखने के लिए हिज़-होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष ने हमारे पास रजिस्टर्ड नोटिस (A. D.) भेजा है। आपका कहना है कि यदि "स्थानाभाव" आदि का बहाना किया गया और उनके भेजे हुए

फ़तवों

को छापने में ज़रा भी चीं-चपड़ की गई, तो इस संस्था को साल भर तक उनकी "भङ्ग-बूटी" का ख़र्च वहन करना पड़ेगा। अतएव कोई चारा न देख कर, चार पृष्ठ अभी से "हिज़ होलीनेस" के नाम बुक कर दिए गए हैं। देखिए किस-किस की मिट्टी पलीद होती है।

पाठकों को अभी से अपना ऑर्डर कार्यालय में अथवा स्थानीय एजेण्ट के पास रिजिस्टर करा लेना चाहिए, नहीं तो ख़ुदा-हाफ़िज़—'भविष्य' क्या, भविष्य का एक पृष्ठ तक नहीं मिल सकता!

इस देश का नमक खाना छोड़िए सम्पादक जी, क़सम ख़ुदा की बड़ी मुज़िर चीज़ है। बेचैन करके रख देता है। गोरी देह पर तो इस कमबख़्त का और भी बुरा असर पड़ता है। देखिए न, कलकत्ता के यूरोपियन एसोसिएशन वाले बेचारे परेशान हैं। और जिस तरह कुत्ते का काटा हुआ 'पानी-पानी' चिल्लाया करता है, उसी तरह वे भी 'हाय भारत! हाय भारत!' चिल्ला रहे हैं।

❀

जब से दादा मुग्धानन्द ने हमारे 'मदरत' लीडरों के 'देहिपदपल्लवमुदारम्' राग पर मुग्ध होकर, इनाम में 'बेल' की तरह ठोस 'फ़ेडरल' देने का वचन दिया है, तब से बेचारों की वही दशा है कि "दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया!" बस, यही चिन्ता है कि भारतवासियों को कोई राजनीतिक अधिकार मिला नहीं कि दम निकला! अब सोचिए कि यह सारा फ़साद उसी कमबख़्त नमक का है या नहीं?

❀

मगर बात कई अंशों में ठीक भी है। अगर सचमुच भारतवासियों के हाथों में भारत के शासन की दुम आ जाय, तो ये बेचारे गोरे अपने काँच के सुन्दर-सुन्दर खिलौने और वनस्पति का पवित्र घी कहाँ बेचेंगे? इस 'अक़्ल के अन्धे और गाँठ के पूरे' देश को छोड़ कर दूसरा कौन ऐसा मूर्ख देश होगा, जो उनकी दो कौड़ी की चमकीली चीज़ों के बदले अपने परिश्रम की कमाई के पैसे ख़र्च करेगा?

❀

इसलिए श्रीजगद्गुरु जी की राय है कि भारत की नकेल अनन्त काल तक के लिए बी ब्रितानिया को थमा दी जाय, ताकि वे उसे हमेशा 'ताथेई-ताथेई-थेई' नचाती रहें और उनके गोरे बाल-गोपाल वाणिज्य-व्यवसाय के नाम पर इसे चचोरते रहें। नहीं तो घास के घी और चुक़न्दर की चीनी का मालपुआ खाकर मुटाए हुए हमारे ठाकुर जी भी 'हा हतोस्मि' कह कर रह जायँगे।

❀

परन्तु अफ़सोस तो यह है कि दिल्ली की व्यवस्थापिका परिषद ने इस महापवित्र 'घासलेटी' घी पर चुङ्गी बढ़ाने का प्रस्ताव पास करके सारा गुड़ ही गोबर कर दिया है। आशा की बात सिर्फ़ इतनी ही है, कि अन्यान्य कौन्सिलों और म्युनिसिपलटियों ने अभी तक ऐसी मूर्खता नहीं की है और न ठाकुर जी के भक्तों ने ही इस पवित्र और उपादेय वस्तु के बहिष्कार का कोई आयोजन किया है। इससे मालूम होता है कि ठाकुर जी की तक़दीर में अभी दीमक नहीं लगे हैं।

❀

भई, महात्मा गाँधी जी कभी-कभी हमारे विद्यार्थियों के पीछे पड़ जाते हैं तो अपने राम को बड़ा ग़ुस्सा आता है। वही हाल है, कि 'आप गए अरु औरहिं घालहिं!' कहते हैं, विद्यार्थियों को मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न करना चाहिए, त्याग की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, धार्मिक, सत्यप्रिय और नियमबद्ध होना चाहिए और स्वर्गवासी पण्डित मोतीलाल जी नेहरू के उदाहरण से लाभ उठाना चाहिए! विद्यार्थी क्या हुए बेचारे बधिया बैल हुए! यह भी करना चाहिए,वह भी करना चाहिए। यानी दुनिया भर के जितने खुसट काम हैं, सब मूँह पर लाद लेना चाहिए।

❀

लेकिन हमारे देश के विद्यार्थी ऐसे बुद्धू नहीं हैं, जो महात्मा जी के चकमे में आ जायँगे। वे मानव-जीवन और अपनी जवानी का मूल्य अच्छी तरह जानते हैं और उसे सार्थक करने का तरीक़ा भी उन्होंने सीख लिया है। इसीलिए तो जब तक कॉलेज या स्कूल में रहते हैं, तब तक 'विहग कुमारि' की तरह विरह-सङ्गीत अलापते हैं और वहाँ से जब विद्वान बन कर निकलते हैं तो दो-ढाई लड़कों के बाप भी बन जाते हैं।

❀

अजी जनाब, आदमी ही के लिए तो स्वतन्त्रता या स्वराज्य चाहिए या देश की मिट्टी और पहाड़ों के लिए? फिर तो सब से पहला काम ठहरा आदमी बनाना। इसलिए प्रत्येक नौजवान के—चाहे वह विद्यार्थी हो या पेटार्थी—जीवन का पहला उद्देश्य होना चाहिए, आदमी बनाना यानी लड़के पैदा करना। दूसरा उद्देश्य होना चाहिए, उन्हें पालना और आदमी बनाने—अर्थात् लड़का पैदा करने के योग्य बनाना! हाँ, इन अत्यावश्यक और अनिवार्य उद्देश्यों की पूर्ति के बाद अगर समय मिले तो पं० मोतीलाल जी की तरह त्याग कीजिए या महात्मा गाँधी जी की तरह पाँच दाने मुनक़्क़े खाकर रह जाइए, कोई मना नहीं करता।

❀

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा को छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

मूल-लेखक—
महात्मा काउण्ट टॉल्सटॉय

पुनर्जीवन

अनुवादक—
प्रोफ़ेसर रुद्रनारायण जी अग्रवाल, बी० ए०

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपने आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है; और किस प्रकार अन्त में वह वेश्यावृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, उसकी ऐसी अवस्था देख कर उसे अपने किए पर अनुताप होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एकमात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित भी करना चाहिए—सब एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं, और वह प्रायश्चित का कठोर निर्दय-स्वरूप, वह धार्मिक भावनाओं का प्रबल उद्रेक, वह निर्धनों के जीवन के साथ अपना जीवन मिला देने की उत्कट इच्छा, जो उसे साइबेरिया तक खींच कर ले गई थी। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। इसमें दिखाया गया है कि उस समय रूस में त्याग के नाम पर किस प्रकार मनुष्य-जाति पर अत्याचार किया जाता था। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ५) स्थायी ग्राहकों से ३॥)

श्री० रामरखसिंह सहगल

वार्षिक चन्दा ... ... ६) रु०
छः माही चन्दा ... ५) रु०
तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य ... ≡)
Annas Three Per Copy

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

'भविष्य' इलाहाबाद

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए।

इलाहाबाद—[illegible]

जेल से मुक्त होने पर महात्मा गाँधी का प्रथम दर्शन

२०,००० महिलाओं का विराट सम्मिलन

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार; २६ फ़रवरी, १९३१ | संख्या १०, पूर्ण संख्या २२

कॉङ्ग्रेस-कार्यकर्ताओं को महात्मा गाँधी जी का सन्देश

कलकत्ते में प्रतिष्ठित महिलाओं ने 'ग़ैर-क़ानूनी' नमक बनाया !

स० भगतसिंह की दरख़्वास्त नामंज़ूर :: हाईकोर्ट मामले में हस्तक्षेप नहीं कर सकता

बम्बई कॉरपोरेशन में ज़बर्दस्त पिकेटिङ्ग :: एक देश-सेविका बेहोश हो गई !

"लॉर्ड इर्विन को अभिनन्दन-पत्र देना उनकी दमन-नीति का स्वागत करना है"

—मद्रास का २५वीं फ़रवरी का समाचार है कि पुलिस ने आज प्रातःकाल ४२ व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया। पुलिस ने उनको ५वीं मार्च तक हिरासत में रखने की आज्ञा ले ली है। श्री० शङ्कर वालण्टियर का मुक़दमा भी उसी दिन आरम्भ होगा।

—कलकत्ते का २५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज "क्षत्रिय उपकारिणी प्रेस" जहाँ से राजपूत नवयुवक दल का साप्ताहिक पत्र 'क्षत्रिय-संसार' छपता था, प्रेस ऑर्डिनेन्स के अनुसार ज़ब्त कर लिया गया।

—सूरत का २५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि दो सप्ताह हुए स्थानीय 'हिन्दू' से ज़मानत माँगी गई थी, जिसके कारण पत्र बन्द कर दिया गया था। आज प्रेस से भी प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार एक हज़ार की ज़मानत माँगी गई है।

—अहमदाबाद का २५वीं फ़रवरी का समाचार है कि यहाँ पर एक कमिटी गाँधी जी के आने पर स्वागत का प्रबन्ध करने के लिए बनाई गई है, जिसका उद्देश्य महात्मा जी के यहाँ आने पर बड़ी धूम-धाम से उनका स्वागत करना है।

—अहमदाबाद का २५वीं फ़रवरी का समाचार है कि प्रोफ़ेसर जे० सी० कुमार को ५००) रु० की नेकचलनी की ज़मानत देने से इन्कार करने पर, उन्हें एक वर्ष की क़ैद की सज़ा दी गई है।

—मद्रास का २५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज प्रातःकाल एक पुलिस सब-इन्स्पेक्टर ने कुछ सादे कपड़े पहने हुए कॉन्स्टेबिलों को साथ लेकर कॉङ्ग्रेस हॉस्पिटल पर छापा मारा। पुलिस, हॉस्पिटल के मैनेजर, स्टोरकीपर, रसोईया इत्यादि ६ व्यक्तियों को गिरफ़्तार करके ले गई। गिरफ़्तार किए गए व्यक्तियों को पुलिस-कमिश्नर के दफ़्तर में ले जाया गया, जहाँ पर उनके बयान लिए गए। पुलिस ने हस्पताल के हिसाब-किताब की भी परीक्षा की, परन्तु कोई चीज़ साथ नहीं ले गई। इसके अतिरिक्त पुलिस ने आज प्रातःकाल ट्रिपलीकेन तथा जॉर्जटाउन में भी तलाशियाँ लीं।

—मद्रास का २५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज डॉक्टर उमीराव कृष्णायर ने पुलिस-कमिश्नर के पास जाकर यह शिकायत की है, कि हॉस्पिटल पर छापा मारना अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के विरुद्ध है। इस पर पुलिस-कमिश्नर ने सभी गिरफ़्तार किए गए व्यक्तियों को छोड़ दिया। पुलिस-कमिश्नर ने पुलिस की इस नीति पर आश्चर्य प्रगट किया और कहा कि पुलिस ने यह कार्य बिना आज्ञा लिए ही किया है।

—लाहौर का २५वीं फ़रवरी का 'भविष्य' का ख़ास तार है, कि आज जस्टिस भाईड ने सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु और श्री० सुखदेव की 'हेबियस कोरपस्' के अनुसार प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया। अभियुक्तों की ओर से कहा गया था, कि चूँकि निर्णय करने वाले ट्रिब्यूनल का अब कोई अस्तित्व बाक़ी नहीं रह गया, अतएव फाँसी के वारण्टों पर किसी को हस्ताक्षर करने का अधिकार नहीं है। हाईकोर्ट से प्रार्थना की गई थी, कि चूँकि उनको जेल में रखना क़ानून-विरुद्ध है, अतएव उनको छोड़ दिया जाय। दरख़्वास्त नामञ्ज़ूर करते हुए जस्टिस भाईड ने कहा है, कि चूँकि अभियुक्त स्पेशल ट्रिब्यूनल की आज्ञा से ही अब तक क़ैद में रक्खे गए हैं, इसलिए इस मामले में हाईकोर्ट हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यह बात सर्वथा प्रान्तीय गवर्नमेण्ट के हाथ में है, यदि वह चाहे तो दफ़ा ४०२ के अनुसार अभियुक्तों को आजीवन अथवा साधारण कारावास-दण्ड ही दे सकती है। कहा जाता है मामला अभी तक विचाराधीन है, इसीलिए अब तक अभियुक्तों को फाँसियाँ नहीं दी दी गई हैं।

महात्मा गाँधी ने अपने "नवजीवन" पत्र में कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ताओं के लिए यह सन्देश दिया है—

"आप लोगों को मेरे वाइसराय के पास जाने से या कॉङ्ग्रेस की कार्य-कमिटी के सन्धि सम्बन्धी बातचीत चलाने से विचलित न होना चाहिए। आप लोगों को देश-सेवा के काम को करते चला जाना चाहिए। यदि आप लोग सन्धि सम्बन्धी बातचीत के आरम्भ होने से अपना काम शिथिल कर देंगे, तो सन्धि न हो सकेगी और इस युद्ध की अवधि बढ़ जायगी। (यह याद रहे कि) कॉङ्ग्रेस किसी सम्मानपूर्ण सन्धि ही को स्वीकार करेगी। यदि आप लोग अपना काम जारी रक्खेंगे, तो सन्धि जल्द हो सकेगी।" इसके बाद महात्मा जी ने विदेशी वस्त्र बहिष्कार पर बड़ा ज़ोर दिया है और कहा है कि यह हमारा सब से बड़ा काम है। उन्होंने मिल-मालिकों से यह अपील भी की है कि वे दूकानदारों से विदेशी कपड़ा लेकर उन्हें अपनी मिलों का कपड़ा दें। मिल-मालिक उस विदेशी कपड़े को या तो दूसरे देशों में बेच दें, या जला दें, या उसे बाँध कर उस समय तक अपने पास रक्खें, जब तक स्वराज्य प्राप्त न हो। और अगर उन्हें इससे हानि हुई हो, तो वे नई (स्वराज्य) सरकार से इसका मुआवज़ा माँग सकते हैं।

—कलकत्ते का २५वीं तारीख़ का समाचार है, कि श्रीमती ज्योतिर्मयी गङ्गोली, एम० ए० के नेतृत्व में प्रतिष्ठित महिलाओं की एक टोली माहिसबथान नामक स्थान पर ग़ैर-क़ानूनी नमक बनाने के उद्देश्य से की गई और गाँव वालों के सहयोग से इन देवियों ने नमक बनाया, पुलिस ने किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया, पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि यह वही स्थान है, जहाँ सर्व-प्रथम नमक-सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया था।

२३वीं फ़रवरी को बम्बई की कॉरपोरेशन की बैठक में सर बैराम जी जीजीभाई का एक प्रस्ताव इस आशय का उपस्थित होने वाला था, कि हिन्दुस्तान के वर्तमान वायसराय लॉर्ड इरविन को उनकी बिदाई के समय एक अभिनन्दन पत्र इस कॉरपोरेशन की तरफ़ से दिया जाय। इस प्रस्ताव की सूचना कॉरपोरेशन को पहले ही से दे दी गई थी। इस प्रस्ताव को सुन कर बम्बई के कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्त्ता तथा जनता उत्तेजित हो उठी। उन्होंने बैठक होने से पहले ही इस प्रस्ताव का विरोध करना शुरू कर दिया। और प्रचार किया गया कि लॉर्ड इरविन को अभिनन्दन-पत्र देना उनकी दमन-नीति का स्वागत करना है। २१ फ़रवरी को, जिस दिन यह प्रस्ताव पेश होने वाला था, कॉङ्ग्रेस वालण्टियरों और देश-सेविकाओं ने कॉरपोरेशन के मकान को चारों ओर से घेर लिया और मेम्बरों का जाना असम्भव कर दिया। जो मेम्बर अन्दर घुसने पाते थे, वे इसी शर्त पर, कि वे इस प्रस्ताव का विरोध करेंगे। मेम्बरों की इतनी बड़ी तादाद में से सिर्फ़ ३५ मेम्बर अन्दर जा सके, जिनमें दो-चार ही ऐसे थे जो प्रस्ताव के पक्ष में थे, और वई इधर-उधर से छिप कर अन्दर पहुँच गए थे। सरबैराम जी ख़ुद छिप कर अन्दर पहुँचे थे। देश सेविकाएँ मकान के ख़ास फाटक पर थीं। म्युनिसिपल-कमिश्नर ने यह देख कर कि ये लोग किसी मेम्बर को अन्दर नहीं जाने देतीं, पुलिस को बुलाया और उसके द्वारा देशसेविकाओं को वहाँ से हटाने की कोशिश की, जिसमें एक देश-सेविका मुर्छित हो गई और १७ को पकड़ कर हवालात भेज दिया, जहाँ से बाद को वे छोड़ दी गईं।

इधर यह पकड़ा-धकड़ी हुई और थोड़े से मेम्बरों ने सभा की, जो कम मेम्बरों के होने के कारण मुल्तवी कर दी गई। लेकिन इस सभा में म्युनिसिपल कमिश्नरों द्वारा महिलाओं के अपमान का घोर विरोध किया गया।

* * *

बम्बई—

बालकों पर लाठी-प्रहार

भरोंच का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि शराब की दूकानों की नीलामी के समय लगभग २०० सेविकाओं और वानर-सेना के बालकों ने धरना दिया। उन्हें हटाने के लिए लाठी का प्रहार किया गया, जिससे ४० व्यक्ति घायल हो गए हैं। १५० स्वयंसेवक और स्वयंसेविकाएँ गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

झण्डावन्दन के अपराध में ४०० स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए

बम्बई का २२ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एस्प्लेनेड मैदान में जब ४०० स्वयंसेवक मासिक झण्डा-वन्दन के लिए एकत्रित किए गए, तो पुलिस के एक दल ने उन्हें घेर लिया, और उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। सत्याग्रह समिति के अध्यक्ष और तीन सदस्य भी, जो पीछे उस घेरे में गए, गिरफ़्तार कर लिए गए। सभी हिरासत में रक्खे गए हैं। इनमें से ४० पीछे छोड़ दिए गए।

—बम्बई की ख़बर है कि गत १४वीं फ़रवरी को जो ११ व्यक्ति मेमन मुहल्ले में धरना देने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे, उनमें से १० को ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बम्बई [illegible] की ख़बर है, कि दत्तात्रेय दामोदर तथा एक अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता को, जो 'कॉङ्ग्रेस बुलेटिन' [illegible]चने [illegible] अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे, क्रमशः ६ और ४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—हलाल का १७ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि दोहद ताल्लुक़ा कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० विश्वनाथ पाण्ड्या, ग़ैर-क़ानूनी संस्था के सदस्य होने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

गोधरा ताल्लुक़ा कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० रामप्रसाद व्यास भी इसी अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बोरसद का १७वीं फ़रवरी समाचार है, कि श्री० मोहनलाल पाण्ड्या, जो हाल ही में नासिक जेल से छूट कर श्री० मोतीलाल के श्राद्ध-दिवस में भाग लेने के लिए बोरसद आए थे, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बोरसद का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि काका साहब कालेलकर के पुत्र श्री० बाल कालेलकर को सैजपुर की पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया है। आप सैजपुर सत्याग्रह-शिविर के प्रधान थे।

—सूरत का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती ज्योत्स्ना शुक्ल को, जो शोलापुर-दिवस के अवसर पर १४४वीं धारा की अवज्ञा करने के अपराध में गिरफ़्तार की गई थीं, २ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बम्बई का १७वीं फ़रवरी समाचार है, कि सिटी पुलिस ने कालबादेवी रोड पर कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवकों के शिविर पर धावा किया। पुलिस ने दो स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया। वह कॉङ्ग्रेस सम्बन्धी कुछ पत्रों को भी उठा कर ले गई।

—सूरत का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्थानीय 'हिन्दू' पत्र के प्रकाशक और मुद्रक से २,०००) रुपए की ज़मानत माँगी गई है। 'हिन्दू' का प्रकाशन फलतः बन्द कर दिया गया है।

—अहमदाबाद का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के अतिरिक्त सिटी मैजिस्ट्रेट ने ३ महिला स्वयंसेविकाओं को तथा एक पुरुष स्वयंसेवक को पिकेटिङ्ग के अभियोग में १-१ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

दरियापुर के एक प्रमुख कार्यकर्ता श्री० कान्तिलाल को मर्दुमशुमारी बहिष्कार के सम्बन्ध में ३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।
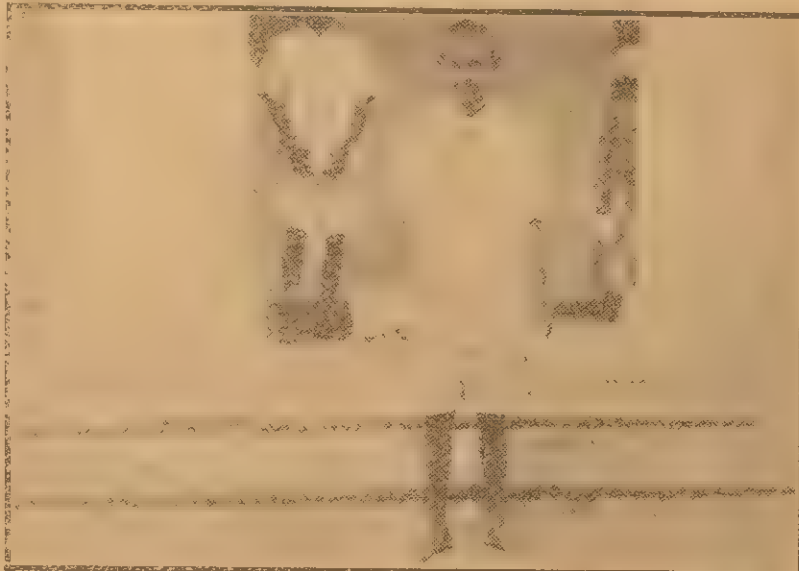
बालक देवनारायण—जो कल्यानपुर (जिला इलाहाबाद) में पुलिस की गोली का शिकार हुआ था और जिसके जीवन की आशा बहुत कम थी। अब बालक की दशा सन्तोषजनक बतलाई जाती है। यह चित्र कॉङ्ग्रेस-अस्पताल में लिया गया है। इसकी अंतड़ियों में गोली लगी थी।

—बम्बई का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि प्रिंसेज़ स्ट्रीट की पुलिस ने मुरारबाग़ के स्वयंसेवक-शिविर पर धावा किया और दो स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया। पुलिस वहाँ से कुछ काग़ज़-पत्र भी उठा कर ले गई।

कहा जाता है कि कालबादेवी रोड पर स्थित लक्ष्मी-भवन पर भी पुलिस ने धावा किया और १॥ घण्टे की तलाशी के बाद उसने दो व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया। दो साइकिलें और कुछ कपड़े आदि भी उसने ज़ब्त कर लिया।

—बम्बई का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बॉयकॉट कमिटी के सेक्रेटरी श्री० वत्सासुन्दर, सत्याग्रह समिति के सेक्रेटरी श्री० वकील तथा एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्री० हेमचन्द को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और १००)-१००) रुपए के जुर्माने की सज़ा दी गई है।

श्रीमती रुक्माबाई नामक एक देश-सेविका को ४ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

महिलाओं को धक्के दिए गए

१ स्वयंसेविका बेहोश

बम्बई का २३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कारपोरेशन हॉल के दरवाज़े पर से हटने से इन्कार करने पर पुलिस ने धरना देने वाली १७ सेविकाओं को गिरफ़्तार कर लिया है। ये सेविकाएँ उसी सदस्य को कारपोरेशन हॉल में जाने देती थीं, जो प्रतिज्ञा करता था कि वह लॉर्ड इर्विन को सम्मान-पत्र देने के विरोध में अपना वोट देगा। पुलिस ने सेविकाओं को धक्के दिए। एक महिला तो बेहोश हो गई।

—अकोला का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० हीरालाल, जो केवल १५ दिन पहले ६ माह की सज़ा भोग कर छूटे थे, बालापुर में, फिर ११वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बम्बई का २३वीं फ़रवरी का समाचार है कि आज़ाद मैदान में जो व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए थे, उनका मामला प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश हुआ। मैजिस्ट्रेट ने युद्ध-समिति के अध्यक्ष श्री० कोलतकर को तथा अन्य सदस्यों को १७ (१) और १७ (२) धाराओं के अनुसार ६-६ मास की अवधि तक की कड़ी क़ैद की सज़ाएँ दीं। ३४ स्वयंसेवकों को ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—धारवार का २३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० गुरुलिंगप्पा हल्लीकेरी नामक एक विख्यात कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता को १००) रुपए जुर्माने अथवा ३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—पूने का २३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'चित्रमय जगत' के सहकारी सम्पादक और युवक-सङ्घ के सञ्चालक श्री० आर० पी० कणिनकर को दो बुलेटिनें प्रकाशित करने के अभियोग में ३ माह की कड़ी क़ैद और १००) रुपए जुर्माने अथवा १५ दिन की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

बङ्गाल—

—कलकत्ते का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती किरण देवी शर्मा और श्रीमती लक्ष्मी देवी शर्मा को पुलिस-एक्ट की ६२-इ धारा के अनुसार पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ५०)-५०) रुपए जुर्माने अथवा १-१ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—सिलहट का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि "सिलहट क्रॉनिकल" ने ज़मानत देने से इन्कार कर दिया है। उसका प्रकाशन बन्द कर दिया गया है।

—खुलना का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० हरिपद सरकार और श्री० वामनदास राय को भारतीय दण्ड-विधान की १०६वीं धारा के अनुसार ४ ४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का एक समाचार है, कि कॉङ्ग्रेस के एक प्रमुख कार्यकर्ता श्री० विजयकृष्ण मोदक आराम-बाग़ में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बालूरघाट का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बाबू तारकेश्वर गुह, बाबू धीरेन विश्वास, बाबू चित्तरञ्जन गुह और कालीपद पॉल को ४ माह की, तथा बाबू कमलापति चटर्जी, बाबू गिरजाप्रसाद दास तथा श्री० महाराज को ३-३ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० कालीपद बागची और श्री० विभूतिकार को क्रमशः २००) और १००) रुपए के जुर्माने अथवा क्रमशः ४० दिन और १ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बालूरघाट का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० सरोजरञ्जन चटर्जी तथा अन्य १७ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं को भारतीय दण्ड-विधान की १८८ और १४३ धाराओं के अनुसार १ दिन से लेकर ६ माह तक की भिन्न-भिन्न अवधि की सज़ाएँ दी गई हैं।

सोते स्वयंसेवकों की गिरफ़्तारी

कलकत्ते का २०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पुलिस ने बड़ा बाज़ार के स्वयंसेवक-शिविर पर धावा किया। स्वयंसेवक उस समय सो रहे थे। पुलिस ने शिविर की अच्छी तरह तलाशी ली और ६० स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया। वहाँ की कुछ वस्तुओं को भी वह उठा कर लेती गई।

बड़ा-बाज़ार कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० विश्वनाथ कपूर के घर की तथा एक होटल की, जिसमें स्वयंसेवक भोजन किया करते थे, तलाशियाँ ली गईं और उस होटल के मालिक को गिरफ़्तार कर लिया गया।

—कृष्णगढ़ का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पुलिस ने श्री० अरविन्द दत्ती नामक एक विद्यार्थी के मकान पर धावा किया, और उसे गिरफ़्तार कर लिया।

—बाराबाँकी का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि दरियाबाद और सनेहीघाट में विदेशी कपड़े की दूकानों पर पिकेटिङ्ग जारी है। सनेहीघाट में पुलिस ने ७ स्वयंसेवकों को ४४७वीं और ३४१वीं धाराओं के अनुसार गिरफ़्तार किया है।

—ढाके का २०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ की भद्र अवज्ञा कमिटी के मन्त्री श्री० देवेन्द्रनाथ सेन को करबन्दी आन्दोलन करने के अपराध में दो सप्ताह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बरौली (खुलना) का २०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० यतीन्द्रनाथ मित्र को बरकुल के दङ्गे के सम्बन्ध में ६ सप्ताह की कड़ी क़ैद और १००) जुर्माने अथवा १ मास की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—तामलुक का २२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० रजनीकान्त प्रमानिक वकील, और श्री० विप्रचरण मैती को वहाँ के सब-डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने, १७ (१) धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। ८ स्वयंसेवकों को भी पं० मोतीलाल नेहरू के श्राद्ध-दिवस के अवसर पर प्रदर्शन करने के अपराध में ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—महिषबाथाना का २१वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एक स्थानीय ज़मींदार श्री० माणिकलाल प्रमानिक के ३ भाई, भद्र अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—राजशाही का २२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज सबेरे श्री० सुकुमार चक्रवर्ती और श्री० बलराम पाल, जो स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के कार्यकर्ता हैं, अनधिकार पर्चों के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कोन्टाइ का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पछरोल में ६ स्वयंसेवक पिकेटिङ्ग और हड़ताल के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

श्री० यतीन्द्रनाथ खार आदि १६ व्यक्तियों को ३ से ७॥ माह तक की भिन्न-भिन्न अवधियों की सज़ाएँ दी गई हैं।

पञ्जाब—

महिलाओं को कड़ी क़ैद की सज़ा

अमृतसर का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के अतिरिक्त-ज़िला मैजिस्ट्रेट ने, लाला दीवानचन्द भण्डारी बैरिस्टर की माता श्रीमती प्रेमकौर, श्रीमती मालन देवी (अवस्था ७२ वर्ष) श्रीमती सरस्वती और श्रीमती हंसरानी को, जो १२वीं फ़रवरी को पिकेटिङ्ग के अभियोग में गिरफ़्तार की गई थीं, सज़ाएँ दे दीं। प्रथम दो महिलाओं को २-२ माह की सादी क़ैद, तथा अन्य दो महिलाओं को २-२ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

६ स्वयंसेवकों को भी १॥ माह से ३ माह तक की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट ने श्रीमती गणेश देवी और श्रीमती केसर देवी को दण्डविधान की २०६वीं धारा तथा १७ (१) धारा के अनुसार २-२ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। ६ स्वयंसेवकों को भी २॥ माह से ३ माह तक की भिन्न-भिन्न अवधि की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—नई दिल्ली का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि चाँदनी चौक में इम्पीरियल बैङ्क के समीप कुछ स्वयंसेवकों ने विदेशी वस्त्र की गाँठों पर धरना दिया। उन गाँठों के मालिक ने पुलिस से सहायता माँगी। पुलिस के आने पर घटनास्थल पर एक भीड़ इकट्ठी हो गई और वहाँ दङ्गा हो गया, जिसमें ४ जनता के लोग और १ पुलिस वाले घायल हुए। पुलिस ने ४ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

नेताओं की गिरफ़्तारी

भगतसिंह अपील-कमिटी का प्रार्थना-पत्र ज़ब्त

अमृतसर का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि अखिल भारतीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य मौलाना इस्माइल ग़ज़नवी, सरदार गुरुदत्तसिंह, सरदार सोहनसिंह, स्वामी हरिशरणानन्द और श्री० कुन्दनलाल गिरफ़्तार कर हिरासत में बन्द कर दिए गए हैं। इनमें कुछ लोग १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

पुलिस ने मौलाना इस्माइल ग़ज़नवी और सरदार गुरुदत्तसिंह के मकानों पर धावा किया और तलाशियाँ लीं। भगतसिंह अपील-कमिटी ने जो मेमोरियल, वायसराय के सामने पेश करने के लिए तैयार किया था, पुलिस ने उसे ज़ब्त कर लिया।

अमृतसर का १६वीं फ़रवरी का समाचार है कि विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देने के अभियोग में ५ स्वयंसेवकों को ३-३ माह की कड़ी क़ैद और १ को २०) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है।

—अमृतसर का २२वीं फ़रवरी का समाचार है कि वहाँ के एक उत्साही कार्यकर्ता पं० प्रेमप्रकाश देवेश्वर १७ (२) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—अमृतसर का २२वीं फ़रवरी का समाचार है कि क़ौमी दलेर सभा के ५ सदस्य, इस संस्था के ग़ैरक़ानूनी होने के कारण, गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

केशलपुर (परतावगढ़) निवासी स्वर्गीय श्री० मथुरा अहीर और नाथपुरा (परतावगढ़) निवासी स्वर्गीय श्री० रामदास उपाध्याय के शव के जुलूस का दृश्य—जो श्री० सुन्दरलाल जी के नेतृत्व में इलाहाबाद में निकाला गया था। इस चित्र में दोनों व्यक्तियों का शव पाठकगण मोटर-लॉरी के ऊपर रक्खा हुआ देखेंगे, जो अभागे पुलिस की गोलियों के निर्मम शिकार हुए थे।

युक्त प्रान्त—

—मुरादाबाद का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवकों के भूतपूर्व नायक पं० महेन्द्रनाथ, जो जेल से छूटने के बाद अधिक उत्साह से आन्दोलन में भाग ले रहे थे, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

लाला भूखनदास और मौलाना क़ारी कामिल भी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

संन्यासी ने मुचलका देने से इन्कार किया

बाँदा का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एक संन्यासी कार्यकर्ता बाबू महावीरदास को १०८वीं धारा के अनुसार ६ माह की सज़ा दी गई है। आपने ६ माह के लिए मुचलका देने से इन्कार कर दिया था।

—आगरे का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ की १६वीं डिक्टेटर श्रीमती भागमती, 'सैनिक' के मैनेजर श्री० महेन्द्र तथा श्री० सी० दास आदि कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

श्री० टण्डन, श्री० चतुर्वेदी और श्री० दास आदि प्रमुख कार्यकर्ताओं के मकानों की तलाशियाँ भी ली गई हैं।

—शिकोहाबाद का १६वीं फ़रवरी का समाचार है कि वहाँ की तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी डॉ० दुर्गासिंह को दूसरी बार १०८ वीं धारा के अनुसार १ साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

श्री० शान्ति वर्मा, ग़ैर-क़ानूनी उकसाव ऑर्डिनेन्स के अनुसार कटौरी में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कानपुर का २१वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सच्चेटी ग्राम के पं० आनन्दप्रसाद और शिवरामऊ के पं० मङ्गलीप्रसाद उकसाव ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। इस ऑर्डिनेन्स के अनुसार इस वर्ष यहाँ ४७ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

—वृन्दाबन का २०वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ किसानों की एक कॉन्फ्रेन्स होने वाली थी, किन्तु कॉन्फ्रेन्स होने के पहले ही ४७ कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर लिए गए। २० महिलाएँ भी गिरफ़्तार की गईं थीं, किन्तु वे छोड़ दी गईं।

—मेरठ का १६वीं फ़रवरी का समाचार है कि, ठेकेदारों को शराब ले जाने से रोकने के अपराध में ४० स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं। गत १० दिनों के अन्दर लगभग केवल इसी स्थान से ८० व्यक्ति गिरफ़्तार किए जा चुके हैं।

श्री० कैलाशचन्द्र जी बी० एस-सी० को १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। इसके पहले से ही आप ६ माह की सज़ा भुगत रहे हैं।

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

मृत्यु के मुख से स० भगतसिंह आदि को निकालने का विराट आन्दोलन

हाईकोर्ट ने अपील नामञ्ज़ूर कर दी :: श्री० हरिकृष्ण को शीघ्र फाँसी होगी !

"टके सेर बम" :: जेल में मुख़बिर पीटा गया !!

"तुम्हारा दोष नहीं, १२ बज गए हैं" की मनोरञ्जक व्याख्या

क्या यशपाल ने भगवतीचरण की हत्या की थी :: उसे गोली से उड़ाने का फ़ैसला

"सिवाय इक़बाली-गवाह बनने के तुमने कोई और भी देश-सेवा की है ??"

लाहौर षड्यन्त्र-केस

लाहौर का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज जब लाहौर षड्यन्त्र केस का मामला स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने पेश हुआ, तो अभियुक्तों की ओर से वकील-सफ़ाई ने एक प्रार्थना-पत्र इस आशय का दिया, कि चूँकि सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव की गवाही इस मामले में आवश्यक है, इस कारण से इन तीनों नवयुवकों की फाँसी रोक दी जाए।

प्रार्थना-पत्र इस प्रकार है:—

"अभियुक्तों की ओर से १६वीं फ़रवरी को एक प्रार्थना-पत्र इस आशय का दिया गया था, कि गत लाहौर षड्यन्त्र-केस के तीन अभियुक्त सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव, जिनको फाँसी-दण्ड दिया जा चुका है, इस मामले में आवश्यक गवाह-सफ़ाई हैं, अतएव उनकी फाँसी को रोकने का प्रयत्न किया जाए, ताकि उनकी गवाही इस मामले में हो सके।"

अदालत ने उस प्रार्थना-पत्र पर विचार करके वकील-सफ़ाई से यह पूछा था, कि किन-किन विषयों पर इन व्यक्तियों की गवाई आवश्यक है ? उसी आज्ञानुसार, हम यह बताना चाहते हैं, कि सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव की गवाही निम्न-लिखित विषयों पर आवश्यक है :—

(१) सरकारी गवाहों ने जो हिन्दुस्तान सोशियालिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन तथा आर्मी का इतिहास, सङ्गठन तथा प्रणाली बताई है, उसे झूठ सिद्ध करने के लिए ;

(२) सरकार के इस कथन को झूठ सिद्ध करने के लिए, कि नए षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों ने उस दल से मिल कर सरकारी अफ़सरों को मारने के लिए षड्यन्त्र रचा ;

(३) उक्त दल द्वारा पञ्जाब में जो कार्य किए गए बताए जाते हैं, उनको झूठ सिद्ध करने के लिए;

(४) इक़बाली गवाह-इन्द्रपाल के उस कथन को झूठ सिद्ध करने के लिए, जिसमें उसने यह बताया है कि नौजवान भारत-सभा क्यों बनाई गई ;

(५) यह पता लगाने के लिए कि जिन अभियुक्तों को फ़रार बताया जाता है, वह सचमुच ही फ़रार हैं, अथवा उनका अस्तित्व कपोल-कल्पित है;

(६) यह पता लगाने के लिए, कि अभियुक्तों के जो उपनाम बताए जाते हैं, वह ठीक हैं या झूठ, और सरकारी गवाहों के बयानों में कोई सचाई भी है कि नहीं ;

(७) यह पता लगाने के लिए कि विप्लव दल के दो भागों में बट जाने की कहानी, जो इन्द्रपाल ने बयान की है, वह सत्य है या झूठ ·

(८) इन्द्रपाल के उस कथन की वास्तविकता की जाँच करने के लिए, जिसमें उसने बताया है कि विप्लव-दल के नियम सन् १९२९ में बदले गए थे ;

(९) यह पता लगाने के लिए, कि क्या कोई सम्बन्ध इस केस के अभियुक्तों तथा पिछले षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों में रहा है ;

(१०) यह पता लगाने के लिए कि कभी सरदार भगतसिंह की भेंट इन्द्रपाल इक़बाली गवाह से हुई थी ;

(११) यह पता लगाने के लिए कि क्या कभी सरदार भगतसिंह काकोरी के शहीदों के फ़ोटो के नीचे, इन्द्रपाल इक़बाली गवाह से कविता लिखवाने के लिए गए थे ;

(१२) यह पूछने के लिए, कि क्या श्री० सुखदेव वास्तव में पञ्जाब के सञ्चालक थे ;

(१३) यह पता लगाने के लिए, कि सरदार भगतसिंह तथा श्री० बी० के० दत्त को छुड़ाने का जो प्रयत्न किया गया था, क्या वह सरदार भगतसिंह तथा उनके साथियों की सलाह से किया गया था ;

(१४) यह पता लगाने के लिए, कि क्या सचमुच ही श्री० सुखदेव और यशपाल ने इक़बाली गवाह के पास वह सूट-केस रक्खा था, जिसमें कि बम पड़े हुए थे ;

(१५) यह पता लगाने के लिए कि वाईसराय की स्पेशल ट्रेन पर जो बम फेंका गया था, क्या वह वास्तव में श्री० भगतसिंह की सलाह से फेंका गया था ?

इसके सिवाय और भी कई ऐसे विषय पर सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव की गवाही की आवश्यकता पड़ेगी। चूँकि अभी तक पहले इक़बाली गवाह इन्द्रपाल का ही बयान समाप्त नहीं हुआ, इस कारण यह बताना सम्भव नहीं है, कि किस-किस विषय पर उनकी गवाही की और आवश्यकता पड़ेगी। यह प्रार्थना-पत्र इस समय इस कारण से दिया गया है, क्योंकि यह पता चला है, कि तीनों गवाहों—सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव—को, शीघ्र ही फाँसी लगने वाली है। सफ़ाई के लिए इनमें से प्रत्येक की गवाही आवश्यक है। यदि अभियुक्तों के इस प्रार्थना-पत्र पर ध्यान न दिया गया, तो अभियुक्त अपनी सफ़ाई ठीक प्रकार से न दे सकेंगे।"

ला० शामलाल वकील-सफ़ाई ने कहा कि अदालत को इस बात का निश्चय करना होगा, कि क्या श्री० भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव की गवाही इस मामले में आवश्यक है। फाँसी रोकने का अधिकार केवल प्रान्तीय सरकार को है। इस कारण अदालत कृपया इस प्रार्थना-पत्र को अपने अनुमोदन सहित प्रान्तीय सरकार को भेज दे।

सरकारी वकील ने उत्तर दिया, कि यदि सरदार भगतसिंह और उनके साथियों की गवाही आवश्यक है, तो वह गवाही शीघ्र ही फाँसी लगने के पूर्व ले लेनी चहिए।

वकील-सफ़ाई—जब तक वादी अपना केस समाप्त नहीं कर लेता, गवाह-सफ़ाई पेश करना क़ानून-विरुद्ध है।

अदालत का फ़ैसला

अदालत ने फ़ैसला किया, कि यह प्रार्थना-पत्र प्रान्तीय सरकार के पास भेज दिया जाए, क्योंकि अदालत को फाँसी रोकने का अधिकार प्राप्त नहीं है।

इक़बाली गवाह का बयान

इसके पश्चात इन्द्रपाल इक़बाली गवाह ने अपना बयान जारी करते हुए कहा, कि मैं और जहाँगीरीलाल ग्वालमण्डी के मकान पर जाकर बम फ़िट कर आए। मनोहर उसी मकान पर रहा, परन्तु हम वापस लौट आए। दूसरे दिन सवेरे बम फटने की योजना की गई थी। मुझे पता नहीं, कि बम फोड़ने के लिए मोमबत्ती किसने जलाई थी।

१८वीं फ़रवरी को इक़बाली गवाह ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि १८ जून की रात को ग्वालमण्डी वाले मकान में बम फ़िट किए गए थे। श्री० मनोहरलाल ने अपनी जेब से पाँच घोषणाएँ, जिनका शीर्षक था "आतशी-चक्कर मैदाने कारज़ार में" निकाल कर बम के नीचे रख दिए। सवेरे हम बैठक पर लौटे। वहाँ पर दल के दूसरे सभासद भी उपस्थित थे। साढ़े सात बजे मैं और श्री० गुलाबसिंह ग्वालमण्डी वाले मकान की ओर गए। उस समय मकान में से धुआँ निकल रहा था, और लोग तरह-तरह की गप्पें हाँक रहे थे। कोई कहता था—'बम फट गया।' कोई कहता था—'गोली चल गई।' मैंने समझ लिया, कि छोटे बम ने, जो पुलिस को बुलाने के लिए रक्खा गया था, अपना काम किया है। उस समय तक वहाँ पर कोई भी पुलिस नहीं थी। आधे घण्टे के पश्चात मैं फिर वहाँ गया, तो पुलिस वहाँ

पर पहुँच चुकी थी। मैं सीधा मकान पर न जाकर, एक हलवाई की दूकान पर गया, और वहाँ से दही की लाक्र बनवा कर पीने लगा। हलवाई की दूकान पर बैठ कर मैं दूसरे बम के चलने की प्रतीक्षा कर रहा था।

कुछ देर प्रतीक्षा करने के पश्चात मैं अपने काम पर 'शेर ख़ालसा' के दफ़्तर में चला गया। सन्ध्या के समय मैंने समाचार-पत्रों में पढ़ा कि अमृतसर, लाहौर, लायलपुर, गुजरानवाला, शेख़ूपुरा तथा रावलपिण्डी में एक ही समय बम चल गए हैं। मैंने यह भी पढ़ा, कि कुछ पुलिस वाले बम चलने से घायल भी हुए हैं।

"टके सेर बम"

१९ जून को जब मैं बैठक पर गया तो वहाँ पर दल के दूसरे सदस्य भी उपस्थित थे। श्री० रूपचन्द ने कहा कि अब तो टके सेर बम बिकने लगे हैं। एक ही साथ छः शहरों में बम फट गए हैं।

प्रश्न—समाचार-पत्रों ने दल के इस कार्य को किस दृष्टि से देखा था?

उत्तर—'मिलाप' ने एक अग्रलेख लिखा था, जिसका शीर्षक था 'देशघातक' जिसमें हम लोगों को बुरा-भला कहा गया था।

२२ जून को श्री० हंसराज मेरे पास आया और उसने मुझे 'मिलाप' के अग्रलेख का उत्तर लिखने को कहा। मैंने एक लेख लिखा, जिसका शीर्षक था "आतशी चक्कर मैदाने कारेज़ार में"। मैंने वह लेख श्री० हंसराज को दिखाया और उसने उसे बहुत पसन्द किया।

२५ जून को श्री० हंसराज उसी लेख की बहुत सी कॉपियाँ छपवा कर ले आया। यह घोषणाएँ हम लोगों ने शहर में चिपका दीं।

एक दिन श्री० रूपचन्द ने मुझसे पूछा कि जिन-जिन स्थानों पर बम फटे हैं, वहाँ पर घोषणाएँ भी पाई गई हैं। क्या यह कार्य किसी दल की ओर से किया गया है? मैंने उसे बताया कि यह काम 'आतशी चक्कर' नामी दल की ओर से किया गया है और मैं उस दल के प्रेस-शाखा में काम करता हूँ।

श्री० भगवतीचरण का स्मृति-चिन्ह

एक दिन मैं और श्री० हंसराज रावी के किनारे उस स्थान पर गए, जहाँ पर श्री० भगवतीचरण जी का देहान्त हुआ था। श्री० हंसराज ने मुझसे कहा था, कि वह वहाँ श्री० भगवती चरण की आत्मा को बुलाएगा। परन्तु उसे सफलता न मिली। हमने वहाँ पर हड्डियों का एक ढेर देखकर यह सोचा, कि यह हड्डियाँ श्री० भगवती-चरण की हैं। उस ढेर में से मैंने एक जबड़ा उठा लिया। वहाँ एक गड्ढा था, जिसमें कुछ कपड़े भी पड़े हुए थे। मैंने यह सोचा कि यह कपड़े भी श्री० भगवतीचरण के होंगे। मैंने जबड़ा कपड़े में लपेट कर अपने सन्दूक़ में स्मृति-चिह्न रख लिया।

एक दिन मैं और श्री० हंसराज रावी के किनारे बम की परीक्षा करने के लिए गए। रास्ते में हमको सरदार गुलाबसिंह मिल गया। उसने मुझसे पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो। मैंने उत्तर दिया—चूँकि अब १२ बज चुके हैं, तुम्हारा कोई क़सूर नहीं है।

जज—बारह बजने से तुम्हारा क्या मतलब है?

गवाह—साधारण तौर पर सिक्खों को बारह बजे के नाम से छेड़ा जाता है। क्योंकि यह बात बहुत प्रसिद्ध है कि १२ बजे के पश्चात गरमी के मारे उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। यह मैंने उससे मज़ाक़ किया था।

इस मज़ाक़ पर सरदार गुलाबसिंह मेरे साथ हाथा-पाई करने लगा, तो मैंने उसे बता दिया कि मेरे पास बम हैं, और यदि छेड़ख़ानी की तो दोनों मर जाएँगे। सरदार गुलाबसिंह भी मेरे साथ हो लिया। हम तीनों साइकिलों पर चढ़ कर दरिया-रावी की ओर चल दिए।

२२वीं फ़रवरी को मुख़बिर ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा कि जुलाई के आरम्भ में हम दरिया के किनारे पर बम की परीक्षा करने गए। वहाँ पर हमने एक उपयुक्त स्थान ढूँढ़ कर बम फेंका, जो गिरते ही फट गया। फिर हम वापस लौट आए।

कुछ दिनों के पश्चात् हंसराज ने मुझे बताया कि दल ने उसे गैस तैयार करने के लिए कहा है, ताकि उसके द्वारा सरदार भगतसिंह को छुड़ाया जाय।

मैंने हंसराज के कहने पर दल के वैज्ञानिक-यन्त्र उसे दे दिए। वह सामान मेरे मकान पर पड़ा हुआ था। कुछ दिन पश्चात् हंसराज ने मुझे बताया कि जब वह गैस बनाने की तैयारी कर रहा था, तो अकस्मात् धड़ाका हो गया। इसलिए गैस तैयार नहीं हो सकी।

सूट-केस में बम फटा

२५वीं जुलाई को सरदार अमरीकसिंह मेरे पास घबराया हुआ आया। ११ बजे का समय था, सरदार के शरीर पर कुछ घाव भी लगे हुए थे, और वह बहुत परेशान था। मेरे पूछने पर उसने बताया कि हंसराज ने उसे एक सूट-केस देकर बादामी बाग़ भेजा था, परन्तु सूट-केस में रास्ते में ही धड़ाका हुआ और बहुत-सा धुआँ बाज़ार में फैल गया। इस पर वह लोगों की आँख बचा कर भाग आया। सूट-केस को वहीं पर छोड़ आया था। उसने मुझसे कहा कि हंसराज ने मुझे धोखा दिया है, क्योंकि मुझे पहले नहीं बताया था कि इस सूट-केस में बम रक्खा है।

अगस्त के दूसरे सप्ताह में हंसराज ने मुझे बताया कि सुखदेवराज लाहौर आया है और वह मुझसे मिलना चाहता है। चूँकि दल को यह पता चला है कि मुझे पुलिस ढूँढ रही है, इस कारण से सुखदेवराज इसका पता लगाने आया है। हंसराज ने यह भी कहा कि दल ने १६,००० रु० ख़र्च करके मुझे विलायत भेजने का निश्चय किया है, ताकि मैं वहाँ जाकर विज्ञान का अध्ययन करूँ।

इन्हीं दिनों यशपाल मेरे पास आया। यशपाल ने मुझे बताया कि वह दल को छोड़ कर भाग आया है। पूछने पर यशपाल ने मुझे बताया कि क्योंकि उसने ब्याह कर लिया है, इस कारण दलवाले उससे नाराज़ हो गए हैं। यशपाल को चन्द्रशेखर आज़ाद ने बुलाया था, परन्तु चूँकि यशपाल को पता लग चुका था कि दलवालों ने उसे दल के नियम भङ्ग करने के अपराध में प्राणदण्ड दिया है, इसलिए वह आज़ाद के पास न जाकर लाहौर भाग आया था।

यशपाल ने मुझे कहा कि तुम्हारे पास सहायता के लिए आया हूँ। मैंने उसे बताया कि सुखदेवराज तुम्हारे विरुद्ध प्रचार कर रहा है। इस पर यशपाल ने मनोहर और हंसराज से मिलने की इच्छा प्रकट की। मैंने दोनों को उससे मिला दिया।

दूसरे दिन यशपाल ने कहा कि तुम मेरे साथ चलो। वह मुझे साथ लेकर जैशीराम ग्राउण्ड में गया। वहाँ पर श्री० धन्वन्तरि और श्री० शिव हमको मिले। श्री० धन्वन्तरि ने मुझसे पूछा कि क्या सचमुच सुखदेवराज यशपाल के विरुद्ध प्रचार कर रहा है। मैंने कहा, हाँ। उन्होंने मुझे कहा कि तुम दल की सेन्ट्रल कमिटी के सामने यह बात कहने को तैयार हो। जब सेन्ट्रल कमिटी का अधिवेशन होगा तो तुमको बताया जाएगा।

दूसरे दिन यशपाल मेरे पास आया और उसने मुझसे पूछा कि तुम दल का साथ दोगे या मेरा। पूछने पर यशपाल ने मुझे बताया कि दल के सदस्यों का विचार है कि श्री० भगवतीचरण की मैंने हत्या की थी। इसलिए मुझे गोली से उड़ा देने का फ़ैसला किया गया है। उसने मुझसे सहायता की प्रार्थना की। मैंने उसे कहा कि मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।

मामला स्थगित कर दिया गया।

* * *

यूनिवर्सिटी हॉल षड्यन्त्र केस

लाहौर का १८वीं फ़रवरी को मि० रामनाथ लुथरा स्पेशल मैजिस्ट्रेट के सामने, बोर्स्टल जेल में पञ्जाब गवर्नर पर गोली चलाने के लिए षड्यन्त्र रचने के अपराध में श्री० रणवीरसिंह, बी० ए०, श्री० दुर्गादास, बी० ए० तथा श्री० चमनलाल का मामला पेश हुआ।

इक़बाली-गवाह वासन्धाराम ने जिरह किए जाने पर कहा—मैं कविता किया करता हूँ और मेरा उपनाम "वैराग" है।

अदालत के टाईपिस्ट ने इक़बाली गवाह से 'वैराग' के हिज्जे पूछे, तो मैजिस्ट्रेट ने कहा कि इसको क्या पता कि हिज्जे क्या होता है (इस पर क़हक़हा लगा)।

वकील—क्या यह उपनाम तुम्हारा है या तुमने उधार लिया हुआ है?

गवाह—मेरा अपना है?

वकील—तुम कब से देशभक्त हो?

गवाह—जब मैं लायलपुर में पढ़ता था, तो छोटी श्रेणियों ही में मेरे विचार देशभक्ति के थे।

वकील—क्या कॉङ्ग्रेस के मौक़े पर तुमने स्वयंसेवक बन कर सेवा की?

गवाह—नहीं।

वकील—कभी सेवा-समिति के मेम्बर रहे?

गवाह—मुझे पता नहीं, सेवा-समिति क्या होती है!

वकील—सनातन-धर्म-स्कूल और सनातन-धर्म कॉलेज में पढ़ते रहे हो, महावीर-दल के भी सदस्य बने हो?

गवाह—नहीं।

वकील—सिवाय इक़बाली गवाह बनने के, तुमने कोई और भी देश-सेवा की है?

गवाह—मैंने कभी कोई देश-भक्ति नहीं की।

१९ फ़रवरी को सरकारी वकील ख़ाँ साहब क़लन्दर-अली ख़ाँ ने अपनी जिरह में पूछा—कब तुमने कहा था कि तुम बचपन से देशभक्त हो, किन्तु तुमने कोई देश-सेवा नहीं की। तुम देशभक्ति किसे समझते हो?

गवाह—मैं क्रान्तिकारी दृष्टि-कोण से देश-सेवा करना देश-भक्ति समझता हूँ।

सरकारी वकील—तुम कॉङ्ग्रेस को देशभक्त समझते हो?

गवाह—मैं क्रान्ति के आन्दोलन और गाँधीवाद को सर्वथा अलग-अलग समझता हूँ। परन्तु दोनों को देश सेवा समझता हूँ।

सरकारी वकील—तुम देश-भक्तविचारों का क्या तात्पर्य समझते हो?

वकील-सफ़ाई ने इस प्रश्न पर आपत्ति की।

सरकारी वकील ने कहा कि वकील-सफ़ाई भी जिरह कर सकता है

वकील-सफ़ाई ने कहा, कि जिस प्रश्न को अदालत एक बार मना कर दे उसे फिर नए रूप में करना अदालत की मानहानि है।

इस पर ख़ाँ साहब जोश में आ गए और कहने लगे कि मैं पाँच दिन तक धैर्यपूर्वक बैठा रहा हूँ, अब जब मेरी बारी आई है, तो इतना फ़िसाद क्यों मचाया जा रहा है।

वकील-सफ़ाई ने कहा कि जहाँ तक ऊँचा बोलने का सम्बन्ध है, मैं सरकारी वकील से हार मानता हूँ।

अदालत ने प्रश्न करने की आज्ञा दे दी।

गवाह—मैं अपने शहर में कॉङ्ग्रेस का काम करता रहा हूँ, कई सभाओं का सभापति बना। मैंने लाहौर में कोई काम नहीं किया।

इन्स्पेक्टर जवाहरलाल ने बयान किया, कि २३वीं दिसम्बर को मेरी ड्यूटी यूनिवर्सिटी हॉल के भीतर थी। गवर्नर पञ्जाब यूनिवर्सिटी के चान्सलर थे। जब १ बज कर २० मिनट पर उपाधि-वितरण समाप्त हुआ तो गवर्नर साहब जुलूस सहित बाहर निकले। जब वह दरवाज़े के पास पहुँचे तो एकाएक फ़ायर की ध्वनि हुई। मैंने सोचा, कि किसी ने पटाख़ा चलाया है। परन्तु जब दूसरी बार फिर फ़ायर की ध्वनि हुई, तो मैंने देखा कि हरिकृष्ण सामने चबूतरे पर खड़ा फ़ायर कर रहा है। मैं इसकी ओर भागा। इसकी पगड़ी और कुल्ला इसके सिर पर से गिर गए। श्री० हरिकृष्ण दो और फ़ायर करने के बाद बाहर भागने लगा, परन्तु मेहता दीवानचन्द ने उसे सामने की ओर से पकड़ लिया। मैंने भी भाग कर श्री० हरिकृष्ण के हाथ से रिवॉल्वर छीन लिया।

श्री० हरिकृष्ण की गोलियों से गवर्नर, डॉक्टर मैक्डर मॉयट, सरदार बुद्धसिंह और सरदार चननसिंह सब-इन्स्पेक्टर घायल हुए। सरदार चननसिंह अस्पताल में मर गया।

मैंने श्री० हरिकृष्ण के विरुद्ध सेशन्स में गवाही दी थी। गेट पर जो व्यक्ति खड़ा था वह टिकट ज़मीन पर फेंक कर डर के मारे भाग गया था। मैंने सारे टिकट इकट्ठे कर लिए।

मेहता दीवानचन्द ने ला० जवाहरलाल के बयान का समर्थन किया।

* * *

एसिस्टेण्ट कमिश्नर को मारने की चेष्टा

एक ही दिन में मुक़द्दमा और फाँसी

सीमा प्रान्त के अमानुषिक क़ानून

पेशावर १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कल एक नवयुवक मोहम्मद हबीबनूर असिस्टेंट कमिश्नर कैप्टन बार्न्स के बङ्गले पर एक दरख़्वास्त लेकर आया। कैप्टन बार्न्स जब दरख़्वास्त पढ़ रहे थे, तो हबीबनूर ने एकाएक पिस्तौल निकाल कर कैप्टन पर दो फ़ायर किए, परन्तु निशाना ठीक नहीं बैठा। इतने में कैप्टन साहब का अरदली भी पहुँच गया और उसकी सहायता से आक्रमणकारी गिरफ़्तार कर लिया गया।

श्री० हबीबनूर ने पूँछने पर बताया कि मैं अङ्गरेज़ों के विरुद्ध 'जिहाद' करने के लिए आया था।

१६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज श्री० हबीबनूर का मामला फ़्रण्टियर मरडर्स आउटरेजेज़ एक्ट (Frontier Murderous Outrages Act) के अनुसार सेशन्स में पेश हुआ। कचहरी की सारी कार्यवाही गुप्त रक्खी गई।

सुना गया है, कि कैप्टन बार्न्स तथा दूसरे सरकारी गवाहों ने कहा है, कि अभियुक्त १७ फ़रवरी को दो बजे दोपहर के बङ्गले में घुसा और एक दरख़्वास्त कैप्टन के सामने पेश की। जब कैप्टन वह दरख़्वास्त पढ़ रहा था, तो अभियुक्त ने पिस्तौल निकाल कर कैप्टन पर आक्रमण किया। समय पर अरदलियों की सहायता पहुँच जाने से आक्रमणकारी को गिरफ़्तार कर लिया गया।

अभियुक्त ने अपराध स्वीकार करते हुए कहा कि मेरे पूर्वजों की अङ्गरेज़ों ने हत्या की थी और मैं उसका बदला लेने आया था।

सेशन्स जज ने अभियुक्त को फाँसी-दण्ड दिया।

आज १६वीं फ़रवरी को पेशावर सेन्ट्रल जेल में श्री० हबीबनूर को फाँसी पर लटका दिया गया।

* * *

एसेम्बली में अविश्वास का प्रस्ताव पास हो गया

"श्री० हबीब नूर की निर्मम हत्या की तुलना संसार की राक्षसी जातियों के इतिहास में भी दुर्लभ है।"

—सर अब्दुलरहीम

नई देहली का २४वीं फ़रवरी का समाचार है कि आज डॉक्टर ज़ियाउद्दीन ने एसेम्बली में एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें श्री० हबीबनूर को एक ही दिन में मुक़दमा चला कर फाँसी पर लटका देने पर असन्तोष प्रकट किया गया था, और सरकार की, इस निर्मम कार्य करने पर निन्दा की गई थी। श्री० हबीबनूर को कैप्टन बार्न्स पर आक्रमण करने के अपराध में १६वीं फ़रवरी को फाँसी दी गई थी। प्रस्ताव के विरुद्ध ४२ और अनुमोदन में ५६ वोट थे। प्रायः सभी ग़ैर-सरकारी मेम्बरों ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए सर हरिसिंह गौड़ ने कहा, कि सीमा प्रान्त के अमानुषिक क़ानूनों में सरकार को मनुष्यता का सञ्चार करना चाहिए।

सर अब्दुररहीम ने कहा, कि होम-मेम्बर ने इस अमानुषिक कृत्य को न्याय-सङ्गत सिद्ध करने का यत्न किया है। मैंने वकील तथा जज, दोनों की हैसियत में जो अनुभव फ़ौजदारी मुक़दमों का प्राप्त किया है, उसके आधार पर यह कह सकता हूँ, कि ऐसा विचित्र मुक़द्दमा अभी तक किसी भी न्यायालय में नहीं हुआ था।

यदि उस व्यक्ति की हत्या कैप्टन बार्न्स द्वारा हो जाती, तो वह होता प्राकृतिक न्याय। परन्तु यह मुक़द्दमा तो केवल ढोंग था।

सर आर्थर मूर—उसे अपनी सफ़ाई देने का अधिकार था।

सर रहीम—उसे अधिकार मत कहिए। ऐसे मुक़द्दमों में मनुष्य को पहले पुलिस के क़ब्ज़े में रक्खा जाता है, फिर उनको वकीलों तथा मित्रों से मिलने का अवसर दिया जाता है। मैं यह कहना चाहता हूँ, कि यह मुक़द्दमा अभूतपूर्व है, और इसको देख कर मैंने यह महसूस किया है, कि सीमा प्रान्त में कोई क़ानून नहीं है। सीमा प्रान्त वाले ऐसी शासन-पद्धति से तङ्ग आ गए हैं। ऐसी हत्या की तुलना तो हमें संसार की राक्षसी जातियों के इतिहास में भी नहीं मिलती।

मि० एकसन ने कहा कि सीमा प्रान्त में १९२१ से लेकर आज तक, कम से कम १२ ब्रिटिश कर्मचारियों और दो महिलाओं की हत्याएँ हो चुकी हैं और हत्याकारी अपने कृत्यों को गौरव का विषय समझते हैं, इसलिए ऐसी असाधारण स्थिति में न्याय शीघ्रतापूर्वक और जहाँ तक हो सके, चुपचाप होना चाहिए।

सर काऊस जी जहाँगीर ने कहा, कि मैं ऐसे क़ानून का घोर विरोध करता हूँ। जिसके द्वारा इस प्रकार फाँसी लगाई गई है।

* * *

श्री० हरिकृष्ण को फाँसी

लाहौर का समाचार है, कि यूनिवर्सिटी काण्ड के अभियुक्त श्री० हरिकृष्ण की अपील हाईकोर्ट ने ख़ारिज कर दी है, उन्हें शीघ्र ही फाँसी दे दी जायगी।

लाहौर में बम फटा

एसोसिएटेड प्रेस का चपरासी ज़ख़्मी

लाहौर १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एसोसिएटेड प्रेस का चपरासी, जब दफ़्तर जा रहा था तो रास्ते में उसे कोई वस्तु दिखाई दी। उसने उस वस्तु को उठाया तो वह भक से फट गई। चपरासी की अँगुलियाँ कट गईं और शरीर पर भी कई घाव लगे। सुना जाता है कि यहाँ पर पुलिस का कैम्प लगा हुआ था और किसी ने बम वहाँ पर रक्खा हुआ था।

फ़ौरन ही हेड-कॉन्स्टेबिल

विश्वनाथ राव वैशम्पायन गिरफ़्तार!

इलाहाबाद का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि यहाँ के सरकारी कर्मचारियों का कहना है, कि कानपुर में जिस क्रान्तिकारी को कुल्ली बाज़ार में गिरफ़्तार किया गया था, उसका नाम विश्वनाथराव वैशम्पायन है। अभियुक्त के पास कुछ कारतूस, एक रिवॉल्वर और कुछ रुपए मिले थे। पुलिस पञ्जाब देहली और बम्बई के षड्यन्त्र-केसों में अभियुक्त की तलाश कर रही थी। वैशम्पायन की गिरफ़्तारी के लिए सरकार ने पुरस्कार की भी घोषणा की थी।

यह भी सुना गया है, कि जिस पुलिस कॉन्स्टेबिल ने उक्त क्रान्तिकारी को गिरफ़्तार किया था, उसको उसी समय हेड-कॉन्स्टेबिल बना दिया गया।

मुख़बिर की मरम्मत हो गई

देहली जेल में मनोरञ्जक घटना

देहली का समाचार है, कि देहली षड्यन्त्र-केस के एक अभियुक्त श्री० विद्याभूषण, एम० ए० को दो सप्ताह एकान्त-कारावास का दण्ड दिया गया है। श्री० विद्याभूषण ने सुना गया है, कि शनाख़्त-परेड के समय इसी मामले के एक इक़बाली-गवाह सीतलप्रसाद को पकड़ कर पीट दिया था।

* * *

भारत-मन्त्री को नोटिस

"यदि भगतसिंह इत्यादि को फाँसी लगाई गई तो आप पर मुक़द्दमा चलाया जाएगा।"

लाहौर का २१वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कुछ स्थानीय वकीलों ने होम-सेक्रेटरी, पञ्जाब गवर्नमेण्ट, कलक्टर-लाहौर और सुपरिण्टेण्डेण्ट सेन्ट्रल जेल की मारफ़त भारत-मन्त्री को एक नोटिस दिया है, जिसमें यह कहा गया है, कि सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव को फाँसी पर न लटकाया जाए, क्योंकि जिस ट्रिब्यूनल ने उनके मुक़द्दमे का निर्णय करके उन्हें दण्ड दिया था, उसका कोई अस्तित्व अब बाक़ी नहीं है, क्योंकि इस ट्रिब्यूनल के सिवाय, किसी अन्य को फाँसी के वारण्ट पर हस्ताक्षर करने का अधिकार प्राप्त नहीं है, इसलिए धारा ३८१, ३८६ और ४०० के अनुसार इनको फाँसी लगाना क़ानून-विरुद्ध होगा।

उक्त नोटिस में यह भी कहा गया है, कि यदि इस नोटिस पर कोई ध्यान न दिया गया और उक्त व्यक्तियों को फाँसी पर लटका दिया गया तो हमको अधिकार दिया गया है, कि हम मुक़द्दमा चला दें। यदि आपको किसी क़ानून विषय पर हमारी सहायता की आवश्यकता हो तो हम यथाशक्ति उसके लिए तैयार हैं।

देहली की विराट सभा

देहली १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज आज़ाद पार्क में देहली के नागरिकों की एक विराट सभा हुई। सेठ लक्ष्मीनारायण गोडोदिया ने सभापति का आसन ग्रहण किया। पण्डित इन्द्र ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें वायसराय से यह प्रार्थना की गई थी कि ~~वह~~ सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव

की फाँसी की सज़ा, नागरिकों के मेमोरियल का ध्यान रख कर, रद्द कर दें। महाशय इन्द्र ने प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव को फाँसी देना सरकार के लिए हितकारक न होगा। इन नवयुवकों को यदि फाँसी पर लटका दिया गया, तो देश का स्वातन्त्र्य-संग्राम और भी प्रबल हो उठेगा। समय है कि सरकार समझौते और शान्ति स्थापना के लिए हितकर वातावरण बनाने के लिए इनकी फाँसी की सज़ा रद्द कर दे।

श्री० आसफ़अली

श्री० आसफ़अली ने प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा, कि मैं सरदार भगतसिंह का वकील होने की हैसियत से इस बात को ख़ूब जानता हूँ कि यदि सरदार भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह का प्रार्थना-पत्र स्वीकार करके सफ़ाई ली जाती, तो ट्रिब्यूनल का फ़ैसला अवश्य कुछ दूसरा ही होता।

साधारणतया फाँसी की सज़ा का जब तक हाईकोर्ट अनुमोदन न करे, तब तक फाँसी नहीं दी जा सकती, परन्तु यहाँ पर तो यह अधिकार भी अभियुक्तों से छीन लिया गया है।

सरकार यदि करोड़ों भारतवासियों की माँग को स्वीकार करके, सरदार भगतसिंह इत्यादि के फाँसी-दण्ड को रद्द कर देगी, तो वह अपने आप पर ही एक बड़ी भारी कृपा करेगी।

श्री० फ़रीद-उल-हक़ अन्सारी

श्री० फ़रीद-उल-हक़ अन्सारी ने प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा, कि मैं ऐसे प्रस्ताव को, जिसमें कि सरदार भगतसिंह ऐसे नवयुवकों को छुड़ाने का प्रयत्न किया गया है, बड़ी प्रसन्नता के साथ अनुमोदन करता हूँ।

लाहौर षड्यन्त्र-केस धोखेबाज़ी और अन्याय की एक कहानी है। सरकार को चाहिए कि ऐसे समय में, जब कि समझौता हो रहा है, इन नवयुवकों को फाँसी देने से बाज़ रहे।

इसके पश्चात सभापति ने वोट लिए, तो प्रस्ताव "भगतसिंह की जय" के नारों के साथ सर्व-सम्मति से पास हो गया।

बम्बई में विराट सभा

बम्बई का गत १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज सन्ध्या के समय आज़ाद मैदान में एक विराट सभा अकाली दल की अध्यक्षता में हुई। सरदार जसवन्तसिंह ने निम्न-लिखित प्रस्ताव पेश किया :—

"अकाली दल की अध्यक्षता में बुलाई गई, बम्बई के नागरिकों की यह सभा, वाइसराय से प्रार्थना करती है, कि वह निम्न-लिखित बातों का ध्यान रखते हुए, सरदार भगतसिंह, श्री० राजगुरु तथा श्री० सुखदेव की फाँसी की सज़ा को रद्द करें :—

(१) अभियुक्तों का मुक़दमा साधारण न्यायालय में नहीं चलाया गया।

(२) मुक़द्दमा अभियुक्तों की अनुपस्थिति में चलाया गया था।

(३) अभियुक्तों ने कई कारणों से कार्यवाही में भाग नहीं लिया, इस कारण से कोई सफ़ाई नहीं दी जा सकी।

(४) अपील करने का अधिकार भी छीन लिया गया था।

(५) अभियुक्तों को सज़ा देने के लिए जो प्रमाण दिए गए हैं, वह पर्याप्त नहीं हैं।

(६) सरदार भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह ने अपने पुत्र की ओर से सफ़ाई देने की प्रार्थना की थी, परन्तु वह अस्वीकार कर दी गई।

(७) अभियुक्त अभी नवयुवक हैं और शान्ति स्थापना का ध्यान रखते हुए, उनको फाँसी न देकर, आजीवन कारावास देना पर्याप्त होगा।

यह सभा महात्मा गाँधी तथा दूसरे काँग्रेस कार्यकारिणी समिति के सदस्यों से प्रार्थना करती है कि वह सरकार से किसी प्रकार का समझौता करने से पहले सारे अहिंसात्मक अथवा हिंसात्मक राजनैतिक क़ैदियों की रिहाई की माँग पेश करें।

यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास किया गया।

कुछ समाचार पत्रों का सार

वैलाण्ट और भगतसिंह

भगतसिंह के मामले में प्रिवी कौन्सिल के दृश्य का पटाक्षेप जिस शीघ्रता से हुआ है, वह आश्चर्यजनक है। यह कोई गुप्त रहस्य नहीं है, कि पहले-पहल षड्यन्त्र-केस ऑर्डिनेन्स के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले स्वर्गीय पं० मोतीलाल जी नेहरू थे। वह प्रिवी कौन्सिल की अपील में पूरा योग दे रहे थे। और यह भी कोई गुप्त रहस्य नहीं है, कि उनकी यह प्रबल इच्छा थी, कि सरकार से समझौता करते समय इन तीनों नवयुवकों का जीवन बचाने के लिए पूरी शक्ति से काम लिया जाय। जब पण्डित जी ने मंसूरी में लाहौर से टेलिफ़ोन द्वारा यह समाचार सुना, कि ट्रिब्यूनल ने तीन अभियुक्तों को फाँसी-दण्ड दिया है, तो उन्होंने इस बात के लिए पूरा प्रयत्न किया कि सरकार से प्रिवी-कौन्सिल में अपील करने के लिए अवधि ली जाय। उस समय, जब कि सारा देश उनके स्वास्थ्य के लिए चिन्तित था, वे ट्रिब्यूनल के इस निर्णय पर इतनी अधीरता प्रकट कर रहे थे।

सुना जाता है, फाँसी १८वीं फ़रवरी को लगेगी। "भगतसिंह" आज हमारे कोष का एक नया शब्द है, किसी व्यक्ति-विशेष का नाम नहीं। राजनैतिक वक्तृताओं और सभाओं में लोग इस शब्द का उच्चारण करते हैं। कोई उसकी तारीफ़ करता है तो कोई उसे कोसता है। थोड़े ही दिन की बात है, सर हैनरी क्रेक ने कौन्सिल-चेम्बर में बार-बार भगतसिंह का नाम अपने भाषण में रटा था। मैं समझता हूँ कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सर हैनरी क्रेक का यह कथन ठीक था, कि भारतवर्ष ने हिंसात्मक साधन पश्चिम से सीखे हैं।

जी हाँ, निश्चय ही भारतवर्ष इसके लिए पश्चिम का आभारी है। कभी-कभी तो पश्चिम का भारतवासियों ने ऐसा अनुकरण किया है, कि देख कर आश्चर्य होता है। भगतसिंह का एसेम्बली-काण्ड ही लीजिए। इसमें छोटी-छोटी बातें भी फ़्रान्स की घटना से मिलती हैं। फ़्रान्स के भगतसिंह का नाम 'वैलाण्ट' था, जिसको सन् १८९४ में फाँसी पर लटकाया गया था। सभ्यता की व्यथाओं से व्यथित, वह दक्षिण अमेरिका में गया, परन्तु वहाँ भी उसे वही अन्याय दिखाई दिया। वह अपने स्वदेश को वापस लौट आया, और फिर उसे अन्यायपूर्ण समाज का याचना करना पड़ा। उस दुखित जीवन से तङ्ग आकर उसने एक भयङ्कर आयोजना की+ और वह एक बम लेकर उन व्यक्तियों के पास पहुँचा, जिनको वह सारे अन्याय की जड़ समझता था। पैरिस की चेम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ में उसने बम गिराया। अदालत में उसने अपना बयान उसी प्रकार का दिया था, जैसा कि भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिया है। उसने कहा—"मेरे बम का धड़ाका केवल विद्रोही वैलाण्ट का ही चीत्कार नहीं है, अपितु यह एक उस श्रेणी का चीत्कार है, जो अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहती है और जो शीघ्र ही अपने शब्दों को कार्य-रूप में परिणत करेगी।" भगतसिंह और दत्त द्वारा दुहराए गए ये शब्द भी इसी क्रान्तिकारी के हैं। "बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज़ की आवश्यकता होती है।" भाषण में केवल हिंसावाद ही नहीं था, कहीं-कहीं पर बड़े सुन्दर भाव दिखाई देते हैं—"विचारों की गति रोकने से नहीं रुकती, जिस प्रकार गत शताब्दी में सरकारी शक्तियाँ डिडरोट और वाल्टेयर के स्वतन्त्र विचारों को सर्व-साधारण तक पहुँचने से नहीं रोक सकीं, इसी प्रकार आजकल की सारी सरकारी शक्तियाँ, रेकल्यूज़, डारविन, स्पैन्सर और मिराब्यू के वह विचार, जिनके द्वारा सर्व-साधारण का अज्ञानान्धकार दूर करके न्याय और स्वतन्त्रता का उदय होता है, नहीं रोक सकतीं।"

फ़्रान्स के विद्वानों ने इन्हीं भावों से प्रेरित होकर प्रेज़िडेण्ट कारनौर से उसकी जीवन-भिक्षा माँगी। परन्तु देश की यह याचना प्रेज़िडेण्ट द्वारा ठुकरा दी गई। फाँसी लगाई गई। बहुत दिनों के पश्चात, जब किसी ने प्रेज़िडेण्ट कारनौर का क़त्ल कर दिया, तो संसार ने देखा कि घातक के खञ्जर की मूठ पर खुदा हुआ था 'वैलाण्ट'।

एक मित्र ने हमें बताया है, कि सरदार भगतसिंह ने एसेम्बली बम-काण्ड से पहिले वैलाण्ट की कहानी पढ़ी थी। इस साक्षी के बिना भी कोई पश्चिम के इस एहसान से इन्कार नहीं कर सकता।

—"पीपुल" (अङ्गरेज़ी)

प्रिवी कौन्सिल में सरदार भगतसिंह की अपील का परिणाम

शोक है कि प्रिवी कौन्सिल ने सरदार भगतसिंह तथा लाहौर के दूसरे अभियुक्तों की अपील रद्द कर दी। इस समय, जब कि ब्रिटिश साम्राज्य की सब से बड़ी अदालत ने सरदार भगतसिंह इत्यादि की अपील रद्द कर दी है, हम आशा करते हैं, कि हिज़ एक्सेलेन्सी लॉर्ड इरविन भारतीय भावों की क़द्र करते हुए सरदार भगतसिंह और उनके साथियों के मामले पर सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण से विचार करेंगे। ऐसी परिस्थिति में, जबकि ब्रिटेन राजनीतिज्ञों ने यह अनुभव कर लिया है, कि नीति बदलने की आवश्यकता है और भारतवासियों की माँगें पूरी की जा रही हैं, आवश्यकता है, कि लॉर्ड इरविन अपने विशेष अधिकारों द्वारा सरदार भगतसिंह और उनके सहयोगियों की रक्षा करें। हमें विश्वास है, कि वाइसराय के सहानुभूतिपूर्ण कार्य से भारतवर्ष के राजनैतिक वातावरण पर बहुत सुखदायक असर पड़ेगा। हम मानते हैं, कि लाहौर के अभियुक्तों को अपने प्राणों की कुछ भी परवा नहीं। फाँसी की रस्सी कुछ ही मिनटों में जीवन-मृत्यु की कशमकश समाप्त कर सकती है। परन्तु सरदार भगतसिंह की मृत्यु प्रलय तक भारतीय हृदयों में घाव बन कर रहेगी। ब्रिटिश मान का भेद सरदार भगतसिंह की मृत्यु में नहीं, किन्तु उनकी जीवन-रक्षा में छिपा है!

—"रियासत" (उर्दू)

—गन्टूर का १४वीं फ़रवरी का समाचार है कि श्री० वेङ्कैया, श्री० वेङ्कटकृष्ण और श्री० चेट्टियर १७ (१) धारा के अनुसार पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बङ्गलोर का २१वीं फ़रवरी का समाचार है कि ताड़ी की दूकान पर धरना देने के अपराध में ७० सत्याग्रही गिरफ़्तार किए गए हैं।

—नागपूर का २३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि मध्य-प्रान्तीय मराठी-युद्ध-समिति के १४वें अध्यक्ष श्री० कालीचरण ११७वीं धारा के अनुसार, जिसमें सेन्डस एक्ट की १०वीं धारा भी जोड़ दी गई थी, गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

बम्बई—

बम्बई सरकार को ११६ लाख का घाटा

आवकारी विभाग में ७६ लाख का धक्का

बम्बई कौंसिल में आगामी वर्ष के लिए बजट पेश करते हुए अर्थ-सचिव ने बतलाया है कि १९३०-३१ में कर में १०५ लाख रुपए की घटी हुई है और ख़र्च १५ लाख बढ़ गया है। सरकार को १९३०-३१ में ११६ लाख का घाटा हुआ है। इसमें ७६ लाख की घटी तो केवल आवकारी विभाग में हुई है। आगामी वर्ष भी घाटा ही होने की आशा है।

घटकोपर में कॉन्स्टेबिलों की धाँधली

नाम न बताने पर कड़ी सज़ाएँ

'बॉम्बे क्रॉनिकल' का एक सम्वाददाता घटकोपर से १६वीं फ़रवरी का समाचार देता है, कि वहाँ के मर्दुमशुमारी के अफ़सरों के साथ-साथ दो पुलिस-कॉन्स्टेबिल भी चलते हैं। इनके साथ हथकड़ियाँ भी मौजूद रहती हैं।

कहा जाता है कि मर्दुमशुमारी के अफ़सरों के घर वालों से कुछ पूछने के पहले ही कॉन्स्टेबिल लोग उन्हें धमकी देना शुरू करते हैं। यदि घर का दरवाज़ा भीतर से बन्द पाया जाता है, तो वे ठोकरें मारते हैं और किवाड़े तोड़ देने की धमकी देते हैं। यदि घर वाले कहते हैं कि घर का मालिक कहीं बाहर गया है, तो ये कॉन्स्टेबिल घर की तलाशी लेने के लिए तैयार हो जाते हैं।

नाम बताने से इन्कार करने पर, एक बार पुलिस ने कुछ प्रमुख कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं को गिरफ़्तार कर हिरासत में बन्द कर दिया। कहा जाता है कि उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों को, पुलिस के कॉन्स्टेबिलों ने गालियाँ तक दीं। दूसरी बार कुछ लोगों को इसी अभियोग में तीन माह से लेकर ६ माह तक की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई।

तीसरी बार, पुलिस ने एक घर वाले के मेहमान को गिरफ़्तार कर लिया। उसने कहा कि वह बम्बई का रहने वाला है, और वह अपना नाम वहाँ लिखा चुका है। किन्तु कॉन्स्टेबिलों ने कुछ नहीं सुना। उस मेहमान की गोद में एक बच्चा था। वह बच्चा समेत गिरफ़्तार कर हिरासत में बन्द कर दिया गया। जब उसका सम्बन्धी उसे देखने के लिए हिरासत में गया तो बच्चा लौटा दिया गया।

—बम्बई का १८वीं फ़रवरी का समाचार है कि सपरिषद गवर्नर ने, क्रिमिनल-ला एमेण्डमेण्ट की १६वीं धारा के अनुसार दिए गए अधिकारों के मुताबिक़, अनकोला ताल्लुक़े की कॉङ्ग्रेस पञ्चायतों को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया है।

बोरसद-घटना की ग़ैर-सरकारी जाँच

सरकारी जाँच का विरोध; पुलिस दोषी ठहराई गई

पिछली २१ जनवरी को बोरसद ताल्लुक़ा (गुजरात) में जलूस के साथ पुलिस ने जो दुर्व्यवहार किया था, उसके सम्बन्ध में भारत-सेवक-समिति के दो सदस्य (१) श्री० आर० आर० बखेले, एम० एल० सी० और (२) श्री० के० जे० चितलिया ने तहक़ीक़ात करके एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। वह रिपोर्ट इस घटना-सम्बन्धी सरकारी रिपोर्ट का विरोध करती है और बतलाती है कि शुरू में जुलूस की हालत किसी प्रकार चिन्ताजनक नहीं थी, परन्तु बाद को पुलिस ने अपने बेसबरी से उसे चिन्ताजनक बना दिया। इस रिपोर्ट में बहुत से ज़ख़्मियों के बयान भी दिए गए हैं और ज़ख़्मियों की एक फ़िहरिस्त भी दी हुई है। रिपोर्ट के ये शब्द विशेष उल्लेखनीय हैं—

"बोरसद की पुलिस जुलूस को तितर-बितर करने पर उतारू थी। उसने सरकार की हिदायतों पर कोई ध्यान न दिया, स्त्रियों को निर्दयता-पूर्वक पीटा और उसके जो आक्रमण हुए, वे अत्यन्त प्रचण्ड और पाशविक थे।

कैहला (परतावगढ़) का वह स्थान, जहाँ पुलिस ने गोलियों की वर्षा की थी और जिस स्थान पर, कहा जाता है, दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी। चित्र में, जहाँ एक बालक खड़ा है, ठीक उसी स्थान पर सभा के लिए प्लेटफ़ॉर्म बनाया गया था। जिसके नीचे चारों ओर ख़ून के दाग़ पाए गए थे। जिस स्थान पर × निशान बना है, वहाँ सब से अधिक जमा हुआ ख़ून का दाग़ मिला था। टण्डन जी दाहिनी ओर खड़े हैं और श्री० मोहनलाल गौतम ख़ून की परीक्षा कर रहे हैं।

—अहमदाबाद का १७वीं फ़रवरी का समाचार है कि बारदोली के वे किसान, जिन्होंने लगान नहीं दिया है, थाटा नामक गाँव में चले आए हैं, और उन्होंने कपास न तोड़ने का सङ्कल्प कर लिया है।

—अहमदाबाद १८वीं फ़रवरी—'बॉम्बे क्रानिकल' के एक सम्वाददाता का कहना है कि गत १८वीं फ़रवरी को सवेरे कुछ सरकारी अफ़सर मर्दुमशुमारी सम्बन्धी कार्य करने के लिए कालूपुर को गए। बानर-सेना को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होंने गलियों के दरवाज़े बन्द कर दिए। पुलिस सब-इन्स्पेक्टर ने १२ पुलिस के जवानों की सहायता से एक दरवाज़े को खोलने की चेष्टा की, किन्तु वे असफल हुए। अन्त में वे दूसरी राह से गली में गए। घटनास्थल पर एक भीड़ इकट्ठी हो गई और लड़के पुलिस वालों को चिढ़ाने लगे। पुलिस ने उन्हें हटाने के लिए बेंतों का प्रहार किया।

जिस समय मर्दुमशुमारी के अफ़सर अपना काम आरम्भ करने के लिए घर-घर घूमने लगे, उस समय तक सभी घरों के दरवाज़े बन्द हो चुके थे। इस कारण उन्हें हताश लौटना पड़ा। प्रत्येक स्थान पर बानर-सेना का कड़ा पहरा है।

गाँधी-टोपी का भूत

गवर्नमेण्ट प्रेस, इलाहाबाद के क्लर्क श्री० काशीप्रसाद ने जो अभी हाल में इस्तीफ़ा दिया है, उसकी एक नक़ल हमारे पास "भविष्य" में छपने के लिए आई है। स्थानाभाव के कारण हम उसे यहाँ अविकल रूप से देने में असमर्थ हैं। इस्तीफ़े का जो मतलब है, वह उसके इन थोड़े से शब्दों से पूरी तौर से ज़ाहिर हो जाता है। श्री० काशीप्रसाद इस्तीफ़े में लिखते हैं कि—"६ जनवरी सन् १९३१ ई० को जब मैं सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब के कमरे में अपने साधारण काम के लिए गया, तो मेरी सफ़ेद टोपी ने साहब के भावों को क्रोध से उत्तेजित कर दिया, मुझसे कहा गया, कि गाँधी टोपी लगा कर ऑफ़िस में मत आया करो। यह पूछने पर, कि क्या इस सम्बन्ध में कोई गवर्नमेण्ट ऑर्डर आया है, मुझसे कहा गया कि साहब का हुक्म ही काफ़ी है और यदि मैंने उसकी अवज्ञा की तो मेरे लिए आफ़त है ख़ुदा है।" इस्तीफ़े से मालूम होता है कि इस पर क्लर्क की तनख़्वाह घटा दी गई, जिस पर उसने इस्तीफ़ा दे दिया।

—इलाहाबाद कॉङ्ग्रेस-कमिटी की ओर से सूचना मिली है, कि इलाहाबाद ज़िले में आजकल सरकारी पलटन घूम रही है। यहाँ के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन बा० हरीराम अग्रवाल ने इस आशय का एक आज्ञा-पत्र डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अध्यापकों के पास भेजा है कि जिस समय पलटन उनके यहाँ होकर गुज़रे, उस समय उन्हें और उनके विद्यार्थियों को पलटन को सलाम करने के लिए पहले ही से तैयार रहना चाहिए। इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों ने यह तय किया है, कि जिस दिन पलटन उनके यहाँ पहुँचेगी, उस दिन वे लोग इस आज्ञा के विरुद्ध हड़ताल मनाएँगे और स्कूल ही न जाएँगे।

बिहार—

चौकीदारी टैक्स न देने पर कुर्क़ियाँ

११॥) के बदले ९१०) का माल क़ुर्क़

ज़िला भागलपुर के बिहपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्री० रामजी शर्मा लिखते हैं कि १९वीं फ़रवरी की रात के ३ बजे यहाँ के तहसीलदार कुछ सशस्त्र सिपाहियों को लेकर चौकीदारी टैक्स वसूल करने के लिए गौरीपुर, विक्रमपुर गाँव में पहुँचे। कहा जाता है, कि इन लोगों ने आकर सोते हुए किसानों के मकानों को घेर लिया और उनके सामान को क़ुर्क़ कर लिया। कहा जाता है कि ११॥) चौकीदारी टैक्स के बदले ९१०) की चीज़ें क़ुर्क़ की गई हैं।

पुलिस की बर्बरता का एक नमूना

"घायलों को घसीट कर पुलिस ने घर से बाहर निकाला !"

प्रतापगढ़ गोलीकाण्ड के सम्बन्ध में राष्ट्रपति का वक्तव्य

"गोली चलने पर भी किसान मैदान में डटे रहे"

"किसान शान्त थे" :: "उनका साहस सराहनीय है"

ख़बर है कि, प्रतापगढ़ में गोली चलने के बाद पण्डित जवाहरलाल नेहरू मामले की जाँच करने के लिए स्वयं घटनास्थल पर गए थे। सहयोगी 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के प्रतिनिधि के पूछने पर आपने कहा, कि १८वीं फ़रवरी को वे घटनास्थल पर मामले की जाँच करने गए थे। पुलिस ने १८ घायलों को गिरफ़्तार किया है। वे सभी घायल एक ही लॉरी में, पुलिस कॉन्स्टेबिलों के साथ बिठाए गए थे। लॉरी की छत पर दोनों मृतकों के शव असबाबों के साथ रक्खे गए थे। इस समय इलाहाबाद के कॉङ्ग्रेस अस्पताल में ८ घायलों की सेवा हो रही है। इनमें से ३ के शरीर से गोलियाँ निकाली जा चुकी हैं।

पुलिस और किसानों के बयान में अन्तर

पुलिस और किसानों के बयान में बहुत अन्तर पड़ जाता है। लेकिन दोनों इस बात को मानते हैं, कि गोली चलना आरम्भ होने पर किसान मैदान से भागे नहीं, किन्तु डटे रहे। किसानों के २५ बयान लिखे जा चुके हैं। सभी किसानों का कहना है, कि शुरू से लेकर अन्त तक वे बिल्कुल शान्त थे। यह ठीक है, कि लगान-बन्दी के लिए सभाएँ करने की एक साधारण निषेधाज्ञा १४४वीं धारा के अनुसार जारी की गई थी, किन्तु किसी अन्य प्रकार की सभा के लिए कोई निषेधाज्ञा नहीं जारी की गई थी। सभा में उपस्थित लोगों को भी गोली चलाने के पहले किसी प्रकार की चेतावनी नहीं दी गई थी। पुलिस के साथ चौकीदारों की एक टोली भी आई थी। इन लोगों ने किसानों को लाठियों से पीटा। कहा जाता है, कि कुछ पुलिस वाले भी घायल हुए हैं, किन्तु बहुत खोजने पर भी कॉङ्ग्रेस वालों को वे घायल पुलिस के व्यक्ति दिखाई नहीं पड़े। यह बात साफ़-साफ़ समझ में नहीं आती, कि ये पुलिस वाले कैसे घायल हो गए। यह सम्भव है कि चौकीदारों ने भूल से उन पर भी लाठी चला दी हो।

किसानों का साहस सराहनीय है। मैं जब वहाँ गया तो बहुत से किसान वहाँ इकट्ठे हो गए, और उन्होंने बार-बार मुझसे कहा कि शुरू से लेकर अन्त तक वे बिल्कुल शान्त थे। उन्होंने यह भी कहा, कि यदि वे पुलिस पर आक्रमण करना चाहते, तो पुलिस वालों को दबा देना उनके लिए आसान था; किन्तु जान-बूझ कर ही उन्होंने ऐसा नहीं किया।

* * *

सहयोगी 'लीडर' के एक सम्वाददाता २१वीं फ़रवरी को प्रतापगढ़ से लिखते हैं, कि गत १६वीं फ़रवरी को ४ बजे सन्ध्या के समय गोली चलने के बाद पुलिस जो रफ़ूचक्कर हुई, सो फिर दूसरे ही दिन उनके दर्शन हुए! उन लोगों ने उन घायलों को, जो ऐसी अवस्था में अपने सम्बन्धियों को नहीं छोड़ सकते थे, घसीट-घसीट कर घर से बाहर निकाला। सुपरिण्टेण्डेण्ट के साथ घूम-घूम कर ११ बजे दोपहर तक १७ घायलों को वे गिरफ़्तार कर सके। ये घायल व्यक्ति एक छोटी सी लॉरी में, जिसमें १४ साधारण यात्री भी कठिनता से बैठ सकते थे, लाद दिए गए। एक पुलिस-गार्ड भी इसीमें बैठा दिया गया। दोनों मृत व्यक्तियों की लाशें लॉरी की छत पर रख दी गईं। इस प्रकार लॉरी, शीघ्रतापूर्वक जेल को भेज दी गई। यह आश्चर्य की बात है, कि पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट और सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट की उपस्थिति में भी यह सब बातें कैसे की जा सकीं? ज़िला मैजिस्ट्रेट ने रास्ते में इस लॉरी को देखा था, किन्तु कहा जाता है कि, लॉरी को खड़ा कर घायलों और मृतकों को देखने की परवाह उन्होंने नहीं की!

इसमें सन्देह नहीं कि वे घटनास्थल पर ६ घण्टे रहे। घटना के तीसरे दिन ज़िला-मैजिस्ट्रेट को पहले पहल उन घायलों को जेल-अस्पताल में देखने का अवकाश मिला। उन्होंने ३ घायलों की अवस्था चिन्ताजनक समझ कर, जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट से सम्मति लेकर, उन्हें सिविल अस्पताल में भेज दिया। इनमें से एक इलाहाबाद भेज दिया गया, जहाँ उसकी एक्स-रे परीक्षा हुई और उसकी खोपड़ी से गोली निकाली गई। इस समय वह कॉङ्ग्रेस अस्पताल में है।

जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट ने आज इस बात की सूचना दी, कि दो अन्य घायलों की भी दशा चिन्ताजनक है। ये पीछे सिविल अस्पताल में भेज दिए गए। घायलों के वकील जेल के अस्पताल में अन्य घायलों से मिले, और उनमें से अनेकों की चिन्ताजनक अवस्था और जेल के अस्पताल का असन्तोषप्रद प्रबन्ध देख कर और यह देख कर, कि अनेकों घायलों को ज़मीन पर ही पड़े रहना पड़ता है, उन्होंने १९वीं फ़रवरी को सबेरे उन घायलों को ज़मानत पर छोड़ दिए जाने के उद्देश्य से एक प्रार्थना-पत्र दिया, जिसमें उनकी चिकित्सा का अच्छा प्रबन्ध किया जा सके। वकील को सूचना दी गई कि दूसरे दिन १२ बजे प्रार्थना-पत्र पर आज्ञा दी जायगी। दूसरे दिन तीसरे पहर ज़िला मैजिस्ट्रेट ने यह आज्ञा दी, कि सभी घायल २५) रुपए की ज़मानत पर छोड़ दिए जा सकते हैं। इन लोगों को ले जाने के लिए इलाहाबाद से एक एम्बुलेन्स कार बुलाई गई, और कॉङ्ग्रेस अस्पताल में उनके रक्खे जाने का पूर्ण प्रबन्ध किया गया। किन्तु १२ बजे के क़रीब जब वकील, ज़िला-मैजिस्ट्रेट के सामने आवश्यक ज़मानत लेकर उपस्थित हुए, तो उन्होंने यह तीसरा ऑर्डर निकाला कि, अभियुक्तों की शनाख़्त अभी नहीं की गई है, और शनाख़्त करने में १५ दिन और लगेंगे, इस कारण वे अभी नहीं छोड़े जा सकते हैं। उनका ध्यान उन ६ घायलों की ओर आकर्षित किया गया, जिन्हें गोलियों के ५-६ घाव लगे थे। उनसे इस बात की प्रार्थना की गई, कि कम से कम वे सिविल अस्पताल में भेज दिए जायँ, या काफ़ी ज़मानत लेकर छोड़ दिए जायँ; किन्तु यह भी नामञ्ज़ूर कर दिया गया। ज़मानत के एक दूसरे प्रार्थना-पत्र पर ज़िला मैजिस्ट्रेट ने यह ऑर्डर दिया कि २३वीं फ़रवरी को वे पुलिस के बयान को सुनेंगे, कि वह इनके छुटकारे के विरोध में

वह दृश्य, जब संयुक्त प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान—बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन घटनास्थल पर पहुँचे थे। आपको कुछ ख़ाली गोलियाँ (जो कहा जाता है, पुलिस द्वारा दाग़ी गई थीं) दिखाई गईं, जो घटनास्थल पर पड़ी हुई मिली थीं, आप उसी की जाँच कर रहे हैं। आपके दाहिनी ओर परतापगढ़ के एक वकील उन गवाहों के बयान पढ़ रहे हैं, जो टण्डन जी के वहाँ पहुँचने पर लिए गए थे।

क्या कहना चाहती है। अस्पताल के बैरक में, एक ही हॉल में, टट्टी और पेशाबख़ाना दोनों ही हैं। वहाँ इतने घायलों के रहने का स्थान भी नहीं है। वहाँ ऐसी दुर्गन्ध आती थी, कि वकील साहब बड़ी मुश्किल से कुछ देर तक ठहर सके।

ग्रामनिवासी दर्शकों का वह झुण्ड, जो टण्डन जी के जाँच के समय घटनास्थल पर एकत्र हुआ था।

कल तक तो केवल एक ही अभियुक्त घायलों की सेवा के लिए वहाँ था, क्योंकि जेल के डॉक्टर को पुलिस अस्पताल का कार्य तथा अन्य कार्य भी देखने पड़ते हैं ऐसी हालत में यदि इनके घाव विषैले हो जायँ, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। जिस हिसाब से घायलों को सिविल अस्पताल में भेजा जा रहा है, उस हिसाब से तो उनके सिविल अस्पताल में भेजे जाने में भी ६ दिन और लगेंगे !!

* * *

लखनऊ कैम्प-जेल में राज-बन्दियों पर कष्टों का पहाड़ !

एक क़ैदी को ३० कोड़े लगाए गए !

लखनऊ का १७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बाबू मोहनलाल सक्सेना ने लखनऊ कैम्प-जेल में 'सी' क्लास के राजनैतिक क़ैदियों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार के विषय में निम्न-लिखित आशय की सूचना प्रकाशित की है:—

(१) क़ैदियों को, सोने के लिए चारपाई आदि कुछ नहीं दी जाती है। उन्हें रूखड़ी ज़मीन पर सोना पड़ता है। ज़मीन पर सोने से, दीमकों के कारण उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ता है।

(२) उन्हें केवल दो कम्बल और एक छोटी सी चटाई दी जाती है, जो काफ़ी नहीं है।

(३) २४ घण्टे में केवल ३ घण्टे उन्हें खुली हवा में रहने दिया जाता है, २१ घण्टे वे बन्द रक्खे जाते हैं।

(४) पाख़ाने का प्रबन्ध बहुत ही असन्तोषजनक है। एक टट्टी में केवल २० जगहें हैं, और उसमें १ घण्टे के अन्दर २०० क़ैदियों को बैठना पड़ता है।

(५) दूसरी जेलों से लाए गए क़ैदियों की बहुत दिनों के बाद हथकड़ी-बेड़ी निकाली जाती हैं।

(६) १०० पौण्ड से भी कम वज़न के लोगों को चक्की पीसने अथवा तेल निकालने का काम दिया जाता है यह जेल के नियमों के विरुद्ध है।

(७) ६ दिनों तक इन क़ैदियों को केवल दाल, साग और चना खाकर रहना पड़ा था। एक दिन उन्हें १-१ रोटी, और दूसरे दिन आधी-आधी रोटी दी गई थी, इस समय भी उन्हें, जेल के नियमानुसार सन्तोष-प्रद भोजन नहीं दिया जा रहा है।

(८) कभी कभी इन क़ैदियों को जेल के जवाब-देह अधिकारियों के सामने पीटा गया है। यदि इस प्रकार पीटे जाने से उन्हें सख़्त चोट आई है, तो उसका इलाज भी नहीं किया गया है।

(९) विदेशी नामक, इलाहाबाद ज़िले के एक क़ैदी को ३० कोड़े लगाए गए। यह घोषणा की गई थी कि क़ैदियों को कोड़े नहीं लगाए जायँगे। किन्तु वहाँ इस घोषणा पर ध्यान नहीं दिया गया।

* * *

पञ्जाब गवर्नमेण्ट की नादिरशाही आज्ञा

एक तस्वीर का गवर्नमेण्ट पर आतङ्क

"वह क़ानून से स्थापित गवर्नमेण्ट को उखाड़ने का प्रयत्न करती है।"

पञ्जाब गवर्नमेण्ट ने 'स्वराज्य-सङ्ग्राम' नामक तस्वीर को ज़ब्त करने के लिए निम्न विज्ञप्ति प्रकाशित की है। यह विज्ञप्ति अन्य प्रान्तों के सरकारी गज़टों में भी प्रकाशित की गई है:—

गवर्नर-इन-कौन्सिल ज़ाब्ता फ़ौजदारी के सन् १८९८ तथा १९२६ के एक्टों के और सन् १९२७ के क्रिमिनल-लॉ अमेण्ड-मेण्ट एक्ट के अधिकारों के अनुसार उस 'स्वराज्य सङ्ग्राम' नामक तस्वीर की हर एक प्रति ज़ब्त करने की आज्ञा देते हैं, जिसमें (१) नौकरशाही तोपों और बन्दूक़ों सहित फ़ौजी सिपाहियों के रूप में दिखाई गई है; (२) जेलें, एक गड्ढे के रूप में, जिसमें बहुत से नेता पड़े हैं, चित्रित की गई हैं; (३) पुलिस के कांस्टेबिल कॉङ्ग्रेस के उन स्वयंसेवकों को पीटते दिखाए गए हैं, जो चित्र में विदेशी कपड़े और शराब के बहिष्कार की प्रार्थना कर रहे हैं, (४) एक ज़ञ्जीरों से जकड़ा हुआ और हाथों में हथकड़ियाँ पहने हुए वृद्ध व्यक्ति, जिस पर बहुत से आदमी लदे हैं, भारत के रूप में चित्रित किया गया है; (५) सेठ जमनालाल बजाज और अन्य नेता तिलक स्वराज्य फ़ण्ड के लिए चन्दा एकत्रित करते हुए दिखाए गए हैं; और (६) जिसमें सहयोग का दृश्य चित्रित करने तथा सुधारों का प्रभाव दिखाने के लिए एक रास्ता और उसके अन्त में कौन्सिल चेम्बर के रूप में एक मकान बनाया गया है, जिसकी छत पर कुछ व्यक्ति बैठे हुए हैं। तस्वीर के मुद्रक नेशनल आर्ट प्रेस अनारकली, लाहौर और प्रकाशक एम० डी० सहगल एण्ड सन्स हैं। चित्र से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री तथा उसकी सब प्रतियाँ भी ज़ब्त करने की आज्ञा दी गई है। इस ज़ब्ती का कारण यह है, कि तस्वीर भारत की क़ानून से स्थापित गवर्नमेण्ट के विरुद्ध असन्तोष फैलाती है, और वह दण्ड-विधान की १२४ वीं 'ए' धारा के अनुसार दण्डित होने योग्य है।

* * *

बर्मा—

—रङ्गून का १६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज कौन्सिल में यह प्रस्ताव पेश किया गया, कि वहाँ सिविल इञ्जीनियरिङ्ग स्कूल खोले जायँ, और उसमें बर्मी भाषा में शिक्षा दी जाय। सरकारी सदस्यों ने बर्मी भाषा द्वारा शिक्षा दिए जाने का विरोध किया। किन्तु पक्ष में १ वोट अधिक आने के कारण प्रस्ताव पास हो गया।

बर्मा-विद्रोह

रङ्गून का २३वीं फ़रवरी का समाचार है कि सङ्गथ्वी में जिस समय मिलिटरी पुलिस का एक दल खाना तैयार कर रहा था, उसी समय क़रीब ४०० विद्रोहियों ने उस पर धावा किया। पुलिस ने तुरन्त तैयार होकर आक्रमणकारियों का सामना किया। अनेक विद्रोही मारे गए और अनेक घायल हुए। कहा जाता है कि वह मनुष्य, जिसने थारावड्डी के विद्रोह में मुख्य भाग लिया था, हेनज़दा ज़िले में मार डाला गया है। गाँव वालों ने भी दो बार सरकारी अफ़सरों पर आक्रमण किया था।

२०० हथियार-बन्द मनुष्यों ने इंगाबू के टाउनसिप नामक ऑफ़ीसर पर धावा किया। ५० मनुष्यों के एक दूसरे दल ने हमनदन के टाउनसिप अफ़सर पर धावा किया। दोनों अफ़सरों के पास थोड़े पुलिस के जवान थे। इन लोगों ने विद्रोहियों का सामना किया। इसके फलस्वरूप इंगाबू में ६ और हमनदन में ३ विद्रोही मारे गए। कुछ सरकारी सिपाही भी घायल हुए हैं।

कैहला (परतापगढ़) के गोली-काण्ड में उन १७ व्यक्तियों के अतिरिक्त, जो ज़ख़्मी हुए थे और पुलिस द्वारा गिरफ़्तार भी कर लिए गए थे—४ अन्य ग्राम-निवासी, जो दुर्घटना के दूसरे दिन गिरफ़्तार कर लिए गए। उन्हें सशस्त्र पुलिस के कड़े पहरे में जाँच के लिए घटनास्थल पर लाया गया है। बेचारे पुलिस के बीच में बैठे हैं।

सुप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिज्ञों के मुक़द्दमे

५—स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल नेहरू : १९२१

"मैं अदालत के सामने नहीं, बल्कि नौकरशाही के एक ऐसे एजेण्ट के सामने खड़ा हूँ, जो इस देश का कट्टर शत्रु है।"

सन् १९२१ ई० में पं० मोतीलाल पर जो राजनैतिक मुक़द्दमा चलाया गया था, वह देशबन्धु दास के मुक़द्दमे ही की तरह असहयोग आन्दोलन के समय गवर्नमेण्ट के एक आकस्मिक क़ानून-भङ्ग करने के सम्बन्ध में था। गवर्नमेण्ट ने असहयोग आन्दोलन का मुक़ाबला करने के लिए जिन अस्त्रों का प्रयोग किया था, उनमें से कॉङ्ग्रेस संस्थाओं और वालण्टियर-दलों का ग़ैर-क़ानूनी क़रार देना प्रधान था। पण्डित जी पर ज़ाब्ता फ़ौजदारी के अनुसार ग़ैर-क़ानूनी वालण्टियर दल के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने का अभियोग लगाया गया था। साधारणतः इस मुक़द्दमे में कोई विशेषता न थी, परन्तु उसकी उपयोगिता इसलिए बढ़ गई थी कि एक तो पण्डित जी देश के श्रद्धेय नेता थे, दूसरे उन पर यह मुक़द्दमा असहयोग आन्दोलन जैसी ऐतिहासिक घटना के समय में चलाया गया था और साथ ही ऐसे ही समय में युवराज ने भारत में पदार्पण किया था।

मुक़द्दमा चलाने का कारण

युवराज सन् १९२१ ई० की १२वीं दिसम्बर को इलाहाबाद आने वाले थे और उनके स्वागत के लिए गवर्नमेण्ट बड़ी-बड़ी तैयारियाँ कर रही थी। दूसरी ओर कॉङ्ग्रेस ने भी उनके बहिष्कार की पूर्ण तैयारी कर ली थी। ५वीं दिसम्बर को इलाहाबाद के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० नॉक्स ने पण्डित जी को एक पत्र लिखा और उसमें उन्होंने उनसे कुछ शर्तें मञ्ज़ूर करने के लिए कहा, परन्तु पण्डित जी ने उन्हें पालन करने से साफ़ इन्कार कर दिया। इसके परिणाम-स्वरूप पं० मोतीलाल अपने पुत्र जवाहरलाल के साथ दूसरे ही दिन गिरफ़्तार कर लिए गए। उनके साथ ही उनके दो भतीजे पं० श्यामलाल नेहरू और पं० मोहनलाल नेहरू, 'इण्डिपेण्डेण्ट' पत्र के सम्पादक श्री० जॉर्ज जोज़फ़, ख़िलाफ़त से सम्बन्ध रखने वाले श्री० कमालुद्दीन जाफ़री और इलाहाबाद म्युनिसिपल-बोर्ड के चेअरमैन श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन भी गिरफ़्तार किए गए थे। पण्डित जी की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में हम यहाँ उनका वह वक्तव्य उद्धृत करते हैं, जो उन्होंने जेल से रिहा होने के बाद दिया था।

पण्डित जी और मैजिस्ट्रेट का पत्र-व्यवहार

"युवराज के पदार्पण के कुछ दिन पहले मुझे इलाहाबाद के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट की एक असाधारण विज्ञप्ति प्राप्त हुई। उसके एक-एक शब्द से अधिकार की बू टपकती थी। हम लोगों का पत्र-व्यवहार साधारण रीति से होता था। और हम दोनों के पत्र चपरासियों के हाथों आया-जाया करते थे। परन्तु इस अवसर पर मेरे पास एक खुला पत्र एक पुलिस सब-इन्स्पेक्टर के हाथ भेजा गया था, और उसमें मुझे एक निश्चित तारीख़ और समय पर अपने मकान का फाटक बन्द रखने और दर्शकों को अन्दर प्रवेश न करने देने का आदेश दिया गया था। उत्तर में मैंने मैजिस्ट्रेट को लिखा कि उन्हें मेरी जायदाद के स्वतन्त्र उपयोग में उस समय तक दख़ल देने का अधिकार नहीं है, जब तक मैं क़ानूनी दृष्टि से उसका उचित उपयोग करता हूँ। मैं उसका अपनी इच्छानुसार उपयोग कर सकता हूँ। परन्तु साथ ही मैंने उन्हें इस बात का भी विश्वास दिलाया कि एक असहयोगी की हैसियत से मैं इस बात का अवश्य ध्यान रक्खूँगा कि युवराज का कोई अपमान न होने पाए, और इलाहाबाद में उनका कोई अपमान नहीं हुआ। यह वचन देने के पुरस्कार-स्वरूप मैं अपने पुत्र तथा भतीजों के साथ गिरफ़्तार कर लिया गया और कुछ ही दिन बाद अन्य बहुत से कार्यकर्ता भी गिरफ़्तार कर लिए गए। यथासमय युवराज यहाँ आए और आप लोगों ने पूर्ण हड़ताल कर उनका यथोचित स्वागत भी किया।"

स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू

किस प्रकार गिरफ़्तार हुए

पं० मोतीलाल नेहरू को उनके मकान में पुलिस के डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट और एक इन्स्पेक्टर ने गिरफ़्तार किया था। वे अपने साथ उनके घर की तलाशी का भी वारण्ट लाए थे। पं० जवाहरलाल लखनऊ के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के वारण्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, इसलिए वे अपने मुक़द्दमे की कार्यवाही के लिए लखनऊ भेजे गए थे। गिरफ़्तारियों के साथ आनन्द-भवन और प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी तथा ख़िलाफ़त कमिटी के ऑफ़िसों की भी तलाशी ली गई थी और पुलिस कुछ रजिस्टर अपने साथ ले गई थी। इसी तलाशी में पुलिस को वालण्टियर दल की वह रसीद-बही भी मिली थी, जिसमें पं० मोतीलाल नेहरू के हस्ताक्षर थे।

मुक़द्दमे की कार्यवाही

मुक़द्दमे की कार्यवाही ७वीं दिसम्बर को इलाहाबाद ज़िला-जेल में डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० नॉक्स के इजलास में हुई। कार्यवाही सरकारी वकील मि० एल० एम० बनर्जी ने प्रारम्भ की। पहला मुक़द्दमा श्री० जॉर्ज जोज़फ़ के विरुद्ध था। उन पर २९वीं नवम्बर के 'इण्डिपेण्डेण्ट' में प्रकाशित एक लेख के अनुसार लोगों को ग़ैर-क़ानूनी संस्था की कार्यवाहियों में भाग लेने के लिए भड़काने का अभियोग लगाया गया था। एक असहयोगी की हैसियत से श्री० जोज़फ़ ने कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार कर दिया। दूसरा मुक़द्दमा श्री० कमालुद्दीन जाफ़री के विरुद्ध था। उन्होंने भी कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार कर दिया। तीसरे मुक़द्दमे में पण्डित जी की बारी आई। उन्हें 'इण्डिपेण्डेण्ट' की वह प्रति दिखाई गई, जिसमें श्री० जॉर्ज जोज़फ़ का विरोधपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ था। परन्तु पण्डित जी ने न तो किसी प्रश्न का उत्तर दिया और न कार्यवाही ही

(शेष मैटर १२वें पृष्ठ के दूसरे और तीसरे कॉलम पर देखिए)

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व, सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

२६ फ़रवरी, सन् १९२१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

(११वें पृष्ठ का शेषांश)

में किसी प्रकार का भाग लिया। इस सम्बन्ध में उन्होंने इतना ही कहा कि—"मैं अदालत के सामने नहीं, बल्कि नौकरशाही के एक ऐसे एजेण्ट के सामने खड़ा हुआ हूँ, जो इस देश का कट्टर शत्रु है।" इसके बाद मि० कोनवाल ने अदालत के सामने वालण्टियर-दल की वह रसीद-बही पेश की, जिसमें पण्डित जी के दस्तख़त थे। दूसरे अभियुक्तों ने भी पण्डित जी ही की तरह वक्तव्य दिया। सभी अभियुक्तों पर ज़ाब्ता फ़ौजदारी की १७वीं (१) धारा का अभियोग लगाया गया था। गवर्नमेण्ट एडवोकेट की प्रार्थना से पं० श्यामलाल नेहरू तथा पण्डित मोहनलाल नेहरू का मामला स्थगित कर दिया गया। परन्तु अन्य अभियुक्तों के मुक़दमे का फ़ैसला उसी दिन १० बजे रात को सुना दिया गया। श्री० जॉर्ज जोज़फ़ को १८ माह की सादी क़ैद तथा एक हज़ार रुपए जुर्माने की सजा दी गई। और कहा गया कि जुर्माने का रुपया न देने पर तीन माह की क़ैद की सजा और दी गई। श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन को भी १८ माह की सादी क़ैद तथा २५० रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई और श्री० कमालुद्दीन जाफ़री को ६ माह की सादी क़ैद तथा १०० रुपए जुर्माने की सज़ा।

पं० मोतीलाल नेहरू के मुक़दमे का फ़ैसला सुनाते समय मैजिस्ट्रेट ने कहा कि—"अभियुक्त ने वालण्टियर-दल के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर ज़ाब्ता फ़ौजदारी की १७वीं (अ) धारा की आज्ञा का उल्लङ्घन किया है। यह अपराध अभियुक्त ने जान-बूझ कर किया है और इस प्रकार उसने स्पष्ट रूप से गवर्नमेण्ट का विरोध किया है।" इस अपराध में पण्डित जी को ६ माह की सादी क़ैद तथा ५०० रुपया जुर्माने की सज़ा दे दी गई। सब अभियुक्त उसी समय मोटर से विभिन्न जेलों में भेज दिए गए। पण्डित जी लखनऊ सेन्ट्रल जेल भेजे गए। जेल-प्रवेश से पहिले पण्डित जी ने यह सन्देश दिया था—

पण्डित जी का सन्देश

"अपनी योग्यता के अनुसार आप लोगों के साथ शक्ति भर जन्म-भूमि की सेवा करते हुए अब मैं अपने इकलौते पुत्र के साथ जेल जा रहा हूँ। इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम शीघ्र ही स्वतन्त्र भारत में एक-दूसरे से मिलेंगे। आप लोगों से बिदा लेते समय मुझे केवल एक ही बात कहनी है, और वह यह है कि जब तक भारत में स्वराज्य की स्थापना न हो जाय, तब तक आप लोग अहिंसात्मक असहयोग का युद्ध जारी रक्खें और हजारों की तादाद में वालण्टियर भरती करें। और स्वतन्त्रता के उस एक मात्र मन्दिर—जेल—की ओर, स्वतन्त्रता के पुजारी की तरह प्रस्थान करें, जो अभी तक नौकरशाही के कलुषित हाथों से अपवित्र नहीं हुआ है। उस पवित्र तीर्थ की ओर अविराम गति से बढ़ते जाओ और दिन-प्रतिदिन यात्रियों की संख्या बढ़ाते जाओ, बन्दे !"

पं० श्यामलाल नेहरू तथा पण्डित मोहनलाल नेहरू को छः-छः माह की सादी क़ैद और सौ-सौ रुपए जुर्माने की सजा दी गई थी।

महात्मा जी के प्रशंसात्मक शब्द

इस मुक़दमे का वर्णन समाप्त करने के पहले हम ८वीं दिसम्बर सन् १९२१ ई० के 'यङ्ग-इण्डिया' में से महात्मा गाँधी के वे शब्द उद्धृत करना अति आवश्यक समझते हैं, जो उन्होंने पं० मोतीलाल के सम्बन्ध में लिखे थे।

"मुझे आशा न थी कि पण्डित जी गिरफ़्तार हो जायँगे। हम अपने आपस के वाद-विवाद में पण्डित मोतीलाल जी से कहा करते थे कि वे सब नेताओं के अन्त में गिरफ़्तार किए जायँगे, सर हारकोर्ट बटलर की उनके ऊपर हाथ साफ़ करने की हिम्मत न पड़ेगी। यदि वे गिरफ़्तार होंगे, तो उनके प्रिय मित्र महमूदाबाद के राजा साहब अपने पद से त्याग-पत्र दिए बिना न रहेंगे। मैं सर हारकोर्ट बटलर के इस साहस से चकित हूँ। पण्डित जी बड़ी आपत्तियाँ झेल कर कार्य कर रहे थे। अपने पुराने शत्रु दमा से वे सदैव युद्ध करते रहे हैं। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जितनी मिहनत वे इस समय इस अभागे देश के लिए कर रहे थे, उतनी उन्होंने न तो कभी अपने मवक्किलों के लिए की है और न पञ्जाब के हत्याकाण्ड ही के समय की है। जब कभी मैंने उनसे आराम करने के लिए कहा है, तब उन्होंने साफ़ इन्कार कर दिया। मुझे अब इस बात का हर्ष है कि उन्हें अपने दिन-रात के उस परिश्रम से आराम मिल जायगा, जिसके कारण वे दिन प्रतिदिन घुल रहे थे।"

* * *

भिखारिन

[श्री० पृथ्वीपाल सिंह जी, बी० ए० सम्पादक 'नवीन-भारत']

गोधूली की बेला थी। मैं अपनी हवेली के सामने एक खाट पर लेटा हुआ किसी उधेड़-बुन में पड़ा हुआ था। बीच-बीच में कुछ गुनगुना भी उठता था। कुछ अर्ध-निद्रित सी अवस्था थी। मुझे अपनी सुध-बुध न थी। मानो विचारों के आल-बाल में खोगया था। याद नहीं, मैं किस ध्यान में मग्न था। एकाएक मेरी तल्लीनता भङ्ग हुई। मैंने आँखें फाड़ कर देखा—सामने एक मैली-कुचैली स्त्री खड़ी है। उसके तन पर एक फटी चोली और एक फटा हुआ लहँगा है। बग़ल में एक छोटी सी पोटली दबी है। यह एक दरिद्र भिखारिन है। उसके मुख पर दीनता और वेदना के चिन्ह स्पष्ट अङ्कित हैं।

"बाबू साहब, आपके बाल-गोपाल जिएँ, आप दूधों नहाओ पूतों फरो, भूखी भिखारिन को कुछ भोजन करा दो!" यह कहती हुई वह जमीन पर बैठ गई और बग़ल से अपनी पोटली निकाल कर दिन भर की कठिन परिश्रम की कमाई के दाने अलग-अलग करके बाँधने लगी। उस पोटली के कोनों में भिन्न-भिन्न चीज़ें बँधी थीं—थोड़े से धान, मुट्ठी भर आटा और कुछ चने थे। वह अपनी पोटली सँभाल ही रही थी कि उसकी नन्हीं सी धूल-धूसरित बालिका उछलती-कूदती उसके पास आ पहुँची।

वह भिखारिन की दुधमुँही बालिका मानो अपने को राजकन्या समझती थी। वह संसार की चिन्ता से मुक्त थी। उसे अपनी माता के विदीर्ण हृदय की विषम व्यथा का कुछ भी ज्ञान न था। उसे क्या पता था कि उसकी दुखिया माँ को उसके लिए घूँट भर दूध का प्रबन्ध करने के लिए किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता था। संसार उसके लिए खेल था और सृष्टि के जीव खिलौने। वह भोली-भाली बालिका हँसती-फुदकती हुई आई और माँ की गोद से चिमट गई। माँ ने उसकी ओर स्नेह से देखा और कलेजे से लगा लिया।

भिखारिन के मुख-मण्डल की आकृति एकाएक बदल गई। उसके नेत्र डबडबा आए। माथे पर पसीने की बूँदें सी झलक उठीं। उसने बालिका को और भी कस कर कलेजे से चिपका लिया और उसके मुख से अनायास ही एक आह सी निकल गई। कदाचित पूर्व दिनों की स्मृतियों ने उसकी यह दशा कर दी थी। माँ को विक्षुब्ध देख कर बालिका भी सुस्त हो गई और गोद से अलग हो, मुख में अपने हाथ का अँगूठा देकर कुछ विचार सी करने लगी। थोड़ी देर के बाद पोटली सँभाल कर भिखारिन भी उठ कर खड़ी होगई और मेरी ओर देख कर भिक्षा की याचना करने लगी! बालिका भी क्षण भर में माता का दुःख भूल गई और उसके फटे लहँगे का एक सिरा पकड़ कर दोनों पैरों को जमीन पर पटकती हुई 'अम्माँ एक पैसा दे दे, अम्माँ एक पैसा दे दे' की ध्वनि से उसे परेशान करने लगी। पहले तो माँ ने उसे झिटिक दिया, परन्तु उसे सिसकते देख कर फिर पुचकारने लगी। आह! वह छोटी सी गुड़िया ही तो उस अनाथा की एकमात्र जीवनाधार थी। उसका सिसकना भला वह कैसे देख सकती थी! उसने फटी हुई ओढ़नी के कोने से बँधा हुआ एक पैसा खोल कर उसे दे दिया और बोली—"देखो, कहीं फेंक न देना!" पैसा पाकर बालिका प्रसन्न हो गई और भिखारिन फिर मेरी ओर मुख़ातिब होकर बोली—"बाबू जी, भगवान आपका भला करें, कुछ खाने को दिलवा दीजिए।

* * *

भिखारिन की यह दयनीय दशा देख कर मेरा हृदय द्रवित हो उठा। एकाएक न जाने क्यों मेरा मन उसकी ओर खिंच गया। मुझसे रहा न गया। मैंने प्रश्न किया—क्या तुम हमेशा से भीख ही माँगा करती हो? तुम्हारे कोई और नहीं है?

"कोई नहीं, बाबू जी!" यह कह कर वह फिर वहीं बैठ गई। मेरे सहानुभूति-सूचक प्रश्नों ने मानो उसे अतीत की याद दिला दी और वह रुँधे हुए कण्ठ से कहने लगी—"ग़रीब-परवर, मेरे सब दिन ऐसे ही नहीं थे। मैंने भी संसार का सुख देखा है। परन्तु आप उसे सुन कर क्या कीजिएगा। मुझे खाने को दिलवा दीजिए।"

मेरा मन न जाने क्यों उसकी कहानी सुनने के लिए आतुर हो उठा था। मैंने कहा—तुम्हें भिक्षा मिलेगी, घबराओ नहीं, परन्तु अपना हाल तो तुम्हें सुनाना ही पड़ेगा।

मेरा अतिशय आग्रह देख कर उसने कहा—अच्छा तो सुनिए—"आज से तीन वर्ष पहले मैं यहाँ से निकट ही रायपुर ग्राम में रहती थी। मेरे पति की अच्छे किसानों में गणना थी। दो-तीन सौ बीघे की खेती होती थी। हमारे घर में गाएँ, भैंसें थीं, बैल की जोड़ियाँ थीं—क्या नहीं था बाबू जी? काम पड़ने पर हमारे घर की बहली और घोड़े दारोग़ा साहब के लिए भेजे जाते थे। गाँव में जब दारोग़ा साहब या तहसीलदार साहब आते थे, तो उनका डेरा हमारे ही मकान के सामने पड़ता था। मैं स्वयं दूध-दही और राब के कटोरे भर-भर कर अपने हाथों से उन लोगों के लिए भेजती थी। सरकारी अहलकारों की आवभगत दामादों की तरह की जाती थी।"

यह कहते-कहते भिखारिन का गला भर आया और वह सिसक-सिसक कर रोने लगी। मानो उसके घावों के टाँके टूट गए, उसके हृदय में कसक सी होने लगी। मैंने उसे बहुत समझाया—बड़ी सान्त्वना दी। हृदय पर पत्थर रख कर वह फिर अपनी करुण कहानी सुनाने लगी—"हुज़ूर, मेरे सब दिन ऐसे ही नहीं रहे × × × हाँ, मेरे पति जी तनिक हेंकड़ तबियत के थे। यों तो सबसे भाई की तरह मिलते थे, अपने घर पर आए हुए अतिथि-सत्कार के लिए अपना कलेजा तक निकाल कर रख देते थे। बातें करते थे, तो ऐसा प्रतीत होता था कि उनकी वाणी में मिश्री घुली हो। उन्हें अपनी इज़्ज़त का बड़ा ख़्याल था। वे अपने आत्म-गौरव के लिए, अपनी मान-रक्षा के लिए सदैव प्राणों की बाज़ी लगा देने को तैयार रहते थे। बस यही उनके लिए काल हो गया। वे किसी की तिरछी भौंहें देखते ही जामे से बाहर हो जाते थे और फ़ौरन उसकी आँखें निकाल लेने को तैयार हो जाते थे। हा! पति के स्वभाव के इस छोटे से दोष ने मेरी यह अवस्था कर दी। परन्तु छिः! मैं उनको क्यों दोष दे रही हूँ? वे तो स्वर्ग में बैठे हैं—क्या स्वर्ग बिना पुण्य ही के पा गए? दोष तो है मेरे भाग्य का!"

भिखारिन ने एक गहरी साँस ली और अपने आँचल के एक कोने से मुँह पोंछ कर फिर कहने लगी। हाँ, तो हुज़ूर सुनिए—"उन दिनों की बात है। आपको भी याद होगा—इधर एक भीषण अकाल पड़ा था। जो कुछ बोया गया था, सब बिला गया। अकाल क्या पड़ा, भगवान ने हमारे लिए काल भेज दिया। घर में एक दाना अन्न भी बाक़ी न रह गया था। काल मुँह पसारे हमारी ओर ताक रहा था। महाजन का सूद नित्य बढ़ता चला जाता था। बस उसी समय से हम लोगों पर मुसीबत के पहाड़ टूटने लगे। जमींदार के आदमी पर आदमी आने लगे, तक़ाज़े पर तक़ाज़े होने लगे। परन्तु हम क्या करते? घर में खाने को मुट्ठी भर दाने भी न थे। कहाँ से रुपए लाते, और कैसे लगान चुकाते।

"एक-एक घड़ी पहाड़ सी हो रही थी। घर के गोरू-बैल सबकी पसलियाँ शीशे की तरह झलकने लगी थीं। पतिदेव और मैं क्षुधा-पीड़ित बिना अन्न-जल ही घर में पड़ी अपनी क़िस्मत को रोया करती थी। अपनी इज़्ज़त के ख़्याल से किसी के सामने हाथ पसारते भी अच्छा न लगता था। गौओं के सूखे हुए स्तनों से दो-चार घूँट दूध निचोड़ कर मैं अपनी इस प्यारी बालिका का गला सींच दिया करती थी। रो-रोकर दुखमय जीवन की घड़ियाँ काट रही थी। एक दिन की बात है कि जमींदार साहब अपने दल-बल सहित चढ़ आए और लगे गाली-गलौज करने। पतिदेव ने कभी किसी की ऐंठ नहीं सही थी। झट हाथ में कुल्हाड़ी ले, लाँग चढ़ा, घर के बाहर निकल आए और ललकार कर बोले—'ख़बरदार! मुँह सँभाल कर बोलना, नहीं तो अभी सारा नशा उतार दूँगा। मैं तुम्हारी जमींदारी में बसा हूँ, परन्तु मैंने तुम्हारे हाथ अपनी इज़्ज़त-आबरू नहीं बेच दी है!' पति के सर पर ख़ून सवार देख कर जमींदार साहब और उनके पिट्ठुओं की नानी मर गई। जमींदार साहब गुर्राते तथा मूँछों पर ताव देते और उनके नौकर-चाकर ओंठ चबाते, लाठी घुमाते वापस चले गए। परन्तु

कहते गए कि अच्छा, इस हेकड़ी का मज़ा मिलेगा।

"मेरा हृदय काँप उठा। मुझे अनर्थ की आशङ्का होने लगी। उधर पतिदेव पर क़र्ज़ा भी पाँच सौ रुपए से ऊपर चढ़ चुका था। महाजन का आदमी कई बार आ चुका था। ज़मींदार के उकसाने पर उसने सूद दर सूद लगा कर नालिश कर दी। यह समाचार पाते ही पतिदेव के हाथ-पैर फूल गए। उन्होंने चिन्ता में अन्न-जल भी त्याग दिया!"

भिखारिन कहते-कहते हाँफ गई। आह! उस ग़रीबिनी में इतना दम भी न था। तनिक रुक कर फिर कहने लगी "बाबू जी, ज़रा दम मार लूँ। मेरी आँखों के सामने बीती हुई घटनाओं की दिल दहला देने वाली तसवीरें नाच रही हैं। सच है, जब बुरे दिन आते हैं तो चारों ओर से मुसीबतें टूट पड़ती हैं। हम ग़रीबों पर महाजन और ज़मींदार के कोप की आग तो बरस ही रही थी, कि उधर भगवान भी रूठ गए। गाँव में प्लेग फैल गया। चूहे गिरने लगे, आदमी मरने लगे। सारे गाँव के लोग घबरा उठे। जोखू का जवान लड़का, जो सुबह को हँसता-खेलता दिखाई दे रहा था, सन्ध्या को ताऊन ने डँस लिया। बेचारा अभी ज़िन्दगी का कुछ सुख भी न भोगने पाया था, एकाएक चल बसा। न मालूम कितनों के जवान जवान लड़के और औरतें उस बीमारी में उठ गईं। कहाँ तक कहूँ, उस ताऊन ने, न मालूम कितने घर उजाड़ दिए। लोग भागने लगे, गाँव साँय-साँय करने लगा। परन्तु मेरे पतिदेव ने यमराज को भी कुछ न समझा। उन्होंने गाँव न छोड़ा। सवेरे बरोठे में बैठे आग ताप रहे थे। एकाएक कड़ाके का ज्वर चढ़ आया। गिल्टी भी निकल आई। मैं धक् से रह गई। मेरी आँखों के सामने अँधेरा सा छा गया, तितलियाँ सी उड़ने लगीं। मैंने रो-रोकर सारा दिन काट दिया, पहाड़ सी रात आई और वह भी रुला-कलपा कर चली गई। पति का ज्वर बढ़ता ही गया। वह रह-रह कर कराह उठते थे। बीच-बीच में कभी-कभी जल माँगते थे। मैं उठ कर 'आबख़ोरे' से एक घूँट जल उनके मुख में डाल देती थी। एकाएक वेदना बढ़ गई, उन्होंने कराहते हुए जल माँगा। मैंने तुरन्त आबख़ोरा उठा कर उनके मुख से लगा दिया। पानी मुँह में गया, परन्तु फिर ओठों के किनारे से बह कर बाहर हो गया। आँखें डगमगाईं और ऊपर टँग गईं। मेरी झोपड़ी का टिमटिमाता हुआ दीपक बुझ गया!!!"

भिखारिन एक चीख़ मार कर रो उठी। उसके नेत्रों से मानो करुणा का समुद्र उमड़ पड़ा—आँसुओं की झड़ी लग गई। मैंने सान्त्वना दी। वह आँसू पोछती हुई फिर अपनी राम-कहानी कह चली—"पति का शव एक ओर पड़ा था और दूसरी ओर मैं अचेतनावस्था में पड़ी थी। सुबह हुई, धूप छप्पर पर आ गई। मैं होश में आई तो देखा कि मेरी नन्हीं सी बालिका पति के मुख के पास बैठी, बार-बार उनके संज्ञाशून्य ओठों को अपनी पतली उँगलियों से हिला-हिला कर अपनी तोतली बोली में 'दद्दा! दद्दा!' पुकार रही है। दद्दा को वह नींद से जगा रही थी, परन्तु वह जगते न थे। मैंने झपट कर बच्ची को कलेजे से चिपका लिया और ढाढ़ें मार रोने लगी! बालिका भी 'दद्दा! दद्दा!' कह कर बिलखने लगी। कदाचित उसको अन्तरात्मा का रहस्य मालूम हो गया था। आह, मेरा घर श्मशान-भूमि बन रहा था। झोपड़ी की प्रत्येक वस्तु जैसे काटने को दौड़ रही थी।

"इसी बीच में मैंने देखा कि मेरे घर के अन्दर ज़मींदार, महाजन, थानेदार, कुर्क़अमीन और कई सिपाही घुसे चले आ रहे हैं! थानेदार साहब मेरे पति को गिरफ़्तार करने आए थे—पति ने ज़मींदार को कुल्हाड़ी की पैनी धार दिखाई थी न; और कुर्क़अमीन आए थे, घर की सम्पत्ति कुर्क़ करने! हाय, मनुष्यत्व! तेरा कहाँ तक पतन होगा? कौन जाने! क्रूर ज़मींदार ने पति के शव को देख कर एक विकट अट्टहास किया और यह कहते हुए कि 'दुष्ट बेअदबी और बदमाशी का फल तुरन्त ही पा गया' दारोग़ा जी को साथ ले, वापस चले गए।

अधिकांश अभागे भारतीय किसानों से लगान कैसे वसूल किया जाता है?

किसानों के रक्त से सने हुए पैसों का अधिकांश ज़मींदार कैसे उपयोग करते हैं।

"मैं उस समय पागल हो रही थी। मुझे यह सब एक भयङ्कर स्वप्न सा नज़र आ रहा था। मेरी इस विपत्ति में मुझे कोई सान्त्वना देने वाला न था। मेरे घोर आर्त्तनाद से भी किसी का हृदय न पसीजता था। कदाचित मनुष्य रुपए-पैसे के मद में क्रूरता की मूर्ति बन जाते हैं। ग़रीबों के गले पर छुरी फिरते देख उन्हें मज़ा आता है, उनका सर्वस्व लुटते देख उन्हें सुख होता है। उफ़!!

"मैं पति के शव से अपनी खोपड़ी पटक रही थी और कुर्क़अमीन मेरी गृहस्थी के शेष-चिन्हों को भी मिटा रहा था।......हाय! मेरे देखते-देखते मेरे प्राणाधार को उस दैव ने छीन लिया, मेरे देखते ही देखते ज़ालिमों ने मेरी घर-गृहस्थी उजाड़ दी। तहसील के तिलङ्गे घर की एक-एक चीज़ उठा ले गए—गोरू-बैल, खटिया-मचिया, सब लाद ले गए। मैं लुट गई, परन्तु भगवान का हिया न पसीजा। वह शिव की 'बटिया' जिन पर मैं आजीवन फूल-पत्ती और जल चढ़ाती रही, बैठे टुकुर-टुकुर ताका की। वे कृतघ्न नर-पिशाच, जिन्हें मैं अपने हाथों से भर-भर कटोरे दूध-दही पिलाती थी, मेरे लिए सर्प से भी अधिक ज़हरीले साबित हुए। मेरी रही-सही पूँजी अपने हाथों से ढो-ढोकर उठा ले गए। बाबू जी, संसार से मुझे उसी दिन से घृणा हो गई और भगवान पर से मेरा विश्वास उठ गया। पति के साथ ही मैंने, उन शिव की बटियों को भी सदा के लिए जल-मग्न कर दिया। जिसने दुःख में साथ न दिया—दबे हुए को ही सदा दबाया—ऐसे संसार को धिक्कार है और ऐसे भक्तवत्सल कहाने वाले भगवान को दूर ही से प्रणाम है। आह! इस संसार में बेचारे ग़रीबों का कोई नहीं! भगवान भी पूँजीपतियों का ही पक्ष लेता है—उन्हीं की क्रूरता का पोषक है!"

मैं भिखारिन की बातें ध्यान से सुनता रहा। उसकी प्रत्येक बात में कैसी करुणापूर्ण हृदय-विदा-

एक सचाई थी ! कैसी वीभत्सता थी ! समाज के विरुद्ध कैसा भयङ्कर अभियोग था !

वह तनिक ठहरी और दम मार कर फिर कहने लगी—"मैं थी, मेरी यह कन्या थी और वह सुनसान झोपड़ी थी। कभी मेरे घर में दूध की नदी बहती थी और आज जल की एक बूँद के लिए मुझे औरों का मुँह देखना पड़ रहा था। मैं अपनी पुत्री को गोद में लिए एक कोने में चुपचाप पड़ी रहती थी। अड़ोस-पड़ोस के लोग चना-चबेना दूर से डाल जाते थे, उसी को खा-पीकर मैं इस हत्यारे पेट की आग बुझा लेती थी। जिन हाथों से मैं सैकड़ों को भर-भर पेट भोजन कराया करती थी, आज उन्हीं हाथों में लोग दूर से भीख डाल कर चले जाते थे। हा ! इस भाग्यहीना की विपत्तियों की करुण-कहानी का यहीं अन्त नहीं हो गया, अभी मुझ अबला के विदीर्ण हृदय पर एकाध और प्रहार होने बाक़ी थे। क्रूर ज़मींदार ने मुझे धन-धरती-हीन करके ही कल न लिया, उसे मेरा जीवन भी असह्य था। न मालूम उसने अपने हृदय में क्या ठान रक्खा था।

"एक दिन की बात है, मैं अपनी टूटी-फूटी झोपड़ी के बरोठे में पयाल पर अपनी पुत्री को कलेजे से चिपकाए सो रही थी। सहसा मुझे ऐसा आभास हुआ मानो मेरी झोपड़ी में आग लग गई हो। मैं मारे भय के काँप उठी। इसके बाद मैं चिल्लाई और झट अपनी कन्या को लेकर बरोठे के बाहर आ गई। मैं गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रही थी। मेरी उस करुण चीत्कार की वेदनायुक्त ध्वनि गगन-मण्डल में बारम्बार प्रतिध्वनित हो रही थी। ऐसा मालूम होता था कि मेरा घर जलते देख, प्रकृति भी मुझसे ठठोली कर रही हो। क्षण भर में वह झोपड़ी धूल-धूसरित हो गई—केवल राख का एक ढेर शेष रह गया।

"जिस पति को मैं इतना प्यार करती थी, वह इन्हीं आँखों के सामने जल कर राख के ढेर में परिणत हो गया; जिस घर को मैं ख़ूब सँवार कर रखती थी, जिस हवेली से मैं इतना मोह करती थी, वह इन्हीं आँखों के सामने भस्म होकर ख़ाक हो गई; गृहस्थी की जिन वस्तुओं पर मेरी बड़ी ममता थी, वे मेरे देखते-देखते लुट गईं। आज वह क्रूर ज़मींदार फल-फूल रहा है, वह महाजन पल्लवित हो रहा है। वे बसे हैं, हमें उजाड़ कर। वे मोटे हो रहे हैं, हम ग़रीबों का रक्त पी-पीकर। मिट जाय संसार, नाश हो इन अधम अत्याचारियों का !......हा ! कब तक यह अन्धेर मचता रहेगा?.........क्या इसका कभी अन्त न होगा?"

वह भाग्यहीना अपनी करुण कहानी समाप्त करके उठ खड़ी हुई। और बोली—बाबू जी, कुछ भीख दिला दो, तुम्हारे बाल गोपाल जिएँ।

मेरा हृदय करुणा से उमड़ आया। मैं व्याकुल हो उठा। मैंने जेब से एक रुपया निकाल कर भिखारिन के सामने फेंक दिया। वह निराश होकर बोली—बाबू जी, मेरे पास रुपए के पैसे कहाँ, जो मैं शेष पैसे वापस करूँ? न हो तो मुट्ठी भर अन्न ही दिला दो।

मैंने कहा—यह पूरा रुपया ही ले जाओ। तुम्हें जब इच्छा हो, यहाँ से पैसे ले जाया करो; भूखी हुआ करो, तो भोजन कर जाया करो। यह घर अपना ही समझो।

उसने करुणापूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा। उसका चेहरा खिल उठा। एक मनुष्य में, जिससे वह घृणा करती थी, आज अचानक सहानुभूति, स्नेह, और ग़रीबों के प्रति दया-भाव देख कर उसे विस्मय हुआ। उसने मेरी ओर आर्द्र नेत्रों से देखा। उसके नेत्रों में उसका हृदय झलक रहा था। इतने में उस सुन्दर सलोनी छोटी सी बालिका ने दौड़ कर वह चाँदी का टुकड़ा उठा लिया। उसने ग़ौर से उलट-पुलट कर देखा और अपने धूल-धूसरित फटे कुरते के जेब में रख लिया।
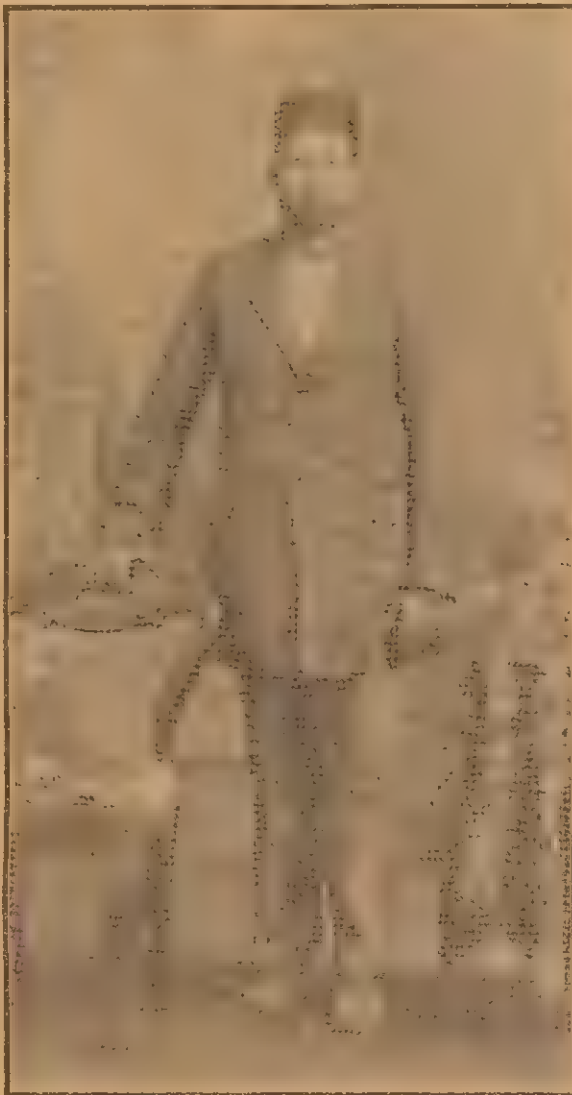
श्री० अब्दुल हमीद ख़ाँ पठान

आपने ईस्ट अफ़्रिका में अब तक कुल १२२ शेरों का शिकार किया है

भिखारिन बोली—देख, खो मत देना।

* * *

सूर्य अस्त हो चुका था। आकाश पर तारे इधर-उधर जुगनू की तरह झिलमिला रहे थे। वह दुखिया अपने भाग्य को सराहती और मुझे तरह-तरह के आशीर्वाद देती, सामने की पगडण्डी पर चली जा रही थी, और पीछे-पीछे उसकी बालिका, वायु-मण्डल में भाग्यहीना भिखारिन के अन्तिम शब्द—"कब तक यह अन्धेर मचता रहेगा......क्या इसका कभी अन्त न होगा?" अब भी गूँज रहे थे।

* * *

थोड़े जीवन-सूत्र

[महात्मा टॉल्स्टॉय]

भलाई करते-करते यदि हमारे किसी समय के सङ्कल्प पूरे न हों तो विश्वास रखना चाहिए कि वे सङ्कल्प दयाघन प्रभु के लिए किए गए थे, और वह प्रभु त्रुटियों को माफ़ करता है।

❀

आपकी निराशा का कारण यही है कि आप अपने सुख के लिए ही जीना चाहते हैं।

❀

अपने सुख के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर के लिए जीना चाहिए। जीवन ईश्वर ने दिया है, आप ईश्वर के लिए जीना सीखें, बस आपके दुःख दूर होंगे, मार्ग सरल बनेगा।

❀

मनुष्य ईर्ष्या से अन्धा बनता है। दूसरों के पाप अपनी आँखों के सामने रखता है, पर अपने पाप पीठ पीछे।

❀

दूसरों के पाप क्षमा करो, यदि ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे पाप माफ़ न होंगे।

दूसरों के पाप प्रकट न करो; ईश्वर तुम्हारे पाप क्षमा करेगा।

❀

मनुष्य अपनी या दूसरे की आवश्यकताओं को समझने में असमर्थ है। इसे तो ईश्वर ही जानता है।

❀

तुम अपनी चिन्ता छोड़ो, तभी तुम्हारा हृदय साफ़ होगा और दूसरों के हृदय को साफ़ कर सकोगे।

❀

तुम स्वयं मौत का भय छोड़ो और ईश्वर में जीवन को दृढ़ बनाओ तभी तुम दूसरों के हृदय जीत सकोगे।

❀

जब तुम्हारा हृदय ज्वालाएँ उगलता होगा, तभी तुम दूसरों के हृदय में जाग्रति पैदा कर सकोगे।

❀

बुराई आकर्षक है, पर अच्छाई अमर !

❀

हँसी की बात नहीं है; यह जीवन का एक सत्य है—मनुष्य मूर्ख है, यदि अपना नुक़सान देख कर रोता है; नुक़सान होने पर ही आत्मा को विचार करने और ईश्वर को पूजने का समय मिलता है; और सत्य का दर्शन भी प्रभु तभी कराता है।

❀

जीवन और मरण ईश्वर के अधीन हैं; हम जीते हैं और सशक्त हैं, तब तक में हमें सत्कार्य कर डालने चाहिएँ।

❀

यह एक ईश्वरीय नियम है—अपना अपने पास रखना और दूसरे की आमदनी से लालच में न फँसना।

❀

एक मूर्ख ने कहा—जिसे जो चाहिए, उसे वह ले जाने दो।

❀

सिपाही से मनुष्य मरते हों तो सिपाही की ज़रूरत नहीं। पैसे से दूसरे की चीज़ों पर अधिकार मिलता हो तो पैसे की आवश्यकता नहीं।

❀

इराक़ की गुरु-दक्षिणा

ब्रिटिश-कूटनीति की वेदी पर इराक़ की स्वतन्त्रता का बलिदान

[डॉक्टर "पोल खोलानन्द भट्टाचार्या" एम० ए०, पी० एच-डी०]

गत महायुद्ध के बाद वारसाइल की सन्धि हुई। इस सन्धि में विजयी मित्र-दल ने जर्मनी तथा उसके सहयोगियों को ख़ूब कसा। युद्ध छेड़ने का सारा अपराध जर्मनी के सिर मढ़ा गया। विजयी दल ने कहा कि जर्मनी ही संसार की शान्ति का सब से बड़ा वैरी है। इसी ने यह युद्ध आरम्भ किया, जिससे हम ऐसे शान्ति-प्रिय देशों को भी न्याय की रक्षा के लिए रणाङ्गण में उतरना पड़ा। हमारे साथियों को इस युद्ध में बहुत हानि उठानी पड़ी है। इसलिए न्याय की दृष्टि से यह उचित है कि जर्मनी हमारी इस क्षति को पूरा करे। युद्ध-पीड़ित, शक्तिहीन जर्मनी ने गर्दन झुका कर सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। उसके लिए इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग ही न था। विपक्षी दल का दूसरा बलिष्ठ राष्ट्र टर्की था। मित्र-दल ने टर्की की सत्ता का भी विनाश करने का उपाय ढूँढ़ निकाला। उन्होंने कहा कि टर्की अपने सैनिक बल द्वारा निकटवर्ती समस्त निर्बल देशों पर अपनी सत्ता क़ायम किए हुए है, और इस तरह उनको दासता के बन्धन में कसे हुए है। संसार की शान्ति तथा स्वतन्त्रता के लिए यह आवश्यक है कि इन देशों को टर्की के पञ्जे से छुड़ा कर इन्हें स्वतन्त्रता प्रदान की जाय। बड़े वाद-विवाद के बाद अन्त में, सन् १९२३ में, टर्की ने भी विजयी दल की माँग स्वीकार कर ली थी। युद्ध के पूर्व यूरोप तथा एशिया के अधिकतर मुस्लिम राष्ट्र टर्की का सार्वभौमत्व स्वीकार करते थे। परन्तु सन् १९२३ के बाद इस सार्वभौमत्व का अन्त हो गया। यही नहीं, युद्ध के पूर्व जो अरबी देश टर्की के राष्ट्र में शामिल थे, युद्ध के पश्चात वे भिन्न-भिन्न भागों में बाँट दिए गए और इन्हें भिन्न-भिन्न नाम दिए गए। ये ही वे निर्बल देश थे, जो टर्की के बन्धन में पड़े हुए थे। अब विजयी दल ने इन्हें शिक्षित तथा प्रबल बनाने का भार अपने ऊपर लिया। वे इनके गुरु बने। फ्रान्स ने कई देशों को शिक्षा देना स्वीकार किया। इङ्गलैण्ड ने भी इस "पुण्य कार्य" में हाथ बँटाया और संसार का भार हलका किया। क्या करें, परमात्मा ने संसार को सभ्य बनाने का ठेका, ज़बर्दस्ती उन्हें दे दिया है। उन्होंने मिश्र को सभ्यता की शिक्षा दी है, अफ़्रिका को सभ्य बनाया है, और भारत को वे सभ्य बना ही रहे हैं। फिर इस बार कैसे चूक सकते थे। परन्तु इस विषय में एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है। गुरु जी दक्षिणा गहरी वसूल करते हैं। इस गुरु-दक्षिणा के चुकाने में इन देशों को अपना समस्त धन तथा सारी स्वाधीनता गुरु जी के पूज्य चरणों में अर्पण कर देनी पड़ती है।

अब हम यहाँ इन्हीं गुरु जी के चेले की करुण-कथा का वर्णन करेंगे। युद्ध से पहिले इराक़ टर्की के अन्तर्गत एक प्रान्त था। मित्र-दल ने वावेला मचाया कि इराक़ दासता के बन्धन में पड़ा हुआ है और उसे स्वाधीन करना हमारा धर्म है। अतएव सन् १९२३ की सन्धि के अनुसार टर्की ने इराक़ को मित्र दल के हाथों में सौंप दिया और अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ की अनुमति पाकर इङ्गलैण्ड ने इस असभ्य तथा निर्बल चेले को सुशिक्षित, बलवान तथा स्वतन्त्र बनाने का भार अपने कन्धों पर लिया और ख़ूब शिक्षा दी। यहाँ तक कि उनकी शिक्षा से इराक़ शीघ्र ही घबरा उठा और उसने गुरु जी के पञ्जों से बचने के लिए आन्दोलन उठाया। गुरु जी को इस धृष्ट चेले की माँग स्वीकार करनी पड़ी और इसके फलस्वरूप ३० जून, सन् १९३० में इङ्गलैण्ड तथा इराक़ के बीच एक सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार ब्रिटिश-सरकार कहती है कि "हमारी शर्तें स्वीकार करने पर हम सन् १९३२ में इराक़ को अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ का सदस्य बनाने को तैयार हैं।" यह क्या? इङ्गलैण्ड तो इराक़ को स्वतन्त्र बनाने वाला था! स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए अब वह विदेशियों की शर्तें क्यों स्वीकार करे? परन्तु यह भी तो सोचिए कि इङ्गलैण्ड ने इराक़-निवासियों को शिक्षित तथा सभ्य बनाने में जो परिश्रम किया है, उसके लिए बेचारे को कुछ गुरु-दक्षिणा भी तो मिलनी चाहिए। इन शर्तों को स्वीकार करके इराक़ गुरु-ऋण से मुक्त हो जायगा। अब ज़रा वह गुरु-दक्षिणा क्या है, यह भी सुन लीजिए।

इसकी पहिली शर्त तो यह है कि विदेशी नीति के सम्बन्ध में ईराक़ सदैव अपने पूज्य-गुरु इङ्गलैण्ड से "सलाह" लेता रहेगा। वास्तव में इस "सलाह लेने" का ख़ुलासा मतलब यह है कि इस सन्धि के अनुसार इराक़ को अपनी विदेशी नीति का विनियमन इङ्गलैण्ड के हाथों में सौंप देना पड़ेगा। इस सन्धि के पूर्व भी ऐसी ही सन्धियाँ हो चुकी हैं, जिनमें इङ्गलैण्ड ने केवल सलाह लेने की शर्त रक्खी थी, परन्तु यह देखा गया है ऐसी सन्धि पर हस्ताक्षर करने के कारण निर्बल दल को हरदम सबल दल की बात माननी पड़ती है। ऐसी दशा में 'सलाह' का वास्तविक अर्थ 'आज्ञा' होता है। सन्धि-पत्र की चतुर्थ शर्त के अनुसार युद्ध छिड़ने पर इराक़ तथा इङ्गलैण्ड को एक-दूसरे की सहायता करनी पड़ेगी। निर्बल इराक़ भला क्यों युद्ध छेड़ने चला, रही बात इङ्गलैण्ड की तो वह तो हर दम युद्ध के लिए कमर कसे रहता है। ऐसे समय में इराक़ को अपनी सारी सैनिक शक्ति, रेल, तार, बन्दरगाह, हवाई-जहाज़ों के स्टेशन तथा अन्य आने-जाने के साधनों द्वारा ब्रिटिश सरकार की सहायता करनी पड़ेगी। इसका वास्तविक अर्थ तो यह हुआ कि इराक़ ब्रिटिश-सरकार का सार्वभौमत्व स्वीकार करे तथा उसकी आज्ञा का पालन करता रहे। जब-जब ब्रिटिश सरकार युद्ध छेड़ेगी, तब-तब इराक़ को बिना कुछ कहे-सुने उसकी सहायता करनी पड़ेगी। ब्रिटिश सरकार की विदेशी नीति में इराक़ का कुछ भी हाथ नहीं है। इन विषयों में ब्रिटिश सरकार उसकी सलाह कभी न मानेगी। परन्तु तब भी इराक़ को ब्रिटिश-सरकार की विदेशी नीति का समर्थन करना पड़ेगा, चाहे वह न्याययुक्त हो या अन्यायपूर्ण हो। क्या इतने वर्षों की शिक्षा के बाद इङ्गलैण्ड ने इराक़ को यही स्वतन्त्रता दी है? इराक़ पहिले टर्की का भाग था। उसके शासन में उसका सब तरह से हाथ था। उसकी नीति के निर्माण में वह भी भाग लेता था। परन्तु विजयी दल की दृष्टि में उस समय वह पददलित था और दासता के बन्धन में पड़ा था। परन्तु यदि वह दासता थी तो उसकी वर्तमान दशा को क्या नाम दिया जावे? यदि गत युद्ध के विजयी दल की वास्तविक भावनाओं का अध्ययन किया जावे, तो मालूम हो जावेगा कि उनका उद्देश्य दूसरा ही था। वे इराक़ आदि छोटे देशों की स्वतन्त्रता के लिए चिन्तित न थे, बल्कि निर्बल अरब-जातियों के प्रशस्त तथा प्राकृतिक सम्पदपूर्ण देशों को देख कर उनके मुँह में पानी आ रहा था और वे चाहते थे कि किसी तरह से इन्हें अपने क़ब्ज़े में कर लें। यहाँ का व्यापार अपने हाथ में लें, इनके देशों के प्राकृतिक धन के स्वामी बनें तथा यहाँ अपना साम्राज्य स्थापित करके अपनी सत्ता तथा शक्ति की वृद्धि करें। ब्रिटिश सरकार की दृष्टि तो इराक़ के ऊपर कई वर्षों से थी। वह चाहती थी कि किसी तरह से वह उसके क़ब्ज़े में आ जावे। इसके दो मुख्य कारण थे।

भारत इङ्गलैण्ड के साम्राज्य का सब से बड़ा भाग है। यही इङ्गलैण्ड के वर्तमान व्यापार, तथा उद्योगों की उन्नति का सब से बड़ा साधन है। यहाँ उसके अधिकतर माल की खपत होती है। यहीं उसके हज़ारों देशवासियों को नौकरियाँ मिलती हैं। व्यापार द्वारा ही भारत के अपार प्राकृतिक विभव को चूस कर वह मोटा हो रहा है। राजनैतिक क्षेत्र में भारत की बलवान सेना तथा सत्ता द्वारा वह संसार का सर्व-प्रतिष्ठित राष्ट्र बना हुआ है। ऐसी दशा में यह आवश्यक है कि वह इङ्गलैण्ड से भारत आने-जाने वाले समस्त मार्गों पर अपना क़ब्ज़ा रक्खे। इसी नीति का अनुकरण करके उसने मिश्र तथा अरब में अपना सार्वभौमत्व स्थापित कर रक्खा है। क्योंकि ये देश भारत के सामुद्रिक मार्ग पर पड़ते हैं और स्वतन्त्रतावस्था में उसके व्यापार को हानि पहुँचा सकते हैं। अन्य देशों की भाँति इराक़ भी आज इसी नीति का शिकार बना है। इराक़ इङ्गलैण्ड तथा भारत के हवाई मार्ग में पड़ता है। इससे भविष्य में आशा है कि हवाई जहाज़ों द्वारा व्यापार स्थापित होने पर वह हवाई मार्गों का केन्द्र होगा। इसीलिए उसे विदेशी राजनीतिज्ञों की कूटनीति का शिकार बनना पड़ा है! फलतः आज भारत की पराधीनता से केवल भारतवासियों को ही कष्ट नहीं पहुँच रहा है, केवल उनको ही उन्नति के मार्ग में बाधाएँ नहीं पड़ रही हैं, वरन् संसार के और भी कई छोटे तथा निर्बल देश ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शिकार बन रहे हैं। भारत की पराधीनता के

कारण एशिया के अधिकतर मुस्लिम देशों को इङ्गलैण्ड का सार्वभौमत्व स्वीकार करना पड़ रहा है। अस्तु, भारत से घनिष्ट सम्बन्ध रखने की दृष्टि से अवसर पाकर इङ्गलैण्ड ने इराक़ का शासन अपने हाथ में लिया। उसने अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। सन् १९३० की सन्धि की पाँचवीं शर्त के अनुसार ब्रिटिश सरकार इराक़ में अपने हवाई जहाज़ों के स्टेशन स्थापित कर सकेगी। इन स्टेशनों के लिए स्थान ब्रिटिश सरकार द्वारा पसन्द कर लिए जावेंगे और हवाई मार्गों की रक्षा के लिए बसरा में उसकी एक सेना भी रहेगी और इस सेना पर इराक़ का किसी तरह का भी कोई नियन्त्रण न होगा। यह इराक़ के समस्त टैक्सों से मुक्त होगी तथा कोई भी अपराध करने पर इराक़ की सरकार इसका मुक़द्दमा अपनी अदालतों में न चला सकेगी। बसरा के अतिरिक्त मोसल तथा हिनाइदी में भी पाँच वर्षों तक ब्रिटिश सेना रक्खी जावेगी। ब्रिटिश सरकार कहती है कि यह सेना इराक़ की स्वतन्त्रता में किसी तरह का भी हस्तक्षेप न करेगी। परन्तु प्रश्न तो यह है कि जब तक विदेशी फ़ौजें, गोले तथा बन्दूकें इराक़ में मौजूद हैं, तब तक क्या इराक़-निवासी वास्तव में स्वाधीनतापूर्वक रह सकते हैं? जब तक बलिष्ठ विदेशी सरकार सङ्गीन लिए हुए उनके सिर पर सवार है, तब तक क्या वे स्वतन्त्रता से अपने देश का शासन कर सकते हैं? कदापि नहीं। जब तक इराक़ में ब्रिटिश सेना उपस्थित है, तब तक उसे इङ्गलैण्ड की आज्ञा का पालन और उसकी नीति का समर्थन करना ही पड़ेगा। इस तरह ब्रिटिश सरकार का कार्य पूर्णतया सफल हुआ। उसे भारत का मार्ग साफ़ मिलेगा और इराक़ किसी तरह से भी इस विषय में हस्तक्षेप न कर सकेगा। जब कभी इराक़ में ब्रिटिश-विरोधी सरकार की स्थापना होगी तो, वह सैनिक बल द्वारा हटा दी जावेगी और ब्रिटिश-नीति-समर्थक सरकार को हर तरह से सहायता दी जावेगी। इराक़ को वश में करने का यही पहला कारण था।

दूसरा कारण था इराक़ का प्राकृतिक धन। इराक़ में मिट्टी के तेल की कई खानें हैं, जिनसे ब्रिटिश पूँजीपति फ़ायदा उठाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त वहाँ अन्य कई प्रकार के उद्योग-धन्धे भी स्थापित किए जा सकते हैं। ब्रिटिश सरकार इराक़ में अपना आर्थिक प्रभुत्व स्थापित करना चाहती थी। अतः टिश कारख़ाने, कम्पनियाँ, बैङ्क तथा अन्य व्यापारिक संस्थाओं द्वारा इङ्गलैण्ड के पूँजीपतियों ने इराक़ को अपने आर्थिक पाश में कस लिया है। तेल का सारा व्यापार "ऐङ्गलो-परशियन ऑइल कम्पनी" के हाथ में है, जिसके मालिक ब्रिटिश पूँजीपति हैं और जिस पर ब्रिटिश सरकार का भी अधिकार है। स तरह इङ्गलैण्ड आज इराक़ की आर्थिक तथा राजनैतिक दशा का भाग्य-विधाता बन बैठा है। प्रत्येक दृष्टिकोण से वह इसका स्वामी है। इतने दिनों की शिक्षा के बाद इराक़ ने यह स्वाधीनता प्राप्त की है। गुरु जी ने पढ़ाया तो ख़ाक नहीं और उलटे गुरु-दक्षिणा में चेले को ही हजम कर गए। ऐसे गुरुओं के पञ्जों से ईश्वर बचावे।

*　　*　　*

रूस का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

राष्ट्र और समाज-विप्लव संसार ने कितने ही देखे। पृथ्वी का इतिहास इन विप्लवों और क्रान्तियों की भीषण कहानियाँ ही तो है। राज्य-लिप्सा ने कितने घर घाले, राज-सिंहासन के लिए कितने रक्तपात हुए—कितनी जातियों और राष्ट्रों का ध्वंस हुआ, इसका ठीक-ठीक पता लगाना कठिन ही नहीं, असम्भव है। कौन कह सकता है कि राज्य-लिप्सा के कारण वसुन्धरा का एक-एक कण कितनी बार नर-शोणित से सींचा नहीं जा चुका है! ऐतिहासिक काल में इधर भी न जाने कितने साम्राज्य बने और चार दिन चमक कर विप्लव के शिकार बन गए। कितने ही प्रबल पराक्रमी राष्ट्र उठे और सारे संसार को अपने विजय-दुन्दुभी से मुखरित कर काल के अनन्त उदर-गह्वर में समा गए। आज न तो फ़्रान्स के बूर्बों-वंशीय निर्मम नरेशों का कहीं पता है और न रूस के अत्याचारी ज़ारों का।

वास्तव में विप्लव प्रकृति का अटल नियम है। राज्य-लिप्सा जब पराकाष्ठा को पहुँच जाती है, अमानुषिक अत्याचार जब सीमोल्लङ्घन कर जाता है, तब ध्वंस और निर्माण के अमोघ अस्त्रों के साथ विप्लव का आविर्भाव होता है और जिस तरह स्पन्दनहीन निस्तब्ध प्रकृति क्षण भर के बाद हवा का एक झोंका खाकर भीषण तूफ़ान के रूप में परिणत हो जाती है, उसी तरह घोर अत्याचारों द्वारा पिसी हुई, आशा और शक्ति-हीन जाति में एकाएक भीषण विप्लव दिखाई देता है। दरिद्रता और निष्पेषण की क्षीणाग्निक्षीण धूम्र-रेखा एक दिन सहसा धधक उठती है और सदियों की सुदृढ़ नींव पर खड़ी अत्याचार और उत्पीड़न की गगन-चुम्बी अट्टालिका को एक क्षण में भस्मीभूत कर डालती है। विप्लव की उत्पत्ति स्वार्थ-परता से होती है। अत्याचार उसका पृष्ठपोषक है। परन्तु अन्त में उसीके द्वारा इन दोनों की कपाल-क्रिया भी हो जाती है। यही विधाता का विधान है। और रूस की क्रान्ति तथा सुदृढ़ ज़ारशाही का पतन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

रूस में पहले-पहल विप्लव का बीज पड़ा था तेरहवीं शताब्दी के अन्त में। इससे पहले वह स्वतन्त्र था। एक दिन एकाएक मुग़लों ने उस पर चढ़ाई कर दी। तत्कालीन सम्राट ने आत्म-रक्षा की बड़ी चेष्टा की। बहुत दिनों तक शत्रुओं का मुक़ाबला करता रहा, परन्तु अन्त में हार गया। उस समय मध्य एशिया में मुग़लों की तूती बोलती थी। उनका प्रखर प्रताप मध्यान की ओर अग्रसर हो रहा था। इसलिए रूस ने बाध्य होकर मुग़लों की अधीनता स्वीकार कर ली और उनका करद राज्य बन गया। इसी तरह प्रायः पूरी शताब्दी बीत गई।

अन्त में एक दिन समय ने पलटा खाया। मुग़ल अपने घरेलू झगड़े में फँस गए। साम्राज्य-विस्तार का उद्योग ज़रा धीमा पड़ गया। रूस को मानो भाग्य-परीक्षा का मौक़ा मिल गया। सौभाग्यवश उस समय रूस के राज्य-सिंहासन पर दिमित्री डन्स्कोई नाम का एक स्वतन्त्रता-प्रेमी तथा प्रजाप्रिय नरेश आसीन था। मौक़ा पाते ही उसने अपने राष्ट्र का सङ्गठन किया और मुग़लों को ललकारा कि या तो युद्ध करो या भले आदमी की तरह यहाँ से चल दो। मुग़ल यह सुन कर आग बबूला हो गए और डन्स्कोई को उसकी गुस्ताख़ी का मज़ा चखाने के लिए फ़ौरन् रूस की ओर चढ़ दौड़े। परन्तु डन्स्कोई की तैयारी काफ़ी थी। उसने बड़ी दिलेरी से शत्रुओं का सामना किया। अन्त में मुग़ल भाग खड़े हुए। रूस पराधीनता के घृणित बन्धन से विमुक्त हो गया।

परन्तु मुग़ल इस अपमान को भूलने वाले न थे। घर लौट कर वे डन्स्कोई से अपने पराजय का बदला लेने की तैयारी करने लगे। इधर डन्स्कोई भी निश्चिन्त न था। उसे यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि मुग़ल चुपचाप रह जाने वाले नहीं हैं। अवसर पाते ही अपने अपमान का बदला कौड़ी-कौड़ी चुका लेंगे। वह तन-मन और धन से भविष्य के लिए तैयारी करने लगा। उसने समस्त रूस को सङ्घबद्ध करके, एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में परिणत कर देने की चेष्टा की। रूसी नवयुवकों को बाक़ायदा समर की शिक्षा दी जाने लगी। सैकड़ों प्रचारक लोगों को स्वतन्त्रता का महत्व समझाने के लिए इधर-उधर भेजे गए। नए-नए हथियारों का संग्रह होने लगा। देखते-देखते दल के दल रूसी नौजवान अपनी प्यारी मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वीरवर डन्स्कोई की पताका के नीचे समवेत हो गए। डन्स्कोई ने उन्हें अच्छी तरह समझा दिया कि समस्त भेद-भाव भूल कर दुर्दिन में देशमात्र की रक्षा करना ही मनुष्य का प्रधान कर्तव्य है। प्राण के मोह में पड़ कर जो इस महान कर्तव्य से विमुख होता है, वह नर नहीं, नर-पशु है! ऐसे निकम्मे मनुष्य जाति के कलङ्क और मातृ-भूमि की छाती के भार-स्वरूप होते हैं!

रूसी युवकों पर डन्स्कोई की इस शिक्षा का यथेष्ट प्रभाव पड़ा। मातृ-भूमि के मान-रक्षार्थ लाखों

रूसी वीर जान पर खेल जाने को तैयार हो गए। इधर मुग़लों ने भी .खूब तैयारी की। दोनों अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

पूर्व निश्चय के अनुसार, कुछ दिनों के बाद मुग़लों ने रूस पर चढ़ाई कर दी। डनस्कोई के रणबाँकुरे तो उन्हें ढूँढ़ते ही थे। घोर घमासान छिड़ गया। दोनों ओर के हज़ारों वीर धराशायी हुए। रणचण्डिका का खप्पर नर-शोणित से भर गया! परन्तु अन्त में, इस बार भी, मुग़लों को हार खानी पड़ी। रूसियों ने उन्हें बुरी तरह पछाड़ दिया। बेचारों ने धूल झाड़ते हुए अपने घर की राह ली!

रूसियों को इतने दिनों तक अपनी आत्म-शक्ति का ज्ञान न था। वे मुग़लों को 'हौवा' समझते थे। उनकी यह धारणा थी कि, .खुदा ने समस्त बल-पौरुष का ठेका मुग़लों को ही दे रक्खा है। रूसियों में उनका सामना करने की शक्ति न है, और न कभी होगी। परन्तु डनस्कोई के प्रयत्न ने उनकी इस धारणा को भ्रान्त प्रमाणित कर दिया। उनकी आँखें खुल गईं। वे मुग़लों की शक्ति का थाह पा गए। फिर तो उन्होंने मुग़लों को बार-बार मार भगाया। और बहुत दिनों तक हज़ार प्रयत्न करने पर भी रूस में मुग़लों का क़दम नहीं जम सका।

परन्तु डनस्कोई की मृत्यु के बाद रूस के शासन की बागडोर ऐसे नरेशों के हाथों में पड़ गई, जो विलासिता के कीड़े और ऐहिक ऐश्वर्य के ग़ुलाम थे। अपनी अदूरदर्शिता, मूर्खता और लापरवाही के कारण उन्होंने थोड़े ही दिनों में डनस्कोई की मानवोचित शिक्षा पर पानी फेर दिया! इसलिए मुग़ल फिर प्रबल हो गए। धीरे-धीरे उन्होंने फिर रूस को पदानत कर डाला—रूस पुनः उनका करद राज्य बन गया।

इसी तरह बहुत दिन बीत गए। अन्त में सम्राट तीसरे आइवन ने रूस का शासन-सूत्र ग्रहण किया। डनस्कोई की तरह इसके हृदय में भी स्वदेश-प्रेम था। रूस जैसे महान राष्ट्र की पराधीनता उसे काँटे की तरह खटकती थी। उसने सिंहासनारूढ़ होते ही देश को स्वतन्त्र करने की चेष्टा आरम्भ कर दी। सेना का सङ्गठन आरम्भ किया। देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए नवयुवकों को उत्साहित किया। प्रजा को सुखी और समृद्धिशाली बनाने की चेष्टा की। जब उसे विश्वास हो गया कि मुग़ल अब उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते तो एक दिन एक वृहत् दरबार करके अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और उसी दिन से मुग़लों को कर देना भी बन्द कर दिया। मुग़लों ने रुष्ट होकर रूस को ध्वंस कर डालने की धमकी दी। आइवन ने घृणा से उसे सुन कर दरगुज़र कर दिया। इससे मुग़ल और भी नाराज़ हुए और एक दिन अचानक आइवन पर चढ़ाई कर दी। परन्तु वह सावधान था। उसके रणदुर्मद सिपाहियों ने लोहे का चना चबवा कर मुग़लों को बिदा किया। इतना मारा कि मुग़लों ने फिर रूस की ओर आँख उठाने का भी साहस न किया।

रूसियों ने अपने इस त्राणकर्ता सम्राट का यथेष्ट आदर किया। वे आज भी उसे 'आइवन दी ग्रेट' के सम्मान-सूचक नाम से याद करते हैं।

सोलहवीं शताब्दी के अन्त में फिर रूस के राजसिंहासन पर विपत्ति के बादल मँडराने लगे। अब की बार मुग़ल नहीं, पोलैण्ड-वासियों ने रूस पर चढ़ाई की। दुर्भाग्यवश इस समय भी रूस के राज्य-सञ्चालक कायर और कपूत थे। रूसी प्रजा ने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए यथासाध्य .खूब प्रयत्न किया। परन्तु कोई फल न हुआ। सम्राट ने पोलैण्ड के चरणों पर अपना राजमुकुट रख दिया।

पोलैण्ड का एक राजकुमार रूस का सम्राट बना। परन्तु प्रजा उससे सन्तुष्ट न थी। फलतः

रूस के क्रान्तिकारी दल का १२ वर्षीय सफल-सदस्य श्री० टॉमस डि अब्यूक्यूरिक केमारा, जो अपनी बहादुरी में अपना सानी नहीं रखता।

विद्रोह और विप्लव का आविर्भाव हुआ। चारों ओर विषम विशृङ्खलता फैल गई। विदेशी शासन-कर्ता ने अत्याचार और दमन का आश्रय लिया। मानों जलती हुई आग में घी पड़ गया। समस्त राष्ट्र विदेशी शासन के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। तीव्र आन्दोलन आरम्भ हुआ। अराजकता, उत्पात और हत्याएँ होने लगीं। रूस के धर्म-याजक इस महान राष्ट्रीय आन्दोलन के सञ्चालक थे। वे हमारे देश के धर्म-याजकों की तरह धर्म-ढोंगी, विलासी और कूपमण्डूक न थे। 'महामहोपाध्याय' की पदवी प्राप्त कर लाट साहब के दरबार में हाज़िर होना ही उनके जीवन का उद्देश्य न था और न वे हमारे मोटी तोंद वाले महन्तों की तरह चेलों का रक्त चूस कर आजन्म लकीर के फ़क़ीर बना रहना चाहते थे। देश की स्वाधीनता के लिए वे सब से पहले आग में कूदने को तैयार हो गए। उन्होंने अपने अनुयायियों को स्पष्ट शब्दों में समझा दिया कि स्वतन्त्र रहना ही सर्व-श्रेष्ठ मानव-धर्म है। यही ईश्वर की सच्ची उपासना है। अगर तुम धर्म-प्रेमी हो तो मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दो। प्राणों की बाज़ी लगा कर अपने देश से विदेशियों को मार भगाओ। मातृभूमि के पराधीन रहते हुए तुम्हें ईश्वर की स्तुति करने का कोई अधिकार नहीं है।

धर्माधीशों की यह वाणी व्यर्थ न गई। देशवासियों ने प्रण कर लिया कि मातृभूमि की रक्षा के लिए मर मिटेंगे। देश के लिए शरीर की बोटी-बोटी अर्पण कर देंगे; पर जीते जी पोलैण्ड की वश्यता न स्वीकार करेंगे।

प्रिन्स पोयारस्की और कोज़ा मेनिन इस आन्दोलन के प्रधान नायक थे। दोनों परम देश-भक्त और अभिन्न-हृदय सहयोगी थे। कोज़ा मेनिन के दिमाग़ में और पोयारस्की के बाहु में भीषण शक्ति थी। पोयारस्की रूसी राज-वंश का रत्न था, और मेनिन था जूता बनाने वाला 'चमार वंशावतन्स!' परन्तु देश-भक्ति की आग दोनों के दिलों में समान रूप से धधक रही थी। दोनों मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व होम देने को तैयार हो गए। देश के इस सङ्कट के समय महाप्राण मेनिन ने 'सूई-सुतली' एक किनारे रख दिया और एक दिन विप्लव की रक्त-पताका लेकर मैदान में खड़ा हो गया। देशद्रोही विभीषणों ने व्यङ्ग की मुस्कराहट के साथ मुँह फेर लिया। परन्तु देशवासी कमर बाँध कर उसकी पताका के नीचे आकर खड़े हो गए। सब ने समवेत भाव से अपने श्रद्धेय 'चमार-गुरु' की आज्ञा शिरोधार्य की। सब ने एक स्वर से प्रतिज्ञा की—"विदेशियों को मार भगाएँगे, देश को ग़ुलामी के बन्धन से विमुक्त करेंगे या समर-क्षेत्र में प्राण विसर्जन कर देव-दुर्लभ वीर-गति लाभ करेंगे।" हज़ारों रूसी वीरों ने अपनी सारी सम्पत्ति—अपना सर्वस्व—राष्ट्र-गुरु मेनिन के चरणों में अर्पण कर दिया!

इस प्रकार जब सारी तैयारी हो गई तो एक दिन युवराज पोयारस्की ने पोलों के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। पोल भी कम दुर्धर्ष न थे। रूसियों के इस राष्ट्रीय अभिमान को उन्होंने एक मज़ाक़ समझा। उन्होंने सोचा था कि विजयिनी सेना का हुङ्कार सुनते ही रूसी उनके चरणों पर टोपी उतार कर रख देंगे और भविष्य में फिर कभी ऐसी गुस्ताख़ी करने का साहस न करेंगे। परन्तु बात ऐसी न थी। कोज़ा मेनिन ने उन्हें अच्छी तरह 'ठोक-बजा कर' मैदान में उतारा था। वे अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए प्राण विसर्जन कर देने की अटल प्रतिज्ञा करके आए थे। उन्हें पोलैण्ड तो क्या, समस्त विश्व के बिगड़ जाने का भी कोई भय न था। उन्होंने अल्प प्रयास में ही पोलों को अपने देश से सदा के लिए विताड़ित कर दिया—रूसी राष्ट्र फिर स्वतन्त्र हो गया।

इसके कुछ दिन बाद ही (सत्तरहवीं शताब्दी के अन्त में) 'पिटर दी ग्रेट' का आविर्भाव हुआ।

उस समय रूस की अन्दरूनी हालत बड़ी शोचनीय हो गई थी। तत्कालीन सम्राट की मृत्यु के बाद राजसिंहासन को लेकर एक भयङ्कर घरेलू झगड़ा खड़ा हो गया। पिटर के प्रतिद्वन्दी केवल उसे राजसिंहासन से ही वञ्चित करना नहीं चाहते थे, वरन् उसका अस्तित्व तक मिटा देना चाहते थे। इसलिए पिटर की माता उसे लेकर देहात के एक निर्जन स्थान में रहने लगी। वहाँ उसकी शिक्षा-दीक्षा का कोई समुचित प्रबन्ध न था। परन्तु पिटर एक प्रतिभाशाली बालक था। देहात के असभ्यतापूर्ण स्थान में रह कर भी उसने यथेष्ट सद्गुण सञ्चय कर लिए। वह रूस का 'अकबरे-आज़म' था और बेनिता मुसोलिनी की सी विचित्र प्रतिभा प्राप्त की थी।

जिस समय पिटर सिंहासनारूढ़ हुआ, उस समय, स्वतन्त्र होने पर भी, रूस की दशा अच्छी न थी। उसमें न शिक्षा थी, न सभ्यता और न बल ही था। चारों ओर कुसंस्कारों का घोर अन्धकार—सङ्कीर्णता, क्षुद्रता और दीनता फैली हुई थी।

पिटर ने देखा, ऐसी महापतित जाति की स्वाधीनता कभी चिरस्थायिनी नहीं हो सकती, इसलिए देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए जाति को नए सिरे से शिक्षित, योग्य और बलशाली बनाना चाहिए। जब तक देश के शिल्प, विज्ञान, शिक्षा और धार्मिक विचारों की उन्नति न होगी, तब तक उसे स्वाधीनता की रक्षा की योग्यता भी प्राप्त न होगी। इसलिए बड़ी दृढ़ता और निपुणता के साथ उसने संस्कार-कार्य आरम्भ कर दिया। विदेशों से विविध विषय के जानकारों को बुला कर उसने प्रजा की समुचित शिक्षा का प्रबन्ध किया। जहाज़ बनाने की शिक्षा देने वाला कोई न मिला तो स्वयं इङ्गलैण्ड जाकर यह काम सीख आया और स्वदेश लौट कर जहाज़ बनाने का एक वृहत् कारख़ाना क़ायम कर दिया। परन्तु रूसी प्रजा उस समय दक़ियानूसी विचार वाले 'कट्टर सनातनियों' के हाथ में थी। वे 'बाबा वाक्यम् प्रमाणम्' के अनुयायी और पक्षपाती थे। नवीन संस्कार का नाम सुनते ही उनके पेट में चूहे कूदने लगे। उन्होंने पिटर के कार्यों का घोर विरोध आरम्भ किया। और जिस तरह आजकल हमारे देश के 'सनातनी' सुधार और संस्कार का नाम सुनते ही 'धर्म गया, धर्म गया !' कह कर हल्ला मचाने लगते हैं, उसी तरह रूस के सनातनी भी पिटर के विरुद्ध हो-हल्ला मचाने लगे।

परन्तु पिटर को ऐसे कूप-मण्डूकों के विरोध या प्रतिवाद की परवाह न थी। उसने बड़ी सख़्ती से अपने सिद्धान्तों को कार्य में परिणत करना आरम्भ किया और जिसने उसकी आज्ञा का विरोध किया, उसके साथ सख़्ती से पेश आया। उसकी आज्ञा 'वेद-वाक्य' की तरह पालनीय थी। वह अपनी आज्ञा के उल्लङ्घनकारी को कड़ी से कड़ी सज़ा देने में ज़रा भी सङ्कोच नहीं करता था। इसलिए इच्छा न रहन पर भी कोई उसके आदेश का पालन करने में आनाकानी नहीं कर सकता था। अन्त में लोगों को पिटर का उद्देश्य मालूम हो गया। विरोधी भी इस बात को समझ गए कि वह राष्ट्र का शुभचिन्तक है। पिटर ने अपने अध्यवसाय द्वारा अपने देश की असाधारण उन्नति की। उसी के ज़माने से सारे संसार पर रूस के बल की धाक जम गई और फिर किसी ने उसकी ओर आँख उठाने का साहस नहीं किया।

रूस के सम्राटों को 'ज़ार' कहते हैं। पिटर के बाद जितने ज़ार रूस के सिंहासन पर बैठे, वे सभी एक से एक बढ़ कर अत्याचारी और विलासी थे। प्रजा के प्राणों को लेकर खिलवाड़ करना तो उनके लिए एक मामूली बात थी, बात-बात में सूली और फाँसी, बात-बात में जेल और जलावतन ! ज़ार महोदयगण अपने को 'सर्वशक्तिमान' (Almighty) समझते थे। मानो ईश्वर ने प्रजा पर अत्याचार करने के लिए ही उनकी सृष्टि की है। प्रजा का जीवन-मरण उनकी इच्छा के अधीन है। वे जिसे चाहें जीवित रहने दें। ज़ारों तथा उनके मुट्ठी भर पिट्ठुओं के सुख-स्वच्छन्दता के लिए ऐश्वर्य और उपकरण एकत्र करने के सिवा मानो रूस की प्रजा के जीवन का कोई उद्देश्य ही न था। किसानों तथा मज़दूरों की सारी कमाई ज़ारों, फ़ौजी अफ़सरों, सरकारी कर्मचारियों तथा देश के धनवानों के विलास-भोग के लिए थी। सारी ज़मीन या तो ज़ार की थी या उसकी चापलूसी करने वाले 'बड़े आदमियों' की ! कृषक अपने खेतों में अन्न उपार्जन करके उसे 'ज़मींदार' के कोठिलों में रख दिया करते थे और स्वयं कदन्न तथा सड़ा मांस खाकर जीवन-निर्वाह किया करते थे। ठीक यही दशा थी, जो आजकल हमारे देश के अभागे किसानों की है। बेचारे साल भर घोर परिश्रम करके धान और गेहूँ उपार्जन करते हैं, परन्तु उनके बच्चों को बरस में दो महीने भरपेट चोकर की रोटी भी नसीब नहीं होती। इन पक्तियों का लेखक ऐसे बहुत से किसानों को जानता है, जो गेहूँ और धान की खेती करते हैं, जिनके पास सदैव दूध देने वाली गाएँ और भैंसे रहती हैं, परन्तु उन्होंने अपने घर में कभी 'गेहूँ की चुपड़ी हुई रोटी' नहीं खाई है !!!

महिला-समाज की अनन्य साविका
श्रीमती रामेश्वरी नेहरू
जो आजकल विनोदार्थ विलायत गई हुई हैं।

ज़ारशाही के दिनों में रूस के किसानों की अवस्था भी ऐसी ही विचित्र दशा में थी। ज़ा तथा देश के बड़े आदमियों के रोमाञ्चकारी अत्याचारों के विरुद्ध चुपचाप दीर्घ निश्वास लेना भी भयङ्कर अपराध समझा जाता था। थोड़े शब्दों में ज़ार अत्याचार के मूर्तिमन्त अवतार होते थे। आइए, उनकी नृशंसता की एक रोमाञ्चकारी कहानी सुनाएँ :—

किसी ज़ार का अभिषेकोत्सव था। राजधानी के बाहर एक विस्तृत मैदान में, करोड़ों रुपए की लागत से, एक सुविशाल 'दरबार-भवन' बना था। सारे संसार से मनोरञ्जन की सामग्री बटोर कर एकत्र की गई थी। एक से एक चकित और स्तम्भित करने वाले तमाशे मौजूद थे। दर्शकों के लिए एक गहरी खाई पाट कर विशाल मञ्च निर्माण किया गया था। हज़ारों मनुष्य तमाशा देखने के लिए आए थे। इतने में एकाएक मञ्च टूट गया और उस पर बैठ कर जो लोग तमाशा देख रहे थे, वे सब के सब नीचे गहरी खाई में जा पड़े ! परन्तु जलसे में विघ्न पड़ जाने के कारण उनके उद्धार को कोई तदबीर न की गई और शायद वे अब तक वहीं तमाशा देख रहे हैं !

इसी तरह कितने ही युग बीत गए। रूस की प्रजा ज़ारशाही का शिकार होती रही। इतने में फ़्रान्स का भीषण विप्लव आरम्भ हुआ। उसके साथ ही रूस की अत्याचार-पीड़ित प्रजा भी कुछ चञ्चल हो उठी। उधर ज़ार ने भी भीषण मूर्ति धारण की। अत्याचार मानो सीमोल्लङ्घन कर गया। बात-बात में लोग पकड़ कर बिना विचारे ही साइबेरिया भेजे जाने लगे। जेल, ज़ुर्माना और निर्वासन रूसियों के जीवन की एक नैमित्तिक घटना हो गई। बीस वर्षों में एक लाख रूसी केवल साइबेरिया में निर्वासित करके भेजे गए थे—अन्यान्य प्रकार से दण्डितों का तो कोई हिसाब ही न था।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

सोवियट रूस और एशिया के राष्ट्र

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च-स्कॉलर]

सन् १९१७ की क्रान्ति ने रूस की काया-पलट कर दी। अब तक तो रूस संसार के दूसरे बड़े राष्ट्रों की भाँति साम्राज्यवाद का पोषक था। पर क्रान्ति के पश्चात् यह उसका विरोधी बन गया।

रूस की क्रान्ति को साम्राज्यवादी यूरोप पसन्द न करता था। १९१७ में जब बोलशेविकों ने रूस का शासन अपने हाथ में ले लिया, तब यूरोप के राष्ट्र जामे से बाहर हो गए। उन्होंने बोलशेविकों को पदच्युत करने का भरसक प्रयत्न किया। रूस के विरुद्ध प्रचार किया गया। उस पर आक्रमण किया गया तथा रूसियों को बोलशेविकों के ख़िलाफ़ क्रान्ति करने को उकसाया गया।

१९१८ में इन राष्ट्रों ने रूस को चारों ओर से घेर लिया तथा उसकी सीमा के भीतर कोई भी आवश्यक वस्तु न जाने दी—औषधियाँ तथा बच्चों के लिए दूध तक रूस में न जा सकता था। वारसाइल की सन्धि (Treaty of Versailles) द्वारा बाल्टिक सागर से काले सागर तक रूस की सीमा पर छोटे-छोटे राष्ट्र बनाए गए, ताकि बोलशेविक रूस से बाहर न जा सकें। मित्र-राष्ट्रों ने सोवियट रूस पर हमला भी किया तथा डेनीकिन (Denikin), कोलचक तथा रैङ्गिल आदि बोलशेविकों के विरुद्ध काम करने वालों तथा पोलों को सहायता दी, ताकि वे लोग बोलशेविकों को दबा दें। संसार भर में रूस के ख़िलाफ़ ज़ोरों से प्रचार किया गया।

मित्र-राष्ट्रों ने ज़ार को युद्ध का सामान देने के लिए आरचैङ्गल, मरमन्स्क तथा व्लाडीवास्टक आदि स्थानों में गोदाम खोल रक्खे थे। उन्होंने यह सारा सामान रूस की सरकार को बतौर क़र्ज़ के दिया था। अब चूँकि सोवियट रूस ने इन क़र्ज़ों को अदा करने से इन्कार कर दिया था, अतएव मित्र-राष्ट्र वह सारा सामान अपने अधिकार में लाना चाहते थे। इङ्गलैण्ड, फ्रान्स, अमेरिका तथा जापान ने उन गोदामों की रक्षा करने के लिए अपनी-अपनी सेनाएँ उपर्युक्त स्थानों पर भेजीं। ज़ार के समय के ज़मींदारों तथा पूँजीपतियों को प्रत्येक स्थान पर सहायता दी गई। जहाँ-जहाँ मित्र-राष्ट्रों को विजय मिली वहाँ-वहाँ पुरानी सरकार की स्थापना की गई।

पर रूस की जनता न मित्र-राष्ट्रों के कार्यों का घोर विरोध किया तथा उनकी सेनाओं के सिपाहियों ने विद्रोह किया। ऐसी हालत देख कर इन राष्ट्रों ने, १९१९ के मई और जून में आइमिरल कोलचक की, जो साइबेरिया से पच्छिम की ओर बढ़ रहा था, सहायता करने का निश्चय किया। उसी समय जनरल डेनिकिन कोलचक से मिल कर काम करने के लिए काकेसस से उत्तर की ओर बढ़ा। मित्र-राष्ट्रों से भरपूर सहायता मिलने के कारण इन सेनापतियों को विजय प्राप्त हुई। पर उनकी यह विजय क्षणिक ही थी।

१९१८ से १९२२ तक के चार वर्ष सोवियट रूस के लिए परीक्षा के समय थे। इन वर्षों में ने बड़े कष्ट उठाए।

पश्चिमीय राष्ट्रों से इस तरह बहिष्कृत तथा तिरस्कृत होकर सोवियट रूस ने अपना ध्यान पूर्वीय राष्ट्रों की ओर दिया। पूर्वीय राष्ट्रों की हालत भी इस समय ऐसी थी कि रूस का कार्य बड़ा सरल हो गया। एशिया के करोड़ों मनुष्य साम्राज्यवाद के उत्पातों से ऊब रहे थे। भारतवर्ष, चीन, टर्की तथा ईरान में साम्राज्यवाद के विरुद्ध आवाज़ें उठ रही थीं।

सोवियट रूस ने पूर्वीय राष्ट्रों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया। तथा दोस्ती का हाथ बढ़ाया। उसने निम्न-लिखित चार सिद्धान्त पूर्वीय राष्ट्रों के सामने रक्खे :—

(१) ज़ार कालिक के साम्राज्यवाद का अन्त ज़ार के साथ ही हो गया है और अब रूस साम्राज्यवाद का विरोधी है।

(२) रूस के अन्दर जितनी अल्प संख्यक जातियाँ हैं उन्हें स्वतन्त्रता दी जावेगी।

(३) अफ़ग़ानिस्तान तथा ईरान आदि राष्ट्रों की स्वतन्त्रता रूस को मान्य होगी तथा वह उनकी रक्षा करेगा।

(४) एशिया तथा पूर्वीय यूरोप के छोटे-छोटे स्वतन्त्र राष्ट्रों की रक्षा का केवल एक ही उपाय है और वह यह है कि सब मिल कर एक स्वर से पश्चिमीय साम्राज्यवाद का विरोध करें।

रूस इन सिद्धान्तों की घोषणा करके ही न रह गया। उसने इन्हें कार्य में भी परिणत कर दिखाया। टर्की, अफ़ग़ानिस्तान तथा ईरान आदि से इन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार नई सन्धि हुई। रूस की एशिया सम्बन्धी नीति की मुख्य-मुख्य बातें इस प्रकार थीं :—

(१) टर्की, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान से मैत्री करना तथा मिश्र और भारतवर्ष को एक दूसरे से अलग करके अङ्गरेज़ी साम्राज्य को दो टुकड़े में विभाजित कर देना।

(२) चीन तथा सुदूर पूर्व के उन दूसरे देशों को, जो पश्चिमी साम्राज्यवाद के शिकार बने थे, अपनी ओर मिलाना।

(३) जापान को आर्थिक सुविधाएँ देकर उससे मित्रता करना।

उपर्युक्त ध्येय को प्राप्त करने के लिए रूस ने पूर्वीय राष्ट्रों की कई कॉङ्ग्रेसें बुलाईं। सबसे पहली कॉङ्ग्रेस बाकू में हुई थी। इस कॉङ्ग्रेस में भाषण देते हुए पूर्वीय राष्ट्रों का लक्ष्य करके ज़िनोवीव (Zenoviev) ने कहा था :—

"अब पहले-पहल पूर्वीय राष्ट्रों की कॉङ्ग्रेस में सम्मिलित होने के बाद आप लोगों को चाहिए कि इन लुटेरों—इङ्गलैण्ड और फ़्रान्स के पूँजीपतियों—के विरुद्ध धार्मिक युद्ध की घोषणा कर दें। अब समय आ गया है कि समस्त संसार के मज़दूरों और किसानों को जगा दिया जाय।"

अपने व्याख्यान के अन्त में ज़िनोवीव ने कहा था—"कम्यूनिस्ट इण्टर नेशनल पूर्वीय राष्ट्रों को लक्ष्य करके कहता है, भाइयो सब से पहले हम तुम्हें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध धार्मिक युद्ध के लिए आह्वान करते हैं।"

१९२२ की २१ जनवरी को चीन, कोरिया, जापान, डच तथा ईस्ट इण्डीज़ आदि देशों के प्रतिनिधियों की सभा मास्को में हुई थी। इन्होंने अपना एक मेनिफ़ेस्टो निकाल कर कहा था कि "हम लोग ज़िन्दा रहना चाहते हैं और जिन वस्तुओं पर हमारा हक़ है, उन्हें हम बलपूर्वक ले लेंगे। क्योंकि हमारी संख्या अधिक है। हम लोग करोड़ों हैं। हमारी एकता ही हमारा बल है। जापानी, अमेरिकन, अङ्गरेज़, फ़्रान्सीसी तथा संसार के अन्यान्य लुटेरों से हम अन्त तक युद्ध करेंगे। चीन, कोरिया, प्रशान्त महासागर के द्वीपों, इण्डो-चीन तथा डच इण्डीज़ से उन्हें निकाल बाहर कर दो। सुदूर पूर्व से इनका पैर उखाड़ दो।"

प्रत्येक कॉङ्ग्रेस में कम्यूनिस्ट इण्टर नेशनल ने पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध पूर्वीय एकता की घोषणा की।

१९२१ में सोवियट यूनियन ने ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, बोखारा तथा टर्की से सन्धियाँ कीं। पहिली सन्धि ईरान से हुई। इस सन्धि की पहिली धारा में ज़ार के समय की की हुई, उन तमाम सन्धियों को, जिनके द्वारा ईरानियों के हक़ों को धक्का पहुँचता था, रद्द कर दिया गया। सन्धि की दूसरी धारा में रूस ने ज़ार की उस नीति की निन्दा की, जिसके द्वारा यूरोपीय राष्ट्रों से मिल कर एशिया के राष्ट्रों को अपने अधिकार में लाने का प्रयत्न किया जाता था। सोवियट रूस ने ज़ार की उस नीति का पूर्णतया त्याग करने की घोषणा की तथा ऐसे किसी भी कार्य में भाग न लेने का वादा किया, जिससे ईरान को हानि पहुँचने की सम्भावना हो। आठवीं धारा द्वारा उसने ज़ार की सरकार द्वारा दिया हुआ ऋण रद्द कर दिया। ऋण के बदले में ईरान ने ज़ार की सरकार को जो रियायतें दी थीं, उन्हें सोवियट सरकार ने ईरान को वापस कर दीं। और अन्त में ईरान के अधिकारों की रक्षा करने का वचन दिया।

दूसरी सन्धि टर्की से हुई थी। इसमें कहा गया कि ऐसी कोई भी सन्धि या अन्तर्राष्ट्रीय समझौता, जिस पर दोनों राष्ट्रों ने बाध्य होकर हस्ताक्षर किए हों, न माना जावेगा तथा पूर्वीय राष्ट्रों को स्वतन्त्रता तथा मनचाही सरकार स्थापित करने का अधिकार होगा।

इस समय की की हुई अन्यान्य सन्धियों में भी इन्हीं बातों का समावेश है। सब में पूर्वीय राष्ट्रों को स्वतन्त्रता के अधिकार दिए गए हैं। अफ़ग़ानिस्तान की सन्धि द्वारा रूस ने सीमा प्रान्त के ज़िलों को, जो रूस के अधिकार में थे, अफ़ग़ानिस्तान को लौटा दिया। क्योंकि उन ज़िलों के लोग अफ़ग़ानिस्तान के अधीन रहना चाहते थे।

इस तरह रूस ने निकट पूर्वीय राष्ट्रों से मैत्री

(शेष मैटर २७वें पृष्ठ के पहले कॉलम पर देखिए)

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

विगत २६वीं जनवरी को आगरे में राष्ट्रीय झण्डाभिवादन का दृश्य। बालिकाएँ राष्ट्रीय गान गा रही हैं।
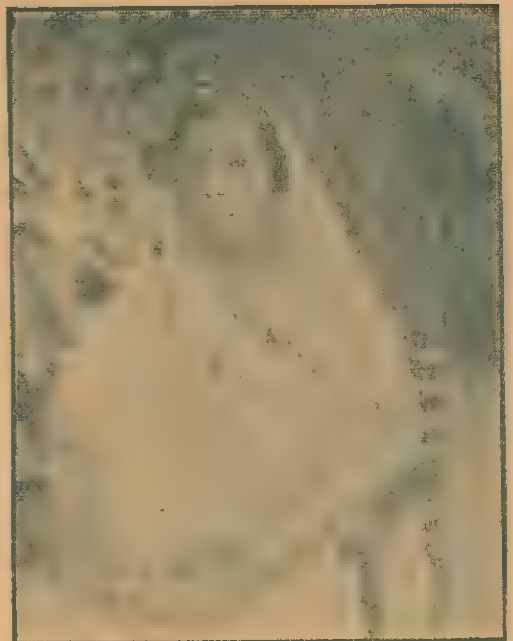
कानपुर की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री—श्रीमती सरला देवी शर्मा—जिन्हें ३ मास का कारा-वास-दण्ड दिया गया है। जेल में ही आपने पुत्र प्रसव किया था, जिसकी वहीं मृत्यु भी हो गई।

आगरे के 'स्वतन्त्रता-दिवस' का शानदार जुलूस, जिसमें हज़ारों स्त्री-पुरुषों ने बड़े उत्साह से भाग लिया था, इस चित्र में केवल एक कोने-मात्र का दृश्य व्यक्त है।

आगरे के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ता—बाबू श्रीचन्द्र दोनेरिया—जो हाल ही में ६ मास का कारावास-दण्ड भुगत कर जेल से लौटे हैं; और जो २१वीं जनवरी को फिर पकड़ लिए गए थे, पर बाद में छोड़ दिए गए।

मज़दूर-पेशे के मलाया निवासी वे अभागे भारतीय, जो रबड़ के कारोबार में भयङ्कर हानि होने के कारण क्षुधा-पीड़ित और वस्त्र-विहीन हो गए हैं। आजकल निराहार रह कर सृष्टि-नियन्ता को गालियाँ देना ही इनका मुख्य व्यवसाय हो गया है। यह चित्र उस समय का है, जबकि उन्हें "नाथूकोटाई चेतियार सङ्घ" ने भोजन के लिए आमन्त्रित किया था!

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

डॉक्टर श्रीमती मालिनी भालचन्द्र सखथङ्कर
एम० बी-बी० एस०
आपने गवर्नमेण्ट के उन अत्याचारों के विरोध में, जो उसने वर्तमान आन्दोलन में भारतीय महिलाओं पर किए हैं, अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया है।

कुमारी लक्ष्मी
आप बङ्गलोर के "सूर्य फ़िल्म कम्पनी" की सर्व-श्रेष्ठ एक्टरेस हैं। भावुकता के पार्ट करने में वास्तव में आप कमाल करती हैं। आप मैसूर के एक फ़ौजी अफ़सर की कन्या-रत्न हैं।

श्रीमती जी० एस० सन्दोशम एडवर्ड
आप कैनानोर (मद्रास) की म्युनिसिपल शिक्षिका हैं और आजकल घर-घर घूम कर शराब के विरुद्ध उपदेश दे रही हैं।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज—जस्टिस ई० बेनेट—जो इस हाईकोर्ट के स्थाई जज नियुक्त हुए हैं।

साईकिल की दौड़ में सर्व-प्रथम आने वाले—बम्बई के श्री० सी० एम० पटेल—जिन्होंने २० घण्टे और ४१ मिनिट तक साईकिल पर दौड़ लगा कर यह सम्मान प्राप्त किया है।

लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज के प्रिन्सिपल—डॉक्टर जे० आर० चिताम्बर—जो कानपुर में होने वाली पादरी-परिषद (Methodist) के 'बिशप' नियुक्त हुए हैं।

बम्बई समाज-सेवी सङ्घ (Social Service League) की ओर से नियुक्त जेल-मुक्त क़ैदियों की शिकायतों की जाँच करने वाली कमिटी के सभापति—दीवान बहादुर श्री० के० एम० जावेरी।

काशी विश्वविद्यालय के दर्शन-शास्त्र के प्रतिभाशाली प्रोफ़ेसर डॉक्टर बी० एल० अत्रेय, एम० ए; डी० (लिट)

जर्मनी की सर्व-प्रथम महिला-रत्न—फ़्राउ सोफ़ी टॉमस—जिन्हें वायुयान चलाने की सनद दी गई है। आप जर्मनी की सर्व-प्रथम महिला-रत्न हैं, जिन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया है।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

बम्बई की लेडी बैराम जी जीजीबाई, जे० पी०, जो हाल ही में वहाँ ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुई हैं।

बम्बई प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य—श्री० सय्यद मुनौवर, बी० ए०—आप सामाजिक सेवा-सङ्घ की ओर से मुक्त क़ैदियों की शिकायतों की जाँच करने के लिए जो कमिटी बनी है, उसके सदस्य नियुक्त किए गए हैं।

विज़गापाटम (मद्रास) के श्रीमती ए० वी० एन० कॉलेज के नए प्रिन्सिपल—श्री० एम० कमय्या, एम० ए०, एल० टी०—जो हाल ही में नियुक्त हुए हैं।

चन्द्रपुर स्टेट के ताल्लुक़ेदार—ठाकुर शिवपतिसिंह जी, एम० एल० सी०—जिन्होंने हाल ही में गोंडा ज़िले में एक १० फ़ीट, ३ इञ्च लम्बे शेर का शिकार किया है।

☞ नारासापाटम (मद्रास) के श्री० राजा सागी सत्यनारायण राजू, प्रधान ताल्लुक़ा बोर्ड—जिन्होंने हाल ही में एक १० फ़ीट, ८ इन्च के शेर का शिकार किया है।

इन्दौर राज्य के अछूताश्रम में कार्य करने वाले स्त्री-पुरुषों का ग्रुप—बीच में 'हिज़ होलीनेस' श्री० शङ्कराचार्य जी बैठे हैं, जो हाल ही में निरीक्षणार्थ वहाँ गए थे। यह आश्रम इन्दौर की नई महारानी शर्मिष्ठाबाई की कृति है।

कलकत्ता कॉरपोरेशन के नए डिपुटी-शेरिफ़—श्री० आर० एम० चैटर्जी सॉलिसिटर—जो इस वर्ष निर्वाचित हुए हैं।

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

आमनौर स्टेट (ज़िला छपरा) के यशस्वी अध्यक्ष श्री० हरिमाधवप्रसाद सिंह जी की धर्मपत्नी—श्रीमती रामस्वरूप देवी—जो बड़े उत्साह से राष्ट्रीय कार्य कर रही हैं। आपके पति-देवता को एक वर्ष का कारावास-दण्ड दिया गया है। आप स्त्रियों का सङ्गठन कार्य भी बड़े मनोयोग से कर रही हैं।

आप कलकत्ते के सुप्रसिद्ध श्री० सौभाग्य-चन्द्र जी म्होणोत की १४ वर्षीय पोती हैं, जिन्हें पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार ४ मास का कारावास-दण्ड दिया गया था। आप हाल ही में अपनी अवधि काट कर जेल से मुक्त हुई हैं।

पं० देवकीनन्दनसिंह जी दीक्षित

आप बनारस ज़िले के एक धनाढ्य ज़मींदार के लड़के हैं। पहली बार राष्ट्रीय कार्य करते हुए १९२१ के नवम्बर में फ़ैज़ाबाद में आपको एक वर्ष की सख़्त सज़ा हुई। दूसरी बार १९२३ के फ़रवरी महीने में सुलतानपुर ज़िले में एक वर्ष की सख़्त सज़ा मिली। तीसरी बार फिर फ़ैज़ाबाद ज़िले में ३ महीने की सख़्त सज़ा दी गई। उसके पश्चात संयुक्त प्रान्तीय अछूतोद्धार कमिटी के डिविज़नल सेक्रेटरी के पद पर कुछ दिनों तक काम करते रहे। इसी समय आप बनारस के अछूतों का जुलूस लेकर विश्वनाथ जी के मन्दिर पर चढ़ गए और तभी से उस मन्दिर में अछूतों के दर्शन के लिए एक विशेष झरोखा बनाया गया है। इसके लिए भी आपको कई दिनों तक हिरासत की हवा खानी पड़ी। इसके पश्चात कलकत्ता आकर बड़ा बाज़ार हिन्दू-सभा के सेक्रेटरी नियुक्त हुए और इसी बीच में काकोरी-दिवस के उपलक्ष में की गई एक सभा में आपत्तिजनक भाषण देने के कारण आपको एक वर्ष की सख़्त सज़ा हुई। हाल ही में आप जेल से छूट कर आए हैं। जेल से आते ही आपने हिन्दू-सभा से अपना सम्बन्ध त्याग कर ठोस राजनैतिक कार्य को ही अपना निश्चित ध्येय बना लिया है।

बुल्दाना (मध्य प्रान्त) के २५ वर्षीय प्रतिभाशाली वकील—श्री० सिद्धेश्वर गणेश गोरे, एम० ए०, एल्-एल्० बी०—जिन्हें एक शराब-फ़रोश ने पिकेटिङ्ग के अपराध में १७वीं जनवरी को घायल किया था और जिसके कारण आपकी मृत्यु हो गई! आपका 'दसवाँ' बड़े समारोह से मनाया गया था।

'भविष्य' के प्रतिभाशाली लेखक—श्री० पृथ्वीपालसिंह, बी० ए०—सम्पादक "नवीन भारत" (लखनऊ), इस अङ्क की कहानी आप ही की लेखनी का चमत्कार है। "धर्म और भगवान—मृत्यु-शय्या पर" भी आप ही की लेखनी का प्रसाद था।

मिला दी ऐ हवस[१], मिट्टी में सारी आबरू मेरी,
निकल जा अब मेरे दिल से, न मैं तेरा न तू मेरी !
बनी थी बात, ज़ब्ते दर्दे ग़म से, चार सू[२] मेरी,
मगर अश्कों[३] ने बह-बह कर, डुबो दी आबरू मेरी।
वह क्यों पूछें, वह क्यों सोचें, वह क्या जानें, वह क्या समझें?
मुबारक हो मुझी को इश्क़ मेरा, आरज़ू[४] मेरी।
करूँ मोती की सूरत गश्त, क्या बाज़ारे-आलम[५] में,
समझता हूँ कि है मेरी गिरह में, आबरू मेरी।
हुजूमे[६] ग़म ने हर जानिब से, दिल को घेर रक्खा है,
मिले रस्ता निकलने का, तो निकले आरज़ू मेरी !
अगर कोई इसे समझेगा, तो शायद वह समझेंगे,
बिठा कर हज़रते मूसा को, सुनिए गुफ़्तगू मेरी।
जिन्हें इनकार है मिलने से, आने से, बुलाने से,
निकालेंगे वही गिन-गिन कर, एक-एक आरज़ू मेरी !
यह मतलब है कि अपने ही से, तुम अपना करो शिकवा[७]
वह एक तस्वीर रख देते हैं, मेरे रूबरू[८] मेरी !
इधर आई उधर निकली तो वह पासे[९] वफ़ा कैसा,
जो मेरे दिल में रह जाए, वही है आरज़ू मेरी।
वह कहते हैं; बता दे सोच रक्खूँ मैं, जवाब इसका,
शिकायत क्या करेगा, दावरे महशर[१०] से तू मेरी।
हज़ार अफ़सोस, इस बेक़द्रए, बाज़ारे-उलफ़त[११] पर !
बिकी है कौड़ियों के मोल, अनमोल-आबरू मेरी !!
जो ठहरा मैं ही सब कुछ, तो किसी पर क्यों नज़र डालूँ?
कि हर सूरत से सूरत होगी मेरे रूबरू मेरी।
अभी मैं आरज़ू को देख कर आँसू बहाता हूँ,
कभी मेरी तरह रोएगी, मुझको आरज़ू मेरी !
बढ़ाया मरतबा दिल ने, वफ़ा ने, इश्क़ ने, ग़म ने,
इन्हीं चारों से शोहरत[१२] है, जहाँ में चार सू मेरी !
जुदा है एक से जब एक, तो एक-साथ क्या निकले ?
तमन्ना[१३] ग़ैर की, हसरत[१४] तुम्हारी, आरज़ू मेरी !
बहारे-इश्क़ को लेकर, बहारे-हुस्न[१५] आई है,
खुलेगा रङ्ग उधर तेरा, इधर फैलेगी बू मेरी।
वह कहते हैं, ज़माना मान ले, मैं तो न मानूँगा;
यह कैसी बात, दिल तेरा हो, उसमें आरज़ू मेरी ?
इधर यह शौक़ है मुझको, मिलाऊँ उनसे हाथ अपना,
उधर यह हुक्म है कमबख़्त ! उँगली भी न छू मेरी !
कहीं ग़ुञ्चे[१६], कहीं गुल, कैफ़[१७] में पुरकैफ़[१८] आलम
बटी है चुल्लू-चुल्लू क्या शराबे रङ्गो बू मेरी !!
हरम[१९] में कुछ न हो इज़्ज़त, न हो ऐ "नूह" क्या परवा !
बला से बुतकदे[२०] में तो, बहुत है आबरू मेरी।

—"नूह" नारवी

पसन्द आती नहीं, उस बेवफ़ा को गुफ़्तगू[२१] मेरी,
मेरे अल्लाह, फिर निकलेगी क्योंकर आरज़ू मेरी ?
दमे-आख़िर, वह मुझसे पूछते हैं आरज़ू मेरी,
यह आलम, और इस आलम में, उनसे गुफ़्तगू मेरी !

१—इच्छा, २—चारों तरफ़, ३—आँसू, ४—इच्छा, ५—संसार, ६—भीड़, ७—गिला, ८—सामने, ९—ध्यान, १०—विधाता, ११—प्रेम, १२—ख्याति, १३—इच्छा, १४—अभिलाषा, १५—सौन्दर्य, १६—कलियाँ, १७—आनन्द, १८—आनन्दपूर्ण, १९—काबा, २०—मन्दिर, २१—बातचीत,

जिन्हें इनकार है मिलने से, आने से, बुलाने से,
निकालेंगे वही गिन-गिन कर, एक-एक आरज़ू मेरी !
वह सबसे पूछते हैं, चार हरफ़े 'आरज़ू' क्या हैं ?
ज़माने में कहानी बन गई यों आरज़ू मेरी।

कुछ ऐसा खो गया, अब मैं भी, कि ढूँढ़े से नहीं मिलता,
तुम्हारी जुस्तजू[२२] में, हो रही है जुस्तजू मेरी !
अज़ल[२३] से ता अबद[२४], कहने को तो मैंने कहा क्या-क्या
मगर पूरी हुई, फिर भी न शरहे[२५] आरज़ू मेरी !
तवज्जह से इसे क्या, वह सुनेंगे ? सुन नहीं सकते,
जुनूँ[२६] के रङ्ग में, डूबी हुई है गुफ़्तगू मेरी !
उजाड़ा आशियाँ, सय्याद को भी मुझसे भड़काया,
यह अच्छी क़द्रदानी[२७], बाग़बाँ[२८] करता है तू मेरी !
फ़ना[२९] के बाद मरक़द[३०] पर, वह आकर फ़ातहा[३१] पढ़ दे
कि जीते जी नहीं निकली है, दिल से आरज़ू मेरी !
हुनरमन्दी है इसमें, वह हुनर देखें मेरा "शातिर"
बुराई पर कमर क्यों बाँधते हैं ऐबजू[३२] मेरी ?

—"शातिर" इलाहाबादी

वह सुन लेते किसी दिन भूले-बिसरे गुफ़्तगू मेरी,
यह है अरमान मेरा, और यह है आरज़ू मेरी !
कहाँ अब लब मेरे शरमिन्दए इज़हारे-मतलब हैं,
बढ़ा दी और तर्के-आरज़ू[३३] ने आबरू मेरी।
यही तो आरज़ू को रात-दिन अब आरज़ू भी है,
निकाली जाय तो फिर क्यों न निकले आरज़ू मेरी ?
उन्हें मञ्ज़ूर है अब इम्तहाँ ज़ब्ते-मुहब्बत का,
कहीं ऐ चश्मे-तर, तू खो न देना आबरू मेरी !
ज़माना हो गया, मैं मैकदे[३४] जाता नहीं "ज़ाहिद"[३५],
अभी तक याद करते हैं मगर जामो सुबू[३६] मेरी।

—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

तरीक़े इश्क़ में, बस एक यह है, आरज़ू मेरी,
कि मैं हो जाऊँ गुम, करते फिरें वह जुस्तजू मेरी।
निकाली उम्र भर में, तूने किस दिन आरज़ू मेरी,
मगर अब गोशे-दिल[३७] से आख़िरी सुन गुफ़्तगू मेरी।
तलाशे यार में निकली न फिर भी आरज़ू मेरी,
कहाँ से ले गई मुझको कहाँ तक जुस्तजू मेरी।
दमे ज़ुल्मो-सितम, मैं दिल ही दिल में शाद[३८] होता हूँ,
निकलती है दहन[३९] से आह बन कर आरज़ू मेरी !
ठहर ऐ बेख़ुदीए[४०] शौक़ ! मुझको बात करने दे,
अभी ख़लवत[४१] में दिल से हो रही है गुफ़्तगू मेरी।
वह सब से पूछते हैं, चार हरफ़े आरज़ू क्या हैं ?
ज़माने में कहानी बन गई यों आरज़ू मेरी !
ज़बाने-इश्क़ से, मैं वाक़ेआते[४२] हुस्न कहता हूँ,
समझ में दोस्तों के आए क्योंकर गुफ़्तगू मेरी।
हवाए गुल[४३] में किसको चैन कहते हैं, सुकूँ[४४] क्या है ?
क़फ़स[४५] तक खींच कर लाई चमन से आरज़ू मेरी !
ज़माने भर से खुल कर जल्वए-जानाँ[४६] यह कहता है,
चमक है शश[४७] जहत मेरी झलक है चार सू मेरी।
दमे जोशे जुनूँ, हर सिम्त[४८], क्या-क्या ख़ाक उड़ाता हूँ,
मिला देगी कभी मिट्टी में मुझको, आरज़ू मेरी !
क़यामत[४९] में यह फ़रमाएँगे, वह ख़ामोश रहने पर,
ख़ुदा के सामने रख ली किसी ने आबरू मेरी !
जो गुलशन में, अभी मौजूद हैं, तिनके नशेमन[५०] के,
दिखाए उनको ए सय्याद, यह है आरज़ू मेरी !
दमे-आख़िर सुनाऊँ हाले-ग़म तो किस तवक़्क़ा[५१] पर,
कोई समझेगा क्या, उलझी हुई अब गुफ़्तगू मेरी।
कोई यह सोच कर आँखों के आगे आ नहीं सकता,
करें अहले तमाशा सिद्क़ दिल[५२] से आरज़ू मेरी।
यह अच्छी जुस्तजू है, जुस्तजू क्या है तमाशा है !
मुझे है जुस्तजू उनकी, उन्हें है जुस्तजू मेरी।
किसी के वास्ते, मैं ख़ून के आँसू जो रोऊँगा,
तो होकर सुर्ख़रू, निकलेगी दिल से आरज़ू मेरी।
वह सुन कर हाथ अपने कान पर रक्खेंगे ऐ "बिस्मिल",
असर में इस क़दर डूबी हुई है गुफ़्तगू मेरी।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

* * *

२२—खोज, २३—आदि, २४—अन्त, २५—व्यवस्था, २६—पागलपन, २७—आदर, २८—माली, २९—मरना, ३०—क़ब्र, ३१—शान्ति-कामना, ३२—दोष ढूँढ़ने वाले, ३३—छोड़ना, ३४—शराबख़ाना, ३५—परहेज़गार, ३६—घड़ा, ३७—दिल का कोना,

३८—ख़ुश, ३९—मुँह, ४०—लीनता, ४१—एकान्त, ४२—घटनाएँ, ४३—फूल, ४४—शान्ति, ४५—पिंजड़ा ४६—प्रेमिका का सौन्दर्य, ४७—हर तरफ़, ४८—तरफ़, ४९—प्रलय, ५०—घोंसला, ५१—आशा, ५२—सच्चे दिल से।

(२०वें पृष्ठ का शेषांश)

स्थापित की, उनकी सहानुभूति प्राप्त की और साम्राज्यवाद-विरोधी एक दल तैयार किया।

पर सुदूर पूर्व में रूस को नई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। निकट पूर्व के टर्की, अफ़ग़ानिस्तान और ईरान तो बहुत कुछ स्वतन्त्र थे। पर सुदूर पूर्व के देशों में एक जापान को छोड़ कर बाक़ी सब के सब साम्राज्यवाद के चङ्गुल में फँसे थे। बल्कि जापान स्वयम् उन देशों में अपना साम्राज्यवादी पाँव फैला रहा था। रूस ने सब से पहिले चीन पर अपना ध्यान दिया। उस समय चीन की स्थिति भी ऐसी थी कि रूस का कार्य बड़ा सरल हो गया। १९२० के बाद के चीन के राष्ट्रीय आन्दोलन का झुकाव रूस के पक्ष में था। जापान चीन पर अत्याचार कर रहा था। यहाँ तक कि चीन ने जापानी माल का बहिष्कार कर रक्खा था। अतएव जापान को रोकने के लिए चीन रूस के साथ काम करने को तैयार था। पश्चिम के साम्राज्यवादी राष्ट्र भी चीन पर आतङ्क जमा रहे थे, अतएव उनके विरुद्ध भी चीन रूस से मिलने के लिए पूर्णतया तत्पर था। एक ही समय चीन और रूस एक दूसरे की दोस्ती के इच्छुक थे, अतएव १९२४ में दोनों राष्ट्रों में एक सन्धि हुई। चीन के बारे में ज़ारों ने दूसरे देशों से जो सन्धियाँ की थीं, वे सब इस सन्धि द्वारा रद्द कर दी गईं। चीन की ईस्टर्न रेलवे के दस डाइरेक्टर नियुक्त किए गए, जिनमें से पाँच चीन के और पाँच रूस के थे। यह भी तय हुआ कि इस रेलवे के सम्बन्ध में जितने मामले भविष्य में होंगे वे सब चीन और रूस आपस में तय कर लेंगे और किसी तीसरे राष्ट्र का इससे कोई सम्बन्ध न होगा। मित्र-राष्ट्रों ने इस समझौते का तीव्र विरोध किया, क्योंकि वे भी रेल के मामले में अपना अधिकार चाहते थे। १९२५ में रूस ने जापान से सन्धि की। जापान को बहुत सी आर्थिक सुविधाएँ देकर उसको अपना मित्र बनाया।

इस तरह रूस ने एशिया के प्रायः सभी राष्ट्रों से मैत्री स्थापित की। रूस की दूरदर्शिता तथा बुद्धिमानी से रूस, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, चीन, टर्की तथा जापान का एक गिरोह बन गया। इनका उद्देश्य है यूरोपीय राष्ट्रों के साम्राज्य-विस्तार को रोकना। यह नवीन एशिया के इतिहास का पहिला अध्याय है। रूस के नेतृत्व में एशिया के राष्ट्र अपने को यूरोपीय साम्राज्यवाद से बचाने तथा एशिया की उन्नति का प्रयत्न कर रहे हैं। अभी तो इस कार्य का श्रीगणेश हुआ है! देखना है, इसमें इन राष्ट्रों को कहाँ तक सफलता मिलती है और रूस अपनी नीति में कितना सफल होता है।

* * *

इस्लाम का प्रारम्भिक इतिहास

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

(गताङ्क से आगे)

इसके बाद उस्मान इब्ने-अफ़ान ख़लीफ़ा हुए। इनकी उम्र ७० वर्ष की थी। गद्दी पर बैठते ही इन्होंने यज़्दगुर्द को क़त्ल करने को फ़ौज ईरान भेजी। क्योंकि उमर मरती बार कह गए थे कि उसका नामोनिशान दुनिया से मिटा देना। बेचारा बादशाह इधर-उधर मारा-मारा और छिपता फिरता रहा। उसने चीन और तुर्किस्तान से मदद माँगी, पर न मिली। उसके साथियों ने उसे पकड़वा देने की सलाह की, पर उसे मालूम हो गया और वह अपनी पगड़ी के सहारे मर्व के क़िले से उतर कर अँधेरी रात में भागा। रास्ते में एक नदी थी, उसे पार उतारने के लिए मल्लाह ने ४) माँगे, पर उसके पास रुपए न थे। उसने लाखों रुपए मूल्य की क़ीमती अँगूठी देनी चाही, पर मल्लाह ने न ली। इतने में मुसलमान पहुँच गए और उसे टुकड़े-टुकड़े कर डाला! इस प्रकार ४,००० वर्ष से चमकता हुआ पारसियों का सितारा अस्त हो गया!

उस्मान ने उमर इब्ने-यास को मिश्र से बुला कर उसकी जगह अब्दुल्ला इब्ने-साद को दे दी। इससे लोग नाराज़ हो गए और मिश्र में ग़दर मच गया। मुसलमान वहाँ से मार भगाए गए। तब फिर उस्मान भेजा गया। इसने सिकन्दरिया को फिर छीना। पर ख़लीफ़ा ने फिर अब्दुल्ला को भेज दिया। इस बार उसने उत्तर अफ़्रीका पर धावा बोलने का निश्चय किया और ४० हज़ार सेना लेकर त्रिपली पर छावनी डाल दी। उधर से जनरल ग्रेगरस एक लाख, बीस हज़ार रोमन्स सेना लेकर मुक़ाबले में आ डटा। कई दिनों तक घमासान युद्ध होता रहा। अन्त में एक दिन धोखे से ग्रेगरस मार डाला गया और उसकी युवती कन्या क़ैद कर ली गई। सेना भाग गई और नगर पर अधिकार कर लिया गया।

इस ख़लीफ़ा ने .कुरान की प्रतियों का मुहम्मद साहेब की ख़ो हफ़सा की प्रति से मुक़ाबला कराया। जिनमें पाठ भेद था उन्हें जलवा दिया और हफ़सा वाली प्रति की कई नक़लें करा कर सीरिया, मिश्र और फ़ारस आदि देशों में भेजा। वर्तमान .कुरान वही है।

इस ख़लीफ़ा ने लाखों रुपए अपने सम्बन्धियों को बाँट दिए थे। इससे मुसलमान इससे बहुत नाराज़ हो गए। उसके छल-कपट के भी कुछ भेद खुले। इस पर लोगों ने उसके घर में घुस कर उसे क़त्ल कर दिया। मृत्यु के समय वह ८२ वर्ष का था। उसकी लाश तीन दिन तक वैसे ही पड़ी रही और जब सड़ने लगी तब बिना नहलाए और नए कपड़े पहनाए, वैसे ही गाड़ दी गई।

इसके बाद अली इब्ने-अबूतालिब ख़लीफ़ा हुआ। यह व्यक्ति दयालु, न्यायप्रिय और शान्त था। परन्तु ख़लीफ़ा-पद के लिए कठोर स्वभाव पुरुष की आवश्यकता थी, इसलिए अली के ख़लीफ़ा होते ही भीतरी विद्रोह फूट पड़ा। मुहम्मद साहब की प्यारी विधवा आयशा इसकी शत्रु थी। उधर तलहा, ज़बीर और मुआविया भी ख़िलाफ़त के उम्मीदवार थे। इन लोगों ने प्रसिद्ध कर दिया कि उस्मान के बध में अली का षड्यन्त्र था। इससे लोग भड़क गए। मुआविया ने दमिश्क की मस्जिद में उस्मान का ख़ून में रँगा हुआ कुरता बाँस पर लटका कर खड़ा कर दिया, जिसे देखते ही सीरिया के लोग आपे से बाहर हो गए। मुआविया ने ६ हज़ार सेना देखते-देखते एकत्र कर ली। उधर अली का दल भी काफ़ी था। आयशा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि मैं ख़ुदा और रसूल के नाम पर तलहा और ज़बीर के साथ बसरा जाती हूँ। जो मुसलमान मेरा साथ देना चाहें, और उस्मान के ख़ून का बदला लेना चाहें, वे मेरे पास चले आवें। मैं खाना, कपड़ा, घोड़ा और हथियार दूँगी। उसके साथ हज़ारों आदमी हो गए। पर जब वह बसरे पहुँची तो वहाँ के हाकिम उस्मान ने फाटक न खोला और उल्टे मुक़ाबले को तैयार हो गया, ख़ूब गाली-गलौज हुई। अन्त में कौशल से ये लोग शहर में घुस गए और उस्मान को क़ैद कर लिया। बसरा पर आयशा का अधिकार हो गया। अली ने ९०० आदमी साथ लेकर बसरे पर चढ़ाई कर दी। मार्ग में ३० हज़ार सेना उसे और भी मिल गई। युद्ध हुआ, आयशा के साथी मारे गए और वह क़ैद हुई। पर अली ने उसे आदरपूर्वक ४० दासियों सहित मदीने भिजवा दिया।

अब अली का एक मात्र शत्रु—मुआविया बच गया था। वह ८० हज़ार सेना लिए शाम की सीमा पर डटा था। अली ने ९० हज़ार सेना लेकर उस पर धावा बोल दिया। युद्ध हुआ और ४५ हज़ार आदमी मुआविया के तथा ३० हज़ार ख़लीफ़ा के मारे गए। अन्त में सन्धि-चर्चा चली। फलतः परस्पर दोनों दल गाली-गलौज करने लगे। गाली-गलौज का यह रिवाज जुमे की नमाज़ के पीछे अब तक चला आता है।

अब एक तीसरा और सम्प्रदाय खड़ा हुआ, जिसका नाम ख़ार्जी था। अब्दुल्ला इब्ने-वहब इसका ख़लीफ़ा बना। इस दल में २५ हज़ार आदमी थे। इस पर अली ने एक झण्डा खड़ा करके घोषणा की कि जो अमुक समय तक इसके नीचे चला आवेगा, क्षमा किया जायगा। इस पर २१ हज़ार आदमी चले आए। बाक़ी चार हज़ार अब्दुल्ला के पास बच रहे, जो वीरता से लड़ कर काम आए। सिर्फ़ ९ आदमी ज़िन्दा बचे।

उधर मुआविया ने मिश्र में विद्रोह फैला दिया। अली ६० हज़ार सेना लेकर मिश्र पर चला। वे जो नौ ख़ार्जी बचे थे, उन्होंने निश्चय किया

कि उमर, अली और मुआविया, ये ही मुस्लिम-विद्रोह की जड़ हैं, इसलिए इन तीनों को एक साथ ही क़त्ल कर देना चाहिए। तीन आदमियों ने यह काम अपने ऊपर लिया। उमर और मुआविया तो किसी भाँति बच गए, पर अली पर कोफ़ा में अब्दुल रहमान ने नमाज़ पढ़ते वक्त वार किया, जिससे उसकी खोपड़ी फट गई और ३ दिन के बाद, ६३ वर्ष की आयु में वह मर गया। उसके १५ पुत्र और १६ पुत्रियाँ थीं। अली के पक्ष वाले 'शीआ' कहाते हैं और वे इसके पूर्व के तीनों ख़लीफ़ाओं को मानने से इन्कार करते हैं।

इसके बाद हसन इब्ने-अली ख़लीफ़ा हुआ। इसकी आयु ३७ वर्ष की थी और वह शान्त, सुशील और साधु स्वभाव का था। पर इसका छोटा भाई हुसेन वीर था। उसने ६० हज़ार फ़ौज लेकर मुआविया पर चढ़ाई की। पर भीतरी कलह के कारण हार गया और ख़िलाफ़त छोड़ दी। अन्त में हसन की स्त्री ने उसे विष देकर मार डाला। उसे यज़ीद ने यह प्रलोभन दिया था कि मैं तेरे साथ विवाह कर लूँगा, पर पीछे यज़ीद ने उसे इसी अपराध पर क़त्ल करवा दिया।

इसके बाद मुआविया ख़लीफ़ा बना और उसने क़ुस्तुन्तुनिया पर फ़ौज भेजी। पर उसकी हार हुई। उसने क़ुस्तुन्तुनिया के ईसाई बादशाह को ३० हज़ार अशर्फ़ी, ५० दास-दासियाँ और ५० अरबी घोड़े, प्रति वर्ष कर देना स्वीकार किया। इसके बाद उसने १० हज़ार सवार अफ़्रीका पर भेजे और वहाँ किरवान नामक एक शहर बसाया। वह बीस वर्ष तक ख़लीफ़ा रह कर मरा।

प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री

इसके बाद इसका बेटा यज़ीद ३४ वर्ष की आयु में ख़लीफ़ा हुआ। उसे मक्का और मदीना के सिवा तमाम प्रान्तों ने ख़लीफ़ा मान लिया। परन्तु मदीने में हसन का भाई हुसेन था, उसने यज़ीद को ख़लीफ़ा नहीं माना। क्योंकि वह स्वयं ख़िलाफ़त का दावेदार था। फलतः उसे घेर लिया गया और पानी बन्द कर दिया गया। इसके साथ ३२ सवार और ४० प्यादे थे। सब लड़ कर मारे गए। यह अन्याय-युद्ध करबला के मैदान में हुआ था। जब हुसेन का सिर काट कर अब्दुल्ला के सामने रक्खा गया तो उसने उस पर थूका और जूतियों से ठोकर मार कर एक तरफ़ को फेंक दिया। मुसलमान मुहर्रम में दस दिन तक इसी युद्ध की स्मृति मनाते हैं।

मक्का और मदीना में अब्दुल्ला ने यज़ीद के विरुद्ध ख़ूब प्रचार किया तथा स्वयं वहाँ का ख़लीफ़ा बन बैठा। इस पर १२ हज़ार सेना लेकर मुस्लिम इब्ने-अक़बा ने मदीने पर चढ़ाई की और उसे फ़तह कर, वहाँ लूट-मार तथा क़त्लेआम मचा दिया। फिर मक्का पर चढ़ दौड़ा और काबा को तहस-नहस कर डाला। इसी बीच में यज़ीद मर गया। उसके बाद उसका बेटा ख़लीफ़ा हुआ, पर छः मास में ही उसने गद्दी त्याग दी और मरवान इब्ने हिकम ख़लीफ़ा हुआ, जिसे ज़हर देकर मार डाला गया।

इसके बाद उसका बेटा अब्दुल मलिक ख़लीफ़ा हुआ। इसकी आयु ४० वर्ष की थी। अब्दुल्ला अब भी मक्का और मदीने में ख़लीफ़ा माना जाता था, इसलिए इसने बतुल मुक़द्दस, पैलेस्टाइन को हज की जगह नियत किया। उधर शीआ लोगों ने अली के क़त्ल का बदला लेने की तैयारी की। मुन्तक़िम उनका ख़लीफ़ा बना और उसने ५० हज़ार आदमियों को क़त्ल किया। अब्दुल मलिक ने उसके सामने बड़ी भारी सेना भेजी और वह युद्ध में, ६२ वर्ष की आयु में, मारा गया। इसके बाद मसअब हाकिम बना और वह भी मारा गया। जब उसका सिर ख़लीफ़ा के सामने लाया गया, तो उसने क़ातिल को १ हज़ार अशर्फ़ी इनाम देने का हुक्म दिया। परन्तु क़ातिल ने इन्कार करते हुए कहा, "मेरी उम्र ७० साल की है। मैंने समय का ख़ूब रङ्ग देखा है। इसी कोफ़े के क़िले में हुसेन का सिर अब्दुल्ला इब्ने-ज़याद के सामने लाया गया, इब्ने-ज़याद का मुन्तक़िम के सामने और मुन्तक़िम का मसअब के सामने और अब मसअब का सिर आपके सामने लाया गया है।" बुड्ढे की बात सुन कर ख़लीफ़ा बहुत शर्माया और क़िले को मिस्मार करने का हुक्म दिया।

अब्दुल्ला अब भी मक्का और मदीने का ख़लीफ़ा बना बैठा था। उस पर चढ़ाई करने को ख़लीफ़ा ने हज्जाज को सेना देकर भेजा। अब्दुल्ला वीरता से लड़ कर मारा गया। इससे मक्का और मदीना भी अब्दुल मलिक के हाथ आ गए। अब सिर्फ़ ख़ुरासान रह गया था। उसे भी हज्जाज ने फ़तह कर वहाँ के हाकिम का सिर काट लिया। अब ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक तमाम मुस्लिम साम्राज्य का एकछत्र स्वामी हो गया।

इस समय भी रोम सम्राट भूमध्य सागर पर अधिकार रखते थे। अब ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक ने कारथेज नगर को, जो उस समय सब नगरों से बड़ा था और उत्तर अफ़्रिका का राज्य-नगर था, ले लेने के लिए दृढ़ सङ्कल्प किया। सेनापति हुसेन ने उसे वीरतापूर्वक विजय किया और जला कर भस्म कर दिया, और असंख्य स्त्री-पुरुषों को काट डाला।

इस प्रकार ईसाई धर्म के पाँच बड़े राज्य-नगर, जिनमें जेरूसलम और सिकन्दरिया भी थे, जला दिए गए। इसके बाद शीघ्र ही कुस्तुन्तुनिया का भी पतन हो गया। इस समय मुसलमानों की तलवार ने अल्टाई पर्वत से लेकर अटलाण्टिक समुद्र तक और एशिया के मध्य से लेकर अफ़्रिका के पश्चिमी किनारे तक अपना अधिकार जमा लिया था। संसार के इतिहास में इतना शीघ्र कोई धर्म नहीं फैला। अन्त में यह ख़लीफ़ा ६० वर्ष की आयु में मरा।

उसके बाद उसका बेटा वलीद ख़लीफ़ा हुआ। वह लम्बा, मोटा, काला और मज़बूत आदमी था। उसकी ६३ स्त्रियाँ और बहुत सी दासियाँ थीं।

गद्दी पर बैठते ही उसने दमिश्क में मस्जिद बनाने के लिए ईसाइयों का एक प्रसिद्ध गिरजा सेन्ट जॉन, जो बहुत प्राचीन और सुन्दर बना हुआ था, ज़बर्दस्ती गिरवा दिया।

इसके बाद वह यूरोप पर टूट पड़ा। उसका भाई मुस्लिम एशिया-माइनर को रौंदता हुआ यूरोप तक जा धमका और हज़ारों स्त्रियों को पकड़ कर दासी बना कर बेच डाला। इधर मुस्लिम का बेटा तुर्किस्तान में घुस गया और समरकन्द, बुख़ारा और ख़्वारिज़्म पर दख़ल जमा लिया। उसका सेनापति मूसा अण्डलूसिया पर चढ़ गया। स्पेन का सेनापति जुलियन उससे मिल गया। पादरियों ने भी विश्वासघात किया, इससे युद्ध में स्पेन का राजकुमार मारा गया। तब बादशाह ने घोषणा की कि १५ से ५० वर्ष तक की आयु के सब लोग सेना में भरती हो जायँ। इस प्रकार विशाल सेना लेकर वह डट गया, पर विश्वासघातियों की मदद से उसे मुसलमानों ने परास्त कर दिया। जिरिक्स में भयानक युद्ध हुआ। स्पेन का बादशाह रोडरिक हार कर भाग गया और अन्त में गाडल्लकिवर नदी में डूब कर मर गया।

वलीद इसी समय मर गया और उसका बेटा सुलेमान ख़लीफ़ा हुआ। इसने सर्व-प्रथम मूसा के परिवार को क़त्ल करा दिया और मूसा की जगह हुर को स्पेन का सूबेदार बनाया। उसने निश्चय किया कि सेना में जितने सैनिक हैं, या तो उन्हें मुसलमान बना लिया जाय या क़त्ल कर दिया जाय। उसने जुलियन सेनापति को बुलाया, जिसके विश्वासघात की सहायता से स्पेन को फ़तह किया गया था। पर वह हुर का अभिप्राय समझ गया और भाग गया। उसकी स्त्री और बच्चा घर में घेर लिए गए। डर कर उसने बच्चे को क़ब्र में छिपा दिया। पर वह ढूँढ़ कर निकाल लिया गया। स्त्री ने हुर के पैरों पर गिर कर दया की प्रार्थना की। पर उसने कहा कि क़ाफ़िर के लिए रहम नहीं है। उसने क़ाज़ी को हुक्म दिया कि बच्चे को क़िले के बुर्ज पर ले चलिए। यही किया गया। बच्चा डर कर क़ाज़ी से चिमट गया। उसने बहुत रोना-पुकारना किया, पर उसे बुर्ज से

नीचे फेंक दिया गया। इसके बाद अन्य सब स्त्री-पुरुषों को बुला कर एक खाई में खड़ा किया गया। उनके बीच में जूलियन की स्त्री भी थी। सब से कल्मा पढ़ने को कहा गया, लेकिन इन्कार करने पर खाई में मिट्टी डाल कर सबको ज़िन्दा ज़मींदोज़ कर दिया गया।

उधर एक दल सेनापति अब्दुल रहमान की अध्यक्षता में फ़्रान्स पर टूट पड़ा और उसे कुचल डाला। वह लायर नदी तक पहुँच गया। तमाम गिरजे और मठों को लूट लिया गया और चमत्कारी पादरियों की कुछ भी न चली।

अन्त में, सन् ७३२ में, चार्ल्स मारटेल ने इस आक्रमण से टक्कर ली। सात दिन की कड़ी लड़ाई के बाद अब्दुल रहमान मारा गया, और मुसलमान पीछे लौट आए। इस लड़ाई के विषय में इतिहासकार मि० गिबन कहते हैं कि "जिब्राल्टर पहाड़ी से लायर नदी के किनारों तक अर्थात् १००० मील से अधिक दूर तक मुसलमानों की विजयी सड़क बढ़ती चली गई थी, और यदि इतनी ही दूर वे और आगे बढ़ जाते, तो पोलैण्ड और स्काटलैण्ड के पहाड़ी भागों तक पहुँच जाते।"

अब इटली की बारी आई। सन् ८४६ में रोम का जो अपमान धर्मान्ध मुसलमानों ने किया था, वह बड़ा ही नीच भाव से किया गया था। एक छोटी सी मुसलमानी सेना टाइगर नदी पार करके नगर के कोट के सामने आ डटी। यह फाटक तोड़ कर नगर में जाने योग्य शक्तिशाली न थी। सेण्ट पीटर और सेण्ट पॉल के समाधि-स्थलों को इसने विध्वंस करके लूट लिया। सेण्ट पीटर के गिरजा की चाँदी की वेदिका तोड़ कर उसकी चाँदी अफ़्रिका भेज दी गई। यह पीटर की वेदिका रोमन ईसाइयों के धर्म का मुख्य चिन्ह था।

इस प्रकार रोम नगर का सर्वाधिक अपमान हुआ। एशिया माइनर के गिरजे मिट चुके थे, बिना आज्ञा लिए कोई ईसाई जेरूसलम नगर में पैर नहीं रख सकता था और सुलेमान के मन्दिर के सम्मुख ख़लीफ़ा उमर की मस्जिद खड़ी थी। सिकन्दरिया नगर भग्नावशिष्ट भागों में से 'दया की मस्जिद' उस स्थान का चिन्ह बता रही थी, जहाँ भयानक मार-काट के बाद कुछ मनुष्य दया करके छोड़ दिए गए थे। कारथेज़ नगर में सिवा काले खण्डहरों के कुछ न बचा था। सर्वाधिक शक्ति-सम्पन्न मुसलमानी राज्य का विस्तार अटलाण्टिक समुद्र से लेकर चीन की दीवार तक, और कैस्पीयन समुद्र के किनारों से लेकर हिन्द महासमुद्र के किनारों तक फैला हुआ था। अब भी उसकी यह हविस बाक़ी थी कि वह सीज़र के उत्तराधिकारियों को उनकी राजधानी से निकाल दे।

परन्तु अरब के आन्तरिक झगड़ों ने यूरोप की रक्षा कर ली। तीन समूहों ने, जो अपने भिन्न रङ्ग के झण्डे रखते थे ख़लीफ़ा के राज्य के तीन टुकड़े कर डाले। उमैया वंश वालों का झण्डा सफ़ेद रङ्ग का था, फ़ातिमा वंश वालों का हरा था और अब्बासियों का काला था। यह अन्तिम झण्डा मोहम्मद के चचा के समूह का था। इस झगड़े का यह फल हुआ कि दसवीं शताब्दी में मुसलमानी राज्य तीन भागों में विभक्त होकर, बग़दाद, काहिरा और कारडोवा के राज्य बन गए। मुसलमानों की राजनैतिक एकता का अन्त हो गया और ईसाई संसार को दैवी सहायता से रक्षा मिली। अन्त में अरबी धर्म धीमा पड़ा और तुर्की और बर्बर शक्तियाँ उठीं!!

मुसलमान बड़े भारी मग़रूर हो गए थे, और वे पूर्ण रीति से घर-घर झगड़ों में फँसे हुए थे। आकले ने लिखा है कि मुसलमानों का कोई ऐसा मामूली अफ़सर न था, जो तमाम यूरोप की सम्मिलित सेनाओं से हारने पर भी अपनी भारी बेइज़्ज़ती न समझता रहा हो। इनकी घृणा के विषय में यह उदाहरण काफ़ी है कि रोमन सम्राट नेसीफ़रस ने ख़लीफ़ा हारूँरशीद के पास एक पत्र भेजा था, जिसका उत्तर यह दिया गया था—"अत्यन्त दयालु ईश्वर के नाम पर मुसलमानों का ख़लीफ़ा हारूँरशीद रोमीय कुत्ते नसीफरस के नाम पत्र लिखता है। हे क़ाफ़िर माता के पुत्र! मैंने तेरा पत्र पढ़ा। उस पत्र का उत्तर तू सुनेगा नहीं, देखेगा।" और इस पत्र का उत्तर रक्त और अग्नि के अक्षरों में फ़ीज़िया के मैदानों में लिखा गया।

यह सम्भव है कि हारी हुई जाति अपने देश को फिर से जीत ले। परन्तु स्त्री-हरण का प्रतिकार नहीं है—यह अमर पराजय है।

जब अबू उबैदा ने एण्टिआक नगर ले लेने की ख़बर ख़लीफ़ा उमर के पास भेजी थी, तब उमर ने उसे कोमल शब्दों में मलामत दी थी कि तूने वहाँ की औरतों के साथ सिपाहियों को ब्याह क्यों नहीं करने दिया। वे शब्द आज्ञापत्र पर इस ढङ्ग के थे—"यदि वे लोग सीरिया में विवाह करना चाहते हैं, तो उन्हें कर लेने दो और जितनी लौंडियों की उन्हें आवश्यकता हो, उतनी लौंडियाँ वे रख सकते हैं।"

बस यही बहुविवाह का क़ानून था, कि पराजित देशों से स्त्रियाँ अपहरण की जायँ। फिर यही बात सदैव के लिए मुसलमानी रीति में समा गई। ऐसे दम्पतियों की सन्तान अपने विजेता पिताओं की सन्तान होने पर गर्व करती थी। "इस नीति के प्रभाव का इससे अच्छा प्रमाण नहीं दिया जा सकता, जो उत्तरीय अफ़्रीका में मिलता है। नवीन प्रबन्धों को करने में इस बहु-विवाह प्रथा का बेरोक प्रभाव बहुत ही विचित्र हुआ। एक पीढ़ी से कुछ ही अधिक समय में ख़लीफ़ा के अफ़सरों ने उसे सूचना दी कि राज्य-कर बन्द कर दिया जाय, क्योंकि इस देश में पैदा हुए सब बालक मुसलमान हैं और सभी अरबी भाषा बोलते हैं!!!

(क्रमशः)

["तब, अब, फिर और क्यों?" नामक अप्रकाशित ग्रन्थ के "क्यों" खण्ड का एक अध्याय। यह ग्रन्थ शीघ्र ही इस संस्था द्वारा प्रकाशित होने वाला है।]

* * *

जो ईसाई बन जाता है, उस अछूत का देखो रङ्ग!
जो हिन्दू है उसके जूता सीने का भी देखो ढङ्ग!!

क़ानूनीमल की बहस

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल० बी०]

(शेषांश)

क़ानूनीमल—यह तुम्हारी अक़्ल की कमी की ख़राबी है। इसलिए इन बातों को मैं तुम्हें किस तरह समझाऊँ। ख़ैर यों सही। अच्छा बताओ, हिन्दुस्तान असल में किसका मुल्क है?

यमदूत—हिन्दुस्तानियों का।

क़ानूनीमल—मगर इस पर तो अङ्गरेज़ों की हुकूमत है। इन्हीं लोगों ने इसे अपनी ताक़त से जीत कर अपना बना लिया है।

यमदूत—फिर भी यह उनका मुल्क क़ुदरतन नहीं हो सकता और न इसे वे हिन्दुस्तानियों के बराबर सच्चे दिल से प्यार कर सकते हैं; क्योंकि हर मुल्क के प्यार करने वाले उसी के निवासी होते हैं, जिनके मिज़ाज-पसन्द और ख़ासियत वहाँ पैदा होने की वजह से वहीं के मुआफ़िक़ होती है। इसलिए यद्यपि हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों के लिए पराया है, फिर भी असल में वह उन्हीं का अपना मुल्क है। उस पर वह अपने तन-मन-धन न्योछावर करने के लिए पूरा अख़्तियार रखते हैं।

क़ानूनीमल—तो बस इसी तरह से मैंने भी जिस स्त्री से प्रेम किया होगा, उसे ईश्वर ने असल में मेरे ही लिए बनाई होगी। वरना प्रेम पैदा ही न होता। क्योंकि ख़ुद तुम्हारे कहने का मतलब यही है कि आदमी उसी चीज़ को सच्चे दिल से प्यार कर सकता है, जिसको क़ुदरत ने उसके लिए तजवीज़ करके उसके शौक़ के मुताबिक़ बना रक्खा है। अब अगर समाज ने अपनी बेवक़ूफ़ी से उस पर किसी दूसरे का अख़्तियार दे दिया हो तो क्या मैं भी उसकी बेवक़ूफ़ी में आकर अपनी चीज़ को छोड़ देता? मैं भूल कर भी समाज को ईश्वर से बड़ा समझ कर उनकी बेइज़्ज़ती नहीं कर सकता था। इसलिए सच पूछो तो तुम्हें उन लोगों को नरक में भेजना चाहिए, जिन्होंने पराई औरतों को अपने शौक़ और पसन्द की पाकर उनसे मुहब्बत नहीं की और उन्हें अपनी नहीं समझा। तुम्हीं देखो, इन लोगों ने समाज के बहकाने में आकर ईश्वर की देन और उनके लगाए हुए रिश्ते की कैसी सख़्त बेक़दरी की है।

यमदूत—तुमने मुझ पर कुछ जादू तो नहीं कर दिया है। क्योंकि तुम्हारी यह बात भी मुझे ग़लत नहीं मालूम होती है। मगर हाँ, जब ईश्वर ने दुनिया बसाने के लिए मर्द-औरतों में मुहब्बत का रिश्ता पैदा ही किया था तो फिर शादी-ब्याह की क्या ज़रूरत थी?

क़ानूनीमल—यह तो महज़ बच्चों को समाज की नज़र में हरामी कहे जाने से बचाने के लिए। क्योंकि आदमियों का समाज तुम्हारी ही तरह बिलकुल उल्लू है। वह इस क़ुदरत के रिश्ते को समझ ही नहीं सकता। इसीलिए उसने शादी-ब्याह का अपना रिवाज निकाल दिया। तभी तो वह क़दम-क़दम पर ठोकरें खाता है।

यमदूत—हाय! अब क्या करूँ? तुम्हारे इस मद के सभी पाप मुझे अब धर्म ही धर्म मालूम हो रहे हैं। अच्छा बचा, किसी मद में तो फँसोगे। हाँ, तुम अव्वल नम्बर के झूठे भी हो; क्योंकि तुम जब वेश्या के यहाँ से अपने घर आते थे तो अपनी स्त्री से हमेशा झूठ बोलते थे और कहते थे कि मैं ज़रा रामायण सुनने गया था!

क़ानूनीमल—तो क्या कहता कि "कोकशास्त्र" पढ़ने गया था? बिलकुल ही गावदी हो क्या? ईश्वर ने आदमियों को अक़्ल आख़िर किसलिए दी है? इसीलिए कि मौक़ा-महल समझ कर कभी-कभी अपनी अक़्ल से भी काम लें। वरना फिर आदमी को आदमी क्यों बनाया, एकदम जानवर ही न बना देते? यह मैं मानता हूँ कि झूठ बोलना पाप है, क्योंकि इससे बहुत सी मुसीबतें पैदा होती हैं, मगर किसी मौक़े पर इससे सबके लिए फ़ायदा हो और बला टले, तो उस मौक़े पर सच बोलना पाप होगा, झूठ नहीं। इसलिए अगर मैं उन वक़्तों पर अपनी घरवाली से सच बोलता तो उसके दिल को तकलीफ़ होती। वह डाह में पड़ कर आफ़त मचा देती, घर का सारा कारबार ही बिगड़ जाता। तब तुम्हीं बताओ कि मैं इन मुसीबतों को समझते हुए ऐसे मौक़ों पर सच बोलने का पाप किस तरह कर सकता था?

यमदूत—बेशक! यह भी कहना तुम्हारा सच जान पड़ता है। अब मैं बाज़ आया तुमसे कुछ पूछ-ताछ करने से। इसी तरह दुनियादारी के मद में तुम अपने सभी पापों की सफ़ाई दे दोगे। ख़ैर, इन बातों में तुम अपने को बेक़सूर साबित भी कर ले जाओ तो कोई हर्ज नहीं। किन्तु तुम साल भर तक सरकारी वकील रह चुके हो और उस बीच में तुमने कई बेगुनाहों को फाँसी दिलवा दी है। इसलिए इस पाप से तुम किसी तरह भी नहीं छुटकारा पा सकते।

क़ानूनीमल—अच्छा उधर न दाल गली तो अब तुम इस तरफ़ झुके। मगर उसमें मेरा क्या क़ुसूर? जैसा तुम कहते हो कि मैं तो हुक्मी बन्दा हूँ, जैसा ईश्वर ने हुक्म दिया वैसा किया, बस वही हाल मेरा है। क्योंकि जैसा हमारे यहाँ का क़ानून और उसके बर्तने का ढङ्ग था, वैसा ही मैंने भी किया। अगर ऐसा करने में कोई बेगुनाह लटक गया तो उसका ज़िम्मेदार क़ानून हो सकता है, मैं नहीं। मैं तो, अगर सच पूछो, फाँसी की सज़ा को सख़्त नफ़रत की निगाह से देखता हूँ। यहाँ तक कि अगर मेरा बस चलता तो इसको एकदम उठा ही देता।

यमदूत—अच्छा, अगर इसमें तुम्हारा नहीं, बल्कि क़ानून का क़ुसूर है, तो तुम फाँसी पर अपने यहाँ का क़ानून समझाओ।

क़ानूनीमल—मगर मुश्किल तो यह है कि क़ानूनी बारीकियाँ ऐसी होती हैं, जो बिना फ़ीस मिले किसी वकील को सूझतीं ही नहीं। यह हमारे यहाँ के क़ानूनदाँरों की पहली रस्म है, जिसे मैं क़ानून जानने वाला होकर किसी तरह तोड़ नहीं सकता। इसलिए तुम पहले इसके लिए मुझे फ़ीस दो तो शौक़ से सुनो।

यमदूत—फ़ीस? भला तुम्हें फ़ीस मैं क्या दे सकता हूँ?

क़ानूनीमल—नहीं कुछ दे सकते तो मुझे ईश्वर के दरबार में जाने का ख़ाली रास्ता ही बता दो। बस, इतने ही से हमारी इस रस्म की किसी तरह कुछ पाबन्दी हो जायगी।

यमदूत—अच्छा बता दूँगा।

क़ानूनीमल—यह उधार की बातचीत ठीक नहीं। ख़ैर, क़सम खाओ।

यमदूत—किसकी?

क़ानूनीमल—यह भी ठीक कहते हो। तुम्हारे तो कोई बाप ही नहीं, फिर क़सम किसकी दिलाऊँ? अच्छा भई, तुम्हारे ईमान पर छोड़ता हूँ, वह भी अगर हो तो। हाँ, क्या पूछते हो? हमारे यहाँ के फाँसी के क़ानून? अच्छा तो सुनो। मैं बहुत ही थोड़े में सब समझाए देता हूँ। क्योंकि जैसी छोटी फ़ीस होती है, उतनी ही छोटी वकीलों की बहस भी होती है।

यमदूत—बेहतर है, मेरे पास अब वक़्त भी बहुत कम है। ख़ैर कहो।

क़ानूनीमल—हर आदमी का यह क़ुदरती हक़ है कि वह अपने जान-माल और इज़्ज़त की सलामती के साथ अमन से रहे। जो हक़ सभी के लिए एक-सा हो, वही समाज का हक़ माना जाता है। क्योंकि समाज आदमियों के जमात को कहते हैं। आदमियों की क़ुदरत ऐसी है कि समाज से बाहर रह नहीं सकता और न इस तरह फुट्टैल रह कर उसका कोई काम ही चल सकता है। इसलिए समाज ने भी आदमियों के क़ुदरती हक़ों को अपने ही हक़ मान कर उनकी हिफ़ाज़त करने के लिए क़ायदे बनाए, ताकि सब लोग अमन से रह सकें। इसी तरह सल्तनत ने भी अपनी धाक जमाए रखने के लिए क़ानून बना रक्खे हैं, जिसमें हुकूमत पर आँच न आने पावे। बस, इन्हीं क़ायदे-क़ानून के तोड़ने को जुर्म कहते हैं।

यमदूत—मसलन?

क़ानूनीमल—चोरी करना, डाका डालना, सिक्का बनाना वग़ैरह-वग़ैरह।

यमदूत—और क़र्ज़ा लेना और फिर न अदा करना, यह क्या जुर्म नहीं है?

क़ानूनीमल—नहीं। यह लेन-देन का मामला सिर्फ़ लेने वाले और देने वाले से सरोकार रखता है, सारी जमात या सल्तनत से नहीं। और न यह आदमी का क़ुदरती हक़ है, जो उसे किसी को क़र्ज़ा देने या किसी से लेने के लिए मजबूर करता है। यह उसकी मर्ज़ी पर मुनहसिर है। अगर उसे किसी को क़र्ज़ा देने को जी चाहे या उस पर उसका काफ़ी एतबार हो तो दे; वरना न दे। अगर वह अपनी बेवक़ूफ़ी या लालच में कहीं अपना रुपया फँसा दे तो दूसरों से क्या मतलब?

यमदूत—इसी तरह चोरी भी सिर्फ़ उन्हीं दो आदमियों से क्यों नहीं सरोकार रखती। यानी एक उससे जिसके घर चोरी हो और दूसरा चोर से?

क़ानूनीमल—क्योंकि इसका असर सारी जमात पर पड़ता है। सभी लोग इस ख़्याल से बबड़ा उठते हैं कि कहीं मेरे यहाँ भी न चोरी हो जाय। अगर जमात इसे न रोके तो किसी के माल की ख़ैरियत नहीं है। इसीलिए यह जुर्म कहलाती है। क्योंकि यह किसी ख़ास आदमी के निजी हक़ को नहीं, बल्कि जमात के आम हक़ को तोड़ती है।

यमदूत—यह बात है? अच्छा। फिर सिक्का बनाना क्यों जुर्म है? इससे तो जमात का किसी क़िस्म का हक़ नहीं बरबाद होगा।

क़ानूनीमल—मगर सल्तनत की हुकूमत में तो बट्टा लगता है। अगर रय्यत सिक्का बनाने लगे तो सरकारी सिक्के की फिर क्या इज़्ज़त रह जायगी? इसीलिए जो काम सरकारी क़ानून के ख़िलाफ़ हों, वह जुर्म के मद में आ जाते हैं।

यमदूत—हाँ, जुर्म तो समझ में आ गया। अब तुम्हारे यहाँ इनके रोकने की तरकीब क्या है?

क़ानूनीमल—सज़ा! इस क़िस्म के क़ायदे-क़ानून जितनी ही बेदर्दी से तोड़े जाते हैं, उसके लिए उतनी

ही सख़्त सज़ा है, इन्हीं सज़ाओं में से एक फाँसी की भी है।

यमदूत—जुर्म रोकने के लिए सज़ा तो ठीक ही है। मगर तुम्हारे यहाँ के क़ानून में किन-किन ख़्यालों से सज़ा रक्खी गई है?

क़ानूनीमल—एक तो बदला लेने के ख़्याल से, क्योंकि इसकी ख़्वाहिश सिर्फ़ आदमियों ही में नहीं, बल्कि जानवरों तक में भी होती है। अगर किसी को कोई एक तमाचा मारे तो उसका भी यही जी चाहेगा कि इसका मैं किसी तरह से बदला लूँ। जब जमात ने आदमियों के क़ुदरती हक़ूक़ को अपना ही हक़ मान लिया तो इसने इन हक़ों के टूटने पर, जो आदमियों की बदला लेने की क़ुदरती ख़्वाहिश होती है, उसको भी अपने दिल में जगह दी। इसलिए यह जुर्म करने वालों को सज़ा देकर अपनी इस जलन को ठण्ढा करती है। दूसरे सज़ा देने में मुजरिमों पर इस नीयत से तकलीफ़ पहुँचाने का ख़्याल होता है, ताकि वह इसका ख़्याल करके फिर यह जुर्म न करे और इस तरह वह बाद को सुधर जाए, और तीसरा ख़्याल इसमें यह रहता है कि सज़ा को देख कर दूसरे लोग डरें और इस जुर्म को करने की हिम्मत न करें।

यमदूत—तो यह कहो कि सज़ा का ख़ास मक़सद यह है कि जमात में जुर्म न हो और जुर्म करने वाले भी सुधर कर भलेमानुस बन जायँ?

क़ानूनीमल—बेशक। इसीलिए मैं फाँसी की सज़ा को बहुत ही बुरा और बिलकुल बेकार समझता हूँ। और इसी वजह से बहुत से तालीमयाफ़्ता मुल्कों ने इस सज़ा को उठा दिया है।

यमदूत—क्यों?

क़ानूनीमल—क्योंकि इससे क़ानून का कोई भी मक़सद पूरा नहीं होता। मुलज़िम की जान चली जाने से उसे सुधरने का मौक़ा नहीं मिलता, और दूसरे इतने दिनों से इस सख़्त सज़ा के जारी रहने पर भी यह जुर्म न मिटे, बल्कि बढ़ते ही जाते हैं, जिनके लिए यह सज़ा है।

यमदूत—वह कौन-कौन से जुर्म हैं, जिनमें यह सज़ा दी जाती है?

क़ानूनीमल—इसका हवाला ताज़ीरात हिन्द के दफ़ात १२१, १३२, १९४, ३०२, ३०३, ३०५, ३०७ और ३९६ में है। बमूजिब दफ़ात १२१ और १३२ उन लोगों के लिए यह सज़ा है, जो सल्तनत के ख़िलाफ़ हथियार उठाएँ या कोशिश करें या सरकारी फ़ौज के हाकिम, सिपाही या मल्लाह को बग़ावत करने को बरग़लाएँ और उनके बरग़लाने से बग़ावत हो जाय।

यमदूत—यानी यह दोनों दफ़ाएँ सल्तनत की धाक जमाने के लिए हैं?

क़ानूनीमल—बेशक! मगर इसके लिए यह सज़ा बिलकुल ही ना-मुनासिब है। क्योंकि रय्यत सल्तनत के ख़िलाफ़ तभी आवाज़ उठाएगी जब हुकूमत की किसी न किसी बात से तङ्ग हो उठेगी। इसलिए जब कभी रय्यत की यह हालत हो तो सल्तनत को फ़ौरन अपने उन ऐबों को ढूँढ़ कर सुधारना चाहिए, जिनसे यह बात पैदा हुई है। इस तरह से इन जुर्मों में कमी हो सकती है। दर्द से चिल्लाने वालों को दुनिया से हटाने में कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि दर्द पैदा करने वाला ऐब तो वैसा ही बना रहा। इसके अलावा सल्तनत को यह भी ख़्याल करना चाहिए कि मुल्क की मुहब्बत एक क़ुदरती मुहब्बत है, जो सभी तालीमयाफ़्ता मुल्कों में बड़ी ही इज़्ज़त की निगाह से देखी जाती है। अगर बेचारे नासमझ हिन्दुस्तानी इस मुहब्बत में अन्धे होकर कोई बेजा काम कर भी बैठें तो उसके लिए इतनी सख़्त सज़ा देना कहाँ तक वाजिब है?

यमदूत—दुरुस्त है। तुम तो यार कुछ क़ाबिल भी मालूम होते हो। जो कहते हो सभी ठीक ही निकलता है। ख़ैर, इसके आगे और क़ानून बताओ।

क़ानूनीमल—दफ़ा १९४ उन लोगों के लिए यह सज़ा तजवीज़ करती है, जो झूठी गवाही देकर या झूठी शहादत जुटा कर किसी बेगुनाह को फाँसी दिलवा दें। मगर यह दफ़ा बेकार सी है। क्योंकि जहाँ किसी को फाँसी हो गई तहाँ फिर किसे ग़रज़ पड़ी है कि गड़ा मुर्दा उखाड़े और उस बेचारे को बेगुनाह साबित करके ग़लत चालान कराने वालों को फाँसी दिलवाए। जो अपने जीते जी अपने दुश्मनों की ताक़त को नीचा दिखा कर अपने को बेगुनाह नहीं साबित कर पाता, वह मरने के बाद भला क्या कर सकता है? दूसरे पुलिस कब यह गवारा कर सकती है कि अपने चालान को झूठा साबित होने का मौक़ा देकर अपने नाम पर कलङ्क लगाए। क्योंकि ख़ाली चालान कर देना ही उसका काम नहीं है; बल्कि मामले की सच्चाई निकालने की भी उस पर ज़िम्मेदारी रहती है। इसलिए इस पर कुछ कहना-सुनना बेकार है।

गिर्द को भी यह है तमन्ना कि रहूँ बाज़ के साथ

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

मुँह से निकले, मेरी फ़रियाद नए राज़[1] के साथ
लुत्फ़ तो सोज़[2] का जब है, कि रहे साज़[3] के साथ
ख़ैरख़्वाही का सबूत, इससे ज्यादा क्या है,
आग में कूद पड़ा, आपकी आवाज़ के साथ!
इस ख़ुशी में न करें, जान फ़िदा हम क्यों कर,
हाथ साहब ने मिलाया, बड़े एज़ाज़[4] के साथ!
लै कोई उठती है, दुनिया में, तो चिल्लाते हैं सब,
लोग आवाज़ मिलाते हैं, नए साज़ के साथ!
"पॉलिसी" हमने, यह दुनिया से निराली देखी,
क़त्ल भी करते हैं, पब्लिक को तो वह नाज़ के साथ!
देखें क्या हश्र[5] हो, दोनों का जनाबे "बिस्मिल",
गिर्द को भी यह है तमन्ना[6] कि रहूँ बाज़ के साथ!

१—भेद, २—जलन, ३—लगाव, ४—आदर से, ५—नतीजा, ६—चाह।

यमदूत—हाँ, अपने काम का छोटे से लेकर बड़े सभी पक्ष करेंगे, चाहे वह ग़लत ही क्यों न हो।

क़ानूनीमल—दफ़ा ३०२ उनके लिए है, जो किसी का जान-बूझ कर ख़ून करें और दफ़ा ३०३ यह सज़ा ख़ास तौर से बिना किसी रिआयत के उसे देती है, जो कालापानी का सज़ायाफ़्ता हो और वह ख़ून करे। यह दोनों दफ़ाएँ जमात के बदला लेने की जलन को ज़रूर ठण्ढा करती हुई मालूम होती हैं। मगर इस सज़ा को देते वक़्त यह जलन आपसे आप ठण्ढी होकर उल्टे हमदर्दी में बदल जाती है। अगर ऐसा न भी हो तो भी यह बदला मुनासिब से ज़्यादा ही होता है; क्योंकि जिसका ख़ून हुआ है वह हमेशा अचानक मारा जाता है। उसे यह पहले से ख़बर नहीं होती कि मैं अमुक दिन और अमुक समय इस तरह मारा जाऊँगा। मरने की तकलीफ़ चाहे जिस तरह की भी हो, इतनी सख़्त होती है जिसे कोई भी ज़िन्दा आदमी ठीक-ठीक नहीं बता सकता। उस पर अगर मरने वाले को यह बात भी मालूम हो जाय कि मुझे यह तकलीफ़ अमुक दिन भुगतनी पड़ेगी तो उसकी यह मुसीबत हज़ार गुना बढ़ कर उसको बुरी तरह तड़पाती है। इसलिए ख़ून किए जाने वाले की मौत से ख़ूनी की फाँसी कई दर्जा ज़्यादा तकलीफ़ देने वाली होकर मुनासिब बदले की हद से बढ़ जाती है।

यमदूत—हाँ, यह बात तो तुमने बड़े पते की कही। यह ख़्याल तुम्हारे क़ानून बनाने वालों को भी न सूझा होगा। ख़ैर, बदले के ख़्याल से यह मुनासिब न सही, फिर भी यह इस ख़्याल से तो ठीक है कि इसकी सख़्ती जान कर जमात थर्रा उठे और कोई उन जुर्मों को न करे जिसमें फाँसी की सज़ा है।

क़ानूनीमल—मगर अफ़सोस तो यह है कि यह ख़्याल भी ग़लत साबित हो गया। वह इसीसे ज़ाहिर है कि ख़ून अब भी वैसे ही धड़ाके से होते चले जाते हैं।

यमदूत—इसका सुबूत?

क़ानूनीमल—इसका अन्दाज़ा ख़ाली एक मद्रास के सूबे में दस बरसों में कितने ख़ून हुए हैं, यह देख कर लगाया जा सकता है। देखो वहाँ १९०५ में ४७२, १९०६ में ५७२, १९०७ में ५६६, १९०८ में ५७५, १९०९ में ६२०, १९१० में ६०५, १९११ में ५९९, १९१२ में ६४७, १९१३ में ६८९, १९१४ में ७०४, १९१५ में ७०२ ख़ून हुए हैं।

यमदूत—अरे! इससे तो यही साबित होता है कि इस सज़ा का डर जमात पर कुछ भी नहीं पड़ा। क़ानून का मक़सद ही बेकार हो गया। आख़िर तुम इसकी कुछ वजह बता सकते हो?

क़ानूनीमल—इसकी वजह यही है कि आदमी अपने सही-सलामत दिमाग़ की हालत में कभी भी यह जुर्म नहीं कर सकता। जब वह इसे करता है, चाहे किसी भी नीयत से, तब वह अपने ख़्यालात में बिलकुल अन्धा होकर करता है। वैसी हालत में वह अपने काम का नतीजा सोच नहीं सकता। इसलिए इस जुर्म को सज़ा से डरा कर रोकने की उम्मीद करना बेकार है। क्योंकि जब वह ख़ून कर चुकता है, तब इसका डर उस पर अपना असर डालता है, पहले नहीं। इस तरह इस ग़रज़ से भी इस सज़ा को रखना मुनासिब नहीं मालूम होता।

यमदूत—जब न यह बदला लेने के लिए ठीक है और न यह डरा कर जुर्म ही रोक सकती है, तब तुम इसकी जगह पर कौन सी सज़ा मुनासिब समझते हो?

क़ानूनीमल—अब सिर्फ़ सज़ा के मक़सदों में दो ही ख़्याल करके इसकी जगह पर सज़ा तजवीज़ करनी चाहिए। यानी एक यह कि मुलज़िम को अपने जुर्म के लिए काफ़ी तकलीफ़ देकर उसकी हिम्मत को बहुत-कुछ तोड़ देना, ताकि 'दूध का जला मट्ठा फूँक-फूँक कर पिए।' यहाँ तक कि वह एक मामूली आदमी से भी ज़्यादा इस जुर्म को करने से पिछड़े। दूसरा यह कि उसे सुधारना; क्योंकि बुरे को हटा कर बुराई दूर करना कोई अक़्लमन्दी नहीं है। तारीफ़ तो जमात की तभी है, जब उसे भी वह सुधार दे। एक तो बेवक़ूफ़ी मुलज़िम ने की, जो उसने ख़ून किया और अब दूसरी बेवक़ूफ़ी उसे फाँसी देकर जमात करे और इस तरह ख़ुद भी ख़ूनी बने, यह तालीमयाफ़्ता क़ौमों के लिए अच्छा नहीं मालूम होता। इसलिए मेरी समझ में कालेपानी की सज़ा फाँसी की जगह पर बहुत काफ़ी है; क्योंकि ख़ूनी के दिल पर उसके घर-बार, बाल-बच्चे, अपने-पराए से बिछुड़ने का रञ्ज बुरी तरह तकलीफ़ दे सकता है। उस पर अपने किए का पछतावा उसे मरते दम तक सताने के लिए बहुत है।

यमदूत—अगर वह फिर ख़ून कर बैठे?

क़ानूनीमल—तो उसकी पेशानी पर 'ख़ूनी' की छाप दाग़ कर ग़ुलाम की तरह दूसरे मुल्कों में सख़्त और नीच काम करने के लिए भेज दे। यह छाप उसे मरते दम तक फिर आँख उठाने न देगी और वह एक लद्दू जानवर से भी बत्तर हो जायगा। यह सज़ा उसके लिए

मौत से भी बढ़ कर होगी, फिर भी न उसकी जान जायगी और न जमात पर ख़ूनी होने का इलज़ाम लगेगा।

यमदूत—तरकीब तो अच्छी है। ख़ैर, और दफ़ाओं पर तुम्हारी क्या राय है?

क़ानूनीमल—अब इस सज़ा से सिर्फ़ दो ही दफ़ाएँ सरोकार रखती हैं। एक ३०५ है, जिसके बमूजिब उस आदमी के लिए यह सज़ा है, जिसकी मदद से कोई नाबालिग़, या पागल, या बेवक़ूफ़ या कोई सरसाम या नशे की हालत में ख़ुदकुशी कर ले। मगर इसमें बहुत से बेगुनाहों को नाहक़ सज़ा पा जाने का डर है। क्योंकि फ़र्ज़ करो कि तुम्हारे साथ कोई ख़ब्तुलहवास भी रहता हो, जो एक बड़ी जायदाद का मालिक हो और उसके बे-औलाद मरने से वह जायदाद तुम्हें मिल सकती हो। अगर किसी दिन ख़ुदकुशी की बातचीत छिड़ गई और तुम्हारी तबीयत किसी वजह से, दुनिया से उस वक़्त खट्टी होने के सबब से तुम उसके सामने इसकी तारीफ़ कर बैठे और इत्तिफ़ाक़ से उस दिन तुम्हारी बन्दूक़ मकान में भरी हुई रह गई। ख़ब्तुलहवास के दिमाग़ में ख़ुदकुशी की बात गूँज उठी और उसने भरी हुई बन्दूक़ पाकर चुपके से अपना काम तमाम कर डाला। अब चाहे तुम कितना ही बेगुनाह क्यों न हो, मगर यह कुल बातें तुम्हें इस दफ़ा के चङ्गुल में लाने के लिए काफ़ी हैं। इसी तरह दूसरी दफ़ा ३९६ है, जो डकैती के साथ ख़ून हो जाने पर डाकू के लिए यह सज़ा तजवीज़ करती है। इसमें ख़राबी यह है कि इस जुर्म के गवाहान अक्सर अपनी झुठाई-सचाई को ख़ुद ही नहीं समझ पाते। क्योंकि डाका के वक़्त इतना भभ्भड़ होता है और लोगों की हालत इतनी घबड़ाई हुई रहती है कि कोई किसी को ठीक तरह पहचान नहीं सकता। देखने वालों के बयान अक्सर असल में क़यासी होते हैं, जिसे वह ख़ुद सच समझ कर उसे आँखों की देखी हुई बात कह देने में कुछ बुराई नहीं जानते, क्योंकि जब तक वह इस तरह बयान न करेंगे, तब तक क़ानून में उनकी बात 'कुछ नहीं' के बराबर है। अक्सर गवाहान ऐसे मौक़ों पर अपने दुश्मनों से दुश्मनी भी निकालने की कोशिश करते हैं। इस तरह से इस जुर्म में ज़्यादातर कुछ बेगुनाह भी लपेट में आ जाते हैं। अगर बेगुनाह न भी हों तो भी एक की ग़लती से डाके में ख़ून हो जाय और डाकुओं की इसकी नीयत ज़रा भी न रही हो तो सभी इस सज़ा को पा सकते हैं, इसलिए जिन जुर्मों में बेगुनाहों के फँसने का अन्देशा हो, उनमें इस सज़ा का रखना मुनासिब नहीं है। मेरी सरकारी वक़ालत के ज़माने में ऐसी ही कोई न कोई बात हो गई, होगी जिसकी वजह से कोई बेगुनाह फाँसी पा गया हो तो उसका ज़िम्मेदार भला मैं कैसे हो सकता हूँ?

यमदूत—सही है, अब तो मुझे तुम्हारे यहाँ का क़ानून ही कुछ गड़बड़ मालूम होता है। क्या तुम कोई उपाय इस गड़बड़ी को दूर करने का बता सकते हो, जिसमें बेगुनाह न फँसा करें?

क़ानूनीमल—बेगुनाहों का एकदम न फँसना तो ज़रा मुश्किल सी बात है। मगर हाँ, इसमें बहुत-कुछ कमी हो सकती है।

यमदूत—ख़ैर! यही सही। मगर किस तरह?

क़ानूनीमल—सब से पहले फाँसी की सज़ा उठा देनी चाहिए, ताकि बेगुनाहों का ख़ून क़ानून की गर्दन पर न चढ़ने पावे। दूसरे अगर किसी वक़्त में किसी सज़ा पाए हुए मुलज़िम की बेगुनाही का सुबूत मिलने की उम्मीद हो तो उसकी जाँच फिर से की जाया करे। तीसरे सङ्गीन जुर्मों का फ़ैसला करने वाली अदालत मौक़े पर बैठा करे, क्योंकि जुर्म की असलियत जितनी मौक़े पर मालूम हो सकती है, उतनी कचहरी के कमरे में नहीं। चौथे "असेसरों" के बजाय आज़ाद ख़याल वाली 'जूरी' की राय से फ़ैसला किया जाया करे। पाँचवें पुलिस की कार्रवाइयों पर नज़र रखने और इस तरह उसे अपनी ज़िम्मेदारियों को क़दम-क़दम पर याद दिलाते रहने के लिए एक ऐसे महकमे की ज़रूरत है, जिसमें बड़े-बड़े दिमाग़ वाले हाकिम हों। क्योंकि जिसके अख़्तियारात जितने ही ज़्यादा होते हैं, उसकी ज़िम्मेदारी भी उतनी ही ज़्यादा होनी है मगर आदमी अपनी ज़िम्मेदारी तभी ठीक-ठीक समझता है, जब उसके कामों पर दूसरे नज़र रक्खें। छठे हर सङ्गीन जुर्म की तहक़ीक़ात पुलिस अपने तरीक़े पर तो करे, मगर उस पर नज़र रखने वाले महकमे के बड़े-बड़े दिमाग़ रखने वाले अफ़सरान भी अलग इस जुर्म का पता लगा कर अपनी रिपोर्ट दिया करें। क्योंकि सङ्गीन जुर्म अक्सर क्या, बल्कि ज़्यादातर ऐसे होते हैं जिनका ठीक-ठीक पता लगाने में पुलिस की क्या, बड़े-बड़े दिमाग़ वाले जासूसों की भी अक़्ल चक्कर में पड़ जाती है।

यमदूत—बेशक! अगर इन तरीक़ों पर काम हो तो अलबत्ता इन्साफ़ पर आँच आने का डर बहुत ही कम हो जायगा। मैं तुम्हारी बातों की 'रिपोर्ट' दुनिया को ज़रूर भेजूँगा। इससे उसका बहुत-कुछ भला होगा।

क़ानूनीमल—अरे! दुनिया गई भाड़ में। अब उससे मुझे क्या मतलब? तुम मेरी फ़ीस तो दिलवाओ।

यमदूत—हाँ-हाँ, अभी लो। तुमने तो मुझे हर तरह से क़ायल कर दिया। न जाने ईश्वर ने तुम्हें किस तरह पापी ठहराया है। अब तो मुझे भी उनके फ़ैसले में शक मालूम होता है।

क़ानूनीमल—अजी यह टालमटूल रहने दो। इसीलिए हम लोग पहले फ़ीस ले लेते हैं। इसलिए तुम्हारी भलमनसाहत इसी में है कि तुम अब अपना वादा पूरा करो और मुझे ईश्वर के दरबार का रास्ता बता दो।

यमदूत—रास्ता बताने की क्या ज़रूरत? मैं तुम्हें ख़ुद वहाँ लिए चलता हूँ। क्योंकि अब मैं भी देखना चाहता हूँ कि तुम उनसे किस तरह निपटते हो।

क़ानूनीमल—अच्छा ले तो चलो।

(दोनों का प्रस्थान)

[पटाक्षेप]

(Copyright)

*　　　*

अनेकों पदक-प्राप्त

हास्य-रस के सफल लेखक

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी०ए०, एल्-एल्० बी०

जिनका "साहित्य का सपूत" शीर्षक हास्य-रस का नाटक 'भविष्य' के ९वीं मार्च वाले अङ्क से धारावाही रूप में प्रकाशित होगा। पाठकों को नोट कर लेना चाहिए और अभी से 'भविष्य' की ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिए अथवा अपने यहाँ के स्थानीय एजेण्ट को ठीक कर लेना चाहिए। आपकी लिखी हास्य-रस की सर्व-श्रेष्ठ और सचित्र 'लतखोरीलाल' शीर्षक पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई है।

मधुबन

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी-सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-संसार को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुबन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुबन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। एक बार हाथ में लेते ही आप बिना समाप्त किए नहीं छोड़ेंगे। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। मूल्य केवल १)

स्मृति-कुञ्ज

नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुःखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकास और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुख, साधन-उत्कर्ष एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मू० ३)

हिन्दू-त्योहारों का इतिहास

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। ऐसी कथाओं का भी सविस्तार वर्णन किया गया है। प्रत्येक त्योहार के सम्बन्ध में जितना अधिक खोज से लिखा जा सकता था, लिखा गया है। पुस्तक के दो संस्करण हाथों हाथ बिक चुके हैं। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

बाल-रोग-विज्ञानम्

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल-मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम ख़र्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्त्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है। और वे शिशु सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार कर सकती हैं। मूल्य लागत मात्र २॥) रु०

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, अनाथालय में अनाथ बालकों पर कैसे अत्याचार किए जाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। मू० ॥|); स्था० ग्रा० से ||-)

अपराधी

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉलस्टॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोस्ट और ब्रियो का "डैमेज्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर सर्वथा अवलम्बित होती है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारों का जनाज़ा है !!

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये सब ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी सी प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य २॥) स्थायीग्राहकों से १॥|=)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

गोलमेज़ की भ्रान्तियाँ

स्वयं सन्तुष्ट प्रतिनिधि :: ख़ुशामद और दावतों के शिकार

एक बुद्धिमान कौवे ने एक हिरण से कहा—"सच्चे शब्द तुम्हारी आँखों में आँसू भले ही भर देते हों, परन्तु जो लोग वे शब्द कहते हैं, वे ही तुम्हारे वास्तविक मित्र हैं। कोमल और मधुर वचनों से तुमको आश्वासन भले ही मिल जाता हो, परन्तु इनका कहने वाला तुम्हारा शत्रु है।"

इस कसौटी के अनुसार वे लोग, जो कल गोलमेज परिषद से लौटे हैं, देश के मित्र नहीं हैं। उनका वक्तव्य मधुर—अत्यन्त मधुर है। डॉक्टरों का कथन है, कि मीठी चीजें खाने से हम अपने दाँत खराब कर लेते हैं।

राजनैतिक दृष्टि से यह वक्तव्य अरब की खाड़ी में जहाज पर सफ़र करने वाले राजनीतिज्ञों की भ्रान्ति का बुलबुला मात्र है। परन्तु भारत के तट पर जो आँधी उठ रही है, उसमें इस बुलबुले का कोई स्थान नहीं है।

यह बहीखाता भी अधूरा ही है। एक ओर जो अङ्क दिए गए हैं, वह ग़ुब्बारे की तरह गैस से फूल रहे हैं। गोलमेज परिषद से जो कुछ हमें मिला है (और वह भी जो अभी नहीं मिला है) आमदनी के खाने में दर्ज है। परन्तु गोलमेज के प्रतिनिधियों ने कहाँ-कहाँ हानियाँ उठाई हैं, इसका कोई उल्लेख ही नहीं। हमारी माँगें और उनके निरादर, हमारी याचनाएँ और उनके इन्कार तथा देश के नए बनाए गए बन्धनों का भी कोई उल्लेख नहीं है। यदि किसी व्यापारी का बहीखाता ऐसा होता, तो लोग उसे दग़ाबाज कहते। परन्तु राजनीति की तो बात ही दूसरी है!

गाँव के मुखिया का लड़का जब घोड़ा देकर गधा ले आया था, तो वह भी इतना गर्व नहीं करता होगा जितना गर्व आज गोलमेज़ के प्रतिनिधियों को, राजनैतिक उन्नति का मज़ाक उड़ा कर हो रहा है।

उन्होंने वहाँ क्या देखा, उन्होंने वहाँ क्या लाभ उठाया? लोकमत में क्रान्ति, शानदार स्वागत, विचित्र आवभगत, सम्राट की दया-कृपा, ब्रिटिश सरकार की निष्कपटता तथा और समाचार-पत्रों के सहानुभूतिपूर्ण लेखों की कहानी आज हमें सुनाई जा रही है। इन्हीं दिनों भारतवर्ष में कुछ लाठी-प्रहार हुए और चन्द व्यक्तियों को कारावास-दण्ड मिला—इन्हीं दिनों प्रतिनिधियों ने दावतों के मजे उड़ाए और उसके लिए कृतज्ञता के गीत गाए।

अङ्गरेजों की लाठी मौजूद है। फ़ौलादी पञ्जा, जिस पर कि नया रोग़न किया गया है—मौजूद है। वह जञ्जीरें, जिनके द्वारा हम अतीत की आर्थिक बेवक़ूफ़ियों और धोखेबाज़ियों से जकड़े हुए हैं, मौजूद हैं। रविवर्मा के चित्र में दिखाए गए हिन्दू देवता की तरह, गवर्नर भी अपनी साधारण तथा असाधारण शक्तियों के दल-बल सहित मौजूद हैं। उनके वक्तव्य में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता तथा सर्वसाधारण के अधिकारों का भी ख़ूब उल्लेख किया गया है। उनको इस बात का ज्ञान नहीं कि एक साधारण मनुष्य की कनिष्ठ अँगुली में हमारे भविष्य के मन्त्रियों की बाहुओं से अधिक बल होता है।

लोकमत में क्रान्ति की भी वह ख़ूब दोहाई देते हैं। परन्तु लोकमत की क्रान्ति में भी क्रान्ति हो गई है। चर्चिल साहब का हल सुनसान में नहीं चल रहा है। अनुदार दल की सहानुभूति का भी कोई ठिकाना नहीं। लिबरल-दल की सहानुभूति का भी कोई भरोसा नहीं। अनुदार दल वालों के विरोध, लिबरल-दल वालों की कृपणता तथा मजदूर-दल के पाखण्ड द्वारा वह भारतवर्ष को स्वतन्त्र कराना चाहते हैं। क्या इससे भी बढ़ कर ढोंगबाजी हो सकती है?

परन्तु जिन लोगों ने नाच, दावत और ख़ुशामद के मजे उड़ाए हैं, उनके लिए यह सब क्षम्य है। उनकी राजनीतिक तृष्णा शान्त हो चुकी है। परन्तु देश ने दूसरी ही चीजों का स्वाद चखा है, देश को दावतों और चाय-पार्टियों के स्थान पर कुछ और ही दिया गया है। उसको 'संरक्षणों वाले स्वराज्य' की आवश्यकता नहीं। उसकी माँग दूसरी ही है। उसका साधन लण्डन की यात्रा नहीं, कुछ और है। देश को बुलबुलों से पुचकारा नहीं जा सकता।

—"फ़्री प्रेस जर्नल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

राजा महेन्द्रप्रताप का पत्र

सेवा में श्रीमान सम्पादक जी,
("विश्वमित्र" कलकत्ता)

मेरे प्रिय मित्रवर! प्रेम! बहुत समय से भारत से कोई पत्र नहीं मिला था, इस कारण आपके पत्र ने सूर्य की भाँति बड़ा भारी अन्धकार दूर किया। इस ज्योति के लिए आपको धन्यवाद!

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हम प्रत्येक दशा में अब आगे बढ़ रहे हैं। हमारे बढ़ने का समय है। यदि अङ्गरेज हमको दबा सकते तो वह हमको कदापि इतना न बढ़ने देते। पर वे हमको न दबा सके। हम आगे बढ़े और बढ़ रहे हैं।

ठीक ही है, प्रत्येक वस्तु का एक समय होता है। उन दिनों जब हमारे पास सेना थी और हथियार भी थे, हम अङ्गरेजों से लड़े और मार ही खाते गए। यहाँ तक कि अपने समस्त घर को खो बैठे! अब यह समय है कि अङ्गरेजों के पास हवाई जहाज है और है मशीनगन, और हमारे पास बड़े-बड़े चाक़ू भी नहीं, पर आज हम निहत्थे लड़ते हैं तो भी जीतते हैं। सच ही सब चीजों का एक समय होता है। घुन लगे सूखते विशाल पेड़ में हम कितना ही पानी छोड़ें, पर तब भी ठीक बसन्त ऋतु में भी वह सूख जाता है और बरसात में पत्थरों के नीचे से भी हरी-हरी कोमल घास उग पड़ती है। काटने पर भी और बढ़ती है।

हमको कुछ सन्देह नहीं कि आज अब हमारे बढ़ने का समय है। आज हमारे भीतर वह मुर्दा कहने वाले विचार कि "चलो जी, सब ईश्वर की लीला है, हमारे किए क्या होता है" कभी पक्के नहीं होने देना चाहिए। आज तो हमको पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि हमारे रचयिता ने हमारे भीतर शक्ति वा बुद्धि देकर यह अवश्य आज्ञा दी है कि हम इनको पूर्णतः कार्य में लाते हुए अपने को उन्नति के शिखर पर पहुँचावें। पर हाँ, हम उन डाकुओं की उन्नति की नक़ल नहीं करेंगे, जो सैकड़ों घरों को उजाड़ कर अपना घर भरते हैं और फिर किसी और शक्तिमान के हाथ मौत के घाट उतरते हैं! हम तो ऐसी उन्नति करेंगे जिससे आज और भविष्य में हम और हमारी सन्तान सदा आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकें।

आज हमको बच्चों की भाँति इस पर सरपच्ची करने की आवश्यकता नहीं कि "हिन्दुस्तान" को "डोमीनियन" मिलना चाहिए। हिन्दुस्तान को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करके जगत्-सङ्घ बनाना चाहिए। साम्राज्यवाद तो अवश्य ही अब मिट्टी में मिलना है। अब तो और बहुत से दूसरे प्रश्न हैं कि इस जगत् में किस प्रकार शान्ति स्थापन करें। हमारे कम्यूनिस्ट भाई कहते हैं कि यदि उनका प्रस्ताव स्वीकार हो जाय और उनकी प्रथा जगत् में चल जाय तो फिर कोई झगड़ा ही नहीं रहेगा। पर मुझे डर है कि वह एक बड़ी भूल करते हैं। वह कहते हैं कि सब मजदूर और किसानों के मिल जाने से भविष्य का समाज स्थापित हो जायगा। वह इस ओर ध्यान नहीं देते कि हमारे सब मजदूर और किसान भाई एक से नहीं। इनमें एक तो अत्यन्त भद्र पुरुष होता है और दूसरा अपने ही भाई का शत्रु। इनमें कोई एक अधिक बोलता और इनके अधिकारों की दुहाई देता और इनका नेता बन सकता है। आजकल के राजा-बाबू अथवा इनके पुरखा इसी प्रकार जनता के मुखिया बने थे। हो सकता है कि आज किसी और प्रकार से अधिकारों की दुहाई देकर कोई और कल नेता बन जावें। और फिर भी

कुछ और लोग अपनी जत्थेबन्दी करके भोले-भाले भाइयों को अपने जाल में फँसाए रक्खें। इसलिए मेरा कहना है कि हिन्दुस्तान को कोई ऐसी रीति अथवा प्रणाली जनता के सामने रखनी चाहिए कि उसमें अपना उल्लू सीधा करना असम्भव हो जाय। ऐसी प्रणाली भारत ने पहले कई बार निकाली है। और विचारपूर्वक देखा जाय तो माननीय महात्मा गाँधी जी एक ऐसी ही प्रणाली की ओर जनता को अग्रसर कर रहे हैं। वह है वही जो भगवान बुद्ध ने एक बार बताई थी और जिसको मैंने भी अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार बुद्धदेव के मार्ग को ध्यान में रखते हुए, अपनी छोटी सी पुस्तक "World Federation" अर्थात् जगत-सङ्घ में दर्शाया है। जब तक वह लोग, जो मनुष्य-जाति की सेवा करने का दम भरते हैं, महात्मा गाँधी की भाँति आप त्याग नहीं करेंगे, वह सदा नेता बन दूसरों का माल हड़प कर आप बलवान बन सकते हैं। हमको स्पष्ट कहना चाहिए कि हम सच्चे साधुओं का राज्य स्थापित करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि प्रत्येक ग्राम में न ठाकुर, न साहूकार मुकद्दम बने, वरन् हमारे ग्रामीण और मज़दूर अच्छे से अच्छे मनुष्य उत्पन्न करते हुए, अपने से साधु प्रकट करते हुए उनको अपना नेता बनावें। यदि साधु-स्वभाव हमारे नेता होंगे तो हमें कुत्ते-बिल्ली की भाँति आपस में न लड़ा कर हमको हिलमिल कर रहना सिखाएँगे। और आज इस बात की आवश्यकता है कि समस्त भूमण्डल में इसी सिद्धान्त की शिक्षा दी जाय कि नवीन विद्याओं से पूर्ण, नवीन शास्त्रों से विभूषित दलबन्दियाँ मनुष्य-मात्र को नष्ट-भ्रष्ट न कर दें। स्वतन्त्र भारत आगे बढ़ और मनुष्य-जाति की सेवा कर! तू विश्वमित्र था—है—और सदा ही रहे।

—प्रेमी

म × प्रताप, सानफ्रान्सिस्को, अमेरिका

—"विश्वमित्र" (हिन्दी)

* * *

भारत की कुढ़ियल सास

"दलालों की कोई ज़रूरत नहीं"

पुराने राजनीतिज्ञों ने नौकरशाही की उपमा विधाता से दी है। उन्होंने कहा था—"दोनों बड़ी विचित्र हैं।"

समय बदल गया है, नौकरशाही की चाल अब विधाता की चाल नहीं रही। नौकरशाही की चाल अब कुढ़ियल, जली-भुनी हुई सास की सी चाल है।

उस सास के विषय में कहा जाता है कि वह एक दिन अपनी बैठक में टपक पड़ी और बड़े रोष से मुँह फेर कर मेहमान से कहने लगी—"खाना तैयार है, तुम खा सकते हो। परन्तु मैं तुम्हें निमन्त्रण नहीं दूँगी।"

खाना दामाद के लिए तैयार है। निमन्त्रण भी उसी के लिए है। परन्तु वह उसके सामने नहीं होगी, उसको निमन्त्रण नहीं देगी।

सरकार कॉङ्ग्रेस को हठीला दामाद समझती है। बूढ़ा अरब-निवासी अपनी स्त्री के सम्बन्ध में कहा करता था—"न मैं इसे छोड़ सकता हूँ और न इसे रख सकता हूँ।" कॉङ्ग्रेस भी वैसी ही है।

फल-स्वरूप यह व्यर्थ का स्वाँग उन्होंने अपनी सारी चालाकियाँ कॉङ्ग्रेस को फुसलाने में खर्च कीं, परन्तु कॉङ्ग्रेस थी हठी, शक्की, ऐबभरी और नखरेबाज़। फिर उन्होंने सारी शक्तियाँ लगा कर कॉङ्ग्रेस को नष्ट-भ्रष्ट करना चाहा।

सरकार ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया, परन्तु निष्फल; वायसराय ने ऑर्डिनेन्सों के घोड़े दौड़ाए, गवरनरों ने संस्थाओं को ग़ैर-क़ानूनी जताया; मैजिस्ट्रेट ने १४४ धाराएँ स्थान-स्थान पर प्रवाहित कीं; कर्तव्यपरायण सार्जेण्टों ने भी चैन से अपना कर्तव्य पालन किया और लाठी ने ब्रिटिश साम्राज्य के स्तम्भ की पदवी पाई।

परन्तु "होनहार बिरवान के होत चीकने पात।" कॉङ्ग्रेस सब परीक्षाओं में पूर्णतया उत्तीर्ण हुई।

नौकरशाही इन बातों को पसन्द नहीं करती, परन्तु बस भी नहीं चलता। आखिर तङ्ग होकर नेताओं को छोड़ा और उनके लिए निमन्त्रण के जाल बिछाए जाने लगे। इङ्गलैण्ड को भारतवर्ष के सहयोग की आवश्यकता है। सफल सहयोग केवल कॉङ्ग्रेस के द्वारा ही हो सकता है, फिर क्यों कॉङ्ग्रेस को निमन्त्रण देकर समझौता नहीं किया जाता?

मूर्ख अकड़ विघ्नकारक है। कुढ़ियल सास को यही बीमारी रहती है।

यदि गाँधी की सहायता की आवश्यकता है तो गाँधी को क्यों निमन्त्रण नहीं दिया जाता? यदि कॉङ्ग्रेस की सहायता की आवश्यकता है तो कॉङ्ग्रेस को क्यों निमन्त्रण नहीं दिया जाता? जब दोनों पक्ष मिल-बैठ कर सन्धि कर सकते हैं, तो फिर दलालों की क्या आवश्यकता है? जो नेता लोग दौड़े गए हैं, वह हैरान हैं कि सरकार का तात्पर्य क्या है। जब गोलमेज़ के प्रतिनिधि वापस लौट कर यह बताएँगे कि सरकार का आशय दुर्लभ है, तो उनकी हैरानी और भी बढ़ेगी।

शासन-पद्धति को स्वीकार करना अथवा अस्वीकार करना कॉङ्ग्रेस के हाथ में है। दामाद के लिए खाना परोसा हुआ है। परन्तु दामाद को बुरे और अच्छे खाने की ख़ूब पहचान है। उसको अपनी अकड़खाँ तथा कुढ़ियल सास का रोग नहीं है। जली-भुनी सास उसे निमन्त्रण दे अथवा न दे, वह खाना अवश्य खाएगा।

—"फ़्री प्रेस जर्नल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

शान्ति की खोज में

भारत को अपनी गुलामी का ख्याल आया। सदियों से गुलामी की जञ्जीरों में जकड़े हुए देश ने अपनी वर्तमान हीनावस्था का अनुभव किया। उसने सोचा, ३३ करोड़ भारतवासियों पर पाँच हजार मील की दूरी से आए हुए मुट्ठी भर अङ्गरेज शासन कर रहे हैं! और वह शासन भी मनुष्यत्व-विहीन! दमन और अधिकार-मद की हद हो रही है। भारत ने देखा कि बहुत थोड़ी शक्ति वाले संसार के कितने ही छोटे-छोटे राष्ट्र गुलामी की जञ्जीरें तोड़ कर स्वतन्त्रता के सुख-कर मैदान में खेल रहे हैं। इसलिए इसके भी मन में स्वतन्त्रता का सुख भोगने की इच्छा उत्पन्न हुई।

विश्ववन्द्य-विभूति महात्मा गाँधी ने वर्षों के परिश्रम के बाद उस इच्छा का अनुभव करके जाना कि अगर सरकार भारतवासियों की अभिलाषा की पूर्ति नहीं करती तो परिस्थिति बड़ी ही गम्भीर बन जायगी। इसीलिए उन्होंने भावी शान्ति की इच्छा से ग्यारह शर्तें तैयार करके भारत के राज-प्रतिनिधि लॉर्ड इर्विन के पास भेजी थीं।

शान्ति की खोज में निकले हुए लॉर्ड इर्विन ने उन शर्तों को ठुकरा दिया और सत्याग्रह संग्राम के लिए मैदान साफ़ कर दिया।

शान्ति की खोज में निकले हुए महात्मा गाँधी आधी रात को पकड़ लिए गए। परिस्थिति ने रूप बदला और शान्तिपूर्ण सत्याग्रह संग्राम आरम्भ हुआ। शान्ति की खोज में घबराए हुए लॉर्ड इर्विन ने एक के बाद एक करके बारह ऑर्डिनेन्सों की सृष्टि की। धर-पकड़, लाठी, जब्ती और गोली-छर्रे द्वारा प्रजा को दबा देने की चेष्टा की गई, परन्तु सारा प्रयत्न निरर्थक प्रमाणित हुआ।

अन्त में, शायद इर्विन साहब को शान्ति का सच्चा मार्ग दिखाई पड़ गया है, इसलिए उन्होंने आमने-सामने बैठ कर परिस्थिति पर विचार करने के लिए कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया है और शान्ति की कामना से हाथ बढ़ा कर कॉङ्ग्रेस के सामने खड़े हैं।

दूसरी तरफ़ शान्ति की खोज में निकले हुए फ़रिश्तों ने स्फटिक की तरह निर्मल हृदय से, सरकार के हृदय का परिवर्तन लक्ष्य कर रहे हैं और मेल के लिए हाथ बढ़ाए हुए हैं।

दोनों ही शान्ति के अभिलाषी थे। दोनों ही शान्ति की खोज में थे। परन्तु दोनों का मार्ग अलग-अलग था। एक ने तोप, तलवार, बन्दूक़ और दमन का आश्रय लिया था और दूसरे ने शान्ति, अहिंसा और त्याग का।

दोनों अपने-अपने पथ पर—एक गोले के दोनों तरफ़ दौड़ चुके हैं और अब एक ही निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गए हैं। अब देखना है कि इसका परिणाम क्या निकलता है!

—"हिन्दू" (गुजराती)

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आजकल चारों ओर मुसीबत ही मुसीबत है। इधर हिन्दुस्तान पर मुसीबत, उधर ब्रिटिश सरकार पर मुसीबत ! एक क़ानून तोड़ने के कारण मुसीबत में है तो दूसरा क़ानून की रक्षा करने के कारण। ब्रिटिश सरकार अथवा भारत-सरकार यदि अपने क़ानूनों को नहीं तुड़वाना चाहती तो इसमें उसका क्या दोष है ? जिन क़ानूनों के बनाने में उसे वर्षों लगे, न जाने कितना परिश्रम करना पड़ा, न मालूम कितनों को प्रसन्न रखना पड़ा, उन क़ानूनों को हिन्दुस्तानी दिल्लगी में तोड़ डालना चाहते हैं। तोड़ने-फोड़ने में कुछ लगता है ? तोड़-फोड़ का काम जितना सरल है, उतना सरल निर्माण का कार्य नहीं है। हिन्दुस्तानियों की समझ में यह बात नहीं आती। इन्हें तो बस क़ानून तोड़ना आता है। यह तो हुआ नहीं कि कोई ऐसा क़ानून बनाते जिससे ब्रिटिश सरकार को कुछ सहायता मिलती। ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुस्तानियों के लाभ के लिए कितने क़ानून बना रक्खे हैं। एक नमक-क़ानून ही को ले लीजिए। भारत-सरकार ने नमक पर टैक्स कुछ अपने लाभ के लिए थोड़ा ही लगाया है ? यह भी हिन्दुस्तानियों के लाभ की बात है। उस दिन 'लीडर' में किसी महोदय ने लिखा था—"नमक रजोगुणी है, नमक खाने से सतोगुण का नाश हो जाता है। यदि नमक न खाया जाय तो मनुष्य अधिक स्वस्थ रह सकता है।" ऐसी दशा में यदि इस पर टैक्स न लगाया जाता तो लोग इसका व्यवहार अधिक करते। सस्ती चीज़ अधिक ख़र्च होती है। नतीजा यह होता कि सतोगुण भारतवर्ष में बिल्कुल न रह जाता—अभी जो कुछ है वह इसलिए कि लोग नमक कम खाते हैं। सम्पादक जी, मैं स्वयम् आधे पेट नमक खाकर रहता हूँ। क्या करें, कमबख़्त टैक्स के मारे कभी पेट भर नमक नहीं खा पाया। इसका बड़ा क़लक़ रहता था; परन्तु अब यह जान कर सन्तोष हुआ कि नमक बड़ी हानिकारक वस्तु है। पहले मैं भारत-सरकार को कोसा करता था; परन्तु अब दुआएँ देता हूँ। नमक का बनना और बिकना बिल्कुल बन्द हो जाय तो बहुत अच्छा है। ऐसी चीज़ का प्रचार दो कौड़ी का। शराब और अफ़ीम इत्यादि की श्रेणी में नमक को भी समझना चाहिए। 'लीडर' के लेखक को इस सूचना के लिए पुरस्कार दिया जाय या दण्ड—यह बात विचारणीय है। पुरस्कार तो इस दृष्टि से देने की इच्छा होती है कि उसने नमक की हानियाँ बता कर भारतवर्ष की आँखें खोल दीं। परन्तु जब यह विचार आता है कि इतने दिनों तक वह इस बात को क्यों छिपाए रहा और हिन्दुस्तानियों को हानि उठाते देखना सहन करता रहा तो यह इच्छा होती है कि उसे इस अपराध के लिए दण्ड दिया जाय। अभी मैं कोई निश्चय नहीं कर पाया हूँ। नमक खाना छोड़ कर कुछ दिनों के पश्चात इस पर विचार करूँगा। तब तक काफ़ी सतोगुण इकट्ठा हो जायगा—और जो बात सूझेगी वह दूर की सूझेगी।

हाँ, मैं क्या कह रहा था ? ओ ! याद आ गया। सो जनाब ऐसी प्रजावत्सल सरकार से लोग ख़ामख़ाह लड़ रहे हैं। धरसाना में सरकार क्यों इतनी सख़्ती कर रही है ? इसका यही कारण है कि सरकार जानती है कि ये लोग सब नासमझ हैं। मुफ़्त का नमक हाथ लगेगा तो अनाप-शनाप खा जायँगे। नतीजा यह होगा कि सब घोर रजोगुणी हो जायँगे और अनेक प्रकार की अन्य हानियाँ भी उठाएँगे। इसलिए इनकी रक्षा करनी चाहिए। अतएव लोगों की रक्षा के लिए सरकार ने धरसाना में पहरा लगाया। लोग इसका तात्पर्य उलटा समझे और इन्होंने सत्याग्रह ठान दिया। यदि कोई स्वार्थी सरकार होती तो सोचती, अच्छा है मरने दो, हमारा क्या नुक़सान है। परन्तु अङ्गरेज़ तो स्वार्थी नहीं हैं और इसका प्रमाण यह है कि धरसाना में उन्होंने सत्याग्रह करने वालों को मारना-पीटना तक क़बूल किया, परन्तु यह देखना उचित नहीं समझा कि लोग नमक पर अधिकार जमा कर स्वयम् अपने पैर में कुल्हाड़ी मारें। अजी डण्डों की मार तो अच्छी हो जायगी—अस्पताल इसी के लिए तो खुले हैं, परन्तु नमक खा-खाकर जो हानि लोग उठाएँगे उसका इलाज असम्भव हो जायगा। यदि कोई बालक ज़िद करके आग से खेलना चाहे तो माता-पिता क्या उसे ऐसा करने की आज्ञा दे देंगे ? कभी नहीं। वे बालक को मारेंगे, पीटेंगे, डाटेंगे; सभी कुछ करेंगे, पर आग से कभी न खेलने देंगे। ऐसी दशा में 'माँ-बाप' अङ्गरेज़ भी यदि मार-पीट करते हैं तो क्या हर्ज है ? परन्तु आजकल है कलियुग ! लोग सगे माँ-बापों का कहना नहीं मानते, अङ्गरेज़ तो बेचारे पराए हैं।

परन्तु यदि एक बात हो तो बरदाश्त की जाय। लोग यह भी तो कह रहे हैं कि हम स्वराज्य लेंगे। मानो स्वराज्य भी कोई खिलौना है। स्वराज्य लेकर करेंगे क्या ? यही न कि बैठे-बिठाए अपने ऊपर एक मुसीबत लाद लेंगे। अङ्गरेज़ों को हिन्दुस्तान पर राज्य करने में कितनी मुसीबत उठानी पड़ती है ? अपना घर-द्वार छोड़ कर और हज़ारों कोस की यात्रा करके हिन्दुस्तान में आते हैं। यहाँ की गर्मी बरदाश्त करके हिन्दुस्तानियों की सेवा करते हैं। क्यों ? इसलिए कि वे नहीं चाहते कि हिन्दुस्तानियों के सिर पर इतना भारी बोझ लादें। राज्य करना बड़े जोखिम और परेशानी का काम है—दिल्लगी नहीं है। अङ्गरेज़ लोग कैसे राज्य करते हैं—यह उन्हीं का जी जानता है। पर बेचारे करें क्या—अपना कर्त्तव्य-पालन करते हैं। हिन्दुस्तानियों में इतनी तमीज़ भी नहीं, जो स्वयम् राज्य कर सकें, क्योंकि ये इतनी परेशानी और दिक़्क़त नहीं सह सकते। और सहना भी नहीं चाहिए। जब अङ्गरेज़ इनकी बला अपने सिर पर लिए हुए हैं तो इन्हें क्या आवश्यकता है, पर समझाए कौन ? समझाए तो तब जब समझ में आए।

लोग अङ्गरेज़ों पर यह दोषारोपण करते हैं कि इनके राज्य में हिन्दुस्तान ग़रीब हो गया और भूखों मरने लगा—हिन्दुस्तान का सब रुपया अङ्गरेज़ लोग विलायत ले गए। अपने राम की समझ में यह दोषारोपण भी अनुचित है। अङ्गरेज़ लोग हिन्दुस्तान का रुपया यदि विलायत ले गए तो यह बहुत अच्छा हुआ। यदि यहाँ रुपया रहता तो नित्य चोरियाँ होतीं और डाके पड़ते। रुपया झगड़े की जड़ है। ऐसी चीज़ को देश में रखना मानो झगड़े की जड़ जमाना है। रुपया नहीं है तो आराम से पैर फैलाए मस्त पड़े हैं, न चोरों का खटका, न डाकुओं का डर। रुपया होता तो उसकी रक्षा करने

बदनाम चलन है दोनों का *

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

हिन्दू भी, मुसलमाँ भी,
सोचें इस कुशतो[1] ख़ूँ से क्या हासिल।
यह जोश बुरा है आपस का,
यह जोशे[2] जुनूँ से क्या हासिल ?
मस्जिद तोड़ी, मन्दिर तोड़ा,
अपने-अपने सर को फोड़ा,
अल्लाह के घर का यह नक़्शा,
अफ़आले[3] ज़ुबूँ[4] से क्या हासिल ?
क्यों हाथा-पाई करते हो,
क्यों मरते हो, क्यों लड़ते हो
क्यों ख़ून बहाते जाते हो,
इस बारिशे-ख़ूँ से क्या हासिल ?
हर लाग बुरी, हर आग बुरी,
हर रङ्ग बुरा, हर ढङ्ग बुरा;
जो फूँक दे अपने घर को भी,
इस सोज़े-दुरूँ[5] से क्या हासिल ?
ऐ अहले-वतन मानो कहना,
यूँ हरगिज़ तेग़ बदस्त[6] न हो
तुम पस्ती में पहले ही से हो,
अब और भी मिट कर पस्त न हो !
एक-एक से यह कहता हूँ मैं,
हाँ हिन्द वतन है दोनों का !
तुम दोनों इसके माली हो,
बेशक यह चमन है दोनों का !
मन्दिर में शङ्ख बजाने दो,
मस्जिद में अज़ानें देने दो,
क्यों रञ्ज कुहन[7] है दोनों में,
क्या रञ्ज कुहन है दोनों का ?
बस यादे-ख़ुदा में मस्त रहो,
क्यों जङ्ग करो, क्यों मुफ़्त लड़ो
अग़ियार[8] इसी पर हँसते हैं,
बदनाम चलन है दोनों का !
यह सोच लो तुम अपने दिल में,
क्या नफ़आ[9] है लड़ने-भिड़ने में
नुक़सान किसी का और नहीं,
नुक़साँ हमअतन[10] है दोनों का
"बिस्मिल" की नसीहत दिल से सुनो,
लाज अपनी अपने हाथ रहे,
मिल जाओ गले सङ्गम की तरह,
दोनों का हमेशा साथ रहे !!

१—मार-काट, २—पागलपन, ३—काम, ४—बुरा, ५—दिल की जलन, ६—तलवार खींचना, ७—पुराना, ८—ग़ैर लोग, ९—लाभ, १०—बिल्कुल।

* यह कविता कविवर "बिस्मिल" ने काशी में होने वाले हिन्दू और मुसलमानों के दङ्गे को लक्ष्य कर लिखी है।

की चेष्टा में प्राणों को सङ्कट मिलता ? ख़ामख़ाह प्राणों को सङ्कट में डालना कहाँ की बुद्धिमानी है ? हमारे ऋषि लोग सदैव इस बात की शिक्षा देते रहे कि अपनी आत्मा को क्लेश मत पहुँचाओ, संसार के विषय-वासनाओं में

मत फँसो, यह संसार असार है, धन-दौलत को निकृष्ट समझो। अब यह सोचना चाहिए कि जब रुपया पास होगा तो मनुष्य विषय-वासना में अवश्य फँसेगा और अनेक प्रकार के पाप-कार्य करेगा। अतएव यदि रुपया नहीं है तो बड़ी अच्छी बात है। विषय-वासना और पाप से तो बचे हुए हैं। उधर चारों ओर डाकुओं से बेफ़िक्र, इधर विषय-वासना और पाप से बचत! कितना बड़ा लाभ है! अङ्गरेज़ों का हिन्दुस्तानियों के प्रति कितना बड़ा उपकार है! परन्तु फिर भी लोग, धन्यवाद देना भाड़ में गया, उलटी शिकायत करते हैं। अङ्गरेज़ कमबख़्तों के भाग्य में यश बदा ही नहीं है। ये भलाई भी करेंगे तो लोग बुराई ही समझेंगे। अब रही यह बात कि लोग भूखों मरते हैं तो यह अपना-अपना भाग्य है, अङ्गरेज़ किसी के भाग्य को थोड़ा ही बदल सकते हैं? जिसके भाग्य में भूखा मरना ही बदा है वह हिन्दुस्तान में क्या, अमेरिका चला जाय तब भी भूखा मरेगा। क्या अङ्गरेज़ भूखे नहीं मरते? इङ्गलैण्ड में लाखों अङ्गरेज़ भूखों मरा करते हैं। और भूखा मरना तो भारतवासियों के धर्म में श्रेष्ठ समझा गया है। यहाँ भूखे मरने के लिए ही एकादशी, प्रदोष, पूर्णिमा, इतवार, मङ्गल इत्यादि के व्रत रक्खे गए हैं। भूखे मरने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। जब बीमारी होती है तो वैद्य भी सब से अच्छी चिकित्सा यह समझते हैं कि लङ्घन कराया जाय। मुसलमान तो वर्ष में एक मास लगातार भूखे मरते हैं। अतएव जब भूखा मरना इतना श्रेष्ठ है तब फिर शिकायत क्यों की जाती है? क्या इससे अङ्गरेज़ों के कोमल हृदय पर चोट न लगती होगी कि भारतवासी स्वयम् तो शौक़िया और स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए भूखे मरते हैं और नाम उनका बदनाम करते हैं। कोई न देखे, परन्तु इस अन्याय को परमात्मा तो देखता ही है। हाँ, एक बात तो भूल ही गया। भूखे मरने वाले स्वर्ग में स्थान पाते हैं। हिन्दू और मुसलमानों में अधिकतर तो इसीलिए भूखे मरते हैं कि इससे स्वर्ग मिलेगा। अतएव यदि प्रत्येक समय पेट डबल रोटी की तरह फूला रहे तो ईश्वर को स्वर्ग के फाटक में सदैव के लिए ताला डलवा देना पड़े। अब कहिए, स्वर्ग का फाटक किसकी बदौलत खुला हुआ है? समझदार की मौत है, और क्या कहा जाय?

यह धरना क्या बला है और इससे लाभ क्या है—यही समझ में नहीं आता। विलायती कपड़े पर धरना, शराब पर धरना। विलायती कपड़ा! हरे! हरे! इस तेरी-मेरी का भी कुछ ठिकाना है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का सिद्धान्त मानने वाले आज इतने सङ्कुचित हृदय हो गए कि ख़ास अङ्गरेज़ों के, अपने रक्षकों के, बनाए कपड़े का तिरस्कार कर रहे हैं! इसीसे तो पुनः यह कहना पड़ता है कि घोर कलिकाल आ गया। यह एहसान तो भाड़ में गया कि अङ्गरेज़ों की बदौलत हम लोगों को कैसे-कैसे बढ़िया कपड़े पहनने को मिलते हैं। यह दशा है कि खाने को चाहे उबले चने ही मिलें, पर कपड़ा बढ़िया ही मिलता है। अजी खाना कौन देखता है? कपड़ा तो सब देखते हैं। कपड़े से ही मनुष्य की शोभा है। इतनी साधारण बात भी हिन्दुस्तानी नहीं समझते। अङ्गरेज़ बेचारे तो इस विचार से बढ़िया-बढ़िया कपड़े बना कर भेजते थे कि कोई यह न कहे कि हिन्दुस्तानियों को कपड़ा भी नहीं मिलता। अपना सिर खपा कर नित्य नई-नई डिज़ाइनों के कपड़े ईजाद करके भेजे। उसका पुरस्कार यह मिला कि विलायती कपड़े पर धरना दिया जा रहा है। एक समय वह था कि 'विलायती' शब्द वस्तु की उत्तमता का सूचक होता था। कैसी ही वस्तु हो, जहाँ यह पता लगा कि विलायती है, बस तुरन्त यह इतमीनान हो जाता था कि उत्तम है, सो आज उसी विलायती की यह दशा है। समय का फेर इसी को कहते हैं!!

कहते हैं कि कपड़े की बदौलत अङ्गरेज़ लोग साठ करोड़ रुपए वार्षिक हथिया लेते हैं। हथिया लेते हैं तो क्या बेजा करते हैं? चीज़ नहीं देते हैं? रुपया होता किस लिए है? खाने और पहनने के लिए। सो यदि ख़राब और रद्दी कपड़ा पहन कर रुपया बचाया भी तो किस काम का? कञ्जूसी की भी कोई हद होती है! ऐसी कञ्जूसी किस काम की?

ऐसी-ऐसी बढ़िया डिज़ाइनें आती थीं कि यदि एक-एक डिज़ाइन पर लाखों रुपए न्योछावर करके समुद्र में फेंक दिए जाते तब भी कोई बेजा बात नहीं थी। परन्तु हिन्दुस्तानियों में कृतज्ञता का माद्दा तो है ही नहीं। कृतज्ञता का माद्दा होता तो अङ्गरेज़ों के पैर धो-धोकर पीते। और अब भी जो समझदार हिन्दुस्तानी हैं वे पैर धोकर पीते ही हैं। सच पूछिए तो इन्हीं हिन्दुस्तानियों के कारण भारतवर्ष सधा हुआ है, अन्यथा रसातल को चला जाता। शास्त्रों में लिखा है कि जिस मुहल्ले में एक भी पुण्यात्मा होता है वह मुहल्ला का मुहल्ला ईश्वरीय कोप से बचा रहता है। हिन्दुस्तान में तो ऐसे अनेक पुण्यात्मा हैं जो अङ्गरेज़ों का उपकार मान कर उनकी पूजा करते हैं। इसीलिए हिन्दुस्तान धरती पर टिका हुआ है।

और तो और, शराब पर भी धरना! पूछो शराब बेचारी ने क्या अपराध किया है? और यह दिल्लगी देखिए कि विलायती तो विलायती, देशी शराब पर भी धरना है! यह धाँधली नहीं तो और क्या है? देशी शराब पर इसीलिए धरना है कि उससे अङ्गरेज़ों को टैक्स मिलता है। यह अच्छा हिसाब है? यदि अङ्गरेज़ों को पानी से टैक्स मिलता तो शायद पानी पर भी धरना बैठ जाता। इस समय कोई शराबियों के हृदय से पूछे। यह बरसात के दिन, काली-काली घटाएँ उठती हैं, और शराब पर धरना? हाय! हाय! गला काट कर मर जाने की बात है? इससे तो यही अच्छा है कि शराब के प्रेमियों को सङ्खिया खिला दी जाय।

कुछ लोगों का ख़्याल है कि शराब तो सदैव के लिए बन्द हो जानी चाहिए। परन्तु अपने राम का यह विचार है कि शराब बन्द न होगी। अमेरिका ने शराब बन्द तो की, परन्तु क्या नतीजा हुआ? लाखों रुपए की शराब अब भी वहाँ बिकती है। लोग चुरा कर बाहर से मँगाते हैं और बेचते हैं। हालाँकि इसके लिए अलग पुलिस नियुक्त है, परन्तु फिर भी बिकती ही है। मान लीजिए कि भारत को स्वराज्य मिल गया तो क्या शराब बन्द हो जायगी? अजी राम भजिए। जैसे अभी लोग नमक बनाते हैं वैसे ही तब शराब बनाएँगे। अजी अब तो सत्याग्रह का ऐसा नुस्ख़ा हाथ लग गया है कि लोग जिस बात पर चाहेंगे सत्याग्रह करेंगे। वैद्यों की चाँदी हो जायगी। आसव के बहाने ख़ूब शराबें बनाएँगे और बेचेंगे। स्वराज्य मिल जाने दीजिए, फिर अपने राम भी वैद्यक-शास्त्र पढ़ेंगे। वैसे तो चरक, सुश्रुत सब देख चुके हैं और पढ़ चुके हैं, क्योंकि उनके विज्ञापन निकला करते हैं और वैद्यों के यहाँ अलमारी में रक्खे रहते हैं।

सम्पादक जी, यह जो कुछ हो रहा है, सब एक सिरे से अन्याय ही अन्याय हो रहा है। इन अँङ्गरेज़ों की आह व्यर्थ न जायगी, देख लीजिएगा। इन बेचारों को जो व्यर्थ में सताएगा वह सुख से न बैठने पाएगा। ऐसा अपने राम का विचार होता भया, आगे जो ईश्वर चाहेगा वही होगा। हालाँकि अपने राम अच्छी तरह जानते हैं कि क्या होगा, परन्तु कहना बेकार है, क्योंकि जो अपने राम का विचार है वही इस समय सारे हिन्दुस्तान का है।

भवदीय,
—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

तूफ़ाने-ज़राफ़त

[महाकवि "अकबर" इलाहाबादी]

फ़ल्सफ़ी को बहस के अन्दर ख़ुदा मिलता नहीं,
डोर को सुलझा रहा है और सिरा मिलता नहीं।
लोग कहते हैं कि बदनामी से बचना चाहिए,
कह दो बे इसके जवानी का मज़ा मिलता नहीं।
ज़िन्दगानी का मज़ा मिलता था जिनकी बज़्म में,
उनकी क़ब्रों का भी अब मुझको पता मिलता नहीं!
शेख़ साहब बरहमन से लाख बरतें दोस्ती,
बे भजन गाए तो मन्दिर से टका मिलता नहीं।
अहले-ज़ाहिर जिस क़दर चाहें करें बहसो-जदाल,
मैं यह समझा हूँ ख़ुदी में तो ख़ुदा मिलता नहीं।
चल बसे वह दिन कि यारों से भरी थी अन्जुमन,
हाय अफ़सोस! आज सूरत आश्ना मिलता नहीं!!
यूँ कहो मिल आओ उनसे लेकिन "अकबर" सच यह है,
दिल नहीं मिलता तो मिलने का मज़ा मिलता नहीं!

* * *

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

यह न पूछो हमसे क्या मिलता है, क्या मिलता नहीं,
और सब मिलता है कॉलिज में, ख़ुदा मिलता नहीं।
क्यों न बैठें, वादिए-उल्फ़त में हिम्मत हार कर?
मञ्ज़िलों तक, हमको मञ्ज़िल का पता मिलता नहीं!
सोचते हैं, मर के हम हासिल करें, ग़म से नजात,
ज़िन्दगी का लुत्फ़ जीने का मज़ा मिलता नहीं।
मञ्ज़िले-मक़सूद पर पहुँचा दे इतमीनान से,
कोई हमको इस तरह का रहनुमा मिलता नहीं!
लुत्फ़ उठाने के लिए चेले भी होते हैं शरीक,
रह के मन्दिर में गुरू जी! तुमको क्या मिलता नहीं?
दिल को आईना बनाओ तो बर आए आरज़ू,
दो जिला इसमें कि बे इसके ख़ुदा मिलता नहीं।
उनसे जो मिलता है ऐ "बिस्मिल" वह पाता है ख़िताब,
नक़द तो लेकिन किसी को एक टका मिलता नहीं!

* * *

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

उस दिन व्यवस्थापिका परिषद में एक श्वेतकाय सदस्य ने महात्मा गाँधी की उपमा 'हनूमान' से देकर अपनी गोरी सभ्यता का नग्न-परिचय प्रदान किया, तो हिन्दू सदस्यों ने बेचारे को बुरी तरह फटकार दिया। परन्तु श्रीजगद्गुरु को यह उपमा ठीक बावन तोले पाव रत्ती नहीं तो साढ़े इक्यावन तोले तो अवश्य ही ठीक जँचती है। क्योंकि 'हनूमान वंशीय' जीवों को देख कर जिस तरह श्वान-समाज व्याकुल हो जाता है और 'भों-भों' रव से उनका स्वागत आरम्भ कर देता है, उसी तरह श्वेतकाय समाज वाले भी महात्मा गाँधी का नाम सुनते ही अपने विचित्र रव द्वारा अपनी व्याकुलता प्रकट करने लगते हैं।

❀

ख़ैर, जब चारों ओर से बेभाव की पड़ने लगी तो उपर्युक्त श्वेतकाय ने अपनी उपमा वापस ले ली और कहने लगा कि जिस तरह हनूमान ने लङ्का में आग लगा दी थी, उसी तरह गाँधी ने भी चम्पारन में लगाई थी। यह बात भी, सोलह आने नहीं, तो पौने पन्द्रह आने अवश्य ठीक है। क्योंकि यद्यपि महात्मा गाँधी ने चम्पारन में आग तो नहीं लगाई थी, परन्तु वहाँ के नीलहे राक्षसों में, उनके कारण घबराहट वैसी ही फैली थी, जैसी हनूमान के आग लगा देने पर लङ्का के राक्षसों में फैली थी।

❀

ऐसी दशा में परिषद के हिन्दू सदस्यों को उचित था, कि बेचारे श्वेतकाय को उसकी इस उपमा के लिए उसे दाद देते, परन्तु उन्होंने बेचारे को कोसना आरम्भ कर दिया। इससे मालूम होता है, कि परिषद में उपमा-अलङ्कार के ज्ञाताओं की नितान्त कमी है, अन्यथा बेचारे श्वेतकाय को "अरसिकेषु कवित्त निवेदनम्" की दयनीय दशा में पड़ कर यों हास्यास्पद क्यों बनना पड़ता?

❀

बहुत दिनों की बात है, श्रीजगद्गुरु के इस धराधाम पर अवतीर्ण होने से भी पहले की, उन दिनों शायद 'पर्दा-सिस्टम' इतने ज़ोरों पर न था और न अल्लाह मियाँ "साफ़ छिपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं" की अवस्था में थे। उस समय मुसलमानों का—शायद जमैअतुल-उलेमा का—एक डेपूटेशन अल्लाह मियाँ की ख़िदमत में पहुँचा और कहने लगा—"या ख़ुदाया, यह पाँच वक़्त की निमाज़ माफ़ कर दे। क्योंकि आए-दिन की इस 'पाँच वक़्ता' कसरत से तेरे बन्दों को बड़ी तकलीफ़ होती है।"

❀

बूढ़े अल्लाह मियाँ ने कुछ सोचा, दो-एक बार दाढ़ी पर हाथ फेरा और फ़रमाया—"मेरे बन्दो, यह तो बिल्कुल ग़ैर-मुमकिन बात है। यह पाँच वक़् की निमाज़ तो रहेगी ही, इसके सिवा तुम्हें साल में पूरे महीने भर रोज़ा भी रखना पड़ेगा, नहीं तो मरने पर न तो बिहिश्त में 'हूरोग़िलमा' मिलेंगे और न 'शराबे-तहूरा' की ही बूँद नसीब होगी।" बेचारे मुसलमान अल्लाह मियाँ का यह उलटा न्याय देख कर वापस लौट आए। और क्या करते?

❀

ठीक ऐसा ही उलटा न्याय उस दिन, दिल्ली में महात्मा गाँधी ने किया। कुछ लोग गए थे, उनका दर्शन करके पुण्य लूटने और अपनी देश-भक्ति का परिचय देकर उन्हें कृतार्थ करने, तो हज़रत ने फ़रमाया कि खद्दर पहना करो और तकली काता करो। इतना ही नहीं, अगर कल से कोई बिना खद्दर पहने और तकली लिए आयगा तो 'छोटे दरवाज़े' (?) से निकाल दिया जायगा! बतलाइए, बीसवीं सदी का यह फ़ैशन का युग और सखी नौकरशाही की सुसंस्कृत नई दिल्ली का निवास! ऊपर से निगोड़ी गरमी आ रही है। ऐसी दशा में कोई भला आदमी खद्दर कैसे पहन सकता है और अपनी कोमल उङ्गलियों से तकली कैसे चला सकता है?

❀

एक दिन कुछ कुल-ललनाएँ आपका दर्शन करने गई थीं, तो उनसे भी आपने प्रायः ऐसी ही बात कही और हाथ उठवा कर खद्दर पहनने की प्रतिज्ञा भी करा ली। बाज़ आया बाबा, ऐसे दर्शन से। अगर यही हालत रही तो कुछ दिनों के बाद कहने लगेंगे, कि नमक खाना छोड़ दो, डेढ़ छटाँक बकरी का दूध पीकर दिन काट लो और स्वराज्य लेना चाहते हो तो मेरी तरह साढ़े तीन बीते की लँगोटी बाँधना आरम्भ कर दो।

❀

इसलिए श्रीजगद्गुरु की तो राय है, कि जिन्हें अपने कमनीय कलेवर पर अत्याचार न करना हो, वे कम से कम गरमी भर के लिए बाबा जी का दर्शन करना छोड़ दें। फिर जाड़ा आएगा तो देखा जायगा। ऐसा स्वराज्य किस काम का, जिसके लिए खद्दर पहनना पड़े और तकली कातना पड़े। इससे तो यही नौकरशाही का यह राम-राज्य ही अच्छा है। पहनने को महीन और मुलायम कपड़े मिलते हैं, बूटी दिन-रात छानते रहो, कोई बोलने वाला नहीं, लकड़ी के बुरादे के आटे की नरम-नरम चपातियाँ और पवित्र घास के घी में चुपड़ी हुई, माशा अल्लाह याद आती है, तो ज़बान से लार टपक पड़ती है।

❀

बङ्गाल के लीडरों ने, सुनते हैं, लीडरी की नाक रख ली और गत स्वाधीनता-दिवस के शुभ मुहूर्त में ऐसा नुस्ख़ा ढूँढ निकाला कि 'साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे।' देशोद्धार हो जाय, लीडरी में बट्टा न लगे और सखी नौकरशाही भी प्रसन्न रहे। फलतः अब न पिकेटिङ्ग करके जेल जाने की आवश्यकता रही और न ऑर्डिनेन्स तोड़ कर सिर फोड़वाने की। सीधे-सादे शब्दों में यों समझ लीजिए कि "बिनु प्रयास लङ्का-गढ़ टूटा!" और अगर आपकी राय हो तो उसके आगे यह भी जोड़ दीजिए कि—'बङ्ग जननि का माथा फूटा!'

❀

हिज़ होलीनेस की इस मुख़्तसर भूमिका के बाद अब ज़रा मूल-विषय पर आइए। यह तो आपको मालूम ही होगा, कि कलकत्ते का पुलिस कमिश्नर बुद्धिमानी का जीता-जागता पुतला है। उसने कलकत्ता के बौंधा-बसन्तों को 'एप्रिल फ़ूल' बनाने का विचार किया और 'अमृत बाज़ार पत्रिका' के एडीटर साहब को बलिदान का बकरा बना कर कहा कि सरकार के दिल में दया का दरिया बह गया है, उसने कॉङ्ग्रेसी लीडरों को छोड़ दिया है और चाहती है कि स्वतन्त्रता-दिवस के उपलक्ष में पुलिस और कॉङ्ग्रेसियों से मुठभेड़ न हो, इसलिए उनसे कहिए कि उक्त अवसर पर कोई जुलूस वग़ैरह न निकालें!

❀

'अमृत बाज़ार पत्रिका, के एडीटर साहब श्री० तुषार कान्ति घोष महाशय रङ्ग-रूप में 'कोयला-कान्ति' होने पर भी ठीक 'तुषारवत्' ठण्डे दिल के आदमी हैं। फिर कलकत्ता के शहर-कोतवाल ने सारे एडीटरों में आप ही को अधिक शान्त, शिष्ट और निरपेक्ष समझा। बिना परिश्रम के ऐसा देव-दुर्लभ सम्मान पाकर बेचारे निहाल हो गए और चट लीडरों को पुलिस कमिश्नर बहादुर की इस शुभेच्छा से आगाह कर दिया। भई, वास्तव में कर्तव्यपरायणता ऐसी चीज़ ही है।

❀

सुभाषी दल के लीडरों ने अपने दलपति के साथ गम्भीर गवेषणा और तुमुल तर्क के बाद निश्चय किया कि पुलिस कमिश्नर बहादुर उस दिन, दिन भर के लिए हम लोगों को पकड़ लें तो सारी उलझन सुलझ जाए, लीडरी की भी शान रह जाय और कमिश्नर साहब की भी बात रह जाय। कमिश्नर साहब तो चाहते ही थे कि किसी तरह उल्लू जाल में फँसें। वह इस बात पर राज़ी हो गए।

❀

इसके बाद की 'विधानी' और 'किरण शङ्करी' मूर्खताओं के उल्लेख की आवश्यकता नहीं। क्योंकि श्रीजगद्गुरु के फागुन भर बिना भाँग-बूटी के नशे में चूर रहने के लिए इतना ही सामान काफ़ी है और उन्हें इस बात की प्रसन्नता है कि जहाँ ऐसे-ऐसे 'रँगे........' लीडर मौजूद हैं, वहाँ स्वतन्त्रता तो क्या, स्वतन्त्रता की नानी को भी झख मार कर आना ही पड़ेगा।

❀

अमाँ, आजकल दो ही तो बिना पूँजी के निख़ालिस रोज़गार हैं। एक लीडरी और दूसरा महन्ती। दोनों ही का महान मॉटो या मक़ूला है—"ज़बाँ पै नामे ख़ुदा है जारी, बग़ल में बोतल शराब की है।" ज़िन्दगी के मज़े लूटने के लिए चन्दे की रक़में, पकड़ जाने पर 'ए' क्लास का आराम और मरने पर अपने राम के नाम से म्युनिसिपैलिटियाँ कोई 'रोड' या 'पार्क' तो बनवा ही देंगी! फिर और चाहिए क्या?

❀

उधर महन्ती का क्या पूछना है, भगवान चेलों को कुशल से रक्खें। फिर तो 'माले मुफ़्त और दिले बेरहम' का मामला है। 'इधर परियों का मजमा है, उधर हूरों की महफ़िल है!' तुम क्या समझते हो कि हिज़ होलीनेस बिना समझे-बूझे ही माँग मुड़ाने को तैयार हैं? दईमारी गुरुआनी को अल्लाह मियाँ अपने बिहिश्त की रौनक़ बढ़ाने के लिए बुला लें तो श्रीजगद्गुरु भी खद्दर का कुर्त्ता पहन कर लीडर बन जायँ या तुलसी बाबा की इस उक्ति को सार्थक कर दें:—

नारि मुई गृह सम्पति नासी,
मूँड़ मुड़ाय भए संन्यासी।

❀

बङ्गाल की कौन्सिल में किसी ने प्रस्ताव कर दिया था कि सरकार इस समय घाटे में है, इसलिए मन्त्री महोदयगण कुछ दिनों तक ६४ हज़ार के बदले ३६ ही हज़ार वेतन लें, बक़ौल उस मालिक के, जिसने घाटे के कारण अपने गुमाश्ते को लिखा था—"मुहवाँ सूखी सतुआ खाव, अबहीं काम निकाले जाव।" परन्तु मन्त्रियों

के पूर्व-जन्म के पुण्य-प्रताप से यह प्रस्ताव फ़ेल हो गया और बेचारों की होली किरकिरी होते-होते बाल-बाल बच गई !

❀

अवश्य ही इस तरह का प्रस्ताव करने वाला कोई आधुनिक नास्तिक या असनातनी रहा होगा। वरना कौन नहीं जानता कि 'सनातन नौकरशाही धर्मानुसार' सरकारी घाटे की पूर्ति का सहज-सरल उपाय टैक्स-वृद्धि है और अनादि काल से इसीसे काम लिया जाता है। क्योंकि अभी भी इस देश के करोड़ों ग़रीब दोनों वक्त खाते और भर-भर पेट पानी पीते हैं। ऐसी दशा में बेचारे मन्त्रियों और सिविलियनों का वेतन कम करने का प्रस्ताव ! राम-राम ! कलिकाल है, नहीं तो प्रस्तावक की तो जीभ गल कर गिर जानी चाहिए।

❀

अरे भाई, इस ग़ुलाम देश पर शासन करने के लिए रोब-दाब, शान-शौकत और ठाट-बाट की, दिन भर की थकी-माँदी तोंद आराम के लिए गुलगुले गद्दे और लेह्य, पेय, चौव्य, चूस्य पचाने के लिए बी रफ़ीक़म के पायल की श्रुति-मधुर ध्वनि की नितान्त आवश्यकता है। ये अत्यावश्यक कार्य-समूह भला ३६ हज़ार में कैसे चल सकते हैं ? इसलिए उचित तो यह है कि मन्त्रियों के वेतन में चौंसठ हज़ार की और वृद्धि कर दी जाय। परन्तु यहाँ यार लोग उसमें कमी करने की सोच रहे हैं ! बताइए यह कोई शराफ़त है या भलमनसाहत !

❀

रही सिविलियनों की बात, सो वे बेचारे तो और भी दया के पात्र हैं। बेचारे भारत के कल्याण के लिए सात समुद्र और तेरह नदियाँ पार कर इस देश में आते हैं, यहाँ की कठिन गर्मी बर्दाश्त करते हैं और कौवे के शिकार के धोके में कदाचित किसी काले का शिकार हो जाता है तो नक़द सोलह आने जुर्माने के दे देने पड़ते हैं। फलतः इनके वेतन में कमी करने की बात सोचना तो पूरा क़साईपन है। ऐसी बात तो सुनने में भी पाप है।

❀

इसलिए अपने राम की तो राय है कि दक्षिण अफ़्रिका की तरह यहाँ भी 'पॉल टैक्स' की व्यवस्था कर दी जाय। आख़िर इन काले जीवों को हक़ ही क्या है। मुफ़्त में इस देश में पैदा होने और मरने का ? हाँ, एक बात तो भूल ही गए थे। यह तो स्वतः सिद्ध है कि इस सरकारी घाटे का सारा दायित्व सत्याग्रहियों पर है। न ये कमबख़्त बखेड़ा खड़ा करते, न यह हाल होता। फिर तो सब से सीधा-सादा तरीक़ा यह है कि इनकी जोरुओं के गहने ज़ब्त कर लिए जायँ। क्यों कैसी कही, लाइए, हाथ लाइए।

❀

मगर या पाक परवरदिगार। यहाँ घाटे की तो 'वोबा' फैल गई है। पूरे पाँच करोड़, १२ लाख का घाटा रेलवे में भी हो गया है ! और इसकी भी सवा सोलह आने ज़िम्मेदारी सत्याग्रहियों पर है। परन्तु इसके लिए श्रीजगद्गुरु को 'हदीस' उलट कर कोई फ़तवा देने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि सर जॉर्ज रेनी, माशा अल्लाह चतुर व्यक्ति हैं, उन्होंने तीसरे दर्जे के यात्रियों का किराया बढ़ा देने का पुण्यपूत उपाय पहले ही सोच लिया है।

❀

और, इसका एक अतीव समीचीन कारण भी है। क्योंकि रेलवे की आमदनी का, सौ में अट्ठासी भाग इन्हीं तीसरे दर्जे के यात्रियों द्वारा प्राप्त होता है और बाक़ी बारह भाग पूरा न कर देना इनके लिए कलङ्क की बात है। फलतः धर्म-भीरु, दया-निधान सर जॉर्ज रेनी नहीं, चाहते कि यह कलङ्क का कुत्सित तिलक इन भले-आदमियों के भाल की शोभा बिगाड़ता रहे। इसीलिए बाक़ी बारह भाग इन्हीं से ऐंठ लेने का विचार सर जॉर्ज रेनी ने किया है। वास्तव में इस साधु सङ्कल्प के लिए आप तीसरे दर्जे के यात्रियों के कृतज्ञ भाजन होने के मुस्तहक़ हैं।

❀

भई, ये हिन्दुस्तान वाले भी बड़े लालची हैं। मालूम होता है, मुफ़्त में मिले तो सारी दुनिया की दौलत बटोर कर घर में रख लें। सरकार ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए, कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी के सदस्यों को छोड़ देने की उदारता क्या दिखाई, लोगों ने उसे बेवक़ूफ़ समझ लिया। कोई कहता है, सभी क़ैदियों को को छोड़ो, कोई कहता है, मेरठ के अभियुक्तों को छोड़ दो और कोई कहता है, भगतसिंह वग़ैरह को फाँसी मत दो। वही कहावत हुई कि "बेवक़ूफ़ की भैंस बियानी और सारा गाँव मटकी लेकर दौड़ा !"

❀

भला से मेरठ-केस के अभियुक्तों ने किसी हिंसात्मक क्रान्ति का आयोजन न किया था और न बम बनाने का कोई कारख़ाना ही खोलने जा रहे थे, परन्तु वे देश भक्त हैं, ग़रीबों की दशा सुधारना चाहते थे, इसे क्या आप कोई साधारण अपराध समझते हैं। जी जनाब, ये ग़रीब ही तो अमीरों की दुधार गाएँ हैं। अगर इनकी दशा सुधर जायगी तो फिर बेचारी अमीरी क्या कोंपर चाट कर जिएगी या अमीर अपनी विलास-वासना की तृप्ति के लिए आपके घर आएँगे ?

❀

सुनते हैं, भगतसिंह वग़ैरह को फाँसी से बचाने के लिए क़ानूनी पेंच भिड़ाए गए हैं, न्याय, दया, और मनुष्यता की दोहाई दी जा रही है। अनुनय, विनय, और प्रार्थना आदि नाना प्रकार के उपायों से काम लिया जा रहा है। परन्तु इस सम्बन्ध में कौन्सिल में जो प्रश्नावली हुई है, उसके उत्तर में सरकार ने, हिन्दी के 'छायावादी' कवियों की तरह 'नीरव भाषा' का प्रयोग करके साफ़ बता दिया है कि "भैंस के आगे बीन बजाए भैंस खड़ी पगुराय !"

❀

माशा अल्लाह, हमारे भूपाल के नवाब बहादुर भी पाँचों सवारों में हैं और सुलह की 'गुफ़्तोशुनीद' में आहार-निद्रा छोड़ कर भाग ले रहे हैं। विलायत से आए, पैर की धूल भी न झाड़ी और फ़ौरन इलाहाबाद पहुँचे। गाँधी से मिले, सप्रू से मिले, 'आनन्द-भवन' का चक्कर काटा। ग़र्ज़ कि शान्ति और सुलह के लिए आप दिलोजान से कोशिश कर रहे हैं, इसलिए भावी इतिहास की सामग्री एकत्र करने वालों को चाहिए कि अपने नोटबुक में नवाब साहब का नाम अवश्य दर्ज कर लें, ताकि कहीं ऐसा न हो कि जब इन शान्ति के अग्र-दूतों की स्मृति में 'स्टेचूज़' बनने लगें तो लोग नवाब साहब को भूल जायँ !

❀

दिल्ली के एक अख़बार वाले ने पूछा है, कि आप किसके प्रतिनिधि बन कर इतनी दौड़-धूप कर रहे हैं ? अमाँ, अपने और श्रीजगद्गुरु के। क्योंकि आप 'हिज़ हाईनेस' हैं और श्रीजगद्गुरु 'हिज़ होलीनेस'। "जैसे उदई वैसे भान, न इनके चुटिया न उनके कान" वाला मामला है। जैसे श्रीजगद्गुरु 'भविष्य' वालों के बिना माँगे ही अपना 'फ़तवा' दिया करते हैं, उसी तरह नवाब साहब भी बिना बुलाए ही सुलह करा रहे हैं और बक़ौल महाकवि अकबर के—

बुद्धू मियाँ भी सुनते हैं, गाँधी के साथ हैं,
एक मुश्त ख़ाक हैं, मगर आँधी के साथ हैं !

❀

त्रेतायुग में, बक्सर के पास एक राक्षस-कुल-दीपक रहते थे, उनका शुभनाम था मारीच। उन्हें एक भयङ्कर बीमारी हो गई थी, और उसका ज़िक्र उन्होंने, बक़ौल बाबा तुलसीदास, लङ्का के राजा रावण से किया था— "'रा' अस नाम सुनत दसकन्धर, रहत प्रान नहिं मम उर अन्तर !" परन्तु पता नहीं, राक्षस-राज ने अपने राजवैद्य श्री० सुषेण जी से मारीच साहब की इस बीमारी के लिए कोई नुसख़ा तजवीज़ कराया था या नहीं। श्रीजगद्गुरु की धारणा है कि ज़रूर कराया होगा। क्योंकि मारीच उनके परम प्रिय पात्र थे।

❀

ख़ुदानाख़्वास्ता वह नुसख़ा अगर किसी तरह मिल जाता तो सखी नौकरशाही का बड़ा उपकार होता। क्योंकि उनके कुछ गोरे प्रियपात्रों में भी उसी तरह की एक सङ्क्रामक बीमारी फैल गई है। अर्थात् जब वे किसी के सिर पर गाँधी टोपी देख लेते हैं तो उनकी भी 'रहत प्रान नहिं उर अन्तर' की दशा हो जाती है और बेचारे घबरा कर होश-हवास खो बैठते हैं, चेहरा लाल हो जाता है, नीली आँखें आगे को निकल आती हैं और ज़बान बी भठियारन की ज़बान को मात कर देती है। बाक़ी सारे लक्षण मृगी-रोग से मिलते-जुलते हैं।

❀

यद्यपि कुछ जीवट वाले गोरे ऐसे भी हैं, जो 'गाँधी टोपी' से बिल्कुल नहीं डरते। एक दिन तो एक हज़रत गाँधी टोपी पहन कर इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट में चले गए थे, परन्तु वहाँ कोई उत्पात नहीं मचा। शायद इसका कारण यह हो कि वहाँ की आबोहवा ज़्यादा ठण्ढी है। मगर हिन्दुस्तान की आबोहवा तो गरम है न, इसीसे यहाँ के गोरों को तो यह निगोड़ी गाँधी टोपी व्याकुल करके छोड़ देती है। सखी नौकरशाही को इसकी कोई तदबीर सोचनी चाहिए, नहीं तो उनके गोरे बाल-गोपाल बेचारे बेमौत मर जायँगे।

❀

अभी हाल की घटना है, संयुक्त प्रान्त के गवर्नमेण्ट-प्रेस का एक क्लर्क गाँधी टोपी मूँड़ पर रक्खे एक गोरे साहब के सामने चला गया। बेचारे साहब तिलमिला उठे, फ़ौरन बीमारी का दौरा शुरू हो गया। यह तो कहिए कि बेचारे के बाल-बच्चों की तक़दीर अच्छी थी, जान बच गई, नहीं तो क्या होता, यह सोच कर अपने राम का तो दिल धड़क रहा है और भय लगता है कि कहीं सारे के सारे गोरों में यह बीमारी फैली तो सखी का राम-राज्य कैसे चलेगा

❀

ख़ैर, यह प्रसन्नता की बात है कि उक्त क्लर्क ने स्तीफ़ा दे दिया है और अब गवर्नमेण्ट प्रेस के गिर कर धूलिसात हो जाने का कोई खटका नहीं रह गया है और न उक्त साहब बहादुर के लिए ही कुछ चिन्ता करने की आवश्यकता है। परन्तु यह बीमारी तो अवश्य ही ख़तरनाक है। इसलिए ऑर्डिनेन्साचार्य श्रीमान लॉर्ड इरविन महोदय से श्रीजगद्गुरु की सविनय प्रार्थना है कि चलते-चलाते इस गौराङ्ग आतङ्क प्रदायिनी गाँधी टोपी के लिए भी कोई ऑर्डिनेन्स जारी कर दें, ताकि सखी नौकरशाही का ख़ान्दान क़ायमोबरक़रार रह जाय और उन्हें भी अमर कीर्ति प्राप्त हो जाय।

❀

The unrivalled reputation of the CHAND

Mr. G. P. Srivastava, B.A., LL.B.,

× × × The CHAND is no doubt an ably edited [illegible] it deserves every encourage-ment. May God gra[illegible] it a long and healthy life × × ×. Our orthodox, hypocrite and good-for-nothing Society requires continually a true exposition of its evils for its betterment as is done. I hope it will have a wholesome effect on the public. You really deserve sincere congratulations not only from our much oppressed female class, but also from the real well-wishers of our Nation. May God help you in your endeavours.

Justice Sir Abdul Qadir, of Lahore High Court :

The CHAND has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving [illegible] × × × I wish you success in your [illegible] enterprise.

Miss Mithan Tata B.A., M.Sc., Bar-at-Law :

× × × I am sure your paper is doing much good to the ladies in Upper India where such steady activity is greatly needed × × × the get-up is very good indeed. I wish you greater success in the [illegible] × × ×

सम्पादक :—

वार्षिक चन्दा ...	... ६) रु०
छः माही चन्दा	... ५) रु०
तिमाही चन्दा ...	... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य	. ≡)

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

संख्या ११, पूर्ण संख्या २३

प्रेम, शान्ति, ऐक्य, नम्रता और समता की सजीव प्रतिमा

तुम,
शान्त क्रान्ति के पूज्य-पिता,
तुममें वज्रों की दृढ़ता है
और कुसुम की कोमलता!
छोटे से तन के भीतर है
छिपा क्षीर-सागर सा मन!

तुम सब से छोटे जन के,
मृगपति पावनता कानन के
आश्वासन गिरते मन के।
परहित जीवी, अपनेपन के
रूप, जगत जीवन की आन,

विदेशियों की चरम मुग्धता,
गर्व-नम्रता के अभिमान,
सरस्वती के सर्व-श्रेष्ठ तुम—
सुवन, वचन पटुता रसखान!
त्याग-मूर्ति, अनुराग-मूर्ति तुम
नीति-निपुणता सरल सुजान,

हुआ तुम्हारा है अवतार,
जग-सेवक बन, जन-सेवित हो
भार-हरण लेकर गुरु भार!
दोषपूर्ण भी पास तुम्हारे
आकर हो जाता निर्दोष,

— आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—५ मार्च, १९३१ | संख्या ११, पूर्ण संख्या २३

श्रीरामरखसिंह सहगल गिरफ्तार

'भविष्य' कार्यालय पर सशस्त्र-पुलिस का धावा

श्री० दुर्गादेवी के लिए मातृ-मन्दिर पर पुलिस का मोर्चा

अचार और पानी के मटकों में बमों की तलाश

'चाँद' कार्यालय तथा मातृ-मन्दिर में क्रान्तिकारियों की खोज

पेड़ खोद कर देखे गए :: 'चाँद' बुकडिपो की तलाशी

संस्था के चारों ओर चौबीसों घण्टे ख़ुफ़िया पुलिस का पहरा

यों तो इस संस्था पर पुलिस की कृपा सदा से बनी रही है, पर गत २८वीं फ़रवरी को तो उन्होंने विशेष दया कर दी। केवल 'चाँद' और 'भविष्य' कार्यालय पर ही नहीं, वरन् इलाहाबाद, चौक के 'चाँद' बुक-डिपो, मातृ-मन्दिर और बेली रोड पर श्री० सहगल जी के एक बङ्गले पर भी उनकी दया-दृष्टि जा पड़ी।

गत तारीख़ २८ फ़रवरी को सबेरे ५ बजे क़रीब ४०-४२ सशस्त्र पुलिस के सिपाहियों ने 'चाँद' कार्यालय को चारों ओर से घेर लिया। कुछ देर के लिए बाहर वालों को भीतर और भीतर वालों को बाहर जाने की मनाही कर दी गई।

सहगल जी उस समय सुख की नींद सो रहे थे। रात भर के परिश्रम के बाद, केवल कुछ ही घण्टे पहले उन्हें सोने का समय मिला था। अचानक नौकर ने जाकर उन्हें जगाया। साथ ही पुलिस के हथियारबन्द सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब भी उनके सोने के कमरे में आ धमके, और अपनी शुभकामना (तलाशी लेने की) सहगल जी पर प्रकट की। प्रेस बन्द था, वह खोला गया। प्रेस के सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब सोए हुए थे, वे जगाए गए। प्रेस का कोना-कोना छान डाला गया। किन्तु दुःख है कि पुलिस को वहाँ कुछ भी हाथ न लगा। इसके बाद सम्पादकीय विभाग की तलाशी ली गई, पर यहाँ से भी बेचारों को विफल-मनोरथ ही लौटना पड़ा। तदनन्तर सहगल जी के कमरे की तलाशी ज़रा विशेष सावधानी से ली गई। सियाही के डब्बे भी उलट-पलट कर देखे गए। सौभाग्यवश इन्स्पेक्टर साहब की दृष्टि एक काग़ज़ पर जा पड़ी, जिस पर लिखा था, 'कार्टिज'। बस उनके हर्ष का पारावार नहीं रहा, किन्तु जब उन्हें समझाया गया कि यह 'कार्टिज', बन्दूक़ की गोली नहीं, बल्कि एक पत्र का नाम है, तो हज़रत के चेहरे का रङ्ग ज़रा फ़ीका पड़ गया।

इसके बाद सहगल जी के रसोई-घर की ओर पुलिस लपकी। वहाँ खाद्य पदार्थ तो कुछ था नहीं, केवल रात के उच्छिष्ट बर्तन रक्खे हुए थे। ख़ैर, इन्हें ख़ूब टटोल कर देख लिया गया। इसके बाद पुलिस बड़े शौक़ से पाख़ाने की ओर बढ़ी, किन्तु अफ़सोस, वहाँ से भी निराश ही लौटना पड़ा! प्रेस के सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब के घर भी यही अभिनय किया गया। उनका बक्स खोला गया, एक-एक कर कुल चीज़ें देखी-भाली गईं, पर कुछ नहीं मिला। इसी तरह अन्यान्य कई नौकरों के कमरे भी ख़ूब सावधानी से टटोले गए, परन्तु कोई आश्चर्यजनक वस्तु न मिली।

'चाँद' कार्यालय से केवल एक या दो साधारण चिट्ठियाँ पुलिस अपने साथ ले गई है। यह तलाशी

श्री० रामरखसिंह सहगल

प्रायः ११ बजे समाप्त हुई। मातृ-मन्दिर की तलाशी और भी तत्परता तथा सावधानी से ली गई। पुलिस को शायद यह सन्देह था कि श्री० दुर्गादेवी यहाँ छिपी हुई हैं और शायद उसे वहाँ बम होने का भी सन्देह था। इसीलिए यहाँ पानी के घड़े और अचार के मटके भी हाथ डाल कर देखे गए! पेड़ों की जड़ें तक खोद कर बम की तलाश की गई !! पर पुलिस को अन्त में हताश ही होना पड़ा। वहाँ की एक नर्स की कुछ व्यक्तिगत चिट्ठियाँ ज़ब्त कर ली गई हैं; चिट्ठियाँ तादाद में ८०-९० के लगभग होंगी।

'चाँद' बुक-डिपो में भी पुलिस को कोई मनोवाञ्छित वस्तु नहीं मिल सकी।

बेली रोड पर सहगल जी के बङ्गले की तलाशी यह जानने के लिए की गई थी, कि कोई अपरिचित व्यक्ति वहाँ ठहरा था या नहीं। अपरिचित व्यक्ति से पुलिस का मतलब शायद किसी क्रान्तिकारी से हो सकता है। यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि एक दिन पहले गत २७वीं फ़रवरी को आज़ाद से पुलिस की मुठभेड़ हुई थी, और कहा जाता है कि उनके दो साथी भाग निकले थे। आश्चर्य नहीं, यह तलाशी उन्हीं लोगों के सम्बन्ध में हुई हो।

* * *

अन्त में गत २री मार्च को ९॥ बजे रात्रि में पुलिस फिर सहगल जी के वासस्थान—'चाँद' कार्यालय पर आ धमकी। ख़ुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर मि० भृगुप्रकाश ने सहगल जी को उनकी गिरफ़्तारी का वारण्ट दिखाया और १२४-ए धारा के अनुसार उन्हें गिरफ़्तार करके उसी समय नैनी-जेल ले गए।

सहगल जी प्रसन्न-वदन थे। वे हँसते-हँसते मोटर पर सवार हुए। उस समय उनके घर की महिलाओं ने उन पर पुष्प-वृष्टि की। उपस्थित कर्मचारियों ने 'वन्दे-मातरम्' और 'इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद' के गगन-भेदी नारों के साथ उन्हें विदा किया। थोड़ी देर के लिए 'चाँद' कार्यालय में एक अपूर्व उत्साह फैल गया। देखते-देखते मोटर आँखों से ओझल हो गई।

हमें विश्वस्त-सूत्र से पता लगा है, कि इधर कुछ दिनों से 'चाँद' कार्यालय पर पुलिस की कड़ी निगरानी रहती है। छद्मवेष में पुलिस के चर सदैव इस संस्था के आस-पास चक्कर काटा करते हैं।

सुना गया है कि श्री० सहगल जी नैनी-जेल में 'भारत' के भूतपूर्व सम्पादक और 'ए' क्लास के क़ैदी पण्डित वेङ्कटेश नारायण तिवारी के साथ रक्खे गए हैं। आपके मुक़द्दमे की पेशी सम्भवतः आगामी ७ मार्च को होगी।

* * *

बम्बई—

—अकोला का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्वामी अनन्तानन्द शास्त्री और श्री० गोविन्दराव शिन्दे को ११वें ऑर्डिनेन्स के अभियोग में ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। कमगाँव ताल्लुका कॉङ्ग्रेस कमिटी के ३ सदस्य इसी ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। शेरपुर ताल्लुका में भी ६ कार्यकर्ता गिरफ़्तार किए गए हैं। इनमें से एक अमृतराव महाजनी को १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—सूरत का २७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ६ व्यक्तियों को, जो मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—धारवार का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि लगानबन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में एक स्वयंसेवक को ४ माह की और दूसरे को ३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—हवेरी ताल्लुका के ४ स्वयंसेवक पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में, तथा अनकोला और कनारा के १३ स्वयंसेवक, ग़ैर-क़ानूनी संस्थाओं के सदस्य होने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बम्बई का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने सूरत की ८वीं सञ्चालिका श्रीमती विलासवती चन्द्रभान मेहता को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार २ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

उसी मैजिस्ट्रेट ने स्थानीय विद्यार्थी-सङ्घ के सेक्रेटरी श्री० मोहनलाल छोकावाला को १८८वीं धारा के अनुसार ४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

—बम्बई का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कुछ अभियुक्तों के अपने चार्जशीट पर हस्ताक्षर करने से इन्कार करने पर, सिटी मैजिस्ट्रेट ने उन्हें १-१ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

—अकोला का २३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि मुफ़स्सिल में व्याख्यान के अपराध में मास्टर त्रिपाठ गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। श्री० सखराम गवाण्डे को ११७वीं धारा के अभियोग में ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—सूरत का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कैसल मैदान में झण्डावन्दन करते समय १०० कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। इन गिरफ़्तार व्यक्तियों में बालक, बालिकाएँ तथा २५ महिलाएँ भी शामिल हैं। वहाँ की नई सञ्चालिका मिस मधुमति चुन्नीलाल भी गिरफ़्तार की गई हैं।

—अकोला का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि लगानबन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में, कॉङ्ग्रेस बुलेटिन के सम्पादक श्री० नामदेव पटेल को ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

बलालपुर के श्री० हीरालाल शाह, श्री० पण्डियारी पटेल, श्री० सुन्दर जी और श्री० सखाराम को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

श्री० किसानराव को, जो जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, ११वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६ माह की और कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

श्री० सम्पतराव मुसकन को १४७वीं धारा के अभियोग में ३ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अहमदाबाद का २५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि गुजरात विद्यापीठ के अध्यापक श्री० कुमारप्पा को, जिनसे एक साल की नेकचलनी के लिए २००) रुपए की ज़मानत माँगी गई थी, ज़मानत देने से इन्कार करने के कारण १ साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

बम्बई में फिर नमक-क़ानून भङ्ग किया गया

सत्याग्रह-समिति के सदस्य और सञ्चालक गिरफ़्तार

बम्बई का गत २८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज प्रातःकाल सात स्थानों में नमक-क़ानून भङ्ग किया गया। इसके फल-स्वरूप वहाँ की सत्याग्रह-समिति के सदस्य तथा कुछ अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर लिए गए।

एक व्यक्ति को, जो चौपाटी पर, सार्जेण्ट के सामने राष्ट्रीय नारे लगा रहा था, पीटा गया, जिससे वह घायल हो गया, और अस्पताल भेजा गया।

आज़ाद मैदान में हज़ारों मनुष्य नमक-क़ानून की अवज्ञा में भाग लेने के लिए एकत्रित हुए थे। लठबन्द पुलिस का एक दल सारा माजरा देख रहा था। नमक बनाने के बर्तनों की रक्षा के लिए देशसेविकाएँ नियुक्त थीं। वे घेरा बना कर खड़ी थीं। पुलिस वाले बलपूर्वक उस घेरे में घुस गए, और नमक बनाने के सामानों को उन्होंने तहस-नहस कर दिया। इसी समय सत्याग्रह समिति के सदस्यगण वहाँ पहुँचे, जो सीधे गिरफ़्तार कर लिए गए।

पुलिस ने 'ए' वार्ड कॉङ्ग्रेस कमिटी के सञ्चालक श्री० के० दामोदरदास तथा एक स्वयंसेवक को भी, जो मैदान के दूसरी ओर नमक बना रहे थे, गिरफ़्तार कर लिया।

'डी' वार्ड की कॉङ्ग्रेस कमिटी की सञ्चालिका श्रीमती रतनबेन मेहता, जिनके नेतृत्व में, चौपाटी में प्रदर्शन किया गया, दो मन्त्रियों के साथ गिरफ़्तार कर ली गईं। इन लोगों के अतिरिक्त कुछ अन्य लोगों को भी पुलिस ने चौपाटी पर गिरफ़्तार किया।

माण्डवी और ताम्बकान्त में भी नमक-क़ानून भङ्ग किया गया। भुलेश्वर वार्ड के सञ्चालक गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कराची का २५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कराची की सत्याग्रह समिति की ७वीं डिक्टेटर श्रीमती कस्तूरबाई जीवराज गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

—कराची का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज सवेरे तीन व्यक्ति नमक-क़ानून भङ्ग करने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—अहमदाबाद का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट ने श्री० हीरालाल दामोदर और चिम्मनलाल को ४०)-४०) रुपए जुर्माने अथवा डेढ़-डेढ़ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। कालुपुर वार्ड कमिटी के सेक्रेटरी श्री० भानलाल को भी यही सज़ा दी गई है।

गोमतीपुर वार्ड कमिटी के दो मन्त्रियों को १-१ माह की अधिक क़ैद की सज़ा दी गई है।

—सूरत का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि राष्ट्रीय साप्ताहिक 'प्रताप' के रिपोर्टर श्री० नवनीतलाल देसाई से १,०००) रुपए का मुचलका माँगा गया। मुचलका देने से इन्कार करने पर उन्हें ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

श्री० वाघजी भाई एम० पटेल ११वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—इब्लाल का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० छगनलाल दाजीभाई को ३ माह की कड़ी क़ैद और २५ रुपया जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अहमदाबाद का २८वीं फ़रवरी का समाचार है कि वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने दो मनुष्यों को अपना नाम नहीं बताने के अभियोग में १०)-१०) रुपया जुर्माना किया है। जुर्माना नहीं देने पर ३-३ दिन की कड़ी क़ैद की सज़ा दी जायगी।

बङ्गाल—

—चाँदपुर का २१वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एक शराब-फ़रोश के शिकायत करने पर पुलिस ने ४ बङ्गाली युवकों को गिरफ़्तार कर लिया है। कहा जाता है कि उन्होंने एक शराब के कनस्तर को नष्ट कर डाला था। वे हिरासत में रक्खे गए हैं।

—बैरीसाल का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि उन ३६ व्यक्तियों में से, जो पिकेटिङ्ग करते समय पुलिस पर आक्रमण करने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, २१ व्यक्ति छोड़ दिए गए हैं। बाक़ी लोगों को ३ से ८ सप्ताह तक की सज़ाएँ दी गई हैं।

—गोहाटी का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय वहाँ २१ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। इन पर क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार मामला चलाया जायगा।

—मिदनापुर का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि दोहस गाँव की श्रीमती उत्तमराय, चौकीदारी टैक्स देने से इन्कार करने के कारण, गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

प्रेस ऑर्डिनेन्स का शिकार

राजपूत प्रेस कुर्क़ कर लिया गया

कलकत्ते का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि क्षत्रिय उपकारिणी प्रेस, जो पहले राजपूत प्रेस के नाम से विख्यात था, और जहाँ से 'क्षत्रिय-संसार' एक साप्ताहिक, बाबू रामलगन सिंह जी के सम्पादकत्व में निकलता था, पुलिस द्वारा क़ुर्क़ कर लिया गया। सम्पादक और मैनेजर को षड्यन्त्र के सम्बन्ध में ६-६ माह की सज़ा दी गई है। कहा जाता है कि क़ुर्क़ करने के पहले प्रोप्राइटर को कोई सूचना नहीं दी गई थी।

—नवगाँव (आसाम) का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कालीवास के श्री० थानूराम भूपा, श्री० युक्तिमठ गोस्वामी, पद्मकान्त शैक तथा अन्य ३ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता विदेशी वस्त्र की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—रानीगञ्ज का २२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० महादेव धीवर और हिन्द्रनाथ चटर्जी नामक दो युवक गिरफ़्तार कर पुलिस की हिरासत में रक्खे गए हैं। यह नहीं मालूम कि वह किस अभियोग में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—पबना का २७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पुलिस ने श्री० रवीन्द्रनाथ चक्रवर्ती को बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया है। पुलिस ने उनके घर की तलाशी ली, और वह अनेक काग़ज़-पत्र उठा कर ले गई।

श्री० देवेन्द्रनाथ सेन को १४४वीं धारा के अनुसार एक निषेधाज्ञा की अवज्ञा करने के अपराध में २ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—नवागञ्ज का २३वीं फ़रवरी का समाचार है कि श्री० गिरीशचन्द्र साहा, श्री० यतीन्द्रचन्द्र साहा, मनमोहन सील और गौरविनोद गोस्वामी, भारतीय दण्ड-विधान की १८८वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—रामपुर हाट (बीरभूमि) का २७वीं फ़रवरी का समाचार है कि मल्लारपुर के राजनैतिक मामले में पाँचों अभियुक्तों को, जिनमें सत्यबाला देवी भी शामिल हैं, ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

विहार——

छपरे का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० यतीन्द्रनाथ सूर और श्री० जगन्नाथ मिश्र को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। १८ अन्य स्वयंसेवकों में से १२ को ६-६ माह की तथा ६ को ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्रीमती रतन देवी को ६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—श्रीमती शान्ति देवी और जनककिसोरी देवी के मामले का फ़ैसला जेल ही की अदालत में किया गया। उन्हें ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—मुज़फ़्फ़रपुर का १७वीं फ़रवरी का समाचार है कि वहाँ के नेमनारायण प्रेस से १,०००) रुपए की ज़मानत माँगी जाने पर प्रेस बन्द कर दिया गया है। 'लोक-संग्रह' नामक एक हिन्दी साप्ताहिक वहाँ से निकलता था। वह भी बन्द हो गया है।

—पुरी का १८वीं फ़रवरी का समाचार है कि वहाँ ३ स्वयंसेवकों को मादक द्रव्यों की दूकानों पर धरना देने के अपराध में ३७९वीं धारा के अनुसार ३०) ३०) रुपए जुर्माने अथवा १-१ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बेतिया का १६ वीं फरवरी का समाचार है कि मझुरगढ़ा के स्वयंसेवक-शिविर के जिन ११ स्वयंसेवकों को पुलिस ने गिरफ़्तार किया था, उन्हें ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बालासोर का १६वीं फ़रवरी का समाचार है कि विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देने के अभियोग में ३ स्वयंसेवकों को २-२ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—तेवरा (मुङ्गेर) का २३वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बागेश्वरीसिंह, रामभजन भागवत, गुरुशशि ब्रह्मदेव, त्रिवेणी ब्रह्मदेव, रामेश्वर रामकृष्ण और रामखेलावन उदित, पिकेटिङ्ग करने के लिए, दहिया नामक स्थान को जाते समय गिरफ़्तार कर लिए गए। कहा जाता है कि पुलिस ने उन्हें राष्ट्रीय गान बन्द करने को कहा था। उन्होंने ऐसा करने से इन्कार किया और बराबर गाते ही गए। इस पर वे गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कटक का २७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती चन्द्रमणि देवी, अपने एक भाषण के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर ली गई हैं। वे हाल ही में ६ माह की सज़ा भुगत कर जेल से लौटी थीं।

—बालीकुड़ा के ६ सत्याग्रहियों को १२-१२ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—छपरे का २७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती सीतादेवी, श्रीमती जगतेश्वरी देवी तथा ७ अन्य स्वयंसेवकों को ३-३ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है।

—सीवान में कृष्णअवतार अन्य ३ कार्यकर्ताओं के साथ फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—दरभङ्गा का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि शराब की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में वहाँ १३ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—एकमीघाट के भी दो स्वयंसेवक इसी अभियोग में गिरफ़्तार किए गए थे, किन्तु इनमें से एक छोड़ दिया गया।

—मोतिहारी का २८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि केसरिया के श्री० बैजूलाल और श्री० जमुनाप्रसाद को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट के अनुसार १-१ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—पुरी का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कनास के एक प्रमुख कार्यकर्ता बाबू चक्रपाणि चौधरी ३७९ और ४२६ धाराओं के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

युक्त प्रान्त—

कन्नौज में गोली-काण्ड

दो मरे, दो घायल

कन्नौज का २७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि गत २३वीं फ़रवरी को, वहाँ के एक गाँव में, पुलिस वालों और गाँव वालों के बीच दङ्गा हो गया। कहा जाता है कि गाँव वालों और कॉन्स्टेबिलों में झगड़ा हो गया, जिसके फल-स्वरूप कॉन्स्टेबिलों ने गोली चला दी, जिससे १ मरा और ३ घायल हुए। घायलों में से एक जेल अस्पताल में मर गया। एक कॉन्स्टेबिल भी घायल हुआ है। दूसरे दिन ८ अन्य व्यक्ति भी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कानपुर का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एक व्यापारी विदेशी कपड़े की गाँठों को हटा रहा था। स्वयंसेवकों ने उसे रोका। पुलिस ने उनमें से एक को पीटा। वहाँ एक भीड़ एकत्रित हो गई। इसी समय किसी अज्ञात व्यक्ति ने गाँठों में आग लगा दी, जिसके फल-स्वरूप एक गाँठ जल कर ख़ाक हो गई। अन्य बची हुई गाँठें गोडाउन में भेज दी गईं। दूसरे दिन उनके हटाए जाने का फिर प्रबन्ध किया जाने लगा। स्वयंसेवकों ने फिर पिकेटिङ्ग शुरू कर दी। फलतः १३६ व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तार किए जाने वालों में भूतपूर्व डिक्टेटर श्री० योग और जनरल सेक्रेटरी श्री० भगवतीप्रसाद आदि प्रमुख कार्यकर्ता भी हैं। वानर-सेना के ११ बालक, जो गिरफ़्तार किए गए थे, पीछे छोड़ दिए गए।

—अलीगढ़ का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि शाहगञ्ज और कोड़ियागञ्ज के २२ कार्यकर्ताओं को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ 'बी' धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद और ५०) ५०) रुपए जुर्माने अथवा ६-६ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

सासनी के भी २० कार्यकर्ता गिरफ़्तार कर अलीगढ़ लाए गए हैं।

—गत २६वीं फ़रवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि प्रतापगढ़ गोली-काण्ड के घायलों में से एक व्यक्ति की मृत्यु प्रतापगढ़ सिविल अस्पताल में हो गई। उसका शव स्वराज्य-भवन में लाया गया, और वहाँ से एक जुलूस निकाला गया।

—आज़मगढ़ का २१वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सगरी कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री ठाकुर रामाज्ञा सिंह को दण्ड-विधान की १०८वीं धारा के अनुसार, लगान-बन्दी के लिए उकसाने के अभियोग में ६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—मुरादाबाद का २५वीं फ़रवरी का समाचार है कि पण्डित महीन्द्रनाथ को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० चेतराम और श्री० भूखनशरण को भी यही सज़ा दी गई है। श्री० भूखनशरण को सज़ा के अतिरिक्त १००) रुपए का जुर्माना भी किया गया है।

—कानपूर का २५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कानपूर तहसील के डोमनपुर गाँव में श्री० गङ्गाधर, उकसाव ऑर्डिनेन्स के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बनारस का २८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के कलेक्टर तथा ज़िला मैजिस्ट्रेट ने एक आज्ञापत्र निकाल कर लोगों को लाठी, तलवार, छुरा तथा दूसरे प्रकार के हथियार लेकर आम सड़क पर चलने से मना किया है। ७वीं फ़रवरी तक के लिए जुलूस के लिए भी निषेधाज्ञा निकाली गई है।

मद्रास—

—मद्रास का २७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पिकेटिङ्ग करते समय १६ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए। ३ अन्य स्वयंसेवक भी गोडाउन स्ट्रीट पर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। कहा जाता है कि ये विदेशी कपड़ों के ढेर में आग लगा रहे थे।

—मद्रास का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कल शहर में ३४ गिरफ़्तारियाँ हुईं। ६ अन्य स्वयंसेवक भी पिकेटिङ्ग करते समय गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मद्रास का २४वीं फ़रवरी का समाचार है कि, आज १६ स्वयंसेवक रतन बाज़ार गोडाउन स्ट्रीट और देवराज मुदालियर स्ट्रीट पर पिकेटिङ्ग करने गए। ज्यों ही उन्होंने पिकेटिङ्ग आरम्भ किया त्यों ही पुलिस ने आकर उन लोगों को गिरफ़्तार कर लिया। अन्य स्थानों से भी १० स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मद्रास का २५वीं फ़रवरी का समाचार है कि दण्ड-विधान की ५५वीं धारा के अनुसार जॉर्ज टाउन में धरना देने वालों की गिरफ़्तारी हो जाने के बाद २५ अन्य स्वयंसेवकों ने धरना जारी रक्खा। किन्तु ये भी गिरफ़्तार कर हिरासत में भेज दिए गए। इसके बाद सन्ध्या-समय ६ महिलाओं ने, जिनमें श्रीनिवास ऐयङ्गर की पुत्री श्रीमती अम्बुजम्मल भी शामिल थीं, रतन बाज़ार के विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना दिया। ये भी गिरफ़्तार कर हिरासत में भेज दी गईं। श्रीमती अम्बुजम्मल बाद को छोड़ दी गईं।

—मद्रास का २५वीं फ़रवरी का समाचार है कि वहाँ की सिटी पुलिस ने ट्रिप्लिकेन और जॉर्ज टाउन में धावा किया और दण्ड-विधान की ५५वीं धारा के अनुसार क़रीब ५० मनुष्यों को गिरफ़्तार कर लिया। कहा जाता है कि १०९वीं धारा के अनुसार उन पर मामला चलाया जायगा।

—गण्टूर का २२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० कुन्दुरी वेङ्कय्या और सेक्रेटरी श्री० चल्ला वेङ्कटकृष्णा तथा कन्नगड्डा चिट्टिया, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—गण्टूर का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि १७ सत्याग्रही, जिनमें श्रीमती सनकमना और श्रीमती राजलक्ष्मी नाम की दो महिलाएँ भी हैं, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार कर ली गई हैं।

—गण्टूर का २७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि छः स्वयंसेवकों ने, दोपहर के समय पिकेटिङ्ग जारी किया। ४ बजे के समय पुलिस के एक दल ने उन लोगों को गिरफ़्तार कर लिया।

लड़कों को बेंत लगाने की सज़ा

देहरादून का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के १०वें डिक्टेटर श्री० सोमेन्द्र मुकुर्जी को ६ माह की कड़ी क़ैद और १००) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है।

भोगपुर में जो ४ लड़के गिरफ़्तार किए गए थे, उनमें से प्रत्येक को १२-१२ बेंत लगाए जाने की आज्ञा दी गई है। इनमें से ३ बड़े ही सुकुमार बच्चे हैं।

बम्बई—

—बम्बई का २७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि लेजिस्लेटिव कौन्सिल में, टैक्स बढ़ाने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पर सरकार को मुँह की खानी पड़ी। विपक्ष में २६ वोट अधिक आने के कारण प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया।

ज़ब्त खेतों की नीलामी

५००) रुपए का खेत १८) रुपए में नीलाम किया गया

सूरत का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बारदोली ताल्लुक़ा के किसानों का वह खेत, जो ज़ब्त कर लिया गया है, बहुत थोड़े दामों पर नीलाम कर दिया गया है। अनाज सहित खेत केवल १८) रुपए बीघे के दर से बेंच डाला गया है। किन्तु वास्तव में केवल ख़ाली खेतों का ही मूल्य ५००) से ७००) बीघा है! अनाज के साथ तो ३०)-४०) रुपए प्रति बीघा दाम और अधिक हो जाता है।

—बम्बई का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एक जलूस श्री० मगनलाल देसाई के नेतृत्व में कराची के आज़ाद मैदान से, समुद्र के किनारे को गया और वहाँ लोगों ने नमक बनाया। पुलिस वहाँ मौजूद थी, किन्तु उसने कुछ चीं-चपड़ नहीं की।

११) रुपए के लिए ४०) रुपए का माल ज़ब्त

सर्वेण्ट्स ऑफ़ इण्डिया सोसायटी के श्री० ए० वी० ठक्कर ने सहयोगी 'लीडर' को दोहद से, निम्न-लिखित सूचना दी है:—

गत १३वीं फ़रवरी को बोरसद के मामलतदार ने ३ बोरे चावल और १ बोरा गेहूँ, जो आनन्द से बोदल को भेजा जा रहा था, ज़ब्त कर लिया है। ये अनाज के बोरे अन्त्यज सेवा-मण्डल के खोले हुए अछूत बालकों के एक बोर्डिङ्ग स्कूल के लिए भेजे जा रहे थे।

मामलतदार ने स्कूल की भूमि के लगान-स्वरूप इन्हें ज़ब्त कर लिया। लगान ११/≈) चाहिए था। किन्तु माल ४०।≈) का ज़ब्त किया गया है। ज़ब्ती की कोई रसीद भी नहीं दी गई है।

विदेशी व्यापार की क्षति

ब्रिटेन को ज़बरदस्त धक्का

बम्बई के मिल-मालिकों की समिति ने विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में एक सूचना प्रकाशित की है। इस सूचना के अनुसार १९२९ में यहाँ ५६,९०,००,००० गज़ कपड़े आए थे, किन्तु १९३० में यह तादाद घट कर २९,७०,००,००० गज़ हो गई। इस प्रकार २६,८०,००,००० गज़ की (अर्थात् ४८ प्रतिशत की) घटी हुई।

१९२९ में २,८०,००,००० पौण्ड सूते विदेश से आए थे; किन्तु १९३० में केवल १,६०,००,००० पौण्ड सूते आए।

मैं बमसिंह का बेटा पिस्तौलसिंह हूँ

दिल्ली का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कल जेल के अन्दर एक स्वयंसेवक का मामला पेश हुआ। इस पर धरना देने के सम्बन्ध में १७वीं धारा के अनुसार मामला चल रहा था।

मैजिस्ट्रेट ने उससे पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?" स्वयंसेवक ने अपना नाम पिस्तौलसिंह और अपने बाप का नाम बमसिंह बतलाया।

समझौते के विषय में निराशा

नई दिल्ली का २८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि समझौता होने का रङ्ग-ढङ्ग नहीं देख पड़ता है। लॉर्ड इर्विन की शर्तों से नेताओं को निराशा हो रही है।

कहा जाता है कि पुलिस की ज़्यादतियों के विषय में, सरकार अधिक से अधिक, डिपार्टमेण्टल जाँच ही कायम करना चाहती है। वह जाँच भी कॉङ्ग्रेसवालों के मामला खड़ा करने पर, केवल विशेष-विशेष घटनाओं के विषय में की जायगी। वायसराय का यह असन्तोषजनक उत्तर ही शान्ति के मार्ग का रोड़ा बन रहा है। इसी कारण से वायसराय की अन्य शर्तों पर महत्व नहीं दिया जा रहा है। पता चला है, कि सरकार जनता को नमक बनाने की आज्ञा नहीं देना चाहती। पिकेटिङ्ग भी उसी हालत में मञ्जूर की गई है, जब वह शान्तिपूर्वक हो।

मुख्य मतभेद पुलिस की ज़्यादतियों की जाँच के विषय में ही है। कॉङ्ग्रेसवाले चाहते हैं कि पुलिस के अत्याचारों की खुली जाँच हो।

पहली मार्च का समाचार है, कि २॥ बजे से लेकर ६ बजे सन्ध्या समय तक महात्मा जी और वायसराय से बातचीत होती रही। कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने एक नया अल्टरनेटिव (Alternative) पेश किया है। कहा जाता है कि उसी पर महात्मा जी की वायसराय से बातचीत हुई। परिस्थिति तो आशाजनक बताई जाती है। सप्रू आदि गोलमेज़ के सदस्यों ने अपनी सारी शक्ति इस ओर लगा दी है।

स्वयंसेवक पकड़ कर जङ्गल में छोड़ दिए गए

कानपुर का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि नानपारा में कुछ स्वयंसेवक, धरना देते समय गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तार कर वे पुलिस स्टेशन पर लाए गए, और वहाँ वे पीटे गए। इसके बाद वे एक जङ्गल में ले जाकर छोड़ दिए गए। बड़ी कठिनता से लौट कर घर वापस आए।

—लखनऊ का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वर्तमान कोर्टफ़ीस को बढ़ाने के लिए जो बिल सरकार की ओर से कौन्सिल में पेश हुआ था, वह ६६ वोटों द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया।

लखनऊ कैम्प जेल में क़ैदियों की दुर्दशा

पेट भर भोजन भी नहीं दिया जाता

लखनऊ २६वीं फ़रवरी—लखनऊ कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० मोहनलाल सक्सेना ने निम्न-लिखित वक्तव्य प्रकाशित किया है:—

होम-मेम्बर ने यह विश्वास दिलाया था कि लखनऊ कैम्प जेल के क़ैदियों की दशा के विषय में जाँच की जायगी, पर क़ैदियों की दशा इस समय वैसी है जैसी पहले थी। उन्हें पूरा भोजन नहीं मिल रहा है। जेल के नियमों के अनुसार जितना भोजन मिलना चाहिए उतना भी नहीं दिया जा रहा है। इसका कारण यह बताया जाता है कि जेलों के इन्स्पेक्टर जनरल ने यह आज्ञा दे रक्खी है कि जेलों के लिए आटा नहीं ख़रीदा जाय। क़ैदी जितना आटा पीस सकें, उतना ही काम में लाया जाय।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन्स्पेक्टर जनरल की उक्त आज्ञा साधारण बुद्धि के प्रतिकूल होने के अतिरिक्त जेल के नियमों के भी विरुद्ध है। जेल के नियमानुसार यदि कोई क़ैदी काम करने से इन्कार करे तो उसे सज़ा दी जा सकती है, किन्तु उसके भोजन में कमी नहीं की जा सकती।

कैम्प जेल में आटा पीसने की ६२ मिलें हैं, जिनमें कुछ ख़राब हो गई हैं। यदि यह मान भी लिया जाय कि सभी ठीक हैं, तो भी १२५ से अधिक मनुष्य उनमें काम नहीं कर सकते। यदि ये १२५ व्यक्ति, जिन्हें काम दिया जाय, काम करने से इन्कार करें, या अपना काम पूरा न करें, तो उन्हें दण्ड दिया जा सकता है। किन्तु इन्हें और इनके १,७०० अन्य साथियों को जेल के नियमानुसार पूरा भोजन न देने का कोई कारण नहीं है। फलतः इन्स्पेक्टर जनरल की उपर्युक्त आज्ञा का अर्थ कुछ समझ में नहीं आता। इससे तो यही जान पड़ता है कि उनका अभिप्राय राजनैतिक क़ैदियों को केवल कष्ट देना और उन्हें नीचा दिखाना है। इसका कारण आर्थिक भी नहीं हो सकता। क्योंकि गेहूँ पिसवा कर काम में लाने में, और आटा ख़रीद कर काम में लाने में, केवल २॥ रुपए रोज़ का अन्तर पड़ता है।

मैं नहीं चाहता कि राजनैतिक क़ैदी जेलों में काम करने से इन्कार करें, किन्तु मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि जितना काम उन्हें दिया जाता है, उतना करना उनकी शक्ति के बाहर की बात है।

मेरे सुनने में आया है कि सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उन बेकाम कपड़ों की एक सूची बनाई है, जो राजनैतिक क़ैदियों को दिए गए हैं। क्या होम-मेम्बर यह बतलाने की कृपा करेंगे कि ये क़ैदी कड़ाके की सर्दी में इन फटे-पुराने कपड़ों के साथ क्यों दूर-दूर ज़िलों से इस जेल में भेजे गए थे? सरकार को यदि एक नया जेल बनवाने के लिए ५०,००० रुपए मिल सकते थे, तो क़ैदियों को कड़ाके की सर्दी से बचाने के लिए भी तो वह कुछ हज़ार रुपए ख़र्च कर सकती थी? यदि होम मेम्बर क़ैदियों के वज़न को मिला कर देखेंगे तो उन्हें पता चलेगा कि उनका स्वास्थ्य सुधरने के बजाय कितना ख़राब हो गया है।

वहाँ की औषधि-व्यवस्था भी सन्तोषजनक नहीं है। मेरे सुनने में आया है कि कुछ राजनैतिक क़ैदियों पर जेल में अपराध करने के अभियोग में मामला चलाया जायगा।

तहसीलदार की हत्या

फ़तहपुर का २७वीं फ़रवरी का समाचार है कि खिजुहा के तहसीलदार मुन्शी अवधविहारीलाल कल सन्ध्या को बोनरा (जहानाबाद थाना) में, लोगों को लगान देने के लिए समझाने के लिए गए। ज़मींदार भी उनके साथ था। कहा जाता है कि गाँव वालों ने तहसीलदार साहब पर हमला किया और उन्हें मार डाला। उनके साथ ३ पुलिस के सिपाही थे। उन्होंने भीड़ पर गोली चलाई। इससे कुछ गाँव वाले भी घायल हुए। एक सिपाही भी घायल हुआ है।

इस सम्बन्ध में ४६ आदमी गिरफ़्तार हुए हैं। गाँव पर १४४ दफ़ा लगा दी गई है।

—गत १८वीं फ़रवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि श्री० बेनीप्रसाद अग्रवाल ने स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन के पास एक सूचना भेजी है, कि वे निम्न-लिखित विषयों पर प्रस्ताव पेश करना चाहते हैं :—

(१) पं० मोतीलाल नेहरू का मृत्यु-दिवस (६ठी फ़रवरी) छुट्टियों की सूची में शामिल कर लिया जाय।

(२) पण्डित जी की एक प्रस्तर मूर्ति पुरुषोत्तम-दास पार्क में स्थापित की जाय।

(३) सिटी-रोड का नाम बदल कर "मोती रोड" कर दिया जाय।

यू० पी० सरकार को ६४ लाख का घाटा

लगानबन्दी आन्दोलन का प्रभाव

लखनऊ का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि अर्थ-सचिव ने १९३१-३२ का बजट कौन्सिल के सामने पेश करते हुए कहा है, कि १९३०-३१ में प्रान्तीय सरकार को ६४ लाख रुपए का घाटा उठाना पड़ा है। उन्होंने कहा कि अनाज की दर गिर जाने से तथा भद्र-अवज्ञा आन्दोलन के कारण ही सरकार को यह घाटा उठाना पड़ा है।

भारत-सरकार को १४॥ करोड़ रुपए का भयङ्कर घाटा

१४'८२ करोड़ नया कर लगाया जायगा

नई दिल्ली का २८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि अर्थ-सदस्य ने असेम्बली में कहा है, कि इस वर्ष सरकार को १३२६ लाख रुपए का घाटा हुआ है। आगामी वर्ष के बजट में कमी करने पर भी १४५१ लाख रुपए की घटी होने की आशा है। इस कमी की पूर्ति के लिए १४८२ लाख रुपए का नया कर लगाया जायगा।

बङ्गाल सरकार को घाटा

कर-विभाग में लगभग १ करोड़ रुपए की घटी

बङ्गाल की आर्थिक अवस्था पर विचार करते हुए अर्थ-सचिव ने कौन्सिल में कहा है, कि इस प्रान्त का भविष्य अन्धकारपूर्ण है। बजट पेश करते हुए उन्होंने कहा है कि पिछले ९ महीनों में बङ्गाल सरकार को कर-विभाग में क़रीब १ करोड़ रुपए का घाटा सहना पड़ा है। इस घटी का कारण भद्र-अवज्ञा आन्दोलन और व्यापारिक क्षति बतलाया गया है।

१९२९-३० की अपेक्षा १९३०-३१ से सरकार को इस प्रकार घाटा सहना पड़ा है :—

	रुपए
भूमिकर	१,९४,०००
आबकारी विभाग	३५,०४,०००
जङ्गल-विभाग	४,५३,०००
रजिस्ट्रेशन	४,५१,०००
अन्य टैक्स	१,२५,०००
स्टैम्प	६६,५७,०००

इस प्रकार कर-विभाग में कुल ९३,९०,००० रुपए की क्षति हुई है।

मद्रास—

बङ्गलोर का २४वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सेन्ट जोसफ़ कॉलेज के एक एङ्गलो इण्डियन विद्यार्थी ने अपने एक भारतीय सहपाठी पर गाँधी टोपी पहनने के कारण आक्रमण किया था, जिसके फल-स्वरूप उसकी आँखों पर चोट आई थी। ख़बर है कि उस एङ्गलो इण्डियन विद्यार्थी ने क्षमा माँग ली है। कॉलेज के अधिकारियों ने भी भारतीय विद्यार्थियों के भावों के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया है।

मद्रास-सरकार को ५६'३९ लाख का घाटा

आबकारी की आमदनी में ३९ लाख की घटी

मद्रास कौन्सिल में बजट पेश करते हुए अर्थसचिव ने कहा कि इस साल सरकार को ५६.३९ लाख का घाटा सहना पड़ा है। भूमिकर में १६ लाख, आबकारी-विभाग में ३९ लाख और स्टैम्प में १६ लाख की घटी हुई है।
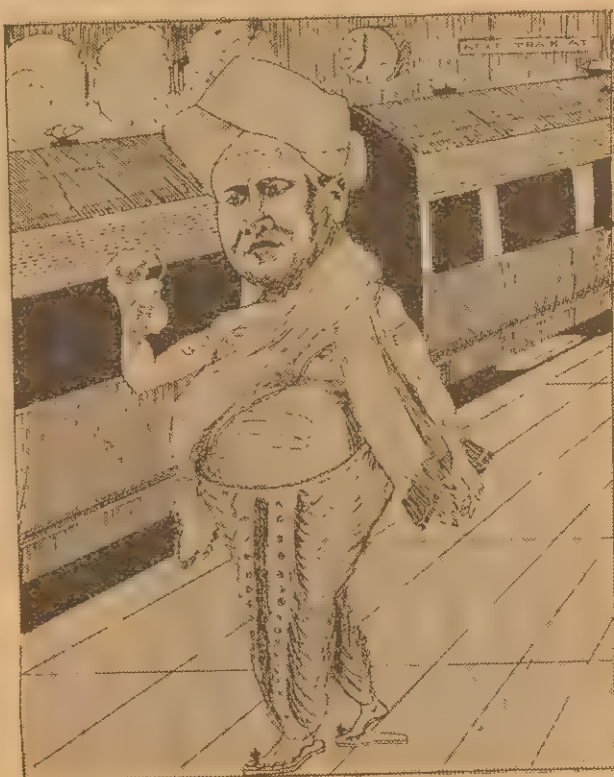
तीर्थ यात्रा का पवित्र प्रसाद !

पुण्यपूत लण्डन तीरथ से लौटे श्रीनिवास,—
'सेल्फ़गार्ड' से भरा कमण्डलु लिए, सहित उल्लास !

—मद्रास का २२वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के एक वारण्ट निकालने पर पुलिस ने, सेण्ट्रल स्टेशन पर 'पेशावर इन्क्वायरी रिपोर्ट' की कॉपियों से भरे हुए दो बक्सों को ज़ब्त कर लिया।

मध्य प्रान्तीय कौन्सिल में सरकार की हार

सरकार के प्रति असहानुभूति का प्रस्ताव

नागपुर का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कृषकों के प्रति सरकार की वर्तमान असहानुभूति के विरोध में एक प्रस्ताव कौन्सिल में पेश किया गया, जो १४ वोट पक्ष में अधिक आने के कारण पास हो गया।

बर्मा कौन्सिल में सरकार की हार

लगान घटाने के सम्बन्ध का बिल पास हो गया

रङ्गून का १८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ की कौन्सिल में, लगान घटाने के सम्बन्ध में एक बिल पेश किया गया। अर्थसचिव ने इसका विरोध किया, पर तो भी पक्ष में ३४वोट अधिक आने के कारण बिल पास हो गया।

* * *

(८वें पृष्ठ का शेषांश)

—लाहौर २७वीं फ़रवरी—आज लाहौर के नए षड्यन्त्र का मामला फिर शुरू हुआ। आज मुख़बिर इन्द्रपाल से प्रतिवादी दल के वकील ने जिरह किया।

गिरफ़्तारी की कहानी

लाला श्यामलाल एडवोकेट के जिरह करने पर इन्द्रपाल ने कहा, वह पुरानी अनारकली में अपने मकान पर गिरफ़्तार किया गया था, पुलिस के उच्च-कर्मचारी वहाँ मौजूद थे। गवाह को हथकड़ी दे दी गई, और उसे मोटर में बैठा कर लाहौर फ़ोर्ट में लाया गया। दूसरे दिन से पुलिस, उसे फुसला कर उसका बयान लेने लगी। २८वीं अगस्त को मुख़बिर को हथकड़ियाँ पहना दी गईं, और वह अपनी कोठरी से, डी० एस० पी० सैयद अहमदशाह के सामने लाया गया, जिन्होंने उससे १९वीं जून के बम के धड़ाके के सम्बन्ध में पूछा, किन्तु गवाह ने उनसे कुछ नहीं कहा।

यातनाओं का आरम्भ

इसके बाद गवाह ने कहा कि उसे एक हेड कॉन्स्टेबिल ने गालियाँ दीं, और तब से उसे यातनाएँ दी जाने लगीं। डी० एस० पी० के सामने ही वह पीटा गया और अनेक प्रकार के कष्ट उसे दिए गए। अन्त में उसके हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी गईं, और उसका हाथ चारपाई में बाँध दिया गया। उसे रात भर सोने नहीं दिया गया और अपने किसी सम्बन्धी से भी उसे नहीं मिलने दिया गया। गवाह को एक छोटे कमरे में बन्द कर दिया गया, और वहीं उसे अपने नित्य-कर्म भी करने पड़ते थे। उसे ज़रा हिलने-डोलने भी नहीं दिया जाता था। गवाह को बुख़ार हो आया। उसके साथ ऐसा व्यवहार ४थी ६ठी तारीख़ तक रहा। इसी समय गवाह ने सैयद अहमद शाह से कहा कि यदि उसे माफ़ कर दिया जाय तो वह इक़बाली गवाह बन जायगा।

गवाह ने कहा कि यदि थोड़ा और कष्ट उसे दिया गया होता तो उसकी मृत्यु हो गई होती। सैयद अहमद शाह ने गवाह से कहा था कि गुलाबसिंह मुख़बिर हो गया है, और उसने यह कहा है कि उसकी (गवाह की) स्त्री और बहिन भी षड्यन्त्र में शामिल हैं, और वे बम बनाने में निपुण हैं। सैयद अहमदशाह ने कहा कि यदि गुलाबसिंह ने अपना बयान दिया तो गवाह की स्त्री और बहिन को जेल जाना पड़ेगा। अपनी स्त्री और बहिन को इस बेइज़्ज़ती से बचाने के लिए गवाह ने मुख़बिर बनना स्वीकार किया।

पुलिस ने गवाह से कहा कि उसका बयान शुद्ध नहीं है, और मैजिस्ट्रेट के सामने बयान देने के एक हफ़्ता पहले, गवाह को एक लिखा बयान याद करने के लिए दिया गया। गवाह ने उसे अक्षरशः याद कर लिया, और वही बयान मैजिस्ट्रेट के सामने दिया। जब कभी वह कुछ भूल जाता था, तो मलिक बरख़ुरदार अली उसे याद दिला देता था। बयान देते समय दो पुलिस के कर्मचारी गवाह के साथ रहते थे।

—दिल्ली का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के ज़िला और सेशन्स जज ने दिल्ली षड्यन्त्र के अभियुक्त श्री० धन्वन्तरी, श्री० कपूरचन्द और श्री० दत्त के ज़मानत सम्बन्धी प्रार्थना-पत्र को नामञ्जूर कर दिया है।

* * *

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

इलाहाबाद में क्रान्तिकारियों से पुलिस की भयंकर मुठभेड़

प्रायः बीस मिनिट तक दनादन गोलियाँ चलती रहीं

दो पुलिस कर्मचारी घायल :: इन्स्पेक्टर के जबड़े में गोली

एक क्रान्तिकारी की मृत्यु :: दूसरा विद्यार्थी को साइकिल ले भागा

गत २७वीं फ़रवरी को १० बजे के लगभग, स्थानीय आल्फ्रेड पार्क में दो क्रान्तिकारियों की, पुलिस वालों के साथ मुठभेड़ हो गई, जिसके फल-स्वरूप विख्यात क्रान्तिकारी पं० चन्द्रशेखर आज़ाद वीरगति को प्राप्त हुए।

कहा जाता है कि आज सबेरे, ख़ुफ़िया के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट ठाकुर विशेश्वरसिंह और ख़ुफ़िया पुलिस के लीगल एडवाइज़र मि० दालचन्द आल्फ्रेड पार्क में घूमने गए। पार्क में उन्होंने एक व्यक्ति को देखा, जिसके चन्द्रशेखर आज़ाद होने का सन्देह उन्हें हुआ! पुलिस कई वर्षों से उसकी तलाश में थी। वह काकोरी षड्यन्त्र और अन्य कई षड्यन्त्रों का अभियुक्त था। उसकी गिरफ़्तारी के लिए ५,०००) रुपए का पुरस्कार घोषित

क्रान्तिकारी युवक का शव।-पास खड़े हुए पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० उड तथा अन्यान्य पुलिस कर्मचारी

किया गया था। विशेश्वरसिंह ने अपने सन्देह को दालचन्द पर प्रकट किया। इसके बाद वे लौट गए। ८ बजे के लगभग दालचन्द और एक अर्दली के साथ विशेश्वरसिंह फिर पार्क की ओर चले। उन्होंने पार्क के भीतर दो व्यक्तियों को बैठा पाया। उन दोनों में जो मोटा-तगड़ा युवक था, उसी के 'आज़ाद' होने का सन्देह विशेश्वरसिंह को था। किन्तु वे उसका मुख नहीं देख सकते थे। और समीप जाकर भी देखने का साहस नहीं पड़ता था।

अन्त में जब विशेश्वरसिंह का विश्वास पक्का हो गया तो उसने अपने अर्दली को ख़ुफ़िया पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट के पास भेजा। इसी समय वे दोनों व्यक्ति थार्नहिल रोड की ओर चले। उनमें से एक के साथ साइकिल थी। ये दोनों व्यक्ति ठाकुर दालचन्द के सामने से होकर निकले। कुछ दूर जाने के बाद साइकिल वाला व्यक्ति फिर लौट आया और ठाकुर दालचन्द के सामने से होकर निकला। सम्भव है कि उनके दिल में कोई सन्देह उत्पन्न हो गया हो, और वे सजग हो गए हों। साइकिल वाला व्यक्ति दालचन्द को देख-भाल कर फिर थार्नहिल रोड की ओर मुड़ गया। इसी समय, जब कि विशेश्वरसिंह और ठाकुर दालचन्द, इन व्यक्तियों की गति-विधि का निरीक्षण कर रहे थे, सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० नाटबावर दो कॉन्स्टेबिलों के साथ पार्क में पहुँचे।

विशेश्वरसिंह और दालचन्द तो वहाँ पर नहीं थे, पर अर्दली ने सुपरिण्टेण्डेण्ट को उन दोनों व्यक्तियों को दिखलाया, और विशेश्वरसिंह के सन्देह को भी कह सुनाया। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने अपनी मोटर रोक ली, और क़रीब दस गज़ के फ़ासले पर से उन व्यक्तियों से उनके विषय में कुछ पूछा। इस पर दोनों ने पिस्तौल निकाल लिए और फ़ायर शुरू कर दिया। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उन्हें पिस्तौल निकालते देख कर, उनके फ़ायर करने के पहले ही गोली दाग़ दी, किन्तु कुछ लोगों का कहना है कि पहले आज़ाद ही ने फ़ायर किया। सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब का कहना है कि उनकी गोली शायद आज़ाद के पैरों में लगी। क्योंकि वह उठ नहीं सकता था। सुपरिण्टेण्डेण्ट की दूसरी गोली शायद आज़ाद के शरीर पर लगी। उसका साथी फुर्ती के साथ उठ खड़ा हुआ, और गोली दाग़ कर भाग गया। इस समय तक सुपरिण्टेण्डेण्ट और दो कॉन्स्टेबिल बराबर उन लोगों की ओर गोली छोड़ते रहे थे। इसी समय जब सुपरिण्टेण्डेण्ट पिस्तौल में गोली भर रहे थे। 'आज़ाद' ने उनके बाँएँ बाँह पर गोली मारी, जिससे पिस्तौल हाथ से छूट कर गिर पड़ा। तब वे एक वृक्ष की ओट में जा छिपे। 'आज़ाद' भी अपने समीप के एक वृक्ष की ओट में रेंग कर चला गया। इसी समय ठाकुर विशेश्वरसिंह ५०-६० गज़ की दूरी पर एक झाड़ी की ओट में पहुँच गए, और उन्होंने 'आज़ाद' की ओर फ़ायर किए। आज़ाद ने एक गोली मारी, जो विशेश्वरसिंह के मुख पर लगी।

सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब की भुजा पर चोट थी, इस कारण वे गोली नहीं छोड़ सकते थे, किन्तु आज़ाद बराबर गोली दाग़ रहे थे। अन्त में आज़ाद चित्त लेट गए। कहा जाता है कि गोली चुक जाने के कारण उन्होंने स्वयं गोली मार ली।

इस समय दूर पर एक भीड़ एकत्रित हो गई थी। इसी समय कोई अज्ञात व्यक्ति (पीछे मालूम हुआ कि वह एक कॉन्स्टेबिल था) अपनी बन्दूक़ के साथ वहाँ पहुँचा। सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब को यह सन्देह था कि आज़ाद, शायद पुलिसवालों को धोखा दे रहा है। इस कारण उन्होंने उस अज्ञात व्यक्ति को मृत आज़ाद के ऊपर गोली दाग़ने के लिए कहा। उसने ऐसा ही किया। जब सुपरिण्टेण्डेण्ट को पक्का विश्वास हो गया कि आज़ाद मर गया है तब वे उसके समीप गए! इस समय तक पुलिस के अन्य व्यक्ति भी घटनास्थल पर पहुँच गए थे। आज़ाद के पास से ४४८ रु० के नोट और कुछ रुपए मिले।

१६ गोलियाँ और २२ ख़ाली कारतूस वहाँ पर पड़े मिले। इस घटना के बाद लाश पोस्टमार्टम के लिए भेज दी गई। जनता के लोगों ने लाश दफ़नाने के लिए सरकार से आज्ञा माँगी। किन्तु लाश नहीं दी गई। कहा जाता है कि लोगों के पूँछने पर अधिकारियों ने कहा था कि लाश दारागञ्ज में दफ़नाई जायगी, किन्तु अन्त में दफ़नाई गई वह रसूलाबाद में!

कुछ लोगों का कहना है, कि आज़ाद के साथ एक ही व्यक्ति नहीं, बल्कि दो व्यक्ति थे। पुलिस इनका पीछा बनारस से ही कर रही थी। गोली-काण्ड के समय, आज़ाद के साथ केवल एक ही व्यक्ति था। इस व्यक्ति को आज़ाद ने जान-बूझ कर वहाँ से हटा दिया। उससे कहा कि "मैं तो मौत के मुँह में जाता हूँ, तुम भाग जाओ!"

कहा जाता है कि घटना के समय, एक विद्यार्थी साइकिल पर जा रहा था। एक अपरिचित व्यक्ति ने उसे पिस्तौल दिखा कर कहा कि "साइकिल मुझे दे दो, पुलिस मेरा पीछा कर रही है।" वह लड़का भयभीत होकर उतर गया और वह अपरिचित व्यक्ति साइकिल लेकर चम्पत हो गया।

आज़ाद का संक्षिप्त परिचय

स्वर्गीय श्री० चन्द्रशेखर का जन्म काशी के बैजनाथ टोला में हुआ था। उसके पिता का नाम था पं० बैजनाथ। थोड़ी उम्र से ही उस पर अपने देश को आज़ाद करने की धुन सवार हो गई थी। १९२१-२२ में असहयोग आन्दोलन के समय वह अहिंसावादी स्वयंसेवक थे, गिरफ़्तार कर जब वे अदालत में लाए गए, तो मैजिस्ट्रेट ने उनसे पूछा—"तुम्हारा क्या नाम है?" आज़ाद ने अपनी आज़ादी के आवेश में उत्तर दिया—"मेरा नाम 'आज़ाद' है, पिता का नाम 'स्वतन्त्र', निवास स्थान? —जेलख़ाना—है!" भला मैजिस्ट्रेट एक कोमलमति बालक के मुख से निकली हुई ऐसी बातें कैसे सहन कर सकता था? उसने आज़ाद को १५ बेत लगाए जाने की आज्ञा दी। बेत लगाने के लिए उसका कोमल शरीर बाँधा जाने लगा। परन्तु उसने कहा—"बाँधते क्यों हो? मारो, मैं खड़ा हूँ।" उस दृश्य के देखने वाले काँप गए। क्या सचमुच बेत लगाए जायँगे? हाँ बात सच थी। सड़ासड़ बेत पड़ने लगे और प्रत्येक वार पर आज़ाद के मुख से 'बन्देमातरम्' 'गाँधी जी की जय' आदि नारे निकलने लगे! परन्तु अन्त में वह कोमल बालक मूर्छित होकर गिर पड़ा!! उस समय वह केवल चौदह वर्ष का था। तभी से आप "आज़ाद" के नाम से विख्यात हुए।

इन बेतों का आघात उसके शरीर पर नहीं, वरन् उसकी आत्मा पर लगा और कहा जाता है कि वह उसी दिन से विद्रोही हो गया। इस अमानुषिक दण्ड का इसके मन पर बड़ा ही बुरा प्रभाव पड़ा।

सन् १९२१ का असहयोग आन्दोलन शान्त था, पर कहा जाता है, आपने हिंसात्मक क्रान्ति की शरण ली। यहाँ राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और शचीन्द्रनाथ बख़्शी से उसकी मित्रता हुई। ये तीनों अन्तरङ्ग मित्र हो गए। प्रत्येक कार्य में इन तीनों का साथ रहता था।

कहा जाता है, कि सन् १९२६ वाले काकोरी षड्यन्त्र केस में 'आज़ाद' का नाम एक प्रमुख षड्यन्त्रकारी के रूप में आया था। किन्तु वह फ़रार था। सारा बनारस छान डाला गया, किन्तु 'आज़ाद' आज़ाद ही रहा। युक्त प्रान्तीय सरकार ने उसकी गिरफ़्तारी के लिए दो हज़ार रुपयों का इनाम भी घोषित किया।

१७वीं दिसम्बर १९२८ को सौण्डर्स हत्या-काण्ड हुआ। कहा जाता है, कि यह निश्चित किया गया था, कि भगतसिंह और राजगुरु सौण्डर्स को मारेंगे और आज़ाद उनके पार्श्व-रक्षक के तौर पर पीछे रहेगा। सौण्डर्स को मार चुकने के बाद जब वह डी० ए० वी० कॉलेज के बोर्डिङ्ग हाउस में जा रहा था, तब चन्नर्नसिंह ने उसका पीछा किया। 'आज़ाद' ने उसे चेतावनी दी, किन्तु इस पर भी जब वह उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ा तो आज़ाद ने उसका काम तमाम कर दिया। इसके बाद से ही पञ्जाब में आज़ाद की खोज होने लगी। आज़ाद, जो इस समय 'पण्डित' जी के नाम से प्रसिद्ध हो गया था, बड़ी सफ़ाई से ग़ायब हो गया।

घटनास्थल का दृश्य। दर्शकों की भीड़।

१९२९ के दिसम्बर मास में, वायसराय की ट्रेन उलट देने का प्रयत्न किया गया। क्रान्ति के इतिहास में पहले-पहल बिना तार के, बम से काम लिया गया। इस सम्बन्ध में आज़ाद, यशपाल और एक फ़रार अभियुक्त का नाम लिया जाता है।

कहा जाता है कि लाहौर के दूसरे षड्यन्त्र में, आज़ाद ने सरदार भगतसिंह और श्री० दत्त आदि को छुड़ाने के लिए षड्यन्त्र किया था। साथ ही यह भी कहा जाता है कि बहावलपुर के मकान में धड़ाका हो जाने के कारण, यह षड्यन्त्र सफल नहीं हो सका। उस धड़ाके में एक प्रमुख क्रान्तिकारी श्री० भगवतीचरण की जान भी चली गई।

दिल्ली षड्यन्त्र केस में भी, जो अभी आरम्भ होने को है, 'आज़ाद' का नाम लिया जाता है। पञ्जाब गवर्नमेण्ट ने भी आपकी गिरफ़्तारी के लिए ५,०००) रु० का इनाम घोषित किया था और कहा जाता है, आपका चित्र प्रत्येक बड़े-बड़े रेलवे स्टेशन पर चिपकाया गया था; पर सरकारी पुलिस के गुर्गे सन् १९२६ से २७वीं फ़रवरी के प्रातःकाल तक पता नहीं लगा सके थे। 'आज़ाद' ने अन्त तक अपनी आज़ाद-प्रियता को निबाहा। उनकी जीवित अवस्था में पुलिस का कोई भी व्यक्ति उनका शरीर स्पर्श नहीं कर सका। कहा जाता है, उनकी मृत्यु के बाद भी पुलिस के उपस्थित अफ़सरों को उनसे भय लगता था। समाचार-पत्रों को पढ़ने से पता चलता है कि मृत्यु के बाद भी केवल सन्देह के वशीभूत होकर पुलिस वालों ने बन्दूक़ और तमञ्चों के कई बाढ़ उनके शरीर पर दाग़े थे, तब कहीं वे पास फटक सके।

कुछ लोगों का कहना है कि उनकी मृत्यु के बाद कुछ सरकारी ख़ैरख़्वाहों ने उनके मृतक शरीर को लातों तक से ठुकराया, कुछ लोगों का यह भी कहना है कि एक गोरे दर्शक का कुत्ता स्वर्गीय 'आज़ाद' के लगे हुए घावों में से निकला हुआ रक्त चाट कर अपने मालिक को अपनी वफ़ादारी और समझदारी का परिचय दे रहा था। हमारे एक विशेष सम्वाददाता की यह तो आँखों देखी और कानों-सुनी घटना है कि जब लाश को उठा कर लॉरी में रक्खा जा रहा था तो पुलिस वालों ने बड़ी निर्दयता से मृतक शरीर की टाँगें पकड़ कर घसीटी थीं। कुछ सिपाहियों को लाश मोटी होने की शिकायत थी और इसके लिए कहा जाता है, उनके शरीर को गालियाँ भी दी गई थीं; किन्तु 'आज़ाद' के जीवट की वे कभी-कभी कानों-कानों में प्रशंसा भी करते सुने गए थे। स्वयं सी० आई० डी० के सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० डलन्डन तक ने, जो इस संस्था की तलाशी लेने आए थे, हमसे 'आज़ाद' के जीवट की प्रशंसा की। उनका कहना था कि ऐसे सच्चे निशानेबाज़ उन्होंने बहुत कम देखे हैं; ख़ासकर ऐसी शङ्कामय परिस्थिति में, ख़ासकर जब तीन ओर से उन पर गोलियों की वर्षा हो रही थी। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यदि पहली गोली उनकी जाँघ में न लग गई होती, तो पुलिस का एक भी अफ़सर जीवित न लौटता, क्योंकि मि० नॉटबावर का हाथ पहले ही बेकाम हो चुका था, उन्होंने यह भी बतलाया कि 'आज़ाद' विप्लवी दल का कोई प्रतिष्ठित नेता—सम्भवतः कमाण्डर इन-चीफ़ थे। अस्तु—

मि० नाटबावर की मोटर, जिस पर क्रान्तिकारी युवक ने गोली चलाई थी।

'भविष्य' के विशेष सम्वाददाता ने आज दोपहर को

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व, सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

५ मार्च, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

(७वें पृष्ठ का शेषांश)

घटनास्थल का निरीक्षण भी किया था। जिस पेड़ के पीछे स्वर्गीय 'आज़ाद' ने प्राण विसर्जन किए हैं, वह वृक्ष फूलों से लदा था और पेड़ पर कई जगह दर्शकों ने 'आज़ाद-पार्क' आदि लिख दिया है। जिस स्थान पर उनका रक्त गिरा था, कहा जाता है उतनी मिट्टी कॉलेज के विद्यार्थी उठा ले गए हैं।

* * *

दशहरा बम केस
सरकारी गवाह का बयान

लाहौर का २६वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बोर्स्टल जेल में, अब्दुलग़नी के विरुद्ध, दशहरा बम केस, सेशन जज के सामने चल रहा है। आज सरकार की ओर से कई गवाह पेश किए गए।

गुरुदासपुर के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट के० बी० अब्दुल अज़ीज़, जिन्होंने मामले की तहक़ीक़ात की थी, कहा कि जाँच के समय उन्हें मालूम हुआ कि अभियुक्त अब्दुलग़नी को इस मामले की कुछ बातें मालूम हैं। उन्होंने अब्दुलग़नी को बुलाया। अब्दुलग़नी इस शर्त पर उन बातों को बताने के लिए तैयार हुआ कि, उसके बदले में उसे कुछ ज़मीन दी जाय। गवाह ने कहा—"यह मेरे अधिकार के बाहर है, पर तो भी मैं सरकार से इसकी सिफ़ारिश करूँगा।" इस पर अभियुक्त ने अपना बयान दिया, जिसे डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट सैयद अहमदशाह ने दर्ज कर लिया था।

इसके बाद गवाह ने कहा, इस धड़ाके के कारण १० मनुष्य मरे और ५८ घायल हुए थे। इस बात का पता देने वाले का नाम गवाह नहीं बता सका। गवाह ने कहा कि अब्दुलग़नी के कथनानुसार मुख़बिर मुहम्मद अशरफ़ के घर की तलाशी ली गई, पर वहाँ कोई बम नहीं मिला। यह सच है कि अभियुक्त के कथन के आधार पर ही तलाशियाँ ली गई थीं, किन्तु वास्तव में मुहम्मद अशरफ़ की सूचनानुसार ही बम मिले थे।

पञ्जाब सरकार ने इस घटना के सम्बन्ध में पता बताने वाले को पुरस्कार देने की घोषणा की थी। गवाह ने कहा कि पुरस्कार की रक़म उसे याद नहीं है।

अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० ई० एस० लेवी ने कहा कि मैंने अब्दुलग़नी की अपराध-स्वीकृति दर्ज की थी। उसने स्वेच्छापूर्वक अपना बयान दिया था।

* * *

लाहौर का नया षड्यन्त्र केस
मुख़बिर पर पुलिस का दबाव
बयानों में अन्तर

लाहौर २६वीं फ़रवरी—आज स्पेशल ट्रिब्यूनल की अदालत में, मुख़बिर इन्द्रपाल का बयान समाप्त होगया।

मुख़बिर ने मैजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान देते हुए नीचे लिखे स्थानों की सनाख़्त की :—

(१) वह दूकान, जहाँ से उसने यशपाल के लिए चीज़ें ख़रीदी थीं। (२) श्रीमती दुर्गादेवी (श्रीमती भगवतीचरण) का घर। (३) यूनीवर्सिटी ग्राउण्ड का वह स्थान, जहाँ यशपाल ने मुख़बिर को रिवॉल्वर से मारना चाहा था, क्योंकि मुख़बिर ने क्रान्तिकारी दल के नियमों का उल्लङ्घन किया था। (४) वह स्थान जहाँ मुख़बिर और हंसराज ने, बम फेंकने की परीक्षा की थी। (५) वह स्थान जहाँ दल के सदस्य, भगतसिंह और अन्य अभियुक्तों की लॉरी आने की प्रतीक्षा में, बैठ कर ताश खेले थे। (६) वह स्थान जहाँ चन्द्रशेखर आज़ाद और यशपाल उस दिन ठहरे थे। (७) सुतार मण्डी में नन्दलाल का मकान। (८) फ़रार प्रेमनाथ का मकान। (९) वह स्थान जहाँ यशपाल की बहिन रहती थी। (१०) ग्वाल मण्डी में वह घर जहाँ १९वीं जून १९३० को बम फटा था।

मुख़बिर ने अन्य स्थानों की भी सनाख़्त की। उसने उन स्थानों की भी सनाख़्त की, जहाँ पुलिस ने झूठी गवाहियाँ दी थीं। उसके बाद उसने कहा कि उसने शहद्रा, रावलपिण्डी, लायलपुर और दिल्ली के भी अनेक स्थानों की सनाख़्त की है।

वह चौकीदार, जिसे यशपाल ने दो आने पैसे दिए थे, गवाह को नहीं पहचान सका। पुलिस ने चौकीदार से मुख़बिर को सनाख़्त करने के लिए कहा, और यह भी कहा, वही षड्यन्त्र केस में भी गवाह था।

जहाँगीरीलाल, जयप्रकाश, कुन्दनलाल, धरमपाल अमीरचन्द, गुलाबसिंह, अमरिकसिंह, रूपचन्द, दयानत राम, भीमसेन, हरिराम, महाराजकिसन और अभियुक्त बंसीलाल को गवाह जानता था। पुलिस ने उससे धर्मवीर की सनाख़्त करवाई। उसने धर्मवीर को लाहौर फ़ोर्ट में देखा था।

गवाह ने लाहौर के कई स्थानों को क्षमा किए जाने के पहले ही सनाख़्त किया था। अन्य स्थानों को क्षमा के बाद उसने सनाख़्त किया।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर रायबहादुर ज्वालाप्रसाद ने कहा कि गवाह ने मैजिस्ट्रेट के सामने जो बयान दिया था, उससे इस बयान में अन्तर है।

लाला शामलाल ने कहा कि गवाह विरोधी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसने सारी कहानी कह दी है। मैजिस्ट्रेट के सामने जिस समय उसने बयान दिया था, उस समय वह पुलिस के दबाव में था। इस समय वह उस दबाव से स्वतन्त्र है।

(शेष मैटर ५वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

बलिदान

[श्री० रूढ़िदास दक़ियानूस :: चित्रकार, श्री० परिवर्तनानन्द वर्मा]

निछावर रूढ़ियों पर हो, कोई जाता है दुनिया से,
किसी की ख़ाक में मिलती, जवानी देखते जाओ।

वह सौन्दर्य की देवी, कोमलता की मूर्त्ति, सद्गुणों की खान और माता-पिता के प्राणों की प्रत्यक्ष प्रतिमा थी। पिता ने उसे गार्हस्थ्य-जीवन के उपयुक्त शिक्षा दी थी। उन्हें हिन्दू-समाज की हृदय-हीनता का ज्ञान न था, उन्हें विश्वास था कि रुपए की अपेक्षा रूप और गुण का विशेष आदर होगा, और इसी भरोसे पर वे अपनी कन्या का विवाह किसी धनवान और योग्य वर के साथ करना चाहते थे।

परन्तु समाज के धनवानों ने उनकी धारणा को शीघ्र ही भ्रान्त सिद्ध कर दिया। सैकड़ों दरवाज़ों की ख़ाक छान कर वे घर लौट आए और हताश होकर झोपड़ी के सामने टूटी चारपाई पर बैठ गए। उनकी समझ में आ गया कि 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रन्ति !'

("क्या मेरी श्यामा कुँवारी ही रहेगी ?")

पत्नी ने आकर पूछा—कहीं कोई पात्र ठीक हुआ ?

एक दीर्घ-निश्वास के साथ हताश स्वर में उत्तर मिला—नहीं।

"तब क्या मेरी श्यामा कुँवारी ही रहेगी ?"

"ईश्वर की इच्छा !"

"नहीं, ऐसा न कहो, एक बार और चेष्टा करो। श्यामा सयानी हो गई है। अब इस काम में देर करना ठीक नहीं है।"

"अच्छा, कल फिर दो-एक जगह जाऊँगा।"

श्यामा दरवाज़े के पास बैठी हुई ये बातें सुन रही थी और सोच रही थी, क्या माता-पिता को इस सङ्कट से बचाने की कोई तदबीर नहीं है ?

("........पाँच हज़ार से कम न लूँगा।")

२

रामनारायण पुलिस के दारोग़ा थे। ख़ूब रुपए कमाया था। परन्तु अपने एक मात्र पुत्र को पढ़ा-लिखा कर किसी दूसरे रोज़गार में लगाना चाहते थे। उनकी इच्छा उसे विलायत भेज कर बैरिस्टरी पास कराने की थी, इसलिए उन्होंने उसकी शिक्षा-दीक्षा का बन्दोबस्त पहले से ही निख़ालिस अङ्गरेज़ी ढङ्ग से कर रक्खा था। परन्तु मैट्रिक की परीक्षा में सात बार बैठ कर भी जब विश्व-विद्यालयवालों की बेउनवानी के कारण उनका पुत्र श्यामनारायण पास न हो सका तो बेचारे कुछ हताश हो गए।

इतने में एक दिन थाने के चौकीदार ने आकर ख़बर दी कि दारोग़ा जी घोड़े पर से गिर कर मर गए। श्यामनारायण को बड़ा दुःख हुआ। परन्तु साथ ही उसे इस बात की प्रसन्नता भी हुई कि कम से कम स्कूल के मास्टरों से तो पिण्ड छूटा।

अब वह निश्चिन्तता-पूर्वक घोड़दौड़ के मैदान में और अङ्गरेज़ी होटलों में जाकर पिता का उपार्जित धन सार्थक करने लगा।

श्यामा के पिता को श्यामनारायण का हाल मालूम था। वे यह भी जानते थे कि उसने दारोग़ा जी की सारी कमाई का पूर्णरूपेण सदुपयोग कर डाला है ! परन्तु कहावत है कि डूबते हुए को तिनके का सहारा भी काफ़ी होता है। उन्होंने सोचा, श्यामनारायण कुछ सस्ते में पट जायगा और सिर पर पत्नी का भार पड़ने पर भविष्य में कुछ सुधर भी जायगा तो आश्चर्य नहीं।

एक दिन वे श्यामनारायण के पास पहुँचे। इधर श्यामनारायण भी पिता की सम्पत्ति पर पानी फेर कर किसी ऐसे ही शिकार की तलाश में था। श्यामा के पिता के मुँह से सारी बातें सुन कर उसने बड़ी ऐंठ और अकड़ के साथ उत्तर दिया—"आप कहते हैं तो शादी कर लूँगा, परन्तु तिलक-दहेज़ मिला कर पाँच हज़ार से कम न लूँगा। आप तो जानते ही हैं कि हम लोग 'कुलीन' हैं। यह रिआयत मैंने ख़ास आपके ख़्याल से की है।"

३

"क्यों, क्या हुआ ?" श्यामा की माँ ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"पाँच हज़ार माँगता है।

"पाँच ह...ज़ा...र !!!"

"हाँ, इससे एक कौड़ी भी कम न लेगा।"

"तब क्या होगा ?"

"वही, जो मेरे, तुम्हारे और तुम्हारी अभागिनी श्यामा के भाग्य में बदा है !"

"एक काम करोगे ?"

"क्या ?"

"मेरे गहने लेजा कर बेंच लो !"

"अच्छा ! परन्तु इससे भी तो पाँच हज़ार पूरे नहीं हो सकते।"

"तो जगह-ज़मीन और खेत-बारी भी बेंच दो। हम लोग मेहनत-मज़ूरी करके किसी तरह दिन काट लेंगे !"

श्यामा की आँखों से आँसू की धारा बह रही थी। वह सोचती थी, "क्या मैं मर नहीं सकती ? माता-पिता को इस तरह पथ का भिखारी बना कर 'सौभाग्यवती' होने की अपेक्षा क्या कन्याओं का मर जाना अच्छा नहीं है ?"

उसके इस मूक, किन्तु हृदय-वेधी प्रश्न का उत्तर कौन दे ? समाज। धिक्कार है, उसे। उसको तो चाहिए की आँखें फूट चुकी हैं। वह क्या इन प्रश्नों का उत्तर दे सकती है ?

("मेरे गहने ले जाकर बेच लो !")

("......यह न समझना कि संसार सज्जनों से ख़ाली हो गया है !")

गहने और ज़गह-ज़मीन बेच कर भी पाँच हज़ार तो क्या दो हज़ार का भी ठिकाना न लगा। श्यामा के पिता क़िस्मत ठोक कर बैठ गए। कोई उपाय दिखाई न पड़ता था। कन्या बड़ी हो चुकी थी, इसलिए एक-एक पल पहाड़ हो रहा था। इधर टाल-मटोल में तरह-तरह की कल्पनाएँ होने लगीं। इतनी बड़ी लड़की को कुँवारी रखना धर्मशास्त्र और समाज-शास्त्र के विरुद्ध था। बिरादरी के धर्म-भीरु पञ्चों ने निश्चय किया कि श्यामा के पिता का 'हुक़ा-पानी' बन्द कर देना चाहिए, नहीं तो उनके साथ ही सारे समाज को नरकगामी होना पड़ेगा। एक शास्त्रज्ञ पण्डित ने कहा—अपरिणीता कन्या; जो है सो, यदि पिता के घर में रजस्वला हो जाय, तो मर करके पिता को सपरिवार और सपरिजन अनन्त काल लों नरकवास हो और वहाँ 'रज' पान करना पड़े। इति मनुर्ब्रवीत। ऐसा मनु का कथन है।

"उफ़ ! तब तो महापापी है, यह रेवतीनाथ श्यामा का बाप !"—पञ्चों ने एक स्वर से चिल्ला कर कहा—"बस-बस, ऐसे पापी को तुरन्त जाति-च्युत कर देना चाहिए।"

४

घनश्याम ख़ान्दानी रईस थे। ईश्वर ने धन-जन, पुत्र-पौत्र सब कुछ दिया था। कमी थी तो बस, इतनी कि ऐन बुढ़ौती में पाँचवीं पत्नी का देहान्त हो चुका था। इसी से बेचारे बड़े खिन्न रहते थे और अन्तिम जीवन सुख-शान्ति से बिताने के लिए, छठी बार किसी षोड़शी का पाणि-पीड़न कर परलोक की राह साफ़ कर डालना चाहते थे। इतने में उनके कुल-पुरोहित जी ने आकर श्यामा के पिता का हाल सुनाया और कहा कि इस मौक़े से कदापि न चूकिए। बस, आज ही जाकर उनसे मिल आइए।

फिर तो मैं खुद जाकर सारा काम ठीक कर लूँगा।

घनश्याम की बाछें खिल गईं। फ़ौरन डोली पर बैठ कर रेवतीनाथ के घर पहुँचे और दयार्द्र होकर कहने लगे—"मैंने सब सुना है। आप कोई चिन्ता न कीजिए। मैं इस विपत्ति से आपका उद्धार करने को तैयार हूँ। आपका एक पैसा भी ख़र्च न होगा। आपके लिए मैं दोनों ओर का ख़र्च अपने ज़िम्मे ले लूँगा। अरे भाई, यह न समझना कि संसार सज्जनों से ख़ाली हो गया है। आप निश्चिन्त होकर घर में बैठिए। मैं अभी जाकर पुरोहित जी को भेजता हूँ। वे आकर सब ठीक-ठाक कर जायँगे। समझे न? मेरे रहते आप कदापि जाति-च्युत नहीं हो सकते।"

इसके बाद पुरोहित जी आए। घनश्याम की जन्म-कुण्डली देख कर कहा—"१२० वर्ष की आयु का अनिवार्य योग पड़ा है। मङ्गल दाहिने और वृहस्पति सामने हैं। छठी स्त्री से पाँच पुत्र और तीन कन्याएँ होंगी। आपकी श्यामा से गणना भी अच्छी बनती है। सोच-विचार छोड़ कर आप यह सम्बन्ध स्वीकार कर लीजिए।"

रेवतीनाथ ने दीर्घ निश्वास के साथ सम्बन्ध स्वीकार कर लिया। उनका कलेजा पत्थर हो चुका था और नेत्र मरुस्थल! उन्होंने समाज के धधकते हुए अग्नि-कुण्ड में अपनी प्यारी श्यामा को जीते जी झोंक दिया!

('पण्डित जी ने शास्त्र-विधि के अनुसार विवाह-कार्य सम्पन्न कराया')

और श्यामा? वह प्रसन्न थी। उसे मनोवाञ्छित 'मुक्ति का मार्ग' दिखाई पड़ चुका था।

५

बड़ी धूमधाम से घनश्याम के साथ श्यामा का विवाह हुआ। घनश्याम ने पानी की तरह रुपए बहा दिए। नाच, बाजा, तमाशा—किसी बात की कमी न रही। पण्डित जी ने शास्त्र-विधि के अनुसार विवाह-कार्य सम्पन्न कराया। इस पुण्य-कार्य में उन्हें दक्षिणा भी प्रचुर प्राप्त हुई थी। सुनते हैं, इस दक्षिणा की रक़म से पण्डितानी जी के लिए उन्होंने एक सोने की 'हँसुली' बनवा दी है।

बारातियों और बिरादरीवालों ने भी कई दिनों तक ख़ूब आनन्द मनाया। दावत की तैयारी ऐसी ठिकाने से हुई थी कि लोग 'वाह वाह!' कह उठे थे। मुजरे के लिए कलकत्ते से गौहरजान, आगरे वाली मलका, दिल्ली की जोहरा बाई और बनारस की बड़ी मैना आई थीं।

(घनश्याम का अन्तःपुर)

परन्तु सुनते हैं, कन्यादान के समय श्यामा की माँ को मूर्च्छा आ गई थी और रेवतीनाथ का हाथ काँप गया था। साथ ही किसी लड़के ने छींक भी दिया था। परन्तु यह कोई विशेष चिन्ता की बात न थी। क्योंकि पण्डित जी ने विघ्न-निवारणार्थ तत्काल ही उच्चस्वर से इस श्लोक का पाठ कर दिया था—

"मङ्गलम् भगवान विष्णु मङ्गलम् गरुड़ध्वज।
मङ्गलम् पुण्डरीकाक्ष मङ्गलायतनो हरिः॥"

६

आइए पाठक, ज़रा घनश्याम के अन्तःपुर की सैर करें। सङ्कोच करने की कोई बात नहीं है, क्योंकि फागुन का महीना है और हिन्दू-समाज-शास्त्र के अनुसार "फागुन भर बाबा देवर लागें!" फलतः थोड़ी देर के लिए आप भी हमारे साथ बूढ़े घनश्याम की 'भौजाई' बन जाइएगा, तो कोई बुराई न होगी। इसके अतिरिक्त हम और आप भी तो 'हिन्दू समाज' के एक 'रत्न' हैं और रत्न का प्रधान गुण है, कठोरता। इसलिए वहाँ का विषम दृश्य देख कर हमारे कठोर हृदयों के सहसा विदीर्ण हो जाने की भी कोई सम्भावना नहीं है। फिर वहाँ कोई नई बात भी तो नहीं है। अपने समाज के धर्म-धुरीणों की कृपा से ऐसे दृश्य तो आप रोज़ ही देखते हैं!

आज घनश्याम की 'हनीमून'— सुहाग-रात है, मुरादों की रात और उमङ्गों की घड़ियाँ हैं! सारा दिन विचित्र उत्सुकता और मधुर कल्पनाओं

में बीता है, परन्तु बड़ी देर में—अभागा सूर्य मानो डूबने का नाम ही न लेता था। आज उनकी बुढ़ौती, उनकी ज़िन्दगी और उनका हिन्दू होना सार्थक हो रहा है। ज़रा ऊपर के चित्र पर नज़र डालिए। पोपले मुँह पर वासना-मिश्रित हँसी कैसी सुन्दर मालूम होती है। ज़रा ग़ौर से देखिए तो सही, चित्राङ्कित मुख-मुद्रा इस बीसवीं सदी में भी रूढ़ियों की ग़ुलामी करने वाले हिन्दू-नवयुवकों का उपहास तो नहीं कर रही है ?

७

श्यामा ने मुक्ति का मार्ग तो पहिले ही पा लिया था। परन्तु उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में थी। और घनश्याम जब अपना प्रेमाभिनय समाप्त कर हताश भाव से बाहर चले गए, तो श्यामा भी अवसर पाकर शीघ्र ही पटाक्षेप करने के लिए उठी। उसने दृढ़ हाथों से चारपाई का बन्धन खोला और उसका एक सिरा अपनी गर्दन में तथा दूसरा कमरे की छत की कड़ी में बाँध दिया। इसके बाद ? इसके बाद ??

इसके बाद की घटना नीचे के चित्र में है ! देखो हिन्दुओ, आँखें फाड़ कर देखो, शान्ति की शीतल निश्वास के साथ देखो ! ऐसे ही दृश्य तो तुम्हें प्यारे लगते हैं ? अब तो अवश्य ही तुम्हारा

("पुलिस सदल-बल जाँच के लिए पहुँचा।")

(मुक्ति का मार्ग)

कलेजा ठण्ढा हो गया होगा ! यही तो तुम्हारे समाज की शोभा है ! तुम धन्य हो !!

श्यामा के लिए कोई चिन्ता नहीं, वह इस पाप-तापपूर्ण संसार से बहुत दूर, अनन्त शान्ति की पवित्र गोद में पहुँच चुकी है ! वहाँ न घनश्याम हैं, न 'मङ्गलम् भगवान विष्णु' वाले, सनातन-धर्म के कर्णधार पण्डित जी ! वहाँ न अर्थ है, न अर्थ-लोलुपता। वहाँ न वासना है, न कामुकता। वहाँ न जाति है, न जाति-च्युति का भय !

८

सवेरा होते-होते श्यामा की आत्महत्या का समाचार तड़ित गति से सारे शहर में फैल गया। पुलिस सदल-बल जाँच के लिए पहुँची। घनश्याम का चालान हुआ। पुलिस ने अदालत में यह प्रमाणित करने की चेष्टा की कि घनश्याम के साथ श्यामा का विवाह उसकी सम्पूर्ण अनिच्छा से हुआ था। वह घनश्याम को पतिरूप में देखना भी नहीं चाहती थी। इधर घनश्याम बलपूर्वक उसके साथ अपनी विलास-वासना की तृप्ति करना चाहते थे। बस यही उसकी मृत्यु का कारण है। परन्तु घनश्याम की चाँदी की जूतियों की मार ने क़ानून, न्याय और विचार को एकदम ठण्ढा कर दिया था, इसलिए ये तीनों मिल कर भी उनका बाल बाँका नहीं कर सके। अब सुनने में आया है कि बन्दर की गिल्टी लगवा कर वे पुनः जवान बनने की इच्छा से फ़्रान्स जा रहे हैं। फलतः एक और कन्या-भार-ग्रस्त हिन्दू के उद्धार की आशा अभी बाक़ी है। देखें, अबकी किस सुन्दरी का भाग्योदय होता है ?

तूफ़ाने-ज़राफ़त

अपनी बीबी तक पराई हो गई !

[नाख़ुदाए-सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

ख़र्च गो सारी कमाई हो गई,
लाट साहब तक रसाई हो गई !
कौन जाए अब कलब को छोड़ कर,
लेडियों से आशनाई हो गई !
और क्या हमने बिगाड़ा आपका,
की भलाई, यह बुराई हो गई !
हमने यूँ जी खोल कर चन्दे दिए,
मालो-दौलत की सफ़ाई हो गई !
इस तरफ़ तो बस ख़ुदा ही रहा गया,
उस तरफ़ सारी ख़ुदाई हो गई !
उस मिसे-शीरीं दहन की गुफ़्तगू,
मुझको अङ्गरेज़ी मिठाई हो गई !
है नई तालीम का यह इनक़िलाब[१],
अपनी बीबी तक पराई हो गई !
पास 'आया' के जो मैं आया-गया,
ख़ानसामाँ से लड़ाई हो गई !
एक सिग्रेट की भी थी कोई बिसात ?
मुझसे उनसे हाथा-पाई हो गई !!
थी जवानी में जो मेडम नान-पाव,
वह ज़ईफ़ी में मलाई हो गई !
रेल पर क़ुर्बान, होटल पर निसार-
बाप दादा की कमाई हो गई !
'नूह' साहब हम कहाँ, गिरजा कहाँ ?
दो घड़ी को जब्ह साई[२] हो गई !

* * *

बाप-दादा की कमाई ख़ूब है !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

हर तरफ़ जङ्ग-आज़माई ख़ूब है,
लफ़्ज़ो-मानी पर लड़ाई ख़ूब है !
लाट साहब से भी मिल लेता हूँ मैं,
हर जगह मेरी रसाई ख़ूब है !
बाद लड़ने के वह कहते हैं मिलो,
उनके भी दिल की सफ़ाई ख़ूब है !
है यही तौक़े-ग़ुलामी की सनद !
ख़ूब है, गर्दन की टाई ख़ूब है !
उनके दर से मिलने वाला कुछ नहीं,
यह गदाई[३] भी गदाई ख़ूब है !
ख़ल्क़[४] होकर क़ायले-क़ुदरत नहीं,
यह ख़ुदा की भी ख़ुदाई ख़ूब है !
हो रही है आजकल सरकस में ख़र्च,
बाप-दादा की कमाई ख़ूब है !
तज़किरा मिलने-मिलाने का नहीं,
अब तो आपस में लड़ाई ख़ूब है !
हो गया "बिस्मिल" का सर तन से अलग,
तेरे-क़ातिल में सफ़ाई ख़ूब है !

१—क्रान्ति, २—वन्दना, ३—फ़क़ीरी ४—जन्म पाकर।

* * *

जागीर पहले मिलती थी, ख़िदमतगुज़ार को !

[जनाब "ताज" गोलनवी]

कौन्सिल में मेम्बरी की हवस है चमार को,
पण्डित जी भूलते नहीं क़ौमी बेकार[५] को !
नफ़रत है ज़ेवरों से मिसे-नामदार को,
कर देंगे बॉयकॉट हम अब से सुनार को !
चर्ख़ा लगाए और न ताज़ा यह ख़ौफ़ है,
तसकीन क्या वह देंगे दिले-बेक़रार को !
कॉलेज में भी रटा किए 'सादी' की गुलसिताँ,
हमने चुने हैं फूल अलग, करके ख़ार को !
नाचें कलब में साया पहिन कर, जनाने-हिन्द !
तहबन्द करके रक्खें पुराने-इज़ार[६] को !!
अब "थैङ्क यू" से पेट भरें सब वफ़ाशआर,
जागीर पहिले मिलती थी, ख़िदमतगुज़ार को !
लन्दन के लोग तो करें 'स्मिथ' पे फ़ख़्रो-नाज़ !
ज़िल्लत से देखते हैं हम अपने लोहार को !
पाबन्दिए ज़बाँ से न कुछ अर्ज़ कर सका,
क्या मुझसे पूछते हो मेरे अख़्तियार को !
वायज़ की गुफ़्तगू का यहाँ कुछ सिला नहीं,
इनआम मिल रहे हैं, वहाँ 'लेक्चरार' को !
दुनिया के हाल से हैं जो दुनिया में बाख़बर,
वह जानते हैं "ताज" हक़ीक़त-निगार को !

* * *

रेआया के लिए कौड़ी नहीं जिनके ख़ज़ाने में !

[जनाब "अहमक़" फफूँदवी]

यही होगा, यही होता रहा है हर ज़माने में,
कि गूँजी है सदाए-हक़ हमेशा जेलख़ाने में !
पचत्तर लाख एक बेकार मद में सर्फ़ कर देंगे,
रेआया के लिए कौड़ी नहीं जिनके ख़ज़ाने में !
यह हुल्लड़ इस क़दर हड़बोंग, इतनी चपकलिश तोबा !
तेरी महफ़िल में हूँ, या मैं किसी भटियारख़ाने में ?
रिहाई मिल गई जब, बन गए सर्कार के मुख़बिर !
सज़ा पाई थी हमने एक दिन जूते चुराने में !
वह जब आएँ कम अज़ कम इतनी आज़ादी तो मिल जाए !
न हो हड़ताल पर लैसन्स, कोई इस ज़माने में !
जिसे देखो दुआएँ माँगता है जेलख़ाने की,
जिसे देखो तेरे गेसू का आशिक़ है ज़माने में !
नई हदबन्दियाँ होने को हैं, आईने-गुलशन में,
कहो बुलबुल से अब अण्डे न रक्खे आशियाने में
वह मुझको फिर वफ़ादारों की मद में गिनने वाले हैं,
यह कैसा इनक़िलाब आने को है यारब ज़माने में!
ख़ुदा जाने मियाँ "अहमक़" कहाँ डाल आए हैं डाका,
कि आधी रात से जकड़े हुए बैठे हैं थाने में ॥

* * *

५—आदर ६—इज़ारबन्द

साए की भी मरम्मत लाज़िम है कोट सी के !

[नाख़ुदाए-सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

बदले वह सब तरीक़े यारों ने ज़िन्दगी के,
शरबत पे ख़ाक डाली, होटल में चाय पी के !
आमाल नेको-सालेह[७] गो अब नहीं किसी के,
इतना शरफ़ है क्या कम, बेटे हैं शेख़ जी के !
दोनों हैं इस्म-फ़र्ज़ी[८] जन्नत हो या जहन्नुम,
दौरे-जदीद में हम, क़ायल नहीं किसी के !
वायज़ के वाज़ से है, लेक्चर की शान पैदा !
मेम्बर पे हो रहे हैं, औसाफ़[९] मेम्बरी के !
इस्लाह औरतों की मरदों के बाद होगी,
साए की भी मरम्मत लाज़िम है कोट सी के !
सूरज के डूबने से रौशन हुए यह मानी,
मशरिक़[१०] पे अब हैं हमले, मग़रिब[११] की पॉलिसी के !
दैरो-हरम की हद से जाकर जो दूर ठहरा,
बँगले पे क्यों न आए लुत्फ़ उसको ज़िन्दगी के !
क्या चीज़ है कमेटी, क्या शै गरोहबन्दी,
ऐ "नूह" इनको जानो सामान दिल्लगी के !!

कुत्ते सहा मगर हैं, अङ्गरेज़ की गली के

[जनाब "अहमक़" फफूँदवी]

सदमे उठा रहे हैं, तलख़ीय ज़िन्दगी के,
जीना अगर यही है, हम क्या करेंगे जी के !
हम 'जी हुज़ूरियों' को, समझें बुरा तो क्योंकर,
कुत्ते सही मगर हैं, अङ्गरेज़ की गली के !!
आशिक़ पे भी इनायत, दुश्मन से भी लगावट,
होता नहीं यह उनसे, वह हो रहें किसी के !
तुमको बड़ी क़सम है, ऐ ज़ालिमाने-यूरोप,
बाक़ी रहे तरीक़े हरगिज़ न दुश्मनी के !
ईमाँ से हाथ धोया, मज़हब पे लात मारी,
ऐ काश हम न पड़ते फन्दे में नौकरी के !!
बे-दस्तो-पा पर अक्सर चलता है जिनका ख़ञ्जर,
चर्चे हैं एक जहाँ में, उनकी बहादुरी के !
माशूक़ जिस तरह से चाहे उसे नचाए,
आशिक़ को सब तरीक़े आते हैं बन्दगी के !
निकलेंगे जेल से हम "अहमक़" 'सोराज' लेकर,
बैठे हुए वज़ीफ़े पढ़ते हैं शान्ती के !!

ख़बर नहीं है किसी थानेदार को

[जनाब "गदा" दरियाबादी]

क्या जाने कोई अबलक़े[१२] लैलो-निहार[१३] को,
चढ़ बैठता है ख़ुद ही पटक कर सवार को !
तारे निशात[१४] हिज्र[१५] में ढीला न होने पाए,
ऐ जानेमन मिलाओ तो, दिल के सितार को !
सुनता हूँ अक़्द[१६] करने को तैयार हो गई,
अख़बार में वह पढ़ के मेरे इश्तेहार को !
शामे-ग़मे-फ़िराक़ में हमने भी करके आह,
अञ्जन की तरह दिल से निकाला बुख़ार को !
नासेह गए हैं आज पशेमाँ,[१७] तो कल ज़रूर—
लाएँगे अपने साथ किसी 'लेक्चरार' को !
होती है उनके कूचे में हर रोज़ लूट-मार,
अब तक ख़बर नहीं यह किसी थानेदार को !
नाहक़ तुम्हें है दिरहमो दीनार[१८] की तलाश,
परखो "गदा" तुम अपने दिले-दाग़दार को !

७—अच्छे, ८—ढकोसले, ९—प्रशंसा, १०—पूर्व, ११—पश्चिम १२—घोड़ा, १३—रात-दिन, १४—आनन्द, १५—विरह, १६—शादी १७—लज्जा १८—रुपया।
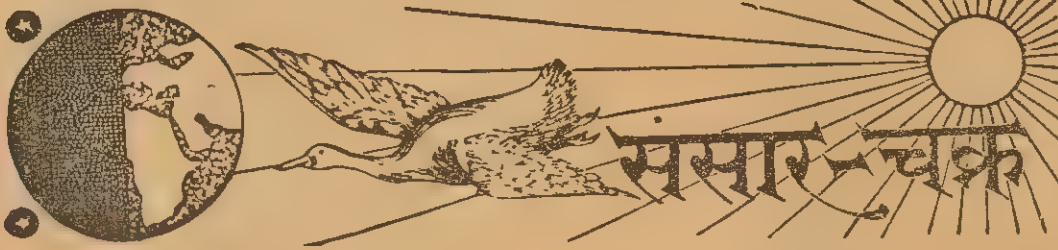
रूस का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

परन्तु अत्याचार निष्फल नहीं गया। ज़ार-शाही के दिन पूरे हो चले थे। अत्याचारों से कुचली हुई, प्राणहीन जाति में भी मानो अलक्ष्य भाव से विप्लव का बीज पड़ गया। रूस के युवक यूरोप के वालटेयर, स्पेन्सर, डार्विन, मिल, कोमत्, रूसो तथा अन्यान्य क्रान्तिवादी लेखकों का साहित्य बड़े चाव से पढ़ने लगे। डीमित्री डान्सकोई, आइवन, पोयारस्की और कोज़ा मेनिन की जीवन-गाथाएँ भी पढ़ी जाने लगीं। इसके कुछ दिन बाद ही ऋषि टॉल्स्टॉय आदि रशियन साहित्यिकों की लेखनियाँ भी उन्हें कोंच-कोंच कर जगाने लगीं। प्रजा के हाहाकार ने भीषण रूप धारण करना आरम्भ कर दिया और अन्त में सब से पहले विद्यार्थियों ने विप्लव का झण्डा बुलन्द किया। इसके बाद अन्यान्य श्रेणी के नवयुवकों ने साथ दिया। 'निहिलिज़्म' और 'अनारकिज़्म' का आविर्भाव हुआ। सन् १८६२ में 'विप्लव-समिति की घोषणा' नाम का एक इश्तहार निकला कि—"रूस की प्रजा को ज़ारवंश के रक्त से अपने पापों का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।" यह इश्तहार मानो रूस की अनुपम भीषण क्रान्ति का मङ्गलाचरण था।

ज़ार ने भी बिना विलम्ब प्रचण्ड दमन आरम्भ कर दिया। सैकड़ों स्कूल, कॉलेज, सण्डे स्कूल और अख़बार बन्द कर दिए गए। कितने ही भले आदमियों को निर्वासन दण्ड-प्रदान किया गया। परन्तु आन्दोलन नहीं रुका। उत्पीड़ित जाति का क्षोभ ज्वालामुखी से निकली हुई 'तरलाग्नि' की भयङ्कर धारा की तरह बह चला था। उसे रोकने की शक्ति किस में थी? अवशिष्ट स्कूलों, कॉलेजों, कारख़ानों और क्लबों में भी राज-शक्ति को संयत करने के सम्बन्ध में तर्क वितर्क होने लगा। साथ ही ज़ार के जासूस भी चक्कर मारने लगे। नतीजा वही हुआ, जो होना चाहिए। फिर निर्वासन, कारादण्ड और मृत्युदण्ड का बाज़ार गर्म हो उठा। प्रजा काँप उठी, चारों ओर 'त्राहि-त्राहि' मच गई, परन्तु विप्लव का दमन न हो सका। बम और रिवॉल्वर द्वारा, सुविधा और सुयोग के अनुसार, राजपुरुषों की हत्याएँ तथा रेलगाड़ियों और सरकारी ऑफ़िसों को उड़ा देने के षड्यन्त्र होने लगे। सैकड़ों युवक देवी स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर जीवनोत्सर्ग करने लगे, हज़ारों साईबेरिया में प्रकाशहीन, निर्जन बनों में जाति के दुर्भाग्य का प्रायश्चित्त करने चले गए।

सन् १८६६ ईस्वी में मास्को की गुप्त समिति का कैरा कोज़फ़ नाम के एक युवक ने ज़ार को पिस्तौल का निशाना बनाया। परन्तु लक्ष्य भ्रष्ट हो जाने के कारण उसका प्राण बच गया। कैरा कोज़फ़ को फाँसी की सज़ा दी गई और समस्त देश के विद्यार्थियों पर कड़ी नज़र रक्खी जाने लगी। जासूसों की काफ़ी भरमार कर दी गई। अत्याचार की मात्रा भी ख़ूब बढ़ा दी गई। परन्तु कोई फल न हुआ। विप्लव दिन दूनी और रात चौगुनी गति से अग्रसर होने लगा।

सन् १८७९ में एक बार फिर ज़ार को मार डालने की चेष्टा की गई, परन्तु सफलता न मिल सकी। क्योंकि उसके जीवन के दिन अभी पूरे नहीं हुए थे। अन्त में सन् १८८१ में एक नवयुवक ने उसे मार डाला!

इसके बाद अन्तिम बार ज़ार निकोलस रूस का भाग्य-विधाता बना। उसने सोचा, दमन की मात्रा अच्छी तरह बढ़ाई नहीं गई थी इसीसे विप्लव-पन्थियों के मन बढ़े हुए हैं। इसलिए एक बार समस्त बल-बूता लगा कर उन्हें कुचल डालना चाहिए। उसके अनुचरों और मन्त्रियों ने भी इस राय की ताईद की। फिर एक बार महा भयङ्कर दमन आरम्भ हुआ। ऐसे-ऐसे अमानुषिक अत्याचार हुए कि जिनका वर्णन नहीं हो सकता। स्त्रियों तक का अपमान होने लगा। रूसी सेना हिंसक पशु की तरह देशवासियों का रक्त बहाने लगा। समस्त रूस में हाहाकार मच गया। साथ ही ज़ार निकोलस को थोड़ी सी सफलता भी प्राप्त हो गई। उसके अत्याचार से निहिलिस्टों का नाश हो गया।

परन्तु किसी दल विशेष के नाश से विप्लव का अन्त नहीं होता। 'निहिलिज़्म' के अवसान के साथ ही 'सोशल डिमोक्रैट' दल की सृष्टि हुई। इन्होंने निश्चय किया कि अब की श्रमिकों द्वारा विप्लव की आग भड़का दी जानी चाहिए। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए "श्रमिक-मुक्ति-समिति" नाम की एक गुप्त समिति की स्थापना हुई। श्रमिकों को उनकी वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान कराया जाने लगा। इसी समय 'विप्लववादी' सोशलिस्टों का भी आविर्भाव हुआ। ये रिवॉल्वर, बम और हत्या के भयङ्कर पक्षपाती थे। इन्होंने भीषण रक्तपात आरम्भ किया। विप्लव आन्दोलन तीव्र गति से चलने लगा।

इसी समय इतिहास-प्रसिद्ध रूस-जापान युद्ध छिड़ा और रूस को बुरी तरह हार खानी पड़ी। इस पराजय में सब से अधिक क्षति रूसी मज़दूरों की हुई थी। इसलिए वे बेतरह खलबला उठे और सरकार के प्रति खुल्लमखुल्ला असन्तोष प्रकट करने के लिए एक दिन सारे देश में श्रमिक हड़ताल मनाई गई और श्रमिकों के एक बड़े भारी दल ने निश्चय किया कि ज़ार निकोलस से इस बात की कैफ़ियत तलब की जाय की उन्होंने क्यों इतना बड़ा युद्ध ठाना था और अब हमारे लिए क्या करना चाहते हैं? वह वृहत्तर श्रमिक-दल ज़ार के महल की ओर अग्रसर हुआ। वह सम्राट के सामने अपना दुःख रोने जा रहा था। परन्तु सम्राट की सेना ने गोलियों से उसका स्वागत किया। हज़ारों श्रमिक सरे-राह हताहत होकर समस्त दुःख-शोक से विमुक्त हो गए।

यह घटना मानो ज़ारशाही के निश्चित पतन की पूर्व सूचना थी। उसने सारे देश में धधकी हुई विप्लव की भीषण अग्नि को प्रचुर ईंधन प्रदान किया। जो अब तक राजनीतिक व्यापार से तटस्थ रहना चाहते थे, उन्होंने भी श्रमिकों से सहानुभूति प्रकट की। विप्लव ने रुद्र मूर्ति धारण की। सरकारी अफ़सरों तथा सरकार के पृष्ठ-पोषकों की ख़ूब ख़बर ली जाने लगी। प्रतिहिंसा के भाव ने श्रमिकों को पागल बना दिया था। इस विप्लव का नेतृत्व 'केप्रस्टलेव्ह' नाम के एक वीर ने ग्रहण किया था। वह सरकारी कर्मचारियों का यमराज था।

अन्त में इस भयङ्कर उत्पात से ज़ार भी घबरा उठा। उसने शासन में सुधार करने की इच्छा से 'डूमा' नाम की एक प्रतिनिधि-सभा का सङ्गठन किया। परन्तु वास्तव में 'डूमा' की सृष्टि रूसियों को धोखा देने की इच्छा से की गई थी। सम्राट ने शासन सम्बन्धी सारा अधिकार अपने हाथ में रक्खा था। ज़ार की इस मूर्खता ने जले पर नमक का काम किया। अब लोगों को मालूम हुआ कि 'डूमा' महज़ 'धोखे की टट्टी' है तो वे और भी असन्तुष्ट हो गए।

ज़ार की आयु के दिन पूरे हो चले थे। सन् १९१५ में, यूरोपियन महासमर आरम्भ होने पर, विप्लववादियों ने सदा के लिए ज़ारशाही का अन्त कर डाला। ज़ार निकोलस सपरिवार मार डाला गया। विप्लववादियों ने उसके कुत्ते तक को जीवित न छोड़ा। उसके साथ ही और भी कितनी ही हत्याएँ हुईं। विप्लववाद ने विजय प्राप्त की। परन्तु इससे कृषकों और श्रमिकों का कोई विशेष उपकार न हुआ। इस महाकाण्ड में उन्होंने जितना रक्त बहाया उसका प्रतिफल उन्हें कुछ भी प्राप्त न हुआ। इसलिए ज़ारशाही का अन्त हो जाने पर भी रूसी प्रजा के असन्तोष का अन्त न हो सका।

रूस के इस अन्तिम महान विप्लव में एक अद्भुतकर्मा महापुरुष शामिल था। वह रूस का त्राता और कृषकों तथा श्रमजीवियों का परम-बन्धु था। उसका आदरणीय नाम था, निकोली लेनिन। उसकी अपार महिमा का वर्णन जड़ लेखनी द्वारा नहीं हो सकता। एक शब्द में वह अवतार था—मूर्तिमान विप्लव था। उसके उच्च आदर्शवाद की कहानी बड़ी लम्बी-चौड़ी है।

उसके विप्लवमय जीवन की रोचक कथा जिन्हें पढ़नी हो, उन्हें सन् १८७० से लेकर १९२४ तक का रूस का इतिहास पढ़ना चाहिए। हम तो यहाँ सूत्र रूप में उसके कार्यों का थोड़ा सा परिचय मात्र प्रदान करेंगे।

रूस में विप्लव की आँधी चल रही थी। हिंसा, हत्या और षड्यन्त्र सीमा पर पहुँच रहा था। चारों ओर निरानन्द का साम्राज्य फैला हुआ था। उसी समय (सन् १८७०) में, एक छोटे से गाँव में संसार के इस अद्वितीय महापुरुष ने जन्म लिया था। उसका पिता किसान था। परन्तु पढ़-लिख कर 'स्कूल-इन्स्पेक्टर' बन गया था। उसकी इच्छा थी बुढ़ौती में विश्राम करने की, इसलिए उसने लेनिन को पढ़ा लिखा कर वकील बनाया। परन्तु लेनिन अपने बड़े भाई अलेक्ज़ेण्डर आइलिच विलनफ़ की मदद से विप्लवपन्थियों विशेषतः विप्लवादी छात्रों से परिचित हो चुका था। उसने क़ानून की पुस्तकें समेट कर रख दीं और सोचने लगा कि क्या यही जीवन का लक्ष्य है। हिन्दुस्तान के वकीलों की तरह देशवासियों के झगड़े में सहायक बन कर माल पैदा करना? इतने में, एक दिन सुना कि बड़े भाई को फाँसी की सज़ा हो गई! उस समय वह केवल अट्ठारह वर्ष का बालक था। उसके कोमल हृदय पर इस घटना का गहरा प्रभाव पड़ा; साथ ही उसे जीवन का लक्ष्य भी मिल गया। वह फ़ौरन् विप्लव की धधकती आग में कूद पड़ा।

उसने तत्कालीन विप्लवपन्थियों की कार्य-प्रणाली तो पसन्द की, परन्तु उनके उद्देश्यों से सहमत न हो सका। इसलिए अपने पूर्ववर्त्तियों के प्रति श्रद्धा प्रकाश करते हुए उनके उद्देश्यों का विरोध करने लगा। छात्रावासों के सिवा कारख़ानों और खेतों को भी उसने अपना कार्य-क्षेत्र बनाया 'श्रमिक-सङ्घ' स्थापित किया, अख़बार निकाला और 'कुलीटोले' (!) में घूम-घूम कर मौखिक प्रचार करने लगा। उसके युक्तिपूर्ण अर्थ-नैतिक प्रबन्ध और राष्ट्रीय समस्या की नई व्याख्या पढ़ कर प्रजातन्त्रवादी नेता चञ्चल हो उठे और अपने मतवाद को इस नई आफ़त से बचाने की चेष्टा करने लगे। परन्तु उसके विचारों की बिजली चमक चुकी थी। 'हड़ताल की मार' से पूँजी-वाद की कमर में दर्द पैदा होने लग गया था। इसी समय उसने 'जुर्माना' नाम की एक पुस्तिका लिखी। उन दिनों रूस के मज़दूरों पर ज़रा-ज़रा सी बात के लिए जुर्माने हुआ करते थे। श्रमिक घबराए हुए थे। इसलिए उस पुस्तिका में लिखे अर्थनैतिक विचारों का मज़दूरों पर काफ़ी प्रभाव पड़ा। उन्होंने इस अन्याय के प्रतिकार के लिए 'हड़ताल' का आश्रय लिया।

परन्तु बहुत परिश्रम करने पर भी लेनिन के अनुगामियों की संख्या मुष्टिमेय की परिधि को पार न कर सकी। इसलिए जिस तरह महात्मा गाँधी ने केवल सोलह साथियों को लेकर दक्षिण अफ़्रिका में महान सत्याग्रह संग्राम छेड़ दिया था, उसी तरह महात्मा लेनिन ने भी अपने अल्प-संख्यक साथियों को लेकर कार्यारम्भ कर दिया। वह निराश होना नहीं जानता था, उसे अपने आत्मबल पर अटल विश्वास था।

ख़ैर, इसी समय पुलिस ने उसे गिरफ़्तार कर के क़ैद कर लिया और दीर्घ काल के बाद जब वह छूट कर लौटा तो उस समय रूस की हालत अच्छी न थी। पुलिस के अत्याचारों के कारण लेनिन-जैसे देशभक्त का एक क्षण भी रूस में ठहरना मुश्किल था। इसलिए जेलख़ाने से छूटते ही उसने यूरोप की यात्रा कर दी। परन्तु थोड़े दिनों के बाद उसे मालूम हो गया कि देश की सेवा देश में रह कर जितनी अच्छी हो सकती है, उतनी विदेश में रह कर नहीं हो सकती, इसलिए वह गुप्त रूप से फिर रूस में आकर रहने लगा। और अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने लगा। परन्तु शीघ्र ही पुलिस ने उसे फिर पकड़ा और अबकी वह आजन्म के लिए साइबेरिया भेजा गया।

उस समय स्वीटज़रलैण्ड यूरोपियन राजविद्रोहियों का प्रधान आश्रय-स्थल था। इसलिए साइबेरिया पहुँचते ही लेनिन ने वहाँ से भाग कर स्वीटज़रलैण्ड चले जाने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया और एक दिन मौक़ा पाते ही निकल पड़ा।

स्वीटज़रलैण्ड पहुँच कर लेनिन ने अन्तर्जातीय मज़दूर-सङ्घ से सम्बन्ध स्थापित किया और दिन-रात उसी की उन्नति और प्रचार में व्यस्त रहने लगा। परन्तु इसके साथ ही रूस के आन्दोलन की प्रगति पर भी उसकी तीक्ष्ण दृष्टि थी। समय-समय पर वह गुप्त रूप से वहाँ अपने सिद्धान्तों का प्रचार भी करता रहा। इसके बाद, सन १९०१ में, उसने 'इस्क्रा' (चिनगारी) नाम का एक अख़बार निकाला और उसकी हज़ारों प्रतियाँ रूस के श्रमिकों और किसानों में वितरित होने लगीं। वास्तव में इस पत्र के सहारे लेनिन ने रूस के किसानों और मज़दूरों में नवजीवन का सञ्चार कर दिया। उसके अश्रान्त परिश्रम की सफलता उसे प्रत्यक्ष रूप से दृष्टि-गोचर होने लगी। परन्तु इसके साथ ही उसके सिद्धान्त के विरोध ने भी प्रबल रूप धारण किया। प्रतिद्वन्द्वी नेताओं ने अपना सारा बल लगा कर उसे हीन, ढोंगी और बकवादी प्रतिपादित करने की चेष्टा की। यहाँ तक कि उसके व्यक्तित्व और चरित्र पर भी ख़ूब आक्रमण हुए। परन्तु साथ ही लेनिन की आग उगलने वाली लेखनी भी चुप न थी। उसने अकेले ही अपने तीक्ष्ण शब्द-बाणों द्वारा सारे प्रति-द्वन्द्वियों को जर्जरित कर दिया। उन्होंने उसे चरित्र-हीन बताया तो लेनिन ने भी उन्हें धनतन्त्रवादी, प्रभुत्वकामी, सुविधावादी और नरखादक आदि विशेषणों से विभूषित करना आरम्भ किया। उस समय रूस में 'सोशल रिमोल्यूश्नरी' दल का बड़ा ज़ोर था। वे कुछ लोगों को उत्तेजित कर एक विद्रोह करा देने का मौक़ा देख रहे थे। लेनिन ने इसका विरोध आरम्भ किया। उसने लोगों को समझाया कि यह विद्रोह व्यर्थ होगा। बात भी वही हुई। राजशक्ति ने अल्प प्रायस द्वारा ही विद्रोहियों को कुचल डाला।

इस समय रूस के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं में दो दल हो गए थे,—(१) 'मानशेविक' (बहु-संख्यक) और (२) 'बोलशेविक' (अल्प-संख्यक)। लेनिन इसी दूसरे दल का आविष्कारक, अनुयायी और पृष्ठपोषक था। सन् १९०३ में गुप्त रूप से बोलशेविक कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन हुआ। रूस के कितने ही प्रतिभाशाली नेता इससे पहले ही लेनिन के पक्षपाती हो गए थे। परन्तु लेनिन का कठोर आदर्शवाद उन्हें सह्य न था। इसलिए कुछ दिनों के बाद वे अलग होकर फिर 'मानशेविकों' में जा मिले। फिर वही सुविधावाद और राज-विधान-सङ्गत अर्थनैतिक आन्दोलन आदि की बातें होने लगीं। यहाँ तक अन्त में उसके अन्तरङ्ग मित्रों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। परन्तु लेनिन अपने सिद्धान्तों पर पर्वत की तरह अचल-अटल भाव से डटा था। उसने साथियों से कहा—"परवाह नहीं, तुम मुझे छोड़ कर चले जाओ। मैं अकेला ही अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए काफ़ी हूँ।" साथियों ने कहा—"हमारे हट जाने पर लेनिन मुर्दा है! उसकी बात कोई नहीं सुनेगा।" लेनिन ने दृढ़ स्वर से उत्तर दिया—"सब के अन्त में जो हँसता है, उसी की हँसी सार्थक होती है। देखा जाय, देश किस की आवाज़ सुनता है?"

शीघ्र ही मानशेविकों की परिस्थिति डावाँडोल हो गई। कभी वह एक क़दम आगे बढ़ाते और कभी दो क़दम पीछे हट जाते। इस समय लेनिन का 'इस्क्रा' अख़बार उन्हीं मानशेविकों के अधि-कार में था। जो एक दिन आग उगलता था, वह अब बर्फ़ बन गया था। इसलिए लेनिन ने 'यूपीरियड' (Yperiod) नाम का एक दूसरा अख़बार निकाला। देश-त्यागी रूसियों तथा विदेशस्थ रूसी छात्रों की दी हुई भीख के भरोसे यह पत्र चलने लगा। यह था तो छोटे ही आकार-प्रकार का, परन्तु बड़े-बड़े दिग्गजों को विचलित कर दिया। लेनिन के प्रति-द्वन्द्वी प्रधान नेताओं का प्रभाव ख़ाक में मिल गया।

सन् १९०५ में जब सारे रूस में बोलशेविकों की तूती बोलने लगी तो 'सोशलडिमाक्रेट' दल वाले लेनिन और उसके अनुयायियों पर सख़्त नाराज़ हो गए। बड़े ज़ोर-शोर से बोलशेविकों का विरोध आरम्भ हुआ। सन् १९०५ में 'सोशल डिमोक्रेटिक लेबर-पार्टी' का तीसरा अधिवेशन हुआ तो लेनिन भी गुप्त रूप से उसमें शामिल हुआ। उसने मानशेविकों को समझाने की चेष्टा की। परन्तु कोई फल न हुआ। उसके एक पुराने साथी ने समझौता कर लेने की सलाह दी। परन्तु अपने उच्च आदर्श को बिगाड़ कर वह समझौते के लिए राजी नहीं हुआ।

सन् १९०५ में फिर विद्रोह हुआ और राज शक्ति द्वारा कुचल डाला गया। परन्तु अन्त में मानशेविकों ने बड़े विलाप-कलाप के बाद स्वीकार किया कि श्रमिक बोलशेविकों के हाथों में हैं और देश में अब मानशेविकों का नेतृत्व नहीं रहा।

विद्रोह व्यर्थ होने पर लेनिन को कोई चिन्ता नहीं हुई। वरन् वह इस घटना से प्रसन्न हुआ और भावी भयङ्कर क्रान्ति की तैयारी करने लगा। इसी समय मौक़ा देख कर उसने गुप्त रूप से 'सोवियट सङ्घ' की स्थापना भी कर डाली। ज़ार-शाही की नज़र बचा कर उसके कई गुप्त अधि-वेशन हुए। कुछ लोग 'सोवियट' का अर्थ श्रमिकों के अभाव, अभियोगों को दूर करने वाली संस्था समझे बैठे थे। परन्तु लेनिन उसे एक महान राष्ट्रीय संस्था समझता था। इस समय लेनिन को फिर रूस छोड़ना पड़ा। क्योंकि पुलिस को मालूम हो गया था कि वह यहीं है। फलतः प्रचार का कार्य अपने अनुयायियों को सौंप कर

वह फिर यूरोप चला गया। इसके सिवा सन् १९०३ के विद्रोह की व्यर्थता के कारण रूस में कुछ अवसाद भी आ गया था। ज़ार के अत्याचारों से पुराने दल के लोग तितर-बितर हो गए थे। केवल थोड़े से बोलशेविक स्वतन्त्रता का महामन्त्र जपते-जपते सुअवसर की प्रतीक्षा करने लगे। लेनिन अपने मतवाद के अनुसार अर्थनैतिक प्रबन्ध और पुस्तिकाएँ लिखने लगा और सैकड़ों नवयुवक साथी उसके मत के प्रचार में लगे। इधर ज़ार की सरकार ने भी निर्मम भाव से स्वतन्त्रतावादियों को कुचलना आरम्भ कर दिया था। हत्या, निर्वासन और कारादण्ड की धूम सी मच गई थी। इस तरह प्रायः पाँच वर्ष बीत गए।

सन १९१०-११ में फिर आशा के कुछ चिन्ह दिखाई पड़े। लेना की सोने की खानों में काम करने वाले मज़दूरों ने हड़ताल कर दी थी। इससे नाराज़ होकर सरकार ने उन पर गोली चलाने की आज्ञा दी। कितने ही मज़दूर मार डाले गए। इसीलिए एक बार फिर मज़दूर जाग उठे। लेनिन भी सुयोग पाकर पेट्रोग्राड के निकट गैलीलिया नाम के स्थान में आकर रहने लगा। बोलशेविक धीरे-धीरे शक्ति सञ्चय करने लगे। प्रचार-कार्य के लिए 'प्रविदा' नाम का एक पत्र भी निकलने लगा। लेनिन का साम्यवाद धीरे-धीरे रूस की रगों में प्रवेश करने लगा। सन् १९१३ में पेट्रोग्राड की एक महती श्रमिक सभा ने बहु-सम्मति से लेनिन का 'बोलशेविकवाद' स्वीकार कर लिया। उस समय लेनिन बीमार था। पेट्रोग्राड से सैकड़ों कोस की दूरी पर रोग-शय्या पर पड़ा हुआ जब उसने यह शुभ-सम्वाद सुना तो उसकी आँखों से आनन्द के आँसू बहने लगे। इस घटना के कुछ दिन बाद ही समस्त रूस के श्रमिकों ने निर्वासित और लाञ्छित लेनिन का नेतृत्व स्वीकार कर लिया।

यूरोपीय महासमर के समय लेनिन अपने कुछ विश्वासी अनुयायियों के साथ गैलीलिया के एक छोटे से गाँव में था। उसे आशा थी कि समस्त संसार के श्रमिक नेता इस महासमर को गृह-विवाद के रूप में परिणत कर। राष्ट्र की बागडोर धनवानों के हाथों से छीन लेंगे। उसने मज़दूरों को सलाह दी कि वे इस युद्ध में सहायता न दें। परन्तु किसी ने उसकी बातों पर ध्यान न दिया। यहाँ तक कि खास रूस के श्रमिक नेता भी उसके शत्रु बन गए। उसके एक सहकर्मी ने यहाँ तक कह डाला कि "तुम महा अनर्थ कर रहे हो। श्रमिकों को गृह-कलह की सलाह देकर उनका सत्यानाश कर डालना चाहते हो। इस समय अगर तुम रूस में होते तो तुम्हें इसका कटु फल चखना पड़ता।" लेनिन ने शान्त भाव से उत्तर दिया—"तुम्हें मानव-जाति के भविष्य का ज्ञान नहीं है। इसीसे ऐसी बातें कर रहे हो।"

अन्त में महासमर समाप्त हुआ। अर्थनैतिक सङ्कट के कारण चारों ओर दरिद्रता फैल गई। यह लेनिन के लिए शुभ अवसर था। उसने फ़ौरन तीसरे अन्तर्जातिक सङ्घ की प्रतिष्ठा की। जर्मनी, इटली तथा अन्यान्य स्थानों के बहुत से समाजतन्त्रवादी नेता इस सङ्घ में शामिल हुए। निश्चय हुआ कि समस्त यूरोप में अन्तर्जातिक विप्लव कराया जाय। लेनिन के सहकर्मियों की समझ में आ गया कि यह महावज्र एक दिन साम्राज्यवाद और प्रजातन्त्रवाद आदि को चूर्ण-विचूर्ण करके दम लेगा। इसलिए वे भी सहमत हो गए।

लेनिन अब तक स्वीटज़रलैण्ड में था। परन्तु सन् १९१७ में वह फिर रूस लौट आया। महायुद्ध के कारण उस समय रूस की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई थी। दरिद्रता सीमा पार कर गई थी और लोग भूखों मर रहे थे। अवसर देख कर 'मानशेविक' और 'सोशल डीमोक्रेट' दल वालों ने विद्रोह आरम्भ कर दिया। ज़ारशाही का पतन हुआ और देश का शासन-सूत्र प्रजातन्त्रवादियों के हाथों में चला गया। लेनिन बड़ी गम्भीरता से परिस्थिति का अध्ययन कर रहा था। उसकी इच्छा थी कि अवसर मिलते ही देश का शासन-सूत्र श्रमिकों के हाथों में दे दिया जाय। उसने अपने अन्यान्य सहकर्मियों को भी बुला लिया। इसी समय सेनापति क्रेनेस्की अपनी सेना के साथ जर्मन सीमान्त से लौट कर पेट्रोग्राड आया। मध्य श्रेणी के विप्लववादियों ने बड़े समारोह के साथ देश का शासन-भार अपने कन्धों पर लिया। रूस के प्रत्येक नगर में रक्त-स्रोत बह चला। लेनिन सुयोग की प्रतीक्षा में था। मानशेविकों ने बोलशेविकों से सुलह की बातचीत की। परन्तु लेनिन तथा उसके अनुयायियों ने इन्कार कर दिया। इसलिए मानशेविक और मध्य श्रेणी के विद्रोही मिल कर बोलशेविकों का मूलोच्छेद करने पर उतारू हो गए। बहुत से बोलशेविक मार डाले गए। विप्लवियों और बोलशेविकों में भयङ्कर सङ्घर्ष आरम्भ हुआ। क्रेनेस्की ने लेनिन को पकड़ लेने की आज्ञा दी। इसलिए लेनिन ने गुप्त रूप से बोलशेविकों को भड़काना शुरू किया। गृह-कलह सीमा पर पहुँच गया। देश का कारबार बन्द हो गया। बैङ्कों ने दिवाला बोल दिया। अन्न महँगा हो गया। समस्त देश में आतङ्क छा गया। परन्तु अन्त में विजयश्री बोलशेविकों को प्राप्त हुई। लेनिन की महान शोणित-साधना सफल हुई। मध्य श्रेणी के विप्लववादी हार कर भाग गए।

इस महाविप्लव में लेनिन ने अपने अपूर्व साहस, दृढ़ता और विचित्र व्यक्तित्व का परिचय दिया था। इस समय केवल शत्रु ही उसके विरोधी नहीं थे, वरन् अधिकांश बोलशेविक प्रतिनिधि भी उसकी जड़ खोद देना चाहते थे। परन्तु इस भयङ्कर परिस्थिति में भी वह विचलित न हुआ। फिर तो समस्त देश ने एक साथ ही अपना मस्तक उसके चरणों पर रख दिया। उसका एक-एक शब्द वेद-वाक्य की तरह माना जाने लगा। इस विद्रोह में वह घायल होकर शय्याशायी हो गया था, परन्तु उसका दिमाग़ उस वक़्त भी काम कर रहा था।

इस राष्ट्रीय महायज्ञ में आरम्भ से अन्त तक छाया की भाँति जिसने लेनिन का साथ दिया था, वह उसकी अलौकिक चमताशालिनी धर्मपत्नी मादम कनस्टाण्टी नोवा थी। वास्तव में नोवा उसकी सच्ची सहधर्मिणी थी। उसे ईश्वर ने कमाल का साहस और विचित्र शक्ति दी थी। उसके कार्यों का, उसकी शक्ति का और उसकी पतिभक्ति का सम्यक परिचय प्रदान करना सहज नहीं। वह देवी थी, लेनिन की मूर्तिमती शक्ति थी। उसमें बहुत से अलौकिक और असाधारण गुण थे। हमारा तो यह दृढ़ मत है कि नोवा के कारण ही लेनिन को शीघ्र सफलता प्राप्त हो सकी थी।

अस्तु। विद्रोहियों के परास्त हो जाने पर लेनिन की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ गई। क्योंकि एक तो उस समय रूस की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई थी और दूसरे सारा संसार बोलशेविकों का विरोधी था। ख़ास कर, यूरोप के साम्राज्यवादी तो उसे फूटी आँख भी देखना नहीं चाहते थे। परन्तु इन पहाड़-से विघ्नों की ओर भ्रूक्षेप न करके लेनिन ने महात्मा कार्ल मार्क्स के आदर्श पर 'सोवियट रूस' का सङ्गठन आरम्भ कर दिया। ध्वंस का विकराल देवता अब निर्माण का वरद पाणि पसार कर नवीन उद्यम और नवीन उत्साह के साथ आविर्भूत हुआ। रूसी राष्ट्र ने उसे अपना जन-नायक निर्वाचित किया। लेनिन ने घोषणा की कि हमने राजशक्ति और पूँजीवाद को परास्त किया है, परन्तु अभी हमें अपनी कमज़ोरियों और अयोग्यताओं से लड़ना बाक़ी है। इसलिए हमें यथेष्ट दृढ़ता और साहस से काम लेना चाहिए। सन् १९०४ में जिस महान आदर्श को लेकर हम कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे; उससे हम तिल-मात्र भी विचलित न होंगे। राष्ट्र ने सिर झुका कर उसकी यह आदेशवाणी स्वीकार की। महात्मा कार्ल मार्क्स की कल्पना कार्य में परिणत हुई। रूस की ज़मीन रूस के किसानों को मिली। कारख़ानों की आय मज़दूरों के लिए रही। कोई किसी का मालिक नहीं। किसी पर किसी का प्रभुत्व नहीं। न कोई ग़रीब, न कोई अमीर; न कोई लाट साहब, न कोई चपरासी। सभी भाई-भाई। भेद-भाव का कहीं नामोनिशान नहीं। यद्यपि कुछ लोग कहते हैं कि यह व्यवस्था चिरस्थायिनी न होगी। न सही! संसार में चिरस्थायिनी है कौन सी वस्तु? अस्थिरता ही तो इसकी विशेषता है, परन्तु इस समय तो सारा संसार रूस की ओर समुत्सुक दृष्टि से देख रहा है। सभी लेनिन के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ देश के कृषकों और मज़दूरों की अवस्था सुधारने की फ़िक्र में हैं। इसे कौन नहीं स्वीकार करेगा कि मेहनत का फल मेहनत करने वाले को ही मिलना चाहिए। बस, यही तो बोलशेविज़्म है। संसार विरोध करता रहे। परन्तु लेनिन और लेनिन की महान कीर्ति को विश्व के पर्दे से पोंछ कर फेंक देना सम्भव नहीं है।

ख़ैर, सन् १९१८ से लेकर १९२४ तक परिश्रमपूर्वक नवीन राष्ट्र का निर्माण कर, मित्रों को आनन्द और शत्रुओं को आतङ्क प्रदान कर, मानव-महत्व का गगनचुम्बी विजय-स्तम्भ इतिहास के वक्षस्थल पर स्थापित कर, रूस से दीनता और दरिद्रता का नामोनिशान मिटा कर, चिर-पददलित निराश्रय रूसी किसानों और मज़दूरों को मुक्ति प्रदान कर तथा सुयोग्य साथियों के हाथों में राष्ट्र की बागडोर देकर मानव-मित्र लेनिन ने सन् १९२४ में महाप्रस्थान किया। रूस ने शोक-गम्भीर भाव से अपने महान नेता को श्रद्धाञ्जलि प्रदान की और समस्त संसार के निपीड़ित और निर्यातित कृषकों और श्रमिकों ने उसके लिए शोकाश्रु विसर्जन किए। लेनिन का पार्थिव शरीर अब नहीं रहा, परन्तु वह जीता है और सदा जीता रहेगा।

* * *

तूफ़ाने-ज़राफ़त

कभी भिश्ती के बच्चे को शहे-काबुल बनाते हैं !

[श्री० "आजिज़" लखनवी]

वफ़ा की छत से, जब उलफ़त का कनकौआ बढ़ाते हैं,
यह भोली शक्ल वाले, ज़ुल्म का लङ्गड़ लगाते हैं !
किसी दिन जब मियाँ मजनूँ हमारे सर पर आते हैं,
तो अच्छी शक्ल वालों को भी हम काला बताते हैं !
शिकायत करते हैं यह वह, हर-इक से बावफ़ा बन कर,
गले जिनके दबाता हूँ, वही आँखें दिखाते हैं !
नहीं तो कौन, किसके वास्ते ज़र[१] सर्फ़ करता है,
ख़ुदा मुर्दों को रक्खे, जो हमें हलवा खिलाते हैं !
कभी धुलवाते हैं सड़कों की नाली बाप से उसके,
कभी भिश्ती के बच्चे को, शहे-[२]काबुल बनाते हैं !
नहीं मालूम टुकड़ा कौन सा पुरसाज़ है इसमें,
जो मेरा हाले-दिल सुन कर, सितमगर नाच जाते हैं !
कहा आशिक़ से दिलने, पाकर उनको महवे-आराईश
बना अब तू भी दाढ़ी-मोछ, वह ज़ुल्फ़ें बनाते हैं !
वह मारें या जिलाएँ, मुझको 'आजिज़' जान तो छोड़ें,
यह मर्ग[३] और ज़ीस्त[४] की रस्सी में क्यों झूला झूलाते हैं !

* * *

जान हारेंगे, जी न हारेंगे !

[महाकवि "अकबर" इलाहाबादी]

इसमें अक्स आपका उतारेंगे,
दिल को अपने यूँही सँवारेंगे !
बहस में मौलवी न हारेंगे,
जान हारेंगे, जी न हारेंगे !
हमसे करती है यह बहुत ग़मज़े[५],
हम भी दुनिया पे लात मारेंगे !
आप नाहक़ पे और हम हक़ पर,
आप से हम कभी न हारेंगे !
इश्क़ कहता है लुत्फ़ होंगे बड़े,
हिज्र कहता है, जान मारेंगे !
लीजिए जान है यही जो ख़ुशी,
कीजिए ज़ुल्म दम न मारेंगे !
मुब्तिलाए-बला तो हो ग़ाफ़िल,
यह भी अल्लाह को पुकारेंगे !
दिल न दूँगा मैं आपको हर्गिज़,
मुफ़्त में आप जान मारेंगे !
दिल की अफ़सुर्दगी[६] न जाएगी,
हाँ वह चाहेंगे, तो उभारेंगे !
लाए भी तो ख़ुदा कहीं वह घड़ी,
कहते हैं तुमको ख़ूब मारेंगे !
पन्द[७] "अकबर" की देंगे क्या नासह[८],
गुल को क्या बाग़वाँ सँवारेंगे ?

* * *

१—रुपया, २—बादशाह, ३—मौत, ४—ज़िन्दगी, ५—हाव-भाव, ६—उद्विग्नता, ७—शिक्षा, ८—शिक्षक ।

दम बन्द है और ज़बाँ खुली है

[महाकवि "अकबर" इलाहाबादी]

कहीं उर्दू में हिन्दी में जरे नज़र,
वही अच्छा है, जो गिनना मनी है !
मेरे नज़दीक तो बेसूद यह बहस है,
मियाने "हमदमो" "चिन्तामनी" है !
मिल का आटा है, नल का पानी है,
आबो-दाने की हुक्मरानी है !
एक अदा से कहा मिसों ने "कम ऑन",
तीर की मुझसे अब रवानी है !
मानी की गिरह कहाँ खुली है,
अलफ़ाज़ हो का दुकाँ खुली है !
हर वाह की तह में है यहाँ आह ;
दम बन्द है और ज़बाँ खुली है !
यादे-हक़ दिल से दूर कर न सके,
मुझ से यह बुत ग़ुरूर कर न सके !
मुझको तो बस में कर लिया बेशक,
हक़ को राज़ी हुज़ूर कर न सके !
ले-ले के क़लम के लोग भाले निकले,
हर सिम्त से बीसियों रिसाले निकले !
अफ़सोस कि मुफ़लिसी ने छापा मारा,
आख़िर अहबाब के दिवाले निकले !

* * *

उनको अपनी लीडरी से काम है !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

न समझो बात के अपने धनी हैं,
वही 'सपरू' वही "चिन्तामनी" हैं !
ज़माना जानता है इसको "बिस्मिल"
फ़क़ीरी में भी हम दिल के ग़नी हैं
क़ैदख़ाने में भी है 'ए०' 'बी०' 'सी०'
गोया कॉलिज की है कोई डिगरी,
बैठो चुपचाप बस यही कह कर,
वाह रे बात दौरे-इङ्गलिश की !
वह बोले अगर ज़ुबाँ खुली है,
क़ानून की भी दुकाँ खुली है !
"बिस्मिल" न रुकेगी अब यह हर्गिज़,
महफ़िल में मेरी ज़बाँ खुली है !
हम यह तरके-क़ुसूर कर न सके,
दिल को दुनिया से दूर कर न सके !
सब से अकड़ा किए मगर "बिस्मिल"
मौत से कुछ ग़ुरूर कर न सके !
नाम हो जाने से उनको काम है,
रात-दिन यह फ़िक्र सुबहो-शाम है !
काम से कुछ भी उन्हें मतलब नहीं,
उनको अपनी लीडरी से काम है !

* * *

"तुम्हारा पेट क्या भरता नहीं अब चार आने में ?"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

यह कह कर उज्र करते हैं वह तनख़्वाहें बढ़ाने में,
तुम्हारा पेट क्या भरता नहीं अब चार आने में ??
कभी मैं लिख नहीं सकता, कभी तुम सुन नहीं सकते,
वह दर्द-आमेज़ बातें हैं, मेरे दिल के फ़िसाने में ।
जो बङ्गलों में उछलते-कूदते हैं बढ़ के बन्दर से,
वही दरबार वह करने लगे, क्यों शामियाने में ।
ख़ुदाई में हमारा ज़िक्र अब कोई नहीं करता,
हमारा नाम रौशन था, कभी सारे ज़माने में ।
यह सुन रक्खो कि आदत है जिन्हें आज़ाद रहने की,
किसी सूरत से रह सकते नहीं वह क़ैदख़ाने में ॥
ख़ुद अपने मुँह से तो मिट्ठू-मियाँ बनना नहीं आता,
ज़माना जानता है इसको, हम क्या थे ज़माने में ।
हमारी जान जाती है, तो जाये ग़म नहीं इसका,
मज़ा आता है उन्हें "बिस्मिल" उन्हें बिस्मिल बनाने में ।

* * *

वह सबको खींचते हैं पॉलिसी से अपनी टोली में !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

मिलेगा कोई अब क्या, काँग्रेस वालों की टोली में
वह कहते हैं उड़ा देंगे, तुम्हें हम एक गोली में
ख़ुदा की शान उनको, हो गया अब शौक़ 'मोटर' का
सफ़र करते थे जो पहले 'मियाना' और 'डोली' में
कोई 'मिस्टर' के यह रङ्गे-मुहब्बत का असर देखे !
'मिसें' कमसिन से मिलने जा रहे हैं आज होली में !
जो सच पूछो, तो मतलब कुछ न मैं समझा, न तुम समझे
ख़ुदा जाने, वह क्या क्या कह गए, आज अपनी बोली में
वह कहते हैं, तुम्हारा नाम 'ऑनर लिस्ट' में निकले
अगर मिल जाओ सच्चे दिल से, आकर मेरी टोली में
शिकम में दर्द हो तो, 'डॉक्टर झा' से मिलो चल कर
अभी अच्छा किए देते हैं, तुमको एक गोली में
इडीटर हो, कि लीडर हो, पिलीडर हो, कि मिस्टर हो
वह सबको खींचते हैं, पॉलिसी से अपनी टोली में
वह क़ातिल दिल से तो मिलता नहीं ऐ हज़रते 'बिस्मिल'
दिखाने के लिए यों ही गले मिलता है होली में

* * *

है उनके मुँह पे लगा कोलतार होली में

[श्री० "बेढब" बनारसी]

गुलाबजान को करते हैं प्यार होली में,
कहीं गले का न हो जाय हार होली में !
हमारी राय में पक्के वही खिलाड़ी हैं,
बने हुए हैं रँगे जो सियार होली में !
किसी को नारा जो देखो तो वैद जी बोले,
निकाल डालूँगा दिल का बुख़ार होली में !
जो अपना मुँह लिए लौटे हैं आज लन्दन से,
है उनके मुँह पे लगा कोलतार होली में !
वह खेलते हैं ज़माने से ख़ून के अब होली,
है उनके सर पे जो होली सवार होली में !
गले न मिल सके, थी भीड़ मिलने वालों की,
हम उनके घर पे गए बार बार होली में !
कुछ ऐसे ढब से मिले, उनसे हम कहें "बेढब",
कि ख़ुद गले वह मिले बार-बार होली में !

* * *

तूफ़ाने-ज़राफ़त

अपनी धोती पर भी, साया पड़ गया पतलून का !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

यह जवाब आया है, "लॉ कॉलिज" से टेलीफ़ून का,
याद करता हूँ सबक़, मैं रात-दिन क़ानून का।
रङ्ग-क्यों चल कर नहीं. तुम देखते क़ानून का,
आज सुनते हैं, "सेशन" में "केस" होगा ख़ून का।
फाग गाता हूँ, सरे-दर्बार आज़ादी के साथ,
मैं नहीं पाबन्द होली में, किसी क़ानून का !
रङ्ग-बेरङ्गी से, अब इन्साफ़ होता ही नहीं,
क्या समझ कर मैं करूँ, दावा किसी पर ख़ून का ?
वह यह कहते हैं, कि है भूला हुआ "लीडर" इसे,
"पानियर" को याद है, सारा सबक़ क़ानून का।
रो रहे हैं आज मन्दिर में, यह कह कर बरहमन,
अपनी धोती पर भी, साया पड़ गया पतलून का।
मुतमइन[1] होकर, कोई अब साँस ले सकता नहीं,
इस तरह गर्दन में फन्दा पड़ गया क़ानून का।
तेग़े[2]-क़ातिल से, गले मिल-मिल के होली खेल ली,
सुर्ख़रू[3] "बिस्मिल" को लाज़िम है कफ़न भी 'टून' का।

१—चैन से, २—तलवार, ३—भाग्यशाली।

* * *

फँसाना चाहती है क्या कोई चण्डूल होली में ?

[हज़रत "ज़ाहिद" इलाहाबादी]

जला डालें न स्टूडेण्ट मेज़-स्टूल होली में,
इसी से बन्द हो जाते हैं सब स्कूल होली में !
समझ ही में नहीं आता कि यह त्यौहार कैसा है,
कहीं पानी, कहीं कीचड़, कहीं है धूल होली में !
तअज्जुब क्या अगर बुलबुल तराने ऐश के छेड़ें,
चमन में फूल भी फूले हैं पीकर फूल होली में !
मिसे-कमसिन जो बन ठन कर सिविल लाइन में फिरती है,
फँसाना चाहती है क्या कोई चण्डूल होली में ?
यह गोला भङ्ग का है या है मोतीचूर का लड्डू,
बड़े आए बनाने आप हमको 'फ़ूल' होली में !
इरादा है कि अब इस रङ्ग में लिक्खा करूँ मैं भी,
ग़ज़ल हो जाय ऐ "ज़ाहिद" जो यह मक़बूल होली में !

* * *

साहब का बटलर हूँ !

[श्री० देवीप्रसाद गुप्त "गुलज़ार" बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

दिल में है कहूँ मैं भी तुम सा हूँ आदमी,
कहते हैं मगर साहब 'नेटिव', तो क्या कहूँ ?
साहब जो करें, है वही क़िस्मत का फ़ैसला,
माना मैं ख़तावार हूँ, 'नेटिव' हुआ मैं क्यों ?
उन्हें कुत्ते की सोहबत में मज़ा कुछ आ ही जाता है,
मगर 'नेटिव' की बातों में उन्हें क्या लुत्फ़ आता है ?
कहा मैंने कि हूँ 'नेटिव' मगर देखो कलक्टर हूँ,
वह बोला चुप रहो ! गोरा हूँ, गो साहब का बटलर हूँ !

मक़्तल में होली है !

[अमीर-उश्शोरा जनाब "अमीर" लखनवी]

अजब आलम है उसका वज़्अ सादी शक्ल भोली है,
खुपी जाती है दिल में क्या रसीली नर्म बोली है ?
अदाएँ खेलती हैं रङ्ग, तलवार उसने तोली है,
लहू की चलती हैं पिचकारियाँ, मक़्तल[1] में होली है!
बहार आई चमन होता है मालामाल दौलत से,
निकाला चाहते हैं ज़र गिरह गुञ्चों[2] ने खोली है !
ख़फ़ा क्यों हो जो आवाज़ें कसे आशिक़ ने ग़ैरों पर,
यह आज़ादों की बातें हैं यह उनकी बोली-ठोली है!!
नज़र-बाज़ी से जो मिलती है, लज़्ज़त दिल में रखते हैं,
तेरे दीदार के भूखे फ़क़ीरों की यह झोली है !
अदा ही से तेरी मरता है जो मरता है दुनिया में,
क़ज़ा कहते हैं जिसको, वह इसी साँचे की गोली है
वह कहते हैं कि हम आँखों में सब को ताड़ लेते हैं !
मुहब्बत सारी दुनिया की, इसी काँटे में तोली है !
गिलौरी खाई उस ग़ुञ्चा-दहन ने तो यह मुस्काए—
कि है जो फूल गुलशन में, मेरे पानों की ढोली है !
ख़ुशामद ऐ दिले-बेताब इस तस्वीर की कब तक,
यह बोला चाहती है, पर न बोलेगी, न बोली है !
सिवा तेरे किसी का आईने ने मुँह नहीं देखा,
तुझे देखा है जब से, आरसी ने आँख खोली है !
तसौव्वर[3] में भी उनको खींचता हूँ तो वह कहते हैं,
मसक जाए न ओ बेदर्द ! नाज़ुक मेरी चोली है !!
"अमीर" इस बेवफ़ा दुनिया की सूरत पर न तुम जाओ,
बड़ी अय्यार है, मक्कार है, ज़ाहिर में भोली है !!!

* *

यहाँ मस्तों की टोली है

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

दमे-तक़रीर[4] आपस की गिरह उस मिस ने खोली है,
तअज्जुब है कि दिल है सख़्त, लेकिन नर्म बोली है !
बड़े अन्दाज़ से तलवार अब क़ातिल ने तोली है,
लहू की नदियाँ बह जाएँगी, मक़्तल में होली है !
जो "सर मैकल ओडायर" पी के बेपर की उड़ाते हैं,
उन्होंने भी बजाए बादह,[5] क्या अफ़्यून घोली है ?
सब उसको इण्डियन लेडी पर अब तरजीह देते हैं,
मिसे-लन्दन की सूरत मोहनी है, शक्ल भोली है !
नए फ़ैशन की बीबी काम बस रखती है जाकट से !
उसे इसकी ख़बर मुतलक़ नहीं, क्या चीज़ चोली है !
सँभल कर पाँव रखिए मैकदे में हज़रते ज़ाहिद[6] !
उछाली जायगी पगड़ी, यहाँ मस्तों की टोली है !
सभा वाले पशेमाँ हो के फ़ौरन बैठ जाएँगे,
नहीं इसकी ख़बर शायद, ज़बाँ हमने भी खोली है !
उन्हें 'टी-पार्टी' दें तो बिठाएँ कोच-कुर्सी पर,
यहाँ तो टाट का टुकड़ा है या टूटी खटोली है !!
भला मोटर के आगे कौन इन चीज़ों को पूछेगा ?
नज़र में हेच अब अगला 'मियाना' और 'डोली' है !
एडीटर हों कि लीडर, सब निशाना बन गए इसके !
बड़ी चलती हुई क़ानून के साँचे की गोली है !!
किसी क़ातिल का तार आया है, मेरे पास यह "बिस्मिल"
गले मिल जाओ ख़ञ्जर से कि अब मक़्तल में होली है॥

१—वधवेदी, २—अधखिली कलियाँ, ३—प्रेम-चिन्तन, ४—बातचीत के सिलसिले में, ५—शराब, ६—धर्मात्मा।

मोल बाज़ार से ले आए हैं गुड़ की भेली

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

हम से बङ्गले पे यह कहते रहे मिस्टर "बेली"
"पानियर" आप पढ़ें शौक़ से दिल से "डेली"[1]?
उनका क़ानून, इशारों से चलता है यूँही,
जिस तरह बैल को कोल्हू में चलाए तेली !
एक साहब को हमें आज "डिनर"[2] देना है,
मोल बाज़ार से ले आए हैं गुड़ की भेली !
वह यह कहते हैं, कि कुछ भी नहीं मिलने वाला,
आपने आके यहाँ मुफ़्त की ज़हमत झेली !
अब नज़र आते हैं मुझको नए "फ़ैशन" के गुरू
कोई चेला लिए फिरता है, तो कोई चेली !
धूम हो जाय ज़माने में जनाबे "सहगल"
आप अख़बार निकालें कोई ऐसा डेली !
आपने अपने अकड़ने का नतीजा देखा,
सब से घर बैठे ज़माने की अदावत ले ली !
सर उठाना कहीं दुशवार न हो जाय हमें,
रोज़ क़ानून की है मुल्क में रेला-पेली !
धाक मक़्तल[3] में बँधी ख़ूब जनाबे "बिस्मिल"
हमने भी ख़ञ्जरे-क़ातिल से वह होली खेली !

१—दैनिक, २—दावत, ३—वध-गृह।

*

सारी चीज़ें बिक गईं, अब घर में कल नीलाम है !

[जनाब "गदा" साहब दरियाबादी]

इश्क़बाज़ी का जहाँ में आज यह इनाम है,
सारी चीज़ें बिक गईं, अब घर में कल नीलाम है !
क़ब्रे-आशिक़ पर मुनादी, हो रही है सुबह से,
बी-हँसा ख़ानम की डिगरी में यह घर नीलाम है !
साथ मिस के देख कर साहब ने झुँझला कर कहा,
दूर हो जल्दी यहाँ से, 'तू बड़ा गङ्गाम है !
पीते ही जिसके जनाबे शेख़जी चित हो गए,
अब समझ में आ गया होगा, कि यह 'उलटाम' है !

* * *

ज़रा कमरे से बाहर आइए सरकार होली में !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

अबस यूँ खिंचते-खिंचते, बन गए तलवार होली में,
यह अच्छा रङ्ग लाए, आप ऐ सरकार होली में !
वह "सर" होकर यह कहते थे, सरे-दरबार होली में,
गले मिल लीजिए हमसे भी, ऐ सरकार होली में !
मिला है आज एक "अरजण्ट" ऐसा तार होली में,
कि ख़ुद मिलने को घर पर आएँगे सरकार होली में !
सुना है खींच कर बैठे हैं, वह तलवार होली में,
ज़रूर अब रङ्ग लाएँगे, कोई सरकार होली में !
मेरे दिल की यह हसरत है, यह अरमाँ है, यह ख़्वाहिश है,
ग़रीबों पर नज़र हो जाय ऐ सरकार होली में !
"क़सीदे" और "दोहे" आपकी तारीफ़ में लिक्खूँ,
करें क़ायम कहीं दर्बार अगर सरकार होली में !
मेरे घर तक चले आओ, मुझे घर अपने बुलवाओ,
खिंचे बैठे हुए हो, किस लिए सरकार होली में !
मुबारकबाद देने के लिए आए हैं "बिस्मिल" भी,
ज़रा कमरे से बाहर आइए सरकार होली में !

* * *

फागराग

[कवि-सम्राट श्री० पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय]

ऊषा अहै किधों रङ्ग भरी ललना है लसी
लसक बिलोचन बिलोकि जाको तरसत।
बाल-रवि है कै है अबीर भरो कोऊ तन,
जो कर पसारि कै दिगङ्गना को परसत।
'हरिऔध' अरुनारे दल से लसे हैं तरु,
कैधौं रङ्ग वारे रङ्ग खेलि-खेलि सरसत।
उड़त गुलाल कै सराग नभ-मण्डल मैं,
लोक अनुराग कै बसुन्धरा पै बरसत।

ह्वै गई है लालिमा लुभावनी दिगङ्गना की,
लसी कुसुमावलि से छितिज है छिन सी।
लोने-लोने तरुन ललित-व्रतिकानन मैं,
कानन मैं दिवि की ललामता है निकसी।
'हरिऔध' फाग-राग हो के अनुरागी बने
लोक लालसाएँ गई लाली हाथ बिक-सी।
ललना ललाम ऊषा पहिरि वसन लाल,
बाल-रवि थाल मैं गुलाल लै कै निकसी॥

* * *

क्यों बकते हो 'होली होली'

[प्रो० रामपलटसिंह जी, एम० ए०]

आपस में जब तने हुए हो,
स्वार्थ-पङ्क में सने हुए हो
फिर क्यों तुमने केसर घोली ?
क्यों बकते हो, 'होली होली ?'
भाईपन का भाव नहीं है
मिलने का भी चाव नहीं है
निष्फल है यह रङ्ग व रोली,
क्यों बकते हो 'होली-होली' !
नभ को स्वर-कम्पित करते हो,
नहीं धरा पर पद धरते हो,
मुँह की है क्या कालिख धो ली ?
क्यों बकते हो, 'होली-होली ?'
पतनशील, दुश्शील बने तुम,
देखो बड़े ज़लील बने तुम,
अपनी सभी महत्ता खो ली,
क्यों बकते हो, 'होली होली !!'
माँ-बहिनों को देते गाली,
है कैसी दुष्कीर्ति निराली ?
आर्य-सभ्यता इतनी पोली ?
क्यों बकते हो, 'होली होली ?'
होनी थी जो सो है होली
अच्छी है यह नहीं ठिठोली,
तुम्हें देख हैं आँखें रोली,
क्यों बकते हो, 'होली-होली ?'

* * *

होलिका-दहन

[श्री० अनूप शर्मा, बी० ए०, एल० टी०]

प्राची-अङ्क-शोभी शुक्र तारा आसमान पर,
उदित हुआ था कुछ रात रहते हुए।
गजर गँभीर घड़ियाल बजे व्याकुल से,
पहर-पहर पै प्रहार सहते हुए।
बोल उठे विहग-वरूथ भी वनस्थली में,
संसृति से जागृति की ज्योति गहते हुए।
ऐसे काल पिता को प्रणाम करने के लिए,
आए प्रहलाद 'राम-राम' कहते हुए।

*

'राम' सुनते ही, 'राम-नाम' सुनते ही भूप,
आहत-अहि श के समान व्यग्र हो उठा।
लेके सिरहाने से मुकुट रख भाल पर,
कम्पित शरीर धीरता का भाव खो उठा।
सिंह के समान ही दहाड़ कर आतुर हो,
क्रोध से अधीर क्षार-नीर-भेद धो उठा।
सौध को हिलाते रनिवास को डुलाते हुए
दुरित-दुरन्त-देह दण्ड-दान को उठा।

*

देख भगिनी को दौड़ आती हुई सामने से
बोला, शीघ्र मेरी एक कामना फला दे तू।
दुष्ट प्रहलाद मेरा नाम भूलता है इसे,
आज 'राम-राम' कहने का बदला दे तू !
धिक् ! धिक् ! मुझको कि मेरे यह पुत्र हुआ
इसको तुरन्त मृत्यु-द्वार दिखला दे तू !
मेरी कृपा-भाजन बने न क्यों तुरन्त यदि
होलिके ! अभी ही प्रहलाद को जला दे तू !

*

भूप के वचन सुनते ही अति आतुर हो,
(जैसे स्वप्न में भी प्रहलाद से न नाता हो)
दोनों हाथ पकड़ तुरन्त उस बालक के,
दौड़ी इस भाँति जैसे व्याकुल विमाता हो।
पावक विलोक प्रज्वलित पाचनालय की,
डाला उसे (किन्तु जब दाहिने विधाता हो,
क्या न है अशक्य) कहो क्या न है अशक्य उन्हें,
मार के खसम सती होना जिन्हें आता हो।

*

आग के समीप ज्यों ही होलिका सिधारी, त्यों ही-
पावक-लपट झट पट में समा गई !
देखते ही देखते सभों के एक पल में ही,
नख से शिखा लौं व्याप वह्नि सहसा गई।
व्यग्र प्रहलाद 'राम-राम' जपते ही रहे,
इधर वराकी यमपुर विवशा गई।
तब से 'अनूप' सत्याग्रह की प्रभून छवि,
छोर-छोर सारे छिति-मण्डल में छा गई।

* * *

होली

[प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]

पा सकेगी हिन्दुओं से क्या सजनि, सम्मान ?
यदि पतन को तू बना सकती नहीं उत्थान !!
माँगती है भीख रङ्गों की अरी सुकुमारि !
देख मत अब हिन्दुओं की झोपड़ी का द्वार !!

आँसुओं से धुल गया है आज सारा रङ्ग।
आह में रहने लगी है बार-बार उमङ्ग।
कृष्ण राधा गोपियों का मुक्त हास्य-विलास
बन चुका है नारियों के हृदय का उच्छ्वास !!

और वृन्दा विपिन की स्मृति आज है अवशेष !
शान्त रह, री सजनि, तू मत छेड़ मेरा देश !!
आ रही है तो सजा दे, देश का शृङ्गार।
प्यार का भाई जहाँ हो क्रूर अत्याचार॥

हार ही में जीत पाने का उठे आवेश।
तू सजा इस भाँति दे इस वर्ष मेरा देश !!

* *

होलिके !

[श्री० चन्द्रनाथ जी मालवीय "वारीश"]

आग अनुराग की लगा दे अनुरागियों में,
त्यागियों में त्याग की सजीव ज्योति भर दे।
सुकवि "वारीश" बल दे तू विजितों को बड़ा,
दर्पियों का सारा दर्प दम में तू दर दे।
डोल जाय आसन प्रबल पाक-शासन का,
क्रूर-कुटिलों पर कुठाराघात कर दे।
दीनता-अधीनता दुरा दे दुनिया से देवि,
हीनता हमारी होलिके ! तू आज हर दे !!

जीवन की होली

पीड़ा सहते ही चलो बीड़ा उठा देश का यों,
क्रीड़ा करो मृत्यु से ये गोली मोक्ष-गोली है।
माँ के हो लड़ाके बर-बाँके हो, निरस्त्र बढ़ो,
चढ़ो-कढ़ो अग्नि में से जोह रही टोली है।
प्राणों की न परवाह, आह है गुनाह तुम्हें,
सादगी अहिंसा देख पशुता भी डोली है।
कीट-तुल्य मरते करोड़ों वसुधा में सुधा—
पाकर अमर बनो जीवन की होली है।

* * *

बारि रहे होरी है !

[श्री० देवनारायण शर्मा 'कञ्ज']

ठान्यो है स्वतन्त्रता का युद्ध कर्मवीर वीर,
ह्वै रहे सचेत सुनि प्रान्त चहुँ ओरी है।
अन्धता को 'आन्ध्र' त्यागि मादकता 'मान्द्र' त्यागि
गुजरी बिसारि 'गुजरात' नीति जोरी है।
'सी-पी' है सिपाही बना 'यू-पी' शाही साज छाँड़ि,
छाँड़ि के विलासिता 'बरार' बाँह जोरी है।
ध्यान धरि अम्बे, बम्बे, महाराष्ट्र चेते सबै,
लाइ कै बिदेसी वस्त्र बारि रहे होरी है !
'राजस्थान' राजपूत बना दीखता है 'कञ्ज,'
फेरि रही दिल्ली हाथ लीन्हे यक डोरी है॥
'सीमा प्रान्त' सीमा बाँधि 'पञ्चनद' रोके द्वार,
लीन्हे वृन्द युवकों का सेना नाहिं थोरी है॥
वागजाल छोड़ि 'बङ्ग' बेग ही सचेत भयो,
औ 'बिहार' छाड़ि कै बिहार बन्यो कोरी है।
उड़त 'उड़ीसा' राष्ट्र रङ्ग में रँग्यो 'रँगून',
लाइ कै बिदेसी बस्त्र बारि रहे होरी है॥

होली का शुभागमन

[श्री० श्यामसुन्दर खत्री]

मनोहर शोभा सरसाई,
मोदमय मादकता छाई।
उमङ्गें उर में उपजाती,
सोहती अभिनव हरियाली।
विभा वासन्ती छलकाती,
झूमती फूलों की डाली।
घर की उभरी तरुनाई॥

❀

लताओं को उर से लिपटा,
नाचते हैं तरु छविशाली।
विविध सुमनों का कर चुम्बन,
मधुर मधु पीते मधुपाली।
रसिकता-सरिता उमड़ाई॥

❀

धुआँ-सा उड़ा कुहासा है,
हुआ है निर्मल नील गगन।
शिशिर के सँग निदाघ करता,
वैर बिसरा प्रेमालिङ्गन।
समीरण बहती सुखदायी॥

❀

पपीहे रटते हैं पी-पी,
कूकती कोयल मदमाती।
अनूठे भावों की लहरी,
सघन कुञ्जों में लहराती।
नई अभिलाषा हुलसाई॥

❀

मोद की बहती धारा में,
रहे क्यों मानव-मन निश्चल ?
हुई भोली शिशुता चञ्चल,
हुआ रसमय यौवन पागल।
रँगीली होली यों आई॥

*   *   *

होली

[श्री० डॉक्टर मित्रसैन जैन, एच० एम० बी०]

माँगे मिले न ब्रसेलस[1] में औ,
वाशिंगटन[2] में भई टालमटोली।
राष्ट्र प्रदर्शन बीत्र सँघाई[3] में खाई,
विदेसिन के कर गोली।
केण्टन[4] को सरकार रच्यो; रस रङ्ग,
प्रचण्ड सुरङ्ग में घोली।
चीन[5] प्रवीन नवीन उमङ्ग ते,
खेलत आज स्वतन्त्र है होली॥

❀

आजु लौं कोउ सुन्यो नहिं देखऊ,
पावत भीख में राज अमोली।
चाहहु राज तो शक्ति सँभारहु,
त्यागि के मूरख भीख की झोली।
जातीय रङ्ग चढ़ाय चढ़ो; परतन्त्र पै,
कुमकुम की गहि गोली॥
वस्तु विदेशी की होलिका दाहि कै,
भारत खेल स्वतन्त्र है होली॥

1. Brussells. 2. Washington. 3. Sanghai, 4. Canton. 5. China.

परतन्त्रता की होली

[राजकवि श्री० 'अम्बिकेश']

लाई जयचन्द्र को बुझाई ना बुझी है अजौं,
नित बढ़ती ही गई लपट उतोली है।
कैते राजपूत, सिक्ख, भट्ट मरहट्टन को,
लेत गई बलि हाय अमित अतोली है।
मेलि के अबीर, त्यों अबार है बनाई सबै,
करि बदरङ्ग-रङ्ग, घोली रंगरोली है,
ऊधो कर्मवीर ने दिखाई है स्वतन्त्रता को,
तापि परतन्त्रता पिशाचिनी की होली है।

स्वतन्त्रता की होली

छार-छार होके उड़े धूल से विदेशी भाव,
सराबोर करदे स्वदेशी रँगरोली है।
लाली चारु भावों की अबीर सी मुखों में चढ़े,
चढ़ी गीत गाती युवकों की चले टोली है।
देश-प्रेम ही की चढ़ी भङ्ग हो अभङ्ग सदा,
बढ़ी हो मुखों से 'वन्देमातरम' बोली है।
अन्त कर आज परतन्त्रता पिशाचिनी का,
जगी उर-उर में स्वतन्त्रता की होली है।

*   *   *

अबीर-मूठ मारी है

[कविवर 'रसाल' एम० ए०]

आई है जबैं ते खेलि होरी वा तबैं ते परी,
बिकल विमोही मनौं मोह-मन्त्र मारी है।
तरफति पारद की पूतरी सी 'हा! हा!' करि,
गहि-गहि हारी ठाढ़ि जाति त्यों बिचारी है।
लै-लै नाम रावरोई बिबस बयाति जाति,
आँसनि अन्हाति ना उसाँसन सँभारी है।
सौंह है हमारी, बलि साँची यदुबीर कहौ,
बार मूठ मारी कै अबीर-मूठ मारी है ?

❀

होरी को प्रभात आजु अबीर बिसात ओरी,
चारु चहुँ ओरी नई सुषमा सँवारी है।
उमहि उमङ्गनि सौं रङ्गनि सौं अङ्ग राँजि,
विविध विहङ्गनि धमार सी उचारी है।
सुबन ओप उफनी सी परै भूनगीच,
प्राची बीच सोहै पै अरुण अंशुमारी है।
लूमि लोनि लागत 'रसाल' मनौ ऊषा बाल,
बिहसि दिनेस पै अबीर-मूठ मारी है!

*   *   *

होली

[श्री० चतुर्भुज जी माहेश्वरी "चतुर"]

मातृ-भूमि हित बलि-वेदी पर अपना शीश चढ़ाने,
स्वतन्त्रता का सौदा लाने को निकले दीवाने।
यद्यपि महा-भयानक दुर्गम, पथ यह कण्टकमय है
किन्तु आत्म-बल-धारी वीरों को क्या इसका भय है
बढ़ते ही जाते हैं, खाते हैं सीने पर गोली।
मतवाले ये खेल रहे हैं आज ख़ून की होली!

विदाई

[श्री० रामचरित जी उपाध्याय]

यदपि पल्लवित पुष्पित फलयुत फिर होगा तरु-वृन्द,
कुछ दिवसों तक पतझड़ी का सहना है दुख-द्वन्द,
यदपि खटकती है काँटे-सी उर में तेरी चाल,
क्यों निर्लज्ज हो तू मनमानी करता है रे मन्द!
मुँह की खानी तुझे पड़ेगी रह कर के प्रतिकूल।
आतङ्क का दर्प दिखाना घोर पतन का मूल।
तेरी होली शीघ्र जलेगी तू हारेगा हार!
एक दिवस भारत में तेरी मूढ़! उड़ेगी धूल!
भरे कुमकुमों की चोटों से तू होगा बेहाल।
उद्यम करले उछल-मचल कर, आ पहुँचा वह काल।
छक्के छुट जाएँगे तेरे देख फाग के रङ्ग।
तेरे कारण भारत-भूतल हो जाएगा लाल!
काम दाम के वशीभूत है फिर क्यों तू ऋतुराज?
शुक-पिकादि के कोलाहल सुन, तुझे न लगती लाज।
कुछ दिवसों का पाहुन बन कर आया है तू अज्ञ!
सदा न रह सकता, करता है क्यों प्रयत्न बेकाज?
तुझे गालियों की क्या चिन्ता? सुन हो करतल भाल।
मद-घूर्णित हो तेरे पग को उखड़ चला है चाल।
पर न तुझे कुछ ध्यान अभी है मति-भ्रम हुआ वसन्त!
जो आया वह चला जायगा जग का यही हवाल।
रे मधु पीरा क्यों न हटाता क्या शनि है आरूढ़?
ग्रीष्मानल जब धधक उठेगा पछताएगा मूढ़!
यदि पतङ्ग-सा जल-भुन जाना तुझे हुआ है इष्ट।
तो पग-पग पर परिभव सह कर अड़ा रहे तू मूढ़!
तड़क-भड़क के सहित प्रलोभन तेरा है बेकार।
तेरे कपट-कर्म को बहुविधि जान गया संसार।
मारी प्लेग साथ तेरे हैं क्यों सहता अपमान?
अपना सा मुँह लिए चला जा सिर ले अपयश-भार!
किंशुक-वनको रक्तिम कर क्यों दिखलाता है त्रास?
पूर्ण स्फूर्ति है बनी हृदय में होगा कौन निराश?
हो उदास या कर विलास तू, थोड़े दिन तक और!
पर वसन्त! क्या बना रहेगा तेरा यहाँ निवास?

*   *   *

हमारी होली

[श्री० 'कुसुमावलि']

अभी रङ्ग-नीरों में नहाने की न चाह हमें
डूबे ख़ूब ऊबे नेत्र नीरों में नहाए हैं।
लेना है न हाथों में अबीर तब तक हमें,
जब तक नहीं फल वीरता का पाए हैं।
बुक्कों की चमक भी न देखना है नेक अभी,
भाग्य के सितारे जब चमक न लाए हैं।
फाग की न क्रीड़ा है, न बीड़ा व्यवहार अभी,
बीड़ा हम उन्नति समर का उठाए हैं।

*   *   *

'भविष्य' की व्यङ्ग चित्रावली का एक पृष्ठ

विदुषी बीबी

आप महिला उद्धारिणी सभा की 'प्रेज़िडेण्टा' हैं और स्त्रियों की वर्तमान दशा पर एक लेख लिख रही हैं। बाहर पतिदेव लड़का खिला रहे हैं। जो यह स्वाभाविक दृश्य देख कर हँसे, ख़ुदा करे उसे भी ऐसी फुलझड़ी सी बीबी मिले!

पतिव्रता और बीबीव्रती

"नॉन्सेन्स! तुम्हें मालूम नहीं, मुझे मिण्टो पार्क में 'ग्राईस्थ्य सुख' पर व्याख्यान देने जाना है? फिर क्यों तुमने चाय लाने में पाँच मिनिट की देर कर दी?"

"भूल हो गई, क्षमा कीजिए!"

गङ्गा और मदार की जोड़ी!

कब उतरेगा तेरे तन से यह बेहूदा भूषण-भार?
कब छोड़ेगी फूहड़पन को, कब सीखेगी शिष्टाचार!!

अध्ययनशीला!

"ऐ! सुनते हो? लड़के ने पाख़ाना कर दिया है, ज़रा साफ़ कर दो। मैं 'लण्डन-रहस्य' पढ़ रही हूँ। वास्तव में बड़ा 'इन्ट्रस्टिङ्ग' उपन्यास है।

होली के भड़ुए

छोड़ सभ्यता और शराफ़त
खूब उड़ाओ धूल !
कोई सज्जन निकल न जाए
बिन कीचड़ के भून !
होली है, भई होली है !!

रङ्ग में भङ्ग

कीच उछालने के कारण
मार-पीट हो रही है ।

मियाँ मदारी के बन्दर !

होली के बहाने भले आदमियों पर ग़लीज़ उछाल कर अपने पाप का प्रायश्चित करने थाने जा रहे हैं ।

'सवेरे फिर छनेगी'

होली के दिन ऐसी गहरी छनी कि न दीन की ख़बर थी न दुनिया की, फिर सभ्यता निगोड़ी की कौन परवाह करता है ! अब पुलिस की हवालात में हैं, जैसे बहेलिए के दरबे में उल्लू !
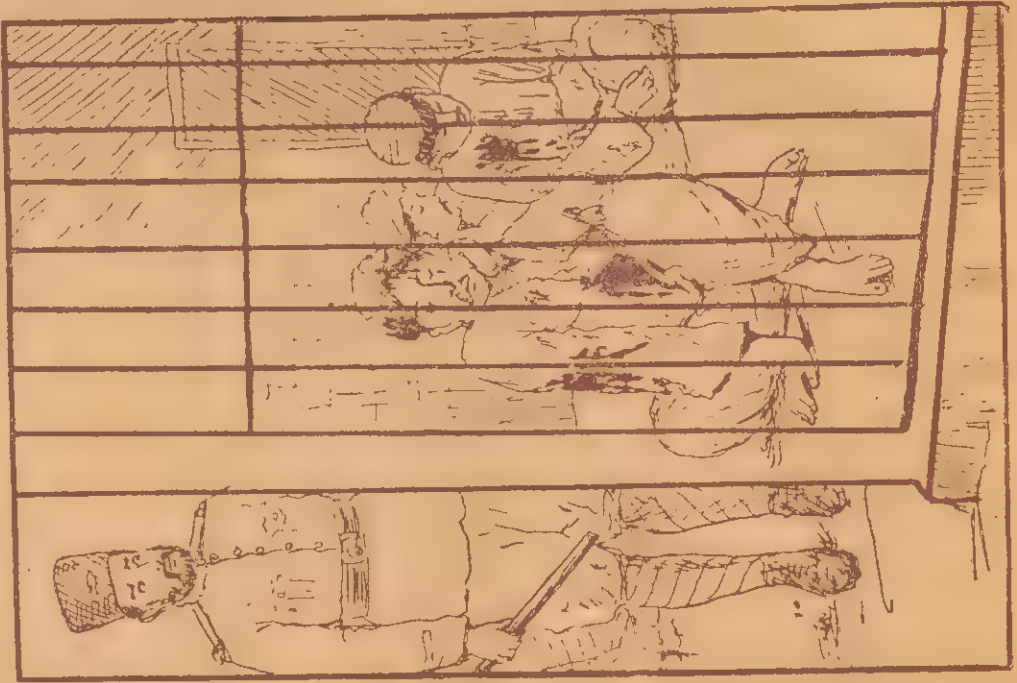
भारत की भावी-आशा

(जिन्होंने कौन्सिल और एसेम्बली में अपना कार्य आरम्भ कर दिया है)

श्रीयुत भीखन मेहतर
युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य

श्री० चौधरी रामदयाल चमार
युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य

कौन्सिलों ने दोनों को ऑनरेबुल बना दिया !
थी जो सिफ़त शरीफ़ की, अब है वही चमार में !!

—ज़रीफ़ (लखनवी)

कौन्सिल में मेम्बरी की हवस है चमार को,
पण्डित जी भूलते नहीं क़ौमी वेकार को !

—ताज (गोतनवी)

श्रीयुत रामजी दास नाई
पञ्जाब प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य

श्रीयुत डालू मोची
बम्बई प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य

श्री० भगत चन्दोमल कुम्हार
लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य

'भविष्य' की व्यङ्ग चित्रावली का एक पृष्ठ

बुर्क़े की वेहयाई !

भवन नहीं, स्टेशन है यह, यहाँ नहीं बुर्क़े का काम ।
मरद निगोड़े क्या समझेंगे, उनकी तो है बुद्धि निकाम ।

जामे से बाहर

बाबू जी—अरे कहाँ घुसी चली आती है ? कहता हूँ, माफ़ कर, तो कमबख़्त मानती ही नहीं ।
भिखारिणी—ईश्वर आपको माफ़ करे !

सङ्गीत का श्राद्ध

आपके स्वर की सरसता गदभराज के श्रुति-मधुर स्वर को भी मात कर देती है ।

पहिन कर आए हैं, कपड़े जो लाल होली में,
करेंगे क्या, वह किसी को हलाल होली में ?
सुखाएँ आप न, इस तरह बाल होली में,
पए[१]-असीरी[२], न फैलाएँ जाल होली में !
हैं बाल बिखरे हुए, आँखें भी हैं शरमाई,
किया हुज़ूर ने, कुछ गोल-माल होली में ?
हमारी हस्रते-दिल, किस तरह से निकलेगी,
करेंगे आप अगर, इनफ़ियाल[३] होली में !
तू मुस्कुरा के, निगाह को न फेर ऐ ज़ालिम !
न बे-गुनाह को, कर यों हलाल होली में !
तुम्हारे हुस्न के परतो[४] से, यह हुआ हासिल,
सितारा बन के, चमकता है ख़ाल[५] होली में !
करें हुज़ूर, बसद[६] शौक़ सर क़लम मेरा,
हुआ है तन पे मेरे, सर वबाल[७] होली में !

—(मिर्ज़ा) "मुहसिन" इलाहाबादी

कहाँ वह रञ्ज, कहाँ अब मलाल होली में,
कि फिर निशात[८] का आया ख़्याल होली में !
लगाया सब ने जो रुख़[९] पर गुलाल होली में !
इसी से बढ़ गया दूना जमाल[१०] होली में !
यफ़ूरे-ऐश[११] में, रञ्जो-मलाल भूल गए,
किसी तरह का नहीं अब ख़्याल होली में !
चली है गुलशने[१२] आफ़ाक़[१३] में हवाए-तरब[१४],
नेहाल[१५] हैं नए सर से, नेहाल[१६] होली में !
ज़हे-नसीब, कि अहबाब से गले मिल कर,
उड़ा रहे हैं अबीरो-गुलाल होली में !
किसी को घर पे बुलाऊँ किसी के घर जाऊँ,
तरह-तरह के मुझे हैं ख़्याल होली में !
गले मिला है कोई, हमसे एक साल के बाद !
हम आज हो गए, क्या-क्या नेहाल होली में !!
यह इजतिनाब[१७] अबस है, यह एहतराज़[१८] फ़िज़ूल,
चलो न हज़रते "शातिर" से चाल होली में !

—"शातिर" इलाहाबादी

यही है रञ्ज, यही है मलाल होली में,
कि आपको नहीं, मेरा ख़्याल होली में !
यह आरज़ू है, यह हसरत है, यह तमन्ना[१९] है,
गले मिले तो कोई ख़ुश जमाल होली में !
हर एक तरफ़ है, मसर्रत[२०] की अब घटा छाई,
ज़माना ख़ुश है, ख़ुदाई नेहाल होली में !
ज़रा चमन में भी, देखो बहार होली की,
कि मिल रहे हैं, गले नौ-नेहाल होली में !
नहीं है फूलों के चेहरे पे, बेसबब सुर्ख़ी,
लगा दिया है सबा[२१] ने गुलाल होली में !
यह रङ्ग देख के, वायज़[२२] की बदली है नीयत,
शराबे-नाब[२३] जो होती हलाल होली में !
गले के हार बने, ग़ैर के जो फिरते हैं,
हमें उन्हीं से है, मिलना मुहाल होली में !
दिले-हज़ीं[२४] की यह दुनिया, अभी बदल जाए,
वह पूछ ले जो कहीं, इसका हाल होली में !
लगाओ चेहरे पे "ज़ाहिद" के ख़ाके-मैख़ाना[२५],
यही है इसको, अबीरो-गुलाल होली में !

—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

१—वास्ते, २—क़ैद करने के लिए, ३—लज्जा, ४—साया, ५—तिल, ६—ख़ुशी से, ७—बोझ, ८—ख़ुशी, ९—मुँह, १०—सुन्दर, ११—आनन्द में, १२—बाग़, १३—संसार, १४—आनन्द, १५—पेड़, १६—ख़ुश, १७—परहेज़, १८—खिंचाव, १९—इच्छा, २०—ख़ुशी, २१—हवा, २२—नसीहत करने वाला, २३—दुख ... शराब की दूकान,

न वह उमङ्ग, न वह रङ्ग है, न रङ्गीनी;
कहाँ से दिल हो हमारा निहाल होली में !
ज़हे-नसीब कि अहबाब से गले मिल कर,
उड़ा रहे हैं अबीरो—गुलाल होली में !

गले मिले कोइ, यह है ख़्याल होली में,
मलेंगे ख़ूब अबीरो-गुलाल होली में !
तुम्हारे दर पे, तो उम्मीदवार है दुनिया,
बताओ किस को, करोगे नेहाल होली में ?
ग़ज़ब का हुस्न, फिर उस पर शबाब का आलम;
मिले कहाँ से तुम्हारी मिसाल[२५] होली में ?
तुम्हारे जलवे[२६] से, बेहोश सब हैं तालिबे-दीद[२७]!
दिखाया तुमने, यह अच्छा कमाल होली में !
यह रङ्ग देख के, बेताब[२८] क्यों न दिल हो जाय,
तुम्हारा हुस्न, तुम्हारा जमाल होली में !
जवाब दो न दो, यह अख़्तियार है तुमको,
सुनो तो ग़ौर से, मेरा सवाल होली में !
ख़ुशी का दिन है ग़रज़ अपने दिल को ख़ुश रक्खो,
रहे न बाल बराबर मलाल होली में !
तुम्हीं कहो ज़रा इन्साफ़ से यह ऐ "आदिल"
गले मिलेगा वह क्या ख़ुश-जमाल[२९] होली में ?

—"आदिल" सपाटवी

रहे यह हर घड़ी, हर दम ख़्याल होली में,
कि उठ खड़ा न हो, कोई मलाल होली में !
यह हाल क्यों है, कि है ग़ैर-हाल होली में,
ख़्याल हो, तो करो कुछ ख़्याल होली में !
वह क्या बताएँ, कि है रङ्ग क्या ज़माने का,
कहीं अबीर कहीं है गुलाल होली में !
कोई नेहाल, कोई शाद[३०] और कोई ख़ुश,
बदल गया है, ज़माने का हाल होली में !
अगर निफ़ाक़[३१] हो बाहम[३२] तो जल्द दूर करो,
उठाओ दिल से, यह हरसू सवाल होली में !
निशातो एशो-तरब का, जमा है रङ्ग ऐसा,
कि दूर हैं, ग़मो रञ्जो-मलाल होली में !
उड़ा रहे हैं अब, अहले-ज़मीं[३३] अबीरो-गुलाल,
फ़लक[३४] पे निकलेंगे, तारे भी लाल होली में !
बढ़ाया रङ्ग ने, कुछ और रङ्ग चेहरे का,
बने हैं और भी सब ख़ुश-जमाल होली में !
न वह उमङ्ग, न वह रङ्ग है न रङ्गीनी,
कहाँ से दिल हो, हमारा नेहाल होली में ?
दुआ यह है कि अइज़्ज़ओ-दोस्त[३५] ऐ 'बिस्मिल'
ख़ुशी यूँही करें हर एक साल होली में !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२५—उपमा, २६—ज्योति, २७—दर्शक, २८—बेचैन—२९—अच्छी सूरत वाला, ३०—ख़ुश, ३१—फूट, ३२—आपस में, ३३—सांसारिक जीव, ३४—आकाश, ३५—रिश्तेदार,

गुलाल मल के जो आ जाय यार होली में,
अयाँ[३६] हो आतिशे-गुल की बहार होली में !
निकल रही है इधर दिल से ख़ूँ की पिचकारी,
उधर जिगर है मेरा लालाज़ार होली में !
छुपा सकेंगे न अन्दाज़ अपनी चितवन की,
दिखाएँ रङ्ग बदल कर हज़ार होली में !
बहा के ख़ून मेरा आज आप ख़ुश हो लें,
न हाथ आएगा ऐसा शिकार होली में !
पसे-फ़ना यह यक़ीं है, अबीर के बदले—
हँसी उड़ाएँगे मेरा ग़ुबार होली में !
उभार आपके जोबन का रङ्ग लाएगा,
हज़ार क़ुमक़ुमे होंगे निसार होली में !
"फ़िज़ा" वतन में जो होते कहीं तुम अब के बरस,
बहुत ही सहल था दीदारे-यार होली में !

—"फ़िज़ा" हैदराबादी

चहक रहे हैं हज़ारों हज़ार होली में,
बड़े ही रङ्ग से आई बहार होली में !
दुआ यह मेरी है कर लें वह प्यार होली में,
बहुत नहीं, तो फ़क़त एक बार होली में !
मिलेंगे हज़रते-वायज़, तो हम पिला देंगे,
हलाल होगी मये[३७]-ख़ुश गवार होली में !
तुम अपने हाथ से रुख़ पर मेरे अबीर मलो,
करो न आज मुझे बेक़रार होली में !
उधर ज़माने में है होलिका-दहन की धूम,
इधर तपाँ है दिले-दाग़दार होली में !
कहो मिलोगे न क्या तुम, कहा मिलूँगा ज़रूर,
जो पूछा कब, तो कहा एक बार होली में !!
यह किसने फूल-से रुख़ पर मला है आज गुलाल,
दिखाई किसने यह तुरफ़ा[३८] बहार होली में ?
वह मिल रहे हैं गले सबसे ख़ूब हँस-हँस कर,
लुटा रहे हैं दुरेशाहवार[३९] होली में
ख़ुदा के वास्ते मिलिए किसी क़रीने से,
गिराँ[४०] है और शबे-इन्तिज़ार होली में !
तुम्हारा रङ्ग ज़माने से है जुदा "कुश्ता"
कि बे-पिए हुए हो बादाख़्वार[४१] होली में !

—"कुश्ता" गयावी

इसे सुरूर, उसे है ख़ुमार होली में,
चली है कैसी हवाए-बहार होली में ?
यह उड़ रहे हैं नहीं हमनशीं अबीरो-गुलाल,
निकल रहा है दिलों का ग़ुबार होली में !

३६—प्रगट, ३७—शराब, ३८—अद्भुत, ३९—मोती, ४०—भारी, ४१—शराबी।

साक़ी हाज़िर मैख़ाने¹ में,
लाल परी हर पैमाने में !
सुर्ख़ गुलाबी नीला जोड़ा,
सब्ज़ बसन्ती पीला जोड़ा।

एक दो तीन चार होली में !

[श्री० "कुश्ता" गयावी]

निगहे-लुत्फ़े यार होली में
ला रही है बहार होली में !
जब वह हों हमकनार होली में,
क्यों न आए बहार होली में,
एक की एक अब नहीं सुनता,
मस्त हैं बादाख़्वार होली में,
सैकड़ों गुल खिलाती रहती है,
चल के बादे-बहार होली में !
करके वादा भी वह नहीं आए,
एक, दो, तीन, चार होली में !
उनसे हम मिल के एक साल के बाद,
लूटते हैं बहार होली में !
अहदे-²बातिल³ ही से तसल्ली दो,
कुछ तो आए क़रार होली में !
देके लाखों दुआएँ साक़ी को,
हम पियें बार-बार होली में !
रुख़े-रङ्गों पे मलते हैं वह गुलाल,
हुस्न की है बहार होली में !
तोबा टूटे तो टूटे पे ज़ाहिद,
पर न टूटे ख़ुमार होली में !
इस तरफ़, उस तरफ़, हर एक तरफ़,
छा रही है बहार होली में !
रङ्ग लाएँगे हज़रते "कुश्ता"
मर के भी बार-बार होली में !

ज़माना होली का

[पं० कालीप्रसाद मिश्र "आसी" इलाहाबादी]

आया है ज़माने में कैसा,
ख़ुश-रङ्ग ज़माना होली का,
मिल-जुल कर आओ गाएँ सब,
जी भर के तराना होली का !
आँखें रखते हो तो देखो,
ख़ुश-रङ्ग ज़माना होली का !
घर-घर है कहानी होली की,
घर-घर है फ़िसाना होली का !
मसरूर रहो, दिल शाद रहो;
ग़म दिल से कोसों दूर रहे।
लाया है प्यामे ऐशो-तरब,
यह तुमको ज़माना होली का !
सब जी से इसको सुनते हैं,
सब दिल से इसको सुनते हैं,
अच्छी है कहानी होली की,
अच्छा है फ़िसाना होली का !
देखो जिसे शाख़े-गुल की तरह—
वह झूम रहा है मस्ती से,
छाया है बाग़े-आलम में
पुर-जोश ज़माना होली का !
हर मिसरे में हर शैर में है,
एक रङ्ग अनोखा ऐ "आसी"
रङ्गीन मिज़ाजों की ख़ातिर,
लिक्खा है फ़िसाना होली का !

१—शराबख़ाना, २—वादा, ३—झूठ।

जब आग जलाई होली में

[बाबू नारायणप्रसाद जी "मेहर" ग्वालियारी]

मालूम नहीं क्या बात हुई,
क्या जी में समाई होली में,
सूरत भी तो अपनी ज़ालिम ने—
हमको न दिखाई होली में !
यह दिन तो ख़ुशी के दिन हैं, मगर—
रहता है मुझे ग़म आठ पहर,
बिछुड़ा हूँ किसी से मैं मिल कर,
देखी है जुदाई होली में !
जब तुम न हमारे पास आए,
जब हमसे न तुम होली खेले,
अग़्यार ने दे-देकर ताने
क्या आग जलाई होली में !
बूँदें हैं लहू की चेहरे पर,
धब्बे हैं लहू के दामन पर,
मुझको मेरी आँखों ने रोकर
होली यह खिलाई, होली में !
यह दिन है गले मिलने के लिए
मिलते हैं इसी दिन लोग गले,
उस शोख़ ने ग़ैरों से मिल कर
क्या बात बनाई होली में !
दम भर न रहे आराम से वह,
बेताब किया बेख़्वाब किया,
दिन-रात हमारे नालों ने
यह धूम मचाई होली में !
जब याद किसी की आती है,
या ग़म की आग जलाती है,
देता है मेरा दिल जल-जल कर,
होली की दोहाई होली में !
क्या "मेहर" जले अपने दिल में,
क्या रश्क से शोलों ने फूँका,
हमराह रक़ीबों के उसने
जब आग लगाई होली में !

* * *

लहरों की तरह बहना सीखें !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

ख़ुश क्यों न ज़माने वाले हों,
आया है ज़माना होली का !
अब बैठते-उठते घर-घर है—
लोगों में फ़िसाना होली का !
दिल लुत्फ़ो-ऐशो-इशरत से
हर वक़्त न क्यों मसरूर रहे,
फ़ितरत का इशारा है सब से,
ग़म सब से कोसों दूर रहे !
यह बज़्मे-तरब का आलम है,
चलता है दौर मुहब्बत का,
है रङ्गे दौरे-उल्फ़त से,
आलम कुछ और मुहब्बत का !
दुनिया के अलम से क्या मतलब
सब झूम रहे हैं मस्ती में,
तख़सीस किसी को कुछ भी नहीं,
सब झूम रहे हैं मस्ती में !
यह रङ्ग निराला रङ्ग भी है,
क्या रङ्ग जमाए बैठे हैं !
दुनियाए-मुहब्बत में दिल से,
दुनिया को भुलाए बैठे हैं !
हर बात उन्हें मरग़ूब हुई
हर रङ्ग उन्हें मरग़ूब हुआ,
अल्‌क़िस्सा, बढ़ी उल्फ़त बाहम,
मिल-जुल कर रहना ख़ूब हुआ !
इस दिन से ख़ुदा का मतलब है
मिल-जुल कर सब रहना सीखें,
दरियाए-मुहब्बत में मिल कर
लहरों की तरह बहना सीखें !
होली का मज़ा है मिलने में,
ऐसा जो नहीं, तो कुछ भी नहीं;
यह ख़ूब समझ लो दिल में तुम,
ऐसा जो नहीं, तो कुछ भी नहीं !
तुम एक रहो तो फिर देखो
क्या इसका नतीजा मिलता है,
दावे से यह "बिस्मिल" कहता है
दुनिया का कलेजा हिलता है !

* * *

मौसमे-शाहाना

[जनाब केदारनाथ साहब 'बेकल', बी०ए०, एल० टी०]

साक़ी मये-उल्फ़त से भर दे मेरा पैमाना,
दिल खोल के खेलेगा होली तेरा मस्ताना !
उड़ता है गुलाल हरसू, पिचकारियाँ चलती हैं;
दीवानों का होली के मस्ती से है याराना !
हाँ-दिल है उमङ्गों पर—क्या देखता है साक़ी,
सरशार मुझे कर दे, सद्क़े तेरे जानाना !
सब रङ्ग में लतपत हों, गुलफ़ाम बनें चेहरे,
वह रङ्ग जमें, आलम हो जाय परीख़ाना !
मिट जाय कुदूरत सब, दिल साफ़ हों यारों के,
होली में मिलें ख़ुश हो, अपना हो के बेगाना !
पीरी में जवानी के आते हैं मज़े 'बेकल',
फागन का महीना भी, है मौसमे-शाहाना !

* * *

साहित्य का सपूत

साहित्यिक प्रहसन

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अङ्क—१ ; दृश्य—१

रास्ता

(संसारीनाथ)

संसारी—(अकेला) बस संसारीनाथ ज़रा ठहर जाओ। सोच-समझ लो, तब आगे बढ़ो। तुम चपला को प्यार करते हो। जब से देखा है, उसी दम से। मगर इसका परिणाम ? आह ! प्रेम में परिणाम सोचने का किसे होश रहता है ? जाने दो, फिर भी तुम अपनी चपला को दिल ही दिल प्यार करते रहे, दूर ही दूर से उसे देख-देख कर मरते रहे और उधर उसका कहीं ब्याह हो गया तब ? उफ़ ! कलेजे में गोली लग गई ! हाय ! तब क्या करूँ ? उसके पिता से मेल-जोल पैदा करूँ ? मगर इससे फ़ायदा ? वह भला क्यों अपनी लड़की मुझ ऐसे रँडुए को सौंपने लगे ? दूसरे डरता हूँ कि कहीं वह मेरा भाव ताड़ते ही अपनी गली में मेरा आना-जाना न बन्द करा दें ? क्योंकि यह विलायत नहीं, हिन्दुस्तान है, जहाँ प्रेम का सत्कार भण्डा फूटते ही बस लात-घूँसों ही से होता है। बला से, जब इसकी नौबत आएगी, तो चपला की ख़ातिर यह भी सहूँगा। मगर तब तक तो इस मेल-जोल के बल पर उसके घर पर कुछ देर अटकने का सहारा तो हो जाएगा। और यों कभी शायद उससे दिल का हाल कहने का अवसर भी पा जाऊँ। बस-बस यही ठीक है। मगर उसके पिता से घनिष्टता पैदा करना भी तो टेढ़ी खीर है। क्योंकि नित्य ही सलाम करते-करते मेरे हाथ की चूल तक ढीली पड़ गई, मगर वह मुझसे सीधे मुँह कभी बोले भी नहीं। ख़ैर आज मैं जाकर उनके गले पड़ता हूँ। सुनता हूँ उन्हें साहित्य का कुछ भ्रम भी है, क्योंकि वह साहित्य-सेवी बनते हैं और अपने को साहित्यानन्द कहते हैं। इसलिए मैं भी जाते ही साहित्य का खटराग छेड़ता हूँ। देखूँ क्या कहते हैं और तब वह किस तरह मिलते हैं। वह लो, वह तो आप ही इधर आ रहे हैं।

(साहित्यानन्द का अख़बार पढ़ते हुए आना)

(संसारीनाथ साहित्यानन्द के सामने जाकर प्रणाम करता है, मगर वह बिना देखे ही अख़बार पढ़ता हुआ पलट पड़ता है। तब वह दूसरी तरफ़ जाकर प्रणाम करता है, पर फिर साहित्यानन्द उधर से घूम जाता है।)

संसारी—(अलग) वाह ! वाह ! यह तो ऐन मौक़े पर घूम पड़ते हैं। उस पर सामने अख़बार की आड़ और पीछे उनकी पीठ की दीवाल इन्हें सलाम किधर से करूँ ? अच्छा उनके रास्ते में खड़ा हो जाऊँ, आख़िर इधर ही तो लौटेंगे।

(संसारीनाथ उसके सामने बीच में खड़ा हो जाता है और जब वह लौट कर बिल्कुल पास पहुँचता है, तब यह अपने दोनों हाथ जोड़ कर उसके अख़बार के नीचे डाल कर झट से उठाता हुआ इस तरह प्रणाम करता है कि अख़बार साहित्यानन्द के हाथ से छूट कर संसारीनाथ के सर पर होता हुआ गिर पड़ता है।)

संसारी—प्रणाम !

साहित्यानन्द—(घबड़ा कर ऐनक के ऊपर से घूर कर) कौन ?

संसारी—संसारीनाथ।

साहित्यानन्द—तुम बड़े बेहूदे हो—नहीं ठहरो—(जेब से हिन्दी की एक पॉकेट-डिक्शनरी निकाल कर और जल्दी-जल्दी उसे लौट कर) हाँ, महा असभ्य हो, जो इस तरह रास्ते में—उहुँक—इस प्रकार मार्ग में प्रणाम करके मुझे साहित्य का आनन्द लेने में विघ्न डालते हो, जानते नहीं कि मैं साहित्य-सेवी हूँ।

(साहित्यानन्द बकता हुआ अपना अख़बार उठाता है और फिर उसे उसी तरह पढ़ने लगता है)

संसारी—(अलग) भई वाह ! यह तो अजीब जीव निकले। नाहक़ ही मैं इतने दिनों तक इनसे हिचकता रहा। लीजिए मेरा प्रणाम करना ही बेकार हो गया, वह फिर अख़बार पढ़ने लगे। मगर अब घबड़ाहट कैसी संसारीनाथ ? इन्होंने तो अपने चरित्र का तमाशा एक ही जुमले में दिखला ही दिया। अब क्या है। बस हाथ धोके पीछे पड़ जाओ। ऐसे आदमी तो बड़े भाग्य से मिलते हैं।

(लपक कर साहित्यानन्द के पास जाता है)

संसारी—(साहित्यानन्द को हिला कर) महाराज !

साहित्यानन्द—(अख़बार से बिना अपनी नज़र हटाए हुए) क्या ?

संसारी—ज़रा इधर भी ध्यान दें तो कुछ कहूँ।

साहित्यानन्द—(ऐनक खसका कर ऊपर से घूरता हुआ) कौन फिर संसारीनाथ ? मगर—उहुँक—किन्तु हाँ, किन्तु 'ज़रा' के स्थान पर शब्द "तनिक" का प्रयोग करो।

संसारी—माफ़ कीजिए मुझे अपने भावों को आपकी तरह अनुवाद करना नहीं आता। मैं तो उन्हें बस ज्यों का त्यों बोलना जानता हूँ।

साहित्यानन्द—आपकी तरह नहीं जी, आपके 'सदृश' कहो।

संसारी—आपके सदृश ?

साहित्यानन्द—हाँ, तब जाकर तुम्हारी भाषा शुद्ध हिन्दी भाषा कहला सकती है।

संसारी—मगर यहाँ पर तो "आपकी तरह" ही कहने में आसानी मालूम होती है और यही मुँह से निकलता भी है।

साहित्यानन्द—ऐसे मुँह पर थप्पड़ मारो। और उसे समझाओ कि वह अपनी सरलता पर न जाया करे, बल्कि—उहुँक—वरन्, हाँ वरन् बोलते समय हिन्दी-कोष के शुद्ध हिन्दी शब्दों पर ध्यान रक्खा करे।

संसारी—तो यह कहिए आप हिन्दी को मातृ-भाषा नहीं, बल्कि कोष-भाषा समझते हैं। मगर महाराज इस तरह तो बातचीत बिल्कुल बनावटी हो जायगी। न उसमें मुहावरा होगा और न भाव ही रह सकता है।

साहित्यानन्द—तो क्या हुआ ? परन्तु वह हम ऐसे साहित्य मर्मज्ञों की दृष्टि में साहित्यिक भाषा तो होगी ?

संसारी—साहित्यिक भाषा कैसी ?

साहित्यानन्द—देखो जैसे कहना हो कि मैं आता हूँ "तो कहना चाहिए कि मैं आगमन करता हूँ।" जैसे यदि कहना हो कि "वह दिखाई पड़ते ही भाग खड़े हुए", तो कहो कि "वह दृष्टिगोचर होते ही पलायन कर गए।"

संसारी—बाप रे बाप ! यह तो मुझसे नहीं हो सकता। नए सिरे से जन्म लेकर इस तरह बोलना सीखूँ, तो अलबत्ता मुमकिन है।

साहित्यानन्द—नहीं उद्योग करने से अब भी सम्भव है। मगर—नहीं-नहीं—किन्तु, हाँ किन्तु अलबत्ता मुमकिन के स्थान पर क्या नाम के—ठहरो—(जेब से डिक्शनरी निकाल कर उलटता है)

संसारी—अजी "अलबत्ता, मुमकिन" को मारिए गोली। किस तरह यह मुमकिन है यह तो बताइए।

साहित्यानन्द—इसकी तो बड़ी सरल युक्ति है।

संसारी—क्या ?

साहित्यानन्द—बस मेरी तरह—उहुँक-उहुँक, मेरे प्रकार हिन्दी का एक कोष जेब में सदैव रक्खा करो। (किताब दिखा कर) यह वही है। इसी में से अलबत्ता, मुमकिन की हिन्दी ढूँढ़ कर अभी बताता हूँ। ठहरो।

संसारी—(अलग हसता हुआ) राम ! राम ! वाह रे साहित्य-सेवी ! क्यों न हो ! तभी हिन्दी-उपन्यासों में स्वाभाविकता अपने कर्मों को रोया करती है। (प्रकट) महाराज इस कोष की जान छोड़िए। "अलबत्ता मुमकिन" हिन्दी नहीं, तो कौन सा विलायती है, यह तो कहिए ?

साहित्यानन्द—अरे ! क्या तुम इसे हिन्दी समझते हो ?

संसारी—बेशक। क्योंकि मैं हिन्दुस्तानी आदमी हूँ। हिन्दी को अपनी मातृ-भाषा जानता हूँ। इसलिए जो बोली या शब्द मैं जन्म से बोलता आता हूँ, उसी को हिन्दी समझता हूँ।

साहित्यानन्द—आहाहाहा ! आहाहाहा ! तुम्हारी समझ साहित्यिक नहीं है। कारण ? तुम साहित्य को नहीं जानते, इसीलिए ऐसा कहते हो।

संसारी—(हाथ जोड़ कर) तो कृपा कर मुझे भी साहित्य से जान-पहचान करा दीजिए, ताकि मेरी भी समझ आपकी सी हो जाए। काहे को इतनी सी बात की कमी के लिए मैं सदा नासमझ बना रहूँ।

साहित्यानन्द—अच्छी बात है। परन्तु इसमें तुम्हारा बड़ा समय लगेगा।

संसारी—कुछ भी नहीं। मैं तो अभी चलने को तैयार हूँ। चलिए मुझे ले चलिए।

साहित्यानन्द—कहाँ ?

संसारी—अपने साहित्य जी के पास उनसे जान-पहचान कराने। अब तो बिना उनसे मिले मुझसे रहा न जाएगा। (हाथ जोड़ कर) बस अब ले चलिए। देर न कीजिए।

साहित्यानन्द—(घबड़ा कर) अरे ! तो साहित्य कोई मनुष्य थोड़े ही हैं, जो तुम्हें ले जाकर उनसे भेंट कराऊँ ?

संसारी—तो क्या वह कोई भूत-प्रेत हैं ?

साहित्यानन्द—नहीं जी।

संसारी—आख़िर तब साहित्य कौन सी चीज़ है महाराज ?......क्यों बताते क्यों नहीं ? क्या आप भी नहीं जानते ?

साहित्यानन्द—कौन मैं ? वाह ! मैं डेढ़ सौ गल्पें पढ़ चुका हूँ। दो-एक दर्जन कहानियों का अनुवाद भी कर चुका हूँ। दस-बीस पत्र-पत्रिकाएँ नित्य ही अवलोकन करता हूँ। ऐसा उच्चकोटि का साहित्य-सेवी होकर भी मैं साहित्य को न जानूँगा, तो और कौन जानेगा ?

संसारी—क्या ख़ूब कहा ! मैं पूछता हूँ साहित्य क्या चीज़ है और आप गिनाने लगे अपनी पढ़ने वाली किताबें।

साहित्यानन्द—उन्हीं में तो साहित्य होता है, परन्तु चीज़ के स्थान पर 'पदार्थ' कहो।

संसारी—तब क्यों नहीं साफ़-साफ़ कहते कि साहित्य किताब को कहते हैं ?

साहित्यानन्द—बस-बस यही है। तुमने मेरे मुख की बात कह दी। परन्तु सभी पुस्तकों में साहित्य नहीं होता।

संसारी—आख़िर साहित्य वाली किताबें होती कैसी हैं ?

साहित्यानन्द—उन पर रेशमी जिल्द मण्डित होती है। उनमें कई चित्र होते हैं। उनका क़ाग़ज़ बहुत चिकना होता है। परन्तु काग़ज़ के स्थान पर क्या कहना चाहिए—ठहरो—(जेब से डिक्शनरी निकालता है)

संसारी—अपनी डिक्शनरी जेब ही में रहने दीजिए। मैं समझ गया। जैसे विलायती दूकानों के सूचीपत्र। क्यों यही बात न ?

साहित्यानन्द—नहीं जी। उनमें अच्छी-अच्छी वार्ता, उम्दा उम्दा, नहीं-नहीं श्रेष्ठ-श्रेष्ठ गल्पें, बढ़िया-बढ़िया कविताएँ होती हैं, जिन्हें पढ़ कर चरित्र सुधरता और ज्ञान उत्पन्न होता है।

संसारी—यों तो हर आदमी की जीवनी एक न एक कहानी होती है।

साहित्यानन्द—परन्तु उसे साहित्य नहीं कह सकते।

संसारी—क्यों ?

साहित्यानन्द—क्योंकि साहित्य में हमारा-तुम्हारा हाल नहीं होता। वरन् देवी-देवताओं के समान आदर्श चरित्रों का वर्णन होता है, जिसमें लेश मात्र भी कमज़ोरी-उहुँक-उहुँक निर्बलता, हाँ निर्बलता नहीं होती।

संसारी—ऐसे चरित्र भला रहते कहाँ हैं ?

साहित्यानन्द—साहित्यिक संसार में।

संसारी—आख़िर वह संसार है किस लोक में ?

साहित्यानन्द—(अपना सर खुजलाता हुआ) आख़िर के स्थान पर अन्त कहो।

संसारी—अच्छा यही सही। "अन्त वह संसार है किस लोक में ?" मगर ऐसे जुमले आप ऐसे साहित्य-सेवी ही लोगों के मुँह में शोभा देते होंगे। मैं तो बोल नहीं सकता। ख़ैर मैंने आपकी बात रख दी। अब कृपा करके आप भी मेरी बात का जवाब दे दीजिए।

मेम साहबा एक बनी है, और एक मछली वाली !
धन्य धर्म ईसा-मसीह का, कितना महा शक्तिशाली !!

साहित्यानन्द—क्या पूछा ये चरित्र रहते कहाँ हैं ?......लेखकों की खोपड़ी में।

संसारी—धत् तेरे की ! मैं वहाँ जाकर उन लोगों के देखने की फ़िक्र में था।

साहित्यानन्द—हताश न हो। यदि जनता हम लोगों की कहानियाँ पढ़-पढ़ कर उनके चरित्रों के समान अपना रहन-सहन धारण करेगी, तो यही संसार धीरे-धीरे साहित्यिक संसार बन जाएगा।

संसारी—हाँ उन लोगों का रहन-सहन कैसा होता है, ज़रा मुझे भी बता दीजिए।

साहित्यानन्द—वे लोग जन्म से ही ज्ञान छाँटने लगते हैं। उनका वार्तालाप सदैव शुद्ध और उच्च कोटि की साहित्यिक भाषा में इतनी उत्तम होती है कि तुम दस-बीस कोष रट कर भी वैसी भाषा नहीं बोल सकते। और इसके अतिरिक्त उनके वाक्य के प्रत्येक शब्द में धर्म और शिक्षा का व्याख्यान होता है। उनकी छोटी सी छोटी बातचीत भी इतने महत्व की होती है कि जान पड़ता है कि कोई धर्म-प्रचारक रट कर अपना व्याख्यान सुना रहा है। और क्या ?

संसारी—बलिहारी है ऐसे चरित्रों की महाराज ! इनके बल पर आपका साहित्य बेशक फूला न समाता होगा। कला और स्वाभाविकता दोनों बड़ी दुआएँ देती होंगी।

साहित्यानन्द—क्यों नहीं ? आदर्श की उत्तमत्ता का प्रकाश सभी बातों पर अपनी शोभा दिखलाता ही है।

संसारी—भला आपके साहित्यिक संसार में ख़ाली शिक्षा और ज्ञान ही होते हैं, प्रेम-उरेम नहीं होता क्या ?

साहित्यानन्द—वाह होता क्यों नहीं। वहाँ तो ऐसा उच्च प्रेम होता है, जो इस संसार को नसीब-राम ! राम !—सौभाग्य में नहीं है।

संसारी—कैसा ?

साहित्यानन्द—वहाँ बालक युवा होते-होते किसी बालिका के प्रेम में पड़ जाता है। वह नित्य ही उससे मिलता है, परन्तु कभी अपना प्रेम प्रकट नहीं होने देता। जब उससे उसका विवाह होता है, तभी वह अपना प्रेम दिखलाता है।

संसारी—अगर उस बालिका की उससे नहीं किसी दूसरे से शादी हो गई ?

साहित्यानन्द—तब वह प्रेमी तुरन्त जङ्गल में जाकर संन्यासी हो जाता है या देश सुधारक बन जाता है या कभी-कभी मर भी जाता है।

संसारी—और ऐसी दशा में बालिका क्या करती है ?

साहित्यानन्द—वह अपने पूर्व प्रेम को बिलकुल भूल कर झट से उसे अपने नव-विवाहित पति के चरणों पर अर्पण कर देती है।

संसारी—अगर वह ऐसा न कर सके ?

साहित्यानन्द—तब वह साहित्यिक संसार से एकदम नहीं नहीं—सहसा निकाल बाहर कर दी जाएगी।

संसारी—ओहो ! तो यह कहिए कि आपके संसार में प्रेम गिरगिट की तरह रङ्ग बदलता है। आज इधर है, तो कल उधर।

साहित्यानन्द—निस्सन्देह ! क्योंकि यहाँ तो कार्यकर्ता का कर्तव्य होता है। वह जिस समय जिधर आज्ञा देता है भावों को उसी क्षण उधर ही मुड़ जाना पड़ता है ?

संसारी—मगर माफ़ कीजिएगा प्रेम तो अपने वश की बात नहीं है। उसे कर्तव्य क्या, ज्ञान का बाप भी नहीं समझा सकता। तभी तो किसी ने कहा है कि—

उन्र समझाते कटी आपको अय हज़रते-दिल !
हर जगह आप मगर अपनी सी कर जाते हैं !!

साहित्यानन्द—राम ! राम ! यह तो इस संसार का हाल है। परन्तु मैं तो साहित्यिक संसार की बातें कहता हूँ। यदि इस पद में तुम पति-पत्नी का प्रेम वर्णन करते, तो देखते मैं इसकी कितनी प्रशंसा करता।

संसारी—मैं समझ गया। आपके संसार में हृदय नहीं, केवल खोपड़ी ही खोपड़ी है, तभी वह दिल की बातें समझ नहीं सकता।

साहित्यानन्द—नहीं-नहीं, हृदय भी है। उसकी विशालता दाम्पत्य प्रेम में देखो। यहाँ पति-पत्नियों में सोते, उठते-बैठते, मरण-पर्यन्त प्राणप्यारी और प्राणनाथ की ऐसी रट लगी रहती है कि क्या कहूँ?

संसारी—माफ़ कीजिएगा। मैं हूँ तो मुँह-फट, फिर भी आप बुज़ुर्ग हैं, आपके सामने कहते शर्म मालूम होती है।

साहित्यानन्द—बुज़ुर्ग नहीं 'वृद्ध सज्जन', शर्म नहीं 'लज्जा'। हाँ-हाँ कहो। शर्माने—उहुँक—लजाने की कोई आवश्यकता नहीं। कहो-कहो !

संसारी—मियाँ-बीबी के बोल-चाल में मुझे यह प्राणनाथ और प्राणप्यारी वाली बात बहुत खटकती है। इसके लिए मैं दूसरों की क्यों कहूँ, अपनी ही मिसाल क्यों न दूँ? मेरी स्त्री जो बेचारी मर गई, वह मुझे बहुत प्यार करती थी, मगर कभी भी मेरे मुँह पर प्राणनाथ न कह सकी।

साहित्यानन्द—आहा ! मैं समझ गया—वह पतिव्रता न रही होगी।

संसारी—(अलग) अच्छा बचा रहो। (प्रकट) आप तो दाम्पत्य जीवन का सुख भोगते-भोगते बुड्ढे हो गए हैं। भला आपके इस जीवन में कितनी बार प्राणप्यारी और प्राणनाथ की आँधी आई है—ज़रा बताइए तो ?

संसारी—जब आप खुद ही इस तौर से दाम्पत्य प्रेम नहीं कर सके, तब दूसरों से इसकी कैसे उम्मीद करते हैं? आप तो साहित्य के सपूत-साहित्यानन्द हैं, आपका तो रहन-सहन 'आचार-विचार-सब कुछ अपने साहित्यिक संसार के ढङ्ग पर होना चाहिए। अगर वैसा नहीं हो सकता तो समझ लीजिए, आपका वह संसार कुछ नहीं, दो कौड़ी का है, धोखे की टट्टी है। जहाँ कुछ भी असलियत नहीं, जिधर देखो बस बनावट ही बनावट है।

साहित्यानन्द—नहीं-नहीं, यह गड़बड़-सड़बड़ मैं नहीं मानता, परन्तु इतनी बात अवश्य ठीक है कि मैं साहित्य का सपूत और उस पर साहित्यानन्द हूँ। और मेरा रहन-सहन साहित्यिक—ढङ्गानुसार होना चाहिए।

संसारी—(अलग) भई वाह ! यह ढङ्गानुसार की एक ही हुई।

साहित्यानन्द—(सोच में) क्या बताऊँ, मुझे यह बात कभी सूझी ही नहीं। ख़ैर—उहुँक—अस्तु, जभी से मनुष्य चेते, तभी से सही। बस मैं आज ही से अपना रहन-सहन सब कुछ साहित्यिक बनाता हूँ।

(चल देता है)

संसारी—(अकेला) अरे ! चले गए। ख़ैर ! जाने दो। मेरे लिए इस वक्त इनकी इतनी ही मुलाक़ात काफ़ी है। आगे तो मैं अब अपना रङ्ग जमा ही लूँगा। क्या बताऊँ चपला की ख़ातिर इनका बहुत-कुछ लिहाज़ करना पड़ा, वरना हज़रत तो ऐसे हैं कि बस डुगडुगी बजा कर इन्हें नचाया करो। मगर जब ऐसे लोग हमारे यहाँ साहित्य के सपूत होने लगे हैं, तब तो साहित्य बेचारे का ईश्वर ही मालिक है ? (जाता है)

"बूड़ा बंस कबीर का, उपजे पूत-कपूत।

(क्रमशः)

* * *

"अररररर क़बीर !"

परवाह नहीं, अपने ही घर की स्त्रियाँ हैं तो क्या ? होली का तो यही महात्म्य है कि :—

"अबला विलोकहिं पुरुषमय, जग पुरुष सब अबलामयम् !"

'एहि पाखे पतिव्रत ताखे धरो।'

'सभ्यता, शिष्टता और माँ-बहिनों का सम्मान करने के लिए तो सारा वर्ष पड़ा है। आज तो होली के दिन उन्हें फूहड़ गालियाँ देने का ही महत्व है, और यही सनातन काल से होता आया है !

साहित्यानन्द—अरे ! इसका तो मैंने कभी ध्यान ही नहीं दिया। क्या बताऊँ, गृहस्थी के कामों से इसके लिए कभी छुट्टी नहीं मिली।

मुक़दमेबाज़ी और उसका परिणाम

चित्रकार :—'भविष्य' के आर्टिस्ट—श्री० एच० बागची। कवि :—'भविष्य' के हिन्दी-कविता-सम्पादक—श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव

फ़ुर्सत नहीं !

बैठा रहा द्वार के ऊपर, दीन मुवक्किल जब दिन-रात,
तब वकील साहब के दर्शन मिले, हुई उनसे दो बात !
मिलता है उनका मिज़ाज ही नहीं, बिगड़ कर बारम्बार—
कहते हैं वे, "एक मिनट में कह अपनी बातों का सार"!!

फ़ुर्सत का सदुपयोग !!

फैलाए हैं पैर, लिए हैं हाथों में बोतल प्यारी,
ऊँघ-ऊँघ कर बड़े मुक़दमे की करते हैं तय्यारी !
बेसमझे सुलझा लेते हैं वे उसकी उलझन सारी,
कहना है कुछ न कुछ अदालत में, ले चुके फ़ीस भारी !

बेतुकी बहस
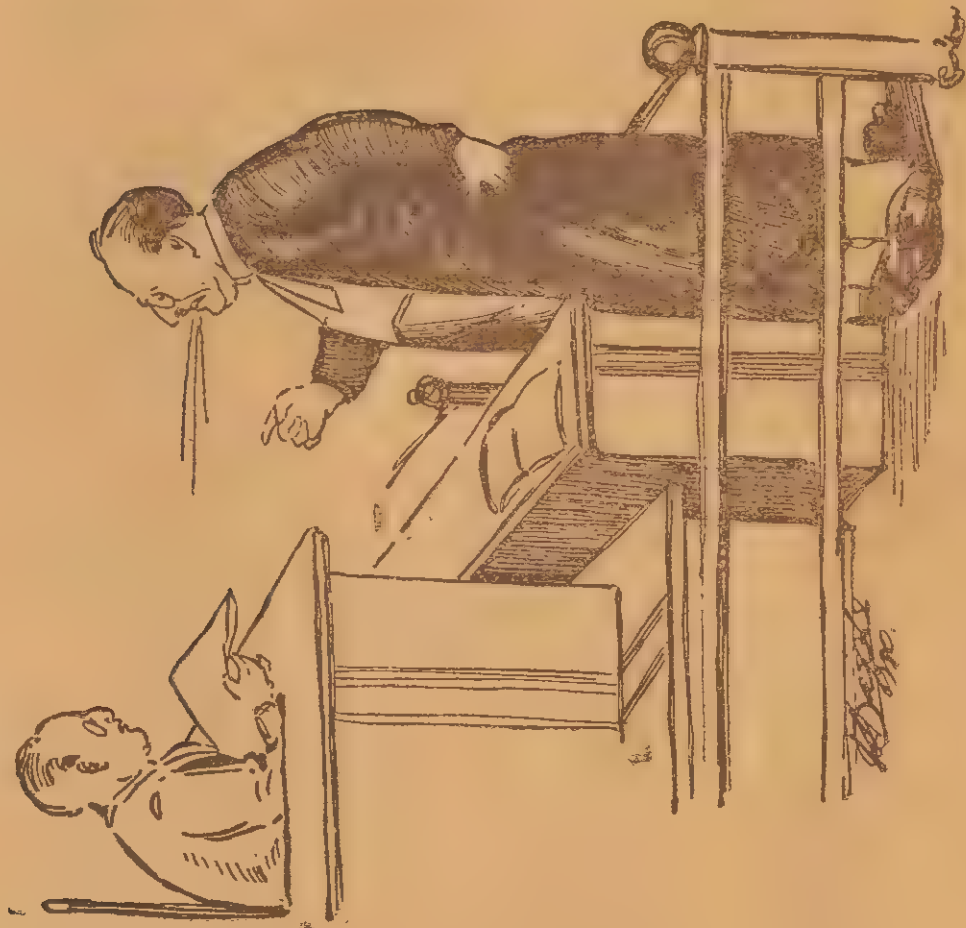
कुछ का कुछ बक गए अदालत में वे, गया मुवक्किल हार,
आकर बाहर कहा मुवक्किल से, भाई मैं था लाचार!
साहब समझे नहीं मुक़द्दमा, मैंने समझाया बहु बार,
सुना नहीं क्या तुमने? उनको कितनी बतलाई फटकार!

'अपील में जिता दूँगा'

अजी सिड़ी था यह साहब तो, जो तुम गए मुक़द्दमा हार,
तुम्हें जिता दूँगा अपील में, इसका लेता हूँ मैं भार!
इतने में क्या होगा? गहने लाओ और अधिक दस-बीस,
जब जीतोगे मौज करोगे, दे दो थोड़ी तो है फ़ीस!!

जीतने की तैयारी

पाई फ़ीस, उन्होंने दे दी है लम्बी-चौड़ी दावत,
है शराब भी, और 'बॉल' भी, सब कुछ है, कुछ पूछो मत !
करते भी वकील साहब हैं यों अपील की तय्यारी,
और जीत जाने की है उम्मीद मुवक्किल को भारी !!

परिणाम।

हार, भिखारी बना राह का फिरता है मारा-मारा,
कर ही क्या सकता वकील का, भला मुवक्किल बेचारा !
क्या जाने क्या-क्या उनको वह मन ही मन देता है शाप,
क्यों रुपया दे दिया, लड़ा क्यों, उसके ही शिर है सब पाप !!

वकीला शान !

मस्त हुए वकील साहब हैं, पाकर बड़े मौज से धन,
जितना मोटा उनका तन है, उतना ही छोटा है मन !
कैसे भी हो, इस दुनिया में उनकी बात गई है बन,
आन-बान है, बड़ी शान है, 'साहब' सा है रहन-सहन !!

जॉनबुल की पाँचो घी में !

जितनी लगी कोर्ट-फ़ी वह तो मार ले गई है सरकार,
पाया जो वकील ने उसका वहन कर सके क्या वे भार ?
ले-लेकर सामान विदेशी, भेज उसे भी दिया विदेश !
दोनों झोली मिलीं 'जॉनबुल' को, इसमें सन्देह न लेश
यों वकील साहब लुटा रहे, मुक्त-हस्त से अपना देश !!
क्यों न भारतीयों को होवे, उनके कारण क्लेश विशेष !!

होली की दावत

[श्री० युगलकिशोर जी खत्री]

पहला दृश्य

(पियक्कड़राज का प्रवेश)

पिय०—और क्या ? पीता हूँ तो क्या किसी के बाप का पीता हूँ ? भगवान देता है और मैं पीता हूँ ! तुम्हें दे, तुम भी पियो ! मैं तो नहीं जाता किसी को मना करने ? फिर मुझे लोग क्यों तङ्ग करते हैं ?

(गाता है)

पिला साक़िया अरग़वानी शराब,
जो पीरी में दे नौजवानी शराब।
× × ×
ग़म ग़लत करने को मैं पीता हूँ मै,
इससे बेहतर ग़मरुबा देखी न शै !
× × ×
पीता नहीं, शराब कभी बे उज़ू किए,
क़ालिब में मेरे रूह किसी पारसा की है।
× × ×

(दूसरी ओर से सत्यवती का प्रवेश)

सत्य०—कहाँ की तयारी है ?

पिय०—जहन्नुम की !

सत्य०—भला, मैंने कौन सी ऐसी बात कह दी, जो फट पड़े ?

पिय०—ज़रा बोली तो सुनो, फट पड़े ! और क्या ? मानो मैं कोई गुब्बारा हूँ या मोटर-गाड़ी का 'टायर' !

सत्य०—आपसे तो बोलना भी पाप है !

पिय०—और क्या ? पति से बोलना तो पतिव्रता स्त्री के लिए पाप है ही।

सत्य०—लेकिन मैंने अपराध कौन सा कर डाला है ? यही न पूछा है कि कहाँ चले। इसमें कौन सी...!

पिय०—क्यों पूछा ? जाने के समय यों रोकने की क्या ज़रूरत थी ?

सत्य०—ख़ैर, भूल हो गई। परन्तु ऐसे कौन से काम के लिए जा रहे थे, जो टोक देने से यात्रा बिगड़ गई ? क्या सुन सकती हूँ ?

पिय०—ख़ूब सुन सकती हो, ऐसे न सुनाई पड़े तो कानों में 'लाउडस्पीकर' का पोंगा लगा कर सुन सकती हो। मैंने होली के उपलक्ष में दोस्तों को दावत दी है। उसी के लिए कुछ रुपए कहीं से उधार लेने के लिए जा रहा हूँ। ऐसे काम में टोक कर..........!

सत्य०—बहुत बुरा किया, क्यों ?

पिय०—और क्या ? अगर रुपया न मिला तो ? ऐसे मौक़े पर तुम्हें टोकने का क्या अधिकार था ?

सत्य०—बेशक कोई अधिकार न था। लेकिन यह तो बताइए कि घर में भोजन के लाले पड़ रहे हैं और आप क़र्ज़ लेकर दोस्तों को दावत देने जाते हैं !

पिय०—यह मेरी ख़ुशी की बात है। मैं क़र्ज़ लेकर दावत दूँ या डाका डाल कर। उसका ज़िक्र करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।

सत्य०—(क्रुद्ध होकर) अधिकार ? अधिकार तो मुझे इतना है कि तुम्हारे एक-एक दोस्त को सात-सात झाड़ू मार कर घर से बाहर कर दूँ।

पिय०—कभी नहीं। मैं स्मृति और पुराण खोल कर दिखा सकता हूँ, कि औरत को ऐसा कोई अधिकार नहीं है।

सत्य०—तो क्या स्मृतियों और पुराणों में यही लिखा है कि दुनिया भर के आवारों को बटोर कर उनके साथ शराब पियो। क्यों ?

पिय०—नहीं लिखा है न सही। मैं पुराणों और स्मृतियों का कोई ग़ुलाम हूँ ? कि उनके बाप का क़र्ज़ खाया है ?

सत्य०—परन्तु मैं हूँ ! अच्छा आने दो कमबख़्तों को आज घर में।

(सरोष प्रस्थान)

पिय०—बमभोला ! सारा गुड़ गोबर हो गया। और क्या ? दूकान में कम्बख़्त पिकेटरों के मारे पीने नहीं पाते। घर में डौल बैठाया तो हरामज़ादी जोड़ू ने उसमें भी गोबर घोल दिया। बड़े-बड़े लीडर मरे जाते हैं ; मगर न मालूम कम्बख़्त यमराज इससे क्यों डरता है। मालूम होता है, वह भी पीता है। इसीसे इसे नहीं ले जाता। ख़ैर, चलें चुक्कड़ानन्द के यहाँ। न होगा तो उसी के घर दावत की जायगी। (प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

[पियक्कड़राज का प्रवेश]

पिय०—अरे ! भाई चुक्कड़ानन्द ! चुक्कड़ानन्द जी हो !

(कुछ देर टहलने के बाद)

पिय०—अरे भाई, चुक्कड़ानन्द ! अरे मर गए क्या ?

(एकाएक चुक्कड़ानन्द बड़े ज़ोर से मकान से निकलता है और दोनों आपस में टकराते हैं।)

पिय०—(दोनों हाथों से सिर पकड़ कर) उफ़ ! बाप रे बाप ! मर गए पियक्कड़राज और कम्बख़्त जोड़ू राँड हो गई ! दोस्त, आए भी तो ऐसे, जैसे तोप का गोला आता है।

चुक्कड़०—(पियक्कड़राज को देख कर) अरे कौन है ? पियक्कड़राज ! अरे भाई, मेरी जान बचाओ।

पिय०—क्यों ? क्यों ? क्या मकान के भीतर जर्मन घुस आए हैं ? या कोई भूचाल आया है ?

(अन्दर से एक मोटी औरत का हाथ में झाड़ू लिए निकलना)

औरत—खड़ा रह मर्दुद, भागता कहाँ है ?

पिय०—बाप रे ! यह औरत है या मरकही भैंस ?

चुक्कड़०—भाई, पियक्कड़, मेरी जान बचाओ ! इस भैंसासुर की नानी से।

पिय०—तो भाई साहब ! पियक्कड़राज ही इस चामुण्डा के सामने कितनी देर ठहर सकता है ?

मोटी०—ख़बरदार अगर घर के भीतर पैर रक्खा, तो मारे डण्डों के कचूमर निकाल दूँगी।

(किवाड़ बन्द कर लेती है)

पिय०—बाप रे, जान बची। (चुक्कड़ से) क्यों भाई, यह दरियाई हाथी क्यों डाल रक्खा है। यह क्या तुम्हारी नानी है या ख़ाला ?

चुक्कड़०—अरे भाई, नानी होती तो क्या चिन्ता थी, कमबख़्त जोड़ू है, जोड़ू ! सुनते हैं, जन्म-जन्मान्तर तक साथ रहेगी।

पिय०—बमभोला ! तब तो जो सोच कर आया था, वह यहाँ भी नहीं हो सकता।

चुक्कड़०—क्या नहीं हो सकता ?

पिय०—कुछ भी नहीं हो सकता। और क्या ? जिस घर में ऐसी त्रिजटा है, उसके तो पास होकर गुज़रना भी जान पर खेलना है !

चुक्कड़०—आख़िर सुनें भी तो, किस लिए आए थे ?

पिय०—इसलिए कि आज रात को जो दावत होने वाली है, वह मेरे यहाँ न होकर तुम्हारे यहाँ होती। क्योंकि, मेरी श्रीमती जी अगर आपकी श्रीमती जी की तरह त्रिजटा नहीं हैं तो भी त्रिजटा की बच्ची तो ज़रूर ही हैं, आज आते-आते उन्होंने अपना जरनैली हुक्म सुना दिया है कि, अगर तुम्हारा कोई दोस्त यहाँ आएगा तो उसकी झाड़ू से ख़बर ली जायगी।

चुक्कड़०—और यहाँ एक ही डण्डे में सबकी खोपड़ी का कचूमर निकल जाएगा।

पिय०—तब क्या करना चाहिए ?

चुक्कड़०—दावत डिसमिस और प्रोग्राम बातिल !

पिय०—वाह ! यह कैसे हो सकता है ? फिर कौन जाने, अगली होली तक जिएँ या मरें ?

चुक्कड़०—तो फिर उपाय ?

पिय ०—ठहरो मुझे कुछ देर सोचने दो।

(दोनों हाथों से अपनी खोपड़ी खुजलाता है)

(एकाएक उछल कर) सुनो-सुनो ! अगर कलवरिया ही में दावत हो जाए, तो कैसा ?

चुक्कड़०—मगर वहाँ पिकेटरों के मारे आपकी रूह भी फटकने पाएगी ?

पिय०—पिकेटरों की ऐसी-तैसी। वहाँ तो ख़ुद सरकार दौलत-मदार की पुलिस हमारी रक्षा करेगी और पीने में मदद देगी। जानते नहीं, बड़े लाट साहब ने 'उर्दीनांस' (ऑर्डिनेन्स) पास कर दिया है कि अगर हमारे प्यारे पियक्कड़ों से कोई बोले, तो उसे फ़ौरन् जेल दे दो !

चुक्कड़०—वाह ! तब तो सरकार बड़ी लायक़ है।

पिय०—बड़ी लायक़ ! हमें तो मालूम होता है कि वह पूर्व-जन्म की हम लोगों की नानी है।

चुक्कड़०— बात कुछ ऐसी ही है, नहीं तो शराबियों से उसे इतना प्रेम क्यों होता ? अच्छा लाओ, ज़रा तुम्हारी पीठ तो ठोंक दें, क्योंकि तुमने बात बड़ी मार्के की सोची है।

(पियक्कड़राज, चुक्कड़ानन्द की ओर पीठ कर देता है और चुक्कड़ानन्द उसे घूँसों से ठोंकने लगता है। पियक्कड़राज चिल्लाता है।)

पिय०—उफ़ ! यह भी कोई पीठ ठोकने का तरीक़ा है ? पीठ क्या हुई, मानों धोबी की पाट हो गई ! राम-राम !

चुक्कड़०—अरे यार ! तुमने बात ही ऐसी कही कि बिना भरपेट ठोके काम ही नहीं चल सकता था।

पिय०—ख़ैर, कुछ परवाह नहीं। लाख पिकेटिङ्ग हो तो क्या हुआ। पियक्कड़राज ने जो नुस्ख़ा निकाला है, वह अमोघ है। जाता हूँ, मित्रों को इस स्थान-परिवर्तन की सूचना दिए देता हूँ। तस्लीमात।

चुक्कड़०—तस्लीमात !

(दोनों का प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

स्थान—शराब की दूकान का सामना

(गाँधी टोपी पहने कुछ लोग दूकान के सामने बैठे हैं। पियक्कड़राज का दल-बल सहित प्रवेश)

पिय०—आगए पियक्कड़राज ! करो अब मेरे सामने पिकेटिङ्ग। हुँह और क्या ?

(आगे बढ़ता है तो एक पिकेटर आकर रोकता है)

पिकेटर—कहाँ जाते हैं, भाई जी !

पिय०—(स्वत:) 'भाई जी !' चचा जी कहते शायद शरम मालूम पड़ती है ?" (आगे बढ़ता है)

पिकेटर—भाई जी, उधर कहाँ जा रहे हैं ?

पिय०—जहन्नुम में ! और क्या ? हट जाओ सामने से !

पिकेटर—जी नहीं, मैं ज़िन्दा रहते श्रीमान को जहन्नुम में कदापि जाने न दूँगा।

पिय०—क्यों, क्या तुमने जहन्नुम का ठेका ले रक्खा है या यमराज के उत्तराधिकारी हो ?

पिकेटर—जी नहीं, मैं आपका सेवक हूँ और मेरी प्रार्थना है कि आप वहाँ न जाएँ।

पिय०—क्यों, यह क्या तुम्हारे बाबा का घर है ?

पिकेटर—जी नहीं, यह बड़ी ख़राब जगह है, वहाँ आप जैसे शरीफ़ों को नहीं जाना चाहिए।

पिय०—हे सुनो ! यह अपना उपदेश अपने पास रक्खो। नहीं तो मुझे गुस्सा आ जायगा, तो दो लप्पड़ जड़ दूँगा और पुलिस को बुला कर पकड़वा दूँगा।

पिकेटर—यह आपकी मेहरबानी है।

पिय०—लेकिन तुम यहाँ से नहीं हटोगे ?

पिकेटर—जी नहीं !

पिय०—अच्छा, ठहरो ! (नेपथ्य की ओर मुँह करके) पुलिस ! ओ पुलिस वाले ! अजी जमादार साहब ! (पिकेटर से) क्यों, नहीं मानोगे, बुलाऊँ ?

पिकेटर—आपकी ख़ुशी।

पिय०—अच्छा, ठहरो। मैं अभी जाकर तलवार-बन्दूक़ और तोप-गोले आदि से लैस—एकदम सशस्त्र पुलिस बुला लाता हूँ। (तेज़ी से प्रस्थान)

पिकेटर—(अन्य लोगों से) भाइयो, आप लोग यहाँ खड़े न रहें। मेहरबानी करके यहाँ से चले जायँ।

चुकड़०—हम लोग उसी आदमी के साथी हैं। और यहाँ पीने के लिए आए हैं।

पिकेटर—(अपने साथियों से) आओ भाइयो ! हम लोग इनके पैरों पर लोट जाएँ, आख़िर ये भी तो मनुष्य ही हैं, ज़रूर हमारी प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

(सब पिकेटर इन लोगों के पैरों पर लोट जाते हैं)

चुकड़०—(अपने साथी से) क्यों भाई टमटम, ये पैरों पर लोट गए। अब क्या करना चाहिए ?

टमटम—हमारी तो राय है कि लौट चलें।

चुकड़०—और पियक्कड़राज जो पुलिस बुलाने गया है ?

टमटम—जाने दो कम्बख़्त को, मैं तो इन भले आदमियों को अपनी आँखों के सामने पिटते कभी भी नहीं देख सकता।

बोतलदास—कभी नहीं।

चुकड़०—तो फिर क्या इरादा है !

बोतलदास—बस, चल दो यहाँ से। भाड़ में गया पीना।

(सबका प्रस्थान दूसरी ओर से पियक्कड़ राज का प्रवेश)

पिय०—राइट लेफ़्ट, राइट लेफ़्ट, राइट लेफ़्ट, आ गए पियक्कड़राज मय पलटन के। और क्या ? अब देखें, कौन आऊँ के मुँह पर ठहरता है। लेकिन अरे वे हमारे साथी कहाँ ग़ायब हो गए ?

(इधर-उधर ताकता है और साथियों के नाम ले-लेकर पुकारता है)

(सार्जेण्ट फ़ॉक्स का दो कॉन्स्टेबलों के साथ प्रवेश)

सार्जेण्ट फ़ॉक्स—(पियक्कड़राज से) हैलो, काला आडमी ! क्या माँगटा है ?

पिय०—सलाम साहब ! हुज़ूर हम शराब माँगता है—साहब ! लेकिन यह लोग ख़रीदने नहीं देता।

सार्जेण्ट फ़ॉक्स—कुछ परवा नइ। मनी लाओ, हम टुमको शराब ला डेगा।

(पियक्कड़राज रुपया निकाल कर सार्जेण्ट को देता है। सार्जेण्ट किसी पिकेटर को धक्का देता हुआ किसी को चाँटा लगाता हुआ शराब की दुकान से दो बोतलें लाकर—पियक्कड़राज को देता है। पियक्कड़राज बोतल लेकर ख़ुशी-ख़ुशी चला जाता है)

पिय०—(जाते हुए) क्यों अब कहाँ गई शेख़ी ? जब खोपड़ी पर तड़ातड़ पड़ने लगी, तब सारी देश-भक्ति हवा हो गई। लात के देवता बात से थोड़े ही मान सकते हैं !

(पिकेटरों को बोतल दिखाता हुआ पियक्कड़राज का प्रस्थान)

चौथा दृश्य

स्थान—सड़क। समय—आधी रात।

(पियक्कड़राज का बग़ल में बोतल दबाए झूमते हुए प्रवेश)

पिय०—नशे में मैं हैं, मैं में नशा है, यारो मैं नशे में हूँ। वल्लाह नशा भी क्या चीज़ है। शरीर में अपूर्व शक्ति का अनुभव होने लगता है। (लड़खड़ाता हुआ) मालूम होता है कि संसार में मैं भी कोई चीज़ हूँ। (गिर पड़ता है) धत्तेरे की आसमान चक्कर काटने लगा। (ज़मीन पर ही बैठा हुआ बोतल को मुँह से लगा कर पीता है !) आह ! क्या ज़ायक़ा है ! भला कॉङ्ग्रेस वाले इस ज़ायक़े को क्या समझें ? बन्दर अदरख के स्वाद को क्या जाने ? (बोतल को कलेजे से चिपका कर) मेरी जानी शराब, मेरी नानी शराब, मेरी मामी शराब !

(बोतल को सामने रख कर घुटनों के बल बैठता है और दोनों हाथ जोड़ कर स्तुति करता है)

देवी सुरेश्वरी भगवति मदिरे,
त्रिभुवन तारिणि तरल तरङ्गे !
बोतल मध्य विहारिणि विमले।
मम मति रास्तां तव पद कमले।
रोगं शोकं तापं पापम्।
हर मे भगवति कुमति कलापम्।
त्रिभुवन सारे वसुधा हारे।
त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे।
अलकानन्दे परमानन्दे।
कुरु कृपा मयि कातर बन्दे
तव तट निकटे यस्य निवासः।
खलु बैकुण्ठे तस्य निवासः॥

(दूसरी ओर से एक सिपाही का प्रवेश)

सिपाही—जागते रहना हो—ओ—ओ—ओ।

(पियक्कड़राज से टकरा कर गिर पड़ता है)

सिपाही—अरे बाप रे ! ई का भवा ! हम गिरेनि या ज़मीने ससुरी उलट गई ?

पिय०—सलाम जमादार जी !

सिपाही—(पियक्कड़राज को देखकर) अच्छा सरऊ, तुम हौ ? (पियक्कड़ के पास जाकर) क्यों बे, यहाँ काहे को बैठा है ?

पिय०—(डर कर) जमादार जी, सलाम !

सिपाही—तेरे सलाम की और जमादार जी की ऐसी-तैसी !

(पियक्कड़ की पीठ पर ठोकर जमा कर) क्यों रे, यह रास्ता है, या तेरी ख़ाला का घर ?

पिय०—(काँपता हुआ) जमादार साहब, सरकार हुज़ूर !

सिपाही—हुज़ूर-कुज़ूर कुछ नहीं, चलो थाने में।

(पियक्कड़राज को पकड़ कर घसीटता है। सामने से सार्जेण्ट फ़ॉक्स आता है)

फ़ॉक्स—क्या है मैन ?

सिपाही—हुज़ूर, मतवाला है।

फ़ॉक्स—ले जाओ थाने में।

पिय०—अरे साहब, आप इतनी जल्दी मुझे भूल गए ? आपने ही तो कृपा करके मुझे शराब ला दी थी !

फ़ॉक्स—चुप रहो, डेम, स्टुपिड ! हम बाट नहीं माँगटा।

पिय०—साहब, अबकी माफ़ कर दीजिए। कान पकड़ता हूँ। फिर कभी नहीं पिऊँगा।

फ़ॉक्स—ओ, यू ब्लाडी !

(पियक्कड़राज की पीठ पर ठोकर जमाता है और वह गिर पड़ता है)

पिय०—(रोता हुआ) हाय ! हाय ! मर गए साहब, दोहाई सरकार की, अबकी माफ़ कर दो। फिर ऐसा काम कभी नहीं करूँगा।

फ़ॉक्स—(सिपाही से) देखटा क्या है ? ले जाओ, इसको यहाँ से।

पिय०—साहब, अगर आपको यही करना था, तो शराब लाकर क्यों दी थी ? दोहाई साहब, अबकी माफ़ कर दीजिए। मैं क़सम खाता हूँ। फिर कभी शराब न छुऊँगा।

(सिपाही पियक्कड़ को घसीटता है। फ़ॉक्स का प्रस्थान। नेपथ्य में पटाखे की आवाज़ होती है। सिपाही डर कर पियक्कड़ को छोड़ देता है और दूसरी ओर से एक खद्दरपोश का घबराए हुए प्रवेश)

खद्दरपोश—पुलिस ! पुलिस ! बचाओ ! बचाओ !! डाकू मुझे लूटने के लिए मेरे पीछे लगे हैं। देखो ! देखो ! वह आए ! वह आए !

सिपाही—ऐं ! डाकू आगए ! अरे बाप रे ! (उछल कर भागता है)

खद्दरपोश—(हँसता हुआ) हा हा हा हा ! निर्बल के सामने तो ऐसे तीसमार ख़ाँ बन गए कि जिसका ठिकाना नहीं और डाकू का नाम सुनते ही नानी मर गई ! हा हा हा हा ! बलिहारी है। (पियक्कड़राज से) जाइए जनाब ! अब आप स्वतन्त्र हैं। जाइए। आपका पश्चात्ताप सुन कर मैंने ही यह झूठमूठ का जाल बिछाया था। जाइए। लेकिन अपने पश्चात्ताप के शब्दों को न भूलिएगा।

पिय०—(खद्दरपोश युवक के पैर छूकर) आह आपने मेरी इज़्ज़त बचा ली। शिक्षा तो मुझे काफ़ी मिल चुकी है। अब मैं शराब का एक क़तरा भी हराम समझता हूँ।

खद्दरपोश—ईश्वर आपको सुबुद्धि दे।

* * *

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

खेलो रङ्ग अबीर उड़ाओ, लाल-गुलाल लगाओ,
पर अति सुरँग लाल चादर को मत बदरङ्ग बनाओ;
न अपना रङ्ग गँवाओ।
—(हरिऔध)

❀

'दिसि कुञ्जरहु कमठ अहि कोला, धरनि धरहु धरि धीर न डोला!' क्योंकि आज होली है, हँसने-हँसाने का त्योहार है, इसलिए सावधान! आज श्रीजगद्गुरु हँसेंगे? बड़े ज़ोर से ठहाका लगेगा। आसमान गूँज उठेगा और प्रकृति काँप उठेगी। कमबख़्त क़ुलक़ुले मीना की तो हस्ती ही क्या, जो मुक़ाबला कर सके! हा हा हा हा!

❀

आप नाज़ुक दिमाग़ वाले हैं, आपके कानों के पर्दे कोमल हैं। हिज़ होलीनेस की भीमा-भयङ्करी हँसी आप बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे, इसलिए लगवा लीजिए, अपने कानों में थोड़ी सी रूई या डलवा लीजिए थोड़ा सा तेल, वरना फट जायगी, कान के पर्दे की कोमल चमड़ी। हा हा हा हा! समझे?

❀

हाँ, मॉडरेट राजनीतिज्ञ, कौन्सिलों की कुर्सियों के सनीचर और सुधार का नाम सुनते ही 'करिखही हाँडी' सा मुँह बना लेने वाले सहातनी हँसने की चीज़ नहीं हैं, इन्हें छोड़ दो अगले मुहर्रम के लिए, उसी शुभ अवसर पर इनके नामों को रो लेना, सिर धुन लेना इनकी अक़्ल पर और इनकी दन्त निपोरई नीति पर! इस समय तो बस, जी खोल कर हँसो—हा हा हा हा!

❀

क्या कहा? ये देश के करोड़ों छात्र और विद्यार्थी नामधारी सपूत हँसने की चीज़ हैं। नहीं-नहीं, ये बेचारे तो दया के पात्र ! देखते नहीं, इनके चेहरे से कैसी मासूमियत टपक रही है! होंठ सूख गए हैं, गालों पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं, कमर की झुकावट कमान से बाज़ी ले रही है, बिना चश्मा के स्वप्न भी नहीं देख सकते! ये बीबी का भ्रूविलास तो बर्दाश्त ही नहीं कर सकते, फिर ठहाका—और वह भी हिज़ होलीनेस का—कैसे बर्दाश्त कर सकेंगे?

❀

अरे भाई, ये मोम की जीती-जागती पुतलियाँ किसी अजायबख़ाने में धीरे से सजा कर रख देने के लायक़ हैं, ताकि देश में ज़नानापन की स्मृति क़ायम रह जाय। ये न रहें तो विलायती बिसातियों का पमेटम, आईना-कङ्घी, रोज़ पाउडर और बाल उड़ाने का 'रानी मार्का' साबुन बिकना बन्द हो जाय। इस होली के अवसर पर इनके हाल पर हँस दोगे तो बेचारे ओस-कण की भाँति बिखर पड़ेंगे!

❀

पण्डित जी की तोंद भी हँसने की नहीं, वरं अदब करने की—पूजा करने की चीज़ है। होली के अवसर पर अगर श्रद्धा-भक्ति पूर्वक चार पैसे ख़र्च करके उस पर थोड़ा सा गुलाल पोत दो तो मालूम हो कि सूजी की क़ब्र पर किसी ने लाल वस्त्र उढ़ा दिया है या भिश्ती मियाँ ने ईद की ख़ुशी में अपनी मशक पर सुर्ख़ रङ्ग की खोल चढ़ा ली है। बड़े मज़े की चीज़ है, वह तोंद। दादा सनातन-धर्म का तो एक मात्र आश्रय-स्थल है। चारों ओर से हैरान-परेशान होने पर वहीं तो उन्हें थोड़ा सा विश्राम मिलता है। उस पर हँस कर क्या बेचारे को बुढ़ौती में ख़ानाबदोश बनाओगे?

❀

यह होली, जिसके उपलक्ष में तुम्हें हँसने की सूझी है, उसी की महामहिमान्विता तोंद की बदौलत ही तो बरक़रार है। उसी की बदौलत तो आज वर्षों का सड़ा-गला ग़लीज़, गोबर, कीचड़ और नाबदान का पानी तक सार्थक हो जाता है! उसी की बदौलत तो आज भले घर की स्त्रियों का—माँ-बहिनों का—रास्ते में निकलना तक मुश्किल है और उसी की बदौलत तो आज बूढ़े बाबा के लिए 'पतोहू चने की खेती', 'छोटी चाची भौजाई बराबर', 'मामी आधी जोय' (जोरू?), और देवर जी 'द्विवर' अर्थात् द्वितीय वर (!!!) के अपभ्रंश हैं! भला, ऐसी 'भानमती की पिटारी' भी क्या हँसने की चीज़ है?

❀

'हिन्दी-साहित्य' के सपूतगण भी, हँसने की चीज़ नहीं हैं। माशा अल्लाह, बड़े लायक़-फ़ायक़, बड़े दूरदर्शी, बड़े तीसमार ख़ाँ। बिना 'पितरपख' के ही बड़े-बड़े आचार्यों का श्राद्ध कर डालते हैं। उठा लेते हैं क़लम तो बनारस की खटकिनों और लखनऊ की भठियारिनों के भी कान कतर कर रख देते हैं! इनकी बदौलत बारहों महीने 'अररर कबीर' का मज़ा मिल जाता है। लेहाज़ा ये भी हँसने के लायक़ नहीं।

❀

इनकी लेखनी में फाग का इतना सामान है कि उतना शायद कलकत्ते की 'मलवाहिनी' हरी नदी में भी न होगा। हरिहर क्षेत्र के मेले के अघोरी तो इनके शिष्य होने की भी योग्यता नहीं रखते। बेचारे कहाँ पाएँ उतनी गन्दगी जितनी इनकी अमोघ शक्तिशालिनी लेखनी उगल देती है। कभी-कभी तो मालूम होता है कि निगोड़ी को 'कॉलरा' हो गया है या उसके दण्ड पेलने का अखाड़ा कुम्भिपाक का सगा साला बन गया है।

❀

इस कमान सी कमर और गलित चर्म तथा पलित केशों वाले बूढ़े सनातन-धर्म दादा को देख कर तुम्हें हँसी आती है। सारा शरीर कीचड़, गोबर और कूड़ा-करकट से लतफ़त् हो रहा है। मानो बूढ़े बाबा कहीं से होली खेल कर आ रहे हैं। हूबहू लङ्गूर की शक्ल फ़क़त दुम की कसर है! आज होली के दिन ऐसी 'किम्भूत किमाकार' सूरत देख कर भला, किस मुहर्रमी को हँसी न आयगी? परन्तु हँसने की चीज़ ये नहीं, इनके वे करोड़ों अनुयायी हैं, जिन्होंने इस बुढ़ौती में बेचारे को होली का भड़ुआ बना रक्खा है, जो इन्हें उल्लू बना कर अपना उल्लू सीधा किया करते हैं और जिनकी बदौलत बेचारे को जीते जी नर्क-यातना भोगनी पड़ रही है!

❀

दादा जी के शरीर पर यह होली की गन्दगी नहीं, दम्भ का कीच है; नाबदान का पानी नहीं, पाखण्ड के छींटे हैं; होलिका-भस्म नहीं, स्वार्थपरता की ख़ाक है। सारे शरीर से कपट, छल-छन्द, पाप-परायणता, नीचता, अश्लीलता, असभ्यता, ढोंग, पेट-पूजा और निष्ठुरता की विकट दुर्गन्ध आ रही है। लाहौल विलाक़ूवत! सारा नशा किरकिरा हो गया, होली का मज़ा फीका पड़ गया। मालूम होता है, ऐन होली के दिन हिज़ होलीनेस ने किसी सनातनी का मुँह देख लिया है।

❀

अछूतों की आह की आँच से बेचारे का सारा शरीर झुलस गया है, विधवाओं के रक्ताश्रु के छींटे सारे शरीर पर पड़े हैं, बाल-विवाह का कोढ़ समस्त अङ्ग-प्रत्यङ्ग में फूट पड़ा है, वृद्ध-विवाह की पूरीष-पूरित गन्दगी से आपाद-मस्तक भर गया है; उफ़! उफ़!! तिलक लगाए, चिमटा-कमण्डलु लिए; कृशोदर, वृकोदर, राख पोते, कपड़े रँगाए, और जटा रखाए हुए नाना प्रकार के गृद्धों की टोलियाँ बेचारे को नोच रही हैं! आह! इस बेचारे बूढ़े की यह दयनीय दशा देख कर तुम्हें हँसी आती है! उफ़! तुम बड़े निष्ठुर हो, बड़े सङ्ग-दिल!

❀

ये बूढ़े भारत बाबा भी हँसने की चीज़ नहीं हैं। पुराने रसिया हैं। त्रेतायुग के श्रीरामचन्द्र के 'रामराज्य' से लेकर (सड़ी नौकरशाही के 'रामराज्य' तक के मज़े लूट चुके हैं। इन्होंने प्रलयङ्कर शङ्कर का ताण्डव नृत्य और 'मिसेज़ लन्दन' का 'बाल-डान्स' देखा है। बहत्तर साले बूढ़ों की तरह स्निग्धा-मुग्धा षोडशी के पाणि-पीड़न के लिए सदा पाणि पसारे रहते हैं। बड़े जहाँदीदा, बड़े अनुभवी और पुराने बुज़ुर्ग हैं। इन्हें कोई क्या हँसेगा?

❀

इन्होंने ब्रजराज और ब्रजबालाओं की होली देखी है, दिगन्त को कम्पायमान करने वाली 'अररर' ध्वनि सुनी है। उन दिनों जब इनके घर होली आती थी तो वन-उपवन लहलहा उठते थे, कोकिल पञ्चम स्वर में गा उठती थी, मृदु-मन्द समीर इनके आँगन में अठखेलियाँ करता था, हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक और अटक से लेकर कटक तक—समस्त भारत वसुन्धरा के रेणु-रेणु में होली की मादकता फैल जाती थी। मुदित नयना नवकलिकाएँ खिल उठती थीं। लोनी लताएँ लहन लहलहा उठती थीं और ये हज़रत झूम-झूम कर गाने लगते थे:—

है हवा में शराब की तासीर,
बादानोशी है, बादा पैमाई!

❀

उन दिनों ये ख़ूब होली के मज़े लूटते थे—बहार का लुत्फ़ उठाते थे, उस समय इनमें जीवन था। पर पदानत ग़ुलाम न थे, स्वाधीन थे। उस समय ये बात के धनी थे, तलवार के धनी थे और ऐश्वर्य तो इनका पानी भरता था। आमोद-प्रमोद चिर सहचर और होली की बहार दासी थी। बस, थोड़े शब्दों में समझ लीजिए कि उस समय ये 'हिज़ होलीनेस' थे—श्रीजगद्गुरु थे और जब गुनगुनाने का शौक़ चर्राता था तो पञ्चम-स्वर में आरम्भ कर देते थे:—

कूक उठी कोयल बन-बन में,
मुर्च्छित मधुर तरङ्ग सुमन में,
मृग-मद-गन्ध पुहुप मधु फिर-फिर
झूम रही वसुधा मतवाली,
हन मारी पिचकारी यौवन,
बिखर गई उपवन में लाली।
चुन प्रसून अलबेली आली।

❀

मगर आजकल सखी नौकरशाही का ज़माना है। बारहमासी होली जल रही है। अब इनका फाग बहुधा दुर्भिक्ष और महामारियों के साथ हुआ करता है, मृदङ्ग-ध्वनि की जगह रोगाक्रान्त, शोकाकुल, क्षुधा-पीड़ित और दरिद्रता-दलित नर-कङ्कालों की मर्मर ध्वनि होती है। नियति इनकी दुर्दशा देख कर 'अररर कबीर' गाती है और ये गाते हैं :—

हुआ हूँ इस क़दर अफ़सुर्दा रङ्गे बाग़े-हस्ती से,
हवाएँ फ़स्ले-गुल की भी निशात अफ़ज़ा नहीं होतीं।

❀

तो क्या हमारी नवेली अलबेली सखी नौकरशाही हँसने की चीज़ हैं। हर्गिज़ नहीं, उन्हें भला, कौन हँस सकता है ? 'के दुई सिर केहि जमु चह लीन्हा ?' जानते नहीं, वह आजकल ऑर्डिनेन्स के क़िले में हैं। किसकी मजाल है जो उनकी ओर नज़र उठाए, उन्हें कबीर सुनाए या उनके गुलाबी गालों पर अबीर लगाने की धृष्टता कर सके। अपने अख़बार वाले 'देवरों' के मुँह में तो उन्होंने १४४ लीवर के ताले के साथ ही 'इरविन मेड' मज़बूत साँकल पहले ही लगा दी है। लेहाज़ा बेचारे, सीता जी के देवर लखनलाल की तरह शान्त और शिष्ट बन गए हैं। पैर के सिवा किसी दूसरे अङ्ग की ओर आँख उठा कर भी नहीं देख सकते।

❀

ख़ुदा न करे, अगर किसी मनचले रावण की नज़र पड़ गई और किसी दिन भिखारी-वेष में, 'बाँधी भीख न लेउँ सयानी' कह कर ले उड़ा तो बड़ी मुश्किल होगी। कोई 'पटाभूषण' पहचानने वाला भी न मिलेगा और बेचारे जगद्गुरु भाँग-बूटी छोड़कर—"हे खग-मृग हे लावक सैनी, तुम देखी सीता मृगनैनी" की बाँग देते फिरेंगे। ख़ैरियत यही है कि 'जटायु' का पार्ट खेलने के लिए हमारे 'मॉडरेट' भाई मौजूद हैं, नहीं तो क़सम ख़ुदा की ऐन फ़स्ले-बहार में इस बूढ़े मलङ्ग को आत्म-हत्या कर लेनी पड़ती।

❀

फलतः जनाब, ये मॉडरेट बड़े काम के आदमी हैं। इन्होंने श्रीमती के लहँगे को गाँधी की आँधी से बाल-बाल बचा कर हिज़ होलीनेस को निश्चिन्त कर दिया है। बला से अबकी होली पर उनकी चूनरी बेदाग़ रह जायगी, गोरे गाल कोरे रह जायँगे, गुलाल के कण से आँखें लाल न होंगी और होलिहारों की 'अररर ध्वनि' से दौराने-सर की नौबत न आएगी। बेचारे जगद्गुरु ख़ाने-बरबादी की ज़हमत से तो बच जायँगे। यही क्या कम है। दूर से आँख सेंक कर ही सब्र कर लेंगे।

❀

आइए, ज़रा होली के अवसर पर बेचारे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को भी याद कर लें, जिसका ऐन जवानी में 'माँझा' ढीला हो रहा है। आह! लड़कपन में वह कितना शोख़ था, कितना चुलबुला। मानो बोटी-बोटी फड़क रही थी। उस वक़्त उस पर श्रद्धेय श्री० पुरुषोत्तम-दास जी टण्डन की 'समकोण त्रिभुज' सी सुन्दर दाढ़ी का साया था। परन्तु जब से उसी दाढ़ी सा 'त्रिभुजाकार' 'पुरुषोत्तमदास पार्क' इलाहाबाद में बन गया, तब से आपने बेचारे के सर से अपनी साया समेट ली। फ़लतः अब वह आहे-सर्द खींच कर कह रहा है :—

असीरे पञ्जए शबाब-करके मुझे !
कहाँ गया बचपन मेरा ख़राब करके मुझे।

❀

ख़ैर साहब, अब की हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का बीसवाँ जलसा कलकत्ते में होने वाला है। साल भर से तैयारियाँ हो रही हैं। सब से बड़ी ग़ज़ब की बात तो यह है कि सुसङ्गठित स्वागतकारिणी का प्रथम अधिवेशन भी होली से पहले ही हो गया है। कविचक्र चूड़ामणि पण्डित गाङ्गेय नरोत्तम शास्त्री ने सुर्मा-सलाई का ऑर्डर भेज दिया है और 'आकाश-पाताली' धोती वाले पण्डित बनारसीदास जी चतुर्वेदी उसे 'घासलेटीपन' से बचाने के लिए मि० ऐण्ड्रयूज़ से सलाह-मशविरा करने में लगे हैं और 'साहित्य-त्रिवेणी' पण्डित सकल नारायण जी शर्मा लगे हैं, उसके मङ्गलार्थ अपनी बड़ी माला फेरने में।

❀

कलकत्ता सम्मेलन की सब से बड़ी विशेषता यह है कि स्वागतकारिणी के अध्यक्ष पण्डित सकल नारायण जी और उसके अन्यतम कर्णधार पं० गाङ्गेय जी, सुर्मे के बड़े शौक़ीन हैं। इसलिए अगर सभापति का आसन सुप्रसिद्ध 'सुर्मा-सेवक' श्री० रत्नाकर जी सुशोभित करें तो माशा अल्लाह, प्रतिनिधियों को दिन में ही तारे नज़र आने लगें। आशा है, स्वागतकारिणी हिज़ होलीनेस के समीचीन 'सजेशन' पर विचार करेगी।

❀

अफ़सोस यही है कि सम्मेलन के समवयस्क और प्रिय-दर्शन सखा श्री० रामशङ्कर जी त्रिपाठी को सखी नौकरशाही ने होली मनाने के लिए अपने मेहमानख़ाने में बुला लिया है, इसलिए स्वागतकारिणी में 'मछर-हटिया' की बहार ज़रा फीकी रहेगी, परन्तु प्रतिनिधियों के स्वागत समारोह में कोई कमी नहीं आएगी। क्योंकि कलकत्ता के 'हिन्दी-नाट्य परिषद' ने इस अवसर पर कोई 'भूतो न भविष्यति' नाटक खेलने की इच्छा से अभी से 'चान्द्रायण' आरम्भ कर दिया है।

❀

इसलिए हमारी तो राय है कि होली के शुभ अवसर पर सम्मेलन और परिषद का 'गँठबन्धन' हो जाय तो कुछ बुरा नहीं। क्योंकि ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार दोनों की ग्रह-मैत्री ख़ूब बनती है और दोनों ने "हङ्गर स्ट्राइक" का भी काफ़ी अभ्यास कर लिया है। इसलिए अगर "टूट टाट-घर टटियौ टूट" हो भी तो "पिय की बाँह उसिसवाँ" होने पर "सुख की लूट" में कोई कमी नहीं आएगी।

❀

यद्यपि कुछ साम्य मैत्री वाले इस 'गङ्गा और मदार' की जोड़ी का विरोध करेंगे और कहेंगे कि सम्मेलन के उपयुक्त पात्री तो काशी की नागरी प्रचारिणी ही हो सकती है। परन्तु उन्हें मालूम होना चाहिए कि अगर ऐसी बात किसी ने कही तो राय साहब फ़ौरन कह उठेंगे,—"यहि सहित गिरि तैं गिरौं, पावक जरौं, जियत विवाह न हौं करौं।" इसके अतिरिक्त 'शारदा-ऐक्ट' भी इस सम्बन्ध का बाधक होगा। और राम-राम, तुम्हें कुछ इतिहास की भी ख़बर है ? अमाँ, जिस तरह कुन्ती देवी ने कौमार्यावस्था में कर्ण को प्रसव कर नदी में बहा दिया था, उसी तरह श्रीमती नागरी प्रचारिणी ने भी सम्मेलन को जन्म देकर 'इलाहाबादी धात्रियों' को सौंप दिया था, फलतः नागरी प्रचारिणी के साथ.........! छि-छिः ! राम-राम !! तोबा-तोबा !!! लाहौल बिलाक़ूवत इल्ला-बिल्ला !!!

❀

ख़ैर, जाने दीजिए, आजकल विवाह-लग्न के दिन भी नहीं हैं ; शुक्रास्त है। आइए, ज़रा चचा चर्चिल की अक़्ल पर हँस दें। मगर ख़बरदार, ठहाका न लगाइएगा, नहीं तो भड़क जाएँगे। क्योंकि आजकल होली का दिन है, चचा दिन-रात सुरूर में रहते हैं। दूसरे किसी ने कह दिया है कि भारत हाथों से निकला जा रहा है। इससे बेचारे और भी पतलून से बाहर हो गए हैं। भुजाएँ फड़क रही हैं, होंठ चबा रहे हैं, दाँत पीस रहे हैं। मानो किसी 'होलिहारे' ने रङ्ग का हज़ारा पिचकारा मार दिया हो। ऐसी हालत में अगर ठहाका लगाइएगा तो चचा की वही दशा होगी जो छाता देख कर भड़के हुए साँड़ की होती है।

❀

किसी ने ठीक कहा है कि "न छेड़ ऐ न कहते बादे-बहारी, राह लग अपनी ; तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं, हम बेज़ार बैठे हैं!" सबूर चर्खों से कालों की तिल्ली फोड़ने का मज़ा हाथों से जा रहा है, घाटे के मारे भारतीय नौकरशाही की देवढ़ी पर चूहों के दण्ड पेलने की नौबत आ रही है, गाँधीबाबा सत्याग्रह का कुन्दा अड़ा कर ऐसे डटे हैं कि हटने का नाम ही नहीं लेते और तुम्हें सूझी है हँसने की ! वही कहावत हुई कि "किसी का घर जले और कोई हाथ सेंके !"

❀

हाँ, हँसने लायक़ एक छोटी सी ख़बर कलकत्ता के 'केसरी' में छपी है। सहयोगी ने लिखा है कि—श्री० बसन्तलाल मुरारका और श्री० मधुसूदनदास वर्मन (दमदम जेल से) "घूर कर" आ गए ! ख़ैरियत हुई, भाग्य अच्छे थे जो हिज़ होलीनेस की नज़र नहीं पड़ी, वरना घूरने और आँख सेंकने का मज़ा हाथों-हाथ मिल जाता ! अमाँ, यह भी कोई तरीक़ा है, किसी भले आदमी के घर जाकर घूरना। कम से कम 'केसरी' वालों को तो इन भले आदमियों से सावधान रहना चाहिए और इन लोगों की इस घासलेटी हरकत की ख़बर पण्डित बनारसीदास जी चतुर्वेदी को कर देना चाहिए।

❀

लँगोटी पर फाग खेलनेवाले हमारे बूढ़े बाबा की होली 'ऑर्डिनेन्सों की अम्मा जान' के साथ तहख़ाने में हो रही है। अबीर-गुलाल एकत्र करने का भार दादा मुग्धानल की परीक्षोत्तीर्ण छात्री श्रीमती सरू बेन और भूपाल वाली 'सुबह-आरा' बेगम ने लिया है। बाबा जी को इस होली की ऐसी चाट लगी है, कि कुप्पी की झनकार सुनते ही बिड़ला और बजाज के कन्धे टेक कर लम्बे-लम्बे डेग डालने लग जाते हैं। देखते हैं, फागुन की मस्ती लँगोटीबन्द बूढ़ों को भी अछूता नहीं छोड़ती !

❀

मगर हिज़ होलीनेस को यह 'कोर्टशिप' की तरह साथ-साथ फिस-फिस ज़रा भी अच्छी नहीं लगती। होली खेलने का मज़ा तो यह है कि बक़ौल बाबा सूर-दास—"इतते निकसीं कुँवरि राधिका उतते कुँवर कन्हाई। खेलत फाग परस्पर हिलि-मिलि सोभा बरनि न जाई !" मगर नई दिल्ली की 'ज़िन्नत-महल' तो बारह ऑर्डिनेन्सों की जननी होने पर भी अपने 'रङ्गमहल' का चौखट नाँघना पसन्द नहीं करतीं तो बेचारे बूढ़े बाबा क्या करें ?

❀

परन्तु कहीं 'रङ्गमहल' को छबीली गोरियों ने होली की धींगा-मस्ती और छीना-झपटी में—"छीन लिए मुख-मुरली पिताम्बर सिर से चुनरि ओढ़ाई। बेंदी भाल, नयन बिच काजर, नकबेसर पहिराई—मनौ नइ नारि बनाई" तो बड़ा मज़ा आएगा। चचा चर्चिल मारे ख़ुशी के उछल पड़ेंगे। मगर हमारे बूढ़े बाबा पुराने रसिया हैं, लन्दन के 'कोहेक़ाफ़' या 'हूरिस्तान' से बेदाग़ बच कर निकल चुके हैं। यहाँ वह गुड़ नहीं जो चिउँटे खाएँ।

❀

लीजिए जनाब, "बाहर राम-राम और भीतर सिद्ध काम" की कहावत चरितार्थ हो गई। 'भविष्य' के सम्पादक जी डींग तो मारते हैं समाज सुधारक बनने की और

(शेष मैटर ४१ वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

होली का नशा

[प्रोफ़ेसर रामपालसिंह, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०]

"क्यों ? आज ही होली है ?"

"हाँ, बाबू साहब, आज ही होली है।"

"ओह ! तब तो मैंने बड़ी भूल की, जो यहाँ चला आया। आज तो मुझे अपने घर पर होना चाहिए था।"

"वह भी तो आप ही का घर है।"

"सो तो ठीक है, किन्तु यहाँ वह रङ्गत कहाँ ?"

"कैसी रङ्गत ?"

"अरे भाई, अपने घर पर होता, तो आनन्द से यह उत्सव मनाता। यहाँ तो रिश्तेदारी में आ पड़ा हूँ। वह नाच-रङ्ग यहाँ कहाँ ?"

"तो नाच-रङ्ग के लिए आप क्यों चिन्तित हैं ? हमारे बाबू साहब कुछ ऐसे-वैसे मनहूस तबीयत के आदमी नहीं हैं। वे सोलहो आने ज़िन्दा दिल हैं। आज मोतीबाई का मुजरा होगा। धन की यही तो शोभा है !"

"मोतीबाई कैसी हैं ? कुछ रूप-रङ्ग भी है, मोती पर आब भी है या ख़ाली मोती ही बाई हैं ?"

"अरे वाह ! आप घबराते क्यों हैं ! मोतीबाई को देखते ही आप समझ सकेंगे कि हमारे बाबू साहब कैसे रत्न-पारखी जौहरी हैं।"

२

दिन भर अबीर उड़ी। गुलाल में असंख्य काले भाल लाल हो गए। तीसरे पहर को मोतीबाई का नृत्य आरम्भ हुआ। महफ़िल पर मस्ती छा गई। अबीर की गर्मी और भाँग के नशे ने बाई जी की बाँकी अदाओं और मतवाले नयनों के सामने शिर झुका लिया। आधी रात तक सुर्ख़रुओं की मजलिस जारी रही। उसके बाद बाई जी को फ़ुर्सत मिली। वह कुछ खा-पीकर आराम करने की तैयारी कर रही थीं, कि इतने में एक अधेड़ अवस्था का पुरुष उनके कमरे में आ उपस्थित हुआ। बाई जी पहले तो उसकी ओर देखते ही कुछ स्तम्भित सी हो गईं; परन्तु फिर अपने को सँभाल कर खड़ी हुईं और आगन्तुक को कुर्सी पर बिठाते हुए कहा—कहिए, क्या आज्ञा है ?

उत्तर मिला—क्या बताऊँ ? अपने दर्दे-दिल की कहानी सुनाने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। आपके गाए हुए एक शेर के एक मिसरे से शायद मेरे हृदय का भाव कुछ-कुछ झलक जावे।

बाई जी ने हँसते-हँसते पूछा—कौन सा है, वह मिसरा ?

आगन्तुक ने कहा—वही जो आज आपने गाया था—'तुम्हीं ने दर्द दिया है तुम्हीं दवा देना।'

बाई जी ने मुस्कराते हुए कहा—"ओहो, आप दर्दे-दिल की दवा लेने यहाँ आए हैं ?" उसकी मुस्कराहट में प्रसन्नता की अपेक्षा घृणा और व्यङ्ग अधिक था।

आगन्तुक ने कहा—हाँ मेरे मसीहा !

बाई जी ने कुछ सोचते हुए कहा—मैं आपकी बाँदी हूँ। आपका इरशाद सर-आँखों पर है; किन्तु आज थक गई हूँ। मेहरबानी करके कल तशरीफ़ लाइएगा।

आगन्तुक ने एक ठण्डी साँस लेकर कहा—कल !

तेरे वादे पर सितमगर, कुछ और सब्र करते।
गर अपनी ज़िन्दगी का, मुझे ऐतबार होता॥

वेश्या ने व्यङ्ग से कहा—ऐसी बुरी हालत है आपकी ?

"हाँ, प्यारी !"

"अच्छा तो सुनिए, पहले आपको मेरी एक बात माननी पड़ेगी !"

"हाँ-हाँ, फ़रमाइए ज़रूर मानूँगा। कौन सी बात है वह ?"

"मैं पहले एक कहानी आपको सुनाऊँगी। इसके बाद जो कुछ आप इरशाद करेंगे, बजा लाऊँगी।"

"कहानी ?"

"जी हाँ, इससे आपकी तबीयत भी बहलेगी और मैं भी थोड़ी देर तक अपनी थकावट मिटा लूँगी।"

"अच्छी बात है, सुनाइए।"

३

मोती ने एक बार फिर घृणा-भरी नज़रों से आगन्तुक की ओर देखा और कहने लगी—शोभा एक ग्रामीण गृहस्थ की कन्या थी। वह बड़ी ही सुन्दर थी। माता-पिता ने उसका पालन-पोषण भी बड़े लाड़ प्यार से किया था। बाल्यकाल के सुखमय दिन बड़ी शीघ्रता से बीत गए और युवावस्था ने अपने आगमन की सूचना देकर उसके विवाह के लिए चेतावनी दी। परन्तु दरिद्रता में धन से बढ़ कर कोई प्यारी वस्तु नहीं; फलतः उस बेचारी के सिर एक रोगी मढ़ दिया गया।

आगन्तुक ने बीच ही में प्रश्न किया—क्या कन्या के पिता ने धन लिया था ?

मोती ने कहा—लोग तो ऐसा ही कहते हैं। ख़ैर, शोभा बड़ी अभागिनी थी। वह चार ही महीने बाद विधवा हो गई !

आगन्तुक ने चिहुँक कर पूछा—चार ही महीने बाद ? हाँ, तो फिर क्या हुआ ?

मोती—और क्या होता ? उस बेचारी की भी वही दशा हुई, जो प्रायः हिन्दू विधवाओं की होती है। माता-पिता ने उसे अभागिनी कहा, पड़ोसिनों ने कुलच्छनी माना, सास ने डाइन की उपाधि दी और ननदों ने उसका नाम कण्टाइन रक्खा। परन्तु गाँव के नवयुवक भ्रमरों की तरह उसके घर के चारों ओर मँडराने लगे। पड़ोसी छोकरों के लिए एक लावारिस भाभी मिल गई। दुःख भार से लदी हुई उसके जीवन की गाड़ी मरमराती हुई आगे बढ़ने लगी। होली का उत्सव आया। सारा गाँव आनन्दोन्मत्त था, परन्तु शोभा एक कोने में बैठी अपने भाग्य को कोस रही थी। इतने में उसके देवर ने अबीर लिए घर में प्रवेश किया। दोनों में घण्टों तक बातें हुईं, होली खेली गई। शायद देवर ने विश्वास दिलाया कि विधवा-विवाह शास्त्र-सम्मत है और वह उसे पत्नी रूप में स्वीकार करेगा। ऐसे आश्वासन पर कौन विधवा आत्म-समर्पण न कर देगी ? परन्तु पाप-कर्म कब तक छिप सकता है ? कुछ दिन के बाद ही पड़ोसियों में काना-फूसी होने लगी। मामला सङ्गीन हो गया। देवर जी एकाएक परदेश चले गए।

आगन्तुक ने उत्सुक होकर पूछा—हाँ, तो उस बेचारी शोभा की क्या दशा हुई ?

मोती ने व्यङ्ग की हँसी के बाद कहा—मालूम होता है, आपके हृदय में उस बेचारी के प्रति दया का सञ्चार हो रहा है ?

आगन्तुक ने अधीर हो कहा—हाँ, दया की तो बात ही है।

मोती—अच्छा तो सुनिए, अन्त में वह किसी तरह काशी पहुँची और उसने वेश्यावृत्ति का सहारा लिया।

आगन्तुक ने घबड़ा कर पूछा—वेश्या हो गई ?

उत्तर मिला—और नहीं तो क्या डिप्टी कलेक्टर हो जाती ? हाँ, वह वेश्या हो गई और दो-चार वर्षों में वह एक नामी वेश्या हो गई। जिसकी उपस्थिति से सारा समाज अपवित्र हो जाने वाला था, उसके चरणों पर बड़े-बड़े बाबू साहबों के सिर झुकने लगे।

आगन्तुक ने पूछा—तो फिर क्या हुआ ?

मोती—और क्या होता ? उसका रोज़गार ख़ूब चल निकला। ज़िले भर में शोभा बाई का नाम हो गया। एक दिन होली के अवसर पर वह एक देहाती रईस के यहाँ नाच रही थी और वहीं उसके ससुर जी भी आए थे और जिस तरह दर्द की दवा लेने मेरे पास आप आए हैं, उसी तरह वह भी अपनी पुत्र-बधू शोभा के..............!

मोतीबाई की कहानी अभी पूरी भी नहीं हुई थी, कि एकाएक आगन्तुक के दिमाग़ में एक चक्कर आया और वह धड़ाम से कुर्सी से नीचे जा गिरा। शायद होली का नशा चढ़ आया था !!

* * *

(४०वें पृष्ठ का शेषांश)

बेचारे अपरिवर्तनवादियों को क़लम की नुकीली नोंक से कोंचा करते हैं। उधर अपने पुरोहित महाशय 'आर्यमित्र' की सलाह से 'मुण्डन-संस्कार' से पहले ही आपने 'भविष्य' की शादी कर दी है, लखनऊ वाली बुढ़िया 'माधुरी' से ! अरे भाई, कम से कम श्रीजगद्गुरु को तो इस मौक़े पर नेवता दिया होता !

❀

देखा आपने इन रँगे सुधारकों की दशा ? मिल गई होगी तिलक में गहरी रक़म और भर गया होगा, मुँह में पानी ! उधर 'आर्यमित्र' जी ने भी दच्छिना की रक़म सीधी की होगी। बस, फिर क्या ? मढ़ दिया बेचारे के गले में एक पुरानी हड्डी को लेकर और यह भी न सोचा कि श्रीमती कलकतिया 'मतवाला' द्वारा 'रिजेक्टेड' की पदवी प्राप्त कर चुकी हैं।

❀

बात यह है, कि उस दिन आगरे वाले 'आर्यमित्र' के अखाड़े में एक स्वयम्बर-सभा हुई थी, हज़रत 'भविष्य' जी भी तमाशा देखने के लिए पहुँच गए थे और फँस गए दुनियादारी के पचड़े में। अब बताइए, क्या किया जाए ? सर हरिसिंह गौड़ के 'सिविल मैरेज बिल' को कौन्सिल वालों ने ठुकरा ही दिया है। 'डाइवोर्स' की कोई गुञ्जाइश ही नहीं रही। लेहाज़ा अब 'गले पड़ी ढोल बजाए सिद्ध !' और दूसरा उपाय ही क्या है ?

❀

[श्री० हृदयनारायण सरीन, बी० ए०]

आकाश स्वच्छ था—नीला था। चन्द्रदेव अपनी षोडश कलाओं से विश्व को प्रकाशित कर रहे थे। उनके अमृत से सने होठों पर स्निग्ध हँसी विराजमान थी।

ऐसे ही समय में स्थान-स्थान पर लगे हुए, सूखी लकड़ी के ढेरों में द्विजवरों ने एक घृत की आहुति डाल कर अग्नि लगा दी। अग्नि-शिखाएँ प्रज्वलित होकर ऊपर उठ चलीं। होलिका की लपटें अपने प्रियतम के सङ्ग होली खेलने के लिए बड़ी बेकली के साथ ऊपर उठने लगीं। दिशाएँ लज्जा से लाल हो उठीं। चन्द्रदेव और ज़ोर से हँस उठे।

लोगों ने एक-दूसरे को अबीर लगाना और भेंटना आरम्भ कर दिया।

वह अलग खड़े हुए मुस्करा रहे थे। उनके हाथ में अबीर थी। वह किसी को भर-मुँह अबीर लगाने की फ़िराक़ में खड़े थे।

मैं भी अलग एक किनारे पर खड़ा हुआ था। मेरे हाथ में भी अबीर थी।

अग्नि-शिखाएँ धीरे-धीरे ऊपर उठ कर सुन्दर शून्य में विलीन होती जा रही थीं। कुछ देर बाद लपटें कम हो गईं। मनुष्य भी सब चले गए। मैं अब भी हाथ में अबीर लिए खड़ा था। अचानक वे मेरे निकट आ गए और बोले—तुम मुझसे होली मिलोगे?

मैंने कुछ उत्तर न देकर उनके श्यामल गालों पर अबीर पोत दी। वह हँस पड़े। उन्होंने भी अपने हाथ की अबीर मेरे मुख पर पोत दी और फिर मुझे अपने बाहु-पाश में बाँध लिया।

२

मैंने उन्हें नेवता नहीं दिया था। फिर भी वह दूसरे दिवस सवेरे ही रङ्ग से भरा हज़ारा-पिचकारा लिए हुए मेरे द्वार पर आ उपस्थित हुए। कल का मिलन भी आश्चर्यमय था और आज का आगमन भी कौतूहल-प्रद हुआ।

उन्होंने आते ही कुण्डी खटखटाई। मैं आनन्द से पड़ा हुआ ख़र्राटे ले रहा था, और उसी अपूर्व, आश्चर्य-मय, मधुर मिलन का स्वप्न देख रहा था। "खट-खट" की कठोर आवाज़ से मेरी निद्रा भङ्ग हो गई। मैं दौड़ा हुआ बाहर आया। देखा—वह खड़े हुए थे। मैं अवाक् रह गया। मैंने कहा—"तुम-तुम!"

वे मुस्करा पड़े—वही रात वाली मधुर मुस्कान! बोले—हाँ भाई! मैं ही हूँ। कल होली मिली थी, आज होली खेलने आया हूँ।

इसके पूर्व कि मैं उनकी बात का कुछ उत्तर दूँ, उन्होंने मेरे ऊपर वार कर दिया। उनके पिचकारे में न जाने कितना रङ्ग था! मैं उस रङ्ग में सर से पैर तक सरा-बोर हो गया। उस रङ्ग में अजीब मस्ती थी। मैं दौड़ कर उनके हृदय से चिपट गया। यह मिलन प्रथम मिलन से कहीं अधिक सुखकर और महत्वपूर्ण था।

३

हम लोग सारा दिन होली खेलते रहे। कभी वह मेरे ऊपर पिचकारी मारते, और कभी मैं उनके ऊपर। रङ्ग न मिलने पर सादे पानी की ही वर्षा होती। सारा प्राङ्गण तरह-तरह के रङ्गों में रङ्ग गया था। 'हा-हा-हो-ही' से घर गूँज रहा था। मुझे उस समय अपना गृह स्वर्ग-सा मालूम दे रहा था।

हम दोनों को होली खेलने में बड़ा मज़ा मिल रहा था। किसी को भी खाने-पीने की सुध न थी।

रङ्ग निबट जाने पर, और पिचकारी टूट जाने पर हम लोगों की होली का अन्त हुआ। अब हम दोनों ने स्नान-भोजन किया। इसके पश्चात् उन्होंने मेरे, और मैंने उनके कपोलों पर एक बार फिर अबीर लगाया तथा गले मिले। अब उन्होंने जाने की सुनाई। मेरा हृदय भीतर ही भीतर रो उठा। मैंने कहा—अभी नहीं, मन भर कर मिल लेने दो तब जाना।

उन्होंने कहा—अब फिर दूसरे वर्ष।

मैंने कहा—सचमुच दूसरे साल आओगे?

उन्होंने कहा—"हाँ-हाँ" और चले गए।

मैं उसी प्रकार किंकर्तव्य-विमूढ़ सा खड़ा रहा। उनका नाम तक न पूछ सका। दूसरे साल फिर आवेंगे—इतना ही जानता हूँ।

* * *

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा को छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहों खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

मूल-लेखक—
महात्मा काउण्ट टॉल्सटॉय

पुनर्जीवन

अनुवादक—
प्रोफ़ेसर रुद्रनारायण जी अग्रवाल, बी॰ ए॰

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपनी आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है, और किस प्रकार अन्त में वह वेश्यावृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का भूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, उसकी ऐसी अवस्था देख कर उसे अपने किए पर अनुताप होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एकमात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित भी करना चाहिए—सब एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं, और वह प्रायश्चित का कठोर निर्दय-स्वरूप, वह धार्मिक भावनाओं का प्रबल उद्रेक, वह निर्धनों के जीवन के साथ अपना जीवन मिला देने की उत्कट इच्छा, जो उसे साइबेरिया तक खींच कर ले गई थी। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। इसमें दिखाया गया है कि उस समय रूस में त्याग के नाम पर किस प्रकार मनुष्य-जाति पर अत्याचार किया जाता था। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ५) स्थायी ग्राहकों से ३॥)

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २, | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—१२ मार्च, १९३१ | संख्या १२, पूर्ण संख्या २४

गाँधी-इर्विन समझौते से इङ्गलैण्ड में भयङ्कर असन्तोष

अनुदार दल के प्रतिनिधि भावी गोलमेज़ में भाग न लेंगे

जब तक स्वराज्य न मिलेगा, म० गाँधी आश्रम में पैर न रक्खेंगे

'यदि मैं आश्रम में जाऊँगा तो आश्रमवासी मुझे खदेड़ देंगे

आज़ादी का झण्डा नीचा किया गया :: म० गाँधी के विरुद्ध सत्याग्रह की धमकी

देश भर में राजनैतिक क़ैदियों का छुटकारा

—लन्दन का ९वीं मार्च का समाचार है कि इङ्गलैण्ड के अनुदार दल के नेता मि० बाल्डविन ने यह निश्चय कर लिया है कि भावी गोलमेज़ परिषद में, जिसकी बैठक भारत में होगी, अनुदार दल का कोई प्रतिनिधि भाग न लेगा। यह समाचार रात्रि में उस समय मिला था जब हाउस ऑफ़ कॉमन्स की भारतीय कमिटी अपना कार्य समाप्त कर रही थी। रिपोर्ट से पता चलता है कि मि० बाल्डविन के इस निश्चय का कमिटी ने गाँधी-इर्विन सन्धि पर विचार करने के उपरान्त स्वागत किया था। यह भी समाचार है कि इसका निश्चय सन्धि प्रारम्भ होने के एक सप्ताह पहिले ही हो चुका था।

अनुदार दल के इस आकस्मिक निश्चय से मज़दूर सरकार में बड़ी सनसनी फैल गई है। केवल मज़दूर सरकार ही नहीं, अनुदार के भी कुछ व्यक्ति इस निश्चय से बड़े अचम्भे में हैं। इस सम्बन्ध में लोग मि० बाल्डविन की विज्ञप्ति की बाट बड़ी उत्सुकता से जोह रहे हैं। मि० ग्रेहम पोल ने, जो भारत के सच्चे हितैषी हैं, कहा है कि मुझे विश्वास है कि मि० बाल्डविन लॉर्ड इर्विन का (सन्धि के सम्बन्ध में) अपमान कभी न होने देंगे। इसी सम्बन्ध में विस्काउण्ट ब्रेण्ट फ़ोर्ड ने 'डेली-मेल' में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है जिसमें उन्होंने कहा है कि अनुदार दल के ९० प्रतिशत सदस्य लॉर्ड इर्विन के विरुद्ध हैं।

उन्होंने यह भी लिखा है कि हमने भारत को प्रान्तीय स्वतन्त्रता देने की प्रतिज्ञा कर दी है और उसे हम पालन के लिए बाध्य हैं, परन्तु केन्द्रीय शासन में हम ब्रिटिश गवर्नमेण्ट का ज़बरदस्त हाथ रक्खेंगे और फ़ौज और विदेशी नीति में पूरा-पूरा अधिकार रक्खेंगे; क्योंकि हमें अल्प-संख्यक जातियों की रक्षा के लिए तथा भारत में अङ्गरेज़ों की रक्षा के लिए, चाहे वे सरकारी पदों पर हों या वहाँ व्यापार करते हों, उन पर अधिकार रखना अत्यन्तावश्यक है। यह निश्चित है कि अनुदार दल के ९० प्रतिशत सदस्य वर्तमान वायसराय के बिलकुल विरुद्ध हैं और वे भारत को सुधार देने का घोर विरोध करेंगे।

—बम्बई का ९वीं मार्च का समाचार है, कि वहाँ ८वीं मार्च को रात्रि की मूलजी जेठा मार्केट में, जो बम्बई का विदेशी कपड़े का सब से बड़ा बाज़ार है, पिकेटिङ्ग करते समय ५ वालण्टियर घायल कर दिए गए। ये वालण्टियर विदेशी कपड़े की गाँठों को बाहर ले जाने से रोक रहे थे। कहा जाता है कि एक वालण्टियर को एक दूकानदार के नौकर ने चाकू मार दिया है। पाँचों वालण्टियर कॉङ्ग्रेस अस्पताल भेज दिए गए हैं।

—महात्मा गाँधी सन्धि में विजय प्राप्त करने के उपरान्त दिल्ली से १०वीं मार्च को अहमदाबाद पहुँच गए। रास्ते भर स्टेशनों पर उनका बड़ा ज़ोरदार स्वागत हुआ। लोगों ने पुष्प वर्षा कर उनका स्वागत किया। रास्ते भर लोगों ने उन्हें रुपयों की थैलियाँ भेंट कीं। एक व्यक्ति ने किसी स्टेशन पर उन्हें एक हज़ार रुपए का चैक दिया। अहमदाबाद के धन-कुबेरों में उन्हें अपने-अपने घरों में ठहराने के लिए झगड़ा हो गया। अन्त में गाँधी जी ने दो स्थानों पर एक-एक दिन ठहरने का निश्चय किया। अहमदाबाद स्टेशन पर इस विजयी नेता के स्वागत के लिए मनुष्यों का समुद्र उमड़ पड़ा था। पत्रकारों के एक समूह को महात्मा गाँधी ने निम्न वक्तव्य दिया है। इस प्रश्न के उत्तर में कि यदि कराची कॉङ्ग्रेस अस्थायी सन्धि की शर्तों को अस्वीकार कर दे तब वे क्या करेंगे। उन्होंने उत्तर दिया कि मैं फिर गोलमेज़ परिषद में भाग लेने के लिए नहीं बुलाया जाऊँगा। मैंने वायसराय से व्यक्ति-गत हैसियत से नहीं। बल्कि एक कॉङ्ग्रेस के सदस्य की हैसियत से सन्धि-चर्चा की थी।

जब उनसे यह पूछा गया कि क्या वे आश्रम जायँगे तो उत्तर दिया कि मैं आश्रम में पैर नहीं रख सकता। यदि मैं आश्रम में जाऊँगा तो आश्रमवासी मुझे वहाँ से खदेड़ कर बाहर निकाल देंगे। मुझे जहाँ भिक्षा मिलेगी मैं वहीं ठहर जाऊँगा। मैं तो आश्रम में उसी समय लौट सकता हूँ जब गोलमेज़ परिषद् में कॉङ्ग्रेस को इच्छित शासन-विधान प्राप्त हो जायगा।

क्या आप किसानों को लगान देने की सलाह देंगे? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि किसानों ने सरदार बल्लभ भाई के आदेश पर ही लगान देने की प्रतिज्ञा की थी। वे उन्हीं के आदेश के अनुसार कार्य करेंगे। वे मेरे आदेश के अनुसार न करेंगे।

क्या सन्धि-चर्चा की पूरी कार्यवाही प्रकाशित की जावेगी? मैं उसे प्रकाशित करने में असमर्थ हूँ। हाँ, यदि वायसराय चाहें तो उसे प्रकाशित कर सकते हैं।

महात्मा गाँधी बृहस्पतिवार को सवेरे अहमदाबाद से मोटर में बोरसद के लिए रवाना हो जायँगे और कैरा ज़िले में बहुत से गाँवों का निरीक्षण करेंगे। उसके बाद वे रेल से सूरत जायँगे और वहाँ के गाँवों में दो दिन तक भ्रमण करेंगे। इसी भ्रमण में वे बारदोली भी जायँगे। उसके बाद वे बम्बई जायँगे और वहाँ तीन दिन ठहरेंगे।

—नागपुर का ९वीं मार्च का समाचार है, कि बजट सेशन के अन्तिम दिन मध्यप्रान्त के मिनिस्टरों के वेतन में कुल मिला कर ४२ हज़ार रुपए की कमी कर दी गई। मिनिस्टरों के वेतन में अभी तक ९६ हज़ार रुपए प्रति वर्ष ख़र्च होता था, परन्तु अब ४२ हज़ार कम कर देने से उनका वेतन ४,००० रुपए से घट कर २,२५० रुपए रह जायँगे। वेतन की कमी का प्रस्ताव मि० एम० पी० कोल्हे ने उपस्थित किया था। और डेमोक्रेटिक पार्टी ने उसे स्वीकार कर लिया है। मिनिस्टर इसी पार्टी से चुने जाते थे।

—कलकत्ते का ९वीं मार्च का समाचार है कि बसुरहाट, फ़रीसगञ्ज, भवानीगञ्ज और थावाहट में, जहाँ नमक बनाया जाता है, ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी ने नमक बनाने की आज्ञा दे दी है।

—देहली का १०वीं मार्च का समाचार है, कि गत रविवार को म० गाँधी ने दो पत्र वायसराय के पास भेजे थे और वायसराय ने भी एक पत्र महात्मा जी को भेजा था। महादेव देसाई ने एक पत्र-प्रतिनिधि से कहा है कि इस पत्र-व्यवहार का विषय गुप्त है और प्रकाशित करना इस समय उचित नहीं।

—नई देहली १० मार्च का समाचार है कि कल प्रातःकाल मौ० शौकतअली ने वायसराय से भेंट की और कौन्सिल-हाउस में कुछ एसेम्बली के मेम्बरों से भी बातचीत की पत्र-प्रतिनिधि से आपने कहा कि म० गाँधी और काँङ्ग्रेस तथा मैं और मेरे मुसलमान साथियों के उद्योग से हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल हो जाने की पूरी आशा है। मैं हिन्दू भाइयों को विश्वास दिलाता हूँ कि मैं भारतीय मुसलमानों के अधिकार चाहता हूँ। मैं बाहर वालों को भारत पर शासन करने के लिए नहीं बुलाऊँगा मैं स्वयं ही अपने देश पर शासन कर सकता हूँ।

* * *

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

भगतसिंह आदि ने दया-प्रार्थना करना अस्वीकार कर दिया

"या तो हमें छोड़ दिया जाय; या गोली से उड़ा दिया जाय"

"हम युद्ध के शाही क़ैदी हैं : फाँसी पर चढ़ाना हमारा अपमान है"

भगतसिंह आदि की फाँसी की सज़ा रद्द करने के लिए इंगलैण्ड के प्रधान मन्त्री से प्रार्थना

बम्बई षड्यन्त्र-केस में एक को छुटकारा :: छै सेशन्स सुपुर्द

क्या आज़ाद अभी ज़िन्दा है ? मेरठ षड्यन्त्र-केस के अभियुक्त एक सप्ताह में रिहा होंगे ?

—कहा जाता है पञ्जाब-सरकार ने सरदार भगतसिंह, मि० राजगुरु और मि० सुखदेव को ३ मार्च तक दया की प्रार्थना कर देने की मोहलत दी थी। इन्होंने दया की प्रार्थना नहीं की, मगर सुपरिण्टेण्डेण्ट जेल की इजाज़त से एक पत्र पञ्जाब-सरकार को लिखा। उस पत्र में लॉर्ड इर्विन और महात्मा गाँधी के दरम्यान सुलह की बातचीत का भी ज़िक्र है। महात्मा जी की बातों पर निराशा प्रकट की गई है।

पत्र में लिखा है कि महात्मा जी हमें तो क्या छुड़वाएँगे, यदि वह उन निर्दोष लड़कियों को जिन पर बमबाज़ी का अभियोग लगाया है और जो डर के मारे शहर-शहर भागती फिरती हैं उनको छुड़वा सकें तो बड़ी बात होगी।

सरकार को सम्बोधन करते हुए इस चिट्ठी में लिखा गया है, कि हम युद्ध के क़ैदी हैं। इन अर्थों में हम राजबन्दी (शाही क़ैदी) हैं। हमारे साथ वही सलूक होना चाहिए जो युद्ध के क़ैदियों के साथ होता है। या तो युद्ध के समाप्त होने पर हमें छोड़ दिया जाय या गोली से उड़ा दिया। राष्ट्रीय सैनिकों को कोई सरकार फाँसी पर नहीं चढ़ाती। सरकार हमें गोली से उड़ाने के लिए फ़ौजी सिपाहियों को जेल में भेज सकती है। हमें फाँसी के तख़्ते पर लटकाने का कोई अर्थ नहीं।

भगतसिंह तथा मार्शल लॉ के क़ैदियों को छोड़ दो

मुसलमान नौजवानों की अपील

अमृतसर का समाचार है, कि वहाँ के मुस्लिम नौजवानों ने अपने एसोसिएशन में यह पास किया है, कि सरदार भगतसिंह तथा राजगुरु व सुखदेव की फाँसी की सज़ा माफ़ की जाय और उनको छोड़ दिया जाय।

उन लोगों ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि मार्शल लॉ के क़ैदियों को भी छोड़ दिया जाय।

लण्डन में विराट सभा

लन्दन का ४थी मार्च का समाचार है, कि वहाँ यह समाचार पहुँचते ही कि भारत-सरकार ने भगतसिंह और उनके अन्य साथियों को फाँसी पर चढ़ाना निश्चित कर लिया है, लन्दन के भारतीयों और श्रमजीवियों में बड़ी हलचल मच गई है। भगतसिंह और अन्य अभियुक्तों के मामले की जो अपील प्रिवी कौन्सिल में हुई थी उसकी कार्यवाही से यह पता चल गया है कि लाहौर षड्यन्त्र केस की कार्यवाही ऑर्डिनेन्स के अनुसार असाधारण रूप से हुई थी। इसके परिणाम-स्वरूप वहाँ के श्रमजीवी यह कहने लगे हैं कि गवर्नमेण्ट को कम से कम उनका मुक़द्दमा साधारण रूप से जूरी की सहायता से होने की आज्ञा दे देना चाहिए। इसी सम्बन्ध में वहाँ श्री० सकलतवाला के सभापतित्व में एक सभा हुई थी। सभा में मि० जेम्स मैक्सटन ने कहा कि भारत में शान्ति का वायु मण्डल उत्पन्न करने के लिए यह अतीव आवश्यक प्रतीत होता है कि गवर्नमेण्ट अभियुक्तों की फाँसी की सज़ा रद्द कर दे। पार्लामेण्ट की सदस्या मिस जैनीली ने कहा कि सभा में अङ्गरेज़ों की अल्पसंख्यक उपस्थिति इस बात की द्योतक है कि भारतीय मामलों से इङ्गलैण्ड को विशेष दिलचस्पी नहीं है और इसलिए भारतीयों का पूर्ण स्वतन्त्रता का आन्दोलन करना बिल्कुल उपयुक्त है।

भारतीय कॉङ्ग्रेस की लन्दन की शाखा प्रधान-मन्त्री तथा भारत-मन्त्री मि० वैजवुड बैन के सम्मुख एक प्रार्थना-पत्र पेश करने वाली है, जिसमें इस बात की प्रार्थना की गई है कि या तो भगतसिंह और उसके साथियों की फाँसी की सज़ा रद्द की जाय और या उनके मामले की कार्यवाही फिर से जूरी की सहायता से की जाय। यह प्रार्थना-पत्र समस्त ब्रिटेन में घुमाया जायगा।

—इलाहाबाद के पदाधिकारी अभी तक इस बात का निश्चय नहीं कर सके कि जिस क्रान्तिकारी युवक ने एलफ़्रेडपार्क में पुलिस से लड़ते समय गोली मार कर अपनी आत्म-हत्या कर ली थी वह चन्द्रशेखर आज़ाद ही था, या अन्य कोई व्यक्ति। इस हत्या-काण्ड के दूसरे ही दिन युवक का एक सम्बन्धी आया था और उसने अन्त्येष्टि क्रिया के लिए शव प्राप्त करने के लिए नीचे से लेकर ऊपर तक के ऑफ़िसरों के दर्वाज़ों पर नाक रगड़ी, परन्तु उसे शव प्राप्त न हो सका। उसे उसका मृतक शरीर तक देखने को न मिला; देखने को मिली केवल चिता की लपटें। जिस समय वह शव देखने श्मशान-भूमि पहुँचा उस समय चिता की लपटें भी शव को जला कर शान्त हो चली थीं। आज़ाद को शनाख़्त करने के लिए उसके सम्बन्धी से अच्छा कोई अन्य व्यक्ति न मिलता, परन्तु उसे शनाख़्त करने का अवसर न देने के कारण पुलिस को दूसरे उपायों का अवलम्बन करना पड़ा है।

लाहौर षड्यन्त्र केस के किसी मुख़बिर ने अपने बयानों में कहा था कि चन्द्रशेखर आज़ाद ने मोटर का काम सीखने के लिए कुछ साल पहले हरिशङ्कर के नाम से झाँसी के बुन्देलखण्ड मोटर वर्क्स में काम किया था और वह वहाँ एक पथलू नामक व्यक्ति के पास ही रहता था। इस फ़र्म में वह सिराजुद्दीन के नीचे कार्य करता था।

आज़ाद के शव के फ़ोटो की शनाख़्त के लिए जो ख़ुफ़िया पुलिस ने उतारी थी, पथलू और सिराजुद्दीन इलाहाबाद बुलाए गए थे। शव की फ़ोटो दूसरी फ़ोटो के साथ मिला दी गई थी और बाद में उन्हें शनाख़्त के लिए दी गई थी। कहा जाता है कि सिराजुद्दीन ने उस व्यक्ति के फ़ोटो पहचान ली जो उसके पास मोटर का काम सीखता था। परन्तु पथलू उसे न पहचान सका। ख़ुफ़िया पुलिस के कुछ ऑफ़िसरों का कहना है कि मोटर की किसी आकस्मिक घटना से आज़ाद की दाहिनी कलाई की हड्डी टूट गई थी और उसका निशान वर्तमान था, परन्तु एक डॉक्टर का कहना है कि कलाई में ऐसा कोई निशान नहीं है।

भगतसिंह से जेल में मुलाक़ात

वे प्रसन्नचित्त हैं

लाहौर का २री मार्च का समाचार है, कि लाहौर सेण्ट्रल जेल के एक ऑफ़िसर ने भगतसिंह, शिवराम, राजगुरु और सुखदेव के कुटुम्बियों को अभियुक्तों से मिलने को बुलाया था। निमन्त्रण के समय सरदार भगतसिंह के पिता श्री० किशनसिंह घर पर न थे, इसलिए उनके छोटे भाई ने दूसरे दिन मिलने के लिए कह दिया। परन्तु जेल-ऑफ़िसर ने कहा कि उन्हें मिलने का यह अवसर न चूकना चाहिए इसलिए अभियुक्तों के कुटुम्बियों ने, जिनमें भगतसिंह के पितामह भी सम्मिलित थे, उसी दिन ६ बजे सन्ध्या को उनसे मुलाक़ात की। वे सब प्रसन्नचित्त थे।

बम्बई षड्यन्त्र केस

एक अभियुक्त रिहा : ६ सेशन्स सुपुर्द

४थी मार्च को बम्बई षड्यन्त्र केस चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट की अदालत में प्रारम्भ हुआ और उस दिन उन पर अभियोग लगाया गया। पुरुषोत्तम हरि वर्वे के सम्बन्ध में उपयुक्त प्रमाण न मिलने के कारण वे रिहा कर दिए गए। बाक़ी छः अभियुक्त मुक़दमे के लिए बम्बई हाईकोर्ट के सेशन्स जज के सुपुर्द कर दिए गए। उन अभियुक्तों के नाम निम्न-प्रकार हैं :—

गणेश, आर० वैशम्पायन, जनार्दन वामन, शिवराम विट्ठल देवधर, एस० बी० उपाध्याय, विष्णु विश्वनाथ धामनकर और शङ्कर जयराम शिन्दे।

अभियुक्तों पर दण्ड-विधान की १२० वीं (बी) धारा के अनुसार सन् १९३० के मार्च और अक्टूबर महीनों के अन्दर क्रान्तिकारी कविताएँ प्रकाशित कर जनता को भड़काने, हिंसात्मक कार्य करने और पुलिस ऑफ़िसरों की हत्या का प्रयत्न करने और आर्म्स एक्ट के अनुसार शस्त्र एकत्र करने के अभियोग लगाए गए हैं। अभियुक्त वामन पर दण्ड-विधान की ३०७ वीं धारा के अनुसार सार्जेण्ट टेलर और उसकी स्त्री को गोली मारने का भी अभियोग लगाया गया है। अन्य अभियुक्तों पर वामन को गोली मारने के लिए उकसाने का अभियोग लगाया गया है। वामन, उपाध्याय और धामनकर पर आर्म्स एक्ट की आज्ञा के विरुद्ध शस्त्र एकत्र करने का भी अभियोग लगाया गया है।

श्री० सेन गुप्त की मेरठ षड्यन्त्र के अभियुक्तों से मुलाक़ात

दिल्ली से कलकत्ते जाते समय श्री० सेन गुप्त ९वीं मार्च को मेरठ ठहरे और वहाँ उन्होंने मेरठ षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों से मुलाक़ात की। वे उनसे दो घन्टे तक बातचीत करते रहे। बाद के समाचार से एक ऐसी अफ़वाह का पता लगा है कि मेरठ षड्यन्त्र-केस के अभियुक्त एक सप्ताह के अन्दर रिहा कर दिए जायँगे।

एक क्रान्तिकारी गिरफ़्तार

अमृतसर का ३री मार्च का समाचार है, कि वहाँ २री मई को यू० पी० के एक पुलिस ऑफ़िसर ने दुर्ग्यान मन्दिर के अहाते में सन्ध्या-समय यू० पी० के एक नवयुवक को गिरफ़्तार किया है। कहा जाता है कि युवक क्रान्तिकारी दल का सदस्य है और उसका सम्बन्ध किसी षड्यन्त्र से है।

तमञ्चे की चोरी

पेशावर का समाचार है, कि कोहाट में विलायती फ़ौज के एक दस्ते के तोपख़ाने से एक तमञ्चा चोरी गया है। कहा जाता है, कि एक हिन्दोस्तानी सूबेदार ने वह तमञ्चा शाम को तोपख़ाने से लिया था, परन्तु दूसरे दिन सवेरे वापस कर दिया था। अभी तक तमञ्चे का कोई पता नहीं चला है।

आज़ादी का झण्डा नीचा किया गया

'महात्मा गाँधी के विरुद्ध सत्याग्रह करेंगे'

बम्बई के नवयुवकों की चेतावनी

बम्बई का ६ठी मार्च का समाचार है, कि दिल्ली के सन्धि-समाचार पाकर बम्बई के नवयुवकों में बड़ा असन्तोष फैल गया। उन्होंने एक विराट सभा की और सन्धि के प्रस्ताव की आलोचना करते हुए कहा कि इस सन्धि से आज़ादी का झण्डा नीचा किया गया है। अन्त में यह निश्चय हुआ कि यदि "महात्मा गाँधी ने कोई ऐसी शर्त स्वीकार किया, जिसमें 'पूर्ण स्वराज्य' की शर्तें पूर्ण नहीं होतीं, तो हम महात्मा गाँधी के विरुद्ध सत्याग्रह करेंगे।"
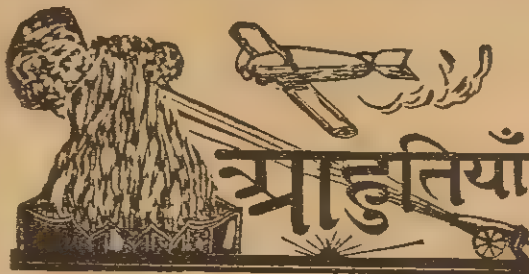
—मद्रास का ३री मार्च का समाचार है, कि रामचन्द्र नामक व्यक्ति को कॉङ्ग्रेस बुलेटिन बाँटने के अभियोग में चार माह की सख़्त क़ैद की सज़ा हुई है।

—बागेरहाट का ९वीं मार्च का समाचार है, कि श्री० सन्तोषकुमार कर और बागेरहाट हाईस्कूल के एक लड़के को वहाँ की पुलिस ने कल २ बजे दिन को गिरफ़्तार किया।

श्रीयुत कर और विधुभूषण बाबू के घर की तलाशी ली गई, किन्तु कोई आपत्तिजनक चीज़ नहीं मिली।

स्व० भगवानदास जी महतो

आप विगत १६ दिसम्बर को, जवाहर-दिवस के अवसर पर पुलिस की गोली के शिकार हुए थे। आपकी उमर केवल २० वर्ष की थी और गोली लगने से पहले आप तीन मास की जेल की सज़ा काट कर आए थे। पुलिस की बन्दूक के सामने आप छाती खोल कर खड़े हो गए थे।

—पेशावर का ९वीं मार्च का समाचार है, कि फ़्रान्टियर के नेता अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ के चचेरे भाई मीरनवाज़ ख़ाँ और इस्लामियाँ कॉलेज के एक छात्र को १२४ (ए) धारानुसार पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया।

नागपुर में ६ गिरफ़्तारियाँ

नागपुर का ६ठीं मार्च का समाचार है, कि रामटेक में ६ सत्याग्रहियों की गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। गिरफ़्तार व्यक्तियों में से सभी कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता थे। उनमें वहाँ की युद्ध-समिति के प्रेज़िडेण्ट श्री० भोकरे भी सम्मिलित थे।

बैङ्क से रुपया ग़ायब

३ आदमी गिरफ़्तार

चटगाँव ३ मार्च। चटगाँव की कलेक्टरी के ३ चपरासी इम्पीरियल बैङ्क से १० हज़ार २ सौ रुपया ग़ायब होने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। अभी तक ग़ायब होने वाले रुपए का कुछ भी पता नहीं चला है। रुपए ग़ायब हो जाने के कारण कलेक्टरी के लोगों को एक मास की तनख़्वाह नहीं दी जा सकी है।

—कलकत्ते का ३री मार्च का समाचार है, कि बड़े बाज़ार के ग़ैर-क़ानूनी-कैम्प के २८ वालण्टियरों को क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार जोड़ाबाग़ान के पुलीशनल चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने ४-४ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। उनमें से एक को ६ माह की सज़ा दी गई है।

—बनारस का ९वीं मार्च का समाचार है, कि वहाँ श्री० गौरीशङ्कर प्रसाद एडवोकेट के सभापतित्व में दङ्गा-पीड़ित सहायक सभा स्थापित की गई है, जिसका उद्देश्य हाल के दङ्गे में पीड़ित व्यक्तियों की सहायता करना है। सभा के लिए दो सौ रुपया माहवार के कार्यकर्ता नियुक्त कर दिए गए हैं। बहुत से वकीलों ने दङ्गे के अभियुक्तों की ओर से खड़े होने का वचन दिया है।

मुसलमानों की पुलिस से मुठभेड़

६५ घायल ४५ गिरफ़्तार

बङ्गलोर का ९वीं मार्च का समाचार है, कि गत ४थी मार्च की सन्ध्या को एक फ़ुटबॉल मैच में कुछ झगड़ा हो जाने के कारण शहर के विभिन्न भागों में रात्रि भर लड़ाई होती रही। परिणाम-स्वरूप फ़ौज की सहायता से शान्ति स्थापित की गई। मैच बङ्गलोर ब्लूज़ हिन्दू टीम और एक मुसलमान टीम में था। हिन्दू टीम के साथ एक मुसलमान भी खेल रहा था। खेल में मुसलमान टीम तीन गोलों से हरा दी गई। हिन्दुओं के साथ मुसलमान के खेलने के कारण दर्शक मुसलमान बहुत उत्तेजित हो गए और खेल समाप्त होने के एक मिनिट पहले उपर्युक्त मुसलमान खिलाड़ी पर कुछ दर्शकों ने बड़े ज़ोरों से धावा किया, परन्तु पुलिस-इन्स्पेक्टर ने कुछ कॉन्स्टेबिलों की सहायता से उन्हें रोकने का प्रयत्न किया। अब मुसलमान दर्शक पुलिस पर टूट पड़े और इन्स्पेक्टर को बुरी तरह घायल किया तथा पुलिस की मोटर चकनाचूर कर दी। इस झगड़े के सम्बन्ध में झूठी अफ़वाहें उड़ जाने के कारण झगड़ा बढ़ गया और भीड़ ने लाठियों तथा ईंटों से लड़ना प्रारम्भ कर दिया।

पुलिस ने शीघ्र ही घटनास्थल पर पहुँच कर भीड़ पर धावा कर दिया। १२ बजे रात्रि को लगभग ८,००० आदमियों की भीड़ लाठियाँ लेकर पुलिस कोतवाली के सामने जमा हो गई, शहर में उपद्रव मचाने की धमकी देने लगी। बाद में भीड़ शहर के विभिन्न मुहल्लों में फैल गई और उसने कुछ आदमियों पर प्रहार भी किए। इस पर फ़ौज बुला ली गई और प्रातःकाल शान्ति स्थापित हो गई। इस उपद्रव में ६५ व्यक्ति घायल हुए तथा ४५ गिरफ़्तार किए गए

विगत १६ नवम्बर को, जवाहर-दिवस के अवसर पर, मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार) के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं पर पुलिस के निर्मम प्रहार का एक दृश्य।

—जम्मू का समाचार है, कि जाड़ों में बर्फ़ के कारण जम्मू-काश्मीर सड़क बन्द रहती है। मालूम हुआ है कि सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि कोई सुरङ्ग बनाई जाय जिससे रास्ता बारहों महीने खुला रहे।

देश भर में राजनैतिक क़ैदियों का छुटकारा

पेशावर के क़ैदी रिहा

पेशावर का ८वीं मार्च का समाचार है, कि आज पेशावर जेल से १२६ राजनैतिक क़ैदी छोड़े गए। बन्नू के ३ 'बी' क्लास वाले क़ैदी भी रिहा हो गए। कोहाट से रिहा हुए आज ८ व्यक्ति यहाँ पहुँचे। कल भी कई व्यक्तियों के रिहा किए जाने की ख़बर है।

१२०० क़ैदी एक साथ रिहा

लखनऊ का ८वीं मार्च का समाचार है, कि आज लखनऊ के तीन जेलों से ३ महिलाएँ तथा १,२०० क़ैदी रिहा कर दिए गए। स्थानीय काँग्रेस कमिटी ने उन सबका ख़ूब स्वागत किया और उन्हें कार वा लॉरियों में बिठा कर शहर में ले जाया गया। वहाँ उनके ठहरने व रहने का भी प्रबन्ध किया गया।

साबरमती जेल से रिहा

अहमदाबाद का ८वीं मार्च का समाचार है, कि साबरमती जेल के तमाम राजनैतिक क़ैदी आज प्रातःकाल छोड़ दिए गए। ४० महिलाएँ जेल से रिहा हो जाने पर प्रार्थना के निमित्त महात्मा जी के आश्रम में गईं। वहाँ से शहर में जाएँगी। वहीं उनके ठहरने का प्रबन्ध किया गया है।

बङ्गलौर व कुर्ग के राजनैतिक क़ैदी रिहा

बङ्गलौर का ७वीं मार्च का समाचार है, कि कुर्ग के चीफ़ कमिश्नर कर्नल बर्की ने निम्न विज्ञप्ति निकाली है—"महात्मा गाँधी व लॉर्ड इर्विन के बीच समझौता हो जाने के परिणाम-स्वरूप कुर्ग व बङ्गलौर में सत्याग्रह संग्राम में गिरफ़्तार क़ैदी रिहा कर दिए गए।"

मद्रास के कई सत्याग्रही रिहा

मद्रास का ७वीं मार्च का समाचार है, कि मद्रास सरकार ने एक विशेष गज़ट द्वारा सूचना निकाली है कि जिन 'नोटिफ़िकेशन्स' से द्वारा कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ ख़िलाफ़ क़ानून क़रार दी गई हैं, वे वापस लिए जाते हैं।

आज इसी हुक्म के सिलसिले में इस प्रान्त की कई जेलों से महिला-क़ैदी छोड़ दी गई हैं।

आज कनानोर जेल से मि० टी० प्रकाशम छोड़ दिए गए। समझौते के सम्बन्ध में एक वक्तव्य देते हुए आपने कहा है कि समझौता होने से एक बड़ी विजय हासिल हुई है। मैं आशा करता हूँ, अब कॉङ्ग्रेस व नेताओं का काम है कि वे इसे सफल करें।

मि० सुभाषचन्द्र बोस आदि १०० क़ैदी छूटे

कलकत्ता का ६वीं मार्च का समाचार है, कि आज अलीपुर, सेन्ट्रल तथा दमदम जेलों से सत्याग्रह संग्राम में सज़ायाफ़्ता १०० से अधिक क़ैदी छोड़ दिए गए। इनमें मि० सुभाषचन्द्र बोस, ३० महिलाएँ तथा बङ्गाल में प्रथम नमक-क़ानून तोड़ने वाले सतीशचन्द्र दास गुप्त भी शामिल हैं। इनमें से कुछ ने समझौते पर ख़ुशी ज़ाहिर की थी।

थोड़े से क़ैदी छूटे

हैदराबाद (सिन्ध) का ८वीं मार्च का समाचार है, कि आज प्रातःकाल अफ़वाह थी कि एकदम २०० क़ैदी छोड़ दिए जावेंगे। इसलिए लोगों का समूह हार व फूलमालाएँ लेकर जेल-गेट पर उमड़ पड़ा था, परन्तु सायङ्काल को ३ 'ए' 'बी' क्लास के क़ैदी तथा कुछ 'सी' क्लास के क़ैदी छोड़े गए। गर्मी के मारे जुलूस में २ महिलाएँ बेहोश हो गईं। आज ज़िला मैजिस्ट्रेट यहाँ आ गए हैं। सम्भवतः वे सब का रिकार्ड देख कर कल तक छोड़ देंगे।

महिला व नेताओं की रिहाई

पञ्जाब का ७वीं मार्च का समाचार है, कि आज सायङ्काल रायजादा हंसराज, पं० के० सन्तानम्, लाला दुनीचन्द, पुरुषोत्तमलाल सोंधी तथा अन्य कॉङ्ग्रेस नेता लाहौर जेल से रिहा कर दिए गए। मौलाना ज़फ़रअली, डॉ० आलम, बा० गोपीचन्द, सरदार कर्तारसिंह आदि नेता आज ३ बजे गुजरात स्पेशल जेल से छोड़ दिए गए। रिहा हुई महिलाओं का आज जुलूस निकाला गया। जुलूस १ मील लम्बा था। इसमें १ लाख से कम लोग नहीं थे।

बम्बई के सत्याग्रहियों की रिहाई

बम्बई का ७वीं मार्च का समाचार है, कि आज बम्बई-सरकार के इन्फ़ारमेशन ब्यूरो के डायरेक्टर ने सूचना निकाली है कि यरवदा जेल के 'ए' तथा 'बी' क्लास के तमाम क़ैदी छोड़ दिए गए हैं। शेष क़ैदी आज सायङ्काल को रिहा होंगे। शहर के अन्य जेलों के क़ैदी भी आज प्रातः छोड़ दिए गए।

लाहौर में कई और रिहा

लाहौर का ७वीं मार्च का समाचार है, कि आज प्रातःकाल श्रीमती पार्वतीदेवी तथा पूरणदेवी आदि जो महिलाएँ नहीं छूटी थीं, वे ११॥ बजे छोड़ दी गईं। देहली वाला गिरोह अभी नहीं छोड़ा गया।

यरवदा व आर्थर जेल से रिहाई

पूना का ७वीं मार्च का समाचार है, कि आज यरवदा जेल से ६१ महिला-क़ैदी छोड़ दी गईं। इन्होंने जेल से छूट कर दो मिनट तक मौन रक्खा। इसके बाद झण्डे की सलामी की और बाद को लॉरियों में बैठ कर शहर में चली गईं। स्थानीय कॉङ्ग्रेस ने स्टेशन में उनका स्वागत करके तथा दावत देकर भिन्न-भिन्न स्थानों को विदा किया।

ज़िला मैजिस्ट्रेट हिंसा व अहिंसावादी क़ैदियों का रिकार्ड देख रहे हैं। दोपहर को ४०० क़ैदियों के रिहा होने का ख़बर है। बम्बई के आर्थर जेल से भी २६ क़ैदी रिहा हो गए हैं।

इलाहाबाद में २०० सत्याग्रहियों का छुटकारा

इलाहाबाद ज़िला जेल से २०० राजबन्दी तथा ९ विचाराधीन क़ैदी आज छोड़ दिए गए। पं० वेङ्कटेशनारायण तिवारी और पं० केशवदेव मालवीय आदि ४ राजबन्दी नैनी जेल से छोड़े गए। १२४-ए के अनुसार सज़ा पाए हुए राजबन्दियों के मामले पर विचार किया जा रहा है।

पेशावर का ७वीं मार्च का समाचार है, कि सीमान्त प्रदेश के नेता मि० अब्दुलग़फ़्फ़ार ख़ाँ तथा सैयदलाल बादशाह जेल से छोड़ दिए गए। छूटते ही वे महात्मा जी से मिलने दिल्ली चले गए। पेशावर जेल से १२० पिकेटर छूटे। शाम को और छूटने वाले हैं।

"यङ्ग-इण्डिया" का प्रकाशन आरम्भ

अहमदाबाद ६ मार्च—"यङ्ग-इण्डिया" के मैनेजर ने एक विवरण प्रकाशित कराया है कि महात्मा गाँधी और वायसराय के बीच समझौता हो जाने से अब "नवजीवन" "हिन्दी-नवजीवन" और "यङ्ग इण्डिया" का प्रकाशन न्यूज़ शीट के रूप में न हो। इसका प्रबन्ध किया जा रहा है कि जैसा पत्रों का पहले प्रकाशन किया जाता था, वैसा ही किया जाय। इसलिए पाठकों को एक सप्ताह या दो सप्ताह तक प्रतीक्षा करनी होगी।

गाँधी से सुलह करो

ख़्वाज़ा हसन निज़ामी का मौ० शौकतअली को तार

नई दिल्ली का ४थी मार्च का समाचार है, कि ख़्वाज़ा हसन निज़ामी ने मौलाना शौकतअली के पास निम्नलिखित तार कराची भेजा है:—

"मुझे आपके दुःख में पूरी सहानुभूति है। मौ० मुहम्मदअली की मृत्यु से हिन्दुस्तान की बड़ी हानि हुई है। हमें आशा है कि आप हिन्दुस्तान और मुसलमानों को ज़्यादा तकलीफ़ में पड़ने से बचाने के लिए अपने पुराने दोस्त और साथी महात्मा गाँधी के साथ सुलह कर लेंगे। हमरा आप पर पूरा विश्वास है।

जेल में उपद्रव

मुलतान का ४वीं मार्च का समाचार है, कि वहाँ के सेन्ट्रल जेल में उपद्रव हो गया। जेल में एक बैरक में सिक्ख और दूसरे में पठान रहा करते थे। इन्हीं लोगों में दङ्गा हुआ। दङ्गा के समय लाठियों और लोहे के छड़ों से मार-पीट हुई। कोई कारण ज्ञात नहीं हुआ। एक सिक्ख और एक पठान सख़्त घायल हुए हैं। पुलिस मामले की तहक़ीक़ात कर रही है।

—विज़गापट्टम का ६ठी मार्च का समाचार है, कि कलकत्ता यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर राधाकृष्णन आन्ध्र यूनीवर्सिटी के नए वायसचान्सलर चुने गए हैं।

सरदार भगतसिंह के घर पर डाका

लाहौर का ४वीं मार्च का समाचार है, कि कल रात को भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह के घर पर गाँव में डाका पड़ा। डाकू कुछ नक़द व दो बैल लूट ले गए। भगतसिंह के चचा और एक नौकर को चोट पहुँची है। वे अस्पताल में हैं। पुलिस ने ४ व्यक्ति गिरफ़्तार किए हैं।

विदेशी कपड़ों की विदेश-यात्रा

योजना तैयार की जा रही है

दिल्ली का ६वीं मार्च का समाचार है, कि कॉङ्ग्रेस के जनरल सेक्रेटरी ने निम्नलिखित वक्तव्य प्रकाशित किया है:—

जैसा कि सबों को मालूम है, महात्मा जी की इच्छानुसार श्री० बिड़ला, मि० अ॰गम, श्री० अम्बालाल साराभाई और श्री० लालभाई और श्री० शङ्करलाल जी बैङ्कर विदेशी वस्त्र को विदेशों में बेचने की एक स्कीम तैयार कर रहे हैं।

यह निश्चय किया गया है, कि जब महात्मा जी अहमदाबाद और बम्बई जायँगे तो वे वहाँ के मिल-मालिकों के सामने भाषण देंगे। बम्बई में १७ मार्च को मिल-मालिकों की एक सभा करने का भी निश्चय किया गया है। उस सभा में इस विषय पर विचार कर एक स्कीम तैयार की जायगी। उस स्कीम को महात्मा गाँधी और पण्डित जवाहरलाल नेहरू के सामने पेश किया जायगा।

गाँधी-इर्विन समझौते पर एलान

सत्याग्रह आन्दोलन की आंशिक समाप्ति

अहिंसात्मक राजनैतिक कैदी रिहा किए जावेंगे; ज़ब्त जायदादें लौटाई जायँगी

समुद्र के किनारे नमक बनाने और बेचने की आज्ञा; विदेशी कपड़े और शराब पर शान्तिपूर्ण पिकेटिङ्ग जारी रहेगी !

गत १७वीं फ़रवरी से दिल्ली में महात्मा गाँधी तथा लॉर्ड इर्विन में सन्धि की चर्चा हो रही थी और वह ३री मार्च को सफलतापूर्वक समाप्त हो गई। बीच में विरोध के कुछ काले बादल उमड़ पड़े थे, परन्तु इन दो महापुरुषों ने उन्हें अधिक देर तक टिकने न दिया। इस सन्धि-निर्णय के लिए उन्हें अन्त में कई दिनों तक रात्रि में ६॥ बजे तक मशविरा करना पड़ा है। परन्तु इस अथक परिश्रम का परिणाम अच्छा निकला। कॉङ्ग्रेस और ब्रिटिश गवर्नमेण्ट में ३री मार्च की रात्रि को समझौता हो गया। पाठकों को स्मरण होगा कि गत वर्ष इस ३री मार्च की रात्रि को महात्मा गाँधी ने श्री० रेगीनॉल्ड रेनॉल्ड्स के हाथों वायसराय के पास अपनी चुनौती (अल्टीमेटम) भेजी थी और इस वर्ष ठीक उसी दिन उसमें समझौता हो गया। इस समझौता के परिणाम-स्वरूप कॉङ्ग्रेस गोलमेज़ परिषद् में भाग लेकर भारत के भावी शासन-विधान का निर्णय करेगी। और यदि गोलमेज़ परिषद् में उसे अपना उद्देश्य प्राप्त करने में असफलता रहेगी तो वह महात्मा गाँधी के नेतृत्व में पुनः युद्ध प्रारम्भ कर देगी। इस सन्धि के सम्बन्ध में भारतीय सरकार निम्न ऐलान निकाला है :—

गत ४थी मार्च को महात्मा गाँधी और लॉर्ड इर्विन के बीच में जो सन्धि हुई है उसके सम्बन्ध में सपरिषद् गवर्नर ज़नरल ने सर्व-साधारण की जानकारी के लिए दिल्ली से ५वीं मार्च को निम्न विज्ञप्ति प्रकाशित की है :—

(१) श्रीमान् वायसराय और महात्मा गाँधी में जो बातचीत हुई थी उसके फल-स्वरूप यह निर्णय किया गया है कि सविनय अवज्ञा बन्द कर दी जाय और ब्रिटिश सरकार की अनुमति से भारत-सरकार और प्रान्तीय सरकारें भी कुछ विशिष्ट कार्य करें।

लॉर्ड इर्विन

(२) भावी भारत-शासन के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकारकी अनुमति से प्रकाशित किया जाता है कि भावी विचार का विषय भारतीय शासन की योजना पर, जिस पर गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में विचार हुआ था, और भी विचार किया जायगा। जो योजना वहाँ बनाई गई है उसका मुख्य अङ्ग संयुक्त शासन है, उसी प्रकार भारत-रक्षा, परराष्ट्र विषय, अल्पसंख्यकों के स्थान, भारत की आर्थिक साख और ऋण चुकाने के सम्बन्ध में संरक्षित अधिकार भी उसके वैसे ही महत्व के अङ्ग हैं, और इन संरक्षणों का उद्देश्य भारत का ही हित है।

(३) १६ जनवरी को लन्दन में प्रधान मन्त्री ने जो भाषण किया था उसके अनुसार भावी शासन के सम्बन्ध में जो और विचार होंगे उनमें कॉङ्ग्रेस वालों के शामिल होने की भी व्यवस्था की जायगी।

सविनय अवज्ञा

(४) इस समझौते का सम्बन्ध सविनय अवज्ञा से सम्बद्ध कार्यों से है।

(५) सविनय अवज्ञा बिलकुल बन्द कर दी जायगी और सरकार भी तदनुरूप कार्य करेगी। सविनय अवज्ञा के बिलकुल बन्द किए जाने का अर्थ यह है कि उसको चलाने के लिए जो सब कार्य किए जाते थे वे और ख़ास करके नीचे लिखे कार्य बन्द किए जायँगे :—

(अ) किसी क़ानून का सङ्गठित रूप से विरोध करना।

(ब) लगान तथा अन्य स्थानीय कर न देने का आन्दोलन।

(स) सविनय अवज्ञा का समर्थन करने के लिए साइक्लोस्टाइल पर परचे निकलना।

(द) फ़ौजी या मुल्की नौकरों या ग्राम-कर्मचारियों को सरकार के विरुद्ध उभारना या नौकरी छोड़ने की सलाह देना।

(६) विदेशी वस्त्र के बहिष्कार के सम्बन्ध में दो मुख्य बातें हैं, एक तो बहिष्कार का स्वरूप और, दूसरे उसे काम में लाने की पद्धति। सरकार की स्थिति इस प्रकार है—भारत की साम्पत्तिक उन्नति के लिए जो आर्थिक और औद्योगिक आन्दोलन किया जाता है उसके अङ्ग-स्वरूप देशी उद्योग-धन्धों को उत्तेजन देना सरकार को मञ्जूर है, और उद्देश्य से समझावे और विज्ञापन आदि से जो प्रचार किया जाय उसे रोकना उसको इष्ट नहीं है, बशर्ते कि इस प्रचार से व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य में बाधा न हो और अमन क़ानून में ख़लल न पहुँचे। मगर अभारतीय अर्थात् विदेशी माल के बहिष्कार का (विदेशी वस्त्र के बहिष्कार के सिवा, क्योंकि इसका सम्बन्ध सब विदेशों के वस्त्रों से है) उद्देश्य सविनय अवज्ञा के समय, केवल नहीं तो मुख्यतः ब्रिटिश माल के बहिष्कार से रहा है, और राजनीतिक दबाव डालने के लिए ऐसा किया गया है। यह स्वीकार किया गया है कि एक ओर इस प्रकार का बहिष्कार करते रहना और भावी शासन के सम्बन्ध की उस स्पष्ट और मित्रतापूर्ण बातचीत में कॉङ्ग्रेस का शामिल होना उपयुक्त न होगा, जिसमें ब्रिटिश भारत, देशी राज्य, ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

अतः यह निश्चय हुआ कि सविनय अवज्ञा के बन्द किए जाने का अर्थ राजनीतिक हेतु से किए जाने वाले ब्रिटिश माल के बहिष्कार का भी उठा लेना है, अतः जिन लोगों ने राजनीतिक उत्तेजना के समय ब्रिटिश माल

महात्मा गाँधी

की ख़रीद-बिक्री बन्द की, थी उन्हें यदि वे चाहें तो पुनः वह काम करने का स्वतन्त्रता बेरोक-टोक दी जाय।

पिकेटिङ्ग की शर्तें

(७) विदेशी माल की जगह स्वदेशी माल का प्रचार करने और मादक पदार्थों का प्रचार रोकने के लिए ऐसी पद्धति से काम न लिया जायगा जो पिकेटिङ्ग कहलाती है, पर वह पद्धति यदि मामूली क़ानून के विरुद्ध न हो तो उसमें आपत्ति न होगी। इस पिकेटिङ्ग में किसी तरह की ज़ोर-ज़बरदस्ती न होगी, दबाव, धमकी, बाधा, विरोधक प्रदर्शन लोगों के मामूली कामकाज में रुकावट अथवा मामूली क़ानून के विरुद्ध किसी तरह की कार्रवाई न होगी। जब कभी कहीं पर ऊपर

लिखे उपायों से पिकेटिङ्ग की जायगी तो वहाँ वह रोक दी जायगी ।

पुलिस की नृशंसता

(८) महात्मा गाँधी ने पुलिस के अत्याचारों के विशेष उदाहरणों की ओर सरकार का ध्यान दिलाया और उसकी जाँच करने की आवश्यकता बतलाई । वर्तमान स्थिति में सरकार को ऐसा करने में बड़ी कठिनाई मालूम होती है, क्योंकि इससे एक-दूसरे पर तरह-तरह के जुर्म लगाए जायँगे, तथा इससे शान्त वातावरण उत्पन्न करने में बाधा होगी । इन बातों का विचार करके महात्मा गाँधी ने भी इस पर ज़ोर न देना मन्ज़ूर किया ।

सरकार क्या करेगी

(९) सविनय अवज्ञा बन्द की जाने पर जो काम सरकार करेगी उसका उल्लेख परवर्ती खण्डों में किया जाता है ।

(१०) सविनय अवज्ञा के सम्बन्ध में जो ऑर्डिनेन्स बनाए गए थे, वे रद्द कर दिए जायँगे ।

(११) क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट ऐक्ट के अनुसार संस्थाओं के ग़ैर-क़ानूनी क़रार देने के लिए जो घोषणाएँ की गई थीं, यदि वे सविनय अवज्ञा के ही सम्बन्ध की हों तो वे रद्द कर दी जायँगी।

हाल में बर्मा-सरकार ने इस क़ानून के अनुसार जो घोषणाएँ की हैं, उनका समावेश इसमें नहीं होता ।

(१२) (अ) विचाराधीन मुक़दमे उठा लिए जायँगे, अगर वे सविनय अवज्ञा के सम्बन्ध में हों और उनका सम्बन्ध तार्किक हिंसा छोड़ कर प्रकृत हिंसा से, अथवा हिंसा के लिए उत्तेजना देने से न हो ।

(क) ज़ाब्ता फ़ौजदारी के अनुसार ज़मानत के जो मुक़दमे चलाए गए हैं, उन पर भी यही नियम लागू होगा ।

(ख) सविनय अवज्ञा के सम्बन्ध में यदि किसी प्रान्तीय सरकार ने किसी वकील-मुख़्तार के ख़िलाफ़ लीगल प्रेक्टीशनर्स एक्ट के अनुसार मुक़दमा दायर किया हो या हाईकोर्ट से ज़ाब्ते की कार्रवाई करने की प्रार्थना की हो तो वह उस मामले को उठा लेने की अनुमति माँगेगी, बशर्ते कि मामले का सम्बन्ध हिंसा के लिए उत्तेजन से न हो ।

(ग) किसी सैनिक या पुलिस पर अवज्ञा के लिए मुक़दमा किया जाता हो तो उसका समावेश इस नियम में न होगा ।

(१३) (अ) जो लोग सविनय अवज्ञा के कारण, जिसका सम्बन्ध हिंसा से नहीं है, जेल गए हैं, वे सब छोड़ दिए जायँगे ।

(क) जिन्हें जेल के भीतर कोई अपराध, जो हिंसा नहीं है, करने के कारण दण्ड मिला है अथवा जिन पर ऐसे अपराध के मामले दायर हैं, उनका वह दण्ड भी रद्द कर दिया जायगा और मुक़दमा उठा लिया जायगा ।

(ख) जिन सिपाहियों या पुलिसवालों को अवज्ञा के लिए दण्ड मिला है, उनका समावेश इस नियम में न होगा ।

जुर्माना

(१४) जो जुर्माने अभी वसूल नहीं हुए हैं, वे छोड़ दिए जायँगे, अगर ज़मानत ज़ब्त करने की आज्ञा हुई हो और ज़मानत वसूल न हो गई हो तो वह भी छोड़ दी जायगी । जुर्मानों और ज़मानतों की रक़में अगर वसूल हो गई हों तो वे लौटाई न जायँगी ।

अतिरिक्त पुलिस

(१५) किसी जगह, अगर वहाँ रहने वालों के ख़र्च पर, सविनय अवज्ञा के सम्बन्ध में, ज़्यादा पुलिस बैठाई गई हो, तो प्रान्तीय सरकार की इच्छानुसार वह उठा ली जायगी । जो रक़म वसूल हो चुकी है, वह अगर ख़र्च से ज़्यादा न हो तो प्रान्तीय सरकार उसे न लौटावेगी, पर जो वसूल नहीं हुई है वह छोड़ दी जायगी ।

(१६) (अ) चल सम्पत्ति, जो ग़ैर-क़ानूनी तौर पर नहीं ली गई है और जिस पर काले क़ानूनों या अन्य फ़ौजदारी क़ानूनों से क़ब्ज़ा किया गया है, वह अगर अब भी सरकार के क़ब्ज़े में है, तो लौटा दी जायगी ।

(क) भू-कर अथवा अन्य सरकारी पावने के लिए जो चल सम्पत्ति सरकार ने ली है, वह लौटा दी जायगी, बशर्ते कि उस ज़िले के कलक्टर को यह सन्देह न हो कि वह आदमी उचित समय के भीतर अपना देना अदा करने से दृढ़तापूर्वक इनकार करेगा ।

'उचित समय' का विचार करते समय इस बात पर भी ध्यान दिया जायगा कि कोई आदमी वस्तुतः अपना देना चुकाना चाहता है, पर इसके लिए समय की आवश्यकता है । ज़रूरत हुई तो भू कर सम्बन्धी साधारण नीति के अनुसार उसकी वह रक़म कुछ समय के लिए स्थगित भी की जायगी ।

(ख) जो सम्पत्ति रक्खी-रक्खी ख़राब हो गई हो, उसके लिए हरजाना नहीं दिया जायगा ।

(ग) अगर सरकार ने चल सम्पत्ति बेच डाली हो या अन्य प्रकार से हस्तान्तरित कर डाली हो तो उसके लिए न हरजाना दिया जायगा, न उसके लिए मिली हुई रक़म ही लौटाई जायगी, बशर्ते कि वह रक़म सरकारी पावने से ज़्यादा न हो ।

(घ) अगर कोई आदमी समझे कि उसकी सम्पत्ति ग़ैर-क़ानूनी तौर से ली गई है तो वह मामूली क़ानूनी कार्रवाई कर सकता है ।

(१७) (अ) सन् १९३० के नवें ऑर्डिनेन्स के अनुसार जिस अचल सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा किया गया है वह उसी ऑर्डिनेन्स के अनुसार लौटा दी जायगी ।

(क) भूकर या अन्य क़ानूनी पावने के लिए जिसकी ज़मीन या अन्य अचल सम्पत्ति ज़ब्त की गई है या क़ब्ज़े में ली गई है, वह सरकार के ही पास हो तो लौटा दी जायगी, बशर्ते कि ज़िले के कलेक्टर को यह सन्देह न हो कि वह आदमी अपना देना उचित समय के भीतर चुकाने से दृढ़तापूर्वक इनकार करेगा ।

'उचित समय' का विचार करते समय इस बात का ध्यान रक्खा जायगा कि आदमी वस्तुतः देना चुकाना चाहता है, पर कठिनाई के कारण चुका नहीं सकता और इसके लिए मुहलत की ज़रूरत है, तो उसका कर साधारण कर-नीति के अनुसार कुछ समय के लिए स्थगित भी हो जायगा ।

(ख) अगर अचल सम्पत्ति तीसरे आदमी के हाथ बेच डाली गई हो तो, जहाँ तक सरकार का सम्बन्ध है, वह बिक्री आख़िरी समझी जायगी ।

नोट—महात्मा गाँधी का कहना है कि उनकी जानकारी के अनुसार इस तरह की कई बिक्रियाँ ग़ैर-क़ानूनी और अन्यायपूर्ण हैं, पर जानकारी के अनुसार ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है ।

(ग) अगर कोई समझता हो कि सम्पत्ति गैरक़ानूनी तरीक़े से ज़ब्त की गई है तो उसे क़ानूनी कार्रवाई करने की स्वतन्त्रता होगी ।

(१८) सरकार का विश्वास है कि ऐसे बहुत ही कम उदाहरण हैं, जहाँ सरकारी पावना क़ानूनी तरीक़े से वसूल नहीं किया गया है । अगर कहीं ऐसा हुआ तो उसका प्रतिकार करने के लिए प्रान्तीय सरकारें डिस्ट्रिक्ट अफ़सरों को आज्ञा देंगी कि इस तरह की शिकायत पाते ही बिना विलम्ब उसकी जाँच करावें और जहाँ शिकायत ठीक साबित हो वहाँ बिना विलम्ब प्रतिकार करें ।

फिर से नौकरी

(१९) पदत्याग के कारण जो स्थान ख़ाली हुए थे उन पर अगर नये कर्मचारी स्थायी रूप से नियुक्त किए जा चुके हों तो पुराने को फिर से नियुक्त करना सरकार के लिए सम्भव न होगा । अन्य प्रकार के मामलों पर प्रान्तीय सरकारें विचार करेंगी और पुराने कर्मचारियों को, जो पुनः नियुक्ति के लिए दरख़्वास्त करेंगे, फिर से उनके स्थान देने में उदारता से काम लेंगी ।

नमक-क़ानून

(२०) नमक के सम्बन्ध में वर्तमान क़ानून का तोड़ा जाना सरकार सहन नहीं कर सकती, देश की वर्तमान दशा में वह नमक-क़ानून में अधिक और व्यापक परिवर्तन भी नहीं कर सकती । पर कुछ ग़रीब श्रेणियों के लोगों को वह वैसी ही सुविधा देने को तैयार है जैसी कहीं-कहीं दी भी गई है—यानी जो गाँव ऐसी जगह हों, जहाँ नमक पैदा होता है, वहाँ के अधिवासी अपने खाने के लिए या अपने गाँव में बेचने के लिए नमक जमा कर सकेंगे, पर उस गाँव के बाहर के लोगों को बेच न सकेंगे ।

(२१) अगर इस समझौते के अनुसार कॉङ्ग्रेस ने काम न किया तो जनता और व्यक्तियों की तथा अमन-क़ानून की रक्षा के लिए जो आवश्यक समझा जायगा वह काम सरकार करेगी ।

एच० डब्ल्यू० इमर्सन
सेक्रेटरी, गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया

कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी का प्रस्ताव

गाँधी-इर्विन समझौता हो जाने के पश्चात् कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी ने ५वीं मार्च को निम्न-प्रस्ताव पास किया है :—

"भारत-सरकार और कॉङ्ग्रेस की ओर से महात्मा गाँधी ने जो समझौता किया है, उसकी शर्तों पर विचार करके कार्य-समिति इन्हें स्वीकार करती है और सब कॉङ्ग्रेस कमिटियों को आदेश करती है कि तुरन्त उनके अनुसार कार्य करें ।

"समिति आशा करती है कि जहाँ तक कॉङ्ग्रेस के विविध कार्यों का सम्बन्ध है, देश स्वीकृत शर्तों की तामील करेगा और उसका मत है, कि कॉङ्ग्रेस की ओर से जो प्रतिज्ञाएँ की गई हैं, उनका पूर्णरूप से पालन होने पर भारत का पूर्ण स्वराज्य की ओर बढ़ना अवलम्बित है ।"

सब प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटियों को तार से इस निश्चय की सूचना दे दी गई है ।

प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटियों को आदेश

कॉङ्ग्रेस के प्रधान मन्त्री डॉक्टर सैयद महमूद ने नीचे लिखे आशय का तार प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटियों के पास भेजा है—

"कॉङ्ग्रेस की ओर से कार्य-समिति और भारत सरकार में जो अस्थायी समझौता हुआ है, उसके अनुसार मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप अपने प्रांन्त की सब कॉङ्ग्रेस कमिटियों को फ़ौरन सूचित कर दें कि वे उस समझौते के अनुसार काम करें । सत्याग्रह और करबन्दी के आन्दोलन बन्द कर देने होंगे और क़ानूनों की अवज्ञा अब न की जायगी ।

ब्रिटिश माल का बहिष्कार इस रूप में बन्द कर दिया जाय और इस विषय में लोगों को पूरी स्वतन्त्रता दे दी जाय ।

पर नशीली चीज़ों, सब तरह के विदेशी कपड़े और ताड़ी-शराब की दूकानों के बहिष्कार की इजाज़त रहेगी और जहाँ आवश्यकता हो, किया जाय । पर इस पिकेटिङ्ग में ज़ोर-ज़बरदस्ती न होनी चाहिए । दबाव, धमकी,

(शेष मैटर ७वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

क्या महात्मा गाँधी ने भावी भारत के प्रधान मन्त्री होने से इन्कार कर दिया ?

"भारत का स्वतन्त्र होना उतना ही निश्चित है, जितना स्वर्ग में ईश्वर और सूर्य का अस्तित्व।.........मैं अपने जीवन में ही भारत को पूर्ण स्वतन्त्र देखूँगा।"

—म० गाँधी

डॉक्टर अन्सारी के मकान पर सम्पादकों की सभा समाप्त होने पर, उन पत्र-सम्पादकों ने महात्मा गाँधी से कुछ प्रश्न किए, जिनका महात्मा गाँधी ने उत्तर दिया। इन पत्रकारों में ऐसोसिएटेड प्रेस के अमेरिकन प्रतिनिधि मि० जेम्स मिल्स, 'लन्दन टाइम्स' के मि० पियर्सन 'शिकागो ट्रिब्यून' के मि० शिरर, 'बोस्टन इवनिङ्ग ट्रान्सक्रिप्ट' के मि० हाल्टन जेम्स, 'क्रिश्चियन साइन्स मानिटर' के मि० इङ्गिल्स, दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के श्री० जे० एन० साहनी और पायनियर के मि० नीडहम भी सम्मिलित थे। महात्मा गाँधी के उत्तर अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और वे कॉङ्ग्रेस की नीति और उसके भावी कार्यक्रम तथा महात्मा गाँधी के व्यक्तिगत विचारों पर बहुत प्रकाश डालते हैं। पाठकों के मनोरञ्जनार्थ हम यहाँ कुछ प्रश्न और उनके उत्तर देते हैं।

पूर्ण स्वराज्य

ऐसोसिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि के पूछने पर महात्मा गाँधी ने 'पूर्ण स्वराज्य' का अर्थ इस प्रकार समझाया। पूर्ण स्वराज्य का अर्थ स्वतन्त्र शासन या आन्तरिक सङ्गठित शासन है। इसका अर्थ किसी अन्य राष्ट्र से बिल्कुल सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना नहीं है। इसी प्रकार इङ्गलैण्ड से सम्बन्ध स्थापित रखना कुछ ग़ुलामी का चिन्ह नहीं है। इस प्रकार के सम्बन्ध का यह मतलब है कि आवश्यकता पड़ने पर मित्र-राष्ट्र एक-दूसरे की सहायता कर सकें। भारत का साम्राज्य के अन्दर रहना कुछ विरोधपूर्ण नहीं है, परन्तु हम इङ्गलैण्ड के साथ बराबरी के हिस्सेदार होकर रहना चाहते हैं।

प्रश्न—क्या पूर्ण स्वराज्य का यह अर्थ नहीं है कि इङ्गलैण्ड से बिल्कुल सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया जाय?

उत्तर—जन-साधारण का विश्वास ऐसा ही है, क्योंकि उसके मतानुसार इङ्गलैण्ड भारत के साथ बराबरी का व्यवहार नहीं करेगा। मेरे कुछ साथियों का भी ऐसा ही विश्वास है। परन्तु मेरा मत उनसे बिल्कुल विरुद्ध है। मैं वह दिन स्पष्ट देख रहा हूँ, जब ३३ करोड़ भारतीयों का केन्द्रीय शासन डाउनिङ्ग स्ट्रीट से उठ कर दिल्ली में आ जायगा। मेरा विश्वास है कि ब्रिटिश लोग व्यवहार-चतुर और स्वतन्त्रता-प्रेमी हैं। एक क़दम आगे बढ़ कर वे इस स्वतन्त्रता का आस्वादन दूसरों को करा सकते हैं।

प्र०—क्या आप ब्रिटिश जाति को शासक के रूप में पसन्द करते हैं?

उ०—नहीं, मैं किसी जाति का शासक बनना पसन्द नहीं करता, क्योंकि मैं स्वयं अपने ऊपर अपने सिवाय किसी दूसरे का शासन पसन्द नहीं करता।

प्र०—जब आप स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेंगे, तब आप क्या ब्रिटिश झण्डे को न मानेंगे?

उ०—नहीं, या तो साम्राज्य के सभी उपनिवेशों का एक ही झण्डा होगा और या सबका अलग-अलग।

द्वितीय गोलमेज़ परिषद

प्र०—दूसरी गोलमेज़ परिषद भारत में होगी या इङ्गलैण्ड में?

उ०—उस परिषद की कार्यवाही का कुछ भाग भारत में समाप्त होगा और कुछ इङ्गलैण्ड में। उस कॉन्फ्रेन्स में राष्ट्रीय नेता पूर्ण स्वतन्त्रता पर ज़ोर देंगे। यदि हमने ऐसा न किया तो हमारा अस्तित्व ही झूठा समझना चाहिए। फ़ौज और अर्थ-विभाग में जो बन्धन रक्खे गए हैं, भारत उन्हें कभी स्वीकार नहीं कर सकता। कॉङ्ग्रेस का यह उद्देश्य कदापि नहीं कि वह भारत का ऋण चुकाने से इन्कार कर दे। उसे वह पाई-पाई चुकाना चाहती है। हम केवल इसी बात पर ज़ोर देते हैं कि हमारे साथ इन्साफ़ हो। यदि इस सम्बन्ध में आपस में समझौता न हो सके, तो यह प्रश्न एक स्वतन्त्र ट्रिब्यूनल पर छोड़ दिया जाय।

प्र०—क्या 'लीग ऑफ़ नेशन्स' इस क़र्ज़ का निर्णय कर सकती है?

उ०—हाँ, परन्तु मुझे सन्देह है कि इङ्गलैण्ड निर्णय के लिए यह प्रश्न 'लीग ऑफ़ नेशन्स' को कदापि न सौंपेगा। कुछ भी हो, गोलमेज़ परिषद में हम इस प्रश्न पर बहुत दबाव डालेंगे।

प्र०—क्या गोलमेज़ परिषद में जाने के पहिले आप हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल कर लेंगे?

उ०—हम प्रयत्न अवश्य करेंगे, परन्तु हमें उसकी सफलता में कुछ सन्देह है।

प्र०—क्या हिन्दू-मुस्लिम एकता में कई वर्ष लगेंगे?

उ०—मेरा विश्वास है कि हिन्दू-मुस्लिम भेद-भाव बिल्कुल ऊपर है और उसके दूर होने में अधिक समय न लगेगा।

प्र०—क्या आप अपने जीवन में भारत को पूर्ण स्वतन्त्र देख लेंगे?

उ०—मुझे इसका पूर्ण निश्चय है।

प्र०—यदि गोलमेज़ परिषद सफल हो गई और भारत में नए शासन की स्थापना हो गई तो क्या आप प्रधान मन्त्री होना स्वीकार करेंगे?

उ०—(इस प्रश्न से गाँधी जी खिलखिला कर हँस पड़े) वह पद तो साहसी और विद्वान युवकों के लिए सुरक्षित रहेगा।

प्र०—क्या वर्तमान सन्धि को आप अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ कार्य समझते हैं?

उ०—मैं अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ कार्य भारत में स्वतन्त्रता की स्थापना समझूँगा और स्वतन्त्रता भारत के लिए उसी प्रकार निश्चित है, जिस प्रकार ईश्वर और सूर्य का अस्तित्व।

(६वें पृष्ठ का शेषांश)

बाधा, विरोधमय प्रदर्शन, लोगों के आने-जाने, कामकाज में रुकावट या ऐसी कोई बात उसके साथ न होनी चाहिए जो मामूली क़ानून के अनुसार जुर्म हो।

जिस स्थान में इन शर्तों की पाबन्दी न हो वहाँ पिकेटिङ्ग रोक देनी होगी। सम्पूर्ण विदेशी वस्तुओं के बदले लोगों से स्वदेशी वस्तुएँ काम में लाने का आग्रह यथापूर्व करते रहना होगा।

नमक-क़ानून की सङ्गठित-अवज्ञा और धावे न किए जायँगे, परन्तु जिन स्थानों में नमक बटोरा अथवा बनाया जाता है वहाँ के निवासियों को घर के ख़र्चे अथवा आस-पास वालों के हाथ बेचने के लिए नमक बटोरने और बनाने की इजाज़त रहेगी, पर बाहर वालों के हाथ ऐसा नमक बेचा न जा सकेगा।

साइक्लोस्टाइल पर छाप कर निकाले जाने वाले ग़ैर-क़ानूनी परचे (अनअथराइज़्ड न्यूज़शीट) बन्द कर दिए जायँ।

किसान और ज़मींदार मालगुज़ारी अदा करने की तैयारी करें और जो लोग घर छोड़ कर कहीं चले गए हों वे लौट आवें। जो लोग अदा करने में असमर्थ हों या अधिक आर्थिक कष्ट में हों वे मालगुज़ारी माफ़ या मुल्तवी करने के और उपायों से काम लें।

क़ैदियों की होने वाली रिहाई के विचार से कराची कॉङ्ग्रेस के प्रतिनिधियों के चुनाव के विषय में शीघ्र कई ख़ास हिदायतें पत्रों में प्रकाशित कराई जा रही हैं।

'सच्ची शान्ति कोसों दूर है'

हिंसात्मक राजनैतिक क़ैदियों को कॉङ्ग्रेस भूली नहीं है!

श्री० सेन गुप्त का वक्तव्य

६वीं मार्च को दिल्ली में श्री० सेन गुप्त ने सन्धि के सम्बन्ध में यह वक्तव्य दिया है—"यद्यपि गवर्नमेण्ट और कॉङ्ग्रेस के बीच का युद्ध बन्द हो गया है, परन्तु सच्ची शान्ति अभी कोसों दूर है। देश में पूरी शान्ति उसी समय हो सकती है, जब भारत अपने भाग्य का स्वयं निर्णायक हो जाय। यह मानना पड़ेगा कि जब तक हिन्दू-मुस्लिम और सिक्ख समस्या हल न हो जावेगी तब तक राष्ट्र-निर्माण के पथ में सैकड़ों रोड़े आएँगे। अब हमारी सारी शक्ति इसी समस्या को हल करने में ख़र्च होगी। यदि एक बार यह समस्या हल हो जाय तो संसार में ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जो हमारे अधिकारों में हस्तक्षेप कर सके।

"मुझे इस बात का दुःख है कि कॉङ्ग्रेस कई कारणों से नज़रबन्द और हिंसात्मक क़ैदियों को भी अन्य क़ैदियों के साथ छोड़ने की शर्त नहीं रख सकी। परन्तु इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि कॉङ्ग्रेस सन्धि करते समय उन्हें बिल्कुल भूल गई थी या उन्हें वह शीघ्र ही छुड़ाने का प्रयत्न नहीं कर सकी। मुझे विश्वास है कि भारतीय सरकार तथा प्रान्तीय सरकारें यह अच्छी तरह समझ गई हैं कि देश में शान्ति रखने के लिए अभियुक्तों की फाँसी की सज़ा रद्द करने की अत्यन्तावश्यकता है। चूँकि मैं कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी में बङ्गाल के नज़रबन्द क़ैदियों की रिहाई पर ज़ोर देता रहा हूँ। मैं यह कह सकता हूँ कि वायसराय से सन्धि की चर्चा करते समय महात्मा गाँधी ने हिंसात्मक क़ैदियों को रिहा करने की आवश्यकता उन्हें बतला दी है।"

राष्ट्रपति का सन्धि पर वक्तव्य

समझौते की आशा सन्देह-जनक है

कॉङ्ग्रेस-कार्य फिर ज़ोर से चलेगा

लखनऊ जेल में राजनैतिक क़ैदियों की मात्रा बहुत अधिक थी और उनकी रिहाई पर राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल उन्हें बधाई देने लखनऊ गए थे। वहाँ उन्होंने सन्धि के सम्बन्ध में निम्न भाषण दिया था :—

जब मैं एक मास पहिले लखनऊ आया था, उस समय मेरे साथ भारत का एक शेर था, परन्तु दो दिन बाद जब मैं यहाँ से लौटा तो अकेला रह गया था। इस समय जो लोग यहाँ उपस्थित हैं, उनमें बहुत से मेरे परिचित हैं। मैं इनमें अनेक सिपाहियों को पहचानता हूँ। कितने ही ऐसे हैं, जिनके साथ मैंने काम किया है। एक वर्ष में हमने और आपने शान्ति के साथ काम करके सारी दुनिया को दिखा दिया कि हमने निहत्थे होकर भी एक ज़बरदस्त और बलवान सल्तनत का कैसे मुक़ाबला किया और उसको नीचा दिखा दिया। चौथी मार्च को २ बजे रात को जब हमको क्षणिक सन्धि की सूचना मिली, तो हमको बड़ी प्रसन्नता हुई। परन्तु मैं आप लोगों को चेतावनी देता हूँ कि इस क्षणिक सन्धि को पूर्ण सन्धि समझना भूल है। सन्धि तो उस समय होगी, जब हमको पूर्ण स्वतन्त्रता मिलेगी। इससे पहिले यदि आपसे कोई कहे कि सन्धि हो गई, तो आपका धर्म होगा कि आप अपने हाथ में झण्डा ले लें। यह नहीं कहा जा सकता कि इस क्षणिक सन्धि का परिणाम क्या होगा? यदि स्वतन्त्रता न मिली तो हमें अपना काम फिर उसी मुस्तैदी और जोश से करना होगा। यह न समझना चाहिए कि अब सन्धि हो गई है और काम में ढील डाल दी जाय। हम लोगों ने स्वतन्त्रता के लिए ही कष्ट उठाए हैं और जेल में रहे हैं। केवल स्वतन्त्रता ही के लिए, स्वयं मुझे आशा तो नहीं है कि सन्धि हो जाय परन्तु, मैं अपने भरसक सन्धि के वास्ते प्रयत्न करूँगा। चाहे रुपए में एक आना भर ही आशा हो, किन्तु हमारा क्षणिक सन्धि से इन्कार करना अनुचित था।

स्वतन्त्रता के अर्थ

स्वतन्त्रता के अर्थ हैं कि देश की सेना देश के हाथ में ही हो। यह अङ्गरेज़ी सेना चली जाय। सेना के सब अफ़सर हिन्दुस्तानी हों और आर्थिक प्रबन्ध हमारे हाथ में हो।

अङ्गरेज़ कहते हैं कि जितना ऋण भारत-सरकार पर है, सब हमको देना होगा। यह ऋण प्रायः एक हज़ार मिलियन (मिलियन १० लाख को कहते हैं) पौण्ड बताया जाता है। परन्तु कॉङ्ग्रेस का उत्तर है कि वह अनुचित ऋण की देनदार न होगी। केवल उतना ही ऋण चुकाया जायगा, जो एक निष्पक्ष पञ्चायत निश्चय कर देगी। जो ऋण अफ़ग़ानिस्तान और बर्मा में हमारे भाइयों को मारने के ख़र्च के वास्ते लिया गया है, हम उसको चुकाना कैसे स्वीकार कर सकते हैं। यदि सब ऋण चुकाना स्वीकार कर लें, तो जो स्वतन्त्रता हमको मिलेगी वह केवल नाम की होगी।

स्वराज्य को शर्तों में इन सब बातों का निर्णय करना होगा। यदि अङ्गरेज़ इन बातों को न मानेंगे, तो सन्धि होने की आशा कम है।

अभी युद्ध का अन्त नहीं हुआ है, केवल कुछ दिन के वास्ते छुट्टी मिली है। हमको उचित है कि इस छुट्टी के समय में अपना घर ठीक कर लें। मोहल्लों-मोहल्लों में कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ स्थापित करके हम जनता को क्षणिक सन्धि के अर्थ समझा दें और अपने सङ्गठन को पुष्ट कर लें। शराब और विदेशी वस्त्र पर शान्तिमय धरना जारी रक्खें। स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार करें।

राजनैतिक क़ैदी

राजनैतिक क़ैदियों के विषय में राष्ट्रपति ने कहा कि अभी केवल वही क़ैदी छोड़े गए हैं जो साधारण रीति से अहिंसात्मक माने गए हैं, परन्तु मेरठ षड्यन्त्र केस जैसे मुक़दमों के क़ैदी भी छूटने चाहिए और वह भी छूटने चाहिए जो हैं तो राजनैतिक अपराधी, परन्तु दूसरे बहानों से जेल भेजे गए हैं।

क्रान्तिकारियों के विषय में आपने कहा कि हम उनके कामों का समर्थन नहीं करते हैं, परन्तु हमें उनकी निन्दा करने का भी कोई हक़ नहीं है। क्योंकि जिस स्वतन्त्रता के वास्ते हम चेष्टा कर रहे हैं, उसी स्वतन्त्रता के वास्ते वह भी लड़ रहे हैं। सरकार को शर्तों के शब्दार्थ पर नहीं, वरन् उसके तत्व पर ध्यान देकर ऐसे क़ैदियों को भी छोड़ देना उचित है।

वर्ष भर तक काम करके कॉङ्ग्रेस ने जो सफलता प्राप्त की है, उसके वास्ते राष्ट्रपति ने उसको बधाई दी।

व्याख्यान समाप्त करने के बाद राष्ट्रपति ने लाला छेदीलाल की धर्मशाला में, छूटे हुए क़ैदियों से भेंट की और वहाँ भी व्याख्यान दिया।

* * *

हिन्दू-मुस्लिम और सिख समस्या हल करने की अपील

डॉ० अन्सारी का वक्तव्य

६वीं मार्च को दिल्ली में डॉक्टर अन्सारी ने गाँधी-इर्विन सन्धि पर निम्न वक्तव्य दिया है :—

"यद्यपि गवर्नमेण्ट और कॉङ्ग्रेस में सन्धि हो गई है, परन्तु अभी बहुत बड़ा रास्ता तय करने को बाक़ी है। सन्धि तो केवल कॉन्फ़्रेन्स का निमन्त्रण मात्र है। वह हमारे त्याग, कष्ट-सहिष्णुता की द्योतक है; और अभी तक उससे कोई विशेष आशा नहीं की जा सकती। भारत की सब जातियाँ अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा कर जितना अधिक प्रयत्न करेंगी, स्वतन्त्रता भी हमें उतनी ही मात्रा में मिलेगी। यदि भारत के हिन्दू-मुसलमान और ईसाई आपस में लड़ते रहेंगे, तो कॉन्फ़्रेन्स में सफलता प्राप्त करना असम्भव है। इसलिए मैं भारत-माता के नाम पर देश की प्रत्येक जाति से भेद-भाव भुला देने की प्रार्थना करता हूँ। उपद्री का तीर्थ-यात्री हमारे ऊपर शान्ति बरसाने के लिए देवदूत के रूप में आया है। यदि कॉन्फ़्रेन्स के पहले हम अपनी जातीय समस्याएँ हल कर लें, तो उद्देश्य की प्राप्ति में हमें कुछ भी विलम्ब न लगेगा। और यदि हम ये समस्याएँ हल न कर सके, तो फिर हमारा हाफ़िज़ ख़ुदा ही है।"

ऑर्डिनेन्स रद करने वाला ऑर्डिनेन्स

नई दिल्ली, ६ मार्च। 'गज़ट ऑफ़ इण्डिया' के अतिरिक्त अङ्क में निम्न-लिखित विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है :—

गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया एक्ट की ७२वीं धारा के अनुसार गवर्नर जनरल ने निम्न-लिखित ऑर्डिनेन्स निकाला है :—

(१) इस ऑर्डिनेन्स का नाम सन् १९३१ का 'ऑर्डिनेन्स रद करने वाला ऑर्डिनेन्स' होगा।

(२) ग़ैर-क़ानूनी संस्था ऑर्डिनेन्स (१९३०), इण्डियन प्रेस एण्ड अनअथराइज़्ड न्यूज़शीट ऑर्डिनेन्स (१९३०) और भड़काने वाला (दूसरा) ऑर्डिनेन्स (१९३०) रद किए जाते हैं।

—मद्रास का ३री मार्च का समाचार है, कि वहाँ रतन बाज़ार में पिकेटिङ्ग करते समय पुलिस ने ज़बरदस्ती कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवकों को वहाँ से हटा दिया।

फ़तहपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई

लखनऊ के ३री मार्च के असाधारण गज़ट में निम्न विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है :—

"चूँकि गवर्नर-इन-कौन्सिल की राय है कि फ़तहपुर ज़िले की कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ शासन के सञ्चालन तथा क़ानून और शान्ति की रक्षा में ख़लल डालती हैं, इसलिए गवर्नर-इन-कौन्सिल सन् १९०८ के क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट के अनुसार यह घोषित करते हैं कि उपर्युक्त सभी कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी जाती हैं।"

(६वें पृष्ठ का शेषांश)

रखने की योग्यता है। अगर जनता कॉङ्ग्रेस को ऐसी शक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त करा दे, तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि शीघ्र ही नज़रबन्द मेरठ षड्यन्त्र के अभियुक्त तथा अन्य हिंसात्मक बन्दी छोड़ दिए जायँगे।

क्रान्तिकारियों से अपील

मैं जानता हूँ कि देश में एक ऐसी सङ्गठित संस्था है, जिसका लक्ष्य हिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना है। उस संस्था से मैं अपील करता हूँ कि वह अपनी कार्यवाहियों को कम से कम इस मौक़े को देख कर अवश्य रोक दें। उस संस्था वालों को भी यह अनुभव हुआ होगा कि अहिंसा में कितनी शक्ति है। देश की वर्तमान जागृति का कारण अहिंसा ही है। वे धैर्य धारण करके कॉङ्ग्रेस को अहिंसा के परीक्षण का अवसर दें। अभी तो अहिंसा का परीक्षण करते हुए एक ही वर्ष हुआ है। यह समय कुछ भी नहीं है। इसलिए उन्हें अभी और प्रतीक्षा करनी चाहिए। उन्हें अपनी मातृ-भूमि की सेवा के लिए अपने जीवन की रक्षा करनी चाहिए। उन्हें सब राजबन्दियों को, यहाँ तक कि जिनको हत्या करने के कारण फाँसी की सज़ा मिल चुकी है, उन्हें भी छुड़ाने में कॉङ्ग्रेस की मदद करनी चाहिए। पर मैं झूठी आशाएँ नहीं दिलाना चाहता। मेरी तथा कॉङ्ग्रेस की यह इच्छा है कि हम उन्हें छुड़ाने की कोशिश करेंगे। पर उसका फल परमेश्वर के हाथ में है।

मैंने सम्मानजनक समझौता करने में अपनी सारी शक्ति लगा दी है। मैंने लॉर्ड इर्विन से यह वादा कर दिया है कि मैं समझौते की शर्तों को पूरा करने में पूरी शक्ति लगा दूँगा। मैंने यह समझौता इसलिए नहीं किया है कि इसे अवसर पाते ही तोड़ दिया जाय, बल्कि इसे स्थायी बनाने में पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए।

अन्त में मैं उन पुरुषों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने समझौता कराने में सहायता दी है।

* * *

म० गाँधी का पूर्ण स्वराज्य विवेचन

कॉङ्ग्रेस का भावी गोलमेज़ परिषद में कर्त्तव्य

क्रान्तिकारियों को शान्त रहने........का आदेश :: वे लोग भी जेल से रिहा कर दिए जायँगे

सम्पादकों के सम्मुख महात्मा गाँधी का भाषण

दिल्ली में ५वीं मार्च को डॉ० अन्सारी के बँगले पर १५ भारतीय तथा अमेरिकन पत्रकारों के सामने भाषण देते हुए महात्मा गाँधी ने समझौते का अर्थ समझाया। उन्होंने कहा कि, पहली बात मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यदि वायसराय अथक परिश्रम न करते या वे मैत्री-भाव न दिखाते तो यह समझौता कभी न होता। मैं जानता हूँ कि, मेरे कारण उन्हें कभी-कभी उत्तेजन मिला होगा। मैं यह भी जानता हूँ कि, मैंने उनके धैर्य की परीक्षा की तो वे न तो कभी उत्तेजित हुए और न उन्होंने धैर्य छोड़ा। उन्होंने सब बातें दिल खोल कर कीं। और मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि, वे भी समझौते के लिए उत्सुक थे।

मुझे यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है, कि जब मैंने समझौते के लिए बातचीत करना प्रारम्भ किया था, तब मेरे दिल में सन्देह तथा भय बना हुआ था। पर प्रथम बार ही वायसराय से मिलने से मेरा भय दूर हो गया। मैंने ही उन्हें मुलाक़ात करने के लिए पत्र लिखा था। मैं नहीं चाहता था कि समझौते की दौड़ में वे मुझसे आगे निकल जायँ। ईश्वर की कृपा से समझौता हो गया और देश अल्पकाल के लिए—शायद हमेशा के लिए—कष्ट उठाने से बच गया। अगर समझौता न होता तो, देश को सौ गुना अधिक कष्ट उठाना पड़ता।

वीरों का युग

इस प्रकार के समझौते के लिए यह नहीं कहा जा सकता कि, कौन दल विजयी हुआ। अगर जीत हुई है तो दोनों दलों की। कॉङ्ग्रेस ने कभी विजय का यश प्राप्त करना नहीं चाहा। उसका तो एक निश्चित लक्ष्य है।

इस कारण देशवासियों को फूल कर कुप्पा न हो जाना चाहिए। इसके विपरीत उन्हें परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि, वह उन्हें धैर्य तथा शक्ति प्रदान करे, जिससे अगला कार्य भी सुन्दर रूप से पूर्ण हो जाय।

आत्म-दमन और विजय

मैं समझता हूँ कि देश में जहाँ ऐसे लोग होंगे, जो इस समझौते से प्रसन्न होंगे, वहाँ ऐसे लोगों की संख्या भी कम न होगी जो इससे निराश हुए होंगे। दूसरे प्रकार के लोगों का स्वाभाविक धर्म कष्ट-सहन बन गया है। उन्हें इसमें आनन्द आता है। जब कष्ट सहन करना बन्द हो जाता है, तब वे समझते हैं कि उनका व्यापार जाता रहा और उनका लक्ष्य पूरा नहीं हुआ। ऐसे पुरुषों से मैं यही कहूँगा कि 'प्रतीक्षा करो, देखो, प्रार्थना करो और आशा करो।' कष्ट-सहन की भी सीमा होती है। जब वह अपनी सीमा तक पहुँच गया, तो उसका बढ़ाना बुद्धिमत्ता का काम नहीं कहा जा सकता। जब हमारा विरोधी हमारी इच्छा के अनुकूल हमारे साथ विचार करने को तैयार है, तब कष्ट सहन करते जाना मूर्खता होगी। अगर हमें सच्चा मार्ग मिल जाय, तो हमें उससे फ़ायदा उठाना चाहिए। मेरी राय में इस समझौते ने हमें वह मार्ग दिखा दिया है।

इस प्रकार का समझौता अस्थायी हुआ करता है। जिस प्रकार का समझौता हुआ है, वह कई शर्तों पर निर्भर है। कॉङ्ग्रेस भी कॉन्फ्रेंस में तभी भाग लेती जब बहुत सी बातें पूरी हो जातीं। कॉङ्ग्रेस के लिए उनका पेश करना नितान्त आवश्यक था, पर कॉङ्ग्रेस का लक्ष्य की हुई ग़लतियों को सुधरवाना नहीं है। उसका उद्देश्य तो 'पूर्ण स्वराज्य' प्राप्त करना है। यह भारत का जन्मसिद्ध अधिकार है। भारत इससे कम में सन्तुष्ट नहीं हो सकता। पर समझौते में इस शब्द का नाम भी नहीं है।

फ़ेडरेशन

उसकी जगह 'फ़ेडरेशन' शब्द रक्खा गया है। इस शब्द के दोनों अर्थ हो सकते हैं। फ़ेडरेशन या तो मृगतृष्णा हो सकती है या यह सच्चे स्वरूप में भारत को स्वराज्य प्राप्त कराने की दशा हो सकती है। यही उत्तरदायित्व के लिए भी कहा जा सकता है। प्रतिबन्ध केवल धोखे की टट्टियाँ हों और उनका उद्देश्य भारत का रक्त-शोषण करना हो या वे भारत-रूपी वृक्ष की रक्षा के लिए घेरे का काम दें।

एक दल इन शब्दों का एक मतलब निकाल सकता है, तो दूसरा दल दूसरा मतलब निकाल सकता है। यदि कॉङ्ग्रेस ने गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में भाग लेना निश्चित किया है, तो केवल इसी इच्छा से कि वह फ़ेडरेशन को उत्तरदायित्वपूर्ण बनाना चाहती है और प्रतिबन्धों को भारत की राष्ट्रीय, सामाजिक तथा धार्मिक उन्नति का साधन बनाना चाहती है। कॉङ्ग्रेस की इस बात को अगर कॉन्फ्रेन्स ने स्वीकार कर लिया तो कॉङ्ग्रेस के प्रयत्न का फल पूर्ण स्वाधीनता होगा।

पर हमारे मार्ग में बड़ी-बड़ी बाधाएँ हैं। उन पर हमें विजय प्राप्त करनी पड़ेगी। उन पर विजय प्राप्त करने में हमें अन्य दलों, देशी नरेशों तथा अङ्गरेज़ों की सहायता की आवश्यकता होगी।

देशी नरेशों से अपील

इस समय मैं देश के अन्य दलों से कोई अपील नहीं करना चाहता। क्योंकि वे भी हमारे ही समान देश को स्वाधीन बनाना चाहते हैं, लेकिन मैं देशी नरेशों से कुछ कहना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि, देशी नरेश कॉङ्ग्रेस की अपील पर ध्यान दें। वे कॉन्फ्रेन्स में अपना-रुख़ इस प्रकार का रक्खें जिससे कोई समझौता हो सके। कॉङ्ग्रेस जिस प्रकार ब्रिटिश भारत के भारतीयों की प्रतिनिधि संस्था है, उसी प्रकार देशी राज्यों के भारतीयों की भी है। कॉङ्ग्रेस चाहती है कि देशी राज्य की प्रजा की स्थिति ब्रिटिश भारत की प्रजा के समान हो जाय। मुझे आशा है कि देशी नरेश इस आवश्यक प्रश्न की तरफ़ ध्यान देंगे।

अङ्गरेज़ों से अपील

अङ्गरेज़ों से मैं यह अपील करना चाहता हूँ, कि वे भारत को आज़ाद बनाने में सहायता दें। लन्दन कॉन्फ्रेन्स के फलरूप जो कुछ देश को मिला है, वह कॉङ्ग्रेस की माँग का आधा भी नहीं है। कॉङ्ग्रेस ने जो कॉन्फ्रेन्स में भाग लेना स्वीकार किया है उसका मतलब ही यह है, कि कॉङ्ग्रेस कॉन्फ्रेन्स में पूर्ण स्वाधीनता की माँग को पेश करने से न रुकेगी। भारत एक बीमार बच्चा नहीं है, जिसे किसी प्रकार की बाहरी सहायता की आवश्यकता हो।

अमेरिकन प्रजातन्त्र से प्रार्थना

संसार के तमाम राष्ट्रों से, विशेषकर अमेरिकन प्रजातन्त्र से, भी मैं अपील करना चाहता हूँ। इस अहिंसात्मक आन्दोलन को देख कर उन्हें बड़ी उत्सुकता हुई है। अमेरिका ने ख़ासकर इस आन्दोलन से सहानुभूति दिखाई है। अब कॉङ्ग्रेस एक बड़ा उत्तरदायित्वपूर्ण काम करने जा रही है। मुझे आशा है, कि वे सब राष्ट्र हमारे साथ सहानुभूति बनाए रक्खेंगे।

पुलिस और सिविल ऑफ़िसर

मेरी अन्तिम अपील पुलिस तथा सिविल सर्विस विभाग वालों से है। सिविल सर्विस सरकार की मैशीनरी का एक आवश्यक अङ्ग है, जो पुलिस-विभाग द्वारा चलाया जाता है। अगर वे यह समझते हैं, कि भारत शीघ्र ही अपने घर का मालिक होना चाहता है और अगर वे ईमानदारी से उसकी सेवा करना चाहते हैं, तो उन्हें ऐसा बर्ताव करना चाहिए, जिससे जनता को यह अनुभव हो, कि वे उसके प्रतिष्ठित नौकर हैं, न कि मालिक।

सत्याग्रही क़ैदी

अब मैं उन सत्याग्रही बन्दियों के विषय में भी कुछ कहना चाहता हूँ, जो अभी तक जेलों में बन्द हैं और जो शीघ्र ही छोड़े जायँगे। व्यक्तिगत रूप से मेरा यह विश्वास है कि हिंसा करने वालों को भी क़ैद में न डालना चाहिए। जो हिंसा द्वारा देश को स्वाधीन बनाना चाहते हैं, वे भी उतने ही आत्म-त्यागी तथा देश-भक्त हैं, जितना कि मैं। अगर मैं अपने को तथा अन्य सत्याग्रहियों को क़ैद में रख कर भी उन्हें जेल से छुड़ा सकता, तो मैं अवश्य ऐसा करता। मेरा विश्वास है कि वे इस बात का अनुभव अवश्य करेंगे कि मैं न्याय-रूप में उनके छुटकारे की प्रार्थना नहीं कर सकता। पर इसका यह मतलब नहीं है कि मेरा या वर्किङ्ग कमेटी के मेम्बरों का ध्यान उनकी तरफ़ नहीं है। कॉङ्ग्रेस ने अब सरकार से सहयोग की नीति को अख़्तियार किया है। अगर कॉङ्ग्रेस वालों ने समझौते की शर्तों का पालन किया, तो कॉङ्ग्रेस की इज़्ज़त बढ़ जायगी और सरकार को विश्वास हो जायगा कि उसके अन्दर देश में शान्ति

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

श्री० ब्रेलसफ़र्ड के निष्पक्ष विचार

"गाँधी की आँधी ने लोगों के हृदयों में राष्ट्रीयता का मन्त्र फूँक दिया है"

"भारत जैसे ग़रीब देश के लिए नमक का मूल्य बहुत अधिक है"

"अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारतवासी अब अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार हो गए हैं"

"चरखा भारत के ज्वलन्त देश-प्रेम का एक चिन्ह है !"

"इङ्गलैण्ड की मज़दूर-सरकार के एजेण्टों की इन काली करतूतों से उस पर से भारत का विश्वास बिल्कुल उठ गया है"

"यदि महात्मा गाँधी को यह पता लग जाता कि मज़दूर-सरकार अपने अस्तित्व की भी बाज़ी लगा कर भारतीय स्वतन्त्रता का पक्ष लेगी, तो वर्तमान परिस्थिति कभी उपस्थित न होती"

[श्री० ब्रेलसफ़र्ड इङ्गलैण्ड के उन इने-गिने व्यक्तियों में से हैं, जिन्होंने भारत की परिस्थिति का गहरा अध्ययन किया है और जो इङ्गलैण्ड में भारत के उत्थान का प्रयत्न कर रहे हैं। श्री० ब्रेलसफ़र्ड हाल ही में भारतीय परिस्थिति का अध्ययन करके इङ्गलैण्ड लौटे हैं और वहाँ पत्रों में लेख लिख कर तथा अपने भाषणों द्वारा वहाँ की जनता के सम्मुख भारतीय स्थिति के सच्चे चित्र रख रहे हैं। इङ्गलैण्ड की जनता की जानकारी के लिए यहाँ के आन्दोलन के सम्बन्ध में उन्होंने हाल ही में जो लेख 'न्यू लीडर' में प्रकाशित किया है, उसे हम 'भविष्य' के पाठकों के मनोरञ्जन के लिए देते हैं। —सं० 'भविष्य']

आन्दोलन के प्रारम्भ ही से महात्मा गाँधी तथा कॉङ्ग्रेस अपने नए-नए उपायों से गवर्नमेण्ट को छकाते रहे हैं। उनकी एक निश्चित नीति थी और उसे कार्य-रूप में परिणत करने के लिए उन्होंने ऐसे राष्ट्रीय नारों तथा कार्यक्रम का आयोजन किया था, जिनसे लोगों में उत्तेजना उत्पन्न होती थी और वे उत्साहपूर्वक उसमें भाग लेते थे। दूसरी ओर गवर्नमेण्ट केवल अपनी रक्षा ही के उपाय सोचा करती थी। उसमें इतनी दूरदर्शिता नहीं थी, जिससे वह कार्य-क्षेत्र में आकर प्रजा की विश्वासपात्र बन सकती। परिणाम-स्वरूप किसी को इस बात का पता न चल सका और न भारत में अभी तक किसी को इस बात का पता है कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट उसकी कितनी माँगों की पूर्ति करेगी। लॉर्ड इर्विन जैसे व्यक्ति की ओट में बहुत से सन्दिग्ध वचन दिए गए और उनसे कुछ आशा भी बँध चली थी, परन्तु वह केवल क्षणिक थी, और उसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय गवर्नमेण्ट से सहानुभूति दिखाने के लिए वहाँ की कोई भी पार्टी शेष न रह गई। यहाँ तक कि लिबरल और अन्य मॉडरेट भी, जो प्रायः कॉङ्ग्रेस के कट्टर विरोधी रहे हैं, भारत तथा इङ्गलैण्ड की ब्रिटिश गवर्नमेण्ट को कॉङ्ग्रेस ही की तरह घृणा की दृष्टि से देखने लगे। मुसलमानों का रुख भी कुछ गवर्नमेण्ट के पक्ष में न था। उनके इस रुख के सम्बन्ध में मुझसे उनके एक नेता तथा एक उच्च पदाधिकारी ने स्वयं कहा कि—"मुसलमान न तो कॉङ्ग्रेस के विपक्ष हैं और न वे गवर्नमेण्ट के पक्ष ही में हैं। उसके पक्ष में वे हो भी कैसे सकते हैं? गवर्नमेण्ट की कोई निश्चित नीति नहीं है। कोई व्यक्ति ऐसी परिस्थिति में उसकी सहायता नहीं कर सकता।"

भारत के सच्चे हितचिन्तक और इस लेख के यशस्वी लेखक श्री० एच० एन० ब्रेलसफ़र्ड

गवर्नमेण्ट का मौन

लॉर्ड इर्विन और महात्मा गाँधी के गत वर्ष के अगस्त और दिसम्बर के वाद-विवाद की असफलता के सम्बन्ध में कोई उनकी और उनके मित्रों की कितनी ही विवेचना करे, परन्तु उन दोनों में से किसी भी अवसर पर गवर्नमेण्ट ने कोई ऐसा निश्चित कार्यक्रम नहीं रक्खा, जिससे इस बात का पता चल सकता कि उसकी इच्छा, केन्द्रीय शासन में उत्तरदायित्व का अधिकार देने की है। महात्मा गाँधी को इस बात का बिल्कुल विश्वास नहीं था कि इङ्गलैण्ड की मजदूर-सरकार भारत को केन्द्रीय शासन में उत्तरदायित्व का अधिकार देने की हिम्मत करेगी और न कभी उसने महात्मा गाँधी के इस सन्देह को दूर ही करने का प्रयत्न किया था। मुझे उनके गाढ़े मित्रों से पता लगा है कि यदि महात्मा गाँधी को यह पता लग जाता कि मजदूर-सरकार अपने अस्तित्व की भी बाजी लगा कर भारतीय स्वतन्त्रता का पक्ष लेगी, तो वर्तमान परिस्थिति कभी उपस्थित न होती। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के इस मौन का परिणाम यह हुआ कि वह देश भर की दृष्टि में केवल अशान्ति सूचक ऑर्डिनेन्सों ही की जन्मदात्री रह गई। परन्तु उन ऑर्डिनेन्सों का उपयोग करने वाली पुलिस मौन न थी। वह बम्बई प्रान्त में गाँव-गाँव में घूम कर निस्सहाय तथा ग़रीब किसानों पर लाठी-प्रहार कर, कॉङ्ग्रेस-आन्दोलन का दमन करने का सतत प्रयत्न करती रही। एक कॉन्स्टेबिल उन ग़रीब किसानों से कहता था—"क्या तुम स्वराज्य चाहते हो? यदि चाहते हो तो लो।" और इन शब्दों के साथ उसकी लाठी बेचारे किसान के सिर या उसके कन्धों से रक्त की धारा बहा देती थी। इङ्गलैण्ड की मजदूर-सरकार के एजेण्टों की इन काली करतूतों से, उस पर से भारत का विश्वास बिल्कुल उठ गया है।

आप यह भले ही कहें कि अत्याचार तो ज़रूर पुलिस के गँवार कॉन्स्टेबल करते थे; परन्तु उन्हें राष्ट्रीय झण्डे को फाड़ने, झण्डे के सम्मान के लिए एकत्रित जनता पर लाठी-प्रहार करने और उसे झण्डे को सँभालने वाली महिलाओं को गिरफ़्तार करने की आज्ञा देने वाला तो बम्बई गवर्नमेण्ट का सब से उच्च पदाधिकारी ही था। इन्हीं कारणों से हर एक भारतीय को गांधी के आन्दोलन में भारी श्रद्धा हो गई थी।

राष्ट्रीयता का मन्त्र

गाँधी की आँधी ने लोगों के हृदयों में राष्ट्रीयता का मन्त्र फूँक दिया है। बम्बई में एक साधारण सी सभा में भी बीस हज़ार मनुष्यों का एकत्रित होना कोई बड़ी बात नहीं है। ये सभाएँ खुले मैदान में हुआ करती हैं और उनका प्रारम्भ राष्ट्रीय गान—'वन्देमातरम्' से होता है, जो प्रायः स्त्रियाँ गाया करती हैं। जनता में से अधिकांश स्त्री-पुरुष भाषण सुनते समय भी तकली चलाते रहते हैं। ऐसी ही शान्त सभा को पुलिस अपने लाठी-प्रहार से भङ्ग करती है, और इङ्गलैण्ड की गवर्नमेण्ट यह सब क़ानून और शान्ति की रक्षा के नाम पर कराती है।

तकली और स्वराज्य

कॉङ्ग्रेस के कार्य-क्रम में स्वदेशी का आन्दोलन मुख्य है। इन सभाओं में मैंने लोगों को तकली चलाते देखा है और मेरे हृदय में तकली के प्रति अश्रद्धा भी उत्पन्न हुई है, परन्तु जब मैंने गाँवों में घूम-घूम कर सच्चे निर्धन भारत के दर्शन किए, तब मुझे इस बात का ज्ञान हुआ कि स्वदेशी ही उसकी एकमात्र औषधि है और तकली और चर्खा स्वदेशी के प्रधान अस्त्र हैं। गाँवों के किसान साल में पाँच माह खेती में व्यतीत करते हैं, परन्तु शेष सात माह उनके निरर्थक जाते हैं। यदि उनके बैल मज़बूत हुए, तो वे खाली समय में कुछ दिनों अपनी गाड़ियों पर सामान ढोकर भी कुछ आमदनी कर लेते हैं। अर्थशास्त्रज्ञ भारत के किसानों की ग़रीबी दूर करने के लिए उनकी झोपड़ियों में छोटे छोटे उद्योग-धन्धों का प्रचार करने की सलाह देते हैं। परन्तु इन ग़रीबों के पास इतना रुपया नहीं कि वे किसी प्रकार का धन्धा कर सकें। तकली एक ऐसी चीज है, जिसमें उनका एक पैसे से अधिक ख़र्च नहीं होता। चर्ख़े में भी दो-तीन शिलिङ्ग से अधिक ख़र्च नहीं पड़ता। और यदि किसान चाहे, तो उसे अपने घर पर ही तैयार कर सकता है। यद्यपि उन्हें दिन भर के परिश्रम से, चर्ख़े या तकली से एक या दो आने से अधिक की आमदनी नहीं हो सकती, परन्तु उनकी आमदनी इतनी कम होती है कि उन्हें उतनी ही सहायता बहुत अधिक है। भारतीय नेता दो कारणों से चर्ख़े को अधिक महत्व देते हैं—एक तो वह ग़रीब किसानों की उदरपूर्ति में बहुत-कुछ सहायता देगा और दूसरे वह लङ्काशायर के कपड़े का भारत में आना कम कर देगा। यही कारण है कि भारत के मध्य श्रेणी तक के लोग अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करने के पहले एक घण्टा चर्ख़ा चलाते हैं। मैंने तो लोगों के पास रेलगाड़ी तक में चर्ख़ देखे हैं। यह भारत के ज्वलन्त देश प्रेम का एक चिन्ह है।

नमक-क़ानून की अवज्ञा

गवर्नमेण्ट चर्ख़े और तकली की ओर यदि क्रुद्ध दृष्टि से देखती है, तो नमक-क़ानून की अवज्ञा करने वालों को गिद्ध-दृष्टि से। इसी अवज्ञा के कारण लोग जेल जाते हैं और पुलिस की लाठियों के प्रहार सहते हैं। केवल समुद्र के पानी को उबाल कर ब्रिटिश साम्राज्य को उलट देने के स्वप्न देखना मख़ौल नहीं तो क्या है? कौन जानता था कि एक ज़रा सी घटना देश भर में क्रान्ति की लहर उत्पन्न कर देगी। और जब महात्मा गाँधी स्वयं इस क़ानून की अवज्ञा के कारण जेल भेज दिए गए, तब तो आन्दोलन की आँधी कोने-कोने में फैल गई। सच बात तो यह है कि नमक-टैक्स से भारतीय बहुत असन्तुष्ट हैं। भारत जैसे ग़रीब देश के लिए नमक का मूल्य बहुत अधिक है। यद्यपि प्रति भारतीय पीछे नमक के ख़र्च की औसत प्रति वर्ष केवल ३½ पेन्स या लगभग तीन आने के पड़ती है, परन्तु एक मज़दूर को अपने कुटुम्ब की नमक की पूर्ति के लिए चार दिन मज़दूरी करनी पड़ती है। ग़रीब मज़दूर के सिर पर इतना ही बोझा बहुत भारी है।

केवल मज़दूरों ही के लिए नहीं, व्यापारियों के लिए भी इस टैक्स से बहुत धक्का लगा है। यदि गवर्नमेण्ट समुद्र के किनारे रहने वाले व्यापारियों के नमक बनाने का अधिकार न छीनती, तो उनके व्यापार को क्षति न पहुँचती। परन्तु यहाँ भी गवर्नमेण्ट का मन्तव्य केवल इङ्गलैण्ड के व्यापार की रक्षा करना दिखलाई देता है। भारत में जितने नमक की खपत होती है, वहाँ उसका केवल एक तिहाई उत्पन्न किया जाता है, बाक़ी दो तिहाई नमक की पूर्ति लिवरपूल के नमक से की जाती है। मेरी समझ में नहीं आता कि जब प्रकृति देवी भारतवर्ष ही में उसकी नमक की आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है, तब लिवरपूल से नमक मँगाने की क्या आवश्यकता है? भारतीयों में यह विचार बहुत पुराने समय से प्रचलित है कि वे जिसका नमक खाते हैं, उसके साथ कभी विश्वासघात नहीं करते। क्या गवर्नमेण्ट उन्हें नमकहलाल बनाने ही के लिए अपना नमक खिलाती है?

विदेशी माल का बहिष्कार

परन्तु महात्मा गाँधी के आन्दोलन का प्रभाव उस समय सब से अधिक मालूम पड़ा, जब विदेशी माल विशेषतः ब्रिटिश माल का बहिष्कार प्रारम्भ हुआ। और यद्यपि हाल ही के एक केस में यह तय हो चुका था कि शान्तिपूर्वक पिकेटिङ्ग ग़ैर-क़ानूनी नहीं है, तो भी हमारी जेलों में ऐसे ही स्त्री-पुरुषों की संख्या अधिक है, जो विदेशी माल की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करते समय गिरफ़्तार किए गए हैं। वास्तव में भारत में इस समय क़ानून का कोई मूल्य नहीं रह गया। केवल जनता ही ने नहीं, किन्तु गवर्नमेण्ट ने स्वयं उसकी धज्जियाँ उड़ाना प्रारम्भ कर दिया है। बम्बई में अक्टूबर के महीने में प्रति दिन लगभग एक हज़ार स्वयंसेवक उन व्यापारियों की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करते थे, जिन्होंने विदेशी माल के स्टॉक पर कॉङ्ग्रेस की मुहर नहीं लगवाई थी।

मैंने कभी किसी भारतीय को दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने वाले स्वयंसेवकों तथा स्वयंसेविकाओं की अवज्ञा करते नहीं देखा। उनकी परीक्षा के लिए मैंने स्वयं अपने एक मित्र को एक दुकान पर भेजा। एक युवती उस दुकान पर पिकेटिङ्ग कर रही थी। उस व्यक्ति को दुकान पर आते देख कर युवती चकित रह गई; परन्तु शीघ्र ही उसने दोनों हाथ जोड़ कर ऐसे विनम्र शब्दों में उससे प्रार्थना की, कि उन्हें सुन कर पत्थर का हृदय भी पिघल उठता। यदि वह अधिक हठ करता, तो वह युवती लेट जाती और वह उसके ऊपर से निकले बिना दुकान पर नहीं पहुँच सकता था। बहिष्कार के पक्ष में लोगों के विचार इतने दृढ़ थे कि पिकेटिङ्ग की विशेष आवश्यकता ही न पड़ती थी। और पिकेटिङ्ग प्रायः उन्हीं व्यापारियों की दुकानों पर होती थी, जो नम्बर बदल कर अपने विदेशी कपड़े का बचा हुआ स्टॉक बेचने का प्रयत्न कर रहे थे। बम्बई के कपड़े के बाज़ार में कॉङ्ग्रेस-पुलिस के सुशिक्षित वालण्टियर बाहर जाने वाले कपड़े की ख़ूब जाँच करते थे और उसकी गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगा देते थे। कुछ शहरों में तो पिकेटिङ्ग दिन-रात हुआ करती थी। बात यह थी कि यद्यपि नए विदेशी माल का आना बिल्कुल बन्द हो गया था, परन्तु वे अपना पुराना स्टॉक, जो केवल बम्बई में लगभग ३५ लाख पौण्ड का था, बेचने के लिए बहुत उत्सुक रहते थे। मेरी उपस्थिति में वहाँ के व्यापारियों ने कॉङ्ग्रेस का, इस सम्बन्ध में एक बार विरोध भी किया था, परन्तु उन्हें मुँह की खानी पड़ी।

अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारतवासी अब अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए तैयार हो गए हैं। बहिष्कार और लम्बी-लम्बी हड़तालों से उनको जो क्षति हुई है, उसकी उन्हें कुछ भी परवाह नहीं है। मेरी ही उपस्थिति में बम्बई में हफ़्ते में प्रायः दो हड़तालें होती थीं और उनमें ८० प्रति शत दुकानें बन्द रहती थीं। १६ मिलें केवल इसलिए सदैव के लिए बन्द कर दी गई थीं कि उनके मालिक कपड़ा बनाने के लिए विदेशी सूत का उपयोग करते थे। उनके बन्द होने से ३२ हज़ार मज़दूर बेकार हो गए हैं।

शराब का बहिष्कार और सरकारी बजट

महात्मा गाँधी का शराब का बहिष्कार कुछ कम प्रभावशाली नहीं रहा। भारत के दोनों बड़े—हिन्दू और मुसलमान—धर्म शराब पीने का निषेध करते हैं। बम्बई की प्रान्तीय गवर्नमेण्ट को शराब से लगभग २५ प्रति शत की आमदनी होती है। देशसेविकाओं की पिकेटिङ्ग तथा वहाँ की जातीय संस्थाओं ने शराब का बहिष्कार पूर्णरूप से सफल कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि गवर्नमेण्ट को शराब के लेसन्सों की बिक्री में बहुत अधिक क्षति उठानी पड़ी। अन्य प्रान्तों को भी बहुत क्षति उठानी पड़ी है। इस क्षति का भारतीय बजट पर अत्यन्त घातक प्रभाव पड़ा है।

*   *   *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व, सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाद-दाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

१२ मार्च, सन् १९३१

अस्थायी सन्धि !

अन्त में पूरे एक वर्ष के तुमुल संग्राम के बाद ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की आँखों का पर्दा खुला। भारत के राष्ट्रीयता-प्रवाह को रोकने के लिए उसने अपनी समस्त शक्ति लगा दी थी। ऑर्डिनेन्स पर ऑर्डिनेन्स निकाले गए। भारत-माता के हज़ारों लाल उसकी गोदी से छीन कर जेलों में बन्द कर दिए गए, सैकड़ों बन्दूक़ों की गोलियों द्वारा भवसागर से पार उतार दिए गए, हज़ारों के सिर लाठियों से फोड़े गए, महिलाओं की बेइज़्ज़ती की गई; परन्तु जब इन नृशंस अत्याचारों से वह राष्ट्रीयता के प्रवाह को न रोक सकी तब नतमस्तक हो गई। राष्ट्रीय व्यापार प्रारम्भ हुआ। दोनों दलों ने अपनी-अपनी शर्तें पेश कीं और अन्त में सौदा पट गया—ब्रिटिश गवर्नमेण्ट तथा राष्ट्रीय महासभा के मन्त्रि-मण्डल में समझौता हो गया।

दोनों ओर से ऐलान निकाल दिया गया है। इस ऐलान के अनुसार सरकार समस्त अहिंसात्मक राजबन्दियों को जेल से रिहा कर देगी। आन्दोलन को रोकने के लिए जो ऑर्डिनेन्स निकाले गए थे वे उठा लिए गए। अतिरिक्त पुलिस हटा ली जायगी और वह अतिरिक्त पुलिस-कर, जो अभी तक वसूल नहीं हुआ, माफ़ कर दिया जायगा। आन्दोलन के सम्बन्ध में जो अचल सम्पत्ति ज़ब्त हुई थी वह, यदि नीलाम न हुई होगी तो लौटा दी जायगी। समुद्र के किनारे और उन गाँवों में, जहाँ नमक बनाया जा सकता है, लोग स्वतन्त्रतापूर्वक नमक बना सकेंगे। बेच भी सकेंगे, परन्तु उसे उन गाँवों के बाहर न भेज सकेंगे। कॉङ्ग्रेस संस्थाओं पर से ग़ैर-क़ानूनी होने का प्रतिबन्ध उठा लिया जायगा। सत्याग्रहियों के विचाराधीन मामले उठा लिए जायँगे। जो सरकारी कर्मचारी आन्दोलन के कारण पृथक कर दिए गए थे या जिन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया था उन्हें उनके पद, यदि वे ख़ाली होंगे, तो वापस दे दिए जायँगे। आन्दोलन के सम्बन्ध में जिन वकीलों से वकालत का अधिकार छीन लिया गया था, वे फिर वकालत कर सकेंगे। सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित कर दिया जायगा।

ब्रिटिश माल के बहिष्कार को राजनैतिक न बनाया जायगा; पर विदेशी कपड़े और मादक-द्रव्यों पर शान्तिपूर्ण धरना दिया जा सकेगा। इस अस्थायी सन्धि का प्रधान उद्देश्य यह है कि कॉङ्ग्रेस भारत में होने वाली दूसरी गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में भाग लेकर भारत के लिए नया शासन-विधान तैयार करने में सहायता देगी। भारत-सरकार की ओर से समझौते के सम्बन्ध में जो विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है, उसमें इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि कॉङ्ग्रेस ने फ़ेडरल-विधान को स्वीकार कर गोलमेज़ परिषद में भाग लेना स्वीकार कर लिया है। इस शासन-पद्धति के अनुसार भारत के हिन्दू-मुसलमान और देशी नरेश अपने-अपने प्रतिनिधियों के द्वारा देश का राज्य-सञ्चालन करेंगे। महात्मा गाँधी ने अपने दिल्ली के भाषणों में यह स्पष्ट कर दिया है कि कॉङ्ग्रेस गोलमेज़ परिषद में पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव उपस्थित करेगी। हाँ, भारत इङ्गलैण्ड के साथ मित्रता का सम्बन्ध अवश्य रक्खेगा; परन्तु वह किसी शासनाधिकार में उसका दासत्व कदापि स्वीकार न करेगा। यदि कॉङ्ग्रेस अपना उद्देश्य प्राप्त करने में सफल न हो सकी तो एक बार फिर देश के वायु-मण्डल पर युद्ध के काले बादल मँडराएँगे और वह भारतीय स्वतन्त्रता का अन्तिम युद्ध होगा।

हम सन्धि की सफलता के लिए उसके सूत्रधार महात्मा गाँधी तथा लॉर्ड इर्विन को बधाई देते हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या इस सन्धि से देश में शान्ति स्थापित हो जायगी? यद्यपि सत्याग्रह आन्दोलन से सम्बन्ध रखने वाले अहिंसात्मक क़ैदी रिहा कर दिए गए हैं, परन्तु अभी भी देश में शान्तिपूर्ण वातावरण का अभाव है। महासभा के मन्त्रि-मण्डल के कुछ सदस्यों ने देश को इस बात का आश्वासन अवश्य दिया है कि हिंसात्मक क़ैदी भी शीघ्र ही रिहा कर दिए जायँगे और शायद वे लोग, जिन्हें फाँसी की सज़ा दी गई है, फाँसी पर न लटकाए जायँगे। परन्तु हमें इसका पूर्ण विश्वास अभी तक न हुआ और इस बात का सन्देह बना हुआ है कि न जाने किस दिन सोकर उठने के बाद ही हमें वे भयावह समाचार सुनने पड़ें। इनके अतिरिक्त मेरठ और चिटगाँव के अभियुक्त अभी भी जेलों में सड़ रहे हैं। बङ्गाल क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट अभी भी क़ानून बना हुआ है। ऑर्डिनेन्सों का अन्त हो जाने पर भी बर्मा ऑर्डिनेन्स का बाल बाँका नहीं हुआ। पञ्जाब क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट अभी भी चैन की बंशी बजा रहा है। सत्याग्रही क़ैदी जेल से रिहा होने पर भी अपने इन भाइयों को, जिन्होंने देश को स्वतन्त्र करने के लिए दूसरे पथ का अवलम्बन किया था, जेल में देख कर शान्ति की ठण्डी साँस नहीं ले सकते। जिन माताओं ने इस युद्ध में अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया है और वास्तव में जिनकी आहुति के कारण युद्ध सजीव रहा है, उनके लाल अभी भी जेलों में सड़ रहे हैं। श्रीमती सरलादेवी चौधरानी ने ठीक ही कहा है, कि इन माताओं और बहिनों को चैन कहाँ, जिनके लाल अभी तक जेलों में सड़ रहे हैं। हिंसात्मक आन्दोलन से सम्बन्ध रखने के कारण वे समझौता होने पर भी स्वतन्त्र वायु का उपभोग न कर सकेंगे। यही नहीं, इस आन्दोलन से सम्बन्ध रखने के कारण केवल युवक ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ और बच्चे तक अपनी प्राण-रक्षा के लिए अपना घर-बार छोड़ कर जङ्गलों में भटक रहे हैं। सन्धि से ऐसे लोगों तक का कोई लाभ नहीं हुआ। प्रश्न यह है कि ऐसे व्यक्ति यदि अपनी प्राण-रक्षा के लिए कोई कार्य कर बैठें तो उस अशान्ति का उत्तरदायी कौन होगा? क्या ऐसे अशान्तिपूर्ण वायु-मण्डल में सन्धि सम्भव हो सकेगी? अभी सन्धि का प्रारम्भ ही है और हम उस समय तक अपने मनोभाव प्रकट करने में असमर्थ हैं, जब तक इसका रहस्य न खुल जाय।

सोहाग की साड़ी

[श्री० श्यामनारायण बैजल]

"मान जाओ प्रिये, दे दो।"

"नहीं, इसे न जलाओ!"

"क्यों?"

"नहीं प्यारे, इसे रहने दो।"

"नहीं, कदापि न रहने दूँगा। बहुत दिनों की धधकती हुई ज्वाला आज इसी से शान्त होगी।"

"शान्त होगी या और धधकेगी?"

"तुम पागल हो गई हो।"

"परन्तु अगर इसे नहीं जलाओगे, तो क्या होगा?"

"कलङ्क लगेगा, अपराध होगा।"

कमरे में साड़ियाँ फैली हुई थीं। बाहर आग जल रही थी। ज्योतिर्मयी अपने सन्दूक के पास बैठी हुई थी। वह साड़ियाँ निकाल-निकाल कर बाहर फेंक रही थी, और उसका पति विनोद उन्हें ले-लेकर जला रहा था। ज्वालाएँ उठ रही थीं, और ज्योति की बेशक़ीमती साड़ियाँ एक-एक कर जल रही थीं। वे ही सुन्दर चमकीली साड़ियाँ, जिन्हें समय-समय पर विनोद ने उसे लाकर दी थीं। एक दिन ज्योति उन्हें पहन कर प्रसन्न होती थी और विनोद देख कर। परन्तु आज दोनों उन्हें जलती हुई देख कर प्रसन्न हो रहे हैं और एक नवीन आनन्द का उपभोग कर रहे हैं।

हठात् एक गुलाबी रङ्ग की साड़ी को हाथ में लेते ही ज्योतिर्मयी रुक गई। यह साड़ी भी विदेशी थी। परन्तु न जाने क्यों उससे वह प्रेम करती थी। उसने उसे उठा कर एक किनारे रख दिया। विनोद ने देख लिया। दोनों की दृष्टि साड़ी पर पड़ी और मानो हृदय की लालसा की भाँति उसका रङ्ग परिवर्तित हो गया। लज्जा और प्रेम के कारण फैले हुए ज्योतिर्मयी के गुलाबी गालों के प्रतिबिम्ब ने उसे और भी सुन्दर बना दिया। वह उसके सोहाग की साड़ी थी। उसे देखते ही दोनों के दिलों में एक प्यारी स्मृति जाग उठी। परन्तु कुछ देर के बाद ही एक और आह्लाद और उल्लास ने वेदना का रूप धारण किया और दूसरी ओर देश-प्रेम का सहारा लेकर घृणा खड़ी होगई। विनोद ने कहा—लाओ, उसे भी जला दूँ। आज ग़ुलामी का एक चिह्न भी घर में न रहने दूँगा।

ज्योतिर्मयी ने गिड़गिड़ा कर कहा—मान जाओ प्यारे, मेरे कहने से इसे रहने दो।

विनोद ने कहा—नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मैं विदेशी का एक-एक तार जला कर दम लूँगा। आज की हमारी यही होली होगी।

स्त्रियोचित कोमलता ज्योतिर्मयी को अपना रही थी। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। मानो वे कह रहे थे, इसे मत जलाओ! इसकी लपट एक कोमल हृदय को झुलसा देगी। पर विनोद की आँखों में घृणा-मिश्रित क्रोध था। वह सोचता था, इन्हीं रङ्गीन तारों ने तो हमें घृणित, पददलित और पराधीन बना रक्खा है। ये हमारी दरिद्रता के कारण हैं, सोहाग के नाम पर इन्हें न जलाना मूर्खता है।

ज्योतिर्मयी ने साड़ी को हृदय से लगा लिया। विनोद ने छीनने की चेष्टा की, पर व्यर्थ। निदान बातों-बातों में क्रोध बढ़ गया। एक कहता, अवश्य जलाना चाहिए और दूसरा कहता था, इसका जलाना भयङ्कर होगा। एक को सोहाग के पुछ जाने का डर था और दूसरे को देशाग्नि के बुझ जाने का।

"हैरान मत करो! मेरी बात मान लो! नहीं तो........."

यह कहते-कहते उस देशानुरागी के नेत्रों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। परन्तु ज्योति ने साड़ी नहीं दी। वह साड़ी को सीने से लगा कर ज़मीन से चिपट गई।

विनोद कमरे से बाहर चला गया। ज्योतिर्मयी की विजय हुई, पर वह विजय हार से भी बुरी थी। वह अपने को अपराधिनी समझ रही थी। थोड़ी देर के बाद वह उठी और लालसा-भरी दृष्टि से कमरे के बाहर देखा, पर वहाँ कोई न था। ज्योतिर्मयी ने साड़ी को एक बार देखा, पर इस दृष्टि में कोई आकर्षण न था। उसे वहीं छोड़ कर वह बाहर चली गई।

२

भारतवर्ष शान्ति और अहिंसा की ध्वनि से गूँज रहा था। हमारे कुशाग्र बुद्धि नेता भारत-माता की मुक्ति के लिए देशवासियों में अहिंसा, त्याग और कष्ट-सहिष्णुता का मन्त्र फूँक रहे थे। विदेशी बहिष्कार और नमक-क़ानून भङ्ग करने का प्रयत्न हो रहा था। सारे देश में एक नवीन जाग्रति फैल गई थी। बरसों से यह आन्दोलन चल रहा था। विनोद भी इन्हीं में मिल गया। अब की उसके गाँव के पास ही ग़ैर-क़ानूनी नमक बनने वाला था।

उस दिन बाज़ार में जेल से लौटे हुए स्वयंसेवकों का एक बृहत् जुलूस निकला। नागरिकों ने इन पर फूलों की वर्षा की। "वन्देमातरम्", "विश्व विश्रुत तिरङ्गा प्यारा। झण्डा ऊँचा रहे हमारा, और "स्वतन्त्र भारत की जय" से आकाश गूँज उठा। पर जुलूस उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ नमक-क़ानून तोड़ने की तैयारी की गई थी। पानी से भरी कड़ाहियाँ चूल्हों पर रक्खी गईं। देशभक्तों ने महात्मा गाँधी की जय के साथ अग्नि प्रज्ज्वलित की, धीरे-धीरे पानी भाफ़ बन कर उड़ने लगा। इस भाफ़ के सङ्ग-सङ्ग 'वन्देमातरम्' की गगन-भेदी ध्वनि भी थी। नमक बन गया, क़ानून टूट गया। हज़ारों मनुष्यों ने पवित्र विभूति की तरह ग़ैर-क़ानूनी नमक लिया, जिसे न मिला, उसके चेहरे पर उदासी छा गई। ठीक इसी समय पुलिस का एक दल हाथों में लाठियाँ लिए आ पहुँचा। स्वयंसेवक विजयोल्लास से 'वन्देमातरम्' चिल्ला उठे। पुलिस ने अन्धाधुन्ध लाठियाँ चलाना आरम्भ कर दिया। चूल्हों और कड़ाइयों के साथ सैकड़ों स्वयंसेवकों के सिर फूट गए। विनोद ने जलती हुई कड़ाई उठा कर सिर पर रख ली। पुलिस उसकी कड़ाई छीनने के लिए आगे बढ़ी। उसने ललकार कर कहा—जब तक शरीर में अन्तिम साँस रहेगी, तब तक कड़ाई नहीं छोड़ूँगा।

पुलिस के एक सिपाही ने कहा—क्यों नाहक़ जान पर खेल रहे हो? कड़ाई रख दो।

विनोद ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया—जीते जी सम्भव नहीं है।

थानेदार ने ललकार कर सिपाही से कहा—देखते क्या हो, मार दो लाठी से, कड़ाही ज़मीन पर गिर जाय। कम्बख़्त चले हैं, नमक बना कर स्वतन्त्रता लेने!

सिपाही ने तुरन्त ही थानेदार की आज्ञा का पालन किया। परन्तु विनोद ने कड़ाई के दोनों कड़े बड़ी दृढ़ता से पकड़ रक्खे थे। खौलते हुए पानी की गरमी से उसकी उँगलियाँ तथा चाँद झुलसी जा रही थी। सिपाही की लाठी की चोट से कड़ाई हिल गई। विनोद खौलते हुए जल से नहा गया। उसके शरीर से भाफ़ उड़ने लगी। उसने उत्साहित होकर 'वन्देमातरम्' की ध्वनि की।

सिपाही ने दूसरा वार करने के लिए लाठी उठाई। इतने में दारोग़ा ने कहा—बस करो रामदीन, छोड़ दो उसे। वह अपनी करनी का फल पा गया।

विनोद का सारा शरीर खौलते हुए पानी की गरमी से झुलस गया था। उसके मुँह की वह स्वाभाविक लालिमा श्यामता में बदल गई थी। सारे शरीर में जलन होने लगी। उसने कड़ाही उतार कर अलग रख दी और चुपचाप वहीं बैठ गया।

पुलिस लाठियों द्वारा क़ानून की रक्षा करके चली गई। इस छीना-झपटी में जिन स्वयंसेवकों के सिर और हाथ-पैर टूट गए थे, उनकी ओर पुलिस वालों ने देखा भी नहीं, परन्तु जो चलने लायक़ थे, उन्हें पकड़ कर थाने में ले गई।

विनोद बेहोश हो गया था। स्वयंसेवकों ने उसे घर पहुँचा दिया।

३

पिछली रात का समय था। विनोद एक पलङ्ग पर पड़ा था। उसके शरीर की जलन कम हो गई थी। कई दिनों के बाद वह सुख की नींद सो रहा था। ज्योतिर्मयी पलङ्ग के पास बैठी थी। लगातार कई दिनों से आहार-निद्रा भूल कर वह पति की शुश्रूषा में लगी थी। उसकी आँखें आँसुओं से भर रही थीं। अन्तरात्मा कलप रही थी। वह सोच रही थी—आह! यह मेरी ही ग़लती का परिणाम है! यदि मैं इन्हें नाराज़ न करती तो ये क्यों इस तरह जाकर आग में कूद पड़ते? इस अभागिनी साड़ी के कारण ही तो इनकी यह दशा हुई है।

इतने में विनोद ने करवट बदली और पानी माँगा। ज्योतिर्मयी ने एक कटोरे से थोड़ा-सा जल उसे पिला दिया। इसके बाद पूछा—कैसी तबीयत है?

परन्तु विनोद ने मुँह फेर लिया। उस दिन की अप्रिय घटना की स्मृति ने उसे बेचैन कर दिया। ज्योतिर्मयी ने फिर प्रश्न किया—कैसी तबीयत है? बोलते क्यों नहीं?

उसके स्वर में व्यथा थी, अनुताप था; आवाज़ भर्राई हुई थी। वह व्याकुल होकर पति के चरणों पर गिर पड़ी और मूर्च्छित हो गई!

विनोद के मान का बाँध टूट गया। वह फ़ौरन उठ बैठा और ज्योतिर्मयी को उठा कर कलेजे से लगा लिया। इसके बाद जल-पात्र लेकर धीरे-धीरे उसके मुँह पर पानी के छींटे देने लगा। ज्योतिर्मयी होश में आई और एक अपराधिनी की भाँति पति को देखा। विनोद ने पूछा—प्रिये!

उत्तर मिला—प्यारे!

"मुझे क्षमा करो!"

"परन्तु अपराध तो मेरा है!"

इतने में बग़ल के कमरे में एकाएक प्रकाश फैल गया। दोनों ने चौंक कर उधर दृष्टि फेरी तो मालूम हुआ कि वही गुलाबी साड़ी जल रही है और उसके पास ही किरासिन तेल की डिबिया ताखे पर से लुढ़क कर गिरी हुई है। शायद बिल्ली ने उसे गिरा दिया था।

ज्योतिर्मयी ने कहा—लो, तुम जलाना चाहते थे, वह अपने आप ही जल गई।

विनोद ने कहा—परन्तु अब तो मैंने उसे जलाने

(शेष मैटर १४वें पृष्ठ के पहिले कॉलम के नीचे देखिए)
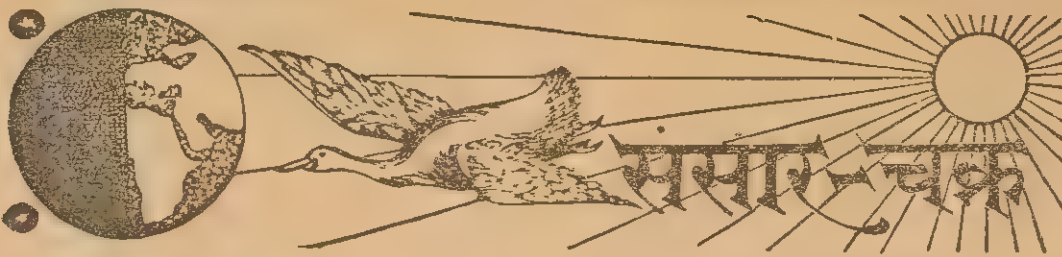
फ़्रान्स की राज्यक्रान्ति के कारण

[श्री० त्रिवेणीप्रसाद जी, बी० ए०]

राष्ट्र की राजनैतिक और सामाजिक अवस्था ही क्रान्ति का मूल कारण है। इसके सहायक अन्य कारण भी हो सकते हैं। जब किसी राष्ट्र का समाज पतन की पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है, तब उसका राजनैतिक क्षेत्र, समाज की दुर्दशा का रङ्गमञ्च बन जाता है। उस समय, उस देश के रहने वाले स्वयं अपनी अवस्था का अनुभव करने लगते हैं। किन्तु जब चारों ओर से अपने को घिरा हुआ पाते हैं, मुक्ति का कोई द्वार खुला नहीं देखते, उस समय उनकी दशा, ठीक पिञ्जरे में बन्द एक भूखे शेर की भाँति हो जाती है। जिस समय देश की जनता को अपनी अवस्था का सच्चा ज्ञान हो जाता है, जिस समय उसे मालूम हो जाता है कि केवल मुट्ठी भर आततायियों ने, किस प्रकार अपने स्वार्थ के लिए उसका बलिदान किया है; और जिस समय वह उन अन्यायियों के पञ्जे से छुटकारा पाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देने, अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ हो जाती है, उस समय विश्व में ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो उसके मार्ग में बाधा डाल सके। इसके सबूत में फ़्रान्स की राज्यक्रान्ति एक प्रमुख उदाहरण है।

१८वीं सदी का फ़्रान्स अत्याचार और अन्याय का एक नङ्गा चित्र है। एक ओर वहाँ का प्राचीन राजवंश, विलासिता और अकर्मण्यता के गर्त में गिरा हुआ है, अमीर-उमराव ग़रीबों का रक्त पीकर मोटे दिखाई पड़ते हैं, बिशप और लॉर्ड-बिशप धर्म के नाम पर दरिद्रों का बलिदान कर रहे हैं; और दूसरी ओर दरिद्र और दुखी प्रजा का कारुणिक चित्र दिखाई पड़ता है। किसानों में दरिद्रता की महामारी फैली हुई है। क्षुधा की प्रचण्ड ज्वाला, नाना प्रकार के करों के असहनीय बोझ और राजकर्मचारियों के मनमाने अत्याचार उनका नाश करने पर तुले हुए हैं। सम्भव है कि इनकी चपेट में आकर ये विनष्ट हो जायँ, पर नहीं, उनमें वह दैवी बल आ जाता है, जिसके सम्मुख कि फ़्रान्स ही नहीं, किन्तु सारे यूरोप को इस शक्ति के सम्मुख मस्तक झुकाना पड़ता है। अब ज़रा, वहाँ की उन दशाओं पर विचार करना चाहिए, जिनके कारण वहाँ क्रान्ति की ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई थी। अस्तु।

शासन-प्रणाली

१८वीं सदी का फ़्रान्स एक विचित्र देश था। ऊपर से देखने में तो उसका राजनैतिक स्वरूप बहुत सीधा-सादा जान पड़ता था; परन्तु वास्तव में वह स्वरूप अस्पष्ट और उलझनों से भरा हुआ था। फ़्रान्स अनेक प्रान्तों में बटा हुआ था। प्रत्येक प्रान्त शासन-विधान की दृष्टि से एक पृथक देश के समान था। समानता केवल इतनी ही बात की थी कि वे सभी एक ही सम्राट के द्वारा शासित होते थे। इस विभिन्नता का कारण यह था कि प्राचीन काल में फ़्रान्स किसी एक राजा के अधिकार में नहीं था। भिन्न-भिन्न प्रान्तों पर भिन्न-भिन्न जातियों का साम्राज्य था। यदि फ़्रान्स के एक भाग पर ग्रीक लोगों का अधिकार था, तो दूसरे भागों पर रोमन लोगों ने या किन्हीं अन्य जातियों ने अधिकार जमा लिया था। फलतः इन विभिन्न शासकों ने अपने-अपने प्रान्तों में अपना-अपना अलग शासन-विधान प्रचलित कर दिया था। फ़्रान्स के इन राजाओं ने समय-समय पर उन प्रदेशों को अपने अधिकार में किया था। इस कारण वे सारे देश को एक सूत्र में नहीं बाँध सके थे। तो भी ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, फ़्रान्स एक राष्ट्र में परिणत होता गया। परन्तु सन् १७८९ ई० की क्रान्ति के बाद ही फ़्रान्स एक सच्चे राष्ट्र में परिणत हो सका था। क्रान्ति के पहले तक इस प्रकार की विभिन्नता वहाँ वर्तमान थी। प्रान्तीयता का भाव लोगों में बहुत अधिक था। क़ानूनों में भी, एक प्रान्त दूसरे प्रान्त के सामने विदेश ही के समान था। यह असमानता यहाँ तक थी कि एक प्रान्त से, दूसरे प्रान्त में भेजी जाने वाली चीज़ों पर प्रायः प्रत्येक दशा में चुङ्गी ली जाती थी। यदि फ़्रान्स के एक ओर से दूसरी ओर कोई चीज़ (विशेषकर शराब आदि) भेजी जाय, तो उस चीज़ को जितने प्रान्तों में से होकर जाना पड़ता था, उतनी ही बार चुङ्गी चुकानी पड़ती थी। इन बातों से पता चलता है कि एक शासन और सम्राट के होते हुए भी फ़्रान्स कई देशों का समूह मात्र बन रहा था।
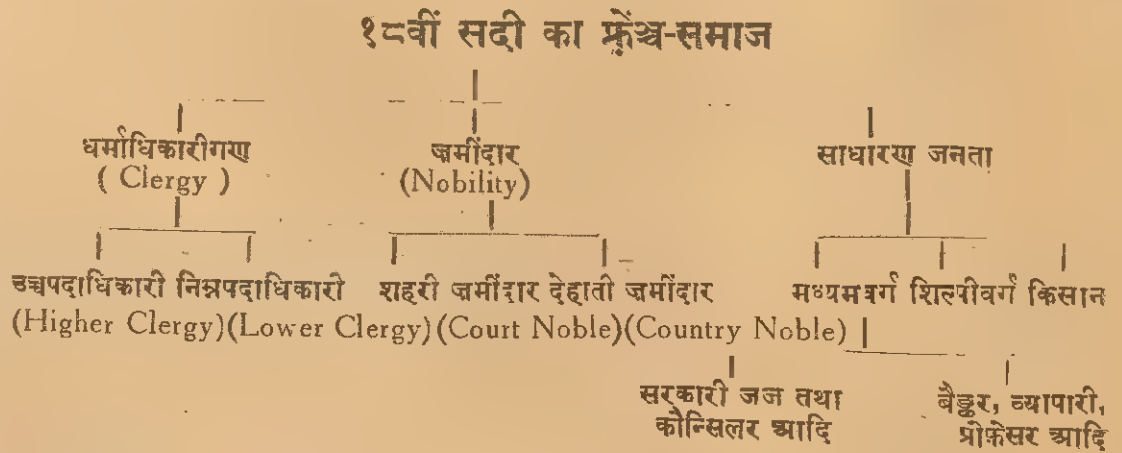
सामाजिक अवस्था

फ़्रान्स का तत्कालीन समाज मुख्यतया तीन भागों में बँटा हुआ था—धर्माध्यक्षों का समाज (Clergy), ज़मींदारों का समाज (Nobility) और साधारण जनता का समाज (Peasantry)। ये तीन समाज भी अनेक भागों में विभाजित थे, जैसा कि नीचे के चार्ट से प्रकट होता है।

१८वीं सदी का फ़्रेञ्च-समाज

धर्माधिकारीगण

समाज में सब से पहला स्थान धर्माधिकारियों का था। इनकी संख्या १३० हज़ार से अधिक न थी। ये धर्माध्यक्षगण, मध्यकालीन धर्माध्यक्षों से बिल्कुल ही भिन्न थे। धर्म इनकी प्रतिष्ठा का साधन-मात्र रह गया था। कहने को तो ये धर्माध्यक्ष थे, किन्तु शान-शौक़त में ये अच्छे-अच्छे अमीरों को मात करते थे।

फ़्रान्स के नियमानुसार किसी ज़मींदार की मृत्यु के पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र ही अपने पिता की सम्पत्ति का अधिकारी हो सकता था। उसके शेष पुत्रों के लिए बिशप बनने या सेना में भर्ती होने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं था। इस कारण उच्च धर्माधिकारियों के समाज में इन ज़मींदार-ख़ानदान के व्यक्तियों के सिवा और किसी की गुञ्जायश नहीं थी। ये राजसी ठाठ-बाट से रहते थे। इनमें अधिकांश ऐसे थे, जो अपने कर्त्तव्य का पालन करना तो दूर रहा, धर्म किस चिड़िया का नाम है, यह भी नहीं जानते थे। इनके कर्त्तव्यों का सम्पूर्ण अथवा अधिकांश भार निम्नाधिकारियों पर पड़ता था। ये निम्नाधिकारीगण साधारण श्रेणी के मनुष्य होते थे, इस कारण साधारणतया जनता से

(१३वें पृष्ठ का शेषांश)

का विचार छोड़ दिया था। क्योंकि वह तुम्हारे सोहाग की साक्षी थी।

इतने में कुछ दूर पर 'अररररर' और बाजों की ध्वनि सुनाई पड़ी। ज्योतिर्मयी ने पूछा—क्या होली जल रही है?

विनोद ने कहा—हाँ।

* * *

इनकी सहानुभूति रहती थी। इस प्रकार 'चर्च' दो विषम भागों में बँटा हुआ था।

निम्नाधिकारी, जिन्हें छोटे-मोटे सभी काम करने पड़ते थे, आलसी और मुफ़्त में मज़े लूटने वाले, उच्चाधिकारियों को ईर्ष्या की दृष्टि से देखते थे; और उच्चाधिकारी, जिन्हें अपने उच्च वंश और सम्मान का गर्व था, इन साधारण श्रेणी के मनुष्यों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस कारण चर्च के साधारण श्रेणी के अधिकारी हर समय, इन उच्च पदाधिकारियों के विरुद्ध जनता को सहायता देने के लिए तैयार रहते थे।

ज़मींदारों का समाज

धर्माधिकारियों के बाद ज़मींदारों की श्रेणी आती है। १८वीं सदी में १५० हज़ार के लगभग ज़मींदार थे। ये साधारणतया दो भागों में विभक्त थे। एक तो वे थे, जो पेरिस में सम्राट के साथ बड़ी तड़क-भड़क से रहा करते थे। ये ज़मींदार अपनी ज़मींदारी का सारा भार अपने एजेण्टों पर छोड़ देते थे, और स्वयं राजदरबारी बन कर वर्सेलीज़ (राजमहल) में मौज करते थे। इनमें कुछ लोग सेनाओं में अफ़सर थे, कुछ राजकीय कौन्सिलों में कौन्सिलर थे, और कुछ यों ही राजा के अतिथि बन कर राजभवन की शोभा बढ़ाते थे।

दूसरे ज़मींदार वे थे, जो अधिक धनी न होने के कारण, शहरों में नहीं रह सकते थे, और इस कारण वे देहातों में देहाती किसानों के साथ, अपना जीवन सादगी के साथ व्यतीत करते थे। कुल में और मान-प्रतिष्ठा में ये शहरी ज़मींदारों से किसी प्रकार कम न थे। केवल धन न होने के कारण, ये शहरी ज़मींदारों की पंक्ति में बैठने के योग्य नहीं समझे जाते थे। शहरी ज़मींदार इन्हें देहाती कह कर इनका अनादर किया करते थे। देहाती ज़मींदार उनका दर्पपूर्ण व्यवहार देख कर उनसे असन्तुष्ट रहते थे। दूसरी बात यह थी कि प्रत्येक राज्यकार्य में शहरी ज़मींदारों ही का बोलबाला था। ऊँचे-ऊँचे पद उन्हें ही दिए जाते थे। इस कारण देहाती ज़मींदारों का इनकी ओर ईर्ष्यापूर्ण दृष्टि से देखना स्वाभाविक था।

इस प्रकार एक समाज और श्रेणी के होते हुए भी इन दोनों प्रकार के ज़मींदारों में वैमनस्य था।

साधारण जनता

सब से नीचे साधारण जनता थी। इसकी संख्या २४७ लाख के लगभग थी। इस जनता में भी एक श्रेणी के मनुष्य नहीं थे। साधारणतः यह तीन भागों में बटी हुई थी।

(१) मध्य श्रेणी के लोग

धन, शिक्षा और प्रभाव के विचार से सब से पहला नम्बर मध्य श्रेणी के लोगों का था। इस श्रेणी के लोग बहुत उन्नति पर थे। जितने विद्वान, लेखक, कवि, दार्शनिक और वैज्ञानिक थे, उनमें अधिकांश इसी श्रेणी के व्यक्ति थे। इनके अतिरिक्त महाजन और व्यापारी लोग भी इसी श्रेणी के व्यक्ति थे। उस ज़माने में उच्च वंश के व्यक्तियों (ज़मींदारों) के लिए स्वतन्त्र व्यवसाय करना हेय समझा जाता था। वे केवल चर्च और राजकीय विभागों ही में रह कर जीवन व्यतीत करना सम्मानजनक और अपनी वंश-प्रतिष्ठा के अनुकूल समझते थे। इस कारण स्वतन्त्र व्यवसायों के क्षेत्र में जनता की मध्य श्रेणी के लोगों के सिवा और कोई नहीं था। फलतः ये बहुत धनिक हो चले थे। समय-समय पर सरकार भी इनसे ऋण लिया करती थी। विद्या और बुद्धि में भी ज़मींदार-वंश के लोगों से ये कहीं बढ़े-चढ़े थे। उस समय के प्रतिष्ठित वंश के लोगों में विद्या-व्यसन बहुत कम था, मानसिक कार्य करना वे फ़ैशन के विरुद्ध समझते थे। इस प्रकार इस क्षेत्र में भी मध्य श्रेणी ही के लोग दिखाई पड़ते थे।

साधारणतया उस समय फ़्रान्स की मध्य श्रेणी की दशा यूरोप के अन्य देशों की मध्य श्रेणी से कहीं अच्छी थी। ये सभी प्रकार से उन्नति पर थे। केवल एक ही बात की त्रुटि इन्हें खलती थी। वह त्रुटि थी राज्यशासन में अपनी आवाज़ का न होना। ये अपनी श्रेष्ठता से भली प्रकार परिचित थे। यह बात उनसे छिपी न थी कि वंश और राजसम्मान में बढ़े हुए होने पर भी ज़मींदार-वंश के लोग अन्य सभी बातों में उनसे नीचे हैं। ये निकम्मे और स्वार्थी ज़मींदार, जिनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य ग़रीबों का घर लूट कर अपना घर भरना था, जो केवल भोग-विलास और फ़ैशन में डूबे रहना जानते थे, सरकार के लाड़ले बनें और साधारण श्रेणी के लोग विद्या और बुद्धि में उनसे बढ़ कर होते हुए भी, उनके सामने कुत्ते से भी नीच समझे जायँ, यह भला उन मध्यम श्रेणी के लोगों को कब सह्य हो सकता था?

परन्तु, इस मध्यम श्रेणी में भी कुछ लोग ऐसे थे, जिन्हें राज्य-सम्मान प्राप्त था। यह सम्मान अथवा पद उन्हें उनकी योग्यता के कारण नहीं मिला था, बल्कि उन्होंने सरकार को रुपए देकर उसे ख़रीदा था। उस समय राज्याधिकार बिकता भी था। उदाहरण-स्वरूप कोई भी व्यक्ति सरकार को रुपए देकर जज अथवा कौन्सिलर का पद ख़रीद सकता था—केवल अपने ही लिए नहीं, बल्कि अपनी पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए भी!! उनमें योग्यता हो या न हो, किन्तु उन्हें इजलासों में बैठ कर अपराधियों के मामले का फ़ैसला करने का अधिकार मिल जाता था। वे अपनी मर्ज़ी के अनुसार और अपना हिताहित देख कर मामलों का फ़ैसला करते थे। घूस लेना उनके लिए एक साधारण सी बात थी। ऐसा करना वे अपना अधिकार समझते थे। इस प्रकार के मध्य श्रेणी के लोग साधारणतया सरकार के पक्षपाती थे; क्योंकि वे जानते थे कि वर्तमान सरकार की नींव ही पर उनके इस अधिकार की भित्ति खड़ी है।

ये लोग बड़े अहङ्कारी भी थे। ये अपने साधारण भाइयों को, जिन्हें किसी प्रकार का सरकारी सम्मान प्राप्त नहीं था, घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस प्रकार एक श्रेणी के लोगों में यह असमानता आपस में बैर का बीज बो रही थी। यद्यपि इनकी संख्या ५० हज़ार से अधिक न थी, तो भी यह संख्या मध्य श्रेणी के साधारण लोगों की आँखों में खटकती रहती थी। अपने समाज में तो ये ईर्ष्या की दृष्टि से देखे ही जाते थे, ज़मींदारों के समाज में भी इनका अनादर ही होता था। ये ज़मींदारों के समाज में मिलना चाहते थे, किन्तु वे इन्हें घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस प्रकार घर और बाहर दोनों ही ओर से अनादृत होकर इन्होंने अपना एक अलग समाज क़ायम कर लिया था।

(२) शिल्पजीवी लोग

शिल्पजीवी समाज में सभी प्रकार के कारीगर—सुनार, लुहार, बढ़ई आदि सम्मिलित थे। इनमें प्रत्येक का अलग-अलग सङ्गठन था। प्रत्येक सङ्गठित दल को सरकारी परवाने मिलते थे। इस प्रकार इनका अपने क्षेत्र में एकाधिपत्य रहता था।

यदि कोई बाहरी (फ़्रान्स ही का) व्यक्ति किसी प्रकार की कारीगरी शुरू कर अपना जीवन-निर्वाह करना चाहता था, तो ये सङ्गठित-दल (guilds), जिन्हें सरकारी परवानों का बल था, उसे ऐसा करने से रोक सकते थे, और सरकार को बाध्य कर उसे सज़ा दिलवा सकते थे। ऐसा करने का उनका एकमात्र उद्देश्य यह था कि उनकी कारीगरी के क्षेत्र में कम लोग रहें, और इस प्रकार उन्हें लाभ अधिक हो। सरकार परवाने देने के बदले उनसे रुपए लेती थी, इस कारण वह किसी अन्य व्यक्ति को उनके अधिकार में हस्तक्षेप करने पर, दण्ड देने के लिए बाध्य थी। इसका फल यह हुआ कि एक पेशे वाला व्यक्ति दूसरे पेशे में हाथ नहीं डाल सकता था। इस कारण लोगों में असन्तोष फैला हुआ था। इसमें शिल्पजीवी समाज का दोष कम था, अधिक दोष सरकार ही का था। क्योंकि वह रुपए के लोभ ही से उन्हें परवाने देकर ऐसा करने के लिए उकसाती थी।

(३) कृषिजीवी लोग

सबसे नीचे किसानों का समाज आता है। राजनैतिक दृष्टि से फ़्रान्स किसानों की नींव पर खड़ा था। फ़्रान्स को किसानों से जितनी सहायता मिलती थी, उतनी और किसी समाज से नहीं। राज्यशासन का मूल आधार धन है। धन के बिना राज्य एक क्षण भी नहीं ठहर सकता। बड़े-बड़े देशों में भूमिकर ही राजा का मुख्य धन है। यद्यपि अन्य प्रकार के करों द्वारा भी राज्य को आमदनी होती है, तो भी उन करों का महत्व उतना नहीं होता। फ़्रान्स में भूमिकर का सम्पूर्ण बोझ किसानों ही पर था। ज़मींदारों का राजकीय भूमिकर से कोई सम्बन्ध नहीं था। इस दृष्टि से किसानों की उन्नति और अवनति का फ़्रान्स राज्य से घनिष्ट सम्बन्ध था।

१८ वीं सदी में किसानों की दशा अत्यन्त शोचनीय हो चली थी। टक्सों का बोझ जितना उन पर लदा था, उतना यूरोप के किसी अन्य देश के किसानों पर नहीं था।

इस प्रकार, फ़्रान्स में उस समय किसानों की दशा, सभी श्रेणी के लोगों से गई-गुज़री थी। किसानों की आर्थिक अवस्था को अच्छी प्रकार जानने के लिए वहाँ के प्रचलित टैक्सों की ओर ध्यान देना ज़रूरी है। अस्तु।

इन करों के सम्बन्ध में 'भविष्य' के आगामी अङ्क में लिखा जायगा।

(क्रमशः)

* * *

सुप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिज्ञों के मुक़द्दमे

६—पण्डित जवाहरलाल नेहरू—१६२१

पं० जवाहरलाल नेहरू की गिरफ़्तारी उस समय हुई थी, जब इङ्गलैण्ड के युवराज उत्तरी भारत में भ्रमण कर रहे थे। असहयोग आन्दोलन के समय युवराज का बहिष्कार आन्दोलन का मुख्य अङ्ग हो गया था और उसका विरोध करने के लिए गवर्नमेण्ट ने देश भर में आन्दोलन के चुने हुए नेताओं को छोटे-छोटे अभियोगों पर जेल भेजना प्रारम्भ कर दिया था। यद्यपि ये गिरफ़्तारियाँ क़ानून की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण नहीं थीं; परन्तु एक तो गिरफ़्तार व्यक्ति भारतीय राष्ट्र के स्तम्भ थे और दूसरे वे ऐसे समय में गिरफ़्तार किए गए थे, जब युवराज के स्वागत के सम्बन्ध में गवर्नमेण्ट और कॉङ्ग्रेस में तुमुल संग्राम छिड़ा हुआ था। कॉङ्ग्रेस ने देश भर में युवराज के बहिष्कार का निश्चय कर लिया था और गवर्नमेण्ट उसका विरोध करने पर तुली हुई थी। इसी घटना के कारण नेताओं की गिरफ़्तारियाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गई थीं और वे भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगी। हमारे इस मुक़द्दमे के नायक की गिरफ़्तारी भी युवराज के बहिष्कार ही के सम्बन्ध में हुई थी।

गिरफ़्तारी का कारण

सन् १९२१ की ६वीं दिसम्बर को लखनऊ के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने ज़ाब्ता फ़ौजदारी की १४४वीं धारा के अनुसार एक ऑर्डर निकाला था, जिसमें उन्होंने युवराज के लखनऊ पदार्पण करते समय उनके बहिष्कार के सम्बन्ध में सभा करने, भाषण देने, जुलूस निकालने और इश्तहार बाँटने का निषेध किया था। परन्तु पण्डित जवाहरलाल ने उसी दिन डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट की आज्ञा के विरुद्ध वालण्टियरों का एक जुलूस निकाला, इश्तहार बाँटे और जनता को युवराज के पदार्पण के दिन पूर्ण हड़ताल रखने का उपदेश दिया। दूसरे दिन वे इलाहाबाद में अपने पिता के साथ ही लखनऊ के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के वारण्ट के अनुसार, उनके उपयुक्त ऑर्डर की अवज्ञा के अभियोग में, गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तार कर वे शीघ्र ही मुक़द्दमे की कार्यवाही के लिए लखनऊ लाए गए। उन पर ग़ैर-क़ानूनी वालण्टियर-दल के सदस्य होने तथा इश्तहार बाँट कर उसकी कार्यवाही में सहायता देने का अभियोग लगाया गया। जमानत देने से इनकार करने पर वे लखनऊ के ज़िला जेल में भेज दिए गए।

मुक़द्दमे की कार्यवाही

उनके मुक़द्दमे की कार्यवाही १५वीं दिसम्बर को लखनऊ के सिटी मैजिस्ट्रेट मि० मुहम्मद शफ़ी के इजलास में प्रारम्भ हुई। कार्यवाही जेल के अहाते के अन्दर एक तम्बू में हुई थी, जो इसी उद्देश्य से वहाँ लगाया गया था। पं० जवाहरलाल जी अन्य ४८ अभियुक्तों के साथ मैजिस्ट्रेट के सम्मुख पेश किए गए। अन्य अभियुक्तों में से सभी कॉङ्ग्रेस के वालण्टियर थे और उन पर भी वही अभियोग लगाए गए थे जो पं० जवाहरलाल पर लगाए गए थे। अदालत में दर्शक मैजिस्ट्रेट की आज्ञा के विरुद्ध नहीं जाने

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

पाते थे, परन्तु तिस पर भी वकील, बैरिस्टर और शहर के गण्यमान्य स्त्री-पुरुष बड़ी तादाद में वहाँ उपस्थित थे। पण्डित जी की माता और पत्नी तथा कॉङ्ग्रेस और ख़िलाफ़त के बहुत से प्रमुख कार्यकर्ता भी वहाँ उपस्थित थे। अहाते के बाहर शहर और आसपास के गाँवों के लोगों की भी बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई थी, जो रह-रह कर महात्मा गाँधी और पं० जवाहरलाल की जय के नारों से आकाश गुँजा रही थी। पं० जवाहरलाल कार्यवाही के समय बहुत प्रसन्न थे।

सरकार की ओर से लखनऊ के मि० एच० एस० गुप्त बैरिस्टर खड़े हुए थे। अभियुक्त एक-एक कर क्रमशः इजलास पर पेश किए जाते थे। सब से पहले सरकारी गवाह पुलिस के सब-इन्स्पेक्टर थे। उन्होंने अपनी गवाही में कहा कि पं० जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य अभियुक्तों ने युवराज का बहिष्कार करने के इश्तिहार बाँटे थे। अभियुक्तों ने कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार कर दिया। उनकी ओर से न तो कोई वकील था, न गवाह थे, और न सरकारी गवाहों से जिरह करने की ही आवश्यकता पड़ी। पं० जवाहरलाल ने मैजिस्ट्रेट के एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि मैं भारत में ब्रिटिश गवर्नमेण्ट का अस्तित्व नहीं मानता। उन्होंने यह भी कहा कि यह अदालत सच्ची अदालत नहीं है; और मुक़द्दमे की कार्यवाही केवल मख़ौल है। उसके बाद उन पर क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (२) धारा के अनुसार अभियोग लगाया गया। उन्होंने अपनी ओर से अपनी रक्षा के लिए न तो कोई गवाह पेश किया और न कार्यवाही में कोई दिलचस्पी दिखलाई।

१६वीं दिसम्बर को कार्यवाही फिर प्रारम्भ हुई और उस दिन 'हमदम' के सम्पादक सैयद बशीर-अली 'हमदम' में प्रकाशित कुछ नेताओं के सन्देशों के सम्बन्ध में गवाही देने के लिए बुलाए गए। उन्होंने अपनी इच्छा के विरुद्ध गवाही देने के लिए मजबूर किए जाने का बहुत विरोध किया और गवाही में कहा कि मैं सम्पादक की हैसियत से यह नहीं बतला सकता कि युवराज के बहिष्कार के सम्बन्ध में मुझे नेताओं के सन्देश किस प्रकार प्राप्त हुए हैं। परन्तु जब पुलिस के ऑफ़िसरों ने उनके ऑफ़िस की तलाशी लेने की धमकी दी, तब उन्होंने तलाशी की आफ़त से बचने के लिए आवश्यक पत्र मैजिस्ट्रेट के हवाले कर दिए। अन्य अभियुक्तों की भी क़ानूनी कार्यवाही शीघ्र ही समाप्त हो गई। हर एक अभियुक्त ने पण्डित जवाहरलाल ही की तरह बयान दिए। कार्यवाही आदि से अन्त तक नीरस रही। उसमें न तो गवाहों की दिलचस्प जिरह ही हुई और न वकीलों की ओजस्विनी वक्तृताएँ।

फ़ैसला

कार्यवाही समाप्त होने पर फ़ैसले की बारी आई। और मैजिस्ट्रेट ने पं० जवाहरलाल तथा अन्य अभियुक्तों का फ़ैसला सुना दिया। पं० जवाहरलाल पर क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट की १७ (२) धारा का अभियोग सिद्ध न होने पर उसी एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार जनता में हड़ताल मनाने के सम्बन्ध में इश्तहार बाँटने तथा ग़ैर-क़ानूनी वालण्टियर-दल की कार्यवाहियों में सहायता देने का अभियोग लगाया गया। इसी अभियोग में मैजिस्ट्रेट ने उन्हें छः मास की सादी क़ैद और सौ रुपए जुर्माने की या एक माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी। अन्य अभियुक्तों को क़ैद की विभिन्न सज़ाएँ दी गईं।

* * *

साहित्य का सपूत

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अङ्क—१ ; दृश्य—२

साहित्यानन्द का मकान

(साहित्यानन्द और उनकी स्त्री सरला)

साहित्यानन्द—(हाथ में एक किताब लिए हुए) देखो, जब मैं तुम्हें प्रिये कहूँ, तब तुम मुझे नाथ कहो। जब प्राण-प्यारी कहूँ, तब प्राणेश्वर कहो। क्योंकि तुम मेरी स्त्री हो। समझी? अच्छा कहता हूँ—प्राण-प्यारी...अब तुम अपना वाला कहो। हाँ-हाँ बोलो, बोलो। उल्लू की तरह—उहुँक! समान, हाँ उल्लू के समान, ताकती क्या हो?

सरला—तुम्हें आज हो क्या गया है?

साहित्यानन्द—धत् तेरे की! फिर वही बात। कुत्ते की दुम—उहुँक। पूँछ, हाँ पूँछ, कितनी ही सीधी करो, परन्तु फिर टेढ़ी की टेढ़ी। सहस्र ढङ्ग से तो समझा चुका। पुस्तक से पति-पत्नी-सम्वाद का उदाहरण भी सुनाया। उस पर भी तुम नहीं समझती, तो अब क्या करूँ?

सरला—अपना मुँह पीटो और मैं क्या बताऊँ! आख़िर, तुम कहते क्या हो?

साहित्यानन्द—तुम्हारा सर!

सरला—जाओ न कहो। मेरा क्या?

(जाने लगती है)

साहित्यानन्द—अरे! कहाँ चली? ठहरो-ठहरो, फिर कहता हूँ।

सरला—(रुक कर) जो कुछ कहना हो आदमी की तरह कहो। नहीं अगर बेहूदा बकोगे तो........

साहित्यानन्द—मैं बेहूदा बक रहा हूँ?

सरला—और नहीं क्या कर रहे हो? बुड्ढे हो गए और दिन-दहाड़े प्राण-प्यारी कहने चले हैं। शर्म नहीं मालूम होती? छिः! ऐसी मस्ती पर झाड़ू की मार। लड़की की शादी हो गई होती, तो अब तक दो-चार बच्चों के नाना कहलाते। मगर अब भी अपने को छैला ही समझते हो। मिजाज से गुण्डई न गई। राम! राम! जाओ चुल्लू भर पानी में डूब मरो। खड़े-खड़े घूरते क्या हो?

साहित्यानन्द—चुल्लू भर पानी में तो तू डूब मर, उहुँक, पानी नहीं जल, हाँ अञ्जुल भर जल में तू डूब मर, जो साहित्यिक वार्तालाप समझने की बुद्धि नहीं रखती। अरी मूर्खा, जो उदाहरण मैंने पुस्तक से सुनाया था, वह ऐसे ही पति-पत्नी के सम्वाद का है, जिनकी पुत्री युवावस्था में पदार्पण कर चुकी है और इस हेतु वे उसके विवाह की चिन्ता में निमग्न होकर परस्पर परामर्श करते हैं।

सरला—हाथ जोड़ती हूँ, घर में श्लोक न पढ़ा करो। अगर संस्कृत भोंकने का बड़ा शौक़ हो, तो किसी पण्डित को बुलवा लो, जो तुम्हें मुँह-तोड़ जवाब भी दे सके। मेरे सामने यह भड़भूँजे का सा भाड़ नाहक़ ही भड़भड़ाने लगे!

साहित्यानन्द—अयँ? यह भाड़ की भड़-भड़ाहट है?

सरला—बेशक, जो बोली समझ में न आए और जो न कहीं बोली जाए, वह भाड़ की भड़-भड़ाहट नहीं तो क्या है?

साहित्यानन्द—वाह! वाह! वाह री तेरी बुद्धि! अरी मूर्खा, यही तो सभ्य भाषा है, जिसे हम लोग साहित्य कहते हैं। हमारे ऐसे उच्च कोटि के लेखकगण पुस्तकों में इसी का प्रयोग करते हैं और इसी में चरित्रों का वार्तालाप दर्शाते हैं। अब भी विश्वास न हो तो किताब—उहुँक—पुस्तक हाँ पुस्तक का लिखा सुनाता हूँ। इसका रसास्वादन करके तू अपने जीवन को कृतार्थ कर ले? और इसी प्रकार तू भी मुझसे बोलने का उद्योग कर। देख तुझसे भी वृद्धा पत्नी अपने प्राणप्यारे पति से कितनी मधुर सभ्य और सरस भाषा में कहती है, कान खोल कर सुन—"हे प्राणेश्वर, आज आप इतने मलिन-मुख क्यों प्रतीत होते हैं? इसका कारण शीघ्र ही, प्राणनाथ! अपने मुखा-रविन्द से प्रकट करके मेरे अन्तःकरण की व्या-कुलता निवारण कीजिए। क्यों नाथ! क्या कन्या के लिए कोई उचित वर कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुआ?"

सरला—कौन निगोड़ी ऐसा बोलती है, बताओ तो सही? उसके मुँह पर गिन के सात झाड़ू मारूँ।

साहित्यानन्द—अरे! अरे! यह क्या है? ये आदर्श-चरित्र हैं, देवियाँ हैं, इनको तू ऐसा कहती है?

सरला—ऐसी देवी को चूल्हे में झोंक दूँ। कौन ऐसी बेहया है, जो मुँह के सामने प्राणनाथ कहेगी और वह भी ऐसी बातें करते वक़्त? राम! राम!

साहित्यानन्द—तो क्या इसे तू झूठ समझती है? किताब—उहुँ!—पुस्तक का लिखा भी नहीं मानती?

सरला—तुम्हारी किताब की ऐसी-तैसी। और उसके लिखने वाले को क्या कहूँ?

साहित्यानन्द—ओहो! मैं समझ गया। तेरी बुद्धि बड़ी मोटी है। बिना पूरा पृष्ठ सुने तू इन साहित्यिक सूक्ष्मताओं का मर्म नहीं जान सकती। अच्छा तू भी क्या कहेगी। ले, पूरा अध्याय का अध्याय ही पढ़े देता हूँ।

(पढ़ने के लिए किताब खोलता है, वैसे ही सरला उसके हाथ से किताब छीन कर ज़मीन पर फेंक देती है)

सरला—बस-बस, अपनी पण्डिताई अपने ही पास रक्खो। मुझे इसकी जरूरत नहीं है।

साहित्यानन्द—बेवक़ूफ़ कहीं की!—नहीं-नहीं, मूर्खा कहीं की! यह क्या किया? कैसे नहीं जरूरत—उहुँक! आवश्यकता है? तुझे सुनना पड़ेगा।

(फिर किताब उठाता है, मगर सरला अपने कानों में उँगली डाल लेती है)

साहित्यानन्द—अरे! तूने कानों में उँगली क्यों लगा ली? (चिल्ला कर) तूने कानों में उँगली क्यों लगा ली?

सरला—क्या करूँ? तुम्हारी तरह मेरा दिमाग़ ख़राब थोड़े ही है?

साहित्यानन्द—अच्छा, अच्छा, इसका निर्णय तो बाद को होगा कि मेरा या तेरा, किसका दिमाग़ ख़राब—नहीं-नहीं—किसका मस्तिष्क दुष्ट है। परन्तु इस समय मैं पुस्तक बिना सुनाए मानने का नहीं। सीधे तौर—उहुँक!—सरल प्रकार न सुनेगी, तो यों सुनाऊँगा!

(किताब रख कर सरला के हाथों को अपने दोनों हाथों से उसके कानों पर से हटाता है)

सरला—बस-बस, कहे देती हूँ, अच्छी बात न होगी?

साहित्यानन्द—(उसके हाथ पकड़े हुए) हाँ-हाँ, अच्छी बात तो तब होगी, जब तू साहित्यिक भाषा बोलने लगेगी। क्योंकि मेरे ऐसे उच्च कोटि के साहित्य के सपूत की पत्नी को ऐसी गड़बड़

कलामे-गुलज़ार

देवीप्रसाद गुप्त (गुलज़ार) बी० ए०, एल्-एल्० बी०

सीखा है हमने करना दुनिया में इमीटेशन,
क्या ख़ाक हम करेंगे हम भी हैं कोई नेशन!

× × ×

कहने लगे कुछ रोज़ से अपने को एक नेशन,
शायद हो यह भी उनका मग़रिब का इमीटेशन।

× × ×

आपको अब कुछ अक़्ल से वास्ता लाज़िम नहीं,
क्योंकि वह भी कर चुके पेटेण्ट वलायत वाले।

* * *

बोली बोलना किसी प्रकार भी क्षम्य नहीं है, जिसको सुन-सुन कर मैं खुद ही शर्म से पानी-पानी हो जाता हूँ, नहीं-नहीं—मैं स्वयं ही लज्जा से जल-जल हो जाता हूँ।

सरला—(एकाएक हाथ छुड़ा कर बड़े ज़ोर से हँसती हुई) हा हा हा ! "लज्जा से जल-जल हो जाता हूँ।" वाह ! वाह ! क्या कहना है ! हा ! हा ! हा ! अरे मेरे राम ! भला यह किस ज़बान की बोली है ?

साहित्यानन्द—अयँ ! इसमें हँसने की कौन सी बात है ? यही तो शुद्ध और सभ्य भाषा है, जिसे हम लोग हिन्दी-साहित्य कहते हैं। बड़े परिश्रम से अभ्यास करते-करते कहीं इसका बोलना आता है। समझी ? इसीलिए कहता हूँ कि तू भी किताबी—उँह ! पुस्तकी भाषा सुन-सुन कर उसके बोलने का अभ्यास डाल........।

सरला—वाह री ! आपकी "पुस्तकी" ! ओ-होहो ! यह बोली तुम्हीं को मुबारक हो। आग लगे ऐसी बोली में, जो सोच-सोच कर बोली जाय। और उल्टे मुझीसे कहते हो कि मैं गड़बड़ बोलती हू। आ ! हा ! हा ! (हँसती है)

साहित्यानन्द—क्यों ? हँसती क्यों है ? ऐसा ही तो पुस्तकों में लिखा होता है। मिलान करके देख न ले ?

(साहित्यानन्द किताब उठा कर पढ़ने के लिए पन्ने उलटता है।)

सरला—मुझे इसकी ज़रूरत ? अपनी बोली भी भला कहीं किताब से सीखी जाती है ? इस मामले में किताब निगोड़ी है क्या चीज़ ? उसकी सच्चाई-झुठाई की कसौटी तो खुद मेरी ज़बान है। किताब को लाख बार ग़रज़ हो, तो वह अपनी सच्चाई की जाँच मेरी बोली से मिलान करके देखे। क्योंकि पहले बोली पैदा हुई, न कि तुम्हारी किताब !...अरे ! तुम फिर पढ़ने की तैयारी करने लगे। अच्छा तो मैं भी अब कानों में उँगली दिए लेती हूँ।

साहित्यानन्द—मिल गया, मिल गया, वही पति-पत्नी वाला सम्वाद। बड़ी देर से इसी को ढूँढ़ रहा था। हाँ, अब सुनो और देखो पत्नी अपने पति को प्रत्येक बात में प्राणनाथ ही कह कर सम्बोधन...(सरला की तरफ़ ग़ौर से ताकता हुआ) अरे ! यह क्या ? तूने कानों में फिर उँगली डाल ली। धत् तेरे की ! अच्छा ठहर जा।

(अपनी जेब से एक काग़ज़ निकाल कर किताब में रखता है। और तब किताब को अपनी बग़ल में दबा कर दोनों हाथों से सरला के कानों पर से उसके हाथों को हटाता है)

साहित्यानन्द—मगर अब पढ़ूँ किस तरह ? चपला ! ओ चपला !

सरला—(ग़ुस्से से तावती हुई) भङ्ग पिए हो क्या ? हाथ छोड़ो।

(चपला का आना)

चपला—क्या है पिता जी ?

साहित्यानन्द—ज़रा मेरी बग़ल से—उहुँक—तनिक मेरी काँख से पुस्तक निकाल कर उसे पढ़ तो देना, जहाँ काग़ज़, नहीं—पत्र रक्खा हुआ है। शीघ्रता करो, अन्यथा यह हाथ छुड़ा लेगी। (चपला को ताज्जुब और दबसट में पड़ा देख कर) फिर नहीं सुनती। जल्दी कर। यहाँ दम फूला जाता है।

(चपला साहित्यानन्द की बग़ल से किताब निकाल कर खोलती है)

साहित्यानन्द—(सरला से) हाँ, अब ध्यान-पूर्वक सुनो। और मुझे सम्बोधन करने के लिए उन शब्दों को अच्छी तरह से—उहुँक—सुन्दर प्रकार से स्मरण कर लो, बल्कि—नहीं, वरन् मुझे लक्ष्य करके उन्हें कहती भी जाओ। तब देखो साहित्यिक भाषा का आनन्द। (चपला से) पढ़ती क्यों नहीं ? पढ़

चपला—(पढ़ती हुई) पाजी, बेहूदा, नालायक़, बदमाश, बदतमीज़......

(साहित्यानन्द के हाथों से सरला के हाथ छूट जाते हैं)

साहित्यानन्द—(ताज्जुब में) यह क्या ? (चपला से) आयँ ! आयँ ! अरे यह क्या पढ़ने लगी बेवक़ूफ़ !

सरला—(ताली बजा कर) ओहोहो ! बहुत ठीक। शाबाश बेटी, ख़ूब पढ़ा (साहित्यानन्द से) अब कहो तो तुम्हें ऐसे ही पुकारा करूँ।

साहित्यानन्द—नहीं-नहीं।

सरला—कैसे नहीं ? किताब की लिखी बात है। अब तो मैं तुम्हें ऐसे ही पुकारूँगी। लो पुकारती हूँ......

साहित्यानन्द—(सरला की तरफ़ झपटता हुआ) फिर नहीं मानती।

(सरला भाग कर कोने में छिप जाती है और साहित्यानन्द पलट कर चपला की ओर दाँत पीसता हुआ बढ़ता है)

चपला—(किताब से काग़ज़ निकाल कर दिखाती हुई) जैसा इसमें लिखा है, वैसा ही तो पढ़ रही हूँ।

साहित्यानन्द—अरे राम ! राम ! तूने इसे पढ़ दिया ? हाय ! हाय ! इसमें तो मैंने इन गालियों को उनके साहित्यिक शब्द कोष से ढूँढ़ने के लिए अलग नोट कर लिया था। इसे तुझे किसने पढ़ने को कहा था ?

चपला—आप ही ने तो !

साहित्यानन्द—मैंने कहा था ? खड़ी तो रह उल्लू की पट्ठी कहीं की।

(साहित्यानन्द चपला को मारने के लिए झपटता है। वैसे ही संसारीनाथ आता है। चपला भाग कर उसकी गोद में गिरती है। दूसरी तरफ़ से सरला सामने निकल पड़ती है)

संसारीनाथ—(चपला को अपनी गोद में पाकर अलग) वाह री क़िस्मत ! यह तो बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा !

सरला—उल्लू की पट्ठी नहीं, उल्लू की पुत्री कहिए। अब वह आपकी किताबी बोली कहाँ गई ? जादू वह जो सर पर चढ़ के बोले !!

(साहित्यानन्द घूम कर सरला की तरफ़ ताकता है)

टेबला

(क्रमशः)

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

जब हम किसी के हाथों अपना असाधारण हित होते देखते हैं, तो हम अपनी सारी बुराइयाँ उसके सामने खोल कर रख देते हैं।

हम उसे दिखाना चाहते हैं कि हम तुम्हारी इस कृपा के सर्वथा अयोग्य नहीं हैं।

❀

भाड़ झोंक कर हाथ काला ही रहेगा।

❀

दिव्य जीवन में कलुषित मृत्यु की शङ्का रहती है। दिव्य मृत्यु में यह संशय कहाँ ?

❀

क्रोध के लिए मौन अजेय है।

❀

हे मेरे ईश्वर, तेरे अतिरिक्त सब कुछ रखने वाले, उन पर हँसते हैं जिनके पास तेरे अतिरिक्त कुछ नहीं है।

❀

चोर को मार कर चोर क्या पावेगा।
घृणा।
विद्वान का अपमान करके विद्वान क्या पावेगा ?
यश।

❀

जोखिम के सम्मुख पद-सम्मान का विचार नहीं रहता।

❀

जिस मनुष्य को आप दुर्जन तथा कपटी समझेंगे, वह कभी आपके साथ निष्कपट व्यवहार न करेगा।

❀

पिञ्जर-बद्ध पक्षी कहता है—पिंजड़े में बन्द रह कर मैं उड़ना भूल गया हूँ। यदि मैं गीत गाता हूँ तो वह केवल इसलिए कि मैं अपनी वाणी भी न भूल जाऊँ, अपने पकड़ने वालों को प्रसन्न करने के लिए नहीं।

❀

रेत में दूब नहीं जमती ;

❀

काले वस्त्र पर काला दाग़ छिप जाता है।
उज्ज्वल वस्त्र पर कालिमा की एक बूँद भी झलकने लगती है।

❀

हे ईश्वर, मैंने तुझे इसी भाँति देखा है, जिस प्रकार प्रातःकाल के धुँधले प्रकाश में अर्ध-जाग्रत बालक अपनी माता को देख कर मुस्कराता और फिर सो जाता है।

❀

सूर्य को ढूँढ़ने के लिए दीपक की आवश्यकता नहीं होती।

❀

यह न सोचो कि मैं क्या कर सकता हूँ ?
भावना यह होनी चाहिए—मैं क्या नहीं कर सकता ?

❀

जल में पड़ी हुई चन्द्रमा की परछाईं को बालक चन्द्रमा समझता है। हम मुस्कराते हैं। हमें देख कर हमारा ईश्वर भी मुस्कराता है।

❀

मिलन का सुख वियोग में है।

* * *

चीनी स्त्रियों के अधिकार

[हवाई विश्वविद्यालय के गणित के सहायक अध्यापक, प्रोफ़ेसर एच० एल० टी० यैप के एक लेख का भावानुवाद]

बहुत प्राचीन काल से स्त्रियों का अधिकार घर के भीतर रहा है। किन्तु चीनी स्त्रियाँ बहुत दिनों से शासन में भाग लेती आ रही हैं। प्राचीन चीनी इतिहास में हम ईसा से पूर्व ११वीं शताब्दी में 'चो' वंश की महारानी को बादशाह की अनुपस्थिति में राज्य-कार्य करते हुए पाते हैं। इसके पश्चात् ईसा से २०६ वर्ष पूर्व 'हान' वंश की महारानी लू, ७वीं शताब्दी में 'टाङ्ग' वंश की विधवा महारानी वन और 'चिङ्ग' वंश की प्रसिद्ध महारानी को भी इसी प्रकार राज्य-शासन में भाग लेते हुए पाते हैं। इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि प्राचीन काल में चीन की प्रतिभाशाली महिलाएँ बहुत बड़ी संख्या में राज्य के ऊँचे-ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित थीं। एक हाल का उदाहरण डॉक्टर सूमे चेङ्ग का है, जिन्होंने फ़्रान्स में शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टरी की सबसे बड़ी उपाधि प्राप्त की है। प्राचीन चीनी स्त्रियों की अवस्था समझने के पहले, उनकी पारिवारिक व्यवस्था समझ लेने से हमें इस बात का पता लग जायगा कि प्राचीन रीति-रिवाजों ने किस प्रकार उनकी उन्नति में बाधा पहुँचाई है। परिवार, समाज की सब से छोटी संस्था है। इसके अन्तर्गत पिता, माता, पुत्र, स्त्री तथा बच्चे और अविवाहिता कन्याएँ सम्मिलित हैं। ये सभी एक साथ रहते हैं। विवाहिता कन्याएँ अपने पति के परिवार की होती हैं। पिता नाम मात्र के लिए परिवार का स्वामी है। असल में घर का सब इन्तज़ाम माता के हाथ में रहता है। घर के प्रबन्ध के लिए वही उत्तरदायी है। पुत्र-वधुओं में होने वाले अनेक प्रकार के झगड़ों का फ़ैसला वही करती है। उनके घर का काम-धन्धा छोड़ देने पर सब से बड़ी पुत्र-वधू उनका स्थान ग्रहण करती है, और उसकी सभी देवरानियाँ उसकी आज्ञा के अनुसार चलती हैं। किंतु मेहमानों के आने पर अथवा यज्ञ-सम्बन्धी अवसरों पर उसे अपनी सास की सम्मति लेनी पड़ती है। परिवार के स्वामी की मृत्यु के पश्चात् उसकी स्त्री यदि दूसरा विवाह न करे तो उसे परिवार में अपने पति का स्थान मिलता है। यदि उसके पुत्र सम्पत्ति का बँटवारा करना चाहें तो बिना माता की आज्ञा के वे ऐसा नहीं कर सकते। सब से नए क़ानूनों का संग्रह, जिसमें अभी तक सुधार होता आ रहा है, १९२६ का 'कुओमिङ्गटाङ्ग' का बनाया हुआ है। इसके अनुसार स्त्रियों और पुरुषों को सम्पत्ति के उत्तराधिकार में और राजनैतिक, सामाजिक तथा शिक्षा-सम्बन्धी विषयों में समान अधिकार दे दिया गया है।

सम्पत्ति का बँटवारा

जैसा कि हमें पारिवारिक नियमों से पता चल चुका है, पिता अपने पुत्रों की संयुक्त आय से परिवार का पालन-पोषण करता है, और परिवार की सभी वस्तुएँ परिवार के सभी व्यक्तियों की सम्पत्ति समझी जाती हैं। इस प्रकार पूर्व-पुरुषों तथा पिता और पुत्रों के द्वारा उपार्जित सम्पत्ति पारिवारिक सम्पत्ति के अन्तर्गत है। सम्पत्ति का बँटवारा एक महत्वपूर्ण विषय है। जब तक परिवार के सब व्यक्ति सहमत न हों या परिवार के स्वामी की इच्छा न हो, परिवार के किसी एक व्यक्ति को बलपूर्वक बँटवारा करवाने का कोई अधिकार नहीं है। पारिवारिक सम्पत्ति का बँटवारा इस प्रकार होता है—पिता अपने पुत्रों में सम्पत्ति को बराबर-बराबर हिस्सों में बाँट देता है; और इनके लड़के भी चाहे वे उनकी विवाहिता स्त्री से हों या किसी उप-पत्नी से हों—अपने पिता की सम्पत्ति में से हिस्से पाते हैं। कन्याओं को कुछ नहीं मिलता। यदि उनका विवाह हो गया है तो पिता का घर छूट जाने के कारण, वहाँ की सम्पत्ति पर उनका कोई अधिकार नहीं। हाँ, यदि कन्या अविवाहिता हो तो उसके विवाह के व्यय के लिए, सम्पत्ति का बँटवारा होने के पहले ही कुछ धन निकाल लिया जाता है। हाल में शिक्षित-समाज में कन्याओं को भी पारिवारिक सम्पत्ति में अधिकार दिया गया है।

विधवा के लिए कोई व्यवस्था नहीं की जाती, क्योंकि उसके पालन-पोषण का भार उसके बड़े पुत्र पर रहता है। यदि वह विधवा एक परिवार की स्वामिनी है तो वह बँटवारा करने से अस्वीकार कर सकती है, और ऐसी दशा में उसे सारे परिवार के सञ्चालन का अधिकार है।

यदि वह विधवा एक पुत्र-वधू है, जिसका पति बँटवारा होने से पहले मर गया है, तो उसे अपने पुत्रों के लिए अपने पति की सम्पत्ति का प्रबन्ध करने का अधिकार है। इसमें सन्देह नहीं कि पितृ-पूजा की प्रथा के कारण ही माता का स्थान इतना उच्च रक्खा गया है। पिता की मृत्यु के पहले भी बँटवारा हो सकता है।

मान लीजिए कि पारिवारिक सम्पत्ति २५,०००) रु० की है, और परिवार में पिता (अ) माता (ब) और पाँच लड़के (ज, द, क, ख, और ग) हैं। पिता की मृत्यु के समय माता की आज्ञा मिलने पर पारिवारिक सम्पत्ति पाँचों पुत्रों के बीच बराबर बाँट दी गई। इस प्रकार प्रत्येक को ५,०००) रु० मिले।

अब मान लीजिए कि 'द' की मृत्यु हो गई है, किन्तु उसके तीन पुत्र हैं, जिनमें दो उसकी विवाहिता स्त्री से और एक उपपत्नी से हैं। उसकी विवाहिता स्त्री के दोनों पुत्र २,०००) प्रत्येक पावेंगे, और तीसरे को १,०००) मिलेंगे।

मान लीजिए कि 'क' की मृत्यु हो चुकी है, और उसे एक दत्तक और एक अनौरस पुत्र है। ऐसी दशा में प्रत्येक को २,५००) रु० मिलेंगे।

अथवा मान लीजिए कि 'ख' की मृत्यु हो गई है, और उसे एक स्त्री, एक पुत्र और एक कन्या है। ऐसी अवस्था में यदि उसकी स्त्री दूसरा विवाह न करे तो उसके हिस्से के कुल रुपए उसकी स्त्री को मिलेंगे। कन्या यदि अविवाहिता है तो अपने भाइयों में बँट जाने के पहले उन रुपयों में से, अपने विवाह के व्यय के लिए दावा कर सकती है। परिवार के व्यक्तियों के अलग हो जाने पर वह उन रुपयों को लेकर अपने बड़े भाई के पास रहने के लिए चली जायगी।

पुराने नियमों के अनुसार एक स्त्री के सामने ये अड़चनें थ :—

(१) सम्पत्ति रखने का उसे कोई अधिकार न था।

(२) बिना अपने पति की अनुमति के वह परिवार से बाहर नहीं जा सकती थी।

(३) यदि उसका पति उसे छोड़ दे तो तीन वर्ष बीतने के पहले वह विवाह नहीं कर सकती थी। तीन वर्ष के बाद भी विवाह करने के लिए उसे मैजिस्ट्रेट की आज्ञा लेनी पड़ती थी, यदि ऐसा न करे तो १०० मुक्के की सज़ा उसे दी जाती थी।

(४) पति के मरने पर यदि वह दूसरा विवाह न करे तो परिवार में उसका स्थान वही होगा, जो उसके पति का था।

नए नियमों के अनुसार भी स्त्री अपनी पारिवारिक सीमा के बाहर कोई काम बिना अपने पति की आज्ञा के नहीं कर सकती है। तो भी निम्न-लिखित अवस्थाओं में पति की आज्ञा लिए बिना भी उसे कार्य करने का अधिकार है :—

(१) जब कोई बात स्त्री और पुरुष में एक के लिए लाभप्रद और दूसरे के लिए हानिप्रद हो।

(२) जब पति पत्नी को छोड़ दे।

(३) जब पति की मानसिक स्थिति ख़राब हो गई हो।

(४) जब पति एक साल से अधिक की क़ैद की सज़ा भोग रहा हो।

नए क़ानून के अनुसार स्त्रियों के कुछ विशेष अधिकार :—

(१) अलग सम्पत्ति क़ायम करने का अधिकार।

(२) अपने पति के द्वारा ठीक किए विवाह को, परिवार की भलाई के लिए रोक देने का अधिकार, बशर्ते कि ऐसा करने में तीसरी पार्टी के साथ अन्याय न हो। यदि पति-पत्नी मनमुटाव हो जाने के कारण एक

हमारा जन्मोत्सव

[कुमारी गायत्री देवी श्रीवास्तव 'बिन्दु']

हा जन्म लेने की हमारे बात सुन करके कड़ी,
सब लोग यों होते दुःखी ज्यों गाज सिर पर गिर पड़ी
है सूख जाती आप लोगों के हृदय की वह कली,
सुत-जन्म के शुभ-आश में जो थी अहो अब तक खिली

❀

पर भाग्य से घर में कहीं यदि पुत्र पैदा हो गया,
तो दुःख मानो दूर भागे, सौख्य पैदा हो गया।
उत्सव कराते आप हैं सुत-जन्म के शुभ-हर्ष में,
पर एक पैसा भी नहीं हम पर लगाते वर्ष में।

❀

हमको समझते आप हैं ईंधन पराए द्वार का,
क्या लाभ शिक्षा से उसे जो है न निज परिवार का।
"इन बालकों को तो पढ़ाना, है हमारे काम का,
इनसे बढ़ेगा यश हमारा नाम का धन-धाम का।

❀

इन बालिकाओं को पढ़ाने को कहाँ है धन भला,
हो भला इतना कि जिससे हो उऋण जावे गला।
इस व्यर्थ धन के फूँकने से लाभ क्या होगा हमें
हम पढ़ावें क्यों इन्हें क्या यह खिलावेंगी हमें ?"

❀

यह ही नहीं, यह बात तो हाँ शास्त्र से भी सिद्ध है,
"इनको न पढ़ना चाहिए" सब बात से यह सिद्ध है।
यह स्वार्थ-परता आपकी कैसी प्रशंसा योग्य है ?
होवे निकलता स्वार्थ जिससे काम वह हो योग्य है

❀

हैं पुत्रियाँ होतीं अहो कण्टक गले की आपके।
हैं आप उनको फल समझते पूर्वकालिक पाप के।
हम पुत्रियों को आप रहते गालियाँ देते सदा,
हो समझते, बढ़ती हमारे साथ ही है आपदा

साथ शान्तिपूर्वक न रह सकते हों, और यदि दोनों की इच्छा हो, तो विवाह-बन्धन तोड़ा जा सकता है। अदालत की सहायता की तभी आवश्यकता है, जब वे दोनों स्वयं किसी निश्चय तक न पहुँच सकें।

नए नियमों के अनुसार पति या पत्नी कोई भी निम्न-लिखित कारणों से विवाह-बन्धन तोड़ सकता है :—

(१) दूसरा विवाह कर लेना।

(२) व्यभिचार।

(३) यदि दोनों में से कोई एक-दूसरे को जान से मार डालना चाहता हो।

(४) यदि दोनों में से कोई एक-दूसरे के साथ बुरा व्यवहार करे या उसका अनादर करे।

(५) यदि स्त्री पति के सम्बन्धियों का अनादर करे।

(६) यदि स्त्री के माता-पिता या उसके सम्बन्धी, उसके पति के साथ बुरा व्यवहार करें।

(७) यदि दोनों में कोई एक ईर्ष्या के कारण दूसरे का साथ छोड़ दे।

(८) यदि एक-दूसरे के विषय में तीन वर्ष तक कुछ न जान सके।

(९) यदि पति ३० वर्ष से नीचे का हो, और पत्नी की आयु भी २५ वर्ष से कम हो तो विवाह-सम्बन्ध तोड़ने के पहले दोनों के माता-पिता की सम्मति आवश्यक है।

(१०) विवाह-बन्धन तोड़ने के विषय में दोनों की सम्मति स्थानीय मैजिस्ट्रेट के ऑफ़िस में दर्ज करानी होगी। तब तलाक़ पका समझा जायगा।

(११) स्त्री-पुरुष दोनों को विवाह-बन्धन तोड़ने का, बच्चे और जायदाद की देख-रेख का समान अधिकार है। यदि स्त्री ने उचित कारणों से पति का साथ छोड़ दिया तो, पति की सामाजिक, और आर्थिक अवस्था के अनुसार उसे अपने पालन-पोषण के लिए धन लेने का अधिकार है।

दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि चीनी स्त्रियों की वर्तमान अवस्था से जान पड़ता है कि उन्होंने बहुत उन्नति की है। इनकी उन्नति से ही हम चीन की उन्नति की आशा रखते हैं। क़ानून के अनुसार पहले, सम्पत्ति के बटवारे में स्त्रियों का कोई अधिकार नहीं था, केवल उनके विवाह का व्यय भर अलग निकाल दिया जाता था; किन्तु इस समय 'कुओमिङ्गटाङ्ग' दल के दूसरे राष्ट्रीय अधिवेशन (१९२६) में बनाए गए क़ानूनों के अनुसार उन्हें आर्थिक, शिक्षा सम्बन्धी और क़ानून-सम्बन्धी विषयों पर पुरुषों के बराबर अधिकार दिए गए हैं।

उपरोक्त अधिवेशन में पास किए गए प्रस्ताव की १२वीं धारा के अनुसार पारिवारिक सम्पत्ति पर स्त्रियों का भी अधिकार है। स्त्रियों का पुरुषों के अधीन रहने की प्रथा, जिसके अनुसार कन्या अपने पिता के अधीन, स्त्री अपने पति के अधीन और (पति की मृत्यु के बाद) माता अपने पुत्र के अधीन रहती थी, उठा दी गई है। राष्ट्रीय शासन-विधान और कुछ प्रान्तीय शासन-विधान के अनुसार स्त्री और पुरुष समान हैं।

मैं समझता हूँ कि आप चीनी स्त्रियों की वर्तमान अवस्था अच्छी तरह समझ गए होंगे। अब मैं यहाँ के महिला आन्दोलन के विषय में कहना चाहता हूँ, जिससे यह पता चले कि इन्होंने अपने अधिकारों के लिए किस प्रकार आन्दोलन किया है।

कुआङ्गहसू (१८६९-१९०५) के राज्यकाल में यूसेङ्ग-सिङ्ग नाम की एक महिला ने एक लेख लिखा था, जसमें उसने विधवा स्त्रियों के पुनर्विवाह करने के अधिकारों पर ज़ोर दिया था। चीन में स्त्रियों के अधिकारों के विषय में आन्दोलन का यहीं से श्रीगणेश होता है। यह आन्दोलन दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—पहला १८९४ से १९१५ तक और दूसरा १९१६ से आज तक।

आन्दोलन के पहले भाग में लियाङ्ग चि-चाओ ने १८९७ में स्त्रियों के पैरों में लोहे के जूते ठोकने के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। शङ्घाई में पद-बन्धन विरोधात्मक (Anti-Foot-Binding Society) संस्था भी खोली गई, और इस संस्था की सदस्या वही लड़की बनाई जाती थी, जिसके पैर अपनी स्वाभाविक अवस्था में हों। इस संस्था को अच्छी सफलता मिली। ८ वर्ष से अधिक अवस्था वाली बालिकाओं के पैरों को मुक्त करवाना, जिसमें उनके पैर फिर प्राकृतिक रूप धारण कर सकें, और ८ वर्ष से कम अवस्था वाली बालिकाओं के पैरों को जूतों में ठोकने से रोकना, यही उस संस्था के महत्वपूर्ण उद्देश्य थे।

दिल पर 'एफ़ेक्ट' करती है

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

यह चाहता हूँ कि मैं भेद आपका समझूँ,
समझ में बात न आए तो उसको क्या समझूँ?

× × ×

ख़ुदा ही को ख़बर है इसमें क्या मरज़ी ख़ुदा की है,
कि वह बाक़ी ज़माने के ज़माना उनका बाक़ी है!
नतीजा खेल ठहरा, नाम "लॉ कॉलिज" में पढ़ने का,
किसी को शौक़े 'टेनिस' है किसी को शौक़े 'हॉकी' है?
भरोसा ख़ाक दुनिया पर करें ऐ हज़रते "बिस्मिल",
हमें मिट्टी में मिलना है, हमारा जिस्म ख़ाकी है!

× × ×

नज़र से कह दो यह किसको "रिजेक्ट" करती है!
कि अच्छी चीज़ को दुनिया "सेलेक्ट" करती है!!
कलामे "बिस्मिले" रङ्गीं बयाँ पढ़ो तो सही!
यह शायरी है जो दिल पर "एफ़ेक्ट" करती है!!

* * *

इस आन्दोलन के साथ ही शिक्षा-सम्बन्धी आन्दोलन का भी प्रारम्भ हुआ। चीनी बालिकाओं की शिक्षा पहले ईसाई पाठशालाओं में हुआ करती थी। सन् १९०० ई० के लगभग लियाङ्ग चि-चाओ ने शङ्घाई में बालिकाओं के लिए एक पाठशाला खोली, चीनियों का इस ओर यह पहला ही प्रयत्न था। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पुराने रीति-रिवाजों के कारण इस ओर उन्नति बहुत धीरे-धीरे होती थी। किन्तु स्त्रियों का उत्साह अपूर्व था। क्रान्तिकारियों के दलों में सम्मिलित होकर, सेना में भर्ती होकर और अपने अधिकारों के लिए आन्दोलन में भाग लेकर उन्होंने अपना सच्चा उत्साह प्रदर्शित किया। १९१० में एक अस्थायी शासन स्थापित किया गया, जिसके अध्यक्ष सनयात सेन चुने गए। शासन-सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में फँसे रहने के कारण डॉक्टर सनयात सेन स्त्रियों के अधिकारों की उन्नति के लिए अधिक प्रयत्न न कर सके। तो भी वे स्त्रियों की माँगों से सहानुभूति रखते थे। और जब यह अस्थायी शासन (Provisional Government) कैंटन में शुरू किया गया, तो प्रान्तीय शासन-समिति में कितनी ही महिलाएँ भी चुनी गई थीं।

विद्यार्थी आन्दोलन ने, जो इसके बाद से ही शुरू हुआ, इस महिलाआन्दोलन को बड़ी सहायता पहुँचाई। इस समय स्त्रियों ने जापान के शाण्टुङ्ग में जर्मनों के अधिकार छीनने का विरोध कर अपनी शक्ति दिखला दी। उन्होंने सड़कों पर जुलूस निकाले, जनता में भाषण दिए और जब तक जापानी अफ़सर निकाल न दिए जायँ, तब तक के लिए उन्होंने क्लासों में जाना अस्वीकार कर दिया। उस समय भी विद्यार्थी आन्दोलन के उद्देश्य महिलाआन्दोलन के लिए सहानुभूतिसूचक थे। छात्रान्दोलन का यह उद्देश्य था कि सामाजिक और शिक्षा-सम्बन्धी विषयों में स्त्रियों को भी पुरुषों के बराबर अधिकार दिए जायँ।

१९२२ की गर्मियों में पेकिङ्ग विश्वविद्यालय के लॉ-स्कूल की, तथा 'पेकिङ्ग गर्ल्स हाइयर नॉर्मल स्कूल' की छात्राओं ने 'वीमेन्स सफ़रेज एसोसिएशन' और 'वीमेन्स राइट्स लीग' नामक दो संस्थाएँ खोलीं।

पहली संस्था के उद्देश्य ये थे :—

(१) स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा के लिए, केवल पुरुषों के लाभ की दृष्टि से बनाए गए क़ानूनों को रद करवाना।

(२) उत्तराधिकार के क़ानूनों में रद्दोबदल करवाना जिससे उन्हें सम्पत्ति में भाग प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हो।

वीमेन्स राइट्स एसोसिएशन के उद्देश्य ये थे :—

(१) शिक्षा-सम्बन्धी सुविधाएँ।

(२) पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी शासन-सम्बन्धी अधिकार प्राप्त हों।

(३) पारिवारिक सम्बन्धों में स्त्रियों की रक्षा।

(४) वेश्यावृत्ति, बालिकाओं की दासी-वृत्ति और पैर बाँधने की प्रथा का निरोध।

इस आन्दोलन की सफलता का एक कारण यह है कि इन चीनी विद्वानों ने, जिन्होंने विदेश भ्रमण किया है, बाहर वालों से कुछ सीखा है और स्त्रियाँ क्या कर सकती हैं, इस बात को भी वे अच्छी तरह जानते हैं। स्वभावतः योग्य स्त्रियों को जज, मेयर और हाल में विदेश-मन्त्री का पद मिलता था। राष्ट्रीय शासन की सहायता पाने से चीनी महिलाओं का भविष्य अच्छा जान पड़ता है। और हमें आशा है कि श्रीमती सनयात सेन, श्रीमती लीआओ चुङ्गहाय, श्रीमती टाङ्ग चिङ्ग चाओ, श्रीमती चिआङ्ग काइ-शेक आदि तथा भावी महिलाओं के नेतृत्व में चीन संसार के समक्ष अपना स्थान बना लेगा।

इन २० वर्षों में चीनी स्त्रियों ने बहुत कुछ किया है। स्त्री और बच्चे मज़दूरों के विषय में सुधार, दासी बालिकाओं की मुक्ति, वेश्यावृत्ति का निरोध, अफ़ीम के विरोध में आन्दोलन, भिखारियों की जीविका की समस्या, सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार, ख़ैराती अस्पतालों का प्रबन्ध, ये कुछ समस्याएँ हैं, जो उन्होंने हल की हैं। आर्थिक अधिकारों में ये दूसरे शिक्षित देशों की महिलाओं से टक्कर ले सकती हैं। इस समय इनका ध्यान धर्म, तथा अन्य विषयों की ओर खिंचा हुआ है।

सामाजिक, शासन-सम्बन्धी और आर्थिक समस्याओं को पूर्ण रीति से हल कर लेने पर चीन की स्त्रियाँ अपने देश को संसार की एक बड़ी शक्ति बना देंगी।

* * *

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

बम्बई की सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री—श्रीमती आर० एम० लज़ारूस—जो लोनावाला (बम्बई) की म्युनिसिपैलिटी की उप-प्रधाना नियुक्त हुई हैं।

गुरुकुल (वृन्दावन) में बड़े दिन की छुट्टियों में होने वाले "महिला-सुधार-मण्डल" की सभानेत्री—श्रीमती अक्षयकुमारी—हाल ही में आपका अन्तर्जातीय विवाह प्रोफ़ेसर महेन्द्रप्रताप शास्त्री, एम० ए०; एम० ओ० एल० से हुआ है।

संयुक्त प्रान्त के "महिला-सुधार-मण्डल" की कार्यकर्त्री महिलाओं का ग्रूप। कुर्सी पर बैठी हुई देवियों में बाईं ओर से पाँचवीं देवी मण्डल की अवैतनिक मन्त्रिणी श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी हैं।

हल्दवानी (यू० पी०) के सुप्रसिद्ध रईस—लाला बाबूराम जी—जिन्होंने हाल ही में एक अङ्गरेज़ी स्कूल खोला है और उसके सञ्चालन की आर्थिक ज़िम्मेदारी भी ग्रहण की है।

पाण्डीचरी (मद्रास) के मेडिकल कॉलेज के अध्यक्ष और प्रोफ़ेसर—श्री० के० अन्द्रे—जो नागपुर में होने वाली भारतीय विज्ञान-परिषद् (Indian Science Congress) के प्रतिनिधि चुने गए थे।

मेरठ से प्रकाशित होने वाले "दि स्काउट ब्रदर" के सम्पादक—श्री० परमानन्द विद्यार्थी—जिन्हें बालचर सङ्गठन और उसकी सेवा के उपलक्ष में एक पदक प्रदान किया गया है।

प्रतिभाशाली उर्दू पत्र-सम्पादकों की चित्रावली

मि० मुहम्मद हबीब फ़ज़ाई, सम्पादक 'कैफ़'

पण्डित अमरनाथ झा, सम्पादक 'इलाहाबाद युनिवर्सिटी मैगज़ीन'

डॉ० पूरनसिंह, सम्पादक 'चमन'

मि० ज़फ़र हाशिमी, सम्पादक 'चमन'

श्री० शिवनारायण भटनागर, स० 'भारत'

मि० लभूराम जोश, स०. 'रहनुमाए तालीम'

मि० करतारनाथ शफ़क़ सहराई, स० 'गुलकदा'

मि० एम० हारिस, सम्पादक 'अजमल'

मि० इनायत अहमद ख़ाँ, सम्पादक 'इण्डियन हिस्टॉरिकल'

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

सोहागपूर (सी० पी०) के सुप्रसिद्ध वकील—श्री० गदाधर-प्रसाद जायसवाल, बी० एस-सी०; एल्-एल० बी०; जो मध्य-प्रान्त के नए मिनिस्टर नियुक्त हुए हैं।

श्री० जगन्नाथ राव, जो कोकोनाडा के 'लॉरेन्स स्कूल' के अध्यापक हैं और जो हाल ही में बनारस में होने वाले अखिल भारतीय अध्यापक टेनिस टूरनामेण्ट में प्रथम हुए हैं। इस खेल में आपको कई उत्तमोत्तम पदक प्राप्त हो चुके हैं। चित्र में मेज़ पर वे सब पदक रक्खे हुए हैं, जो आपके सिद्धहस्त खिलाड़ी होने का परिचय दे रहे हैं।

हैहय क्षत्रिय सभा (इलाहाबाद) के प्रधान मन्त्री—श्री० छोटेलाल जायसवाल, ठेकेदार।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर—डॉक्टर गोरखप्रसाद जायसवाल, डी० एस-सी० (एडिनबर्ग, लन्दन)—जो हैहय क्षत्रिय सभा (प्रयाग) के प्रधान चुने गए हैं।

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

श्रीमती दुर्गा देवी

आप कलकत्ता की 'मारवाड़ी रिलीफ़ सोसायटी' के वैद्य पण्डित हरिदत्त शर्मा की धर्मपत्नी हैं। राष्ट्रीय कार्यों में आप विशेष भाग लेती हैं। कलकत्ता के 'भारतीय नारी-उत्थान-मण्डल' की आप मन्त्रिणी हैं।

श्रीमती लक्ष्मी देवी पुष्करणा, जो राष्ट्र-सेवा के उपलक्ष में जेल-यात्रा करके लौटी हैं और कलकत्ता के 'भारतीय नारी-उत्थान-मण्डल' की सभानेत्री चुनी गई हैं।

[illegible] यह चित्र उस समय का है, जबकि किसी उदार-हृदय दानी की ओर से उन्हें नए वस्त्र और तेल आदि आवश्यक चीज़ें दी गई हैं।

[illegible]

[illegible] थे। आप पिकेटिङ्ग आरम्भ करने के कई मिनिट बाद ही पुलिस द्वारा गिरफ़्तार कर लिए गए थे।

श्री० जानकीप्रसाद और श्री० रामपाल त्रिवेदी

ये दोनों सज्जन लखनऊ के उत्साही राष्ट्रीय कार्यकर्ता हैं। [illegible] तरह घायल हुए हैं।

तुमने दिल लेकर, निगाहें फेर लीं, अच्छा किया,
ख़ैर, आगे को हमें सरकार आँखें हो गईं !
उनकी नज़रें क्या फिरीं, ख़ञ्जर गले पर फिर गए,
देखते ही देखते तलवार आँखें हो गईं !

जाग उठी क़िस्मत, जब उनसे चार आँखें हो गईं,
कामयाबे जलवए[1] दीदार आँखें हो गईं !
दिल पे सा चरके लगे, जब चार आँखें हो गईं,
चश्म-बद[2] दूर, आपकी तलवार आँखें हो गईं !
कोहे[3] ग़म टूटा, तो दरिया[4] बार आँखें हो गईं,
चोट जब दिल पर लगी, ग़मख़्वार आँखें हो गईं !
आँखों ही आँखों में, उनसे कह दिया राज़े[5]-निहाँ[6],
बेज़बानी पर, लबे गुफ़्तार[7] आँखें हो गईं !
तुमने दिल लेकर, निगाहें फेर लीं, अच्छा किया,
ख़ैर, आगे को हमें सरकार आँखें हो गईं !
नज़्आ[8] में वह देखने आए, मरीज़े-हिज्र[9] को,
चलते-चलते, आज उनसे चार आँखें हो गईं !
अब है दुनिया की जगह, सैरे जनाँ[10] का इश्तियाक़[11],
इस तमाशे से तो अब, बेज़ार आँखें हो गईं !
जीते जी तो, सब हमारे हाल पर हँसते रहे,
मर गए जब हम, तो नम[12] दो-चार आँखें हो गईं !
देखने वालों से, वह करते हैं दरपर्दा हिजाब[13],
क्या नज़ाकत है, कि उन पर बार[14] आँखें हो गईं !
देखती आँखों, जहाँ की सैर ग़ाफ़िल देख ले,
फिर कहाँ यह लुत्फ़, जब बेकार आँखें हो गईं !
है सिवा इनके, मुसीबत में शरीके हाल कौन,
आग जब दिल में लगी, गमख़्वार आँखें हो गईं !
साफ़ खुल जाएगा, राज़े हस्तिये[15] बेएतबार,
ख़्वाबे-ग़फ़लत से, अगर बेदार[16] आँखें हो गईं !
दीदए मख़मूर,[17] साक़ी का करिश्मा देखना,
जब निगाहें लड़ गईं, सरशार[18] आँखें हो गईं !

—"बर्क़" देहलवी

बढ़ गई रस्मे-मुहब्बत, चार आँखें हो गईं,
जो कभी अय्यार[19] थीं, वह यार आँखें हो गईं !
जब से महवे-दीद,[20] हुस्ने-यार आँखें हो गईं,
मस्त जलवा बन गईं, हुशयार आँखें हो गईं !
इन्तिज़ारे यार में पथरा गईं कुछ इस क़दर,
रौज़ने[21] दर बन गईं, दीवार आँखें हो गईं !
बन्द होते ही नज़र के, दम अटक कर रह गया,
हसरते-दीदार में, दरकार आँखें हो गईं !
गर यही है जोशिशे[22] गिरिया तो बस अब जाँ चली,
रोते-रोते लख़्ते[23] दिल, ख़ूँबार[24] आँखें हो गईं !
रङ्ग लाया; यह ख़्याले दीदए मैगूने[25] यार,
मस्तो बेख़ुद बन गईं, सरशार आँखें हो गईं !

१—दर्शन, २—बुरी आँखों से बचाए, ३—पहाड़, ४—बरसने वाली, ५—भेद, ६—छुपा हुआ, ७—बात करने वाली, ८—अन्तिम समय, ९—विरही, १०—बैकुण्ठ, ११—शौक़, १२—रोने वाली, १३—लज्जा, १४—बोझ, १५—न ठहरने वाला शरीर, १६—जागने वाली, १७—नशीली आँखें, १८—मस्त, १९—चालाक, २०—देखने में मग्न, २१—खिड़की, २२—रोने का जोश, २३—दिल के टुकड़े, २४—ख़ून बरसाने वाली, २५—ग़रीबी,

हिज्र में देखा, यह रङ्गे गिरियए[26] ख़ूनी असर,
सुर्ख़ डोरे दे गईं, गुलनार आँखें हो गईं !
फिरती रहती हैं, हसीनाने-जहाँ की सूरतें,
महविशों[27] का कूचओ बाज़ार आँखें हो गईं !
उठ गया परदा हया का, मिलते ही तिरछी नज़र,
आइए मिल बैठिए, अब चार आँखें हो गईं !
यह असर देखा, ख़्याले नरगिसे-बीमार का,
देख कर बीमार को, बीमार आँखें हो गईं !
लड़ रही हैं दुश्मनों से चुपके-चुपके बज़्म[28] में,
क्या हुआ, क्यों बरसरे[29] पैकार आँखें हो गईं !
मेरे हालेज़ार पर, फ़ुरक़त[30] में "रौनक़" रो पड़ीं,
मोनिसे[31] दिल बन गईं, ग़मख़्वार आँखें हो गईं !

—"रौनक़" देहलवी

आज मुझसे उस हसीं की, चार आँखें हो गईं,
नावके दिल[32] दोज़ बन कर, पार आँखें हो गईं !
सुरमगीं जिस दम, तेरी दिलदार[33] आँखें हो गईं,
जान लेने के लिए, तैयार आँखें हो गईं !
आ गया जो सामने, वह जान से जाता रहा,
क्या तेरी चलती हुई, तलवार आँखें हो गईं !
गिर पड़े ग़श खाके मूसा,[34] देखने से भी गए,
क्या समझ कर तालिबे[35]-दीदार, आँखें हो गईं !
फिर रहा है, इनमें यारब कौन सा मस्ते-शबाब,
आज अपनी बे पिए, सरशार आँखें हो गईं !
इन्तिहाए गिरियए पैहम ने, अन्धा कर दिया,
रोते-रोते इश्क़ में, बेकार आँखें हो गईं !

२६—रोना, २७—चाँद सी सूरतें, २८—सभा, २९—लड़ने पर आमादा, ३०—विरह, ३१—हमदर्द, ३२—दिल में चुभने वाली, ३३—प्रेमिका, ३४—हज़रत मूसा एक पैग़म्बर थे, जो तूर पहाड़ पर ख़ुदा का जलवा देखने गए थे, ३५—देखने को उत्सुक;

फिर कोई परदे से बाहर आ गया है बाम[36] पर,
फिर किसी की, तालिबे-दीदार आँखें हो गईं !
हो गया बीमार मैं, सूरत तुम्हारी देख कर,
यह तुम्हारी, किस लिए बीमार आँखें हो गईं !
उनकी नज़रें क्या फिरीं, ख़ञ्जर गले पर फिर गए,
देखते ही देखते तलवार आँखें हो गईं !
दीदए पुर नम[37] से, आँसू पेशतर बहते रहे,
जब न आँसू रह गए, ख़ूँबार आँखें हो गईं !

आपका 'भविष्य' बड़ी सज-धज के साथ निकल रहा है। इसके प्रतियोगी, जो बड़े ठाठ-बाट के साथ निकले थे, इसके सामने फीके पड़ गए हैं। आपका उद्योग महान है, और उसके लिए सफलता भी आपको अच्छी मिली है।

—प्रो० रुद्रनारायण अग्रवाल, बी० ए०

ऐ सितमगर, देखने वालों को हैरत क्यों न हो,
थीं अभी नशतर, अभी तलवार आँखें हो गईं !
होते-होते ज़ौर[38] में, हासिल हुआ इनको कमाल,
लड़ते-लड़ते, और भी हुशियार आँखें हो गईं !
हसरते-दीदार[39] का, अञ्जाम[40] होता है बुरा,
तुम पर आँखें डाल कर, सरकार आँखें हो गईं !
रह गए अपना कलेजा, थाम कर मुश्ताक़े-दीद[41]
खिंचते-खिंचते, जब तेरी तलवार आँखें हो गईं !
उस तरफ़ महफ़िल में जितने थे वह मुज़्तर[42] हो गए
जिस तरफ़ को, यह तेरी एक बार आँखें हो गईं !
हज़रते "बिस्मिल" तुम्हें किस शोख़[43] ने बिस्मिल किया,
क्या किसी क़ातिल से फिर दो-चार आँखें हो गईं !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

३६—कोठा, ३७—आँसू भरे हुए, ३८—ज़ुल्म, ३९—देखने का शौक़, ४०—नतीजा, ४१—देखने वाले, ४२—बेचैन, ४३—माशूक़।

शराब की दूकान

[श्री० प्रेमचन्द जी]

कॉङ्ग्रेस कमिटी में यह समस्या उपस्थित थी कि शराब और ताड़ी की दूकानों पर धरना देने की ज़िम्मेदारी कौन ले। कमिटी के पचीसों सदस्य सिर झुकाए अपनी चिन्ताओं के बोझ से दबे हुए बैठे थे। बड़ी कठिन समस्या थी। पुलिस के हाथों गिरफ़्तार हो जाने में तो किसी को आनाकानी न थी। पुलिस के अफ़सर, कुछ को छोड़ कर, अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हैं और मनुष्यत्व से इतने गिरे नहीं होते कि देश-प्रेमियों को अपमानित करें, परन्तु नशेबाज़ों में यह ज़िम्मेदारी कहाँ? इनमें तो बहुधा वही लोग होते हैं, जिन्हें बल-प्रयोग के सिवा और किसी शक्ति के आगे झुकने की आदत ही नहीं होती। इनकी गालियाँ और जूते खाने के लिए कोई भी प्रस्तुत न था। पुलिस वालों से किसी प्रकार की सहायता की आशा तो अलग, वे नागरिकों को और भी उत्तेजित करेंगे और पुलिस की शह पाकर ये मादकता के दास जो कुछ न कर डालें वह थोड़ा है। समझाने-बुझाने की गुञ्जाइश नहीं और इन लोगों पर चिरौरी-बिनती का कोई असर नहीं पड़ सकता।

एक सदस्य ने इसलिए मौन भङ्ग किया कि तर्क को जारी रखना आवश्यक था। उन्होंने कहा—मेरी राय में पञ्चायतों को पुनर्जीवित करना चाहिए। नीच जाति के लोगों में पञ्चायत और बिरादरी एक जीवित शक्ति होती है। इसके अतिरिक्त मुझे दूसरा उपाय नहीं दिखाई पड़ता।

सभापति ने कहा—यह भी एक उपाय है, परन्तु पिकेटिङ्ग की हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

फिर सन्नाटा हो गया।

पिछली श्रेणी में एक महिला चुपचाप बैठी थीं। यही कॉङ्ग्रेस की स्त्री-सदस्या थीं। नाम था, श्रीमती सकसेना। युवावस्था में ही इनके पति का देहान्त हो गया था। वह कॉङ्ग्रेस के उत्साही सदस्य थे। श्रीमती सकसेना ने इनके रिक्त स्थान की पूर्ति की थी। वे स्त्रियों में स्वदेशी और खद्दर का प्रचार किया करती थीं। जब कभी कॉङ्ग्रेस के वक्तृता-मञ्च पर बोलने के लिए खड़ी होतीं तो उनकी वक्तृता भी उनके सौन्दर्य से प्रभावान्वित हो जाती थी। कमिटी के कई नवयुवक सदस्य, जो पहले कॉङ्ग्रेस में बहुत कम आते थे, अब आने लगे थे। उनकी सादगी, उनका उत्साह, उनकी सरलता, उनके मधुर भाषण और सब से अधिक उनकी निर्भीकता ने उनके व्यक्तित्व को और भी चमका दिया था। प्रत्येक व्यक्ति इनका यथेष्ट सम्मान करता था। परन्तु श्रीमती सकसेना की स्वाभाविक लज्जाशीलता उन्हें अगली श्रेणी में आने से रोकती थी। वे जब सभा में आतीं तो लोग खड़े हो जाते, पर वे पिछली श्रेणी से आगे नहीं बढ़ती थीं।

श्रीमती सकसेना ने सभापति से पूछा—शराब की दूकानों पर स्त्रियाँ पिकेटिङ्ग तो कर सकती हैं?

सभापति ने एक-एक शब्द को तोलते हुए कहा—कार्यकारिणी समिति इस सम्बन्ध में समुचित आदेश प्रदान कर चुकी है।

श्रीमती सकसेना ने सरलतापूर्वक कहा—यह सेवा आप मुझे सौंप दें।

लोगों ने विस्मय और सन्देह की दृष्टि से श्रीमती सकसेना को देखा। यह सौन्दर्य और कोमलता की देवी, जिसके कोमल शरीर में शायद हवा भी चुभती होगी, गन्दी गलियों में शराब और ताड़ी की दूकानों के आगे नशे में पागल आदमियों के असभ्यतापूर्ण शब्दों और व्यवहारों को कैसे सह सकेगी?

सदस्यों ने काना-फूसी आरम्भ की।

"बड़ी निडर स्त्री है!"

"हम लोगों को लज्जित करना चाहती है और कुछ नहीं, ये बेचारी वहाँ क्या पिकेटिङ्ग करेंगी? दूकान के सामने खड़ा तक तो हुआ न जाएगा?"

सभापति ने कहा—मैं आपके साहस और त्याग की प्रशंसा करता हूँ। परन्तु मेरी समझ में अभी इस नगर की अवस्था ऐसी नहीं है कि महिलाएँ मादक वस्तुओं की दूकानों पर पिकेटिङ्ग कर सकें। आपको मालूम नहीं; ये नशेबाज़ कितने मुँहफट और असभ्य होते हैं।

श्रीमती सकसेना ने उत्तेजित स्वर में कहा—तो क्या आप समझते हैं कि कोई समय ऐसा भी आएगा, जब नशेबाज़ सभ्य, शिष्ट और सज्जन हो जायँगे।

सभापति ने कुछ सङ्कुचित होकर कहा—मैं तो उचित नहीं समझता कि यह काम आपको सौंपूँ। आगे आपकी इच्छा है, मैं इस सम्बन्ध में समिति के सदस्यों की सम्मति जानना चाहता हूँ।

एक नवयुवक सदस्य ने एतराज़ किया, मैं सभापति महाशय से प्रार्थना करूँगा कि आप यह काम श्रीमती सकसेना को सौंप कर उत्तेजना की सामग्री इकट्ठी कर रहे हैं। इससे कहीं अधिक अच्छा है कि आप मुझे इस काम पर नियुक्त करें।

श्रीमती सकसेना ने उत्तेजित होकर कहा—उत्तेजना की सम्भावना तो आपके उपाय में अधिक है।

एतराज़ करने वाले सज्जन का नाम था, जयराम। आठ-नौ साल पहले एक राजद्रोही वक्तृता देने के कारण जेल हो आए थे। परन्तु उस समय वह अकेले थे। अब सिर पर बीबी और बच्चों का बोझ था। हृदय में पराधीनता की पीड़ा थी, उत्साह था, व्याकुलता थी, परन्तु परिस्थिति से विवश थे। श्रीमती सकसेना के उत्तर ने उन्हें मौन कर दिया। इस उत्तर में एक घटना की ओर इङ्गित था। कैद के ज़माने में जेलर को एक अपमान-जनक शब्द कहने पर, इन्होंने एक थप्पड़ जड़ दिया था, जिसके कारण उनके दण्ड-काल में नौ महीने की वृद्धि हो गई थी। बेचारे सङ्कुचित होकर धीरे से बोले—आप पुरानी घटना पर यह निर्णय कर रही हैं। आप भूली जाती हैं कि मनुष्य उमर के साथ अनुभवी हो जाता है। आप मेरी ख़ातिर से अपना प्रस्ताव वापस ले लें। मुझे एक सप्ताह का अवसर दें, अगर कहीं उत्तेजना हो जाए तो मुझे अलग कर दें।

सभापति ने कहा—मेरी समझ में श्री० जयराम इस कार्य के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

अन्यान्य सज्जनों ने इसका समर्थन किया। जयराम ने सभापति को धन्यवाद दिया और सभा विसर्जित हुई।

चलते समय श्रीमती सकसेना ने जयराम से कहा—आपने मेरे साथ और इससे भी अधिक अपने घर वालों के साथ अन्याय किया है, मैं इसे कभी क्षमा न करूँगी।

जयराम ने विजय की प्रसन्नता के साथ कहा—आप अपने साथ यह अन्याय कर रही हैं।

२

दूसरे दिन जयराम दो स्वेच्छासेवकों के साथ बेगमगञ्ज के शराबख़ाने के पास पहुँचे। ताड़ी और शराब की दूकानें मिली हुई थीं और ठीकेदार भी एक ही था। यह शहर में नशेबाज़ों का सब से बड़ा अड्डा था। दूकान के सामने नशेबाज़ों की 'महफ़िल' जमी हुई थी। कहीं ताड़ी उड़ रही थी, कहीं शराब। हवाई जहाज़ों पर बैठे हुए यह लोग आसमान की सैर कर रहे थे। कोई वहाँ अफ़लातून से कम न था। कहीं अपनी बहादुरी की कथाएँ हो रही थीं, कहीं अपनी उदारता की प्रशंसा, कहीं अपने विजय की गाथाएँ, ख़ुदा ने बेख़ुदी का रूप धर रक्खा था।

एक बूढ़े शराबी ने कहा—भैया, ज़िन्दगानी का भरोसा नहीं, कोई भरोसा नहीं, कोई भरोसा नहीं। मेरी बात मानो, ज़िन्दगानी का कोई भरोसा नहीं।

उनके दूसरे साथी ने इसका समर्थन किया—बहुत ठीक कहते हो भैया, ज़िन्दगानी का कोई भरोसा नहीं, वाह री ज़िन्दगानी।

बूढ़ा शराबी—एक दिन हाथ पसारे हुए मर जायँगे; यहीं खाना-खिलाना रह जायगा। धन-दौलत, जगह-ज़मीन सब धरी रह जायगी।

दो ताड़ीबाज़ों में राजनीतिक तर्क-वितर्क हो रहा था—"हम तुम रिआया हैं भाई, रिआया। हमारी मजाल क्या है, कि हम सरकार के सामने सिर उठा सकें?"

"अपने घर में बैठ कर बादशाह को कोई गाली दे ले। लेकिन मैदान में आना कठिन है, हाँ।"

"रिआया का काम तो भैया, बन्दगी बजाना है। कहाँ सरकार और कहाँ हम।"

"छोटा आदमी भरपेट खा के बैठता है तो समझता है, बादशाह हमी हैं। लेकिन अपनी हैसियत को भूलना न चाहिए।"

"बहुत पक्की बात कहते हो भैया, अपनी असलियत पर डटे रहो। जो राजा है, वह राजा है। जो रिआया है, वह रिआया है। भला, रिआया कहीं राजा हो सकती है?"

इतने में जयराम ने आकर कहा—"राम-राम! भाइयो, राम-राम।" नशेबाज़ों ने तीनों आदमियों को देखा तो सँभल बैठे और इस अनधिकार चर्चा पर कुछ रुष्ट हुए।

जयराम ने झण्डे को ज़मीन पर खड़ा करके कहा—भाइयो, ताड़ी और शराब हर एक मज़हब में हराम है, आप और हम ग़रीब आदमी हैं। जो रुपए आप यहाँ उड़ा देते हैं, अगर वह अपने बाल-बच्चों के खिलाने-पिलाने में ख़र्च करें, तो आपके घर वाले कितने आराम से रहें? सोचिए, आप लोग इस नशे की बदौलत कैसी-कैसी तकलीफ़ें उठाते हैं। आपके बाल-बच्चे भूखों मरते हैं। आपको ख़राब और गन्दे घरों में रहना पड़ता है। महाजन की गालियाँ और धमकियाँ सहनी पड़ती हैं। यदि इस रुपए को आप सोच-विचार कर ख़र्च करें, तो आपके सिर से ये सारे कष्ट टल जायँ और आपको ज़िन्दगी का सुख प्राप्त होगा।

बूढ़े शराबी ने गम्भीरतापूर्वक कहा—है तो बुरी चीज़, घर तबाह करके छोड़ती है। मगर "छुटती है मुँह से यह क्या लगी हुई?" इत्ती उमर पीते कट गई तो अब मरते दम क्या छोड़ें!

उसके साथी ने उसकी बात का समर्थन किया—बस यही बात है दादा, जब इत्ती उमर पीते कट गई तो अब मरती बार क्या छोड़ें!

जयराम ने कहा—वाह चौधरी, यही तो उमर है, छोड़ने की। अच्छा काम अगर जवानी में हो तो पूछना ही क्या है, लेकिन अगर बुढ़ापे में हो तो भी ग़नीमत है। अच्छे काम के लिए साइत नहीं देखी जाती, बस आज से तोबा करो।

चौधरी ने तो जवाब न दिया, परन्तु उसके साथी ने कहा—अगर पीना बुरा है तो अङ्गरेज क्यों पीते हैं?

इतने में एक सब-इन्स्पेक्टर और चार-पाँच कॉन्स्टेबिल आकर खड़े हो गए। सब-इन्स्पेक्टर ने जयराम से ऑफ़िसरी ठाट से पूछा—आपको मालूम है, यहाँ आपका खड़ा होना जुर्म है?

जयराम ने सहज भाव से उत्तर दिया—जी नहीं, मैं यह नहीं जानता। मेरा यहाँ खड़ा होना अगर अपराध है तो आपका और प्रत्येक मनुष्य का खड़ा होना अपराध है।

सब-इन्स्पेक्टर—जनाब, वायसराय का नया ऑर्डिनेन्स यहाँ भी जारी हो चुका है।

जयराम—जानता हूँ, लेकिन मैं किसी को धमकी नहीं दे रहा हूँ। वायसराय का ऑर्डिनेन्स किसी को उचित अधिकार से वञ्चित नहीं कर सकता, जो उसे अपने भूले हुए भाइयों को समझा-बुझा कर सत्य के मार्ग पर लाने के लिए प्राप्त है।

सब-इन्स्पेक्टर—आपका खड़ा होना ही ख़िलाफ़-क़ानून है।

जयराम ने तमाशा देखने वालों और शराबियों को, लक्ष्य करके कहा—दारोग़ा जी कह रहे हैं, कि तुम लोगों को हम धमका कर शराब पीने से रोक रहे हैं। मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या यह सही है? अगर मैंने किसी को इशारे से भी धमकाया हो तो वह दारोग़ा साहब से कह दे। अगर आप लोग चाहते हैं कि मैं गिरफ़्तार कर लिया जाऊँ तो प्रसन्नता से गिरफ़्तार करा दें। लेकिन क्या एक भाई को अपने दूसरे भाई से कुछ कहने का अधिकार नहीं है? क्या मैं अपनी गर्दन पर तलवार चलाऊँ तो क्या आप देखते रहेंगे? मैं आपको अपना भाई समझता हूँ और मेरा कर्तव्य है कि आपको बुराई की ओर जाता देखूँ तो समझाऊँ। इसी तरह आपका भी कर्तव्य है कि हम को कोई बुराई करते देखें तो समझा दें। अगर आप मुझे अपना भाई समझते हैं तो दारोग़ा जी से साफ़-साफ़ कह दें कि वह यहाँ से पधारने की कृपा करें और मुझे अपना काम करने दें। मैं आज आप से यह प्रतिज्ञा कराए बिना नहीं जाऊँगा कि आप आज से पीना छोड़ दें। मैं आपके पैरों पड़ूँगा। आपकी गालियाँ, घुड़कियाँ, लात-जूते सब खाऊँगा, परन्तु आपसे बिना प्रतिज्ञा कराए न जाऊँगा। महात्मा गाँधी से बढ़ कर दुनिया में आपका कोई दोस्त नहीं है। अपने ग़रीब भाइयों की भलाई के लिए वह इतनी बड़ी तपस्या कर रहे हैं, जितनी किसी बड़े से बड़े ऋषि ने भी न की होगी। क्या आप उनकी बात भी न मानेंगे?

नशेबाज़ों में से किसी की ज़बान न खुली। दारोग़ा से सभी भयभीत थे। हठात् तमाशाइयों में से एक ने कहा—चौधरी, बैठे क्या हो? क्या दारोग़ा जी कोई शेर हैं जो तुम्हें खा जायँगे? कह क्यों नहीं देते कि यहाँ तुम लोगों को कोई धमकी नहीं दे रहा है।

चौधरी—धमकी कोई क्या खा के देगा जी, उसकी आँखें निकाल लें। मजाल है। हुँहं! धमकी देगा! ताड़ी-शराब बुरी चीज़ है, गाँजा, भाँग, चरस सभी नशे बुरे हैं। यहाँ कौन है जो इतना भी नहीं जानता हो। हाँ, आदत पड़ गई है इसलिए छोड़ नहीं सकते। हम गधे हैं कि कोई भाई समझाए तो उससे दुश्मनी करने लग जायँ।

दारोग़ा जी ने नशेबाज़ों और तमाशाइयों का रुख़ देखा तो जयराम को पकड़ना उचित न समझा। जयराम से बोले—यहाँ कोई फ़साद होगा तो आप ज़िम्मेदार होंगे।

जयराम—मैं उस समय का ज़िम्मा लेता हूँ, जब आप न होंगे।

"आपका मतलब है कि मैं फ़साद करने आया हूँ?"

"जी नहीं, मैं यह नहीं कहता। परन्तु अगर आप दबदबा और कठोरता से काम लेंगे तो जनता उत्तेजित हो जायगी, तब आप पिल पड़ेंगे और दस-बीस की हड्डियाँ टूट जायँगी। यही हर एक जगह होता है और यही यहाँ भी होगा।"

दारोग़ा ज़रा और आगे आकर अङ्गरेज़ी में बोले—वकील साहब, बुरा न मानिएगा, मुझे आपसे पूरी हमदर्दी। ठेकेदार को ख़ुश करने के लिए इतना ज़रूरी था, नहीं तो यह कमबख़्त अफ़सरों के पास जाकर फ़रियाद करता। अब आप इन मूर्खों को ख़ूब समझाइए। आपकी ओर से किसी प्रकार की अशान्ति की तो कोई सम्भावना नहीं है?

जयराम ने मुस्करा कर कहा—इससे निश्चित रहिए।

दारोग़ा ने ठेकेदार से जाकर कहा—मैंने इन लोगों को डाँट बता दी है, अब ये लोग चूँ न कर सकेंगे। वहाँ खड़े बकते रहें। तुम्हारा इसमें कोई नुक़सान नहीं। कल तुमने क्या चीज़ दी थी, मज़ा नहीं आया। मेरे साथ भी चालाकी! आज ज़रा अच्छी भेजना।

ठेकेदार ने पान-सिगरेट देते हुए कहा—यह लोग इस तरह से न मानेंगे। अगर गिरफ़्तारियाँ होंगी तो और भी आग भड़केगी। कहिए तो दस-पाँच गुण्डे बुला कर इनकी मरम्मत करा दूँ। बस यही सब से अच्छी दवा है।

दारोग़ा ने सिर हिला कर कहा—नहीं, ख़बरदार! ऐसा मूर्खतापूर्ण काम कदापि न करना, नहीं तो फँस जाओगे। हाँ, अगर चाहते हो कि इसी बहाने मुझे दो-चार सौ मिलें तो जो चाहो कर सकते हो।

३

दारोग़ा चला गया तो बूढ़े चौधरी ने अपने साथी से कहा—देखा कल्लू, थानेदार कितना बिगड़ रहा था। शराब का पैसा भी तो सरकार ही लेती है।

कल्लू ने समर्थन किया—हर एक उपाय से पैसा खींचती है।

चौधरी—तो फिर क्या सलाह है, है तो बुरी चीज़। अब कुछ दिन भगवान का भजन भी करना चाहिए। मरने के दिन अब दूर नहीं हैं, यह समझ लो।

कल्लू—पके आम हैं, आज टपक जायँ, कल टपक जायँ, क्या ठिकाना?

चौधरी—अच्छा तो यह लो, आज से जो पिए उसको असलियत में फ़रक़ है।

यह कहते हुए चौधरी ने बोतल को ज़मीन पर पटक दिया। आधी शराब ज़मीन पर बह कर सूख गई। जयराम को शायद ज़िन्दगी में कभी ऐसी ख़ुशी नहीं हुई थी। ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजा कर उछलने लगे।

उसी समय दोनों ताड़ीवालों ने भी महात्मा जी की जय पुकारी और हाँडी ज़मीन पर पटक दी।

कई नशेबाज़ सड़क की पटरी पर बैठे हुए विश्वासपूर्ण दुर्बलता की दृष्टि से इन आदमियों की ओर देख रहे थे, जो दुर्बल हृदय वालों की विशेषता है। वहाँ एक भी ऐसा न था जो शराब और ताड़ी को ज़िन्दगी के लिए आवश्यक समझता हो, सभी नशे को बुरा समझते थे। केवल अभ्यास के कारण प्रतिदिन आकर पी जाते थे। चौधरी-जैसे पुराने पियक्कड़ को बोतल पटकते देख कर उनकी आँखें खुल गईं।

एक मरियल दाढ़ी वाले ने आकर चौधरी की पीठ ठोंकी। चौधरी ने उसे पीछे ढकेल कर कहा—

पीठ क्या ठोंकते हो जी, जाकर अपना बोतल पटक दो।

दाढ़ी वाले ने कहा—आज और पी लेने दे यार! अल्लाह जानता है, कल से इधर भूल कर भी न आऊँगा।

चौधरी—जितनी बची हो उसके पैसे हमसे ले लो। घर जाकर बच्चों को मिठाई खिला देना।

दाढ़ी वाले ने जाकर अपना बोतल पटक दिया और बोला—लो, अब तो हुए ख़ुश।

चौधरी—अब तो न पियोगे कभी?

दाढ़ीवाला—अगर तुम न पियोगे तो मैं भी न पीऊँगा। जिस दिन तुमने पी उसी दिन मैंने भी शुरू कर दी। चलो, अभी इन कॉङ्ग्रेस वालों की बदौलत हराम से गर्दन तो छूटी।

बाहर अभी पाँच-छः आदमी और थे। वे निर्लज्ज अपराधी की भाँति बैठे हुए अभी तक पी रहे थे। जयराम ने उनके पास जाकर कहा—आपके पाँच भाइयों ने अभी आपके सामने अपने-अपने बोतल पटक दिए। क्या आप उन्हें बाज़ी जीत ले जाने देंगे?

एक काले-कलूटे लम्ब-धड़ङ्ग आदमी, जो ख़ानसामाँ मालूम होता था, लाल-लाल आँखें निकाल कर बोला—हम पीते हैं, तुमसे मतलब? किसी से भीख माँगने तो नहीं जाते। तुम कौन होते हो बीच में बोलने वाले?

जयराम ने समझ लिया अब बाज़ी मार ली। गुमराह जब बहस पर आवे तो समझ लो रास्ते पर आ जायगा। चुप्पी का दोष वह चिकना घड़ा है, जिस पर किसी बात का असर नहीं होता।

जयराम ने पूर्ववत् नम्रता से कहा—यह आप क्या कहते हैं, भाई साहब! ईश्वर ने आपको शक्ति दी है, आप दो को खिला कर खा सकते हैं। आपके दुश्मन भीख माँगें। परन्तु मैं आप से पूछता हूँ, अगर मैं अपने घर में आग लगाऊँ तो आप मेरा हाथ न पकड़ेंगे? मैं तो समझता हूँ, आप मुझे जबर्दस्ती वहाँ से खींच कर ले जायँगे। उसी नाते से मैं भी प्रार्थना कर रहा हूँ।

चौधरी ने ख़ानसामाँ की ओर स्वीकृतिपूर्ण नज़रों से देखा, मानो कह रहा है—लो, इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है? और बोला—बस, इसी बात पर पटक दो बोतल को जमादार।

ख़ानसामाँ—बोतल क्यों पटक दूँ? क्या पैसे नहीं दिए हैं?

उसने कुल्हड़ में शराब ढाली और गट-गट पी गया। मानो कह रहा हो, मैं ऐसे कुत्तों के भूँकने की परवाह नहीं करता।

चौधरी ने अधीर होकर कहा—इन्हें छोड़िए बाबू जी, यह लोग इस तरह मानने वाले असामी नहीं हैं। आप इनके सामने जान भी दे दें तो भी ये शराब नहीं छोड़ेंगे।

ख़ानसामाँ ने चौधरी की ओर कठिन दृष्टि से देख कर कहा—तुम क्यों बीच में कूद पड़ते हो जी, मैं तो बाबू जी से बातें कर रहा हूँ। क्या समझते हो कि तुम्हीं आदमी हो और सब जानवर हैं? मैं उन आदमियों में से नहीं हूँ कि आज बोतल तोड़ दूँ और वाह-वाह हो जाए, कल फिर मुँह में कालिख लगा लूँ। यहाँ जब छोड़ देंगे, सच्चे दिल से छोड़ देंगे। फिर कोई लाख रुपए भी दे तो आँख उठा कर न देखें।

जयराम—मुझे आप लोगों से यही उम्मेद है।

चौधरी—तो तुम समझते हो, मैं कल फिर पीने आऊँगा?

ख़ानसामाँ—हाँ-हाँ, कहता हूँ, तुम आवोगे, शर्त बद कर आवोगे। कहो लिख दूँ!

चौधरी—अच्छा भाई, तुम बड़े धर्मात्मा हो, मैं पापी सही। तुम छोड़ोगे तो उमर भर के लिए छोड़ दोगे, मैं आज छोड़ कर कल फिर आऊँगा। परन्तु एक बात गिरह बाँध लो, तुम उस वक्त छोड़ोगे जब जिन्दगी तुम्हारा साथ छोड़ देगी। इसके पहले नहीं छोड़ सकते।

ख़ानसामाँ—तुम मेरे दिल का हाल क्या जानते हो?

तक़दीर के अच्छे हैं बनारस वाले!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

है जलवए[1] हक़,[2] काबए अक़्दस[3] क्या है?
आप न समझ में, तो मेरा बस क्या है?
आई है तबीयत, जो बुतों पर "बिस्मिल",
मुझसे कोई पूछे कि "बनारस" क्या है?

× × ×

दिल कहता है, अब काबए अक़्दस देखो,
जलवा है इलाही का, वहीं बस देखो!
मञ्ज़ूर जो दर्शन हो बुतों का "बिस्मिल",
"प्रयाग" से तुम चल के "बनारस" देखो!

× × ×

यह राय बजा, हर कसोनाक़स की है,
इज़्ज़त बहुत, इस अर्ज़े[4] मुक़द्दस की है,
है जलवए हक़, जलवए बुत ऐ "बिस्मिल",
दुनिया में, बड़ी धूम "बनारस" की है!

× × ×

मख़सूस[5] हैं वह पुन, के लिए जस के लिए,
जो हैं शरफ़,[6] इस अर्ज़े मुक़द्दस के लिए!
क्यों घर से न चलता, सरे शाम ऐ "बिस्मिल",
बेचैन था मैं, सुबह "बनारस" के लिए!

× × ×

पुन वाले कहो, इनको कहो जस वाले,
सब कुछ हैं, इस अर्ज़े मुक़द्दस वाले।
मिलता है बुतों का, इन्हें दर्शन "बिस्मिल"
तक़दीर के अच्छे हैं "बनारस" वाले!

१—ज्योति, २—ईश्वर, ३—पाक, ४—ज़मीन, ५—विशेष ६—बड़प्पन।

चौधरी—जानता हूँ, तुम्हारे जैसे सैकड़ों को देख चुका हूँ।

ख़ानसामाँ—तो तुमने ऐसे-वैसे बेशर्मों को देखा होगा। हयादार आदमियों को न देखा होगा।

यह कहते हुए उसने बोतल को नाली में फेंक दिया और बोला—अब इस दूकान पर कभी खड़े देखना तो मुह पर थूक देना।

चारों ओर से तालियाँ बजने लगीं। मर्द ऐसे होते हैं।

ठेकेदार ने दूकान से उतर कर तमाशाइयों से कहा—तुम लोग अपनी-अपनी दूकान पर क्यों नहीं जाते? मैं तो किसी की दूकान पर नहीं जाता।

एक तमाशाई ने कहा—खड़े हैं तो तुमसे मतलब? सड़क तुम्हारी नहीं है। तुम ग़रीबों को लूटे जाओ। किसी के बाल-बच्चे भूखों मरें; तुम्हारा क्या बिगड़ता है। (दूसरे शराबियों से) क्यों यारो, अब भी पीते जाओगे? जानते हो, यह किसकी आज्ञा है? अरे कुछ तो शरम करो।

जयराम ने तमाशाइयों से कहा—भाइयो, आप लोग यहाँ भीड़ न लगाएँ और न किसी को बुरा-भला कहें।

परन्तु तमाशाइयों की भीड़ बढ़ती जाती थी। अभी तक चार-पाँच आदमी सांसारिक झञ्झटों से बेख़बर बैठे कुल्हड़ पर कुल्हड़ चढ़ा रहे थे। एक मनचले तमाशाई ने जाकर इनका बोतल उठा लिया और उसे ज़मीन पर पटकना चाहता था कि वे चारों उठ कर उसे पीटने लगे। जयराम और उनके स्वयंसेवक फ़ौरन वहाँ पहुँच गए और उसे बचाने की कोशिश करने लगे कि चारों उसे छोड़ कर इन लोगों की ओर लपके। तमाशाइयों ने देखा कि जयराम इन दुष्टों का लक्ष्य बना चाहते हैं, तो कई आदमी झल्ला कर उन शराबियों पर टूट पड़े। लात, घूँसे, जूते चलने लगे। जयराम को इसका अवसर ही न मिलता था, कि वह लोगों को समझाए। वह दोनों हाथ फैलाए इन चारों आदमियों को आक्रमण से बचा रहा था। वे चारों भी नशे में आपे से बाहर होकर तमाशाइयों पर डण्डे चला रहे थे। जयराम दोनों ओर से मार खाता था। शराबी भी उसे मारते थे और तमाशाई भी। परन्तु वह उनके बीच से हटता न था। अगर वह इस समय अपनी जान बचा कर हट जाता तो शराबियों के लिए कुशल न थी; उनकी चटनी हो जाती और सारी ज़िम्मेदारी कॉङ्ग्रेस पर आती। कॉङ्ग्रेस को इस कलङ्क से बचाने के लिए यह अपनी जान तक देने को तैयार था। श्रीमती सकसेना को अपने ऊपर हँसने का अवसर न देना चाहता था।

शराबियों में एक बड़ा ही मुँहफट था। वह बार-बार भीड़ वालों को गालियाँ देता था। परन्तु जब उस पर आक्रमण होता तो जयराम बीच में आ जाता था। अन्त में एक तमाशाई ने झल्ला कर उस पर लकड़ी चलाई। उसने चेष्टा तो की कि जयराम को बचा ले, परन्तु जयराम फिर बीच में आ गया और लकड़ी उसके सिर पर भरपूर पड़ गई। सिर फट गया और रक्त की धारा बहने लगी। वह सिर थाम कर बैठ गया। आँखों के आगे तितलियाँ उड़ने लगीं। फिर उसे होश न था।

४

जयराम को उठा कर लोग उसके घर ले गए। वह सारी रात बेहोश पड़ा रहा। डॉक्टर ने घाव की मरहम-पट्टी की। प्रातःकाल जब उसे होश आया तो समस्त शरीर में पीड़ा थी और दुर्बलता इतनी थी कि रह-रह कर उसका जी डूब जाता था। कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता उसे देखने के लिए आकर लौट चुके थे। अन्त में नौ बजे श्रीमती सकसेना आईं। उन्हें देखते ही स्वयंसेवकों के मना करने पर भी जयराम उठ बैठा उस समय न दर्द था और न दुर्बलता। उसके प्रत्येक अङ्ग से उत्साह और प्रसन्नता टपक रही थी।

श्रीमती सकसेना ने उसके माथे पर हाथ फेर

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए, इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य केवल १) ; स्थायी ग्राहकों से ॥)

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं ; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २) ; स्थायी ग्राहकों से १॥)

विधवा-विवाह-मीमांसा

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार भीषण अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल ३)

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें असहाय तथा विपदावस्था में पाकर किस प्रकार ईसाई और मुसलमान अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य ॥)

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसीसे इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी सी प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य ।)

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक इलाहाबाद

कर कहा—आपको बड़ी चोट लगी। रात ही भर में चेहरा पीला पड़ गया है।

जयराम ने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—चोट तो ऐसी न थी। इन लोगों ने व्यर्थ ही पट्टी-सट्टी बाँध कर जख़्मी बना दिया।

श्रीमती सकसेना ने दुःख प्रकट करते हुए कहा—मुझे वहाँ मौजूद रहना चाहिए था। परन्तु मुझे इस बात का बिल्कुल अन्देशा न था।

जयराम—आपका वहाँ जाना उचित न था।

श्रीमती—वाह, कल से कॉङ्ग्रेस ने मेरा जाना स्वीकार कर लिया है।

जयराम—मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि वहाँ न जाइएगा। शोहदों के लिए आवाज़ें कस देना बिल्कुल साधारण बात है।

"मैं आवाज़ों की परवाह नहीं करती।"

"तो मुझे भी आपके साथ चलना पड़ेगा।"

श्रीमती सकसेना ने आश्चर्य से कहा—आप! इस अवस्था में चलिएगा?

"मैं बिल्कुल अच्छा हूँ। आपसे सच कहता हूँ।"

"यह असम्भव है, जब तक डॉक्टर यह न कह देगा कि आपको कोई भय नहीं है, उस समय तक मैं आपको न जाने दूँगी।"

जयराम ने हताश भाव से कहा—जैसी आपकी इच्छा!

५

सन्ध्या को श्रीमती सकसेना चार स्वयंसेवकों के साथ बेगमगञ्ज चलीं। जयराम आँखें बन्द किए चारपाई पर पड़ा था। नीचे शोर सुन कर चौंका और पत्नी से पूछा—यह कैसा शोर है?

पत्नी ने खिड़की से नीचे झाँक कर कहा—वही मिसेज़ सकसेना चार स्त्रियों के साथ झण्डी लिए जा रही हैं।

जयराम ने कुहनियों के बल बैठ कर कहा—पिकेटिङ्ग करने जा रही होंगी।

यह कह कर वह एक मिनिट तक चुप बैठा कुछ सोचता रहा। फिर उठ खड़ा हुआ और बोला—मैं भी वहीं जा रहा हूँ।

पत्नी ने उसका हाथ थाम कर कहा—अभी कल मार खाकर आए हो, आज फिर जाने की सूझी!

जयराम ने हाथ छुड़ा कर कहा—तुम इसे मार कहती हो, मैं इसे पुरस्कार समझता हूँ।

पत्नी ने उसका रास्ता रोक कर कहा—कहती हूँ, तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है, मत जाओ। क्यों मेरी जान के गाहक हुए हो। उनके बदन में हीरे नहीं जड़े हैं, जो वहाँ कोई नोच लेगा।

जयराम ने मिन्नत करके कहा—मेरी तबीयत बिल्कुल अच्छी है चम्पा! अगर कुछ कसर है तो वहाँ जाने से वह मिट जायगी। भला सोचो, यह कैसे सम्भव है कि एक देवी उन शोहदों के बीच में पिकेटिङ्ग करने जाय और मैं बैठा रहूँ। मेरा वहाँ रहना ज़रूरी है। कम से कम मैं लोगों को समझा तो सकूँगा।

चम्पा देवी ने जल कर कहा—यह क्यों नहीं कहते कि वहाँ कोई और ही चीज़ खींचे लिए जा रही है।

जयराम ने मुस्करा कर पत्नी की ओर देखा। मानो कह रहा हो, यह बात तुम्हारे दिल से नहीं, मुँह से निकल रही है और कतरा कर बाहर निकल गया। फिर दरवाज़े पर खड़ा होकर बोला—इस शहर में तीन लाख से कुछ कम आदमी हैं, पर इस समय सब के सब जी चुरा रहे हैं। लोगों को अच्छा बहाना मिल गया है कि शराबख़ानों पर धरना देने के लिए औरतों की ही ज़रूरत है। आख़िर, क्यों औरतें ही को इस काम के लिए उपयुक्त समझा जाता है? इसीलिए कि मर्दों के सिर कभी-कभी क्रोध का भूत सवार हो जाता है और जहाँ नम्रता और प्रार्थना से काम लेना चाहिए वहाँ लोग सख़्ती से काम लेने लगते हैं। मैं मर्दों के हाथों से इस बहाने को छीन लेना चाहता हूँ। हमारी देवियाँ इसलिए नहीं हैं कि वह शोहदों की बोलियाँ सुनें और उनकी निर्लज्ज दृष्टियों का लक्ष्य बनें। कम से कम मैं यह नहीं देख सकता।

फ़्रान्स के दो प्रमुख प्रिमियर

जिन्हें गवर्नमेंट की नीति से मतभेद होने के कारण त्यागपत्र देने को बाध्य किया गया था।

वह लँगड़ाता हुआ घर से निकल पड़ा। चम्पा ने उसे फिर रोकने की चेष्टा नहीं की। रास्ते में एक स्वयंसेवक मिल गया। जयराम ने उसे साथ ले लिया और एक ताँगे पर बैठ कर चला। शराबख़ाने से इधर ही एक लेमोनेड-बरफ़ की दूकान थी। जयराम ने ताँगे को वहीं छोड़ दिया और स्वयंसेवक को शराबख़ाने भेज स्वयं उसी दूकान में जा बैठा।

दूकानदार ने आइसक्रीम का एक गिलास उसे देते हुए कहा—बाबू जी कल वाले चारो बदमाश आज फिर आए हैं। आपने न बचाया होता तो आज शराब और ताड़ी की जगह हल्दी और गुड़ पाते होते।

जयराम ने उसे तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देख कर कहा—"तुम लोग बीच में न कूद पड़ते तो मैं उनसे शराब न पीने की प्रतिज्ञा करा लेता।"

दूकानदार ने इस कथन का विरोध किया—"नहीं, बाबू जी, वह सब छटे हुए शोहदे हैं। मैं तो उन्हें दूकान पर खड़ा नहीं होने देता। चारो तीन-तीन साल की मीयाद काट आए हैं। मैं तो उन्हें ख़ूब जानता हूँ।

अभी बीस मिनिट भी न बीते थे कि वही स्वयंसेवक आकर खड़ा हो गया। जयराम ने चिन्तित भाव से पूछा—क्यों, वहाँ क्या हो रहा है?

स्वयंसेवक ने ऐसा मुँह बना लिया, मानो वहाँ की अवस्था का वर्णन करना वह उचित नहीं समझता। वह बोला—कुछ नहीं, देवी जी लोगों को समझा रही हैं।

जयराम ने आग्रह से उसकी ओर देखा, मानो कह रहा हो, बस, इतना ही? इतना तो मैं जानता ही था।

स्वयंसेवक ने एक मिनिट के बाद फिर कहा—देवियों का ऐसे शोहदों के सामने जाना अच्छा नहीं।

जयराम ने डाँट कर कहा—तुम साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते, क्या बात है?

स्वयंसेवक ने डरते-डरते कहा—सब उनसे दिल्लगी कर रहे हैं। देवियों का यहाँ आना अच्छा नहीं।

जयराम ने और कुछ न पूछा और लाल-लाल आँखें किए फ़ौरन बिजली की तरह दौड़ कर शराबख़ाने के पास जा पहुँचा और श्रीमती सकसेना को हाथ पकड़ कर हटाता हुआ, उन चारो आदमियों के सामने जाकर बोला—अगर तुमने देवियों के साथ ज़रा भी गुस्ताख़ी की तो तुम्हारे लिए बुरा होगा। कल मैंने तुम्हारी जान बचाई थी, आज इसी डण्डे से तुम्हारा सिर तोड़ दूँगा।

उसके बदले हुए तेवर देख कर नशेबाज़ घबरा गए। वे कुछ कहना चाहते थे कि श्रीमती सकसेना ने गर्वित स्वर में पूछा—मैंने तो आपको मना किया था, आप क्यों यहाँ आ गए?

जयराम ने सङ्कुचित होकर उत्तर दिया—इस इच्छा से नहीं आया था। एक कार्यवश इधर आया था और जमाव देख कर यहाँ आ गया। मेरे ख़याल में आप अब यहाँ से चलें। मैं आज कॉङ्ग्रेस कमिटी में प्रस्ताव उपस्थित करूँगा कि पिकेटिङ्ग करने के लिए पुरुष ही भेजे जायँ।

श्रीमती सकसेना ने तन कर कहा—आपके ख़याल में संसार के सारे काम मर्दों ही के लिए हैं।

जयराम—मेरा यह आशय न था।

श्रीमती सकसेना ने आज्ञा देने के ढङ्ग से कहा—तो आप जाकर आराम से लेटें और मुझे अपना काम करने दें।

जयराम वहीं सिर झुकाए खड़ा रहा। श्रीमती सकसेना ने पूछा—आप क्यों खड़े हैं?

जयराम ने गिड़गिड़ा कर कहा—मैं भी एक ओर खड़ा रहूँगा।

श्रीमती ने तीक्ष्ण स्वर में कहा—जी नहीं, आप यहाँ नहीं खड़े रह सकते।

जयराम किसी लदी हुई गाड़ी की तरह धीरे-धीरे चला और आकर फिर उसी लेमोनेड-बरफ़ की दूकान पर बैठ गया। फिर उसने एक गिलास शर्बत बनवाया और उसे सामने मेज़ पर रख कर विचारों में डूब गया। परन्तु आँखें और कान उसी तरफ़ लगे हुए थे। जब कोई दूकान में आ जाता, वह उसकी ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगता।

कोई आध घण्टे बाद वही स्वयंसेवक फिर डरा हुआ सा आकर उसके सामने खड़ा हो गया। जयराम ने अधीर होकर पूछा—वहाँ की क्या ख़बर है?

स्वयंसेवक ने कानों पर हाथ रख कर कहा—कुछ नहीं जानता बाबू जी, मुझसे न पूछिए।

जयराम ने उसकी ओर आज्ञा और नम्रता मिली हुई दृष्टि से देख कर पूछा—फिर कोई वारदात तो नहीं हुई?

स्वयंसेवक—जी नहीं, वारदात तो कोई नहीं हुई। वही चारों आदमी हैं। एक आदमी ने देवी जी को धक्का दे दिया, वे गिर पड़ीं!

जयराम के चेहरे का रङ्ग उड़ गया। एक मिनिट तक सन्नाटे में आकर वह बैठा रहा। परन्तु हृदय में एक अशान्ति जारी थी। लम्बी साँस लेकर बोला—उनके साथ के स्वयंसेवक क्या कर रहे हैं?

स्वयंसेवक—खड़े हैं, देवी जी उन्हें बोलने ही नहीं देतीं।

"तो क्या बड़े ज़ोर से धक्का दिया?"

"जी हाँ, गिर पड़ीं, घुटनों में चोट आ गई। जब एक बोतल समाप्त हो गया और उनमें से एक आदमी दूसरा बोतल लेने चला तो देवी जी ने उसका रास्ता रोक लिया। बस, उसने धक्का दे दिया। वही जो काला-कलूटा मोटा-सा आदमी है।

जयराम विक्षिप्त की तरह वहाँ से उठा और दौड़ता हुआ शराबख़ाने के सामने आया। श्रीमती सकसेना सिर थाम कर ज़मीन पर बैठी हुई थीं और वह काला मोटा आदमी दूकान के कठघरे के सामने खड़ा था। पचासों आदमी एकत्र थे। जयराम ने उसे देखते ही लपक कर उसकी गर्दन पकड़ ली और इतने ज़ोर से दबाई कि उसकी आँखें बाहर निकल आईं। मालूम होता था, उसके हाथ फ़ौलाद के हो गए हैं।

एकाएक श्रीमती सकसेना बिजली की तरह चमक कर आईं और उसका फ़ौलादी हाथ पकड़ कर बोलीं—छोड़ दो इसकी गर्दन, क्या जान ले लोगे?

जयराम ने और ज़ोर से गर्दन दबा कर कहा—हाँ ले लूँगा, ऐसे बदमाशों की यही सज़ा है।

श्रीमती सकसेना ने क्रुद्ध होकर कहा—आपको यहाँ आने का कोई अधिकार नहीं है।

एक तमाशा देखने वाला बोला—ऐसा दबाओ बाबू जी कि साला ठण्डा हो जाय, उसने देवी जी को ऐसा ढकेला कि बेचारी गिर पड़ीं। हमें तो बोलने की आज्ञा ही नहीं है, नहीं तो हड्डी तोड़ कर रख देते।

जयराम ने शराबी की गर्दन छोड़ दी। वह किसी बाज़ के चङ्गुल से छुटी हुई चिड़िया की तरह सहमा खड़ा था। उसे एक धक्का देकर जयराम ने श्रीमती सकसेना से कहा—आप यहाँ से जातीं क्यों नहीं? मैं अपनी ज़िम्मेदारी पर यहाँ बैठता हूँ। अगर एक बूँद शराब भी बिक जाय तो मेरा कान पकड़ लीजिएगा।

जयराम का दम फूल रहा था और आँखों के सामने तितलियाँ उड़ रही थीं। वह खड़ा न रह सका। ज़मीन पर बैठ कर रूमाल से माथे का पसीना पोंछने लगा।

श्रीमती सकसेना ने व्यंग्य से कहा—यहाँ कॉङ्ग्रेस नहीं है कि मैं आपकी आज्ञा मानूँ। अगर आप यहाँ से न जायँगे तो मैं आप पर सत्याग्रह करूँगी।

फिर एकाएक तीव्र स्वर में बोलीं—जब तक कॉङ्ग्रेस ने मुझे इस काम का चार्ज दिया है, आपको मेरे बीच में बोलने का कोई हक़ नहीं है। आप मुझे लज्जित और अपदस्थ कर रहे हैं। कॉङ्ग्रेस कमिटी के सामने आपको इसका जवाब देना पड़ेगा।

बच्चा होने के नज़र आते हैं, आसार मुझे

[जनाब "इज़्ज़त" बरेलवी]

गालियाँ देते हैं, दुश्मन सरे-बाज़ार मुझे,
क्यों न फिर आएँ नज़र, मौत के आसार मुझे!
शिकवए[1]-ग़ैर पे, नाहक़ न करो ख़्वार[2] मुझे,
उल्टी-सीधी न सुनाओ मेरे सरकार मुझे!
मोटे होने की कोई हद है, बताओ तो सही,
बच्चा होने के नज़र आते हैं, आसार मुझे!
एक दिन 'सोने की चिड़िया', जो उन्हें मैंने कहा,
वह उसी रोज़ से कहते हैं, 'चिड़ीमार' मुझे!
अक्सर उनकी जो मैं तारीफ़ किया करता हूँ,
वह 'गज़ट' कहते हैं, मुझको कभी 'अख़बार' मुझे!
जोंक बन-बन के मेरा, उसने लहू चूस लिया,
बात करता नहीं, अब जान के बेकार मुझे!
इश्क़ में जाय न इज़्ज़त कहीं मेरी "इज़्ज़त,"
मेरे दुश्मन न करें, मुफ़्त कहीं ख़्वार मुझे!

१—चुग़ली, २—ज़लील,

जयराम यह अभियोग सुन कर तिलमिला उठा। श्रीमती सकसेना इतनी निर्दय हैं, इसका उसे ख़याल भी न था। वाह, यहाँ होम करते हाथ जलते हैं। मैंने तो सोचा, क्यों इन्हें बदमाशों से गालियाँ सुनवाऊँ और आप कहती हैं कि तुम मुझे लज्जित और अपदस्थ करते हो। लीजिए, प्रसन्नता से गालियाँ खाइए, मुझे क्या ग़रज़ पड़ी है कि आपके बीच में बोलूँ!

यों सोचता हुआ वह तेज़ी से पग उठाता घर की ओर चला। परन्तु ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता था, उसकी चाल सुस्त पड़ती जाती थी। यहाँ तक कि बाज़ार के दूसरे सिरे पर आकर वह रुक गया। रस्सी यहीं समाप्त हो गई। इसके आगे जाना उसके लिए असम्भव हो गया। जिस झटके ने उसे यहाँ तक पहुँचाया था, उसका बल अब समाप्त हो चुका था। उन शब्दों की तीव्रता में उसे सहानुभूति और आन्तरिकता का अनुभव हो रहा था। उसे फिर चिन्ता हुई कि न जाने वहाँ क्या हो रहा होगा। कहीं उन बदमाशों ने कोई और हरकत न की हो, अथवा पुलिस न आ गई हो।

वह फिर बाज़ार की ओर मुड़ा। परन्तु थोड़ी दूर जाकर ठिठक गया। ऐसे पसोपेश में वह कभी न पड़ा था।

एकाएक वही स्वयंसेवक फिर दौड़ता हुआ आया। जयराम बदहवास होकर उससे मिलने के लिए स्वयं भी उसकी ओर दौड़ा। जयराम ने हाँफते हुए पूछा—क्या हुआ? क्यों भागे आ रहे हो?

स्वयंसेवक ने दम लेकर कहा—वहाँ अनर्थ हो गया बाबू जी, वह काला शराबी आपके चले आने के बाद बोतल लेकर चला तो देवी जी दरवाज़े पर बैठ गईं। वह बार-बार देवी जी को हटा कर निकलना चाहता है और वह आकर बैठ जाती हैं। धकम-धक्के में उनके कपड़े फट गए हैं और कुछ चोट भी......!

अभी बात पूरी भी न हुई थी कि जयराम शराबख़ाने की ओर दौड़ा।

६

जयराम शराबख़ाने के पास पहुँचा तो देखा, चारों स्वयंसेवक दूकान के सामने लेटे हुए हैं और श्रीमती सकसेना सिर झुकाए एक किनारे खड़ी हैं, जयराम ने डरते-डरते उनके चेहरे पर निगाह डाली। आँचल पर रक्त के चिन्ह दिखाई पड़ रहे थे। जयराम को फिर कुछ सुध न रही। रक्त की दो बूँदें जैसे उसके सिर पर सवार होकर उसके सहायता के भावों को उकसाने लगीं। रक्त की वे चिनगारियाँ उसके एक-एक अवयव में समा गईं। वह उन चारों शराबियों पर टूट पड़ा और पूरे बल के साथ लाठी चलाने लगा। रक्त में इतनी उत्तेजना है, उसे इसकी ख़बर न थी।

वह पूरे बल के साथ लाठी चला रहा था। श्रीमती सकसेना कब उसके सामने आकर खड़ी हो गईं, इसकी उसे कुछ भी ख़बर न हुई। जब वह ज़मीन पर गिर पड़ीं तब उसे होश हुआ। उसने लाठी फेंक दी और किंकर्तव्य-विमूढ़ होकर खड़ा हो गया। मानो उसके शरीर का रक्त-प्रवाह रुक गया हो।

चारों स्वयंसेवकों ने दौड़ कर श्रीमती सकसेना को पङ्खा झलना आरम्भ किया। दूकानदार ठण्डा पानी लेकर दौड़ा। एक दर्शक डॉक्टर को बुलाने दौड़ा। परन्तु जयराम वहीं चुपचाप निर्जीव की भाँति खड़ा था। मानो पश्चात्ताप का पुतला बन गया हो। अगर उस समय कोई उसके दोनों हाथ काट डालता, उसकी आँखें लाल सलाई से फोड़ देता तो वह ज़रा भी रुकावट न डालता। फिर वहीं सड़क पर बैठ कर उसने लज्जा और घृणा से अपना सिर ज़मीन पर पटक दिया और बेहोश हो गया।

उसी समय काले मोटे शराबी ने अपना बोतल ज़मीन पर पटक दिया और जयराम के सिर पर ठण्डा पानी डालने लगा।

एक शराबी ने ठेकेदार से कहा—तुम दस-पाँच की जान लेकर रहोगे। आज तो दूसरा ही दिन है।*

*'नैरङ्गे ख़याल' से

* * *

इंगलैण्ड का सब से बुरा साल—सन् १९३०

भारतीय आन्दोलन का असर :: "लङ्काशायर का व्यापार चौपट हो गया"

"हमारा व्यापार एकदम घट गया है, हमारे कारख़ाने बन्द पड़े हैं और बेकारी के कारण हमारी सरकार का दिवाला-सा निकला जा रहा है।"

[इङ्गलैण्ड के एक सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत ए० जी० गार्डिनर ने "जॉनबुल" नामक समाचार-पत्र में एक लेख दिया है, जिसमें उन्होंने संक्षेप में इङ्गलैण्ड के पिछले साल का सिंहावलोकन किया है। उसे हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ यहाँ देते हैं।

—स० "भविष्य"]

इस साल हमें नुक़सान ही नुक़सान उठाना पड़ा है। गत महायुद्ध के बाद इङ्गलैण्ड के लिए और कोई वर्ष इतना ख़राब नहीं गुज़रा है। यही नहीं, मेरे स्मरण भर में शायद ही कोई ऐसा वर्ष बीता होगा, जिसमें हमें इतनी हानि उठानी पड़ी हो। इस वर्ष में तो हमें हर तरह से हानि ही हानि पहुँची है। ऐसी एक भी बात नहीं हुई, जिसे देख कर हम यह कह सकें कि सन् १९३० ई० में हमें यह लाभ हुआ है। हमें इङ्गलैण्ड की आर्थिक दशा सम्बन्धी रिपोर्ट के निरीक्षण करने से मालूम होता है कि हमारा व्यापार एकदम घट गया है, हमारे कारख़ाने बन्द पड़े हैं और बेकारी के कारण हमारी सरकार का दिवाला-सा निकला जा रहा है।

व्यापार को धक्का

इस वर्ष के आरम्भ ही से हमारे लेन-देन का व्यापार घटने लगा था। औद्योगिक शिथिलता का आरम्भ होते ही इस देश के निवासियों में तथा विदेश में अविश्वास फैलने लगा था। और यही के कारण चीज़ों का मूल्य एकदम गिरने लगा था। आर्थिक विचार से इङ्गलैण्ड को इस वर्ष के आरम्भ से अन्त तक करोड़ों पौण्ड की हानि उठानी पड़ी है।

वास्तव में इङ्गलैण्ड को अपने औद्योगिक जीवन में इस साल जैसी क्षति उठानी पड़ी है, वैसी उसने पहले कभी नहीं उठाई थी। इस साल बेकारों की संख्या एकदम बढ़ गई। आज इङ्गलैण्ड में १० लाख से अधिक मज़दूर बेकार पड़े हैं। हमारे हज़ारों कारख़ाने पूरी तरह से काम नहीं कर रहे हैं। करें भी कैसे? इनकी चीज़ों की माँग एकदम गिर गई है।

सरकार कठिनाई में

इधर हमारी सरकार भी बड़ी अड़चन में पड़ी हुई है। एक ओर तो व्यापार घट रहा है, जिसके फल-स्वरूप सरकार की आमदनी गिर गई है, और दूसरी ओर बेकारों की पेन्शनों के बढ़ जाने के कारण बहुत ख़र्च बढ़ गया है। और उधर टैक्स बढ़ जाने के कारण व्यापारी लोग कहते हैं कि हम अपने कारख़ानों की दशा नहीं सुधार सकते। व्यापार के इस अवनति के समय में व्यवसाय बढ़ाने का केवल एक उपाय है, वह है कारख़ानों का सुधार तथा नवीन आविष्कारों का उपयोग। परन्तु इन सब के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता धन की है, जिसकी आजकल बहुत कमी है।

अन्य हानियाँ

केवल यही नहीं, और बहुत सी छोटी-छोटी बातों में भी हमें नुक़सान उठाना पड़ा है। वायुयान के क्षेत्र में हम लोगों ने काफ़ी उन्नति की है। किङ्ग्स्फ़ोर्ड स्मिथ तथा मिस एमी जॉन्सन के साहसपूर्ण कार्यों ने आज संसार में हमारा मस्तक ऊँचा किया है, परन्तु इस क्षेत्र में भी हमें एक महान आपत्ति उठानी पड़ी है। 'आर १०१' का इसी साल में विनाश हुआ, जिसमें हमारे देश के कितने ही महान पुरुषों के प्राण चले गए।

खेल में भी इस साल हमारी बुरी तरह से पराजय हुई है। गोल्फ़, टेनिस तथा क्रिकेट आदि किसी खेल में भी हमने विजय प्राप्त नहीं की है।

भारतीय आन्दोलन का असर

इन सबका हमारे व्यापार पर असर अवश्य पड़ा है। परन्तु हमें तो भारतीय आन्दोलन से विशेष हानि पहुँची है। भारत में आज एक ऐसा आन्दोलन चल रहा है, जो कि आज तक कभी नहीं उठा था। विदेशी वस्त्र-बहिष्कार के कारण लङ्काशायर के कारख़ानों में ताले पड़ गए हैं, लङ्काशायर की औद्योगिक दशा केवल भारत ही पर निर्भर है। बहिष्कार-आन्दोलन के कारण लङ्काशायर का व्यापार बिलकुल चौपट हो गया है।

भावी युद्ध का भय

इस वर्ष यूरोप के राजनैतिक क्षेत्र में भी कोई उन्नति नहीं हुई है। उन्नति के बजाय यदि कहा जावे कि इस ओर यूरोप की दशा गए साल से और ख़राब हो गई है, तो इसमें कुछ अत्युक्ति न होगी। निःशस्त्रीकरण के सारे उपाय बिलकुल निष्फल हुए हैं और निःशस्त्रीकरण के बिना हमें स्थायी शान्ति की कोई आशा नहीं है। फ़्रान्स ने निःशस्त्रीकरण करना अस्वीकार किया है। इसके फल-स्वरूप जर्मनी में आज गरम दल ज़ोर पकड़ रहा है। इस सब से एक बात अब बिलकुल स्पष्ट हो जाती है कि जर्मनी अब वरसाइल की सन्धि की अन्यायपूर्ण शर्तों को ज़्यादा दिन तक स्वीकार नहीं कर सकता। और यदि फ़्रान्स ने शीघ्र ही अपनी नीति में परिवर्तन न किया, तो अब युद्ध में देर नहीं है।

* * *

अन्धी की बात

[श्री० वाचस्पति पाठक]

तुम मेरे निकट हो।

सब यही कहते हैं, मुझे भी विश्वास है प्रभो!

मैं तुमको पहचानती नहीं, देखती नहीं, अन्धी हूँ। तुम इस विश्वास को क्यों नष्ट करते हो?

उस दिन तुम्हारे उस परिचर ने भी तो कहा था—'तू अन्धी है।' मैं इन झूठी, केवल खुलने और बन्द होने वाली दृष्टिहीन आँखों से तुम्हें कभी न देख पाऊँगी।......इससे क्या, तुम्हारी वाणी तो मैं सुनती हूँ। उससे मेरा हृदय जैसे मधु से भर जाता है। मैं बार-बार उसमें मक्खी की नाईं डूबती हूँ नाथ! मैं उस अन्धकार के अतल में कितनी व्याकुलता से, जीवन से ओत-प्रोत हो जाती हूँ; जानते हो?

और हाँ—तुम्हारा स्पर्श भी तो पाती हूँ। कितना पुलकमय! भले ही मैं अन्धी हूँ, नहीं तो उसमें समा जाने का जो आनन्द मैं अनुभव करती हूँ—वह पाती?......हाय रे मेरा छिछोरापन। यह मेरे अन्धेपन का दोष नहीं। क्षमा करना।

तुम मुझ अन्धी की अन्धी सन्तान को भी अपने बाहुओं पर उठा कर खेलाते, दुलारते और प्यार करते हो। मैं देखती नहीं, पर जब उन्हें अपने से अलग खिलखिला कर हँसते, किलकारी मारते सुनती हूँ, तब मैं जैसे तुम हो जाती हूँ। मुझे जान पड़ता है, वे जैसे मेरे ही हाथों में अपने दोनों पैर ऊपर उठाए चिपट पड़े हैं। यह मेरा क्रूर, अकरुण अन्धकार कैसा विश्वासमय है, जैसे यह तुम्हारी छाया है।

नाथ......!

* * *

लन्दन पे रही निगाह सबकी

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

बदलेगी, कभी निगाह सबकी,
मिट्टी हुई है, तबाह सबकी।
निकला न वहाँ से कुछ नतीजा,
लन्दन पे रही निगाह सबकी।
समझे थे, कि आह में असर है,
बेकार गई है आह सबकी।
दुनिया में एक इनक़लाब होगा,
लो फिर गई अब निगाह सबकी।
'स्पीच' जो दे रहे थे साहेब,
हम सुनते थे 'वाह-वाह' सबकी।
उम्मीद है राह पर अब आएँ,
हम देख रहे हैं राह सबकी।
लाएगी यह कोई रङ्ग "बिस्मिल",
डूबी है असर में आह सबकी।

१८८० और १९३०

आज सारा संसार विषम अर्थ-सङ्कट में पड़ गया है। वस्त्राभाव और अन्नाभाव के कारण चारों ओर हाहाकार मचा है। चारों ओर से अर्द्धाशन और अनशन की करुण-कहानी सुनाई दे रही है। बाजार में चीजों का अभाव नहीं है, परन्तु कोई ख़रीदार नहीं दिखाई देता। अर्थाभाव के कारण रुपए की चीज़ कोई चार आने को भी नहीं पूछता। गोदामों में माल भरा पड़ा है। कृषि की चीजें, विलास-सामग्री और शिल्प-सामग्री से बाज़ार भरा पड़ा है, परन्तु न आमदनी है और न रफ़्तनी। सारा व्यवसाय-वाणिज्य बन्द पड़ा है। मिलों और कारख़ानों के दरवाज़ों में ताले लग गए हैं। कारीगरों और मजदूरों का दल बेकार इधर-उधर मारा-मारा फिर रहा है। देहातों की अवस्था तो और भी ख़राब हो रही है। दिन-दहाड़े चोरियाँ और डकैतियाँ होती हैं। अन्नाभाव और अस्वास्थ्यकर जलवायु के कारण बेचारे देहाती नाना प्रकार के रोगों के शिकार बन रहे हैं। अर्थाभाव के कारण चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं हो रहा है। कितने ग़रीब बिना चिकित्सा के ही मर रहे हैं। परन्तु इसके प्रतिकार का उपाय क्या है?

यह शोचनीय दशा केवल भारतवर्ष की ही नहीं, बल्कि सारे संसार की है। यूरोप, अमेरिका तथा एशिया आदि कोई देश इस विपत्ति से नहीं बचा है। आज से ५० वर्ष पहले, सन् १८८० में भी ऐसी ही दशा हो गई थी। उस समय इङ्गलैण्ड में राजसिंहासन पर महारानी विक्टोरिया थीं। ज़ूलू-समर समाप्त हो चुका था। ग्रेट ब्रिटेन में दुर्भिक्ष फैल गया था। सामाजिक जीवन नष्ट हो गया था, और आर्थिक अवस्था का तो ज़िक्र ही फ़िज़ूल है। काम की कमी के कारण लोग मारे-मारे फिर रहे थे। भूख के मारे 'हा अन्न! हा अन्न!' चिल्ला रहे थे। अकाल के कराल काल से बचने की कोई आशा न थी। सभी सहायहीन, आशाहीन और धैर्यहीन हो गए थे।

१८७८ में पानी न बरसने के कारण फ़सल नहीं हुई थी। इसलिए व्यवसाय-वाणिज्य की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई थी। समस्त ग्रेट-ब्रिटेन में मानो महामारी फैल गई थी। बाजार बन्द, कारख़ाने बन्द, मिलें बन्द! किसी के हाथ में कोई काम नहीं। इसी समय अङ्गरेज़ों का मशहूर त्योहार बड़ा दिन आया। लोगों की अवस्था और भी ख़राब हो गई। प्रजा की ऐसी दशा देख कर महारानी विक्टोरिया को बड़ा कष्ट हुआ। उन्होंने कॉर्नवाल के एक पादरी को एक पत्र लिखा। पादरी ने उनसे कुछ रुपए भेज देने की प्रार्थना की थी। महारानी ने लिखा था—"देश के नाना स्थानों से मेरे पास सहायता के लिए पत्र आए हैं। परन्तु मैं व्यक्तिगत भाव से किसी की सहायता करने में अक्षम हूँ। परन्तु किस तरह सारे देश की दुर्दशा दूर की जा सकती है, यही सोच रही हूँ।"

लङ्काशायर तथा अन्यान्य व्यवसाय-प्रधान स्थानों की दशा तो और भी ख़राब थी। सङ्घबद्ध भाव से सहायता पहुँचाने की कोई तदबीर नहीं हो सकी। बुभुक्षित नर-नारियों का दल रास्तों में फिर रहा था। दूकानों में, जँगलों के पास, लोगों के देखने के लिए जो चीजें सजा कर रक्खी जाती थीं, वे धीरे-धीरे कम होने लगीं। अन्त में सब समाप्त हो गईं। किसी-किसी ज़िले में सारा कामकाज एकदम बन्द हो गया। कहीं-कहीं तो सोलहो दण्ड एकादशी की नौबत आ गई। रोटी नहीं, कोयला नहीं, मोमबत्ती नहीं, वस्त्रादि की तो बात ही करने की आवश्यकता नहीं। यह अवस्था किसी सम्प्रदाय-विशेष की नहीं, वरन् सब अवस्था के लोगों की थी। नटिङ्घम, ओलवर हॅम्पटन, प्लाइमाउथ, डण्डी—सारे शहरों की एक ही प्रकार की दुर्गति! प्रिन्स ऑफ़ वेल्स (सातवें एडवर्ड) एक साहाय्य-भण्डार खोलने की इच्छा से प्लाइमाउथ गए और उनके भाई ड्यूक ऑफ़ एडिनबर्ग इसी उद्देश्य से मैञ्चेस्टर के लिए रवाना हुए।

कारख़ानों, मिलों और बड़ी-बड़ी कम्पनियों के दिवाले होने लगे। रेशम के सभी कारख़ाने बन्द हो गए। इन कारख़ानों में काम करने वाले मजदूर और अन्यान्य कर्मचारी भूखों मरने लगे। ख़ानों में काम करने वालों की भी यही दशा थी। वहाँ हड़तालें भी आरम्भ होने लगीं और इससे अशान्ति और भी बढ़ गई। कर्मच्युत आदमियों का दल चुपचाप कारख़ानों के चारों ओर चक्कर काटता दिखाई देने लगा। विराट और महा-समृद्धिशाली लिवरपोल का बन्दरगाह एकदम सुनसान दिखाई देने लगा। इसका प्रभाव अन्यान्य नगरों पर भी पड़ा। व्यवसाय-वाणिज्य एकदम चौपट हो गया।

उसके बाद धीरे-धीरे अवस्था की उन्नति आरम्भ हुई। इस घटना के ५० वर्ष पहले, अर्थात् विगत सन् १८३० में ऐसी ही दशा हुई थी। परन्तु साल भर के बाद १८३० में फिर सुधरने लगी। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि प्रत्येक अर्ध शताब्दी के बाद एक बार इस प्रकार की अवस्था अनिवार्य है और साल भर के बाद उसका सुधार अपने आप ही होने लगता है। फलतः यह आशा करना नितान्त भ्रमात्मक न होगा कि वर्तमान अवस्था की क्रमोन्नति भी शीघ्र ही आरम्भ होगी। अर्थात् १९३१ में यह अवस्था न रहेगी।

परन्तु वर्तमान समय की दुरवस्था का कारण वर्षा की कमी या फ़सल की ख़राबी नहीं है और न किसी दैवी दुर्घटना के कारण ही ऐसा हुआ है। इसका प्रत्यक्ष कारण अर्थनीतिक तथा राजनीतिक है। इस अवस्था का मूल कारण तथा उसके प्रतिकार का उपाय क्या है, इस सम्बन्ध में नाना मुनियों का नाना मत है। कुछ लोगों की तो धारणा है कि संसार में अन्न की पैदावार अधिक हो गई है, इसीसे अन्न सस्ता हो गया है। इसी के वजह से अन्यान्य चीज़ों का मूल्य भी कम हो गया है और यही वर्तमान समय के अर्थाभाव का प्रधान कारण है। परन्तु भारतीय ट्रेड-कमिश्नर मि० लिण्डसे की धारणा कुछ और ही है। उनका कहना है कि अगर अत्यधिक पैदावार के कारण यह दशा है, तो तीसी, चावल, पाट, रुई, चाय और सरसों आदि का बाज़ार क्यों इतना गिर गया है। लिण्डसे साहब के मतानुसार इस मन्दी का पहला कारण तो यह है कि उत्पत्ति के बाज़ार में और ख़रीद के बाज़ार में, विशेषतः कृषिजात वस्तुओं और अन्यान्य शिल्पजात वस्तुओं में सामञ्जस्य बिल्कुल नहीं रह गया है। हम शिल्प-वाणिज्य को छोड़ कर एक ऐसी अवस्था पर पहुँच गए हैं, जहाँ उत्पन्नकारी अपने माल का दाम अपनी इच्छा के अनुसार घटा-बढ़ा नहीं सकता, और अगर घटा-बढ़ा सकता भी है तो एक निर्दिष्ट सीमा तक ही। बाज़ार की मन्दी के समय शिल्पी को अपने बनाए हुए माल पर विशेष रूप से दृष्टि रखने की आवश्यकता पड़ती है और

"मार्शल-लॉ" की क़सम तुझको न यों मार मुझे!

[जनाब "अहमक़" फफून्दवी]

दीन से काम, न मज़हब से, सरोकार मुझे,
फिर भी हासिल नहीं, ऐ शोख़ तेरा प्यार मुझे!
जान कर अहले-हुकूमत का, वफ़ादार मुझे,
ढूँढ़ती फिरती है लानत, सरे-बाज़ार मुझे!
मैं वह पण्डित हूँ, कि इस दौर के अकसर महराज,
दूर से देख के करते हैं, नमस्कार मुझे!
ऐ "डायर" की तरह बाँध के मुश्कें सरे-राह,
"मारशल्लॉ" की क़सम तुझको न यों मार मुझे!
आजकल मद्दे-नज़र है, मुझे सेहत[1] का ख़याल,
वरना पीने से तो, हरगिज़ नहीं इनकार मुझे!
क्या अजब "इण्डियन ओशन" में डुबो दे इक रोज़,
आरज़ू ऐ अरबो, फ़ारसी, तातार मुझे!
जेलख़ाने में हूँ ससुराल के मानिन्द "अहमक़",
कोई तकलीफ़ यहाँ पर नहीं ज़िनहार मुझे!

१—स्वास्थ्य।

माल का परिमाण कम करना पड़ता है। फल-स्वरूप कृषिजात तथा अन्यान्य प्रकार के कच्चे माल के इच्छुकों की यथेष्ट कमी हो जाती है।

व्यवसाय-वाणिज्य की मन्दी का कारण और उसके प्रतिकार का उपाय निर्धारित करने के लिए अमेरिका की सरकार ने एक कमिटी बनाई है। मि० पिटमैन इसके प्रधान हैं। उन्होंने कहा है कि भारत-सरकार ने इस मन्दी के बाज़ार में चाँदी बेचने के सम्बन्ध में जिस नीति का अवलम्बन किया है, वही इस दुर्दशा का कारण है। अब तक तो संसार के अर्थनीतिज्ञों की यह धारणा थी कि पृथ्वी का अधिकांश सोना अमेरिका के संयुक्त राज्य और फ़्रान्स में मौजूद है और ग्रेट-ब्रिटेन, जर्मनी और अन्यान्य देशों की बैङ्कों में अमानती सोने का परिमाण अपर्याप्त है। विभिन्न देशों के अमानती सोने (Gold reserve) के परिमाण में विषमता होने के कारण सारे संसार का व्यवसाय-वाणिज्य विशृङ्खल हो रहा है। परन्तु पिटमैन साहब के मतानुसार इस विशृङ्खलता का कारण सोना नहीं, वरन् चाँदी है। चीन को अमेरिका वाले कुछ चाँदी उधार दे रहे हैं, इससे लोगों की यह धारणा हो रही है कि इससे वर्तमान अर्थनीतिक दुर्दशा कुछ कम होगी।

—"नवशक्ति" (बँगला)

* * *

दूध की झील

"मेरे हृदय में यह भावना उत्पन्न हुई है कि एक बड़ी झील बनवाई जाय और उसमें पानी के स्थान में दूध भरा जाय"—बादशाह ने मुँह फेर कर अपने मन्त्री से कहा—"क्या तुम मेरी इस इच्छा की पूर्ति कर सकते हो ?"

"यह कौन बड़ी बात है, शहन्शाह"—मन्त्री ने उत्तर दिया—"इस सेवक को केवल कल तक का अवसर दिया जाय ?"

दूसरे दिन पौ फटते ही मन्त्री अपनी योजना लेकर राजमहल में आ पहुँचे और उन्होंने झुक कर सलाम करने के पश्चात् कहा—शहन्शाह, योजना तैयार है; आपकी आज्ञा होते ही दूध की झील तैयार हो जायगी।

बादशाह ने मुस्करा कर उत्तर दिया—मेरी आज्ञा कुछ दुधेरी गाय थोड़ी ही है।

"नहीं शहन्शाह, ऐसा नहीं है"—मन्त्री ने उत्तर दिया—"परन्तु लाखों व्यक्ति आपकी छत्रछाया में रहते हैं और उन पर आपका पूर्ण आतङ्क है। उन तक यह आज्ञा पहुँचाई जायगी कि शहन्शाह की आज्ञा है कि प्रजा का हर एक व्यक्ति झील में एक-एक घड़ा दूध छोड़े। इस प्रकार झील में लाखों घड़ा दूध पड़ जायगा और एक दूध की झील तैयार हो जायगी।"

झील तैयार कर दी गई और राज्य भर में यह आज्ञा भी जारी हो गई कि प्रजा के हर एक व्यक्ति को अमुक रात्रि को नई झील में एक घड़ा दूध डालना होगा। बादशाह की इच्छा है कि जब वे दूसरे दिन सोकर उठें, तब उनकी दृष्टि छोटे से क्षीर सागर पर पड़े। राजदूतों ने उपर्युक्त शाही फ़र्मान राज्य के कोने-कोने में पहुँचा दिया।

शाही फ़र्मान के अनुसार राज्य के प्रत्येक कोने से लोग निश्चित तिथि पर एकत्रित हो गए और उस तिथि को रात्रि भर चहल-पहल होती रही। परन्तु जब दूसरे दिन बादशाह जागे और उन्होंने राजमहल के झरोखे से झील की ओर दृष्टि डाली, तब उसमें पानी देख उनके आश्चर्य की सीमा न रही। उनके क्रोध का पारा चढ़ गया, आँखें लाल हो गईं और दाँत पीस कर उन्होंने उसी क्षण मन्त्री को सामने पेश करने की आज्ञा दी।

बादशाह को क्रोध में देख कर मन्त्री के प्राण सूख गए। जब उन्हें दूध के स्थान में पानी की झील दिखाई गई, तब उन्होंने शर्म से अपना सिर नीचे झुका लिया।

बादशाह ने बाद में उसका गुप्त रहस्य जानने के लिए दस आदमियों को बुला भेजा। जब वे लोग आ गए तब उनमें से नौ से बारी-बारी से बादशाह ने यह प्रश्न किया—"क्या तुमने रात्रि को झील में दूध का घड़ा उँड़ेला था ?"

प्रत्येक ने उत्तर दिया—"हाँ।"

दसवाँ आदमी नौ से अधिक ईमानदार था; जब उससे भी वही प्रश्न किया गया, तब उसने उत्तर दिया—"शहन्शाह मुझे क्षमा करें। मेरे घड़े में दूध नहीं, पानी था। मैंने सोचा था कि जब लाखों व्यक्ति झील में दूध के घड़े उँड़ेलेंगे तब उसमें मेरे एक घड़े पानी का पता कैसे चल सकता है।

इस उत्तर से बादशाह की आँखें खुल गईं। उन्हें मालूम हो गया कि सब के हृदय में वही विचार था, जो इस एक व्यक्ति के हृदय में। हर एक घड़े में दूध के बदले पानी था और इसीलिए झील दूध के बदले पानी की हो गई।

आप कब सरकार देखेंगे ?

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

तमाशा सा तमाशा, जान कर सरकार देखेंगे,
उछल-कूद आपकी, क्या-क्या सरे दरबार देखेंगे !
यह सुन कर, हमसे 'साहब' ने क़याम ढाई ब गले में
कि हम भी लेडियों की शोख़िए[1] रफ़्तार[2] देखेंगे !
मुफ़स्सल[3] हाल इसमें होगा, उसमें मुख़्तसिर[4] होगा
पढ़ेंगे पहिले हम ख़त, बाद को इमतार देखेंगे !
ग़लत हों, या हों सच ख़बरें, ग़रज़ इससे नहीं हमको,
जो उनकी सी कहे, हम तो वही अख़बार देखेंगे !
दिखाने के लिए, आया हूँ मैं हाले-दिले मुज़्तर[5]
इधर आँखें उठा कर, आप कब सरकार देखेंगे ?
कलामे हज़रते "अकबर"[7] का धोका होगा ये 'बिस्मिल'
'भविष्य' अख़बार में, जब वह मेरे अशआर[8] देखेंगे !

१—चपलता, २—चाल, ३—ब्यौरेवार, ४—संक्षेप, ५—बेचैन, ६—कवित्त, ७—महाकवि "अकबर" इलाहाबादी से मतलब है, ८—पदों।

* * *

लन्दन की गोलमेज़ी कॉन्फ़्रेन्स दूध की झील का स्वप्न देख रही थी, परन्तु वह वास्तव में स्वप्न ही निकला। जब आँख उठा कर देखा तब मालूम हुआ वह भ्रम मात्र था। दूध की झील पानी की निकल गई।

शाही फ़र्मान निकाला गया था, कॉन्फ़्रेन्स में हर एक जाति और हर एक दल के प्रतिनिधियों को एकत्रित होने के लिए और साथ ही आदेश दिया गया था एक मत होने और साथ में एक निश्चित योजना रूपी दूध का घड़ा लाने का, और जब ये महाशय उस ख़ाली झील के निकट पहुँचे तब ही-ही और खी-खी भी बहुत हुई। परन्तु उन जातीय प्रतिनिधियों ने उसमें छोड़ा पानी का घड़ा ही।

अनुदार दल के लोगों ने कहा—हम कुछ देने की पहले से प्रतिज्ञा नहीं करते; हम यह नहीं कह सकते कि उस झील में हम दूध का घड़ा उँड़ेलेंगे या पानी का।

इसी प्रकार ब्रिटिश लिबरल दल ने कुछ निश्चित सुधार देने की प्रतिज्ञा नहीं की; केबीनेट ने भी कोई प्रतिज्ञा नहीं की; अल्पसंख्यक दल के प्रतिनिधियों ने कोई निश्चय नहीं किया। भारतीय नरेश भी किसी निश्चय पर न पहुँच सके और भारतीय प्रतिनिधि भी अपनी चें-चें करते रह गए। हर एक के हृदय में यह आशा थी कि हर एक के घड़े में दूध होगा, परन्तु उनमें भरा था निरा पानी।

पार्लमेण्ट उत्तरदायी शासन उस समय देगी जब संयुक्त शासन-प्रणाली का निर्माण हो जायगा और सुधारों की सीमा निश्चित हो जायगी। नरेश फ़ेडरेशन (संयुक्त शासन) में उस समय सम्मिलित होंगे, जब उन्हें स्वतन्त्रता दी जायगी। अल्पसंख्यक जातियाँ संयुक्त निर्वाचन उस समय मन्ज़ूर करेंगी, जब उन्हें सुविधाएँ दी जायँगी। काँङ्ग्रेस भी कॉन्फ़्रेन्स में उस समय सम्मिलित होगी, जब उसे पूर्ण उत्तरदायित्व दे दिया जायगा।

—"फ़्री प्रेस जर्नल" (अङ्गरेज़ी)
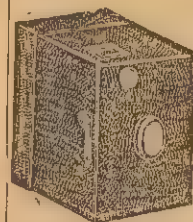
* * *

धर्म और देश
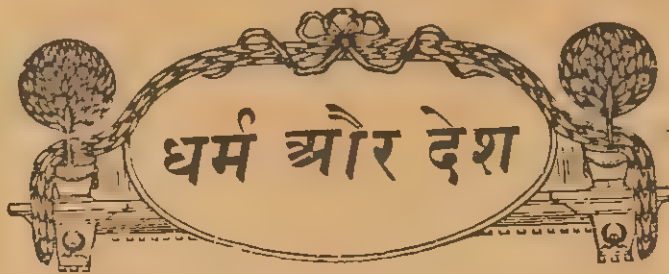
[श्री० श्यामलाल अग्रवाल]

रानी एलिज़ाबेथ को राज्य करते तीस वर्ष व्यतीत हो चुके थे। इङ्गलैण्ड ख़ूनी मेरी के भीषण समय को भूल गया था। लैटीमर और रिड्ले की दहकती चिताएँ भी शान्त हो चुकी थीं। यद्यपि धर्म के कारण मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ रहा था, रानी ने धर्म के नाम पर जीवन न लेकर एक निश्चित धन दण्ड-स्वरूप लेना स्वीकार कर लिया था—जो मनुष्य उसके स्थापित गिरजे में नहीं जाते थे उन्हें एक शिलिङ्ग कर देना पड़ता था—प्राण-दण्ड का भय बिल्कुल न था, तथापि एक बड़ा दल ऐसे लोगों का था, जो रानी के इस नए प्रबन्ध से ज़रा भी सन्तुष्ट न था। कैथलिक प्रजा एलिजाबेथ की जगह मेरी स्टुअर्ट को गद्दी पर बिठाना चाहती थी। इसके लिए भीतर ही भीतर भीषण षड्यन्त्र चल रहा था। उत्तर इङ्गलैण्ड में खुले-आम षड्यन्त्र के चिन्ह दिखलाई पड़ते थे। नॉर्थ फ़ौक और वैबिङ्गटन अपनी-अपनी करतूतें दिखला चुके थे—रानी को मारने का पूर्ण प्रयत्न कर चुके थे, परन्तु भाग्यवश उनका षड्यन्त्र विफल हो चुका था। उनके अपार साथी थे, जो प्रोटेस्टेण्ट प्रजा के जानी दुश्मन थे। कैथलिकों और प्रोटेस्टेण्टों में देवासुर संग्राम की तरह भीषण संग्राम छिड़ा हुआ था। यदि प्रोटेस्टेण्ट-दल रानी एलिज़ाबेथ को चाहता था तो कैथलिक सम्प्रदाय वाले मेरी के भक्त थे। एक दल दूसरे को अधर्मी, अन्यायी और संसार में न रहने योग्य समझता था। मेरी स्टुअर्ट के क़त्ल के बाद कैथलिक प्रजा और भी जल-भुन गई और प्रतिद्वन्दियों का समूल नाश कर देना चाहती थी।

इङ्गलैण्ड की इस भयङ्कर स्थिति से स्पेन ने लाभ उठाना चाहा। उसने सोचा, कैथलिक सम्प्रदाय तो एलिजाबेथ से जला-भुना बैठा है। वह कदापि उसका साथ न देगा। अच्छा मौक़ा है; बड़ी आसानी से इङ्गलैण्ड शिकञ्जे में आ जायगा। स्पेन की आँखों में एलिजाबेथ बुरी तरह खटक रही थी। फिर उसे अपनी शक्ति का भी अभिमान था; क्योंकि उसके जङ्गी जहाजों बेड़े से सारा यूरोप थर-थर काँपता था। किसी में इतनी शक्ति न थी, जो उसका सामना करता। अमेरिका के धन से वह गर्वीला हो रहा था। परन्तु उसे यह पता न था कि जो कैथलिक आज अपने अधिकारों और धार्मिक विचारों के लिए अपने घर में लड़ रहे हैं, वे देश के लिए इन तमाम मतभेदों को बालाए-ताक़ रख देंगे। बस, उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ बेचारे इङ्गलैण्ड पर, जो अपने घराऊ झगड़ों के कारण शक्तिहीन बना हुआ था, चढ़ाई कर दी। यह समाचार एलिज़ाबेथ को मिला। उसने दोनों सम्प्रदायों तथा देश के प्रमुख नेताओं की एक सभा की। उनके सामने देश की दयनीय परिस्थिति का शाब्दिक ख़ाका खींच कर रख दिया।

वह सभा-मञ्च पर खड़ी हो, गम्भीर स्वर में बोली—"ऐ मेरे वीर सामन्तो! तुम देश के प्राण हो। देश की लज्जा तुम्हारे हाथ है। मैं जानती हूँ, कि तुम्हारे अन्दर फूट है; पारस्परिक मतभेद है, परन्तु इसकी कोई चिन्ता नहीं। चार बर्तन एक जगह रहते हैं तो खटकते ही हैं। यदि तुम दोनों, कैथलिक और प्रोटेस्टेण्ट, एक दूसरे के विरोधी रहे हो तो आज मिल भी सकते हो। हम अपने झगड़े का फ़ैसला आप ही कर लेंगे। अपनी रोटी चाहे जिस तरह बाँट खाएँगे। परन्तु याद रक्खो, हमारे पारस्परिक कलह से अगर तीसरा लाभ उठाएगा तो हम मुँह दिखाने के क़ाबिल नहीं रह जायँगे। यदि हम इसी तरह लड़ते रह गए तो निश्चय ही शत्रु हम दोनों की रोटी छीन ले जायगा। उस समय भाइयो, तुम किस चीज़ के लिए लड़ोगे? इसलिए हमारा सब से पहला धर्म यही है कि हम उस माता को, जिसकी गोद में लोट कर बड़े हुए हैं, जिसकी धूल से हमारी देह बनी है और अन्त में जिसकी धूल में हमें मिल जाना है, उसकी रक्षा करें—पराधीन और परमुखापेक्षी न होने दें। माता के मान की रक्षा करना अपनी रक्षा करना है। इस संसार में ग़ुलामी से बढ़ कर हीन दशा दूसरी नहीं है। बोलो, धर्म के नाम पर एक दूसरे से लड़ते रहोगे या एक होकर देश और जाति की रक्षा करोगे? बोलो, क्या कहते हो?"

रानी का चुप होना था कि चारों ओर से "लड़ेंगे, देश के लिए प्राण देंगे, मतभेद पीछे है और देश पहले" की अपूर्व उत्साहपूर्ण ध्वनियों से आकाश गूँज उठा। देश में नया जोश, नवीन सङ्गठन और अनोखी शक्ति का सञ्चार हुआ। दोनों दलों के लोग, जो थोड़ी देर पहले एक दूसरे के कट्टर शत्रु प्रतीत होते थे, सहोदर भाई की तरह मिल गए। सारा धार्मिक भेद-भाव थोड़ी देर के लिए मिट गया। सब के सब सम्मिलित होकर देश की रक्षा में लग गए। छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष तन-मन और धन से मातृभूमि को इस सङ्कट से बचाने में लग गए। अब उनके सम्मुख एक उद्देश था, एक ध्येय और एक कर्त्तव्य।

इस उत्साह और मेल ने एक-एक की शक्ति को दसगुना कर दिया। दृढ़ निश्चय था कि "या तो स्वतन्त्र होकर रहेंगे या स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर मर मिटेंगे।" इस निश्चय के सम्मुख संसार की कौन सी शक्ति ठहर सकती है? स्पेन की क्या मजाल थी, जो इस सम्मिलित शक्ति के सामने ठहर सकता। घोर घमासान आरम्भ हुआ। प्रोटेस्टेण्टों और रोमन-कैथलिकों की सम्मिलित शक्ति ने स्पेन के दाँत खट्टे कर दिए। ऐसी भयङ्कर मार पड़ी कि सारा जोशोख़रोश हवा हो गया। इङ्गलैण्ड आसन्न पराधीनता के विषम पाश से बाल-बाल बच गया।

क्या भारत के हिन्दू-मुसलमान इस प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना से कुछ शिक्षा न ग्रहण करेंगे? क्या इङ्गलैण्ड के प्रोटेस्टेण्टों और कैथलिकों की तरह, अपने पारस्परिक मतभेदों को भूल कर मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता के लिए कन्धे से कन्धा मिला कर खड़े न होंगे?

* * *

'माले-मुफ्त दिले-बेरहम!'

ग़रीब जनता के धन का भयङ्कर अपव्यय

नौकरशाही का रङ्ग-महल :: नई दिल्ली के गुप्त इतिहास का भण्डाफोड़

[श्री० पोलखोलानन्द भट्टाचार्य, एम० ए०, पी० एच-डी०]

प्रायः दस वर्ष पहले भारत के कला-कौशल की उन्नति की एक आयोजना पेश की गई थी और उस पर भारत और इङ्गलैण्ड में, दोनों जगह गरम बहसें हुई थीं। सन् १९२२ में इस सम्बन्ध में बम्बई गवर्नमेण्ट ने भी भारत-सरकार को एक ख़रीता भेजा था। वेम्बले में भारतीय कला के सम्बन्ध में जो कॉन्फ्रेन्स हुई थी, उसने इस योजना से सहानुभूति प्रकट की। सर फ़ीरोज़ सेठना ने कौन्सिल ऑफ़ स्टेट में इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पेश किया। परन्तु भारत-सरकार ने इस प्रस्ताव की अवहेलना कर दी और तीन साल तक जनता को उसकी इस मनोवृत्ति का पता न लग सका। परन्तु सन् १९२५ में भारत गवर्नमेण्ट ने एक विज्ञप्ति द्वारा जनता को यह सूचना दी कि नई दिल्ली के शिल्पज्ञों ने एक इस प्रकार की योजना तैयार की है।

उस समय भी शिल्पकारों की योजना का विस्तृत विवरण मालूम न हो सका और वह बहुत दिनों तक गुप्त रही। और उसी योजना को, जो सर फ़ीरोज़ सेठना, मि० हाजी हरून, वेम्बले की भारतीय कला-प्रदर्शिनी, यहाँ तक कि बम्बई गवर्नमेण्ट को भी प्राप्त न हो सकी थी, पहली बार 'दी बॉम्बे क्रॉनिकल' ने जनता के सम्मुख उपस्थित की। उसके प्रकाशित होते ही 'दिल्ली कमिटी' ने भारतीय कारीगरों के अधिकारों के लिए लड़ना प्रारम्भ कर दिया। इसके फल-स्वरूप भारत सरकार ने अपनी एक 'विज्ञप्ति' में भारत और लन्दन-स्थित भारतीय कारीगरों को कुछ टुकड़े फेंक दिए; और साथ ही विदेशी विशेषज्ञों को बुलाना प्रारम्भ कर दिया। भारतीय जनता को इस बात का ज्ञान नहीं कि इस अपव्ययी योजना की अभी तक पूर्ति हुई या नहीं। उन बातों पर अभी तक पर्दा पड़ा हुआ है। परन्तु उस योजना से जो अंश नीचे उद्धृत किए गए हैं, उनसे भारतीय गवर्नमेण्ट के भयङ्कर अपव्यय पर बहुत प्रकाश पड़ता है। उनसे यह भी स्पष्ट मालूम हो जाता है कि नई दिल्ली की सृष्टि ने भारत का कितना अपकार किया है। जब-जब भारतीय कारीगरों का प्रश्न उपस्थित हुआ है, तभी धन का अभाव बतलाया गया है; परन्तु विदेशी कारीगरों को बुलाते समय यह धन की कमी कभी नहीं हुई।

शिल्पज्ञों की योजना की कुछ संख्याएँ

इस योजना की पूर्ति के लिए ४८,३२,००० रु० के व्यय का अनुमान किया गया था, जिसमें से प्रारम्भ में ७५,००० रु० के ख़र्च का अनुमान क्वार्टरों में और ३०,००० रुपए का अनुमान स्टुडियो बनाने में किया गया था। ख़र्च का विस्तृत हाल निम्न प्रकार है :—

	रुपया
१५ विशेषज्ञों का ३,००० प्रति विशेषज्ञ के हिसाब से ...	४५,०००
१ सुपरिण्टेण्डेण्ट ...	९,०००
विदेशी अभ्यागत ...	१५,०००
सामान ...	९६,०००
जोड़—	१,६५,०००

प्रथम वर्ष का ख़र्च

	रुपया
५ विशेषज्ञों का ३ विशेषज्ञों के हिसाब से	१५,०००
१ सुपरिण्टेण्डेण्ट ...	९,०००
१ विदेशी अभ्यागत ...	१५,०००
आवश्यक सामान ...	३०,०००
जोड़—	६९,०००

सर ई० एल० लूटियन के नक़्शे के अनुसार वायसराय के महल की सजावट का ख़र्च

	रुपया
वाह्य पच्चीकारी का ख़र्च ...	१,५०,०००
आन्तरिक पच्चीकारी का ख़र्च ...	२,५०,०००
४ ताँबे के घोड़े ...	१,५०,०००
लिखने की सामग्री ...	८०,०००
शाही कमरे के दरवाज़ों की कार्निसें	४५,०००
ड्राइङ्ग रूम या बैठकख़ाने के सिल्क के पर्दे	७५,०००
एक दूसरे शाही बैठकख़ाने के कमरे के पर्दे	१,०५,०००
एक अन्य सङ्गमर्मर के शाही कमरे के पर्दे	५०,०००
शाही कमरों की चित्रकारी का ख़र्च	१५,००,०००
कमरों की सजावट के लिए मूर्तियों का ख़र्च ...	२,२५,०००
जोड़—	२५,७०,०००

वायसराय की अदालत का ख़र्च

	रुपया
चार पानी के हौज़ों को मूर्तियों से सजाने का ख़र्च ...	१,८०,०००
वायसराय के महल के पास रास्ता के अन्त में मूर्तियों की सजावट का ख़र्च	४५,०००
पहरेदारों के मकानों की सीढ़ियों के निकट चार मूर्तियों का ख़र्च	५०,०००
सेक्रेट्रियट और वायसराय के महल के बीच के दरवाज़ों की सजावट का ख़र्च	८०,०००
अन्य सजावट ...	१,००,०००
जोड़—	४,५५,०००

ग्रेटप्लेस और केन्द्रीय कुञ्ज की सजावट का ख़र्च

	रुपया
कुण्डों के उद्गम-द्वारों पर शेरों के सिरों का ख़र्च ...	३६,०००
ग्रेटप्लेस निर्झर के १२ केन्द्रों का ख़र्च	७५,०००
चार जोड़े मूर्तियों का मूल्य	९०,०००
ग्रेटप्लेस के ढालू रास्ते के शेरों का मूल्य	३०,०००
कुञ्ज के पश्चिमीय किनारे की सजावट का ख़र्च ...	५०,०००
केन्द्रीय कुञ्ज में वायसराय की मूर्ति की चौकी का मूल्य ...	३,६०,०००
उसी की पच्चीकारी का ख़र्च	१,००,०००
जोड़—	७,४१,०००

सर एच० बेकर के नक़्शे के अनुसार सेक्रेट्रियटों की सजावट का ख़र्च

	रुपया
पच्चीकारी का अतिरिक्त ख़र्च	७०,०००
बड़ी सीढ़ियों पर के चार हाथियों का मूल्य	६०,०००
सीढ़ियों पर के चार लेटे हुए जानवरों का मूल्य ...	३०,०००
दो जोड़े अन्य मूर्तियों का मूल्य	१०,०००
सामने के 'इनआगुरल स्टोन चेम्बर' की आठ मूर्तियों का मूल्य	६०,०००
सजावट की अन्य सामग्री	१,३६,०००
चित्रकारी ...	२,००,०००
शिल्पकारी ...	१,००,०००
शिल्पकारी का अतिरिक्त ख़र्च	१,००,०००
मूर्तियाँ ...	१,००,०००
जोड़—	८,६६,०००

असेम्बली की इमारतों की मूर्तियों के मूल्य का अनुमान दो लाख रुपए का है।

उपर्युक्त ख़र्च का मीज़ान निम्न प्रकार है :—

	रुपया
वायसराय के महल का कुल ख़र्च	२५,७०,०००
वायसराय की अदालत का कुल ख़र्च	४,५५,०००
'ग्रेटप्लेस' और केन्द्रीय कुञ्ज का कुल ख़र्च ...	७,४१,०००
सेक्रेट्रियटों का कुल ख़र्च ...	८,६६,०००
असेम्बली की इमारतों का कुल ख़र्च	२,००,०००
जोड़—	४८,३२,०००

*　　*　　*

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

मैं एक कार्यवश बाहर गया था। रेल में तीन-चार विद्यार्थी मिले। इनकी सूरत का क्या वर्णन करूँ, पौने पाँच फ़ीट से अधिक कोई ऊँचा न था। दुबले-पतले, छल्ला-सी कमर, प्रत्येक पग पर पतङ्ग की तरह झप खाते थे। उनकी कमर देख कर उर्दू कविता में वर्णन की हुई कमर का स्मरण हो आया। सूट-बूट से पूर्णतया लैस, मुँह में सिगरेट दाबे तथा हाथ में एक-एक पतली छड़ी लिए—इतनी पतली कि किसी के शरीर पर मारने का ध्यान करते ही टूट जाय—गिटपिट करते हुए वे सब मेरे ही दर्जे में घुस आए। आते ही पहले उन्होंने एक बार दर्जे भर का सिंहावलोकन किया। उनकी दृष्टि में कितनी अहंमन्यता, कितना अहङ्कार था! अन्य जितने प्राणी बैठे हुए थे, वे उनकी दृष्टि में मूर्ख थे। नाक-भौं चढ़ाए हुए वे एक ओर बैठ गए और लगे बातचीत करने। अब जो बोलता है वह अङ्गरेज़ी में—हिन्दी-उर्दू का नाम नहीं! बातें वही कॉलेज, प्रोफ़ेसर, परीक्षा इत्यादि की थीं। सम्पादक जी, सच मानिएगा, दो घण्टे तक वे उस दर्जे में बैठे रहे, परन्तु उनकी बातें समाप्त न हुईं और किसी ने भूल से भी हिन्दी का एक शब्द अपने मुँह से नहीं निकाला। हिन्दुस्तानी थे, इसलिए यह सन्देह हो गया कि ये हिन्दी-उर्दू अवश्य जानते होंगे, अन्यथा उन्होंने तो यह बात प्रमाणित करने में कोई कसर नहीं उठा रक्खी कि वे अङ्गरेज़ी के अतिरिक्त न कुछ बोल सकते हैं और न समझ सकते हैं। बातें भी उनकी वैसी ही थीं—अमुक प्रोफ़ेसर बिल्कुल गधा है, प्रिन्सिपल साहब पूरे बछिया के ताऊ हैं, अमुक विद्यार्थी कुछ नहीं जानता, अमुक पुस्तक बिल्कुल व्यर्थ है, इत्यादि। जिस ढङ्ग से वे बातें कर रहे थे, उससे प्रतीत होता था कि उनकी समझ में उस दर्जे में कोई व्यक्ति अङ्गरेज़ी समझने की योग्यता नहीं रखता। इसका कारण यह था कि उस दर्जे में जितने आदमी थे, वे सब हिन्दुस्तानी वेश-भूषा के थे। अपने राम तो कभी कॉलर, नेकटाई, पेयट इत्यादि के पास भी नहीं फटकते। इसी कारण सम्भव है, उन्होंने सबको ठेठ हिन्दुस्तानी समझ लिया हो। अतएव वे अपनी प्राइवेट बातें भी कर रहे थे—ऐसी बातें, जो किसी अन्य मनुष्य के सम्मुख नहीं करनी चाहिएँ। जब उन्हें गिटपिट करते दो घण्टे से भी अधिक हो गया, तो मैंने पास बैठे हुए एक व्यक्ति से कहा—ये लोग हिन्दुस्तानी तो जान नहीं पड़ते।

मेरी यह बात उन्होंने सुन ली। मेरा अभिप्राय भी यही था। उनमें से एक बोला—क्यों जनाब, यह आपने किस प्रकार जाना?

मैं बोला—किसी प्रकार जाना हो, पर आप यह बताइए कि बात ठीक है या नहीं?

एक दूसरा व्यक्ति मुस्करा कर बोला—क्यों जनाब, आप किस ज़बान में बातचीत कर रहे थे?

उनमें से एक बोला—अच्छा! अब इस तरह बनाइएगा!

मैं बोल उठा—बनाने की बात नहीं, आप लोग ख़ूब बोलते हैं। हमें तो यह सन्देह होने लगा था कि आप लोग हिन्दी बोल ही नहीं सकते।

दूसरा विद्यार्थी बोला—वाह साहब, हिन्दी तो हम लोगों की मादरी ज़बान है। उसे न जानेंगे तो जानेंगे किसे?

मैंने आश्चर्य का भाव दिखा कर कहा—आपकी मादरी ज़बान हिन्दी है तब तो कमाल है!

तीसरा—कमाल कैसा?

मैं—हिन्दी मादरी ज़बान होते हुए भी आप दो घण्टे तक परस्पर अङ्गरेज़ी ही बोलते रहे, यह कमाल की बात नहीं तो और क्या है? संसार में शायद ही कभी दो फ़्रान्सीसी साथ रह कर फ़्रान्सीसी न बोल कर अङ्गरेज़ी या जर्मन बोलते रहे हों। ऐसा अवसर कदाचित् ही कभी आया हो, जब दो जर्मन परस्पर दो घण्टे तक किसी विदेशी भाषा में वार्तालाप करते रहे हों।

सफल-हृदय

[श्री० "अम्बिकेश" राजकवि, रीवाँ]

दीन-दुखियों को देख शीघ्र जो द्रवित होता
बहता दया का स्रोत रहता प्रचुर है!
देता है जो अशन अपङ्ग औ अपाहिजों को
प्रेमियों के हेतु बन जाता प्रेमपुर है!
धुलता अनाथ अबलाओं आँसुओं से सदा
शोभित क्षुधार्तों हित कन्द सा मधुर है!
देश-अनुराग से जो रहता उछलता है,
ऐसे पुण्य-प्राणियों का उर, वही उर है!
भीति भावनाओं की न भीड़ लग पाती कभी,
बहता सदैव वहाँ आनन्द का सोता है!
जा-जाकर दीन-दुखियों में दलितों में वह
सरस सनेहियों सा सौख्य-सुधा मोता है!
बोता रहता है देश-प्रेम ही का बीज सदा
वचन-सुधा से श्रमियों का श्रम खोता है!
दूसरों की विषम बलाएँ मढ़ लेता शीश,
बड़े पुण्य-प्राणियों का ऐसा उर होता है!!

तीसरा—क्यों, क्या अङ्गरेज़ी बोलना पाप है?

मैं—पाप! यह तो महापुण्य का कार्य है। इसमें पाप काहे का? पाप तो हिन्दी बोलना है!

एक अन्य सज्जन बोल उठे—बात यह है कि प्राइवेट बातें हो रही थीं, इसलिए ये लोग अङ्गरेज़ी में बातचीत करते रहे। हिन्दी बोलते तो हम लोग सब समझ न लेते।

यह सुन कर दर्जे के सब लोग हँस पड़े।

मैंने पूछा—क्यों महाशय, आप लोग किस क्लास में पढ़ते हैं?

उनमें से एक बोला—क्लास! हम लोग कॉलेज में पढ़ते हैं, क्लास स्कूल में होते हैं। हम लोग थर्ड-इयर के स्टूडेण्ट हैं।

मैं—यह आपने अच्छा बता दिया। मुझे यह बात नहीं मालूम थी। आप लोगों की अङ्गरेज़ी सुन कर मैंने समझा था कि आप लोग किसी क्लास ही में पढ़ते होंगे।

एक बोला—आख़िर आपको अङ्गरेज़ी से इतनी नफ़रत क्यों है? आप जानते हैं कि आजकल सब ओर अङ्गरेज़ी ही की क़दर है।

मैंने कहा—मुझे अङ्गरेज़ी क्या, किसी भी विदेशी भाषा से नफ़रत नहीं है। इसके अतिरिक्त अङ्गरेज़ी तो राज-भाषा है।

दूसरा—अब आपने समझदारी की बात कही। अङ्गरेज़ी राज-भाषा है, इसके अतिरिक्त अङ्गरेज़ी बड़ी 'रिच' भाषा है। उसमें जितने शब्द हैं उतने हिन्दी में हैं कहाँ?

मैं—हों भी कहाँ से? शब्द अपने आप तो उत्पन्न होते ही नहीं, न ईश्वर ही उनका कोष बना कर जिब्रील फ़रिश्ते द्वारा भेजता है। शब्द बनाए जाते हैं। जैसे-जैसे आवश्यकता पड़ती जाती है, वैसे-वैसे शब्द बना लिए जाते हैं। अङ्गरेज़ी इतनी पूर्ण क्यों हो गई? इसका यही कारण है कि उसमें आवश्यकतानुसार शब्दों का निर्माण होता रहा और अब भी होता रहता है। प्रति वर्ष सैकड़ों नए शब्द बनते हैं। जब से वायुयान, बेतार का तार इत्यादि का आविष्कार हुआ, तब से तत्सम्बन्धी सैकड़ों नए शब्द बना लिए गए। हिन्दी की ऐसी क्षमता कहाँ? जब लोग उसे बोलना ही पसन्द नहीं करते, तब शब्द कौन गढ़े?

तीसरा—जब अङ्गरेज़ी का प्रचार अधिक है तो व्यवहार भी अधिक होना आवश्यक है।

एक दूसरे सज्जन बोल उठे—क्षमा कीजिएगा, व्यवहार अधिक तो है ही, पर आप जैसे लोगों ने कुछ शौक़िया भी उसे बढ़ा रक्खा है। मैं कई ऐसे लोगों को जानता हूँ, जिनकी यह अभिलाषा है कि यदि उनकी पत्नी अङ्गरेज़ी जानती होती तो उससे अङ्गरेज़ी ही में बातचीत करते। जब यह दशा है तो उसका व्यवहार अधिक क्यों न हो? आप ही लोग अभी दो घण्टे से अङ्गरेज़ी ही बोल रहे थे। इस समय अङ्गरेज़ी बोलने की भला क्या आवश्यकता थी? क्या आप समझते थे कि हम लोगों में से कोई अङ्गरेज़ी नहीं समझ सकता?

तीसरा—जी नहीं, हम लोग विद्यार्थी ठहरे। हम लोगों को अङ्गरेज़ी बोलने का अभ्यास करना आवश्यक है, इसलिए परस्पर अङ्गरेज़ी बोलते हैं।

मैंने कहा—अभ्यास इतना न होना चाहिए कि स्वभाव में परिवर्त्तित हो जाय। अभ्यास के लिए कॉलेज का समय यथेष्ट है। जब तक आप लोग कॉलेज में रहते हैं, तब तक आप ख़ूब अङ्गरेज़ी बोलिए; परन्तु उसके पश्चात् बिना आवश्यकता के उसका व्यवहार मत कीजिए।

इतना सुन कर वे सब चुप हो गए। इसके पश्चात् फिर उन्होंने अङ्गरेज़ी में बात नहीं की—हिन्दी ही बोलते रहे। मैंने सोचा—चलो इतना क्या कम है; इन्हें कुछ ध्यान तो हुआ।

सम्पादक जी, अङ्गरेज़ी शिक्षा आवश्यक है, यह बात मैं मानता हूँ; पर आजकल जो शिक्षा-पद्धति प्रचलित है, वह बड़ी दूषित है। शिक्षा का अर्थ है ज्ञान-वृद्धि। शिक्षा वही अच्छी है, जिससे ज्ञान की वृद्धि हो, मनुष्य तथ्य निकालने की क्षमता प्राप्त कर सके और जिससे व्यवहार-कुशलता उत्पन्न हो। आजकल की शिक्षा की दशा यह है कि उच्च-शिक्षा प्राप्त करने तक मस्तिष्क एक प्रकार से बेकाम हो जाता है। स्कूल में भर्ती होते ही ऐनक की तलाश आरम्भ हो जाती है। शारीरिक अवस्था भी बिगड़ जाती है। स्कूलों और कॉलेजों में देखिए, अधिकांश लड़के ऐसे मिलेंगे कि उन्हें दृष्टि भर कर देखने में भी भय मालूम होता है। स्वभाव उनका ऐसा हो जाता है कि काली चीज़ें उन्हें एक आँख नहीं

आतीं। जो कुछ अङ्गरेज़ी में है वह सब अच्छा और उत्तम, और जो कुछ काले आदमियों की भाषा में है, वह सब निकृष्ट ! यूरोप तथा अमेरिका की बातें पूछिए तो तोते की तरह पढ़ने लगेंगे और देश की बातों में पूरे काठ के उल्लू प्रमाणित होंगे। अङ्गरेज़ी, फ़्रान्सीसी, जर्मन इत्यादि भाषाओं के ग्रन्थों के नाम कण्ठस्थ, परन्तु यदि उनसे पूछा जाय कि भारतवर्ष के काले आदमियों की भाषा में कौन-कौन से ग्रन्थ हैं, तो बग़लें झाँकने लगेंगे, या बहुत ज़ोर मारेंगे तो मुस्करा कर कह देंगे—"अजी, यहाँ अभी ग्रन्थ बने कहाँ हैं ?" ठीक है, ग्रन्थ कैसे बनें ? ग्रन्थ बनने से पहले तो आप स्वयं ही ऐसे बन गए कि ग्रन्थों का बनना असम्भव हो गया। बिना पश्चिमी छाप लगे किसी बात पर विश्वास नहीं ! काले आदमियों की पुस्तकों में जो कुछ लिखा जा चुका है वह सब गप्प, कपोल-कल्पना, और गोरे आदमियों की किताबों में जो कुछ है, वह सब अल्लाह मियाँ का पैग़ाम है। सच बोलना अच्छा है, क्यों ? इसलिए कि यूरोप के अमुक साहब सच बोलना अच्छा कहते हैं। परोपकार बड़ी अच्छी बात है, क्यों ? अमुक साहब ने अपने अमुक ग्रन्थ में परोपकार की बड़ी प्रशंसा की है। एक बार मुझसे एक सुशिक्षित कहलाने वाले महाशय बोले—"गाँधी जी वास्तव में महात्मा हैं।" मैंने पूछा—"क्यों ?" उन्होंने कहा—"यूरोप के कई बड़े-बड़े विद्वानों ने उनकी प्रशंसा की है।" मैंने सोचा, हद हो गई। जब यूरोप के विद्वानों ने प्रशंसा की, तब इन्हें यह पता चला कि गाँधी जी महात्मा हैं। यदि यूरोप के विद्वान प्रशंसा न करते या इन्हें यह पता न चलता कि किसी यूरोपियन ने भी गाँधी जी को महात्मा माना है, तो इन्हें उनके महात्मा होने में सन्देह ही रहता। अङ्गरेज़ी शिक्षा ने हम लोगों को इतना निकम्मा बना दिया कि हम बिना यूरोप तथा अमेरिका की सहायता के यह निर्णय भी नहीं कर सकते कि कौन बात अच्छी है और कौन बुरी। जब किसी सुशिक्षित कहलाने वाले व्यक्ति से बात कीजिए और किसी साधारण सी बात का निर्णय करने लगिए तो वह झट कहने लगेगा कि इसके सम्बन्ध में तो फ़्रान्स का अमुक विद्वान यह कहता है, अङ्गरेज़ी का अमुक व्यक्ति यह कह गया है। यदि इन भले आदमियों से पूछा जाय कि दुनिया ने तो कहा है, पर आप भी कुछ कहते हैं या नहीं, तो झट कह देंगे कि "जो उन्होंने कहा है वही हम भी ठीक समझते हैं।" बहुत सस्ते छूटे। स्वयं निर्णय करने में मस्तिष्क पर ज़ोर पड़ता है, कुछ तत्वदर्शन की आवश्यकता भी पड़ती है, पर यहाँ दोनों के स्थान पर केवल शून्य है; इसलिए साहब लोगों की गवाही पेश करके अलग हो जाते हैं।

पुस्तकें लिखी जाती हैं तो उनमें भी यही राग अलापा जाता है। पुस्तक तो स्वयं लिख रहे हैं, पर कथन यूरोप के लोगों के दे रहे हैं। यूरोप के विद्वान जिस सम्बन्ध में लिखते हैं तो दुनिया भर की राय देने के पश्चात् यह अवश्य लिखते हैं कि इस सम्बन्ध में मेरी राय यह है। इसके पोषण में वे अपनी दलीलें भी दे देते हैं। अब पढ़ने वाला इससे स्वयं निर्णय कर सकता है कि उनका कथन कहाँ तक ठीक है। पर अधिकांश काले आदमी जब लिखेंगे, तब यही लिखेंगे कि अमुक-अमुक साहब लोग इसके सम्बन्ध में ऐसा कहते हैं, इसलिए यह बात ऐसी ही है। मानो साहब लोग कभी ग़लत कह ही नहीं सकते, उनसे भूल हो ही नहीं सकती, उनका तर्क काटा ही नहीं जा सकता। सम्पादक जी, मैंने अनेक अङ्गरेज़ी पढ़े-लिखे और सुशिक्षित कहे जाने वालों को यह कहते सुना—"मदर-इण्डिया पुस्तक ख़ूब लिखी है; हिन्दुस्तान का चित्र खींच दिया है।"

यह उस समय की बात है कि जब 'मदर-इण्डिया' का विरोध आरम्भ ही हुआ था। इनमें से एकाध तो ऐसे भी निकले, जिन्होंने मदर-इण्डिया की सूरत तक न देखी थी। जब उनसे पूछा गया कि आपको कैसे मालूम हुआ; आपने मदर-इण्डिया पढ़ी है ? तब आप बोले—"जी नहीं, पढ़ी तो नहीं है; पर एक अमेरिकन लेडी की लिखी हुई है; इसलिए ज़रूर अच्छी होगी।" ठीक है ! एक तो अमेरिकन, दूसरे लेडी। उसकी लिखी पुस्तक बुरी कैसे हो सकती है ? उनके लिए पुस्तक पढ़ना आवश्यक नहीं था—केवल मिस मेयो का नाम ही यथेष्ट था।

इसके प्रतिकूल यदि उनसे कहा जाय कि हमारे अमुक ऋषि ऐसा कह गए हैं, हमारे प्राचीन ग्रन्थ में ऐसा लिखा है, तो प्रथम तो उन्हें इसी बात में सन्देह उत्पन्न होगा कि इस नाम के कोई ऋषि हो गए हैं। यदि ऋषि का अस्तित्व होना मान भी लिया तो उनकी बात मानना असम्भव। "क्यों महाशय, इसका क्या प्रमाण है कि जो उन्होंने लिखा वह ठीक है ? अमुक ग्रन्थ प्रामाणिक है, यह हम कैसे मान लें ?"—इत्यादि बातें करने लगते हैं। यदि उनसे कहा जाय कि जिस प्रकार आप यूरोप के विद्वानों की बातें बिना कान-पूँछ हिलाए मान लेते हैं, वैसे ही इसे भी मान लीजिए, तो उत्तर देते हैं—"वाह ! वे विद्वान तो अभी मौजूद हैं, या अमुक सन् में थे। आप बता सकते हैं कि आपके ऋषि कब हुए ?" "नहीं महाशय, यह बताना तो कठिन है।" "तब फिर कैसे मान लें ?" पर यदि उसी बात पर किसी गोरे चमड़े वाले की छाप लग जाय तो झट मान लेंगे। उस समय यह प्रश्न नहीं उठता कि वह ऋषि कब हुए और कहाँ हुए। आवश्यकता ही क्या है ? साहब बहादुर ने काफ़ी छानबीन करके ही माना होगा।

सम्पादक जी, जिधर देखिए यही दशा है। शिक्षा में, आचार-विचार में, परिच्छादन में—कोई बात ऐसी नहीं है कि जिसमें कुछ भी स्वतन्त्रता हो। सब में चातक की तरह यूरोप तथा अमेरिका की तरफ़ मुँह बाए खड़े हैं। वे जिसे ठीक कह दें वह ठीक, वह जिसे ग़लत कह दें वह ग़लत। एक प्रकार से यह होना स्वाभाविक है। ग़ुलाम प्रत्येक बात में अपने मालिक का मुखापेक्षी होता है। परन्तु अब यह ज्ञान हो चला है कि ग़ुलामी बुरी है, तो उसके साथ यह ज्ञान भी उत्पन्न होना चाहिए कि ग़ुलामों की भाँति प्रत्येक बात में मालिक को आदर्श समझ लेना भी बुरा है।

भवदीय,
—विजयानन्द (दुबे जी)

जहाँ स्पीच देने रात को उल्लू निकलते हैं

[जनाब "ज़रीफ़" लखनवी]

शरारे आह से उड़ते हैं, जब आँसू निकलते हैं,
इधर बरसात होती है, उधर जुगनूँ निकलते हैं !
कभी गाँधी निकलते हैं कभी नेहरू निकलते हैं,
मुसलमानों फ़िदाए-क़ौम अब हिन्दू निकलते हैं !
बजाओ तालियाँ, हमसे नई तहज़ीब कहती है,
जहाँ स्पीच देने रात को उल्लू निकलते हैं !
असीराने क़फ़स ने तीलियों में खिड़कियाँ कर लीं,
अरे सय्याद क्या रोकेगा इनको तू, निकलते हैं !
भरोसा दस्तो-बाज़ू पे, जिन्हें अपने नहीं होता,
'नबीजी ! भेजो' कहते वह 'मियाँ मिट्ठू' निकलते हैं !
अगर माशूक़ के नक़्शे-क़दम पर चल नहीं सकते,
तो आशिक़ बन के फिर क्यों उनके पिछलग्गू निकलते हैं ?
इसी तो दौरे आज़ादी में तुमने रख लिए पट्टे,
अरे भागो असीरे हलक़ए-गेसू निकलते हैं !
'ज़रीफ़' ऐसी ज़मीं जब हो, ग़ज़ल क्योंकर फले-फूले,
बजाए बामज़ा-अशआर के, कद्दू निकलते हैं !

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

'कुफ़ टूटा ख़ुदा-ख़ुदा करके !' ज़हे क़िस्मत ! कि पूरे साल भर की अठखेलियों के बाद श्रीमती नौकरशाही कुछ झिझकीं, सहमीं, सँभलीं, थमीं, राहेरास्त पर आईं और बूढ़े बाबा को बुला कर 'अस्थायी रूप' से सन्धि भी कर चुकीं। फलतः इस समझदारी के लिए उन्हें श्रीजगद्गुरु की ओर से दाद मिलनी चाहिए। क्योंकि 'दिन भर का भूला अगर शाम को घर आ जाय, तो वह भूला नहीं कहलाता।' क्यों, आपकी क्या राय है ?

❀

बड़ी आफ़त थी जनाब, इधर कॉङ्ग्रेसी बलमटेरों और बलमटेरिनिओं की संख्या रक्तबीज की सन्तान की तरह बढ़ती जाती थी और उधर लङ्काशायर की तिजोरियों में चूहे दण्ड पेल रहे थे। ऊपर से करोड़ों के घाटे की मार पड़ रही थी, सो अलग ! बताइए, इतनी ज़हमत बेचारी कोमलाङ्गी सखी कैसे बरदाश्त कर सकती थीं ? इसीलिए उन्होंने लँगोटी बाबा की शरण ली। अन्यथा वह छ-गज़ी धोती की तो परवाह ही नहीं करतीं, फिर लँगोटी की क्या हस्ती थी जो उन्हें रिझा लेती ?

❀

अपने अल्हड़पन के कारण पहले उन्होंने थोड़ी सी ग़लती कर दी। सोचा होगा, दो-चार खोपड़ियों का सनीचर उतार देने से काले लोगों की स्वतन्त्रता की लालसा पूरी हो जायगी और वे फिर कभी ऐसी गुस्ताख़ी न करेंगे। मगर यहाँ तो ये कमबख़्त 'नून-सत्तू' बाँध कर उसके पीछे पड़ गए थे। जेलख़ानों का कोना-कोना भर गया। मालूम होता था, किसी चपल छोकड़े ने बर्रों का छत्ता छेड़ दिया हो।

❀

मगर सुनते हैं, इस सन्धि से भाँग-बूटी सस्ती न होगी और न बलमटेरों की 'चिरौरी-मिनती' से ही पिण्ड छूटेगा। तो फिर ऐसी सन्धि और समझौते से मतलब ही क्या निकला ? हमने तो सोचा था, स्वतन्त्रता मिलेगी। हिज़ होलीनेस की आए-दिन की हुकूमतों से जान बचेगी, सबेरे 'कागाबासी' मध्यकाल में 'रायसी' और तीसरे पहर को 'दूधिया' छना करेगी। मगर यहाँ तो वही 'ढाक के तीन पात' रह गए !

❀

हाँ, कलकत्ते के विलायती कपड़े वाले सेठों की 'पौबारह' रही। तोंदों के अन्दर का भीषण तूफ़ान शान्त हुआ। बेचारे सुख की साँस लेते होंगे। अब लाट साहब को चाहिए कि उदारतापूर्वक 'पदवियों की पिटारी' खोल दें। क्योंकि बेचारों ने आन्दोलन के भीषण दिनों में भी अपनी 'राज-भक्ति' को रेप नहीं लगने दी। पतिव्रताओं के देश के निवासी ठहरे। जीते जी धर्म में कैसे बट्टा लगने देते ?

❀

फिर 'कच्चे पौ' की बाज़ी उन्होंने भी मारी, जो हाल ही में 'सी' क्लास के मज़े लूटने गए थे। 'हर्रे लगी न फिटकरी और शहीदों की सूची में नाम आगया'। 'आल इण्डिया प्रिज़नर्स कॉन्फ्रेन्स' में अगली 'सीट' पर स्थान मिलेगा और कराची कॉङ्ग्रेस में 'दर्शक-शुल्क' माफ़ !

❀

कुछ भाग्यशालियों ने बीबियों की बदौलत ही नामवरी हासिल कर ली। ख़ुद बच्चों की देख रेख के लिए घरों में रहे और बीबियाँ जेल हो आईं ! पूरा नहीं तो आधा 'सवाब' तो मिल ही जाएगा। अख़बारों में श्रीमती के चित्र के नीचे नाम तो पहले ही छप चुका है, जैसे—'श्रीमान् अमुक की धर्मपत्नी श्रीमती अमुक।'

❀

भई, तो इसमें व्यङ्ग या मज़ाक़ की कौन सी बात हो गई ? अर्द्धाङ्गिनी ने कोई अच्छा काम किया तो क्या वह अपना किया हुआ न कहलाएगा ? फिर जब तक वह जेल में रहीं तब तक अपने राम ने 'घर-गृहस्थी' सँभाली, बच्चों की देख-रेख की, प्रति रविवार को जेल के दरवाज़े पर 'विज़िट' किया, दिलासा दिया और बराबर पूछते रहे कि तुम्हें यहाँ कोई कष्ट तो नहीं है ? बताइए, यही तो हाथ बटाना कहलाता है या और कुछ ?

❀

बला टली बेचारे विद्यार्थियों के सर से। उफ़ ! कॉङ्ग्रेस वालों ने आन्दोलन क्या आरम्भ किया था, बेचारों की जान आफ़त में थी। कोई कहता, पढ़ना छोड़ दो; कोई कहता, टेनिस खेलना और माँग काढ़ना छोड़ दो और कोई-कोई मुँहफट तो यहाँ तक कह बैठते थे कि "कितने शर्म की बात है कि स्त्रियाँ तो देश के लिए जेल जाएँ और तुम ग़ुलामख़ाने की डिग्री हासिल करो।"

❀

बेचारे 'भारत-धर्म-महामण्डल' को भी सुख की नींद सोने का मौक़ा मिला। क्योंकि यह आन्दोलन सिर से पैर तक सनातन-धर्म के विपरीत था। सब से बड़ा अशास्त्रीय कार्य तो लोगों ने ताड़ के पेड़ काट कर कर दिया था। बेचारे धार्मिक इस 'कलियुगी सोमरस' के रसास्वादन से वञ्चित हो रहे थे। बेचारे महामण्डल ने इसके सम्बन्ध में एक बड़ा सा 'फ़तवा' भी छपवा कर बँटाया था, परन्तु किसी ने ध्यान ही न दिया। कलिकाल है भई, नहीं तो क्या ताड़-रक्षा जैसे धार्मिक कार्य से लोग योंही मुँह मोड़ लेते ?

❀

छोटी श्रीमतियों अर्थात् प्रादेशिक सरकारों का घाटा तो लाखों ही तक था। फलतः कोई विशेष चिन्ता की बात न थी। इधर-उधर से उधार-हथफेर लेकर किसी तरह से काम चला लिया जाता। परन्तु बड़ी सखी अर्थात् श्रीमती भारत-सरकार पूरे साढ़े तेरह करोड़ के ख़सारे में हैं। इसलिए सुस्टर साहब की राय है कि किरासिन तेल, चीनी, सिगरेट, शराब और विलायती कपड़े पर थोड़ा-थोड़ा नया कर बढ़ा कर यह साढ़े तेरह करोड़ की कमी पूरी कर ली जाय। श्रीजगद्गुरु के मतानुसार भी यह प्रस्ताव कुछ बुरा नहीं है, क्योंकि किरासिन तेल की बदौलत कभी-कभी झोंपड़ियों में भी प्रकाश दिखाई पड़ जाता है और यह ब्रिटिश राज्य के लिए सोलह आने कलङ्क की बात है। फलतः बी-ब्रितानियाँ को इस कलङ्क से बचा कर श्रीमान सुस्टर साहब ने वास्तव में धन्यवाद का काम किया है।

❀

चीनी के सस्ती हो जाने से देश में भङ्गड़ों की संख्या बढ़ जाने की सम्भावना थी, फलतः उसे भी कुछ महँगी कर देने की नितान्त आवश्यकता थी। अच्छा तो होता कि पवित्र विलायती चीनी पर यह टैक्स न लगा कर केवल देशी पर लगाया जाता। क्योंकि इसके कारण विलायती चीनी को धक्का लगता है और कुछ कालों को साल में कई महीने के लिए काम भी मिल जाता है। फलतः दोनों बातें किसी भी सरकार के लिए बुरी हैं।

❀

हाँ, शराब और विलायती कपड़े पर कर बढ़ाना अवश्य ही जले पर नमक छिड़कना है। बेचारे अभी गाँधी की आँधी के झोंके से सँभल भी न पाए थे कि इस नई 'सुस्टरी आफ़त' में फँस गए ! वही कहावत हुई कि 'ताड़ से गिरे तो ख़जूर पर आकर अटक गए !' ख़ैर, बेचारों ने साल भर तक जो घाटा उठाया है, उसकी कुछ पूर्ति इस नए कर द्वारा हो जायगी।

❀

कुछ औंधी खोपड़ी वालों की राय है कि घाटे की पूर्ति के लिए कर न बढ़ा कर ख़र्च ही क्यों न कुछ कम कर दिया जाए। लाहौल विलाक़ूवत ! अमाँ, ख़र्च कैसे कम हो सकता है। अभी हाल की घटना है, पार्लमेण्ट में एक प्रश्न के उत्तर में भारत के महान मन्त्री महोदय ने फ़रमाया है, कि छः मास में प्रायः इक्कीस लाख की लागत के 'बम' सरहद पर गिराए गए ! बतलाइए तो कितना आवश्यक, पवित्र और पुण्यमय कार्य था ! इसके लिए ख़र्च न किया जाता तो कैसे काम चलता ?

❀

आपको ख़बर नहीं, भारतराम बूढ़े हो चले हैं, आज के बाद कल महाप्रस्थान करेंगे। इनके पैसे से कुछ इस महानरमेध की तरह पुण्य-कार्य अवश्य ही हो जाने चाहिए। फलतः ऐसे ज़रूरी कामों को अगर कोई कहे कि बन्द कर देना चाहिए, तो भला कैसे हो सकता है। इसलिए जनाब, आपकी वह ख़र्च घटाने वाली बात श्रीगुरु जी की कसौटी पर खरी नहीं उतरी, समझ गए न ?

❀

भाई, परलोक की चिन्ता सबको रहती है। देखिए न, जम्मू (काश्मीर) के एक बूढ़े बाबा ने ६० वर्ष की उमर में एक चतुर्दशी किशोरी का पाणिपीड़न किया है, तो फिर बूढ़े भारत बाबा के धन से सीमा-प्रान्त पर इक्कीस-बाइस लाख के बम बरसा दिए गए तो कौन सी बड़ी बात हो गई। यह तो धर्म का काम ठहरा। इसके लिए नाक-भौं सिकोड़ कर कौन अपना आक़बत ख़राब करने जाए।

❀

Registered No. A—2085

पुस्तक क्या है, शिक्षा और विनोद की अनुपम वस्तु है। प्रत्येक चिट्ठी में सामाजिक तथा राजनैतिक कुरीतियों की ऐसी धज्जी उड़ाई गई है कि आप हँसते-हँसते लोट-पोट हो जायँगे! पुस्तक हाथ में लेते ही छोड़ने की इच्छा नहीं होती।

अङ्गरेज़ी के सुप्रसिद्ध दैनिक "पायोनियर" की सम्मति है :—

PIONEER

MAY 25, 1930

This book contains a series of letters by "Vijyanand" dealing mostly with current social topics and especially Hindu society. The letters are written in lighter vein, and do credit to the writer. Most of his jokes are against himself. When he wanted to begin writing these letters, he asked his wife (whom he calls "Lalla ki Mahtari"—the mother of his son, Lalla) to give him two annas to buy some paper. He could not satisfy her that he really would buy paper and not *Bhang* and could not explain how he needed as much paper as would cost two annas! He was assaulted, and saved the earthen pitcher by letting the poker fall on him rather than the utensil containing cold water! The Hindi is very easy, simple enough even to be followed by "the Collector Sahib who wanted to give a Rai Sahibship" to "Vijyanand" for writing these letters, but who insisted that the Rai Sahibship should be given to "Lalla ki Mahtari." The book is neatly printed in the usual style of the CHAND Press Publications.

छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २)

यह वह गल्प-गुच्छ है, जिसे हाथ में लेते ही आप आनन्द से गद्गद हो जायँगे! इसकी प्रत्येक कहानियाँ अमूल्य हैं। कहानियों में आप देखेंगे सामाजिक कुरीतियों का ताण्डव-नृत्य, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह; कन्या-विक्रय, दहेज़, स्त्रियों का घरेलू कलह, वेश्या-गमन तथा पतिव्रत और पत्नीव्रत आदि-आदि महत्वपूर्ण विषयों का मार्मिक तथा मनोरञ्जक वर्णन! प्रत्येक कुरीतियों का ऐसा नग्न-चित्र खींचा गया है तथा उनसे होने वाले अनर्थों का ऐसा हृदय-विदारक वर्णन किया गया है कि पढ़ते ही आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। इन विनाशक कुरीतियों ने आज हमें कितना पतित, कायर तथा अन्ध-भक्त बना दिया है कि इनके विरुद्ध सिर उठाने का हममें साहस ही नहीं रह गया है। अस्तु—प्रत्येक कहानी समाज की रङ्ग-भूमि है और उसमें उसका सारा मैल आपको जलता हुआ दिखाई देगा। कहीं-कहीं पर हास्य-रस का ऐसा प्रवाह मिलेगा कि पढ़ते ही आप लोट-पोट हो जायँगे। प्रत्येक भारतीय पुरुष तथा स्त्री को इसे एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए।

मूल्य केवल लागत मात्र ३); स्थायी ग्राहकों से २)

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad